पालि-ग्रन्थमाला

[६]

भदन्ताचरियबुद्धघोस-विरचिता

अ ट्ठ सा लि नी

अत्थयोजनासहिता

संसोधको

प्रो० रामसङ्करत्रिपाठी

पालि-बुद्धदस्सनाचरियो समणविज्जासंकाय-बुद्धदस्सनविभागपमुखो च

सम्पुण्णानन्दसंसकतविस्सविज्जालये

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः

PĀLI-GRANTHAMĀLĀ

[Vol. 6]

Abhidhammapitake

BHADANTĀCARIYA BUDDHAGHOṢA VIRACITĀ

AṬṬHASĀLINĪ

Nama

DHAMMASAṄGAHAṬṬHAKATHĀ

SĀ CA

ĀCARIYA ÑĀṆAKITTITHERENA RACITĀYA

ATTHASĀLINĪ-ATTHAYOJANĀYA

Abhidhammasamvaṇṇanāya Samannāgatā

EDITED BY

PROF. RĀMAŚAṄKARA TRIPĀṬHĪ

Pali-Buddhadassanācariyo Samaṇavijjāsaṅkāya-

Buddhadassanavibhāgapamukho ca

Sampurnanand Sanskrit University

VARANASI

1989

Research Publication Supervisor—
Director, Research Institute,
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi.

Published by—
Dr. Harish Chandra Mani Tripathi
Publication Officer,
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi–221 002

Available at—
Sales Department,
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi–221 002.

First Edition, 500 Copies
Price Rs. 156·00

Printed by—
VIJAYA PRESS,
Sarasauli,
Varanasi.

पालि–ग्रन्थमाला

[६]

अभिधम्मपिटके

भदन्ताचरियबुद्धघोस-विरचिता

अ ट्ठ सा लि नी

नाम धम्मसङ्गहट्ठकथा

सा च

आचरियञाणकित्तिथेरेन रचिताय

अट्ठसालिनी-अत्थयोजनाय

अभिधम्मसंवण्णनाय समन्नागता

संसोधको

प्रो० रामशङ्करत्रिपाठी

पालि-बुद्धदस्सनाचरियो समणविज्जासंकाय-बुद्धदस्सनविभागपमुखो च

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालये

वारणस्याम्

२०४६ तमे वैक्रमाब्दे २५३३ तमे बुद्धाब्दे १९८९ तमे ख्रैस्ताब्दे

अनुसन्धानप्रकाशनपर्यवेक्षकः—
निदेशकः, अनुसन्धानसंस्थानस्य
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालये
वाराणसी

प्रकाशकः—
डॉ० हरिश्चन्द्रमणित्रिपाठी
प्रकाशनाधिकारी,
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य
वाराणसी–२२१ ००२.

प्राप्तिस्थानम् —
विक्रयविभागः,
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य
वाराणसी–२२१ ००२.

प्रथमं संस्करणम्, ५०० प्रतिरूपाणि
मूल्यम्—१५६-०० रूप्यकाणि

मुद्रकः—
विजय प्रेस,
सरसौली,
वाराणसी।

भूमिका

बाल्यावस्था से ही महामानव बुद्ध कतिपय मानवीय समस्याओं से बेहद परेशान थे। इन्हीं समस्याओं के समाधान की उधेड़बुन में उन्हें कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। वे जागतिक सुखों से विमुख, चिन्तनशील एवं एकान्तप्रिय हो गये। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि जन्म, जरा, व्याधि, मरण प्रमुख अनेक प्रकार के दुःखों का जगत् में साम्राज्य व्याप्त होने पर भी व्यक्ति चिन्तित क्यों नहीं हैं। वे विविध मनोरंजनों से उत्पन्न सुख के व्यामोह में बेसुध क्यों हैं ? वे निराश हुए तत्कालीन समाज से और संकल्प लिया कि मैं ही इन मानवीय समस्याओं का कारण और उसके निराकरण का उपाय खोजूंगा। जब व्यक्ति सच्चे मन से किसी समस्या के समाधान में जुट जाता है तो एक न एक दिन अवश्य उसे समाधान प्राप्त होता है। महामानव बुद्ध इसी चिन्ता में एक दिन घर से बाहर हो गए, जिससे वे अपने उद्देश्य के लिए अधिक समय दे सकें। वे तत्कालीन उन सभी महापुरुषों से मिले, जो इस कार्य में पहले से लगे हुए थे। उनके साथ विचार-विमर्श किया, उनकी साधना विधि का अभ्यास किया, किन्तु उन्हें सन्तोष नहीं हुआ। जो समस्याएं उनके चित्त में घर किए हुए थीं और जिनके समाधान की खोज में वे घर से बाहर निकले थे, उनके समाधान की दिशा में उनसे उन्हें कुछ भी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि नहीं हुई। उन्होंने विविध प्रकार की कठिन तपश्चर्या भी की, किन्तु जिन समस्याओं से वे बचपन से जूझ रहे थे, उनका समाधान न मिल सका। फलतः उन्होंने अपने ही रास्ते चलने का निश्चय किया और एक सौभाग्यशाली दिन उनका मनोरथ पूर्ण हुआ। उन्हें समाधान के सूत्र प्राप्त हो गए। उन्होंने अपने दुःखों का अन्त कर दिया। किन्तु केवल अपने दुःखों के नाश के लिए वे बचपन से परेशान न थे। केवल व्यक्तिगत दुःखों के नाश के लिए वे घर से बेघर नहीं हुए थे। उन्हें प्राणी मात्र के दुःखों की चिन्ता थी। वस्तुतः वे उस नियम को खोजना चाहते थे, जिसके तहत दुःखों की परम्परा, जन्म-मरण की श्रृंखला चलती रहती है। उस नियम को जानकर उस चक्र से बाहर निकलने का उपाय वे खोजना चाहते थे। यद्यपि वे अपने दुःख से इतने परेशान न थे, फिर भी जैसे कोई एक वैज्ञानिक किसी प्राकृतिक नियम को जानने के लिए किसी प्रयोगशाला में विविध प्रयोग करता है, उसी तरह उन्होंने अपने ऊपर प्रयोग किए। उन्होंने स्वयं को प्रयोगशाला बनाया और उसमें अनेक प्रयोग किए। अनेक बार असफलता भी मिली। किन्तु अन्त में उन्हें सभी प्रकार के दुःखों के उत्पाद का नियम और उनके निराकरण का उपाय मालूम हो गया। उन सूत्रों के आधार पर उन्होंने जब अपने दुःखों का प्रहाण कर लिया तब उन्होंने घोषणा की कि मैं

बुद्ध हो गया और जिस उपाय या मार्ग से उन्होंने बुद्धत्व प्राप्त किया, उसका लोककल्याण के उद्देश्य से उपदेश किया। इसे ही धर्मचक्रप्रवर्तन कहते हैं।

उनका प्रयोग इतना वैज्ञानिक था कि उसे उन्होंने गोपनीय या रहस्य नहीं बनाया, बल्कि डंके की चोट कहा कि मेरी बात को मेरे प्रति गौरव के कारण चुपचाप स्वीकार न करो, अपने जीवन की प्रयोगशाला में अनुभव करके देख लो, यदि सही उतरे तो उसका अभ्यास करो। यही कारण था कि रहस्याडम्बरों से मुक्त, मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत, उनके सीधे सादे मार्ग को तत्कालीन जनसमाज ने बड़े उत्साह के साथ ग्रहण किया। धर्मों के इतिहास में बौद्ध धर्म का द्रुत प्रसार अभूतपूर्व घटना है।

मानवीय दुःखों के अशेष विनाश (निर्वाण) के उपायों (मार्गों) का उपदेश ही वे यावज्जीवन देते रहे। उनके समस्त उपदेशों का एक ही रस है, वह है निर्वाण। भगवान् बुद्ध उपायकुशल थे। वे सभी प्राणी अर्थात् प्राणी मात्र को दुःखों से मुक्त करना चाहते थे। वे दुःख के स्रोत को ही समाप्त कर देना चाहते थे। किन्तु प्राणियों की रुचि, अध्याशय और सामर्थ्य भिन्न भिन्न होते हैं। जैसे कुशल वैद्य एक ही औषध का तमाम रोगों के निवारणार्थ प्रयोग नहीं करता, अपि तु रोगी के शरीर, महाभूत और त्रिदोषों की स्थिति के अनुरूप सम्यग् निदान कर औषध प्रयोग करता है, ऐसे ही उपायकुशल भगवान् बुद्ध ने विनेय जनों की रुचि, अध्याशय एवं सामर्थ्य के अनुरूप विविध देशनाएं कीं।

बौद्धदर्शन कोई एक दर्शन नहीं, अपि तु दर्शनों का समूह है। भगवान् बुद्ध के उपदेशों को आधार बनाकर बाद में अनेक दर्शनों का विकास हुआ, जिनका चार दर्शनप्रस्थानों में वर्गीकरण होता है, यथा–वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार एवं माध्यमिक। स्थविरवाद का संग्रह वैभाषिक प्रस्थान में किया जाता है। स्थविरवाद के आधार मूल पालि बुद्धवचन माने जाते हैं। हम यहाँ उसी का सविस्तर विवेचन प्रस्तुत कर रहे हैं।

लोक में बुद्ध का उत्पाद दुर्लभ है[1]। उनके उत्पाद से निश्चय ही मानव

---

१. (क) दुर्लभा अष्टाक्षणविनिवृत्तिः, दुर्लभो मनुष्यभावप्रतिलम्भः, दुर्लभा क्षणसम्पद्विशुद्धिः। दुर्लभो बुद्धोत्पादः।
द्र०–गण्डव्यूहसूत्रम् पृ०९०।

(ख) मानुष्यं दुर्लभं लोके बुद्धोत्पादोऽतिदुर्लभः।
ततोऽपि श्रद्धाप्रव्रज्याप्रतिपत्तिः सुदुर्लभा॥
बोधौ चित्तं दृढं सर्वसत्त्वानामनुकम्पया।
सर्वदुःखप्रशान्त्यर्थं दुर्लभानां परम्परा॥
द्र०—बोधिचर्यावतारे उद्धृतम् पृ० ५।

जाति का गौरव बढ़ा है। चारों ओर के हाहाकार, उत्पीडन एवं अभावों से ग्रस्त इस संसार में भी मनुष्य को एक प्रकार का आश्वासन प्राप्त हुआ और बुद्धत्व के रूप में उसे एक आदर्श प्राप्त हुआ। यही कारण है कि उनका धर्म उनके जीवन-काल में ही अत्यन्त लोकप्रिय हो गया और लोग अहमहमिकया उसमें प्रविष्ट होने लगे। धर्मों के विकास के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व है।

बुद्धत्वप्राप्ति के अनन्तर जीवन के अन्तिम क्षण पर्यन्त लोक के अनन्त सुख और कल्याण के लिये जो उन्होंने निरन्तर धर्मदेशना की, वह धर्म और विनय के रूप में प्रसिद्ध है। उनका धर्म त्रिधा विभक्त है, यथा–परियत्ति, प्रतिपत्ति और प्रतिवेध[१]। समस्त बुद्धवचन 'परियत्ति' नामक सद्धर्म है और यही बुद्धशासन की आधारशिला है। इस 'परियत्ति' धर्म के होने पर ही अन्य प्रतिपत्ति और प्रतिवेध धर्म सुरक्षित रह सकते हैं। इसलिए सद्धर्म की चिरस्थिति की कामना से महाकाश्यप आदि भिक्षुप्रमुखों ने 'परियत्ति' नामक बुद्धवचनों का संगायन किया।

संगीतियाँ

प्रथम संगीति–भगवान् बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद अभी एक सप्ताह भी नहीं बीता था कि पावा और कुसिनारा के बीच ५०० भिक्षुओं के साथ चारिका करते हुए महाकाश्यप ने सुभद्र नामक एक वृद्ध प्रव्रजित को यह कहते हुए सुना–'बस, आयुष्मानों, मत शोक करो, मत विलाप करो, हम उस महाश्रमण (भगवान् बुद्ध) से अच्छी तरह मुक्त हो गए। हम उसके द्वारा सदा यह कहते हुए उत्पीड़ित किए जाते थे–'यह तुम्हें विहित है, यह तुम्हें विहित नहीं है,। अब हम जो चाहेंगे करेंगे जो नहीं चाहेंगे, नहीं करेंगे''[२]। सुभद्र के ये वचन सुनकर महाकाश्यप जैसे उत्तरदायी भिक्षुओं का चिन्तित होना स्वाभाविक था। उन्होंने सोचा, अधर्म और अविनय प्रकट हो रहा है। अतः आवश्यक है कि शासन की सुरक्षा के लिए धर्म और विनय का संगायन किया जाए[३]।

१. परियत्तीति तीणि पिटकानि, पटिवेधो ति सच्चपटिवेधो, पटिपत्तीति पटिपदा।
द्र०--विभङ्गट्ठकथा, पृ० ४३५।

२. अलं आवुसो, मा सोचित्थ, मा परिदेवित्थ। सुमुत्ता मयं तेन महासमणेन। उपद्दुता च होम--'इदं वो कप्पति, इदं वो न कप्पतीति'। इदानि पन मयं यं इच्छिस्साम तं करिस्साम, यं न इच्छिस्साम न तं करिस्सामा ति।
द्र०-दी०नि०द्वि० भा०, पृ० १२५।

३ हन्द, मयं आवुसो, धम्मं च विनयं च संगायाम। पुरे अधम्मो दिप्पति, धम्मो पटिबाहिय्यति। अविनयो दिप्पति, विनयो पटिबाहिय्यति।
द्र०-चुल्ल० (विनयपिटक) पृ० ४१६।

इस संगीति के लिए महाकाश्यप ने पाँच सौ अर्हत् भिक्षुओं को चुना। स्वयं महाकाश्यप इस संगीति के अध्यक्ष थे। उन्होंने धर्म सम्बन्धी प्रश्न आनन्द से तथा विनय सम्बन्धी प्रश्न उपालि से पूछे। अन्त में भिक्षुओं ने उनका संगायन किया। यह संगीति भगवान् बुद्ध के महापरिनिर्वाण के अनन्तर चतुर्थ मास में राजगृह की सप्तपर्णी गुहा में आयोजित की गई थी। मगधशासक अजातशत्रु इसमें सहायक थे। यह संगीति लोक में 'पंचशतिका' नाम से विख्यात है।

द्वितीय संगीति—भगवान् बुद्ध के परिनिर्वाण के सौ वर्ष बाद एक समय आयुष्मान् यश ने वैशाली के वज्जिपुत्तक भिक्षुओं को विनय विपरीत दश वस्तुओं का आचरण करते हुए देखा, जिनमें सोने, चांदी का ग्रहण भी था[1]। उनका यह आचरण निष्ठावान् भिक्षुओं की दृष्टि में निन्दित था। इनका निर्णय करने के लिए वैशाली में संगीति का आयोजन किया गया, जिसमें सात सौ अर्हद् भिक्षु सम्मिलित हुए। यह संगीति आठ मास तक चलती रही। महास्थविर रेवत इस संगीति के नायक थे। सभा ने वैशाली के भिक्षुओं के दश वस्तु विषयक आचरण को विनय विपरीत निश्चित किया। तदनन्तर वहाँ धर्म एवं विनय का संगायन किया। बौद्ध जगत् में यह संगीति 'सप्तशतिका' नाम से विख्यात है। कालाशोक इस संगीति में प्रमुख सहायक थे।

वैशाली के वज्जिपुत्तक भिक्षुओं ने द्वितीय संगीति के इन महास्थविरों का निर्णय अमान्य कर दिया और कौशाम्बी में उन्होंने एक पृथक् संगीति का आयोजन किया, उसमें दस हजार भिक्षु सम्मिलित हुए। उन्होंने संगीति में अपने मत के अनुकूल निर्णय लिए। यह सभा 'महासंघ' या 'महासंगीति' कहलाई तथा इन निर्णयों को मानने वाले 'महासांघिक' कहलाए। 'दीपवंस' के अनुसार महासंगीति में सम्मिलित भिक्षुओं ने शासन को एकदम विपरीत कर डाला। मूलसंघ में भेद डालकर उन्होंने एक नया संघ बना लिया। उन्होंने सूत्रों के संग्रह का क्रम बदल दिया तथा विनय और पाँचो निकायों में सूत्रों का अर्थ और क्रम बदल दिया तथा कुछ स्वरचित सन्दर्भ भी जोड़ दिये[2]।

---

१. कप्पति सिंगिलोणकप्पो, कप्पति द्वयंगुलकप्पो, कप्पति गामन्तरकप्पो, कप्पति आवासकप्पो, कप्पति अनुमतिकप्पो, कप्पति आचिण्णकप्पो, कप्पति अमथितकप्पो, कप्पति जलोगिं पातुं, कप्पति अदसकनिसीदनं, कप्पति जातरूपरजतं ति। द्र०—चुल्ल० (विनयपिटक), पृ० ४१६।

२. महासंगीतिका भिक्खू विलोमं अकंसु सासनं।
भिन्दित्वा मूलसंघं अञ्ञं अकंसु संघं॥
अञ्ञथा संगहितं सुत्तं अञ्ञथा अकरिंसु ते।
अत्थं धम्मं च भिन्दिसु ये निकायेसु पञ्चसु॥
द्र०—दीपवंश।

अष्टादश बौद्धनिकाय

इस विभाजन से स्थविरवादी और महासांघिक दो निकाय विकसित हुए। कालान्तर में महासांघिक भी दो भागों में विभक्त हो गए, यथा—(१) एकव्यावहारिक और (२) गोकुलिक। गोकुलिक से पुनः दो शाखाएँ निकलीं—(१) प्रज्ञप्तिवादी और (२) बाहुलिक (बाहुश्रुतिक)। बाहुलिक से चैत्यवादी नामक एक और शाखा विकसित हुई। इस तरह महासांघिक से पाँच निकाय विकसित हुए जो महासांघिक के साथ कुल छह निकाय होते हैं। दूसरी ओर स्थविरवादी निकाय भी दो भागों में विभक्त हुआ—(१) वज्जिपुत्तक (वात्सीपुत्रीय) एवं (२) महीशासक। वात्सीपुत्रीय चार भागों में विभक्त हुए यथा—(१) धर्मोत्तरीय, (२) भद्रयाणिक, (३) छन्नागरिक (षाण्णागरिक) और ४. सम्मितीय। महीशासक भी दो शाखाओं में विभक्त हुए—१. धर्मगुप्तिक एवं २. सर्वास्तिवादी। सर्वास्तिवादियों से क्रमशः काश्यपीय, काश्यपीय से सांक्रान्तिक, सांक्रान्तिक से सूत्रवादी (सौत्रान्तिक) निकाय विकसित हुए। इस प्रकार स्थविर निकाय से ११ निकाय विकसित हुए, जो स्थविरवादी निकाय के साथ कुल १२ होते हैं। दोनों प्रकार के कुल निकायों की संख्या १८ होती है।

इन १८ निकाय नामों के अतिरिक्त महावंस, कथावत्थु-अट्ठकथा आदि ग्रन्थों में अन्य निकायों के नाम भी उपलब्ध होते हैं, यथा—राजगिरिक, सिद्धत्थक, पुब्बसेलिय, अपरसेलिय, हेमवत, वजिरिय, उत्तरापथक, हेतुवादी एवं वेतुल्लक। इनके अतिरिक्त शारिपुत्रपरिपृच्छा, भव्य, वसुमित्र, विनीतदेव आदि आचार्यों के अनुसार इन निकायों की भिन्न सूचियां भी उपलब्ध होती हैं। अपि च, सर्वास्तिवादी विनय, ह्वेनसांग एवं तारानाथ आदि के अनुसार संगीतियों के वर्णन, निकाय भेद के कारण आदि में कुछ भिन्नता भी पाई जाती है। विस्तारभय से वे सब यहाँ छोड़े जा रहे हैं।

तृतीय संगीति—बुद्ध के परिनिर्वाण के २३६ वर्ष पश्चात् सम्राट् अशोक के काल में पाटलिपुत्र में तृतीय संगीति आयोजित की गई, जिसमें एक सहस्र भिक्षु सम्मिलित हुए थे। इसके अध्यक्ष मोग्गलीपुत्त तिस्स महास्थविर थे। यह संगीति नौ मास तक चलती रही। इसी संगीति के बीच मोग्गलीपुत्त तिस्स ने अपने से भिन्न अवशिष्ट १७ बौद्ध निकायों का निराकरण करते हुए 'कथावत्थु' नामक ग्रन्थ की रचना की, जिसे अभिधम्मपिटक में स्थान मिला। सम्पूर्ण अभिधम्मपिटक का अन्तिम स्वरूप इस संगीति तक निश्चित हो चुका था। इस संगीति की सबसे बड़ी उपलब्धि बौद्ध धर्म का विदेशों में प्रचार के लिये भिक्षुओं को भेजने का निश्चय करना था। इसी निश्चय के अनुसार सम्राट् अशोक ने अपने विस्तृत साम्राज्य के विभिन्न प्रान्तों, सीमान्तों तथा यवन, कम्बोज, गान्धार, सुवर्ण भूमि, सिंहलद्वीप आदि में बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ धर्मोपदेशक भेजे।

चतुर्थ संगीति—सम्यक् सम्बुद्ध के परिनिर्वाण से ४५० वें वर्ष में श्रीलंका द्वीप में राजा वट्टगामणि अभय के शासन काल (प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व) में चतुर्थ संगीति आयोजित की गई। यह सिंहल द्वीप के मातुल जनपद की 'आलोक' नामक गुहा में सम्पन्न हुई। इसमें पाँच सौ अर्हद् भिक्षु सम्मिलित हुए। इसके अध्यक्ष महास्थविर धर्मरक्षित थे। भगवान् बुद्ध से लेकर अब तक उनके उपदेशों का अध्ययन-अध्यापन मौखिक रूप से ही प्रचलित था। इस संगीति में पहली बार समस्त बुद्धवचन लिपिबद्ध किये गए। इसलिये यह संगीति 'पुस्तकारोपण' संगीति कहलाती है।

पंचम संगीति—२४१५ वें बुद्धाब्द में ब्रह्मदेश (बर्मा) के धार्मिक राजा 'मित्तुं' के शासन काल में उनकी सहायता से पंचम संगीति का आयोजन हुआ। यह बर्मा के 'माण्डले' नाम से प्रसिद्ध रत्नपुंज नामक नगर में सम्पन्न हुई। इसमें २४०० भिक्षु सम्मिलित हुए थे। इसके अध्यक्ष दक्षिणारामवासी त्रिपिटकधर भदन्त जागर महास्थविर थे। इस संगीति में समस्त बुद्ध वचन शिलापट्ट पर अंकित किये गए। अतः यह संगीति 'शिलाक्षरारोपण' संगीति के नाम से प्रसिद्ध है।

षष्ठ संगीति—बर्मा के तत्कालीन प्रधानमन्त्री ऊनू द्वारा संस्थापित बुद्ध-शासन समिति ने सद्धर्म की चिरस्थिति एवं बहुजन के हित-सुख के लिए षष्ठ संगीति आयोजित करने का निश्चय किया। तदनुसार भगवान् बुद्ध के परिनिर्वाण के २५०० वें वर्ष में बर्मा की राजधानी रंगून में 'श्रीमंगल' नामक स्थान पर लोकशम (कम्भाए) नामक चैत्य के समीप इसी कार्य के लिये नवनिर्मित महापाषाण शैलगुहा में षष्ठ संगीति आयोजित की गई। भदन्त रेवत महास्थविर इस संगीति के अध्यक्ष थे। इसमें देश-विदेश के २५०० भिक्षुओं ने सम्मिलित होकर सम्पूर्ण त्रिपिटक का संशोधन करके संगायन किया।

बुद्ध वचन

बुद्धगया में बोधिप्राप्ति के अनन्तर निरन्तर ४५ वर्षों तक मध्यमण्डल में चारिका करते हुए विभिन्न स्थानों पर भगवान् बुद्ध ने जो उपदेश दिए, उनके तत्कालीन शिष्यों ने उन्हें कण्ठस्थ कर लिया, वे ही बुद्धवचन कहलाते हैं। यह अत्यन्त विशाल भण्डार है। बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद उनके महास्थविर शिष्यों ने बुद्धवचनों की शुद्धि और सुरक्षा की दृष्टि से उपर्युक्त छह संगीतियों में उनका संगायन किया और उनका विभिन्न भागों में वर्गीकरण किया। प्रथम संगीति के वर्णनप्रसंग में यद्यपि 'धम्मं विनयं च संगायाम' (चुल्ल०) इस वचन के अनुसार धर्म और विनय के संगायन की ही बात उल्लिखित है, वहां अभि-धर्म के संगायन का उल्लेख नहीं है, फलतः कुछ इतिहासवेत्ता यह निष्कर्ष

निकालते हैं कि अभिधर्मपिटक की रचना प्रथम संगीति से परवर्ती काल की है, तथापि यह निष्कर्ष बौद्ध परम्परा को मान्य नहीं है। आचार्य बुद्धघोष ने प्रथम संगीति के अवसर पर ही अभिधर्म के संगायन का भी स्पष्ट उल्लेख किया है[1]। ह्वेनसांग भी इससे सहमत हैं। इतना निश्चित है कि राजगृह की प्रथम संगीति में बुद्धवचनों का जो स्वरूप निश्चित हुआ था, वही वर्तमान त्रिपिटक का आधार है। आचार्य बुद्धघोष के मतानुसार प्रथम संगीति के अवसर पर ही महास्थविरों ने समस्त बुद्धवचनों का तीन पिटक, पाँच निकाय, नौ अंग और ८४,००० धर्मस्कन्धों में विभाजन कर दिया था। जो त्रिपिटक साहित्य आज हमें उपलब्ध है, यह वही है, जिसका पाटलिपुत्र की तृतीय संगीति में संगायन हुआ था और जिसे कुछ ही काल बाद सम्राट् अशोक के पुत्र भिक्षु महेन्द्र धर्मप्रचार के लिए श्रीलंका ले गये थे।

१. त्रिपिटक

त्रिपिटक बुद्धवचनों का एक वर्गीकरण है। पिटक तीन हैं, यथा—विनय-पिटक, सूत्रपिटक और अभिधर्म पिटक। पिटक पिटारी को कहते हैं। पिटारी की भाँति होने से एक प्रकार का संग्रह 'पिटक' कहलाता है।

विनयपिटक—विनय का अर्थ अनुशासन है। जिसमें भगवान् बुद्ध द्वारा प्रज्ञप्त भिक्षु एवं भिक्षुणियों के आचरण से सम्बद्ध नियम संगृहीत हैं, वह विनय-पिटक कहलाता है। इसे भिक्षुसंघ का संविधान कह सकते हैं। धार्मिक दृष्टि से इस पिटक का अत्यधिक महत्त्व है। विनय सम्बन्धी आचरण को लेकर ही प्रायः अष्टादश निकायों का विभाजन हुआ। बौद्ध संघ में विनयपिटक के प्रति सर्वदा अत्यधिक समादर रहा है। उन्होंने उसे सूत्रपिटक से भी ऊँचा स्थान दिया है। यह बुद्धशासन की आयु है। उनका विश्वास है कि जब तक विनय-पिटक विशुद्ध रहेगा, तब तक बुद्धशासन भी अक्षुण्ण रहेगा।

विनयपिटक के विषय तीन भागों में विभक्त हैं, यथा—सुत्तविभंग, खन्धक (स्कन्धक) एवं परिवार। सुत्तविभंग के दो विभाग हैं पाराजिक एवं पाचित्तिय। खन्धक भी दो भागों में विभक्त हैं—महावग्ग एवं चुल्लवग्ग। इस तरह विनयपिटक के पाँच भाग हो जाते हैं, यथा—पाराजिक, पाचित्तिय, महावग्ग, चुल्लवग्ग एवं परिवार। पाराजिक एवं पाचित्तिय ही भिक्षुविभंग

---

१. धम्मसंगणि-विभंगं च कथावत्थुं च पुग्गलं।
धातु-यमक-पट्ठानं अभिधम्मा ति वुच्चती'ति ॥

एवं संवण्णितं सुखुमञाणगोचरं तन्तिं संगायित्वा इदं अभिधम्मपिटकं नामाति वत्वा पञ्च अरहन्तसतानि सज्झायमकंसु। तु०—सीलक्खन्धवग्गट्ठकथा।

एवं भिक्षुणीविभंग कहलाते हैं और इन्हीं का सार भिक्षु-प्रातिमोक्ष और भिक्षुणी-प्रातिमोक्ष है।

सूत्रपिटक—इसमें विनय से भिन्न सामान्य बुद्ध वचनों का संग्रह है। यह पाँच भागों में विभक्त है, यथा–दीघ (दीर्घ)-निकाय, मज्झिम(मध्यम)-निकाय, संयुत्त(संयुक्त)निकाय, अंगुत्तर (अंकोत्तर)—निकाय एवं खुद्दक(क्षुद्रक)—निकाय।

सर्वास्तिवादी सूत्रपिटक भी उपर्युक्त पाँच भागों में ही विभक्त है। उसमें निकाय के स्थान पर आगम शब्द का प्रयोग किया गया है। सर्वास्तिवादियों का पिटक साहित्य मूलतः संस्कृत में था, किन्तु आज वह पूर्णतया उपलब्ध नहीं है। उसका चीनी अनुवाद उपलब्ध है। उसका अध्ययन हुआ है और पालि-त्रिपिटक के साथ उसका तुलनात्मक अध्ययन भी हुआ है। सर्वास्तिवादी एवं स्थविरवादी सूत्रपिटक और विनयपिटक में मूलभूत समानताएँ पाई जाती हैं। केवल विषयविन्यास में थोड़ा बहुत भेद दिखलायी पड़ता है। यही बात अभिधर्मपिटक के सम्बन्ध में नहीं कही जा सकती। दोनों परम्पराओं में अभिधर्मपिटक की ग्रन्थ संख्या समान होने पर भी विषयवस्तु में समता नहीं है।

(क) दीघनिकाय–यह दीर्घ आकार के सूत्रों का संग्रह है। आकार की दृष्टि से जो बुद्धोपदेश लम्बे हैं, वे इस निकाय में संगृहीत हैं। दीघनिकाय में कुल ३४ सूत्र हैं, जो तीन वर्गों में विभक्त हैं, यथा—१. सीलक्खन्धवग्ग, इसमें १–१३ सूत्र हैं २. महावग्ग, इसमें १० सूत्र (१४–२३) हैं तथा ३. पाथेय्यवग्ग, इसमें ११ सूत्र (२४–३४) हैं।

(ख) मज्झिम निकाय—इसमें मध्यम आकार के सूत्रों का संग्रह है। यह तीन भागों में विभक्त है, यथा—मूल पण्णास, मज्झिम पण्णास तथा उपरि-पण्णास। इसमें कुल १५ वर्ग हैं, जिनमें १५२ सूत्र संगृहीत हैं।

(ग) संयुत्तनिकाय–जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, इसमें छोटे-बड़े सभी आकार के सूत्रों का संग्रह है, अधिकतर छोटे आकार के सूत्रों की बहुतायत है। बुद्धघोष के अनुसार इसमें ७७६२ सूत्र हैं, जो ५ वर्ग और ५६ संयुत्तों में संगृहीत हैं, यथा—१. सगाथवग्ग में ११ संयुत्त, २. निदानवग्ग में १० (१२–२१) संयुत्त, ३. खन्धवग्ग में १३ (२२–३४) संयुत्त, ४. सळायतनवग्ग में १० (३५–४४) संयुत्त तथा ५. महावग्ग में १२ (४५–५६) संयुत्त हैं।

अंगुत्तरनिकाय—यह सूत्रपिटक का सबसे बड़ा भाग है। इसका विषय पूर्व के तीन निकायों से भिन्न नहीं है, किन्तु प्रतिपादन शैली इसकी अवश्य सबसे विलक्षण है। संख्याबद्ध शैली इसकी विशेषता है। सम्पूर्ण निकाय एक-निपात, दुक-निपात आदि ११ निपातों में विभक्त है। एक एक निपात अनेक वर्गों

में विभक्त है तथा एक एक वर्ग में अनेक लघु आकार के सूत्र हैं। बुद्धघोष के अनुसार इसमें कुल ९५५७ सूत्र हैं, जो ११ निपात और १६९ वर्गों में संगृहीत हैं।

(ङ) खुद्दकनिकाय—यह सूत्रपिटक का पाँचवाँ मुख्य भाग है। पहले के चार निकायों की भाँति इसमें सूत्र नहीं है, अपितु यह छोटे-छोटे स्वतन्त्र ग्रन्थों का संग्रह है। सभी ग्रन्थ बिलकुल छोटे भी नहीं हैं, कुछ तो जातक आदि काफी बड़े ग्रन्थ भी हैं। इसमें कुल १५ ग्रन्थ संगृहीत हैं, किन्तु ग्रन्थसंख्या के बारे में मतभेद भी हैं। बुद्धघोष के अनुसार १५ ग्रन्थ इस प्रकार हैं—१. खुद्दकपाठ २. धम्मपद, ३. उदान, ४. इतिवुत्तक, ५. सुत्तनिपात, ६. विमानवत्थु, ७. पेतवत्थु, ८. थेरगाथा, ९. थेरीगाथा, १०. जातक, ११. निद्देस, १२. पटिसम्भिदामग्ग, १३. अपदान, १४. बुद्धवंस तथा १५. चरियापिटक।

सिंहलदेशीय परम्परा निद्देस के चूळनिद्देस और महानिद्देस इन दो भागों को स्वतन्त्र ग्रन्थ मान कर खुद्दनिकाय में ग्रन्थों की संख्या १६ मानती है तथा ब्रह्मदेशीय परम्परा पूर्वोक्त १५ ग्रन्थों के अतिरिक्त इन ग्रन्थों को भी खुद्दकनिकाय में सम्मिलित करती है, यथा—मिलिन्दपञ्ह, सुत्तसंगह, पेटकोपदेश एवं नेत्तिप्पकरण।

अभिधम्मपिटक—त्रिपिटक का यह तीसरा मुख्य भाग है। इसमें भगवान् बुद्ध द्वारा उपदिष्ट तथ्यपरक दार्शनिक मन्तव्यों का संग्रह है। यह सात प्रकरणों (ग्रन्थों) में विभक्त है, यथा—धम्मसंगणि, विभंग, धातुकथा, पुग्गलपञ्ञत्ति, कथावत्थु, यमक एवं पट्ठान। यद्यपि इन ग्रन्थों में अनेक गम्भीर एवं दुर्बोध दार्शनिक तत्त्वों का विवेचन किया गया है, तथापि संक्षेपतः चित्त, चैतसिक, रूप एवं निर्वाण—ये चार परमार्थ धर्म ही इन सभी प्रकरणों के सामान्य अभिधेय हैं। इन चार परमार्थ धर्मों का स्पष्ट और अभ्रान्त ज्ञान उत्पन्न करने के लिए इन ग्रन्थों में इनका विविध प्रकार से संयोग और विभाग करके प्रतिपादन किया गया है। इस प्रकार शैली के भेद से इस अभिधर्मपिटक के सात ग्रन्थों का विभाजन होता है।

अभिधर्मपिटक का उद्भव—स्थविरवादी बौद्ध परम्परा के अनुसार भगवान् बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्ति के अनन्तर सप्तम वर्षावास में त्रायस्त्रिंश देवभूमि में जाकर वहाँ स्थित अपनी माता को लगातार तीन महीने तक विस्तारपूर्वक अभिधर्म का उपदेश किया। साथ ही साथ निर्मित बुद्ध (निर्माणकाय) के रूप में अनवतप्त ह्रद में आकर प्रज्ञावानों में श्रेष्ठ शारीपुत्र को उसी अभिधर्म का मातिका के रूप में नातिविस्तार एवं नातिसंक्षेप पद्धति से उपदेश किया। शारीपुत्र ने भी उस अभिधर्म का व्याख्यान चुने हुए मतिमान् पाँच सौ जिज्ञासु भिक्षुओं को किया। तभी से लेकर अभिधर्म का अध्ययन-अध्यापन भी प्रारम्भ

हुआ और संघ में सूत्रधर, विनयधर की भाँति आभिधार्मिक भिक्षु भी होने लगे। आभिधार्मिकों की यह परम्परा शिष्यानुशिष्य क्रम से आगे बढ़ती रही। यद्यपि अभिधर्म का शारीपुत्र से ही प्रारम्भ हुआ और उन्हीं ने सर्वप्रथम पट्ठान का गणनवार स्थापित किया, तथापि भगवान् बुद्ध ही सर्वप्रथम आभिधार्मिक हुए और उनके जीवनकाल में ही शारीपुत्र सहित ५०१ भिक्षु अभिधर्म के ज्ञाता थे। इस प्रकार इस परम्परा के अनुसार अभिधर्मपिटक बुद्धवचन माना जाता है और इसका ही प्रथम दो संगीतियों में संगायन हुआ।

अभिधर्मपिटक का बुद्धवचनत्व— सूत्र और विनय पिटक के बुद्धवचन होने में अधिक विवाद नहीं है, किन्तु अभिधर्म पिटक को बुद्धवचन मानने में प्रारम्भ से ही अत्यधिक विवाद है। यद्यपि स्थविरवादी परम्परा आज जिस रूप में अभिधर्मपिटक उपलब्ध है, उसे उसी रूप में बुद्धवचन मानने की पक्षधर है और भिक्षुसंघ ने भी यत्नपूर्वक उसकी आज तक सुरक्षा की, किन्तु अन्य निकाय (प्रस्थान) वाले भिक्षुओं ने विशेषतः सौत्रान्तिकों ने उनके इस दावे को स्वीकार नहीं किया। अभिधर्मपिटक को बुद्धवचन न माननेवाले कहते हैं कि जैसे सूत्रपिटक में 'एकं समयं भगवा राजगहे विहरति' इत्यादि रूप में सर्वत्र निदान कहा गया है, वैसा निदान अभिधर्म में नहीं है, अतः वह बुद्ध-वचन नहीं माना जा सकता। इस विषय में स्थविरवादियों का कहना है कि निदान उक्त न होने से उसे बुद्धवचन न मानना युक्त नहीं है, क्योंकि जातक, सुत्तनिपात, धम्मपद इत्यादि में भी उक्त प्रकार का निदान कथित न होने से उनको भी बुद्धवचन न मानने का प्रसंग होगा। अतः निदान का न होना बुद्धवचन न होने में सम्यक् हेतु नहीं है। वस्तुतः अभिधर्म सर्वज्ञ भगवान् बुद्धों का विषय है, अन्य का नहीं।

पुनश्च, अभिधर्मपिटक में निदान भी है। मण्डलारामवासी तिस्स स्थविर ने "महाबोधिनिदानो एस अभिधम्मो नाम[1]" इस प्रकार अभिधर्मपिटक का निदान कहा है। गामवासी सुमनदेव स्थविर का कहना है कि परवादी अभिधर्म का निदान जानते ही नहीं, इसलिए उक्त प्रकार का आक्षेप करते है। वस्तुतः "एकं समयं भगवा देवेसु विहरति तावतिंसेसु पारिच्छत्तकमूले पण्डुकम्बल-सिलायं। तत्र खो भगवा देवानं तावतिंसानं अभिधम्मकथं कथेसि- कुसला धम्मा, अकुसला धम्मा, अब्याकता धम्मा ति[2]"—यह अभिधर्मपिटक का निदान ही है।

अपि च, सूत्रों में तो एक ही निदान होता है, जब कि अभिधर्म में दो निदान कथित हैं। यथा-अधिगम निदान और देशना निदान। इनमें से दीपंकर दशबल से लेकर महाबोधिपर्यंक पर्यन्त 'अधिगम निदान' तथा धर्मचक्रप्रवर्तन से 'देशना निदान' है।

---

१. द्र०—अट्ठसालिनी, पृ० २६। २. द्र०—अट्ठसालिनी, पृ० २६।

इन दोनों निदानों के सम्यग् ज्ञान के लिए आचार्य बुद्धघोष ने कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाये हैं और उनका समाधान भी प्रस्तुत किया है[1], यथा–यह अभिधर्म किससे प्रभावित है, कहाँ परिपक्व हुआ है, कहाँ अधिगत (प्राप्त) हुआ है, कब अधिगत हुआ है, किसने अधिगत किया है, कहाँ विचित (अन्वेषित) हुआ है, कब विचित हुआ है, किसने अन्वेषण किया है, कहाँ देशित हुआ है, किस पुद्गल के लिए देशना की गई है, किस लाभ के लिए देशना की गई है, किसने इसका प्रतिग्रहण किया है, कौन इसे सीखते हैं, कौन शिक्षित हैं, कौन धारण करते हैं, यह किसका वचन है तथा यह किसके द्वारा लाया गया है ?

समाधान—बोधि के प्रति अभिनीहार करनेवाली श्रद्धा से प्रभावित है। ५५० जातकों में परिपक्व हुआ है। बोधिवृक्ष के मूल में अधिगत हुआ है। वैशाखी पूर्णिमा की रात्रि में अधिगत हुआ है। सर्वज्ञ बुद्ध ने प्राप्त किया है। बोधिमण्ड में अन्वेषण (विचार) किया गया है। रत्नगृह सप्ताह में अन्वेषित हुआ है। सर्वज्ञ बुद्ध ने अन्वेषण किया है। त्रायस्त्रिंश देवभूमि में देशना की। देवताओं के लिए देशना की गई। चतुर्विध ओघ से निस्तरण (निर्याण) के लिए देवताओं ने ग्रहण किया। शैक्ष और कल्याण पृथग्जन शिक्षा ग्रहण करते हैं। क्षीणास्रव अर्हत् शिक्षित हैं। जिनमें योग्यता है, वे धारण करते हैं। अर्हद् भगवान् सम्यक् संबुद्ध का वचन है। आचार्य परम्परा द्वारा यह लाया गया है।

आभिधार्मिकों की वह आचार्य परम्परा इस प्रकार है—सारिपुत्त, भद्दजि, सोभित, पियजाली, पियपाल, पियदस्सी, कोसियपुत्त, सिग्गव, सन्देह, मोग्गलीपुत्त, सुदत्त, धम्मिय, दासक, सोणक और रेवत। इस आचार्य परम्परा ने जम्बूद्वीप (भारत) में बुद्ध के उपदेश काल से लेकर तृतीय संगीति पर्यन्त अभिधर्म को पहुँचाया। तदनन्तर उनके शिष्यों, अनुशिष्यों ने इस क्रम को आगे भी जारी रखा। इसके बाद महिन्द, इट्टिय, उत्तिय, सम्बल, पंडित, भद्दनाम आदि आचार्य इसे (अभिधर्म को) सिंहलद्वीप ले गए। तदनन्तर इन आचार्यों के शिष्यों अनुशिष्यों की परम्परा ने इसे आज तक जीवित रखा है।

कथावत्थु का बुद्धवचनत्व—यह सर्वविदित है कि अशोककालीन तृतीय संगीति के अवसर पर संगीति के अध्यक्ष मोग्गलीपुत्त तिस्स ने भिन्न मतावलम्बी १७ निकायों के मतों का निराकरण करते हुए स्थविरवादी मतों के अनुसार कथावत्थु नामक प्रकरण की रचना की। ऐसी स्थिति में उसे अभिधर्मपिटक के अन्तर्गत बुद्धवचन मानना कथमपि समीचीन नहीं है ?

यह प्रश्न आज ही नहीं, बुद्धघोष के समय में भी ज्वलन्त रूप से विद्यमान था। स्थविरवादी परम्परा जो सम्पूर्ण अभिधर्म पिटक को बुद्धवचन मानती है,

---

१. द्र०—अट्ठसालिनी, पृ० २७।

वह भी जिस रूप में आज कथावस्तु उपलब्ध है, उसे आचार्य-भाषित ही मानती है, किन्तु उसका कहना है, कि भगवान् बुद्ध ने अभिधर्म की देशना करते समय कथावस्तु की देशना के अवसर पर केवल मातिकाओं (मातृकाओं) की स्थापना की और कहा कि मेरे परिनिर्वाण के २१८ वर्ष बाद मोग्गलीपुत्त तिस्स महास्थविर परवादियों का खण्डन और स्वकीयवाद का मण्डन करते हुए इन मातृकाओं का विस्तृत व्याख्यान करेंगे। मोग्गलीपुत्त तिस्स महास्थविर ने भी इस ग्रन्थ का व्याख्यान करते समय अपने स्वयंभूत ज्ञान से नहीं, अपितु शास्ता के अधिष्ठान से उनके द्वारा प्रदर्शित नय के अनुसार स्थापित मातृकाओं के आधार पर ही व्याख्यान किया। अतः शास्ता द्वारा स्थापित मातृकाओं के आधार पर देशित होने से आचार्य-भाषित होने पर भी वह बुद्धभाषित ही है[1]।

कुछ विद्वानों का कथन है कि इसमें अशोक के काल के बाद प्रादुर्भूत अन्धक, अपरशैलीय, पूर्वशैलीय, राजगिरिक, सिद्धार्थक, वैपुल्यक, उत्तरापथिक, हेतुवादी आदि निकायों का भी खण्डन है, अतः यह ग्रन्थ तृतीय संगीति से भी परवर्ती रचना है। किन्तु जिन निकायों (प्रस्थानों) का ऊपर उल्लेख किया गया है, कथावत्थु में उनके नामों का उल्लेख नहीं है, वहाँ तो केवल सिद्धान्तमात्र का उल्लेख है। सम्प्रदायों के नामों का उल्लेख तो अट्ठकथाचार्य बुद्धघोष ने पाँचवी शताब्दी में किया है। अतः यह सम्भव है कि अशोक के समय सिद्धान्तमात्र का अस्तित्व हो, अभी वे विचार इतने परिपक्व न हुए हों कि उनके साथ किसी निकाय का नाम जोड़ा सके। बुद्धघोष का समय आते आते उन विचारों ने निकाय का स्वरूप ग्रहण कर लिया हो। अतः कथावत्थु में निकायों के नाम का उल्लेख न होने से तथा अट्ठकथाकार द्वारा अशोक के बाद के निकायों का उल्लेख किया जाने से 'यह रचना तृतीय संगीति के बाद की है'—ऐसा नहीं माना जा सकता।

सर्वास्तिवादी अभिधर्मपिटक—यह कहा जा चुका है कि स्थविरवादियों एवं सर्वास्तिवादियों के दो पिटकों सूत्र और विनय में पर्याप्त समानता है, किन्तु यही बात अभिधर्मपिटक के बारे में सत्य नहीं हैं। सर्वास्तिवादियों के अभिधर्मपिटक के सारे ग्रन्थ चीनी भाषा में सुरक्षित हैं। कभी वे मूलतः संस्कृत भाषा में थे, किन्तु आज कोई भी ग्रन्थ पूर्णतया मूल रूप में उपलब्ध नहीं है। सर्वास्तिवादियों का कथन है कि यद्यपि अभिधर्मपिटक मूलतः बुद्धवचनों पर आधृत है, तथापि बाद में आचार्यों ने उनका संकलन किया है। स्थविरवादियों की भाँति उनके अभिधर्मग्रन्थों की संख्या भी सात ही है।

---

१. द्र०—अट्ठसालिनी, पृ० ४–५

ग्रन्थ	आचार्य
१. ज्ञानप्रस्थानशास्त्र	आर्य कात्यायन
२. प्रकरणपाद	स्थविर वसुमित्र
३. विज्ञानकायपाद	स्थविर देवशर्मा
४. धर्मस्कन्धपाद	आर्य शारीपुत्र
५. प्रज्ञप्तिशास्त्रपाद	आर्य मौद्गल्यायन
६. धातुकायपाद	पूर्ण (या वसुमित्र)
७. संगीतिपर्यायपाद	महाकौष्ठिल्ल

पालि अभिधर्मपिटक के ग्रन्थों के साथ इनका पर्याप्त नामसाम्य परिलक्षित होता है यथा—

पालि अभिधर्मपिटक	सर्वास्तिवादी अभिधर्मपिटक
१. धम्मसंगणि	४. धर्मस्कन्धपाद
२. विभंग	३. विज्ञानकायपाद
३. पुग्गलपञ्ञत्ति	५. प्रज्ञप्तिशास्त्र
४. धातुकथा	६. धातुकायपाद
५. पट्ठान	१. ज्ञानप्रस्थानशास्त्र
६. यमक	७. संगीतिपर्यायपाद
७. कथावत्थु	२. प्रकरणपाद

नामों में पर्याप्त साम्य होने पर भी विषयगत साम्य अत्यल्प है। दोनों निकायों के अभिधर्मपिटक अपने अपने सूत्रपिटक पर आधृत हैं और दोनों के सूत्र-पिटकों में अधिक वैषम्य नहीं है, अतः सामान्यतः कुछ साम्य तो अवश्य है, किन्तु एक निकाय के ग्रन्थविशेष का दूसरे निकाय के जिस ग्रन्थविशेष से नामसाम्य है, उन दोनों के विषय अवश्य समान नहीं हैं।

पालि अभिधर्मपिटक का संक्षिप्त परिचय

१. **धम्मसंगणि**—यह अभिधर्मपिटक का मूल ग्रन्थ माना जाता है। इसमें समस्त धर्मों का कुशल, अकुशल एवं अव्याकृत जाति में विभाजन कर उनकी व्याख्या की गई है। यह बौद्ध नीतिवाद की मनोवैज्ञानिक व्याख्या कही जा सकती है। इसमें समस्त धर्मों का १२२ मातिकाओं में विभाजन किया गया है। इसमें २२ त्रिक मातृकाएं तथा १०० द्विक मातृकाएं हैं। समस्त ग्रन्थ चार भागों में विभक्त है यथा—चित्तकाण्ड, रूपकाण्ड, निक्खेप काण्ड एवं अत्थुद्धार काण्ड।

चित्तकाण्ड में चित्त का कामावचर, रूपावचर, अरूपावचर, एवं लोकोत्तर इन भूमियों में विभाजन वर्णित है। कामावचर चित्त कुशल, अकुशल, विपाक एवं क्रिया इन चार भागों में विभक्त है। इनमें कुशल चित्त ८, अकुशल १२, कुशल विपाक १६, अकुशल विपाक ७, एवं क्रिया चित्त ११ हैं। रूपावचर चित्तों में कुशल ५, विपाक ५ एवं क्रिया चित्त ५ हैं। अरूपावचर चित्तों में कुशल ४, विपाक ४ एवं क्रिया चित्त ४ हैं। लोकोत्तर चित्तों में ४ कुशल एवं ४ विपाक चित्तों का वर्णन है। इस प्रकार चित्त काण्ड में ८९ चित्तों का सविस्तर वर्णन उपलब्ध होता है।

रूपकाण्ड में रूपी धर्मों का 'एकविध रूपसंग्रह, द्विविध रूपसंग्रह' इत्यादि मातिकाओं में विभाजन करके सविस्तर वर्णन किया गया है।

निक्षेपकाण्ड में समस्त धर्मों का मूल, स्कन्ध (मूलतः स्कन्धतः) इत्यादि प्रकार से विभाजन करके उनका विस्तृत व्याख्यान किया गया है।

अन्त में समस्त बुद्धवचनों का सारभूत सरणद्विक पर्यन्त अत्थुद्धार (अर्थोद्धार) काण्ड प्रतिपादित है।

२. विभंग—यह १७ भागों में विभक्त है, यथा-खन्धविभंग, आयतन विभंग धातु विभंग, सच्चविभंग, इन्द्रियविभंग, पच्चयाकारविभंग, सतिपट्ठानविभंग, सम्पप्पधानविभंग, इद्धिपादविभंग, बोज्झंगविभंग, मग्गविभंग, झानविभंग, अप्पमञ्ञाविभंग, सिक्खापदविभंग, पटिसम्भिदाविभंग, ञाणविभंग, खुद्दकवत्थुविभंग और धम्महदयविभंग।

खन्धविभंग सुत्तन्तभाजनीय, अभिधम्मभाजनीय एवं पञ्हापुच्छक—इस प्रकार तीन भागों में विभक्त है। इसी प्रकार अन्य विभंग भी तीन तीन नयों में विभक्त हैं। इन्द्रियविभंग में सुत्तन्तभाजनीय नहीं है। पच्चयाकारविभंग में पञ्हापुच्छक नहीं है। सिक्खापद विभंग में भी सुत्तन्तभाजनीय नहीं है। ञाणविभंग दश प्रकार से विभक्त है। इसी प्रकार खुद्दकविभंग भी दश प्रकार से विभक्त है। धम्महदयविभंग तीन प्रकारों में विभक्त है।

३. धातुकथा—इस ग्रन्थ में धर्मों का नयमातिका, अब्भन्तरमातिका, नयमुखमातिका, लक्खणमातिका और बाहिरमातिका—इन पंचविध मातिकाओं में विभाजन कर उनका संग्रह, असंग्रह, सम्प्रयोग, विप्रयोग आदि १४ प्रकार से संग्रह कर विस्तार पूर्वक व्याख्यान किया गया है।

४. पुग्गलपञ्ञत्ति—पुद्गल आत्मा को कहते हैं। बौद्धों में द्रव्यसत् न होकर आत्मा नितान्त प्रज्ञप्तिसत् है। इस ग्रन्थ में पुद्गल का अनेक प्रकार से वर्गीकरण किया गया है। एकविध पुद्गल-प्रज्ञप्ति से लेकर दशविध पुद्गल-प्रज्ञप्ति तक पुद्गलों का संग्रह कर उनका सविस्तर प्रतिपादन किया गया है।

स्कन्ध-प्रज्ञप्ति, आयतन-प्रज्ञप्ति, धातु-प्रज्ञप्ति, सत्य-प्रज्ञप्ति, इन्द्रिय-प्रज्ञप्ति और पुद्गल-प्रज्ञप्ति –इस प्रकार प्रज्ञप्तियाँ ६ भागों में विभक्त हैं।

५. **कथावत्थु**—तृतीय संगीति के अवसर पर सम्राट् अशोक के गुरु मोग्गलीपुत्त तिस्स महास्थविर ने इसका व्याख्यान किया है। यह ग्रन्थ २३ अध्यायों में विभक्त है। अशोक के समय बौद्ध धर्म १८ निकायों में विभक्त था। उनमें से स्थविरवाद को छोड़कर शेष १७ निकायों का इस ग्रन्थ में खण्डन किया गया है तथा स्थविरवाद के मन्तव्यों का प्रतिपादन किया गया है। इसमें निकायों के नामों का उल्लेख नहीं है, केवल उनके सिद्धान्तों का ही उल्लेख है। निकाय के नामों का उल्लेख बाद में अट्ठकथाकार बुद्धघोष ने किया है।

कहा गया है कि अशोक के समय बौद्ध धर्म अनेक निकायों में विभक्त हो गया था। वे लोग अपने-अपने मत के अनुसार बुद्ध के मन्तव्यों की व्याख्या करते थे। यह समझ पाना मुश्किल हो गया था कि बुद्ध का असली मन्तव्य क्या है? इसी उद्देश्य को लक्ष्य कर महाराज अशोक ने तृतीय संगीति का आयोजन किया था। स्थविरों ने स्थविरवाद को ही बुद्ध के मन्तव्यों का असली व्याख्याता ठहराया। संगीति के अध्यक्ष मोग्गलीपुत्त तिस्स ने परवादियों के २१६ दार्शनिक सिद्धान्तों को पूर्वपक्ष में रख कर उनका स्थविरवादी दृष्टिकोण से निराकरण किया। इस ग्रन्थ में कुल १००० सूत्र हैं, जिनमें ५०० सूत्र स्वमत को तथा ५०० सूत्र परमत को प्रदर्शित करते हैं।

६. **यमक**—यह एक विशाल ग्रन्थ है। यमक का अर्थ युगल (युग्म या जोड़ा) है। इसमें प्रत्येक प्रश्न जोड़े में रखा गया है। इसी शैली का आदि से अन्त तक निर्वाह किया गया है। समस्त ग्रन्थ १० यमकों में विभक्त है, यथा— मूल यमक, स्कन्ध यमक, आयतन यमक, धातु यमक, सत्य यमक, संस्कार यमक, अनुशय यमक, चित्तयमक, धर्म यमक एवं इन्द्रिय यमक।

७. **पट्ठान**—इसे 'महाप्रकरण' भी कहते हैं। यह आकार में अत्यधिक विशाल तथा समझने में अत्यन्त दुरूह है। इसमें २४ प्रत्ययों का विस्तारपूर्वक प्रतिपादन किया गया है। २४ प्रत्यय ये हैं—हेतु प्रत्यय, आलम्बन प्रत्यय, अधिपति प्रत्यय, अनन्तर प्रत्यय, समनन्तर प्रत्यय, सहजात प्रत्यय, अन्योन्य प्रत्यय, निःश्रय प्रत्यय, उपनिःश्रय प्रत्यय, पूर्वजात प्रत्यय, पश्चाज्जात प्रत्यय, आसेवन प्रत्यय, कर्मप्रत्यय, विपाक प्रत्यय, आहार प्रत्यय, इन्द्रियप्रत्यय, ध्यान-प्रत्यय, मार्गप्रत्यय, सम्प्रयुक्त प्रत्यय, विप्रयुक्त प्रत्यय, अस्तिप्रत्यय, नास्ति प्रत्यय, विगतप्रत्यय और अविगत प्रत्यय।

इस ग्रन्थ में प्रधानतः २२ त्रिक और १०० द्विक मातृकाएँ हैं। सूत्रपिटकानुसारी ४२ मातृकाएँ भी हैं। यह ग्रन्थ ४ प्रकार के पट्ठानों में विभक्त है,

यथा—अनुलोम पट्ठान, पच्चनिय पट्ठान, अनुलोम-पच्चनीय पट्ठान तथा पच्चनिय-अनुलोम पट्ठान।

अनुलोम पट्ठान में ६ प्रकार के पट्ठान हैं, यथा—(१) त्रिक मातृकाओं के आधार पर 'त्रिक पट्ठान, (२) द्विक मातृकाओं के आधार पर 'द्विक पट्ठान' (३) २२ त्रिकों को १०० द्विकों में मिलाकर 'त्रिक-द्विक पट्ठान,' (४) १०० द्विकों को २२ त्रिकों में मिलाकर 'द्विक-त्रिक पट्ठान' (५) त्रिकों को त्रिकों में मिलाकर 'त्रिक-त्रिक पट्ठान' तथा (६) द्विकों को द्विकों में मिलाकर 'द्विक-द्विक पट्ठान'।

इसी प्रकार पच्चनिय, अनुलोम-पच्चनिय और पच्चनिय-अनुलोम पट्ठान में भी ६-६ पट्ठान वर्णित हैं। इस प्रकार इसमें कुल २४ पट्ठान प्रतिपादित हैं।

पिटक तीन ही

भगवान् बुद्ध की देशना त्रिविध है, उसका शासन त्रिविध है, कथाएँ तीन प्रकार की हैं, प्रहाण भी तीन हैं तथा एक-एक पिटक में ४-४ गाम्भीर्य हैं, अतः तीन ही पिटक होते हैं।

त्रिविध देशना—भगवान् की देशना तीन हैं, यथा—आणा (आज्ञा) देशना, वोहार (व्यवहार) देशना तथा परमत्थ (परमार्थ) देशना। अतः पिटक भी तीन ही हैं।

आज्ञा देने योग्य भगवान् बुद्ध द्वारा उपदिष्ट विनयपिटक आज्ञाबहुल होने से 'आणा'-देशना है।

व्यवहार कुशल भगवान् बुद्ध द्वारा बहुलतया उपायकौशल्य नय से उपदिष्ट सूत्रपिटक 'वोहार'-देशना है।

परमार्थकुशल भगवान् द्वारा प्रमुखतया परमार्थ धर्मों के यथार्थस्वरूपावबोध के लिए उपदिष्ट अभिधर्मपिटक 'परमत्थ'-देशना है।

त्रिविध शासन बुद्ध का शासन तीन प्रकार का है, अतः पिटक भी तीन हैं, यथा—यथापराध शासन, यथानुलोम शासन तथा यथाधम्मशासन।

विनयपिटक यथापराध शासन है, क्योंकि इसमें अधिक अपराधवाले सत्त्व शासित किए जाते हैं।

सूत्रपिटक यथानुलोमशासन है, क्योंकि इसमें विविध प्रकार के अध्याशय वाले, अनेक प्रकार के अनुशय वाले, अनेक प्रकार की चर्या और और अधिमुक्ति वाले सत्त्व अपने-अपने अध्याशय, अनुशय, चर्या और अधिमुक्ति के अनुसार शासित किये जाते हैं।

अभिधर्मपिटक यथाधम्म (यथाधर्म) शासन है, क्योंकि इस पिटक में चित्त, चैतसिक और रूप आदि धर्मसमूह में 'अहम्' और 'मम' संज्ञावाले सत्त्व अर्थात् प्राणी धर्मों के यथार्थ स्वभाव के अनुरूप शासित किये जाते हैं।

त्रिविध कथा—कथाएँ तीन हैं, अतः पिटक भी तीन हैं, यथा—संवरासंवर कथा, दिट्ठिविनिवेठन कथा एवं नाम-रूपपरिच्छेद कथा।

विनयपिटक में अत्याचरण के प्रतिपक्ष संवर (संयम) और असंवर का कथन किया गया है, अतः विनयपिटक 'संवरासंवरकथा' है।

सूत्रपिटक में ६२ प्रकार की मिथ्यादृष्टियों की प्रतिपक्ष दृष्टिविघातक कथाएँ उपदिष्ट हैं, अतः सूत्रपिटक 'दिट्ठिविनिवेठन कथा' है।

अभिधर्मपिटक में राग आदि क्लेशों का प्रतिपक्ष नाम-रूपपरिच्छेद कहा गया है, अतः अभिधर्मपिटक 'नाम-रूपपरिच्छेदकथा' है।

अपि च, विनयपिटक करुणाप्रधान है, सूत्रपिटक करुणा और प्रज्ञा प्रधान है तथा अभिधर्मपिटक प्रज्ञाप्रधान है।

त्रिविध शिक्षा—भगवान् की शिक्षा तीन प्रकार की है, अतः पिटक भी तीन ही हैं, यथा—अधिशील शिक्षा; अधिचित्त शिक्षा तथा अधिप्रज्ञ शिक्षा। विनयपिटक में विशेषतः अधिशील शिक्षा प्रतिपादित है। सूत्रपिटक में प्रधानतः अधिचित्त शिक्षा उपदिष्ट है। तथा अभिधर्मपिटक में प्रमुखतः अधिप्रज्ञ शिक्षा अभिहित है।

त्रिविध प्रहाण—तीन प्रकार के प्रहाण हैं, यथा—वीतिक्कम (व्यतिक्रम) प्रहाण, पर्युट्ठान (पर्युत्थान) प्रहाण एवं अनुशय प्रहाण। प्रहाण की दृष्टि से पिटक भी तीन ही हैं।

विनयपिटक में व्यतिक्रम प्रहाण उपदिष्ट है, क्योंकि इस पिटक में प्रतिपादित शील व्यतिक्रम करनेवाले क्लेशों का प्रतिपक्ष है।

सूत्रपिटक में पर्युत्थान प्रहाण वर्णित है, क्योंकि इस पिटक में प्रतिपादित समाधि पर्युत्थान क्लेशों की प्रतिपक्ष है।

अभिधर्मपिटक में अनुशयप्रहाण प्रतिपादित है, क्योंकि इस पिटक में अभिहित प्रज्ञा अनुशय क्लेशों की प्रतिपक्ष है।

विनयपिटक में क्लेशों का तदङ्गप्रहाण (अस्थायी प्रहाण) तथा अन्य सूत्र एवं अभिधर्म पिटक में क्रमशः उनका विष्कम्भण और समुच्छेद प्रहाण प्रतिपादित है। विनयपिटक में दुश्चरित आदि क्लेशों का प्रहाण निर्दिष्ट है तथा अन्य दो पिटकों में तृष्णा; दृष्टि आदि क्लेशों का प्रहाण है।

चतुर्विध गाम्भीर्य—उपर्युक्त तीन पिटकों में से प्रत्येक में चार चार प्रकार के गाम्भीर्य हैं, यथा—धर्म, अर्थ, देशना एवं प्रतिवेध।

उनमें से बुद्धवचन 'धर्म' हैं। उनका अर्थ ही 'अर्थ' है। उनकी देशना 'देशना' है तथा उन बुद्ध वचनों का यथार्थ अवबोध 'प्रतिवेध' है।

अथवा—धर्म 'हेतु' है। अर्थ हेतुओं का 'फल' है। देशना 'प्रज्ञप्ति' है। अर्थात् धर्मों का अनुलोम, प्रतिलोम, संक्षेप, विस्तार आदि क्रम से कथन। प्रतिवेध 'अभिसमय' है। अर्थात् उन कहे हुए धर्मों का स्वलक्षण याने अविपरीत स्वभाव का अवबोध।

इन तीनों पिटकों में जो धर्म और अर्थ कहे गये हैं, उन धर्मों और अर्थों का श्रोताओं में यथार्थ अवबोध होने के लिये जो देशना की गई है तथा धर्मों का जो अविपरीत अवबोध अर्थात् प्रतिवेध है, ये सब जिनमें कुशल सम्भार उपचित नहीं है, ऐसे दुष्प्रज्ञ पुद्गलों के लिए दुर्ज्ञेय हैं। अतः इन्हें गम्भीर कहा गया है।

देशना—सासन—कथाभेदं तेसु यथारहं।
सिक्खा—पहान—गम्भीरभावं च परिदीपये[1]॥

२. निकाय

पहले कहा गया है कि संगीतिकारक महास्थविरों ने बुद्धवचनों का विविध प्रकार से वर्गीकरण किया है, यथा—पिटक, निकाय, अंग आदि। उनमें से एक प्रकार का वर्गीकरण 'पिटक' कह दिया गया है। अब दूसरे प्रकार का वर्गीकरण 'निकाय' कहा जा रहा है। अर्थात् समस्त बुद्धवचनों का संग्रह पाँच निकायों में भी किया जा सकता है। वे पाँच निकाय ये हैं, यथा—दीघनिकाय, मज्झिमनिकाय, संयुत्तनिकाय, अंगुत्तर निकाय तथा खुद्दक निकाय।

इनमें से प्रथम चार निकाय तो ऊपर सूत्रपिटक के वर्णन प्रसंग में कह दिये गये हैं। पंचम खुद्दकनिकाय में पूर्वोक्त १५ ग्रन्थों के अतिरिक्त समस्त विनयपिटक और अभिधर्म पिटक का भी ग्रहण किया जाता है। जैसे कहा भी गया है—

ठपेत्वा चतुरो पेते निकाये दीघ-आदिके।
तदञ्ञं बुद्धवचनं निकायो खुद्दको मतो ति[2]॥

३. अंग

समस्त बुद्धवचनों का विभाजन नौ अंगों में भी किया जाता है, यथा—सुत्त, गेय्य, वेय्याकरण, गाथा, उदान, इतिवृत्तक, जातक, अब्भुतधम्म एवं वेदल्ल।

---

१. अट्ठसालिनी, पृ० २०।
२. अट्ठसालिनी, पृ० २२।

इनमें से दीघनिकाय, सुत्तनिपात, निद्देस, खन्धक, परिवार आदि जितने बुद्धवचन 'सूत्र' के नाम से गद्य में हैं, वे सब 'सुत्त' कहलाते हैं। गाथाओं से युक्त सूत्र 'गेय्य' हैं। 'वेय्याकरण' वस्तुतः व्याख्यापरक साहित्य का नाम है। इसमें सम्पूर्ण अभिधर्मपिटक और वे सब सूत्र संगृहीत हो जाते हैं, जो अन्य आठ अंगों में संगृहीत नहीं होते। धम्मपद, थेरगाथा, थेरीगाथा आदि पद्य में रचित अंश 'गाथा' है। सौमनस्य एवं ज्ञान से युक्त होकर समय-समय पर भगवान् बुद्ध के मुख से गाथा के रूप में निकले हुए भावनामय प्रीति-उद्गार 'उदान' हैं। 'वुत्तं हेतं भगवता' (भगवान् ने ऐसा कहा) इत्यादि प्रकार से प्रवृत्त ११० सूत्रान्त 'इतिवुत्तक' हैं। 'जातक' का अर्थ है, बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएँ। अपण्णक आदि ५५० कथाएँ 'जातक' हैं। 'चत्तारो मे भिक्खवे, अच्छरिया अब्भुतधम्मा आनन्दे' (भिक्षुओं, आनन्द में ये चार आश्चर्यजनक अद्भुत धर्म हैं)—इत्यादि प्रकार से प्रवृत्त अद्भुत वस्तुओं का निरूपण करने वाले सूत्रान्त 'अब्भुतधम्म' हैं। 'वेदल्ल' वे उपदेश हैं, जो प्रश्न और उत्तर के रूप में उपलब्ध होते हैं। मज्झिम निकाय के चुल्लवेदल्ल, महावेदल्ल, सम्मादिट्ठि तथा सक्कपञ्ह आदि सूत्र इस विभाग के अन्तर्गत आते हैं। बुद्धवचनों का यह ९ प्रकार का संग्रह विषय की दृष्टि से है, ग्रन्थों की दृष्टि से नहीं।

४. ८४,००० धर्मस्कन्ध

बुद्ध वचनों के विभिन्न वर्गीकरणों में संग्रह का यह भी एक प्रकार है। इसमें समस्त बुद्धवचन ८४,००० धर्मस्कन्धों में विभक्त किये जाते हैं। स्थविरवाद 'विभज्यवाद' भी कहलाता है। यह उनकी विभाजन-प्रियता का ही एक उदाहरण है। सम्राट् अशोक द्वारा ८४,००० स्तूपों के निर्माण का भी यही आधार है।

एक अनुसन्धिवाला सूत्र एक धर्मस्कन्ध कहलाता है। जिसमें अनेक अनुसन्धियाँ होती हैं, वहाँ अनुसन्धियों के अनुपात में धर्मस्कन्धों की गणना की जाती है। गाथाबद्ध बुद्धवचनों में 'प्रश्न' एक धर्मस्कन्ध होता है और उसका 'उत्तर' दूसरा धर्मस्कन्ध। अभिधर्म में तिकपट्ठान, दुकपट्ठान आदि पृथक्-पृथक् धर्मस्कन्ध होते हैं। विनयपिटक में वत्थु (वस्तु), मातिका, पदभाजनीय, आपत्ति, अनापत्ति, अन्तरापत्ति होते हैं। ये सब विभाग पृथक्-पृथक् धर्मस्कन्ध होते हैं। इस प्रकार धर्मस्कन्ध कुल ८४,००० हो जाते हैं। इनमें ८२,००० धर्मस्कन्ध भगवान् बुद्ध द्वारा उक्त हैं। तथा २००० धर्मस्कन्ध शारीपुत्र-आदि भिक्षुओं के वचन हैं, यथा—

द्वासीतिं बुद्धतो गण्हिं द्वे सहस्सानि भिक्खुतो।
चतुरासीति सहस्सानि ये मे धम्मा पवत्तिनो'ति[1] ॥

१. द्र०-अट्ठसालिनी, पृ० २३।

सर्वास्तिवाद आदि अन्य निकायो में बुद्ध वचनों का ८०,००० धर्मस्कन्धों में विभाजन उपलब्ध होता है। जैसा कि अभिधर्मकोश में उल्लिखित है—

धर्मस्कन्धसहस्राणि यान्यशीतिं जगौ मुनिः[1]।

बुद्धवचनों का उपर्युक्त पिटक, निकाय, अङ्ग एवं धर्मस्कन्ध—इन चारों प्रकारों में वर्गीकरण अत्यन्त प्राचीन है। इसकी पुष्टि स्वयं त्रिपिटक, अशोक के शिलालेख, मिलिन्द प्रश्न, दीपवंस, महावंस, गन्धवंस, अट्ठकथा आदि ग्रन्थों से होती है। आचार्य बुद्धघोष के अनुसार ये चारों विभाजन प्रथम संगीति के समय ही कर दिये गये थे। उनका कहना है कि महाकाश्यप प्रमुख भिक्षुसंघ ने प्रथम संगीति काल में ही यह प्रथम बुद्धवचन है, यह मध्यम बुद्धवचन है, यह अन्तिम बुद्धवचन है, यह विनयपिटक है, यह सूत्रपिटक है, यह अभिधर्मपिटक है, यह दीघनिकाय है…यह खुद्दकनिकाय है, ये 'सुत्त' आदि नौ अंग हैं, ये ८४,००० धर्मस्कन्ध हैं"—इस प्रकार विभाजन करके बुद्धवचन व्यवस्थापित कर दिये थे[2]।

प्रथम बुद्धवचन—बुद्धत्व प्राप्ति के अनन्तर बोधिवृक्ष के नीचे सात दिन तक एक ही आसन पर बैठे हुए भगवान् बुद्ध द्वारा कथित निम्न उदान प्रथम बुद्धवचन है, यथा—

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
अथस्स कंखा वपयन्ति सब्बा यतो पजानाति सहेतुधम्मं॥

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
अथस्स कंखा वपयन्ति सब्बा यतो खयं पच्चयानं अवेदि॥

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
विधूपयं तिट्ठति मारसेनं सूरो व ओभासयमन्तलिक्खंति[3]॥

किन्तु धम्मपदभाणक स्थविर उपर्युक्त वचन को प्रथम बुद्धवचन मानने के पक्ष में नहीं हैं। उनके मतानुसार निम्न वचन प्रथम बुद्धवचन है, यथा—

अनेकजातिसंसारं सन्धाविस्सं अनिब्बिसं।
गहकारकं गवेसन्तो दुक्खा जाति पुनप्पुनं॥

---

१. अभिधर्मकोश, १।२५, पृ० ३९।

२. एवमेतं सब्बंपि बुद्धवचनं पंचसतिकसंगीतिकाले संगायन्तेन महाकस्सपपमुखेन वसीगणेन इदं पठमं बुद्धवचनं……इदं विनयपिटकं…अयं दीघनिकायो…इमानि सुत्तादीनि नवंगानि, इमानि चतुरासीति धम्मक्खन्धसहस्सानीति इमं पभेदं ववत्थापेत्वा व संगीतं। द्र०- अट्ठसालिनी, पृ० २३।

३. महावग्ग (विनयपिटक), पृ० ३–४।

गहकारक, दिट्ठोसि पुन गेहं न काहसि।
सब्बा ते फासुगा भग्गा गहकूटं विसंखतं॥
विसंखारगतं चित्तं तण्हानं खयमज्झगा[१]॥

अन्तिम बुद्धवचन—महापरिनिर्वाण होते समय कुशीनगर में दो शालवृक्षों के बीच परिनिर्वाणमंच पर लेटे हुए भगवान् बुद्ध का भिक्षुओं के प्रति निम्न उपदेश अन्तिम बुद्धवचन है, यथा—

"हन्द, दानि भिक्खवे, आमन्तयामि वो; वयधम्मा संखारा, अप्पमादेन सम्पादेथाति"[२]।

मध्यम बुद्धवचन

इन प्रथम और अन्तिम वचनों के बीच भगवान् तथागत द्वारा पुष्पमाला गूँथने के समान, रत्नावलि गूँथने के समान उपदिष्ट अमृतत्व का प्रकाशक सम्पूर्ण सद्धर्म मध्यम बुद्धवचन है।

इस प्रकार संगीतिकारक महास्थविरों द्वारा संगृहीत समस्त बुद्धवचन पिटक की दृष्टि से तीन पिटक, निकाय की दृष्टि से पाँच निकाय, अंग की दृष्टि से नौ अङ्ग तथा धर्मस्कन्धों की दृष्टि से ८४,००० धर्मस्कन्ध हैं।

उनमें से अभिधर्मपरक बुद्धवचन पिटक की दृष्टि से अभिधर्मपिटक, निकाय की दृष्टि से खुद्दकनिकाय, अङ्ग की दृष्टि से वेय्याकरण, धर्मस्कन्ध की दृष्टि से कुछ सहस्र धर्मस्कन्ध हैं।

अभिधर्म का अध्ययन

सात अभिधर्मशास्त्रों की चर्चा ऊपर की गई है। उनमें अनेक विषयों का वर्णन है, फिर भी परमार्थतया चार ही पदार्थ अभिधर्म शास्त्रों के मुख्य प्रतिपाद्य हैं, चित्त, चैतसिक, रूप एवं निर्वाण। इन सात ग्रन्थों में धम्मसंगणि शीर्षस्थानीय है। शेष ग्रन्थों में उन्हीं विषयों का विभिन्न शैलियों में वर्णन है। बौद्धों की विभाजनप्रियता सर्वप्रसिद्ध है। विभिन्न दृष्टियों से योग-विभाग करके वे वस्तु के यथार्थ स्वरूप का निर्धारण करते हैं। इसलिये वे विभज्यवादी कहलाते हैं।

धम्मसंगणि में उपर्युक्त चार अभिधर्मार्थों का अनेकविध संग्रह एवं विभाजन प्रतिपादित है, यथा—स्कन्ध, आयतन, धातु एवं सत्य आदि। समस्त धर्मों का वर्गीकरण इनमें हो जाता है। धम्मसंगणि के अध्ययन से पूर्व यह जान लेना आवश्यक होता है कि किन धर्मों का किसमें संग्रह होता है, अन्यथा ग्रन्थ

१. खुद्दकनिकाय, प्रथमभाग (धम्मपद), पृ० ३२।
२. दीघनिकाय, द्वि० भा०, पृ० ११९।

अत्यन्त दुरूह प्रतीत होता है। ग्रन्थ में गति नहीं हो पाती। अभिधर्म ग्रन्थों में धर्मों का योग-विभाग गणितीय पद्धति से निश्चित नियमों के आधार पर होता है। एक बार उन नियमों का परिज्ञान हो जाने पर अभिधर्म का अध्ययन अत्यन्त रुचिकर एवं आसान हो जाता है। अन्यथा पदार्थों के नामों के अतिरिक्त कुछ समझ में नहीं आता। यही कारण है कि भारतवर्ष में पालि की संस्थाओं एवं विभागों में कहीं भी अभिधर्म का अध्ययन नहीं होता। कहीं भी पाठ्यक्रम में धम्मसंगणि, धातुकथा, यमक, पट्ठान आदि मूलग्रन्थ निर्धारित नहीं हैं। वस्तुतः भारत में अभी तक अभिधर्म का विधिवत् अध्ययन प्रारम्भ ही नहीं हुआ है।

धम्मसंगणि में २२ त्रिक मातृकाएँ (तिक मातिका) एवं १०० द्विक (दुक मातिका) मातृकाएँ हैं। पूरे ग्रन्थ में इन्हीं का विस्तार है। पालि अभिधर्म के अनुसार ८९ या १२१ चित्त, ५२ चैतसिक, २८ रूप एवं १ निर्वाण इतने ही परमार्थ धर्म हैं। ग्रन्थ के प्रारम्भ में मातृकाएँ हैं। मातृकाएँ एक प्रकार की विषयसूची है। मातृकाओं के स्थल पर ही यदि यह समझ लिया जाए कि यहाँ कितने चित्त, कितने चैतसिक, कितने रूप, कितने स्कन्ध, आयतन, धातु, सत्य आदि संगृहीत होंगे तो ग्रन्थ के भीतर वही बातें, वे ही धर्म उपलब्ध होंगे और ग्रन्थ अत्यन्त आसान प्रतीत होगा।

(१) आभिधार्मिकों ने चित्त-पदार्थ का भूमि, जाति, वेदना, सम्प्रयोग आदि के भेद से अनेक प्रकार का विभाजन एवं संग्रह किया है। चिन्तनमात्र चित्त का लक्षण है। भूमि के भेद से चित्त कामावचर, रूपावचर, अरूपावचर और लोकोत्तर इस तरह चार प्रकार के होते हैं। जाति के भेद से वे कुशल, अकुशल एवं अव्याकृत इस तरह तीन प्रकार के होते हैं। वेदना के योग से वे सुखसहगत, सौमनस्यसहगत, दुःखसहगत, दौर्मनस्यसहगत एवं उपेक्षासहगत पाँच प्रकार के होते हैं। दृष्टिसम्प्रयुक्त, प्रतिघसम्प्रयुक्त, औद्धत्यसम्प्रयुक्त, विचिकित्सासम्प्रयुक्त आदि सम्प्रयोग के भेद से भी चित्तों का विभाजन किया जाता है।

(क) कामावचर चित्त–५४

(१) अकुशल चित्त—१२

लोभमूल–८

सौमनस्यसहगत—
- दृष्टिसम्प्रयुक्त—
  - असंस्कारिक
  - ससंस्कारिक
- दृष्टिविप्रयुक्त—
  - असंस्कारिक
  - ससंस्कारिक

उपेक्षासहगत— दृष्टिसम्प्रयुक्त— असंस्कारिक / ससंस्कारिक
दृष्टिविप्रयुक्त— असंस्कारिक / ससंस्कारिक

द्वेषमूल—२

दौर्मनस्य सहगत— प्रतिघसम्प्रयुक्त— असंस्कारिक / ससंस्कारिक

मोहमूल—२

उपेक्षा सहगत— विचिकित्सा सम्प्रयुक्त / औद्धत्य सम्प्रयुक्त

(२) अहेतुक—१८

इस संग्रह में प्रायः विपाक और क्रिया चित्त होते हैं। अकुशल अहेतुक विपाक ७, कुशल अहेतुक विपाक ८ एवं पंचद्वारावर्जन, मनोद्वारावर्जन और हसनचित्त में तीन क्रिया चित्त—इस तरह ये १८ अहेतुक चित्त कहलाते हैं।

(३) कामावचर शोभन—२४

(कुशल ८, विपाक ८ एवं क्रिया ८)

सौमनस्य सहगत— —ज्ञानसम्प्रयुक्त— असंस्सारिक / ससंस्कारिक
—ज्ञानविप्रयुक्त— असंस्कारिक / ससंस्कारिक

उपेक्षासहगत— —ज्ञानसम्प्रयुक्त— असंस्कारिक / ससंस्कारिक
—ज्ञानविप्रयुक्त— असंस्कारिक / ससंस्कारिक

(ख) रूपावचर चित्त—१५

(कुशल ५, विपाक ५ एवं क्रिया ५)

(१) प्रथम ध्यान—वितर्क, विचार, प्रीति, सुख, एकाग्रता सहित
(२) द्वितीय ध्यान—विचार, प्रीति, सुख, एकाग्रता सहित
(३) तृतीय ध्यान—प्रीति, सुख, एकाग्रता सहित
(४) चतुर्थ ध्यान—सुख, एकाग्रता सहित
(५) पंचम ध्यान—उपेक्षा, एकाग्रता सहित

(ग) अरूपावचर चित्त—१२

(कुशल ४, विपाक ४ एवं क्रिया ४)

आकाशानन्त्यायतन, विज्ञानानन्त्यायतन, आकिञ्चन्यायतन, एवं नैवसंज्ञानासंज्ञायतन चित्त।

रूपावचर और अरूपावचर चित्त ध्यान चित्त हैं। आलम्बन का उपनिध्यान (चिन्तन) करना अथवा प्रत्यनीक धर्मों दहन करना ध्यान का लक्षण है।

(घ) लोकोत्तर चित्त–८

(कुशल ४ एवं विपाक ४)

स्रोतापत्ति, सकृदागामी, अनागामी, एवं अर्हत्—४ मार्ग एवं ४ फलचित्त लोकोत्तर चित्त कहलाते हैं। ध्यानाङ्गों की दृष्टि से उनका विभाजन करने पर इनकी संख्या ४० हो जाती है।

(ङ) वेदना भेद से चित्तों का विभाजन

	सौमनस्य	उपेक्षा	दौर्मनस्य	सुख	दुःख	
(१) अकुशल	४	६	२	×	×	—१२
(२) अहेतुक	२	१४	×	१	१	—१८
(३) कामावचर	१२	१२	×	×	×	—२४
(४) रूपावचर	१२	३	×	×	×	—१५
(५) अरूपावचर	×	१२	×	×	×	—१२
(६) लोकोत्तर	३२	८	×	×	×	—४०
	६२	५५	२	१	१	=१२१

(च) कुशल आदि जाति-भेद से चित्तों का विभाजन

	अकुशल	कुशल	विपाक	क्रिया	
(१) कामावचर (५४)	१२	८	२३	११	
(२) रूपावचर (१५)	×	५	५	५	
(३) अरूपावचर (१२)	×	४	४	४	
(४) लोकोत्तर (८)	×	४	४	×	
योग—	१२	२१	३६	२०	=८९

कामावचर शोभन २४ चित्तों में से ८ कुशल चित्तों को महाकुशल, ८ विपाक चित्तों को महाविपाक तथा ८ क्रियाचित्तों को महाक्रिया चित्त कहते हैं। रूपावचर १५ एवं अरूपावचर १२ कुल २७ चित्त महद्गत (महग्गत) चित्त कहलाते हैं। विपाक चित्त और क्रियाचित्त ये दोनों प्रकार के चित्त अव्याकृत चित्त कहेजाते हैं। अव्याकृत चित्त वे हैं, जिनका कुशल और अकुशल में विभाजन नहीं किया जा सकता। यहाँ अव्याकृत शब्द में 'अ–' कार अन्यार्थ है। जो कुशल और अकुशल से अन्य(भिन्न) रूप में व्याकृत होते हैं, वे अव्याकृत हैं। ३६ विपाक और २० क्रिया कुल ५६ चित्त अव्याकृत हैं।

सम्प्रयोग आदि की दृष्टि से चित्तविभाजन

	सम्प्रयुक्त	विप्रयुक्त	असंस्कारिक	ससंस्कारिक
(१) अकुशल (१२)	८	४	५	५
(२) अहेतुक (१८)	×	×	×	×
(३) कामावचर (२४)	१२	१२	१२	१२
(४) रूपावचर (१५)	×	×	× (मत भेद)	× (मतभेद)
(५) अरूपावचर (१२)	×	×	× (मतभेद)	× (मतभेद)
(६) लोकोत्तर (८)	×	×	× (मतभेद)	× (मतभेद)

(२) चैतसिक ५२

चित्त के साथ सम्प्रयुक्त धर्म चैतसिक कहलाते हैं। ये चित्त के साथ (समान काल में) उत्पन्न होते हैं और निरुद्ध होते हैं। चित्त का आलम्बन ही इनका आलम्बन होता है तथा चित्त जिस इन्द्रिय पर आश्रित होता है, उसी इन्द्रिय का ये भी आश्रयण करते हैं। इनका अन्यसमान, अकुशल और शोभन इन तीन राशियों में विभाजन होता है। अन्यसमान चैतसिक १३ हैं। ये कुशल, अकुशल आदि सभी चित्तों से सम्प्रयोग करते हैं। जब ये कुशल के साथ सम्प्रयुक्त होते हैं तो कुशल, जब अकुशल के साथ सम्प्रयुक्त होते हैं तो अकुशल तथा जब अव्याकृत के साथ सम्प्रयुक्त होते है तो अव्याकृत हो जाते हैं। इनका अपना कोई निजी स्वभाव नहीं होता, अतः अन्य (चित्त)-समान कहलाते हैं। इन तेरह में सात चैतसिक तो सर्वसाधारण होते हैं, जो संयुक्त रूप से सभी चित्तों से

सम्प्रयोग करते हैं। शेष ६ प्रकीर्णक कहलाते हैं, जो सभी चित्तों से सम्प्रयोग तो करते हैं, किन्तु संयुक्त रूप से नहीं, किन्तु विप्रकीर्ण रूप से करते हैं। चौदह चैतसिक अकुशल हैं, जो केवल अकुशल चित्तों से ही सम्प्रयुक्त होते हैं। २५ चैतसिक शोभन हैं, जो केवल शोभन चित्तों से ही सम्प्रयुक्त होते हैं।

(३) स्कन्धों में धर्म-विभाजन

स्कन्ध पाँच हैं, यथा—रूपस्कन्ध, वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध एवं विज्ञान स्कन्ध। चित्त, चैतसिक रूप आदि सभी संस्कृत धर्मों का संग्रह इन पाँच स्कन्धों में हो जाता है। तथा हि—

(१) **रूपस्कन्ध**—रूप २८ होते हैं। सभी २८ रूप रूपस्कन्ध में संगृहीत होते हैं, यथा—पृथ्वी, अप्, तेजस् और वायु ये चार भूतरूप; चक्षुष्, श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा एवं काय ये पाँच प्रसादरूप; रूप, शब्द, गन्ध, रस एवं स्प्रष्टव्य ये पाँच गोचररूप; स्त्रीत्व और पुंस्त्व ये दो भावरूप; हृदयेन्द्रिय हृदयरूप-१; जीवितेन्द्रिय जीवितरूप-१; कवलीकार आहार आहाररूप-१; आकाशधातु परिच्छेदरूप-१; कायविज्ञप्ति एवं वाग्विज्ञप्ति विज्ञप्तिरूप-२; रूप की लघुता, मृदुता एवं कर्मण्यता विकाररूप-३; (यद्यपि विकाररूप ५ होते हैं, किन्तु दो विज्ञप्तियाँ पहले परिगणित हो गई हैं, अतः उन्हें यहाँ जोड़ा नहीं गया); रूप का उपचय, सन्तति, जरता और अनित्यता ये चार लक्षण रूप; इस तरह रूप कुल २८ होते हैं। इनमें अब्धातु, स्त्रीन्द्रिय, पुरुषेन्द्रिय, हृदयेन्द्रिय, जीवितेन्द्रिय, आहार, कायविज्ञप्ति, वाग्विज्ञप्ति, रूप की लघुता, मृदुता, कर्मण्यता, उपचय, सन्तति, जरता, अनित्यता एवं आकाश—ये १६ सूक्ष्मरूप कहे जाते हैं।

(२) **वेदना स्कन्ध**—५२ चैतसिकों में से एक वेदना चैतसिक वेदना-स्कन्ध है।

(३) **संज्ञा स्कन्ध**—एक संज्ञा चैतसिक संज्ञास्कन्ध कहा जाता है।

(४) **संस्कार स्कन्ध**—उपर्युक्त वेदना एवं संज्ञा इन दो चैतसिकों को छोड़ कर अवशिष्ट ५० चैतसिक संस्कार-स्कन्ध कहे जाते हैं।

(५) **विज्ञान स्कन्ध**—सभी ८९ चित्त विज्ञानस्कन्ध हैं।

उपर्युक्त सभी स्कन्ध संस्कृत धर्म हैं। असंस्कृत निर्वाण स्कन्ध-संग्रह में संगृहीत नहीं होता। वह स्कन्ध-विनिर्मुक्त धर्म है।

(४) आयतनों में धर्मविभाजन

आयतन १२ होते हैं। इन १२ आयतनों में सभी संस्कृत एवं असंस्कृत धर्म संगृहीत हो जाते हैं।

१. चक्षुरायतन	चक्षु:प्रसाद
२. श्रोत्रायतन	श्रोत्रप्रसाद
३. घ्राणायतन	घ्राणप्रसाद
४. जिह्वायतन	जिह्वाप्रसाद
५. कायायतन	कायप्रसाद
६. रूपायतन	रूप आलम्बन (वर्ण मात्र)
७. शब्दायतन	शब्दालम्बन
८. गन्धायतन	गन्धालम्बन
९. रसायतन	रसालम्बन
१०. स्प्रष्टव्यायतन	स्प्रष्टव्यालम्बन
११. मन आयतन	सभी ८९ चित्त
१२. धर्मायतन	५२ चैतसिक (सभी), १६ सूक्ष्म रूप एवं निर्वाण।

(५) धातुओं में धर्म-विभाजन

धातुएँ १८ हैं। इनमें सभी संस्कृत और असंस्कृत धर्मों का संग्रह हो जाता है।

१. चक्षुर्धातु	चक्षु:प्रसाद
२. श्रोत्रधातु	श्रोत्रप्रसाद
३. घ्राणधातु	घ्राणप्रसाद
४. जिह्वाधातु	जिह्वाप्रसाद
५. कायधातु	कायप्रसाद
६. रूपधातु	रूपालम्बन
७. शब्दधातु	शब्दालम्बन
८. गन्धधातु	गन्धालम्बन
९. रसधातु	रसालम्बन
१०. स्प्रष्टव्यधातु	स्प्रष्टव्यालम्बन
११. चक्षुर्विज्ञान धातु	चक्षुर्विज्ञानद्वय (कुशल-अकुशल विपाक)
१२. श्रोत्रविज्ञानधातु	श्रोत्रविज्ञानद्वय (,,)
१३. घ्राणविज्ञान धातु	घ्राणविज्ञानद्वय (,,)
१४. जिह्वाविज्ञान धातु	जिह्वाविज्ञानद्वय (,,)
१५. कायविज्ञान धातु	कायविज्ञानद्वय (,,)
१६. मनोधातु	पंचद्वारावर्जन-१, सम्पटिच्छन-२

१७. मनोविज्ञान धातु	पंचविज्ञानद्वय १० चित्तवर्जित एवं मनोधातु ३ चित्तवर्जित अवशिष्ट सभी ७६ चित्त
१८. धर्मधातु	५२ चैतसिक, १६ सूक्ष्म रूप एवं निर्वाण।

(६) चार आर्यसत्यों में धर्म-विभाजन

आर्यसत्य चार हैं, यथा—दुःख आर्यसत्य, समुदय आर्यसत्य, निरोध आर्यसत्य एवं मार्ग आर्यसत्य। इन चार आर्यसत्यों में सभी संस्कृत एवं असंस्कृत धर्मों का संग्रह हो जाता है।

(१) दुःख सत्य	लोकोत्तर ८ चित्तों को छोड़कर अवशिष्ट लौकिक सभी ८१ चित्त, लोभ चैतसिक को छोड़कर अवशिष्ट सभी ५१ चैतसिक तथा सभी २८ रूप
(२) समुदय सत्य	लोभ चैतसिक-१
(३) निरोध सत्य	निर्वाण
(४) मार्ग सत्य	आर्य आष्टाङ्गिक मार्ग।

१. सम्यग् दृष्टि	प्रज्ञा चैतसिक
२. सम्यक् संकल्प	वितर्क चैतसिक
३. सम्यग् वाक् ४. सम्यक् कर्मान्त ५. सम्यग् आजीव	तीन विरति चैतसिक
६. सम्यग् व्यायाम	वीर्य चैतसिक
७. सम्यक् स्मृति	स्मृति चैतसिक
८. सम्यक् समाधि	एकाग्रता चैतसिक

चारों मार्ग चित्त परमार्थतया एक चित्त हैं। इनके साथ १३ अन्य-समान चैतसिक तथा २५ शोभन चैतसिकों में से करुणा एवं मुदिता दो अप्रामाण्य (अप्पमञ्ञा) चैतसिकों को छोड़कर २३ शोभन चैतसिक अर्थात् कुल ३६ चैतसिक यथायोग्य सम्प्रयुक्त होते हैं। इनमें से ८ चैतसिक आर्य आष्टांगिक मार्ग सत्य हैं। शेष २८ चैतसिक और १ चित्त कुल २९ धर्म मार्ग चित्तोत्पाद (मग्गचित्तुप्पाद) कहे जाते हैं।

चारों फलचित्त परमार्थतया एक चित्त हैं। इनके साथ १३ अन्यसमान एवं अप्रामाण्यद्वयवर्जित २३ शोभन चैतसिक कुल ३६ चैतसिक सम्प्रयुक्त होते हैं। ३६ चैतसिक एवं १ चित्त कुल ३७ धर्म फलचित्तोत्पाद (फलचित्तुप्पाद) कहे जाते हैं।

सत्यविमुक्त धर्म—२९ मार्गचित्तोत्पाद एवं ३७ फलचित्तोत्पाद ये धर्म सत्यविमुक्त हैं। अर्थात् इनका सत्यों में संग्रह नहीं होता।

उपर्युक्त संग्रह-विभाग का ठीक परिज्ञान हो जाने पर तथा अभिधम्मत्थसंगहो के प्रथम चित्तपरिच्छेद और द्वितीय चैतसिक परिच्छेद का विशेषतया उसके सम्प्रयोगनय और संग्रहनय का ठीक-ठीक अभ्यास हो जाने पर धम्मसंगणि का अध्ययन निश्चितरूप से आसान हो जाता है। उपर्युक्त वर्णन के आधार पर निदर्शन के रूप में हम धम्मसंगणि की प्रथम त्रिक मातृका का विस्तार प्रस्तुत कर रहे हैं।

धम्मसंगणि की प्रथम त्रिक मातृका

(क) कुशल धर्म
(ख) अकुशल धर्म
(ग) अव्याकृत धर्म

(क) कुशल धर्म

विपाक के रूप में अनवद्य सुख प्रदान करना तथा कुत्सित अवद्य धर्मों का प्रहाण करना कुशल धर्मों का लक्षण है। निम्नलिखित धर्म कुशल होते हैं।

(क) चित्त—२१

कामावचर कुशल-८, रूपावचर कुशल-५, अरूपावचर कुशल-४ तथा लोकोत्तर कुशल ४=२१।

(ख) चैतसिक—३८

अन्य समान चैतसिक १३ तथा शोभन चैतसिक २५=३८।

स्कन्ध, आयतन, धातु और सत्यों में इन कुशल चित्त-चैतसिक धर्मों का विभाजन करने पर इनमें ४ स्कन्ध, २ आयतन, २ धातु एवं २ सत्य उपलब्ध होते हैं।

स्कन्ध—४

(क) वेदना चैतसिक	१. वेदनास्कन्ध
(ख) संज्ञा चैतसिक	२. संज्ञास्कन्ध
(ग) वेदना और संज्ञा को छोड़कर शेष ३६ चैतसिक	३. संस्कारस्कन्ध
(घ) २१ कुशल चित्त	४. विज्ञानस्कन्ध

आयतन—२

(क) २१ कुशल चित्त — १. मनआयतन
(ख) ३८ चैतसिक — २. धर्मआयतन

धातु—२

(क) २१ कुशल चित्त — १. मनोविज्ञान धातु
(ख) ३८ चैतसिक — २. धर्मधातु

सत्य—२

(क) लोकोत्तर ४ कुशल चित्तों को छोड़कर अवशिष्ट लौकिक कुशलचित्त १७ तथा इनके साथ सम्प्रयुक्त चैतसिक-३८ ये धर्म (१) दुःखसत्य हैं।

(ख) लोकोत्तर कुशल मार्गचित्तों के साथ सम्प्रयुक्त चैतसिक-३६ (३८ चैतसिकों में करुणा और मुदिता लोकोत्तर चित्तों से सम्प्रयुक्त नहीं होते) में से सम्यग्दृष्टि आदि ८ चैतसिक (आर्य आष्टांगिक मार्ग) (२) मार्ग सत्य है।

विशेष—चारों मार्ग चित्तों को एक मार्ग चित्त मान लिया जाए तो मार्गचित्त-१ तथा (मार्ग सत्य कहे जानेवाले सम्यग्दृष्टि आदि ८ चैतसिकों को छोड़कर अवशिष्ट) चैतसिक २८ कुल २९ धर्म मार्गचित्तोत्पाद हैं, किन्तु मार्गसत्य नहीं हैं। अर्थात् ये सत्यविमुक्त हैं।

(ख) अकुशल धर्म

विपाक के रूप में सावद्य दुःख प्रदान करना, इनका लक्षण है। 'अकुशल' शब्द में 'अ'-कार विपरीतार्थक है। अतः ये धर्म कुशलविरोधी होते हैं। ये विपक्ष कहे जाते हैं और प्रहातव्य हैं।

कामावचर चित्तों में अकुशल चित्त १२ होते हैं। इनके साथ अन्यसमान चैतसिक १३ तथा अकुशल राशि में पठित १४ चैतसिक सम्प्रयुक्त होते हैं। ये १२ अकुशल चित्त तथा २७ चैतसिक 'अकुशल धर्म' हैं।

स्कन्ध, आयतन, धातु और सत्यों में इन अकुशल धर्मों का विभाजन करने पर इनमें ४ स्कन्ध, २ आयतन, २ धातु और दो सत्य उपलब्ध होते हैं।

स्कन्ध—४

१. वेदना स्कन्ध—वेदना चैतसिक
२. संज्ञा स्कन्ध—संज्ञा चैतसिक
३. वेदना और संज्ञा दो चैतसिकों को छोड़कर अवशिष्ट चैतसिक २५ संस्कारस्कन्ध हैं।

४. विज्ञानस्कन्ध—१२ अकुशल चित्त।

आयतन—२

१. मन-आयतन	१२ अकुशल चित्त
२. धर्म-आयतन	२७ अकुशल सम्प्रयुक्त चैतसिक

धातु—२

१. मनोविज्ञान धातु	१२ अकुशल चित्त
२. धर्मधातु	२७ सम्प्रयुक्त चैतसिक

सत्य—२

१. दुःखसत्य—१२ अकुशल चित्त तथा इनसे सम्प्रयुक्त २७ चैतसिकों में से लोभ चैतसिक को छोड़कर अवशिष्ट चैतसिक २६ 'दुःखसत्य' हैं।

२. समुदयसत्य—लोभ चैतसिक।

(ग) अव्याकृत धर्म

जिनका कुशल अथवा अकुशल में विभाजन नहीं किया जा सकता, वे धर्म अव्याकृत कहलाते हैं। 'अव्याकृत' शब्द में 'अ'-कार अन्यार्थक है। अर्थात् कुशल तथा अकुशल से भिन्न धर्म 'अव्याकृत' कहे जाते हैं।

पालि अभिधर्म के अनुसार विपाक और क्रियाचित्त अव्याकृत चित्त हैं। अतः (क) ३६ विपाक चित्त (७ कामावचर अहेतुक अकुशल विपाक, ८ कामावचर अहेतुक कुशल विपाक, ८ कामावचर सेहतुक महाविपाक, ५ रूपावचर विपाक, ४ अरूपावचर विपाक तथा ४ लोकोत्तर विपाक); तथा २० क्रियाचित्त (पंचद्वारावर्जन, मनोद्वारावर्जन एवं हसन ३ अहेतुक क्रियाचित्त, ८ कामावचर महाक्रियाचित्त, ५ रूपावचर क्रियाचित्त एवं ४ अरूपावचर क्रियाचित्त); इनके साथ सम्प्रयुक्त चैतसिक ३८ (१३ अन्यसमान तथा २५ शोभन चैतसिक); सभी रूप २८ एवं निर्वाण 'अव्याकृत धर्म' हैं। संक्षेप में ३६ विपाकचित्त, २० क्रियाचित्त, ३८ चैतसिक, २८ रूप एवं निर्वाण ये धर्म अव्याकृत कहे जाते हैं।

इन धर्मों का स्कन्ध, आयतन, धातु एवं सत्यों में विभाजन करने पर इनमें ५ स्कन्ध, १२ आयतन, १८ धातु एवं २ सत्य उपलब्ध होते हैं।

स्कन्ध—५

१. रूपस्कन्ध	२८ रूप
२. वेदनास्कन्ध	वेदना चैतसिक

३. संज्ञास्कन्ध	संज्ञा चैतसिक
४. संस्कारस्कन्ध	वेदना, संज्ञा चैतसिकों को छोड़कर अवशिष्ट चैतसिक ३६
५. विज्ञानस्कन्ध	३६ विपाक चित्त एवं २० क्रियाचित्त (अतीत, अनागत, प्रत्युत्पन्न भेद से रहित निर्वाण स्कन्ध-संग्रह से विनिर्मुक्त है)।

आयतन—१२

१. चक्षुरायतन	चक्षुःप्रसाद
२. श्रोत्रायतन	श्रोत्रप्रसाद
३. घ्राणायतन	घ्राणप्रसाद
४. जिह्वायतन	जिह्वाप्रसाद
५. कायायतन	कायप्रसाद
६. रूपायतन	रूपालम्बन
७. शब्दायतन	शब्दालम्बन
८. गन्धायतन	गन्धालम्बन
९. रसायतन	रसालम्बन
१०. स्प्रष्टव्यायतन	स्प्रष्टव्यालम्बन
११. मन आयतन	३६ विपाकचित्त, २० क्रियाचित्त
१२. धर्मायतन	३८ चैतसिक, १६ सूक्ष्म रूप (अब्धातु, स्त्रीन्द्रिय, पुरुषेन्द्रिय, हृदयवस्तु, जीवितेन्द्रिय, आहाररूप, कायविज्ञप्ति, वाग्विज्ञप्ति, रूपलघुता, रूपमृदुता, रूपकर्मण्यता, उपचय, सन्तति, जरता, अनित्यता, आकाश) एवं निर्वाण।

धातु—१८

१. चक्षुर्धातु	चक्षुःप्रसाद
२. श्रोत्रधातु	श्रोत्रप्रसाद
३. घ्राणधातु	घ्राणप्रसाद
४. जिह्वाधातु	जिह्वाप्रसाद
५. कायधातु	कायप्रसाद
६. रूपधातु	रूपालम्बन
७. शब्दधातु	शब्दालम्बन
८. गन्धधातु	गन्धालम्बन

९. रसधातु	रसालम्बन
१०. स्प्रष्टव्यधातु	स्प्रष्टव्यालम्बन
११. चक्षुर्विज्ञानधातु	चक्षुर्विज्ञानद्वय (कुशल, अकुशल विपाक)
१२. श्रोत्रविज्ञानधातु	श्रोत्रविज्ञानद्वय ,,
१३. घ्राणविज्ञानधातु	घ्राणविज्ञानद्वय ,,
१४. जिह्वाविज्ञानधातु	जिह्वाविज्ञानद्वय ,,
१५. कायविज्ञानधातु	कायविज्ञानद्वय ,,
१६. मनोधातु	पंचद्वारावर्जन एवं सम्प्रतिच्छन्नद्वय
१७. मनोविज्ञानधातु	द्विपंचविज्ञान-१०, सम्प्रतिछन्नद्वय २ इन १२ विपाकचित्तों को छोड़कर शेष विपाकचित्त २४ तथा पंचद्वारावर्जनवर्जित १९ क्रियाचित्त
१८. धर्मधातु	चैतसिक ३८, सूक्ष्मरूप-१६ तथा निर्वाण।

सत्य—२

१. दुःखसत्य	लौकिक विपाकचित्त ३२ (३६ विपाक चित्तों में से ४ लोकोत्तर विपाक छोड़कर); क्रियाचित्त २०; इनके साथ सम्प्रयुक्त चैतसिक ३५ (विरति-त्रयवर्जित) एवं रूप-२८।
२. निरोधसत्य	निर्वाण।

विशेष—चारों लोकोत्तर विपाक (फल) चित्तों को एक फलचित्त मान कर फलचित्त-१ तथा इनके साथ सम्प्रयुक्त चैतसिक ३६ (३८ में से करुणा एवं मुदिता अप्रामाण्य चैतसिकों को छोड़कर) ये ३७ धर्म फलचित्तोत्पाद कहलाते हैं। ये 'सत्यविमुक्त' हैं।

ध्यातव्य—इसी तरह धम्मसंगणि की २२ त्रिक मातृकाओं और १०० द्विक मातृकाओं का विस्तार किया जा सकता है। ऐसा करने पर धम्मसंगणि समझ में आने लगती है तथा उसके बारे में जो नाहक दुरूहता का भय है, वह दूर हो जाता है। वह अत्यन्त आसान एवं रुचिकर हो जाती है। इस तरीके से न समझा जाए तो उसमें केवल धर्मों की परिगणनामात्र नजर आती है। वह अत्यन्त रूक्ष एवं क्लिष्ट प्रतीत होती है। उसका स्मरण रखना अत्यन्त कठिन कार्य हो जाता है। सच पूछा जाए तो भारत में अभी तक अभिधर्म का विधिवत् पठन-पाठन कहीं प्रारम्भ ही नहीं हुआ है। विस्तारभय से शेष मातृकाओं का यहाँ विस्तार छोड़ा जा रहा है।

ग्रन्थ और ग्रन्थकार का परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थ अट्ठसालिनी और उसकी अत्थयोजना टीका है। अट्ठसालिनी अभिधर्मपिटक के सर्वप्रथम एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ धम्मसंगणि की अट्ठकथा है। अभिधर्म में 'अभि' शब्द का अर्थ अतिशय या विशेष है। अतः अभिधर्म का अर्थ उच्चतर धर्म या विशेष धर्म होता है। अभिधर्मपिटक में बुद्ध के मन्तव्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण प्रतिपादित है तथा उनकी तात्त्विक और मनोवैज्ञानिक पद्धति से गणना की गई है। वस्तुतः अभिधर्मपिटक धर्मों के स्वरूप-विवेचन में गहराई में उतरता है। धम्मसंगणि सम्पूर्ण अभिधर्मसाहित्य की प्रतिष्ठा है। इसमें कुल १२२ मात्रिकाएँ हैं, जिनमें २२ त्रिक मात्रिका तथा १०० द्विक मात्रिकाएँ हैं। ये मात्रिकाएँ ग्रन्थ की विषय-सूची हैं। इनके विवेचन और विस्तार में ही सम्पूर्ण ग्रन्थ परिसमाप्त होता है। इस ग्रन्थ का प्रारम्भ कुशलत्रिक मात्रिका से होता है। श्रीमती रायस् डेविड्स ने इसी को अभिधर्म-पिटक का मूलस्रोत माना है। शेष मात्रिकाएँ इसी की पूरक हैं। इन्हीं मात्रिकाओं पर सम्पूर्ण धर्मविवेचन आधारित हैं।

धम्मसंगणि की विषयवस्तु चार काण्डों में विभक्त है, तथा—चित्तुप्पादकण्ड, रूपकण्ड, निक्खेपकण्ड एवं अत्थुद्धारकण्ड। पहले दो कण्डों में बाह्य और आध्यात्मिक धर्मों का कुशल, अकुशल और अव्याकृत के रूप में विश्लेषण किया गया है। पहले काण्ड में कुशल, अकुशल और अंशतः अव्याकृत का विवेचन है और दूसरे काण्ड में अव्याकृत के अधूरे विवेचन को पूरा किया गया है। तीसरे और चौथे काण्डों में इन्हीं का संक्षेप है और शेष १२१ वर्गों (मात्रिकाओं) के स्वरूप को प्रश्नोत्तर के रूप में समझाया गया है। धम्मसंगणि में धर्मों के वर्गीकरण के अतिरिक्त उनके स्वरूप का विश्लेषण भी किया गया है। अतः उसके चारों काण्डों में धर्मों को चित्त, चैतसिक एवं रूप इन शीर्षकों में भी विभक्त किया जा सकता है। इस दृष्टि से प्रथम काण्ड में चित्त-चैतसिकों का, दूसरे काण्ड में रूप का तथा तीसरे और चौथे काण्डों में इन्हीं का संक्षिप्त विवेचन अभिहित है।

अट्ठकथा—परम्परा के अनुसार महाराज अशोक के पुत्र स्थविर महेन्द्र और उनके साथी भिक्षु पालि-त्रिपिटक के साथ-साथ अट्ठकथाओं को भी श्रीलंका ले गये थे, किन्तु उसका ऐतिहासिक साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। फिर भी प्राचीन सिंहली अट्ठकथाओं का अस्तित्व साहित्यिक साक्ष्यों के आधार पर प्रमाणित हैं, किन्तु आज वे भी उपलब्ध नहीं हैं। जिन प्राचीन सिंहली अट्ठकथाओं का उल्लेख मिलता है, उनमें प्रमुख हैं—१. महा-अट्ठकथा, २. महापच्चरी, ३. कुरुन्दी। इनके अतिरिक्त अन्धट्ठकथा, संखेप-अट्ठकथा, आचरियानं समानट्ठ-

कथा एवं आगमट्ठकथा आदि का उल्लेख भी अट्ठसालिनी एवं अन्य अट्ठकथाओं में उपलब्ध होता है, किन्तु प्रतीत होता है कि ये स्वतन्त्र एवं मौलिक अट्ठकथाएँ न थीं। उपर्युक्त तीन प्रमुख प्राचीन सिंहली अट्ठकथाओं में महा-अट्ठकथा ही सुत्तपिटक की अट्ठकथाओं का आधार है। महापच्चरी अभिधर्मपिटक की अट्ठकथाओं का आधार है तथा कुरुन्दी विनयपिटक की अट्ठकथा का आधार है। अट्ठकथाओं की रचना बुद्ध के प्रायः एक हजार वर्ष बाद प्रारम्भ होती है। समय के इतने लम्बे व्यवधान के कारण इन अट्ठकथाओं की प्रामाणिकता उतनी सबल न होती, यदि ये परम्पराप्राप्त प्राचीन सिंहली अट्ठकथाओं पर आधारित न होतीं।

अट्ठसालिनी—आचार्य बुद्धघोष द्वारा विरचित अभिधर्मपिटक की अट्ठकथाओं में सबसे पहला स्थान अट्ठसालिनी का है, जो धम्मसंगणि की अट्ठकथा है। पालित्रिपिटक के बाद के साहित्य में वस्तुतः अट्ठसालिनी के समान गम्भीर एवं विचारप्रवण दूसरा नहीं ग्रन्थ है। 'महावंश' के धम्मकित्ति विरचित परिवर्धित अंश के अनुसार बुद्धघोष ने अट्ठसालिनी की रचना श्रीलंका जाने से पहले ही की थी। उसके अनुसार उन्होंने ञाणोदय (ज्ञानोदय), अट्ठसालिनी एवं त्रिपिटक पर एक संक्षिप्त अट्ठकथा ये तीन ग्रन्थ श्रीलंका जाने से पहले लिखे थे। किन्तु यह कथन समीचीन प्रतीत नहीं होता। श्रीलंका जाकर महास्थविर बुद्धघोष ने विसुद्धिमग्ग नामक ग्रन्थ की रचना की, यह तो निश्चित है, किन्तु अट्ठसालिनी उससे पूर्व की रचना है, यह नहीं कहा जा सकता। क्योंकि अट्ठसालिनी की प्रारम्भिक गाथाओं में स्वयं आचार्य ने कहा है—सभी कर्मस्थान, चर्या, अभिज्ञा एवं विपश्यनाओं का वर्णन मैं विसुद्धिमग्ग में कर चुका हूँ, अतः यहाँ फिर उनका विवरण नहीं करूँगा। तथा हि—

कम्मट्ठानानि सब्बानि चरियाभिञ्ञा विपस्सना।
विसुद्धिमग्गे पनिदं यस्मा सब्बं पकासितं॥
(वीसतिगाथावण्णना, अट्ठसालिनी १८)

अतः अट्ठसालिनी निश्चय ही विसुद्धिमग्ग के बाद की रचना है। अभिधर्म के जिज्ञासुओं के लिए अट्ठसालिनी का चिन्तन-मनन कितना आवश्यक है, इसे कहने की आवश्यकता नहीं है।

अत्थयोजना टीका—प्रस्तुत ग्रन्थ में अट्ठसालिनी की यह टीका भी है। इसके रचयिता अट्ठकथाओं सहित सम्पूर्ण त्रिपिटक में निष्णात महास्थविर ञाणकित्ति (ज्ञानकीर्ति) हैं। श्रीलंका के पश्चिमोत्तर (वायव्य) भाग में स्थित अभिनवपुर में पनसाराम नामक विहार था, जो लंकाधिराज द्वारा निर्मित था

और जो नाना वृक्ष, लताओं से सुशोभित था, उस विहार में रहते हुए महास्थविर ने मार्गशीर्ष से लेकर श्रावण पर्यन्त नौ माह में इस टीका-ग्रन्थ का प्रणयन किया था। इसमें अट्ठसालिनी के अनुच्छेदों के पारस्परिक सम्बन्ध, पद, विग्रह, धातु, प्रत्यय आदि विस्तार से प्रतिपादित हैं, जिससे यह अट्ठसालिनी को विस्तार से समझने में मूलटीका, अनुटीका आदि से भी अधिक उपकारी है।

अट्ठकथाकार आचार्य बुद्धघोष—'महावंस' के अनुसार आचार्य बुद्धघोष का जन्म बोधगया के समीप हुआ था। ये अत्यन्त कुशाग्रबुद्धि थे और बाल्यावस्था में ही शिल्प और तीनों वेदों में पारंगत हो गये थे। इनमें ज्ञान की अत्यन्त तीव्र जिज्ञासा थी। ये शास्त्रार्थपटु भी थे और भारतवर्ष में घूम घूम कर वाद-विवाद करते रहते थे। इनकी साधना में भी उत्कट अभिरुचि थी। एक दिन ये रात में किसी विहार में पहुँचे और वहाँ पातंजल मत पर बड़ा अच्छा प्रवचन किया। वहाँ इनकी बौद्ध स्थविर रेवत से बातचीत हुई। भदन्त रेवत की विद्वत्ता से ये अत्यधिक प्रभावित हुए और कुछ दिन विहार में रहकर उनसे कुछ सीखने की इच्छा जाहिर की। भदन्त ने भिक्षु-दीक्षा लेने पर ही शिक्षा देने की शर्त लगाई, जिससे ये वहीं भिक्षु बन गये। तदनन्तर इन्होंने सम्पूर्ण त्रिपिटक का अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुँच गये कि निर्वाण की प्राप्ति का यही एकायन मार्ग है। महावंस के अनुसार इसी विहार में रहते हुए इन्होंने ञाणोदय, एवं अट्ठसालिनी की रचना की और अन्त में त्रिपिटक पर एक संक्षिप्त अट्ठकथा लिखने का उपक्रम किया। यह जानकर उनके गुरु महास्थविर रेवत ने कहा कि जम्बूद्वीप में केवल त्रिपिटक ही हैं। अट्ठकथाएँ एवं नाना आचार्यवाद यहाँ नहीं हैं। अतः तुम श्रीलंका जाओ और सिंहली अट्ठकथाओं का मागधी में रूपान्तरण करो, जिससे वे सबके लिए हितकारी हो सकें। अपने गुरु की आज्ञा मानकर बुद्धघोष लंकाधिपति महानाम के शासनकाल में श्रीलंका पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने महाविहार नामक विहार के अन्तर्गत महापधानघर में रहते हुए संघपाल नामक महास्थविर से सिंहली अट्ठकथाओं और स्थविरवाद का अध्ययन किया। बाद में उन्होंने सिंहली अट्ठकथाओं का मागधी में अनुवाद करने की भिक्षुओं से अनुज्ञा मांगी। उनके ज्ञान की परीक्षा करने के लिए भिक्षुसंघ ने उन्हें दो गाथाएँ दीं और कहा कि पहले मागधी (पालि) में इनकी व्याख्या करो। इन्हीं दो गाथाओं की व्याख्या स्वरूप इन्होंने विसुद्धिमग्ग नामक ग्रन्थ की रचना कर दी। इसे देखकर भिक्षुसंघ इनकी विद्वत्ता से अत्यधिक प्रभावित हुआ और उन्होंने त्रिपिटक के साथ सम्पूर्ण प्राचीन सिंहली अट्ठकथाएँ उनके लिए उपलब्ध करा दीं। तदनन्तर अनुराधपुर के ग्रन्थकार (गन्धकार) विहार में एकान्तरूप से बैठकर आचार्य ने सिंहली अट्ठकथाओं के आधार पर पालि-

अट्ठकथाओं का निर्माण किया। इस कार्य की समाप्ति पर बुद्धघोष अपनी जन्म-भूमि भारत लौट आए और यहाँ आकर बोधिवृक्ष की पूजा की।

काल—उपर्युक्त वर्णन से यह ज्ञात होता है कि आचार्य बुद्धघोष लंकाधिराज महानाम के समय श्रीलंका पहुँचे थे। महानाम का शासन-काल वहाँ के इतिहास के अनुसार चौथी शताब्दी का अन्तिम भाग और पाँचवी शताब्दी का प्रारम्भिक भाग था। इस तथ्य से आचार्य बुद्धघोष का जीवनकाल भी प्रायः इसी समय निश्चित होता है। आचार्य ने अपनी कृतियों में ऐसे किसी ग्रन्थ का उद्धरण नहीं किया है, जो इस काल के बाद निर्मित हो। बरमी परम्परा के अनुसार भी आचार्य बुद्धघोष पाँचवी शताब्दी के पूर्वभाग में श्रीलङ्का गये थे। उस समय वे कम से कम तरुण तो अवश्य रहे होंगे, फलतः आचार्य बुद्धघोष का समय चौथी-पाँचवीं शताब्दी माना जा सकता है।

मतभेद—आचार्य धर्मानन्द कौशाम्बी के मतानुसार आचार्य बुद्धघोष उत्तरभारत के नहीं, अपि तु दक्षिण भारतीय थे। विसुद्धिमग्ग (१।८६) में वनदाह की उनके द्वारा की गई व्याख्या तथा मज्झिमनिकाय के गोपालकसुत्त की व्याख्या में उनके द्वारा किया गया गंगा का विवरण यही दिखलाते हैं कि वे उत्तरभारत से परिचित नहीं थे। उनके द्वारा वर्णित वनदाह दक्षिण की वस्तु है तथा गंगा भी दक्षिण की महावली गंगा है। उनका कहना है कि बुद्धघोष मोरण्डखेटक के निवासी है। इसके प्रमाण में वे विसुद्धिमग्ग के निगमन वाक्य को प्रस्तुत करते हैं। तथा हि—

"बुद्धघोसो ति गरूहि गहितनामधेय्येन थेरेन मोरण्डखेटकवत्तब्बेन कतो विसुद्धिमग्गो नाम"

मोरण्डखेटक अर्थात् मोरण्ड नामक गाँव आन्ध्रप्रदेश में नागार्जुनकोंडा और अमरावती के नजदीक गुण्डलापल्ली नामक स्थान हो सकता है। इसके आसपास खुदाई में बौद्धधर्म से सम्बद्ध अनेक प्राचीन खण्डहर उपलब्ध हुए हैं। उनके अनुसार अंगुत्तरनिकाय की अट्ठकथा, मज्झिमनिकाय की अट्ठकथा के अवसान वाक्यों से भी उनका निवास कांचीपुर (कांजीवरम्) एवं मयूरपत्तन (मद्रास के पास) में सिद्ध होता है।

आचार्य धर्मानन्द कौशाम्बी ने उनके ब्राह्मण होने में भी सन्देह व्यक्त किया है। कौशाम्बी जी का कहना है कि आचार्य बुद्धघोष को अत्यन्त प्रसिद्ध वैदिक पुरुषसूक्त का भी परिज्ञान नहीं था। उक्त सूक्त में क्षत्रिय को बाहु से उत्पन्न कहा गया है, जब कि बुद्धघोष ने उक्त सूक्त का संकेत करते हुए क्षत्रिय को हृदय से उत्पन्न कहा है।

आचार्य भरतसिंह उपाध्याय का कहना है कि बुद्धघोष यद्यपि पर्याप्त समय तक दक्षिण भारत में रहे और वहीं रहकर उन्होंने अनेक अट्ठकथाओं का निर्माण किया। यह बात उनकी उपर्युक्त अंगुत्तरनिकाय, मज्झिमनिकाय की अट्ठकथाओं और विसुद्धिमग्ग आदि ग्रन्थों से सिद्ध होती है। साथ ही बुद्धमित्र ज्योतिपाल, बुद्धदत्त, आचार्य अनुरुद्ध आदि अनेक विद्वान्, अट्ठकथाकार दक्षिण भारत में ही हुए हैं, फिर भी इससे यह सिद्ध नहीं होता कि उनका जन्मस्थान भी दक्षिण भारत ही था। इससे केवल इतना ज्ञात होता है कि उनका कार्यक्षेत्र दक्षिण भारत था। अतः वे निश्चय उत्तर भारतीय एवं गया के पास उत्पन्न हुए थे। उपाध्याय जी का यह भी कहना है कि क्षत्रिय को हृदय से उत्पन्न कहने से बुद्धघोष का पुरुषसूक्त से अपरिचय सिद्ध नहीं होता। उनका कहना है कि बाहु और हृदय दोनों ही साहस के प्रतीक हैं, अतः उनसे भ्रमवश यह गलती हो गई हो। अतः निश्चय ही वे ब्राह्मणकुल में उत्पन्न हुए थे।

बुद्धघोष की रचनाएँ

१. विसुद्धिमग्ग	
२. समन्तपासादिका	विनयपिटक की अट्ठकथा
३. कंखावितरणी	पातिमोक्ख की अट्ठकथा
४. सुमंगलविलासिनी	दीघनिकाय की अट्ठकथा
५. पपंचसूदनी	मज्झिमनिकाय की अट्ठकथा
६. सारत्थपकासिनी	संयुत्तनिकाय की अट्ठकथा
७. मनोरथपूरणी	अंगुत्तरनिकाय की अट्ठकथा
८. परमत्थजोतिका	सुत्तनिपात, खुद्दकपाठ, धम्मपद, जातक की अट्ठकथा
९. अट्ठसालिनी	धम्मसंगणि की अट्ठकथा (अभिधर्म)
१०. सम्मोहविनोदनी	विभंग की अट्ठकथा ,,
११-१५. परमत्थदीपनी (पंचप्पकरणट्ठकथा)	धातुकथा, पुग्गलपञ्ञत्ति ,, कथावत्थु, यमक, पट्ठान की अट्ठकथा

अन्य रचनाएँ—जैसा कि ऊपर कहा गया है, महावंस के अनुसार लंका जाने से पूर्व बुद्धघोष ने जम्बूद्वीप में ही 'ञाणोदय' नामक ग्रन्थ की रचना की थी तथा अट्ठसालिनी का भी प्रणयन किया था। हमने इसका ऊपर खण्डन किया है। हो सकता है, उन्होंने अट्ठसालिनी की कोई छोटी-मोटी रूप-रेखा बनाई हो।

शासनवंश के अनुसार बुद्धघोष ने 'पिटकत्तयलक्खण' नामक ग्रन्थ भी लिखा था, जो सम्प्रति अप्राप्य है। पद्यचूड़ामणि नामक ग्रन्थ भी बुद्धघोष की रचना कही जाती है, किन्तु विद्वान् इससे सहमत नहीं हैं[1]।

अत्थयोजना टीकाकार ञाणकित्ति - अत्थयोजना टीका के अवसान वचनों से स्पष्ट होता है कि आचार्य ञाणकित्ति व्याकरणशास्त्र में अत्यन्त पारंगत थे और अट्ठकथा के साथ पूरे त्रिपिटक के विशेषज्ञ विद्वान् थे। उन्होंने अभिनवपुर के पश्चिमोत्तर दिशा भाग में अवस्थित पनसाराम नामक विहार में रहते हुए उक्त टीकाग्रन्थ की रचना की थी। तथा हि—

"इति नवपुरव्हयनगरस्स पच्छिमुत्तरदिसाभागे पतिट्ठिते पनसारामो ति विस्सुते आरामे वसन्तेन सकलव्याकरणासङ्गचारिणा साट्ठकथतिपिटकधरेन ञाणाकित्तिनाधेय्येन थेरेन कता अयं अट्ठसालिनिया अत्थयोजना समत्ता ति"

बर्मा में लिखित शासनवंश के अनुसार यह ग्रन्थ बर्मा के राजा 'सीहसूर' के समय में विजयपुर नगर के निवासी श्रीमंगल स्थविर ने लिखा है, किन्तु यह कथन समीचीन प्रतीत नहीं होता, क्योंकि ग्रन्थकार स्वयं ग्रन्थ के अन्त में अपना जैसा परिचय दे रहा है, वही सबसे अधिक प्रामाणिक माना जाना चाहिए।

उक्त अभिनवपुर श्रीलंका में कहाँ है? स्थविर ञाणकित्ति किस काल में पैदा हुए? तथा अवसानगाथा में श्रीलंका के जिस राजाधिराज का उल्लेख है, वे राजा कौन थे और किस काल के थे? यह सब कुछ निश्चित नहीं है।

एक अनुमान के अनुसार श्रीलंका के पोलोन्नरू नगर के निवासी सिंहल-राजा महापराक्रमबाहु के काल में उक्त ग्रन्थ विद्यमान था। इनके सेनापतियों ने रामञ्ञ आदि देशों को जीत कर वहाँ अपना शासन स्थापित किया था। ये त्रिरत्न बुद्ध, धर्म और संघ के प्रति अत्यन्त श्रद्धालु थे। उसी काल में श्यामदेश के हरिभुज नामक लावारट्ठ में स्थापित पनसाराम विहार में 'अत्थयोजना' नाम से टीकाएँ लिखी गईं, यह श्रुतिपरम्परा से ज्ञात है। श्याम-देश के राजा द्वारा कम्बोज लिपि में लिखित अत्थयोजना नामक टीकाएँ सिंहल-देश में भेजी गईं, उन्हीं में यह ग्रन्थ भी था, जो बाद में सिंहली लिपि में रूपान्तरित किया गया। महापराक्रमबाहु के काल में लिखित विनयविनिच्छय टीका में इस ग्रन्थ का उल्लेख प्राप्त होता है, अतः इस ग्रन्थ की रचना का काल भी वही या उससे किंचित् पूर्ववर्ती होना चाहिए। महावंश में महापरा-

१. द्र०—द लाइफ एण्ड वर्क आफ बुद्धघोष, पृष्ठ ८५-९१।

क्रमबाहु का जो काल निर्दिष्ट है, वही काल या उसके आस-पास का काल इस ग्रन्थ की रचना का काल है[1]।

प्रस्तुत संस्करण—प्रस्तुत ग्रन्थ धम्मसंगणि की अट्ठकथा अट्ठसालिनी और उसकी अत्थयोजना नामक पालि-टीका है। इसमें से अट्ठसालिनी श्री पी० वी० वापट और श्री आर० डी० वेडेकर द्वारा नागरी अक्षरों में सम्पादित एवं भण्डारकर ओरियन्टल सीरीज, पूना द्वारा सन् १९४२ में प्रकाशित है। यह संस्करण अत्यन्त वैज्ञानिक तथा महत्त्वपूर्ण सूचनाओं, पादटिप्पणियों, सन्दर्भ पाठों और स्थलनिर्देशों से पूर्णतया सुसमृद्ध है। विद्वानों ने अत्यधिक परिश्रम से परिशुद्ध संस्करण का निर्माण किया है। अतः हमने अपने वर्तमान संस्करण में जहाँ तक अट्ठसालिनी का प्रश्न है, पूना-संस्मरण के पाठ को यथावत् स्वीकार कर लिया है। कुछ स्थानों पर ग्रन्थों के अभाव में विद्वानों द्वारा स्थल निर्देश नहीं किया जा सका था और जगह खाली पड़ी थी, उन्हें हमने भरने का प्रयास किया है, किन्तु सब जगह यह सम्भव नहीं हो सका। पूनासंस्करण में स्थलनिर्देश के लिए त्रिपिटक के रोमनसंस्करण का आश्रय लिया गया है, किन्तु हमने सर्वत्र नागरी लिपि के नालन्दा-संस्करण का उपयोग किया है।

पूना-संस्करण के पृष्ठ २८, २९ पर १ : ८२, ८३ एवं ८४ में बुद्धवंस और जातकट्ठकथा के कुछ पद्यात्मक एवं गद्यात्मक उद्धरणों को सम्भवतः द्विरुक्ति के भय से विद्वान् सम्पादकों ने छोड़ दिया है, किन्तु अट्ठसालिनी की अत्थयोजना टीका के टीकाकार स्थविर ञाणकित्ति ने उस छोड़े हुए अंश की भी टीका लिखी है, अतः हमने उक्त ग्रन्थों के छोड़े हुए अंशों को अट्ठसालिनी में यथास्थान सन्निविष्ट कर दिया है।

सर्वांगसुन्दर होने पर भी पूना-संस्करण विगत अनेक वर्षों से बाजार में उपलब्ध नहीं हो रहा था। इससे छात्रों, अनुसन्धाताओं और जिज्ञासु पाठकों को असुविधा हो रही थी। अतः हमने इस दुर्लभ ग्रन्थ के पुनः सम्पादन का निश्चय किया।

अट्ठसालिनी पालि-अभिधर्म के एवं स्थविरवाद के परिज्ञान के लिए अत्यन्त प्रामाणिक एवं मौलिक ग्रन्थ है। इसके ऊपर पालि में अनेकों प्राचीन टीकाएँ हैं, किन्तु नागरी अक्षरों में उनमें से कोई भी उपलब्ध नहीं है। अतः हमने किसी एक टीका के साथ सम्पादन का निश्चय किया। अत्थयोजना टीका संक्षिप्त एवं सरल है तथा इसमें अट्ठसालिनी के पदों का स्पष्ट निर्वचन किया

१. उपर्युक्त वर्णन के लिए द्रष्टव्य -- (क) पञ्ञासेखर द्वारा बुद्धवर्ष २४३३ में सम्पादित एवं सिंहलाक्षर में प्रकाशित प्रस्तुत ग्रन्थ के सिंहली संस्करण की भूमिका।

गया है। अतः हमने इसी के सम्पादन को प्राथमिकता दी। भविष्य में अन्य टीकाओं के प्रकाशन की भी योजना है।

अत्थयोजना टीका—नागरी अक्षरों में इस ग्रन्थ का यह प्रथम संस्करण है। बर्मा, श्रीलंका आदि बौद्ध देशों में तत्तद् लिपियों में इसके संस्करण उपलब्ध हैं, किन्तु भारतीय लिपियों में इसका सर्वथा अभाव था। फलतः अभिधर्म के गहन अध्ययन और उसके सम्यग् अधिगम में कठिनाई का अनुभव हो रहा था। हमने उस बाधा को दूर करने का यथासम्भव लघु प्रयास किया है। पाठशुद्धि को ध्यान में रखकर हमने इसका सिंहली और बर्मी संस्करण से मिलान किया है। सिंहली संस्करण सुवण्णवालुकाराम निवासी सिंहली भिक्षु पञ्ञासेखर स्थविर द्वारा कम्बोज लिपि से सिंहली लिपि में परिवर्तन करके सम्पादित एवं डी० पी० खडम्बि लंकोपकारयन्त्र में बुद्धाब्द २४३३ में मुद्रित है तथा बर्मी संस्करण १९२८ ई० में जम्बु मेद् स्वे प्रेस, रंगून में मुद्रित है। इन दोनों संस्करणों से मिलान करते समय जो पाठभेद दृष्टिगोचर हुए, वे पाद-टिप्पणी में उद्धृत कर दिये हैं। ग्रन्थ में जो अनेक ग्रन्थों के उद्धरण हैं, उनका भी यथासम्भव पाद-टिप्पणी में संकेत कर दिया गया है। इस तरह हमने सांगोपांग शुद्ध संस्करण करने का प्रयास किया है। फिर भी त्रुटि की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। एतदर्थ विद्वज्जनों से हम क्षमाप्रार्थी हैं।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति प्रो० बदरीनाथ शुक्ल, पालिविभाग एवं श्रमणविद्यासंकाय के भूतपूर्व अध्यक्ष प्रो० जगन्नाथ उपाध्याय एवं पालिविभागाध्यक्ष पं० श्री लक्ष्मीनारायण तिवारी के हम कृतज्ञ हैं। यह ग्रन्थ इन्हीं महानुभावों के सत्प्रयास का फल है। इन्होंने ही इसके प्रकाशन की योजना को स्वीकृति प्रदान की और प्रकाशन की सारी व्यवस्था की। कार्य में शिथिलता आने पर बीच-बीच में गति देने के लिए इन्होंने प्रेरणा एवं समुचित प्रोत्साहन भी दिया। हम इनके प्रति साभार नतमस्तक हैं।

दैवदुर्विपाक से इसके अन्तिम प्रकाशन से पूर्व इस कार्य में पूर्णतया गतिरोध उत्पन्न हो गया, फलस्वरूप लगभग ५ वर्ष पश्चात् हम इस ग्रन्थ को विद्वत्समुदाय के समक्ष प्रस्तुत कर पा रहे हैं। मुद्रण-कार्य पुनः प्रारम्भ करने में विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति प्रो० वि० व्यंकटाचलम् जी की विशेष कृपा रही है। इसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं।

हमारे शिष्य भिक्षु अग्गधम्म (बर्मीबौद्धविहार, मलदहिया, वाराणसी) ने बर्मी संस्करण से मिलान करने में तथा संस्कृत विश्वविद्यालय के पालिविभाग के पूर्व प्राध्यापक कल्याणमित्र डी० सोमरतन थेरो (श्रीलंका) ने सिंहली संस्करण

से मिलान करने में हमारी अत्यधिक सहायता की है। हम इन दोनों भिक्षुओं के उपकार को कभी भुला नहीं सकते। हमारे ही शिष्य श्री भगवतीप्रसाद भट्ट ने प्रेस-कापी तैयार करने एवं प्रूफ-संशोधन में बड़ी सहायता की है। वे हमारे आशीर्वाद के पात्र हैं।

विजय प्रेस के व्यवस्थापक एवं कर्मचारियों के भी हम आभारी हैं, जिन्होंने बड़ी लगन और धैर्य के साथ पालि जैसी अपरिचित एवं दुरूह भाषा के मुद्रणकार्य को पूर्णता प्रदान करने में सहयोग प्रदान किया।

बुद्धपूर्णिमा, वि० सं० २०४६ — रामशङ्कर त्रिपाठी
दि० २० मई १९८९ — सम्पादक

अट्ठसालिनो धम्मसङ्गहट्ठकथा
अत्थयोजनाटीकाय समन्नागता

विसयानुक्कमणिका

आचरियबुद्धघोसविरचिता

अट्ठसालिनी

नाम

धम्मसङ्गणिप्पकरणट्ठकथा

आचरियञाणकित्तिथेरेन रचिताय

अट्ठसालिनीयोजनाय

अभिधम्मसंवण्णनाय समन्नागता

अट्ठसालिनी

नाम

धम्मसङ्गणिप्पकरणट्ठकथा

अट्ठसालिनीयोजना-सहिता

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

करुणा विय सत्तेसु पञ्ञा यस्स महेसिनो ।
ञेय्यधम्मेसु सब्बेसु पवत्तित्थ यथारुचिं ॥१॥

अट्ठसालिनीयोजना[१]

नमित्वा आचरियं सेट्ठं बुद्धघोसो ति विस्सुतं ।
तरन्तं[२] दुत्तरागाधं अभिधम्ममहोदधिं ॥
या कता बुद्धघोसेन अभिधम्मकथा वरा ।
सुदुद्दसा सुनिपुणा विपुलत्थावहासिनी[३] ॥
अत्थयोजनमेतिस्सा वचनत्थादिलङ्कतं ।
सोतूनं सुखबोधाय करिस्सं किञ्चिमत्तकं ॥

वीसतिगाथा-अत्थयोजना

करुणा यस्स सम्बुद्धस्स महेसिनो पवत्तित्थ सत्तेसु[४] यथारुचि, विय यथा, पञ्ञा यस्स सम्बुद्धस्स महेसिनो पवत्तित्थ ञेय्यधम्मेसु[५] यथारुचि[६] एवं ।

किरति परदुक्खं विक्खिपतीति 'करुणा' । 'किर'-धातु[७], या (२ म०) धम्मजाति यस्मा किरति विक्खिपति परदुक्खं इति तस्मा सा धम्मजाति करुणा नाम । 'किर'-अपनयने । **यदनुपपन्ना निपातना सिज्झन्ती**[८] ति सुत्तेन उनपच्चयो । **रहावितो नो णा**[९] ति सुत्तेन नस्स णो, किरधातुम्हि इकारस्स अकारो । करुणापञ्ञानं सधम्मसम्बन्धजोतको[१०] वियसद्दो ।

---

१. अट्ठसालिनी–अत्थयोजना–सी० । २. तरितुं–सी० । ३. विपुलत्थावतारिणी–सी० । ४. ०सब्बेसु–सी० । ५. ०सब्बेसु–सी० । ६. यथारुची–सी० । ७. सी० पोत्थके नत्थि । ८. क० २.८.४८ । ९. क० ४.१.२६ । १०. समानधम्म०–सी० ।

दयाय ताय सत्तेसु समुस्साहितमानसो ।
पाटिहेरावसानम्हि वसन्तो तिदसालये ॥२॥
पारिच्छत्तकमूलम्हि पण्डुकम्बलनामके ।
सिलासने सन्निसिन्नो आदिच्चो'व युगन्धरे ॥३॥

रूपादीसु सत्ता विसत्ता ति 'सत्ता' । सपदविग्गहो । 'सन्ज'-सङ्गे[1] । **बुधगमाविथे कत्तरी** ति (क० ४.२.८) सुत्तेन तो । ञेय्यधम्मेसु[2] यथासभावं पकारेहि जानाति पटिविज्झतीति 'पञ्ञा' ।

(२ सी०) महन्ते सीलक्खन्धादयो एसि गवेसीति 'महेसि' । मह-पुब्बो 'इस'-गवेसने । **मुनादीहि ची** ति (क० ४.२.४६) सुत्तेन इ ।

ञातब्बा ति ञेय्या[3] सङ्खतासङ्खतधम्मा । पच्चयेहि धरियन्तीति[4] धम्मा, सङ्खत-धम्मा । धारियन्ति[5] यथासभावतो ति वा धम्मा । [6]अत्तनो सभावं धारेन्तीति धम्मा[6], सङ्खता-सङ्खतपञ्ञत्तियो । ञेय्या च ते धम्मा चाति ञेय्यधम्मा ।

पवत्तित्था ति पपुब्बो 'वतु'-वत्तने ।

रुच्चति[7] इच्छतीति 'रुचि' । 'रुचि'-इच्छायं[8] । या या रुचि यथारुचि, कम्मधारयो । रुचिया अनुरूपं वा यथारुचि, अव्ययीभावो । यथारुचीति पदं पवत्तित्था ति पदे क्रिया-विसेसनं ॥१॥

यो सम्बुद्धो ताय दयाय पवत्ताय सत्तेसु समुस्साहितमानसो । अथवा यो सम्बुद्धो ताय दयाय समुस्साहितमानसो सत्तेसु विसयभूतेसु निमित्तभूतेसु वा । वसन्तो तिदसालये पाटिहेरावसानम्हि आदिच्चो सोभेय्य युगन्धरे इव यथा सन्निसिन्नो संसोभमानो निसिन्नो सिलासने पण्डुकम्बलनामके पारिच्छत्तकमूलम्हि एवं ।

दुक्खापनयनवसेन दयति दुक्खितसत्ते रक्खतीति 'दया' । 'दय'-रक्खणे । दुक्खितसत्तेसु दयति गच्छति पवत्ततीति वा करुणा[9] 'दया' । 'दय'-गतियं ।

समुस्साहितो[10] मानसो[11] यस्स सो ति[12] समुस्साहितमानसो । भगवतो पटिपक्खे वेनेय्य-गते किलेसे हरतीति पाटिहारियं । यं इद्धिविधं यस्मा हरति किलेसे वेनेय्यगते पटिपक्खे भगवतो इति, तस्मा तं इद्धिविधं पाटिहारियं ।

अथवा भगवतो च सासनस्स च पटिपक्खे तित्थिये हरतीति पाटिहारियं । अथवा कतकिच्चेन हरितब्बं[13] पवत्तेतब्बं ति पाटिहारियं । वा[14] परसत्तानं उपक्किलेसे आपच्छा-हरतीति[15] पटिहारियं, इद्धि-आदेसनानुसासनियो[16] । पटिहारियं एव पाटिहारियं । पटिहारिये वा भवं पाटिहारियं । पटिपक्खे हरतीति वा पटिहारियं, चतुत्थज्झानं मग्गो च । पटिहारिये

---

१. सज्ज—सत्ते—सी० । २. ०धम्मे—सी० । ३. ०अत्तनो सभावं धारेन्तीति धम्मा—सी० पोत्थके अधिको पाठो । ४. ०उपलब्भियन्तीति वा—सी० । ५. धारयन्ति—सी० । ६-६. सी० पोत्थके इध नत्थि । ७. रुचति—सी० । ८. रुच—इच्छायं । मुनादीहि चीति इ—इति अधिको पाठो सी०पोत्थके । ९. सी० पोत्थके नत्थि । १०. ०स्साहितं—सी० । ११. मानसं—सी० । १२. सी० पोत्थके नत्थि । १३. पच्चाहरितब्बं—सी० । १४. नत्थि—सी० । १५. पच्छाहरतीति—सी० । १६. आणा—देसना०—सी० ।

चक्कवाळसहस्सेहि दसहागम्म सब्बसो ।
सन्निसिन्नेन देवानं गणेन परिवारितो ॥४॥

जातं पाटिहारियं । पटिहारिये (३म०) निमित्तभूते वा आगतं पाटिहारियं । पटिहारियतो वा आगतं ति पाटिहारियं, इद्धिविधं । पाटिहारियं[१] एव पाटिहेरं । (३सी०) पाटिहेरस्स अवसानं पाटिहेरावसानं । वसमानो ति वसन्तो ।

जातिसत्ताविनाससङ्खाता तिस्सो दसा अवत्था एतेसं ति तिदसा । तिदसानं आलयो तिदसालयो ।

परिसमन्ततो छत्तं विय तिट्ठतीति पारिच्छत्तको, तद्धितविग्गहो ।

मूलति पतिट्ठाति एतेना ति मूलं । पारिच्छत्तकस्स मूलं पारिच्छत्तकमूलं । पण्डुवण्ण-सदिसत्ता पण्डुकम्बलो ।

धम्मपदट्ठकथायं पन जयसुमनपुप्फसदिसं पण्डुकम्बलसिलासनं ति वुत्तं ।

पण्डुकम्बलं इति नामं यस्स तं पण्डुकम्बलनामकं । सक्केन[२] सेवियतीति[२] सिला । 'सि'–सेवायं, **सितोलक्वाला** ति (मो० ण्वादि० १८०) मोग्गलानसुत्तेन लक्पच्चयो । आसयति एत्था ति आसनं, सिलासनं[३] । संसोभमानो हुत्वा निसीदतीति सन्निसिन्नो ।

अदितिया अपच्चं आदिच्चो । आभुसो[४] दिप्पतीति[५] आदिच्चो । पस्स चादेसो ।

चन्दिमसुरियसङ्खातं युगं धारेतीति[६] युगन्धरो । दयाया ति पदं समुस्साहित इति वचने ततियाकत्ता । सत्तेसू ति पदं दयाया ति पदे आरम्मणवसेन विसयाधारो ।

दुतियनये सत्तेसू ति पदं समुस्साहितवचने[७] विसयाधारो, निमित्तं वा । पाटिहेराव-सानम्हीति पदं वसन्तो ति पदे कालसत्तमी । सिलासने ति पदं सन्निसिन्नो ति पदे ओपसिले-सिकाधारो ॥ २–३ ॥

गणेन देवानं आगम्म आगन्त्वा दसहि चक्कवाळसहस्सेहि सब्बसो समन्ततो ।

अथवा आगम्म दसहि चक्वाळसहस्सेहि सन्निवेसवसेन सब्बसो सब्बेहि दिसाभागेहि । अथवा सन्निसिन्नेन सब्बसो समन्ततो परिवारितो पुरेक्खतो[८] कत्वा ॥ ४ ॥

---

१. पटिहीरं–सी० । २-२. सक्को नं सेवतीति–सी० । ३. सिला एव आसनं०–सी० । ४. अभुसो–सी० । ५. ०वा–सी० । ६. ०तदुब्बेधमत्तधारितायाति–सी०पोत्थके अधिको पाठो । ७. समुस्साहित इति वचने–सी० । ८. पुरक्खतो–सी० ।

मातरं पमुखं कत्वा तस्सा पञ्ञाय तेजसा ।
अभिधम्मकथामग्गं देवानं सम्पवत्तयि ॥५॥
तस्स पादे नमस्सित्वा **स**म्बुद्धस्स सिरीमतो ।
सद्धम्मं च'स्स पूजेत्वा कत्वा **स**ङ्घस्स च'ञ्जलिं ॥६॥

मातरं पमुखं पधानं सम्पवत्तयि कथेसि, अभिधम्मकथामग्गं देवानं तेजसा तस्सा पञ्ञाय ।

रथचक्कं विय इरन्तीति[1] चक्कवाळा । अथवा रथचक्कं विय आवळा ति[2] चक्कवाळा । तेन **'लोकदीपकसारे'** (४-सी०) चक्कवाळवत्तं ति[3] वत्तब्बे वाळं ति[4] [5]वोहारं गतं[5] । यस्मा रथचक्कं विय समवत्तञ्च[6] कूपं[7] विय अट्टाकारञ्च[7] तस्मा चक्कवाळं ति वुच्चतीति वुत्तं । चक्कवाळानं सहस्सानि चक्कवाळसहस्सानि ।

समं सम्मा वा निसीदतीति सन्निसिन्नो । अवयवेन सह गणियतीति गणो । 'गण'–सङ्ख्याने । परि समन्ततो वरियतीति परिवारितो । पकट्ठं मुखं आरम्भो पमुखं । तेजति पञ्ञा एतेनाति तेजो । 'तिज'–निसाने[9] । निसानं[10] तिक्खनं । अत्थो कथियति (४ म०) एताया ति कथा, अभिधम्मो एव कथा अभिधम्मकथा । अथवा अभि विसिट्ठो धम्मो[11] कुसलादिधम्मो, कथियति[12] एताया ति अभिधम्मकथा ।

धम्मानं पटिवेधस्स उपायभावेन मग्गति पवत्ततीति मग्गो । अभिधम्मकथा च सा[13] मग्गो चाति अभिधम्मकथामग्गो । उपायभूता अभिधम्मकथा ति अत्थो ।

मग्गो विया ति मग्गो । अभिधम्मकथाय मग्गो अभिधम्मकथामग्गो । अभिधम्मकथापबन्धो ति अत्थो ।

चक्कवाळ-सहस्सेहीति पदं आगम्मा ति पदे निद्दिट्ठापादानं । पठमनये सब्बसो ति पदं आगम्मा ति पदे ततियाविसेसनं ति दट्ठब्बं[14] । दुतियनये सब्बसो ति पदं सन्निवेसवसेना[15] ति पदे अपादानं । ततियनये सब्बसो ति पदं सन्निसिन्नेना ति पदे ततियाविसेसनं । मातरं ति पदं कत्वा ति पदे पकतिकम्मं । पमुखं ति पदं कत्वा ति पदे विकतिकम्मं ॥ ५ ॥

अहं नमस्सित्वा पादे तस्स[16] सिरीमतो पूजेत्वा सद्धम्मञ्च अस्स सम्बुद्धस्स कत्वा अञ्जलिं संघस्स च ।

पदति[17] गच्छति एतेहीति पादा । सेवियतीति[18] सिरी, पञ्ञा पुञ्ञा[19] । अथवा कतपुञ्ञपुग्गले[20] निस्सयतीति सिरी, कत्तुसाधनं । कतपुञ्ञेहि वा निस्सियतीति सिरी, कम्म-

---

१. अवन्ति पवत्तन्तीति–सी० । २. आवट्टन्तीति–सी० । ३. ०वट्टं ति–सी० । ४. चक्कवाळं ति–सी० । ५-५. वोहारगतं–सी० । ६. ०वट्टञ्च–सी० । ७-७. सकटं विय आवटाकारञ्च–सी० । ८. ०च–सी० । ९. निसामने–सी० । १०. निसामनं–सी० । ११. ०अभिधम्मो–सी० । १२. अभिधम्मो०–सी० । १३. ०सो–सी० । १४. दट्ठब्बा–म० । १५. सन्निसिन्नेना ति–सी० । १६. ०संबुद्धस्स–सी० । १७. पज्जति–सी० । १८. सेवेतीति–सी० । १९. पुञ्ञानि–सी० । २०. कतपुञ्ञे०–सी० ।

निपच्चकारस्सेतस्स कतस्स रतनत्तये।
आनुभावेन सोसेत्वा अन्तराये असेसतो ॥७॥
विसुद्धाचारसीलेन निपुणामलबुद्धिना।
भिक्खुना बुद्धघोसेन सक्कच्चं अभियाचितो ॥८॥

साधनं। सिरीसोभग्गादिसम्पत्ति[1]। 'सि'–निस्सये। **यदादिना** (क० २.८.४८) सुत्तेन रो ई च। सिरी यस्स[2] अत्थीति सिरीमा।

सतं धम्मो सद्धम्मो, सन्तो पसत्थो[3] वा धम्मो सद्धम्मो, सन्तो संविज्जमानो वा धम्मो सद्धम्मो। चसद्देन न[4] केवलं बुद्धरतनं नमस्सित्वा[5] दस्सेति।

सम्मा किलेसे हनतीति संघो। अञ्जति ब्यत्तं अनेन पकासेतीति अञ्जलि। 'अञ्ज'–ब्यत्तिमक्खनगतिकन्तीसु। (५ सी०) **अञ्जाली** ति (मो० ण्वादि.१९६) मोग्गलानसुत्तेन अलि ॥६॥

सोसेत्वा अन्तराये असेसतो आनुभावेन एतस्स निपच्चकारस्स मया कतस्स रतनत्तये।

निपतनं निपच्चं। करणं कारो। निपच्चस्स कारो निपच्चकारो। करियित्था ति कतो। रतिं जनेन्तीति रतनानि। रतिपुब्बो 'जन'–जनने। **वण्णागमो वण्णविपरियायो** ति आदिना निरुत्तिसुत्तेन इकारस्स अकारो जलोपो च। तिण्णं समूहो तयं[6]।

अनु[7] पुनप्पुनं[8] तंसमङ्गिनं निपच्चकारं भावेति वड्ढेतीति अनुभावो। अनुभावो एव आनुभावो। अन्तरा आयन्तीति अन्तराया। असेसतो ति न सेसा असेसा। **क्वचि तो** ति (क०२.५.२) योगविभागेन उपयोगत्थे तो पच्चयो ॥ ७ ॥

भिक्खुना बुद्धघोसेन विसुद्धाचारसीलेन निपुणामलबुद्धिना सक्कच्चं चित्तिं[9] कत्वा अभियाचितो[10]।

विसेसेन सुज्झन्तीति विसुद्धानि। समणसारुप्पं (५ म०) आचरणं आचारो। समणसारुप्पं आचरति एतेना ति वा आचारो। धम्मेन[11] सीलति[12] कायवचीकम्मानि सम्मा थपेतीति[13] सीलं। सीलति[14] वा कुसलानं अधिट्ठानभावेन उपधारेतीति सीलं। 'सील'–उपधारणे। आचारो च सीलञ्च आचारसीलानि। विसुद्धानि आचारसीलानि यस्स सो विसुद्धाचारसीलो। धम्मेसु निपुणा ति[15] छेका[16] भवतीति निपुणा[17]। छेकत्थो हि निपुणसद्दो। निपुब्ब 'पू'–पवने। मलन्ति सत्ता संकिलिस्सन्ति एतेना ति मलं, नत्थि मलं एतिस्सा ति अमला। मलतो विरहिता वा अमला। निपुणा एव अमला निपुणामला। बुज्झनं बुद्धि। बुज्झति एताया ति वा बुद्धि। निपुणामला बुद्धि यस्स सो निपुणामलबुद्धि। भिक्खति याचतीति भिक्खु, संसारे भयं इक्खतीति वा[18] भिक्खु। बुद्धस्स घोसो अस्सा ति बुद्धघोसो। अथवा बुज्झनं बुद्धं[19] ञाणं। बुद्धेन ञाणहेतुना घोसो कित्तिसद्दो अस्सा ति बुद्धघोसो। सक्कच्चं ति संपुब्ब 'कर'–करणे, त्वा पच्चयो। अभिमुखं याचितब्बो ति अभियाचितो ॥ ८ ॥

---

१. सरीर०–सी०। २. अस्स–सी०। ३. पसट्ठो–सी०। ४. नत्थि–सी०। ५. ०ति–सी०। ६. ०रतनानं तयं रतनत्तयं–सी० पोत्थके अधिको पाठो। ७. ०अनु–सी०। ८. नत्थि–सी०। ९. चित्ती–सी०। १०. ०अभिमुखं याचितो–सी० पोत्थके अधिको पाठो। ११. धम्मे–सी०। १२. सुसीलति–सी०। १३. ठपेतीति–सी०। १४. सीलयति–सी०। १५. निपुणो ति–सी०। १६. छेको–सी०। १७. निपुणो–सी०। १८. नत्थि–म०। १९. बुद्धि–सी०।

यं **देवदेवो** देवानं देसेत्वान यतो पुन।
थेरस्स **सारिपुत्तस्स** समाचिक्खि **विनायको** ॥९॥

अनोतत्तदहे कत्वा उपट्ठानं **महेसिनो**।
यं च सुत्वान सो थेरो आहरित्वा महीतलं ॥१०॥

भिक्खूनं पयिरुदाहासि इति भिक्खूहि धारितो।
सङ्गीतिकाले सङ्गीतो **वेदेहमुनिना** पुन ॥११॥

भगवा देवदेवो विनायको देसेत्वा यं अभिधम्मं देवानं समाचिक्खि सम्मा आचिक्खि, यं अभिधम्मं थेरस्स सारिपुत्तस्स, नयतो सङ्खेपतो। पुन सो थेरो, कत्वा उपट्ठानं महेसिना, अनोतत्तदहे सुत्वान यञ्च अभिधम्मं (६–सी०) आहरित्वा महीतलं पयिरुदाहासि, भिक्खूनं पञ्चसतानं। यो अभिधम्मो भिक्खूहि धारितो इति इमिना अनुक्कमेन यो अभिधम्मो। वेदेहमुनिना आनन्देन सङ्गीतो सङ्गीतिकाले। पुन पच्छा।

देवानं देवो देवदेवो। नयनं सङ्खेपेन पवत्तनं नयो।

थिरेहि सीलक्खन्धादीहि समन्नागतो थेरो। पोसियतीति पुत्तो। सारिया पुत्तो सारिपुत्तो। समाचिक्खीति कथेसि[1]। वेनेय्यसत्ते विनेतीति विनायको, नायकेहि विरहितो ति वा विनायको। सूरियरंसिसम्फुट्ठाभावेन नत्थि अवतत्तं उदकं एत्था ति अनोतत्तो। उदकं दधातीति दहो। 'दध'–धारणे। धस्स हो। अनोतत्तो च सो दहो चा ति अनोतत्तदहो। उपगन्त्वा ठियति ठियते उपट्ठानं। यं चा ति चसद्दो विसेसाभिधानारम्भो[2]। महियति पूजियतीति मही। 'मह'–पूजायं। महतीति वा मही। 'मह'–वुड्ढिट्ठियं[3]। तलन्ति पतिट्ठहन्ति रुक्खादयो एताया ति तलं। 'तल'–पतिट्ठायं। महिया तलं महीतलं। धारियित्था[4] ति धारितो। सङ्गहेत्वा गायनं सङ्गीति।

कलियन्ते सङ्ख्यायन्ते आयुप्पमाणादयो एतेना ति कालो। 'कल'–सङ्ख्याने। (६ म०) सङ्गीतिया कालो सङ्गीतिकालो। सङ्गहेत्वा गायनं[5] सङ्गीति[6]। विदति जानातीति एतेना ति[7] वा वेदो। 'विद'-ञाणे। वेदेन ईहति पवत्ततीति वेदेहो। 'ईह'-वत्तियं[8]। मुनाति हिताहितं जानातीति मुनि। वेदेहो च सो मुनि चाति[9] वेदेहमुनि[10]। वेदेहपुत्तमुनीति वत्तब्बे **वण्णागमादिसुत्तेन** पुत्तसद्दस्स लोपं कत्वा वेदेहमुनीति वुत्तं[11]। वेदेहमुनिना ति पदं सङ्गीतो ति पदे ततियाकत्ता ॥ ९-११ ॥

---

१. ०पि अत्थि–सी०। २. विसेसाभिधानारम्भे–म०। ३. ०पूजायं–म०। ४. धारयि०–सी०। ५. गीयते ति–सी०। ६. सङ्गीतो–सी०। ७. एताया ति–म०। ८. पवत्तियं–सी०। ९. चेति–सी०। १०. ०"अपदानकथायं पन वेदेहमुनीति वेदेहरट्ठे जाता वेदेहि, तस्सा देविया पुत्तो वेदेहपुत्तो। मोनं वुच्चति ञाणं। मोनं इतो ततो पवत्तेति मुनि। वेदेहो च सो मुनि चेति वेदेहमुनि"—अयमेसो सीहलपोत्थके अधिको पाठो। ११. वुत्तं ति वुत्तं–सी०।

तस्स गम्भीरञाणेन ओगाळ्हस्स अभिण्हसो ।
नानानयविचित्तस्स अभिधम्मस्स आदितो ॥१२॥
या **म**हाकस्सपादीहि वसीहट्ठकथा पुरा ।
सङ्गीता अनुसङ्गीता पच्छा पि च इसीहि या ॥१३॥
आभटा पन थेरेन **म**हिन्देनेधमुत्तमं ।
या दीपं दीपवासीनं भासाय अभिसङ्खता ॥१४॥

या अट्ठकथा । तस्स अभिधम्मस्स । पुरा वसीहि अरहन्तेहि महाकस्सपादीहि सङ्गीता सङ्गहेत्वा वुत्ता । आदितो[1] आदिम्हि पठमसङ्गीतियं या अट्ठकथा इसीहि अरहन्तेहि यसत्थेरादीहि अनुसङ्गीता पच्छापि च दुतियततियसङ्गीतीसु । या अट्ठकथा थेरेन महिन्देन आभता पन एतं दीपं उत्तमं (७–सी०) जम्बुदीपतो या अट्ठकथा तम्बपण्णियत्थेरेहि अभिसङ्खता भासाय दीपवासीनं । पच्छा[2] अपनेत्वा भासं तम्बपण्णियवासीनं जनानं । ततो अट्ठकथातो आरोपयित्वा भासं मागधभासं निद्दोसं दोसविरहितं तन्तिनयानुगं दीपयन्तो विनिच्छयं महाविहारवासीनं थेरानं असम्मिस्सं निकायन्तरलद्धीहि । अनाकुलं सनिकाये[3] पि अनाविलं गहेत्वान अत्थं गहेतब्बं आगमट्ठकथासु पि, विचक्खणे तोसयन्तो पकासयिस्सामि अत्थं तस्स अभिधम्मस्स[4] गम्भीरञाणेहि ओगाळ्हस्स अभिण्हसो नानानयविचित्तस्स ।

अथवा अहं अपनेत्वा भासं तम्बपण्णियनिवासीनं[5] ततो अट्ठकथातो आरोपयित्वा भासं निद्दोसं तन्तिनयानुगं गहेत्वान अत्थं गहेतब्बं आगमट्ठकथासु[6] विचक्खणे तोसयन्तो[7] अत्थं असम्मिस्सं निकायन्तरलद्धीहि अनाकुलं विनिच्छयभूतं महाविहारवासीनं । तस्स अभिधम्मस्स अरियेहि गम्भीरञाणेहि ओगाळ्हस्स अभिण्हसो नानानयविचित्तस्स पकासयिस्सामि ।

गं पथविं[8] भिन्दित्वा गच्छति पवत्ततीति गम्भीरो[9] । गंपुब्ब-'भिदि'-द्विधाकरणे । ईरपच्चयो । गुणा[10] भायन्ति अस्मा ति वा[10] गम्भीरो । गम्भीरो विया ति गम्भीरं, ञाणं । गम्भीरानि ञाणानि गम्भीरञाणानि । गम्भीरञाणेहि ओगाळ्हस्स, न सद्दमत्तकेना ति अधिप्पायो । अथवा गम्भीरं ञाणं येसं ते गम्भीरञाणा । अवगाहियते ति ओगाळ्हो । नीयति[11] ञायतीति नयो । नाना च सो नयो चाति नानानयो । एकत्तादिभेदतो नन्दियावट्टादिभेदतो च अनेकविधो नयो ति अत्थो । नयतीति वा नयो । पाळि-(७ म०) गति । नाना च सो नयो चा ति नानानयो ।

कुसलादि-खन्धादि-सङ्गहादि-समयविमुत्तादि-थपनादि-अकुसलादि-नानानयेन[12] विचित्तो नानानयविचित्तो । कस्सं वप्पबीजं[13] पालेतीति कस्सपो । गोत्तागतनामवसेन[14] वा कस्सपो । महन्तो च सो कस्सपो चा ति महाकस्सपो । महाकस्सपो आदि येसं ते महाकस्सपादयो । वसनं

---

१. नत्थि–सी० । २. ०अहं–सी० । ३. सकनिकाये–सी० । ४. ०अरियेहि–सी० । ५. तम्बपण्णिनि०–सी० । ६. ०कथासु पि–सी० । ७. ०दीपयन्तो–सी० । ८. पठविं–सी० । ९. ०अगाधो–सी० । १०–१० तोसयन्ति अस्मिं ति वा–म० । ११. नयति–सी० । १२. ०अकुसलमूलादि-कुसलमूलादि-तिकपट्ठानादीनं वसेन अनेकविधा पाळि-गतीति अत्थो । नाना०–सी० १३. वप्पं कुसलबीजं–सी० । १४. गोत्तानुगत०–सी० ।

२

अपनेत्वा ततो भासं **तम्बपण्णिनिवासिनं** ।
आरोपयित्वा निद्दोसं भासं तन्तिनयानुगं ॥१५॥
निकायन्तरलद्धीहि असम्मिस्सं अनाकुलं ।
महाविहारवासीनं दीपयन्तो विनिच्छयं ॥१६॥

समत्थनं वसो । वसो एतेसं अत्थीति वसिनो । वसिभावेन (८–सी०) समन्नागतो वा वसिनो । अत्थो कथियति एताया ति अट्ठकथा, **तथनरानं टठणला ति**[१] मोग्गलानसुत्तेन थस्स ठो ।

पुरे भवा पुरा । सङ्गहेत्वा गीता संगीता । अनु पच्छा [२]सङ्गहेत्वा गीता[२] अनुसङ्गीता । पच्छापि चा ति अपिसद्दो पठमसंगीतं[३] अपेक्खति । चसद्दो अट्ठानपयुत्तो, तेन अनुसंगीता चा ति योजेतब्बो । कस्मा, **सीलक्खन्धट्ठकथायं** पञ्चहि या सङ्गीतानुसङ्गीता च पच्छापीति दस्सनतो । अपि चा ति निपातसमुदायो वा । सीलादिगुणे इसन्तीति[४] इसिनो । 'इस'-गवेसने । आभरियित्था ति आभतो । पनसद्दो विसेसत्थो । इन्दति परमिस्सरियं वत्तेतीति इन्दो । 'इन्द'-परमिस्सरिये । महन्तो च सो इन्दो चाति महिन्दो । उग्गतत्ता उत्तमो । जलमज्झे दिप्पतीति दीपो । दीपे वसन्तीति दीपवासिनो । भासन्ति एताया ति भासा । अभिसङ्खरियते[५] अभिसङ्खता । भासाय अभिसङ्खता ति एत्थ अयं अट्ठकथा महामहिन्देन तम्बपण्णिदीपं आभता, पच्छा तम्बपण्णियेहि थेरेहि निकायन्तरलद्धिदोसासङ्करणत्थं[६] थपिता ति अधिप्पायो । तम्बपाणि येसं नरानं ते तम्बपाणी । तम्बपाणी एव तम्बपण्णि । दीपो पि तम्बपण्णि नाम । तेन महावंसे (७ : ४०-४१) महानामत्थेरेन वुत्तं—

नावाय भूमिमोतिण्णा विजयप्पमुखा नरा ।
किलन्ता पाणिना भूमिं[७] आलम्बिय निसीदिसुं ॥
तम्बभूमिरजोफुट्ठा[८] तम्बपण्णि[९] यतो अहु ।
सो देसो चेव दीपो च तम्बपण्णि ततो अहू ति ॥

तम्बपण्णियं निबद्धं वसन्ति सीलेना ति तम्बपण्णिनिवासिनो । नत्थि असभावभूतसद्दसङ्खातो दोसो एतस्सा ति निद्दोसो, दोसतो वा विरहितो[१०] निद्दोसो । अत्थं तायति रक्खतीति तन्ति[११] । तन्तिनयं अनुगच्छतीति तन्तिनयानुगा । निब्बिसेसेन[१२] कियति चयति (८म०) अवयवेना ति निकायो । 'कि'-चये[१३] । निकाया च ते अन्तरा चा ति निकायन्तरा । लद्धितब्बा गहेतब्बा ति लद्धि । 'लभ'-लाभे । निकायन्तरानं (९–सी०) लद्धि निकायन्तरलद्धि । न सम्मिस्सो असम्मिस्सो । न आकुलो अनाकुलो । विहरन्ति एत्था ति विहारो । महन्तो च सो विहारो चा ति महाविहारो । महाविहारे वसन्ति सीलेना ति महाविहारवासिनो । धम्मरुचिसागलानं अभयगिरिजेतवनवासीनं विनिच्छयस्स अत्थिभावेन महाविहारवासीनं ति विसुं वुत्तं ।

---

१. मो० १:५२ । २–२. संगीता–सी० ३. ०सङ्गीतिं–सी० । ४. इसन्ति गवेसन्तीति सी० । ५. अभिसङ्खरीयतीति–सी० । ६. ०दोससङ्करणपरिहरणत्थं–सी० । ७. भूमि–म० । ८. ० फुट्ठो–सी० । ९. ०पाणि–सी० । १०. रहिता–सी० । ११. ०नयनं गमनं नयो, तन्तिया नयो तन्तिनयो–सी० । १२. नत्थि सेसेन–सी० । १३. कि-चये । णो ।–सी० ।

अत्थं पकासयिस्सामि आगमट्ठकथासु पि ।
गहेतब्बं गहेत्वान तोसयन्तो विचक्खणे ॥१७॥
कम्मट्ठानानि सब्बानि चरियाभिञ्ञा विपस्सना ।
विसुद्धिमग्गे पनिदं यस्मा सब्बं पकासितं ॥१८॥
तस्मा तं अगहेत्वान सकलाय पि तन्तिया ।
पदानुक्कमतो एव करिस्सामत्थवण्णनं ॥१९॥
इति मे भासमानस्स अभिधम्मकथं इदं ।

दीपयमानो दीपयन्तो । विविधेहि आकारेहि निच्छयतीति विनिच्छयो । अरियति ञायतीति अत्थो । आगमिस्सन्ति अत्तत्थपरत्थादयो[१] एतेन, एतस्मा ति वा आगमो, दीघनिकायादिनिकायो[२] । आगमस्स अट्ठकथा आगमट्ठकथा । अपिसद्दो[३] अभिधम्मस्स पोराणट्ठकथं अपेक्खति । आगमट्ठकथासु पीति अत्थि । गहियते ति गहेतब्बो, अत्थो[४] । तोसयमानो ति तोसयन्तो । 'तुस'-पीतिम्हि । विसेसेन चक्खन्तीति[५] विचक्खणा । 'चक्ख'-दस्सने ।

तस्स ओगाळ्हस्स नानानयविचित्तस्सा ति पदत्तयं अभिधम्मस्सा ति पदस्स विसेसनं । गम्भीरञाणेहीति पदं ओगाळ्हस्सा ति पदे करणं, अवुत्तकत्ता वा । अभिण्हसो ति पदं ओगाळ्हस्सा ति पदस्स ततियाविसेसनं । अभिधम्मस्सा ति पदं अत्थं ति पदे सम्बन्धो । ततो ति पदं अपनेत्वा ति पदे अपगमनत्थापादानं । निद्दोसं तन्तिनयानुगं[६] पदद्वयं भासं ति पदस्स विसेसनं । भासं ति पदं आरोपेत्वा ति पदे कम्मं । निकायन्तरलद्धीहीति पदं असम्मिस्सं ति पदे सहयोगततीया[७] । असम्मिस्सं अनाकुलं ति पदद्वयं विनिच्छयं ति पदे विसेसनं । विनिच्छयं ति पदं दीपयन्तो ति पदे कम्मं ।

दुतियविकप्पे असम्मिस्सं अनाकुलं विनिच्छयं ति पदत्तयं अत्थं ति पदस्स विसेसनं । अत्थं ति पदं दीपयन्तो ति पदे कम्मं । गहेत्वाना ति पदं तोसयन्तो ति पदे पुब्बकालक्रिया । तोसयन्तो ति पदं अहं ति पदस्स विसेसनं । विचक्खणे ति पदं तोसयन्तो ति पदे कम्मं ॥१२-१७॥

इदं विधानं सब्बं । इति कम्मट्ठानानि सब्बानि चरियाभिञ्ञा-विपस्सनामया यस्मा पकासितं[८] विसुद्धिमग्गे पन तस्मा पकासितत्ता अहं अग्गहेत्वा[९] तं विधानं करिस्सामि अत्थवण्णनं पदानुक्कमतो एव । तन्तिया सकलाय पि ॥१८-१९॥

(१० सी०) तुम्हे अविक्खित्ता निसामेथ इमं अभिधम्मकथं । मे मम भासमानस्स इति यथादस्सितप्पकारेन अपनेत्वा ततो भासं ति एवमादिना, हि सच्चं, अयं कथा दुल्लभा ।

(९ म०) योगिकस्स[१०] कम्मस्स[१०] पवत्तिट्ठानानि कम्मट्ठानानि । चरन्ति एताया ति चरिया । अभि विसेसतो[११] जानातीति अभिञ्ञा । चरिया च अभिञ्ञा च चरियाभिञ्ञा । विविधेना-

---

१. ०एत्थ–सी० । २. ०निकाया–सी० । ३. पि०–सी० । ४. यो०–सी० । ५. अत्थं०–सी० । ६. ०नुगन्ति–सी० । ७. सहत्थततिया–सी० । ८. पकासिता–सी० । ९. अगहेत्वान–सी० । १०-१०. योगकम्मस्स–सी० । ११. सेसतो–सी० ।

अविक्खित्ता निसामेथ दुल्लभा हि अयं कथा ति ॥२०॥

■

कारेन पस्सतीति विपस्सना । पनसद्दो विसेसत्थो, वचनालङ्कारो वा । सह कलाय अवयवेन पवत्ततीति[1] सकला । अपिसद्दो अवयवत्थन्तरं[2] अपेक्खति । पदस्स अनुक्कमो पदानुक्कमो । एवसद्दो उप्पटिपाटिया वण्णनं न करिस्सामीति ञापेति । अत्थो वण्णियति वित्थारियति एताया ति अत्थवण्णना ।

अभिधम्मस्स कथा अभिधम्मकथा । नानारम्मणे न विक्खिपन्तीति अविक्खित्ता । विपुब्ब-'खिप'-खिपने । दुक्खेन लभियतीति दुल्लभा । हिसद्दो दळ्हं उस्साहन्तो[3] ति दस्सनतो दळ्हीकरणत्थो ति विञ्ञायति ।

तस्मा ति पदं अग्गहेत्वाना ति[4] पदे ञापकहेतु । तन्तिया ति पदं पदानुक्कमतो ति पदे सम्बन्धो । पदानुक्कमतो एवा ति पदं करिस्सामीति पदे ततियाविसेसनं । इतीति पदं भासमानस्सा ति पदे ततियाविसेसनं ॥२०॥

वीसतिगाथानं अत्थयोजना समत्ता

■

१. वत्ततीति–सी० । २. अवयवत्थं–सी० । ३. ओगाहन्तो–सी० ।
४. गहेत्वानाति–सी० ।

१

निदानकथा

तत्थ अभिधम्मो ति केनट्ठेन अभिधम्मो ? धम्मातिरेकधम्मविसेसट्ठेन। अतिरेकविसेसत्थदीपको हि एत्थ 'अभि'-सद्दो। "बाळ्हा मे आवुसो दुक्खा वेदना अभिक्कमन्ति नो पटिक्कमन्ति" [म० नि० २ पि० ४५८] "अभिक्कन्तवण्णा" [सं० १.१] ति आदीसु विय। तस्मा यथा समुस्सितेसु बहूसु छत्तेसु च धजेसु च यं अतिरेकप्पमाणं विसेसवण्णसण्ठानं च छत्तं, तं 'अतिच्छत्तं' ति वुच्चति, यो अतिरेकप्पमाणो नानाविरागवण्णविसेसम्पन्नो च धजो सो 'अतिधजो' ति वुच्चति, यथा च एकतो सन्निपतितेसु बहूसु राजकुमारेसु चेव देवेसु च यो जाति-भोग-यस-इस्सरियादिसम्पत्तीहि अतिरेकतरो चेव विसेसवन्ततरो च राजकुमारो सो 'अतिराजकुमारो' ति वुच्चति, यो आयु-वण्ण-

---

निदानकथा-अत्थयोजना

तत्थ तस्मिं अभिधम्मस्स अत्थं पकासयिस्सामीति वचने। अभिधम्मो इति अभिधम्मो नाम केनट्ठेन सो अभिधम्मो। इतिसद्दो नामवाचको। तत्था ति वा अभिधम्मकथं ति एतस्मिं वचने यो अभिधम्मो[1] इति मया वुत्तो अभिधम्मो,[2] सो अभिधम्मो नाम[3] केनट्ठेन अभिधम्मो ? इतिसद्दो आकारवाचको[4]।

सो अभिधम्मो धम्मातिरेकधम्मविसेसट्ठेन[5] अभिधम्मो नाम। हि सच्चं एत्थ अभिधम्मो ति पदे विज्जमानो अभिसद्दो, आवुसो, मे[6] वेदना दुक्खा बाळ्हा अधिमत्ता अभिक्कमन्ति अतिरेकतरं वड्ढन्ति, नो पटिक्कमन्ति। अभिक्कन्तवण्णा[7] अभिरूपछवि इति[8] पण्डितेन वुच्चतीति योजना। तस्मा ति पदं वुच्चतीति पदे ञापकहेतु। अतिरेकं पमाणं यस्स तं अतिरेकप्पमाणं। वण्णो च सण्ठानञ्च वण्णसण्ठानं, विसेसं वण्णसण्ठानं यस्स तं विसेसवण्णसण्ठानं। नाना विरागा च ते वण्णविसेसा चाति नानाविरागवण्णविसेसा, नानाविरागवण्णविसेसेहि सम्पन्नो नाना....प....सम्पन्नो। जाति च भोगो च यसो च इस्सरियञ्च (१० म०) जाति....प....इस्सरियानि, जातिभोगयसइस्सरियानि आदीनि येसं ते जाति... प....इस्सरियादयो, जातिभोगयस-

---

१. ०अभिधम्मो--सी०। २. नत्थि--सी०। ३. नत्थि--सी०। ४. इतो अनन्तरं "अथवा तत्थ अभिधम्मकथं ति एतस्मिं वचने अभिधम्मो इति मया वुत्तो, सो अभिधम्मो इति अभिधम्मो नाम केनट्ठेन अभिधम्मो ? इतिसद्दो नामवाचको। अथवा (११ सी०) तत्थ तस्मिं अभिधम्मकथं ति वचने मया वुत्तो अभिधम्मो इति अभिधम्मो नाम। केनट्ठेन अभिधम्मो ?" अयं सीहळपोत्थके अधिको पाठो। ५. धम्मातिरेकेन०–सी०। ६. ०मम–सी०। ७. अभिकन्ता·वण्णा–म०। ८. ०आदिसु पयोगेसु विज्जमानो अभिसद्दो विय अतिरेकविसेसत्थदीपको। तस्मा अतिरेकविसेसत्थदीपकत्ता अयम्पि धम्मो धम्मातिरेकधम्मविसेसत्थेन अभिधम्मो"—अयमधिको पाठो सीहळपोत्थके दिस्सति।

इस्सरिय-सम्पत्तिआदीहि अतिरेकतरो चेव विसेसवन्ततरो च देवो सो 'अतिदेवो' ति वुच्चति, तथारूपो ब्रह्मा पि 'अतिब्रह्मा' ति वुच्चति, एवमेव अयं पि धम्मो धम्मातिरेक-धम्मविसेसट्ठेन 'अभिधम्मो' ति वुच्चति।

सुत्तन्तं हि पत्वा पञ्चक्खन्धा एकदेसेनेव विभत्ता, न निप्पदेसेन; **अभिधम्मं** पत्वा पन सुत्तन्तभाजनिय-अभिधम्मभाजनिय-पञ्हापुच्छकनयानं वसेन निप्पदेसतो विभत्ता। तथा द्वादसायतनानि, अट्ठारस धातुयो, चत्तारि सच्चानि, बावीसतिन्द्रियानि, द्वादसपदिको पच्चयाकारो। केवलं हि **इन्द्रियविभङ्गे** [विभ०, १५६ पि०] सुत्तन्तभाजनियं नत्थि, **पच्चयाकारे** [विभ०, १७३ पि०] च पञ्हापुच्छनकं नत्थि। **सुत्तन्तं** च पत्वा चत्तारो सतिपट्ठाना एकदेसेनेव विभत्ता, न निप्पदेसेन; **अभिधम्मं** पत्वा पन तिण्णं पि नयानं वसेन निप्पदेसतो विभत्ता। तथा चत्तारो सम्मप्पधाना, चत्तारो इद्धिपादा, सत्त बोज्झङ्गा, अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो, चत्तारि झानानि, चतस्सो अप्पमञ्ञायो, पञ्च सिक्खापदानि, चतस्सो पटिसम्भिदा तिण्णं पि नयानं वसेन निप्पदेसतो विभत्ता। केवलं हि एत्थ **सिक्खापदविभङ्गे** [विभ०, ३४२ पि०] सुत्तन्तभाजनियं नत्थि। **सुत्तन्तं** हि पत्वा पन ञाणं एकदेसेनेव विभत्तं न निप्पदेसेन; तथा किलेसा। **अभिधम्मं** पत्वा पन "एकविधेन ञाणवत्थुं" ति [विभ०, ३६६ पि०] आदिना नयेन मातिकं ठपेत्वा निप्पदेसतो विभत्तं। तथा एकेकतो पट्ठाय अनेकेहि नयेहि किलेसा विभत्ता। **सुत्तन्तं** पत्वा च पन भुम्मन्तरपरिच्छेदो एकदेसेनेव विभत्तो, न निप्पदेसेन; **अभिधम्मं** पत्वा पन तिण्णं पि नयानं वसेन भुम्मन्तरपरिच्छेदो निप्पदेसतो व विभत्तो। एवं धम्मातिरेक-धम्मविसेसट्ठेन अभिधम्मो ति वेदितब्बो।

इस्सरियादीनं सम्पत्ति जाति····प····सम्पत्ति। आयु च वण्णो च इस्सरियञ्च यसो च आयु····प····यसा, आयुवण्णइस्सरिययसानं सम्पत्ति आयु····प····सम्पत्ति, आयुवण्णइस्सरिययससम्पत्ति आदि येसं ते आयु····प····सम्पत्तिआदयो। सो रूपो सभावो अस्सा ति तथारूपो। आयुवण्णइस्सरियसम्पत्तिआदीहि अतिरेकतरो चेव विसेसवन्ततरो चाति अधिप्पायो।

हि सच्चं सुत्तन्तं पत्वा पञ्चक्खन्धा एकदेसेनेव भगवता विभत्ता, निप्पदेसेन भगवता न विभत्ता। अभिधम्मं पत्वा पन····प····निप्पदेसतो पञ्चक्खन्धा (१२ सी०) भगवता विभत्ता। तथा सुत्तन्तं। तथासद्देन सुत्तन्तं पत्वा एकदेसेनेव विभत्ता, न निप्पदेसेन। अभिधम्मं पत्वा पन सुत्तन्तभाजनिय[1]····प····वसेन निप्पदेसतो विभत्ता ति वचनं आकड्ढति।

केवलं हीति हि सच्चं को विसेसो तथासद्देन। अथवा हि सच्चं केवलं[2] सेसं इन्द्रियविभङ्गे सुत्तन्तभाजनियं नत्थि, पच्चयाकारे पि[3] च पञ्हापुच्छाकं[4] नत्थि। एत्था ति तेसु सम्मप्पधानविभङ्गादीसु, निद्धारणे भुम्मं।

भवन्ति धम्मा एत्था ति भुम्मं[5]। भुम्मञ्च तं अन्तरो चा ति भुम्मन्तरो। भुम्मन्तरस्स परिच्छेदो भुम्मन्तरपरिच्छेदो।

---

१. ०अभिधम्मभाजनीय०–सी०। २. ०व–सी०। ३. पि नत्थि–सी०। ४. पञ्हपुच्छकं–सी०। ५. भूमं–म० सब्बत्थ।

पकरणपरिच्छेदतो पनेस **धम्मसंगणि-विभंग-धातुकथा**-पुग्गलपञ्ञत्ति-**कथावत्थु-यमक-पट्ठानानं** सत्तन्नं पकरणानं वसेन ठितो। अयमेत्थ आचरियानं समानकथा।

वितण्डवादी पनाह—'**कथावत्थु** कस्मा गहितं? ननु **सम्मासम्बुद्धस्स** परिनिब्बानतो अट्ठारसवस्साधिकानि द्वे वस्ससतानि अतिक्कमित्वा **मोग्गल्लिपुत्ततिस्सत्थेरेन** एतं ठपितं? तस्मा सावकभासितत्ता छड्डेथ नं' ति। 'किं पन छप्पकरणानि **अभिधम्मो**' ति? 'एवं न वदामी' ति। 'अथ किं वदेसी' ति। 'सत्तप्पकरणानी'ति। 'कतरं गहेत्वा सत्त करोसी' ति? '**महाधम्महदयं** नाम अत्थि, एतेन सह सत्ता' ति। '**महाधम्महदये** अपुब्बं नत्थि, कतिपया व पञ्हवारा अवसेसा, **कथावत्थुना** सद्धिं सत्ता' ति। 'नो **कथावत्थुना**, **महाधातुकथा** नाम अत्थि, ताय सद्धिं सत्ता' ति। '**महाधातुकथायं** अपुब्बं नत्थि, अप्पमत्तिका व तन्ति अवसेसा। **कथावत्थुना** व सद्धिं सत्ता' ति।

एसो ति अभिधम्मो। अयमेत्था ति अयं हेट्ठा वुत्ता पकरणपरिच्छेदकथा। एत्थ एतेसु परिच्छेदेसु आचरियानं समानकथा सदिसा[1] कथा[1]।

विसेसेन तण्डेति चालेति एतेना ति वितण्डो, चोदको। एतेन वादेन सकवादिं तण्डेति चालेति इति तस्मा सो वादो वितण्डो। वदति एताया ति[2] वादो। वितण्डो च सो वादो चेति वितण्डवादो। सो[3] एतस्स अत्थीति वितण्डवादी, चोदको। एतं ति एतं कथावत्थुप्पकरणं थपितं ननू ति सम्बन्धो।

सावकभासितत्ता ति पदं तस्मा ति पदेन परामसितत्थस्स ञापनत्थं वुत्तं। नं[4] कथावत्थुप्पकरणं तुम्हे छड्डेथ इति वितण्डवादी आहा ति सम्बन्धो। छप्पकरणानि अभिधम्मो किं इति एवं सकवादी परवादिं पुच्छति। एवं वचनं अहं न वदामि इति परवादी आह। अथ एवं सति त्वं किं वदसि इति सकवादी पुच्छति। सत्तप्पकरणानीति अभिधम्मो सत्तप्पकरणानि इति वचनं अहं वदामि। कतरं गहेत्वा सत्त[5] करोसीति त्वं कतरं पकरणं गहेत्वा सत्त करोसीति? सकवादी[6] पुच्छि। महाधम्महदयं नाम पकरणं अत्थि, एतेन सह[7] (११–म०) सत्त इति परवादी आह। महाधम्महदये अपुब्बं अभिनवं वचनं नत्थि, धम्महदयविभङ्गे अनागता हुत्वा महाधम्महदये आगता, धम्महदयविभङ्गवसेन अवसेसा कतिपया व पञ्हावारा पुच्छनविसज्जनवसेन पवत्ता पाळिनया अत्थि। कथावत्थुना व सद्धिं सत्त इति सकवादी आह।

(१३ सी०) धम्महदयविभङ्गवचनवसेना ति पदं अवसेसा ति पदे ततियाविसेसनं। नो कथावत्थुना[8] सत्त, महाधातुकथा नाम अत्थि, ताय महाधातुकथाय सद्धिं सत्त इति परवादी आह।

महाधातुकथायम्पि[9] अवसेसा कतिपया पञ्हावारा। महाधातुकथायं अपुब्बं वचनं नत्थि,

---

१--१. सदिसकथा--सी०। २. एत्था ति--सी०। ३. वितण्डवादो--सी०। ४. न--सी०। ५. सत्तमं--सी० ६. इति०--सी०। ७. नत्थि--सी०। ८. ०सद्धिं--सी०। ९. महाधम्महदये ताव पठमं--सी०।

सम्मासम्बुद्धो हि सत्तप्पकरणानि देसेन्तो कथावत्थुं पत्वा या एसा पुग्गलवादे ताव चतूसु पञ्हेसु द्विन्नं पञ्चकानं वसेन अट्ठमुखवादयुत्ति तं आदिं कत्वा सब्बकथामग्गेसु असम्पुण्णभाणवारमत्ताय पालिया मातिकं ठपेसि। सा पनेसा तन्ति "पुग्गलो उपलब्भति सच्छिकत्थपरमत्थेना ति। आमन्ता। यो सच्छिकत्थो परमत्थो ततो सो पुग्गलो उपलब्भति सच्छिकत्थपरमत्थेना ति। न हेवं वत्तब्बे। आजानाहि निग्गहं।....

महाधातुकथायं[1] आगततन्तितो धातुकथायं[1] आगततन्ति अप्पमत्तिका व अप्पका एव, कथावत्थुना व सद्धिं सत्त इति सकवादी आह।

हि सच्चं....प....पुग्गलवारे ताव पठमं चतूसु पञ्हेसु द्विन्नं[2] पञ्चकानं[2] वसेन या[3] एसा अट्ठमुखवादयुत्ति अत्थि, तं अट्ठमुखवादयुत्तिं आदिं कत्वा सब्बकथामग्गेसु[4] पुग्गलकथादिसब्बकथापन्थेसु ...प.... थपेसि।

पुग्गलवारे ति[5] पदं पञ्हेसू ति पदे आधारो। पञ्हेसू ति पदं पञ्चकानं ति पदे आधारो। वसेना ति पदं अत्थीति वचने ततियाविसेसनं। पाळिया ति पदं थपेसीति पदे ततियाविसेसनं। चतूसु पञ्हेसू ति यो सच्चिकट्ठो ति[6] वुत्तं सच्चिकट्ठं निस्सयं कत्वा उपादाय पवत्ता द्वे पि पञ्चका एको पञ्हो। सब्बथा ति सरीरं सब्बं वा देसं[7] उपादाय पवत्ता एको....प...।

सब्बदा तिकालं उपादाय एको....प.....। सब्बेसू ति यदि खन्धायतनादयो गहिता ते उपादाय पवत्ता। अथ पन यो सच्चिकट्ठो सब्बत्थ सब्बदा ति एतेहि न कोचि सच्छिकट्ठो देसो कालो वा असङ्गहितो अत्थि। तेन[8] पन सामञ्ञवसेन गहेत्वा अनुयोगो कतो, न भेदवसेन गहेत्वा अनुयुञ्जितुं सब्बेसू ति वुत्तसच्चिकट्ठदेसकालपदेसे[9] उपादाय च पवत्ता एको ति एतेसु चतूसू ति टीका। द्विन्नं पञ्चकानं ति एत्थ पुग्गलो उपलब्भति....प.... मिच्छा ति एकं, पुग्गलो नुपलब्भति....प....मिच्छा ति एकं, त्वं चे पन मञ्ञसि....प....इदं ते मिच्छा ति एकं, एसे चे दुन्निग्गहिते...प ...इदं ते मिच्छा ति एकं नहेवं निग्गहितब्बे तेन हि यं निग्गण्हासि .. प.... सुकता पटिपादना ति एकं ति अयं अनुलोमपच्चनीकपञ्हे एको पञ्चको।

(१४–सी०) पुग्गलो नुपलब्भति[10] एकं, पुग्गलो उपलब्भति[10] मिच्छा ति एकं[11], त्वञ्चे पन मञ्ञसि इदं ते मिच्छा ति एकं, एसे च दुन्निग्गहिते....प....इदं ते मिच्छा ति एकं, नहेवं निग्गहेतब्बे तेन हि (१२–म०) निग्गण्हासि....प....सुकता पटिपादना ति एकं ति अयं पच्चनीयानुलोमपञ्हे एको पञ्चको ति एवं पठमपञ्हे द्वे पञ्चका।

दुतियपञ्हे द्वे, ततियपञ्हे द्वे, चतुत्थपञ्हे द्वे पञ्चका ति अट्ठपञ्चका अट्ठमुखवादयुत्ति नाम।

१--१. धम्महदयविभङ्गवचनवसेन अवसेसा धम्महदयविभङ्गे अनागन्त्वा महाधम्महदये आगतन्ति नो महाधातुकथायं--सी०। २--२. द्विपञ्चकानं--सी०। ३. याव--सी०। ४. सब्बकथा। कथामग्गेसु--सी०। ५. पुग्गलवादे ति--सी०। ६. सच्छिकट्ठो--सी०। ७. देसं वा--सी०। ८. ते--सी०। ९. ०वुत्तं--सी०। १०-१०. ...प...सी०। ११. ०पुग्गलो उपलब्भति....प...सी०।

प०....पुग्गलो नूपलब्भति सच्छिकत्थपरमत्थेना ति। आमन्ता। यो सच्छिकत्थो परमत्थो ततो सो पुग्गलो नूपलब्भति सच्छिकत्थपरमत्थेना ति। न हेवं वत्तब्बे। आजानाहि निग्गहं....प०....। सब्बत्थ पुग्गलो नूपलब्भति, सब्बदा पुग्गलो उपलब्भति सब्बदा पुग्गलो नूपलब्भति, सब्बेसु पुग्गलो उपलब्भति सब्बेसु पुग्गलो नूपलब्भति सच्छिकत्थपरमत्थेना ति एवं पठमं वादं निस्साय पठमं निग्गहं, दुतियं निस्साय दुतियं निग्गहं....प०....अट्ठमं निस्साय अट्ठमं निग्गहं दस्सेन्तेन सत्थारा ठपिता। इमिना नयेन सब्बत्थ मातिकाठपनं वेदितब्बं।

अट्ठ च ते[1] मुखा चा ति अट्ठमुखा। वादस्स युत्ति वादानुपायो[2] वादयुत्ति। अट्ठमुखा एव वादयुत्ति अट्ठमुखवादयुत्ति। भाणवारो एव मत्तं पमाणं भाणवारमत्तं। भाणवारस्स मत्तं भाणवारमत्तं असम्पुण्णं भाणवारमत्तं एतिस्सा ति असम्पुण्णभाणवारमत्ता। गन्थानं पञ्ञासं द्विसतञ्च एकभाणवारो नाम।

अट्ठक्खरा एकपादो एका गाथा चतुप्पदा[3]।
गाथा चेका मतो गन्थो गन्थो बात्तिंस[4] अक्खरो[5]॥
द्वत्तिसक्खरगन्थानं[6] पञ्ञास-द्विसतं पन।
भाणवारो मतो एको अट्ठसहस्स-अक्खरो[7] ति हि॥

वुत्तं। पुग्गलो....प....इति एवं पठमं[8] वादं[8] निस्साय पठमं निग्गहं दस्सेन्तेन दुतियं वादं निस्साय दुतियं निग्गहं दस्सेन्तेन....प....अट्ठमं निग्गहं दस्सेन्तेन सत्थारा सा पन एसा मातिका थपिता ति योजना। पुग्गलो उपलब्भति सच्चिकट्ठपरमत्थेना ति पुग्गलो सच्चिकट्ठ-परमत्थेन भूतत्थ-उत्तमत्थभावेन उपलब्भति पञ्ञाय उपगन्त्वा लब्भति किं इति सकवादी परवादिं पुच्छति। परवादी आह—आमन्ता इति।

सच्चं एव सच्चिकं[9]। सच्चिकं एव अत्थो सच्चिकट्ठो। परमो अविपरीतो अत्थो परमत्थो। सच्चिकट्ठो च सो परमत्थो चा ति सच्चिकट्ठपरमत्थो। सो सच्चिकट्ठो परमत्थो ततो सो पुग्गलो उपलब्भति सच्चिकट्ठपरमत्थेना ति यो अत्थो सच्चिकट्ठो परमत्थो उत्त-मत्थो[10], सो[11] तव[11] (१५-सी०) पुग्गलो ततो तेन सच्चिकट्ठपरमत्थेन उपलब्भति, पञ्ञायते पण्डितेहि इति सकवादी पुच्छति।

न हेवं वत्तब्बे ति एवं पुग्गलो तुम्हेहि न[12] वत्तब्बे न वत्तब्बो एव। न वत्तब्बे [13]वा ति[13] एत्थस्सा[14] चा ति चकारेन सिस्स ए आदेसो कतो ति वदन्ति **क्वचे वा** ति (२:११२) **मोग्गलान-सुत्तेन** सिस्स ए। **'अनुपदिट्ठानं वुत्तयोगतो'** ति वा (क० १:५१) सुत्तेन न वत्तब्बे ति पदे ओकारस्स ए। अथवा **निद्धारणे** चेति चकारेन पठमत्थे सप्तमी।

---

१. सो–प०। २. पवत्तनुपायो–सी०। ३. चतुप्पदो–म०। ४. बत्तिस–सी०। ५. अक्खरा–म०। ६. बत्तिस०–सी०। ७. अट्ठक्खरसहस्सको–सी०। ८-८. पठमवादं–सी०। ९. सच्छिकं–सी०। १०. नत्थि–सी०। ११-११. सो व–सी०। १२. नहि–सी०। १३-१३. ति–सी०। १४. एतस्सा–सी०।

तं पनेतं मातिकं ठपेन्तो इदं दिस्वा ठपेसि—मम परिनिब्बानतो अट्ठारस-वस्साधिकानं द्विन्नं वस्ससतानं मत्थके **मो**ग्गल्लिपुत्ततिस्सत्थेरो नाम भिक्खु भिक्खु-सहस्समज्झे निसिन्नो सकवादे पञ्च सुत्तसतानि परवादे पञ्चा ति सुत्तसहस्सं समोधानेत्वा **दी**घनिकायप्पमाणं **क**थावत्थुप्पकरणं भाजेस्सती ति। **मो**ग्गल्लिपुत्ततिस्सत्थेरो पि इदं पकरणं देसेन्तो न अत्तनो ञाणेन देसेति, **स**त्थारा पन दिन्ननयेन ठपितमातिकाय देसेसि। इति **स**त्थारा दिन्ननयेन ठपितमातिकाय देसितत्ता सकलं पेतं पकरणं बुद्धभासितमेव नाम जातं।

यथा किं? यथा **म**धुपिण्डिकसुत्तन्तादीनि। **म**धुपिण्डिकसुत्तस्मि हि **भ**गवा "यतो निदानं भिक्खु, पुरिसं पपञ्चसञ्ञासंखा समुदाचरन्ति, एत्थ चे नत्थि अभिनन्दितब्बं अभिवदितब्बं अज्झोसितब्बं, एसेवन्तो रागानुसयानं" [म० १. १४७] ति

आजानाहि निग्गहं ति तत्रं निग्गहं दोसं आजानाहि सम्पटिच्छ इति सकवादी आह। पुग्गलो नुपलब्भति सच्चिकट्ठपरमत्थेना ति (१३–म०)नुपलब्भति पञ्ञाय उपगन्त्वा न लब्भति पण्डितेहि न ञायति किं इति परवादी सकवादिं पुच्छति। सकवादी आमन्ता इति आह। प....त्थेना ति[1] यो अत्थो सच्चिकट्ठो....प....मया[2] वुत्तो पुग्गलो ततो तेन[3]....प....त्थेन न उपलब्भति किं इति परवादी सकवादिं पुच्छति।....प०....सब्बथा ति सब्बस्मिं[4] सरीरे[4], देसे वा। सब्बस्मिं[5] काले। सब्बेसू ति खन्धायतनादीसु धम्मेसु, सच्चिकट्ठदेसकालपदेसेसु वा। सब्बत्था ति परिहानिकथादिसब्बकथामग्गेसु।

थपेन्तो सत्था मम....प०....भाजेस्सति[6] इति[6] इदं[7] कारणं दिस्वा थपेसि।

थपितमातिकाया ति पदं दिन्ननयेना ति पदस्स सरूपं। इतीति पदं देसितत्ता ति पदे आकारो।

यथा किं ति येन निदस्सनेन पकरणं बुद्धभासितं नाम जातं, तं निदस्सनं तं उदाहरणं किं मधुपिण्डिकसुत्तन्तादीनि सुत्तानि यथा विय हि सच्चं मधुपिण्डिकसुत्तस्मि भगवा पाविसीति सम्बन्धो। यं निदानं यतो निदानं ति अलुत्तसमासो। यतो ति पच्चत्ते[8] तो-पच्चयो। निदानं ति पञ्चम्यत्थे दुतिया, पठमा वा।

---

१. नत्थि–सी०। २. सो०–सी०। ३. ते पन–सी०। ४–४. सब्बसरीरे–सी०। ५. सब्बदा०–सी०। ६–६. भाजिस्सतीति–सी०। ७. नत्थि–म०। ८. पञ्चम्यत्थे–सी०।

मातिकं ठपेत्वा उट्ठायासना विहारं पाविसि। धम्मपटिग्गाहका भिक्खू **महाकच्चा**-नत्थेरं उपसङ्कमित्वा **दसबलेन** ठपितमातिकाय अत्थं पुच्छिसु। **थेरो** पुच्छितमत्तकेनेव अकथेत्वा **दसबलस्स** अपचितिदस्सनत्थं "सेय्यथा पि आवुसो, पुरिसो सारत्थिको सार-गवेसी" [म० १. १४८] ति सारोपमं आहरित्वा साररुक्खो विय **भगवा** साखापलास-सदिसा सावका, "सो हावुसो **भगवा** जानं जानाति, पस्सं पस्सति **चक्खुभूतो** ञाणभूतो धम्मभूतो ब्रह्मभूतो वत्ता पवत्ता अत्थस्स निन्नेता अमतस्स दाता धम्मसामी तथा-गतो" [म० १. १४८] ति **सत्थारं** थोमेत्वा पुनप्पुनं थेरेहि याचितो **सत्थारा** ठपित-मातिकाय अत्थं विभजित्वा "आकङ्खमाना च पन तुम्हे आयस्मन्तो **भगवन्तं** येव उप-सङ्कमित्वा एतमत्थं पुच्छेय्याथ" [म० १. १५१]; सचे सब्बञ्ञुतञाणेन सद्धिं संसन्दिय-मानं समेति गण्हेय्याथ, नो चे मा गण्हित्था' ति इमिना अधिप्पायेन "यथा वो **भगवा** ब्याकरोति तथा तं धारेय्याथा" [म० १. १५१] ति वत्वा उय्योजेसि। ते **सत्थारं** उपसङ्कमित्वा पुच्छिसु। **सत्था** दुक्कथितं **कच्चानेना** ति अवत्वा सुवण्णा-

---

संसारं पपञ्चयन्ति वित्थारेन्तीति पपञ्चा। 'पचि'-वित्थारे। पपञ्चेहि सम्पयुत्त-सञ्ञा[1] पपञ्चसञ्ञा। पपञ्चसञ्ञाय सङ्खा पपञ्चसञ्ञासङ्खा। समुदाचरन्तीति अभिभवन्ति। सं-उ-आपुब्ब-'चर'—अभिभवने। एत्थ एतेसु आयतनादीसु। तण्हामानदिट्ठीहि अभिनन्दितब्बं अभिवदितब्बं (१६–सी०) अज्झोसितब्बं[2]। भावसाधनं। दस्सनत्थं ति पदं आहरित्वा ति पदे सम्पदानं। आहरित्वा ति पदं थोमेत्वा ति पदे पुब्बकालक्रिया[3]।

जानितब्बं ति जानं। पस्सितब्बं ति पस्सं। अथवा जानातीति जानं। पस्सतीति पस्सं। लोकस्स चक्खु[4] भवतीति चक्खुभूतो। ञाणं हुत्वा भूतो ञाणभूतो। धम्मो हुत्वा भूतो धम्मभूतो ति आदीसु[5] पि दट्ठब्बं[5]। ब्रह्मा हुत्वा भूतो ब्रह्मभूतो। पञ्ञाचक्खुभूतो[6] उत्पन्नो वा चक्खुभूतो। ञाणभूतो ति आदीसु पि एसेव नयो। अथवा चक्खुं[7] भूतो[8] पत्तो ति चक्खुभूतो। एवं ञाणभूतो ति आदीसु पि दट्ठब्बं।

वत्ता ति 'वद'-वियत्तियं वाचायं। पवत्ता ति पपुब्ब-'वद'-धातु। अत्थं निद्धारेत्वा[8] दस्सेतीति अत्थस्स निन्नेता। अत्थं वा निब्बानं निन्नेति पापेतीति अत्थस्स निन्नेता, अलुत्तसमासो। धम्मस्स सामि धम्मसामि। विभजित्वा ति पदं वत्वा ति पदे पुब्बकालक्रिया। संसन्दियमानं मम वचनं समेति। यथा येन पकारेन नो अम्हाकं भगवा ब्याकरोति तथा नं अत्थं तुम्हे धारेय्याथ।

सुवण्णेन पकतं आलिङ्गं सुवण्णालिङ्गं[9]। सुपुप्फितञ्च सतपत्तञ्चा ति सुपुप्फितसतपत्तं। (१४–म०) सह सिरिया वत्ततीति सस्सिरीकं। सुपुप्फितसतपत्तं इव सस्सिरीकं सुपुप्फितसत-

---

१. सम्पयुत्ता०–सी०। २. इतो परं "नत्थि मे रागानुसयानं, पुग्गलसङ्खातो एसो एव अवसानं। अभिनन्दियते अभिनन्दितब्बं। अभिवदियते अभिवदितब्बं। अज्झोसियते अज्झो-सितब्बं"–ति सीहलपोत्थके अधिको पाठो। ३. ०किरिया–सी०। ४. ०हुत्वा–सी०। ५–५. सी० पोत्थके नत्थि। ६. ०चक्खुना०–पी०। ७–७. चक्खुभूतो–सी०। ८. निद्धारेत्वानेति–सी०। ९. नत्थि–म०।

लिङ्गं उस्सापेन्तो विय गीवं उपनामेत्वा सुपुप्फितसतपत्तसस्सिरिकं विय महामुखं पूरेन्तो ब्रह्मस्सरं निच्छारेत्वा साधु साधू ति थेरस्स साधुकारं दत्वा "पण्डितो भिक्खवे महाकच्चानो, महापञ्ञो भिक्खवे महाकच्चानो, मं चे पि तुम्हे भिक्खवे एतमत्थं पटिपुच्छेय्याथ, अहं पि तं एवमेव ब्याकरेय्यं यथा तं महाकच्चानेन ब्याकतं" [म० १. १५२] ति आह। एवं सत्थारा अनुमोदितकालतो पट्ठाय पन सकलं सुत्तन्तं बुद्धभासितं नाम जातं। आनन्दत्थेरादीहि वित्थारितसुत्तन्तेसु पि एसेव नयो।

एवमेव सम्मासम्बुद्धो सत्तप्पकरणानि देसेन्तो कथावत्थुं पत्वा वुत्तनयेन मातिकं ठपेसि। ठपेन्तो च इदमद्दस—मम परिनिब्बानतो अट्ठारसवस्साधिकानं द्विन्नं वस्ससतानं मत्थके मोग्गल्लिपुत्ततिस्सत्थेरो नाम भिक्खु भिक्खुसहस्समज्झे निसिन्नो सकवादे पञ्च सुत्तसतानि परवादे पञ्चा ति सुत्तसहस्सं समोधानेत्वा दीघनिकायप्पमाणं कथावत्थुप्पकरणं भाजेस्सती ति। मोग्गल्लिपुत्ततिस्सत्थेरो पि इमं पकरणं देसेन्तो न अत्तनो ञाणेन देसेसि, सत्थारा पन दिन्ननयेन ठपितमातिकाय देसेसि। इति सत्थारा दिन्ननयेन ठपितमातिकाय देसितत्ता सकलमेतं पकरणं बुद्धभासितं एव जातं। एवं कथावत्थुना सद्धिं सत्तप्पकरणानि अभिधम्मो नाम।

तत्थ धम्मसङ्गणिप्पकरणे चतस्सो विभत्तियो—चित्तविभत्ति रूपविभत्ति निक्खेपरासि अत्थुद्धारो ति।

तत्थ कामावचरकुसलतो अट्ठ, अकुसलतो द्वादस, कुसलविपाकतो सोळस, अकुसलविपाकतो सत्त, किरियतो एकादस; रूपावचरकुसलतो पञ्च विपाकतो पञ्च. किरियतो पञ्च; अरूपावचरकुसलतो चत्तारि, विपाकतो चत्तारि, किरियतो चत्तारि; लोकुत्तरकुसलतो चत्तारि, विपाकतो चत्तारी ति एकूननवुति चित्तानि चित्तविभत्ति नाम। चित्तुप्पादकण्डं ति पि एतस्सेव नामं। तं वाचनामग्गतो अतिरेकछभाणवारं, वित्थारियमानं पन अनन्तमपरिमाणं होति।

पत्तसस्सिरीकं। ब्रह्मस्सरं ति उत्तमघोसं। साधुकारं ति साधु इति करणं, तं अत्थं महाकच्चायनेन ब्याकतं यथा अहं पि तं अत्थं एवमेव ब्याकरेय्यं।

तत्था ति तेसु सुत्तेसु[1] पकरणेसु पि[1]। चित्तादीनि विभजियन्ति[2] एत्थ पाळिपदेसू ति विभत्तियो। चित्तं विभजियति एत्था ति चित्तविभत्ति। रूपं विभजियति एत्था ति रूपविभत्ति। मूलादीनि निक्खिपियन्ति एत्था ति निक्खेपो। निक्खेपो च सो रासि चेति निक्खेपरासि। बुद्धवचनस्स अत्थो उद्धरियति एत्था ति अत्थुद्धारो।

(१७—सी०) तत्था ति तासु[3] चतूसु विभत्तीसु। एतस्सेव एतस्सा चित्तविभत्तिया एव नामं चित्तुप्पादकण्डं इति पि। कण्डियति चित्तुप्पादो परिच्छिज्जियति[4] एत्था ति कण्डं। चित्तुप्पादस्य कण्डं चित्तुप्पादकण्डं[5]। वाचनामग्गतो पाळिप्पबन्धतो।

१—१. सत्तपकरणेसु—सी०। २. विभज्जियन्ति—सी०। ३. ०पि—सी०। ४. परिच्छिन्दियति—सी०। ५. ०तं चित्तुप्पादकण्डं—सी०।

तदनन्तरं एकविधेन दुविधेना ति आदिना नयेन मातिकं ठपेत्वा वित्थारेन विभजित्वा दस्सिता **रूपविभत्ति** नाम। **रूपकण्डं** ति पि एतस्सेव नामं। तं वाचनामग्गतो अतिरेकद्वेभाणवारं। वित्थारियमानं पन अनन्तमपरिमाणं होति।

तदनन्तरं मूलतो खन्धतो द्वारतो भूमितो अत्थतो धम्मतो नामतो लिङ्गतो ति एवं मूलादीहि निक्खिपित्वा देसितो **निक्खेपरासि** नाम।

मूलतो खन्धतो चापि द्वारतो चापि भूमितो।
अत्थतो धम्मतो चापि नामतो चापि लिङ्गतो।
निक्खिपित्वा देसितत्ता **निक्खेपो** ति पवुच्चति॥

निक्खेपकण्डं ति पि तस्सेव नामं। तं वाचनामग्गतो तिमत्तभाणवारं। वित्थारियमानं पन अनन्तमपरिमाणं होति।

तदनन्तरं पन तेपिटकस्स **बुद्धवचनस्स** अत्थुद्धारभूतं याव **स**-रणदुका निक्खित्तं **अट्ठकथाकण्डं** नाम। यतो महापकरणिया भिक्खू **म**हापकरणे गणनचारं असल्लक्खेन्ता गणनचारं समानेन्ति। तं वाचनामग्गतो द्विमत्तभाणवारं। वित्थारियमानं पन अनन्तमपरिमाणं होति।

इति सकलं पि **धम्मसङ्गणिप्पकरणं** वाचनामग्गतो अतिरेकतेरसमत्तभाणवारं। वित्थारियमानं पन अनन्तमपरिमाणं होति। एवमेतं—

चित्तविभत्ति रूपं च निक्खेपो अत्थजोतना।
गम्भीरं निपुणं ठानं तं पि बुद्धेन देसितं॥

तदनन्तरा[1] तस्स चित्तुप्पादकण्डस्स अनन्तरा। तस्सेव[2] तस्सा रूपविभत्तिया एव नामं रूपकण्डं इति पि।

मूलतो…प…भगवता निक्खिपित्वा देसितत्ता निक्खेपो ति[3] निक्खेपरासि नाम पण्डितेहि पवुच्चति। यो मूलतो ति पि अत्थि, एवं सति यो रासि निक्खेपो इति पण्डितेहि पवुच्चति, तस्सेव निक्खेपस्स नाम निक्खेपकण्डं इति[4] योजना। निक्खेपो एव कण्डं निक्खेपकण्डं।

अत्थो कथियति उद्धरियति एताया ति अट्ठकथा। अट्ठकथा एव कण्डं अट्ठकथाकण्डं। यतो अट्ठकथाकण्डतो। महन्तं पकरणं महापकरणं। महापकरणं जानन्तीति महापकरणिया। णिको। महापकरणे महापट्ठानपकरणे। गणियते गणनं, चरणं वत्तनं चारो, गणनस्स[5] चारो गणनाचरो[5]। तं अट्ठकथाकण्डं।

चित्तविभत्ति रूपञ्च रूपविभत्ति निक्खेपो अत्थजोतना ति गम्भीरं निपुणं एतं ठानं अत्थि। तं पि ठानं बुद्धेन एवं[6] देसितं ति योजना।

एवमेतं ति एतं ति पदं ठानं ति पदस्स विसेसनं। चसद्दो चित्तविभत्ति च रूपञ्च निक्खेपो च अत्थजोतना चा ति योजेतब्बो। तम्पीति पि-सद्दो वुच्चमानं विभङ्गादिप्पकरणं अपेक्खति।

---

१. ०ति–सी०। २. ०वाति–सी०। ३. निक्खेपा ति–म०। ४. ०पीति–सी०। ५-५. नत्थि–म०। ६. एवं–सी०।

तदनन्तरं **विभङ्गप्पकरणं** नाम। तं **खन्धविभङ्गो आयतनविभङ्गो धातुविभङ्गो सच्चविभङ्गो इन्द्रियविभङ्गो पच्चयाकारविभङ्गो सतिपट्ठानविभङ्गो सम्मप्पधान-विभङ्गो इद्धिपादविभङ्गो बोज्झङ्गविभङ्गो मग्गविभङ्गो झानविभङ्गो अप्पमञ्ञा-विभङ्गो सिक्खापदविभङ्गो पटिसम्भिदाविभङ्गो ञाणविभङ्गो खुद्दकवत्थुविभङ्गो धम्महदयविभङ्गो** ति अट्ठारसविधेन विभत्तं।

तत्थ **खन्धविभङ्गो** सुत्तन्तभाजनिय-अभिधम्मभाजनिय-पञ्हापुच्छकानं वसेन तिधा विभत्तो। सो वाचनामग्गतो पञ्चमत्तभाणवारो, वित्थारियमानो पन अनन्तो अपरिमाणो होति। ततो परं **आयतनविभङ्गादयो** पि तेहेव तीहि नयेहि विभत्ता। तेसु **आयतनविभङ्गो** वाचनामग्गतो अतिरेकभाणवारो, **धातुविभङ्गो** द्विमत्तभाणवारो। तथा **सच्चविभङ्गो**। **इन्द्रियविभङ्गे** सुत्तन्तभाजनियं नत्थि; वाचनामग्गतो पनेस अतिरेकभाणवारमत्तो। **पच्चयाकारविभङ्गो** छमत्तभाणवारो, पञ्हापुच्छनकं पनेत्थ नत्थि। **सतिपट्ठानविभङ्गो** अतिरेकभाणवारमत्तो, तथा **सम्मप्पधान-इद्धिपाद-बोज्झङ्ग-मग्गविभङ्गा**। **झानविभङ्गो** द्विभाणवारमत्तो, **अप्पमञ्ञाविभङ्गो** अतिरेकभाणवार-मत्तो। **सिक्खापदविभङ्गे** पि सुत्तन्तभाजनियं नत्थि; वाचनामग्गतो पनेस अतिरेक-भाणवारमत्तो; तथा **पटिसम्भिदाविभङ्गो**। **ञाणविभङ्गो** दसविधेन विभत्तो; वाचना-मग्गतो पनेस तिमत्तभाणवारो। **खुद्दकवत्थुविभङ्गो** पि दसविधेन विभत्तो; वाचना-मग्गतो पनेस तिमत्तभाणवारो। **धम्महदयविभङ्गो** तिविधेन विभत्तो; वाचनामग्गतो पनेस अतिरेकद्विभाणवारमत्तो। सब्बे पि वित्थारियमाना अनन्ता अपरिमाणा होन्ति। एवमेतं **विभङ्गप्पकरणं** नाम वाचनामग्गतो पञ्चतिंसमत्तभाणवारं; वित्थारतो वित्थारियमानं पन अनन्तमपरिमाणं होति।

तदनन्तरं **धातुकथापकरणं** नाम। तं (१) **संगहो असङ्गहो**, (२) **सङ्गहितेन असङ्गहितं**, (३) **असङ्गहितेन सङ्गहितं**, (४) **सङ्गहितेन सङ्गहितं**, (५) **असङ्गहितेन**

तदनन्तरं[1] तस्स धम्मसङ्गणिप्पकरणस्स अनन्तरं। तं विभङ्गप्पकरणं। तत्थ तेसु खन्धविभङ्गादीसु तेसु[2] आयतनविभङ्गादीसु[2]। एसो इन्द्रियविभङ्गो। एत्थ पच्चयाकार-विभङ्गे।

सङ्गहितेन असङ्गहितं, असङ्गहितेन सङ्गहितं ति इमेसु दुतियततियेसु समानाधि-करणविसेसने करणवचनं दट्ठब्बं। सङ्गहितेन असङ्गहितं असङ्गहितं ति वत्तब्बे एकस्स असङ्ग-हितसद्दस्स लोपो (१५-म०) दट्ठब्बो। तेन लुत्तेन[3] असङ्गहितसद्देन पुच्छाविस्सज्जनानयो उद्दिट्ठो होति। एस नयो ततियादीसु (१८-सी०) दसमावसानेसु नयुद्देसेसु छट्ठवज्जेसु। तेसु पि हि अन्तिमपदसदिसेन[4] ततियपदेन पुच्छनविस्सज्जननया उद्दिट्ठा।

---

१. ०ति-सी०। २-२. सीहलपोत्थके नत्थि। ३. सङ्गहितेन-सी०। ४. अन्तिम-पदस्स वसेन-सी०।

असङ्गहितं; (६) सम्पयोगो विप्पयोगो, (७) सम्पयुत्तेन विप्पयुत्तं, (८) विप्पयुत्तेन सम्पयुत्तं, (९) सम्पयुत्तेन सम्पयुत्तं, (१०) विप्पयुत्तेन विप्पयुत्तं; (११) सङ्गहितेन सम्पयुत्तं विप्पयुत्तं; (१२) सम्पयुत्तेन सङ्गहितं असङ्गहितं, (१३) असङ्गहितेन सम्पयुत्तं विप्पयुत्तं, (१४) विप्पयुत्तेन सङ्गहितं असङ्गहितं [धातु० १ पि० ३] ति चुद्दसविधेन विभत्तं। तं वाचनामग्गतो अतिरेकछभाणवारमत्तं, वित्थारियमानं पन अनन्तमपरिमाणं होति।

सङ्गहितेन सङ्गहितं, असङ्गहितेन असङ्गहितं ति इमेसु चतुत्थपञ्चमेसु कत्तु-अत्थे करणवचनं। सम्पयुत्तेन विप्पयुत्तं, विप्पयुत्तेन सम्पयुत्तं। सम्पयुत्तेन सम्पयुत्तं, विप्पयुत्तेन विप्पयुत्तं ति इमेसु सत्तमादीसु चतूसु सहयोगे करणवचनं। सङ्गहितेन सम्पयुत्तं विप्पयुत्तं, सम्पयुत्तेन सङ्गहितं असङ्गहितं, असङ्गहितेन सम्पयुत्तं विप्पयुत्तं, विप्पयुत्तेन[1] सङ्गहितं असङ्गहितं ति इमेसु एकादसमादीसु चतूसु समानाधिकरणविसेसने करणवचनं दट्ठब्बं। एकादसमादीसु पन चतूसु सङ्गहितेना ति आदिना पठमपदेनेव धम्मविसेसननिद्धारणं कत्वा सम्पयुत्तं विप्पयुत्तं ति आदीहि दुतियततियपदेहि पुच्छनविस्सज्जननया उद्दिट्ठा ति।

सङ्गहो ति खन्धादि-अरणन्तो धम्मो कतिहि खन्धायतनधातूहि सङ्गहितो[2] गणितो परिच्छिन्नो। खन्धादि-अरणन्तो धम्मो एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि सङ्गहितो[2] गणितो[3]।

सङ्गहितेन असङ्गहितं ति चक्खायतनादिना धम्मजातेन खन्धसङ्गहेन सङ्गहितेन सङ्गहितं हुत्वा आयतनधातुसङ्गहेन असङ्गहितं धम्मजातं। अथवा चक्खुविञ्ञाणधातादिना धम्मजातेन खन्धायतनसङ्गहसङ्गहितेन सङ्गहितं हुत्वा धातुसङ्गहेन असङ्गहितं धम्मजातं कतिहि खन्धायतनधातूहि असङ्गहितं, एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि असङ्गहितं। असङ्गहितेन सङ्गहितं ति वेदनाक्खन्धादिना धम्मजातेन खन्धसङ्गहेन असङ्गहितेन असङ्गहितं हुत्वा आयतनधातुसङ्गहेहि सङ्गहितं धम्मजातं कतिहि खन्धायतनधातूहि सङ्गहितं, एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि सङ्गहितं। सङ्गहितेन सङ्गहितं ति समुदयसच्चादिना खन्धायतनधातूहि सङ्गहितेन धम्मजातेन खन्धायतनधातूहि सङ्गहितं (१९-सी०) धम्मजातं कतिहि खन्धायतनधातूहि सङ्गहितं, एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि सङ्गहितं।

समुदयसच्चादिना ति पदं सङ्गहितेना ति पदे ततियाकत्ता। सङ्गहितेना ति पदं सङ्गहितं ति पदे ततियाकत्ता। असङ्गहितेन असङ्गहितं ति रूपक्खन्धादिना खन्धायतनधातूहि

---

१. सम्पयुत्तेन–सी०। २. संगहो–सी०। ३. इतो परं "असङ्गहितो ति खन्धादि-अरणन्तो धम्मो कतिहि खन्धायतनधातूहि असङ्गहो अगणितो। खन्धादि-अरणन्तो धम्मो एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि असङ्गहो अगणितो" इति सीहलपोत्थके अधिको पाठो।

तदनन्तरं पुग्गलपञ्ञत्ति नाम। सा "**खन्धपञ्ञत्ति आयतनपञ्ञत्ति धातुपञ्ञत्ति सच्चपञ्ञत्ति इन्द्रियपञ्ञत्ति पुग्गलपञ्ञत्ती**" [पु० १] ति छब्बिधेन विभत्ता। सा वाचनामग्गतो अतिरेकपञ्चभाणवारा; वित्थारियमाना पन अनन्ता अपरिमाणा व होति।

असङ्गहितेन धम्मजातेन खन्धायतनधातूहि असङ्गहितं धम्मजातं कतिहि (१६–म०) खन्धायतनधातूहि असङ्गहितं, एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि असङ्गहितं ति[1]।

रूपक्खन्धादिना ति पदं असङ्गहितेना ति पदे कत्ता। असङ्गहितेना ति पदं असङ्गहितं ति पदे कत्ता। सम्पयोगो ति कतिहि खन्धायतनधातूहि सम्पयुत्तो धम्मो एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि सम्पयोगो। विप्पयोगो ति कतिहि खन्धायतनधातूहि विप्पयुत्तो धम्मो, एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि विप्पयोगो। सम्पयुत्तेन विप्पयुत्तं ति वेदनाक्खन्धादिना सम्पयुत्तेन धम्मजातेन विप्पयुत्तं धम्मजातं कतिहि खन्धायतनधातूहि विप्पयुत्तं, एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि विप्पयुत्तं। विप्पयुत्तेन सम्पयुत्तं ति रूपक्खन्धादिना विप्पयुत्तेन धम्मजातेन सम्पयुत्तं धम्मजातं कतिहि खन्धायतनधातूहि सम्पयुत्तं, एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि सम्पयुत्तं। सम्पयुत्तेन सम्पयुत्तं ति वेदनाक्खन्धादिना सम्पयुत्तेन धम्मजातेन सम्पयुत्तं धम्मजातं कतिहि खन्धायतनधातूहि सम्पयुत्तं, एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि सम्पयुत्तं। विप्पयुत्तेन विप्पयुत्तं ति रूपक्खन्धादिना विप्पयुत्तेन धम्मजातेन विप्पयुत्तं धम्मजातं कतिहि खन्धायतनधातूहि विप्पयुत्तं, एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि विप्पयुत्तं। सङ्गहितेन सम्पयुत्तं विप्पयुत्तं ति समुदयसच्चादिना खन्धायतनधातुसङ्गहेन सङ्गहितं धम्मजातं कतिहि खन्धायतनधातूहि सम्पयुत्तं, एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि सम्पयुत्तं। कतिहि खन्धायतनधातूहि विप्पयुत्तं एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि विप्पयुत्तं। सम्पयुत्तेन सङ्गहितं असङ्गहितं ति वेदनाक्खन्धादिना सम्पयुत्तं धम्मजातं कतिहि खन्धायतनधातूहि सङ्गहितं, एत्तकेहि (२०-सी०) खन्धायतनधातूहि सङ्गहितं; कतिहि खन्धायतनधातूहि असङ्गहितं, एत्तकेहि[2] धातूहि विप्पयुत्तं। एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि विप्पयुत्तं। सम्पयुत्तेन सङ्गहितं असङ्गहितं ति वेदनाक्खन्धादिना सम्पयुत्तं धम्मजातं कतिहि खन्धायतनधातूहि सङ्गहितं, एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि सङ्गहितं। कतिहि खन्धायतनधातूहि असङ्गहितं, एत्तकेहि[2] खन्धायतनधातूहि असङ्गहितं। असङ्गहितेन सम्पयुत्तं विप्पयुत्तं ति रूपक्खन्धादिना खन्धायतनधातुसङ्गहेन असङ्गहितं धम्मजातं कतिहि खन्धायतनधातूहि सम्पयुत्तं, एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि सम्पयुत्तं। कतिहि खन्धायतनधातूहि विप्पयुत्तं, एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि विप्पयुत्तं।

विप्पयुत्तेन सङ्गहितं असङ्गहितं ति रूपक्खन्धादिना विप्पयुत्तं धम्मजातं कतिहि (१७-म०) खन्धायतनधातूहि सङ्गहितं, एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि सङ्गहितं। कतिहि खन्धायतनधातूहि असङ्गहितं, एत्तकेहि खन्धायतनधातूहि असङ्गहितं ति।

---

१. असङ्गहितं–सी०। २-२. एत्तको पाठो सीहळपोत्थके न दिस्सति।

तदनन्तरं **कथावत्थुप्पकरणं** नाम। तं सकवादे पञ्च सुत्तसतानि परवादे पञ्चा ति सुत्तसहस्सं समोधानेत्वा विभत्तं। तं वाचनामग्गतो इदानि पोत्थके लिखितं अगहेत्वा सङ्गीति-आरोपितनयेन दीघनिकायप्पमाणं, वित्थारियमानं पन अनन्तमपरिमाणं होति।

तदनन्तरं **यमकं** नामं। तं **मूलयमकं खन्धयमकं आयतनयमकं धातुयमकं सच्चयमकं सङ्खारयमकं अनुसययमकं चित्तयमकं धम्मयमकं इन्द्रिययमकं** ति दसविधेन विभत्तं। तं वाचनामग्गतो वीसभाणवारमत्तं, वित्थारतो अनन्तमपरिमाणं होति।

तदनन्तरं **महापकरणं** नाम। **पट्ठानं** ति पि तस्सेव नामं। तं (१) **हेतुपच्चयो** (२) **आरम्मणपच्चयो** (३) **अधिपतिपच्चयो** (४) **अनन्तरपच्चयो** (५) **समनन्तरपच्चयो** (६) **सहजातपच्चयो** (७) **अञ्ञमञ्ञपच्चयो** (८) **निस्सयपच्चयो** (९) **उपनिस्सयपच्चयो** (१०) **पुरेजातपच्चयो** (११) **पच्छाजातपच्चयो** (१२) **आसेवनपच्चयो** (१३) **कम्मपच्चयो** (१४) **विपाकपच्चयो** (१५) **आहारपच्चयो** (१६) **इन्द्रियपच्चयो** (१७) **झानपच्चयो** (१८) **मग्गपच्चयो** (१९) **सम्पयुत्तपच्चयो** (२०) **विप्पयुत्तपच्चयो** (२१) **अत्थिपच्चयो** (२२) **नत्थिपच्चयो** २३) **विगतपच्चयो** (२४) **अविगतपच्चयो** ति। पच्चयवसेन ताव चतुवीसतिविधेन विभत्तं।

इमस्मिं पन ठाने **पट्ठानं** समानेतब्बं। कुसलत्तिकादयो हि द्वावीसति तिका, हेतुधम्मा न हेतुधम्मा···प०···स-रणा धम्मा अ-रणा धम्मा, इमे सतं दुका। अपरे पि विज्जाभागिनो धम्मा अविज्जाभागिनो धम्मा··प०···खये ञाणं, अनुप्पादे ञाणं ति द्वाचत्ताळीस सुत्तन्तिकदुका नाम। तेसु द्वावीसति तिका सतं दुका ति अयं आहच्च भासिता **जिनवचनभूता सब्बञ्ञुबुद्धेन** देसिता सत्तन्नं पकरणानं मातिका नाम।

अथापरे द्वाचत्ताळीस सुत्तन्तिकदुका कुतोपभवा केन ठपिता केन देसिता ति? **धम्मसेनापति-सारिपुत्तत्थेरप्पभवा**, तेन ठपिता, तेन देसिता ति। इमे ठपेन्तो पन थेरो

इदानि पोत्थके लिखितं अग्गहेत्वा ति एत्तके[1] इदानि पोत्थके लिखितनयेन कथावत्थुप्पकरणं अप्पकं ति[2]।

समानेतब्बं ति समानं कातब्बं। कुसलत्तिकादयो आदि वित्थारो। आहच्च भासिता ति कण्ठादीनि[3] घट्टेत्वा भगवता भासिता।

अथा ति द्वावीसतितिक-दुकसतानं सत्तप्पकरणानं मातिकत्ते सति। सामुक्कंसिकेना ति सामं उक्कंसिकेन अत्तना उद्धरितेन। एकेन अङ्गेन उत्तरि[4] अधिकं एकुत्तरं[5] एतस्मिं

---

१. एत्थ–सी०। २. ०अधिप्पायो–सी०। ३. कण्ठट्ठानादीनि–सी०। ४. उत्तरं–सी०। ५. ०एकुत्तरं–सी०।

न सामुक्कंसिकेन अत्तनो ञाणेन ठपेसि। एकुत्तरियं पन **ए**कनिपात-**दु**कनिपात-**स**ङ्गीति-**द**सुत्तरसुत्तन्तेहि समोधानेत्वा आभिधम्मिकत्थेरानं सुत्तन्तं पत्वा अकिलमनत्थं ठपिता। ते पनेते एकस्मिं **नि**क्खेपकण्डे येव मत्थकं पापेत्वा विभत्ता। सेसट्ठानेसु याव **स**-रणदुका **अ**भिधम्मो विभत्तो।

सम्मासम्बुद्धेन हि **अ**नुलोमपट्ठाने द्वावीसतितिके निस्साय **ति**कपट्ठानं नाम निद्दिट्ठं। सतं दुके निस्साय **दु**कपट्ठानं नाम निद्दिट्ठं। ततो परं द्वावीसतितिके गहेत्वा दुकसते पक्खिपित्वा **दु**कतिकपट्ठानं नाम दस्सितं। ततो दुकसतं गहेत्वा द्वावीसतिया तिकेसु पक्खिपित्वा **ति**कदुकपट्ठानं नाम दस्सितं। तिके पन तिकेसु येव पक्खिपित्वा **ति**कतिकपट्ठानं नाम दस्सितं। दुके च दुकेसु येव पक्खिपित्वा **दु**कदुकपट्ठानं नाम दस्सितं। एवं—

तिकं च पट्ठानवरं दुकुत्तमं, दुकं तिकं चेव तिकं दुकं च।
तिकं तिकं चेव दुकं दुकं च, छ **अ**नुलोमम्हि नया सुगम्भीरा ति।

पच्चनीयपट्ठाने पि द्वावीसतितिके निस्साय **ति**कपट्ठानं नाम। दुकसतं निस्साय दुकपट्ठानं नाम। द्वावीसतितिके दुकसतेसु पक्खिपित्वा दुकतिकपट्ठानं नाम। दुकसतं द्वावीसतिया तिकेसु पक्खिपित्वा **ति**कदुकपट्ठानं नाम। तिके तिकेसु येव पक्खिपित्वा **ति**कतिकपट्ठानं नाम, दुके दुकेसु पक्खिपित्वा **दु**कदुकपट्ठानं नामा ति पच्चनीये पि छहि नयेहि **प**ट्ठानं निद्दिट्ठं। तेन वुत्तं—

तिकं च पट्ठानवरं दुकुत्तमं, दुकं तिकं चेव तिकं दुकं च।
तिकं तिकं चेव दुकं दुकं च, छ **प**च्चनीयम्हि नया सुगम्भीरा ति॥

निकाये अत्थीति **ए**कुत्तरि, अङ्गुत्तरनिकायो एतिस्सं[1] एकुत्तरियं। सङ्गीति च दसुत्तरञ्च सङ्गीतिदसुत्तरानि। सङ्गीतिदसुत्तरानि एव सुत्तन्तानि सङ्गीतिदसुत्तरसुत्तन्तानि। एकनिपातो च दुकनिपातो च सङ्गीतिदसुत्तरसुत्तन्तानि च[2] एकनिपा....प....सुत्तन्तानि। एकुत्तरियं ति पदं एकनिपात इति वचने आधारो। एकनिपात....प....सुत्तन्तेहीति[2] पदं समोधानेत्वा ति पदे अपादानं।

द्वाचत्तालीस दुका समोधानेत्वा सम्पिण्डेत्वा थपिता ति सम्बन्धो। ते[3] पनेते ति ते[3] पन एते द्वाचत्तालीस दुका। सेसट्ठानेसू ति द्वाचत्तालीसदुकेहि सेसेसु कुसलत्तिकादिट्ठानेसु।

सेसट्ठाने अभिधम्मस्स विभत्तभावं पट्ठानप्पकरणेन साधेन्तो सम्मासम्बुद्धेन हीति आदिमाह। एवं इमिना पकारेन, पट्ठानवरं तिकञ्च दुकुत्तमं[4] दुकतिकञ्चेव तिकदुकञ्च तिकतिकञ्चचेव दुकदुकञ्च इति (२१—सी०) अनुलोमम्हि धम्मानुलोमे छ नया सुगम्भीरा।

एवं ति पदं छा ति पदे ततियाविसेसनं।

तेन वुत्तं ति येन कारणेन भगवता निद्दिट्ठं, तेन कारणेन तिकञ्च पट्ठानवरं....प.... नया सुगम्भीरा ति वचनं अट्ठकथाचरियेन वुत्तं। छ पञ्चनीयम्हि[5] नया सुगम्भीरा ति धम्म-

---

१. तिस्सं—म०। २-२. चा ति—म०। ३-३. तेन पनेते ति तेन थेरेन—सी०। ४. दुकुत्तरं—सी०। ५. पच्चनीकम्हि—सी०।

ततो परं **अनुलोमपच्चनीये** पि एतेनेव उपायेन छ नया दस्सिता। तेनाह—

तिकं च पट्ठानवरं दुकुत्तमं, दुकं तिकं चेव तिकं दुकं च।
तिकं तिकं चेव दुकं दुकं च, छ अनुलोमपच्चनीयम्हि नया सुगम्भीरा ति॥

तदनन्तरं **पच्चनीयानुलोमे** पि एतेहेव छहि नयेहि निद्दिट्ठं। तेनाह—

तिकं च पट्ठानवरं दुकुत्तमं, दुकं तिकं चेव तिकं दुकं च।
तिकं तिकं चेव दुकं दुकं च, छ पच्चनीयानुलोमम्हि नया सुगम्भीरा ति॥

एवं **अनुलोमे** छ पट्ठानानि, **पटिलोमे** छ, **अनुलोमपच्चनीये** छ, **पच्चनीयानुलोमे** छ पट्ठानानी ति इदं चतुवीसति-समन्तपट्ठान-समोधानं **पट्ठानं महापकरणं** नाम।

इदानि इमस्स **अभिधम्मस्स** गम्भीरभावविजाननत्थं चत्तारो सागरा वेदितब्बा—संसारसागरो, जलसागरो, नयसागरो, ञाणसागरो ति।

तत्थ संसारसागरो नाम—

खन्धानं च पटिपाटि धातु-आयतनानं च।
अब्बोच्छिन्नं वत्तमाना संसारो ति पवुच्चती ति॥

एवं वुत्तं संसारवट्टं। स्वायं यस्मा इमेसं सत्तानं उप्पत्तिया पुरिमकोटि न पञ्ञायति एत्तकानं हि वस्ससतानं वा वस्ससहस्सानं वा वस्ससतसहस्सानं वा, कप्पसतानं वा कप्पसहस्सानं वा कप्पसतसहस्सानं वा मत्थके सत्ता उप्पन्ना, ततो पुब्बे नाहेसुं ति वा, असुकस्स नाम रञ्ञो काले उप्पन्ना, असुकस्स बुद्धस्स काले उप्पन्ना ततो पुब्बे नाहेसुं ति वा, अयं परिच्छेदो नत्थि, "पुरिमा भिक्खवे कोटि न पञ्ञायति अविज्जाय,

---

पच्चनीये छ नया सुगम्भीरा ति अत्थो अधिप्पायो[1]।

तेनाहा ति येन कारणेन भगवता[2] तिकञ्च पट्ठानवरं.....प.....नया सुगम्भीरा ति वचनं अट्ठकथाचरियो आह। अनुलोमपच्चनीयम्हीति धम्मानुलोमपच्चनीये।

पच्चनीयानुलोमम्हीति धम्मपच्चनीयानुलोमे।

तत्था ति तेसु चतूसु सागरेसु। धातु-आयतनानञ्चा ति वत्तब्बे निग्गहितलोपं कत्वा धातु-आयतनान चा ति वुत्तं। एवं भगवता वुत्तं संसारवट्टं संसारसागरो नामा ति सम्बन्धो। येन कारणेन संसारो सागरो नाम, तं कारणं ञापेन्तो स्वायं ति आदिमाह। इमेसं सत्तानं उप्पत्तिया पुरिमा कोटि[3] न पञ्ञायति। हि सच्चं.....प.....ततो कालतो पुब्बे सत्ता (१८–म०) अहेसुं इति वा ततो पुब्बे नाहेसुं ति वा अयं परिच्छेदो नत्थि। भिक्खवे अविज्जाय पुरिमा कोटि न पञ्ञायति। इतो कालतो पुब्बे नाहोसि अथ पच्छा पच्छा[4] एव अविज्जा समभवि अहोसि। इति इमिना नयेन पन संसारसागरो यस्मा अनमतग्गो व, तस्मा स्वायं संसारसागरो नामा ति योजना। यस्मा ति पदं[5] पञ्ञायति अनमतग्गो वा ति पदद्वयेन सम्बन्धितब्बं। हिसद्दो दळ्हक-

---

१. नत्थि—सी०। २. ०दस्सिता तेन कारणेन—सी०। ३. ०यस्मा—सी०। ४. नत्थि—सी०। ५. ०न—सी०।

इतो पुब्बे अविज्जा नाहोसि अथ पच्छा संभवी" [अं० ४.१८९] ति इमिना पन नयेन अयं संसारसागरो नाम अनमतग्गो व।

महासमुद्दो पन जलसागरो नामा ति वेदितब्बो। सो चतुरासीतियोजनसहस्सगम्भीरो। तत्थ उदकस्स आळ्हकसतेहि वा आळ्हकसहस्सेहि वा आळ्हकसतसहस्सेहि वा पमाणं नाम नत्थि। अथ खो असंखेय्यो अप्पमेय्यो महा-उदकक्खन्धो त्वेव संखं गच्छति। अयं जलसागरो नाम।

कतमो नयसागरो? तेपिटकं **बु**द्धवचनं। द्वे पि हि तन्तियो पच्चवेक्खन्तानं सद्धासम्पन्नानं पसादबहुलानं ञाणुत्तरानं कुलपुत्तानं अनन्तं पीतिसोमनस्सं उप्पज्जति। कतरा द्वे? **वि**नयं च **अ**भिधम्मं च। विनयधरानं भिक्खूनं **वि**नयतन्ति पच्चवेक्खन्तानं दोसानुरूपं सिक्खापदपञ्ञापनं नाम—इमस्मिं दोसे इमस्मिं वीतिक्कमे इदं नाम होती ति सिक्खापदपञ्ञापनं—अञ्ञेसं अविसयो, बुद्धानमेव विसयो ति। **उ**त्तरिमनुस्सधम्मपेय्यालं पक्चवेक्खन्तानं **नी**लपेय्यालं पच्चवेक्खन्तानं **स**ञ्चरित्तपेय्यालं पच्चवेक्खन्तानं अनन्तं पीतिसोमनस्सं उप्पज्जति। आभिधम्मिकभिक्खूनं पि खन्धन्तरं पि आयतनन्तरं पि धात्वन्तरं पि इन्द्रियन्तरं बल-बोज्झङ्ग—कम्म-विपाकन्तरं रूपारूपपरिच्छेदं सण्हसुखुमधम्मं गगनतले तारकरूपानि गणेन्तो विय रूपारूपधम्मे पब्बं पब्बं कोट्ठासं कोट्ठासं कत्वा विभजन्तो दस्सेसि वत नो **स**त्था ति **अभिधम्मतन्ति** पच्चवेक्खन्तानं अनन्तं पीतिसोमनस्सं उप्पज्जति।

रणो। पनसद्दो विसेसत्थो। 'न' मतो ञातो अनमतो, अकारो तब्भावे वत्तति। अनमतो अग्गो आदि यस्स सो अनमतग्गो।

तत्था ति समुद्दे।

चतुपसतं[1] पत्थो चतुपत्थो च आळ्हकं।
आळ्हकानि चत्तारि अम्बणं ति वुच्चति[2]॥

विनयतन्ति पच्चवेक्खन्तानं अनन्तं पीति-सोमनस्सं उप्पज्जतीति सम्बन्धो। इतिसद्दो विनयतन्ति पच्चवेक्खन्तानं ति पदे आकारो। पेय्ये वित्थारवचने अलं ति पेय्यालो। यो सद्दो पेय्ये वित्थारवचने अलं युत्तो इति तस्मा सो सद्दो पेय्यालो। (२२–सी०) उत्तरिमनुस्सधम्मेन उपलक्खितो पेय्यालो, उत्तरिमनुस्सधम्मे[3] वा वुत्तो पेय्यालो उत्तरिमनुस्सधम्मपेय्यालो[3]।

आभिधम्मिकभिक्खूनम्पीति[4] पदं उप्पज्जतीति पदे सम्पदानं। अपिसद्दो विनयधरभिक्खुं[5] अपेक्खसीति। खन्धन्तरं ति आदीनि दस्सेसीति पदे कम्मं। रूपारूपपरिच्छेदं ति रूपारूपभावेन परिच्छिन्दितब्बं इति[6] पदं सण्हसुखुमधम्मं ति पदस्स विसेसनं। अथवा खन्धन्तरं.... प....रूपारूपपरिच्छेदं ति पदानि सहण्हसुखुमधम्मं ति पदस्स विसेसनं। सण्ह.. प....धम्मं ति पदं दस्सेसीति पदे कम्मं। रूपारूपधम्मे ति पदं कत्वा ति पदे कम्मं। वत नो ति एकंसेन अम्हाकं सत्था दस्सेसि[7]।

---

१. चतुक्कपसतं–सी०। २. पवुच्चति–सी०। ३-३. सीहळपोत्थके–उत्तरिमनुस्सधम्मपेय्यालो उत्तरिमनुस्सधम्मे वा वुत्तो पेय्यालो–ति पाठो। ४. अभिधम्मिक०–सी०। ५. विनयधरं भिक्खुं–सी०। ६. इदं–सी०। ७. दस्सेति–म० सब्बत्थ।

एवं उप्पत्तिया पनस्स इदं वत्थु पि वेदितब्बं—**म**हानाग-तिमिय-तिस्सदत्तत्थेरो किर नाम महाबोधिं वन्दिस्सामी ति परतीरं गच्छन्तो नावाय उपरितले निसिन्नो महासमुद्दं ओलोकेसि। अथ' स्स तस्मिं समये नेव परतीरं पञ्ञायित्थ, न ओरिमतीरं, ऊमिवेगप्पभेद-समुग्गत-जलचुण्ण-परिकिण्णो पन पसारित-रजतपट-सुमन-पुप्फसन्थर-सदिसो महासमुद्दो व पञ्ञायित्थ। सो किं नु खो महासमुद्दस्स ऊमिवेगो बलवा उदाहु चतुवीसतिप्पभेदे **स**मन्तपट्ठाने नयमुखं बलवं ति चिन्तेसि। अथ' स्स महासमुद्दे परिच्छेदो पञ्ञायति—अयं हि हेट्ठा पठविया परिच्छिन्नो, उपरि आकासेन, एकतो चक्कवाळपब्बतेन, एकतो वेलन्तेन परिच्छिन्नो; **स**मन्तपट्ठानस्स पन परिच्छेदो न पञ्ञायती ति सण्हसुखुमधम्मं पच्चवेक्खन्तस्स बलवपीति उप्पन्ना। सो पीतिं विक्खं-भेत्वा विपस्सनं वड्ढेत्वा यथानिसिन्नो व सब्बकिलेसे खेपेत्वा अग्गफले अरहत्ते पति-ट्ठाय उदानं उदानेसि—

> अत्थेव गम्भीरगतं सुदुब्बुधं, सयं अभिञ्ञाय सहेतुसम्भवं।
> यथानुपुब्बं **नि**खिलेन देसितं, **म**हेसिना रूपगतं व पस्सती ति॥

अयं नयसागरो नाम।

एवं उप्पत्तिया पनस्सा ति एवं वुत्तनयेन अस्स पीतिसोमनस्सस्स। उप्पत्तिया ति पदं वेदितब्बं ति पदे ततियाविसेसनं। ऊहन्ति वितक्केन्ति एतेना ति ऊमि, तरङ्गो। 'ऊह'—वितक्के, मि-पच्चयो, हलोपो। ऊमीनं पभेदो ऊमिप्पभेदो, ऊमिप्पभेदेन समुग्गतं तथा, ऊमिप्पभेदसमुग्ग-तञ्च तं जलञ्चा ति तथा, ऊमिप्पभेदसमुग्गतजलचुण्णेन परिकिण्णो तथा। पसारितञ्च तं रजत-पटञ्चा[1] ति पसारितरजतपटं, सुमनपुप्फस्स सन्थरो सुमनपुप्फसन्थरो, पसारितरजतपटञ्च सुमन-पुप्फसन्थरो च पसारित.....प.. सन्थरो, पसारितरजतपटसुमनपुप्फसन्थरेन सदिसो पसारित..... प.....सदिसो। अयं हीति हि सच्चं। अयं समुद्दो। वेलन्तेना ति तीरस्स अवसानेन। उदानं ति सोमनस्स-ञाणसम्पयुत्तवचनं। यो भिक्खु समन्तपट्ठानं (१९—म०) किंविसिट्ठं गम्भीरगतं सुदुब्बुधं सहेतुसम्भवं, यथानुपुब्बं यथानुपुब्बेन महेसिना सम्मासम्बुद्धेन किंविसिट्ठेन राग-दोसादिपञ्चचेतोखिलरहितेन सयं अत्तना व अभिञ्ञाय अभिविसिट्ठेन ञाणेन अञ्ञाय जानित्वा देसितं रूपगतं[2] हत्थगतं रूपं विय चक्खुना पटिवेधञाणेन पस्सति, सो भिक्खु अत्थेव अत्थि एव।

सुदुक्खेन अतिविय दुक्खेन बुज्झितब्बं ति सुदुब्बुधं। हेतुना सह यो धम्मो पवत्ततीति सहेतु, सहेतुतो सम्भवतीति[3] सहेतुसम्भवं। अथवा सम्भवनं सम्भवो। हेतुतो सम्भवतो[4] पच्चयतो सम्भवो (२३ सी०) हेतुसम्भवो। सह हेतुसम्भवेन वत्ततीति सहेतुसम्भवं। चित्तं खिलायति थद्धभावं आपज्जति एतेहीति खिला, रागमोहविचिकिच्छापटिघदोमनस्सा। नत्थि खिला तस्स[5] महेसिनो ति निखिलो।

---

१. ०पट्टञ्चा ति—सी० २. ०व--सी०। ३.-३. नत्थि--सी०। ४. नत्थि--सी०। ५. अस्स—सी०।

कतमो ञाणसागरो ? सब्बञ्ञुतञाणं ञाणसागरो नाम। अयं संसारसागरो नाम, अयं जलसागरो नाम, अयं नयसागरो नामा ति हि तं अञ्ञेन न सक्का जानितुं, सब्बञ्ञुतञाणेनेव सक्का जानितुं ति सब्बञ्ञुतञाणं ञाणसागरो नाम।

इमेसु चतूसु सागरेसु इमस्मिं ठाने नयसागरो अधिप्पेतो। इमं हि सब्बञ्ञू बुद्धा व पटिविज्झन्ति। अयं पि भगवा बोधिमूले निसिन्नो 'इमं पटिविज्झित्वा इमं वत मे धम्मं एसन्तस्स गवेसन्तस्स कप्पसतसहस्साधिकानि चत्तारि असंखेय्यानि वीतिवत्तानि, अथ मे इमस्मिं पल्लङ्के निसिन्नेन दियड्ढकिलेससहस्सं खेपेत्वा अयं धम्मो पटिविद्धो' ति पटिविद्धधम्मं पच्चवेक्खन्तो सत्ताहं एकपल्लङ्केन निसीदि। ततो तस्मा पल्लङ्का वुट्ठाय 'इमस्मिं वत मे पल्लङ्के सब्बञ्ञुतञाणं पटिविद्धं' ति अनिमिसेहि चक्खूहि सत्ताहं पल्लङ्कं ओलोकेन्तो अट्ठासि। ततो देवतानं 'अज्जा पि नून **सि**द्धत्थस्स कत्तब्बकिच्चं अत्थि, पल्लङ्कस्मिं आलयं न विजहती' ति परिवितक्को उदपादि। **स**त्था देवतानं वितक्कं ञत्वा तावदेव तासं वितक्कं वूपसमत्थं वेहासं अब्भुग्गन्त्वा **य**मकपाटिहारियं दस्सेसि। **म**हाबोधिपल्लङ्कस्मिं हि कतपाटिहारियं च, ञातिसमागमे कतपाटिहारियं च, **पा**टलिपुत्तसमागमे कतपाटिहारियं च, सब्बं **ग**ण्डम्बरुक्खमूले कत-यमकपाटिहारियसदिसमेव अहोसि। एवं पाटिहारियं कत्वा पल्लङ्कस्स च ठितट्ठानस्स च अन्तरे आकासतो ओरुय्ह सत्ताहं चङ्कमि।

इमेसु च एकवीसतिया दिवसेसु एकदिवसे पि **स**त्थु सरीरतो रस्मियो न निक्खन्ता। चतुत्थे पन सत्ताहे पच्छिमुत्तराय दिसाय **र**तनघरे निसीदि—रतनघरं नाम न रतनमयं गेहं। सत्तन्नं पन पकरणानं सम्मसितट्ठानं रतनघरं ति वेदितब्बं—तत्थ **ध**म्मसङ्गणिं सम्मसन्तस्सा पि सरीरतो रस्मियो न निक्खन्ता। **वि**भङ्गप्पकरणं

सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स ञाणसागरभावे हेतुं ञापेन्तो आह अयं ति आदि[1]। हि यस्मा, अञ्ञेन ञाणेन।

इमं हीति हि सच्चं। इमं नयसागरं। अथा ति पच्छा। ततो ति सत्ताहतो। ततो ति तस्मिं काले। हिसद्दो दळ्हीकरणं।

इमेसु चाति चसद्दो वाक्यारम्भो। एकदिवसे पीति अपिसद्दो सम्भावने। आभिधम्मिकत्थेरा सत्तप्पकरणानं सम्मसितट्ठानं रतनघरं ति वदन्ति, तस्मा तेसं मतेन अट्ठसालिनियं सत्तप्पकरणानं सम्मसितट्ठानं रतनघरं ति वुत्तं। विनयधरा पन देवताहि मापितगेहं रतनघरं ति वदन्ति। तस्मा तेसं मतेन महावग्गट्ठकथायं देवताहि मापितरतनघरं रतनघरं ति वुत्तं। तस्मा उभयम्पेतं वचनं परियायेन वुत्तं। तेन अपदानट्ठकथायं चतुत्थे पन सत्ताहे

---

१. आदिं—सी०।

धातुकथं **पु**ग्गलपञ्ञत्तिं **क**थावत्थुप्पकरणं यमकप्पकरणं सम्मसन्तस्सा पि सरीरतो रस्मियो न निक्खन्ता।

यदा पन **म**हापकरणं ओरुय्ह "हेतुपच्चयो आरम्मणपच्चयो"...प०...."अविगतपच्चयो" ति सम्मसनं आरभि, अथ' स्स **च**तुवीसतिसमन्तपट्ठानं सम्मसन्तस्स एकन्ततो सब्बञ्ञुतञाणं **म**हापकरणे येव ओकासं लभि। यथा हि **ति**मिरतिमिङ्गलमहामच्छो चतुरासीतियोजनसहस्सगम्भीरे महासमुद्दे येव एकन्ततो ओकासं लभति, एवमेव सब्बञ्ञुतञाणं एकन्ततो **म**हापकरणे येव ओकासं लभि।

सत्थु एवं लद्धोकासेन सब्बञ्ञुतञाणेन यथासुखं सण्हसुखुमधम्मं सम्मसन्तस्स सरीरतो नीलपीतलोहितोदातमञ्जेट्ठप्पभस्सरवसेन छब्बण्णरस्मियो निक्खमिंसु। केसमस्सूहि चेव अक्खीनं च नीलट्ठानेहि नीलरस्मियो निक्खमिंसु, यासं वसेन गगनतलं अञ्जनचुण्णसमाकिण्णं विय उम्मापुप्फनीलुप्पलदलसञ्छन्नं विय वीतिपतन्तं मणितालवण्टं विय सम्पसारितमेचकपटं विय च अहोसि। छवितो चेव अक्खीनं च पीतट्ठानेहि पीतरस्मियो निक्खमिंसु; यासं वसेन दिसाभागा सुवण्णरसधारा निसिञ्चमाना विय सुवण्णपटपसारिता विय कुंकुमचुण्णरञ्जिता विय कण्णिकारपुप्फसम्परिकिण्णा विय च विरोचिंसु। मंसलोहितेहि चेव अक्खीनं च रत्तट्ठानेहि लोहितरस्मियो निक्खमिंसु यासं वसेन दिसाभागा चीनपिट्ठचुण्णरञ्जिता विय सुपक्कलाखारसनिसिञ्च-

---

बोधितो पच्छिमुत्तरदिसाभागे देवता रतनघरं मापयिंसु। तत्थ पल्लङ्केन निसीदि[1] यं गेहं[1] सत्तन्नं पन पकरणानं सम्मसितट्ठानं रतनघरं ति वुच्चति[2]। यस्मा पनेत्थ उभो पेते परियायेन युज्जन्ति, तस्मा उभयम्पेतं गहेतब्बमेवा ति वुत्तं। तत्था ति रतनघरे।

सब्बञ्ञुतञाणस्स पट्ठाने ओकासं लभनभावं उपमाय साधेन्तो यथा हीति[3] आदिमाह[3]।

सत्थू ति पदं सरीरतो ति पदे सम्बन्धो। छब्बण्णा छप्पकारा। यासं वसेन[4] यासं रस्मीनं सम्बन्धेन। अञ्जनस्स चुण्णं अञ्जनचुण्णं[5]। अञ्जनचुण्णेन समोकिण्णं तथा। नीलुप्पलस्स[6] दलं नीलुप्पलदलं, उम्मापुप्फञ्च नीलुप्पलदलञ्च उम्मापुप्फनीलुप्पलदलं, उम्मापुप्फनीलुप्पलदलेन सञ्छन्नं तथा। मणिना कतं तालवन्टं मणितालवन्टं। (२०–म०) वीतिपतन्तञ्च तं मणितालवन्टञ्चा ति तथा। बीजमानमणितालवन्टं ति अत्थो। मेचकञ्च तं पटञ्चा ति मेचकपटं, सम्पसारितञ्च तं पटञ्चा ति तथा। सुवण्णस्स (२४–सी०) रसो सुवण्णरसो, सुवण्णरसेन अभिसिञ्चमाना सुवण्ण...प...माना। सुवण्णपटा च ता पसारिता चा ति सुवण्णपटपसारिता।

१-१. निसीदीति अभिधम्मपिटकं निसेसतो चेत्थ अनन्तनयं महापट्ठानं विचिनन्तो सत्ताहं वीतिनामेसि। अभिधम्मिका पनाहु रतनघरं नाम न रतनमयं गेहं—सीहलपोत्थके अयमधिको पाठो। २. नत्थि–सी०। ३–३. आह यथाहीति आदि–सी०। ४. वसेना ति– रो०। ५. नत्थि–म०। ६. नीलू०–म० सब्बत्थ।

माना विय रत्तकम्बलपरिक्खित्ता विय जयसुमन-पालिभद्दक-बन्धुजीवककुसुमसम्परिकिण्णा विय च विरोचिंसु। अट्ठीहि चेव दन्तेहि चेव अक्खीनं च सेतट्ठानेहि ओदातरस्मियो निक्खमिंसु; यासं वसेन दिसाभागा रजतघटेहि आसिञ्चमानखीरधारा सम्परिकिण्णा विय संपसारितरजतपट्टविताना विय, वीतिपतन्तरजततालवण्टा विय, कुन्दकुमुद-सिन्दुवार-सुमन-मल्लिकादि-कुसुमसञ्छन्ना विय च विरोचिंसु। मञ्जेट्ठप्पभस्सरा पन तम्हा तम्हा सरीरप्पदेसा निक्खमिंसु।

इति ता छब्बण्णरस्मियो निक्खमित्वा घनमहापठविं गण्हिंसु। चतुनहुताधिकद्वियोजनसतसहस्सबहला महापठवी निद्धन्तसुवण्णपिण्डि विय अहोसि। पठविं भिन्दित्वा हेट्ठा उदकं गण्हिंसु। पठवीसन्धारकं अट्ठनहुताधिकं चतुयोजनसतसहस्सबहलं उदकं सुवण्णकलसेहि आसिञ्चमानं विलीनसुवण्णं विय अहोसि। उदकं विनिविज्झित्वा वातमग्गहेसुं। छन्नहुताधिक-नवयोजनसतसहस्सबहलो वातो समुस्सितसुवण्णक्खन्धो विय अहोसि। वातं विनिविज्झित्वा हेट्ठा अजटाकासं पक्खमिंसु। उपरिभागेन उग्गन्त्वा पि **चातु**म्महाराजिके गण्हिंसु। ते विनिविज्झित्वा **ताव**तिंसे ततो **याम**े ततो **तु**सिते ततो **नि**म्मानरती ततो **प**रनिम्मितवसवत्ती ततो नव **ब्रह्म**लोके ततो **वे**हप्फले ततो पञ्च **सुद्धा**वासे विनिविज्झित्वा चत्तारो **आ**रुप्पे गण्हिंसु। चत्तारो **आ**रुप्पे विनिविज्झित्वा अजटाकासं पक्खन्दिंसु। तिरियभागेहि अनन्ता लोकधातुयो पक्खन्दिंसु।

कुङ्कुमस्स[1] चुण्णं कुङ्कुमचुण्णं, कुङ्कुमपुप्फचुण्णं ति अत्थो। कुङ्कुमचुण्णञ्च कणिकारपुप्फञ्च कुङ्कुमचुण्णकणिकारपुप्फं, तेन सम्परिकिण्णा कुङ्कुम....प....परिकिण्णा। चियन्ति एत्थ रतनानीति चीनो। जनपदो। 'चि'-चये। चीनदेसे पवत्तं पिट्ठं चीनपिट्ठं, चीनपिट्ठस्स चुण्णं चीनपिट्ठचुण्णं, चीनपिट्ठचुण्णेन रञ्जिता चीन....प....रञ्जिता। सुपक्का च सा लाखा चा ति सुपक्कलाखा, सुपक्कलाखाय रसो सु....प....लाखारसो, सुपक्कलाखारसेन निसिञ्चमाना तथा। रत्तञ्च तं कम्बलञ्चा ति रत्तकम्बलं, रत्तकम्बलेन परिक्खित्ता रत्त....प....त्ता। जयसुमनञ्च पालिभद्दकञ्च बन्धुजीवकञ्च जयसुमन....प....जीवका, तानि एव कुसुमानि, तेहि सम्परिकिण्णा। खीरस्स धारा। आसिञ्चमाना च खीरधारा चा ति....प....आसिञ्चमानखीरधाराय सम्परिकिण्णा ति तथा। रजतपटेन कता विताना रजतपटविताना। सम्पसारिता च ते रजतपटविताना चा ति सम्पसा....प०....ताना। वीतिपतन्तरजततालवन्टा बीजमानरजतेन कता तालवन्टा। कुन्दञ्च कुमुदञ्च सिन्धुवारो च सुमना च मल्लिका च कुन्दकुमुदसिन्धुवारसुमनमल्लिकानि, तानि आदीनि येसं तानि कुन्द....प०....मल्लिकादीनि। कुन्द....प०....कादीनि एव कुसुमानि कुन्द....प०....कादिकुसुमानि। कुन्द....प०....कुसुमेहि सञ्छन्ना कुन्द....प०....सञ्छन्ना।

निधमयित्था ति निधन्ता[2]। निपुब्ब-'धम'-धमने। अन्तपच्चयो। सुवण्णस्स पिण्डि सुवण्णपिण्डि, निद्धन्ता[3] एव सुवण्णपिण्डि निद्धन्तसुवण्णपिण्डि। विलीनञ्च तं सुवण्णञ्चा ति विलीनसुवण्णं। आसिञ्चमानं एव विलीनसुवण्णं आसिञ्चमानविलीनसुवण्णं। नत्थि जटं अस्सा ति अजटो एव आकासो अजटाकासो।

---

१. कुङ्कुट्ठ०—म० सब्बत्थ। २. निधमन्ता—सी०। ३. निधन्ता—म०।

एत्तकेसु ठानेसु चन्दम्हि चन्दप्पभा नत्थि, सुरिये सुरियप्पभा नत्थि, तारकरूपेसु तारकप्पभा नत्थि, देवतानं उय्यानविमानकप्परुक्खेसु चेव सरीरेसु च आभरणेसु चा ति सब्बत्थ पभा नत्थि। तिसहस्सि-महासहस्सि-लोकधातुया आलोकफरणसमत्थो महाब्रह्मा पि सुरियुग्गमने खज्जोपनको विय अहोसि। चन्दसुरियतारकरूप-देवउय्यानविमान-कप्परुक्खानं परिच्छेदकमत्तकमेव पञ्ञायित्थ। एत्तकं ठानं बुद्धरस्मीहि येव अज्झोत्थटं अहोसि।

अयं च नेव बुद्धानं अधिट्ठान-इद्धि, न भावनामया इद्धि। सण्हसुखुमधम्मं पन सम्मसतो लोकनाथस्स लोहितं पसीदि, वत्थुरूपं पसीदि, छविवण्णो पसीदि। चित्तसमुट्ठाना वण्णधातु समन्ता असीतिहत्थमत्ते पदेसे निच्चला व अट्ठासि। इमिना नीहारेन सत्ताहं सम्मसि। सत्तरत्तिन्दिवानि सम्मसितधम्मो कित्तको अहोसी ति? अनन्तो अपरिमाणो अहोसि। अयं ताव मनसा देसना नाम।

सत्था पन एवं सत्ताहं मनसा चिन्तितं धम्मं वचीभेदं कत्वा देसेन्तो वस्ससतेन पि वस्ससहस्सेन पि वस्ससतसहस्सेन पि मत्थकं पापेत्वा देसेतुं न सक्कोती ति न वत्तब्बं। अपरभागस्मि हि तथागतो तावतिंसभवने पारिच्छत्तकमूले पण्डुकम्बलसिलायं दससहस्सचक्कवाळदेवतानं मज्झे निसिन्नो मातरं कायसक्खिं कत्वा **कुसला धम्मा, अकुसला धम्मा, अब्याकता धम्मा** [ध० सं० ५] ति धम्मं देसेन्तो सतभागेन सहस्सभागेन सतसहस्सभागेन धम्मन्तरा धम्मन्तरं संकमित्वा संकमित्वा व देसेसि। तयो मासे निरन्तरं पवत्तितदेसनावेगेन पवत्त-आकासगङ्गा विय अधोमुखठपित-उदकघटा निक्खन्त-उदकधारा विय च हुत्वा अनन्ता अपरिमाणा अहोसि।

सब्बत्था ति ठानेसु। चातुमहाराजिकानं तीणि सहस्सानि एतिस्सं ति तिसहस्सि। तिसहस्सेहि महन्तानि अधिकानि सहस्सानि चातुमहाराजिकानि एतिस्सं ति महासहस्सि। तिसहस्सि (२५–सी०) च महासहस्सि च तिसहस्सिमहासहस्सियो। तिसहस्सिमहासहस्सियो च ता लोकधातुयो चा ति तिसहस्सि-महासहस्सि-लोकधातुयो। तिसहस्समहासहस्सानि चक्कवाळानीति अत्थो। अथवा सहस्सितो पट्ठाय ततिया ततियम्पि सहस्सिसहस्सं[1] कत्वा (२१–म०) गणितत्ता महन्[2] हि गणिता ति तिसहस्सिमहासहस्सि। एत्तावता कोटिसतचक्कवाळपरिमाणगणतो दस्सितो। गणपुत्ततिस्सत्थेरो पन कोटिसतसहस्स-परिमाणट्ठानं तिसहस्सिलोकधातुनामा ति आह। तिसहस्सि-महासहस्सिलोकधातुया ति पि पाठो।

अधिट्ठानेन निप्फन्ना इद्धि अधिट्ठानिद्धि, भावनाय निप्फन्ना भावनामया। लोहितं पसीदीति हदयवत्थुम्हि अज्झपसतलोहितं पसीदि। इमिना नीहारेन नयेन… प… अहोसि इति पुच्छा सिया।

देसनाभेदेहि अभिधम्मस्स गम्भीरभावं दस्सेतुं सत्था पना ति आदिमाह।

---

१. सहस्सिसहस्सधातु–म०। २. सहस्सेहि–सी०।

बुद्धानं हि भत्तानुमोदनकाले थोकं वड्ढेत्वा अनुमोदेन्तानं देसना **दीघ-म**ज्झिम-निकायप्पमाणा होति। पच्छाभत्तं पन सम्पत्तपरिसाय धम्मं देसेन्तानं देसना **सं**युत्त-**अं**गुत्तरिक-द्वेमहानिकायप्पमाणा व होति। कस्मा? बुद्धानं हि भवङ्गपरिवासो लहुको दन्तावरणं सुफस्सितं मुखादानं सिलिट्ठं जिव्हा मुदुका सरो मधुरो वचनं लहुपरिवत्तं। तस्मा तं मुहुत्तं देसितधम्मो पि एत्तको होति। तेमासं देसितधम्मो पन अनन्तो अपरिमाणो येव।

आनन्दत्थेरो हि बहुस्सुतो तिपिटकधरो पञ्चदसगाथासहस्सानि सट्ठिपद-सहस्सानि लतापुप्फानि आकड्ढन्तो विय ठितप्पदेनेव ठत्वा गण्हाति वा वाचेति वा देसेति वा। एत्तको **थे**रस्स एको उद्देसमग्गो होति। **थे**रस्स हि अनुपदं उद्देसं ददमानो अञ्ञो दातुं न सक्कोति, न सम्पापुणाति। **स**म्मासम्बुद्धो व सम्पापुणेय्य। एवं अधिमत्तसतिमा अधिमत्तगतिमा अधिमत्तधितिमा तथाविधसावको **स**त्थारा तेमासं इमिना नीहारेन देसितं देसनं वस्ससतं वस्ससहस्सं उग्गण्हन्तो पि मत्थकं पापेतुं न सक्कोति।

एवं तेमासं निरन्तरं देसेन्तस्स पन **त**थागतस्स कबलिङ्काराहारपटिबद्धं उपादिन्नकसरीरं कथं यापेसी ति? पटिजग्गनेनेव। बुद्धानं हि सो सो कालो सुववत्थितो सुपरिच्छिन्नो सुपच्चक्खो। तस्मा **भ**गवा धम्मं देसेन्तो मनुस्सलोके कालं ओलोकेति। सो भिक्खाचारवेलं सल्लक्खेत्वा निम्मितबुद्धं मापेत्वा 'इमस्स चीवर-गहणं पत्तगहणं च सरकुत्ति-आकप्पो एवरूपो नाम होतु, एत्तकमेव धम्मं देसेतू' ति अधिट्ठाय पत्तचीवरमादाय **अ**नोतत्तदहं गच्छति। देवता नागलतादन्तकट्ठं देन्ति। तं खादित्वा **अ**नोतत्तदहे सरीरं पटिजग्गित्वा मनोसिलातले ठितो सुरत्त-दुपट्टं निवा-सेत्वा चीवरं पारुपित्वा **चा**तुमहाराजदत्तियं सेलमयं पत्तं आदाय **उ**त्तरकुरुं गच्छति। ततो पिण्डपातं आहरित्वा **अ**नोतत्ततीरे निसिन्नो तं परिभुञ्जित्वा दिवाविहाराय **च**न्दनवनं गच्छति।

परिवसनं परिवासो, भवङ्गस्स परिवासा भवङ्गपरिवासो[1], भवङ्गप्पवत्तनं ति अत्थो। दन्तानि आवरति पिदहति एतेना ति दन्तावरणं। मुखस्स आदानं[2] विवरणं मुखादानं[3]।

ठितपदेनेवा ति एकेन ठितपदेनेव। उद्देसमग्गो ति उद्देसप्पबन्धो। पदस्स कोट्ठासस्स अनुक्कमो अनुपदं।

इदानि देसनाकाले भगवतो सरीरस्स यापिताकारविचारं दस्सेन्तो एवं तेमासं ति आदिमाह। सरकुत्तीति सरस्स करणं। आकप्पो ति इरियापथसम्पन्नो। पत्तचीवरमादाया ति पत्तं हत्थेन गहेत्वा चीवरं कायेन धारेत्वा। ततो ति उत्तरकुरुतो।

१. नत्थि–म०। २. आधानं–सी०। ३. ०धानं–सी०।

धम्मसेनापति सारिपुत्तत्थेरो पि तत्थ गन्त्वा सम्मासम्बुद्धस्स वत्तं कत्वा एकमन्तं निसीदति। अथस्स सत्था नयं देति। 'सारिपुत्त, एत्तको धम्मो देसितो' ति आचिक्खति। एवं सम्मासम्बुद्धे नयं देन्ते पटिसम्भिदापत्तस्स अग्गसावकस्स वेलन्ते ठत्वा हत्थं पसारेत्वा दस्सितसमुद्दसदिसं नयदानं होति। थेरस्सा पि नयसतेन नयसहस्सेन नयसतसहस्सेन भगवता देसितधम्मो उपट्ठाति येव।

सत्था दिवाविहारं निसीदित्वा धम्मं देसेत्वा काय वेलाय गच्छती ति? सावत्थिवासीनं कुलपुत्तानं सम्पत्तानं धम्मदेसनावेला नाम अत्थि, ताय वेलाय गच्छति। धम्मं देसेत्वा गच्छन्तं वा आगच्छन्तं वा के जानन्ति के न जानन्ती ति? महेसक्खा देवता जानन्ति, अप्पेसक्खा न जानन्ती ति। कस्मा न जानन्ती ति? सम्मासम्बुद्धस्स वा निम्मितबुद्धस्स वा रस्मि-आदीसु नानत्ताभावा। उभिन्नं पि हि तेसं रस्मीसु वा सरेसु वा वचनेसु वा नानत्तं नत्थी ति। सारिपुत्तत्थेरो पि सत्थारा देसितं देसितं धम्मं आहरित्वा अत्तनो सद्धिविहारिकानं पञ्चन्नं भिक्खुसतानं देसेती ति।

तेसं अयं पुब्बयोगो—ते किर कस्सपदसबलस्स काले खुद्दकवग्गुलि-योनियं निब्बत्ता पब्भारे ओलम्बन्ता द्विन्नं आभिधम्मिकभिक्खूनं अभिधम्मं सज्झायन्तानं सरे निमित्तं गहेत्वा कण्हपक्खं सुक्कपक्खं अजानित्वा पि सरे निमित्तग्गाहमत्तकेनेव कालं कत्वा देवलोके निब्बत्तिंसु। एकं बुद्धन्तरं देवलोके वसित्वा तस्मिं काले मनुस्सलोके निब्बत्ता यमकपाटिहारिये पसीदित्वा थेरस्स सन्तिके पब्बजिंसु। थेरो सत्थारा देसितदेसितधम्मं आहरित्वा तेसं देसेसि। सम्मासम्बुद्धस्स अभिधम्मदेसनापरियोसानं च तेसं भिक्खूनं सत्तप्पकरण-उग्गहणं च एकप्पहारेनेव अहोसि।

अभिधम्मे वाचनामग्गो नाम सारिपुत्तत्थेरप्पभवो। महापकरणे गणनवारो पि थेरेनेव ठपितो। थेरो हि इमिना नीहारेन धम्मन्तरं अमक्खेत्वा व सुखं गहेतुं धारेतुं परियापुणितुं वाचेतुं च पहोती ति गणनवारं ठपेसि।

एवं सन्ते थेरो च पठमतरं आभिधम्मिको होती ति? न होति। सम्मासम्बुद्धो च पठमतरं आभिधम्मिको होति। सो हि तं महाबोधिपल्लङ्के निसीदित्वा पटिविज्झि। बुद्धो हुत्वा च पन सत्ताहं एकपल्लङ्केन निसिन्नो उदानं उदानेसि —

महेसक्खा ति महानुभावा[1]। पुब्बयोगो[2] ति पुब्बे कतपत्थना। एकप्पहारेनेवा ति दिवसस्स ततियभागेन।

थेरो हीति पदे कत्ता। अमक्खेत्वा वा ति मिस्सं अकत्वा व। गणनचारो होतीति योजना। अथवा गहेतुं गहणं धारेतुं धारणं परियापुणितुं परियापुणनं[3] वाचेतुञ्च वाचनं होति।

एवं अभिधम्मे वाचनामग्गो ति आदिवचने सन्ते सारिपुत्तत्थेरो आभिधम्मिको होति इति चोदना सिया। सम्मासम्बुद्धस्स पठमतरं आभिधम्मिकभावं पटिवेधेन साधेन्तो सो हीति

---

१. महेसक्खा समहानुभावा–म०। २. पुब्बपयोगो–म०। ३. परियापुणं–म०।

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
अथ'स्स कङ्खा वपयन्ति सब्बा यतो पजानाति सहेतुधम्मं॥
यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
अथ'स्स कङ्खा वपयन्ति सब्बा यतो खयं पच्चयानं अवेदि॥
यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
विधूपयं तिट्ठति **मारसेनं** सूरो व ओभासयमन्तलिक्खं ति॥
[विन० १:३-४]

इदं पठमबुद्धवचनं नाम।

धम्मपदभाणका पन

"अनेकजातिसंसारं सन्धाविस्सं अनिब्बिसं।
गहकारकं गवेसन्तो दुक्खा जाति पुनप्पुनं॥
गहकारक दिट्ठो'सि पुन गेहं न काहसि।
सब्बा ते फासुका भग्गा गहकूटं विसंखतं।
विसङ्खारगतं चित्तं तण्हानं खयमज्झगा" ति॥ [धम्म० १५३-५४का०]

इदं पठमबुद्धवचनं नामा ति वदन्ति।

आदिमाह। नं ति अभिधम्मं। (२६–सी०) सम्मासम्बुद्धस्स पठमतरं आभिधम्मिकभावं पठमादि-बुद्धवचनेन साधेन्तो बुद्धो ति आदिमाह। चसद्दो वाक्यारम्भो। पनसद्दो विसेसत्थो।

धम्मा[1] सत्ततिंस बोधिपक्खियधम्मा, चतुसच्चधम्मा वा। आतापिनो वीरियवन्तस्स। झायतो लक्खणूपनिज्झानेन झायन्तस्स। ब्राह्मणस्स बाहितपापस्स योगिनो। यदा यस्मिं काले, हवे एकन्तेन, पातुभवन्ति पाकटा हुत्वा भवन्ति, यतो यस्मा कारणा, योगी सहेतुधम्मं पजानाति, अथ खो अस्स योगिनो। सब्बा कङ्खा सोळसविधा कङ्खा वपयन्ति[2] वयन्ति[3], (२२–म०) विअपयन्तीति।

वा पदच्छेदो। अथस्स ...प... वेदि। यतो यस्मा कारणा योगी पच्चयानं खयं अवेदि। अथ तदा अस्स योगिनो सब्बा कङ्खा वपयन्ति विनासन्ति। विधू...प...लिक्खं ति अन्तलिक्खं ओभासयन्तो[4] सूरियो इव योगी यदा[5] मारसेनं विधूपयन्तो[6] विनासयन्तो तिट्ठति।

अनेक...प...पुनप्पुनं जराब्याधिमरणमिस्सताय एसा जाति नाम पुनप्पुनं उपगन्तुं यस्मा दुक्खा सा जाति तस्मा[7] तण्हावड्ढकिह्मि अदिट्ठे न च निवत्तति, तस्मा कारणा अहं इमस्स अत्तभावस्स कारकं तण्हावड्ढकिं गवेसन्तो येन ञाणेन तं तण्हावड्ढकिं[8] मया दट्ठुं सक्का तस्स बोधिञाणस्सत्थाय[9] दीपङ्करपादमूले कताभिनीहारो एत्तकं कालं अनिब्बिसं अनिब्बिसन्तो तं ञाणं अविन्दन्तो[10] येव अनेकजातिसंसारं अनेकजातिसतसहस्ससङ्ख्यं संसारवट्टं सन्धाविस्सं संसरिं।

---

१. ०ति–सी०। २. अवपयन्ति–सी०। ३. नत्थि–सी०। ४. ओभासयं०–सी०। ५. यथा–सी०। ६. विधूपयं०–सी०। ७. तस्मिं–सी०। ८. ०वड्ढकी–सी०। ९. ०ञाणत्थाय–म०। १०. ०अलभन्तो–सी०।

यमकसालानमन्तरे निपन्नेन **भगवता** परिनिब्बानसमये "हन्द दानि भिक्खवे आमन्तयामि वो, वयधम्मा सङ्खारा, अप्पमादेन सम्पादेथा" ति [दी० २.११९] वुत्तवचनं पच्छिमबुद्धवचनं नाम उभिन्नमन्तरे पञ्चचत्ताळीसवस्सानि पुप्फदामं गन्थेन्तेन विय, रतनावलिं आवुणन्तेन विय च कथितो **अमतप्पकासनो** सद्धम्मो मज्झिमबुद्धवचनं नाम।

तं सब्बं पि सङ्गय्हमानं पिटकतो तीणि पिटकानि होन्ति, निकायतो पञ्च निकाया, अङ्गतो नव अङ्गानि, धम्मक्खन्धतो चतुरासीति धम्मक्खन्धसहस्सानि।

कथं ? सब्बं पि हेतं पिटकतो **विनयपिटकं सुत्तन्तपिटकं अभिधम्मपिटकं** ति तिप्पभेदमेव होति। तत्थ उभयानि **पातिमोक्खानि द्वे विभङ्गा** द्वावीसति **खन्धका** सोळस **परिवारा** ति इदं **विनयपिटकं** नाम। **ब्रह्मजालादि**चतुत्तिंससुत्तसङ्गहो **दीघनिकायो**। **मूलपरियायसुत्तादि**-दियड्ढसत-द्वेसुत्तसङ्गहो **मज्झिमनिकायो**। **ओघतरण**-सुत्तादि-सत्तसुत्तसहस्स-सत्तसतद्वासट्ठिसुत्तसङ्गहो **संयुत्तनिकायो**। **चित्तपरियादान**-सुत्तादि-नवसुत्तसहस्स-पञ्चसत-सत्तपण्णाससुत्तसङ्गहो **अंगुत्तरनिकायो**। **खुद्दकपाठ**-

---

गहकारक दिट्ठोसीति भो गहकारक तण्हावड्ढकि सब्बञ्ञुतञ्ञाणं पटिविज्झन्तेन मया त्वं दिट्ठो असि[1]। अथस्स[2] त्वं इमं अत्तभावसङ्खातं तव गेहं पुन न काहसि पुन न करिस्ससि। ते तव सब्बा अवसेसकिलेसफासुका मया भग्गा भञ्जिता। इमस्स तया कतस्स अत्तभावगेहस्स कूटं अविज्जासङ्खातं कण्णिकमण्डलं विसङ्खतं मया विद्धंसितं। मम चित्तं विसङ्खारगतं निब्बानं आरम्मणकरणवसेन गतं अनुपविट्ठं। अहं तण्हानं खयं अरहत्तफलं अज्झगा अधिगतो पत्तो अस्मि।

(२७-सी०) खन्धकभाणका वदन्ति धम्मपदभाणकानं गाथा मनसा देसितत्ता तदा महतो जनस्स उपकाराय नाहोसि। अम्हाकं पन गाथा वचीभेदं कत्वा देसितत्ता सुणन्तानं देवब्रह्मानं उपकाराय अहोसि। तस्मा इदमेव पठमबुद्धवचनं ति[3]। धम्मपदभाणका पन देसनाय जनस्स उपकारानुपकारभावो लक्खणं नाहोसि, भगवता मनसा देसितत्ता येव इमं[4] पठमबुद्धवचनं ति वदन्ति, तस्मा उभयम्पि अञ्ञमञ्ञविरुद्धं न होतीति वेदितब्बं।

निपन्नेन भगवता ति पदं वुत्तवचनं ति पदे कत्ता। आमन्तयामीति बोधेमि।

इदानि सम्मा सम्बुद्धस्स पठमतरं आभिधम्मिकभावं पिटकादीहि साधेतुं तं सब्बम्पीति आदिमाह। तं बुद्धवचनं होन्तिपदे[5] पकतिकत्ता।

सब्बम्पि हेतं ति आदि वित्थारो। तत्था ति तेसु तीसु पिटकेसु। उभयानि पातिमोक्खानीति भिक्खुभिक्खुनीपातिमोक्खानि। द्वे विभङ्गानि इति भिक्खुभिक्खुनीविभङ्गानि। द्वावीसति खन्धका ति महावग्गे दसखन्धका चूलवग्गे आगता (२३-म०) द्वादसखन्धका। यं तेन भगवता जानता ति आदीहि सोळसहि वारेहि उपलक्खितो परिवारो सोळसपरिवारो।

---

१. ०भवसि-सी०। २. नत्थि-सी०। ३. पठमं-सी०। ४. इदं-सी०। ५. होतीति पदे-सी०।

धम्मपद-उदान-इतिवुत्तक-सुत्तनिपात-विमानवत्थु-पेतवत्थु - थेरगाथा-थेरीगाथा-जातक-निद्देस-पटिसम्भिदा-अपदान-बुद्धवंस-चरियापिटकवसेन पण्णरसप्पभेदो **खुद्दनिकायो** ति इदं **सुत्तन्तपिटकं** नाम । **धम्मसङ्गणि**-आदीनि सत्तप्पकरणानि **अभिधम्मपिटकं** नाम ।

तत्थ

विविधविसेसनयत्ता विनयनतो चेव कायवाचानं ।
विनयत्थविदूहि अयं **विनयो** विनयो ति अक्खातो ॥

विविधा हि एत्थ पञ्चविधपातिमोक्खुद्देस-पाराजिकादि-सत्तआपत्तिक्खन्धमातिका विभङ्गादिप्पभेदनया विसेसभूता च दळ्हीकम्मसिथिलकरणप्पयोजना अनुपञ्ञत्ति-नया । कायिकवाचसिक-अज्झाचार-निसेधनतो एस कायं वाचं च विनेति । तस्मा विविधनयत्ता विसेसनयत्ता कायवाचानं च विनयनतो अयं **विनयो** विनयो ति अक्खातो । तेनेतमेतस्स वचनत्थकोसल्लत्थं वुत्तं—

विविधविसेसनयत्ता विनयनतो चेव कायवाचानं ।
विनयत्थविदूहि अयं **विनयो** विनयो ति अक्खातो ति ॥

ब्रह्मजालादीनि चतुत्तिंससुत्तानि[1] संगय्हन्ति एत्थ एतेना ति वा ब्रह्मजालादिचतुत्तिससुत्तसङ्गहो । ब्रह्मजालादिचतुत्तिंससुत्तानं वा सङ्गहो एतस्सा ति ब्रह्मजालादिचतुत्तिससुत्तसङ्गहो । एवं मूलपरियायसुत्तादि-दियड्ढसत-द्वेसुत्तसङ्गहो ति आदिसु पि विग्गहो कातब्बो ।

एवं विनयपिटकादीनं सरूपं दस्सेत्वा इदानि विनयसद्दस्स वचनत्थं पठमं ञापेन्तो तत्थ विविधा ति आदिमाह । तत्था ति तेसु विनयादीसु । विविधविसेसनयत्ता कायवाचानं विनयनतो चेव अयं विनयो विनयो इति विनयत्थविदूहि पण्डितेहि अक्खातो कथितो । विविधा च विसेसा च विविधविसेसा । विविधविसेसा[2] नया[2] एत्था ति विविधविसेसनया[3] । विविध-विसेसनयस्स भावो विविधविसेसनयत्तं[4] । विविधा नया एतस्सा ति[5] विनयो । विसेसा नया एत्था ति विनयो । कायवाचा[6] विनेतीति विनयो । विविधविसेसनयत्ता ति इमिस्सा गाथाय अत्थं पाकटं करोन्तो आह विविधा हीति आदि । हि सच्चं । एत्था ति एत्थ विनये । (२८–सी०) पञ्चविधा च ते पातिमोक्खुद्देसा चा ति तथा[7] । पञ्चविधपातिमोक्खुद्देसा च पाराजिकादि सत्त आपत्तिखन्धा च मातिका च विभङ्गो च पञ्चविध····प····विभङ्गा । पञ्चविधविभङ्गा आदयो येसं ते पञ्चविध····प····विभङ्गादयो । पञ्चविध····प····विभङ्गादयो पभेदा येसं ते पञ्चविध ····प····प्पभेदा । दळ्हं[8] करणं[8] दळ्हीकम्मं । सिथिलक्रिया सिथिलकरणं । दळ्हीकम्मञ्च सिथिलकरणञ्च दळ्हीकम्मसिथिलकरणं । दळ्हीकम्मसिथिलकरणं पयोजनं येसं ते दळ्हीकम्म····प····पयोजना । लोकवज्जसिक्खापदेसु दळ्हीकम्मपयोजना । पण्णतिवज्ज-सिक्खापदेसु सिथिलकरणपयोजना[9] । सञ्ञमवेलं अभिभवित्वा पवत्तो आचारो अज्झाचारो, वीतिक्कमो । अज्झाचारस्स निसेधनं अज्झाचारनिसेधनं । तेन विविधविसेसनयत्ता ति हेतुना एतस्स विनयस्स वचनत्थकोसल्लत्थं विविध····प····अक्खातो ति एतं[10] वचनं पण्डितेहि वुत्तं ।

---

१. चतुत्तिंस०–म० । २–२. ०विसेसनया–सी० । ३. ०नयो–म० । ४. ०नयता–सी० । ५. एत्था ति–सी० । ६. ०वाचा ति–सी० । ७. पञ्चविधपातिमोक्खुद्देसा–सी० । ८-८. दळ्हीकरणं–सी० । ९. सिथिलकरणं०–सी० । १०. एवं–सी० ।

इतरं पन

अत्थानं सूचनतो सुवुत्ततो सवनतो'थ सूदनतो।
सुत्ताणा सुत्तसभागतो च **सुत्तं** सुत्तं ति अक्खातं॥

तं हि अत्तत्थपरत्थादिभेदे अत्थे सूचेति। सुवुत्ता चेत्थ अत्था वेनेय्यज्झासयानुलोमेन वुत्तत्ता। सवति चेतं अत्थे, सस्समिव फलं, पसवती ति वुत्तं होति। सूदति चेतं, धेनु विय सारं, पग्घरती ति वुत्तं होति। सुट्ठु च ने तायति रक्खती ति वुत्तं होति। सुत्तसभागं चेतं। यथा हि तच्छकानं सुत्तं पमाणं होति एवमेतं पि विञ्ञूनं। यथा च सुत्तेन सङ्गहितानि पुप्फानि न विकिरियन्ति विद्धंसियन्ति एवमेतेन सङ्गहिता अत्था। तेनेतमेतस्स वचनत्थकोसल्लत्थं वुत्तं—

सुत्तानं सूचनतो सुवुत्ततो सवनतो च सूदनतो।
सुत्ताणा सुत्तसभागतो च **सुत्तं** सुत्तं ति अक्खातं ति॥

अभिधम्मस्स वचनत्थो वुत्तो येव। अपरो पन नयो—

यं एत्थ वुड्ढिमन्तो सलक्खणा पूजिता परिच्छिन्ना।
वुत्ताधिका च धम्मा **अभिधम्मो** तेन अक्खातो॥

अयं हि अभि-सद्दो वुड्ढि-सलक्खण-पूजित-परिच्छिन्नाधिकेसु दिस्सति। तथा हेस "बाळ्हा मे आवुसो दुक्खा वेदना अभिक्कमन्ति, नो पटिक्कमन्ती [म० नि० २ पि० ४५८] ति आदीसु वुड्ढियं आगतो। "या ता रत्तियो अभिञ्ञाता अभिलक्खिता" [म० नि० १:२८] ति आदीसु सलक्खणे। "राजाभिराजा मनुजिन्दो" [सु० नि० ३५७] ति आदीसु पूजिते। "पटिबलो विनेतुं अभि-धम्मे अभि-विनये" [विन० १.७०] ति आदीसु परिच्छिन्ने: अञ्ञमञ्ञसंकरविरहिते धम्मे च विनये चा ति वुत्तं होति।

इतरं पन सुत्तं अक्खातं ति पदे कम्मं। अत्थानं सूचनतो[1], सुट्ठु भगवता वुत्ततो, अत्थानं सवनतो, सूदनतो अत्थानं पग्घरणतो, सुत्ताणा[2] सुट्ठु अत्थे रक्खणतो, सुत्तसभागतो च सुत्तसदिसतो च सुत्तं ति पण्डितेहि अक्खातं।

अत्थानं सूचनतो ति आदिगाथाय अत्थं पाकटं करोन्तो आह (२४–म०) तं हीति आदि। हि सच्चं। तं सुत्तं....प....अत्थे सूचेति पकासेति, वेनेय्यज्झासयानुलोमेन वेनेय्यानं अज्झासयानुलोमेन वुत्तत्ता देसितत्ता। अत्था एत्थ सुत्ते भगवता सुवुत्ता च। सवति चेतं अत्थे एतं सुत्तं अत्थे सवति जनेति सस्सं इव फलं पसवति जनेति इति वचनं आचरियेन वुत्तं होति। सूदति चेतं एतं सुत्तं एते सुत्ते अत्थे सूदति पग्घरापेति। ने ति अत्थे। सुत्तसभागञ्चेतं सुत्तं सुत्तसदिसं। सुत्तसभागं येव दस्सेन्तो आह यथा चे ति आदि। तेन कारणेन एतस्स सुत्तस्स वचनत्थकोसल्लत्थं अत्थानं सूच....प.... अक्खातं ति एतं वचनं पण्डितेहि वुत्तं।

अभिधम्मस्स वचनत्थो (२९–सी०) अम्हेहि वुत्तो येव। एत्थ अभिधम्मे वुड्ढिमन्तो

१. ०पकासनतो सुवुत्ततो–सी०। २. सुत्ताना–म०।

"अभिक्कन्तेन वण्णेना [खु० नि० २ वि० व० १२] ति आदीसु अधिके। एत्थ च "रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति मेत्तासहगतेन चेतसा एकं दिसं फरित्वा विहरती" [ध० सं० ६७] ति आदिना नयेन वुड्ढिमन्तो पि धम्मा वुत्ता। "रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा" [ध० सं० १८] ति आदिना नयेन आरम्मणादीहि लक्खणीयत्ता सलक्खणा पि। "सेक्खा धम्मा, असेक्खा धम्मा, लोकुत्तरा धम्मा" [ध० सं० ४,७] ति आदिना नयेन पूजिता पि; पूजारहा ति अधिप्पायो। "फस्सो होति, वेदना होती" [ध० सं० १८] ति आदिना नयेन सभावपरिच्छिन्नत्ता परिच्छिन्ना पि। "महग्गता धम्मा, अप्पमाणा धम्मा, अनुत्तरा धम्मा" [ध० सं० ४,१४] ति आदिना नयेन अधिका पि धम्मा वुत्ता। तेनेतमेतस्स वचनत्थकोसल्लत्थं वुत्तं—

यं एत्थ वुड्ढिमन्तो सलक्खणा पूजिता परिच्छिन्ना।
वुत्ताधिका च धम्मा **अभिधम्मो** तेन अक्खातो ति॥

यं पनेत्थ अविसिट्ठं तं

पिटकं पिटकत्थविदू परियत्तिभाजनत्थतो आहु।
तेन समोधानेत्वा तयो पि **विनयादयो** ञेय्या॥

परियत्ति पि हि "मा पिटकसम्पदानेना" [अं० १.१७४] ति आदीसु पिटकं ति वुच्चति। "अथ पुरिसो आगच्छेय्य कुद्दालपिटकमादाया" [म० १.१७०] ति आदीसु यं किञ्चि भाजनं पि। तस्मा

धम्मा सलक्खणा[1] धम्मा पूजिता धम्मा परिच्छिन्ना धम्मा अधिका च धम्मा भगवता यं यस्मा वुत्ता तेन तस्मा अभिधम्मो अभिधम्मो इति पण्डितेहि अक्खातो। तथा तं वचनं[2]। हि सच्चं। एसो अभिसद्दो। अभिञ्ञाता ति पाकटा। सलक्खणे ति[3] सञ्ञाणे[4]। राजाभिराजा ति राजूहि पूजितुं अरहो राजा। पूजिते ति पूजारहे।

अभिधम्मे परिच्छिन्ने[5] धम्मे[6], अभिविनये परिच्छिन्ने विनये विनेतुं पटिबलो समत्थो। एत्थ चा ति अभिधम्मे वुत्ता ति पदे आधारो। वुड्ढिमन्तो पीति भावनाफरणवुड्ढीहि वुड्ढिमन्तो पि धम्मा वुत्ता ति अत्थो। आरम्मणादीहीति आदिसद्देन सम्पयुत्तकम्मद्वारपटिपदादयो सङ्गय्हन्ति। सलक्खणीयत्ता सञ्जानितब्बत्ता। सभावपरिच्छिन्नत्ता ति कुसलादिसभावेन परिच्छिन्नत्ता। एतं ति यं[7] एत्थ....प.... अक्खातो ति एतं वचनं।

यं पनेत्थ अविसिट्ठं ति एत्थ एतेसु विनयादीसु यं पिटकसद्दं अविसिट्ठं समानं, तं पिटकं परियत्तिभाजनत्थतो पिटकत्थविदू आहु कथेन्ति। तेन पिटकसद्देन समोधानेत्वा समासं कत्वा विनयादयो तयो धम्मा पण्डितेहि ञेय्या जानितब्बा। हि सच्चं। पिटकसम्पदानेना ति[8] पाळिसम्पदानवसेन अधम्मचोदकं भिक्खुं मा गण्हित्थ। कुं पथविं दालयति पदालयतीति

---

१. सल्लक्खणा–सी०। २. ०पन–सी०। ३. लक्खणा ति–सी०। ४. सञ्ञाणा–सी०। ५. नत्थि–सी०। ६. नत्थि–सी०। ७. नत्थि–म०। ८. वा पिटक०–सी०।

पिटकं पिटकत्थविदू परियत्तिभाजनत्थतो आहु ।

इदानि

तेन समोधानेत्वा तयो पि **विनयादयो** ञेय्या ति ॥

तेन एवं दुविधत्थेन पिटकसद्देन सह समासं कत्वा विनयो च सो पिटकं च परियत्तिभावतो, तस्स तस्स अत्थस्स भाजनतो चा ति **विनयपिटकं** । यथावुत्तेनेव नयेन सुत्तं च तं पिटकं चा ति **सुत्तपिटकं** । अभिधम्मो च सो पिटकं चा ति **अभिधम्मपिटकं** ति एवमेते तयो पि **विनयादयो** ञेय्या ।

एवं ञत्वा च पन पि तेस्वेव पिटकेसु नानप्पकारकोसल्लत्थं

देसना-सासन-कथाभेदं तेसु यथारहं ।
सिक्खा-पहान-गंभीरभावं च परिदीपये ॥
परियत्तिभेदं संपत्तिं विपत्तिं चा पि यं यहिं ।
पापुणाति यथा भिक्खु तं पि सब्बं विभावये ॥

तत्थायं परिदीपना विभावना च—एतानि हि तीणि पिटकानि यथाक्कमं आणा-वोहार-परमत्थदेसना, यथापराध-यथानुलोम-यथाधम्मसासनानि, संवरासंवर-दिट्ठिविनिवेठन-नामरूपपरिच्छेदकथा चा ति वुच्चन्ति ।

कुद्दालं[1] । कुद्दालञ्च पिटकञ्च कुद्दालपिटकं । इदानि तेन समोधानेत्वा····प···· ञेय्या ति वचनस्स अत्थो वेदितब्बो ति योजना । समासं[2] कत्वा ञेय्या ति सम्बन्धो ।

ञत्वा ति पदं परिदीपये विभावये ति पदद्वये पुब्बकालक्रिया । नानप्पकारकोसल्लत्थं ति नानप्पकारेन कोसल्लत्थं । देसना····प···· परिदीपये पण्डितो देसना-सासन-कथाभेदं सिक्खा-पहान-गम्भीरभावञ्च तेसु तीसु (२५–म०) पिटकेसु यथारहं परिदीपये परिदीपेय्य । चसद्दो भेदञ्च भावञ्चा ति योजेतब्बो ।

परि····प····भिक्खु यं परियत्तिभेदं यं सम्पत्तिं यं विपत्तिञ्चा पि भिक्खु यहिं यस्मिं विनयादिके पिटके यथा पापुणाति पण्डितो तम्पि परियत्तिभेदादिकं सब्बं विभावेय्य । परियापुणनं परियत्ति । परियत्तिया भेदो ३०–सी०) परियत्तिभेदो । यथा ति येहि उपारम्भादिहेतुपरियापुणनादिप्पकारेहि उपारम्भनिस्सरणधम्मको सरक्खणहेतुपरियापुणनं सम्पटिपत्ति[3] दुप्पटिपत्तीति एतेहि पकारेहीति अधिप्पायो । तम्पीति अपिसद्दो देसना-सासन-कथाभेदादिकं अपेक्खति ।

तत्रा ति तेसु तीसु पिटकेसु । परिदीपना विभावना चा ति हेट्ठा वुत्तस्स अनुरूपतो वुत्तं, अत्थतो पन एकमेव ।

---

१. कुदालं–म० सब्बत्थ । २. सह समासं–सी० । ३. सुप्पटिपत्ति–सी० ।

एत्थ हि विनयपिटकं आणारहेन भगवता आणाबाहुल्लतो देसितत्ता आणा-देसना; सुत्तन्तपिटकं वोहारकुसलेन भगवता वोहारबाहुल्लतो देसितत्ता वोहारदेसना; अभिधम्मपिटकं परमत्थकुसलेन भगवता परमत्थबाहुल्लतो देसितत्ता परमत्थदेसना ति वुच्चति।

तथा पठमं ये ते पचुरापराधा सत्ता ते यथापराधं एत्थ सासिता ति यथाप-राधसासनं; दुतियं अनेकज्झासयानुसयचरियाधिमुत्तिका सत्ता यथानुलोमं एत्थ सासिता ति यथानुलोमसासनं; ततियं धम्मपुञ्जमत्ते 'अहं ममा' ति सञ्ञिनो सत्ता यथाधम्मं एत्थ सासिता ति यथाधम्मसासनं ति वुच्चति।

आणा च वोहारो च परमत्थो च आणा-वोहार-परमत्था। आणा-वोहार-परमत्था देसियन्ति एत्था ति आणा....प....देसना। अपराधस्स अनुरूपं यथापराधं। अनुलोमस्स[1] अनुरूपं यथानुलोमं। धम्मस्स अनुरूपं यथाधम्मं। यथापराधञ्च यथानुलोमञ्च यथाधम्मञ्च यथा....प....धम्मं। यथापराध-यथानुलोम-यथाधम्मं सत्ता सासियन्ति एत्था ति यथा....प.... सासनानि।

संवरो च असंवरो च संवरासंवरो। दिट्ठिया विनिवेठनं[2] दिट्ठिविनिवेठनं। नामरूपस्स परिच्छेदो नामरूपपरिच्छेदो। संवरासंवरो च दिट्ठिविनिवेठनञ्च नामरूपपरिच्छेदो च संवरा-संवरदिट्ठिविनिवेठननामरूपपरिच्छेदा। ते कथियन्ति एत्था ति संवरा....प....परिच्छेदकथा।

एत्थ हीति हि सच्चं। एतेसु तीसु पिटकेसु, निद्धारणे भुम्मं। आणारहेना ति सम्बन्धो। आणं थपेतु[3] अरहतीति आणारहो। वोहार-परमत्थानम्पि सम्भवतो आणाबाहुल्लतो ति। वोहारबाहुल्लतो ति आदीसु[4] पि एसेव नयो।

पठमं ति विनयपिटकं वुच्चतीति सम्बन्धो। पचुरो बहुलो अपराधो येसं ते पचुरापराधा। एत्थ[5] विनये। इतीति तस्मा। आसयन्ति एत्थ सत्ता निवसन्तीति आसयो, दिट्ठिञाणञ्च।

सस्सतुच्छेददिट्ठि च खन्ति चेवानुलोमिकं।
यथाभूतञ्च यं ञाणं एतं आसयसञ्ञितं ति[6]॥

पभेदतो च तिब्बिधं[7] होति। अधिको आसयो अज्झासयो। अनुसया ति कामरागादिका सत्त अनुसया। चरिया ति रागचरियादिका (२६-म०) चरिता, सुचरितदुच्चरितानि वा। अधि-मुत्तीति सत्तानं पुब्बचरियवसेन अभिरुचि। अज्झासया च (३१-सी०) चारिया[8] च अधिमुत्ति च अज्झा....प....अधिमुत्ति। अनेका अज्झासयानुसयचरियाधिमुत्तियो येसं ते अनेक....प....मुत्तिका। यथानुलोमं ति अज्झासयादीनं अनुरूपं। यथाधम्मं ति धम्मसभावानुरूपं।

---

१. यं यं अनुलोमं-सी०। २. विनिवेट्ठनं-म०सब्बत्थ। ३. पणेतुं-सी०। ४. आदिके-सी०। ५. एत्था ति-सी०। ६. ०सज्जितं-सी०। ७. चतुब्बिधं-सी०। ८. अनुसया च चरिता-सी०।

तथा पठमं अज्झाचारपटिपक्खभूतो संवरासंवरो एत्थ कथितो ति संवरासंवरकथा; संवरासंवरो ति खुद्दको चेव महन्तो च संवरो, कम्माकम्मं विय फलाफलं विय च; दुतियं द्वासट्ठिदिट्ठिपटिपक्खभूता दिट्ठिविनिवेठना एत्थ कथिता ति दिट्ठिविनिवेठनकथा; ततियं रागादिपटिपक्खभूतो नामरूपपरिच्छेदो एत्थ कथितो ति नामरूपपरिच्छेदकथा ति वुच्चति।

तीसु पि च एतेसु तिस्सो सिक्खा तीणि पहानानि चतुब्बिधो च गंभीरभावो वेदितब्बो। तथा हि **विनयपिटके** विसेसेन अधिसीलसिक्खा वुत्ता, **सुत्तन्तपिटके** अधिचित्तसिक्खा, **अभिधम्मपिटके** अधिपञ्ञासिक्खा। **विनयपिटके** च वीतिक्कमप्पहानं, किलेसानं वीतिक्कमपटिपक्खत्ता सीलस्स; **सुत्तन्तपिटके** परियुट्ठानप्पहानं, परियुट्ठानपटिपक्खत्ता समाधिस्स; **अभिधम्मपिटके** अनुसयप्पहानं, अनुसयपटिपक्खत्ता पञ्ञाय। पठमे च तदङ्गप्पहानं किलेसानं. इतरेसु विक्खम्भनसमुच्छेदप्पहानानि। पठमे च दुच्चरितसंकिलेसस्स पहानं, इतरेसु तण्हादिट्ठिसंकिलेसिकानं पहानं।

संवरणं संवरो, कायावाचाहि अवीतिक्कमो। महन्तो संवरो असंवरो, वुड्ढि-अत्थो हि अकारो। संवरो च असंवरो च संवरासंवरो।

सुत्तन्तपाळियं विविच्चेव कामेहीति आदिना समाधिदेसनाय बाहुल्लतो सुत्तन्तपिटके[1] अधिचित्तसिक्खा ति वुत्ता। कायवचीद्वारेहि वीतिक्कमो[2] वीतिक्कमस्स पहानं वीतिक्कमप्पहानं। किलेसानं ति संकिलेसधम्मानं, कम्मकिलेसानं वा। किलेसानं ति पदं वीतिक्कम इति वचने सम्बन्धो। किलेसा सीलभेदवसेन वीतिक्कमितुं न लब्भन्तीति आह वीतिक्कमपटिपक्खत्ता सीलस्सा ति। ओकासदानवसेन किलेसानं चित्ते कुसलप्पवत्तिं परियादियित्वा[3] ठानं, परियुट्ठानप्पहानं चित्तसन्ताने उप्पत्तिवसेन किलेसानं परियुट्ठानस्स पहानं ति अधिप्पायो।

अप्पहीनभावेन सन्ताने अनुसेन्तीति[4] अनुसया। अनुसयानं पहानं अनुसयप्पहानं। तदङ्गप्पहानं ति तेन तेन सीलङ्गेन पहानं ति तदङ्गप्पहानं। विक्खम्भनञ्च समुच्छेदो च विक्खम्भनसमुच्छेदा। विक्खम्भनसमुच्छेदवसेन पहानानि विक्खम्भनसमुच्छेदप्पहानानि। दुच्चरितसंकिलेसप्पहानं ति दुट्ठु चरितं, संकिलेसेहि[5] वा दूसितं चरितं ति दुच्चरितं, कायदुच्चरितादि। सम्मा किलेसेहि बाधियति उपतापेति चा ति संकिलेसा। दुच्चरितं एव संकिलेसो दुच्चरितसंकिलेसो। दुच्चरितसंकिलेसस्स पहानं दुच्चरितसंकिलेसप्पहानं, कायवचीदुच्चरितवसेन पवत्तसंकिलेसस्स तदङ्गवसेन पहानं ति अधिप्पायो।

समाधिस्स कामच्छन्दपटिपक्खत्ता सुत्तन्तपिटके तण्हासंकिलेसस्स पहानं वुत्तं। अत्तादिविनिमुत्तसभावधम्मपकासनतो अभिधम्मपिटके दिट्ठिसंकिलेसस्स पहानं वुत्तं।

---

१. सुत्तपिटके–सी०। २. वीतिक्कमनं०–सी०। ३. परियादित्वा–सी०। ४. अनु अनु०–सी०। ५. किलेसेहि–सी०।

एकमेकस्मिं चेत्थ चतुब्बिधो पि धम्म-अत्थ-देसना-पटिवेध-गंभीर-भावो वेदितब्बो—तत्थ धम्मो ति तन्ति । अत्थो ति तस्सा येव अत्थो । देसना ति तस्सा मनसा ववत्थापिताय तन्तिया देसना । पटिवेधो ति तन्तिया तन्ति-अत्थस्स च यथाभूतावबोधो । तीसु पि चेतेसु एते धम्म-अत्थ-देसना-पटिवेधा । यस्मा ससादीहि विय महासमुद्दो मन्दबुद्धीहि दुक्खोगाळ्हा अलब्भनेय्यपतिट्ठा च तस्मा गंभीरा । एवं एकमेकस्मि एत्थ चतुब्बिधो पि गंभीरभावो वेदितब्बो ।

अपरो नयो—धम्मो ति हेतु । वुत्तं हेतं—"हेतुम्हि ञाणं धम्मपटिसंभिदा" [विभ० ३५०] ति । अत्थो ति हेतुफलं । वुत्तं हेतं—"हेतुफले ञाणं अत्थपटिसंभिदा" [विभ० ३५०] ति । देसना ति पञ्ञत्ति, यथाधम्मं धम्मालापो ति अधिप्पायो; अनुलोम-पटिलोमसंखेपवित्थारादिवसेन वा कथनं । पटिवेधो ति अभिसमयो । सो च लोकिय-लोकुत्तरो । विसयतो असंमोहतो च, अत्थानुरूपं धम्मेसु, धम्मानुरूपं अत्थेसु, पञ्ञत्ति-पथानुरूपं पञ्ञत्तीसु अवबोधो । तेसं तेसं वा तत्थ तत्थ वुत्तधम्मानं पटिविज्झितब्बो सलक्खणसंखातो अविपरीतसभावो ।

एकमेकस्मिञ्चेत्था ति एतेसु तीसु पिटकेसु एकमेकस्मि पिटके । तत्थ धम्मो ति पाळि । तस्मि[1] धम्मत्थदेसना (३२–सी०)-पटिवेधगम्भीरभावे धम्मो नाम पाळि । तत्था ति पदं आधारो, निद्धारणं वा । तन्तिया ति पदं देसना ति पदे कम्मं । देसियति समुट्ठापियति सद्दो एतेना ति देसना, चित्तुप्पादो । पटिविज्झनं पटिवेधो, तीसु पि च एतेसु पिटकेसु एते धम्मत्थ-देसना (२७–म०)-पटिवेधा महासमुद्दो ससादीहि सत्तेहि दुक्खोगाहो[2] विय मन्दबुद्धीहि पुग्गलेहि यस्मा दुक्खोगाहा अलब्भनेय्यपतिट्ठा च, तस्मा गम्भीरा । एवं[3] इमिना मया वुत्तप्कारेन एत्थ एतेसु पिटकेसु एकमेकस्मि पिटके चतुब्बिधो पि गम्भीरभावो पण्डितेन वेदितब्बो ति सम्बन्धो । दुक्खेन ओगह्यन्तीति दुक्खोगाहा[4] । एकदेसेन ओगाहन्तेहि पि मन्दबुद्धीहि पतिट्ठानं[5] लद्धुं न सक्का ति आह अलब्भनेय्यपतिट्ठा चा ति । अलब्भनेय्या[6] पतिट्ठा[7] येहीति अलब्भनेय्यपतिट्ठा ।

इदानि हेतुफलादीनं[8] वसेन पि गम्भीरभावं दस्सेन्तो आह अपरो नयो ति आदि । अत्तनो फलं दहति विदहतीति धम्मो । धम्मसद्दस्स हेतुपरियायं[9] कथं विञ्ञायतीति आह वुत्तं हेतं ति आदि । हि सच्चं इति एतं वचनं भगवता वुत्तं । हेतु–अनुसारेन अरियति ·अधिगम्मति[10] सम्पापुणियतीति अत्थो । हेतुनो फलं हेतुफलं । देसियति अत्थो एतेना ति देसना, सद्दो । पकारेन ञापियति एतेना ति पञ्ञत्ति । पकारतो ञापेतीति[11] वा पञ्ञत्ति, सद्दो । यथाधम्मं यो यो अविज्जासङ्खारादिधम्मो तस्मिं धम्मे पवत्तो धम्माभिलापो अविपरीताभिलापो इति अधिप्पायो । अथवा यथाधम्मं धम्मानुरूपं पवत्तो धम्माभिलापो, अविपरीताभिलापो इति अधिप्पायो । यो यो धम्मो यथाधम्मं । धम्मस्स अनुरूपं वा यथाधम्मं । अभिलपियतीति अभिलापो, सद्दो । कम्मसाधनं । अभिपुब्ब 'लप'–कथने । धम्मे पवत्तो अभिलापो धम्माभिलापो । अथवा धम्मो अविपरीतो च सो अभिलापो चा ति धम्माभिलापो । अविरीतत्थवाचको हेत्थ धम्मसद्दो ।

---

१. एतस्मि–सी० । २. ०गाळ्हो–सी० । ३. ०ति–सी । ४. ०गाहो–सी० । ५. पतिट्ठा–सी० । ६. अलब्भनेय्यं–सी० । ७. पतिट्ठं–सी० । ८. हेतुहेतु०–सी० । ९. हेतुपरियायता–सी० । १०. अधिगमीयति–सी० । ११. ञायतीति–सी० ।

इदानि यस्मा एतेसु पिटकेसु यं यं धम्मजातं वा अत्थजातं वा यो चायं यथा यथा ञापेतब्बो अत्थो सोतूनं ञाणस्स अभिमुखो होति तथा तथा तदत्थजोतिका देसना, यो चेत्थ अविपरीतावबोधसंखातो पटिवेधो तेसं तेसं वा धम्मानं पटिविज्झितब्बो सलक्खणसंखातो अविपरीतसभावो—सब्बं पेतं अनुपचितकुसलसंभारेहि दुप्पञ्ञेहि, ससादीहि विय महासमुद्दो, दुक्खोगाळ्हं अलब्भनेय्यपतिट्ठं च, तस्मा गंभीरं। एवं पि एकमेकस्मि एत्थ चतुब्बिधो पि गंभीरभावो वेदितब्बो।

अनुलोम''प''''वसेन वा[1] वचनस्स[1] कथनं, देसना ति सम्बन्धो। कथियति सद्दो एतेना ति कथनं, चित्तुप्पादो।

इदानि पटिवेधं निद्दिसन्तो आह पटिवेधो ति अभिसमयो ति। पटिविज्झतीति पटिवेधो, ञाणं। पटिविज्झति (३३–सीं०) एतेना ति वा पटिवेधो। अभिसमेतीति अभिसमयो। अभिसमेति एतेना ति वा अभिसमयो। सम्पुब्ब 'इ'–गतियं[2]।

इदानि अभिसमयं पभेदतो पकारतो आरम्मणतो सभावतो च पाकटं कातुं सो च लोकियलोकुत्तरो ति आदिमाह। लोकियलोकुत्तरो ति पभेदं दस्सेति। विसयतो असम्मोहतो ति पदद्वयं अवबोधो ति पदे ततियाविसेसनं। अत्थानुरूपं धम्मेसू ति फलानुरूपं कारणेसु। धम्मानुरूपं अत्थेसू ति कारणानुरूपं फलेसु। पञ्ञत्तिपथानुरूपं (२८-म०) पञ्ञत्तीसू ति पण्णत्तिया वुच्चमानधम्मानुरूपं पञ्ञत्तीसु। तत्थ तत्था ति तस्मिं तस्मिं ठाने। सलक्खणसङ्खातो ति अत्तनो लक्खणं इति कथितो। अविरीतसभावो पटिवेधो ति सम्बन्धो। पटिविज्झियतीति पटिवेधो। कम्मस्साधनं।

एतेसु पिटकेसु यं यं धम्मजातं कारणं[3] यं यं अत्थजातं वा फलं यथा यथा येन येन पकारेन भगवता ञापेतब्बो अत्थो सोतूनं ञाणस्स अभिमुखो होति, तथा तथा तेन तेन पकारेन तदत्थजोतिका तस्स अत्थस्स पकासका या चायं देसना। एत्था ति[4] पिटकागमेसु[4], धम्मत्थदेसनासु अविपरीतावबोधसङ्खातो[5] यो च पटिवेधो तेसं तेसं''''प'''' सङ्खातो यो च अविपरीतसभावो, सब्बम्पि[6] एतं धम्मादिकं महासमुद्दो ससादीहि सत्तेहि दुक्खोगाहो विय अनुपचितकुसलसम्भारेहि दुप्पञ्ञेहि पुग्गलेहि यस्मा दुक्खोगाहं अलब्भनेय्यपतिट्ठञ्च, तस्मा गम्भीरं[7]। एवम्पि इमिना पकारेन पि एत्थ एतेसु तीसु पिटकेसु एकमेकस्मि पिटके चतुब्बिधो पि गम्भीरभावो इदानि पिटके[8] पण्डितेन वेदितब्बो ति सम्बन्धो। एवम्पीति पिसद्दो पुब्बे वुत्तप्पकारन्तरं सम्पिण्डेति।

१–१. वाचनस्स–म०। २. अभिसम्पुब्ब०–सी०। ३. नत्थि–सी०। ४–४. एत्थ तं तं पिटकेसु इमेसु–सी०। ५. ०बोधन०–सी०। ६. सब्बन्ति–सी०। ७. नत्थि–सी०। ८. नत्थि–सी०।

एत्तावता च

देसना-सासन-कथाभेदं तेसु यथारहं ।
सिक्खापहानगंभीरभावं च परिदीपये ॥

इति अयं गाथा वुत्तत्था होति ।

परियत्तिभेदं संपत्तिं विपत्तिं चापि यं यहिं ।
पापुणाति यथा भिक्खु तं पि सब्बं विभावये ति ॥

एत्थ पन तीसु पिटकेसु तिविधो परियत्तिभेदो दट्ठब्बो । तिस्सो हि परियत्तियो—अलगद्दूपमा निस्सरणत्था भण्डागारिकपरियत्ती ति ।

तत्थ या दुग्गहीता उपारंभादिहेतुपरियापुटा अयं अलगद्दूपमा । यं संधाय वुत्तं—"सेय्यथा पि भिक्खवे पुरिसो अलगद्दत्थिको अलगद्दगवेसी अलगद्दपरियेसनं चरमानो, सो पस्सेय्य महन्तं अलगद्दं, तमेनं भोगे वा नंगट्ठे वा गण्हेय्य, तस्स सो अलगद्दो पटिपरिवत्तित्वा हत्थे वा बाहाय वा अञ्ञतरस्मिं वा अंगपच्चंगे डसेय्य, सो ततो निदानं मरणं वा निगच्छेय्य मरणमत्तं वा दुक्खं । तं किस्स हेतु ? दुग्गहितत्ता

एत्तावता चा ति आदि निगमनं । वुत्तो वण्णितो अत्थो अस्सा ति वुत्तत्था ।

इति एत्थ पन गाथायं विनिच्छयो पण्डितेन वेदितब्बो ति योजना । परियत्तिभेदो ति परियापुणनप्पकारो[1] । अथवा परियापुणितब्बा ति परियत्ति, पाळि[2] । परियत्तिया भेदो परियत्तिभेदो । अलं जीवितहरणे समत्थो गदो[3] विसं अस्सा ति अलगद्द । अलगद्द[4] उपमा एतिस्सा ति अलगद्दूपमा । मज्झे लोपी । वट्टदुक्खतो निस्सरणं अत्थो (३४–सी०) पयोजनं एतिस्सा ति निस्सरणत्था ।

तत्था ति तासु तीसु परियत्तीसु या परियत्ति दुग्गहिता दुट्ठु गहिता । दुग्गहितभावं ञापेन्तो आह उपारम्भादिहेतुपरियापुटा ति । उपगन्त्वा परेसं चित्तस्स आरम्भनं विकोपनं उपारम्भो, परेसं निन्दित्वा निग्गण्हनं ति अत्थो । यं सन्धाया ति यं परियत्तिदुग्गहणं सन्धाय ।

सेय्यथा पि....प....धम्मानं ति वचनं अलगद्दसुत्ते भगवता । अलगद्दत्थिको ति आसीविसत्थिको । भोगे ति सरीरे । तं डंसनं[5] कारणं । एतस्सा[6] ति ततो निदानं । पुरिमपदे पच्चत्ते निस्सकवचनं[7] । तस्स अलोपो । मरणमत्तं ति मरणस्स[8] पमाणं[8] । तं किस्स हेतू ति हत्थादीसु डंसनं तंनिदानं मरणादि-उपगमनञ्च किस्स हेतु केन कारणेन होति । अथवा तं ति निपात-(२९–म०) मत्तं ।

---

१. परियापुण०–म० । २. नत्थि–सी० । ३. गद्दो–सी० । ४. अलगद्दगहणं–सी० । ५. ०निदानं तं–सी० । ६. एतिस्सा–सी० । ७. निस्सक्क०–सी० । ८-८. मरणासन्नं–सी० ।

भिक्खवे अलगद्दस्स । एवमेव खो भिक्खवे इधेकच्चे मोघपुरिसा धम्मं परियापुणन्ति सुत्तं....प०....वेदल्लं, ते तं धम्मं परियापुणित्वा तेसं धम्मानं पञ्ञाय अत्थं न उपपरिक्खन्ति, तेसं ते धम्मा पञ्ञाय अत्थं अनुपपरिक्खतं न निज्झानं खमन्ति, ते उपारंभानिसंसा चेव धम्मं परियापुणन्ति इतिवादप्पमोक्खानिसंसा च । यस्स च'-त्थाय धम्मं परियापुणन्ति तं च' स्स अत्थं नानुभोन्ति । तेसं ते धम्मा दुग्गहीता दीघरत्तं अहिताय दुक्खाय संवत्तन्ति । तं किस्स हेतु ? दुग्गहितत्ता भिक्खवे धम्मानं" [म० नि० १.१७८] ति ।

या पन सुग्गहीता सीलक्खन्धादिपारिपूरिं येव आकंखमानेन परियापुटा न उपारंभादिहेतु, अयं निस्सरणत्था । यं सन्धाय वुत्तं—"तेसं ते धम्मा सुग्गहीता दीघरत्तं हिताय सुखाय संवत्तन्ति । तं किस्स हेतु ? सुग्गहीतत्ता भिक्खवे धम्मानं" [म० नि० १.१७९] ति ।

इध सासने धम्मं पाळिधम्मं परियाणुणन्ति उग्गण्हन्ति । अनुपपरिक्खतं ति अनुपपरिक्खन्तानं । ते उपारम्भानिसंसा चेवा ति ते परेसं वादे दोसारोपनानिसंसा हुत्वा परियापुणन्ति[1] । इति[2] वादस्स पमोक्खो इतिवादप्पमोक्खो[3] । इतिवादप्पमोक्खो[4] आनिसंसो[5] एतेसं ति[5] इतिवादप्पमोक्खानिसंसा[6] । तंतंवादप्पमोचनानिसंसा हुत्वा ति अत्थो ।

उपारम्भानिसंसा चेव इतिवादप्पमोक्खानिसंसा चा ति पदद्वयं ते ति पदस्स विसेसनं । ते ति पदं परियायुणन्तीति पदे कत्ता । यस्स च सीलादिपरिपूरणस्स[7] अनुपादा विमोक्खस्स वा अत्थाय इमस्मिं सासने कुलपुत्ता धम्मं ञायेन[8] परियापुणन्ति अस्स धम्मस्स तं[9] सीलपरिपूरणादिसङ्खातं तञ्च अत्थं दुग्गहितगाहिनो एते पुग्गला नानुभोन्ति न विन्दन्ति । तं किस्स हेतू ति ? तं[10] यथावुत्तस्स अत्थस्स अनभिसम्भुणनं तेसं धम्मानं अहिताय दुक्खाय संवत्तनञ्च ।

या पन परियत्ति सुग्गहिता सीलक्खन्धादिपारिपूरिं येव आकङ्खमानेन पुग्गलेन परियापुटा[11] उग्गहिता, न उपारम्भादिहेतुपरियापुटा, अयं[12] परियत्ति निस्सरणत्था[13] । (३५–सी०) यं परियत्तिसुग्गहणं[14] सन्धाय....प....धम्मानं ति वचनं अलगद्दसुत्ते भगवता वुत्तं । सीलक्खन्धादीति

---

१. पुणन्तीति अत्थो–सी० । २. नत्थि–सी० । ३. वादप्पमोक्खो–सी० । ४. इति एवं एताय परियत्तिया वादप्पमोक्खो०–सी० । ५–५. इतिवादप्पमोक्खो आनिसंसो येसं ते–सी० । ६. इतो परं–अथवा घोसो वादो इतिवादो, इतिवादस्स पमोक्खो इतिवादप्पमोक्खो, इतिवादप्पमोक्खो आनिसंसो एतेसं ति इतिवादप्पमोक्खानिसंसा ति सीहळपोत्थके अधिको पाठो । ७. परिपूरस्स–सी० । ८. ञाणेन–सी० । ९. नत्थि–सी० । १०. ०तं–सी० । ११. ०पुता–सी० । १२. न अयं–सी० । १३. ०नाम–सी० । १४. परियत्ति०–सी० ।

यं पन परिञ्ञातक्खन्धो पहीनकिलेसो भावितमग्गो पटिविद्धाकुप्पो सच्छिकतनिरोधो खीणासवो केवलं पवेणिपालनत्थाय वंसानुरक्खणत्थाय परियापुणाति, अयं भण्डागारिकपरियत्ती ति।

विनये पन सुप्पटिपन्नो भिक्खु सीलसंपदं निस्साय तिस्सो विज्जा पापुणाति, तासं येव च तत्थ पभेदवचनतो। **सुत्ते** सुप्पटिपन्नो समाधिसंपदं निस्साय छळभिञ्ञा पापुणाति, तासं येव च तत्थ पभेदवचनतो। **अभिधम्मे** सुप्पटिपन्नो पञ्ञासंपदं निस्साय चतस्सो पटिसंभिदा पापुणाति तासं च तत्थेव पभेदवचनतो। एवमेतेसु सुप्पटिपन्नो यथाक्कमेन इमं विज्जात्तय-छळभिञ्ञा-चतुपटिसंभिदापभेदसंपत्तिं पापुणाति।

आदिसद्देन समाधिविपस्सनादीनं सङ्गहो। उपारम्भादीति आदिसद्देन मानदब्बपलासादीनं[1] सङ्गहो।

यं[2] परियत्ति ति[2] पदं परियापुणातीति पदे कम्मं। परिञ्ञातो दुक्खपरिजाननेन परिच्छिन्दितो खन्धो येन सो परिञ्ञातक्खन्धो। समुदयप्पहानेन पहीनो किलेसो येन सो पहीनकिलेसो। भावितो मग्गो येन सो भावितमग्गो। न कुप्पतीति अकुप्पं, अरहत्तफलं, पटिविद्धं अकुप्पं, येन सो पटिविद्धाकुप्पो। सच्छिकतो निरोधो येन सो सच्छिकतनिरोधो। खीणो आसवो यस्स सो खीणासवो। पवेणिपालनत्थाया ति धम्मस्स सन्ततिरक्खणत्थं। वंसानुरक्खणत्थाया ति भगवतो वंसानुरक्खणत्थं। पवेणिवंसो ति[3] वचनं अत्थतो एकं।

एवं तिस्सो परियत्तियो विभजित्वा इदानि तीसु पिटकेसु यथारहं सम्पत्तिविपत्तियो निद्धारेत्वा दस्सेन्तो आह—विनये पना ति आदि[4]। तिस्सो विज्जा ति दिब्बचक्खु-पुब्बेनिवासानुस्सति-आसवक्खयञाणानि। तासं येव चा ति चसद्देन छ-अभिञ्ञाचतुपटिसम्भिदानं विनये एकदेसेन वचनं अत्थीति ञापेति। दुतिये तासं ये व चा ति चसद्देन चतुपटिसम्भिदासुत्ते एकदेसेन वचनं अत्थीति (३०–म०) ञापेति। तासञ्चा ति चसद्देन तिविज्जाछ-अभिञ्ञानम्पि[5] अभिम्मे अत्थिभावं ञापेति। पटिसम्भिदानम्पि विनयसुत्तपिटके पभेदवचनाभावं अभिधम्मे येव सम्मा विभत्तभावञ्च दीपेतुकामो हेट्ठावुत्तनयेन अवधारणं अकत्वा तत्थेवा ति परिवत्तेत्वा अवधारणं थपेसि। तासं येव तत्थेवा ति पाठो। एवं सति तासं येव चा ति पाठो। एवं सति तासं येव चा ति एवसद्दस्स अभिधम्मे चतस्सो पटिसम्भिदा अत्थेव, न नत्थीति अधिप्पायो वेदितब्बो एतेसु पिटकेसु।

---

१. मानदिट्ठिप्पसंसादीनं–सी०। २. परियत्ति ति–म०। ३. वा ति–सी०। ४. आदिं–सी०। ५. ०अभिञ्ञापटिसम्भिदानम्पि–सी०।

विनये पन दुप्पटिपन्नो अननुञ्ञातसुखसंफस्स-अत्थरण-पापुरणादिसंफस्स-सामञ्ञतो पटिक्खित्तेसु उपादिन्नफस्सेसु अनवज्जसञ्ञी होति। वुत्तं पि हेतं—"तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि, यथा ये'मे अन्तरायिका धम्मा वुत्ता भगवता ते पटिसेवतो नालं अन्तरायाया" [म० नि० १.१७४] ति। ततो दुस्सील-भावं पापुणाति। **सुत्ते** दुप्पटिपन्नो "चत्तारो'मे भिक्खवे पुग्गला सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिं" [अं० नि० २.२१९] ति आदीसु अधिप्पायं अजानन्तो दुग्गहीतं गण्हाति। यं संधाय वुत्तं--"अत्तना दुग्गहीतेन अम्हे चेव अब्भाचिक्खति अत्तानं च खनति बहुं च अपुञ्ञं पसवती"ति। ततो मिच्छादिट्ठिं पापुणाति। **अभिधम्मे** दुप्पटि-पन्नो धम्मचिन्तं अतिधावन्तो अचिन्तेय्यानि पि चिन्तेति, ततो चित्तविक्खेपं पापुणाति। वुत्तं हेतं--"चत्तारि'मानि भिक्खवे अचिन्तेय्यानि, न चिन्तेतब्बानि, यानि चिन्तेन्तो उम्मादस्स विघातस्स भागी अस्सा' [अं० नि० २.८४] ति। एवमेतेसु

एवं सम्पत्तिं दस्सेत्वा इदानि विपत्तिं दस्सेन्तो आह विनये पन दुप्पटिपन्नो ति आदि। सुखो इट्ठो सम्फस्सो एतेसं ति सुखसम्फस्सानि। अनुञ्ञातानि सुखसम्फस्सानि अनुञ्ञा....प.... सम्फस्सानि। अत्थरणञ्च (३६-सी०) पापुरणञ्च[1] अत्थरणपापुरणानि। अनुञ्ञातसुखसम्फस्सानि एव अत्थरणपापुरणानि अनुञ्ञात....प....णानि। अनुञ्ञात....प....णानि आदीनि येसं ते अनुञ्ञात....प....णादयो। अनुञ्ञात....प....णादीनं फस्सो अनुञ्ञात....प....फस्सो। अनुञ्ञात....प....फस्सेन सामञ्ञं अनुञ्ञात....प....सामञ्ञं। उपादिन्नस्स फस्सो उपादिन्न-फस्सो। इत्थिसम्फस्सो मेथुनधम्मो ति अधिप्पायो। उपादिन्नफस्सो आदि येसं ते उपादिन्न-फस्सादयो। अनवज्जो इति सञ्ञा अनवज्जसञ्ञा, सा अस्स अत्थीति अनवज्जसञ्ञी। वुत्तम्पि चेतं ति एतं वचनं अरिट्ठेन भिक्खुना वुत्तं।

ये इमे धम्मा अन्तरायिका अन्तरायकरा इति भगवता वुत्ता, ते धम्मे पटिसेवतो पटि-सेवन्तस्स पुग्गलस्स यथा येन पकारेन ते धम्मा अन्तरायकरणत्थं[2] नालं न समत्था तथा तेन पकारेन अहं भगवता देसितं धम्मं आजानामीति सम्बन्धो। ततो अनवज्जसञ्ञिहेतुतो अतिक्कमित्वा दुस्सीलभावं पापुणातीति आदीसु पाळिपदेसेसु अयं पुग्गलदेसना वोहार-देसना,[3] न परमत्थदेसना ति भगवतो अधिप्पायं अजानन्तो[4] पुग्गलो दुग्गहितं कत्वा गण्हाति।

दुग्गहितं ति पदं क्रियाविसेसनं। यं सन्धाया ति यं दुग्गहितगाहं सन्धाय अत्तना.... प....पसवतीति वचनं भगवता वुत्तं। दुग्गहितगाही[5] अत्तना[5] अत्तनो दुग्गहितेन दुग्गहेन अह्मे चेव अब्भाचिक्खति। अत्तना ति सामि-अत्थे करणवचनं। पसवतीति पटिलभति। धम्म-

---

१. पावुरणञ्च-म० सब्बत्थ। २. अन्तरायाय अन्तराय०-सी०। ३. अयं वोहार०-सी०। ४. आजानन्तो-म०। ५-५. अत्तना दुग्गतगाही-सी०।

दुप्पटिपन्नो यथाक्कमेन इमं दुस्सीलभाव-मिच्छादिट्ठिता-चित्तविक्खेपभेदं विपत्तिं पापुणाति।

एत्तावता

परियत्तिभेदं संपत्तिं विपत्तिं चा पि यं यहिं।
पापुणाति यथा भिक्खु तं पि सब्बं विभावये ति॥

अयं पि गाथा वुत्तत्था होति। एवं नानप्पकारतो पिटकानि ञत्वा तेसं वसेन सब्बमेतं संगय्हमानं तीणि पिटकानि होन्ति।

कथं निकायतो पञ्च निकाया ति? सब्बमेव हेतं **दी**घनिकायो **म**ज्झिमनिकायो **सं**युत्तनिकायो **अं**गुत्तरनिकायो **खु**द्दकनिकायो ति पञ्चप्पभेदो होति।

तत्थ कतमो **दी**घनिकायो? तिवग्ग-संगहानि ब्रह्मजालादीनि चतुत्तिंस सुत्तानि।

चतुत्तिंसेव सुत्तन्ता तिवग्गो यस्स संगहो।
एस **दी**घनिकायो ति पठमो अनुलोमिको॥

कस्मा पनेस **दी**घनिकायो ति वुच्चति? दीघप्पमाणानं सुत्तानं समूहतो च निवासतो च। समूहनिवासा हि निकायो ति पवुच्चन्ति। "नाहं भिक्खवे अञ्ञं एकनिकायं पि समनुपस्सामि एवं-चित्तं यथयिदं भिक्खवे तिरच्छानगता पाणा, **पो**णिकनिकायो, **चि**क्खल्लिकनिकायो" ति। एवमादीहि चेत्थ साधकानि सासनतो लोकतो च। एवं सेसानं पि निकायभावे वचनत्थो वेदितब्बो।

चिन्तं धम्मसभावविचारं अतिधावन्तो अतिक्कमित्वा पवत्तमानो पुग्गलो। चत्तारीति बुद्धविसय-इद्धिविसय-कम्मविसय-लोकविसयसङ्खातानि चत्तारि।

तेसं पिटकानं वसेन सब्बम्पि बुद्धवचनं पण्डितेन (३१–म०) सङ्गय्हमानं।

पञ्चनिकाया कथं कतमा इति पुच्छा सिया। हि सच्चं, सब्बमेव एतं बुद्धवचनं इति-पभेदं[1]।

तत्था ति तेसु पञ्चसु-निकायेसु। सीलक्खन्धवग्ग-महावग्ग-पाथियवग्गसङ्खातेहि[2] तीहि वग्गेहि सङ्गहो एतेसं ति तिवग्गसङ्गहानि[3]। यस्स निकायस्स सुत्तन्ता चतुत्तिंसेव, यस्स[4] (३७–सी०) निकायस्स[4] सङ्गहो तिवग्गो एसो निकायो पठमो दीघनिकायो ति दीघनिकायो नाम अनुलोमिको अन्वत्थनामो। तयो वग्गा अस्स सङ्गहस्सा ति तिवग्गो। अत्थस्स अनुलोमनं अनुलोमो। अनुलोमे नियुत्तो अनुलोमिको। भिक्खवे यथयिदं इमे तिरच्छानगता पाणा यथा एवमादीनि उदाहरणानि एत्थ निकायसद्दस्स समूहनिवासानं वाचकभावे सासनतो[5] वोहारतो[5] च साधकानि पमाणानि।

चित्तं ति पदं एकनिकायम्पीति पदस्स विसेसनं। एवं ति इमिना मया वुत्तप्पकारेन सेसानम्पि चतुन्नं निकायानं।

---

१. पञ्चप्पभेदं होति–सी०। २. ०पाटिकवग्ग०–सी०। ३. ०सङ्गहा–म०। ४–४. निकायस्स–सी०। ५–५. सासनवोहारतो च लोकवोहारभावतो–सी०।

कतमो **म**ज्झिमनिकायो ? मज्झिमप्पमाणानि पंचदस-वग्गसंगहानि **मू**लपरियाय-सुत्तादीनि दियड्ढसतं द्वे च सुत्तानि ।

दियड्ढसतसुत्तन्ता द्वे च सुत्तानि यत्थ सो ।
निकायो **म**ज्झिमो पञ्च-दसवग्गपरिग्गहो ॥

कतमो **सं**युत्तनिकायो ? **दे**वतासंयुत्तादिवसेन ठितानि **ओ**घतरणादीनि सत्त सुत्तसहस्सानि सत्तसुत्तसतानि द्वासट्ठि चेव सुत्तानि ।

सत्त सुत्तसहस्सानि सत्त सुत्तसतानि च ।
द्वासट्ठि चेव सुत्तन्ता एसो **सं**युत्तसंगहो ॥

कतमो **अं**गुत्तरनिकायो ? एकेक-अंगातिरेकवसेन ठितानि **चि**त्तपरियादानादीनि नव सुत्तसहस्सानि पञ्च सुत्तसतानि सत्तपञ्ञासं च सुत्तानि ।

नव सुत्तसहस्सानि पञ्च सुत्तसतानि च ।
सत्तपञ्ञाससुत्तानि संखा **अं**गुत्तरे अयं ॥

कतमो **खु**द्दकनिकायो ? सकलं **वि**नयपिटकं, **अ**भिधम्मपिटकं, **खु**द्दकपाठ-धम्म-पदादयो च पुब्बे दस्सिता पञ्चदसप्पभेदा; ठपेत्वा चत्तारो निकाये अवसेसं बुद्ध-वचनं ति ।

ठपेत्वा चतुरो पेते निकाये **दी**घ-आदिके ।
तदञ्ञं बुद्धवचनं निकायो **खु**द्दको मतो ति ॥

कथं अंगवसेन नव अंगानी ति ? सब्बमेव हि'दं 'सुत्तं गेय्यं वेय्याकरणं गाथा उदानं इतिवुत्तकं जातकं अब्भुतधम्मं वेदल्लं' ति नवङ्गप्पभेदं होति ।

मूलपरियायवग्गादीहि पञ्चदसवग्गेहि सङ्गहो एतेसं ति पञ्चदसवग्गसङ्गहानि । यत्थ यस्मिं निकाये दियड्ढसतं सुत्तन्ता द्वे च सुत्तानि होन्ति, सो निकायो मज्झिमो नाम । पञ्च-दसवग्गपरिग्गहो पञ्चदसवग्गेहि सङ्गहितो । अड्ढेन दुतियं दियड्ढं । एकसतं पञ्ञाससुत्तानि चा ति अत्थो ।

संयुत्तसङ्गहो ति संयुत्तनिकायस्स सङ्गहो ।

सङ्ख्या अङ्गुत्तरे अयं ति इति अङ्गुत्तरनिकाये अयं सुत्तगणना ।

पुब्बे ति सुत्तन्तपिटकनिद्देसे । वुत्तमेव पकारन्तरेन सङ्खिपित्वा दस्सेतुं थपेत्वा चत्तारो निकाये अवसेसं बुद्धवचनं ति वुत्तं । चतुरो पि दीघमादिके एते पि निकाये थपेत्वा तदञ्ञं तेहि चतूहि निकायेहि अञ्ञं बुद्धवचनं इति खुद्दको निकायो पण्डितेन मतो । थपेत्वा ति पदं[1] मतो ति पदे पुब्बक्रिया[2] ।

कथं नवङ्गानीति पुच्छा सिया । हि सच्चं, सब्बमेव इदं बुद्धवचनं इति नवप्पभेदं होति ।

---

१. नत्थि–म० । २. पुब्बकाल ०–सी० ।

तत्थ उभतो**विभंग-निद्देस-खन्धक-परिवारा** सुत्तनिपाते **मंगलसुत्त-रतनसुत्त-नालकसुत्त-तुवट्टकसुत्तादीनि** अञ्ञं पि च सुत्तन्तनामकं **तथागतवचनं** सुत्तं ति वेदितब्बं। सब्बं पि सगाथकं सुत्तं गेय्यं ति वेदितब्बं। विसेसेन **संयुत्ते** सकलो पि **सगाथकवग्गो**। सकलं पि **अभिधम्मपिटकं**, निग्गाथकसुत्तं, यं च अञ्ञं अट्ठहि अंगेहि असंगहितं बुद्धवचनं, तं वेय्याकरणं ति वेदितब्बं। **धम्मपद-थेरगाथा-थेरीगाथा सुत्तनिपाते** नो-सुत्तनामिका सुद्धिकगाथा च गाथा ति वेदितब्बा। सोमनस्सञाणमयिकगाथापटिसंयुत्ता द्वे-असीति सुत्तन्ता उदानं ति वेदितब्बा। 'वुत्तं हेतं भगवता'ति आदिनयप्पवत्ता दसुत्तरसतसुत्तन्ता इतिवुत्तकं ति वेदितब्बं। **अपण्णकजातकादीनि** पञ्ञासाधिकानि पञ्च जातकसतानि जातकं ति वेदितब्बं। "चत्तारो'मे भिक्खवे अच्छरिया अब्भुतधम्मा **आनन्दे**" [अं० नि० २. १३९] ति आदिनयप्पवत्ता सब्बे पि अच्छरियब्भुतधम्मपटिसंयुत्ता सुत्तन्ता अब्भुतधम्मं ति वेदितब्बा। **चुल्लवेदल्ल-महावेदल्ल-सम्मादिट्ठि-सक्कपञ्ह-संखारभाजनिय-महापुण्णमसुत्तादयो** सब्बे पि वेदं च तुट्ठिं च लद्धा लद्धा पुच्छितसुत्तन्ता वेदल्लं ति वेदितब्बा। एवमेतं अंगतो नव अंगानि।

कथं धम्मक्खन्धतो चतुरासीति धम्मक्खन्धसहस्सानी ति? सब्बमेव हि'दं बुद्धवचनं

> द्वासीतिं बुद्धतो गण्हिं द्वे सहस्सानि भिक्खुतो।
> चतुरासीति सहस्सानि ये'मे धम्मा पवत्तिनो ति॥

तत्था ति तेसु नवसु अङ्गेसु संयुत्तके संयुत्तनिकाये सकलो पि सगाथावग्गो गेय्यं ति वेदितब्बो ति सम्बन्धो। सुत्तं इति नामं सुत्तनामं; नत्थि सुत्तनामं एतस्सा ति नोसुत्तनामिका। सोमनस्सेन सम्पयुत्तं ञाणं सोमनस्सञाणं। सोमनस्सञाणेन पवत्ता सोमनस्सञाणमयिका। सोमनस्सञाणमयिका एव गाथा सोमन....प....गाथा। सोमनस्स....प....गाथाय पटिसंयुत्ता पटिबद्धा सोमनस्स....प....युत्ता। उदाहरियतीति उदानं[1] पीतिवेगसमुट्ठापितं वचनं। धम्मसंवेगवसप्पवत्तम्पि[2] वचनं (३८–सी०) उदानं (३२–म०) नाम। जातं[3] भगवतो पुब्बचरितं काति कथेति पकासेतीति[4] जातकं। जातपुब्बो 'का'–धातु-कथने। भिक्खवे चत्तारो इमे अच्छरिया अब्भुतधम्मा[5] आनन्दे होन्ति इति आदिनयप्पवत्ता अब्भुतधम्मं ति सन्निट्ठानं पण्डितेन वेदितब्बं। चुल्लवेदल्लं[6]....प....सब्बे पि वेदं च ञाणं तुट्ठिं च पीतिसोमनस्सं लद्धा लद्धा लभित्वा लभित्वा पुच्छितसुत्तन्ता वेदल्लं ति पण्डितेन वेदितब्बं[6]।

एवं अङ्गवसेन बुद्धवचनं विभजित्वा इदानि धम्मक्खन्धवसेन विभजन्तो आह कथं धम्मक्खन्धवसेना ति आदि। धम्मक्खन्धवसेना ति धम्मरासिवसेन। हि सच्चं, सब्बमेव[7] इदं

---

१. उदाहरणं–म०। २. धम्मसंवेगवसा ०–सी०। ३. ०भूतं–सी०। ४. कमेन पका०–सी०। ५. अभूतधम्मा–सी०। ६–६. म० पोत्थके नत्थायं पाठो। ७. इदमेव–म०।

एवं परिदीपितधम्मक्खन्धवसेन चतुरासीतिसहस्सप्पभेदं होति। तत्थ एकानुसंधिकं सुत्तं एको धम्मक्खन्धो। यं अनेकानुसंधिकं तत्थ अनुसन्धिवसेन धम्मक्खन्धगणना। गाथाबन्धेसु पञ्हापुच्छनं एको धम्मक्खन्धो, विस्सज्जनं एको। अभिधम्मे एकमेकं तिकदुकभाजनं एकमेकं च चित्तवारभाजनं एको धम्मक्खन्धो। विनये अत्थि वत्थु, अत्थि मातिका, अत्थि पदभाजनियं, अत्थि आपत्ति, अत्थि अनापत्ति, अत्थि अन्तरापत्ति, अत्थि तिकच्छेदो। तत्थ एकमेको कोट्ठासो एकमेको धम्मक्खन्धो ति वेदितब्बो। एवं धम्मक्खन्धतो चतुरासीति धम्मक्खन्धसहस्सानि।

बुद्धवचनं होतीति सम्बन्धो। अहं बुद्धतो द्वासीति सहस्सानि[1], भिक्खुतो धम्मसेनापति–आदीनं भिक्खूनं सन्तिके द्वे सहस्सानि गण्हिं। ये धम्मा मे मया पवत्तिनो पवत्तमाना वाचुग्गता, ते धम्मा चतुरासीति सहस्सानि। अथवा ये इमे धम्मा भगवतो भिक्खूनञ्च पवत्तिनो तेसं धम्मानं अहं द्वासीति सहस्सानि बुद्धतो गण्हिं, द्वे सहस्सानि भिक्खुतो गण्हिं, इति एवं चतुरासीति धम्मक्खन्धसहस्सानि।

तत्था ति तेसु चतुरासीतिधम्मक्खन्धसहस्सेसु। एकानुसन्धिकं सुत्तं सतिपट्ठानादि, अनेकानुसन्धिकं नानानुसन्धिकं परिनिब्बानसुत्तादि। तत्था ति तस्मिं सुत्ते। पञ्हापुच्छनं ति ञातुं इच्छितस्स अत्थस्स पुच्छनं। निक्खेपकण्ड–अट्ठकथाकण्डं तिकदुकभाजनं नाम, तस्मा कुसला धम्मा अकुसला धम्मा अब्याकता धम्मा ति कुसलतिकस्स विभजनवसेन यं वुत्तं निक्खेपकण्डे कतमे धम्मा कुसला? तीणि कुसलमूलानि–अलोभो अदोसो अमोहो, तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो सञ्ञाक्खन्धो सङ्खारक्खन्धो विञ्ञाणक्खन्धो, तंसमुट्ठानं कायकम्मं वचीकम्मं मनोकम्मं, इमे धम्मा कुसला। कतमे धम्मा अकुसला? तीणि अकुसलमूलानि–लोभो दोसो मोहो, तदेकट्ठा च किलेसा, तंसम्पयुत्तो वेदनाक्खन्धो... प... मनोकम्मं इमे धम्मा अकुसला। कतमे धम्मा अब्याकता? कुसलाकुसलानं धम्मानं विपाका कामावचरा रूपावचरा अरूपावचरा अपरियापन्ना, वेदनाक्खन्धो... प... विञ्ञाणक्खन्धो, ये च[२] (३९–सी०) धम्मा क्रिया नेव कुसला नाकुसला न च विपाका[3], सब्बं रूपं असङ्खता च धातु, इमे धम्मा अब्याकता ति अयं एको धम्मक्खन्धो। एवं सेसत्तिकानम्पि[४] एकेकस्स[५] विभजनं[६] एकेको धम्मक्खन्धो ति वेदितब्बं। हेतुधम्मा ति हेतुदुकस्स विभजनवसेन यं वुत्तं कतमे धम्मा हेतू? तयो कुसलहेतू, तयो अकुसलहेतू, तयो अब्याकतहेतू ति अयं एको धम्मक्खन्धो। एवं सेसदुकानम्पि एकेकस्स विभजनं (३३–म०) एकेको धम्मक्खन्धो ति वेदितब्बो[७]।

अट्ठकथाकण्डे कतमे धम्मा कुसला? चतूसु भूमिसु कुसलं[८], इमे धम्मा कुसला। कतमे धम्मा अकुसला? द्वादसाकुसलचित्तुप्पादा, इमे धम्मा अकुसला। कतमे धम्मा अब्याकता?

---

१. ०गण्हिं–सी०। २. नत्थि–सी०। ३. कम्मविपाका–सी०। ४. सेसदुक्कानम्पि–सी०; दुक्कसब्बत्थ। ५. ०दुक्कस्स–सी०। ६. विभज्जनं–सी०। ७. वेदितब्बं–सी०। ८. कुसला–सी०।

एवमेतं सब्बं पि **बुद्धवचनं** पंचसतिकसंगीतिकाले संगायन्तेन **महाकस्सपमुखेन** वसीगणेन इदं पठमबुद्धवचनं, इदं मज्झिमबुद्धवचनं, इदं पच्छिमबुद्धवचनं, इदं **विनयपिटकं**, इदं **सुत्तन्तपिटकं** इदं **अभिधम्मपिटकं**, अयं **दीघनिकायो**....प०....अयं

चतूसु भूमिसु विपाको, तीसु भूमिसु क्रियाब्याकतं रूपञ्च निब्बानञ्च[१], इमे धम्मा अब्याकता ति एवमादिना कुसलत्तिकादिविभजनवसेन पवत्तेसु एकेकस्स तिकस्स भाजनं एको[२] धम्मक्खन्धो।

कतमे धम्मा हेतू ? तयो कुसलहेतू, तयो अकुसलहेतू, तयो अब्याकतहेतू ति आदिनयप्पवत्तेसु दुकभाजनेसु एकेकं दुकभाजनं एकेको धम्मक्खन्धो।

एकेकञ्च चित्तवारभाजनं ति एत्थ यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं ञाणसम्पयुत्तं रूपारम्मणं वा....प....तस्मिं समये फस्सो होति....प....अविक्खेपो होतीति एवमादिनयप्पवत्ते चित्तुप्पादकण्डे एकमेकं चित्तवारभाजनं एकेको धम्मक्खन्धो ति वेदितब्बो[३]। एको धम्मक्खन्धो ति एकेको धम्मक्खन्धो ति अत्थो।

अत्थि वत्थू ति आदीसु वत्थू नाम सुदिन्नकण्डादि। मातिका ति यो पन भिक्खु भिक्खूनं सिक्खासाजीव मापन्नो ति आदि सिक्खापदं। पदभाजनीयं ति यो पना ति यो यादिसो ति आदि। अनापत्तीति अनापत्ति-अजानन्तस्स अस्सादियन्तस्स उम्मत्तकस्स खित्तचित्तस्स वेदनट्टस्स आदिकम्मिकस्सा ति आदि। निस्सग्गियं[४] पाचित्तियं दसाहातिक्कन्ते वेमत्तिको निस्सग्गियं पाचित्तियं अनापत्तिवारो। अन्तरापत्तीति पटिलातं पटिदुक्कटा ति एवमादिना सिक्खापदन्तरेसु पञ्ञत्ता आपत्ति।[४] तिकच्छेदो ति दसाहातिकन्ते (४०-सी०) अतिक्कन्तसञ्ञी निस्सग्गियं पाचित्तियं, दसाहातिक्कन्ते अनतिक्कन्तसञ्ञी निस्सग्गियं पाचित्तियं ति एवमादिनयप्पवत्तो तिकपरिच्छेदो। तत्था ति तेसु वत्थु-आदीसु।

बुद्धवचनं ति पदं सङ्गीतं ति पदे कम्मं। वसीगणेना ति पदं सङ्गीतं ति पदे कत्ता। न केवलं इममेव यथावुत्तप्पभेदं ववत्थपेत्वा सङ्गीतं; अथ खो अञ्ञम्पीति दस्सेन्तो आह न केवलञ्च इममेवा ति आदि। केवलञ्च इममेव पठमबुद्धवचनादिकं ववत्थपेत्वा व सङ्गीतं न, अञ्ञम्पि सङ्गहप्पभेदं ववत्थपेत्वा व सङ्गीतं ति सम्बन्धो। पठमपाराजिकादीसु वुत्ता—

मक्कटी वज्जिपुत्ता च गिहि नग्गो च तित्थिया।
दारिकुप्पलवण्णा च ब्यञ्जनेहि[५] परे दुवे[५] ॥ इति ॥

आदिगाथायो उदानसङ्गहो[६] नाम। उदानेन सङ्खेपेन विनीतवत्थु-आदीनं सङ्गहो उदानसङ्गहो। सीलक्खन्धवग्ग-मूलपरियायवग्गादिवसेन सङ्गहो (३४-म०) वग्गसङ्गहो। उत्तरिमनुस्सधम्म....प....नीलचक्कपेय्यालादिववत्थापनवसेन सङ्गहो पेय्यालसङ्गहो। अङ्गुत्तरनिकायादीसु[७] एकनिपातादिसङ्गहो। संयुत्तनिकाये देवतासंयुत्तादिवसेन संयुत्तसङ्गहो। मज्झिमनिकायादीसु मूलपण्णासकादिवसेन पण्णासकसङ्गहो[७]। अस्स बुद्धवचनस्स सङ्गीतिपरियोसाने च साधुकारं ददमाना विया ति सम्बन्धो।

---

१. निब्बाणञ्च—सी० सब्बत्थ। २. एकेको—सी०। ३. गहेतब्बं—सी०। ४-४. नत्थि-म०। ५-५. ब्यञ्जने अपरे दुवे—सी०। ६. उद्दान०—सी० सब्बत्थ। ७-७. म० पोत्थके एत्तको पाठो न दिस्सति।

खुद्दकनिकायो, इमानि सुत्तादीनि नवंगानि, इमानि चतुरासीति-धम्मक्खन्धसहस्सानी ति इमं पभेदं ववत्थपेत्वा व संगीतं। न केवलं च इममेव अञ्ञं पि उद्दानसंगह-वग्ग-संगह-पेय्यालसंगह-एकनिपात-दुकनिपातादिनिपातसंगह-संयुत्तसंगह-पञ्ञाससंगहादिमनेकविधं, तीसु पिटकेसु सन्दिस्समानं संगहप्पभेदं ववत्थपेत्वा व सत्तहि मासेहि संगीतं। संगीतिपरियोसाने च'स्स इदं महाकस्सपत्थेरेन दसबलस्स सासनं पंचवस्ससहस्सपरिमाणकालं पवत्तनसमत्थं कतं ति संजातप्पमोदा साधुकारं विय ददमाना अयं महापठवी उदकपरियन्तं कत्वा अनेकप्पकारं संकम्पि संपकम्पि संपवेधि। अनेकानि च अच्छरियानि पातुरहेसुं।

एवं सङ्गीते पनेत्थ अयं अभिधम्मो पिटकतो अभिधम्मपिटकं, निकायतो खुद्दकनिकायो, अंगतो वेय्याकरणं, धम्मक्खन्धतो कतिपयानि धम्मक्खन्धसहस्सानि होति। तं धारयन्तेसु भिक्खूसु पुब्बे एको भिक्खु सब्बसामायिकपरिसाय निसीदित्वा अभिधम्मतो सुत्तं आहरित्वा धम्मं कथेन्तो "रूपक्खन्धो अब्याकतो, चत्तारो खन्धा सिया कुसला सिया अकुसला सिया अब्याकता; दसायतना अब्याकता, द्वे आयतनानि सिया कुसला सिया अकुसला सिया अब्याकता; सोळसधातुयो अब्याकता,

---

महाकस्सपत्थेरेना ति पदं कतं ति पदे कत्ता। पवत्तनसमत्थं ति पदं सासनं ति पदस्स विसेसनं। सङ्कम्पीति उद्धं[1] गच्छन्ती सुट्ठु कम्पि। सम्पकम्पीति उद्धमधो च गच्छन्ती सम्पकम्पि। सम्पवेधीति चतूसु दिसासु गच्छन्ती सुट्ठु पवेधि। अच्छरं पहरितुं युत्तानि अच्छरियानि पुप्फवस्सनचेलुक्खेपादीनि।

एत्था ति तस्मिं[2] बुद्धवचने, निद्धारणे भुम्मवचनं। अभिधम्मनयेन[3] बुद्धभासितभावं साधेतुं वत्थु[4] दस्सेन्तो तं धारयन्तेसु भिक्खूसू ति आदिमाह।[5] भिक्खूसु सकवादिभिक्खु[6] तं अभिधम्मं। सब्बे समया सब्बसमया। सब्बसमये परियापुणातीति सब्बसामयिका। सब्बसामयिका च सा परिसा चा ति सब्बसामयिकपरिसा, पञ्चनिकाये परियापुणन्तपरिसा ति अत्थो।

(४१–सी०) दसायतनानीति मनायतनधम्मायतनवज्जितानि रूपादीनि दसायतनानि। द्वे आयतनानीति मनायतन-धम्मायतनानि। सोळसधातुयो ति चक्खुधातु, सोतधातु, घाणधातु, जिह्वाधातु, कायधातु, रूप-सद्द-गन्ध-रस-फोट्ठब्बधातु, चक्खुविञ्ञाणधातु, सोत-घान-जिव्हा-कायविञ्ञाणधातु, मनोधातु। द्वे धातुयो ति धम्मधातु, मनोविञ्ञाणधातु। दसिन्द्रियानीति चक्खुन्द्रियं, सोत-घान-जिव्हा-कायिन्द्रियं, इत्थिन्द्रियं, पुरिसिन्द्रियं, सुखिन्द्रियं, दुक्खिन्द्रियं, अञ्ञाताविन्द्रियं। चत्तारि इन्द्रियानीति सद्धिन्द्रियं, सतिन्द्रियं, पञ्ञिन्द्रियं,

---

१. उद्धं उद्धं–सी०। २. एकस्मिं–सी०। ३. अभिधम्मस्स विनयेन–म०। ४. नत्थि–सी०। ५. ०तं अभिधम्मं–सी०। पाठो। ६. ० भिक्खूसु–सी०।

द्वे धातुयो सिया कुसला सिया अकुसला सिया अब्याकता; समुदयसच्चं अकुसलं, मग्गसच्चं कुसलं, निरोधसच्चं अब्याकतं, दुक्खसच्चं सिया कुसलं सिया अकुसलं सिया अब्याकतं; दसिन्द्रिया अब्याकता, सोमनस्सिन्द्रियं अकुसलं, अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं कुसलं, चत्तारिन्द्रियानि सिया कुसला सिया अब्याकता, छ इन्द्रियानि सिया कुसला सिया अकुसला सिया अब्याकता'' ति धम्मकथं कथेसि।

तस्मिं ठाने एको भिक्खु निसिन्नो 'धम्मकथिक त्वं सिनेरुं परिक्खिपन्तो विय दीघसुत्तं आहरसि, किं सुत्तं नामेतं' ति आह। 'अभिधम्मसुत्तं नाम आवुसो' ति। 'अभिधम्मसुत्तं कस्मा आहरसि ? किं अञ्ञं बुद्धभासितं सुत्तं आहरितुं न वट्टती' ति ? 'अभिधम्मो केन भासितो' ति ? 'न एसो बुद्धभासितो' ति। 'किं पन ते आवुसो

अञ्ञिन्द्रियं। छ इन्द्रियानीति जीवितिन्द्रियं, मनिन्द्रियं, सोमनस्सिन्द्रियं, उपेक्खिन्द्रियं, समाधिन्द्रियं।

एको भिक्खू ति परवादी भिक्खु। अभिधम्मसुत्तं नाम आवुसो ति परवादिं सकवादी आह। अभिधम्मसुत्तं....प....न वट्टति ? इति वचनं परवादी आह। अभिधम्मो[1] केन भासितो ति सकवादी आह। न एसो अभिधम्मो बुद्धभासितो इति वचनं परवादी आह। किं पन....प.... उग्गहितं ति सकवादी आह[1]। न मया उग्गहितं आवुसो ति परवादी आह। अविनयधारिताय ....प....वदेसीति सकवादी आह। विनयमत्तं....प....उग्गहितं ति परवादी आह। तम्पि....प.... न जानासीति सकवादी आह। तम्पीति विनयमत्तं। अपिसद्दो विनयपिटकं अपेक्खति। तुम्हादिसो हीति हि सच्चं। तुम्हादिसो तुम्हेहि सदिसो[2] पब्बाजेन्तो वा सामणेरभावं सम्पादेन्तो वा उपसम्पादेन्तो वा उपरिभावं[3] भिक्खुभावं सम्पादेन्तो सातिसारो सदोसो होति, सापत्तिको होतीति अत्थो। वुत्तं हेतं ति हि सच्चं, तत्थ तस्मिं विनये न विवण्णेतु....प.... (३५–म०) अभिधम्मं वा पुच्छति, एतं वचनद्वयं भगवता वुत्तं।

तत्था ति पदं वुत्तं ति पदे आधारो। भिक्खुविनयं न विवण्णेतुकामेन इङ्घ मया चोदितो त्वं[4] ताव पठमं सुत्तन्तं वा गाथायो वा अभिधम्मं वा परियापुणस्सु, पच्छा पि विनयं परियापुणिस्ससि, इति एवं भणसि। एवं भणन्तस्स भिक्खुनो अनापत्ति। भिक्खुनीसुत्तन्ते भिक्खुं ओकासं कारापेत्वा पुच्छतीति सम्बन्धो। द्वीसु पन न विवण्णेतुकामो ति आदिवचनेसु अनापत्ति, न विवण्णेतुकामो इङ्घ ताव सुत्तन्तं वा गाथायो वा अभिधम्मं वा परियापुणस्सु, पच्छा पि विनयं (४२–सी०) परियापुणिस्ससीति भणसीति[5] वचनं विभङ्गे विवण्णकसिक्खापदे वुत्तं।

१-१. नत्थि–म०। २. ०पुग्गलो–सी०। ३. उपरि–सी०। ४. नत्थि–सी०। ५. भणतीति–सी०।

विनयपिटकं उग्गहितं' ति ? 'न उग्गहितं आवुसो' ति । 'अविनयधारिताय मञ्ञे त्वं अजानन्तो एवं वदेसी' ति । 'विनयमत्तमेव आवुसो उग्गहितं' ति । 'तं पि ते दुग्गहीतं, परिसपरियन्ते निसीदित्वा निद्दायन्तेन उग्गहितं भविस्सति; तुम्हादिसे हि पब्बाजेन्तो वा उपसंपादेन्तो वा सातिसारो होति' । किं कारणा' ? विनयमत्तस्स पि दुग्गहितत्ता; वुत्तं हेतं—"तत्थ अनापत्ति, न विवण्णेतुकामो इंघ ताव सुत्तन्तं वा गाथायो वा अभिधम्मं वा परियापुणस्सु, पच्छा पि विनयं परियापुणिस्ससी" ति । "सुत्तन्ते ओकासं कारापेत्वा अभिधम्मं वा विनयं वा पुच्छति, अभिधम्मे ओकासं कारापेत्वा सुत्तन्तं वा विनयं वा पुच्छति, विनये ओकासं कारापेत्वा सुत्तन्तं वा अभिधम्मं वा पुच्छती" ति । त्वं पन एत्तकं पि न जानासी' ति एत्तकेना पि परवादी निग्गहितो होति ।

महागोसिंगसुत्तं पन इतो पि बलवतरं । तत्र हि धम्मसेनापति सारिपुत्तत्थेरो अञ्ञमञ्ञं पुच्छितपञ्हं च विस्सज्जनं च आरोचेतुं सत्थु सन्तिकं गन्त्वा महामोग्गल्लानत्थेरस्स विस्सज्जनं आरोचेन्तो "इधावुसो सारिपुत्त द्वे भिक्खू अभिधम्मकथं कथेन्ति, ते अञ्ञमञ्ञं पञ्हं पुच्छन्ति, अञ्ञमञ्ञस्स पञ्हं पुट्ठा विस्सज्जेन्ति, नो च संसादेन्ति, धम्मिका च नेसं कथा पवत्तनी होति, एवरूपेन खो आवुसो, सारिपुत्त, भिक्खुना गोसिंगसालवनं सोभेय्या" ति आह । सत्था आभिधम्मिका नाम मम सासने परिबाहिरा ति अवत्वा सुवण्णालिंगसदिसं गीवं उन्नामेत्वा पुण्णचन्द-सस्सिरिकं

भिक्खुनीविभङ्गे पन सुत्तन्ते ओकासं कारापेत्वा अभिधम्मं वा विनयं वा पुच्छति आपत्ति पाचित्तियस्स । विनये ओकासं कारापेत्वा सुत्तन्तं वा अभिधम्मं वा पुच्छति आपत्ति पाचित्तियस्स । अभिधम्मे ओकासं कारापेत्वा सुत्तन्तं वा विनयं[1] वा पुच्छति आपत्ति पाचित्तियस्सा ति वुत्तं ।

अट्ठकथायं पन अभिधम्मे ओकासं कारापेत्वा सुत्तन्तं वा विनयं वा पुच्छतीति पठमं[2], विनये ओकासं कारापेत्वा सुत्तन्तं वा अभिधम्मं वा पुच्छतीति यं वचनं पच्छा वुत्तं, तं भिक्खुनीविभङ्गे वुत्तवचनेन समेति । पुब्बे पन कत्थचि पोत्थके अभिधम्मे ओकासं कारापेत्वा सुत्तन्तं वा विनयं वा पुच्छति, विनये ओकासं कारापेत्वा सुत्तन्तं वा विनयं वा अभिधम्मं वा पुच्छतीति पाठो सिया तं[3] पाठानुगमनेन[3] अभिधम्मेत्यादिवचनं वुत्तं ति गहेतब्बं । त्वं पना ति पनसद्दो विसेसत्थो । अपिसद्दो सम्भावने । एत्तकेन पि वचनेन परवादी सकवादिना निग्गहितो होति ।

अभिधम्मस्स महागोसिङ्गसुत्तेन बुद्धभासितभावं साधेतुं महागोसिङ्गसुत्तं पना ति आदिमाह । इतो पीति विनयतो । तत्र हीति हि सच्चं । तत्र महागोसिङ्गसुत्ते । तत्रा ति पदं आहा ति पदे आधारो । महामोग्गलानत्थेरस्सा ति पदं विस्सज्जनं ति पदे सम्बन्धो । इधा ति इमस्मिं सासने । ते भिक्खू । नो विसंवादेन्तीति नो च घट्टेन्ति[4] । धम्मिका च तेसं कथा पवत्तिनीति तेसं भिक्खूनं कथा पवत्तिनी धम्मेन युत्ता होति ।

---

१. अभिधम्मं—म० । २. ०वत्वा—सी० । ३-३. पातनुगमनेन—म० । ४. घटेन्ति—म० ।

महामुखं पूरेत्वा ब्रह्मघोसं निच्छारेन्तो "साधु साधु **सा**रिपुत्ता" ति **म**हामोग्गल्लानत्थेरस्स साधुकारं दत्वा "यथा तं **मो**ग्गल्लानो व सम्मा ब्याकरमानो ब्याकरेय्य, **मो**ग्गल्लानो हि **सा**रिपुत्त धम्मकथिको" [म० नि० १.२६८-२६९] ति आह।

आभिधम्मिका भिक्खू येव हि किर धम्मकथिका नाम, अवसेसा धम्मं कथेन्तापि न धम्मकथिका। कस्मा? ते हि धम्मकथं कथेन्ता कम्मन्तरं विपाकन्तरं रूपारूपपरिच्छेदं धम्मन्तरं आलोळेत्वा कथेन्ति। आभिधम्मिका पन धम्मन्तरं न आलोळेन्ति। तस्मा आभिधम्मिको भिक्खु धम्मं कथेतु वा मा वा, पुच्छितकाले पन पञ्हं कथेस्सती ति। अयमेव किर एकन्तधम्मकथिको नामा ति। इदं सन्धाय **स**त्था साधुकारं दत्वा 'सुकथितं **मो**ग्गल्लानेना' ति आह। **अ**भिधम्मं पटिबाहेन्तो इमस्मिं **जिन**चक्के पहारं देति, सब्बञ्ञुतञाणं पटिबाहति, **स**त्थु वेसारज्जञाणं पटिनिवत्तेति, सोतुकामं परिसं

पुण्णचन्दसस्सिरीकं[१] ति पुण्णचन्दो विय ससोभं। यथा तं ति[१] येन पकारेन तं पञ्हं मोग्गलानो[२] व[२] एवं सम्मा ब्याकरमानो पुग्गलो[3] तथा ब्याकरेय्य[४]। मोग्गलानो चा ति[५] पि अत्थि। चसद्दो इवसद्दत्थो ति गहेतब्बो।

साधुकारं दत्वा मोग्गलानो धम्मकथिको ति वचनमत्तं सन्धाय वुत्तं ति आह आभिधम्मिकभिक्खू ति (३६–म०) आदि। अवसेसा सुत्तवेनयिका भिक्खू। ते हीति हि (४३–सी०) सच्चं। ते सुत्तवेनयिका। रूपारूपपरिच्छेदं ति रूपादिपरिच्छेदं अरूपादिपरिच्छेदेन[६] धम्मन्तरं कुसलादिधम्मं अकुसलादिभावेन आलोळेत्वा[७] कथेन्ति। यो अभिधम्मं पटिबाहति, सो पुग्गलो पहारदानादिप्पकारं आपज्जतीति दस्सेन्तो आह अभिधम्मं ति आदि। जिनचक्के पहारं देति, यो बुद्धेन अभिधम्मो न भासितो ति वदति, सो जिनसासनं भिन्दतीति अधिप्पायो। सब्बञ्ञुतञ्ञाणं पटिबाहतीति भगवतो ञाणं नाम न होतीति अधिप्पायो। वेसारज्जञाणं[८] पटिनिवत्तेति[८] भगवतो वेसारज्जञाणं नत्थीति अधिप्पायो। परिसं विसंवादेतीति परिसाय मुसावादं करोतीति अधिप्पायो। आवरणं बन्धति भगवा अरियमग्गं न लभतीति अधिप्पायो। अट्ठारससू ति इधुपालि[९], भिक्खू धम्मं अधम्मो ति दीपेन्ति; अधम्मं धम्मो ति दीपेन्ति, विनयं अविनयो ति दीपेन्ति, अविनयं विनयो ति दीपेन्ति, अभासितं अलपितं तथागतेन भासितं लपितं तथागतेना ति दीपेन्ति, भासितं लपितं तथागतेन अभासितं अलपितं तथागतेना ति दीपेन्ति, अनाचिण्णं तथागतेन आचिण्णं तथागतेना ति दीपेन्ति, आचिण्णं तथागतेन अनाचिण्णं तथागतेना ति दीपेन्ति, अपञ्ञत्तं तथागतेन पञ्ञत्तं तथागतेना ति दीपेन्ति, पञ्ञत्तं तथागतेन अपञ्ञत्तं तथागतेना ति दीपेन्ति, अनापत्तिं आपत्तीति दीपेन्ति, आपत्तिं अनापत्तीति दीपेन्ति, लहुकं

१-१. पुण्णचन्दसस्सिरीता–म०। २-२. ०लानो इव–म०। ३. धम्मकथिको–सी०। ४. ०अथवा यथा येन पकारेन तं पञ्हं मोग्गल्लानो इव सम्मा ब्याकरोति तं पञ्हं सम्मा ब्याकरमानो पुग्गलो तथा ब्याकरेय्य–इति सीहळपोत्थके अधिको पाठो। ५. वा०–सी०। ६. अरूपारूपानीति परिच्छेदेन–म०। ७. आळोलित्वा–सी०। ८-८. ञाणमनिवत्ततीति–सी०। ९. इधुपाळि–सी०।

विसंवादेति, अरियमग्गे आवरणं बन्धति, अट्ठारससु भेदकरवत्थूसु एकस्मिं सन्दिस्सति उक्खेपनियकम्म-निस्सयकम्म-तज्जनीयकम्मारहो होति। तं तं कम्मं कत्वा उय्योजेतब्बो 'गच्छ विघासादो हुत्वा जीविस्ससी' ति।

अथा पि एवं वदेय्य—'सचे **अभिधम्मो बुद्धभासितो**, यथा अनेकेसु सुत्तसहस्सेसु "एकं समयं **भगवा राजगहे** विहरती" ति आदिना नयेन निदानं सज्जितं, एवं अस्सा पि निदानं सज्जितं भवेय्या' ति। सो '**जातक-सुत्तनिपात-धम्मपदादीनं** एवरूपं निदानं नत्थि, न चेतानि **बुद्धभासितानी**?' ति पटिक्खिपित्वा उत्तरिं पि एवं वत्तब्बो—'पण्डित, **अभिधम्मो** नामेस सब्बञ्ञुबुद्धानं येव विसयो, न अञ्ञेसं विसयो। बुद्धानं हि ओक्कन्ति पाकटा, अभिजाति पाकटा, अभिसंबोधि पाकटा, धम्मचक्कप्पवत्तनं पाकटं। यमकपाटिहारियं पाकटं, तिदिवक्कमो पाकटो, देवलोके देसितभावो पाकटो, देवोरोहणं पाकटं। यथा नाम चक्कवत्तिरञ्ञो हत्थिरतनं वा अस्सरतनं वा थेनेत्वा यानके योजेत्वा विचरणं नाम अट्ठानं अकारणं; चक्करतनं वा पन थेनेत्वा पलालसकटे ओलम्बेत्वा विचरणं नाम अट्ठानं अकारणं; योजनप्पमाणं ओभासनसमत्थं मणिरतनं वा पन कप्पासपच्छियं पक्खिपित्वा वलंजनं नाम अट्ठानं अकारणं; कस्मा? राजारहभण्डताय; एवमेव **अभिधम्मो** नाम अञ्ञेसं अ-विसयो, सब्बञ्ञुबुद्धानं येव विसयो। तेसं वसेन देसितब्बदेसना। बुद्धानं हि ओक्कन्ति पाकटा...प०...देवोरोहणं पाकटं। **अभिधम्मस्स** निदानकिच्चं नाम नत्थि पण्डिता' ति। न हि सक्का एवं वुत्ते परवादिना सहधम्मिकं उदाहरणं उदाहरितुं।

आपत्तिं गरुकापत्तीति दीपेन्ति, गरुकापत्तिं लहुकापत्तीति दीपेन्ति। सावसेसं आपत्तिं अनवसेसापत्तीति दीपेन्ति, दुट्ठुल्लं आपत्तिं अदुट्ठुल्लापत्तीति दीपेन्ति, अदुट्ठुल्लापत्तिं दुट्ठुल्लापत्तीति दीपेन्तीति अट्ठारससु। अभिधम्मं पटिबाहन्तो पुग्गलो...प...कम्मारहो इति तस्मा कम्मं कत्वा त्वं गच्छ भो त्वं विघासादो हुत्वा जीविस्ससि इतिवचनेन उय्योजेतब्बो ति योजना।

सचे...प...अस्स पि अभिधम्मस्स निदानं सज्जितं भवेय्य इति एवं चोदको अथा पि यदि पि वदेय्या ति सम्बन्धो। सो चोदको इति एवं पटिक्खिपित्वा सकवादिना पण्डि...प... नत्थि पण्डिता ति एवं वत्तब्बो। अभिधम्मस्स सब्बञ्ञुबुद्धानं विसयभावं साधेतुं बुद्धानं हीति आदिमाह। हि (४४–सी०) सच्चं। ओकन्ति[1] पटिसन्धि। तिदिवक्कमो[2] देवलोकगमनं। अट्ठानं ति अयुत्तं। अकारणं ति तस्सेव वेवचनं। (३७–म०) तेसं वसेना ति तेसं बुद्धानं वसेन पटिबद्धेन देसेतब्बा देसना। देसीयतीति देसना, कम्मसाधनं।

अभिधम्मस्स अञ्ञेसं अविसयत्ता देसकस्स पाकटभावं वत्वा कालदेसपरिसानं पाकटभावं दस्सेतुं बुद्धानं...प...देवोरोहनं पाकटं ति आह। न हीति आदि दळ्हीकरणं। हि सच्चं, एवं वचने सकवादिना वुत्ते परवादिना सहधम्मिकं कारणेन युत्तं वचनं उदाहरितुं न सक्का।

---

१. ०तीति–सी०। २. तिदिविक्कमो–म०।

मण्डलारामवासी **ति**स्सभूतित्थेरो पन **म**होबोधिनिदानो एस **अभिधम्मो** नामा ति दस्सेतुं "येन स्वाहं भिक्खवे विहारेन पठमाभिसंबुद्धो विहरामि तस्स पदेसेन विहासिं" ति इमं **प**देसविहारसुत्तन्तं [सं० ५.१२] आहरित्वा कथेसि।

दसविधो हि पदेसो नाम—खन्धपदेसो, आयतनपदेसो, धातुपदेसो, सच्चपदेसो, इन्द्रियपदेसो, पच्चयाकारपदेसो, सतिपट्ठानपदेसो, झानपदेसो, नामपदेसो, धम्मपदेसो ति। तेसु **स**त्था **म**हाबोधिमण्डे पञ्चक्खन्धे निप्पदेसतो पटिविज्झि, इमं तेमासं वेदनाक्खन्धवसेनेव विहासि। द्वादसायतनानि अट्ठारसधातुयो निप्पदेसेन पटिविज्झि। इमं तेमासं धम्मायतने वेदनावसेन धम्मधातुयं च वेदनावसेनेव विहासि। चत्तारि सच्चानि निप्पदेसेन पटिविज्झि, इमं तेमासं दुक्खसच्चे वेदनावसेनेव विहासि। बावीसतिन्द्रियानि निप्पदेसेन पटिविज्झि, इमं तेमासं वेदनापञ्चके इन्द्रियवसेनेव विहासि। द्वादसपदिकं पच्चयाकारवट्टं निप्पदेसेन पटिविज्झि, इमं तेमासं फस्सपच्चयवेदनावसेनेव विहासि। चत्तारो सतिपट्ठाने निप्पदेसेन पटिविज्झि, इमं तेमासं वेदनासतिपट्ठानवसेनेव विहासि। चत्तारि झानानि निप्पदेसेन पटिविज्झि, इमं तेमासं झानंगेसु वेदनावसेनेव विहासि। नामं निप्पदेसेन पटिविज्झि, इमं तेमासं तत्थ वेदनावसेनेव विहासि। धम्मे निप्पदेसेनेव पटिविज्झि, इमं तेमासं वेदनातिकवसेनेव विहासी ति। एवं थेरो **प**देसविहारसुत्तन्तवसेन **अभिधम्मस्स** निदानं कथेसि।

गामवासी **सु**मनदेवत्थेरो पन हेट्ठा-**लो**हपासादे धम्मं परिवत्तेन्तो 'अयं परवादी बाहा पग्गय्ह अरञ्ञे कन्दन्तो विय, असक्खिकं अट्टं करोन्तो विय च, **अभिधम्मे** निदानस्स अत्थिभावं पि न जानाती' ति वत्वा निदानं कथेन्तो एवमाह—'एकं समयं **भ**गवा देवेसु विहरति **ता**वतिंसेसु **पा**रिच्छत्तकमूले पण्डुकम्बलसिलायं। तत्र खो **भ**गवा देवानं **ता**वतिंसानं **अभिधम्म**कथं कथेसि—"कुसला धम्मा, अकुसला धम्मा, अब्याकता धम्मा" ति।

अञ्ञेसु पन सुत्तेसु एकमेव निदानं। **अभिधम्मे** द्वे निदानानि—अधिगम-

---

बुज्झति खन्धादयो एत्था ति बोधि। बोधिरुक्खो। महन्तो बोधि महाबोधि। महाबोधि निदानं अस्सा ति महाबोधिनिदानो। दस्सेतुं ति पदं कथेसीति पदे सम्पदानं। येन स्वाहं भिक्खवे, अहं येन विहारेन पठमाभिसम्बुद्धो अभिसम्बुद्धो हुत्वा सब्बपठमं विहरामि तस्स विहारस्स पदेसेन विहासिं।

खन्धपदेसो ति खन्धानं एकदेसो। तेसु दसविधेसु पदेसेसु। महाबोधिमण्डेति सब्बञ्ञुतञाणस्स पदट्ठा[1]नं। फस्सपच्चया वेदनावसेना ति फस्सस्स पच्चयभूतवेदनाय[2] पटिबद्धेन। वेदनासतिपट्ठानवसेना ति वेदनाय[3] अनुपस्सनसतिपट्ठानवसेन। तत्था ति तस्मिं नामे। वेदनातिका ति सुखदुक्ख-उपेक्खा।

अधिगमियतीति अधिगमो, मग्गो। अधिगमं निदेतीति अधिगमनिदानं। पारमीसङ्खातं

---

१. पसन्नदाने–म०। २. पच्चयभूतं वेदनाय–म०। ३. तं वेदनाय–सी०।

निदानं च देसनानिदानं चा ति। तत्थ अधिगमनिदानं **दीपंकरदसबलतो** पट्ठाय याव महाबोधिपल्लंका वेदितब्बं। देसनानिदानं याव धम्मचक्कप्पवत्तना। एवं उभय-निदानसंपन्नस्स पन'स्स अभिधम्मस्स निदानकोसल्लत्थं इदं ताव पञ्हकम्मं वेदितब्बं—

अयं अभिधम्मो नाम केन पभावितो? कत्थ परिपाचितो? कत्थ अधिगतो? कदा अधिगतो? केन अधिगतो? कत्थ विचितो? कदा विचितो? केन विचितो? कत्थ देसितो? कस्स'त्थाय देसितो? किमत्थं देसितो? केहि पटिग्गहितो? के सिक्खन्ति? के सिक्खितसिक्खा? के धारन्ति? कस्स वचनं? केनाभतो ति?

तत्रिदं विस्सज्जनं। केन पभावितो ति बोधि-अभिनीहारसद्धाय पभावितो। कत्थ परिपाचितो ति अड्ढछक्केसु जातकसतेसु। कत्थ अधिगतो ति बोधिमूले। कदा अधिगतो ति **विसाखपुण्णमासियं**। केन अधिगतो ति **सब्बञ्ञुबुद्धेन**। कत्थ विचितो ति बोधिमण्डे। कदा विचितो ति रतनघरसत्ताहे। केन विचितो ति **सब्बञ्ञु-बुद्धेन**। कत्थ देसितो ति देवेसु **तावतिंसेसु**। कस्स'त्थाय देसितो ति देवतानं। किमत्थं देसितो ति चतुरोघनित्थरणत्थं। केहि पटिग्गहितो ति देवेहि। के सिक्खन्ती ति सेक्खा पुथुज्जनकल्याणा च। के सिक्खितसिक्खा ति अरहन्तो खीणसवा। के धारेन्ती ति येसं वत्तति ते धारेन्ति। कस्स वचनं ति **भगवतो** वचनं, अरहतो सम्मासंबुद्धस्स। केनाभतो ति आचरियपरम्पराय।

अयं हि **सारिपुत्तत्थेरो भद्दजि सोभितो पियजाली पियपालो पियदस्सी कोसिय-पुत्तो सिग्गवो सन्देहो मोग्गलिपुत्तो सुदत्तो धम्मियो दासको सोणको रेवतो** ति एवमा-

---

कारणं अभिधम्मस्स सब्बञ्ञुतञाणसङ्खातस्स अधिगमस्स मूलभूतं अधिगमं जनेतीति अधि-प्पायो। देसियते अनेना ति देसना, चित्तुप्पादो। देसनाय निदानं देसनानिदानं। तत्था ति तेसु द्वीसु निदानेसु। याव धम्मचक्कपवत्तना[1] वेदितब्बं ति सम्बन्धो। पञ्हकम्मं ति पञ्हकरणं। कत्थ देसे। कदा कस्मिं काले।

तत्राति तेसु पञ्हेसु। केन पभावितो ति पुच्छाय इदं विस्सज्जनं बोधि-अभिनीहार-सद्धाया ति बोधिपदट्ठानं, पटिवेधपवत्ताय सद्धाय। पभावितो ति पदे कत्ता। अभिनीहरणं अभिनीहारो, बोधिया चित्तस्स अभिनीहारो बोधि-अभिनीहारो। बोधि-अभिनीहारं पटिच्च पवत्ता सद्धा बोधि-अभिनीहारसद्धा। अड्ढछक्कं एतेसं जातकसतानं ति अड्ढछक्कजातक-सतानि। सिक्खिता परिचिता सिक्खा येहि ते (४५–सी०) सिक्खितसिक्खा। आचरियपरम्प-राया ति पदं आभतो ति पदे कत्ता।

अयं हीति वित्थारो। हि सच्चं, अयं अभिधम्मो। एवमादीहि आचरियेहि आभतो। ततो तेहि आचरियेहि। तेसं आचरियानं सिस्सानुसिस्सेहि आभतो।

---

१. धम्मचक्कपवत्तनाय–म०।

दीहि याव ततियसंगीतिकाला आभतो। ततो उद्धं तेसं येव सिस्सानुसिस्सेही ति एवं ताव जम्बुदीपतले आचरियपरम्पराय आभतो। इमं पन दीपं—ततो

महिन्दो इट्टियो उत्तियो भद्दनामो च संबलो।
एते नागा महापञ्ञा जम्बुदीपा इधागता ति।

इमेहि महानागेहि आभतो। ततो उद्धं तेसं येव सिस्सानुसिस्ससंखाताय आचरियपरंपराय याव'ज्जकाला आभतो।

एवं आभतस्स पन'स्स यं तं **दी**पंकरदसबलतो पट्ठाय याव महाबोधिपल्लङ्का अधिगमनिदानं, याव धम्मचक्कप्पवत्तना देसनानिदानं च वुत्तं, तस्स आविभावत्थं अयमानुपुब्बी कथा वेदितब्बा—इतो किर कप्पसतसहस्साधिकानं चतुन्नं असंखेय्यानं मत्थके अमरवती नाम नगरं अहोसि। तत्थ सुमेधो नाम ब्राह्मणो पटिवसति उभतो सुजातो, मातितो च पितितो च, संसुद्धगहणिको, याव सत्तमा कुलपरिवट्टा अक्खित्तो अनुपक्कुट्ठो जातिवादेन, अभिरूपो दस्सनीयो पासादिको परमाय वण्णपोक्खरताय समन्नागतो। सो अञ्ञं कम्मं अकत्वा ब्राह्मणसिप्पमेव उग्गण्हि। तस्स दहरकाले येव मातापितरो कालमकंसु। अथ'स्स रासिवड्ढको अमच्चो आयपोत्थकं आहरित्वा सुवण्णरजतमणिमुत्तादिभरिते गब्भे विवरित्वा 'एत्तकं ते कुमार मातुसन्तकं, एत्तकं पितुसन्तिकं, एत्तकं अय्यक-पय्यकादीनं ति याव सत्तमा कुलपरिवट्टा धनं आचिक्खित्वा एतं पटिपज्जाही' ति आह। **सु**मेधपण्डितो चिन्तेसि—'इमं धनं संहरित्वा मय्हं पितुपितामहादयो परलोकं गच्छन्ता एककहापणं पि गहेत्वा न गता, मया पन गहेत्वा गमनकारणं कातुं वट्टती'ति रञ्ञो आरोचेत्वा नगरे भेरिं चरापेत्वा महाजनस्स दानं दत्वा तापसपब्बजं पब्बजि।

इमं पन दीपं लङ्कादीपं आभतो ति पदे कम्मं। इधा ति इमस्मिं लङ्कादीपे। आचरियपरम्पराय कत्तुभूताय यावज्जतनकाला अयं अभिधम्मो आभतो ति सम्बन्धो।

अस्स अभिधम्मस्स यं तं अधिगमनिदानं च देसनानिदानं च मया वुत्तं, तस्स निदानद्वयस्स अनुपुब्बिकथा अनुपुब्बेन कथा अनुपुब्बिकथा।

इतो ति भद्दकप्पतो। तत्थ तस्मिं नगरे। सुन्दरा मेधा यस्स सो सुमेधो। संसुद्धगहणिको, परिसुद्धमातिकुच्छिको। अथवा। संसुद्धं असितादिपापं ति। संसुद्धा गहणी यस्स ब्राह्मणस्स सो संसुद्धगहणिको। उभतो मातापितितो। कुलपरिवट्टा कुलपरम्पराय। अक्खित्तो ति अपरिच्चत्तो। अनुपकुट्ठो ति अनिन्दितो। जातिवादेना ति अनुपकुट्ठो ति पदे ततियाविसेसनं। वदनं वादो, जातिया वादो जातिवादो। सोभणं रूपं यस्स सो अभिरूपो। दस्सनं अरहतीति दस्सनीयो। ओलोकनयोग्यो ति अत्थो। पसादं जनेतीति पासादिको। वण्णस्स पोक्खरता सुन्दरभावो वण्णपोक्खरता। वण्णसम्पत्तीति अत्थो। अथवा वण्णेन सम्पन्नं पोक्खरं सरीरं वण्णपोक्खरं। मज्झपदलोपो। वण्णपोक्खरस्स भावो वण्णपोक्खरता। ताय वण्णपोक्खरताय सम्पन्नसरीरताया ति अत्थो। ब्राह्मणसिप्पं नामा ति वेदे[1]। पटिपज्जाहीति जानाहि।

---

१. वेदो—सी०।

इमस्मिं ठाने सुमेधकथा कथेतब्बा। वुत्तं हेत्तं बुद्धवंसे—

कप्पे च सतसहस्से चतुरो च असंखिये।
अमरं नाम नगरं दस्सनेय्यं मनोरमं॥
दसहि सद्देहि अविवित्तं अन्नपानसमायुतं॥
हत्थिसद्दं अस्ससद्दं भेरिसङ्खरथानि च।
खादथ पिवथा चेव अन्नपानेन घोसितं॥
नगरं सब्बङ्गसम्पन्नं सब्बकाममुपागतं।
सत्तरतनसम्पन्नं नानाजनसमाकुलं॥
समिद्धं देवनगरं व आवासं पुञ्ञकम्मिनं॥
नगरे अमरवतिया सुमेधो नाम ब्राह्मणो।
अनेककोटिसन्निचयो पहूतधनधञ्ञवा॥

सतसहस्से सतसहस्सानं। कप्पे च कप्पानञ्च। चतुरो च असंङ्खेय्ये चतुन्नं असङ्खेय्यानञ्च मत्थके अतिक्कम्म। दस्सनेय्यं मनोरमं अमरं नाम नगरं अहोसि। अथवा सतसहस्सकप्पे च चतुरो असङ्खेय्ये च उद्धं आरोहनवसेन अतिक्कमित्वा दस्सनेय्यं मनोरमं अमरं नाम नगरं अहोसि। दसहि सद्देहि अविवित्तं अभूतं अन्नपानसमायुतं खज्जभोजनादि-अन्नेन पूवसुरादिपानेन च समायुत्तं।

हत्थिसद्दं हत्थिसद्देन अस्ससद्दं[1] अस्ससद्देन[1] भेरिसङ्खरथानि च भेरिसङ्खरथानञ्च सद्देहि अविवित्तं। तुम्हे खादथ पिवथ चेव इति अन्नपानेन जनेहि घोसितं अभिनादितं।

अट्ठ[2] (४६–सी०) सब्बङ्गसम्पन्नं उय्यानादिसब्बावयवेन सम्पन्नं। सब्बकाममुपागतं सब्बेन रूपसद्दादिपञ्चकामगुणेन समुपेतं। (३८–म०) सत्तरतनसम्पन्नं सुवण्ण-रजत-मणिमुत्ता-वेळुरिय-वजिर-पवाळेहि सम्पुण्णं नानाजनसमाकुलं नानादेसवासेहि जनेहि आकुलीभूतं।

पुञ्ञकम्मानं नरानं आवासं[3] आवासभूतं। देवनगरं विय[4] मनुस्सानं परिभोगारह-उपकारकेहि समिद्धं नगरं अहोसि।

हत्थिसद्दं ति हत्थिसद्दवन्तं। अस्ससद्दवन्तं नगरं। हत्थीनं सद्दो तस्मिं[5] नगरे अत्थीति हत्थिसद्दं। अस्ससद्दो अस्मिं अत्थीति अस्ससद्दं। भेरिसङ्खरथान[6] चा ति पि अत्थि[6], भेरिसङ्खरथानञ्चा ति वत्तब्बे निग्गहितलोपं कत्वा एवं वुत्तं। सब्बकम्मुपागतं ति[7] पि अत्थि। सब्बकम्मेन[8] उपेतं[8] अत्थो। आवसन्ति एत्था ति आवासो। आवासो ति वत्तब्बे आवासं ति लिङ्गभेदं कत्वा वुत्तं ति वेदितब्बं।

अनेककोटीनं धनानं सन्निचयो यस्स सो अनेककोटिसन्निचयो। पहूतानि धनधञ्ञानि पहूतधनधञ्ञानि। पहूतधनधञ्ञानि[9] अस्स अत्थीति पहूतधनञ्ञवा।

१-१. नत्थि–म०। २. नत्थि–सी०। ३. नत्थि–म०। ४. देवानं नगरं विय–सी०। ५. हत्थिसद्दो, हत्थिसद्दो अस्मिं–सी०। ६-६. नत्थि–सी०। ७.० कामुपागतं ति–सी०। ८-८. सब्बकामे उपेतीति–सी०। ९. तानि पहूत०–सी०।

अज्झायको मन्तधरो तिण्णं वेदानपारगू।
लक्खणे इतिहासे च सधम्मे पारमिं गतो॥

रहोगतो निसीदित्वा एवं चिन्तेसहं तदा।
दुक्खो पुनब्भवो नाम सरीरस्स च भेदनं॥

जातिधम्मो जराधम्मो व्याधिधम्मो चहं तदा।
अजरं अमरं खेमं परियेसिस्सामि निब्बुतिं॥

यन्नूनिमं पूतिकायं नानाकुणपपूरितं।
छड्डयित्वान गच्छेय्यं अनपेक्खो अनत्थिको॥

अत्थि हेहिति सो मग्गो न सो सक्का न हेतुये।
परियेसिस्सामि तं मग्गं भवतो परिमुत्तिया॥

यथा पि दुक्खे विज्जन्ते सुखं नाम पि विज्जति।
एवं भवे विज्जमाने विभवो पि इच्छितब्बको॥

यथा पि उण्हे विज्जन्ते अपरं विज्जति सीतलं।
एवं तिविधग्गि विज्जन्ते निब्बानं इच्छितब्बकं॥

नज्झायतीति अज्झायको। झानभावनारहितो ति अत्थो। मन्तधरो ति आथब्बणिको। तिण्णं वेदानं पारगू ति इरुवेद-यजुवेद-सामवेदसङ्खातानं तिण्णं वेदानं पारगमनसीलो। इतिहास इतिह आसेतीति पदेन उपलक्खितो इतिहासो, भारतादिको। पुब्बे वुत्तवचनप्पबन्धो इतिहासो नाम। यस्स धम्मो[1], पारमस्स[2] ञाणस्स अत्थीति पारमी। पारस्स अन्तस्स जानञाणं ति अत्थो।

जातिधम्मो जातिसभावो। यन्नूना ति वितक्कत्थे निपातो। अनपेक्खो ति अनालयो। अनत्थिको ति अनिच्छन्तो।

सो मग्गो अत्थि विज्जमानो। हेहिति भविस्सति। सो मग्गो मया न हेतुये अभवितुं न सक्का। भवतो परिमुत्तिया परिमुच्चनत्थं तं मग्गं परियेसिस्सामि अहं। अत्थि[3] विज्जमानत्थवाचको निपातो। मग्गं पच्चक्खन्ते विञ्ञापेतुं अत्थीति वुत्तं। अनुमानस्स अप्पसिद्धत्ता असन्निट्ठानभावेन गण्हन्तीति मञ्ञन्तो सन्निट्ठानं कातुं न सो सक्का न हेतुये ति आह।

(४७-सी०) भवेति जनने। विभवो अजननधम्मो। तिविधग्गीति तिविधग्गिम्हि, रागदोसमोहसङ्खाते अग्गिम्हीति अत्थो। सत्तमीविभत्ति लोपो, सत्तम्यत्थे वा पठमा[4]। जातीति जातियं।

---

१. ०सद्धमो-सी०। २. परमं पारं अस्स-सी०। ३. अत्थीति-सी०। ४. पठमो-सी०।

यथा पि पापे विज्जन्ते कल्याणमपि विज्जति ।
एवमेव जाति विज्जन्ते अजातिं पि इच्छितब्बकं ॥

यथा गूथगतो पुरिसो तळाकं दिस्वान पूरितं ।
न गवेसति तं तळाकं न दोसो तळाकस्स सो ॥
एवं किलेसमलधोवे विज्जन्ते अमतन्तळे ।
न गवेसति तं तळाकं न दोसो अमतन्तळे ॥
यथा अरीहि परिरुद्धो विज्जन्ते गमनम्पथे ।
न पलायति सो पुरिसो न दोसो अञ्जसस्स सो ॥
एवं किलेसपरिरुद्धो विज्जमाने सिवे पथे ।
न गवेसति तं मग्गं न दोसो सिवमञ्जसे ॥
यथा पि ब्याधितो पुरिसो विज्जमाने तिकिच्छके ।
न तिकिच्छापेति तं ब्याधिं न दोसो सो तिकिच्छके ॥
एवं किलेसब्याधीहि दुक्खितो परिपोळितो ।
न गवेसति तं आचरियं न दोसो सो विनायके ॥

यथा पि कुणपं पुरिसो कण्ठे बद्धं जिगुच्छिय ।
मोचयित्वान गच्छेय्य सुखी सेरी सयंवसी ॥
तथेविमं पूतिकायं नानाकुणपसञ्चयं ।
छड्डयित्वान गच्छेय्यं अनपेक्खो अनत्थिको ॥

यथा उच्चारठानम्हि करीसं नरनारियो ।
छड्डयित्वान गच्छन्ति अनपेक्खा अनत्थिका ॥
एवमेव इमं कायं नानाकुणपपूरितं ।
छड्डयित्वान गच्छिस्सं वच्चं कत्वा यथा कुटिं ॥

गूथगतो ति गूथमक्खितो । अमतन्तळे ति[१] अमतसङ्खाते तळाके । अमततळे ति वत्तब्बे निग्गहितागमं कत्वा अमतन्तळे ति वुत्तं । अमतन्तळे ति अमतसङ्खातस्स तळाकस्स[२] । परिरुद्धो ति परिवारितो । किलेसपरिरुद्धो ति किलेसेहि परिवारितो । सिवमञ्जसे ति[३] निब्बानगमनमग्गस्स । (३९–म०) तिकिच्छके ति वेज्जे । किलेसब्याधीहीति पदं दुक्खितो ति पदे ततियाविसेसनं, परिपोळितो ति पदे कत्ता ।

सुखं अस्स अत्थी ति सुखी, सुखितो ति अत्थो । इरणं पवत्तनं इरो । सयं इरो सेरो । सेरो[४] अस्स अत्थीति सेरी । अत्तनो इच्छावसेन वत्तमानो ति अत्थो ।

वसनं समत्थनं वसो, सयमत्तनो वसो सयंवसो, सो अस्स अत्थ ति सयंवसी । उच्चारठानम्हीति अत्थि । उच्चारियतीति उच्चारो, उच्चारस्सेतं नामं, उच्चारस्स ठानं[४] । वच्चं

१. अमतन्तले ति–सी० । २. नत्थि–म० । ३. सिवअञ्ज०–सी० । ४-४. म० पोत्थके अयं पाठो न दिस्सति ।

यथा पि जज्जरं नावं पलुग्गं उदकगाहिनिं।
सामी छड्डेत्वा गच्छन्ति अनपेक्खा अनत्थिका॥

एवमेव इमं कायं नवच्छिद्दं धुवस्सवं।
छड्डयित्वान गच्छिस्सं जिण्णनावं व सामिका॥
यथा पि पुरिसो चोरेहि गच्छन्तो भण्डमादिय।
भण्डच्छेदभयं दिस्वा छड्डयित्वान गच्छति॥
एवमेव अयं कायो महाचोरसमो विय।
पहायिमं गमिस्सामि कुसलच्छेदना भया॥

एवाहं चिन्तयित्वान नेककोटिसतं धनं।
नाथानाथानं दत्वान हिमवन्तमुपागमिं॥

हिमवन्तस्स अविदूरे धम्मिको नाम पब्बतो।
अस्समो सुकतो मय्हं पण्णसाला सुमापिता॥

चङ्कमं तत्थ मापेसिं पञ्चदोसविवज्जितं।
अट्ठगुणसमुपेतं अभिञ्ञाबलमाहरिं॥
साटकं पजहिं तत्थ नवदोसमुपागतं।
वाकचीरं निवासेसिं द्वादसगुणमुपागतं॥

कत्वा छट्टिता[1] कुटि वच्चकुटि विय। जज्जरं ति जिण्णं। पलुग्गं ति लुज्जन्तं। विकरन्तं, उदकं गण्हातीति उदकगाहिनी।

सवनं असुचिनो पग्घरणं सवो, धुवं सवो यस्स सो धुवस्सवो, तं धुवस्सवं। निच्चं पग्घरणासुचि ति अत्थो। यथा भण्डं आदिय गहेत्वा चोरेहि सद्धिं गच्छन्तो पुरिसो भण्डच्छेदभयं भण्डस्स अच्छिन्दनेन भयं दिस्वा चोरे छड्डयित्वान गच्छति।

न एककोटिसतं नेककोटिसतं। नाथानाथानं ति सनाथमनाथानञ्च, अड्ढानञ्चेव दलिद्दानञ्च।

हिमवन्तस्स अविदूरे हिमवन्तपब्बतराजस्स समीपे। धम्मिको नाम पब्बतो ति येभुय्येन बोधिसत्तानं समणधम्मकरणस्स पवत्तनट्ठानभावतो धम्मिको नाम। नत्थि समो परिसमो एत्था ति अस्समो। कसिकम्मादिविरतो ति अत्थो। पण्णेहि छादिता साला पण्णसाला।

अभिञ्ञाबलं ति अभिञ्ञानं उप्पादनत्थाय विपस्सनाय बलं। चियति गन्थियतीति चीरं। 'चि'-चये। ईरपच्चयो। वाकचीरमिव चीरं वाकचीरं। अथवा मुञ्जतिणसङ्खातेन वाकेन चीरं वाकचीरं। मुञ्जतिणं हीरं हीरं कत्वा[2] गण्ठितं ति अत्थो। (४८-सी०) मुञ्जतिण-

---

१. ०यथा-सी०। २. नत्थि-म०।

अट्ठदोससमाकिण्णं पजहिं पण्णसालकं।
उपागमिं रुक्खमूलं गुणे दसहुपागतं॥
वापितं रोपितं धञ्ञं पजहिं निरवसेसतो।
अनेकगुणसम्पन्नं पवत्तफलमादियिं॥
तत्थप्पधानं पदहिं निसज्जट्ठानचङ्कमे।
अब्भन्तरम्हि सत्ताहे अभिञ्ञाबलपापुणिं ति* ॥

तत्था† "अस्समो सुकतो मय्हं पण्णसाला सुमापिता" ति इमाय पालिया सुमेधपण्डितेन 'पब्बजिस्सामी' ति निक्खमन्तेन अस्समपण्णसाला चङ्कमा सहत्था मापिता विय वुत्ता। अयं पनेत्थ अत्थो। महासत्तं हिमवन्तं अज्झोगाहेत्वा 'अज्ज धम्मकपब्बतं पविसिस्सामी' ति निक्खन्तं दिस्वा सक्को देवानमिन्दो विस्सकम्मं देवपुत्तं आमन्तेत्वा "गच्छ तात, अयं सुमेधपण्डितो 'पब्बजिस्सामी' ति निक्खन्तो, एतस्स वसनट्ठानं मापेही" ति। सो तस्स वचनं सम्पटिच्छित्वा रमणीयं अस्समं सुगुत्तं पण्णसालं मनोरमं चङ्कमं च मापेसि। भगवा पन तदा अत्तनो पुञ्ञानुभावेन निप्फन्नं तं अस्समपदं सन्धाय सारिपुत्त, तस्मिं धम्मकपब्बते—

अस्समो सुकतो मय्हं पण्णसाला सुमापिता।
चङ्कमं तत्थ मापेसिं पञ्चदोसविवज्जितं॥ ति

आह।

वाचको हेत्थ वाकसद्दो।

गुणे ति गुणेहि। पवत्तफलं ति सयं पतितफलं। आदियिं ति परिभुञ्जि अहं।

तत्थ तस्मिं अस्समे। पधानं वीरियं। निसज्जट्ठानचङ्कमे निसज्जाय ठानेन चङ्कमेन च, पदहिं अकासिं। सत्ताहे सत्ताहस्स अब्भन्तरम्हि अभिञ्ञाबलं पापुणिं[1]। अभिञ्ञाबलं ति[2] वत्तब्बे सुखुच्चारणत्थं निग्गहितलोपं कत्वा अभिञ्ञाबल इति वुत्तं। पापुणिं तीति इतिसद्दो परिसमापनत्थो वेदितब्बो। कस्मा? वुत्तं हेतं बुद्धवंसे ति एत्थ एतं ति पदस्स सरूपनिदस्सनस्स इतिसद्दस्स ननु 'रित्ता सब्बसङ्खारा' ति इति च[3] वक्खमानत्ता[4]।

तत्था ति पाळियं समुदायाधारो। पाळिया ति पदं वुत्ता ति पदे करणं। अस्समं पण्णसाला चङ्कमा ति पि अत्थि। सहत्था ति अत्तनो हत्थेन। अयं पनेत्थ अत्थो ति एत्थ अस्समो सुकतो ति आदिवचने, अयं अधिप्पायो। पनसद्दो विसेसत्थो। हिसद्दो वित्थारजोतको। अज्झोगाहेत्वा ति पविसित्वा। तं ति तं अस्समपदं। पुञ्ञानुभावेन निप्फन्नं तं ति पि अत्थि[5]। सन्धाय आहा ति सम्बन्धो।

---

*बुद्धवंसस्स सुमेधपत्थनायं आगता १-३३ गाथायो इध समत्ता। जातकट्ठनिदानकथायं पि दूरेनिदाने इमा १२-४४ परियन्तं दिस्सन्ति। †जातकट्ठनिदानकथायं दूरेनिदाने गाथारहितो भागो इतो आरब्भति, पि० १४-२६।

१. नत्थि-म०। २. अभिञ्ञासङ्खातं बलं ति-सी०। ३. चवने-सी०। ४. द० निदानट्ठकथा, पि० २४। ५. अत्थो-सी०।

तत्थ 'सुकतो मय्हं' ति सुकतो मया। 'पण्णसाला सुमापिता' ति पण्णच्छदनसाला पि मे सुमापिता अहोसि। **'पञ्चदोसविवज्जितं'** ति पञ्चिमे चङ्कमणदोसा नाम थद्धविसमता, अन्तो रुक्खता, गहणच्छन्नता, अतिसम्बाधता, अतिविसालता ति।

थद्धविसमभूमिभागस्मिं हि चङ्कमे चङ्कमन्तस्स पादा रुजन्ति, फोटा उट्ठहन्ति, चित्तं एकग्गतं न लभति, कम्मट्ठानं विपज्जति। मुदुसमतले पन फासुविहारं आगम्म कम्मट्ठानं सम्पज्जति। तस्मा थद्धविसमभूमिभागता एको दोसो ति वेदितब्बो। चङ्कमन्तस्स अन्तो वा मज्झे वा कोटियं वा रुक्खे सति पमादमागम्म चङ्कमन्तस्स नलाटं वा सीसं वा पटिहञ्ञतीति, अन्तरुक्खता दुतियो दोसो। तिणलतादिगहणच्छन्ने चङ्कमे चङ्कमन्तो अन्धकारवेलायं उरगादिके पाणे अक्कमित्वा वा मोरति, तेहि वा दट्ठो दुक्खं आपज्जतीति गहणच्छन्नता ततियो दोसो। अतिसम्बाधे चङ्कमे आयामतो रतनिके वा अड्ढरतनिके वा चङ्कमन्तस्स परिच्छेदे पक्खलित्वा नखा पि अङ्गुलियो पि भिज्जन्तीति अतिसम्बाधता चतुत्थो दोसो। अतिविसाले चङ्कमन्तस्स चित्तं विधावति, एकग्गतं न लभतीति अतिविसालता पञ्चमो दोसो। पुथुलतो पन दियड्ढरतनं द्वीसु पस्सेसु रतनमत्तं अनुचङ्कमनं, दीघतो सट्ठिहत्थं मुदुतलं समविप्पकिण्णवालुकं चङ्कमणं वट्टति। चेतियगिरिम्हि दीपप्पसादकमहिन्दत्थेरस्स चङ्कमणं विय तादिसं अहोसि। तेनाह--'चङ्कमं तत्थ मापेसिं पञ्चदोसविवज्जितं' ति।

तत्था ति[1] अस्समो ति आदि (४०-म०)-पदेसु निद्धारणं। थद्धं विसमं यस्मिं तं थद्धविसमं। थद्धविसमस्स भावो थद्धविसमता। अन्तो रुक्खो यस्स तं अन्तोरुक्खो[2], अन्तोरुक्खस्स भावो अन्तोरुक्खता। तिणादिगहनेन छन्नं यस्मिं तं गहनच्छन्नं, तस्स भावो गहनच्छन्नता। अतिसम्बाधस्स भावो अतिसम्बाधता। अतिविसालस्स भावो अतिविसालता।

थद्धा च सा विसमा चा ति थद्धविसमा। थद्धविसमा एव भूमि थद्धविसमभूमि। थद्धविसमभूमिया भागो कोट्ठासो यस्स चङ्कमस्स तं थद्धविसमभूमिभागं। तस्स भावो थद्धविसमभूमिभागता। तेहि वा ति उरगादिपाणेहि। रतनिके ति रतनं पमाणमस्सत्थीति रतनिकं। एत्थ हत्थप्पमाणं ति अत्थो। अड्ढरतनिके ति अड्ढहत्थप्पमाणे[3]। पुथुलतो ति वित्थारतो। पिसद्दो पनसद्दस्स अत्थे वत्तति। पुथुलतो पना ति पि अत्थि। अड्ढेन दुतियं दियड्ढं। दियड्ढं रतनं[4] यस्स तं दियड्ढरतनं। दियड्ढहत्थप्पमाणं ति अत्थो। रतनस्स मत्तं पमाणं रतनमत्तं। खुद्दकं चङ्कमं अनुचङ्कमं। रतनमत्तं (४९-सी०) अनुचङ्कमं यस्स तं रतनमत्तं अनुचङ्कमं। रतनमत्त-अनुचङ्कमं ति वत्तब्बे निग्गहितागमं कत्वा रतनमत्तं अनुचङ्कमं ति वुत्तं। रतनमत्तचङ्कमं ति पि अत्थि। समविप्पकिण्णा वाळुका यस्मिं तं समविप्पकिण्णवाळुकं।

दियड्ढरतनं रतनमत्तं अनुचङ्कमं ति पदद्वयं चङ्कमं ति पदस्स विसेसनं। पस्सेसू ति पदं रतनमत्तं अनुचङ्कमं ति पदे आधारो। दियड्ढरतनादिगुणसमन्नागतं चङ्कमम्पि वट्टति। किमिवा ति ? आह-चेतियगिरिम्हि.....प.....चङ्कमनं विया ति। चेतियगिरिम्हीति पदं चङ्कमं

---

१. ०पदं-सी०। २. ०रुक्खं-सी०। ३. अड्ढेन हत्थ०-सी०। ४. रतनानं दियड्ढरतनं, दियड्ढरतनं-सी०।

'अट्ठगुणसमुपेतं' ति अट्ठहि समणसुखेहि उपेतं। अट्ठिमानि समणसुखानि नाम—धनधञ्ञपरिग्गहाभावो, अनवज्जपिण्डपातपरियेसनभावो, निब्बुतपिण्डपातभुञ्जनभावो, रट्ठं पीळेत्वा घनसारं वा सीसकहापणादीनि वा गण्हन्तेसु राजकुलेसु रट्ठपीळनकिलेसाभावो, उपकरणेसु निच्छन्दरागभावो, चोरविलोपे निब्भयभावो, राज-राजमहामत्तेहि असंसट्ठभावो, चतूसु दिसासु अप्पटिहतभावो ति। इदं वुत्तं होति—

'यथा तस्मिं अस्समे वसन्तेन सक्का होन्ति इमानि अट्ठ समणसुखानि विन्दितुं, एवं अट्ठगुणसमुपेतं तं अस्समं मापेसिं' ति।

'अभिञ्ञाबलमाहरिं' ति पच्छा तस्मिं अस्समे वसन्तो कसिणपरिकम्मं कत्वा अभिञ्ञानं च समापत्तीनं च उप्पादनत्थाय अनिच्चतो दुक्खतो विपस्सनं आरभित्वा थामप्पत्तं विपस्सनाबलं आहरिं। यथा 'तस्मिं वसन्तो तं बलं आहरितुं सक्कोमि' एवं तं अस्समं तस्स अभिञ्ञत्थाय विपस्सनाबलस्स अनुच्छविकं कत्वा मापेसिं ति अत्थो।

'साटकं पजहिं तत्थ नवदोसमुपागतं' ति एत्थायं आनुपुब्बिकथा। तदा किर कुटिलेणचङ्कमादिपतिमण्डितं पुप्फूपगफलूपगरुक्खसञ्छन्नं, रमणीयं मधुरसलिलासयं, अपगतबाळमिगभिंसनकसकुणं, पविवेकक्खमं अस्समं मापेत्वा, अलङ्कतचङ्कमस्स उभोसु अन्तेसु आलम्बनफलकं संविधाय, निसीदनत्थाय चङ्कमवेमज्झे समतलं मुग्गवण्णसिलं मापेत्वा, अन्तोपण्णसालायं जटामण्डलवाकचीरं तिदण्डकुण्डिकादिके तापसपरिक्खारे, मण्डपे पानीय-कुटपानीय-सङ्खपानीयसारावानि, अग्गिसालायं अङ्गारक-

---

ति पदे आधारो। दीपप्पसादकमहामहिन्दत्थेरस्सा ति लङ्कादीपवासीनं जनानं पसादरक्खकस्स महामहिन्दत्थेरस्स[1], वड्ढकमेन सदिसं तं सुमेधपण्डितस्स वड्ढकम्मं अहोसि।

धनधञ्ञपरिग्गहाभावो ति धनधञ्ञानं परिग्गहस्स रक्खणस्स अभावो[1]। अनवज्जपिण्डपरियेसनभावो ति अनवज्जस्स पिण्डकस्स परियेसनभावो। निब्बुतपिण्डभुञ्जनभावो[2] ति रट्ठं पिळेत्वा अग्गहणवसेन निब्बुतस्स समितस्स पिण्डस्स भुञ्जनभावो। घनसारं ति रट्ठवासीहि अनुभवितब्बपीळाभावो। उपकरणेसू ति अलङ्कारादि-उपकरणेसु। नत्थि छन्दरागो अस्सा ति निच्छन्दरागो, तस्स भावो निच्छन्दरागभावो[3]। नत्थि पटिहतं अस्सा ति अप्पटिहतो, तस्स भावो अप्पटिहतभावो। चतूसु दिसासु गमनकाले केहि चि अनिवारितभावो ति अत्थो। इदं वुत्तं ति यथा····प····मापेसिं इति इदं वचनं भगवता वुत्तं।

पुप्फं उपगच्छन्ति पवत्तनवसेना ति पुप्फूपगा। कुटि च लेणञ्च चङ्कमञ्च कुटिलेणचङ्कमं, तं आदि येसं ते (४१–म०) कुटिलेणचङ्कमादयो, तेहि मण्डितो कुटिलेणचङ्कमादिमण्डितो। मधुरं सलिलं मधुरसलिलं, मधुरसलिलस्स आसयो यस्मिं सो मधुरसलिलासयो। बाळमिगा च भिंसनकसकुणा च बाळमिगभिंसनकसकुणा, अपगता बाळमिगभिंसनकसकुणा एतस्मा ति अपगत····प····सकुणो। पविवेकक्खमं ति पविवेकस्स अनुरूपं। जटामण्डलञ्च

१-१. म० पोत्थके एत्तको पाठो न दिस्सति। २. निट्ठित०–म० सब्बत्थ। ३. निच्छन्दरागता उत्तमधनं रट्ठपीळकिलेसाभावो–सी०।

पल्लदारु-आदीनीति एवं यं यं पब्बजितानं उपकाराय संवत्तति तं सब्बं मापेत्वा पण्णसालाभित्तियं 'ये केचि पब्बजितुकामा इमे परिक्खारे गहेत्वा पब्बजन्तु' ति अक्खरानि छिन्दित्वा, देवलोकमेव गते विस्सकम्मे देवपुत्ते सुमेधपण्डितो हिमवन्तपादे गिरिकन्दरानुसारेन अत्तनो निवासानुरूपं फासुकट्ठानं ओलोकेन्तो नदीनिवत्तने विस्सकम्मनिम्मितं सक्कदत्तियं रमणीयं अस्समं दिस्वा, चङ्कमणकोटिं गन्त्वा पदवळञ्जं अपस्सन्तो धुवं पब्बजिता धुरगामे भिक्खं परियेसित्वा, किलन्तरूपा आगन्त्वा पण्णसालं पविसित्वा निसिन्ना भविस्सन्तीति चिन्तेत्वा थोकं आगमेत्वा 'अतिविय चिरायन्ति जानिस्सामी' ति पण्णसालाकुटिद्वारं विवरित्वा अन्तो पविसित्वा इतो चितो च ओलोकेन्तो महाभित्तियं अक्खरानि वाचेत्वा 'मय्हं कप्पियपरिक्खारा एते, इमे गहेत्वा पब्बजिस्सामी' ति अत्तनो निवत्थपारुतं साटकयुगं पजहिं। तेनाह—

'साटकं पजहिं तत्था' ति। एवं पविट्ठो अहं सारिपुत्त, तस्सं पण्णसालायं साटकं पजहिं।

'नवदोसमुपागतं' ति साटकं पजहन्तो नव दोसे दिस्वा पजहिं ति दीपेति। तापसपब्बज्जं पब्बजितानं हि साटकस्मिं नव दोसा उपट्ठहन्ति। महग्घभावो एको दोसो, परपटिबद्धताय उप्पज्जनभावो एको, परिभोगेन लहुं किलिस्सनभावो एको, किलिट्ठो च धोवितब्बो च रञ्जितब्बो च होति; परिभोगेन जीरणभावो एको, जिण्णस्स हि तुन्नं वा अग्गलदानं वा कातब्बं होति; पुन परियेसनाय दुरभिसम्भवभावो एको, तापसपब्बज्जाय असारुप्पभावो एको, पच्चत्थिकानं साधारणभावो एको, यथा हि नं

वाकचीरञ्च तिदण्डञ्च कुण्डिका च जटा....प....कुण्डिका, ता आदयो (५०–सी०) येसं ते जटा....प....कुण्डिकादयो। तापसानं परिक्खारा तापसपरिक्खारा। जटामण्डलवाकचीरतिदण्डककुण्डिकादयो च ते तापसपरिक्खारा चा ति जटा....प....परिक्खारा। पानीयघटो[1] च[1] पानीयसङ्खो च पानीयसरावो च पानीय....प.. सरावानि। अङ्गारकपल्लदारु-आदीनि मापेत्वा ति सम्बन्धो। अङ्गारकपल्लदारूनि च[2] तानि आदीनि येसं तानि अङ्गारकपल्लदारु-आदीनि। यं यं ति परिक्खारं। भित्तियं ति पदं छिन्दित्वा ति पदे आधारो। गते ति पदं ओलोकेन्तो ति पदे भावलक्खणं।

गिरिकन्दरानुसारेना ति केन उदकेन दरियतीति कन्दरं। गिरिनो कन्दरं गिरिकन्दरं। गिरिकन्दरस्स अनुसारो गिरिकन्दरानुसारो, तेन। गिरिकन्दरस्स अनुपगमनेना ति अत्थो। नदीनिवत्तने ति नदिया निवत्तनट्ठाने च। धुवं ति एकन्तेन। धुरगामे ति समीपगामे ति अत्थो। किलन्तरूपा ति किलन्तसभावा। एते ति परिक्खारा। इमे परिक्खारे।

तेसू ति नवदोसेसु। तस्सा ति साटकस्स। परपटिबद्धताया ति परेन पटिबद्धभावेन। तुन्नं वा ति तुदनं तुन्नं, सूचिकम्मं ति अत्थो। अग्गळदानं ति अग्गळस्स दानं[3], पिलोतिकं कत्वा सिब्बनं ति अत्थो। दुरभिसम्भवभावो ति दुक्खेन अभिसम्भवस्स उप्पज्जनस्स भावो।

१-१. नत्थि–सी०। २. ०अङ्गारकपल्लदारूनि–सी०। ३. ०अग्गळदानं–सी०।

पच्चत्थिका न गण्हन्ति तथा गोपेतब्बं होति; परिभुञ्जन्तस्स विभूसनट्ठानभावो एको, गहेत्वा चरन्तस्स खन्धभारमहिच्छभावो एको ति ।

'वाकचीरं निवासेसिं' ति तदाहं सारिपुत्त, इमे नव दोसे दिस्वा साटकं पहाय वाकचीरं निवासेसिं । मुञ्जतिणं हीरहीरं कत्वा गन्थेत्वा कतवाकचीरनिवासनपारुपणत्थाय आदियिं ति अत्थो ।

'द्वादसगुणमुपागतं' ति द्वादसहि आनिसंसेहि समन्नागतं । वाकचीरस्मिं हि द्वादसानिसंसा । अप्पग्घं सुन्दरं कप्पियं ति अयं ताव एको आनिसंसो, सहत्था कातुं सक्का ति अयं दुतियो, परिभोगेन सणिकं किलिस्सति धोवियमाने पि पपञ्चो नत्थीति अयं ततियो, परिभोगेन जिण्णे पि सिब्बितब्बाभावो चतुत्थो, पुन परियेसन्तस्स सुखेन करणभावो पञ्चमो, तापसपब्बज्जाय सारुप्पभावो छट्ठो, पच्चत्थिकानं निरुपभोगभावो सत्तमो, परिभुञ्जन्तस्स विभूसनट्ठानाभावो अट्ठमो, धारणसल्लहुकभावो नवमो, चीवरपच्चये अप्पिच्छभावो दसमो, वाकुप्पत्तिया धम्मिक-अनवज्जभावो एकादसमो, वाकचीरे नट्ठे पि अनपेक्खभावो द्वादसमो ति ।

'अट्ठदोससमाकिण्णं पजहिं पण्णसालकं' ति कथं पजहिं ? सो किर वरसाटकयुगं ओमुञ्चन्तो चीवरवंसे लग्गितं अनोजदामसदिसं रत्तं वाकचीरं गहेत्वा, निवासेत्वा तस्सुपरि अपरं सुवण्णवण्णं वाकचीरं परिदहित्वा, पुन्नागपुप्फसन्थरसदिसं सखुरं अजिनचम्मं एकंसं कत्वा, जटामण्डलं पटिमुञ्चित्वा चूळाय सद्धिं निच्चलभावकरणत्थं सारसूचिं पवेसेत्वा, मुत्ताजालसदिसाय सिक्काय पवालवण्णकुण्डिकं ओदहित्वा, तीसु ठानेसु वङ्कं काजं आदाय एकिस्सा काजकोटिया कुण्डिकं एकिस्सा अङ्कुसपच्छि तिदण्डकादीनि ओलम्बेत्वा, खारिभारं अंसे कत्वा, दक्खिणेन हत्थेन कत्तरदण्डं गहेत्वा पण्णसालतो निक्खमित्वा, सट्ठिहत्थमहाचङ्कमे अपरं परं चङ्कमन्तो

पच्चत्थिकानं ति चोरानं । नं ति साटकं । विभूसनत्थानभावो ति मण्डनकरणभावो[1] । खन्धभारमहिच्छभावो ति[2] खन्धेन भारेन महती इच्छा यस्स सो खन्धभारमहिच्छभावो । खन्धे वत्थं कत्वा हरणवसेन महिच्छभावो ति अत्थो ।

हीरं हीरं ति अवयवं अवयवं । सणिकं ति[3] समेन । वाकुप्पत्तिया[4] वाकस्स उप्पत्तिया ।

सारसूचिं ति दन्तमयसूचिं । काजकोटिया ओलग्गेत्वा । खारिभारं ति[5] तापसपरिक्खारकाजभारं । कत्तरदण्डं ति कत्तरेन दुब्बलेन गहेतब्बं दण्डं । जिण्णकाले गहेतब्बदण्डं ति अत्थो । निक्खन्तोस्मि[6] नेक्खम्मं पब्बज्जं निक्खन्तो पब्बजितो अस्मि भवामि । खारिकाजं ति तापसानं परिक्खारकाजं । भरिकाजं ति पि अत्थि । बिदळमञ्चकपस्से ति[7] (४२-म०) वेत्तलताय बिदळ-

१. ०कारणभावो-सी० । २. ०खन्धभारो । खन्धभारो-सी० । ३. संतिकं ति-सी० । ४. ०ति-सी० । ५. खारिकाजं ति-म० । ६. ०स्मि-सी० । ७. वीतमञ्चक०-म० ।

अत्तनो वेसं आलोकेत्वा 'मय्हं मनोरथो मत्थकं पत्तो, सोभति वत मे पब्बज्जा, बुद्धादीहि सब्बेहि वीरपुरिसेहि वण्णिता थोमिता अयं, पब्बज्जा नाम; पहीणं मे गिहीबन्धनं, निक्खन्तोस्मि नेक्खम्मं, लद्धो मे उत्तमपब्बज्जा, करिस्सामि समणधम्मं, लभिस्सामि मग्गफलसुखं' ति उस्साहजातो खारिकाजं ओतारेत्वा, चङ्कमवेमज्झे मुग्गवण्णसिलापट्टे सुवण्णपटिमा विय निसिन्नो दिवसभागं वीतिनामेत्वा सायण्हसमयं पण्णसालं पविसित्वा बिदळमञ्चकपस्से कट्ठत्थरिकाय निपन्नो सरीरं उतुं गाहापेत्वा बलवपच्चूसे पबुज्झित्वा अत्तनो आगमनं आवज्जेसि—

अहं घरावासे आदीनवं दिस्वा अमितभोगं अनन्तं यसं पहाय अरञ्ञं पविसित्वा नेक्खम्मगवेसको हुत्वा पब्बजितो। इतोदानि पट्ठाय पमादचारं चरितुं न वट्टति। पविवेकं हि पहाय विचरन्तं मिच्छावितक्कमक्खिका खादन्ति। इदानि मया विवेकं अनुब्रूहेतुं वट्टति। अहं हि घरावासं पळिबोधतो दिस्वा निक्खन्तो। अयं च मनापा पण्णसाला, बेलुवपक्कवण्णा परिभण्डकता भूमि, रजतवण्णा सेतभित्तियो, कपोतपादवण्णं पण्णच्छदनं, विचित्तत्थरकवण्णो बिदळमञ्चको, निवासफासुकं वसनट्ठानं; न एत्तो अतिरेकतरा विय मे गेहसम्पदा पञ्ञायतीति पण्णसालाय दोसे विचिनन्तो अट्ठ दोसे पस्सि।

पण्णसालापरिभोगस्मिं हि अट्ठ आदीनवा—महासमारम्भेन दब्बसम्भारे समोधानेत्वा करणपरियेसनभावो एको आदीनवो। तिणपण्णमत्तिकासु पतितासु तासं पुनप्पुनं ठपेतब्बताय निबद्धजग्गनभावो दुतियो। सेनासनं नाम महल्लकस्स पापुणाति अवेलाय वुट्ठापियमानस्स चित्तेकग्गता न होतीति उट्ठापनियभावो ततियो। सीतुण्हपटिघातेन कायस्स सुखुमालकरणभावो चतुत्थो। गेहं पविट्ठेन यं किञ्चि पापं सक्का कातुं ति गरहपटिच्छादनभावो पञ्चमो। मय्हं ति परिग्गहकरणभावो छट्ठो। गेहस्स अत्थिभावो नाम सदुतियकवासो ति सत्तमो। ऊकामङ्कुणघरगोळिकादीनं साधारण-

---

मञ्चकस्स पस्से। विरळमञ्चकस्स पस्से ति पि (५१-सी०) अत्थि। कट्ठत्थरिकाया ति कट्ठा एव अत्थरिका कट्ठत्थरिका। अत्थरितपदरकट्ठस्मिं ति अत्थो। बलवपच्चूसे ति पच्छिमयामे।

नेक्खमगवेसको ति निब्बानगवेसको। मिच्छावितक्कमक्खिका ति कामवितक्कादिमिच्छावितक्कसङ्खातमक्खिका। अनुब्रूहेतुं ति[1] वड्ढेतुं।

वेळुवपक्कवण्णा ति पदं भूमीति पदस्स विसेसनं। परिभण्डं कतं यस्मा सा परिभण्डकता। कतभूमिकम्मा ति अत्थो। हंसपादवण्णं ति कपोतपादसदिसं। कपोतपादवण्णं ति पि अत्थि।

सीतुण्हपटिघातेना ति सितुण्हानं विनोदनेन। ऊका च मङ्गुला च घरगोळिका च ऊकाङ्गुलाघरगोळिका। ता आदयो येसं सत्तानं ते ऊका''''प''''दयो।

---

१. अनुब्यूहेतुं ति-म०।

ताय बहुसाधारणभावो अट्ठमो इति। इमे अट्ठ आदीनवे दिस्वा महासत्तो पण्णसालं पजहि। तेनाह—'अट्ठदोससमाकिण्णं पजहिं पण्णसालकं' ति।

'उपागमिं रुक्खमूलं गुणे दसहुपागतं' ति छन्नं पटिक्खिपित्वा दसहि गुणेहि उपेतं रुक्खमूलं उपागतोस्मीति वदति। तत्रिमे दस गुणा—अप्पसमारम्भता एको गुणो,उपगमनमत्तकमेव हि तत्थ होतीति। अप्पजग्गनता दुतियो, तं हि सम्मट्ठम्पि असम्मट्ठम्पि परिभोगफासुकं होति येव। अनुट्ठापनियभावो ततियो। गरहं न पटिच्छादेति, तत्थ हि पापं करोन्तो लज्जतीति गरहाय अपटिच्छन्नभावो चतुत्थो। अब्भोकासो विय कायं न सन्थम्भेतीति कायस्स असन्थम्भनभावो पञ्चमो। परिग्गहकरणाभावो छट्ठो। गेहालयपटिक्खेपो सत्तमो। बहुसाधारणगेहे विय पटिजग्गिस्सामि नं निक्खमथा ति नीहरणकाभावो अट्ठमो। वसन्तस्स सप्पीतिकभावो नवमो। रुक्खमूलसेनासनस्स गतगतट्ठाने सुलभताय अनपेक्खभावो दसमो ति। इमे दसगुणे दिस्वा 'रुक्खमूलं उपगतोस्मी' ति वदति।

इमानि एत्तकानि कारणानि सल्लक्खेत्वा महासत्तो पुनदिवसे भिक्खाय गामं पाविसि। अथस्स सम्पत्तगामे मनुस्सा महन्तेन उस्साहेन भिक्खं अदंसु। सो भत्तकिच्चं निट्ठपेत्वा अस्समं आगम्म निसीदित्वा चिन्तेसि—'नाहं आहारं लभामीति पब्बजितो, सिनिद्धाहारो नामेस, मानमदपुरिसमदे वड्ढेति, आहारमूलकस्स च दुक्खस्स अन्तो नत्थि। यन्नूनाहं वापितरोपितधञ्ञनिब्बत्तं आहारं पजहित्वा पवत्तफलभोजनो भवेय्यं' ति। सो ततो पट्ठाय तथा कत्वा घटेन्तो वायमन्तो सत्ताहब्भन्तरे येव अट्ठ समापत्तियो पञ्च च अभिञ्ञा निब्बत्तेसि। तेन वुत्तं*—

वापितं रोपितं धञ्ञं पजहिं निरवसेसतो।
अनेकगुणसम्पन्नं पवत्तफलमादियिं॥
तत्थप्पधानं पदहिं निसज्जट्ठानचङ्कमे।
अब्भन्तरम्हि सत्ताहे अभिञ्ञाबलपापुणिं ति॥
एवं मे सिद्धिपत्तस्स वसीभूतस्स सासने।
दीपङ्करो नाम जिनो उप्पज्जि लोकनायको॥

छन्नं ति गेहं। तत्रा ति रुक्खमूले। तं[1] हीति[1] हि सच्चं, तं रुक्खमूलं। तत्थ हीति हि सच्चं, तत्थ रुक्खमूले। परिग्गहकरणाभावो ति[2] विचारकरणस्स[3] अभावो। नं ति रुक्खमूलं।

मानमदपुरिसमदं ति मानवसेन अत्तानं उक्खिपित्वा उप्पन्नो मदो मानमदो नाम। पुरिसभावं निस्साय उप्पन्नो मदो पुरिसमदो नाम, छन्दरागो।

सिद्धिप्पत्तस्स पञ्चाभिञ्ञाप्पत्तस्स। सासने तापससासने झानाभिञ्ञासङ्खाते सासने च। वसीभूतस्स पञ्चवसीभूतस्स सतो। मे मयि एवंभूते। दीपङ्करो नाम लोकनायको जिनो उप्पज्जि। मे ति अनादरलक्खणे सामिवचनं।

---

* इतो पट्ठाय द० बुद्धवंसे २:३२–१८७ ततो ३:१–३० गा० ३०७–३२२ पि०; जातकट्ठकथायं च २६-७२ पि० गाथाभागमत्तं।

१-१. हीति–म०। २. परिग्गहणाभावो ति–म०। ३. विचारणस्स–म०।

उप्पज्जन्ते च जायन्ते बुज्झन्ते धम्मदेसने ।
चतुरो निमित्ते नाद्दसं झानरतिसमप्पितो ॥

पच्चन्तदेसविसये निमन्तेत्वा तथागतं ।
तस्स आगमनं मग्गं सोधेन्ति तुट्ठमानसा ॥

अहं तेन समयेन निक्खमित्वा सकस्समा ।
धुनन्तो वाकचीरानि गच्छामि अम्बरे तदा ॥

वेदजातं जनं दिस्वा तुट्ठहट्ठं पमोदितं ।
ओरोहित्वान गगना मनुस्से पुच्छि तावदे ॥

तुट्ठहट्ठो पमुदितो वेदजातो महाजनो ।
कस्स सोधीयति मग्गो अञ्जसं वटुमायनं ॥

उप्पज्जन्ते पटिसन्धिग्गहणकाले । जायन्ते मातुकुच्छितो निक्खमनकाले । बुज्झन्ते अनुत्तरं सम्मा सम्बोधिं बुज्झनकाले । धम्मदेसने धम्मचक्कदेसनकाले । चतुरो निमित्ते चत्तारि निमित्तानि । झानरतिसमप्पितो समापत्तिसुखेन समङ्गीभूतो । अहं न अद्दसं एतानि निमित्तानि । कस्मा चतुरो निमित्ते ति वुत्तं । यदि पि एतानि बहूनि, चतूसु ठानेसु पन पवत्तत्ता चतुरो निमित्ते ति वुत्तं । झानरतिसमप्पितो ति विसेसनपदं न अद्दसं ति पदे हेतु ।

पच्चन्तदेसविसये ति मज्झिमदेसस्सेव एकपस्से पच्चन्तदेससञ्ञिते जनपदे । तस्स आगमनमग्गं ति तेन आगन्तब्बमग्गं ति अत्थो ।

तेन समयेन तस्मिं समये । अहं सकस्समा अत्तनो अस्समा निक्खमित्वा वाकचीरानि (५२-सी०) धूनन्तो[1] तदा[2] तस्मिं काले, अम्बरे आकासे, गच्छामि ।

वेदजातं ति सञ्जातसोमनस्सं । तुट्ठहट्ठं[3] पमोदितं[4] इमानि तीणि पदानि अञ्ञमञ्ञं वेवचनानि ।

महाजनो तुट्ठहट्ठो पमोदितो वेदजातो हुत्वा मग्गं सोधेति । मग्गो अञ्जसं वटुमायनं (४३-म०) महाजनेन कस्स अत्थाय सोधियति । सोधेतीति पदं आनेत्वा योजेतब्बं, कस्मा ? टीकायं सोधेति जनो ति दस्सनतो । अथवा सुखेन तुट्ठं पीतिया हट्ठं । पामोज्जेन पमोदितं । महाजनो तुट्ठहट्ठो पमुदितो वेदजातो अहोसि । अहं तं महाजनं दिस्वा तुम्हेहि कस्स जनस्स अञ्जसं वटुमायनं[5] सोधियति इति पुच्छि । अथवा तुट्ठहट्ठो पमोदितो ति आदिसु ततियत्थे पठमा । तस्मा अत्थो एवं वेदितब्बो तुट्ठहट्ठो[6] पमुदितो[7] वेदजातो[8] अहोसि । अहं तं महाजनं दिस्वान वेदजातेन[9] कस्स जनस्स अञ्जसं वटुमायनं मग्गो सोधियति इति पुच्छि अहं ति ।

---

१. धूनतो-सी० । २. तथा-सी० । ३. ०हत्थं-सी० । ४. पमुदितन्ति-सी० । ५. ०मग्गो-सी० । ६. तुट्ठहट्ठेन-सी० । ७. पमुदितेन-सी० । ८. वेदजातेन-सी० । ९. ०महाजनेन-सी० ।

ते मे पुट्ठा ब्याकरिंसु बुद्धो लोके अनुत्तरो।
दीपङ्करो नाम जिनो उप्पज्जि लोकनायको॥
तस्स सोधीयति मग्गो अञ्जसं वटुमायनं।
बुद्धो ति मम सुत्वान पीति उप्पजि तावदे॥
बुद्धो बुद्धो ति कथयन्तो सोमनस्सं पवेदयिं।
तत्थ ठत्वा विचिन्तेसिं तुट्ठो संविग्गमानसो॥

इध बीजानि रोपिस्सं खणो वे मा उपच्चगा।
यदि बुद्धस्स सोधेथ एकोकासं ददाथ मे॥
अहम्पि सोधयिस्सामि अञ्जसं वटुमायनं।
अदंसु ते ममोकासं सोधेतुं अज्जसं तदा॥
बुद्धो बुद्धो ति चिन्तेन्तो मग्गं सोधेमहं तदा।
अनिट्ठिते ममोकासे दीपङ्करो महामुनि॥

पथिकेहि मग्गियते ति मग्गो। 'मग्ग'-अन्वेसने। अञ्जति गच्छति एतेना ति अञ्जसं। 'अञ्ज'-गतियं। **यदादिना** सुत्तेन असो[1]। वजति गच्छति एतेना ति वटुमो। 'वज'-गतियं। **यदादिना** उमपच्चयो। जकारस्स टो। अयति गच्छति एतेना ति अयनं। 'अय'-गतियं। वटुमो एव अयनं वटुमायनं।

सुत्वाना ति हेत्वत्थे त्वान-पच्चयो। तत्था ति ट्ठाने।

इध बीजानि रोपिस्सं ति इमस्मिं दीपङ्करसम्मासम्बुद्धे बीजानि सद्धाबीजानि रोपिस्सं। खणो वे मा उपज्झगा ति अट्ठक्खणविरहितो नवमो खणो मा मं अतिक्कमि। वे ति निपातमत्तं। अट्ठक्खणविरहितो नवमो खणसन्निपातो अतिदुल्लभो, सो मया पटिलद्धो, सो मा मं अतिक्कमितू[2] ति अधिप्पायो।

तयो अपाया आरुप्पा सञ्ञी[3] पच्चन्तिमम्पि च।
पञ्चिन्द्रियानं वेकल्लं मिच्छादिट्ठि च दारुणा॥
अपातुभावो बुद्धस्स सद्धम्मामतदायिनो[4]।
अट्ठक्खणा असमया इति एवं[5] पकासिता[6]॥
अट्ठक्खणविनिम्मुत्तं खणं परमदुल्लभं।
उपलद्धेन कातब्बं पुञ्ञं पञ्ञवता सदा ति[7]॥

हि **लोकदीपकसारे** वुत्तं।

---

१. सो०–सी०। २. अतिक्कमतू ति–सी०। ३. सञ्ञं–सी०। ४. सद्धम्ममत०–म०। ५. एते–सी०। ६. तु०–नरकप्रेततिर्यञ्चो म्लेच्छा दीर्घायुषोऽमराः।
मिथ्यादृग्बुद्धकान्तारौ मूकताष्टाविहाक्षणाः॥ बोधिचर्या०, पृ० ५।
७. तु०–क्षणसम्पदियं सुदुर्लभा प्रतिलब्धा पुरुषार्थसाधनी।
यदि नात्र विचिन्त्यते हितं पुनरप्येष समागमः कुतः॥– बोधिचर्या०, पृ० ४।

चतूहि सतसहस्सेहि छळभिञ्ञेहि तादिहि ।
खीणासवेहि विमलेहि पटिपज्जि अञ्जसं जिनो ॥
पच्चुग्गमना वत्तन्ति वज्जन्ति भेरियो बहू ।
आमोदिता नरमरू साधुकारं पवत्तयुं ॥
देवा मनुस्से पस्सन्ति मनुस्सा पि च देवता ।
उभो पि ते पञ्जलिका अनुयन्ति तथागतं ॥

देवा दिब्बेहि तुरियेहि मनुस्सा मानुसकेहि च ।
उभो पि ते वज्जयन्ता अनुयन्ति तथागतं ॥
दिब्बं *मन्दारवं पुप्फं पदुमं पारिच्छत्तकं ।
दिसोदिसं ओकिरन्ति आकासनभगता मरू* ॥

दिब्बं चन्दनचुण्णं च वरगन्धं च केवलं ।
दिसोदिसं ओकिरन्ति आकासनभगता मरू ॥
चम्पकं सळलं नीपं नागपुन्नागकेतकं ।
दिसोदिसं उक्खिपन्ति भूमितलगता नरा ॥
केसे मुञ्चित्वाहं तत्थ वाकचीरं च चम्मकं ।
कलले पत्थरित्वान अवकुज्जो निपज्जहं ॥

अक्कमित्वान मं बुद्धो सह सिस्सेहि गच्छतु ।
मा नं कलले अक्कमित्थ हिताय मे भविस्सति ॥

तादीहि निट्ठाकारेहि[1] । पञ्जलिका ति पग्गहित-अञ्जलिका । अनुयन्ति तथागतस्स (५३-सी०) पच्छतो यन्ति । अनुयोगे सति सामि-अत्थे उपयोगवचनं होति ।

उभो पि ते ति देवमनुस्सा । वज्जयन्ता ति वादेन्ता । दिसोदिसं ति दिसतो दिसं । आकासेन गता ति नभस्मिं गता ।

नीपं ति[2] कदम्बपुप्फं । नागपुन्नागकेटकं ति नागपुप्फं पुन्नागपुप्फं केटकपुप्फं च । भूमितलगता ति भूमियं गता ।

तत्था ति ठाने । चम्मकं ति चम्मखण्डं । कलले ति चिक्खल-दुग्गे[3] । अवकुज्जो ति अधोमुखो हुत्वा ।

(४४-म०) मा नं ति एत्थ मा ति पटिसेधत्थे[4] निपातो । अतिक्कमित्वा ति पि अत्थि । एवं सति एवं योजना कातब्बा—बुद्धो मं अतिक्कमित्वान कलले मा अक्कमित्वा सिस्सेहि[5] गच्छतु, तं बुद्धस्स मं अक्कमनं मे हिताय भविस्सतीति ।

-. निदानकथायं नत्थियं गाथा ।

१. निब्बिकारेहि-सी० । २. निम्बं ति-म० । ३. ०कद्दमे-सी० । ४. पटिनिसेधत्थे-सी० । ५. ०सह-सी० ।

पथवियं निपन्नस्स एवं मे आसि चेतसो ।
इच्छमानो अहं अज्ज किलेसे झापये मम ॥
किं मे अञ्ञातवेसेन धम्मं सच्छिकतेनिध ।
सब्बञ्ञुतं पापुणित्वा बुद्धो हेस्सं सदेवके ॥

किं मे एकेन तिण्णेन पुरिसेन थामदस्सिना ।
सब्बञ्ञुतं पापुणित्वा सन्तारेस्सं सदेवके ॥

इमिना मे अधिकारेन कतेन पुरिसुत्तमे ।
सब्बञ्ञुतं पापुणित्वा तारेमि जनतं बहुं ॥

संसारसोतं छिन्दित्वा विद्धंसेत्वा तयो भवे ।
धम्मनावं समारुय्ह सन्तारेस्सं सदेवके ॥
मनुस्सत्तं लिङ्गसम्पत्ति हेतु सत्थारदस्सनं ।
पब्बज्जा गुणसम्पत्ति अधिकारो च छन्दता ॥
अट्ठधम्मसमोधाना अभिनीहारो समिज्झति ।

दीपङ्करो लोकविदू आहुतीनं पटिग्गहो ॥
उस्सीसके मं ठत्वान इदं वचनमब्रवि ।
पस्सथ इमं तापसं जटिलं उग्गतापनं ॥
अपरिमेय्यितो कप्पे बुद्धो लोके भविस्सति ।

आसि चेतसो ति चेतसो परिवितक्को अहोसि ।

इध सासने अञ्ञातवेसेन अपाकटवेसेन धम्मं सच्छिकतेन मे मया किं पयोजनं ।

दस्सिना ति थामदस्सिना अत्तनो थामबलं पस्समानेन मे मया पुरिसेन एकेन तिण्णेन किं पयोजनं । पुरिसथामदस्सिनो[1] एकस्स तिण्णस्स मम किं पयोजनं । चतुत्थीयत्थे ततिया । सदेवके ति सदेवलोके ।

अधिकारेना ति अधि विसिट्ठेन कारेन[2] बुद्धस्स मम जीवितं परिच्चजित्वा कललपिट्ठे सयनाधिकारेना ति अत्थो । तारेमि[3] तारेस्सामि ।

धम्मनावं ति अरियट्ठङ्गिकमग्गसङ्खातं नावं ।

पटिग्गहो ति पटिग्गहितुं अरहो । किलेसे तापेतीति[4] तापो[4], वीरियं । तपो अस्स अत्थीति तापसो । **णो तपा** ति (४:८५) मोग्गलानसुत्तेन णो । **मनादीनं सक्** इति (मो० ४:१२८) सुत्तेन सक् पच्चयो । जटा अस्स अत्थीति जटिलो । **पिच्छादित्विलो** ति (४:८७) मोग्गलानसुत्तेन इलो । उग्गतापनं ति उग्गतपनं[5] । अपरिमेय्ये ति माससंवच्छरादीहि मानेतुं असक्कुणेय्ये कप्पे ।

---

१. अथवा पुरिसस्स थामदस्सिनो–सी० । २. आकारेन–सी० । ३. तारेमीति–सी० । ४-४. तपेतीति तपो–सी० । ५. उग्गततापनं–सी० ।

अट्ठ कपिलव्हया रम्मा निक्खमित्वा तथागतो ॥
पधानं पदहित्वान कत्वा दुक्करकारिकं ।

अजपालरुक्खमूले निसीदित्वा तथागतो ॥
तत्थ पायासं पग्गय्ह नेरञ्जरमुपेहिति ।

नेरञ्जराय तीरम्हि पायासं अद सो जिनो ॥
पटियत्तवरमग्गेन बोधिमूलमुपेहिति ॥

ततो पदक्खिणं कत्वा बोधिमण्डं अनुत्तरो ।
अस्सत्थरुक्खमूलम्हि बुज्झिस्सति महायसो ॥
इमस्स जनिका माता माया नाम भविस्सति ।
पिता सुद्धोदनो नाम अयं हेस्सति गोतमो ॥

अनासवा वीतरागा सन्तचित्ता समाहिता ।
कोलितो उपतिस्सो च अग्गा हेस्सन्ति सावका ॥

अजपालरुक्खमूले ति तस्स निग्रोधस्स मूले[1] अजपाला[2] आगन्त्वा[3] निसीदन्ति । तेनस्स अजपालनिग्रोधो त्वेव नामं उदपादीति **महावग्गविनयट्ठकथायं** वुत्तं । न जपन्तीति अजपा[4] । न सज्झायका ति अत्थो । अजं पालेन्ति[5] आदियन्ति निवासं एत्था ति अजपालो[6] ।

नेरञ्जराया ति[7] [7]दोसरहितसलिलाया ति अत्थो । केचि नीलजलाया ति वत्तब्बे नेरञ्जराया ति वुत्तं ति वदन्ति । नाममेव तं तस्सा नदिया ति वेदितब्बं ति **महावग्गटीकायं** वुत्तं । विग्गहो पन एवं कातब्बो, नेलं निद्दोसं जलं अस्मि ति नेरञ्जरा । नीलं नीलवण्णं जलं अस्मि ति नेरञ्जरा ति ।

पायासं ति परमन्नं[8] । अदाति[9] अदिस्सति भक्खिस्सति । 'अद'–भुञ्जित्वा वा । उपेहीतीति[10] एस्सति गच्छिस्सति ।

ततो ति[11] ठानतो । तस्मि वा गतकाले । जनेतीति जनिया । माया ति एत्थ मा ति पटिसेधनत्थे[12] निपातो । या-सद्दो गमनवाचको । नत्थि या महाजनानं गमनं[13] एतिस्सा माया । तुम्हे मा याथ, मा गच्छथ इमिस्सा कञ्ञाय रूपसम्पत्तिं पस्सथा ति वचनमुपादाय हेतुभूताया ति माया ति नामं लभतीति अधिप्पायो ।

---

१. नत्थि–सी० । २. अजपालका–सी० । ३. गन्त्वा–सी० । ४. ०मन्तानं–सी० । ५. अजपालन्ति–म० । ६. ०ति महावग्गविनयटीकायं वुत्तं–सी० । ७–७. ०नेलजलाया ति वत्तब्बे लकारस्स रकारं (५४–सी०) कत्वा नेरञ्जराया ति वुत्तं । कद्दमसेवालपनकादि०–सी० । ८. परमं अन्नं–सी० । ९. अदति–सी० । १०. उपेहीति–म० । ११. ०हि–म० । १२. पटिसेधे–सी० । १३. नत्थि–म० ।

आनन्दो नामुपट्ठाको उपट्ठिस्सतिमं जिनं ।
खेमा उप्पलवण्णा च अग्गा हेस्सन्ति साविका ॥

अनासवा वीतरागा सन्तचित्ता समाहिता ।
बोधि तस्स भगवतो अस्सत्थो ति पवुच्चति ॥
चित्तो *च हत्थाळवको अग्गा हेस्सन्तुपट्ठका ।
उत्तरा नन्दमाता च अग्गा हेस्सन्तुपट्ठिका* ॥
इदं सुत्वान वचनं असमस्स महेसिनो ।
आमोदिता नरमरू बुद्धबीजङ्कुरो अयं ॥
उक्कुट्ठिसद्दा वत्तन्ति अप्फोटेन्ति हसन्ति च ।
कतञ्जली नमस्सन्ति दससहस्सी सदेवका ॥
यदिमस्स लोकनाथस्स विरज्झिस्साम सासनं ।
अनागतम्हि अद्धाने हेस्साम सम्मुखा इमं ॥
यथा मनुस्सा नदिं तरन्ता पटितित्थं विरज्झिय ।
हेट्ठा तित्थे गहेत्वान उत्तरन्ति महानदिं ॥
एवमेव मयं सब्बे यदि मुञ्चेमिमं जिनं ।
अनागतम्हि अद्धाने हेस्साम सम्मुखा इमं ॥
दीपङ्करो लोकविदू आहुतीनं पटिग्गहो ।
मम कम्मं पकित्तेत्वा दक्खिणं पादमुद्धरि ॥
ये तत्थासुं जिनपुत्ता पदक्खिणमकंसु मं ।
देवा मनुस्सा असुरा च अभिवादेत्वान पक्कमुं ॥
दस्सनं मे अतिक्कन्ते ससङ्घे लोकनायके ।
सयना वुट्ठहित्वान पल्लङ्कं आभुजिं तदा ॥

उपट्ठिसतिमं जिनं ति इमं जिनं ।

बुद्धबीजङ्कुरो अयं ति अयं सुमेधतापसो किर (४५-म०) बुद्धबीजं बुद्धङ्कुरो उप्पन्नो ति आमोदिता नरमरू ।

उक्कुट्ठिसद्दा ति उन्नादसद्दा । अप्फोटेन्ति[१] हत्थेहि बाहा अभिहनन्ति । विरज्झिस्सामा ति न पापुणिस्साम । हेस्सामा ति भविस्साम । इमं ति इमस्स । सामि-अत्थे उपयोगवचनं ।

पटितित्थं ति पटिमुखं तित्थं । विरज्झिया ति विरज्झित्वा ।

तत्था ति ठाने । जिनपुत्ता ति दीपङ्करसत्थुनो सावका । दस्सनं मे अतिक्कन्ते ति मम दस्सनविसयं भगवति अतिक्कन्ते जहिते[१] ।

-. जातकनिदानट्ठकथायं नत्थियं गाथा ।

१–१, म० पोत्थके नत्थि एत्तको पाठो ।

सुखेन सुखितो होमि पामोज्जेन पमोदितो ।
पीतिया च अभिस्सन्नो पल्लङ्कं आभुजिं तदा ॥
पल्लङ्केन निसीदित्वा एवं चिन्तेसहं तदा ।
वसीभूतो अहं झाने अभिञ्ञासु पारमीगतो ॥
सहस्सियम्हि लोकम्हि इसयो नत्थि मे समा ।
असमो इद्धिधम्मेसु अलभिं ईदिसं सुखं ॥
पल्लङ्काभुजने मय्हं दससहस्साधिवासिनो ।
महानादं पवत्तेसुं धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
या पुब्बे बोधिसत्तानं पल्लङ्कवरमाभुजे ।
निमित्तानि पदिस्सन्ति तानि अज्ज पदिस्सरे ॥
सीतं ब्यपगतं होति उण्हं च उपसम्मति ।
तानि अज्ज पदिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
दससहस्सी लोकधातू निस्सद्दा होन्ति निराकुला ।
तानि अज्ज पदिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
महावाता न वायन्ति न सन्दन्ति सवन्तियो ।
तानि अज्ज पदिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
थलजा दकजा पुप्फा सब्बे पुप्फन्ति तावदे ।
तेपज्ज पुप्फिता सब्बे धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
लता वा यदि वा रुक्खा फलभारा होन्ति तावदे ।
तेपज्ज फलिता सब्बे धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
आकासट्ठा च भुम्मट्ठा रतना जोतन्ति तावदे ।
तेपज्ज रतना जोतन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
मानुस्सका च दिब्बा च तुरिया वज्जन्ति तावदे ।
तेपज्जुभो अभिरवन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ।

अभिस्सन्नो ति परिप्फुटो । पल्लङ्कं आभुजिं तदा ति कतपल्लङ्को[1] हुत्वा पुप्फरासिम्हि निसीदिं ति अत्थो ।

झाने ति रूपावचरारूपावचरझाने ।

या पुब्बे ति यानि निमित्तानि पुब्बे । विभत्तिलोपं कत्वा वुत्तं ति वेदितब्बं । पदिस्सन्तीति पदिस्सिंसु ।

सवन्तियो ति नदियो ।

मानुस्सका ति मनुस्सानं सन्तका । दिब्बा ति देवानं सन्तका । तूरिया ति

आततञ्चेव विततं आततविततं घनं ।
सुसिरञ्चे ति तूरियं पञ्चङ्गिकमुदीरितं ति ॥

अभिधानप्पदीपिकायं वुत्तं । अभिरवन्तीति[2]अभिनदन्ति[2] ।

---

१. पल्लंको—म० । २-२. नत्थि—म० ।

विचित्रपुप्फा गगना अभिवस्सन्ति तावदे।
ते पि अज्ज पवस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
महासमुद्दो आभुजति दससहस्सी पकम्पति।
ते पज्जुभो अभिरवन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
निरये पि दससहस्से अग्गी निब्बन्ति तावदे।
ते पज्ज निब्बुता अग्गी धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥

विमलो होति सुरियो सब्बा दिस्सन्ति तारका।
ते पि अज्ज पदिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
अनोवट्ठेन उदकं महिया उब्भिज्जि तावदे।
तम्पज्जुब्भिज्जते महिया धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
तारागणा विरोचन्ति नक्खत्ता गगनमण्डले।
विसाखा चन्दिमा युत्ता धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
बिलासया दरीसया निक्खमन्ति सकासया।
ते पज्ज आसया छुद्धा धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
न होन्ति अरती सत्तानं सन्तुट्ठा होन्ति तावदे।
ते पज्ज सब्बे सन्तुट्ठा धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
रोगा तदुपसम्मन्ति जिघच्छा च विनस्सति।
तानि अज्ज पदिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥

रागो तदा तनु होति दोसो मोहो विनस्सति।
ते पज्ज विगता सब्बे धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
भयं तदा न भवति अज्जपेतं पदिस्सति।
तेन लिङ्गेन जानाम धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
रजोनुद्धंसति उद्धं अज्जपेतं पदिस्सति।
तेन लिङ्गेन जानाम धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥

अभिवस्सन्तीति अभिवस्सिंसु निपतिंसु। आभुजतीति ओसक्कति, वूपसमतीति अत्थो।

अनोवट्ठेना ति[1] अनोवट्ठे। भूमत्थे करणवचनं। अथवा अनोवट्ठे ति अवट्ठे पि। ना ति निपातमत्तं। अनोवट्ठेना ति पदं उब्भिज्जीति पदे आधारो। (५५–सी०) महिया ति पदं उब्भिज्जीति पदे अपादानं।

तनु होतीति ओरमत्तको होति। विगता विनट्ठा। तेन लिङ्गेना ति तेन कारणेन।

१. अनोवुट्ठेना ति–सी०।

अनिट्ठगन्धो पक्कमति दिब्बगन्धो पवायति ।
सो पज्ज वायति गन्धो धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
सब्बे देवा पदिस्सन्ति ठपयित्वा अरूपिनो ।
ते पज्ज सब्बे दिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥

यावता निरया नाम सब्बे दिस्सन्ति तावदे ।
ते पज्ज सब्बे दिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
कुड्डा कवाटा सेला च न होन्तावरणा तदा ।
आकासभूता ते पज्ज धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
चुती च उपपत्ति च खणे तस्मिं न विज्जति ।
तानि पज्ज पदिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
दळ्हं पग्गण्ह वीरियं मा निवत्त अभिक्कम ।
मयम्पेतं विजानाम धुवं बुद्धो भविस्सतीति ॥
बुद्धस्स वचनं सुत्वा दससहस्सीन चूभयं ।
तुट्ठहट्ठो पमुदितो एवं चिन्तेसहं तदा ॥
अद्वेज्झवचना बुद्धा अमोघवचना जिना ।
वितथं नत्थि बुद्धानं धुवं बुद्धो भवामहं ॥

यथा खित्तं नभे लेड्डु धुवं पतति भूमियं ।
तथेव बुद्धसेट्ठानं वचनं धुवसस्सतं ।
वितथं *नत्थि बुद्धानं धुवं बुद्धो भवामहं* ॥
यथा पि सब्बसत्तानं मरणं धुवसस्सतं ।
तथेव बुद्धसेट्ठानं वचनं धुवसस्सतं ।
वितथं *नत्थि बुद्धानं धुवं बुद्धो भवामहं* ॥
यथा रत्तिक्खये पत्ते सूरियुग्गमनं धुवं ।
तथेव बुद्धसेट्ठानं वचनं धुवसस्सतं ।
वितथं *नत्थि बुद्धानं धुवं बुद्धो भवामहं* ॥

यावता ति यत्तका । कुट्टा ति पाकारा ।

अद्वेज्झवचना ति द्वेधा अप्पवत्तवचना, एकवचना ति अत्थो । द्वे विभागा द्विधा, द्विधानं भावो द्वेज्झं । **ण्यत्तता भावे तू** ति (क० २:८:१७) ण्यो । णलोपो । धकारस्स परनयनं[1], इकारस्स ए । यवतन्त्यादोकारग्गहणेन यकारसहितधस्स ज्झो । नत्थि द्वेज्झं एतस्सा ति अद्वेज्झं । एतस्स वचनस्स द्वेज्झं नत्थि इति तस्मा तं वचनं अद्वेज्झं । अद्वेज्झं वचनं येसं ते ति[2] बुद्धा अद्वेज्झवचना ।

–. जातकनिदानट्ठकथायं नत्थायं पाठो ।

१. परागमनं–सी० । २. नत्थि–सी० ।

यथा निक्खन्तसयनस्स सीहस्स नदनं धुवं ।
तथेव बुद्धसेट्ठानं वचनं धुवसस्सतं ।
वितथं* नत्थि बुद्धानं धुवं बुद्धो भवामहं* ॥

यथा आपन्नसत्तानं भारमोरोपनं धुवं ।
तथेव बुद्धसेट्ठानं वचनं धुवसस्सतं ।
वितथं* नत्थि बुद्धानं धुवं बुद्धो भवामहं* ॥

दानपारमी

हन्द बुद्धकरे धम्मे विचिनामि इतो चितो ।
उद्धं अधो दसदिसा यावता धम्मधातुया ॥

विचिनन्तो तदा दक्खिं पठमं दानपारमिं ।
पुब्बकेहि महेसीहि अनुचिण्णं महापथं ॥
इमं त्वं पठमं ताव दळ्हं कत्वा समादिय ।
दानपारमितं गच्छ यदि बोधिं पत्तुमिच्छसि ॥

यथा पि कुम्भो सम्पुण्णो यस्स कस्सचि अधो कतो ।
वमते उदकं निस्सेसं न तत्थ परिरक्खति ॥

आपन्नसत्तानं ति आपन्ना लद्धा सत्ता पुत्ता याहि ता इत्थियो आपन्नसत्ता । भारमोरोपनं ति गब्भस्स ओरोपनं ।

हन्द युत्तं, अहं उद्धं अधो यावता दस दिसा अत्थि, तत्थ तत्थ दिसासु धम्मधातुया धम्मधातुयं बुद्धकरे बुद्धभावकारके धम्मे इतो चितो विचिनामि उपपरिक्खिस्सामीति सम्बन्धो । उद्धं अधो तत्था ति पदत्तयं धम्मधातुया ति पदे आधारो । यावता ति पदं दसदिसा ति पदस्स विसेसनं । दसदिसा ति पदं अत्थीति पदे कत्ता, धम्मधातुया ति पदं धम्मपदे समुदायाधारो । अथवा हन्द, अहं उद्धं देवलोके अधो मनुस्सलोके दसदिसासु यावता यावतिका धम्मधातुया सभावधम्मानं[1] पवत्ति, तावतिके बुद्धकरे धम्मं इतोचितो तत्थ तत्थ विचिनामि उपपरिक्खिस्सामीति सम्बन्धो । इतोचितो ति पदं विचिनामीति पदे आधारो । (४६–म०) उद्धं अधो ति पदद्वयं पवत्तीति पदे आधारो । दसदिसा ति सत्तम्यत्थे पठमा । तस्मा दसदिसा ति पदं पवत्तीति पदे आधारो ।

पुब्बकेहीति पोराणेहि बोधिसत्तेहि । दानपारमितं ति दानपारमी येव । गच्छा ति पूरय ।

यथापि यस्स कस्सचि येन केनचि उदकादिवत्थुना सम्पुण्णो अधोकतो कुम्भो निस्सेसं व उदकं वमति एव, तत्थ तं वमितं उदकं न परिरक्खतीति सम्बन्धो । यस्स कस्सचीति कर-

---

–. जातकनिदानट्ठकथायं इमा न दिस्सन्ति ।

१. ०धातुया सभावधम्मानं–सी० ।

तथेव याचके दिस्वा हीनमुक्कट्ठमज्झिमे ।
ददाहि दानं निस्सेसं कुम्भो विय अधो कतो ॥

सीलपारमी

न हेते एत्तका येव बुद्धधम्मा भविस्सरे ।
अञ्ञे पि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना ॥
विचिनन्तो तदा दक्खि दुतियं सीलपारमिं ।
पुब्बकेहि महेसीहि आसेवितनिसेवितं ॥
इमं त्वं दुतियं ताव दळ्हं कत्वा समादिय ।
सीलपारमितं गच्छ यदि बोधिं पत्तुमिच्छसि ॥

यथा पि चमरी वाळं किस्मिञ्चि पटिलग्गितं ।
उपेति मरणं तत्थ न विकोपेति वाळधिं ॥
तथेव त्वं चतूसु भूमीसु सीलानि परिपूरय ।
परिरक्ख सब्बदा सीलं चमरी विय वाळधिं ॥

नेक्खम्मपारमी

न हेते एत्तका येव बुद्धधम्मा भविस्सरे ।
अञ्ञे पि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना ॥
विचिनन्तो तदा दक्खि ततियं नेक्खम्मपारमिं ।
पुब्बकेहि महेसीहि आसेवितनिसेवितं ॥
इमं त्वं ततियं ताव दळ्हं कत्वा समादिय ।
नेक्खम्मपारमितं गच्छ यदि बोधिं पत्तुमिच्छसि ॥

णत्थे सामिवचनं । तत्था ति कम्मत्थे सत्तमी । न परिरक्खतीति न पच्चाहरतीति अधिप्पायो ।

बुद्धधम्मा ति बुद्धकरणधम्मा । बोधिपाचना ति सब्बञ्ञुतञाणपरिपाचना । आसेवितं आसेवितञ्चेव बहुलीकतञ्च ।

यथा चामरी[1] किस्मिञ्चि यत्थ कत्थचि ठाने पटिलग्गितं वाळं[2] रक्खति, तत्थ ठाने मरणं उपेति, वाळधिं न (५६–सी०) विकोपेति न छिन्दति । अथवा यथा पि वाळं वाळं[3] किस्मिञ्चि ठाने पटिलग्गितं पटिलग्गिते चामरी तत्थ मरणं उपेति वाळधिं वाळं न कोपेति । चतूसु भूमिसू ति पातिमोक्खादीसु संवरभूमिसु[4] । विभत्तानि[5] सीलानि पातिमोक्ख-इन्द्रियसंवर-आजीवपारिसुद्धि-पच्चयसन्निस्सितवसेन[6] विभत्तसीलानि, परिपूरया ति अधिप्पायो ।

१. चमरी–सी० । २. वालं–सी० । ३. पालेति–सी० । ४. चतूसु संवर०–सी० । ५. महन्तानि–सी० । ६. पातिमोक्खसंवर०–सी० ।

यथा अन्दुघरे पुरिसो चिरवुत्थो दुखट्टितो।
न तत्थ रागं जनेति मुत्तिं येव गवेसति॥

तथेव त्वं सब्बभवे पस्स अन्दुघरे विय।
नेक्खम्माभिमुखो होहि भवतो परिमुत्तिया॥

पञ्ञापारमी

न हेते एत्तका येव बुद्धधम्मा भविस्सरे।
अञ्ञे पि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना॥

विचिनन्तो तदा दक्खिं चतुत्थं पञ्ञापारमिं।
पुब्बकेहि महेसीहि आसेवितनिसेवितं॥

इमं त्वं चतुत्थं ताव दळ्हं कत्वा समादिय।
पञ्ञापारमितं गच्छ यदि बोधिं पत्तुमिच्छसि॥

यथा पि भिक्खु भिक्खन्तो हीनमुक्कट्ठमज्झिमे।
कुलानि न विवज्जेन्तो एवं लभति यापनं॥

तथेव त्वं सब्बकालं परिपुच्छं बुधं जनं।
पञ्ञापारमितं गन्त्वा सम्बोधिं पापुणिस्ससि॥

वीरियपारमी

न हेते एत्तका येव बुद्धधम्मा भविस्सरे।
अञ्ञे पि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना॥

विचिनन्तो तदा दक्खिं पञ्चमं वीरियपारमिं।
पुब्बकेहि महेसीहि आसेवितनिसेवितं॥

इमं त्वं पञ्चमं ताव दळ्हं कत्वा समादिय।
वीरियपारमितं गच्छ यदि बोधिं पत्तुमिच्छसि॥

यथा पि सीहो मिगराजा निसज्जट्ठानचङ्कमे।
अलीनवीरियो होति पग्गहितमनो सदा॥

तथेव त्वं सब्बभवे पग्गण्ह वीरियं दळ्हं।
वीरियपारमितं गन्त्वा सम्बोधिं पापुणिस्ससि॥

खन्तिपारमी

न हेते एत्तका येव बुद्धधम्मा भविस्सरे।
अञ्ञे पि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना॥

अन्दुघरे[1] ति बन्धनागारे। दुक्खट्टितो ति दुक्खपीळितो। तत्था ति बन्धनागारे। भवतो ति सब्बभवेहि। तत्था[2] ति खन्तिपारमियं[2]।

भिक्खन्तो ति पिण्डं याचन्तो। हीनुक्कट्ठमज्झिमे ति हीन-उक्कट्ठ-मज्झिमानि कुलानि, लिङ्गविपल्लासो। यापनं ति यापनमत्तं आहारं। बुधं[3] जनं [3]ति पण्डितं[4] जनं[4]। बुधे जने ति पि पाठो।

---

१. अद्दुघरे ति–म०। २-२. अयं पाठो सी० पोत्थके न दिस्सति। ३. बुधजनं ति–सी०। ४-४. पण्डितजनं–सी०।

विचिनन्तो तदा दक्खि छट्ठमं खन्तिपारमिं।
पुब्बकेहि महेसीहि आसेवितनिसेवितं॥
इमं त्वं छट्ठमं ताव दळ्हं कत्वा समादिय।
तत्थ अद्वेज्झमानसो सम्बोधिं पापुणिस्ससि॥
यथा पि पठवी नाम सुचिं पि असुचिं पि च।
सब्बं सहति निक्खेपं न करोति पटिघं दयं॥
तथेव त्वं पि सब्बेसं सम्मानावमानक्खमो।
खन्तिपारमितं गन्त्वा सम्बोधिं पापुणिस्ससि॥

सच्चपारमी

न हेते एत्तका येव बुद्धधम्मा भविस्सरे।
अञ्ञे पि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना॥
विचिनन्तो तदा दक्खि सत्तमं सच्चपारमिं।
पुब्बकेहि महेसीहि आसेवितनिसेवितं॥
इमं त्वं सत्तमं ताव दळ्हं कत्वा समादिय।
तत्थ अद्वेज्झवचनो सम्बोधिं पापुणिस्ससि॥
यथा पि ओसधी नाम तुलाभूता सदेवके।
समये उतुवस्से वा न वोक्कमति वीथितो॥
तथेव त्वं पि सच्चेसु मा वोक्कम हि वीथितो।
सच्चपारमितं गन्त्वा सम्बोधिं पापुणिस्ससि॥

अधिट्ठानपारमी

न हेते एत्तका येव बुद्धधम्मा भविस्सरे।
अञ्ञे पि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना॥
विचिनन्तो तदा दक्खि अट्ठमं अधिट्ठानपारमिं।
पुब्बकेहि महेसीहि आसेवितनिसेवितं॥

तत्था ति पारमियं[१]। सब्बं वत्थुं[२] निक्खिपन्तीति निक्खत्तं। पटिघदयं ति पटिघो च दया च पटिघदया। तेन निक्खेपेन पटिघं[3] सिनेहं[3] न करोतीति अत्थो। पटिघं तया ति पि पाठो। पटिघं ति कोपं[४]। तया ति ताय निक्खित्ताय। सम्मानावमानक्खमो ति सम्मानस्स च अवमानस्स च खमो सहो।

ओसधी ति ओसधितारकं उदितं दिस्वा ओसधानि गण्हन्ति। तस्मा सो तारको ओसधी नाम। तुलाभूता ति पमाणभूता। सदेवके ति सदेवकस्स लोकस्स। समये ति वस्स-समये। उतुवस्सेसू ति हेमन्तगिम्हेसु। उतुवट्ठे ति पि पाठो। समये ति गिम्हे। उतुवट्ठेपीति

---

१. खन्ति०–सी०। २. सब्बवत्थुं–म०। ३-३. पटिघसिनेहं–सी०। ४. कोधं–सी०।

इमं त्वं अट्ठमं ताव दळ्हं कत्वा समादिय।
तत्थ त्वं अचलो हुत्वा सम्बोधिं पापुणिस्ससि॥

यथा पि पब्बतो सेलो अचलो सुप्पतिट्ठितो।
न कम्पति भुसवातेहि सकट्ठाने व तिट्ठति॥
तथेव त्वं पि अधिट्ठाने सब्बदा अचलो भव।
अधिट्ठानपारमितं गन्त्वा सम्बोधिं पापुणिस्ससि॥

मेत्तापारमी

न हेते एत्तका येव बुद्धधम्मा भविस्सरे।
अञ्ञे पि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना॥
विचिनन्तो तदा दक्खिं नवमं मेत्तापारमिं।
पुब्बकेहि महेसीहि आसेवितनिसेवितं॥
इमं त्वं नवमं ताव दळ्हं कत्वा समादिय।
मेत्ताय असमो होहि यदि बोधिं पत्तुमिच्छसि॥

यथा पि उदकं नाम कल्याणे पापके जने।
समं फरति सीतेन पवाहेति रजोमलं॥
तथेव त्वं हिताहिते समं मेत्ताय भावय।
मेत्तापारमितं गन्त्वा सम्बोधिं पापुणिस्ससि॥

उपेक्खापारमी

न हेते एत्तका येव बुद्धधम्मा भविस्सरे।
अञ्ञे पि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना॥

हेमन्ते च वस्साने च। न वोक्कमतीति न अपगच्छति। वीथितो ति अत्तनो वीथितो। छमासे पच्छिमदिसं गच्छति, छमासे पुरत्थिमदिसं[1] गच्छतीति वदन्ति। त्वम्पि सच्चेसु ति पदं त्वम्पि सच्चेसु मा वोक्कमसीति पदे आधारो। वीथितो सच्चवीथितो। अथवा सच्चेसू (४७–म०) ति सच्चानं, वीथितो ति पदे सम्बन्धो। सामि-अत्थे सत्तमी। कस्मा ? टीकायं[2] सच्चस्स वीथि-नामा ति दस्सनतो।

सेलो ति सिलामयो। यथा पि पब्बतो सेलो निक्खातो सुप्पतिट्ठितो ति[3] पि पाठो। भुसवातेहीति बलववातेहि।

समं ति तुल्यमेव। फरतीति फुसति। रजो ति आगन्तुकमलं। जलं ति सरीर-उट्ठित-सेदजलं। रजोमलं ति पि पाठो। मलं ति सरीर-उट्ठितसेदमलादि[3]।

---

१. पुब्बदिसं–सी०। २. टीकाय–सी०। ३-३. एत्तकोपाठो म० पोत्थके नत्थि।

विचिनन्तो तदा दक्खिं दसमं उपेक्खापारमिं ।
पुब्बकेहि महेसीहि आसेवितनिसेवितं ॥
इमं त्वं दसमं ताव दळ्हं कत्वा समादिय ।
तुलाभूतो दळ्हो हुत्वा सम्बोधिं पापुणिस्ससि ॥

यथा पि पठवी नाम निक्खित्तं असुचिं सुचिं ।
उपेक्खति उभो पेते कोपानुनयवज्जिता ॥
तथेव त्वं सुखदुक्खे तुलाभूतो सदा भव ।
उपेक्खापारमितं गन्त्वा सम्बोधिं पापुणिस्ससि ॥

एत्तका येव ते लोके ये धम्मा बोधिपाचना ।
ततुद्धं नत्थि अञ्ञत्र दळ्हं तत्थ पतिट्ठह ॥

इमे धम्मे सम्मसतो सभावरसलक्खणे ।
धम्मतेजेन वसुधा दससहस्सी पकम्पथ ॥

चलती रवती पथवी उच्छुयन्तं व पीळितं ।
तेलयन्ते यथा चक्कं एवं कम्पति मेदनी ॥

कोपानुनयवज्जिता[1] कोपसिनेहवज्जिता ।

ततुद्धं[2] ति ततो दसपारमितो उद्धं । अञ्ञो बुद्धकरणधम्मो नत्थीति अत्थो । तदुद्धं[3] ति पि पाठो अत्थि । तत्था ति तासु दसपारमीसु[4] । पतिट्ठहीति परिपूरेन्तो तिट्ठाहि ।

इमे धम्मे इमे दसपारमीधम्मे । सभावरसलक्खणे[5] ति सभावरसलक्खणतो सम्मसतो उपपरिक्खन्तस्स महासत्तस्स दससहस्सी धम्मतेजेन वसुधा पकम्पथ बहुधा कम्पथा ति सम्बन्धो । सम्मसतो ति अनादरे छट्ठी[5] ।

सभावरसलक्खणे ति पदं सम्मसतो ति पदे ततियाविसेसनं । ततियत्थे दुतिया । कस्मा ? टीकायं ततो ति दस्सनतो ।

सह भावेन सभावो । सभावो च रसो च लक्खणं च सभावरसलक्खणं[6] । दससहस्सीति पदं वसुधा ति पदस्स विसेसनं ।

वसुं धारेतीति वसुधा । वसुं धनं धियति थपियति एत्था ति वसुधा ।

चलिता चलिताय पथवी रवति । चलतीति पि अत्थि । पीळितं उच्छुयन्तं इव तेलयन्ते[7] चक्कं यथा ।

---

१. कोपानुद्दयवज्जिता–म० । २. तदुद्धं ति–सी० । ३. ततुद्धं ति–सी० । ४. दससु ५७–सी०पार०–सी० । ५-५. नत्थेत्तको म०पोत्थके पाठो । ६. ०लक्खणा–सी० । ७. तेलयन्तं–म० ।

यावता परिसा आसि बुद्धस्स परिवेसने।
पवेधमाना सा तत्थ मुच्छिता सेति भूमियं॥
घटानेकसहस्सानि कुम्भीनं च सता बहू।
सञ्चुण्णमथिता तत्थ अञ्ञमञ्ञं पघट्टिता॥

उब्बिग्गा तसिता भीता भन्ता ब्याथितमानसा।
महाजना समागम्म दीपङ्करमुपागमुं॥
किं भविस्सति लोकस्स कल्याणमथ पापकं।
सब्बो उपद्दुतो लोको तं विनोदेहि चक्खुम॥

तेसं तदा सञ्ञपेसि दीपङ्करो महामुनि।
विस्सट्ठा होथ मा भाथ इमस्मिं पथविकम्पने॥
यमहं अज्ज ब्याकासिं बुद्धो लोके भविस्सति।
एसो सम्मसति धम्मं पुब्बकं जिनसेवितं॥

तस्स सम्मसतो धम्मं बुद्धभूमिं असेसतो।
तेनायं कम्पिता पथवी दससहस्सी सदेवके॥
बुद्धस्स वचनं सुत्वा मनो निब्बायि तावदे।
सब्बे मं उपसङ्कम्म पुना पि अभिवन्दिसुं॥

परिवेसने ति भत्तं परिविसति भुञ्जति एत्था ति परिवेसनं[1] भत्तकरणट्ठानं[2]। सा ति परिसा। तत्था ति परिवेसने। भूमिया ति भूमियं।

घटा ति घटानं। सामि-अत्थे पच्चत्तवचनं। घटानं नेकसहस्सानीति अत्थो। सञ्चुण्णमथिता[3] तत्था ति तत्थ ठाने सञ्चुण्णानि चेव मथिता च।

उब्बिग्गा ति उत्रासहदया। भन्ता ति विब्भन्तचित्ता। उब्बिग्गा ति आदीनि अञ्ञमञ्ञं वेवचनानि।

तं विनोदेहीति तं उपद्दुतभयं विनोदेहि विनासय[4]।

तेसं तदा[5] ते जने तदा। उपयोगत्थे सामिवचनं। विस्सट्ठा[6] ति विस्सट्ठचित्ता। पथवीकम्पने ति पदं मा भाथा ति पदे हेतु। पथवीकम्पनकारणा ति अत्थो।

अज्ज[7] अहं यं सुमेधपण्डितं सुमेधो बुद्धो लोके भविस्सति इति ब्याकासिं, एसो सुमेधपण्डितो पुब्बकं जिनसेवितं जिनेहि बोधिसत्तकाले सेवितं धम्मं पारमीधम्मं सम्मसति।

असेसतो बुद्धभूमिं बुद्धस्स भूमिं गोचरधम्मं पारमीधम्मं सम्मसतो सम्मसन्तस्स तस्स सुमेधपण्डितस्स तेन सम्मसनकारणेन सदेवके लोके दससहस्सपथवी[8] कम्पिता। तस्सा ति अनादरे छट्ठी।

---

१. परिवोसनं–म०। २. भत्तकिच्च०–सी०। ३. सञ्वुण्णा मथिता–सी०। ४. तं विनासय–सी०। ५. ०ति–सी०। ६. विस्सत्था–सी०। ७. अथ–सी०। ८. दससहस्सो अयं पठवी–सी०।

समादियित्वा बुद्धगुणं दळ्हं कत्वान मानसं ।
दीपंङ्करं नमस्सित्वा आसना वुट्ठहिं तदा ॥

दिब्बं मानुसकं पुप्फं देवा मानुसका उभो ।
समोकिरन्ति पुप्फेहि वुट्ठहन्तस्स आसना ॥

वेदयन्ति च ते सोत्थिं देवा मानुसका उभो ।
महन्तं पत्थितं तुय्हं तं लभस्सु यथिच्छितं ॥

सब्बीतियो विवज्जन्तु सोको रोगो विनस्सतु ।
मा ते भवत्वन्तराया फुस खिप्पं बोधिमुत्तमं ॥

यथा पि समये पत्ते पुप्फन्ति पुप्फिनो दुमा ।
तथेव त्वं महावीर बुद्धञाणेन पुप्फसु ॥
यथा ये केचि सम्बुद्धा पूरयुं दसपारमी ।
तथेव त्वं महावीर पूरय दसपारमी ॥
यथा ये केचि सम्बुद्धा बोधिमण्डम्हि बुज्झरे ।
तथेव त्वं महावीर बुज्झस्सु जिनबोधियं ॥

यथा ये केचि सम्बुद्धा धम्मचक्कं पवत्तयुं ।
तथेव त्वं महावीर धम्मचक्कं पवत्तय ॥

अहं बुद्धगुणं समादियित्वा आरम्मणवसेन गहेत्वा पारमीसु मानसं दळ्हं कत्वाना ति सम्बन्धो ।

दिब्बं पुप्फं देवा समोकिरन्ति, मानुस्सकं पुप्फं मानुस्सका समोकिरन्ति । उभो पुग्गलनिकाया आसना वुट्ठहन्तस्स मम पुप्फेहि समोकिरन्ति पूजेन्तीति सम्बन्धो । (५८-सी०) दिब्बपुप्फं सदेवा[1] मानुस्सका[1] ।

ते उभो पुग्गला (४८-म०) सोत्थिं सोत्थिभावं वेदयन्ति वेदयिंसु सञ्ञापेसुं[2] । तुय्हं महन्तं पत्थितं पत्थनं त्वं यथिच्छितं[3] तं पत्थनं लभस्सु । चसद्दो देवा च मानुसका चा ति योजेतब्बो । यदिच्छितं ति पि अत्थि ।

फुसा ति[4] पापुणाहि[5] । बोधिं ति सब्बञ्ञुतञ्ञाणं, अरहत्तमग्गञाणम्पि ।

पुप्फसू ति[6] पुप्फस्सु । बुज्झरे बुज्झिसु । जिनबोधियं ति जिनानं बोधियं, सब्बञ्ञुबोधिमूले ति अत्थो ।

१-१. देवा समोकिरन्ति मनुस्सका–सी० । २. सञ्ञापेतुं–म० ।
३. ०यथा इच्छितं–सी० । ४. फुस्साति–सी० ।
५. पापुणाति–सी० । ६. पुप्फस्सूति–सी० ।

पुण्णमाये यथा चन्दो परिसुद्धो विरोचति ।
तथेव त्वं पुण्णमनो विरोच दससहस्सियं ॥
राहुमुत्तो यथा सुरियो तापेन अतिरोचति ।
तथेव लोका मुञ्चित्वा विरोच सिरिया तुवं ॥
यथा या काचि नदियो ओसरन्ति महोदधिं ।
एवं सदेवका लोका ओसरन्तु तवन्तिके ॥
तेहि थुतप्पसत्थो सो दसधम्मे समादिय ।
ते धम्मे परिपूरेन्तो पवनं पाविसी तदा ति ॥

१. भगवा दीपङ्करो

तदा ते भोजयित्वान ससङ्घं लोकनायकं ।
उपगच्छुं सरणं तस्स दीपङ्करस्स सत्थुनो ॥
सरणागमने कञ्चि निवेसेसि तथागतो ।
कञ्चि पञ्चसु सीलेसु सीले दसविधे परे ॥
कस्सचि देति सामञ्ञं चतुरो फलमुत्तमे ।
कस्सचि असमे धम्मे देति सो पटिसम्भिदा ॥
कस्स चि वरसमापत्तियो अट्ठ देति नरासभो ।
तिस्सो कस्सचि विज्जायो छळभिञ्ञा पवेच्छति ॥

पुण्णो मा अस्मिं ति पुण्णमासो । **यदादिना** (क० २.८.४८) सुत्तेन णो सागमो च । पुण्णमाये ति पि पाठो । पुण्णो मा एतस्मिं ति पुण्णमायो । एतस्मिं दिवसे मा चन्दो पुण्णो इति तस्मा सो दिवसो पुण्णमायो । तस्मिं पुण्णमा ति वत्तब्बे **क्वचि समासन्तगतानमकारन्तो** ति (क० २.७.२२) सुत्तेन समासन्ते अकारागमं कत्वा **यवमदनतरला चागमा** ति (क० १.४.६) सुत्तेन यकारागमं कत्वा परक्खरं नेत्वा विभत्तुप्पत्तादिं कत्वा पुण्णमाये ति[1] रूपसिद्धि वेदितब्बा[2] ।

तापेना ति आलोकेन । लोका मुञ्चित्वा ति लोकधम्मेहि अलित्तो हुत्वा ।

ओसरन्तीति पविसन्ति । ओसरन्तू ति[3] उपगच्छन्तु[4] । ओसरन्ति पि अत्थि । तवन्तिके ति तव सन्तिकं ।

तेहीति देवमनुस्सेहि । थुतिप्पसट्ठो ति सम्मुखा थुति, परम्मुखा पसट्ठो । थुतेहि वा दीपङ्करादीहि पसट्ठो । इमस्मिं पक्खे तेहीति पदं थुत इति पदे ततियाकत्ता । दसधम्मे ति दसपारमीधम्मे । पवनं ति धम्मिकपब्बते महावनं पाविसि ।

ते ति जना । तस्स दीपङ्करस्स, तं दीपङ्करं सत्थारं सरणं इति उपगच्छुं । उपयोगे सामिवचनं दट्ठब्बं ।

कञ्चि पुग्गलं । सो ति तथागतो ।

सामञ्ञासामञ्ञसङ्खाते चतुरो फलमुत्तमे, कस्सचि पुग्गलस्स देति । सो असमे पटिसम्भिदासङ्खाते धम्मे कस्सचि देति ।

---

१. पुण्णमायो ति–सी० । २. वेदितब्बो–सी० । ३. ओसरन्तीति–सी० । ४. उपगच्छन्ति–सी० ।

तेन योगेन जनकायं ओवदति महामुनि।
तेन वित्थारिकं आसि लोकनाथस्स सासनं॥
महाहनु उसभक्खन्धो दीपङ्करसनामको।
बहू जने तारयति परिमोचेति दुग्गतिं॥

बोधनेय्यं जने दिस्वा सतसहस्से पि योजने।
खणेन उपगन्त्वान बोधेति तं महामुनि॥
पठमाभिसमये बुद्धो कोटिसतमबोधयि।
दुतियाभिसमये नाथो नवुतिकोटिमबोधयि॥

यदा च देवभवनम्हि बुद्धो धम्ममदेसयि।
नवुतिकोटिसहस्सानं ततियाभिसमयो अहु॥
सन्निपाता तयो आसुं दीपङ्करस्स सत्थुनो।
कोटिसतसहस्सानं पठमो आसि समागमो॥

पुन नारदकूटम्हि पविवेकगते जिने।
खीणासवा वीतमला समिंसु सतकोटियो॥
यम्हि काले महावीरो सुदस्सनसिलुच्चये।
नवकोटिसहस्सेहि पवारेसि महामुनि॥

अहं❀ तेन समयेन जटिलो उग्गतापनो।
अन्तलिक्खम्हि चराणो पञ्चाभिञ्ञासु पारगू❀॥

दसवीससहस्सानं धम्माभिसमयो अहु।
एकद्विन्नं अभिसमया गणनातो असङ्खिया॥

जनकायं ति जनसमूहं। ओवदतीति ओवदि। कालविपरियायेन वुत्तं।

महाहनू ति सीहहनु। उसभक्खन्धो ति उसभस्सेव खन्धो यस्स सो उसभक्खन्धो, समवट्टचारुक्खन्धो ति अत्थो। दीपङ्करसनामको ति दीपङ्करनामो। अथवा सस्स अत्तनो नामं सनामं। दीपङ्करो[1] इति सनामं यस्स सो दीपङ्करसनामको। दुग्गतिं ति दुग्गतितो। निस्सक्कत्थे दुतिया।

सतसहस्से पि योजने ति (५९–सी०) अनेकसतसहस्से पि योजने ठितं। पठमाभिसमये ति पठमे धम्मपटिलाभे।

पुन पच्छा, नारदपब्बते जिने पविवेकगते गणं पहाय विवेकत्थाय गते। वीतमला सतकोटियो खीणासवा समिंसु सन्निपतिंसु।

सुदस्सनसिलुच्चये ति सुदस्सननामके पब्बते। चरानो ति (४९–म०) चरन्तो।

दसवीससहस्सानं ति दससहस्सानं वीससहस्सानञ्च। दससहस्सञ्च वीससहस्सञ्च दसवीससहस्सानि। धम्माभिसमयो ति चतुसच्चधम्मपटिवेधो। एकद्विन्नं ति एकस्स चेव द्विन्नञ्च।

❀–❀ न दिस्सति बुद्धवंसे इयं गाथा।
१. दीपङ्करा–म०।

वित्थारिकं बाहुजञ्ञं इद्धं फीतं अहु तदा।
दीपङ्करस्स भगवतो सासनं सुविसोधितं॥

चत्तारि सतसहस्सानि छळभिञ्ञा महिद्धिका।
दीपङ्करं लोकविदुं परिवारेन्ति सब्बदा॥

ये केचि तेन समयेन जहन्ति मानुसं भवं।
अप्पत्तमानसा सेक्खा गरहिता व भवन्ति ते॥

सुपुप्फितं पावचनं अरहन्तेहि तादिहि।
खीणासवेहि विमलेहि उपसोभति सब्बदा॥

नगरं रम्मवती नाम सुदेवो नाम खत्तियो।
सुमेधा नाम जनिया दीपङ्करस्स सत्थुनो॥

दसवस्ससहस्सानि अगारं अज्झ सो वसि।
हंसा कोञ्चा मयूरा च तयो पासादमुत्तमा॥
तीणि वस्ससहस्सानि नारियो समलङ्कता।
पदुमा नाम सा नारी उसभक्खन्धो अत्रजो॥
निमित्ते चतुरो दिस्वा हत्थियानेन निक्खमि।
अनूनदसमासानि पधाने पदही जिनो॥
पधानचारं चरित्वान अबुज्झि मानसं मुनि।
ब्रह्मुना याचितो सन्तो दीपङ्करो महामुनि॥
वत्ति चक्कं महावीरो नन्दारामे सिरीघरे।
निसिन्नो सिरीसमूलम्हि अका तित्थियमद्दनं॥

तदा[1] दीपङ्करभगवतो सासनं वित्थारितं महन्तपत्तं। बाहुजञ्ञं बहूहि पण्डितेहि देवमनुस्सेहि निय्यानिकं ति ञातं। अधिसीलसिक्खादीहि इद्धं। समाधि-आदीहि फीतं। सुविसोधितं सुट्ठु भगवता सोधितं विसुद्धं कतं। अहू अहोसि।

छळभिञ्ञा महिद्धिका छळभिञ्ञानं महिद्धिकानं। चत्तारि सतसहस्सानि दीपङ्करं लोकविदुं सब्बदा परिवारेन्ति।

तेन समयेन तस्मिं समये, ये केचि भिक्खू सेक्खा अप्पत्तमानसा अप्पत्त-अरहत्ता मनुस्सभवं[2] जहन्ति, ते भिक्खू गरहिता भवन्ति। अप्पत्तं मानसं येहि अप्पत्तमानसा।

सुपुप्फितं सुट्ठु विकसितं। पावचनं[3] पकट्ठवचनं[4] वुड्ढिपत्तं वा वचनं[5]। तादीहि खीणासवेहि अमलेहि विमलेहि अरहन्तेहि सदेवके लोके उपसोभतीति सम्बन्धो। पवचनं एव पावचनं, सासनं।

जनिया ति जनेत्ति।

---

१. तथा–सी०। २. मानुस्स०–सी०। ३. पवचनं–सी०। ४. पसत्थवचनं–सी०। ५. पवचनं–सी०।

सुमङ्गलो च तिस्सो च अहेसुं अग्गसावका।
सागतो नामुपट्ठाको दीपङ्करस्स सत्थुनो॥
नन्दा चेव सुनन्दा च अहेसुं अग्गसाविका।
बोधि तस्स भगवतो पिप्फलीति पवुच्चति॥
तपस्सुभल्लिका❀ नाम अहेसुं अग्गुपट्ठका।
सिरिमा कोणा उपट्ठिका दीपङ्करस्स सत्थुनो❀॥
असीतिहत्थमुब्बेधो दीपङ्करो महामुनि।
सोभति दीपरुक्खो व सालराजा व फुल्लितो॥
सतसहस्सवस्सानि आयु तस्स महेसिनो।
तावता तिट्ठमानो सो तारेसि जनतं बहुं॥
जोतयित्वान सद्धम्मं सन्तारेत्वा महाजनं।
जलित्वा अग्गिक्खन्धो व निब्बुतो सो ससावको॥
सा च इद्धि सो च यसो तानि च पादेसु चक्करतनानि।
सब्बं समन्तरहितं ननु रित्ता सब्बसङ्खारा ति॥

२. भगवा कोण्डञ्ञो

दीपङ्करस्स† पन भगवतो अपरभागे एकं असङ्ख्येय्यं अतिक्कमित्वा कोण्डञ्ञो नाम सत्था उदपादि। तस्सापि तयो सावकसन्निपाता अहेसुं। पठमसन्निपाते कोटिसतसहस्सं, दुतिये कोटिसहस्सं, ततिये नवुतिकोटियो। तदा बोधिसत्तो विजितावी नाम चक्कवत्ती हुत्वा कोटिसतसहस्ससंख्यस्स बुद्धपमुखस्स भिक्खुसंघस्स महादानं अदासि। सत्था बोधिसत्तं 'बुद्धो भविस्सती' ति ब्याकरित्वा धम्मं देसेसि। सो सत्थु धम्मकथं सुत्वा रज्जं पटियादेत्वा पब्बजि। सो तीणि पिटकानि उग्गहेत्वा अट्ठसमापत्तियो पञ्च च अभिञ्ञायो उप्पादेत्वा अपरिहीनज्झानो ब्रह्मलोके निब्बत्ति।

कोण्डञ्ञस्स बुद्धस्स पन रम्मवती नाम नगरं। आनन्दो नाम खत्तियो पिता। सुजाता नाम देवी माता। भद्दो च सुभद्दो च द्वे अग्गसावका। अनुरुद्धो नामुपट्ठाको।

दीपरुक्खो वा ति सम्पज्जलितदीपमालारुक्खो इव, फुल्लितो सालराजा इव।

सा च इद्धि सा च सम्पत्ति आनुभावो। सो च यसो, सो[1] च[1]परिवारो, सब्बं समन्तरहितं सब्बं[2] यथा वुत्तप्पकारसम्पत्तिजातं समन्तरहितं अपगतं, विस्सुता पि[3] नून एकन्तेन सब्बसङ्खारा रित्ता तुच्छा सुञ्ञा अन्तरहिता। सब्बसङ्खारा ति एत्थ इतिसद्दो वुत्तं हेतं **बुद्धवंसे** ति एत्थ एतं ति पदस्स सरूपनिदस्सनं।

एकं असङ्ख्येय्यं ति सेलनामकं असङ्ख्येय्यं अतिक्कमित्वा सारनामके कप्पे कोण्डञ्ञो नाम सत्था उदपादि।

❀–❀. निदानट्ठकथायं नत्थि इयं कारिका। †. इतो जातकनिदानट्ठकथा दट्ठब्बा, पि० ७२–१०८।

१–१. नत्थि–म०। २. तं सब्बं–सी०। ३. नत्थि–सी०।

तिस्सा च उपतिस्सा च द्वे अग्गसाविका। सालकल्याणी बोधि। अट्ठासीतिहत्थुब्बेधं सरीरं। वस्ससतसहस्सं आयुप्पमाणं अहोसि।

दीपङ्करस्स अपरेन कोण्डञ्ञो नाम नायको।
अनन्ततेजो अमितयसो अप्पमेय्यो दुरासदो ति॥

३. भगवा मङ्गलो

तस्स पन अपरभागे एकं असङ्ख्येय्यं अतिक्कमित्वा एकस्मिं येव कप्पे चत्तारो बुद्धा निब्बत्तिसु—मङ्गलो, सुमनो, रेवतो, सोभितो ति। मङ्गलस्स भगवतो तयो सावकसन्निपाता अहेसुं। तेसु पठमसन्निपाते कोटिसतसहस्सं भिक्खू अहेसुं, दुतिये कोटिसहस्सं, ततिये नवुति कोटियो। वेमातिकभाता किरस्स आनन्दकुमारो नवुतिकोटिसंखाय परिसाय सद्धिं धम्मसवणत्थाय सत्थुसन्तिकं अगमासि। सत्था तस्स आनुपुब्बीकथं कथेसि। सो सद्धिं परिसाय सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं पापुणि। सत्था तेसं कुलपुत्तानं पुब्बचरितं ओलोकेन्तो इद्धिमयपत्तचीवरस्स उपनिस्सयं दिस्वा दक्खिणहत्थं पसारेत्वा 'एथ भिक्खवो' ति आह। सब्बे तं खणं येव इद्धिमयपत्तचीवरधरा सट्ठिवस्सथेरा विय आकप्पसम्पन्ना हुत्वा सत्थारं वन्दित्वा परिवारयिंसु। अयमस्स ततियो सावकसन्निपातो अहोसि।

यथा पन अञ्ञेसं बुद्धानं समन्ता असीतिहत्थप्पमाणा येव सरीरप्पभा अहोसि, न तस्स एवं। तस्स पन भगवतो सरीरप्पभा निच्चकालं दससहस्सीलोकधातुं फरित्वा अट्ठासि। रुक्खपठवीपब्बतसमुद्दादयो अन्तमसो उक्खलियादीनि उपादाय सुवण्णपट्टपरियोनद्धा विय अहेसुं। आयुप्पमाणं पनस्स नवुतिवस्ससहस्सानि अहोसि। एत्तकं कालं चन्दसुरियादयो अत्तनो पभाय विरोचितुं नासक्खिंसु। रत्तिन्दिवपरिच्छेदो न पञ्ञायित्थ। दिवा सुरियालोकेन विय सत्ता निच्चं बुद्धालोकेनेव विचरिंसु। सायं पुप्फनकुसुमानं पातो व रवनसकुणादीनं च वसेन लोको रत्तिन्दिवपरिच्छेदं सल्लक्खेसि। किं पन अञ्ञेसं बुद्धानं अयमानुभावो नत्थीति ? नो नत्थि। ते पि हि आकङ्खमाना दससहस्सिं वा लोकधातुं ततो वा भिय्यो आभाय फरेय्युं। मङ्गलस्स पन

एकं असङ्ख्येय्यं सार-असङ्ख्येय्यं अतिक्कमित्वा एकस्मिं येव कप्पे सारमण्डकप्पे चत्तारो बुद्धा निब्बत्तिसु। वेमातिकभाता ति विमाता[१] अस्स अत्थीति वेमातिको। वेमातिककनिट्ठभाता ति अत्थो। अनुपुब्बीकथं ति दानादि-अनुपटिपाटिकथं। आकप्पसम्पन्ना ति इरियापथसम्पन्ना।

(६०–सी०) उखति दहतीति उक्खलि। **अल्यादयो** ति (ण्वादि० १९८) मोग्गलानसुत्तेन लिपच्चयो। सुवण्णपट्टपरियोनद्धा ति सुवण्णपट्टेन परियोनद्धा। सायं पुप्फितकुसुमानञ्च पातो रवनकसकुणानञ्च वसेन सल्लक्खेसीति सम्बन्धो। किं पन····प···· नत्थीति पुच्छा[२]।

---

१. विसुं माता विमाता–सी०। २. पुच्छा चे–सी०।

भगवतो पुब्बपत्थनावसेन अञ्ञेसं ब्यामप्पभा विय सरीरप्पभा निच्चमेव दससहस्सी-लोकधातुं फरित्वा अट्ठासि।

सो किर बोधिसत्तचरियकाले वेस्सन्तरसदिसे अत्तभावे ठितो सपुत्तदारो वङ्क-पब्बतसदिसे पब्बते वसि। अयेको खारदाठिको नाम यक्खो महापुरिसस्स दानज्झा-सयतं सुत्वा ब्राह्मणवण्णेन उपसङ्कमित्वा महासत्तं द्वे दारके याचि। महासत्तो 'ददामि ब्राह्मणस्स पुत्तके' ति हट्ठपहट्ठो उदकपरियन्तं पठविं कम्पेन्तो द्वे पि दारके अदासि। यक्खो चङ्कमणकोटियं आलम्बनफलकं निस्साय ठत्वा पस्सन्तस्सेव महासत्तस्स मूल-कलापे विय द्वे दारके खादि। महापुरिसस्स यक्खं आलोकेत्वा मुखे विवटमत्ते अग्गि-जालं विय लोहितधारं उग्गिरमानं तस्स मुखं दिस्वापि केसग्गमत्तम्पि दोमनस्सं न उप्पज्जि। 'सुदिन्नं वत मे दानं' ति चिन्तयतो पनस्स सरीरे महन्तं पीतिसोमनस्सं उदपादि। सो 'इमस्स मे निस्सन्देन अनागते इमिना व नीहारेन रस्मियो निक्खमन्तू' ति पत्थनं अकासि। तस्स तं पत्थनं निस्साय बुद्धभूतस्स सरीरतो रस्मियो निक्ख-मित्वा एत्तकं ठानं फरिंसु।

अपरम्पि पुब्बचरितं अत्थि। सो किर बोधिसत्तकाले एकस्स बुद्धस्स चेतियं दिस्वा 'इमस्स बुद्धस्स मया जीवितं परिच्चजितुं वट्टती' ति चिन्तेत्वा दण्डदीपकवेठन-नियामेन सकलसरीरं वेठापेत्वा रतनमकुलं सतसहस्सग्घनिकं सुवण्णपातिं सप्पिस्स पूरापेत्वा तत्थ सहस्सवट्टियो जालापेत्वा तं सीसेनादाय सकलसरीरे जालापेत्वा चेतियं पदक्खिणं करोन्तो सकलरत्तिं वीतिनामेसि। एवं याव अरुणुग्गमना वायमन्तस्सा-पिस्स लोमकूपमत्तम्पि उसुमं न गण्हि। पदुमगब्भं पविट्ठकालो विय अहोसि। धम्मो हि नामेस अत्तानं रक्खन्तं रक्खति। तेनाह भगवा—

धम्मो हवे रक्खति धम्मचारिं
धम्मो सुचिण्णो सुखमावहाति।

पस्सन्तस्सेव महासत्तस्सा ति महासत्ते पस्सन्ते एव। निस्सन्देना ति[1] फलेन। निहारेना ति नयेन।

दण्डदीपिकावेठननियामेना ति दण्डदीपिकाय वेठननयेन। रतनस्स मत्तं पमाणं रतन-मत्तं[2]। (५०–म०) मज्झे मकुळं एतिस्सा ति रतनमत्तमकुळा। रतनमतमकुळा च सा सत-सहस्सग्घनिका चा ति रतन....प....निका। सप्पिस्सा ति सप्पिना। सप्पति पवत्ततीति सप्पि। 'सप्प'–गमने। इपच्चयो। उसुमं ति उस्मा[3]। उसति[4] निदहतीति उसुमं। **उसकुसपदसुखाकुमो ति** (ण्वादि० १३०) मोग्गल्लानसुत्तेन कुमपच्चयो। न गण्हीति न फुसति। धम्मो दानचेतनादि धम्मो। हवे एकन्तेन, धम्मचारिं[5] पुग्गलं[5] रक्खति। सुचिण्णो धम्मो सुखं आवहति जनेति। धम्मचारी पुग्गलो दुग्गतिं न गच्छति, इति एसो सुचिण्णो जनेन सुचिण्णस्स धम्मस्स आनिसंसो।

---

१. निसन्देनाति–म०। २. ०मकुळं।–सी०। ३. उस्मं–सी०। ४. उसभति–सी०। ५-५. धम्मचारिपुग्गलं–सी०।

एसानिसंसो धम्मे सुचिण्णे
न दुग्गतिं गच्छति धम्मचारी ति ॥

इमस्सापि कम्मस्स निस्सन्देन तस्स भगवतो सरीरोभासो दससहस्सीलोकधातुं फरित्वा अट्ठासि।

तदा अम्हाकं बोधिसत्तो सुरुचि नाम ब्राह्मणो हुत्वा 'सत्थारं निमन्तेस्सामी' ति उपसङ्कमित्वा मधुरधम्मकथं सुत्वा 'स्वे मय्हं भिक्खं गण्हथ भन्ते' ति आह।

ब्राह्मण, कित्तकेहि ते भिक्खूहि अत्थो ति ?

कित्तका पन वो भन्ते, परिवारभिक्खू ? ति आह।

तदा सत्थु पठमसन्निपातो येव होति, तस्मा 'कोटिसतसहस्सं' ति आह।

भन्ते, सब्बेहि पि सद्धिं मय्हं गेहे भिक्खं गण्हथा ति।

सत्था अधिवासेसि।

ब्राह्मणो स्वातनाय निमन्तेत्वा गेहं गच्छन्तो चिन्तेसि—अहं एत्तकानं भिक्खूनं यागुभत्तवत्थादीनि दातुं नो न सक्कोमि, निसीदनट्ठानं पन कथं भविस्सतीति। तस्स सा चिन्ता चतुरासीतियोजनसहस्समत्थके ठितस्स देवरञ्ञो पण्डुकम्बलसिलासनस्स उण्हभावं जनेसि। सक्को 'को नु खो मं इमस्सा ठाना चावेतुकामो' ति दिब्बचक्खुना ओलोकेन्तो महापुरिसं दिस्वा सुरुचिब्राह्मणो बुद्धपमुखं भिक्खुसंघं निमन्तेत्वा निसीदनट्ठानत्थाय चिन्तेति, मया पि तत्थ गन्त्वा पुञ्ञकोट्ठासं गहेतुं वट्टतीति वड्ढकीवण्णं निम्मिनित्वा वासिफरसुहत्थो महासत्तस्स पुरतो पातुरहोसि।

सो 'अत्थि नु खो कस्सचि भतिया कत्तब्बं' ति आह।

महापुरिसो दिस्वा--'किं कम्मं करिस्ससी' ति आह।

'मम अजाननसिप्पं नाम नत्थि, गेहं वा मण्डपं वा यो यं कारेति तस्स तं कातुं जानामी' ति।

'तेन हि मय्हं कम्मं अत्थी' ति।

'किं अय्या' ति।

'स्वातनाय मे कोटिसतसहस्सभिक्खू निमन्तिता। तेसं निसीदनमण्डपं करिस्ससी ति।

सा चिन्ता ति पदं जनेसीति पदे कत्ता। उण्हभावं ति थद्धभावं। वसति छिन्दति सीलेना ति वासी। 'वस'–छेदने। णीपच्चयो। परं ससति हिंसतीति फरसु। **यदादिना** उपच्चयो। पस्स फो, सलोपो च। वासी च फरसु च वासिफरसु। वासिफरसु हत्थे यस्स सो वासिफरसुहत्थो। वासीफरसुहत्थो[1] ति पि पाठो।

---

१. ०हत्था–सी०।

'अहं नाम करेय्यं, सचे मे भतिं दातुं सक्खिस्सथा' ति ।

'सक्खिस्सामी ताता' ति ।

'साधु, करिस्सामी' ति गन्त्वा एकं पदेसं ओलोकेसि ।

द्वादसतेरसयोजनप्पमाणो पदेसो कसिणमण्डलं विय समतलो अहोसि । सो 'एत्तके ठाने सत्तरतनमयो मण्डपो उट्ठहतू' ति चिन्तेत्वा ओलोकेसि । तावदेव पुथविं भिन्दित्वा मण्डपो उट्ठहि । तस्स सोवण्णमयेसु थम्भेसु रजतमया घटका अहेसुं, रजतमयेसु सोवण्णमया । मणित्थम्भेसु पवालमया, पवालत्थम्भेसु मणिमया, सत्तरतनमयेसु सत्तरतनमया व घटका अहेसुं । ततो 'मण्डपस्स अन्तरन्तरे किङ्किणिकजालं ओलम्बतू' ति ओलोकेसि । सह ओलोकनेनेव किङ्किणिकजालं ओलम्बि; यस्स मन्दवातेरितस्स पञ्चङ्गिकस्सेव तुरियस्स मधुरसद्दो निग्गच्छति, दिब्बसङ्गीतवत्तनकालो विय होति । 'अन्तरन्तरा गन्धदाममालादामानि ओलम्बन्तू' ति चिन्तेसि । दामानि ओलम्बिंसु । 'कोटिसतसहस्ससंखानं भिक्खूनं आसनानि च आधारकानि च पठविं भिन्दित्वा उट्ठहन्तू' ति चिन्तेसि । तावदेव उट्ठहिंसु । 'कोणे कोणे एकेका उदकचाटियो उट्ठहन्तू' ति चिन्तेसि । उदकचाटियो उट्ठहिंसु । एत्तकं मापेत्वा ब्राह्मणस्स सन्तिकं गन्त्वा— 'एहि अय्य, तव मण्डपं ओलोकेत्वा मय्हं भतिं देही' ति आह ।

महापुरिसो गन्त्वा मण्डपं ओलोकेसि । ओलोकेन्तस्सेव सकलसरीरं पञ्चवण्णाय पीतिया निरन्तरं फुटं अहोसि । अथस्स मण्डपं ओलोकेत्वा एतदहोसि—'नायं मण्डपो मनुस्सभूतेन कतो । मय्हं पन अज्झासयं मय्हं गुणं आगम्म अद्धा सक्कभवनं उण्हं अहोसि । ततो सक्केन देवरञ्ञा अयं मण्डपो कारितो भविस्सति । न खो पन मे युत्तं, एवरूपे मण्डपे एकदिवसं येव दानं दातुं । सत्ताहं दस्सामी' ति चिन्तेसि । बाहिरकदानं हि कित्तकम्पि समानं बोधिसत्तानं तुट्ठिं कातुं न सक्कोति । अलङ्कतसीसं पन छिन्दित्वा अञ्जित-अक्खीनि उप्पाटेत्वा हदयमंसं वा उब्बत्तेत्वा दिन्नकाले बोधिसत्तानं चागं निस्साय तुट्ठि नाम होति । अम्हाकम्पि बोधिसत्तस्स सिविजातके देवसिकं पञ्चकहापणम्मणानि विस्सज्जेत्वा चतूसु द्वारेसु मज्झे नगरे च दानं देन्तस्स

मण्डपो ति मण्डयति रतिं जनेतीति मण्डपो । **विटपादयो** ति (ण्वादि० ११९)मोग्गलानसुत्तेन अपपच्चयो । अथवा मण्डं सूरियरस्मिं पाति निवारयतीति मण्डपो । घटका ति कुम्भरूपा । अन्तन्तेना ति अन्त-अन्ते । किङ्कणिकजालं ति[1] किङ्कणिकाय बन्धनजालं । कणति सद्दं करोतीति किङ्कणिका । 'कण'--सद्दे । **किङ्कणिकादयो** ति (ण्वादि० २१) मोग्गलानसुत्तेन किकपच्चयो[2] । कस्स अस्स इ, निग्गहितागमो च । यस्स किङ्कणिकजालस्स मन्दवातेरितस्स पञ्चङ्गिकस्स तूरियस्स इव मधुरसद्दो निगच्छति । आधारका चा ति पत्ताधारका ।

पञ्चवण्णाय पीतिया पञ्चभेदाय पीतिया । (६१–सी०) पञ्च कहापणम्बणानीति पञ्चकहापणानं अम्बणानि । दसदो णातु अम्बणं ति **अभिधानप्पदीपिका ।**

---

१. किङ्किणिक ०–सी० । २. णिक०–सी० ।

तं दानं चागतुट्ठिं उप्पादेतुं नासक्खि। यदा पन ब्राह्मणवण्णेन आगन्त्वा सक्को देवराजा अक्खीनि याचि, तदा तानि उप्पाटेत्वा ददमानस्सेव हासो उप्पज्जि। केसग्गमत्तम्पि चित्तं अञ्ञथत्तं नाम नाहोसि। एवं दानं निस्साय बोधिसत्तानं तित्ति नाम नत्थि। तस्मा सो पि महापुरिसो—'सत्ताहं मया कोटिसतसहस्ससंखानं भिक्खूनं दानं दातुं वट्टती' ति चिन्तेत्वा तस्मिं मण्डपे निसीदापेत्वा सत्ताहं गवपानं नाम दानं अदासि।

गवपानं हि महन्ते महन्ते कोलम्बे खीरस्स पूरेत्वा उद्धने आरोपेत्वा घनपाकपक्के खीरे थोके तण्डुले पक्खिपित्वा पक्कमधुसक्कराचुण्णसप्पीहि अभिसङ्खतं भोजनं वुच्चति।

मनुस्सा येव पन परिविसितुं नासक्खिंसु। देवा पि एकन्तरिका हुत्वा परिविसिंसु। वारसतेरसयोजनप्पमाणं ठानम्पि भिक्खू गण्हितुं नप्पहोसि येव। ते पन भिक्खू अत्तनो अत्तनो आनुभावेन निसीदिंसु।

परियोसानदिवसे सब्बभिक्खूनं पत्तानि धोवापेत्वा भेसज्जत्थाय सप्पि-नवनीत-मधु-फाणितादीनि पूरेत्वा तिचीवरेहि सद्धिं अदासि। संघनवकभिक्खुना लद्धचीवरसाटका सतसहस्सग्घनका अहेसुं।

सत्था अनुमोदनं करोन्तो—'अयं पुरिसो एवरूपं महादानं अदासि, को नु खो भविस्सती' ति उपधारेन्तो 'अनागते कप्पसतसहस्साधिकानं द्विन्नं असङ्ख्येय्यानं मत्थके गोतमो नाम बुद्धो भविस्सती' ति दिस्वा महापुरिसं आमन्तेत्वा 'त्वं एत्तकं नाम कालं अतिक्कमित्वा गोतमो नाम बुद्धो भविस्ससी' ति ब्याकासि।

महापुरिसो ब्याकरणं सुत्वा—'अहं किर बुद्धो भविस्सामि, को मे घरावासेन अत्थो, पब्बजिस्सामी' ति चिन्तेत्वा तथारूपं सम्पत्तिं खेळपिण्डं विय पहाय सत्थुसन्तिके पब्बजित्वा बुद्धवचनं उग्गण्हित्वा अभिञ्ञा च समापत्तियो च निब्बत्तेत्वा आयुपरियोसाने ब्रह्मलोके निब्बत्ति।

मङ्गलस्स पन भगवतो नगरं उत्तरं नाम अहोसि। पितापि उत्तरो नाम खत्तियो, माता पि उत्तरा नाम देवी। सुदेवो च धम्मसेनो च द्वे अग्गसावका। पालितो नाम-उपट्ठाको। सीवली च असोका च द्वे अग्गसाविका। नागरुक्खो बोधि। अट्ठासीतिहत्थुब्बेधं सरीरं अहोसि। नवुतिवस्ससहस्सानि ठत्वा परिनिब्बुते पन तस्मिं एकप्प-

---

कोलम्बे ति के[1] अग्गिम्हि ओलम्बतीति कोलम्बो। क-ओपुब्बो 'लबि'—अवसंसने। कोलुम्पे ति पि अत्थि। खीरस्सा ति खीरं। घनपाकपक्के ति घनपाकेन पक्के। घटपानपक्के ति पि पाठो, घटपानभावेन पक्के ति अत्थो। एकन्तरिका ति एकदिवसेन[2] अन्तरिका। अथवा एकेन जनेन अन्तरिका।

---

१. नत्थि—सी०। २. एकादि वसेन—सी०।

हारेनेव दसचक्कवाळसहस्सानि एकन्धकारानि अहेसुं। सब्बचक्कवाळेसु मनुस्सानं महन्तं आरोदनपरिदेवनं अहोसि।

कोण्डञ्ञस्स अपरेन मङ्गलो नाम नायको।
तमं लोके निहन्त्वान धम्मोक्कमभिधारयी ति॥

४ भगवा सुमनो

एवं दससहस्सीलोकधातुं अन्धकारं कत्वा परिनिब्बुतस्स तस्स भगवतो अपरभागे सुमनो नाम सत्था उदपादि। तस्सा पि तयो सावकसन्निपाता। पठमसन्निपाते कोटिसतसहस्सं भिक्खू अहेसुं। दुतिये कञ्चनपब्बतम्हि नवुतिकोटिसहस्सानि, ततिये असीतिकोटिसहस्सानि।

तदा महासत्तो अतुलो नाम नागराजा अहोसि, महिद्धिको महानुभावो। सो, 'बुद्धो उप्पन्नो' ति सुत्वा ञातिसंघपरिवुतो नागभवना निक्खमित्वा कोटिसतसहस्सभिक्खुपरिवारस्स तस्स भगवतो दिब्बतुरियेहि उपहारं कत्वा महादानं दत्वा पच्चेकं दुस्सयुगानि दत्वा सरणेसु पतिट्ठासि। सो पि नं सत्था 'अनागते बुद्धो भविस्ससी' ति ब्याकासि।

तस्स भगवतो नगरं खेमं नाम अहोसि। सुदत्तो नाम राजा पिता, सिरिमा नाम माता। सरणो च भावितत्तो च अग्गसावका। उदेनो नामुपट्ठाको। सोणा च उपसोणा च अग्गसाविका। नागरुक्खो बोधि। नवुतिहत्थुब्बेधं सरीरं, नवुति येव वस्ससहस्सानि आयुप्पमाणं अहोसि।

मङ्गलस्स अपरेन सुमनो नाम नायको।
सब्बधम्मेहि असमो सब्बसत्तानमुत्तमो ति॥

५. भगवा रेवतो

तस्स अपरभागे रेवतो नाम सत्था उदपादि। तस्सा पि तयो सावकसन्निपाता। पठमसन्निपाते गणना नाम नत्थि। दुतिये कोटिसतसहस्समिक्खू अहेसुं, तथा ततिये।

तदा बोधिसत्तो अतिदेवो नाम ब्राह्मणो हुत्वा सत्थु धम्मदेसनं सुत्वा सरणेसु पतिट्ठाय सिरसि अञ्जलिं ठपेत्वा तस्स सत्थुनो किलेसप्पहाने वण्णं वत्वा उत्तरासङ्गेन पूजं अकासि। सो पि नं 'बुद्धो भविस्ससी' ति ब्याकासि।

तस्स पन भगवतो नगरं धञ्ञवती नाम नाम अहोसि। पिता विपुलो नाम खत्तियो, माता पि विपुला नाम। वरुणो च ब्रह्मदेवो च अग्गसावका। सम्भवो नाम

उपहारं ति पूजनं।
वण्णं ति गुणं। उत्तरासङ्गेना ति उत्तरस्मिं देहभागे आसज्जियतीति उत्तरासङ्गो।

उपट्ठाको। भद्दा च सुभद्दा च अग्गसाविका। नागरुक्खो व बोधि। सरीरं असीतिहत्थुब्बेधं अहोसि, आयु सट्ठिवस्ससहस्सानीति।

सुमनस्स अपरेन रेवतो नाम नाम नायको।
अनुपमो असदिसो अतुलो उत्तमो जिनो ति॥

६. भगवा सोभितो

तस्स अपरभागे सोभितो नाम सत्था उदपादि। तस्सा पि तयो सावकसन्निपाता। पठमसन्निपाते कोटिसतं भिक्खू अहेसुं। दुतिये नवुति कोटियो, ततिये असीति कोटियो।

तदा बोधिसत्तो अजितो नाम ब्राह्मणो हुत्वा सत्थु धम्मदेसनं सुत्वा सरणेसु पतिट्ठाय बुद्धपमुखस्स भिक्खुसंघस्स महादानं अदासि। सो पि नं 'बुद्धो भविस्ससी' ति ब्याकासि।

तस्स पन भगवतो नगरं सुधम्मं नाम अहोसि। पिता सुधम्मो नाम राजा, माता पि सुधम्मा नाम। असमो च सुनेत्तो च अग्गसावका। अनोमो नाम उपट्ठाको। नकुला च सुजाता च अग्गसाविका। नागरुक्खो व बोधि। अट्ठपण्णासहत्थुब्बेधं सरीरं अहोसि, नवुतिवस्ससहस्सानि आयुप्पमाणं ति।

रेवतस्स अपरेन सोभितो नाम नायको।
समाहितो सन्तचित्तो असमो अप्पटिपुग्गलो ति॥

७. भगवा अनोमदस्सी

तस्स अपरभागे एकं असङ्खेय्यं अतिक्कमित्वा एकस्मिं कप्पे तयो बुद्धा निब्बत्तिंसु—अनोमदस्सी, पदुमो नारदो ति। अनोमदस्सिस्स भगवतो तयो सावकसन्निपाता। पठमे अट्ठभिक्खुसतसहस्सानि अहेसुं, दुतिये सत्त, ततिये छ। तदा बोधिसत्तो एको यक्खसेनापति अहोसि, महिद्धिको महानुभावो, अनेककोटिसतसहस्सानं यक्खानं अधिपति। सो 'बुद्धो उप्पन्नो' ति सुत्वा आगन्त्वा बुद्धपमुखस्स भिक्खुसंघस्स महादानं अदासि। सत्था पि नं अनागते 'बुद्धो भविस्ससी' ति ब्याकासि।

अनोमदस्सिस्स पन भगवतो चन्दवती नाम नगरं अहोसि। यसवा नाम राजा पिता, यसोधरा नाम माता। निसभो च अनोमो च अग्गसावका। वरुणो नाम उप-

---

नागरुक्खो ति न गच्छतीति नागो। आदिम्हि दीघो। रूहति उद्धं[1] आरोहतीति रुक्खो। 'रुह'-जनने। **मुखादयो** ति (ण्वादि० ३१)मोग्गलानसुत्तेन खो। नागो च सो रुक्खो चा ति नागरुक्खो।

एकं असङ्ख्येय्यं जय-असङ्ख्येय्यं[2] अतिक्कमित्वा एकस्मिं कप्पे चरकप्पनामके[3] कप्पे[3] तयो बुद्धा निब्बत्तिंसु।

१. ०उद्धं–सी०। २. जेयसंखेय्यनामकं असंखेय्यं–सी०। ३-३. नत्थि–म०।

ट्ठाको। सुन्दरी च सुमना च अग्गसाविका। अज्जुनरुक्खो बोधि। सरीरं अट्ठपञ्ञास-हत्थुब्बेधं अहोसि, वस्ससतसहस्सं आयू ति।

सोभितस्स अपरेन सम्बुद्धो द्विपदुत्तमो।
अनोमदस्सी अमितयसो तेजस्सी दुरतिक्कमो ति॥

८. भगवा पदुमो

तस्स अपरभागे पदुमो नाम सत्था उदपादि। तस्सापि तयो सावकसन्निपाता। पठमसन्निपाते कोटिसतसहस्सं भिक्खू अहेसुं। दुतिये तीणि सतसहस्सानि, ततिये अगामके अरञ्ञे महावनसण्डवासीनं भिक्खूनं द्वे सतसहस्सानि।

तदा तथागते तस्मिं वनसण्डे वसन्ते बोधिसत्तो सीहो हुत्वा सत्थारं निरोध-समापत्तिं समापन्नं दिस्वा पसन्नचित्तो वन्दित्वा पदक्खिणं कत्वा पीतिसोमनस्स-जातो। तिक्खत्तुं सीहनादं नदित्वा सत्ताहं बुद्धारम्मणपीतिं अविजहित्वा पीतिसुखेनेव गोचराय अपक्कमित्वा जीवितपरिच्चागं कत्वा पयिरुपासमानो अट्ठासि।

सत्था सत्ताहच्चयेन निरोधा वुट्ठितो सीहं ओलोकेत्वा—'भिक्खुसंघे पि चित्तं पसादेत्वा संघं वन्दिस्सतीति भिक्खुसंघो आगच्छतू' ति चिन्तेसि। भिक्खु तावदेव आगमिंसु। सीहो संघे चित्तं पसादेसि। सत्था तस्स मनं ओलोकेत्वा 'अनागते बुद्धो भविस्ससी' ति ब्याकासि।

पदुमस्स पन भगवतो चम्पकं नाम नगरं अहोसि। असमो नाम राजा पिता, मातापि असमा नाम। सालो च उपसालो च अग्गसावका। वरुणो नामुपट्ठाको। रामा च सुरामा च अग्गसाविका। सोणरुक्खो नाम बोधि। अट्ठपण्णासहत्थुब्बेधं सरीरं अहोसि, आयु वस्ससतसहस्सं ति।

अनोमदस्सिस्स अपरेन सम्बुद्धो दिपदुत्तमो।
पदुमो नाम नामेन असमो अप्पटिपुग्गलो ति॥

९. भगवा नारदो

तस्स अपरभागे नारदो नाम सत्था उदपादि। तस्सापि तयो सावकसन्निपाता। पठमसन्निपाते कोटिसतसहस्सभिक्खू अहेसुं। दुतिये नवुतिकोटिसहस्सानि, ततिये असीतिकोटिसहस्सानि।

तदा बोधिसत्तो इसिपब्बज्जं पब्बज्जित्वा पञ्चसु अभिञ्ञासु अट्ठसु च समापत्तीसु वसी हुत्वा बुद्धपमुखस्स संघस्स महादानं दत्वा चन्दनेन पूजं अकासि। सो पि नं 'अनागते बुद्धो भविस्ससी' ति ब्याकासि।

अज्जुनरुक्खो ति अज्जेति धनसञ्चयं (५१–म०) करोतीति अज्जुनो। 'अज्ज'-अज्जने। **वराराादि** (ण्पादि० १०१) मोग्गलानसुत्तेन कुनपच्चयो।

सोणरुक्खो ति सुनति गच्छति वत्ततीति सोणो। 'सुन'-गतियं। णो।

तस्स भगवतो धञ्ञवती नाम नगरं अहोसि। सुदेवो नाम खत्तियो पिता, अनोमा नाम माता। भद्दसालो च जितमित्तो च अग्गसावका। वासेट्ठो नामुपट्ठाको। उत्तरा च फग्गुणी च अग्गसाविका। महासोणरुक्खो नाम बोधि। सरीरं अट्ठासीतिहत्थुब्बेधं अहोसि, नवुतिवस्ससहस्सानि आयू ति।

पदुमस्स अपरेन सम्बुद्धो दिपदुत्तमो।
नारदो नाम नामेन असमो अप्पटिपुग्गलो ति॥

१०. भगवा पदुमुत्तरो

नारदबुद्धस्स अपरभागे इतो सतसहस्सकप्पमत्थके एकस्मिं कप्पे एको व पदुमुत्तरबुद्धो नाम उदपादि। तस्सा पि तयो सावकसन्निपाता। पठमे कोटिसतसहस्सभिक्खू अहेसुं। दुतिये वेभारपब्बते नवुतिकोटिसहस्सानि, ततिये असीतिकोटिसहस्सानि।

तदा बोधिसत्तो जटिलो नाम महारट्ठियो हुत्वा बुद्धपमुखस्स संघस्स तिचीवरदानं अदासि। सो पि नं 'अनागते बुद्धो भविस्ससी' ति ब्याकासि।

पदुमुत्तरस्स पन भगवतो काले तित्थिया नाम नाहेसुं। सब्बे देवमनुस्सा बुद्धमेव सरणं अगमंसु। तस्स नगरं हंसवती नाम अहोसि। पिता आनन्दो नाम खत्तियो, माता सुजाता नाम। देवलो च सुजातो च अग्गसावका। सुमनो नाम उपट्ठाको। अमिता च असमा च अग्गसाविका। सालरुक्खो च बोधि। सरीरं अट्ठासीतिहत्थुब्बेधं अहोसि। सरीरप्पभा समन्ततो द्वादस योजनानि गण्हि। वस्ससतसहस्सं आयू ति।

नारदस्स अपरेन सम्बुद्धो द्विपदुत्तमो।
पदुमुत्तरो नाम जिनो अक्खोब्भो सागरूपमो ति॥

११. भगवा सुमेधो

तस्स अपरभागे तिंसकप्पसतसहस्सानि अतिक्कमित्वा सुमेधो च सुजातो चा ति एकस्मिं कप्पे द्वे बुद्धा निब्बत्तिंसु।

सुमेधस्सापि तयो सावकसन्निपाता। पठमसन्निपाते सुदस्सननगरे कोटिसतं खीणासवा अहेसुं। दुति नवुतिकोटियो, ततिये असीतिकोटियो।

एकस्मिं कप्पे ति सारकप्पनामके कप्पे। एको व पदुमुत्तरबुद्धो नाम उदपादि। रट्ठे नियुत्तो रट्ठियो। महन्तो च सो रट्ठियो चा ति महारट्ठियो। सालरुक्खो ति सारो अस्स अत्थीति सालो[1]। **सद्धादितो णा** ति (क० २.८.२७) सुत्तेन णो। **दोधस्स चा** ति (क० १.२.९)चकारेन रस्स लो[2]। **अट्ठसालिनियं**[3] **जातकट्ठकथायं अपदानट्ठकथायञ्च** पदुमुत्तरभगवतो सरीरं अट्ठासीति हत्थुब्बेधं ति वुत्तं, **बुद्धवंसट्ठकथायं**, पन अट्ठपण्णासहत्थुब्बेधं ति वुत्तं।

१. सारो–सी०। २. ळो–सी०। ३. ०सालि०–सी०।

तदा बोधिसत्तो उत्तरो नाम माणवो हुत्वा निदहित्वा ठपितं येव असीतिकोटिधनं विस्सज्जेत्वा बुद्धप्पमुखस्स संघस्स महादानं दत्वा धम्मं सुत्वा सरणेसु पतिट्ठाय निक्खमित्वा पब्बजि। सो पि 'नं अनागते बुद्धो भविस्ससी' ति ब्याकासि। सुमेधस्स भगवतो सुदस्सनं नाम नगरं अहोसि। सुदत्तो नाम राजा पिता, मातापि सुदस्सना नाम। सरणो च सब्बकामो च द्वे अग्गसावका। सागरो नाम उपट्ठाको। रामा च सुरामा च द्वे अग्गसाविका। महानीपरुक्खो बोधि। सरीरं अट्ठासीतिहत्थुब्बेधं अहोसि। आयु नवुतिवस्ससहस्सानीति।

पदुमुत्तरस्स अपरेन सुमेधो नाम नायको।
दुरासदो अग्गतेजो सब्बलोकुत्तमो मुनीति॥

१२. भगवा सुजातो

तस्स अपरभागे सुजातो नाम सत्था उदपादि। तस्सापि तयो सावकसन्निपाता। पठमसन्निपाते सट्ठिभिक्खुसहस्सानि अहेसुं। दुतिये पञ्ञासं, ततिये चत्तारीसं।

तदा बोधिसत्तो चक्कवत्ती राजा हुत्वा 'बुद्धो उप्पन्नो' ति सुत्वा उपसङ्कमित्वा धम्मं सुत्वा बुद्धपमुखस्स संघस्स सद्धिं सत्तहि रतनेहि चतुमहादीपरज्जं दत्वा सत्थु सन्तिके पब्बजि। सकलरट्ठवासिनो रट्ठुप्पादं गहेत्वा आरामिककिच्चं साधेन्ता बुद्धपमुखस्स संघस्स निच्चं महादानं अदंसु। सो पि नं 'अनागते बुद्धो भविस्ससी' ति ब्याकासि।

तस्स भगवतो नगरं सुमङ्गलं नाम अहोसि। उग्गतो नाम राजा पिता, पभावती नाम माता। सुदस्सनो च देवो च अग्गसावका। नारदो नाम उपट्ठाको। नागा च नागसमाला च अग्गसाविका। महावेणुरुक्खो बोधि। सो किर मन्दच्छिद्दो घनक्खन्धो उपरि महासाखाहि मोरपिञ्जकलापो विय विरोचित्थ। तस्स भगवतो सरीरं पण्णासहत्थुब्बेधं अहोसि, आयु नवुतिवस्ससहस्सानीति।

तत्थेव मण्डकप्पम्हि सुजातो नाम नायको।
सीहहनुसभक्खन्धो अप्पमेय्यो दुरासदो ति॥

१३. भगवा पियदस्सी

तस्स अपरभागे इतो अट्ठारसकप्पसतमत्थके एकस्मिं कप्पे पियदस्सी, अत्थदस्सी, धम्मदस्सी ति तयो बुद्धा निब्बत्तिसु। पियदस्सिस्स पि तयो सावकसन्नि-

---

सुमेधो सुजातो चा ति एकस्मि कप्पे मण्डनामके कप्पे द्वे बुद्धा निब्बत्तिसुं। महानिम्बरुक्खो ति नमति फलभारेना ति निम्वो। 'नम'-नमने। **निम्बादयो** ति (ण्वु० १२१)मोग्गलानसुत्तेन बपच्चयो। नस्स[1] अकारस्स इ। अथवा नीयतीति निम्बो। 'नी'-नये। यदादिना बो, म्बोन्तो[2] च।

रट्ठुप्पादं ति रट्ठे उप्पज्जनकसुङ्कं। महावेणुरुक्खो ति वत्ततीति[3] वेणु। (६२–सी०) 'वि'-गमने। **रीवीहाहिणू** ति (ण्वु० ६३) मोग्गलानसुत्तेन णु।

१. नमस्स–सी०। २. मोन्तो–सी०। ३. पवत्ततीति वेणु, वेति पवत्ततीति–सी०।

पाता। पठमे कोटिसतसहस्सं भिक्खू अहेसुं। दुतिये नवुतिकोटियो, ततिये असीतिकोटियो ति।

तदा बोधिसत्तो कस्सपो नाम माणवो तिण्णं वेदानं पारङ्गतो व हुत्वा सत्थु धम्मदेसनं सुत्वा कोटिसतसहस्सघनपरिच्चागेन संघारामं कारेत्वा सरणेसु च सीलेसु च पतिट्ठासि। अथ नं सत्था 'अट्ठारसकप्पसतच्चयेन बुद्धो भविस्ससी' ति ब्याकासि।

तस्स भगवतो अनोमं नाम नगरं अहोसि। पिता सुदिन्नो नाम राजा, माता चन्दा नाम। पालितो च सब्बदस्सी च अग्गसावका। सोभितो नामुपट्ठाको। सुजाता च धम्मदिन्ना च अग्गसाविका। पियङ्गुरुक्खो बोधि। सरीरं असीतिहत्थुब्बेधं अहोसि, नवुतिवस्ससहस्सानि आयू ति।

सुजातस्स अपरेन सयम्भू लोकनायको।
दुरासदो असमसमो पियदस्सी महायसो ति॥

१४. भगवा अत्थदस्सी

तस्स अपरभागे अत्थदस्सी नाम सत्था उदपादि। तस्सापि तयो सावकसन्निपाता। पठमे अट्ठनवुतिभिक्खुसतसहस्सानि अहेसुं। दुतिये अट्ठासीतिसहस्सानि तथा ततिये।

तदा बोधिसत्तो सुसीमो नाम महिद्धिकतापसो हुत्वा देवलोकतो मन्दारवपुप्फछत्तं आहरित्वा सत्थारं पूजेसि। सो पि नं 'बुद्धो भविस्ससी' ति ब्याकासि।

तस्स भगवतो सोभितं नाम नगरं अहोसि। सागरो नाम राजा पिता, सुदस्सना नाम माता। सन्तो च उपसन्तो च अग्गसावका। अभयो नामुपट्ठाको। धम्मा च सुधम्मा च अग्गसाविका। चम्पकरुक्खो बोधि। सरीरं असीतिहत्थुब्बेधं अहोसि। सरीरप्पभा समन्ततो सब्बकालं योजनमत्तं फरित्वा अट्ठासि। आयु वस्ससतसहस्सं ति।

तत्थेव मण्डकप्पम्हि अत्थदस्सी नरासभो।
महातमं निहन्त्वान पत्तो सम्बोधिमुत्तमं॥

१५ भगवा धम्मदस्सी

तस्स अपरभागे धम्मदस्सी नाम सत्था उदपादि। तस्सापि तयो सावकसन्निपाता। पठमे कोटिसतं भिक्खू अहेसुं। दुतिये सत्तति कोटियो, ततिये असीति कोटियो।

एकस्मिं कप्पे ति एकस्मिं वरनामके[1] कप्पे। पियङ्गुरुक्खो ति पियभावं गच्छतीति पियङ्गु। **यदादिना** (क० २.८.४८) उ।

चम्पकरुक्खो ति चमन्ति अदन्ति[2] एत्था ति चम्पा, नगरं। 'चम'-अदने। पपच्चयो। पठमकाले चम्पानगरे जातो चम्पको कपच्चयो[3]।

१. सारनामके–सी०। २. अदेन्ति–सी०। ३. नत्थि–म०।

तदा बोधिसत्तो सक्को देवराजा हुत्वा दिब्बगन्धपुप्फेहि च दिब्बतुरियेहि पूजं अकासि। सो पि नं 'अनागते बुद्धो भविस्ससी' ति ब्याकासि।

तस्स भगवतो सरणं नाम नगरं अहोसि। पिता सरणो नाम राजा, माता सुनन्दा नाम। पदुमो च फुस्सदेवो च अग्गसावका। सुनेत्तो नामुपट्ठाको। खेमा च सब्बनामा च अग्गसाविका। रत्तकुरवकरुक्खो बोधि, बिम्बिजालो ति पि वुच्चति। सरीरं पनस्स असीतिहत्थुब्बेधं अहोसि, वस्ससतसहस्सं आयू ति।

१६. भगवा सिद्धत्थो

तस्स अपरभागे इतो चतुनवुतिकप्पमत्थके एकस्मिं कप्पे एको व सिद्धत्थो नाम बुद्धो उदपादि। तस्सापि तयो सावकसन्निपाता। पठमसन्निपाते कोटिसहस्सं भिक्खू अहेसुं। दुतिये नवुतिकोटियो, ततिये असीतिकोटियो।

तदा बोधिसत्तो उग्गतेजो अभिञ्ञाबलसम्पन्नो मङ्गलो नाम तापसो हुत्वा महाजम्बुफलं आहरित्वा तथागतस्स अदासि। सत्था तं फलं परिभुञ्जित्वा 'चतुनवुतिकप्पमत्थके बुद्धो भविस्ससी' ति बोधिसत्तं ब्याकासि।

तस्स भगवतो नगरं वेभारं नाम अहोसि। पिता जयसेनो नाम राजा, माता सुफस्सा नाम। सम्बलो च सुमित्तो च अग्गसावका। रेवतो नामुपट्ठाको। सीवली च सुरामा च अग्गसाविका। कणिकाररुक्खो बोधि। सरीरं सट्ठिहत्थुब्बेधं अहोसि, वस्ससतसहस्सं आयू ति।

धम्मदस्सिस्स अपरेन सिद्धत्थो नाम नायको।
निहनित्वा तमं सब्बं सुरियो'वब्भुगतो यथा ति॥

१७. भगवा तिस्सो

तस्स अपरभागे इतो द्वानवुतिकप्पमत्थके तिस्सो, फुस्सो ति एकस्मिं कप्पे द्वे बुद्धा निब्बत्तिंसु। तिस्सस्स भगवतो तयो सावकसन्निपाता। पठमसन्निपाते भिक्खूनं कोटिसतं अहोसि। दुतिये नवुतिकोटियो, ततिये असीतिकोटियो।

रत्तङ्कुरवकरुक्खो ति रत्तं अङ्कुरं यस्स सो रत्तङ्कुरवा, रत्तङ्कुरवा एव रत्तङ्कुरवको। बिम्बरत्तवण्णताय[1] ओट्ठेन सदिसा जाला[2] यस्स सो बिम्बजालो[3]।

एकस्मिं कप्पे ति सारनामके कप्पे। कणिकाररुक्खो ति अगन्धत्ता अत्तानं कणं कनिट्ठं करोतीति कणिकारो ट्ठलोपो[4], णपच्चयो।

१. बिम्बारत्त०–सी०। २. फला–सी०। ३. बिम्बाफलो–सी०। ४. ट्ठकलोपो–म०।

तदा बोधिसत्तो महाभोगो महायसो सुजातो नाम खत्तियो हुत्वा इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा महिद्धिकभावं पत्वा 'बुद्धो उप्पन्नो' ति सुत्वा दिब्बं मन्दारवपदुमं पारिच्छत्तकपुप्फानि च आदाय चतुपरिसमज्झे गच्छन्तं तथागतं पूजेसि; आकासे पुप्फवितानं अकासि। सो पि नं सत्था 'इतो द्वेनवुतिकप्पे बुद्धो भविस्ससी' ति ब्याकासि।

तस्स भगवतो खेमं नाम नगरं अहोसि। पिता जनसन्धो नाम खत्तियो, माता पदुमा नाम। ब्रह्मदेवो च उदयो च अग्गसावका। सम्भवो नामुपट्ठाको। फुस्सा च सुदत्ता च अग्गसाविका। असनरुक्खो बोधि। सरीरं सट्ठिहत्थुब्बेधं अहोसि, वस्ससतसहस्सं आयू ति।

सिद्धत्थस्स अपरेन असमो अप्पटिपुग्गलो।
अनन्तसीलो अमितयसो तिस्सो लोकग्गनायको ति॥

१८. भगवा फुस्सो

तस्स अपरभागे फुस्सो नाम सत्था उदपादि। तस्सापि तयो सावकसन्निपाता। पठमसन्निपाते सट्ठिभिक्खुसतसहस्सानि अहेसुं। दुतिये पण्णास, ततिये द्वत्तिंस।

तदा बोधिसत्तो विजितावी नाम खत्तियो हुत्वा महारज्जं पहाय सत्थु सन्तिके पब्बजित्वा तीणि पिटकानि उग्गहेत्वा महाजनस्स धम्मकथं कथेसि, सीलपारमिं च पूरेसि। सो पि नं बुद्धो तथेव ब्याकासि।

तस्स भगवतो कासी नाम नगरं अहोसि। जयसेनो नाम राजा पिता, सिरिमा नाम माता। सुरक्खितो च धम्मसेनो च अग्गसावका। सभियो नाम उपट्ठाको। चाला च उपचाला च अग्गसाविका। आमलकरुक्खो बोधि। सरीरं अट्ठपण्णासहत्थुब्बेधं अहोसि, नवुतिवस्ससहस्सानि आयू ति।

तत्थेव मण्डकप्पम्हि अहु सत्था अनुत्तरो।
अनुपमो असमसमो फुस्सो लोकग्गनायको ति॥

१९. भगवा विपस्सी

तस्स अपरभागे इतो एकनवुतिकप्पे विपस्सी नाम भगवा उदपादि। तस्सापि तयो सावकसन्निपाता। पठमसन्निपाते अट्ठसट्ठिभिक्खुसतसहस्सं अहोसि। दुतिये एकसतसहस्सं, ततीये असीतिसहस्सानि।

एकस्मिं कप्पे सारनामके कप्पे। असनरुक्खो ति असियति तक्खियतीति असनो। 'अस'-असने। यु-पच्चयो।

रिपुं विजितवा ति विजितावी। आमलकरुक्खो ति आभुसो अमतं मलति धारेतीति आमलको। 'मल'-धारणे। णपच्चयो[1]।

एकनवुतिकप्पे ति सारनामके एकनवुतिकप्पे। पाटलिरुक्खो ति पटति[2] गच्छति पवत्त-

१. णवु०–सी०। २. पदति–सी०।

तदा बोधिसत्तो महिद्धिको महानुभावो अतुलो नाम नागराजा हुत्वा सत्तरतनखचितं सोवण्णमयं पीठं भगवतो अदासि। सो पि नं 'इतो एकनवुतिकप्पे बुद्धो भविस्ससी' ति ब्याकासि।

तस्स भगवतो बन्धुमती नाम नगरं अहोसि। बन्धुमा नाम राजा पिता, बन्धुमती नाम माता। खण्डो च तिस्सो च अग्गसावका। असोको नामुपट्ठाको। चन्दा च चन्दमित्ता च अग्गसाविका। पाटलिरुक्खो बोधि। सरीरं असीतिहत्थुब्बेधं अहोसि। सरीरप्पभा सदा सत्तयोजनानि फरित्वा अट्ठासि। असीतिवस्ससहस्सानि आयू ति।

फुस्सस्स अपरेन सम्बुद्धो द्विपदुत्तमो।
विपस्सी नाम नामेन लोके उप्पज्जि चक्खुमा ति॥

२० भगवा सिखी

तस्स अपरभागे इतो एकतिंसे कप्पे सिखी च वेस्सभू चा ति द्वे बुद्धा अहेसुं। सिखिस्सा पि तयो सावकसन्निपाता। पठमसन्निपाते भिक्खुसतसहस्सं अहोसि। दुतिये असीतिसहस्सानि, ततिये सत्तति।

तदा बोधिसत्तो अरिन्दमो नाम राजा हुत्वा बुद्धपमुखस्स संघस्स सचीवरं महादानं पवत्तेत्वा सत्तरतनपटिमण्डितं हत्थिरतनं दत्वा हत्थिप्पमाणं कत्वा कप्पियभण्डं अदासि। सो पि नं 'इतो एकतिंसे कप्पे बुद्धो भविस्ससी' ति ब्याकासि।

तस्स पन भगवतो अरुणावती नाम नगरं अहोसि। अरुणो नाम खत्तियो पिता, पभावती नाम माता। अभिभू च सम्भवो च अग्गसावका। खेमङ्करो नामुपट्ठाको। मखिला च पदुमा च अग्गसाविका। पुण्डरीकरुक्खो बोधि। सरीरं सत्ततिंसहत्थुब्बेधं अहोसि। सरीरप्पभा योजनत्तयं फरित्वा अट्ठासि। सत्ततिंसवस्ससहस्सानि आयू ति।

विपस्सिस्स अपरेन सम्बुद्धो द्विपदुत्तमो।
सिखिव्हयो नाम जिनो असमो अप्पटिपुग्गलो ति॥

२१. भगवा वेस्सभू

तस्स अपरभागे वेस्सभू नाम सत्था उदपादि। तस्सा पि तयो सावकसन्निपाता। पठमसन्निपाते असीतिभिक्खुसतसहस्सानि अहेसु। दुतिये सत्तति, ततिये सट्ठि।

तीति पाटली। 'पट'गमने[1]। अलपच्चयो। **नदादितो वा[2] ई** ति[2] (क० २.४.२८) ई।

एकतिंसे कप्पे ति मण्डनामके कप्पे। पुण्डरीकरुक्खो ति सेतम्बरुक्खो। पुण्डियति सेतवण्णवसेन खण्डियतीति पुण्डरो[3]। 'पुण्ड'-खण्डने। णपच्चयो, रकारागमो। अथवा पण्डरं सेतवण्णं अस्स रुक्खस्स अत्थीति पुण्डरीको। **दण्डादितो इक ई** ति (५२—म०)(क० २.८.२३) सुत्तेन इको। **यवादिना** पस्स अकारस्स उ।

१. पद—गमने—सी०। २-२. नत्थि—सी०। ३. पुण्डरीको—सी०।

तदा बोधिसत्तो सुदस्सनो नाम राजा हुत्वा बुद्धपमुखस्स संघस्स सचीवरं महादानं दत्वा तस्स सन्तिके पब्बजित्वा आचारगुणसम्पन्नो बुद्धरतने चित्तिकारपीतिबहुलो अहोसि। सो पि नं भगवा 'इतो एकतिंसे कप्पे बुद्धो भविस्ससी' ति ब्याकासि।

तस्स पन भगवतो अनोपमं नाम नगरं अहोसि। सुप्पतीतो नाम राजा पिता, यसवती नाम माता। सोणो च उत्तरो च अग्गसावका। उपसन्तो नामुपट्ठाको। दामा च सुमाला च अग्गसाविका। सालरुक्खो बोधि। सरीरं सट्ठिहत्थुब्बेधं अहोसि, सट्ठिवस्स सहस्सानि आयू ति।

तत्थेव मण्डकप्पम्हि असमो अप्पटिपुग्गलो।
वेस्सभू नाम नामेन लोके उप्पज्जि सो जिनो ति॥

२२. भगवा ककुसन्धो

तस्स अपरभागे इमस्मिं कप्पे चत्तारो बुद्धा निब्बत्ता—ककुसन्धो, कोणागमनो, कस्सपो, अम्हाकं भगवा ति।

ककुसन्धस्स भगवतो एको व सन्निपातो। तत्थ चत्ताळीसं भिक्खुसहस्सानि अहेसुं।

तदा बोधिसत्तो खेमो नाम राजा हुत्वा बुद्धपमुखस्स संघस्स सपत्तचीवरं महादानञ्चेव अञ्जनादिभेसज्जानि च दत्वा सत्थु धम्मदेसनं सुत्वा पब्बजि। सो पि नं सत्था ब्याकासि।

ककुसन्धस्स पन भगवतो खेमं नाम नगरं अहोसि। अग्गिदत्तो नाम ब्राह्मणो पिता, विसाखा नाम ब्राह्मणी माता। विधुरो च सञ्जीवो च अग्गसावका। बुद्धिजो नाम उपट्ठाको। सामा च चम्पका च अग्गसाविका। महासिरीसरुक्खो बोधि। सरीरं चत्ताळीसहत्थुब्बेधं अहोसि, चत्ताळीसं वस्ससहस्सानि आयू ति।

वेस्सभूस्स अपरेन सम्बुद्धो द्विपदुत्तमो।
ककुसन्धो नाम नामेन अप्पमेय्यो दुरासदो ति॥

२३. भगवा कोणागमनो

तस्स अपरभागे कोणागमनो नाम सत्था उदपादि। तस्सापि एको सावकसन्निपातो। तत्थ तिंसभिक्खुसहस्सानि अहेसुं।

महासिरीसरुक्खो ति सप्पदट्ठकालादीसु सरियतीति सिरीसो। **सिरीसादयो** ति (ण्वु० २११) मोग्गलानसुत्तेन ईसो[1]। सरधातुस्स अकारस्स इ। अथवा सरति रोगं हिंसतीति सिरीसो। पट्टुण्णरट्ठे[2] जातो पटो पट्टुण्णपटो। चीनरट्ठे जातो पटो चीनपटो। कोसतो किमिगब्भतो जातो[3] कोसेय्यं। एय्यपच्चयो। कमियतीति कम्बलो। 'कमु'-इच्छाकन्तीसु। अलपच्चयो।

१. इ—सी०। २. पट्टु०—सी०। ३. जातं—सी०।

तदा बोधिसत्तो पब्बतो नाम राजा हुत्वा अमच्चगणपरिवुतो सत्थुसन्तिकं गन्त्वा धम्मदेसनं सुत्वा बुद्धपमुखं भिक्खुसंघं निमन्तेत्वा महादानं पवत्तेत्वा पट्टुण्णं चीनपट्टं कोसेय्यं कम्बलं दुकूलानि चेव सुवण्णपट्टकं दत्वा सत्थुसन्तिके पब्बजि। सो पि नं ब्याकासि।

तस्स भगवतो सोभवती नाम नगरं अहोसि। यञ्ञदत्तो नाम ब्राह्मणो पिता, उत्तरा नाम ब्राह्मणी माता। भीयसो च उत्तरो च अग्गसावका। सोत्थिजो नामुपट्ठाको। समुद्दा च उत्तरा च अग्गसाविका। उदुम्बररुक्खो बोधि। सरीरं तिंसतिहत्थुब्बेधं अहोसि, तिंसवस्ससहस्सानि आयू ति।

ककुसन्धस्स अपरेन सम्बुद्धो द्विपदुत्तमो।
कोणागमनो नाम जिनो लोकजेट्ठो नरासभो ति॥

२४. भगवा कस्सपो

तस्स अपरभागे कस्सपो नाम सत्था लोके उदपादि। तस्सा पि एको सावकसन्निपातो। तत्थ वीसतिभिक्खुसहस्सानि अहेसुं।

तदा बोधिसत्तो जोतिपालो नाम माणवो हुत्वा तिण्णं वेदानं पारगू भूमियं च अन्तळिक्खे च पाकटो घटीकारस्स कुम्भकारस्स मित्तो अहोसि। सो तेन सद्धिं सत्थारं उपसङ्कमित्वा धम्मकथं सुत्वा पब्बजित्वा आरद्धवीरियो तीणि पिटकानि उग्गहेत्वा वत्तावत्तसम्पत्तिया बुद्धसासनं सोभेसि। सो पि नं सत्था ब्याकासि।

तस्स भगवतो जातनगरं वाराणसी नाम अहोसि। ब्रह्मदत्तो नाम ब्राह्मणो पिता, धनवती नाम ब्राह्मणी माता। तिस्सो च भारद्वाजो च अग्गसावका। सब्बमित्तो नाम उपट्ठाको। अनुला च उरुवेला च अग्गसाविका। निग्रोधरुक्खो बोधि। सरीरं वीसतिहत्थुब्बेधं अहोसि, वीसतिवस्ससहस्सानि आयू ति।

मज्झे बकारागमो। दुक्खेन कुलते[1] आभरियते ति दुकुलं। 'कुल'-आभरणे। पट्टुण्णपटो च चीनपटो च कोसेय्यञ्च कम्बलञ्च दुकुलञ्च पट्टुण्ण....प....दुकुलानि। पटति[2] यातीति पटाका[3], धजो। (६३-सी०) 'पट'गमने[4]। **बलपटेह्याको** ति (ण्वु० १९) मोग्गलानसुत्तेन आको। सुवण्णेन खचितो पटाको[5]। उदुम्बति हिंसियतीति उदुम्बरो। 'उदुम्बि'-हिंसायं। **यदादिना** आरो। निग्गहितागमो। एकस्स बकारस्स लोपो।

अधोभागं रुद्धतीति[6] निग्रोधो। निपुब्बो 'रुधि'-आवरणे। णपच्चयो। उस्स ओ। गागमो।

---

१. कुल्यते–सी०। २. पतति–सी०। ३. पटाको–सी०। ४. पत–गमने–सी०। ५. पताको–सी०। ६. रुळ्हतीति–सी०।

अम्हाकं भगवा धम्माचरणानिसंसा

तस्स* पन भगवतो ओरभागे ठपेत्वा पन इमं अम्हाकं सम्मासम्बुद्धं, अञ्ञो बुद्धो नाम नत्थीति दीपङ्करादीनं चतुवीसतिया बुद्धानं सन्तिके लद्धव्याकरणो पन बोधिसत्तो। येन पन तेन—

मनुस्सत्तं लिङ्गसम्पत्ति हेतु सत्थारदस्सनं।
पब्बज्जा गुणसम्पत्ति अधिकारो च छन्दता।
अट्ठधम्मसमोधाना अभिनीहारं समिज्झतीति॥

इमे अट्ठधम्मे समोधानेत्वा दीपङ्करपादमूले कताभिनीहारेन—"हन्द बुद्धकरे धम्मे विचिनामि इतोचितो" ति उस्साहं कत्वा "विचिनन्तो तदा दक्खिं पठमं दानपारमिं" ति दानपारमितादयो बुद्धकारकधम्मा दिट्ठा। ते पूरेन्तो याव वेस्सन्तरत्तभावा आगमि।

आगच्छन्तो च ये ते कताभिनीहारानं बोधिसत्तानं आनिसंसा संवण्णिता—

लद्धं व्याकरणं येन सो लद्धव्याकरणो। बोधिसत्तो ति पदं आगमीति पदे कत्ता। ये दानपारमितादयो बुद्धकरधम्मा[1] अनेन बोधिसत्तेन दिट्ठा ति सम्बन्धो। अनेना ति पदं दिट्ठा ति पदे ततियाकत्ता।

मनुस्सस्स भावो मनुस्सत्तं, मनुस्सजाति। लिङ्गसम्पत्ति, पुरिसलिङ्गसम्पति। हेतू ति अरहत्तस्स उपनिस्सयसम्पत्ति। सत्थारदस्सनं ति बुद्धानं सम्मुखा दस्सनं। पब्बज्जा ति अनगारियभावो[2]। गुणसम्पत्तीति झानाभिञ्ञागुणपटिलाभो। अधिकारो ति अधिककारो[3]। जीवितादिपरिच्चागो ति अत्थो। छन्दता[4] बुद्धत्तापत्तियं छन्दसमायोगो। अट्ठधम्मसमोधाना इमेसं अट्ठानं धम्मानं समोधाना[5] अभिनीहारो मूलपत्थना समिज्झति।

इति इमे अट्टधम्मे समोधानेत्वा हन्द....प....पारमिं इति दानपारमितादयो बुद्धकरा ये धम्मा दीपङ्करपादमूले कताभिनीहारेन बोधिसत्तेन[6] दिट्ठा ति सम्बन्धो।

समोधानेत्वा ति पदं कत्वा ति पदे पुब्बकालक्रिया। कत्वा ति पदं दिट्ठा ति पदे पुब्बकालक्रिया। चतुब्बीसति....प....लद्धव्याकरणो बोधिसत्तो ते धम्मे पूरेन्तो याव वेस्सन्तरत्तभावा आगमीति सम्बन्धो।

एवं सब्बङ्गसम्पन्ना....प....पूरेन्तो सब्बपारमी इति एवं कताभिनीहारानं बोधिसत्तानं ते ते आनिसंसा संवण्णिता कथिता, आगच्छन्तो[7] व बोधिसत्तो ते आनिसंसे अधिगन्त्वा आगतो ति सम्बन्धो।

---

*. इतो आरब्भ जातकट्ठनिदानकथा दट्ठब्बा १०८-११६ पि०।

१. बुद्धकरा धम्मा–सी०। २. अनागारिय०–सी०। ३. अधिकारको–सी०। ४. ०ति–सी०। ५. समोधानेन–सी०। ६. अनेन बोधि०–सी०। ७. अगच्छन्तो–म०।

एवं सब्बङ्गसम्पन्ना बोधिया नियता नरा।
संसरं दीघमद्धानं कप्पकोटिसतेहि पि॥

अवीचिम्हि न उप्पज्जन्ति तथा लोकन्तरेसु च।
निज्झामतण्हा खुप्पिपासा न होन्ति कालकञ्जका॥

न होन्ति खुद्दका पाणा न उप्पज्जन्ता पि दुग्गतिं।
जायमाना मनुस्सेसु जच्चन्धा न भवन्ति ते॥

सोतवेकल्लता नत्थि न भवन्ति मूगपक्खिका।
इत्थिभावं न गच्छन्ति उभतोब्यञ्जनपण्डका।
न भवन्ति परियापन्ना बोधिया नियता नरा॥

मुत्ता आनन्तरिकेहि सब्बत्थ सुद्धगोचरा।
मिच्छादिट्ठिं न सेवन्ति कम्मकिरियदस्सना।
वसमाना पि सग्गेसु असञ्ञं न उपपज्जरे॥

ते आनिसंसे अधिगन्त्वा व आगतो।

(५३-म०) एवं वुत्तनयेन सब्बङ्गसम्पन्ना सब्बेहि मनुस्सत्तलिङ्गसम्पत्ति-आदीहि सम्पन्ना। बोधियं सब्बञ्ञुतञ्ञाणसङ्खाताय बोधिया नियता नरा कप्पकोटिसतेहि पि नेकेहि कप्पकोटीनं सतेहि पि दीघमद्धानं दीघकालं संसरं[1] संसरन्ता।

अवीचिम्हि न उप्पज्जन्ति, लोकन्तरेसु न उप्पज्जन्ति। निज्झामतण्हा अन्तोझायन-तण्हा पेता, खुप्पिपासा पेता, कालकञ्चिका पेता न होति।

(६४-सी०) बोधिया नियता ते नरा दुग्गतिं दुग्गतियं उपपज्जन्ता पि खुद्दका पाणा न होन्ति। मनुस्सेसु जायमाना जच्चन्धा न भवन्ति।

बोधिसत्तानं[2] सोतवेकल्लता सोत-अपरिपुण्णता नत्थि। ते नरा मूगपक्खिका न भवन्ति। इत्थिभावं न गच्छन्ति। उभतोब्यञ्जनपण्डका न भवन्ति। बोधिया नियता नरा परियापन्ना पण्डकपरियापन्ना न भवन्ति। यथावुत्तेसु वा दोसेसु परियापन्ना[3] न भवन्ति। बोधिसत्तेसु वा परियापन्ना अन्तोगधा बोधिसत्ता उभतोब्यञ्जनपण्डका न भवन्ति। परियापन्ना परिच्छिन्नसंसारा बोधिसत्ता उभतोब्यञ्जनपण्डका न भवन्ति।

आनन्तरिकेहि पञ्चानन्तरिकधम्मेहि मुत्ता ते नरा सब्बत्थ सब्बेसु भवेसु सुद्धगोचरा यस्मा, तस्मा ते नरा मिच्छादिट्ठिं न सेवन्ति। कम्मक्रियदस्सना[4] ते नरा सग्गेसु वसमाना पि असञ्ञं असञ्ञिभवे[5] न उपपज्जरे।

---

१. संसारं–सी०। २. तेसं बोधि०–सी०। ३. सब्बेसु परि०–सी०। ४. किरिय०–सी०। ५. ०भावे–सी०।

सुद्धावासेसु देवेसु हेतु नाम न विज्जति।
नेक्खम्मनिन्ना सप्पुरिसा विसंयुत्ता भवाभवे।
चरन्ति लोकत्थचरियायो पूरेन्ता सब्बपारमी ति॥

पारमियो पूरेसि

१. दानपारमी

पारमियो पूरेन्तस्स चस्स अकित्तिब्राह्मणकाले, सङ्खब्राह्मणकाले, धनञ्जयराजकाले, महासुदस्सनकाले, महागोविन्दकाले, निमिमहाराजकाले, चन्दकुमारकाले, विसय्हसेट्ठिकाले, सिविराजकाले, वेस्सन्तरकाले ति दानपारमिताय पूरितत्तभावानं परिमाणं नाम नत्थि। एकन्तेन पनस्स ससपण्डितजातके—

भिक्खाय उपगतं दिस्वा सकत्तानं परिच्चजिं।
दानेन मे समो नत्थि एसा मे दानपारमी ति॥

एवं अत्तपरिच्चागं करोन्तस्स दानपारमिता परमत्थपारमिता नाम जाता।

२. सीलपारमी

तथा सीलवनागराजकाले, चम्पेय्यनागराजकाले, भूरिदत्तनागराजकाले, छद्दन्तनागराजकाले, जयद्दिसराजस्स पुत्त-अलीनसत्तुकुमारकाले ति सीलपारमिताय परिपूरितत्तभावानं परिमाणं नत्थि। एकन्तेन पनस्स सङ्खपालजातके—

सुद्धावासेसु देवेसु[1] बोधिसत्तानं हेतु नाम उप्पत्तिया हेतु न विज्जति। नेक्खम्मनिन्ना कुसलकम्मनिन्ना सप्पुरिसा[2] भवाभवे विसंयुत्ता सब्बपारमी पूरेन्ता[3] लोकत्थचरियायो चरन्ति।

पारमियो पूरेन्तस्स च अस्स बोधिसत्तस्स पूरितत्तभावानं ति सम्बन्धो। दानपारमिताया ति पदं पूरिता इति पदे कम्मं! एकन्तेन अस्स बोधिसत्तस्स ससपण्डितकाले—

अहं भिक्खहेतु-उपगतं सक्कं दिस्वा सकत्तानं अत्तनो अत्तानं परिच्चजिं, दानेन मया[4] समो पुग्गलो नत्थि। एसा मे[5] दानपारमी।

एवं वुत्तं अत्तपरिच्चागं करोन्तस्स दानपारमीति सम्बन्धो। अस्सा ति पदं दानपारमीति पदे सम्बन्धो। ससपण्डितकाले ति पदं वुत्तं ति पदे आधारो।

तथासद्दो उपसंहरणत्थो। जयद्दिस[6]....प....काले ति जयद्दिसस्स[7] राजस्स[7] पुत्तभूतस्स अलीनसत्तुकुमारस्स काले।

---

१. नत्थि–सी०। २. ०पसट्ठा पुरिसा–सी०। ३. पुरेन्ता–म०। ४. मे मया–सी०। ५. मे मम–सी०। ६. जयदिस–म० सब्बत्थ। ७-७. जयद्दिसराजस्स–सी०।

सूलेहि विज्झियन्ते पि कोट्टयन्ते पि सत्तिहि ।
भोजपुत्ते न कुप्पामि एसा मे सीलपारमी ति ॥

एवं अत्तपरिच्चागं करोन्तस्स सीलपारमिता परमत्थपारमी नाम जाता ।

३. नेक्खम्मपारमी

तथा सोमनस्सकुमारकाले, हत्थिपालकुमारकाले, अयोधरपण्डितकाले ति महारज्जं पहाय नेक्खम्मपारमिताय पूरितत्तभावानं परिमाणं नत्थि । एकन्तेन पनस्स चूळसुतसोमजातके—

महारज्जं हत्थगतं खेळपिण्डं व छड्डयिं ।
चजतो होति न लग्गनं एसा मे नेक्खम्मपारमी ति ॥

एवं निस्सङ्गताय रज्जं छड्डेत्वा निक्खमन्तस्स नेक्खम्मपारमी परमत्थपारमी नाम जाता ।

४. पञ्ञापारमी

तथा विधुरपण्डितकाले, महागोविन्दपण्डितकाले, कुद्दालपण्डितकाले, अरकपण्डितकाले, बोधिपरिब्बाजककाले, महोसधपण्डितकाले ति पञ्ञापारमिया पूरितत्तभावानं परिमाणं नाम नत्थि । एकन्तेन पनस्स सत्तुभत्तजातके सेनकपण्डितकाले—

पञ्ञाय विचिनन्तो हं ब्राह्मणं मोचयिं दुखा ।
पञ्ञाय मे समो नत्थि एसा मे पञ्ञापारमी ति ॥

अन्तोभस्तगतं सप्पं दस्सेन्तस्स पञ्ञापारमी परमत्थपारमी नाम जाता ।

५. वीरियपारमी

तथा वीरियपारमितादीनं पि पूरितत्तभावानं परिमाणं नाम नत्थि । एकन्तेन पनस्स महाजनकजातके—

लुद्दकेहि सूलेहि पि विज्जियन्तो, सत्तिहि कोटियन्तो पि अहं भोजपुत्ते लुद्दकानं न कुप्पामि ।

अपहत्थगतं[1] महारज्जं खेळपिण्डं इव छड्डयिं । चजतो रज्जं चजन्तस्स मम लग्गनं नत्थि, नत्थि सङ्गो[2] अस्सा ति निस्सङ्गो निस्सङ्गस्स भावो निस्सङ्गता[2] ।

अहं पञ्ञाय पविचिनन्तो[3] (५४–म०) उपपरिक्खन्तो ब्राह्मणं दुक्खा मोचयिं । अन्तो भत्सगतं ति अन्तो थविकाय पविट्ठं ।

---

१. अहं अप०–सी० । २-२. सत्तो अस्साति निस्सत्तो, निस्सत्तस्स भावो निस्सत्तता–सी० । ३. विचिनन्तो-सी० ।

अतीरदस्सी जलमज्झे हता सब्बेव मानुसा।
चित्तस्स अञ्ञथा नत्थि एसा मे वीरियपारमी ति॥

एवं महासमुद्दं तरन्तस्स वीरियपारमी परमत्थपारमी नाम जाता।

६. खन्तिपारमी

खन्तिवादजातके—

अचेतनं कोट्टेन्ते तिण्हेन फरसुना ममं।
कासिराजे न कुप्पामि एसा मे खन्तिपारमी ति॥

एवं अचेतनभावेन विय महादुक्खं अधिवासेन्तस्स खन्तिपारमी परमत्थपारमी नाम जाता।

७. सच्चपारमी

महासुतसोमजातके—

सच्चवाचं अनुरक्खन्तो चजित्वा मम जीवितं।
मोचयिं एकसतं खत्तिये एसा मे सच्चपारमी ति॥

एवं जीवितं चजित्वा सच्चमनुरक्खन्तस्स सच्चपारमी परमत्थपारमी नाम जाता।

८. अधिट्ठानपारमी

मूगपक्खजातके—

माता पिता न मे देस्सा न पि मे देस्सं महायसं।
सब्बञ्ञुतं पियं मह्यं तस्मा वतमधिट्ठिहं॥

एवं जीवितं पि चजित्वा वतं अधिट्ठहन्तस्स अधिट्ठानपारमी परमत्थपारमी नाम जाता।

९. मेत्तापारमी

एकराजजातके—

न मं कोचि उत्तसति न पि हं भायामि कस्सचि।
मेत्ताबलेनुपत्थद्धो रमापि पवने सदा ति॥

एवं जीवितं पि अनवलोकेत्वा मेत्तायन्तस्स मेत्तापारमी परमत्थपारमी नाम जा त।

(६५-सी०) अतीरदस्सी जलमज्झे अपस्सितब्बतीरस्स[१] समुद्दजलस्स मज्झे सब्बे व मानुसा हता[२]। मम चित्तस्स अञ्ञथा लीनता नत्थि।

अचेतनं व अचेतनं इव मम तिण्हेन तिक्खेन फरसुना कोटेन्ते कासिराजे अहं न कुप्पामि।

अहं सच्चवाचं अनुरक्खन्तो मम जीवितं चजित्वा एकसतं खत्तिये मोचेसिं।

न देस्सा ति अप्पिया[3]। वतं[४] ति मूगवतं[४]।

मं[५] मया[५] कोचि सत्तो न उत्तसति[६], कस्सचि कुतोचि सत्ततो अहं न पि भायामि।

---

१. अपस्सितब्बतटे तीरस्स–म०। २. ०मता–सो०। ३. न अप्पिया–सी०। ४-४. वतं ति वतं–म०। ५-५. ममं सो-सी०। ६. सन्तसति–म०।

१०. उपेक्खापारमी

लोमहंसजातके—

सुसाने सेय्यं कप्पेमि छवट्ठिकं उपधायहं।
गोमण्डला उपगन्त्वा रूपं दस्सेन्तनप्पकं ति ॥

एवं गामदारकेसु निट्ठुभनादीहि चेव मालागन्धुपहारादीहि च सुखदुक्खं उप्पादेन्तेसु पि उपेक्खं अनतिवत्तन्तस्स उपेक्खापारमी परमत्थपारमी नाम जाता।

अयमेत्थ सङ्खेपो वित्थारतो पनेस अत्थो चरियापिटकतो गहेतब्बो। एवं पारमियो पूरेत्वा वेस्सन्तरत्तभावे ठितो।

अचेतनायं पठवी अविञ्ञाय सुखं दुखं।
सा पि दानबला मय्हं सत्तक्खत्तुं पकम्पथा ति।

एवं महापठविकम्पनानि महापुञ्ञानि करित्वा आयुपरियोसाने ततो चुतो तुसितभवने निब्बत्ति*।

तत्थ अञ्ञे देवे दसहि ठानेहि अधिगण्हित्वा यावतायुकं दिब्बसंपत्तिं अनुभवन्तो मनुस्सगणनाय सट्ठिवस्ससतसहस्साधिकानि सत्तपञ्ञासवस्सकोटियो इदानि सत्तहि दिवसेहि आयुक्खयं पापुणिस्सती ति वत्थानि किलिस्सन्ति, माला मिलायन्ति, कच्छेहि सेदा मुच्चन्ति, काये वेवण्णियं ओक्कमति, देवो देवासने न सण्ठहती ति इमेसु पञ्चसु पुब्बनिमित्तेसु उप्पन्नेसु तानि दिस्वा 'सुञ्ञा वत भो सग्गा भविस्सन्ती' ति संवेगजाताहि देवताहि महासत्तस्स पूरितपारमिभावं ञत्वा,

---

तदा ति तस्मि एकराजकाले। अहं मेत्ताबलेन उपत्थद्धो उपत्थम्भितो हुत्वा पवने महावने रमामि।

मेत्ताबलेना ति पदं उपत्थद्धो ति पदे ततियाकत्ता।

अहं छवट्ठिकं छवस्स अट्ठिकं। उपणिधाय सीसूपधानं कत्वा, सुसाने सेय्यं कप्पेमि[१]।

गामण्डला[२] उपगन्त्वा अनप्पकं रूपं विकारं दस्सेन्ति। निट्ठुभनादीहि ति खेळछड्डुनादीहि मालागन्धूपहारादीहि इति मालागन्धपूजनादीहि।

एत्था ति निदानकथायं। ठितो बोधिसत्तो निब्बत्तीति पदे कत्ता।

अचेना अयं पथवी सुखदुक्खं अविञ्ञाय अजानित्वा होति। सा पि पथवी। मह्यं दानबला दानबलेन सत्तक्खत्तुं सत्तवारेसु पकम्पथ। ततो ति वेसन्तरत्तभावतो।

तत्था ति तुसितभवने। दसहि ठानेहीति आयु-वण्ण-सुख-यस-अधिपतेय्येहि च रूप-सद्द-गन्ध-रस-फोट्ठब्बसङ्खातेहि दसहि कारणेहि। अधिगण्हित्वा ति अतिक्कमित्वा। अनुभवन्तो बोधिसत्तो पापुणिस्सतीति पदे सम्बन्धो। सत्तपञ्ञासकोटियो ति पदं अनुभवन्तो ति

---

*. जातकट्ठनिदानकथा एत्थ समत्ता।

१. ०करोमि—सी०। २. गोमण्डला—सी०।

इमस्मिं इदानि अञ्ञं देवलोकं अनुपगन्त्वा मनुस्सलोके उप्पज्जित्वा बुद्धभावं पत्ते, पुञ्ञानि कत्वा चुता चुता मनुस्सा देवलोकं परिपूरेस्सन्ती ति चिन्तेत्वा—

यतो' हं तुसिते काये संतुसितो नाम' हं तदा।
दससहस्सी समागन्त्वा याचन्ति पञ्जली ममं॥
कालो' यं ते महावीर उप्पज्ज मातुकुच्छियं।
सदेवकं तारयन्तो बुज्झस्सु अमतं पदं ति॥

एवं बुद्धभावाय आयाचितो कालं, दीपं, देसं, कुलं, जनेत्तिया आयुपरिमाणं ति इमानि पञ्च महाविलोकनानि विलोकेत्वा कतसन्निट्ठानो ततो चुतो सक्यराजकुले पटिसन्धिं गहेत्वा तत्थ महासम्पत्तिया परिचारियमानो अनुक्कमेन भद्रयोब्बनं अनुपापुणि।

इमस्मिं अन्तरे "सतो सम्पजानो आनन्द, बोधिसत्तो तुसितकाया चवित्वा मातुकुच्छिं ओक्कमती" (म० ३.१८४) ति आदीनं सुत्तपदानं चेव तेसं अट्ठकथाय वसेन वित्थारो वेदितब्बो।

सो तिण्णं उतूनं अनुच्छविकेसु तीसु पासादेसु देवलोकसिरिं विय रज्जसिरिं अनुभवमानो उय्यानकीळाय गमनसमये अनुक्कमेन जिण्णब्याधिमतसंखाते तयो देवदूते

पदे अच्चन्तसंयोगो। इतीति तस्मा। उप्पन्नेसू ति पदे हेतु। पुब्बनिमित्तेसू ति मरणस्स पुब्बनिमित्तेसु। माला ति जातदिवसे धारितमाला। दुब्बण्णियं ओक्कमति, वेवण्णियं ओक्कमति, काये वेवण्णियं ओक्कमतीति च तयो पाठा।

उप्पन्नेसू ति पदं दिस्वा ति पदे भावलक्खणं। तानीति पुब्बनिमित्तानि। दिस्वा ति पदं संवेगजाताहीति पदे पुब्बकालक्रिया। देवताहीति पदं आयाचितो ति पदे ततियाकत्ता। ञत्वा ति पदं चिन्तेत्वा ति पदे पुब्बकालक्रिया। इमस्मिं ति देवपुत्ते बुद्धभावं पत्ते ति सम्बन्धो। चिन्तेत्वा ति पदं आयाचितो ति पदे पुब्बकालक्रिया।

सारिपुत्त, सन्तुस्सितो नाम अहं यतो यदा तुसिते काये आसिं[1], तदा[1] अहं सन्तुस्सितो नाम। तदा (६६–सी०) दससहस्सि[2] देवा समागन्त्वा अञ्जली (५५–म०) ममं याचन्ति। यदा हं पि अत्थि। महावीर, तव कालो मनुस्सलोके उप्पज्जितुं युत्तकालो। त्वं मातुकुच्छियं उपपज्ज[3], सदेवकं लोकं तारयन्तो त्वं अमतं पदं बुज्झिस्सु।

इति एवं बुद्धभावताय देवताहि याचितो महासत्तो अनुपापुणीति[4] पदे कत्ता। ततो ति तुसितभवनतो। तत्था ति सक्यराजकुले। परिहरियमानो ति रक्खियमानो।

इमस्मिं अन्तरे ति हेट्ठा वुत्तवचनस्स उपरि वक्खमानवचनस्स। तेसं ति सुत्तपदानं।

पठमदुतियततियवारेसु देवताहि निम्मिते अनुक्कमेन जिण्ण....प....देवदूते दिस्वा ति

१-१. ०दससहस्सदेवा समागन्त्वा अञ्जली पग्गहितञ्जली ममं कालो....प....पदं इति याचन्ति। हन्ति निपातमत्तं। अथवा सारिपुत्त अहं यतो यदा तुसिते काये आसिं०—इच्चधिको पाठो सी० पोत्थके दिस्सति। २. ०सहस्स०—सी०। ३. ०उपपज्जाहि—सी०। ४. अनुपापुणि—म०।

दिस्वा संजातसंवेगो निवत्तित्वा चतुत्थवारे पब्बजितं दिस्वा 'साधु पब्बज्जा' ति पब्बज्जाय रुचिं उप्पादेत्वा उय्यानं गन्त्वा तत्थ दिवसं खेपेत्वा मंगलपोक्खरणीतीरे निसिन्नो कप्पकवेसं गहेत्वा आगतेन **विस्सकम्मेन** देवपुत्तेन अलंकतपटियत्तो **राहुलकुमारस्स** जातसासनं सुत्वा पुत्तसिनेहस्स बलवभावं ञत्वा 'याव इमं बन्धनं न वड्ढति तावदेव नं छिन्दिस्सामी' ति चिन्तेत्वा सायं नगरं पविसन्तो—

निब्बुता नून सा माता निब्बुतो नून सो पिता।
निब्बुता नून सा नारी यस्सायं ईदिसो पतीति ॥

किसागोतमिया नाम पितुच्छाधीताय भासितं इमं गाथं सुत्वा, 'अहं इमाय निब्बुतपदं सावितो' ति गीवतो सतसहस्सग्घनिकं मुत्ताहारं मुञ्चित्वा, तस्सा पेसेत्वा, अत्तनो भवनं पविसित्वा, सिरिसयने निसिन्नो निद्दावसेन नाटकानं विप्पकारं दिस्वा, निब्बिन्नहदयो **छन्नं** उट्ठापेत्वा, **कन्थकं** आहरापेत्वा, **कन्थकं** आरुय्ह, **छन्नसहायो** दससहस्सिलोकधातूहि देवताहि कतपरिवारो महाभिनिक्खमनं निक्खमित्वा, तेनेव रत्तावसेसेन तीणि महारज्जानि अतिक्कम्म **अनोमानदीतीरे** पब्बजित्वा, अनुक्कमेन **राजगहं** गन्त्वा, तत्थ पिण्डाय चरित्वा, **पण्डवपब्बतपब्भारे** निसिन्नो **मगधराजेन** रज्जेन निमन्तियमानो तं पटिक्खिपित्वा, सब्बञ्ञुतं पत्वा तस्स विजितं आगमनत्थाय तेन गहितपटिञ्ञो, **आळारं** च **उद्दकं** च उपसंकमित्वा, तेसं सन्तिके अधिगतविसेसेन अपरितुट्ठो छब्बस्सानि महापधानं पदहित्वा, **विसाखपुण्णमदिवसे** पातो व **सेनानिगमे** **सुजाताय** दिन्नं पायासं परिभुञ्जित्वा, **नेरञ्जराय** नदिया सुवण्णपातिं पवाहेत्वा,

---

सम्बन्धो। पब्बजितं ति देवतानिम्मितं पब्बजितं। तत्था ति उय्याने। देवपुत्तेना ति पदं अलङ्कतपदे[1] कत्ता। बन्धनं ति पुत्तसिनेहसङ्खातं बन्धनं। नं ति बन्धनं।

यस्सा मातुया अयं ईदिसो पुत्तो होति ईदिसस्स पुत्तस्स माता निब्बुता ति निब्बुतचित्ता नून। यस्स पितुनो अयं ईदिसो पुत्तो होति ईदिसस्स पुत्तस्स सो पिता निब्बुतो नून। यस्सा नारिया अयं ईदिसो पति होति ईदिसस्स पतिनो सा नारी निब्बुत्तचित्ता[2] नून। अथवा या माता ईदिसं सिद्धत्थकुमारसदिसं पुत्तं लभमाना सा माता निब्बुता नून निब्बुतहदया नून। इतीति एवं।

पितुच्छाधीताया ति पदं भासितं ति पदे कत्ता। पितु भगिनी पितुच्छा। **मातितो च भगिनियं च्छो** ति (४.३७) मोग्गलानसुत्तेन च्छपच्चयो। पितुच्छाय धीताय सुत्वा अहं इमाय पितुच्छा धीताय निब्बुतपदं सावितो इति चिन्तेत्वा ति सम्बन्धो। तत्था ति राजगहे। मगधराजेना ति मगध इस्सरेन बिम्बिसारराजेन। अधिगतविसेसेना ति अत्तना अधिगतसमापत्तिसङ्खातविसेसेन। नाना (६७–सी०)–समापत्तीहीति[3] पठमज्झानदुतियज्झानादीहि नानासमापत्तीहि। तिणमुट्ठि ति कुसतिणमुट्ठि। तेन वुत्तं थूपवंसे महावंसे च सोत्तियेन दिन्ना कुसतिणपटिग्गहणं ति। अभित्थुतो गुणो यस्स सो अभित्थुतगुणो। अनुपादाय खन्धे अग्गहेत्वा

---

१. अलङ्कत इति०–सी०। २. निब्बुत्ता निब्बुत्तचित्ता–सी०।
३. समापत्तीहि–म०।

नेरञ्जराय तीरे महावनसण्डे नानासमापत्तीहि दिवसभागं वीतिनामेत्वा, सायण्हसमये सोत्थियेन दिन्नं अट्ठ तिणमुट्ठि गहेत्वा, काळेन नागराजेन अभित्थुतगुणो बोधिमण्डं आरुय्ह तिणानि सन्थरित्वा, 'न ताविमं पल्लंकं भिन्दिस्सामि याव मे न अनुपादाय आसवेहि चित्तं विमुच्चिस्सती' ति पटिञ्ञं कत्वा, पाचीनदिसाभिमुखो निसीदित्वा, सुरिये अनत्थमिते येव मारबलं विधमित्वा, पठमयामे पुब्बेनिवासञाणं, मज्झिमयामे चुतूपपातञाणं पत्वा, पच्छिमयामावसाने दसबलचतुवेसारज्जादिसब्बबुद्धगुणपटिमण्डितं सब्बञ्ञुतञाणं पटिविज्झन्तो येव इमं अभिधम्मनयसमुद्दं अधिगच्छि। एवमस्स अधिगमनिदानं वेदितब्बं।

एवं अधिगताभिधम्मो एकपल्लंकेन निसिन्नसत्ताहं अनिमिससत्ताहं चंकमनसत्ताहं अतिक्कमित्वा, चतुत्थे सत्ताहे सयंभुञाणाधिगमेन अधिगतं अभिधम्मं विचिनित्वा अपरानि पि अजपाल-मुचलिन्द-राजायतनेसु तीणि सत्ताहानि वीतिनामेत्वा, अट्ठमे सत्ताहे अजपालनिग्रोधरुक्खमूले निसिन्नो धम्मगंभीरतापच्चवेक्खणेन अप्पोस्सुक्कतं आपज्जमानो दससहस्सी-महाब्रह्मपरिवारेन सहंपतिब्रम्हुना आयाचितधम्मदेसनो बुद्धचक्खुना लोकं वोलोकेत्वा, ब्रह्मुनो अज्झेसनं आदाय 'कस्स नु खो अहं पठमं धम्मं देसेय्यं' ति ओलोकेन्तो आळारुद्दकानं कालकतभावं ञत्वा, पंचवग्गियानं भिक्खूनं बहूपकारतं अनुस्सरित्वा, उट्ठायासना कासिपुरं गच्छन्तो अन्तरामग्गे उपकेन सद्धि मन्तेत्वा, आसाळ्हपुण्णमदिवसे इसिपतने मिगदाये पंचवग्गियानं वसनट्ठानं पत्वा, अननुच्छविकेन समुदाचारेन समुदाचरन्ते सञ्ञापेत्वा, धम्मचक्कं पवत्तेन्तो अञ्ञाकोण्डञ्ञत्थेरप्पमुखा अट्ठारस ब्रह्मकोटियो अमतपानं पायेसि। एवं याव धम्मचक्कप्पवत्तना देसनानिदानं वेदितब्बं। अयमेव संखेपो। वित्थारो पन साट्ठकथानं अरियपरियेसन-पब्बज्जासुत्तादीनं वसेन वेदितब्बो।

एवं अधिगमनिदान-देसनानिदानसम्पन्नस्स पन' स्स अभिधम्मस्स अपरानि पि दूरे-निदानं, अविदूरे-निदानं, सन्तिके-निदानं ति तीणि निदानानि। तत्थ दीपंकरपादमूलतो पट्ठाय याव तुसितपुरा दूरेनिदानं वेदितब्बं। तुसितपुरतो पट्ठाय याव बोधिमण्डा अविदूरे-निदानं। 'एकं समयं भगवा देवेसु विहरति तावतिंसेसु पारिच्छ-

---

आसवेहि मे मम चित्तं याव न विमुच्चिस्सति, ताव तत्तकं कालं अहं इमं पल्लङ्कं न भिन्दिस्सामि इति पटिञ्ञं कत्वा। अनत्थङ्गमिते येवा ति अनत्थं इते गते। एवं अस्स अभिधम्मस्स अधिगमनिदानं पण्डितेन वेदितब्बं।

अधिगतो अभिधम्मो येन सो अधिगताभिधम्मो। धम्मगम्भीरतापच्चवेक्खणेना ति धम्मस्स गम्भीरभावस्स पच्चवेक्खणेन। अप्पोस्सुक्कतं ति धम्मदेसनाय अप्पोस्सुकभावं। समुदाचरन्ते ति वोहारेन समुदाचरन्ते वदन्ते। (५६—म०) अरियपरियेसन-पब्बज्जसुत्तादीनं ति अरियपरियेसनसुत्तपब्बज्जसुत्तादीनं।

त्तकमूलम्हि पण्डुकम्बलसिलायं, तत्थ खो भगवा देवानं तावतिंसानं अभिधम्मं कथेसी' ति इदमस्स सन्तिके-निदानं । अयं ताव निदानकथा ।

●

तत्था ति तेसु तीसु निदानेसु । याय कथाय अभिधम्मस्स बुद्धभासितासिद्धि अयं ताव पठमं निदानकथा[1] ॥

निदानकथाय अत्थयोजना समत्ता

●

---

१. ०निद्दिठता–सी० ।

२

चित्तुप्पादकण्डं

मातिकाय अनुपुब्बपदवण्णना

तिकमातिका

इदानि

इति मे भासमानस्स अभिधम्मकथं इमं।
अविक्खित्ता निसामेथ दुल्लभा हि अयं कथा ति ॥

एवं पटिञ्ञाताय अभिधम्मकथाय कथनोकासो सम्पत्तो।

तत्थ यस्मा **अभिधम्मो** नाम **धम्मसंगणि**-आदीनि सत्तप्पकरणानि; **धम्मसंगणिया** पि **चित्तुप्पादकण्डा**दीनं वसेन चत्तारि कण्डानि; **चित्तुप्पादकण्डं** पि मातिका-पदभाजनियवसेन दुविधं; तत्थ मातिका आदि; सा पि तिकमातिका दुकमातिका ति दुविधा; तत्थ तिकमातिका आदि; तिकमातिकाय पि कुसलत्तिकं आदि; कुसलत्तिके पि **कुसला धम्मा** ति [मा० १] इदं पदं; तस्मा

इतो पट्ठाय गंभीरं अभिधम्मकथं इमं।
वुच्चमानं निसामेथ एकग्गा साधु साधवो ति ॥

"कुसला धम्मा, अकुसला धम्मा, अब्याकता धम्मा" [मा० १] ति अयं ताव आदिपदेन लद्धनामो कुसलत्तिको नाम। "सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा, दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा, अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा" [मा०२] ति अयं सब्बपदेहि लद्धनामो वेदनात्तिको नाम। एवं आदिपदवसेन वा सब्बपदवसेन वा सब्बेसं पि तिकदुकानं नामं वेदितब्बं। सब्बे चेते पञ्चदसहि परिच्छेदेहि ववत्थिता। तिकानं हि एको परिच्छेदो, दुकानं चतुद्दस।

मातिकापदवण्णना

तिकमातिका

तत्था ति तस्मिं अभिधम्मकथं ति वचने। अभिधम्मो नामा ति पदं आधारो। तत्था ति मातिकापदभाजनियेसु निद्धारणं। सापी ति मातिका इति भेदेन। तत्था ति तासु तिकदुकमातिकासु, निद्धारणं। तिकमातिकाय[1] पी ति पदं[2] आधारो। कुसलतिकं[3] आदि। कुसलत्तिके पी ति पदं आधारो। कुसला धम्मा ति इदं[4] पदं यस्मा आदि। एकग्गा एकग्गचित्ता तुम्हे साधवो निसामेथ। इतिसद्दो परिसमापनत्थो।

लद्धं नामं येन सो लद्धनामो। कुसलपदेन लद्धनामो तिको कुसलत्तिको। तिकदुकानं

१. ०मातिकायं–सो०। २. पदे–सी०। ३. कुसलं तिकं–म०। ४. नत्थि–म०।

"हेतू धम्मा, न-हेतू धम्मा" [मा० २३] ति आदयो हि छ दुका गन्थतो च अत्थतो च अञ्ञमञ्ञसम्बन्धेन पुप्फकण्णिका विय घटा विय हुत्वा ठितत्ता 'हेतु-गोच्छको' ति वुच्चति। ततो परे "सप्पच्चया धम्मा, अप्पच्चया धम्मा" [मा० २९] ति आदयो सत्त दुका, अञ्ञमञ्ञं असम्बन्धा, केवलं दुकसामञ्ञतो उच्चिनित्वा उच्चिनित्वा विसुं विसुं गोच्छकन्तरे ठपितत्ता अञ्ञेहि च महन्तरदुकेहि [मा०-७७--९०] चूळकता 'चूळन्तरदुका' ति वेदितब्बा। ततो परं आसवदुकादीनं छन्नं दुकानं वसेन 'आसवगोच्छको' [मा० ३६--४१]; संयोजनदुकादीनं वसेन 'संयोजन-गोच्छको' [मा० ४२--४७]; तथा गन्थ-ओघ-योग-नीवरण-दुकादीनं वसेन 'गन्थ-ओघ-योग-नीवरण-गोच्छका' [मा० ४८--७१]; परामासदुकादीनं पञ्चन्नं वसेन 'परामास-गोच्छको' [मा० ७२-७६] ति। सब्बे पि सत्त गोच्छका वेदितब्बा।

ततो परं "सारम्मणा धम्मा" ति आदयो चतुद्दस दुका 'महन्तरदुका' [मा०-७७-९०] नाम। ततो उपादानदुकादयो छ दुका 'उपादानगोच्छको' [मा० ९१-९६] नाम। ततो किलेसदुकादयो अट्ठ दुका 'किलेसगोच्छको' [मा० ९७-१०४] नाम। ततो परं दस्सनेन पहातब्बदुकादयो अट्ठारस दुका अभिधम्ममातिकाय परियोसाने ठपि-

---

परिच्छेदं ञापेतुं सब्बेव चेते ति आदिमाह। सब्बेव च एते तिकदुका पण्डितेहि ववत्थिता। तिकानं हीति हिसद्दो वित्थारजोतको।

हेतूधम्मा....प....छ दुका ति हि सच्चं, हेतू धम्मा न-हेतू धम्मा आदयो छ दुका हेतु-गोच्छका नाम। इति वचनं पण्डितेन वुच्चति। अथवा हेतू धम्मा....प....आदयो छ दुका हेतुगोच्छका इति पण्डितेन वुच्चन्ति[1]। गन्थतो ति गन्थतो[2] च[3] (६८-सी०) अत्थतो चा ति पदद्वयं सम्बन्धेना ति पदे ततियाविसेसनं। अञ्ञमञ्ञसम्बन्धेना ति पदं विया ति पदे ततियाविसेसनं। कण्णिका विया ति पुप्फमयकण्णिका विय, पुप्फानं कण्णिका विया ति अत्थो। घटा विया ति पुप्फहत्थकादीसु पुप्फानं समूहो विय। पुप्फहत्थकादीसू ति पुप्फेहि कतकलापा-दीसू ति अत्थो।

हेतुकानं गोच्छो समूहो हेतुगोच्छो। गोच्छसद्दो हेत्थ समूहवाचको। हेतुगोच्छेन सम्बन्धा हुत्वा ठिता हेतुगोच्छका। ततो ति हेतुगोच्छकतो। दुकसामञ्ञेना ति पाठो। चसद्दो थपितत्ता च चूळकत्ता चा ति योजेतब्बो अन्तरदुकेहीति अन्तरे थपितदुकेहि। गोच्छकानं अन्तरे थपिता दुका अन्तरदुका। चूळा च ते अन्तरदुका चा ति चूळन्तरदुका। ततो ति चूळ-न्तरदुकतो। परं आसवदुकादीनं छन्नं वसेन आसवगोच्छको पण्डितेन वेदितब्बो ति योजना।

ततो ति परामासगोच्छकतो। गोच्छकानं अन्तरे थपिता दुका अन्तरदुका। (५७-म०) महन्ता च ते अन्तरदुका चा ति महन्तरदुका। ततो ति महन्तरदुकतो। ततो ति उपादान-गोच्छकतो। ततो ति किलेसगोच्छकतो। पिट्ठियं थपिता दुका पिट्ठिदुका। सुत्तन्तेहि समो-

---

१. वुच्चति०–म०। २. पाळितो–सी०। ३. नत्थि–सी०।

तत्ता 'पिट्ठिदुका' [मा० १०५-१२२] नाम। "विज्जाभागिनो धम्मा अविज्जाभागिनो धम्मा" ति आदयो पन द्वाचत्ताळीस दुका 'सुत्तन्तिकदुका' [मा० १२३-१६४] नाम। एवं सब्बे पेते पञ्चदसहि परिच्छेदेहि ववत्थिता ति वेदितब्बा।

एवं ववत्थिता पनेते सप्पदेस-निप्पदेसवसेन द्वे व कोट्ठासा होन्ति। एतेसु हि नव तिका एकसत्तति च दुका सप्पदेसानं रूपारूपधम्मानं परिग्गहितत्ता सप्पदेसा नाम। अवसेसा तेरस तिका एकसत्तति च दुका निप्पदेसा नाम।

तत्थ तिकेसु ताव वेदनत्तिको वितक्कत्तिको पीतित्तिको उप्पन्नत्तिको अतीतत्तिको चत्तारो आरम्मणत्तिका ति इमे नव तिका सप्पदेसा नाम। दुकेसु हेतुगोच्छकादीनं उपादानगोच्छकपरियोसानानं नवन्नं गोच्छकानं परियोसाने तयो तयो दुका, किलेसगोच्छकपरियोसाने चत्तारो दुका, "चित्तसम्पयुत्ता धम्मा, चित्तविप्पयुत्ता धम्मा" "चित्तसंसट्ठा धम्मा, चित्तविसंसट्ठा धम्मा" [मा० ८०-८१] ति द्वे महन्तरदुका, सुत्तन्तिकदुकेसु अधिवचनदुकं निरुत्तिदुकं पञ्ञत्तिदुकं नामरूपदुकं ति इमे चत्तारो दुके ठपेत्वा अवसेसा अट्ठतिंस दुका चा ति एते सप्पदेसा नाम। वुत्तावसेसा तिकदुका सब्बे पि निप्पदेसा ति वेदितब्बा।

इदानि **कुसला धम्मा** ति [मा० १] आदीनं मातिकापदानं अयं अनुपुब्बपदवण्णना—'कुसल'-सद्दो ताव आरोग्य-अनवज्ज-छेक-सुखविपाकेसु दिस्सति। अयं हि "कच्चि नु भोतो कुसलं, कच्चि भोतो अनामयं" ति (जा०१ : ३२३) आदीसु आरोग्ये दिस्सति। "कतमो पन भन्ते कायसमाचारो कुसलो ? यो खो महाराज कायसमाचारो अनवज्जो" [म० २. ३६२] ति च, "पुन च परं भन्ते, एतदनुत्तरियं यथा भगवा धम्मं

धानेत्वा थपिता सुत्तन्तिका। सुत्तन्तिका च ते दुका चा ति सुत्तन्तिकदुका। एवं सब्बे पि एते तिकदुका।

एवं ववत्थिता पन एते तिकदुका। एतेसु हीति हि सच्चं। एतेसु द्वीसु कोट्ठासेसु, निद्धारणं। परिगहितत्ता ति सङ्गहितत्ता।

तत्था ति तिकदुकेसु। तिकेसू ति निद्धारणे भुम्मं। नवन्नं ति हेतुगोच्छक-आसवगोच्छक-संयोजनगोच्छक-गन्थगोच्छक-ओघ-योग-नीवरण-परामासगोच्छक-उपादानगोच्छकानं।

कुसलसद्देन वुच्चितब्बं सामञ्ञत्थं पठमं उद्धरित्वा इधाधिप्पेतब्बं दस्सेन्तो कुसलसद्दो ति आदिमाह। आरोग्यञ्च अनवज्जो च छेको च सुखविपाको च आरोग्य....प....विपाका। कुसलसद्दस्स आरोग्यादि-अत्थानं वाचकं पयोगवसेन दळ्हं करोन्तो आह अयं हीति आदि। हि सच्चं, अयं कुसलसद्दो कच्चि....प....आदीसु पयोगेसु आरोग्यवाचकभावेन दिस्सति। भन्ते आनन्द, कुसलो अनवज्जो भगवतो (६९–सी०) कायसमाचारो, कतमो पन महाराज अनवज्जो यो खो कायसमाचारो इति च, पुन च परं भन्ते, कुसलेसु अनवज्जेसु एतदानुत्तरियं उत्तररहितं धम्मं यथा येन पकारेन भगवा देसेति इति च आदीसु पयोगेसु अनवज्जे कुसलसद्दो दिस्सति। कायेन समाचरणं कायसमाचारो। अवज्जविरहितो अनवज्जो। कुसलेसु धम्मेसू ति

देसेति कुसलेसु धम्मेसू" [तु० दी० ३. ७९] ति च एवमादीसु अनवज्जे। "कुसलो त्वं रथस्स अङ्गपच्चङ्गानं" [तु० म० २. ३४०], "कुसला नच्चगीतस्स सिक्खिता चतुरित्थियो" [जा० २. १६५] ति आदीसु छेके। "कुसलानं भिक्खवे धम्मानं समादानहेतु" [दी० ३. ४६], "कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता" [§४३१] ति आदीसु सुखविपाके। स्वायमिध आरोग्ये पि अनवज्जे पि सुखविपाके पि वट्टति।

'धम्म'-सद्दो पनायं परियत्ति-हेतु-गुण-निस्सत्तनिज्जीवतादीसु दिस्सति। अयं हि "धम्मं परियापुणाति सुत्तं गेय्यं" [म० १. १७८] ति आदीसु परियत्तियं दिस्सति। "हेतुम्हि ञाणं धम्मपटिसंभिदा [विभ० ३५०] ति आदीसु हेतुम्हि।

"न हि धम्मो अधम्मो च उभो समविपाकिनो।
अधम्मो निरयं नेति धम्मो पापेति सुग्गतिं" [थेर० ३०४] ति॥

आदीसु गुणे। "तस्मिं खो पन समये धम्मा होन्ति" [§१२१], "धम्मेसु धम्मानुपस्सी

निद्धारणे भुम्मं। त्वं रथस्स अङ्गपच्चङ्गानं अङ्गपच्चङ्गेसु कुसलो छेको। सुसिक्खिता[1] चतुरित्थियो[2] नच्चगीतस्स नच्चगीते कुसला छेका। अथवा त्वं रथस्स अङ्गपच्चङ्गानं नामक्रियापयोजनादीसु कुसलो। सिक्खिता चातुरित्थियो नच्चगीतविसयेसु 'कुसला' इति आदीसु पयोगेसु छेके कुसलसद्दो दिस्सति। भिक्खवे, कुसलानं धम्मानं समादानहेतु, समागहणकारणा एवं इदं पुञ्ञं पवड्ढति। कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता चक्खुविञ्ञाणं उप्पन्नं होति इति आदीसु सुखविपाके कुसलसद्दो दिस्सति।

सुखो इट्ठो विपाको एतस्स धम्मस्सा ति सुखविपाको। स्वायमिधा ति इध कुसला धम्मा ति इमस्मिं पदेसे[3] अयं कुसलसद्दो। नत्थि किलेससङ्खातो रोगो अस्स अरूपधम्मस्सा ति अरोगो। अरोगस्स (५८–म०) भावो आरोग्यं। नत्थि किलेससङ्खातो वज्जो[4] अस्सा ति अनवज्जो, सुखविपाको।

धम्मसद्दो पायं[5] ति अयं धम्मसद्दो ति, अपिसद्दो कुसलसद्दं अपेक्खति। परियापुणितब्बा ति परियत्ति। हिनोति फलं पवत्तत्ति[6] एतेना ति हेतु। गुणति[7] अत्तना सद्धिं विपाकं बन्धतीति गुणो। 'गुण'-बन्धने। सत्ततो विरहितो निस्सतो। जीवतो विरहितो निज्जीवो। निस्सत्तो च सो निज्जीवो चा ति निस्सत्त-निज्जीवो। निसत्तनिज्जीवस्स भावो निस्सत्तनिज्जीवता। परियत्ति च हेतु च गुणो च निस्सत्तनिज्जीवता च परियत्ति····प····ता, परियत्तिहेतुगुणनिस्सत्तनिज्जीवता[8] आदि येसं पञ्ञादीनं ते परि····प····तादयो। अयं हीति हि सच्चं, अयं धम्मसद्दो। समो विपाको एतेसं ति समविपाकिनो। इधा पि अपिसद्दो धम्मा होन्ती ति आदीसु धम्मसद्दं अपेक्खति।

---

१. सिक्खिता–सी०। २. चातुरित्थियो–म०।
३. पदे सो–सी०। ४. अवज्जो–सी०।
५. चायन्ति–सी०। ६. वत्तति–सी०। ७. गुणाति–सी०। ८. ०गुणा०–सी०।

विहरती" [म० १. ८४] ति आदीसु निस्सत्तनिज्जीवताय। स्वायमिधा पि निस्सत्तनिज्जीवतायमेव वट्टति।

[३९] वचनत्थो पनेत्थ—कुच्छिते पापके धम्मे सलयन्ति चलयन्ति कम्पेन्ति विद्धंसेन्ती ति कुसला। कुच्छितेन वा आकारेन सयन्ती ति कुसा। ते अकुसलसंखाते कुसे लुनन्ति छिन्दन्ती ति कुसला। कुच्छितानं वा सानतो तनुकरणतो ओसानकरणतो ञाणं कुसं नाम। तेन कुसेन लातब्बा ति कुसला; गहेतब्बा पवत्तेतब्बा ति अत्थो। यथा वा कुसा उभयभागगतं हत्थप्पदेसं लुनन्ति, एवमिमे पि उपन्नानुप्पन्नभावेन उभयभागगतं संकिलेसपक्खं लुनन्ति। तस्मा कुसा विय लुनन्ती ति पि कुसला। अत्तनो पन सभावं धारेन्ती ति धम्मा। धारियन्ति वा पच्चयेहि, धारयन्ति वा यथासभावतो ति धम्मा। न कुसला ति अ-कुसला। मित्तपटिपक्खा अमित्ता विय, लोभादिपटिपक्खा अलोभादयो विय च, कुसलपटिपक्खा ति अत्थो। न ब्याकता ति अब्याकता, कुसलाकुसलभावेन अकथिता ति अत्थो। तेसु पन अनवज्जसुखविपाकलक्खणा कुसला, सावज्जदुक्खविपाकलक्खणा अकुसला, अविपाकलक्खणा अब्याकता।

एवं कुसलसद्देहि (७०–सी०) वुच्चितब्बं[1] इधाधिप्पेतब्बं दस्सेत्वा इदानि वचनत्थं दस्सेन्तो आह वचनत्थो ति आदि। एत्थ कुसला ति आदिपदेसु[2] वचनत्थो पण्डितेन वेदितब्बो। वुच्चति अनेना ति वचनं। वचनस्स अत्थो वचनत्थो। वचनेन वुच्चितब्बो वा अत्थो। पनसद्दो पक्खन्तरो। ये सभावा कुच्छिते पापधम्मे यस्मा सलयन्ति....प....विद्धंसेन्ति इति तस्मा ते सभावा कुसला। कुसद्दस्स पथवी-आदीनम्पि वाचकत्ता इध कुच्छितब्बत्थवाचको कुसद्दो ति ञापेतुं कुच्छिते ति वुत्तं। अनिट्ठरूपादयो पि कुच्छिता नाम अत्थि, तस्मा पापधम्मे ति वुत्तं। सलयन्ति....प... विद्धंसेन्तीति एत्थ पुरिमस्स पुरिमस्स पच्छिमं पच्छिमं अत्थवचनं। एवं सति कुच्छिते पापधम्मे सलयन्तीति कुसला ति एत्तकमेव वत्तब्बं। चलयन्ति....प....विद्धंसेन्तीति पदत्तयं कस्मा वुत्तं ति? 'सल'-धातुस्स गति-पवत्तनत्थस्स पि वाचकत्ता इध चलनवाचको 'सल'-धातू ति ञापेतुं चलयन्तीति वुत्तं। 'सल'–पविसने ति हि धातुपाठो। 'चल'–धातुस्स भक्खनस्स पि वाचकत्ता इध कम्पनवाचको 'चल'–धातू ति ञापेतुं कम्पेन्तीति वुत्तं। 'चल'–भक्खने हि[3] धातु पाठो। इध कम्पनं नाम विद्धंसनमेवा ति ञापेतु विद्धंसेन्तीति वुत्तं। सलयन्ति विद्धंसेन्तीति एत्तकमेव वत्तब्बं। चलन्ति कम्पेन्तीति न वत्तब्बं ति? सच्चं; अधिप्पायवसेन पन विद्धंसनवाचको 'सल'-धातु अत्थि, न धात्वत्थवसेन विद्धंसनवाचको; तस्मा धात्वत्थवसेन 'सल'-धातुस्स अत्थं दस्सेन्तेन चलयन्तीति वुत्तं। परियायवसेन 'चल'-धातुस्स अत्थं दस्सेन्तेन कम्पेन्तीति वुत्तं। अथवा ये सभावा कुच्छिते पापधम्मे (५९-म०) तदङ्गप्पहानवसेन सलयन्ति चलयन्ति। विक्खम्भनवसेन कम्पेन्ति। समुच्छेदप्पहानवसेन विद्धंसेन्ति; इति तस्मा ते सभावा कुसला। तदङ्गप्पहानवसेना ति तस्स तस्स अकुसलङ्गस्स तेन कुसलङ्गेन

---

१. पुच्छितब्बं–सी०। २. आदिपदे–सी०। ३. ति हि–सी०।

पहानस्स वसेन। कुपुब्बो 'सल'–विद्धंसने। **सब्बतो ण्वुत्वावी वा ति** (क० ४.१.४) सुत्तेन अप्पच्चयो।

वा अपरो नयो ये अकुसला कुच्छितेन आकारेन सभावेन सयन्ति पवत्तन्ति इति ते अकुसला कुसा। कुपुब्ब'सी'-सये। ये सभावा अकुसलसङ्खाते कुसे (७१–सी०) लुनन्ति[1] छिन्दन्ति इति ते सभावा कुसला। कुसपुब्ब'लू'-छेदने।

वा अपरो नयो—कुच्छितानं पापधम्मानं सानतो तनुकरणतो ञाणं कुसं नाम, कुच्छिते पापधम्मे साति तनुं करोतीति कुसं। कुपुब्ब 'सा'-तनुकरणे। ये सभावा तेन कुसेन करणभूतेन लातब्बा पण्डितेहि इति ते सभावा कुसला।

अथवा—ये सभावा तेन कुसेन कत्तुभूतेन लातब्बा इति ते सभावा कुसला। सभावा गहेतब्बा पवत्तेतब्बा पण्डितेहीति अत्थो। कुससद्दूपपद'ला'-आदाने।

अथवा—कुसा उभयभागगतं उभयकोट्ठासे पवत्तं हत्थपदेसं लुनन्ति यथा एवं इमे पि धम्मा[2] उप्पन्ना[2]....प....पक्खं लुनन्ति। तस्मा ये सभावा कुसा विय लुनन्ति इति पि ते सभावा कुसला। इमे पी ति अपिसद्दो कुसलं[3] अपेक्खति। इति पी ति अपिसद्दो पुब्बे वुत्तहेतुं अपेक्खति। ये सभावा अत्तनो सभावं धारेन्ति इति ते सभावा धम्मा। पनसद्दो पक्खन्तरो[4]। ये सभावा पच्चयेहि कम्मादिपच्चयेहि कत्तुभूतेहि धारियन्ति इति ते सभावा धम्मा[5]। ये सभावा यथासभावतो सभावानुरूपतो धारियन्ति लक्खियन्ति पण्डितेहि इति ते सभावा धम्मा। ये सभावा भगवता न ब्याकता अकथिता इति ते सभावा अब्याकता। कुसलाकुसलभावेना ति कुसलाकुसलनामेन। वि-आपुब्ब'कर'-करणे।

तेसू ति कुसलाकुसलाब्याकतेसु। नत्थि अवज्जं एतेसं ति अनवज्जा। एतेसं कुसलानं अवज्जं रागादि[6] नत्थि इति ते कुसला अनवज्जा। न[7] अवज्जं ति वत्तब्बे **सरे अन** इति (क० २.७.१९) सुत्तेन परसरस्स[8] नकारस्स अनादेसदस्सनतो अनवज्जं ति वुत्तं। अनवज्जं ति पदे अकारो तब्भावे वत्तति। अवज्जस्स पटिपक्खा वा अनवज्जा। सुखो विपाको एतेसं ति सुखविपाका। एतेसं कुसलानं विपाको सुखो इट्ठो इति ते कुसला सुखविपाका। (६०–म०) अनवज्जा च ते सुखविपाका चा ति अनवज्जसुखविपाका। ते कुसला लक्खियन्ति एतेना ति लक्खणं। कुसला एतेन धम्मजातेन लक्खियन्ति पण्डितेहि लक्खियन्ते इति धम्मजातं[9] लक्खणं। अनवज्जसुखविपाका[10] लक्खणं एतेसं ति अनवज्जसुखविपाकलक्खणा। एतेसं कुसलानं लक्खणं अनवज्जसुखविपाका इति ते कुसला अनवज्जसुखविपाकलक्खणा।

अथवा—(७२-सी०) लक्खियतीति लक्खणं। यो सभावो पण्डितेहि लक्खियति इति सो सभावो लक्खणं, सभावो।

अनवज्जसुखविपाका च ते लक्खणं[11] एतेसं ति अनवज्जसुखविपाकलक्खणा। सह अव-

---

१. तनुकरणेन०–सी०। २-२. उप्पन्ना धम्मा–सी०। ३. कुसं–सी०।

४. ०वा-सी०। ५. ०वा-सी०। ६. रागादिदोसो-सी०। ७. सी० पोत्थके नकारस्स ठाने नत्थि इति पाठो। ८. नत्थि-सी०। ९. तं धम्मजातं-सी०। १०. ०विपाकं-सी०।

११. लक्खणा चा ति अनवज्ज....प....लक्खणं, अनवज्जसुखविपाकलक्खणं एतेसं ति अनवज्जसुखविपाकलक्खणा। अथवा—अनवज्जं च सुखविपाको च अनवज्जसुखविपाका, अन-

'किं पनेतानि 'कुसला' ति वा 'धम्मा' ति वा आदीनि एकत्थानि उदाहु नानत्थानि ?' 'किञ्चेत्थ ? यदि ताव एकत्थानि 'कुसला धम्मा' ति इदं 'कुसला कुसला' ति वुत्तसदिसं होति । अथ नानत्थानि तिकदुकानं छक्कचतुक्कभावो आपज्जति पदानं च असम्बन्धो । यथा हि 'कुसला' 'रूपं' 'चक्खुमा' ति वुत्ते अत्थवसेन अञ्ञमञ्ञं अनोलोकेन्तानं पदानं न कोचि सम्बन्धो, एवमिधा पि पदानं असम्बन्धो आपज्जति । पुब्बापरसम्बन्धरहितानि च पदानि निप्पयोजनानि नाम होन्ति । या पि चेसा परतो 'कतमे धम्मा कुसला' ति [§१] पुच्छा, ताय पि सद्धिं विरोधो आपज्जति । नेव हि धम्मा कुसला; अथ च पनिदं वुच्चति—कतमे धम्मा कुसला' ति ।

ज्जेन[1] वत्तन्तीति सावज्जा । दुक्खो विपाको एतेसं ति दुक्खविपाका । सावज्जा च ते दुक्खविपाका चा ति सावज्जदुक्खविपाका । लक्खियन्ति एतेना ति लक्खणं, सावज्जदुक्खविपाका च ते लक्खणं एतेसं ति सावज्जदुक्खविपाकलक्खणं ।

अथवा—लक्खियतीति लक्खणं, सभावो । सावज्जदुक्खविपाका च ते लक्खणञ्चा ति सावज्जदुक्खविपाकलक्खणं । अविपाकलक्खणं[2] एतेसं ति अविपाकलक्खणा ।

किं पनेतानि....प....नानत्थानीति आचरिया । कुसला ति[3] वा धम्मा ति वा एतानि आदीनि पदानि एकत्थानि किं उदाहु नानत्थानि किं इति चोदना सिया । आदिसद्देन अकुसला ति वा धम्मा ति वा अब्याकता ति वा धम्मा ति वा आदिपदानि सङ्गय्हन्ति ।

भो चोदक, एत्थ एकत्थताय किञ्चि वचनं वत्तब्बं अत्थि ? असमत्था ते चोदना, अवसिट्ठं ताव ब्रूहि । यदि ताव एकत्थानीति कुसला ति वा धम्मा ति वा आदीनि पदानि यदि ताव एकत्थानि यदि एवं, कुसला धम्मा ति इदं वचनं कुसला कुसला इति वुत्तवचनेन सदिसं होति । अथ[4] नानत्थानीति कुसला ति वा धम्मा ति वा आदीनि पदानि[4] अथ नानत्थानि यदि नानत्थानि, पदानञ्च अ-सम्बन्धो ति कुसला ति वा धम्मा ति वा आदीनं पदानञ्च असम्बन्धो आपज्जति । चसद्दो छक्कचतुक्कभावं अपेक्खति । हि सच्चं, कुसला रूपं चक्खुमा ति वचने आचरियेन वुत्ते....प....कोचि सम्बन्धो न होति यथा एवं, तथा इधा पि कुसलत्तिके पदानं कुसला ति वा धम्मा ति वा आदीनं पदानं (७३—सी०) असम्बन्धो आपज्जति । परतो पदभाजनीये कतमे धम्मा ति या पि च एसा[5] पुच्छा[5] भगवता कता, ताय पि पुच्छाय सद्धिं । हि सच्चं, धम्मा कुसला नाम नेव न एव होन्ति । अथ च पन अथ खो सच्चतो कतमे धम्मा ति इदं वचनं वुच्चति भगवता । चसद्दो वाक्यारम्भो । पनसद्दो विसेसत्थो ।

वज्जं च सुखविपाको च लक्खणं चा ति अनवज्जसुखविपाकलक्खणा । भावप्पधानो हि अनवज्जसुखविपाकसद्दो । अनवज्जसुखविपाकलक्खणा—इति अयं सी० पोत्थके अधिको पाठो ।

१. वजेन—सी० । २. सावज्जदुक्खविपाकं सावज्जदुक्खविपाकलक्खणं एतेसं ति सावज्ज ....प ....लक्खणा । नत्थि विपाको एतेसं ति अविपाका । अथवा सावज्जदुक्खविपाको अविपाकलक्खणं—इच्चेवमधिको सी० पोत्थके पाठो । ३. आचरियकुसला—म० । ४-४. अयं पाठो सीहळपोत्थके न दिस्सति । ५-५. पुच्छा—म० ।

अपरो नयो—'यदि एतानि एकत्थानि, तिण्णं 'धम्मानं' एकत्ता कुसलादीनं पि एकत्तं आपज्जति। कुसलादिपदानं हि तिण्णं 'धम्मानं' धम्मभावेन एकत्तं। तस्मा धम्मत्तयेन सद्धिं अत्थतो निन्नानत्थानं कुसलादीनं पि एकत्तं आपज्जति। यदेव कुसलं, तं अकुसलं, तं अब्याकतं' ति। 'अथा पि तिण्णं धम्मानं एकत्तं न सम्पटिच्छथ, अञ्ञो च कुसलपरो धम्मो, अञ्ञो च अकुसलपरो धम्मो, अञ्ञो च अब्याकतपरो धम्मो ति वदथ, एवं सन्ते धम्मो नाम भावो, भावतो च अञ्ञो अभावो ति कुसलपरा भावसंखाता धम्मा अञ्ञो अकुसलपरो धम्मो अभावो सिया, तथा अब्याकतपरो। तेहि च अञ्ञो कुसलपरो पि। एवं अभावत्तं आपन्नेहि धम्मेहि अनञ्ञे कुसलादयो पि अभावा येव सियुं'ति।

सब्बमेतं अकारणं। कस्मा? यथानुमतिवोहारसिद्धितो ति। वोहारो हि यथा यथा अत्थेसु अनुमतो संपटिच्छितो तथा तथेव सिद्धो। न चायं "कुसला धम्मा" ति आदीसु कुसलपुब्बो धम्माभिलापो धम्मपरो च कुसलाभिलापो, यथा 'कुसला कुसला' एवं, अत्तनो अत्थविसेसाभावेन पण्डितेहि सम्पटिच्छितो; न च 'कुसला'-'रूपं' 'चक्खुमा'-सद्दा विय अञ्ञमञ्ञं अनोलोकितत्थभावेन। 'कुसल'-सद्दो पनेत्थ अनवज्ज-

---

अपरो नयो—कुसला ति वा धम्मा ति वा (६१–म०) आदीनि पदानि यदि एकत्थानि, तिण्णं धम्मानं एकत्ता एकभावतो कुसलादोनं[1] एकत्तं एकभावो आपज्जति सम्पज्जति। हि सच्चं, कुसलादिपदानं[2] तिण्णं धम्मानं धम्मभावेन एकत्ता। तस्मा कारणा धम्मत्तयेन धम्मसद्दस्स तयेन सद्धिं अत्थतो निन्नानत्थानं कुसलादीनम्पि धम्मानं एकत्तं[3] आपज्जति। यदेव यं एव धम्मजातं कुसलं नाम, तं धम्मजातं अकुसलं नाम, तं धम्मजातं अब्याकतं नाम इति एवं एकत्तं आपज्जति। अथा पि....प....च्छथा ति तिण्णं धम्मानं एकत्तं तुम्हे अथा पि न सम्पटिच्छथ, यदि न सम्पटिच्छथ, कुसलपरो[4] कुसलतो परो धम्मो अञ्ञो व अञ्ञो एव ....प....अब्याकतपरो[5] धम्मो अञ्ञो इति वचनं तुम्हे वदथ। एवं सन्ते ति कुसला वा[6] धम्मा वा[7] आदीनं पदानं नानत्थत्ते सन्ते धम्मो नाम भावो विज्जमानकभावतो अञ्ञो धम्मो अभावो इति एवं इमिना आकारेन[8] कुसलतो परा भावसङ्खाता धम्मा अञ्ञो अकुसलपरो अकुसलतो परो अभावो सिया।

धम्मा ति पदं अञ्ञो ति पदे अपादानं। तथा अब्याकतपरो[9] अञ्ञो धम्मो अभावो सिया। तेहि च अञ्ञो कुसलपरो पी ति तेहि अकुसल-अब्याकतधम्मेहि[10] अञ्ञो कुसलपरो पि धम्मो अभावो सिया। एवं....प....सियुं[11] इति वचनं चोदको आह।

सब्बं एतं तया वुत्तवचनं अकारणं अयुत्तं। यथानु....प....सिद्धितो ति यथानुमतिया वोहारस्स सिद्धितो। हि सच्चं। वोहारो यथा यथा अत्थेसु पण्डितेहि अनुमतो सम्पटिच्छितो,

---

१. ०पि धम्मानं–सी०। २. कुसलादीनं पदानं–सी०। ३. नत्थि–म०। ४. कुसला परो-सी०। ५. अब्याकता परो-सी०। ६. ति वा-सी०। ७. ति वा-सी०। ८. कारणेन-सी०। ९. अब्याकता परो अब्या०–सी०। १०. अकुसलाब्याकतपरेहि धम्मेहि–सी०। ११. सिया-सी०।

सुखविपाकसंखातस्स अत्थस्स जोतनभावेन सम्पटिच्छितो, 'अकुसल'-सद्दो सावज्ज-दुक्खविपाकत्थजोतकत्तेन, 'अब्याकत'-सद्दो अविपाकत्थजोतकत्तेन, 'धम्म'-सद्दो सभावधारणादि-अत्थजोतकत्तेन। सो एतेसं अञ्ञतरानन्तरे वुच्चमानो अत्तनो अत्थसामञ्ञं दीपेति। सब्बे व हि एते सभावधारणादिना लक्खणेन धम्मा। 'कुसला' दि-सद्दा चापि धम्मसद्दस्स पुरतो वुच्चमाना अत्तनो अत्थविसेसं तस्स दीपेन्ति। धम्मो हि कुसलो वा होति अकुसलो वा अब्याकतो वा। एवमेते विसुं विसुं वुच्चमाना अत्तनो अत्तनो अत्थमत्तदीपकत्तेन संपटिच्छिता। धम्मसद्देन सह वुच्चमाना अत्तनो अत्थसामञ्ञ-अत्थविसेसदीपकत्तेन लोके पण्डितेहि संपटिच्छिता। तस्मा यदेतमेत्थ एकत्थनानत्थतं विकप्पेत्वा दोसारोपणकारणं वुत्तं सब्बमेतं अकारणं।

अयं ताव कुसलत्तिकस्स अनुपुब्बपदवण्णना। इमिना व नयेन सेसत्तिकदुकानं पि वेदितब्बा। इतो परं विसेसमत्तमेव वक्खाम।

तथा तथेव वोहारो सिद्धो। वोहरियति कथियतीति वोहारो, सद्दो। सम्पटिच्छितो ति पदं अनुमतो ति पदस्स विवरणं। कुसला कुसला ति वचनं अत्थविसेसाभावेन पण्डितेहि सम्पटिच्छितं[1] यथा एवं, (७४–सी०) तथा कुसला धम्मा ति आदिपदेसु कुसलपुब्बो अयं धम्माभिलापो धम्मपरो च अयं कुसलाभिलापो अत्थविसेसाभावेन पण्डितेहि न च सम्पटिच्छितो। कुसला धम्मा ति आदीसू ति पदं[2] निद्धारणे भुम्मं। कुसलं पुब्बं[3] यस्स धम्मसद्दस्स सो कुसलपुब्बो। अभिलपतीति अभिलापो, अत्थविसेसधम्मो इति अभिलापो धम्माभिलापो[4]। धम्मो धम्मसद्दो परो यस्स सो धम्मपरो। कुसलं इति अभिलापो कुसलाभिलापो। चसद्दो धम्माभिलापो च कुसलाभिलापो[4] चा ति योजेतब्बो।

धम्माभिलापो कुसलाभिलापो ति पदद्वयं सम्पटिच्छितो ति पदे कम्मं। यथा ति आदि सदिसूपमा[5]। कुसला रूपं चक्खुमा सद्दा विय अञ्ञमञ्ञं अनोलोकितत्थभावेन कुसलपुब्बो अयं धम्माभिलापो धम्मपरो अयं कुसलाभिलापो च पण्डितेहि न च (६२–म०) सम्पटिच्छितो ति योजना। केन पन अत्थेन सम्पटिच्छितब्बो ति आह कुसलसद्दो ति आदि। एत्थ कुसलत्तिके कुसलसद्दो अनवज्ज....प....जोतनभावेन वाचकभावेन पण्डितेहि सम्पटिच्छितो। अकुसलसद्दो....प....कत्तेन सम्पटिच्छितो। अब्याकतसद्दो....प....कत्तेन सम्पटिच्छितो। धम्मसद्दो....प....कत्तेन पण्डितेहि सम्पटिच्छितो। सो ति[6] धम्मसद्दो। एतेसं ति कुसलादिपदानं निद्धारणे छट्ठी। अञ्ञतरानन्तरे ति[7] अञ्ञतरस्स पदस्स अनन्तरे[8]। हि सच्चं, सब्बे एव एते कुसलादिधम्मा सभाव....प....णेन धम्मा नाम। कुसलादिसद्दा चा पि....प....भगवता वुच्चमाना ....प....तस्स धम्मसद्दस्स दीपेन्ति। तस्सा ति पदं दीपेन्तीति पदे सम्पदानं। एवं वुत्तनयेन एते कुसलादिसद्दा विसुं....प....अत्थमत्तदोपकत्तेन पण्डितेहि सम्पटिच्छिता ति सम्बन्धो। एत्थ कुसलादिपदेसु एकत्थ....प....यं एतं दोसारोपनकारणं तया वुत्तं सब्बं एतं दोसारोपनकारणं अयुत्तं।

सेसतिकदुकानम्पि अनुपदवण्णना पण्डितेहि वेदितब्बा।

---

१. न च सम्पटिच्छितो-म०। २. पदे-सी०। ३. कुसलपुब्बं-म०। ४-४. नत्थि–म०। ५. असदिसूपमा–सी०। ६. ति नत्थि–सो०। ७. ०नन्तरो ति–सी०। ८. अनन्तरो–सी०।

सुखाय वेदनाया [मा० २] ति आदीसु 'सुख'-सद्दो ताव सुखवेदना—सुखमूल-सुखारम्मण—सुखहेतु—सुखपच्चयट्ठान—अब्यापज्ज–निब्बानादीसु दिस्सति। अयं हि "सुखस्स च पहाना" [दी० १.६७] ति आदीसु सुखवेदनायं दिस्सति। "सुखो बुद्धानं उप्पादो" [धम्म० १९४], "सुखा विरागता लोके" [खु० १.७३] ति आदीसु सुखमूले। "यस्मा च खो महालि, रूपं सुखं सुखानुपतितं सुखावक्कन्तं" (सं० २-३:२९८) ति आदीसु सुखारम्मणे। "सुखस्सेतं भिक्खवे, अधिवचनं यदिदं पुञ्ञानी" (अं० ३:२२१) ति आदीसु सुखहेतुम्हि। "यावञ्चिदं भिक्खवे, न सुकरं अक्खानेन पापुणितुं याव सुखा सग्गा" (तु० म० ३.२४२), "न ते सुखं पजानन्ति ये न पस्सन्ति नन्दनं" (सं० १.७) ति आदीसु सुखपच्चयट्ठाने। "दिट्ठधम्मसुखविहारा एते धम्मा" (तु० म० १. ५४-५५) ति आदीसु अब्यापज्जे। "निब्बाणं परमं सुखं" (धम्म० २०३, २०४) ति निब्बाणे। इध पनायं सुखवेदनायमेव दट्ठब्बो।

'वेदना'-सद्दो "विदिता मे वेदना उप्पज्जन्ती" (दी० ३:१७४) ति आदीसु वेदयितस्मिं येव वट्टति। **'दुक्ख'**-सद्दो दुक्खवेदना-दुक्खवत्थु-दुक्खारम्मण-दुक्खपच्चय-दुक्खपच्चयट्ठानादीसु दिस्सति। अयं हि "दुक्खस्स च पहाना" (दी० १.६७) ति आदीसु दुक्खवेदनायं दिस्सति। "जाति पि दुक्खा" (विन० १.१३) ति आदीसु दुक्खवत्थुस्मिं। "यस्मा च खो महालि, रूपं दुक्खं दुक्खानुपतितं दुक्खावक्कन्तं" (सं० २-३:२९८-२९९) ति आदीसु दुक्खारम्मणे। "दुक्खो पापस्स उच्चयो" (धम्म० ११७) ति आदीसु दुक्खपच्चये। "यावञ्चिदं भिक्खवे, न सुकरं अक्खानेन पापुणितुं याव दुक्खा निरया"। (म० ३.२३७) ति आदीसु दुक्खपच्चयट्ठाने। इध पनायं दुक्ख-वेदनायमेव दट्ठब्बो।

बुद्धानं उप्पादो सुखो सुखमूलं। लोके विरागता सुखा सुखमूलं। सुखमूले ति सुखस्स मूलं हेतु सुखमूलं पञ्ञापस्सद्धादि। यस्मा कारणा रूपं सुखं सुखारम्मणं (७५–सी०) सुखानुपतितं सुखाय वेदनाय अनुपतितं सुखावक्कन्तं सुखवेदनाय अवक्कन्तं पविसन्तं। यदिदं पुञ्ञानि[1] यानि[1] यानि इमानि पुञ्ञानि भिक्खवे, सुखस्स सुखहेतुनो एतं पुञ्ञानीति वचनं अधिवचनं नामं[2]। भिक्खवे, सग्गा[3] याव सुखा अतिविय सुखपच्चयट्ठाना[4] इदं सुखपच्चयट्ठानं अक्खानेन पापुणितुं यावञ्च सुकरं अतिविय सुकरं न, ये जना नन्दनं उय्यानं न पस्सन्ति ते जना सुखं सुखस्स पच्चयट्ठानं न पजानन्ति। विहरन्ति एतेसू ति विहारा। सुखा अब्यापज्झ-विहारा[5] सुखविहारा। दिट्ठधम्मे सुखविहारा दिट्ठधम्मसुखविहारा। चित्तं ब्याबाधतीति ब्याबाधो, नीवरणादिधम्मो। ब्याबाधो एव ब्यापज्झं। नत्थि ब्यापज्झं एतस्स पठमज्झानादि-विहारस्सा ति अब्यापज्झो[6]। एते धम्मा ति पठमज्झानादिधम्मा। इध पन सुखाय वेदनाया ति पदे विज्जमानो अयं सुखसद्दो सुखवेदनायमेव पण्डितेन दट्ठब्बो।

विदिता ति पाकटा। वेदयितस्मिं येवा ति अनुभवनस्मिं एव।

१-१. पुञ्ञानीति–सी०। २. नाम–सी०। ३. सत्ता–सी०। ४. सुखा अतिविय सुखपच्चयट्ठानं–सी०। ५. अब्यापज्झा विहारा–सी०। ६. ०वचनत्थो पनेत्थो ति–सी०।

वचनत्थो पनेत्थ—सुखयती ति सुखा। दुक्खयती ति दुक्खा। न दुक्खा न सुखा ति अदुक्खमसुखा। 'म'-कारो पदसन्धिवसेन वुत्तो। सब्बा पि आरम्मणस्स रसं वेदयन्ति अनुभवन्ती ति वेदना। तासु इट्ठानुभवनलक्खणा सुखा, अनिट्ठानुभवन-लक्खणा दुक्खा, उभयविपरीतानुभवनलक्खणा अदुक्खमसुखा।

यो पनायं तीसु पदेसु—'**सम्पयुत्त**'-सद्दो तस्स'त्थो—समं पकारेहि युत्ता ति सम्पयुत्ता। कतरेहि पकारेही ति? एकुप्पादतादीहि। "नत्थि केचि धम्मा केहिचि धम्मेहि सम्पयुत्ता ति? आमन्ता" (कथा० २.३००) ति हि इमस्स पञ्हस्स पटिक्खेपे "ननु अत्थि केचि धम्मा केहिचि धम्मेहि सहगता सहजाता संसट्ठा एकुप्पादा एकनिरोधा एकवत्थुका एकारम्मणा" ति (कथा० २.३००) एवं एकुप्पादादीनं वसेन सम्पयोगत्थो वुत्तो। इति इमेहि एकुप्पादादीहि समं पकारेहि युत्ता ति सम्पयुत्ता।

विपाकत्तिके (मा० ३) अञ्ञमञ्ञं विसिट्ठानं कुसलाकुसलानं पाका ति विपाका। विपाकभावमापन्नानं अरूपधम्मानमेतं अधिवचनं। **विपाकधम्मधम्मा** ति

वचनत्थो पनेत्था ति एत्थ सुखाय वेदनाया ति आदीसु पदेसु वचनत्थो सद्दस्स[1] अत्थो[1]। सुखयतीति सुखा। या धम्मजाति सम्पयुत्तवत्थुका यानि सुखयति सुखितं करोति इति सा धम्मजाति सुखा। 'सुख'-सुखने। दुक्खयतीति दुक्खा। या (६३–म०) धम्मजाति। 'दुक्ख'-दुक्खने। सब्बापी ति सुख-दुक्ख-उपेक्खावेदनायो। तासु तीसु सुखादीसु। इच्छितब्बं ति इट्ठं। किं तं? आरम्मणं। इच्छियते वा इट्ठं, इट्ठाकारो। इट्ठस्स अनुभवनं इट्ठानुभवनं। इट्ठानुभवनं लक्खणं एतिस्सा सुखाया ति इट्ठानुभवनलक्खणा।

यो पनायं ति तीसु पि पदेसु यो पन अयं सम्पयुत्त-सद्दो भगवता वुत्तो, तस्स सम्पयुत्त-सद्दस्स अत्थो। ये धम्मा समं सम्मा सह वा पकारेहि एकुप्पादादीहि आकारेहि युत्ता इति ते धम्मा सम्पयुत्ता। कतरेहि पकारेहीति कतरेहि आकारेहि इति चोदको पुच्छि। हि सच्चं। नत्थि[2] केचि धम्मा....प....आमन्ता इति इमस्स पञ्हस्स पटिक्खेपे पटिक्खेपट्ठाने कथावत्थु-पकरणे सम्पयोगत्थो भगवता वुत्तो ति सम्बन्धो। केचि धम्मा केहिचि धम्मेहि सम्पयुत्ता नत्थि किं, इति सकवादी पुच्छति, केचि धम्मा केहिचि धम्मेहि सहगता....प....एकारम्मणा अत्थि[3] ननू ति (७६–सी०) योजना। पटिक्खेपे ति पदं वुत्तो ति पदे आधारो। सम्पयोगो एव अत्थो सम्पयोगत्थो।

विपाकत्तिके विनिच्छयो पण्डितेन वेदितब्बो। अञ्ञमञ्ञं विसिट्ठानं ति पदं विसदिसस्स अत्थो। एतं ति विपाका ति वचनं। विपाको धम्मो एतेसं ति विपाकधम्मा। एतेसं कुसला-कुसलधम्मानं धम्मो सभावो। विपाको विपाकदानं फलदानं। इति ते कुसलाकुसलधम्मा विपाकधम्मधम्मा नाम। विपाका धम्मधम्मा ति वत्तब्बे आकारस्स रस्सं कत्वा विपाकधम्मधम्मा

१-१. अयं पाठो सी० पोत्थके नत्थि। २. इति–म०। ३. नत्थि–म०।

विपाकसभावधम्मा। यथा जातिजरासभावा जातिजरापकतिका सत्ता जातिधम्मा जराधम्मा ति वुच्चन्ति, एवं विपाकजनकट्ठेन विपाकसभावा विपाकपकतिका धम्मा ति अत्थो। ततियपदं उभयसभावपटिक्खेपवसेन वुत्तं।

उपादिन्नुपादानियत्तिके (मा० ४) आरम्मणकरणवसेन तण्हादिट्ठीहि उपेतेन कम्मुना आदिन्ना, फलभावेन गहिता ति **उपादिन्ना**। आरम्मणभावं उपगन्त्वा उपादानसम्बन्धेन उपादानानं हिता ति उपादानिया। उपादानस्स आरम्मणपच्चयभूतानं एतं अधिवचनं। उपादिन्ना च ते उपादानिया चा ति उपादिन्नुपादानिया; सासवकम्मनिब्बत्तानं रूपारूपधम्मानमेतं अधिवचनं। इति इमिना नयेन सेसपदद्वये पटिसेधसहितो अत्थो वेदितब्बो।

संकिलिट्ठसंकिलेसिकत्तिके (मा० ५) संकिलेसेती ति संकिलेसो, विबाधेति, उपतापेती ति अत्थो। संकिलेसेन समन्नागता **संकिलिट्ठा**। अत्तानं आरम्मणं कत्वा पवत्तनेन संकिलेसं अरहन्ति, संकिलेसे वा नियुत्ता, तस्स आरम्मणभावं अनतिक्कमनतो ति संकिलेसिका। संकिलेसस्स आरम्मणपच्चयभूतानं एतं अधिवचनं। संकि-

---

ति वुत्तं। जातिजरापकतिका ति पदं जातिजरासभावा ति पदस्स अत्थविवरणं। जननं जाति। जातिधम्मो सभावो एतेसं ति जातिधम्मा। जिरणं[1] जरा। जराधम्मो एतेसं ति जराधम्मा। विपाकानं जनका ति विपाकजनका। विपाकजनकानं भावो विपाकजनकत्तं, तेन। विपाको सभावो एतेसं ति विपाकसभावा।

आरम्मणकरणवसेना ति पदं उपेतेना ति पदे विसेसनं[2]। आरम्मणस्स करणं आरम्मणकरणं। आरम्मणकरणस्स वसो आरम्मणकरणवसो। तण्हादीहीति पदं उपेतेना ति पदे ततियाकत्ता। तण्हा आदि येसं ते तण्हादयो। उपेतेना ति पदं कम्मुना ति पदस्स विसेसनं। उपगन्त्वा इतं[3] गहितं उपेतं। कम्मुना ति पदं गहिता ति पदे दुतियाकत्ता[4]। फलभावेना ति पदं गहिता ति पदे ततियाविसेसनं। गहिता ति पदं आदिन्ना ति पदस्स अत्थविवरणं। उपगन्त्वा ति पदं सम्बन्धेना ति पदे विसेसनं। उपादान (६४-म०)-सम्बन्धेना ति उपादानेहि पटिबद्धेन हिता ति अनुरूपा। एतं ति उपादानिया ति वचनं। सासवकम्मनिब्बत्तानं ति सह आसवेहि वत्ततीति सासवं। सासवञ्च तं कम्मञ्चा ति सासवकम्मं। सासवकम्मतो निब्बत्ता सासवकम्मनिब्बत्ता।

संकिलेसेतीति संकिलेसो। यो धम्मो चित्तं पुग्गलं वा संकिलेसेति इति सो धम्मो संकिलेसो। संपुब्ब-'किलिस'-बाधने, उपतापने वा। ये धम्मा आरम्मणपच्चयधम्मसङ्खातं अत्तानं किलेसस्स आरम्मणं कत्वा पवत्तनेन संकिलेसं अरहन्तीति[5]।

पवत्तनेना ति पदं अरहन्तीति पदे ततियाविसेसनं। तस्सा ति संकिलेसस्स। अनतिक्कमनतो ति पदं नियुत्ता ति पदे (७७-सी०) ततियाविसेसनं। संकिलेसस्स आरम्मणभावं अनतिक्कमनवसेना ति पदं अरहन्तीति पदे ततियाविसेसनं। तस्सा ति संकिलेसस्स। अनतिक्कमनतो ति पदं नियुत्ता ति पदे ततियाविसेसनं। संकिलेसस्स आरम्मणभावं अनतिक्क-

---

१. जिरनं-सी०। २. ततियाविसे०-सी०। ३. इदं-सी०। ४. ततिया०-सी०। ५. अरहन्ति-सी०।

लिट्ठा च ते संकिलेसिका चा ति **संकिलिट्ठ-संकिलेसिका**। सेसपदद्वयं पुरिमत्तिके वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

वितक्कत्तिके (मा० ६) सम्पयोगवसेन वत्तमानेन सह वितक्केन सवितक्का। सह विचारेन सविचारा। सवितक्का च ते सविचारा चा ति **सवितक्क-सविचारा**। उभयरहिता **अवितक्क-अविचारा**। वितक्कविचारेसु विचारो व मत्ता, पमाणं, एतेसं ति विचारमत्ता। विचारतो उत्तरिं वितक्केन सद्धिं सम्पयोगं न गच्छती ति अत्थो। अवितक्का च ते विचारमत्ता चा ति **अवितक्क-विचारमत्ता**।

पीतित्तिके (मा० ७) पीतिया सह एकुप्पादादिभावं गता ति **पीतिसहगता**, पीतिसम्पयुत्ता ति अत्थो। सेसपदद्वये पि एसेव नयो। **उपेक्खा** ति चेत्थ अदुक्खमसुखा वेदना वुत्ता। सा हि सुखदुक्खाकारप्पवत्तिं उपेक्खति, मज्झत्ताकारसण्ठितत्ता तेनाकारेन नप्पवत्तती ति उपेक्खा। इति वेदनातिकतो पदद्वयमेव गहेत्वा निप्पीतिकस्स सुखस्स सप्पीतिकसुखतो विसेसदस्सनवसेन अयं तिको वुत्तो।

दस्सनत्तिके (मा० ८) **दस्सनेना** ति सोतापत्तिमग्गेन। सो हि पठमं निब्बाणं दस्सनतो दस्सनं ति वुत्तो। गोत्रभू पन किञ्चा पि पठमतरं पस्सति, यथा पन रञ्ञो सन्तिकं केनचिदेव करणीयेन आगतो पुरिसो दूरतो व रथिकाय चरन्तं हत्थिक्खन्धगतं

मनवसेन नियुत्ता, न एकुप्पादादिसम्पयोगवसेन[१] नियुत्ता ति अधिप्पायो। एतं ति संकिलेसिका इति वचनं।

ये धम्मा सम्पयोगवसेन पवत्तमानेन वितक्केन सह होन्ति, ते धम्मा सवितक्का। ये धम्मा सम्पयोगवसेन[१] पवत्तमानेन[२] विचारेन सह होन्ति ते धम्मा सविचारा। वितक्कविचारेसू[३] ति निधारणे भुम्मं। एतेसं धम्मानं विचारो व विचारो एव मत्तं, वितक्कतो परं[४] उत्तरिं[५] पमाणतो[५] ते[६] धम्मा[६] विचारमत्ता।

एत्था ति उपेक्खा ति पदे। चसद्दो वाक्यारम्भो। हि सच्चं। अदुक्खमसुखा वेदना, सा[७] सुखदुक्खाकारप्पवत्तिं सुखदुक्खाकारेन पवत्तिं उपेक्खति। मज्झत्ताकारसण्ठितत्ता[८] मज्झत्ताकारेण सण्ठितभावतो। तेनाकारेन तेन सुखदुक्खाकारेण उदासिनाकारेण। नप्पवत्तति इति तस्मा सा अदुक्खमसुखा वेदना उपेक्खा। सुखदुक्खाकारपवत्तिं उपेक्खतीति[८]। एत्थ सुखदुक्खवेदनानं सुखाकारेन दुक्खाकारेन च पवत्तनं उपेक्खा वेदना उपेक्खति ओलोकेति। सुखाकारेन दुक्खाकारेन च[९] उदासिना होतीति अधिप्पायो। मज्झत्ताकारेन सण्ठितत्ता ति पदं पवत्ततीति पदे हेतु। इतीति एवं गहेत्वा ति पदे आधारो[१०]।

सो हीति हि सच्चं, सो सोतापत्तिमग्गो। ननु च गोत्रभु निब्बानं सोतापत्तिमग्गतो पठमतरं पस्सति, कस्मा दस्सनं ति न वुच्चतीति, सोतापत्तिमग्गो च कस्मा दस्सनं ति वुच्च-

---

१-१. नत्थि–म०। २. वत्तमानेन–म०। ३. विचारेसू–म०। ४. पदं–म०। ५-५. उत्तरिपमाणतो–म०। ६-६. नत्थि–म०। ७. नत्थि–म०। ८-८. मज्झत्ता–म०। ९. नत्थि–म०। १०. आकारो–म०।

राजानं दिस्वा पि 'दिट्ठो ते राजा' ति पुट्ठो दिस्वा पि कत्तब्बकिच्चस्स अकतत्ता 'न पस्सामी' ति आह, एवमेव निब्बाणं दिस्वा पि कत्तब्बस्स किलेसप्पहानस्साभावा न दस्सनं ति वुच्चति। तं हि ञाणं मग्गस्स आवज्जनट्ठाने तिट्ठति। **भावनाया** ति सेसमग्गत्तयेन। सेसमग्गत्तयं हि पठममग्गेन दिट्ठस्मिं येव धम्मे भावनावसेन उप्पज्जति, अदिट्ठपुब्बं किञ्चि न पस्सति, तस्मा भावना ति वुच्चति।। ततियपदं उभयपटिक्खेपवसेन वुत्तं।

तदनन्तरत्तिके (मा० ९) दस्सनेन पहातब्बो हेतु एतेसं ति **दस्सनेन पहातब्ब-हेतुका**। दुतियपदे पि एसेव नयो। ततियपदे नेव-दस्सनेन न-भावनाय पहातब्बो हेतु एतेसं ति एवमत्थं अ-गहेत्वा नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बो हेतु एतेसं अत्थी ति एवमत्थो गहेतब्बो। इतरथा हि अहेतुकानं अग्गहणं भवेय्य; हेतु येव तेसं नत्थि यो दस्सनभावनाहि पहातब्बो सिया। सहेतुकेसु पि हेतुवज्जानं पहानं आपज्जति, न हेतूनं; हेतु येव हि एतेसं 'नेव दस्सनेन न-भावनाय पहातब्बो' ति वुत्तो, न ते धम्मा। उभयं पि चेतं न अधिप्पेतं। तस्मा नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बो हेतु एतेसं अत्थी ति **नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बहेतुका** ति अयमत्थो गहेतब्बो।

तीति चोदनं सन्धायाह गोतुभू ति आदि। आवज्जनट्ठाने ति आवज्जनं विय ठाने। पठम-मग्गेना ति पदं दिट्ठस्मि येवा ति पदे कत्ता। धम्मे ति चतुसच्चधम्मे। भावनावसेना ति वड्ढनवसेन, पुनप्पुनं निब्बत्तनवसेना ति अत्थो। पठममग्गेन दिट्ठधम्मे भावेति वड्ढेतीति भावना।

या[1] धम्मजाति[1]। एतेसं धम्मानं हेतु दस्सनेन नेव पहातब्बो भावनाय न पहातब्बो इति एवं अत्थं अग्गहेत्वा दस्सनेन पहातब्बो हेतु एतेसं धम्मानं नेव अत्थि भावनाय पहातब्बो (६५-म०) हेतु एतेसं धम्मानं न अत्थि इति एवं पण्डितेन (७८—सी०) गहेतब्बो। एतेसं ति पदं हेतू ति पदे सम्बन्धो। दस्सनेन भावनाया ति पदद्वयं पहातब्बो ति पदे करणं, कत्ता वा। नेव ना ति पदद्वयं अत्थीति पदे पटिसेधो। हेतू ति पदं अत्थीति पदे कत्ता। एतेसं ति पदं नेव अत्थीति पदे सम्पदानं। एवमत्थो गहेतब्बो ति वुत्तमत्थं ब्यतिरेकेन पाकटं कातुं इतरथा ति आदि वुत्तं।

हिसच्चं, इतरथा पहातब्बो ति एतेसं ति एवं इतरे अत्थे गहिते सति अहेतुकानं हेतु-रहितानं अहेतुकचित्तादीनं धम्मानं अग्गहणं भवेय्य। हेतु येव हीति हि सच्चं, दस्सनभावनाहि पहातब्बो यो हेतु सिया, सो[2] हेतु येव तेसं अहेतुकानं नत्थि। हेतु येवा ति एवसद्देन[3] लोभदोस-मोहसङ्खाता हेतू अहेतुकानं नत्थि जनकहेतु-आदयो अत्थेवा ति ञापेति। तेसं ति[4] पदं नत्थीति पदे सम्पदानं। सहेतुकेसु पी ति निद्धारणे भुम्मं। अपिसद्दो अहेतुके अपेक्खति। न हेतूनं ति हेतूनं[5] पहानं न आपज्जति। हेतू येव हीति हि सच्चं, हेतू येव नेव····प····पहातब्बो ति वुत्तो ते धम्मा····प····पहातब्बो ति न वुत्ता। उभयम्पि चेतं ति अहेतुकानं अग्गहणं हेतुवज्जानं पहानं चा ति उभयम्पि एतं वचनं अनधिप्पेतं।

१-१. अयं पाठो सी० पोत्थके नत्थि। २. नत्थि—म०। ३. एवं सद्देन—सी०। ४. एतेसं ति—सी०। ५. हेतु हेतूनं—सी०।

आचयगामित्तिके (मा० १०) कम्मकिलेसेहि आचीयती ति आचयो। पटिसन्धि-चुति-गतिप्पवत्तानं एतं नामं। तस्स कारणं हुत्वा निप्फादनकभावेन तं आचयं गच्छन्ति, यस्स वा पवत्तन्ति तं पुग्गलं यथावुत्तमेव आचयं गमेन्ती ति पि **आचयगामिनो**; सासवकुसलाकुसलानं एतं अधिवचनं। ततो एव आचयसंखाता चया अपेतत्ता, निब्बानं अपेतं चया ति अप-चयो। तं आरम्मणं कत्वा पवत्तनतो अपचयं गच्छन्ती ति **अपचयगामिनो**; अरियमग्गानमेतं अधिवचनं। अपि च पाकारं इट्ठकवड्ढकी विय पवत्तं आचिनन्ता गच्छन्ती ति आचयगामिनो। तेन चितं चितं इट्ठकं विद्धंसयमानो पुरिसो विय तदेव पवत्तं अपचिनन्ता गच्छन्ती ति अपचयगामिनो। ततियपदं उभयपटिक्खेपेन वुत्तं।

सेक्खत्तिके (मा० ११)। तीसु सिक्खासु जाता ति **सेक्खा**। सत्तन्नं सेक्खानं एते ति पि सेक्खा। अपरियोसितसिक्खत्ता सयमेव सिक्खन्ती ति पि सेक्खा। उपरिसिक्खितब्बाभावतो न सेक्खा ति **असेक्खा**। वुड्ढिप्पत्ता वा सेक्खा ति पि असेक्खा। अरहत्तफलधम्मानं एतं अधिवचनं। ततियपदं उभयपटिक्खेपेन वुत्तं।

यो धम्मो कम्मकिलेसेहि आचियति तस्मा[1] सो धम्मो आचयो। आपुब्ब 'चि'-चये। कम्मकिलेसेहीति पदं आचियतीति पदे कत्ता। गन्तब्बा ति गति। पवत्तीति पवत्तं, अवसेसलोकियविपाको कम्मजरूपञ्च। गतियं पवत्तं गतिपवत्तं। पटिसन्धि च चुति च गतिपवत्तञ्च पटिसन्धिचुतिगतिपवत्तं। अथवा पटिसन्धि च चुति एव गतिपवत्तं पटिसन्धिचुतिगतिपवत्तं, अयं कम्मधारयो युत्तो। कस्मा तदेव पवत्तं ति वक्खमानपदस्स दस्सनतो। तस्सा ति आचयस्स[2]। यस्सा ति पुग्गलस्स। आचयसङ्खाता ततो एव चया अपेतभावतो[3] निब्बानं चया अपेतं इति तस्मा निब्बानं अपचयो। तं ति अपचयसङ्खातं निब्बानं। अपि चा ति अञ्ञं वचनं वत्तब्बं अत्थीति अत्थो। अथवा अपि चा ति अपरो नयो। तेना ति इट्ठकवड्ढकिना। चितं ति पदे कत्ता।

तीसु सिक्खासू ति सीलसमाधिपञ्ञासङ्खातासु तीसु सिक्खासु। (७९–सी०) मग्गफलत्तयधम्मा सम्पयोगवसेन जाता ति इति मग्गफलत्तयधम्मा सेक्खा। विग्गहो पन एवं कातब्बो सिक्खितब्बा ति सिक्खा, पुग्गलेहि परिपूरेतब्बा। मग्गफलत्तयेसु विज्जमाना (६६–म०) सीलसमाधिपञ्ञा सिक्खा नामा ति अधिप्पायो। सिक्खासु जाता ति सेक्खा, सीलसमाधिपञ्ञासङ्खातासु सिक्खासु सम्पयोगवसेन पवत्ता मग्गफलत्तयधम्मा सेक्खा नामा ति अधिप्पायो। सत्तन्नं सेक्खानं पुग्गलानं एते धम्मा सन्तका इति पि ते धम्मा सेक्खा। सिक्खन्ती ति सेक्खा पुग्गला। सेक्खानं एते ति[4] सेक्खा, मग्गफलत्तयधम्मा सेक्खा नामा ति अधिप्पायो। सत्तन्नं पुग्गलानं सेक्खानं एते धम्मा सन्तका इति पि धम्मा सेक्खा। सिक्खन्ती ति सेक्खा। सेक्खानं एते धम्मा ति सेक्खा, मग्गफलत्तयधम्मा। अपरियोसितसिक्खत्ता ति अपरिनिट्ठितसिक्खाकिच्चभावतो। वुड्ढिप्पत्ता वा सेक्खा ति एत्थ असेक्खा ति अरहत्तफल-

---

१. इति तस्मा–सी०। २. आचरियस्स–सी०। ३. अपेतत्ता अपेत०–सी०। ४. ०वा–सी०।

परित्तत्तिके (मा० १२) समन्ततो खण्डितत्ता अप्पमत्तकं परित्तं ति वुच्चति; 'परित्तं गोमयपिण्ड'ति आदीसु विय। इमे पि अप्पानुभावताय परित्ता विया ति **परित्ता**; कामावचरधम्मानमेतं अधिवचनं। किलेसविक्खम्भनसमत्थताय विपुलफलताय दीघसन्तानताय च महन्तभावं गता, महन्तेहि वा उळारच्छन्दविरियचित्तपञ्ञेहि गता पटिपन्ना ति पि **महग्गता**। पमाणकरा धम्मा रागादयो पमाणं नाम। आरम्मणतो वा सम्पयोगतो वा नत्थि एतेसं पमाणं, पमाणस्स च पटिपक्खा ति **अप्पमाणा**।

परित्तारम्मणत्तिके (मा० १३) परित्तं आरम्मणं एतेसं ति **परित्तारम्मणा**। सेसपदद्वये पि एसेव नयो।

हीनत्तिके (मा० १४) **हीना** ति लामका अकुसला धम्मा। हीनपणीतानं मज्झे भवा ति **मज्झिमा**। अवसेसा तेभूमका धम्मा उत्तमट्ठेन अनप्पकट्ठेन च **पणीता**; लोकुत्तरा धम्मा।

मिच्छत्तत्तिके (मा० १५) 'हितसुखावहा मे भविस्सन्ती' ति एवं आसिसिता पि तथा अभावतो, 'असुभादीसु येव सुभं'ति आदिविपरीतपवत्तितो च मिच्छासभावा ति मिच्छत्ता; विपाकदाने सति खन्धभेदानन्तरमेव विपाकदानतो नियता; मिच्छत्ता च ते नियता चा ति **मिच्छत्तनियता**। वुत्तविपरीतेन अत्थेन सम्मा-सभावा ति सम्मत्ता; सम्मत्ता च ते नियता च अनन्तरमेव फलदानेना ति **सम्मत्तनियता**। उभयथा पि न नियता ति **अनियता**।

विज्जमानासु सीलसमाधिपञ्ञासङ्खातासु सिक्खासु जाता अरहत्तफलधम्मा असेक्खा ति अधिप्पायो।

खण्डितत्ता ति[1] परिच्छिन्दितब्बत्ता। अप्पमत्तकं वत्थु[2] परित्तं ति जनेन वुच्चति। इमे पी ति कामावचरधम्मा। अप्पो आनुभावो एतेसं ति अप्पानुभावा। तेसं भावो अप्पानुभावता। परिसमन्ततो दीयन्ति खण्डियन्ती ति परित्ता। परित्ता विया ति परित्ता। किलेसविक्खम्भनसमत्थताया ति किलेसानं विक्खम्भनं किलेसविक्खम्भनं। किलेसविक्खम्भने समत्था किलेसविक्खम्भनसमत्था। तेसं भावो किलेस....प....समत्थता। विपुलं फलं एतेसं ति विपुलफला। तेसं भावो विपुलफलता। दीघो सन्तानो एतेसं ति दीघसन्ताना। तेसं भावो दीघसन्तानता। छन्दो च वीरियञ्च चित्तञ्च पञ्ञा च छन्दवीरीयचित्तपञ्ञा। उळारा छन्दवीरीयचित्तपञ्ञा एतेसं पुग्गलानं ति उळारच्छन्दवीरियचित्तपञ्ञा। पटिपन्ना ति अधिगता।

मे मम हित सुखावहा हितसुखजनका ते धम्मा भविस्सन्ति इति एवं पुग्गलेन आसिसिता पि ये धम्मा तथा[3] तेन[3] हितसुखावहनेन अभावतो च, असुभादीसु येव सुभादिविपरीतप्पवत्तितो सुभादिविपरीतेन पवत्तितो च मिच्छा सभावा इति ते धम्मा मिच्छत्ता। आसिसिता पी ति पदं मिच्छा सभावा (८०-सी०) ति पदस्स विसेसनं। अपि-सद्दो सम्भावने। मिच्छा अत्ता सभावा एतेसं ति मिच्छत्ता। विपाकदानतो ति पदं नियता ति पदे ततियाविसेसनं।

---

१. गण्हितत्ता ति-सी०। २. वत्थु-सी०। ३-३. तथागतेन-सी०।

मग्गारम्मणत्तिके (मा० १६) निब्बानं मग्गति, गवेसति, किलेसे वा मारेन्तो गच्छती ति मग्गो। मग्गो आरम्मणं एतेसं ति **मग्गारम्मणा**। अट्ठङ्गिको पि मग्गो पच्चयट्ठेन एतेसं हेतू ति मग्गहेतुका। मग्गसम्पयुत्ता वा हेतू मग्गे वा हेतू ति मग्गहेतू। ते एतेसं हेतू ति मग्गहेतुका। सम्मादिट्ठि सयं मग्गो चेव हेतु च। इति मग्गो हेतु एतेसं ति पि **मग्गहेतुका**। अभिभवित्वा पवत्तनट्ठेन मग्गो अधिपति एतेसं ति **मग्गाधिपतिनो**।

उप्पन्नत्तिके (मा० १७) उप्पादतो पट्ठाय याव भङ्गा उद्धं पन्ना गता पवत्ता ति **उप्पन्ना**। न उप्पन्ना ति **अनुप्पन्ना**। परिनिट्ठितकारणेकदेसत्ता अवस्सं उप्पज्जिस्सन्ती ति **उप्पादिनो**।

अतीतत्तिके (मा० १८) अत्तनो सभावं उप्पादादिलक्खणं वा पत्वा अतिक्कन्ता ति **अतीता**। तदुभयं पि न आगता ति **अनागता**। तं तं कारणं पटिच्च उप्पन्ना ति **पच्चुप्पन्ना**।

अनन्तरत्तिके (मा० १९) अतीतं आरम्मणं एतेसं ति **अतीतारम्मणा**। सेसपदद्वये पि एसेव नयो।

अज्झत्तत्तिके (मा० २०) 'एवं पवत्तमाना मयं अत्ता'ति गहणं, 'गमिस्सामा' ति इमिना विय अधिप्पायेन अत्तानं अधिकारं कत्वा पवत्ता ति **अज्झत्ता**। 'अज्झत्त'-सद्दो पनायं गोचर'ज्झत्ते नियक'ज्झत्ते अज्झत्त'ज्झत्ते विसय'ज्झत्ते ति चतूसु अत्थेसु दिस्सति। "तेन आनन्द, भिक्खुना तस्मिं येव पुरिमस्मिं समाधिनिमित्ते अज्झत्तमेव

यो धम्मो आरम्मणकरणवसेन निब्बानं मग्गति वा किलेसे मारेन्तो निब्बानं गच्छति इति सो धम्मो मग्गो। 'मग्ग'-गवेसने। मरपुब्ब 'गमु'-गतिम्हि[1]। पच्चयट्ठेना ति पदं हेतू ति पदे ततियाविसेसनं। ते ति मग्गहेतू। पवत्तनट्ठेना ति पदं अधिपतीति पदे (६७-म०) ततियाविसेसनं।

अनुप्पन्ना ति एतेन[2] खणत्तयसमङ्गी धम्मो च अतीतो धम्मो च उप्पन्नो नामा ति एवं सब्बो उप्पन्नभावो पटिसिद्धो। न उप्पन्नधम्मो ति एत्थ खणत्तयसमङ्गीसङ्खातो उप्पन्नो धम्मसभावो एव पटिसिद्धो, तस्मा अनुप्पन्ना ति एत्थ उप्पन्ना अतीता पि न सङ्गहिता। परिनिट्ठि....प....त्ता, कारणस्स एकदेसो कारणेकदेसो। परिनिट्ठितो कारणेकदेसो एतेसं ति परिनिट्ठितकारणेकदेसा[3]। तेसं भावो परिनिट्ठितकारणेकदेसत्तं।

एवं चक्खादिभावेन।फुसनादिभावेन च पवत्तमाना धम्मसङ्खाता मयं अत्ता ति गहणं अत्ता इति जाननं, गमिस्साम पापुणिस्साम इति इमिना विय अधिप्पायेन ये धम्मा अत्तानं अधिकारं कत्वा पवत्ता इति तस्मा ते धम्मा अज्झत्ता। गावो चरन्ति एत्था ति गोचरं, गोचरं विया ति गोचरं। अत्तानं अधि अज्झत्तं। गोचरं एव अज्झत्तं गोचरज्झत्तं। नियस्स अत्तनो एतं नियकं। नियकं एव अज्झत्तं नियकज्झत्तं। अत्तानं अधि अज्झत्तं। अज्झत्तं एव अज्झत्त-

---

१. मार०-सी०। २. एवं तेन-सी०। ३. ०देसो-सी०।

चित्तं सण्ठपेतब्बं" (म० ३.१७६), "अज्झत्तरतो समाहितो" (दी० २.८४) ति आदीसु हि अयं गोचर' ज्झत्ते दिस्सति। "अज्झत्तं सम्पसादनं (दी० १.६५)", "अज्झत्तं वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरती" (दी० २.२२३) ति आदीसु नियक'ज्झत्ते। "छ अज्झत्तिकानि आयतनानी" (पटि० १.१३५) ति आदीसु अज्झत्त' ज्झत्ते। "अयं खो पन आनन्द, विहारो तथागतेन अभिसम्बुद्धो यदिदं सब्बनिमित्तानं अमनसिकारा अज्झत्तं सुञ्ञत्तं उपसम्पज्ज विहरती" ति (म० ३.१७५) आदीसु विसय' ज्झत्ते; इस्सरियट्ठाने ति अत्थो। फलसमापत्ति हि बुद्धानं इस्सरियट्ठानं नाम। इध पन नियक' ज्झत्ते अधिप्पेतो। तस्मा अत्तनो सन्ताने पवत्ता पाटिपुग्गलिका धम्मा अज्झत्ता ति वेदितब्बा। ततो बहिभूता पन इन्द्रियबद्धा वा अनिन्द्रियबद्धा वा **बहिद्धा** नाम। ततियपदं तदुभयवसेन वुत्तं।

अनन्तरत्तिको (मा० २१) पन ते येव तिप्पकारे पि धम्मे आरम्मणं कत्वा पवत्तनवसेन वुत्तो।

सनिदस्सनत्तिके (मा० २२) दट्ठब्बभावसंखातेन सह निदस्सनेना ति सनिदस्सना। पटिहननभावसंखातेन सह पटिघेना ति सप्पटिघा। सनिदस्सना च ते सप्पटिघा चा ति **सनिदस्सन-सप्पटिघा**। नत्थि एतेसं दट्ठब्बभावसंखातं निदस्सनं ति

ज्झत्तं[1]। विसिनाति आरम्मणिकं[2] बन्धतीति विसयो[3]। विसयो एव अज्झत्तं विसयज्झत्तं। तेन भिक्खुना ति पदं सण्ठपेतब्बं ति पदे कत्ता। तस्मिं येव[4] आदिकं पदद्वयं अज्झत्तमेवा ति पदस्स विसेसनं। समाधिनिमित्ते[5] ति समाधिस्स आरम्मणभूते। अज्झत्तमेवा ति पदं सण्ठपेतब्बं ति पदे आधारो। सम्पसादनं ति सम्पसादेतीति सम्पसादनं, सद्धा। सम्पसादनं अस्स ञानस्स (८१-सी०) अत्थीति सम्पसादनं। अज्झत्तं वा ति पदं धम्मेसू ति पदस्स विसेसनं[5]। आनन्द, तथागतो सब्बनिमित्तानं सब्बेसं कसिणादि-आरम्मणानं अमनसिकारा अमनसिकारहेतु अज्झत्तं विसयभूतं यदिदं सुञ्ञतं, यं इदं फलसमापत्तिं उपसम्पज्ज निप्फादेत्वा विहरति, अयं खो पन विहारो, अयं समापत्ति तथागतेन अभिसम्बुद्धो इति आदीसु पयोगेसु विसयज्झत्ते अयं अज्झत्तसद्दो दिस्सति। किं इस्सरियट्ठानं ति आह—फलसमापत्तीति[6] आदि। इस्सरस्स भावो इस्सरियं। तिट्ठति एत्था ति ट्ठानं। इस्सरियस्स ट्ठानं इस्सरियट्ठानं। इस्सरियं एव[7] ठानं इस्सरियट्ठानं। पाटिपुग्गलिका ति विसुं पुग्गले पवत्ता। ततो ति अज्झत्ततो। तदुभयवसेना ति तेसं अज्झत्तबहिद्धानं वसेन। अज्झत्तबहिद्धा ति अज्झत्ता च बहिद्धा[8] चा ति अज्झत्तबहिद्धा। सकपरसन्तानेसु पवत्ता[9] इन्द्रियबद्धा[10] सब्बे रूपारूपधम्मा।

दट्ठब्बभावसङ्खातेना ति पस्सितब्बं ति दट्ठब्बं। दट्ठब्बस्स भावो दट्ठब्बभावो। चक्खुविञ्ञाणस्स गोचरभावो दट्ठब्बभावो इति सङ्खातो दट्ठब्बभावसङ्खातो। निदस्सनेना ति

---

१. अज्झत्तं–म०। २. आरम्मणं–म०। ३. विसया–सी०। ४. येवा ति–सी०। ५-५. नत्थि–म०। ६. समापत्तीति–म०। ७. एव वा–सी०। ८. ते बहिद्धा–सी०। ९. ०ति–सी०। १०. ०बहिद्धा–सी०।

अनिदस्सना। अनिदस्सना च ते वुत्तनयेनेव सप्पटिघा चा ति **अनिदस्सन-सप्पटिघा**। ततियपदं उभयपटिक्खेपेन वुत्तं।

अयं ताव तिकमातिकाय अनुपुब्बपदवण्णना।

दुकमातिका

दुकमातिकाय पन तिकेसु अनागतपदवण्णनं येव करिस्साम। हेतुगोच्छके (मा० २३-२८) ताव **हेतू धम्मा** ति मूलट्ठेन हेतुसंखाता धम्मा। हेतुधम्मा ति पि पाठो। **न-हेतू** ति तेसं येव पटिक्खेपवचनं। सम्पयोगतो पवत्तेन सह हेतुना ति **सहेतुका**। तथेव पवत्तो नत्थि एतेसं हेतू ति **अहेतुका**। एकुप्पादादिताय हेतुना सम्पयुत्ता ति **हेतुसम्पयुत्ता**। हेतुना विप्पयुत्ता ति **हेतुविप्पयुत्ता**। इमेसं द्विन्नं पि दुकानं किञ्चा पि अत्थतो नानत्तं नत्थि, देसनाविलासेन पन तथा-बुज्झन्तानं वा पुग्गलानं अज्झासयवसेन वुत्ता।

ततो परं पठमदुकं दुतियततियेहि सद्धिं योजेत्वा तेसं 'हेतू न-हेतू'ति (मा०२३) आदीनं पदानं वसेन यथासंभवतो अपरे पि तयो दुका वुत्ता। तत्थ यथेव 'हेतू चेव धम्मा सहेतुका चा' ति एतं संभवति, तथा 'हेतू चेव धम्मा अहेतुका चा' ति इदं पि। यथा च 'सहेतुका चेव धम्मा न च हेतू' ति एतं संभवति, तथा 'अहेतुका चेव धम्मा न च हेतू' ति इदं पि। हेतुसम्पयुत्तदुकेन सद्धिं योजनाय पि एसेव नयो।

निदस्सितब्बं ति निदस्सनं, निदस्सनभावो ति अत्थो। भावप्पट्ठानो[1] हेत्थ निदस्सनसद्दो। पटिहननभावसङ्खातेना ति पटिहञ्ञतीति पटिघो, अञ्ञमञ्ञपतनभावो।

दुकमातिकापदवण्णना

(६८–म०) हेतुगोच्छके ताव विनिच्छयो वेदितब्बो। इमे द्वे पि दुका अत्थतो नाना नत्थि कस्मा वुत्ता ति आह—इमेसं चा ति आदि। च सद्दो वाक्यारम्भो। देसनाविलासेना[2] ति देसियतीति देसना। विलसति सोभति एतेना ति विलासो। देसेतब्बप्पकारजाननं देसनाञाणं न। विपुब्बो 'लस'–विलासे। णो[2]। देसनाय विलासो देसनाविलासो। पन-सद्दो विसेसत्थो। तथा ति तेन द्विन्नं दुकानं देसनाय आकारेन। वा-सद्दो अज्झासयवसेन वा ति योजेतब्बो।

ततो ति ततियदुकतो। तेसं हेतूनं ति पदं पदानं ति पदे (८२–सी०) वाच्चवाचकभावेन सम्बन्धो। वसेना ति पदं वुत्ता ति पदे ततियाविसेसनं। यं[3] पाळियं अवुत्तं सम्भववसेन लब्भितत्थे द्वे दुके ञापेन्तो आह तत्था ति आदि। तत्था ति पाळियं, सम्भवती ति पदे आधारो। अथवा तत्था ति दुकपदेसु, निद्धारणे भुम्मं। हेतु चेव धम्मा सहेतुका चा ति एतं पदं सम्भवति यथेव तथा हेतू चेव धम्मा अहेतूका चा ति इदम्पि पदं सम्भवती ति[4] योजना। एसेव नयो ति यथेव हेतू चेव धम्मा हेतुसम्पयुत्ता चा ति एतं सम्भवति, हेतू चेव धम्मा हेतु-

१. ०पधानो–सी०। २-२. नत्थि–म०। ३. नत्थि–सी०। ४. ०पदे–सी०।

तत्र यदेतं 'न-हेतू धम्मा सहेतुका पि अहेतुका पी'ति सिद्धे, न-हेतू खो पन धम्मा' (मा० २८) ति अतिरित्तं 'खो पना' ति पदं वुत्तं, तस्स वसेन अयं अतिरेकत्थो संगहितो ति वेदितब्बो—कथं? न केवलं 'न-हेतू धम्मा सहेतुका पि अहेतुका पि' इच्चेव, अथ खो अञ्ञे पि अञ्ञथा पी ति। इदं वुत्तं होति—यथेव हि 'न-हेतू धम्मा सहेतुका पि अहेतुका पि', एवं 'हेतू धम्मा सहेतुका पि अहेतुका पि'। यथा च न-हेतू धम्मा सहेतुका पि अहेतुका पि', एवं 'न-हेतू धम्मा हेतुसम्पयुत्ता पि हेतुविप्पयुत्ता पी' ति अतिरेकत्थो।

चूलन्तरदुके [मा० २९-३५] अत्तनो निप्फादकेन सह पच्चयेना ति **सप्पच्चया**। नत्थि एतेसं उप्पादे वा ठितियं वा पच्चयो ति **अप्पच्चया**। पच्चयेहि समागन्त्वा कता

विप्पयुत्ता चा ति इदम्पि, यथा च हेतुसम्पयुत्ता चेव धम्मा न च हेतू ति एतं सम्भवति, तथा हेतुविप्पयुत्ता चेव धम्मा न च हेतू ति इदम्पी ति ञापेति। हेतू चेव धम्मा अहेतुका च अहेतुका चेव धम्मा न च हेतू, हेतू चेव धम्मा हेतुविप्पयुत्ता च, हेतुविप्पयुत्ता चेव धम्मा न च हेतू ति इमे द्वे दुका सम्भवदुका नाम।

तत्र पाळियं। न हेतूधम्मा सहेतुका पि अहेतुका पि इति वचने सिद्धे न-हेतू खो पन धम्मा ति वचने अतिरित्तं अवसिट्ठं अधिकं यदेतं यं एतं खो पना ति पदं भगवता वुत्तं, तस्स खो पना ति पदस्स वसेन अयं अतिरेकत्थो भगवता सङ्गहितो इति पण्डितेन वेदितब्बो ति योजना। तत्रा ति पदं वुत्तं ति पदे आधारो। कथं ति केन अयं अतिरेकत्थो[१]। केवलं न-हेतू धम्मा च न हेतू धम्मा एव न होन्ति, अथ खो सच्चतो[२] अञ्ञे पि हेतू धम्मा न होन्ति सहेतुका अहेतुका इच्चेव इति एव वचनं न च होति, अथ खो अञ्ञे पि न-हेतू धम्मा अञ्ञथा पि अञ्ञेन पि पकारेन[३] न होन्ति एव, इति एवं अयं अतिरेकत्थो सङ्गहितो ति योजना। इदं वुत्तं ति आदि वित्थारो। इदं वचनं भगवता खो पना ति पदे वुत्तं होति। हि सच्चं, सहेतुका पि अहेतुका पि इति एवं न-हेतू धम्मा होन्ति यथेव एवं हेतू धम्मा सहेतुका पि अहेतुका पि होन्ति। न-हेतू धम्मा सहेतुका पि अहेतुका पि होन्ति (६९–म०) यथा च एवं न-हेतू धम्मा हेतुसम्पयुत्ता पि हेतुविप्पयुत्ता पि होन्ति। यथेव[४] इति इदं वुत्तं होतीति सम्बन्धो, इतिसद्दो[५] गम्यमानत्ता न वुत्तो। एवं हेतू धम्मा सहेतुका पि अहेतुका पी ति[६] वचनं। अथ खो अञ्ञे पी ति (८३–सी०) वचनस्स वित्थारो। एवं न-हेतू धम्मा हेतुसम्पयुत्ता हेतुविप्पयुत्ता पी ति वचनं अञ्ञथा पी ति वचनस्स वित्थारो। हेतू धम्मा सहेतुका पि अहेतुका पि न[६]-हेतू धम्मा हेतुसम्पयुत्ता पि हेतुविप्पयुत्ता पि इति इमे द्वे दुका खो-पन-दुका नाम।

ये धम्मा अत्तनो निप्फादकेन पच्चयेन सह होन्ति इति तस्मा ते धम्मा सप्पच्चया। अत्तनो ति पदं निप्फादकेना ति पदे कम्मं। पच्चयेहीति पदं कता ति पदे कत्ता। अविनिब्भोग-

---

१. अतिरेकत्थो संगहितो–सी०। २. सच्चं–सी०। ३. पकारेण–सी०। ४. नत्थि–सी०। ५. ०तं–सी०। ६-६. नत्थि–म०।

ति **संखता**। न संखता ति **असंखता**। अविनिब्भोगवसेन रूपं एतेसं अत्थी ति **रूपिनो**। तथाविधं नत्थि एतेसं रूपं ति **अरूपिनो**। रुप्पनलक्खणं वा रूपं; तं एतेसं अत्थी ति रूपिनो। न रूपिनो अरूपिनो। **लोकिया धम्मा** ति लोको वुच्चति लुज्जन-पलुज्जनट्ठेन वट्टं; तस्मिं परियापन्नभावेन लोके नियुत्ता ति लोकिया। ततो उत्तिण्णा ति उत्तरा; लोके अपरियापन्नभावेन लोकतो उत्तरा ति **लोकुत्तरा**। **केनचि विञ्ञेय्या** ति चक्खुविञ्ञाणादीसु केनचि एकेन चक्खुविञ्ञाणेन वा सोतविञ्ञाणेन वा विजानितब्बा। **केनचि न विञ्ञेय्या** ति तेनेव चक्खुविञ्ञाणेन वा सोतविञ्ञाणेन वा न विजानितब्बा। एवं सन्ते द्विन्नं पि पदानं अत्थनानत्ततो दुको होति।

आसवगोच्छके [मा० ३६-४१] आसवन्तो ति **आसवा**। चक्खुतो पि···प०··· मनतो पि सन्दन्ति पवत्तन्ती ति वुत्तं होति। धम्मतो याव गोत्रभुं, ओकासतो याव भवग्गं सवन्ती ति वा आसवा। एते धम्मे एतं च ओकासं अन्तो करित्वा पवत्तन्ती ति अत्थो। अन्तोकरणत्थो हि अयं 'आ'-कारो। चिर-पारिवासियट्ठेन मदिरादयो आसवा विया ति पि आसवा। लोकस्मिं हि चिर-पारिवासिका मदिरादयो आसवा ति वुच्चन्ति। यदि च चिर-पारिवासियट्ठेन आसवा, एते येव भवितुमरहन्ति। वुत्तं हेतं—"पुरिमा भिक्खवे, कोटि न पञ्ञायति अविज्जाय, इतो पुब्बे अविज्जा नाहोसी" (अं० ४.१८९) ति आदि। आयतं वा संसारदुक्खं सवन्ति पसवन्ती ति पि आसवा। ततो अञ्ञे **नो-आसवा** नाम। अत्तानं आरम्मणं कत्वा पवत्तेहि सह आसवेही ति **सासवा**। एवं पवत्तमाना नत्थि एतेसं आसवा ति **अनासवा**। सेसं हेतुगोच्छके वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। अयं पन विसेसो—यथा तत्थ 'न हेतू खो पन धम्मा सहेतुका पि अहेतुका पी (मा० २८) ति अयं ओसानदुके पठमदुकस्स दुतियपदं आदिम्हि ठपेत्वा वुत्तो, एवं इध 'नो-आसवा खो पन धम्मा सासवा पि अनासवा पी'ति न वुत्तो। किञ्चा पि न वुत्तो, अथ खो अयं च अञ्ञो च भेदो तत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बो।

वसेना ति पदं अत्थी ति पदे ततियाविसेसनं। तथाविधं ति अविनिब्भोगप्पकारं। तं ति रूपं। वट्टति एत्थ कम्मं तब्बिपाको चा ति वट्टं, तस्मिं[1] वट्टे। ततो ति लोकतो। चक्खुविञ्ञाणा-दीसू ति निद्धारणे भुम्मं। चक्खुविञ्ञाणेन[2] वा सोतविञ्ञाणेन वा ति पदद्वयं विजानितब्बा ति पदे कत्ता। एवं ति एवं अत्थे। द्विन्नं ति पदानं ति विञ्ञेय्य-न-विञ्ञेया ति द्विन्नं पदानं।

आसवा ति आपुब्ब 'सु'—सन्दने[२]। चक्खुतो ति आदीनि सन्दन्तीति पदे अपादानं। पवत्तन्तीति आरम्मणकरणवसेन पवत्तन्ति। मज्जन्ति एताया ति मदिरा, सुरा[3]। मद-उम्मादने। तिम-रुहा ति (ण्वु० १४९) मोग्गल्लानसुत्तेन किरो। मदिरा आदि येसं ते मदिरादयो। यदि चा ति धम्मा चिर-पारिवासियट्ठेन चिरपवुट्ठसभावेन आसवा नाम यदि च होन्ति, एते येव चत्तारो

---

१. ०ति—सी०। २-२. नत्थि—म०। ३. मेरयो—सी०।

संयोजनगोच्छके (मा० ४२-४७) यस्स संविज्जन्ति तं पुग्गलं वट्टस्मिं संयोजेन्ति, बन्धेन्ती ति **संयोजना**। ततो अञ्ञे **नो-संयोजना** नाम। आरम्मणभावं उपगन्त्वा संयोजनसम्बन्धेन संयोजनानं हिता ति **संयोजनिया**। संयोजनस्स आरम्मण-पच्चय-भूतानं एतं अधिवचनं। न संयोजनिया **असंयोजनिया**। सेसं हेतुगोच्छके वुत्तनयेनेव योजेतब्बं।

गन्थगोच्छके (मा० ४८-५३) यस्स संविज्जन्ति तं चुतिपटिसन्धिवसेन वट्टस्मिं गन्थेन्ति घटेन्ती ति **गन्था**। ततो अञ्ञे **नो-गन्था**। आरम्मणकरणवसेन गन्थेहि गन्थितब्बा ति गन्थनिया। सेसं हेतुगोच्छके वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। यथा च इध, एवं इतो परेसु पि वुत्तावसेसं तत्थ तत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

ओघगोच्छके (मा० ५४-५९) यस्स संविज्जन्ति तं वट्टस्मिं ओहनन्ति ओसीदापेन्ती ति **ओघा**। आरम्मणं कत्वा अतिक्कमनीयतो ओघेहि अतिक्कमितब्बा ति **ओघनिया**। ओघानं आरम्मणधम्मा येव वेदितब्बा।

योगगोच्छके (मा० ६०-६५) यस्स संविज्जन्ति तं वट्टस्मिं योजेन्ती ति **योगा**। **योगनिया** ओघनिया विय वेदितब्बा।

नीवरणगोच्छके (मा० ६६-७१) चित्तं नीवरन्ति परियोनन्धन्ती ति **नीवरणा**। **नीवरणिया** संयोजनिया विय वेदितब्बा।

परामासगोच्छके (मा० ७२-७६) धम्मानं यथारूपं अनिच्चादि-आकारं अतिक्कमित्वा 'निच्चं' ति आदिवसेन पवत्तमाना परतो आमसन्तीति **परामासा** परामासेहि आरम्मणकरणवसेन परामट्ठत्ता **परामट्ठा**।

महन्तरदुकेसु (मा० ७७-९०) आरम्मणं अगहेत्वा अप्पवत्तितो ति सह आरम्मणेना ति **सारम्मणा**। नत्थि एतेसं आरम्मणं ति **अनारम्मणा**। चिन्तनट्ठेन **चित्तं**; विचित्तट्ठेन वा चित्तं। अविप्पयोगवसेन चेतसि नियुत्ता ति **चेतसिका**। निरन्तरभावूपगमनताय, उप्पादतो याव भङ्गा, चित्तेन संसट्ठा ति **चित्तसंसट्ठा**। एकतो वत्तमाना पि निरन्तरभावं अनुपगमनताय चित्तेन विसंसट्ठा ति **चित्तविसंसट्ठा**।

धम्मा भवितुं अरहन्ति। पसवन्तीति जनेन्ति। तत्था ति हेतुगोच्छके। इधा ति आसवगोच्छके। अयञ्च ति नो-आसवा खो पन धम्मा सासवा पि अनासवा पी ति अयञ्च भेदो। अञ्ञो चा ति आसवविप्पयुत्ता खो पन धम्मा सासवा पि अनासवा पी ति अञ्ञो भेदो।

यस्स संविज्जन्तीति संयोजना धम्मा यस्स पुग्गलस्स संविज्जन्ति।

यथा च इधा ति यथा इध गन्थगोच्छके। सेसं हेतुगोच्छके वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। तत्थ[1] तत्था ति तस्मिं तस्मिं गोच्छके।

अतिक्कमनीयतो ति पदं अतिक्कमितब्बा ति पदे ततियाविसेसनं। ओघेहीति पदं अतिक्कमितब्बा ति पदे कत्ता।

---

१. नत्थि—सी०।

समुट्ठहन्ति एतेना ति समुट्ठानं। चित्तं समुट्ठानं एतेसं ति **चित्तसमुट्ठाना**। सह भवन्ती ति सहभुनो। चित्तेन सहभुनो **चित्तसहभुनो**। अनुपरिवत्तन्ती ति अनुपरिवत्तिनो। किं अनुपरिवत्तन्ति? चित्तं। चित्तस्स अनुपरिवत्तिनो **चित्तानुपरिवत्तिनो**। चित्तसंसट्ठा च ते चित्तसमुट्ठाना येव चा ति **चित्तसंसट्ठसमुट्ठाना**। चित्तसंसट्ठा च ते चित्तसमुट्ठाना च चित्तसहभुनो येव चा ति **चित्तसंसट्ठ-समुट्ठान-सहभुनो**। चित्तसंसट्ठा च ते चित्त-समुट्ठाना च चित्तानुपरिवत्तिनो येव चा ति **चित्तसंसट्ठ-समुट्ठानानुपरिवत्तिनो**। सेसानि सब्बपदानि वुत्तपदानं पटिक्खेपवसेन वेदितब्बानि। अज्झत्त'ज्झत्तं सन्धाय अज्झत्तत्तिके (मा० २०) वुत्तवसेन अज्झत्ता व **अज्झत्तिका**। ततो बहिभूता ति **बाहिरा**। उपादियन्तेव भूतानि, न भूता विय उपादियन्ती ति **उपादा**। न उपादि-यन्तेवा ति **नो-उपादा**।

उपादानगोच्छके (मा० ९१-९६) भुसं आदियन्ती ति **उपादाना**; दळ्हगाहं गण्हन्ती ति अत्थो। ततो अञ्ञे **नो-उपादाना**।

किलेसगोच्छके (मा० ९७-१०४) संकिलिट्ठत्तिके (मा० ५) वुत्तनयेनेव अत्थो वेदितब्बो।

पिट्ठिदुकेसु (मा०१०५-१२२) कामे अवचरन्ती ति **कामावचरा** (मा०११५)। रूपे अवचरन्ती ति **रूपावचरा**। अरूपे अवचरन्ती ति **अरूपावचरा**। अयमेत्थ संखेपो। वित्थारो पन परतो आविभविस्सति। तेभूमकवट्टे परियापन्ना अन्तोगधा ति **परियापन्ना**। तस्मिं न परियापन्ना ति **अपरियापन्ना**। वट्टमूलं छिन्दन्ता निब्बाणं आरम्मणं कत्वा वट्टतो निय्यन्ती ति **निय्यानिका**। इमिना लक्खणेन न निय्यन्ती ति **अनिय्यानिका**। चुतिया वा अत्तनो वा पवत्तिया अनन्तरं फलदाने नियतत्ता **नियता**। तथा अनियतत्ता **अनियता**। अञ्ञे धम्मे उत्तरन्ति पजहन्ती ति **उत्तरा**। अत्तानं

कामे अवचरन्तीति ये धम्मा कामे एकादसपदेससङ्खाते कामभवे (८४—सी०) पवत्तिवसेन[1] अवचरन्ति इति तस्मा चतुपञ्ञासकामावचरचित्तं अट्ठवीसरूपसङ्खाता[2] ते धम्मा कामावचरा नाम। ये धम्मा रूपे असञ्ञभवे थपेत्वा[3] सेसे[4] पन्नरसविधे[4] रूपभवे अवचरन्ति इति पन्नरसरूपावचरचित्तसङ्खाता ते धम्मा रूपावचरा। ये धम्मा अरूपे चतुब्बिधे अरूपभवे अवचरन्ति इति द्वादसारूपावचरचित्तसङ्खाता ते धम्मा अरूपावचरा। एत्था ति पिट्ठिदुके। परतो ति परस्मिं कामावचरं ति वचने। कामे अवचरन्ती ति अट्ठकथावचनत्थो अब्यापित-दोसो नत्थि, कस्मा? वित्थारो पन परतो (७०—म०) आविभविस्सतीति दस्सनतो। अब्या-पितादिदोसे हि आपज्जमाने[5] सङ्कामावचरादिं[5] उपमं परतो वक्खतीति, तस्मा इमस्मिं अट्ठ-कथावचनत्थे दोसो नत्थि, वित्थारो पन परतो आविभविस्सतीति इदं अट्ठकथावचनं अपे-क्खित्वा कामावचरादीसु अयं अपरो अत्थो ति आदिवचनं टीकाचरियेन न वत्तब्बं। टीका-

१. पवत्तनवसेन-सी०। २. अट्ठवीसति०-सी०। ३. वज्जेत्वा-सी०। ४-४. सेस०-म०। ५-५. आवज्जमाने छ कामावचरादि–सी०।

उत्तरितुं समत्थेहि सह उत्तरेही ति **स-उत्तरा**। नत्थि एतेसं उत्तरा ति **अनुत्तरा**। रणन्ति एतेही ति रणा; येहि अभिभूता सत्ता नानप्पकारेन कन्दन्ति परिदेवन्ति, तेसं रागादीनं एतं अधिवचनं। सम्पयोगवसेन पहानेकट्ठतावसेन च सह रणेही ति **स-रणा**। तेनाकारेन नत्थि एतेसं रणा ति **अ-रणा**।

सुत्तन्तिकदुकेसु (मा० २३-१६४) सम्पयोगवसेन विज्जं भजन्ती ति **विज्जा-भागिनो**; विज्जाभागे विज्जाकोट्ठासे वत्तन्ती ति पि विज्जाभागिनो। तत्थ विपस्स-नाञाणं, मनोमयिद्धि, छ अभिञ्ञा ति अट्ठ विज्जा। पुरिमेन अत्थेन ताहि सम्पयुत्त-धम्मा पि विज्जाभागिनो। पच्छिमेन अत्थेन तासु या काचि एका विज्जा विज्जा। सेसा विज्जाभागिनो ति। एवं विज्जा पि विज्जाय सम्पयुत्तधम्मा पि विज्जाभागिनो त्वेव वेदितब्बा। इध पन सम्पयुत्तधम्मा व अधिप्पेता। सम्पयोगवसेन अविज्जं भजन्ती ति अविज्जाभागिनो। अविज्जाभागे अविज्जाकोट्ठासे वत्तन्ती ति पि अविज्जा-भागिनो। तत्थ दुक्खपटिच्छादकं तमो समुदयादिपटिच्छादकं ति चतस्सो अविज्जा। पुरिमनयेनेव ताहि सम्पयुत्ता धम्मा पि अविज्जाभागिनो। तासु या काचि एका अविज्जा अविज्जा। सेसा अविज्जाभागिनो ति। एवं अविज्जा पि अविज्जासम्प-युत्तधम्मा पि अविज्जाभागिनो त्वेव वेदितब्बा। इध पन सम्पयुत्तधम्मा व अधिप्पेता।

चरियेन वुत्तत्थो हि आरम्मणवसेन वा कामो ति आदिकेन परस्मिं वक्खमानेन अत्थेन सदिसो होति। तस्मा कामावचरादीसु आदिवचनं न[1] वत्तब्बं ति[1] अम्हाकं खन्ति।

वट्टमूलं ति वट्टस्स अविज्जातण्हासङ्खातं मूलं करोन्ता[2] धम्मा[2] ति पदं[3] नियन्तीति पदे कत्ता। करोन्ते ति पि अत्थि। लक्खणेन वा सभावेन। अत्तनो वा पवत्तिया ति इदं चत्तारो मग्गे सन्धाय वुत्तं। तथा ति अनन्तरं फलदानेन। अञ्ञधम्मे ति लोकियधम्मे। अत्तानं ति लोकियधम्मं[4]। उत्तरेहीति लोकुत्तरेहि। रणन्तीति कन्दन्ति। येहीति येहि रागादि-धम्मेहि, अभिभूता ति पदे कत्ता। पहानेकट्ठतावसेना ति पहानेन एकस्मिं पुग्गले तिट्ठन्तीति पहानेकट्ठा। पहानेकट्ठानं भावो पहानेकट्ठता। पहानेकट्ठताय वसो आयत्तो पहानेकट्ठ-तावसो। तेनाकारेना ति सम्पयोगप्पहानेकट्ठताकारेन।

भजन्तीति गच्छन्ति। पिसद्दो दुतियवचनत्थं अपेक्खति। वत्तन्ति विज्जासभावताय वत्तन्ति। तत्था ति विज्जाभागिनो ति वचने अट्ठ विज्जा वेदितब्बा ति योजना। तत्था ति वा विज्जाभागीसु निद्धारणं। विविधेनाकारेन पस्सतीति विपस्सना। विपस्सना येव ञाणं विपस्स-नाञाणं। (८५-सी०) मनेन पवत्ता इद्धि मनोमयिद्धि। अत्थेना ति[5] विज्जाभागिनो ति पदे ततियाविसेसनं। तासू ति विज्जासु। इधा ति सुत्तन्तिकदुके। परतो पन निद्देसे कतमे धम्मा विज्जाभागिनो विज्जासम्पयुत्तका धम्मा इमे धम्मा विज्जाभागिनो ति वुत्तत्ता सम्पयुत्तधम्मा व अधिप्पेता ति वुत्तं।

१-१. वत्तब्बन्ति-म०। २-२. करोन्तधम्मा-म०। ३. नत्थि-म०। ४. ०धम्मा-सी०। ५. अत्थेना ति पदं-सी०।

पुन अनज्झोत्थरणभावेन किलेसन्धकारं विद्धंसेतुं असमत्थताय विज्जु उपमा एतेसं ति विज्जूपमा (मा० १२४)। निस्सेसविद्धंसनसमत्थताय वजिरं उपमा एतेसं ति वजिरूपमा। बालेसु ठितत्ता यत्थ ठिता तदुपचारेन **बाला**। पण्डितेसु ठितत्ता **पण्डिता**। बालकरत्ता वा बाला, पण्डित-करत्ता वा पण्डिता। **कण्हा** ति काळका, चित्तस्स अप्पभस्सरभावकरणा। **सुक्का** ति ओदाता, चित्तस्स पभस्सरभावकरणा। कण्हाभिजातिहेतुतो कण्हा; सुक्काभिजातिहेतुतो सुक्का। इध चेव सम्पराये च तपन्ती ति **तपनीया**। न तपनीया **अतपनीया**। अधिवचनदुकादयो तयो (मा० १२८-१३०) अत्थतो निन्नानाकरणा; ब्यञ्जनमेवेत्थ नानं। सिरिवड्ढको धनवड्ढको ति आदयो हि अधिवचनमत्तमेव अधिकारं कत्वा पवत्ता **अधिवचना** नाम। अधिवचनानं पथा धम्मा **अधिवचनपथा**। "अभिसंखरोन्ती ति खो भिक्खवे, तस्मा संखारा" (सं०२-३ : ३१२) ति एवं निद्धारेत्वा सहेतुकं कत्वा वुच्चमाना अभिलापा **निरुत्ति** नाम। निरुत्तीनं पथा **निरुत्तिपथा**। तक्को वितक्को संकप्पो ति एवं तेन तेन पकारेन ञापनतो **पञ्ञत्ति** नाम। पञ्ञत्तीनं पथा **पञ्ञत्तिपथा**। एत्थ च एकं दुकं वत्वा पि इतरेसं वचने पयोजनं हेतुगोच्छके वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

बालेसु ठितत्ता ति बालेसु पुग्गलेसु ठितभावतो यत्थ येसु पुग्गलेसु ठिता धम्मा तदुपचारेन तेसं निस्सयभूतपुग्गलानं वोहारेन बाला नाम। तदुपचारेना ति उपचरियति[1] पुग्गलो वोहरियति एतेना ति उपचारो, बालसद्दो। तेसं उपचारो तदुपचारो, तेसं[2] निस्सयभूतानं पुग्गलानं वाचकसद्देना ति अत्थो। अपभस्सरस्स चित्तस्स भावो अपभस्सरभावो। अपभस्सरभावं करोन्तीति अपभस्सरभावकरणा।

अभिजायन्ति सत्ता एत्थ अपाये ति (७१–म०) अभिजाति। कण्हा लामका अभिजाति[3] कण्हाभिजाति। कण्हाभिजातिया हेतु कण्हाभिजातिहेतु। कण्हा अपायेसु सत्तानं उप्पज्जमानहेतू ति अत्थो। अथवा अभिजायती ति अभिजाति। कण्हा च सा अभिजाति चा ति कण्हाभिजाति। कण्हाभिजातिया हेतु कण्हाभिजातिहेतु। असोभण-अत्तभावस्स हेतू ति अत्थो। ये धम्मा इध चेव लोके सम्पराये च पुग्गलं तपन्ति इति ते धम्मा तपनीया। एत्था ति अधिवचनदुकादीसु। ब्यञ्जनमेव नानं ति वुत्तवचनं दब्भ्हं करोन्तो आह सिरिवड्ढको ति आदि। हि सच्चं, सिरि····प····आदयो सद्दा अधिवचना नाम। वचनमत्तमेवा ति मत्तसद्दो अत्थनानत्तं पटिसेधेति, एवसद्दो सन्निट्ठानकरणं। भिक्खवे, ये धम्मा यस्मा अञ्ञे धम्मे अभिसङ्खरोन्ति इति[4] तस्मा ते धम्मा सङ्खारा। इति एवं निद्धारेत्वा सहेतुकं कत्वा भगवता वुच्चमाना अभिलापा सद्दा निरुत्ति नाम। इति तस्मा ति च द्वे सद्दा अभिन्नत्था। ञापनतो अभिलापपञ्ञत्तिनामा ति[5] सम्बन्धो। एत्थ चा ति सुत्तन्तिकदुके। इतरेसं ति द्विन्नं दुकानं।

---

१. उपचारियति–सी०। २. तेन तेसं–सी०। ३. च सा अभि०–सी०। ४. इति खो–सी०। ५. अभिलापा पञ्ञत्ति–सी०।

नामरूपदुके (मा० १३१) नामकरणट्ठेन नमनट्ठेन नामनट्ठेन च **नामं**। रुप्पनट्ठेन **रूपं**। अयमेत्थ संखेपो। वित्थारो पन निक्खेपकण्डे आविभविस्सति। **अविज्जा** ति दुक्खादीसु अञ्ञाणं (मा० १३२)। **भवतण्हा** ति भवपत्थना। **भवदिट्ठी** ति भवो वुच्चति सस्सतं; सस्सतवसेन उप्पज्जनदिट्ठि। **विभवदिट्ठी** ति विभवो वुच्चति उच्छेदो; उच्छेदवसेन उप्पज्जनदिट्ठि। सस्सतो अत्ता च लोको चा ति पवत्ता दिट्ठि **सस्सतदिट्ठि**। उच्छिज्जिस्सती ति पवत्ता दिट्ठि **उच्छेददिट्ठि**। अन्तवा ति पवत्ता **अन्तवादिट्ठि**। अनन्तवा ति पवत्ता **अनन्तवा-दिट्ठि**। पुब्बन्तं अनुगता दिट्ठि **पुब्बन्तानुदिट्ठि**। अपरन्तं अनुगता दिट्ठि **अपरन्तानुदिट्ठि**। **अहिरिकं** ति यं न हिरियति हिरियितब्बेना ति एवं वित्थारिता निल्लज्जता। **अनोत्तप्पं** ति यं न ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेना ति एवं वित्थारितो अ-भायनक-आकारो। हिरियना **हिरि**, ओत्तप्पना **ओत्तप्पं**। दोवचस्सतादीसु दुक्खं वचो एतस्मिं विप्पटिकूलगाहम्हि विपच्चनीकसाते अनादरे पुग्गले ति दुब्बचो। तस्स कम्मं दोवचस्सं। तस्स भावो **दोवचस्सता**। पापा अस्सद्धादयो पुग्गला एतस्स मित्ता ति पापमित्तो; तस्स भावो **पापमित्तता**। **सोवचस्सता** च **कल्याणमित्तता** च वुत्तपटिपक्खनयेनेव वेदितब्बा।

'पञ्च पि आपत्तिक्खन्धा आपत्तियो, सत्त पि आपत्तिक्खन्धा आपत्तियो' (§ १३२९) ति एवं वुत्तासु आपत्तीसु कुसलभावो **आपत्तिकुसलता**। (मा० १४१)

नामकरणट्ठेना ति नामस्स करणभावेन। नामस्स करणं नामकरणं। नामकरणस्स अत्थो नामकरणट्ठो। नामं करोतीति नामकरणं, चतुक्खन्धा निब्बानानि। (८६–सी०) आरम्मणं नमतीति नामं। नामेतीति नामं। एत्था ति सुत्तन्तिके[1]। भवपत्थना ति भवेसु पवत्तपत्थना। भवदिट्ठीति भवनं भवो, सस्सतक्रिया। भववसेन उप्पज्जमाना दिट्ठि भवदिट्ठि। विभवनं विनस्सनं विभवो। विभववसेन उप्पज्जमाना दिट्ठि विभवदिट्ठि। सस्सतो इति पवत्ता दिट्ठि सस्सतदिट्ठि। उच्छिज्जिस्सतीति[2] उच्छेदो। उच्छेदो इति पवत्ता दिट्ठि उच्छेददिट्ठि। यं न हिरीयती ति यं येन धम्मेन पुग्गलो हिरितब्बेन हिरितब्बकं[3] न हिरीयति न जिगुच्छति। नत्थि लज्जा अस्स पुग्गलस्सा ति निल्लज्जी। निल्लज्जिनो भावो निल्लज्जिता। अभायनक-आकारो ति अभायनकस्स पुग्गलस्स आकारो। अभायनो[4] एव वा आकारो। दोवचस्सतादीसु विनिच्छयो वेदितब्बो।

विप्पटिकूलं[5] गण्हति सीलेना ति विप्पटिकूलगाही। विपच्चनीकं पटिपक्खं सातं अस्सा ति विपच्चनीकसातो। नत्थि आदरं अस्सा ति अनादरो। एतस्मिं ति आदिकं चतुपदं पुग्गले ति पदस्स विसेसनं। पुग्गले ति पदं वचो ति पदे आधारो।

अप्पनापरिच्छेदपञ्ञा ति अप्पनं पापुणनं अप्पना। 'अप्प'–पापुणने, यु। अप्पनापवत्तिया परिच्छेदो अप्पनापरिच्छेदो। अप्पनापरिच्छेदे पवत्ता पञ्ञा (७२–म०) अप्पना-

---

१. सुत्तन्तिकदुके–सी०। २. उच्छिज्जतीति–सी०। ३. हिरितब्बयुत्तकं–सी०। ४. अभायनको–सी०। ५. विपटिकुलं–म०।

ताहि आपत्तीहि वुट्ठाने कुसलभावो **आपत्तिवुट्ठानकुसलता**। समापत्तीसु कुसलभावो **समापत्तिकुसलता**। समापत्तीनं अप्पनापरिच्छेदपञ्ञायेतं अधिवचनं। समापत्तीहि वुट्ठाने कुसलभावो **समापत्तिवुट्ठानकुसलता**। अट्ठारससु धातूसु कुसलभावो **धातुकुसलता**। तासं येव धातूनं मनसिकारो कुसलभावो **मनसिकारकुसलता**। चक्खायतनादीसु कुसलभावो **आयतनकुसलता**। द्वादसङ्गे पटिच्चसमुप्पादे कुसलभावो **पटिच्चसमुप्पादकुसलता**। तस्मिं तस्मिं ठाने कुसलभावो **ठानकुसलता**। ठानं ति कारणं वुच्चति। तस्मिं हि ठाने तदायत्तवुत्तिताय फलं तिट्ठति नाम, तस्मा ठानं ति वुत्तं। अट्ठानेसु कुसलभावो **अट्ठानकुसलता**। उजुनो भावो **अज्जवो**। मुदुनो भावो **मद्दवो**। अधिवासनसंखातो खमनभावो **खन्ति**। सुरतस्स भावो **सोरच्चं**। संमोदकमुदुभावसंखातो सखिलभावो **साखल्यं**। यथा परेहि सद्धिं अत्तनो छिद्दं न होति एवं धम्मामिसेहि पटिसंथरणं **पटिसंथारो**। इन्द्रियसंवरभेदसंखातो मनच्छट्ठेसु इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारभावो **इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारता**। पटिग्गहणपरिभोगवसेन भोजने मत्तं अजाननभावो **भोजने अमतञ्ञुता**। अनन्तरदुको(मा० १५०) वुत्तपटिपक्खवसेन वेदितब्बो।

सतिविप्पवाससंखातो मुट्ठस्सतिभावो **मुट्ठसच्चं** (मा० १५१)। असम्पजाननभावो **असंपजञ्ञं**। सरती ति **सति**। सम्पजानाती ति **संपजञ्ञं**। अप्पटिसंखाने अकम्पनट्ठेन पटिसंखानसंखातं बलं **पटिसंखानबलं**। विरियसीसेन सत्तबोज्झङ्गे भावेन्तस्स उप्पन्नबलं **भावनाबलं**। पच्चनीकधम्मे समेती ति **समथो**। अनिच्चादिवसेन विविधेन

परिच्छेदपञ्ञा। तस्मिं हीति हि सच्चं, तस्मिं कारणे। तेन कारणेन आयत्ता पटिबद्धा तदायत्ता। वत्तनं वुत्ति। तदायत्ता वुत्ति अस्सा ति तदायत्तवुत्ति। तदायत्तवुत्तिनो भावो तदायत्तवुत्तिता। तिट्ठति फलं एत्था ति ट्ठानं। खन्तीति खमनं खन्ति। सोभणे कम्मे रतो सुरतो। सुट्ठु मोदतीति सम्मोदको, पुग्गलो। मुदुनो भावो मुदुभावो। सम्मोदकस्स मुदुभावो सम्मोदकमुदुभावो। अथवा सुट्ठ मोदति एतेन धम्मेना ति सम्मोदको। सम्मोदको एव मुदुभावो सम्मोदकमुदुभावो। अगुत्तं द्वारं येन सो अगुत्तद्वारो। अगुत्तद्वारस्स भावो अगुत्तद्वारता। मत्तं न जानातीति अमत्तञ्ञू, अमत्तञ्ञुनो भावो अमत्तञ्ञुता।

सतिविप्पवाससङ्खातो ति सतिया विप्पवासो इति कथितो। मुट्ठा सति एतस्मा ति मुट्ठस्सति। मुट्ठस्सतिस्स भावो मुट्ठस्सच्चं, पटिसङ्खानस्स पटिपक्खं। (८७–सी०) अपटिसङ्खाने ति पदं अकम्पनट्ठेना ति निमित्त-आधारो[1]। अकम्पनट्ठेना ति पदं बलं ति पदे ततियाविसेसनं। पटिसङ्खाति जानातीति पटिसङ्खानं, ञाणं। भावेति वड्ढेतीति भावनो[2] पुग्गलो। भावनस्स उप्पन्नबलं भावनाबलं, मज्झे दीघो। भावनाय वा उप्पन्नबलं भावनाबलं। समथो व समथनिमित्तं ति सम्बन्धो। तं आकारं ति सुट्ठु उपलक्खेतब्बाकारआरम्मणं[3]। समथस्स निमित्तं समथनिमित्तं। पच्छा पवत्तेतब्बस्स समाधिस्स निमित्तभूतो पुरिमसमाधीति अत्थो। सोरच्चमेवा ति पदं सम्पदा ति पदे सम्बन्धो।

---

१. निमित्तं आधारो–सी०। २. भावना–सी०। ३. काल आर०–सी०।

आकारेन पस्सती ति **विपस्सना**। समथो व तं आकारं गहेत्वा पुन पवत्तेतब्बस्स समथस्स निमित्तवसेन **समथनिमित्तं**। **पग्गाहनिमित्तं** पि एसेव नयो। सम्पयुत्तधम्मे पग्गण्हाती ति **पग्गाहो**। न विक्खिपती ति **अविक्खेपो**। सीलविनासिका असंवर-संखाता सीलस्स विपत्ति **सीलविपत्ति**। सम्मादिट्ठिविनासिका मिच्छादिट्ठिसंखाता दिट्ठिया विपत्ति **दिट्ठिविपत्ति**। सोरच्चमेव सीलस्स सम्पादनतो सीलस्स परिपूरणतो सीलस्स संपदा ति **सीलसम्पदा**। दिट्ठिपारिपूरिभूतं ञाणं दिट्ठिया संपदा **दिट्ठि-सम्पदा**। विसुद्धिभावं सम्पत्ता सीलसंखाता सीलस्स विसुद्धि, **सीलविसुद्धि**। निब्बान-संखातं विसुद्धिं पापेतुं समत्था, दस्सनसंखाता, दिट्ठिया विसुद्धी ति **दिट्ठिविसुद्धि**। **दिट्ठिविसुद्धि खो पन यथादिट्ठिस्स च पधानं** (मा १६०) ति कम्मस्सकतञाणादि-संखाता दिट्ठिविसुद्धि चेव यथा-दिट्ठिस्स च अनुरूपदिट्ठिस्स कल्याणदिट्ठिस्स तं-सम्प-युत्तमेव पधानं।

संवेगो (मा० १६१) ति जाति-आदीहि पटिच्च उप्पन्नभयसंखातं संवेजनं। **संवेजनियट्ठानं** ति संवेगजनकं जाति-आदिकारणं। **संविग्गस्स च योनिसो पधानं** ति एवं संविग्गजातस्स उपायप्पधानं। **असन्तुट्ठिता च कुसलेसु धम्मेसु** ति कुसलधम्मपूरणे असन्तुट्ठिभावो। **अप्पटिवानिता च पधानस्मिं** ति अरहत्तं अप्पत्वा पधानस्मिं अनिवत्त-

---

सम्पज्जनं सम्पदा। सीलस्सा ति पदं सम्पादनतो ति पदे कम्मं। सम्पादनतो ति पदं परिपूरणतो ति पदे ततियाविसेसनं। सीलपरिपूरणतो ति सीलस्स परिपूरणहेतुतो। सील···प०···तो ति पदं सम्पदा ति पदे ततियाविसेसनं। दिट्ठिपारिपूरिभूतं ति दिट्ठिया पारिपूरिहेतुभूतं। दिट्ठिविसुद्धि खो पना ति दिट्ठिया विसुद्धि दिट्ठिविसुद्धि। कम्मं सकं एतेसं सत्तानं ति कम्मस्सका। कम्मस्सकानं भावो कम्मस्सकता। कम्मस्सकता एव ञाणं कम्मस्सकतञाणं कम्मस्सकतञाणं आदि येसं तानि कम्म···प०···ञाणादीनि। अनुरूपदिट्ठिस्सा ति पदं यथादिट्ठिस्सा ति पदस्स अत्थविवरणं। कल्याणदिट्ठिस्सा ति पदं अनुरूपदिट्ठिस्सा ति अत्थ-विवरणं[1]। निब्बत्तेतब्बपधानस्स अनुरूपा दिट्ठि अस्स पुग्गलस्सा ति यथादिट्ठि। अनुरूप-वाचको यथासद्दो। अनुरूपा दिट्ठि अस्सा ति अनुरूपदिट्ठि। तंसम्पयुत्तमेवा ति दिट्ठि-सम्पयुत्तमेव। एव-सद्दो न दिट्ठिविप्पयुत्तं (७३–म०) वीरियं ति ञापेति। पधानं ति वीरियं।

संवेजनं जनेतीति संवेजनीयं। संविग्गस्स चा ति संविज्जतीति संविग्गो, पुग्गलो। संवेगजातस्सा ति संवेगो जातो अस्सा ति संवेगजातो। न निवत्ततीति अनिवत्तनो, पुग्गलो। अनिवत्तनस्स भावो अनिवत्तनता। अनोसक्कनता ति पदं अनिवत्तनता ति पदस्स अत्थविव-रणं। आरम्मणे विमुच्चति अधिमुच्चतीति विमुत्ति, अट्ठ समापत्तियो। किलेसेहि (८८–सी०) सब्बसङ्खारेहि च विमुच्चतीति विमुत्ति, निब्बानं। विमुत्ति च विमुत्ति च विमुत्ति, एकसेसो।

---

१. पदस्स अत्थ०–सी०।

नता च अनोसक्कनता । विजाननतो **विज्जा** । विमुच्चनतो **विमुत्ति** । **खये ञाणं** ति किलेसक्खयकरे अरियमग्गे ञाणं । **अनुप्पादे ञाणं** ति पटिसन्धिवसेन अनुप्पादभूते तं-तं-मग्गवज्झकिलेसानं अनुप्पादपरियोसाने उप्पन्ने अरियफले ञाणं ।

अयं मातिकाय अनुपुब्बपदवण्णना ।

■

पटि पुन संदहनं पटिसन्धि । पटिसन्धिया वसो पटिसन्धिवसो, तेन । किलेसानं तं-तं-मग्ग-वज्झानं उप्पन्नमग्गे खन्धसन्ताने पुन पवत्तनवसेना ति अत्थो । अनुप्पादो हुत्वा भूतं अनुप्पाद-भूतं । सो सो मग्गो तं-तं-मग्गो, तं-तं-मग्गेन वज्झा तं-तं-मग्गवज्झा । तं-तं-मग्गवज्झा एव किलेसा तं-तं·····प०·····किलेसा । अनुप्पज्जनं[1] अनुप्पादं करोतीति अनुप्पादो, मग्गो । अनुप्पादस्स परियोसानं अनुप्पादपरियोसानं । पटिसन्धिवसेना ति पदं अनुप्पादभूते ति एत्थ उप्पाद इति पदे ततियाविसेसनं । अनुप्पादभूते ति पदं अरियफले ति पदस्स विसेसनं ।

मातिकापदवण्णनाय अत्थयोजना निट्ठिता ।

■

---

१. ०अनुप्पादो–सी० ।

३

चित्तुप्पादकण्डं

पदभाजनियवण्णना

कुसला धम्मा

इदानि यथानिक्खित्ताय मातिकाय संगहिते धम्मे पभेदतो दस्सेतुं **कतमे धम्मा कुसला** ति (§१) इदं पदभाजनियं आरद्धं। तत्थ यदेतं **यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होती** ति (§१)

पठमं कामावचरं कुसलं

दस्सितं, तस्स ताव निद्देसे (i) धम्मववत्थानवारो (ii) संगहवारो (iii) सुञ्ञतवारो ति तयो महावारा होन्ति। तेसु

(i) धम्मववत्थानवारो

उद्देस-निद्देसवसेन द्विधा ठितो। तेसु

(a) उद्देसवारस्स

पुच्छा, समयनिद्देसो, धम्म-उद्देसो, अप्पना ति चत्तारो परिच्छेदा।

तेसु 'कतमे धम्मा कुसला' ति अयं पुच्छा नाम। 'यस्मिं समये कामावचरं····प०···'तस्मिं समये' ति अयं समयनिद्देसो नाम। 'फस्सो होति····प०····अविक्खेपो होती ति अयं धम्म-उद्देसो नाम। 'ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञे पि अत्थि पटिच्च-समुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा इमे धम्मा कुसला' (§१) ति अयं अप्पना नाम।

एवं चतूहि परिच्छेदेहि ठितस्स उद्देसवारस्स व्वायं पठमो पुच्छापरिच्छेदो, तत्थ 'कतमे धम्मा कुसला' ति अयं कथेतुकम्यता-पुच्छा। पञ्चविधा हि पुच्छा—

पदभाजनिये कामावचरकुसलकथावण्णना

तत्थ यदेतं ति तस्मिं पदभाजनीये यं एतं कामावचरकुसलं[1] भगवता दस्सितं। तस्सा ति कामावचरकुसलस्स। तेसू ति तीसु महावारेसु। तेसू ति उद्देसनिद्देसवारेसु।

तेसू ति चतूसु परिच्छेदेसु। कतमे····प····ला ति अयं परिच्छेदो पुच्छा नाम।

तत्था ति पुच्छापरिच्छेदे। कथेतुं कामेतीति कथेतुकामो। तस्स भावो कथेतुकम्यं। कथेतुकम्यं एव कथेतुकम्यता। कथेतुकम्यताय पवत्ता पुच्छा कथेतुकम्यता-पुच्छा। कथेतुकम्यता-

---

१. कामावचरं कुसलं–सी०।

अदिट्ठजोतनापुच्छा, दिट्ठसंसन्दनापुच्छा, विमतिच्छेदनापुच्छा, अनुमतिपुच्छा, कथेतुकम्यता-पुच्छा ति। तासं इदं नानत्तं—

कतमा अदिट्ठजोतना-पुच्छा ? पकतिया लक्खणं अञ्ञातं होति, अदिट्ठं अतुलितं अतीरितं अविभूतं अविभावितं। तस्स ञाणाय दस्सनाय तुलनाय तीरणाय विभूताय विभावनत्थाय पञ्हं पुच्छति। अयं अदिट्ठजोतना पुच्छा।

कतमा दिट्ठसंसन्दना-पुच्छा ? पकतिया लक्खणं ञातं होति, दिट्ठं तुलितं तीरितं विभूतं विभावितं, सो अञ्ञेहि पण्डितेहि सद्धिं संसन्दनत्थाय पञ्हं पुच्छति। अयं दिट्ठसंसन्दना-पुच्छा।

कतमा विमतिच्छेदना पुच्छा ? पकतिया संसयपक्खन्तो होति, विमतिपक्खन्तो द्वेळ्हकजातो—'एवं नु खो, ननु खो, किं नु खो, कथं नु खो' ति। सो विमतिच्छेदनत्थाय पञ्हं पुच्छति। अयं विमतिच्छेदना पुच्छा।

कतमा अनुमति-पुच्छा ? **भगवा** भिक्खूनं अनुमतिया पञ्हं पुच्छति—"तं किं मञ्ञथ भिक्खवे, रूपं निच्चं वा अनिच्चं वा' ति ? 'अनिच्चं भन्ते'। 'यं पनानिच्चं दुक्खं वा तं सुखं वा' ति ? 'दुक्खं भन्ते'। 'यं पनानिच्चं दुक्खं विपरिणामधम्मं, कल्लं नु तं समनुपस्सितुं एतं मम, एसोहमस्मि, एसो मे अत्ता' ति ? 'नो हेतं भन्ते" (म० १. १८३) ति। अयं अनुमतिपुच्छा।

कतमा कथेतुकम्यता-पुच्छा ? **भगवा** भिक्खूनं कथेतुकम्यताय पञ्हं पुच्छति। "चत्तारो' मे भिक्खवे, सतिपट्ठाना। कतमे चत्तारो ?" (तु०दी० २, २१७) ति। अयं कथेतुकम्यता-पुच्छा।

तत्थ बुद्धानं पुरिमा तिस्सो पुच्छा नत्थि। कस्मा ? बुद्धानं हि तीसु अद्धासु किञ्चि संखतं, अद्धाविमुत्तं वा असंखतं, अदिट्ठं अजोतितं अतुलितं अतीरितं अविभूतं अविभावितं नाम नत्थि। तेन तेसं अदिट्ठजोतना पुच्छा नत्थि। यं पन **भगवता** अत्तनो ञाणेन पटिविद्धं, तस्स अञ्ञेन समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा **मारेन** वा

वसेन पवत्ता पुच्छा ति अत्थो। अयं पुच्छा ति एत्तकमेव अवत्वा कस्मा कथेतुकम्यता ति वुत्तं ति आह पञ्चविधा ति आदि।

द्विधा इलति चित्तं एतेना ति द्वेळ्हको। 'इल'-कम्पने[1]। हपच्चयो, सकत्थे को च। द्वेळ्हको जातो यस्स सो द्वेळ्हकजातो।

यं पनानिच्चं दुक्खं वा सुखं वा ति यं पन रूपं अनिच्चं तं रूपं सुखं वा दुक्खं वा इति भगवा पुच्छति। तं रूपं समनुपस्सितुं कल्लं नु युत्तं नु। नो (७४–म०) हेतं ति एतं ममा ति आदिकं एतं समनुपस्सनं नो हि नो हेव अत्थि।

तत्था ति तासु पुच्छासु। यं पना ति धम्मजातं। तेनस्सा ति तेन तस्मा अस्स भगवतो। यस्मा पनेसा ति यस्मा पन एसो भगवा। नत्थि कथं कथा अस्सा ति (८९–सी०)

१. 'इल'-हति-कम्पनेसु–सी०।

ब्रह्मना वा सद्धिं संसन्दनकिच्चं नत्थि । तेन'स्स दिट्ठसंसन्दना पुच्छा नत्थि । यस्मा पनेस अकथंकथी तिण्णविचिकिच्छो सब्बधम्मेसु विगतसंसयो, तेन'स्स विमतिच्छेदना पुच्छा नत्थि । इतरा द्वे पन पुच्छा भगवतो अत्थि । तासु अयं कथेतुकम्यतापुच्छा ति वेदितब्बा ।

तत्थ 'कतमे' ति पदेन निद्दिसितब्बधम्मे पुच्छति । 'धम्मा कुसला' ति वचनमत्तेन 'किं कता किं वा करोन्ती' ति न सक्का ञातुं । 'कतमे' ति वुत्ते पन तेसं पुट्ठभावो पञ्ञायति । तेन वुत्तं 'कतमे ति पदेन निद्दिसितब्बधम्मे पुच्छती' ति । 'धम्मा कुसला' ति पदद्वयेन पुच्छाय पुट्ठधम्मे दस्सेति । तेसं अत्थो हेट्ठा पकासितो एव ।

कस्मा पनेत्थ मातिकायं विय 'कुसला धम्मा' ति अवत्वा 'धम्मा कुसला' ति पदानुक्कमो कतो ति ? पभेदतो धम्मानं देसनं दीपेत्वा पभेदवन्तदस्सनत्थं । इमस्मिं हि अभिधम्मे धम्मा व देसेतब्बा । ते च कुसलादीहि पभेदेहि अनेकप्पभेदा । तस्मा धम्मा एव इध देसेतब्बा । नायं वोहारदेसना । ते च अनेकप्पभेदतो देसेतब्बा, न धम्ममत्ततो । पभेदतो हि देसना घनविनिब्भोगपटिसम्भिदा-ञाणावहा होती ति 'कुसला धम्मा' ति एवं पभेदतो धम्मानं देसनं दीपेत्वा, इदानि ये तेन पभेदेन देसेतब्बा धम्मा ते दस्सेतुं, अयं 'कतमे धम्मा कुसला' ति पदानुक्कमो कतो ति वेदितब्बो । पभेदवन्तेसु हि दस्सितेसु पभेदो दस्सियमानो युज्जति सुविञ्ञेय्यो च होती ति ।

अकथंकथी । तिण्णा विचिकिच्छा येन सो तिण्णविचिकिच्छो । विहतो संसयो येन सो विहतसंसयो ।

तत्था ति पदेसु । तेसं ति निद्दिसितब्ब-धम्मानं । तेसं ति धम्मा कुसला ति पदानं ।

एत्था ति निद्देसवारे, कतो ति पदे आधारो, पभेदवन्तदस्सनत्थं । परोपण्णास[1] धम्मा कुसला ति पभेदवन्तदस्सनत्थं धम्मा कुसला ति पदानुक्कमो कतो ति सम्बन्धो । हि सच्चं, इमस्मिं अभिधम्मे धम्मा व भगवता देसितब्बा । एव-सद्दो पञ्ञत्ति देसेतब्बा ति ञापेति । ते च धम्मा....प....पभेदेहि अनेकप्पभेदा देसेतब्बा । तस्मा धम्मानमेव देसेतब्बत्ता च पभेदवन्तानं देसेतब्बत्ता च धम्मा एव इध अभिधम्मे भगवता देसेतब्बा । अयं देसना न वोहारदेसना । ते च धम्मा....प....देसेतब्बा धम्ममत्ततो न देसेतब्बा ति योजना । मत्तसद्दो अपभेदं निवत्तेति । पभेदतो देसना किं आवहतीति आदि पभेदतो होति आदि । हि सच्चं । पभेदतो ति[1] पदं देसना ति पदे ततियाविसेसनं । देसना ति पदं होती ति पदे पकतिकत्ता ।

विनिभुञ्जनं[2] विनिब्भोगस्स करणं विनिब्भोगो, ञाणं । धम्मानं घनस्स एकत्तस्स विनिब्भोगो घनविनिब्भोगो । पटिसम्भिदा एव ञाणं पटिसम्भिदाञाणं । घनविनिब्भोगं च पटिसम्भिदाञाणं च घनविनिब्भोगपटिसम्भिदाञाणं । तं आवहति जनेतीति घन....प....वहा । दीपेत्वा ति पदं दस्सेतुं ति पदे पुब्बकालक्रिया । देसेतब्बा ये धम्मा ते धम्मे ।

१-१. धम्मा कुसला ति–म० । २. ०विनिब्भोगो–सी० ।

इदानि **यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं** (§१) ति। एत्थ

समये निद्दिसि चित्तं चित्तेन समयं **मुनि**।
नियमेत्वान दीपेतुं धम्मे तत्थ पभेदतो॥

'यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं' ति हि निद्दिसन्तो **भगवा** समये चित्तं निद्दिसि। किं-कारणा? तेन समयनियमितेन चित्तेन परियोसाने 'तस्मिं समये' ति एवं समयं नियमेत्वान, अथ विज्जमाने पि समयनानत्ते यस्मिं समये चित्तं होति तस्मिं येव समये फस्सो होति, वेदना होती ति एवं तस्मिं चित्तनियमिते समये एते सन्तति-समूह-किच्चारम्मण-घनवसेन दुरनुबोधप्पभेदे फस्सवेदनादयो धम्मे बोधेतुं ति अत्थो।

इदानि 'यस्मिं समये' ति आदीसु अयं अनुपुब्बपदवण्णना। **यस्मिं** ति अनियमतो भुम्मनिद्देसो। **समये** ति अनियमनिद्दिट्ठपरिदीपनं। एत्तावता अनियमतो समयो निद्दिट्ठो होति। तत्थ समयसद्दो

समवाये खणे काले समूहे हेतुदिट्ठिसु।
पटिलाभे पहाने च पटिवेधे च दिस्सति॥

तथा हि'स्स "अप्पेव नाम स्वे पि उपसंकमेय्याम कालं च समयं च उपादाया" (दी० १.१६९) ति एवमादीसु समवायो अत्थो। "एको च भिक्खवे, खणो च समयो च ब्रह्मचरियवासाया" (अं० ३.३२९) ति आदीसु खणो। "उण्हसमयो परिळाहसमयो" (पाचि० १६०) ति आदीसु कालो। "महासमयो पवनस्मिं" (दी० २.१८९)

इदानि यस्मिं····प····चित्तं ति एत्थ वचने विनिच्छयो वेदितब्बो ति योजना। मुनि चित्तेन समयं नियमेत्वान[1] तत्थ[2] तस्मिं[3] समये पभेदतो धम्मे व वेनेय्यं दीपेतुं बोधेतुं समये चित्तं निद्दिसीति योजना। यस्मिं ति आदिम्हि[4] वित्थारो। समयनियमितेन समयेन नियमितेन चित्तेन, नियमेत्वाना ति पदे करणं। नियमेत्वाना ति पदं बोधेतुं ति पदे पुब्बकालक्रिया। अथा ति पदं बोधेतुं ति पदे कालसत्तमी। विज्जमाने ति पदं बोधेतुं ति पदे लक्खणक्रिया। यस्मिं समये चित्तं होति। एते धम्मे। सन्तति च समूहो च किच्चञ्च आरम्मणञ्च सन्तति-समूह-किच्चारम्मणानि। सन्ततिसमूहकिच्चारम्मणानं (९०-सी०) घनं सन्तति····प····घनं। तस्स वसो सन्तति····प····वसो। दुक्खेन अनुबुज्झियतीति दुरनुबोधो। दुरनुबोधो पभेदो येसं ते दुरनुबोधप्पभेदा।

भवति एत्था ति भुम्मं। भुम्मस्स निद्देसो भुम्मनिद्देसो। अनियमतो निद्दिट्ठो अनियमनिद्दिट्ठो। अनियमनिद्दिट्ठस्स परिदीपनं अनियम····प····नं। तत्था ति यस्मिं समये ति वचने। समयसद्दो ति पदं दिस्सती ति पदे कत्ता। समवाये ति पच्चयसामग्गियं। खणे ति ओकासे। अस्सा ति अस्स समयसद्दस्स। समवायो अत्थो ति सम्बन्धो। उपादाया ति

१. नियमेत्वा-सी०। २. यत्थ-सी०। ३. यस्मिं-सी०। ४. आदि-सी०।

ति आदीसु समूहो। "समयो पि खो ते भद्दालि, अप्पटिविद्धो अहोसि—भगवा पि खो सावत्थियं विहरति, भगवा पि मं जानिस्सति 'भद्दालि नाम भिक्खु सत्थु सासने सिक्खाय अपरिपूरकारी' ति। अयं पि खो ते भद्दालि, समयो अप्पटिविद्धो अहोसी" (म० २. १२१) ति आदीसु हेतु। "तेन खो पन समयेन उग्गाहमानो परिब्बाजको समणमुण्डिकापुत्तो समयप्पवादके तिन्दुकाचीरे एकसालके मल्लिकाय आरामे पटिवसती" (म० २.२४७) ति आदीसु दिट्ठि।

"दिट्ठे व धम्मे यो अत्थो यो च' त्थो सम्परायिको।
अत्थाभिसमया धीरो पण्डितो ति पवुच्चती" (सं० १.८६) ति॥

आदीसु पटिलाभो। "सम्मा मानाभिसमया अन्तमकासि दुक्खस्सा" (अं० ३.१ ७) ति आदीसु पहानं। "दुक्खस्स पीळनट्ठो संखतट्ठो संतापट्ठो विपरिणामट्ठो अभिसमयट्ठो" (पटि० ३५५) ति आदीसु पटिवेधो।

पञ्ञाय गहेत्वा उपधारेत्वा। ते ति[1] तया अप्पटिविद्धो ति पदे कत्ता। भद्दालीति तस्स भिक्खुनो नामं। को सो हेतू ति (७५–म०) आह—भगवा पि खो ति आदि। उग्गाहनामो ति तस्स परिब्बाजकस्स पकतिनामं। यं किञ्चि पन उग्गाहेतुं समत्थताय उग्गाहमानो ति[2] वुच्चति। समणमुण्डिकाय पुत्तो समणमुण्डिकापुत्तो। समयं दिट्ठिं पवदन्ति एत्था ति समयप्पवादको। तिन्दुकानं चीरेन पन्तिया परिक्खित्तो[3] तिन्दुकाचीरो। अथवा तिन्दुकानं[4] चीरं[4] पन्ति यस्मिं सो तिन्दुकाचीरो। एका साला कता एत्था ति एकसालको। मल्लिकाया ति पसेनदिकोसलरञ्ञो देविया। दिट्ठे धम्मे ति पच्चक्खे अत्तभावे। अत्थो वड्ढि। कम्मकिलेसवसेन सम्परेतब्बो पापुणितब्बो ति सम्परायो। सम्परपुब्ब 'इ'-गतियं। सम्पराये नियुत्तो सम्परायिको। धिया पञ्ञाय राति गण्हातीति धीरो। अथवा धी पञ्ञा एतस्स अत्थीति धीरो। सम्मा मानभिसमया ति मानस्स सम्मा पहानेन। दुक्खस्स पीळनट्ठो ति दुक्खसच्चस्स पीळनं दुक्खसच्चपीळनं दुक्खसच्चसमङ्गिनो हिंसनं। पीळनं एव अत्थो पीळनट्ठो, त्थकारस्स ट्ठकारो। समेच्च पच्चयेहि कतं सङ्खतं। संपुब्ब'कर'-करणे। सङ्खतं एव अत्थो सङ्खतट्ठो। सन्तापनं परिदहनं सन्तापो। जरामरणेहि विपरिणमनं विपरिणामो। अभिसमेतब्बो पटिविज्झतब्बो ति अभिसमयो। अभिसमयो एव अत्थो अभिसमयट्ठो। पीळनादीनि, तानि हि अभिसमेतब्बभावेन एकीभावं उपनेत्वा अभिसमयट्ठो ति वुत्तानि। अभिसमयस्स (९१–सी०) वा पटिवेधस्स विसयभूतो अत्थो अभिसमयट्ठो। पीळनादीनि अभिसमयस्स विसयभावूपगमनसामञ्ञतो एकत्थेन अभिसमयट्ठो ति वुत्तानि।

---

१. तेति पदं–सी०। २. तं सञ्जानन्ति, तस्मा उग्गाहमानो ति–सी० पोत्थके अधिको पाठो। ३. परिक्खित्तो ति–सी०।
४-४. तिन्दुकाचीरा पन्ति–म०।

एवमनेकेसु समयेसु

समवायो खणो कालो समूहो हेतु येव च।
एते पञ्च पि विञ्ञेय्या समया इध विञ्ञुना ॥

'यस्मिं समये कामावचरं कुसलं' ति इमस्मिं हि कुसलाधिकारे तेसु नवसु समयेसु एते समवायादयो पञ्च समया पण्डितेन वेदितब्बा।

तेसु पच्चयसामग्गी समवायो, खणो पन।
एको च नवमो ञेय्यो चक्कानि चतुरो पि वा ॥

या हि एसा साधारणफलनिप्फादकत्तेन सण्ठितानं पच्चयानं सामग्गी, सा इध समवायो ति जानितब्बा। "एको च खो भिक्खवे, खणो च समयो च ब्रह्मचरियवासाया" (अं० ३.३२९) ति एवं वुत्तो पन नवमो व एको खणो ति वेदितब्बो। यानि वा पनेतानि "चत्तारि' मानि भिक्खवे, चक्कानि येहि समन्नागतानं देवमनुस्सानं चतुचक्कं पवत्तती" (अं० २.३५) ति—एत्थ 'पटिरूपदेसवासो, सप्पुरिसूपनिस्सयो, अत्तसम्मापणिधि, पुब्बे च कतपुञ्ञता' ति चत्तारि चक्कानि वुत्तानि, तानि वा एकज्झं कत्वा ओकासट्ठेन खणो ति वेदितब्बानि। तानि हि कुसलुप्पत्तिया ओकासभूतानि।

एवं समवायं च खणं च ञत्वा इतरेसु

तं तं उपादाय पञ्ञत्तो कालो वोहारमत्तको।
पुञ्जो फस्सादिधम्मानं समूहो ति विभावितो ॥

'चित्तकालो रूपकालो' ति आदिना नयेन धम्मे वा, 'अतीतो अनागतो' ति

समयेसू ति निद्धारणं। एवं समयसद्दस्स अत्थुद्धारं वत्वा इदानि इधाधिप्पेतब्बं ञापेन्तो आह समवायो ति आदि। समवायो⋯प⋯हेतु येव चा ति पञ्च पि एते समया इध कुसलाधिकारे विञ्ञुना विञ्ञेय्या। यस्मिं ति आदि वित्थारो।

समवायादीनं पञ्चन्नं सरूपं ञापेन्तो आह—तेसु पच्चयसामग्गीति आदि[1]। तेसु समवायादीसु पच्चयसामग्गी समवायो ति ञेय्यो। खणो पन नवमो एको व पण्डितेन ञेय्यो। वा अपरो नयो—चतुरो पि सम्पत्तिसङ्खातानि चक्कानि खणो ति वेदितब्बानि। या हीति आदि वित्थारो, हि सच्चं, एसा[2] सामग्गी। यानि वा पन एतानि चक्कानि वुत्तानीति सम्बन्धो। येहीति येहि चक्केहि। एत्था[3] ति पदं वुत्तानीति पदे आधारो। पटिरूपदेसवासो ति पटिरूपदेसे वसनं। सप्पुरिसूपनिस्सयो ति सप्पुरिसानं उपनिस्सयो सेवनं। अत्तसम्मापणिधि चा ति चित्तस्स सम्मा पणिधि पदहनं[3]। तानि वा ति चक्कानि। वासद्देन न केवलं नवमो खणो एको खणो ति वेदितब्बो, अथ खो चत्तारि चक्कानि एको खणो ति वेदितब्बानीति (७६-म०) दस्सेति।

ञत्वा ति पदं विभावितो ति पदे पुब्बकालक्रिया। इतरेसू ति कालादीसु। तं तं धम्मादिकं उपादाय पञ्ञत्तो कालो नामकालो वोहारमत्तको ति वेदितब्बो। फस्सादिधम्मानं

---

१. ०आदिं–सी०। २. या एसा–सी०। ३-३. नत्थि–म०।

आदिना नयेन धम्मवुत्तिं वा, 'बीजकालो अंकुरकालो' ति आदिना नयेन धम्मपटिपाटिं वा, 'उप्पादकालो जराकालो' ति आदिना नयेन धम्मलक्खणं वा, 'वेदियनकालो संजाननकालो' ति आदिना नयेन धम्मकिच्चं वा, 'नहानकालो पानकालो' ति आदिना नयेन सत्तकिच्चं वा, 'गमनकालो ठानकालो' ति आदिना नयेन इरियापथं वा, 'पुब्बण्ह-सायण्ह-दिवा-रत्ती' ति आदिना नयेन चन्दिमसुरियादिपरिवत्तनं वा, 'अड्ढमासो मासो' ति आदिना नयेन अहोरत्तादिसंखातं कालसंचयं वा ति—एवं तं तं उपादाय पञ्ञत्तो कालो नाम। सो पनेस सभावतो अविज्जमानत्ता पञ्ञत्तिमत्तको एवा ति वेदितब्बो।

यो पनेस फस्सवेदनादीनं धम्मानं पुञ्जो सो इध समूहो ति विभावितो।

एवं काल-समूहे पि ञत्वा इतरो पन
हेतू ति पच्चयो चेत्थ तस्स द्वारवसेन वा।
अनेकभावो पि विञ्ञेय्यो पच्चयानं वसेन वा॥

एत्थ पच्चयो व हेतु नाम, तस्स द्वारानं वा पच्चयानं वा वसेन अनेकभावो वेदितब्बो। कथं? चक्खुद्वारादीसु हि उप्पज्जमानानं चक्खुविञ्ञाणादीनं चक्खु-रूप-आलोक-मनसिकारादयो पच्चया, महापकरणे च "हेतुपच्चयो आरम्मणच्चयो" ति (पट्ठा० १:३) आदिना नयेन चतुवीसति पच्चया वुत्ता। तेसु ठपेत्वा विपाकपच्चयं च पच्छाजातपच्चयं च, सेसा कुसलधम्मानं पच्चया होन्ति येव। ते सब्बे पि इध हेतू ति अधिप्पेता। एवमस्स इमिना द्वारवसेन वा पच्चयवसेन वा अनेकभावो वेदितब्बो।

एवमेते समवायादयो पञ्च अत्था इध समयसद्देन परिग्गहिता ति वेदितब्बा।

पुञ्जो समूहो ति पण्डितेन विभावितो। चित्तकालो ति आदि वित्थारतो धम्मे वा उपादाय पञ्ञतो कालो नामा ति योजना। धम्मवुत्ति वा ति आदीसु पि एसेव नयो। चन्दिम....प....नं वा ति चन्दिमसूरियादीनं परिवत्तनं। कालसञ्चयं ति कालानं समूहं। सो[1] पनेसो ति कालो। यो पनेसो ति पुञ्जो, सो पुञ्जो इध कुसलाधिकारे समूहो ति पण्डितेन विभावतो।

इतरो पन हेतु इति एसो समयो एत्थ अधिकारे पच्चयो व पण्डितेन विञ्ञेय्यो। तस्स हेतुनो द्वारवसेन वा पच्चयानं वसेन वा अनेकभावो विञ्ञेय्यो।

इतरो ति पदं हेतू ति पदस्स विसेसनं। इति-सद्दो नाम (९२-सी०)-वाचको। एत्थ हीति आदि वित्थारो। तेसू ति चतुवीसतिपच्चयेसु निद्धारणं। विपाको विपाकक्खन्धानं रूपानञ्च पच्चयो पच्छाजातपच्चयो रूपानञ्चेव पच्चयो, तस्मा ठपेत्वा[2]....प....पच्चयं ति वुत्तं। अस्सा ति हेतुनो।

---

१. यो–म०। २. थपेत्वा–म०।

'कस्मा पनेतेसु यं किञ्चि एकं अपरिग्गहेत्वा सब्बेसं परिग्गहो कतो ति' ? 'तेन तेन तस्स तस्स अत्थविसेसस्स दीपनतो । एतेसु हि समवायसंखातो समयो अनेकहेतुतो वुत्ति दीपेति । तेन एककारणवादो पटिसेधितो होति । समवायो च नाम साधारणफलनिप्फादने अञ्ञमञ्ञापेक्खो होति । तस्मा 'एको कत्ता नाम नत्थी' ति इमं पि अत्थं दीपेति । सभावेन हि कारणे सति कारणन्तरापेक्खा अयुत्ता' ति । एवं एकस्स कस्सचि कारणस्स अभावदीपनेन "सयं कतं सुखदुक्खं" (सं० २:२१) ति आदि पटिसेधितं होति ।

तत्थ सिया—'यं वुत्तं अनेकहेतुतो वुत्ति दीपेती ति तं न युत्तं' । 'किं-कारणा ?' 'असामग्गियं अहेतूनं सामग्गियं पि अहेतुभावापत्तितो' । 'न हि एकस्मिं अन्धे दट्ठुं असक्कोन्ते अन्धसतं पस्सती' ति । 'नो न युत्तं; साधारणफलनिप्फादकत्तेन हि ठितभावो सामग्गी; न अनेकेसं समोधानमत्तं । न च अन्धानं दस्सनं नाम साधारणफलं' । 'कस्मा ?' 'अन्धसते सति पि तस्स अभावतो । चक्खादीनं पन तं साधारणफलं, तेसं भावे भावतो । असामग्गियं अहेतूनं पि च सामग्गियं हेतुभावो सिद्धो । स्वायं असा-

एतेसु पञ्चसु अत्थेसु यं किञ्चि एकं अत्थं अपरिग्गहेत्वा सब्बेसं अत्थानं[1] परिग्गहो कस्मा कतो अट्ठकथाचरियेहि इति पुच्छा[2] सिया । तेन तेन अत्थेन दीपनतो सब्बेसं परिग्गहो कतो ति सम्बन्धो । एतेसु हीति आदि वित्थारो । हि सच्चं, एतेसु समयेसु । वुत्ति ति धम्मानं वुत्ति । तेना ति[3] अनेकहेतुतो वुत्तिदीपनेन एककारणवादो[4] पटिसेधितो ति[5] ञापेन्तो आह—तेना ति आदि । तेन[6] अनेकहेतुतो[6] वुत्तिदीपनेन एककारणवादो एककारणं इति वादो । एको कत्ता नत्थीति अयम्पि अत्थो समवायेन दीपितो ति ञापेन्तो आह—समवायो ति आदि । साधारणफलनिप्फादने[7] ति साधारणस्स फलस्स निप्फादने । अञ्ञमञ्ञस्स अपेक्खनं यस्स सो अञ्ञमञ्ञापेक्खो । इमं पी ति पि-सद्दो अनेकहेतुवुत्तिं अपेक्खति । एको कत्ता नत्थी ति इमस्स अत्थस्स दीपनेन हेतुं ञापेन्तो आह—सभावेना ति आदि[7] ।

अनेक....प....दीपेतीति यं वचनं आचरियेहि वुत्तं, तं[8] वचनं न युत्तं[8], किं कारणा ? हेतूनं चक्खुरूपालोकमनसिकारानं असामग्गियं सति अहेतुभावापत्तितो, अहेतूनं सामग्गियं पि सति अहेतुभावापत्तितो[9] हेतुभावस्स अनापत्तितो न युत्तं । हि सच्चं । अन्धसते एकस्मिं एकेकस्मिं अन्धे दट्ठुं असक्कोन्ते अन्धसतं न पस्सति इति चोदना तत्थ समवायगहणे सिया ति योजना । पिसद्दो असामग्गिं अपेक्खति ।

हेतुभावस्स आपत्ति हेतुभावापत्ति । न हेतुभावापत्ति अहेतुभावापत्ति । अन्धसते ति पदं निद्धारणं । न अनेकेसं (७७–म०) ति सद्दगन्धरसादीनं अनेकेसं धम्मानं सामग्गी न होति । तस्सा ति दस्सनस्स । तेसं ति चक्खादीनं भावे विज्जमाने तस्स दस्सनस्स भावतो । असामग्गियं ति पदं अहेतूनं ति पदे आधारो । अहेतूनम्पीति पदं हेतुभावो ति पदे सामि । पिसद्दो अरुचिसूचनत्थो[10] । च-सद्दो वाक्यारम्भो । सामग्गियं ति पदं हेतुभावो ति पदे (९३–सी०)

१. अत्तानं–सी० । २. पुच्छा चे–सी० । ३. नत्थि–सी० । ४. एककारणतो वुत्तीति वादो–सी० । ५. पटिसेधो ति–म० । ६-६. तेना ति अनेकहेतुतोति–सी० । ७-७. नत्थि–म० । ८-८. नत्थि–म० । ९. अहेतुक०–सी० । १०. अरुचिं सूचनत्थो–सी० ।

मग्गियं फलाभावेन, सामग्गियं च'स्स भावेन, वेदितब्बो। चक्खादीनं हि वेकल्ले चक्खुविञ्ञाणादीनं अभावो, अवेकल्ले च भावो, पच्चक्खसिद्धो लोकस्सा' ति। अयं ताव समवायसंखातेन समयेन अत्थो दीपितो।

यो पनेस अट्ठहि अक्खणेहि परिवज्जितो नवमो खणो, पटिरूपदेसवासादिको च चतुचक्कसंखातो ओकासट्ठेन खणो वुत्तो, सो मनुस्सत्त-बुद्धुप्पाद-सद्धम्मट्ठिति-आदीनं खणसामग्गिं विना नत्थि। मनुस्सत्तादीनं च काणकच्छपोपमादीहि दुल्लभभावो। इति खणस्स दुल्लभत्ता सुट्ठुतरं खणायत्तं लोकुत्तरधम्मानं उपकारभूतं कुसलं दुल्लभमेव। एवमेतेसु खणसंखातो समयो कुसलुप्पत्तिया दुल्लभभावं दीपेति। एवं दीपेन्तेन अनेन अधिगतखणानं खणायत्तस्सेव तस्स कुसलस्स अननुट्ठानेन मोघक्खणं कुरुमानानं पमादविहारो पटिसेधितो होति। अयं खणसंखातेन समयेन अत्थो दीपितो।

यो पनेतस्स कुसलस्स चित्तस्स पवत्तिकालो नाम होति, सो अतिपरित्तो। सा च'स्स अतिपरित्तता "यथा च भिक्खवे, तस्स पुरिसस्स जवो, यथा च चन्दिमसुरियानं जवो, यथा च या देवता चन्दिमसुरियानं पुरतो धावन्ति तासं देवतानं जवो, ततो सीघतरं आयुसंखारा खीयन्ती" (सं० २.२२१) ति—इमस्स सुत्तस्स अट्ठकथावसेन वेदितब्बा। तत्थ हि सो रूपजीवितिन्द्रियस्स ताव परित्तको कालो वुत्तो। याव पच्चुप्पन्नं रूपं तिट्ठति ताव सोळसचित्तानि उप्पज्जित्वा भिज्जन्ति। इति तेसं कालपरित्ताय उपमा पि नत्थि। तेनेवाह—"यावञ्चिदं भिक्खवे, उपमा पि न सुकरा याव लहुपरिवत्तं चित्तं" (अं० १.१०) ति। एवमेतेसु कालसंखातो समयो कुसलचित्तप्पवत्तिकालस्स अतिपरित्ततं दीपेति। एवं दीपेन्तेन चानेन अतिपरित्तकालताय, विज्जुनोभासेन मुत्तावुणनं विय, दुप्पटिविद्धमिदं चित्तं, तस्मा एतस्स पटिवेधे महा-उस्साहो च आदरो च कत्तब्बो ति ओवादो दिन्नो होति। अयं कालसंखातेन समयेन अत्थो दीपितो।

आधारो। स्वायं हेतुभावो वेदितब्बो ति सम्बन्धो। चसद्दो फलभावेन चा ति योजेतब्बो। अस्सा ति फलस्स। चक्खादीनं अवेकल्ले च परिपुण्णभावे सति चक्खुविञ्ञाणादीनं भावो लोकस्स सत्तस्स पच्चक्खतो सिद्धो। समयेन कत्तुभूतेन अयं अत्थो दीपितो, समयेन करणभूतेन वा इति अयं अत्थो भगवता दीपितो।

पटि....प....दिको[1] चा ति चसद्दो नवमो खणो चा ति योजेतब्बो। अनेना ति समयेन, पटिसेधितो ति पदे कत्ता, करणं वा। पुग्गलेन अधिगतो[2] खणो ति[3] अधिगतखणेन आयत्तं अधि....प....त्तं। अननुट्ठानेना ति न अनुट्ठानेन अप्पवत्तनेन।

सा चस्सा ति अस्स कुसलचित्तप्पवत्तिकालस्स सा[4] च अतिपरित्तता वेदितब्बा ति पदे कम्मं। तत्र होति हि सच्चं, तत्र सुत्ते। इति तेसं ति एवं तेसं चित्तानं। इदं अयं उपमा पि याव च न सुकरा अतिविय न सुकरा याव एकन्तेन लहुपरिवत्तं चित्तं। दीपेन्तेन च अनेन समयेन दिन्नो होति ति सम्बन्धो।

---

१. दीपितो–म०। २. आगतो–म०। ३. ०अधिगतखणो–सी०। ४. सो–सी०।

समूहसंखातो पन समयो अनेकेसं पि सहुप्पत्तिं दीपेति। फस्सादीनं हि धम्मानं पुञ्जो समूहो ति वुत्तो। तस्मिं च उप्पज्जमानं चित्तं सह तेहि धम्मेहि उप्पज्जती ति अनेकेसं सहुप्पत्ति दीपिता। एवं दीपेन्तेन चानेन एकस्सेव धम्मस्स उप्पत्ति पटिसेधिता होति। अयं समूहसंखातेन समयेन अत्थो दीपितो।

हेतुसंखातो पन समयो परायत्तवुत्तितं दीपेति। 'यस्मिं समये' ति हि पदस्स यस्मा 'यम्हि हेतुम्हि सति' उप्पन्नं होति ति अयमत्थो, तस्मा 'हेतुम्हि सति' पवत्तितो परायत्तवुत्तिता दीपिता। एवं दीपेन्तेन चानेन धम्मानं स-वसवत्तिताभिमानो पटिसेधितो होति। अयं हेतुसंखातेन समयेन अत्थो दीपितो होति।

तत्थ 'यस्मिं समये' ति कालसंखातस्स समयस्स वसेन 'यस्मिं काले' ति अत्थो; समूहसंखातस्स 'यस्मिं समूहे' ति। खण-समवाय-हेतुसंखातानं 'यस्मिं खणे सति, याय सामग्गिया सति, यम्हि हेतुम्हि सति' कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति, तस्मिं येव सति 'फस्सादयो' पी ति अयमत्थो वेदितब्बो। अधिकरणं हि कालसंखातो समूहसंखातो च समयो। तत्थ वुत्तधम्मानं ति अधिकरणवसेनेत्थ भुम्मं। खण-समवाय-हेतुसंखातस्स च समयस्स भावेन तेसं भावो लक्खियती ति भावेन भावलक्खणवसेनेत्थ भुम्मं।

कामावचरं ति "कतमे धम्मा कामावचरा? हेट्ठतो अवीचिनिरयं परियन्तं कत्वा उपरितो परनिम्मितवस्सवत्तिदेवे अन्तो करित्वा" ति (§१२८०) आदिना नयेन वुत्तेसु कामावचरधम्मेसु परियापन्नं।

तत्रायं वचनत्थो—उद्दानतो द्वे कामा, वत्थुकामो च किलेसकामो च। तत्थ किलेसकामो अत्थतो छन्दरागो व; वत्थुकामो तेभूमकवट्टं। किलेसकामो चेत्थ कामेती

तस्मिं ति समूहे। एकस्से व[1] चा ति एत्थ एव चा ति निपातसमुदायो। एकस्सेवा ति पि अत्थि।

अत्तनो वसे वत्तन्तीति सवसवत्तिनो। सवसवत्तीनं भावो सवसवत्तिता सवसवत्तिताय अभिमानं मञ्ञनं यस्स पुग्गलस्स सो सवसवत्तिताभिमानो।

तत्था ति यस्मिं समये ति आदिपदेसु, निद्धारणं। यस्मिं समये ति पदस्स····प····वसेन अत्थो वेदितब्बो। समूहसङ्खातस्स[2] वसेन यस्मिं समूहे ति अत्थो ति[3] सम्बन्धो। खण····प····तानं समयानं वसेन अयं अत्थो वेदितब्बो ति सम्बन्धो। अधिकरणं हीति हि सच्चं, काल····प····समयो। तत्थ पाळियं वुत्तधम्मानं अधिकरणं आधारो इति एवं अधिकरणवसेन एत्थ कालसमूहसङ्खाते समये अत्थे[4] गहिते एतं[5] भुम्मं होतीति सम्बन्धो। वसेना ति पदं होतीति पदे ततियाविसेसनं। गहिते ति पदं लक्खणक्रिया। तेसं ति धम्मानं। एत्था ति खणसमवाय-हेतुसङ्खाते समये गहिते।

तत्रा ति कामावचरं ति पदे। कामियतीति कामो। (७८-म०) वत्थु एव कामो वत्थुकामो।

---

१. एवञ्च एकस्सेव–सी०। २. ०समयस्स–सी०। ३. ०वेदितब्बो ति–सी०। ४. नत्थि–सी०। ५. एत्थ–सी०।

ति कामो; इतरो कामियती ति। यस्मिं पन पदेसे दुविधो पेसो कामो पवत्तिवसेन अवचरति, सो चतुन्नं अपायानं, मनुस्सानं, छन्नं च देवलोकानं वसेन एकादसविधो पदेसो। कामो एत्थ अवचरती ति कामावचरो, स-सत्थावचरो विय। यथा हि यस्मिं पदेसे स-सत्था पुरिसा अवचरन्ति, सो विज्जमानेसु पि अञ्ञेसु द्विपदचतुप्पदेसु अवचरन्तेसु, तेसं अभिलक्खितत्ता 'स-सत्थावचरो' त्वेव वुच्चति, एवं विज्जमानेसु पि अञ्ञेसु रूपावचरादीसु तत्थ अवचरन्तेसु, नेसं अभिलक्खितत्ता अयं पदेसो 'कामावचरो' त्वेव वुच्चति। स्वायं यथा रूपभवो रूपं, एवं उत्तरपदे लोपं कत्वा 'कामो' त्वेव वुच्चति। एवमिदं चित्तं इमस्मिं एकादसपदेससंखाते कामे अवचरती ति कामावचरं।

किंचा पि हि एतं रूपारूपभवेसु पि अवचरति, यथा पन संगामे अवचरणतो संगामावचरो ति लद्धनामो नगरे चरन्तो पि 'संगामावचरो' त्वेव वुच्चति, थल-जल-चरा च पाणा अथले अजले च ठिता पि 'थलचरा जलचरा' त्वेव वुच्चन्ति, एवमिदं अञ्ञत्थ अवचरन्तं पि कामावचरमेवा ति वेदितब्बं।

आरम्मणकरणवसेन वा एत्थ कामो अवचरती ति पि कामावचरं। कामं चेस रूपारूपावचरेसु अवचरति, यथा पन वदती ति 'वच्छो', महियं सेती ति 'महिसो' ति

कामेतीति[1] कामो[1]। किलेसो एव कामो किलेसकामो। तत्था ति वत्थुकामकिलेसकामेसु। (९४-
सी०) अत्थतो ति सभावतो, सरूपतो ति अत्थो। छन्दो एव रागो छन्दरागो। एत्थ[2] वत्थु-
किलेसकामेसु[3]। किलेसकामो एव वत्थुकामं कामेति[4] इति तस्मा किलेसकामो कामो[5]। इतरो
वत्थुकामो किलेसकामेन कामियति इच्छियति इति तस्मा वत्थुकामो कामो[6]। सो ति पदं
पदेसो ति[7] पदस्स विसेसनं। एत्था ति एकादसविधे पदेसे। सह सत्थेन वत्तन्तीति ससत्था।
अवचरन्ति एत्था ति अवचरो। ससत्थानं अवचरो ससत्थावचरो। सो ति पदेसो, वुच्चतीति
पदे कम्मं। तेसं अभिलक्खितत्ता ति तेहि ससत्थपुरिसेहि पदेसस्स अभिलक्खितब्बभावतो।
तेसं ति पदं अभिलक्खितत्ता[8] ति पदे कत्ता। अथवा तेसं ससत्थपुरिसानं पदेसस्स अभिलक्खि-
तत्ता अभिलक्खणभावतो। तेसं ति भावयोगे छट्ठी[8]। अभिलक्खितानं भावो अभिलक्खितत्तं।
तेसं ति किलेसकामवत्थुकामानं[9]। रूपूपपत्तिया मग्गं भावेतीति एत्थ रूपभवो उत्तरपदलोपं
कत्वा रूपं ति वुत्तो। यथा एवं स्वायं कामावचरो उत्तर....प....वुच्चति।

एतं ति चित्तं।

एत्था ति चित्ते। एसो ति कामो। इति वचने वुत्ते यत्तका वा सत्ता। सब्बेसं सत्तानं तं वच्छो महिसो ति वचनं नामं न होति।

१-१. वत्थुं कामेतीति वत्थुकामो–सी०। २. एत्था ति–सी०। ३. वत्थुकामकिलेस०–सी०। ४. ०इच्छति–सी०। ५. नत्थि–सी०। ६. नत्थि–सी०। ७. पदेसेति–सी०। ८-८. नत्थि–म०। ९. कामावचरधम्मानं–सी०।

वुत्ते, न यत्तका वदन्ति, महियं वा सेन्ती ति सब्बेसं तं नामं होति, एवं सम्पदमिदं वेदितब्बं। अपि च कामभवसंखाते कामे पटिसन्धिं अवचारेती ति कामावचरं।

कुसलं ति कुच्छितानं सलनादीहि अत्थेहि वुत्तं। अपि च आरोग्यट्ठेन अनवज्जट्ठेन कोसल्लसम्भूतट्ठेन च कुसलं। यथेव हि 'कच्चि नु भोतो कुसलं' ति रूपकाये अनातुरताय अगेलञ्ञेन निब्याधिताय आरोग्यट्ठेन कुसलं वुत्तं, एवं अरूपधम्मे पि किलेसातुरताय किलेसगेलञ्ञस्स च किलेसब्याधिनो च अभावेन आरोग्यट्ठेन कुसलं वेदितब्बं। किलेसवज्जस्स पन किलेसदोसस्स किलेसदरथस्स च अभावा अनवज्जट्ठेन कुसलं। कोसल्लं वुच्चति पञ्ञा; कोसल्लतो संभूतत्ता कोसल्लसंभूतट्ठेन कुसलं।

'ञाणसम्पयुत्तं' ताव एवं होतु; ञाणविप्पयुत्तं कथं ति ? तं पि रूळ्हिसद्देन कुसलमेव। यथा हि तालपण्णेहि अकत्वा किलञ्जादीहि कतं पि तं-सरिक्खत्ता रूळ्हिसद्देन तालवण्टं त्वेव वुच्चति, एवं 'ञाणविप्पयुत्तं' पि कुसलं त्वेव वेदितब्बं। निप्परियायेन पन 'ञाणसम्पयुत्तं' आरोग्यट्ठेन अनवज्जट्ठेन कोसल्लसंभूतट्ठेन तिविधेना पि कुसलं ति नामं लभति, ञाणविप्पयुत्तं दुविधेनेव। इति यं च **जा**तकपरियायेन यं च **बा**हितिकसुत्तपरियायेन[1] यं च **अ**भिधम्मपरियायेन कुसलं कथितं सब्बं तं तीहि पि अत्थेहि इमस्मिं चित्ते लब्भति।

तदेतं लक्खणादिवसेन अनवज्जसुखविपाकलक्खणं, अकुसलविद्धंसनरसं, वोदानपच्चुपट्ठानं, योनिसोमनसिकारपदट्ठानं। सावज्जपटिपक्खत्ता वा अनवज्जलक्खणमेव कुसलं, वोदानभावरसं, इट्ठविपाकपच्चुपट्ठानं, यथावुत्तपदट्ठानमेव।

लक्खणादीसु हि तेसं तेसं धम्मानं सभावो वा सामञ्ञं वा लक्खणं नाम। किच्चं वा सम्पत्ति वा रसो नाम। उपट्ठानाकारो वा फलं वा पच्चुपट्ठानं नाम। आसन्नकारणं पदट्ठानं नाम। इति यत्थ यत्थ लक्खणादीनि वक्खाम तत्थ तत्थ इमिना व नयेन तेसं नानत्तं वेदितब्बं।

चित्तं ति आरम्मणं चिन्तेती ति चित्तं; विजानाती ति अत्थो। यस्मा वा 'चित्तं' ति सब्बचित्तसाधारणो एस सद्दो, तस्मा यदेत्थ लोकिय-कुसलाकुसल-महा-

---

अनातुरताया ति आदि वेवचनं।

तम्पीति ञाणविप्पयुत्तम्पि। तं-सरिक्खत्ता ति तेन तालपण्णेन कतबीजनेन सदिसभावतो। ञाणविप्पयुत्तं दुविधेनेव[2] नामं लभतीति योजना। इतीति एवं। यञ्च कुसलं, भगवता कथितं।

तदेतं कुसलं लक्खणादिवसेन वेदितब्बं ति सम्बन्धो।

यत्थ यत्था ति यस्मिं यस्मिं ठाने।

यदेत्था ति एत्थ सब्बचित्तेसु यं कुसलं चित्तं। कम्मकिलेसेहीति पदं चित्तं ति पदे कत्ता। एवम्पेत्था ति एवम्पि एत्थ चित्तं ति पदे।

---

१. म० २:३५९। २. दुविधेन–सी०।

किरियचित्तं, तं जवनवीथिवसेन अत्तनो सन्तानं चिनोती ति चित्तं। विपाकं कम्मकिलेसेहि चितं ति चित्तं। अपि च सब्बं पि यथानुरूपतो चित्तताय चित्तं। चित्तकरणताय चित्तं ति एवम्पेत्थ अत्थो वेदितब्बो।

तत्थ यस्मा अञ्ञदेव सरागं चित्तं, अञ्ञं सदोसं, अञ्ञं समोहं; अञ्ञं कामावचरं, अञ्ञं रूपावचरादिभेदं; अञ्ञं रूपारम्मणं, अञ्ञं सद्दादि-आरम्मणं; रूपारम्मणेसु पि अञ्ञं नीलारम्मणं, अञ्ञं पीतादि-आरम्मणं; सद्दादि-आरम्मणेसु पि एसेव नयो; सब्बेसु पि तेसु अञ्ञं हीनं अञ्ञं मज्झिमं अञ्ञं पणीतं; हीनादिसु पि अञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं, अञ्ञं विरियाधिपतेय्यं अञ्ञं चित्ताधिपतेय्यं अञ्ञं वीमंसाधिपतेय्यं, तस्मा'स्स इमेसं सम्पयुत्तभूमि-आरम्मण-हीनमज्झिमपणीताधिपतीनं वसेन चित्तता वेदितब्बा। कामं चेत्थ एकमेव एवं चित्तं न होति, चित्तानं पन अन्तोगधत्ता एतेसु यं किञ्चि एकं पि चित्तताय चित्तं ति वत्तुं वट्टति। एवं ताव चित्तताय चित्तं।

कथं चित्तकरणताया ति? लोकस्मिं हि चित्तकम्मतो उत्तरिं अञ्ञं चित्तं नाम नत्थि। तस्मिं पि चरणं नाम चित्तं अतिचित्तमेव होति। तं करोन्तानं चित्तकारानं 'एवंविधानि एत्थ रूपानि कातब्बानी'ति चित्तसञ्ञा उप्पज्जति। ताय चित्तसञ्ञाय लेखागहण-रञ्जन-उज्जोतन-वत्तनादिनिप्फादिका चित्तकिरिया उप्पज्जन्ति,ततो चरणसंखाते चित्ते अञ्ञतरं विचित्तरूपं निप्फज्जति। ततो 'इमस्स रूपस्स उपरि इदं होतु, हेट्ठा इदं, उभयपस्से इदं'ति चिन्तेत्वा यथा-चिन्तितेन कम्मेन सेसचित्तरूपनिप्फादनं होति, एवं यं किञ्चि लोके विचित्तं सिप्पजातं सब्बं तं चित्तेनेव कयिरति, एवमिमाय करणविचित्तताय तस्स चित्तस्स निप्फादकं चित्तं पि तथेव चित्तं होति। यथा-चिन्तितस्स वा पन अनवसेसस्स अनिप्फज्जनतो ततो पि चित्तमेव

तत्था ति आदि वित्थारो। तत्था ति चित्तेसु। रूपारम्मणेसु चा ति निद्धारणे भुम्मं। तेसू ति चित्तेसु। अस्सा ति चित्तस्स। एत्था ति चित्तेसु। एतेसु ति चित्तेसु।

अञ्ञं चित्तं नामा ति अञ्ञं विचित्तं नाम। तस्मिम्पीति चित्तकम्मे पि। पिसद्दो चित्तं अपेक्खति। चित्तं ति विचित्तं। तं ति चरणं। एवंविधानी ति एवंपकारानि। एत्थ ठाने। चित्तसञ्ञा ति विचित्तसञ्ञा। लेखागहणञ्च रञ्जनञ्च उज्जोतनञ्च वत्तनञ्च (९५–सी०) लेखा....प....वत्तनानि, तानि आदि येसं तानि कम्मानि लेखा...प....दीनि। लेखादीनं निप्फादिका लेखा....प....निप्फादिका। चित्तक्रिया ति चित्तस्स क्रिया। ततो तदनन्तरं, चिन्तेत्वा ति पदे कालसत्तमी। सिप्पजातं ति (७९–म०) सिप्पपभेदो। चित्तेनेवा ति पदं करियतीति पदे कत्ता। तस्स तस्स[1] चित्तकम्मस्स।

वा अपरो नयो—यथाचिन्तितस्स अनवसेसस्स चित्तकम्मस्स। अनिप्फज्जनतो ति[2] पदं चित्ततरं ति पदे हेतु। ततो पि चित्तकम्मतो चित्तमेव विञ्ञाणमेव चित्ततरं विचित्ततरं। वो

---

१. नत्थि—सी०। २. अभिनि०—सी०।

चित्ततरं। तेनाह भगवा "दिट्ठं वो भिक्खवे चरणं नाम चित्तं'ति ? 'एवं भन्ते'ति। 'तं पि खो भिक्खवे चरणं चित्तं चित्तेनेव चिन्तितं ति। तेन पि खो भिक्खवे चरणेन चित्तेन चित्तमेव चित्ततरं" [सं० २-३:३६७] ति।

तथा यदेतं देव-मनुस्स-निरय-तिरच्छानभेदासु गतीसु कम्म-लिङ्गसञ्ञावोहारादिभेदं अज्झत्तिकं चित्तं तं पि चित्तकतमेव। कायकम्मादिभेदं हि दान-सील-हिंसा-थेय्यादिनयप्पवत्तं कुसलाकुसलकम्मं चित्तनिप्फादितं कम्मनानत्तं। कम्मनानत्तेनेव तासु तासु गतीसु हत्थ-पाद-कण्ण-उदर-गीव-मुखादि-सण्ठानभिन्नं लिङ्गनानत्तं। लिङ्गनानत्ततो यथागहितसण्ठानवसेन 'अयं इत्थी अयं पुरिसो' ति उप्पज्जमानाय सञ्ञाय सञ्ञानानत्तं। सञ्ञानानत्ततो सञ्ञानुरूपेन 'इत्थी'ति वा 'पुरिसो'ति वा वोहरन्तानं वोहारनानत्तं। वोहारनानत्तवसेन पन यस्मा 'इत्थी भविस्सामि पुरिसो भविस्सामि, खत्तियो भविस्सामि ब्राह्मणो भविस्सामी'ति एवं तस्स तस्स अत्तभावस्स जनककम्मं करीयति, तस्मा वोहारनानत्ततो कम्मनानत्तं। तं पनेतं कम्मनानत्तं यथा-पत्थितं भवं निब्बत्तेन्तं यस्मा गतिवसेन निब्बत्तेति तस्मा कम्मनानत्ततो गतिनानत्तं। कम्मनानत्तेनेव च तेसं तेसं सत्तानं तस्सा तस्सा गतिया अपादक-द्विपादकादिता, तस्सा तस्सा उप्पत्तिया उच्च-नीचादिता, तस्मिं तस्मिं अत्तभावे सुवण्णदुब्बण्णादिता, लोकधम्मेसु लाभालाभादिता च पञ्ञायति। तस्मा सब्बमेतं देवमनुस्सनिरय-तिरच्छानभेदासु गतीसु कम्म-लिङ्ग-सञ्ञा-वोहारादिभेदं अज्झत्तिकं चित्तं चित्तेनेव कतं ति वेदितब्बं।

स्वायमत्थो इमस्स संगीतिं अनारूळ्हस्स सुत्तस्स वसेन वेदितब्बो—वुत्तं हेतं "कम्मनानत्तपुथुत्तप्पभेदववत्थानवसेन लिङ्गनानत्तपुथुत्तप्पभेदववत्थानं भवति, लिङ्ग-नानत्तपुथुत्तप्पभेदववत्थानवसेन सञ्ञानानत्तपुथुत्तप्पभेदववत्थानं भवति, सञ्ञाना-नत्तपुथुत्तप्पभेदववत्थानवसेन वोहारनानत्तपुथुत्तप्पभेदववत्थानं भवति, वोहारनानत्त-पुथुत्तप्पभेदववत्थानवसेन कम्मनानत्तपुथुत्तप्पभेदववत्थानं भवति। कम्मनानाकरणं पटिच्च सत्तानं गतिया नानाकरणं पञ्ञायति—अपदा द्विप्पदा चतुप्पदा बहुप्पदा, रूपिनो अरूपिनो, सञ्ञिनो असञ्ञिनो नेवसञ्ञिनासञ्ञिनो। कम्मनानाकरणं

ति[1] तुम्हेहि दिट्ठं ति पदे कत्ता। चरणं[2] नामा ति पि खो चित्तं[2]। तेन चित्तेना ति ततो चित्ततो।

तथा ति अथवा। यदेतं अज्झत्तिकं चित्तं ति सम्बन्धो। कायकम्मादीहि आदि वित्थारो। चित्तनिप्फादितं ति चित्तेन निप्फादितं। वोहारनानत्तवसेन यस्मा करियतीति सम्बन्धो। तस्सा तस्सा गतिया ति पदं आधारो।

कम्म····प····वसेना ति[3] नानत्तञ्च पुथुत्तञ्च पभेदो च नानत्तपुथुत्तप्पभेदो। कम्मस्स

---

१. वो ति पदं–सी०। २-२. चरणं चरणं नाम, तम्पि खो चित्तं–सी०। ३. कम्म-वसेना ति–म०।

पटिच्च सत्तानं उप्पत्तिया नानाकरणं पञ्ञायति—उच्चनीचता हीनपणीतता सुगत-दुग्गतता। कम्मनानाकरणं पटिच्च सत्तानं अत्तभावे नानाकरणं पञ्ञायति—सुवण्ण-दुब्बण्णता सुजातदुज्जातता सुसण्ठितदुस्सण्ठितता। कम्मनानाकरणं पटिच्च सत्तानं लोकधम्मे नानाकरणं पञ्ञायति—लाभालाभे यसायसे निंदापसंसायो सुखदुक्खे"ति।

अपरं ति वुत्तं—

कम्मतो लिङ्गतो चेव लिङ्गसञ्ञा पवत्तरे।
सञ्ञातो भेदं गच्छन्ति इत्थायं पुरिसो ति वा॥
"कम्मना वत्तति लोको कम्मना वत्तति पजा।
कम्मनिबन्धना सत्ता रथस्साणी व यायतो॥ (खु० १:३६८)
कम्मेन कित्तिं लभते पसंसं कम्मेन जानिं च वधं च बन्धं।
तं कम्मनानाकरणं विदित्वा कस्मा वदे नत्थि कम्मं ति लोके ?॥

"कम्मस्सका हि माणव, सत्ता कम्मदायादा कम्मयोनी कम्मबन्धू कम्मपटि-सरणा; कम्मं सत्ते विभजति यदिदं हीनप्पणीततताया" [म० ३:२८०] ति।

एवं इमाय करणचित्तताय पि चित्तस्स चित्तता वेदितब्बा।

सब्बानि पि हि एतानि विचित्तानि चित्तेनेव कतानि। अलद्धोकासस्स पन चित्तस्स यं वा पन अवसेसपच्चयविकलं तस्स एकच्चचित्तकरणाभावतो यदेतं चित्तेन कतं अज्झत्तिकं चित्तं वुत्तं, ततो पि चित्तमेव चित्ततरं। तेनाह भगवा—"नाहं भिक्खवे, अञ्ञं एकनिकायं पि समनुपस्सामि एवं-चित्तं यथयिदं भिक्खवे, तिरच्छानगता पाणा····तेहि पि खो भिक्खवे, तिरछानगतेहि पाणेहि चित्तं येव चित्ततरं" [सं० २-३. ३६७] ति।

नानत्तपुथुत्तप्पभेदो कम्म····प····प्पभेदो। तस्स ववत्थानं। तस्स वसो कम्मनानत्त····प····वसो।

सञ्ञातो भेदं[1] गच्छन्ति इत्थि-पुरिसादिलिङ्गसञ्ञातो 'अयं इत्थी, अयं पुरिसो' इति भेदं[2] वोहारभेदं ते धम्मा गच्छन्ति। कम्मनिबन्धना सत्ता ति कम्मकारणा सत्ता····प····[3]पणीततताया ति हीन-पणीतभावत्थाय यदिदं यं इदं कम्मं होति, तं कम्मं सत्ते विभजति विभागं करोति। अलद्धोकासस्स पन चित्तस्स एकच्चचित्तकारणाभावतो····प····ततो पि चित्तमेव[3]। यायतो यायन्तस्स गच्छन्तस्स रथस्स आणीव निबन्धनं[4] कारणं। जानिं ति परिहानिं। पण्डितो तं कम्म[5]····प····णं विदित्वा लोके कम्मं नत्थि इति कस्मा वदे।

कम्मं विचित्ततरं अवसेसपच्चयविकलं यं वा[6] पन चित्तं[6] तस्स चित्तस्स एकच्च····प····ततो पि चित्तमेव विचित्ततरं ति[7] सम्बन्धो। अलद्धो ओकासो येन तं अलद्धोकासं। चित्तस्सा ति पदं कारणभावतो ति पदे सामि। एकच्च····प····तो ति पदं चित्ततरं ति पदे हेतु। तस्सा[8] ति पदं चित्तकारणाभावतो ति पदे सामि[8]।

---

१. भेदं ति–सी०। २. इति वा भेदं–सी०। ३-३. नत्थि–म०। ४. निबन्धना–सी०। ५. कम्मं–सी०। ६-६. नत्थि–सी०। ७. चित्तचित्ततरं ति–म०। ८-८. नत्थि–म०।

उप्पन्नं होती ति एत्थ वत्तमान-भूतापगत-ओकासकत-भूमिलद्धवसेन उप्पन्नं नाम अनेकप्पभेदं। तत्थ सब्बं पि उप्पादजराभङ्गसमङ्गिसंखातं वत्तमानुप्पन्नं नाम। आरम्मणरसं अनुभवित्वा निरुद्धं, अनुभूतापगतसंखातं कुसलाकुसलं, उप्पादादित्तयं अनुप्पत्वा निरुद्धं, हुत्वापगतसंखातं, सेससंखातं च भूतापगतुप्पन्नं नाम। "यानि'स्स तानि पुब्बे कतानि कम्मानी"ति (म० ३:२३४) एवमादिना नयेन वुत्तं कम्मं अतीतं पि समानं, अञ्ञं विपाकं पटिबाहित्वा अत्तनो विपाकस्सोकासं कत्वा ठितत्ता, तथा कतोकासं च विपाकं अनुप्पन्नं पि समानं एवं कतोकासे एकन्तेन उप्पज्जनतो ओकासकतुप्पन्नं नाम। तासु तासु भूमीसु असमूहतं अकुसलं भूमिलद्धुप्पन्नं नाम।

एत्थ च भूमिया भूमिलद्धस्स च नानत्तं वेदितब्बं। भूमी ति विपस्सनाय आरम्मणभूता तेभूमका पञ्चक्खन्धा। भूमिलद्धं नाम तेसु खन्धेसु उप्पत्तिरहं किलेसजातं। तेन हेसा भूमि लद्धा नाम होति, तस्मा भूमिलद्धं ति वुच्चति।

एवमेतेसु चतूसु उप्पन्नेसु इध 'वत्तमानुप्पन्नं' अधिप्पेतं। तत्रायं वचनत्थो— पुब्बन्ततो उद्धं उप्पादादि-अभिमुखं पन्नं ति उप्पन्नं। 'उप्पन्न'-सद्दो पनेस अतीते पटिलद्धे समुट्ठिते अविक्खम्भिते असमुच्छिन्ने खणत्तयगते ति अनेकेसु अत्थेसु दिस्सति। अयं हि "तेन खो पन भिक्खवे समयेन ककुसन्धो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो लोके उप्पन्नो" [सं० २-३.१६०] ति एत्थ अतीते आगतो। "आयस्मतो आनन्दस्स अतिरेकचीवरं उप्पन्नं होती [विन० १.३०५]" ति एत्थ पटिलद्धे। "सेय्यथा पि भिक्खवे, उप्पन्नं महामेघं तमेनं महावातो अन्तरा येव अन्तरधापेती" [सं० ४:५०] ति एत्थ समुट्ठिते। "उप्पन्नं गमियचित्तं दुप्पटिविनोदनीयं (अं० २:४३४) उप्पन्नुप्पन्ने पापके अकु-

---

तत्था ति वत्तमानुप्पन्नादीसु। सब्बम्पि धम्मजातं। आरम्मणरसं ... प ... कुसलं भूतापगतुप्पन्नं[1] नाम। उप्पादादित्तयं अनुप्पत्वा निरुद्धं भुत्वापगतसंखातं[2] कुसलाकुसलतो[3] सेससंखातं च ... प ... नामा ति योजना। चसद्देन[4] कुसलाकुसलं आकड्ढति। यानिस्सा ति अस्स अनेन सत्तेन यानि तानि कम्मानि। कम्मं अतीतम्पि समानं ओकासकतुप्पन्नं नामा ति सम्बन्धो। ठितत्ता ति पदं ओकासकतुप्पन्नं नामा ति पदे हेतु। तथा ति तेन कम्मेन, कत इति वचने कत्ता। कतो ओकासो अस्स विपाकस्सा ति कतोकासो। एवं कतोकासे विपाके सति एकन्तेन विपाकस्स उप्पज्जनतो। तथा कतोकासञ्च विपाकं ... प ... कतुप्पन्नं नाम। चसद्दो कम्मञ्च विपाकञ्चा ति योजेतब्बो। भवति एत्थ उपादानक्खन्धो ति भूमि। भूमि लद्धा येन तं भूमिलद्धं। भूमिलद्धुञ्च तं उप्पन्नञ्चा ति भूमिलद्धुप्पन्नं।

एत्थ चा ति भूमिलद्धुप्पन्नं ति वचने। तेन (८०—म०) हेसा ति हि सच्चं, तेन किलेसजातेन एसा भूमि।

तत्रा ति उप्पन्नं ति वचने। पुब्बन्ततो ति पुब्बकोट्ठासतो, अतीतधम्मतो ति अत्थो।

---

१. भुत्वापगतुप्पन्नं—म०। २. भूतापगत०—सी०। ३. कुसलाकुसलं-सी०। ४. चसद्दो-सी०।

सलेधम्मे ठानसो अन्तरधापेती" [सं० ५:५०] ति एत्थ अविक्खम्भिते। "अरियं अट्ठङ्गिकं मग्गं भावेन्तो बहुलीकरोन्तो उप्पन्नुप्पन्ने पापके अकुसले धम्मे ठानसो अन्तरा येव अन्तरधापेती" [सं० ५:५०] ति एत्थ असमुच्छिन्ने। "उप्पज्जमानं उप्पन्नं ति ? आमन्ता" [य० २:४२६] ति एत्थ खणत्तयगते। स्वायमिधा पि खणत्तयगते व दट्ठब्बो। तस्मा 'उप्पन्नं होती' ति एत्थ खणत्तयगतं होति, वत्तमानं होति, पच्चुप्पन्नं होती ति। अयं संखेपत्थो।

चित्तं उप्पन्नं होती [§१] ति चेतं देसनासीसमेव। न पन चित्तं एककमेव उप्पज्जति। कस्मा ? यथा राजा आगतो ति वुत्ते न परिसं पहाय एकको व आगतो, राजपरिसाय पन सद्धिं येव आगतो ति पञ्ञायति, एवमिदं चित्तं पि परोपण्णास-कुसलधम्मेहि सद्धिं येव उप्पन्नं ति वेदितब्बं। पुब्बङ्गमट्ठेन पन चित्तं उप्पन्नं होति च्चेव वुत्तं।

लोकियधम्मं हि पत्वा चित्तं जेट्ठकं चित्तं धुरं चित्तं पुब्बङ्गमं होति। लोकुत्तर-धम्मं पत्वा पञ्ञा जेट्ठिका पञ्ञा धुरा पञ्ञा पुब्बङ्गमा।

तेनेव भगवा विनयपरियायं पत्वा पञ्हं पुच्छन्तो 'किं-फस्सो' सि, किं-वेदनो' सि, किं-सञ्ञो' सि, किं-चेतनो' सी' ति अपुच्छित्वा "किं-चित्तो त्वं भिक्खू" (विन० ३.७१) ति चित्तमेव धुरं कत्वा पुच्छति। "अथेय्यचित्तो अहं भगवा" (विन०३.७१) ति वुत्ते 'अनापत्ति अथेय्यफस्सस्सा' ति आदीनि अवत्वा "अनापत्ति भिक्खु अथेय्य-चित्तस्सा" (वि० ३.७१) ति वदति। न केवलं च विनयपरियायं, अञ्ञं पि लोकिय-देसनं देसेन्तो चित्तमेव धुरं कत्वा देसेति। यथाह—"ये केचि भिक्खवे, धम्मा अकुसला अकुसलभागिया अकुसलपक्खिका सब्बे ते मनोपुब्बङ्गमा। मनो तेसं धम्मानं पठमं उप्पज्जति" (अं० १.११)।

"मनोपुब्बङ्गमा धम्मा मनोसेट्ठा मनोमया।
मनसा चे पदुट्ठेन भासति वा करोति वा।

देसनासीसं ति देसनाय पट्ठानभूतं[1]। यदि च चित्तं परोपण्णासकुसलधम्मेहि सद्धिं येव उप्पन्ने[2] कस्मा चित्तं उप्पन्नं ति[3] चोदनं मनसि निधाय पुब्बङ्गमट्ठेना ति आदिमाह। पुब्बङ्ग-मट्ठेना ति पुब्बङ्गमसभावेन, पट्ठानभावेना ति अत्थो।

चित्तस्स पट्ठानभावं साधेन्तो आह—लोकियधम्मं हीति आदि। हि सच्चं, लोकियधम्मं देसेतब्बं पत्वा चित्त·····प·····होतीति लोकियदेसनायं चित्तमेव धुरं कत्वा देसेतीति सम्बन्धो।

ततो नं दुक्खमन्वेतीति ततो तिविधदुच्चरिततो नं पुग्गलं दुक्खं अनुगच्छति। चक्कं व वहतो पदं ति धुरं वहतो बलिवद्दस्स पदं चक्कं इव अन्वेति। ततो नं सुखमन्वेति ततो तिविध-

---

१. पधानभूतं—सी०। २. उप्पन्नेन—सी०। ३. ०वुत्तं ति—सी०।

ततो नं दुक्खमन्वेति चक्कं व वहतो पदं ॥
मनोपुब्बङ्गमा धम्मा मनोसेट्ठा मनोमया।
मनसा चे पसन्नेन भासति वा करोति वा।
ततो नं सुखमन्वेति छाया व अनपायिनी" ॥ (धम्म० १-२)
"चित्तेन निय्यति लोको चित्तेन परिकस्सति।
चित्तस्स एकधम्मस्स सब्बे व वसमन्वगू" ति ॥ (सं० १.३७)

"चित्तसंकिलेसा भिक्खवे, सत्ता संकिलिस्सन्ति चित्तवोदाना विसुज्झन्ति" (सं० २-३:३६७); "पभस्सरमिदं भिक्खवे, चित्तं, तं च खो आगन्तुकेहि उपक्किलेसेहि उपक्किलिट्ठं" (अं० १-१०); "चित्ते गहपति, अरक्खिते कायकम्मं पि अरक्खितं होति, वचीकम्मं पि अरक्खितं होति, मनोकम्मं पि अरक्खितं होति; चित्ते गहपति, रक्खिते··प०····चित्ते गहपति, ब्यापन्ने····प०···· चित्ते गहपति, अब्यापन्ने····प०···· चित्ते गहपति, अवस्सुते··प०···चित्ते गहपति, अनवस्सुते कायकम्मं पि अनवस्सुतं होति, वचीकम्मं पि अनवस्सुतं होति, मनोकम्मं पि अनवस्सुतं होति" (अं० १:२४२-२४३)। एवं लोकियधम्मं पत्वा चित्तं जेट्ठकं होति, चित्तं धुरं होति, चित्तं पुब्बङ्गमं होती ति वेदितब्बं। इमेसु पन सुत्तेसु एकं वा द्वे वा अग्गहेत्वा सुत्तानुरक्खनत्थाय सब्बानि पि गहितानी ति वेदितब्बानि।

लोकुत्तरधम्मं पुच्छन्तो पन 'कतरफस्सं अधिगतो' सि, कतरवेदनं कतरसञ्ञं कतरचेतनं कतरचित्तं' ति अपुच्छित्वा, 'कतरपञ्ञं त्वं भिक्खु अधिगतो' सि, किं पठमं मग्गपञ्ञं, उदाहु दुतियं····प०····ततियं····प०····चतुत्थं मग्गपञ्ञं अधिगतो' सी' ति पञ्ञं जेट्ठकं कत्वा पञ्ञं धुरं कत्वा पुच्छति। पञ्ञुत्तरा सब्बे कुसला धम्मा न परिहायन्ति। पञ्ञा पन किमत्थिया? "पञ्ञावतो भिक्खवे, अरियसावकस्स तदन्वया सद्धा सण्ठाति, तदन्वयं विरियं सण्ठाति, तदन्वया सति सण्ठाति, तदन्वयो समाधि सण्ठाती" (सं० ४.१९८) ति एवमादीनि पनेत्थ सुत्तानि दट्ठब्बानि। इति लोकुत्तरधम्मं पत्वा पञ्ञा जेट्ठिका होति पञ्ञा धुरा होति पञ्ञा पुब्बङ्गमा होती ति वेदितब्बा। अयं लोकियदेसना। तस्मा चित्तं धुरं कत्वा देसेन्तो "चित्तं उप्पन्नं होती" ति आह।

सुचरिततो नं पुग्गलं अन्वेति[1] सुचरिततो[2] नं पुग्गलं सुखं अन्वेति[2]। चित्तेना ति पदं नीयतीति पदे कत्ता। परिकस्सतीति परिकड्ढियति। सब्बेव धम्मा (९७-सी०) चित्तसङ्खातस्स[3] एकधम्मस्स वसं अन्वगू अनुगता। चित्तसंकिलेसा ति चित्तस्स संकिलेसहेतु। चित्तवोदाना ति चित्तस्स विसुज्झनहेतु। वि-अवपुब्ब'दा'-सुद्धिम्हि। एकं वा द्वे वा सुत्तानि अनाहरित्वा किमत्थं बहूनं सुत्तानं आहरणं ति आह इमेसु पना ति आदि।

पञ्ञुत्तरा ति पञ्ञाधिका। को अत्थो पयोजनं एतिस्सा ति किमत्थिया। तदन्वया ति तं पञ्ञं[4] अन्वया अनुगता।

---

१. सुखं अन्वेति–सी०। २-२. नत्थि–सी०। ३. चित्तस्स चित्तसं०–सी०। ४. पुञ्ञं–सी०।

सोमनस्ससहगतं ति सातमधुरवेदयितसंखातेन सोमनस्सेन एकुप्पादादिभावं गतं। अयं पन 'सहगत'-सद्दो तब्भावे वोकिण्णे निस्सये आरम्मणे संसट्ठे ति इमेसु अत्थेसु दिस्सति। तत्थ "या' यं तण्हा पोनोभविका नन्दिरागसहगता" (म० १.६५) ति तब्भावे वेदितब्बो; नन्दिरागभूता ति अत्थो। "या' यं भिक्खवे, वीमंसा कोसज्जसहगता कोसज्जसम्पयुत्ता" (सं० ४.२४०) ति वोकिण्णे वेदितब्बो; अन्तरन्तरा उप्पज्जमानेन कोसज्जेन वोकिण्णा ति अयमेत्थ अत्थो। "अट्ठिकसञ्ञासहगतं सतिसम्बोज्झङ्गं भावेती" (सं० ४.११५) ति निस्सये वेदितब्बो; अट्ठिकसञ्ञं निस्साय अट्ठिकसञ्ञं भावेत्वा पटिलद्धं ति अत्थो। "लाभी होति रूपसहगतानं वा समापत्तीनं अरूपसहगतानं वा" (पुग्ग० ९१) ति आरम्मणे; रूपारूपारम्मणानं ति अत्थो। "इदं सुखं इमाय पीतिया सहगतं होति सहजातं संसट्ठं सम्पयुत्तं" (विभ० ३१०) ति संसट्ठे। इमस्मिं पदे अयमेव अत्थो अधिप्पेतो। सोमनस्ससंसट्ठं हि इध सोमनस्ससहगतं ति वुत्तं।

'संसट्ठ'-सद्दो पि चेस सदिसे अवस्सुते मित्तसंथवे सहजाते ति च बहूसु अत्थेसु दिस्सति। अयं हि

"किसे थूले विवज्जित्वा संसट्ठा योजिता हया" (जा० २:१६२) ति एत्थ सदिसे आगतो। "संसट्ठा व तुम्हे अय्ये विहरथा" (पाचि० ३२४) ति अवस्सुते। "गिहिसंसट्ठो विहरती" (चुल्ल० ९) ति मित्तसन्थवे। "इदं सुखं इमाय पीतिया सहगतं संसट्ठं सम्पयुत्तं" (विभ० ३१०) ति सहजाते। इधा पि सहजाते अधिप्पेतो।

तत्थ 'सहगतं' असहजातं असंसट्ठं असम्पयुत्तं नाम नत्थि। सहजातं पन संसट्ठं सम्पयुत्तं होति पि, न होति पि। रूपारूपधम्मेसु हि एकतो जातेसु रूपं अरूपेन सहजातं होति, न संसट्ठं, न सम्पयुत्तं; तथा अरूपं रूपेन; रूपं च रूपेन; अरूपं पन अरूपेन सद्धिं नियमतो व सहगतं सहजातं संसट्ठं सम्पयुत्तमेव होती ति। तं सन्धाय वुत्तं 'सोमनस्ससहगतं' ति।

एत्था ति पञ्ञाय पठ्ठानभावे[1]। तत्था ति तब्भावादि-अत्थेसु, एत्था ति कोसज्जसहगता ति पदे। इधा ति अधिकारे।

संसट्ठसद्दो पि चा ति अपिसद्दो सहगतसद्दं अपेक्खति। च-सद्दो वाक्यारम्भो। किसे अस्से थूले अस्से विवज्जेत्वा[2] संसट्ठा सदिसा हया ति अस्सा योजिता अम्हेहि।

तत्था ति तस्मिं सहगतसहगते[3] धम्मे निद्धारणं[3]। सहगतं[4] धम्मजातं। रूपारूपधम्मेसू ति भावलक्खणे भुम्मं, निद्धारणं वा। इति तस्मा तं सहजातं सन्धाय सोमनस्ससहगतं ति[5] वचनं वुत्तं भगवता।

---

१. पधानभावे–सी०। २. विवज्जित्वा–सी०। ३-३. सहगतसहजाते धम्मे नत्थीति पदे आधारो–सी०। ४. ०सहजातं–सी०। ५. यं सोमन०–सी०।

ञाणसम्पयुत्तं ति ञाणेन सम्पयुत्तं, समं एकुप्पादादिपकारेहि युत्तं ति अत्थो। यं पनेत्थ वत्तब्बं सिया तं मातिकावण्णनाय वेदनातिके वुत्तमेव। तस्मा एकुप्पादा एकनिरोधा एकवत्थुका एकारम्मणा ति इमिना लक्खणेन तं-सम्पयुत्तं ति वेदितब्बं। उक्कट्ठनिद्देसो चेस। आरुप्पे पन विना पि एकवत्थुकभावं सम्पयोगो लब्भति।

एत्तावता किं कथितं? कामावचरकुसलेसु सोमनस्ससहगतं तिहेतुकञाणसम्पयुत्तं असंखारिकं महाचित्तं कथितं। "कतमे धम्मा कुसला" ति हि अनियमितपुच्छाय चतुभूमकं कुसलं गहितं। 'कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होती' ति वचनेन तेभूमकं कुसलं परिच्चत्तं, अट्ठविधं कामावचरकुसलमेव गहितं। 'सोमनस्ससहगतं' ति वचनेन ततो चतुब्बिधं उपेक्खासहगतं परिच्चजित्वा चतुब्बिधं सोमनस्ससहगतमेव गहितं। 'ञाणसम्पयुत्त'' ति वचनेन ततो दुविधं ञाणविप्पयुत्तं परिच्चजित्वा द्वे ञाणसम्पयुत्तानेव गहितानि। असंखारिकभावो पन अनाभट्ठतायेव न गहितो। किञ्चापि न गहितो, परतो पन 'ससंखारेना'ति वचनतो इध 'असंखारेना'ति अवुत्ते पि असंखारिकभावो वेदितब्बो। सम्मासंबुद्धो हि आदितो व इदं महाचित्तं भाजेत्वा दस्सेतुं नियमेत्वा व इमं देसनं आरभी ति एवमेत्थ सन्निट्ठानं कतं ति वेदितब्बं।

इदानि तमेव चित्तं आरम्मणतो दस्सेतुं **रूपारम्मणं** वा [§1] ति आदिमाह। भगवा हि अरूपधम्मं दस्सेन्तो वत्थुना वा दस्सेति, आरम्मणेन वा, वत्थारम्मणेन वा, सरसभावेन वा। "चक्खुसम्फस्सो...प०...मनोसम्फस्सो; चक्खुसम्फस्सजा वेदना...प०...मनोसम्फस्सजा वेदना; चक्खुविञ्ञाणं...प०...मनोविञ्ञाणं" (सं० २.२०९) ति आदीसु वत्थुना अरूपधम्मा दस्सिता। "रूपसञ्ञा...प०...धम्मसञ्ञा, रूपसञ्चेतना...प०...धम्मसञ्चेतना" (सं० २.२०९) ति आदीसु हि आरम्मणेन। "चक्खुं च पटिच्च रूपे च उप्पज्जति चक्खुविञ्ञाणं, तिण्णं संगति फस्सो...प०... मनं च पटिच्च धम्मे च उप्पज्जति मनोविञ्ञाणं, तिण्णं सङ्गति फस्सो" (म० १.१४९) ति आदीसु हि वत्थारम्मणेहि। "अविज्जापच्चया, भिक्खवे, संखारा,

---

एत्था ति ञाणसम्पयुत्तं ति वचने। उक्कट्ठनिद्देसो चेसा ति उक्कट्ठेन निद्देसो च, एसो सम्पयोगो एकवत्थुकभावं विना पि सम्पयोगो लब्भति ञायति पण्डितेन।

एत्तावता ति कामावचरकुसलं ति आदिवचनेन। ततो ति अट्ठविधकामावचरकुसलतो। अनाभट्ठतायेवा ति पाळियं अभासितब्बताय एव[1]। ना ति[2] सो[2] पाळियं देसेतब्बभावेन न सङ्गहितो[3]। अथवा पालियं (८१–म०) अनाभट्ठताय एव अट्ठकथायं न गहितो, न तस्स असङ्खारिकसद्दस्स अत्थो न वुत्तो। आभरियतीति आभट्ठो, न आभट्ठो अनाभट्ठो। अनाभट्ठस्सभावो अनाभट्ठता।

धम्मसञ्चेतना ति आदीसु हीति धम्मसञ्चेतना ति आदीसु एव। फस्सो ति आदीसु हीति फस्सो ति आदीसु एव। हि-सद्दो एवसद्दत्थे वत्तति।

---

१. एवं-सी०। २-२. न गहितो ति-सी०। ३. गहितो-सी०।

संखारपच्चया विञ्ञाणं" (सं० २.३) ति आदीसु सरसभावेन अरूपधम्मा दस्सिता । इदानि इमस्मिं ठाने आरम्मणेन दस्सेन्तो 'रूपारम्मणं' वा ति आदिमाह ।

तत्थ चतुसमुट्ठानं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं रूपमेव रूपारम्मणं । द्वि-समुट्ठानो अतीतानागतपच्चुप्पन्नो सद्दो व **सद्दारम्मणं** । चतुसमुट्ठानो अतीतानागतपच्चुप्पन्नो गन्धो व **गन्धारम्मणं** । चतुसमुट्ठानो अतीतानागतपच्चुप्पन्नो रसो व **रसारम्मणं** । चतुसमुट्ठानं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं फोट्ठब्बमेव **फोट्ठब्बारम्मणं** । एकसमुट्ठाना द्विसमुट्ठाना तिसमुट्ठाना चतुसमुट्ठाना न-कुतो पि समुट्ठिता अतीतानागतपच्चुप्पन्ना चेव, तथा न-वत्तब्बा च, वुत्तावसेसा चित्तगोचरसंखाता धम्मा येव **धम्मारम्मणं** ।

ये पन अनापाथगता रूपादयो पि धम्मारम्मणमिच्चेव वदन्ति ते इमिना सुत्तेन पटिक्खिपितब्बा–वुत्तं हेतं "इमेसं खो आवुसो, पञ्चन्नं इन्द्रियानं नानागोचरानं न अञ्ञमञ्ञस्स गोचरविसयं पच्चनुभोन्तानं मनो पटिसरणं मनो नेसं गोचरविसयं पच्चनुभोती" [म० १.३६४] ति । एतेसं हि रूपारम्मणादीनि गोचरविसयो नाम । तानि मनेन पच्चनुभवियमानानि पि रूपारम्मणादीनि येवा ति अयमत्थो सिद्धो होति । दिब्बचक्खुञाणादीनं च रूपादि-आरम्मणत्ता पि अयमत्थो सिद्धो येव होति । अनापाथगतानेव हि रूपारम्मणादीनि दिब्बचक्खु-आदीनं आरम्मणानि, न च तानि धम्मारम्मणानि भवन्ती ति वुत्तनयेनेव आरम्मणववत्थानं वेदितब्बं ।

तत्था ति रूपारम्मणादीसु, निद्धारणं । तथा ति एकसमुट्ठानादिभावेन ।

ये आचरिया वदन्ति, ते इमिना सुत्तेन 'इमेसं खो आवुसो' ति आदिना[1] सुत्तेन पटिक्खिपितब्बा[2] पण्डितेन । किं पन तं सुत्तं ति आह–वुत्तं हेतं ति आदि । पञ्चन्नं इन्द्रियानं ति चक्खादि-इन्द्रियानं, न पच्चनुभोन्तानं ति न गण्हन्तानं । नेसं ति चक्खादि-इन्द्रियानं । सुत्तस्स अधिप्पायं पाकटं करोन्तो आह–एतेसं (९८–सी०) हीति आदि । हि सच्चं, एतेसं पञ्चिन्द्रियानं तानि रूपारम्मणादीनि । मनेना ति पदं पच्चनुभुय्यमानानीति पदे कत्ता । अपिसद्दो अरुचिसूचनत्थो । रूपारम्मणादीनि येवा ति तेसं गोचरविसयं ति वुत्तत्ता रूपादीनि पञ्चिन्द्रियानं सन्तकानि, कस्मा रूपारम्मणादीनि येव नाम न धम्मारम्मणं । यदि च रूपादीनं धम्मारम्मणभावे[3] असति[3] तेसं गोचरविसयं ति वचनं अयुत्तं सिया ति अधिप्पायो । रूपादीनं धम्मारम्मणभावानापज्जने[4] अञ्ञं हेतुं ञापेन्तो आह–दिब्बचक्खू ति आदि[5] । आदि-सद्देन दिब्बसोत-इद्धिविधञाणानि सङ्गय्हन्ति । चसद्दो मनो[6] तेसं ति एत्थ वुत्तमनोविञ्ञाणं सम्पिण्डेति । रूपादीनि आरम्मणानि एतेसं ति रूपादि-आरम्मणानि । तेसं भावो रूपादि-आरम्मणत्तं । अपिसद्दो वुत्तहेतुं अपेक्खति । अनापाथगतानेव हीति आदि दळ्हीकरणं ।

---

१. इमिना–सी० । २. पटिक्खिपितब्बं च –सी० । ३-३. धम्मारम्मणाभावे सति-सी० । ४. धम्मारम्मणं भावना०–सी० । ५. आदि–सी० । ६. मनोधातु–सी० ।

तत्थ एकेकं आरम्मणं द्वीसु द्वीसु द्वारेसु आपाथमागच्छति। रूपारम्मणं हि चक्खुप्पसादं घट्टेत्वा तं खणं येव मनोद्वारे आपाथमागच्छति; भवंगचलनस्स पच्चयो होती ति अत्थो। सद्द-गन्ध-रस-फोट्ठब्बारम्मणेसु पि एसेव नयो। यथा हि सकुणो आकासेनागन्त्वा रुक्खग्गे निलीयमानो व रुक्खसाखं च घट्टेति, छाया च'स्स पठवियं पटिहञ्ञति साखाघट्टनछायाफरणानि अपुब्बं अचरिमं एकक्खणे येव भवन्ति, एवं पच्चुप्पन्नरूपादीनं चक्खुप्पसादादिघट्टनं च भवंगचलनसमत्थताय मनोद्वारे आपाथगमनं च अपुब्बं अचरिमं एकक्खणे येव होति। ततो भवङ्गं विच्छिन्दित्वा चक्खुद्वारादीसु उप्पन्नानं आवज्जनादीनं वोट्ठब्बनपरियोसानानं अनन्तरा तेसं आरम्मणानं अञ्ञतरस्मिं इदं महाचित्तं उप्पज्जति।

सुद्धमनोद्वारे पन पसादघट्टनकिच्चं नत्थि। पकतिया दिट्ठ-सुत-घायित-सायित-फुट्ठवसेन एव एतानि आरम्मणानि आपाथमागच्छन्ति। कथं? इधेकच्चो कतसुद्धाकम्मं हरितालमनोसिलादिवण्णविचित्तं पग्गहितनानप्पकारधजपताकं मालादामविनद्धं दीपमालापरिक्खित्तं अतिमनोरमाय सिरिया विरोचमानं अलंकतपटियत्तं महाचेतियं पदक्खिणं कत्वा सोळससु पादपिट्ठिकासु पञ्चपतिट्ठितेन वन्दित्वा अञ्जलिं पग्गय्ह ओलोकेन्तो बुद्धारम्मणं पीतिं गहेत्वा तिट्ठति। तस्स एवं चेतियं पस्सित्वा बुद्धारम्मणं पीतिं निब्बत्तेत्वा अपरभागे यत्थकत्थचि गतस्स रतिट्ठानदिवाट्ठानेसु निसिन्नस्स आवज्जमानस्स अलंकतपटियत्तं महाचेतियं चक्खुद्वारे आपाथं आगतसदिसमेव होति, पदक्खिणं कत्वा चेतियवन्दनकालो विय होति। एवं ताव दिट्ठवसेन रूपारम्मणं आपाथमागच्छति।

मधुरेन पन सरेन धम्मकथिकस्स वा धम्मकथं कथेन्तस्स, सरभाणकस्स वा सरेन भणन्तस्स सद्दं सुत्वा अपरभागे यत्थकत्थचि निसीदित्वा आवज्जमानस्स धम्म-

---

तत्था ति रूपारम्मणादीसु, निद्धारणं। मनोद्वारे ति भवङ्गं अधिप्पेतं। मनोद्वारे आपाथं आगच्छतीति पदस्स अत्थं दस्सेतुं भवङ्गचलनस्सा ति[1] वुत्तं। भवङ्गचलनस्सा ति भवङ्गस्स चलनक्रियाय पच्चयो, न आरम्मणपच्चयो[2]। वुत्तमेवत्थं उपमाय साधेन्तो आह–यथा हीति आदि। ततो ति आरम्मणस्स आपाथगमनतो। विच्छिन्दित्वा[3] उप्पन्नानं तेसं आरम्मणानं ति निद्धारणे छट्ठी[4]।

सुद्धमनोद्वारे[5] पन किं अत्थीति मनसिकत्वा आह–पकतिया ति आदि। आपाथं आगच्छन्ति मनोद्वारे। इधा ति लोके। सुधाय कम्मं सुधाकम्मं। कतं सुधाकम्मं यस्स तं कतसुधाकम्मं। हरितालमनोसिलादीनं वण्णेन विचित्तं। धजो च पटाको च धजपटाकं। नानप्पकारं धजपटाकं नान....प....पटाकं। पग्गहितं नानप्पकारधजपटाकं यस्मिं ति[6] पग्गहित....प

---

१. ०आदि–सी०। २. आरम्मणपच्चयेन पच्चयो–सी०। ३. छिन्दित्वा–सी०। ४. नत्थि–म०। ५. मनोद्वारे–सी०। ६. तं–सी०।

कथा वा सरभञ्ञं वा सोतद्वारे आपाथगतं विय होति, साधुकारं कत्वा सुणनकालो विय होति। एवं सुतवसेन सद्दारम्मणं आपाथमागच्छति।

सुगन्धं पन गन्धं वा मालं वा लभित्वा आसने वा चेतिये वा गन्धारम्मणेन चित्तेन पूजं कत्वा अपरभागे यत्थकत्थचि निसीदित्वा आवज्जमानस्स तं गन्धारम्मणं घाणद्वारे आपाथगतं विय होति, पूजाकरणकालो विय होति। एवं घायितवसेन गन्धारम्मणं आपाथमागच्छति।

पणीतं पन खादनीयं वा भोजनीयं वा सब्रह्मचारीहि सद्धिं संविभजित्वा परिभुञ्जित्वा अपरभागे यत्थकत्थचि कुद्रूसकादिभोजनं लभित्वा 'असुककाले पणीतं भोजनं सब्रह्मचारीहि सद्धिं संविभजित्वा परिभुत्तं' ति आवज्जमानस्स तं रसारम्मणं जिव्हाद्वारे आपाथगतं विय होति, परिभुञ्जनकालो विय होति। एवं सायितवसेन रसारम्मणं आपाथमागच्छति।

मुदुकं पन सुखसम्फस्सं मञ्चपीठं वा अत्थरणं वा पापुरणं वा परिभुञ्जित्वा अपरभागे यत्थकत्थचि दुक्खसेय्यं कप्पेत्वा 'असुककाले मे मुदुकं मञ्चपीठं परिभुत्तं'ति आवज्जमानस्स तं फोट्ठब्बारम्मणं कायद्वारे आपाथगतं विय होति। सुखसम्फस्सं वेदियनकालो विय होति। एवं फुट्ठवसेन फोट्ठब्बारम्मणं आपाथमागच्छति।

एवं सुद्धमनोद्वारे पसादघट्टनकिच्चं नत्थि। पकतिया दिट्ठ-सुत-घायित-सायित-फुट्ठवसेन एतानि आरम्मणानि आपाथमागच्छन्ती ति वेदितब्बानि।

इदानि पकतिया दिट्ठादीनं वसेन आपाथगमने अयमपरो पि **अट्ठकथामुत्तको नयो होति।** दिट्ठं सुतं उभयसम्बन्धं ति इमे ताव दिट्ठादयो वेदितब्बा। तत्थ 'दिट्ठं'नाम पञ्चद्वारवसेन गहितपुब्बं। 'सुतं'ति पच्चक्खतो अदिस्वा अनुस्सववसेन गहिता रूपादयो व। तेहि द्वीहि पि सम्बन्धं 'उभयसम्बन्धं' नाम। इति इमेसं पि दिट्ठादीनं वसेन एतानि मनोद्वारे आपाथमागच्छन्ती ति वेदितब्बानि।

तत्थ दिट्ठवसेन ताव आगमनं हेट्ठा पञ्चहि नयेहि वुत्तमेव।

....पटाकं। (८२-म०) मालादामेन[1] विनद्धं। दीपानं मालाय पन्तिया परिक्खित्त। पाद-पिट्ठिकासू ति चेतियस्स पादानं पिट्ठिकासु।

सरभञ्ञं ति सरेन भणनं।

कोरं रुधिरं दुस्सतीति कुद्दुसको, वण्णविपरियायो, ओस्स उत्त। आदिसद्देन वरकादिं[2] सङ्गण्हति।

उभयसम्बन्धं ति दिट्ठसुतेहि सम्बन्धं आरम्मणं। तत्था ति दिट्ठादीसु।

---

१. मालाय दामेन-सी०। २. वरकादि-सी०।

एकच्चो पन सुणाति—'भगवतो पुञ्ञातिसयनिब्बत्तं एवरूपं नाम रूपं, अतिमधुरो सद्दो 'किस्मिचि पदेसे केसंचि पुप्फानं अतिमनुञ्ञो गन्धो, केसंचि फलानं अतिमधुरो रसो, केसंचि पापुरणादीनं अतिसुखो सम्फस्सो' ति। तस्स, चक्खुप्पसादादिघट्टनं विना सुतमत्तानेव तानि रूपादीनि मनोद्वारे आपाथमागच्छन्ति। अथ'स्सेतं चित्तं तस्मिं रूपे वा सद्दे वा पसादवसेन गन्धादीसु अरियानं दातुकामतावसेन अञ्ञेहि दिन्नेसु अनुमोदनावसेन वा पवत्तति। एवं सुतवसेन एतानि मनोद्वारे आपाथमागच्छन्ति।

अपरेन यथावुत्तानि रूपादीनि दिट्ठानि वा सुतानि वा होन्ति। तस्स 'ईदिसं रूपं आयतिं उप्पज्जनकबुद्धस्सा पि भविस्सती' ति आदिना नयेन चक्खुप्पसादादिघट्टनं विना दिट्ठसुतसम्बन्धेनेव तानि मनोद्वारे आपाथमागच्छन्ति। अथ'स्स हेट्ठा वुत्तनयेनेव तेसु अञ्ञतरारम्मणं इदं चित्तं पवत्तति। एवं उभयसम्बन्धवसेन एतानि मनोद्वारे आपाथमागच्छन्ती ति।

इदं पि च मुखमत्तमेव। सद्धा-रुचि-आकार-परिवितक्क-दिट्ठिनिज्झानक्खन्ति-आदीनं पन वसेन वित्थारतो एतेसं मनोद्वारे आपाथूपगमनं वेदितब्बमेव। यस्मा पन एवं आपाथमागच्छन्तानि भूतानि होन्ति अभूतानि पि, तस्मा अयं नयो अट्ठकथायं न गहितो। एवं एकेकारम्मणं जवनं द्वीसु द्वीसु द्वारेसु उप्पज्जती ति वेदितब्बं। रूपारम्मणं हि जवनं चक्खुद्वारे पि उप्पज्जति मनोद्वारे पि। सद्दादि-आरम्मणेसु पि एसेव नयो।

तत्थ मनोद्वारे उप्पज्जमानं रूपारम्मणं जवनं दानमयं सीलमयं भावनामयं ति तिविधं होति। तेसु एकेकं कायकम्मं वचीकम्मं मनोकम्मं ति तिविधमेव होति।

अथस्सा ति तदा अस्स पुग्गलस्स।

अपरेना ति अपरेन पुग्गलेन, दिट्ठानि सुतानीति (९९–सी०) पदे कत्ता।

इदम्पि वचनं मुखमत्तमेव, सङ्खेपमत्तं ति अत्थो। अपिसद्देन केवलं इधेकच्चो कतसुधाकम्मं ति आदिवचनं सङ्खेपमत्तं, अथ खो अयमपरो पी ति आदिवचनम्पि सङ्खेपमत्तं ति दस्सेति। वित्थारं दस्सेन्तो आह सद्धा ति आदि। सद्दहनं सद्धा। रोचनं रुचि। वितक्कनं विचारणं वितक्को। आकारस्स परिवितक्को आकारपरिवितक्को। दिट्ठिया पञ्ञाय निज्झानं ओलोकनं दिट्ठिनिज्झानं। खमनं खन्ति। दिट्ठिनिज्झाने खन्ति दिट्ठिनिज्झानक्खन्ति। सद्धा च रुचि च आकारो[1] च परिवितक्को च[1] दिट्ठिनिज्झानक्खन्ति च सद्धा....प.... खन्तियो। ता आदयो येसं ते सद्धा....प...आदयो। एतेसं ति रूपारम्मणादीनं। अयं नयो अट्ठकथायं कस्मा न गहितो ति पुच्छं सन्धायाह—यस्मा ति आदि[2]। एवं सद्धादीनं वसेन आपाथं आगच्छन्तानि रूपारम्मणादीनि।

तत्था ति चक्खुद्वारमनोद्वारेसु। दानं आरब्भ पवत्तं दानमयं। तेसू ति दानमयादि-

---

१-१. आकारपरिवितक्को च–सी०। २. आदिं–सी०।

सद्द-गन्ध-रस-फोट्ठब्ब-धम्मारम्मणेसु पि एसेव नयो।

तत्थ रूपं ताव आरम्मणं कत्वा उप्पज्जमानं एतं महाकुसलं नीलपीतलोहित-ओदातवण्णेसु पुप्फवत्थधातूसु अञ्ञतरं सुभनिमित्तसंखातं इट्ठं कन्तं मनापं रजनीयं वण्णं आरम्मणं कत्वा उप्पज्जति।

ननु चेतं इट्ठारम्मणं लोभस्स वत्थु ? कथं एतं चित्तं कुसलं नाम जातं ति ? नियमितवसेन परिणामितवसेन समुदाचारवसेन आभुजितवसेना ति। यस्स हि 'कुसलमेव मया कत्तब्बं'ति कुसलकरणे चित्तं नियमितं होति, अकुसलपवत्तित्तो निवत्तित्वा कुसलकरणे येव परिणामितं, अभिण्हकरणेन कुसलसमुदाचारेनेव समुदा-चारितं, पटिरूपदेसवास-सप्पुरिसूपनिस्सय-सद्धम्मस्सवन-पुब्बेकतपुञ्ञतादीहि च उप-निस्सयेहि योनिसो च आभोगे पवत्तति, तस्स इमिना नियमितवसेन परिणामितवसेन समुदाचारवसेन आभुजितवसेन च कुसलं नाम होति।

आरम्मणवसेन पनेत्थ सोमनस्ससहगतभावो वेदितब्बो। इट्ठारम्मणस्मिं हि उप्पन्नत्ता एतं सोमनस्ससहगतं जातं। सद्धाबहुलतादीनि पेत्थ कारणानि येव। अस्स-द्धानं हि मिच्छादिट्ठीनं च एकन्तं इट्ठारम्मणभूतं तथागतरूपं पि दिस्वा सोमनस्सं न उप्पज्जति। ये च कुसलुप्पत्तियं आनिसंसं न पस्सन्ति तेसं परेहि उस्साहितानं कुसलं करोन्तानं पि सोमनस्सं उप्पज्जति। तस्मा सद्धाबहुलता विसुद्धिदिट्ठिता आनिसंसदस्साविता। एवं चेत्थ सोमनस्ससहगतभावो वेदितब्बो।

अपि च एकादसधम्मा पीतिसम्बोज्झंगस्स उप्पादाय संवत्तन्ति—बुद्धानुस्सति धम्मानुस्सति संघानुस्सति सीलानुस्सति चागानुस्सति देवतानुस्सति उपसमानुस्सति लूखपुग्गलपरिवज्जनता सिनिद्धपुग्गलसेवनता पसादनीयसुत्तन्तपच्चवेक्खणता तदधि-मुत्तता ति। इमेहि पि कारणेहेत्थ सोमनस्ससहगतभावो वेदितब्बो। इमेसं पन वित्थारो बोज्झंगविभंगे आविभविस्सति।

जवनेसु।

तत्था ति रूपादीसु, पुप्फवत्थधातूसू ति निद्धारणं। पुप्फञ्च वत्थञ्च धातु च पुप्फ-वत्थधातु।

लोभस्स वत्थू ति लोभस्स कारणं। नियमितवसेन एतं चित्तं कुसलं नाम जातं ति सम्बन्धो। यस्स हीति आदि वित्थारो। हि सच्चं, यस्स पुग्गलस्स, येन वा पुग्गलेन। अभिण्ह-करणेना ति पदं समुदाचारे ति पदे ततियाविसेसनं। कुसल ...प...नेवा ति कुसलस्स पवत्त-नेव समुदाचारितं[1] पवत्तितं चित्तं होति।

एत्था ति चित्ते। एत्था ति सोमनस्ससहगतभावे।

---

१. समुदाचारतं–म०।

कम्मतो, उपपत्तितो, इन्द्रियपरिपाकतो, किलेसदूरीभावतो इति इमेहि पनेत्थ कारकारणेहि ञाणसम्पयुत्तता वेदितब्बा। यो हि परेसं धम्मं देसेति अनवज्जानि सिप्पायतन-कम्मायतन-विज्जाठानानि सिक्खापेति धम्मकथिकं सक्कारं कत्वा धम्मं कथापेति, 'आयतिं पञ्ञवा भविस्सामी' ति पत्थनं ठपेत्वा नानप्पकारं दानं देति, तस्स एवरूपं कम्मं उपनिस्साय कुसलं उप्पज्जमानं ञाणसम्पयुत्तं उप्पज्जति। अब्यापज्जे लोके उप्पन्नस्सा पि "तस्स तत्थ सुखिनो धम्मपदा पिलवन्ति····दन्धो भिक्खवे, सतुप्पादो, अथ सो सत्तो खिप्पमेव विसेसभागी होती" [अ० २.१९७] ति इमिना नयेन उप्पत्तिं निस्साय उप्पज्जमानं कुसलं ञाणसम्पयुत्तं उप्पज्जति। तथा इन्द्रियपरिपाकं उपगतानं पञ्ञादसकप्पत्तानं इन्द्रियपरिपाकं निस्साय पि कुसलं उप्पज्जमानं ञाणसम्पयुत्तं उप्पज्जति। येहि पन किलेसा विक्खम्भिता तेसं किलेसदूरीभावं निस्साय पि उप्पज्जमानं कुसलं ञाणसम्पयुत्तं उप्पज्जति। वुत्तं पि चेतं—

योगा वे जायते भूरि अयोगा भूरिसंखयो। [ध० २८२ मग्गवग्गे]

एवं कम्मतो उपपत्तितो इन्द्रियपरिपाकतो किलेसदूरीभावतो ति इमेहि कारणेहि ञाणसम्पयुत्तता वेदितब्बा।

अपि च सत्त धम्मा धम्मविचयसम्बोज्झंगस्स उप्पादाय संवत्तन्ति—परिपुच्छकता, वत्थुविसदकिरिया, इन्द्रियसमत्तपटिपादना, दुप्पञ्ञपुग्गलपरिवज्जना, पञ्ञवन्तपुग्गलसेवना, गंभीरञाणचरियपच्चवेक्खणा, तदधिमुत्तता ति। इमेहि कारणेहेत्थ ञाणसम्पयुत्तता वेदितब्बा। इमेसं पन वित्थारो **बोज्झंगविभंगे** आविभविस्सति।

एवं ञाणसम्पयुत्तं हुत्वा उप्पन्नं चेतं असंखारेन अप्पयोगेन अनुपादाय चिन्तनताय उप्पन्नत्ता असंखारं नाम जातं। तयिदं रजनीयं वण्णारम्मणं हुत्वा उप्पज्जमानमेव तिविधेन नियमेन उप्पज्जति—दानमयं वा होति, सीलमयं वा, भावनामयं वा।

एत्था ति चित्ते। पञ्ञावा ति पि अत्थि, तेन **सद्दनीतियं** पञ्ञावा ति उदाहरणं वुत्तं। तस्स तत्था ति तस्स सत्तस्स तस्मिं रूपलोके। सतुप्पादो ति सतिया उप्पादो। अत्था ति तदा सति-उप्पज्जनकाले[1]।

परिपुच्छकता ति खन्ध-धातु-आयतन-इन्द्रिय-बल-बोज्झङ्ग-झान-समथ-विपस्सनानं अत्थसन्निस्सितपरिपुच्छाबहुलता[2]। वत्थुविसदक्रिया ति सरीरादि-अज्झत्तिकचीवरादिबाहिरानं वत्थूनं विसदभावकरणं। इन्द्रियसमत्तपटिपादना ति सद्धादीनं इन्द्रियानं समभावकरणं। दुप्पञ्ञपुग्गलपरिवज्जना ति (८३—म०) खन्धादिभेदे अनोगाळ्हपञ्ञानं दुम्मेधपुग्गलानं आरका परिवज्जनं (१००—सी०)। पञ्ञवन्तपुग्गलसेवना ति समपञ्ञासलक्खणपरिगाहिताय उदयवयपञ्ञाय समन्नागतपुग्गलसेवना। **बोज्झङ्गसंयुत्तट्ठकथायं** पन गम्भीरञाणचरियपच्चवेक्खणा ति गम्भीरेसु खन्धादीसु पवत्ता[3] गम्भीरपञ्ञापभेदपच्चवेक्खणा ति[4] वुत्तं, तदधिमुत्तता ति ठाननिसज्जादीसु धम्मविचयसम्बोज्झङ्गसमुट्ठापनत्थं निन्नपोणपब्भारचित्तता।

असङ्खारेना ति आदि वेवचनं। तयिदं ति तं इदं चित्तं।

---

१. सतिया उप्प०—सी०। २. अत्थसन्निस्सितं परिपुच्छा०—सी०। ३. पवत्ताय—सी०। ४. गम्भीरञाणाय पभेद०—सी०।

कथं ? यदा हि नीलपीतलोहितोदातेसु पुप्फादीसु अञ्ञतरं लभित्वा वण्णवसेन आभुजित्वा 'वण्णदानं मय्हं' ति बुद्धरतनादीनि पूजेति, तदा दानमयं होति। तत्रिदं वत्थु—भण्डागारिकसंघमित्तो किर एकं सुवण्णखचित्तं वत्थं लभित्वा इदं पि वत्थं सुवण्णवण्णं, सम्मासंबुद्धो पि सुवण्णवण्णो, सुवण्णवण्णं वत्थं सुवण्णवण्णस्सेव अनुच्छविकं, अम्हाकं च वण्णदानं भविस्सती ति महाचेतिये आरोपेसि। एवरूपे काले दानमयं होती ति वेदितब्बं। यदा पन तथारूपमेव देय्यधम्मं लभित्वा 'मय्हं कुलवंसो, कुलतन्ति कुलप्पवेणि एसा, वत्तं एतं'ति बुद्धरतनादीनि पूजेति तदा सीलमयं होति। यदा पन तादिसेन वत्थुना रतनत्तयपूजं कत्वा 'अयं वण्णो खयं गच्छिस्सति, वयं गच्छिस्सती'ति खयवयं पट्ठपेति, तदा भावनामयं होति।

दानमयं पन हुत्वा वत्तमानं पि यदा तीणि रतनानि पूजेन्तो पुत्तदार-दासकम्मकर-पोरिसादयो पि आणापेत्वा पूजापेति तदा वचीकम्मं होति। तदा तदेव वुत्तप्पकारं विज्जमानकवत्थुं आरब्भ वण्णदानं दस्सामी ति चिन्तेति तदा मनोकम्मं होति। विनयपरियायं पत्वा हि 'दस्सामि करिस्सामी'ति वाचा भिन्ना होती ति इमिना लक्खणेन दानमयं नाम होति। अभिधम्मपरियायं पत्वा पन विज्जमानकवत्थुं आरब्भ 'दस्सामी'ति मनसा चिन्तितकालतो पट्ठाय कुसलं होति। अपरभागे कायेन वा वाचाय वा कत्तब्बं करिस्सती ति वुत्तं। एवं दानमयं कायवचीमनोकम्मवसेन तिविधं होति।

यदा पन वुत्तप्पकारं वत्थुं लभित्वा कुलवंसादिवसेन सहत्था रतनत्तयं पूजेति तदा सीलमयं वा कायकम्मं होति। यदा कुलवंसादिवसेन पुत्तदारादयो आणापेत्वा पूजापेति तदा वचीकम्मं होति। यदा 'मय्हं कुलवंसो, कुलतन्ति कुलप्पवेणि एसा, वत्तं एतं'ति विज्जमानकवत्थुं आरब्भ 'वण्णदानं दस्सामी'ति चिन्तेति तदा मनोकम्मं होति। एवं सीलमयं कायवचीमनोकम्मवसेन तिविधं होति।

यदा पन तं वुत्तप्पकारं वत्थुं लभित्वा तीणि रतनानि पूजेत्वा चंकमन्तो खयवयं पट्ठपेति तदा भावनामयं कायकम्मं वा होति। वाचाय सम्मसनं पट्ठपेन्तस्स वचीकम्मं होति, कायङ्गवाचङ्गानि अचोपेत्वा मनसा व संमसनं पट्ठपेन्तस्स मनोकम्ममेव होति। एवं भावनामयं कायवचीमनोकम्मवसेन तिविधं होति।

तत्रा ति दानमयभावे। भण्डागारिकसंघमित्तो ति दुट्ठगामणिरञ्ञो[1] भण्डागारिकसंघमित्तो। महाचेतिये ति दुट्ठगामणिरञ्ञा कते महाचेतिये।

विनयपरियायं····प०····कत्तब्बं करिस्सामीति वचनं अट्ठकथायं वुत्तं आचरियेहि।

अचोपेत्वा ति अचालेत्वा। एत्था ति निद्देसवारे। विवि····प०···वसेना ति पदं दस्सेसीति पदे ततिया-विसेसनं। कम्मद्वारेहीति कम्मानं द्वारेहि।

---

१. दुट्ठगामिनी०—सी०।

एवमेत्थ रूपारम्मणं कुसलं विविधपुञ्ञकिरियवत्थुवसेन नवहि कम्मद्वारेहि भाजेत्वा दस्सेसि **धम्मराजा**।

सद्दारम्मणादिसु पि एसेव नयो। भेरिसद्दादीसु हि रजनीयसद्दं आरम्मणं कत्वा हेट्ठा वुत्तनयेनेव तीहि नियमेहेतं कुसलं उप्पज्जति। तत्थ सद्दं कन्दमूलं विय उप्पाटेत्वा नीलुप्पलहत्थकं विय च हत्थे ठपेत्वा दातुं नाम न सक्का, सवत्थुकं पन कत्वा देन्तो सद्ददानं देति नाम। तस्मा यदा 'सद्ददानं दस्सामी'ति भेरिमुतिङ्गादीसु अञ्ञतरतुरियेन तिण्णं रतनानं उपहारं करोति 'सद्ददानं मे'ति भेरि-आदीनि ठपापेति, धम्मकथिकभिक्खूनं सरभेसज्जतेलफाणितादीनि देति, धम्मसवणं घोसेति, सरभञ्ञं भणति, धम्मकथं कथेति, उपनिसिन्नककथं अनुमोदनकथं कथेति, तदा दानमयं होति। यदा एतदेव विधानं कुलवंसादिवसेन वत्तसीसेन करोति तदा सीलमयं होति। यदा सब्बं पेतं कत्वा अयं एत्तको सद्दो ब्रम्हलोकप्पमाणो पि हुत्वा 'खयं गमिस्सति, वयं गमिस्सती'ति सम्मसनं पट्ठपेति तदा भावनामयं होति।

तत्थ दानमयं ताव यदा भेरि-आदीनि गहेत्वा सहत्था उपहारं करोति, निच्चूपहारत्थाय ठपेन्तो पि सहत्था ठपेति, 'सद्ददानं मे'ति धम्मस्सवणं घोसेतुं गच्छति, धम्मकथं सरभञ्ञं कातुं वा गच्छति, तदा कायकम्मं होति। यदा 'गच्छथ ताता, अम्हाकं सद्ददानं तिण्णं रतनानं उपहारं करोथा'ति आणापेति, 'सद्ददानं मे'ति चेतियङ्गणे 'इमं भेरिं, इमं मुतिङ्गं ठपेथा'ति आणापेति, सयमेव धम्मसवणं घोसेति, धम्मकथं कथेति, सरभञ्ञं भणति, तदा वचीकम्मं होति। यदा कायङ्गवाचङ्गानि अचोपेत्वा 'सद्ददानं दस्सामी'ति विज्जमानकवत्थुं मनसा परिच्चजति, तदा मनोकम्मं होति।

सीलमयं पि 'सद्ददानं नाम मय्हं कुलवंसो कुलतन्ति कुलप्पवेणी' ति भेरि-आदीनि सहत्था उपहारं करोन्तस्स, भेरि-आदीनि सहत्था चेतियङ्गणादिसु ठपेन्तस्स, धम्मकथिकानं सरभेसज्जं सहत्था ददन्तस्स, वत्तसीसेन धम्मस्सवण-घोसण-धम्मकथा-कथन-सरभञ्ञभणनत्थाय च गच्छन्तस्स कायकम्मं होति। 'सद्ददानं नाम अम्हाकं कुलवंसो कुलतन्ति कुलप्पवेणि, गच्छथ, ताता, बुद्धरतनादीनं उपहारं करोथा' ति आणापेन्तस्स कुलवंसादिवसेनेव अत्तना धम्मकथं वा सरभञ्ञं वा करोन्तस्स च वचीकम्मं होति। 'सद्ददानं नाम मय्हं कुलवंसो सद्ददानं दस्सामी' ति कायङ्गवाचङ्गानि अचोपेत्वा मनसा व विज्जमानकवत्थुं परिच्चजन्तस्स मनोकम्मं होति।

भावनामयं पि यदा चंकमन्तो सद्दे खयवयं पट्ठपेति तदा कायकम्मं होति। कायङ्गं पन अचोपेत्वा वाचाय संमसन्तस्स वचीकम्मं होति। कायङ्गवाचङ्गानि अचोपेत्वा मनसा व सद्दायतनं सम्मसन्तस्स मनोकम्मं होति।

एवं सद्दारम्मणं पि कुसलं तिविधपुञ्ञकिरियवत्थुवसेन नवहि कम्मद्वारेहि भाजेत्वा दस्सेसि **धम्मराजा**।

भेरिसद्दादिसु हीति आदि वित्थारो। तत्था ति दानमयादीसु, निद्धारणं। नीलुप्पलहत्थकं ति नीलुप्पलकलापं। उपनिसिन्नकथं ति अत्तनो समीपे निसिन्नकस्स कथं।

मूलगन्धादीसु पि रजनीयगन्धं आरम्मणं कत्वा हेट्ठा वुत्तनयेनेव तीहि नियमेहेतं कुसलं उप्पज्जति। तत्थ यदा मूलगन्धादीसु यं किञ्चि गन्धं लभित्वा गन्धवसेन आभुजित्वा 'गन्धदानं मय्हं'ति बुद्धरतनादीनि पूजेति, तदा दानमयं होती ति सब्बं वण्णदाने वुत्तनयेनेव वित्थारतो वेदितब्बं। एवं गन्धारम्मणं पि कुसलं तिविधपुञ्ञकिरियवत्थुवसेन नवहि कम्मद्वारेहि भाजेत्वा दस्सेसि धम्मराजा।

मूलरसादीसु पन रजनीयरसं आरम्मणं कत्वा हेट्ठावुत्तनयेनेव तीहि नियमेहेतं कुसलं उप्पज्जति। तत्थ यदा मूलरसादीसु यं किञ्चि रजनीयं रसवत्थुं लभित्वा रसवसेन आभुजित्वा 'रसदानं मय्हं'ति देति परिच्चजति, तदा दानमयं होती ति सब्बं वण्णदाने वुत्तनयेनेव वित्थारतो वेदितब्बं। सीलमये पनेत्थ 'संघस्स अदत्वा परिभुञ्जनं नाम अम्हाकं न आचिण्णं' ति द्वादसन्नं भिक्खुसहस्सानं दापेत्वा सादुरसं परिभुत्तस्स दुट्ठगामणि-अभयरञ्ञो वत्थुं आदिं कत्वा महा-अट्ठकथायं वत्थूनि आगतानि। अयमेव विसेसो। एवं रसारम्मणं पि कुसलं तिविधपुञ्ञकिरियवत्थुवसेन नवहि कम्मद्वारेहि भाजेत्वा दस्सेसि धम्मराजा।

फोट्ठब्बारम्मणे पि पठवीधातु तेजोधातु वायोधातू ति तीणि महाभूतानि फोट्ठब्बारम्मणं नाम। इमस्मिं ठाने एतेसं वसेन योजनं अकत्वा मञ्चपीठादिवसेन कातब्बा। यदा हि मञ्चपीठादिसु यं किंचि रजनीयं फोट्ठब्बवत्थुं लभित्वा फोट्ठब्बवसेन आभुजित्वा 'फोट्ठब्बदानं मय्हं'ति देति परिच्चजति, तदा दानमयं होती ति सब्बं वण्णदाने वुत्तनयेनेव वित्थारतो वेदितब्बं। एवं फोट्ठब्बारम्मणं पि कुसलं तिविधपुञ्ञकिरियवत्थुवसेन नवहि कम्मद्वारेहि भाजेत्वा दस्सेसि धम्मराजा।

धम्मारम्मणे पन छ अज्झत्तिकायतनानि, तीणि लक्खणानि, तयो अरूपिनो खन्धा, पण्णरससुखुमरूपानि, निब्बानपञ्ञत्ती ति इमे धम्मायतने परियापन्ना च, अपरियापन्ना च, धम्मा धम्मारम्मणं नाम। इमस्मिं पन ठाने एतेसं वसेन योजनं अकत्वा ओजदान-पानदान-जीवितदानवसेन कातब्बा। ओजादीसु हि रजनीयं धम्मारम्मणं आरम्मणं कत्वा हेट्ठा वुत्तनयेनेव तीहि नियमेहेतं कुसलं उप्पज्जति।

तत्था ति दानमयादीसु। आभुजित्वा ति आभोगं कत्वा।

एत्था ति दानमयादीसु, निद्धारणं। गामिनी-अभयरञ्ञो[1] वत्थु महावंसे दीपवंसे च वुत्तनयेन वेदितब्बं। वुत्तञ्चेतं महावंसे (द०—तुसितपुरगमनवण्णनायं ५५ गाथा)—

सरकभत्तगाहको, तिस्सत्थेरो महिद्धिको।
द्वादसन्नं सहस्सानं, भिक्खूनं संविभाजिय॥
पियङ्गुदीपके तस्मिं, अयम्पि[2] परिभुञ्जसीति[2]।

एतेसं ति पथवीधातु-आदीनं।

धम्मारम्मणं नामा ति योजेतब्बं। एतेसं ति छ-अज्झत्तिकायतनादीनं।

---

१. गामणि-आभतरञ्ञो—म०। २-२. समये परिभुञ्जि सो ति—सी०।

तत्थ यदा 'ओजदानं मय्हं'ति सप्पिनवनीतादीनि देति, पानदानं ति अट्ठ पानानि देति, जीवितदानं ति सलाकभत्त-पक्खिकभत्त-संघभत्तादीनि देति, अफासुकभिक्खूनं भेसज्जं देति, वेज्जं पच्चुपट्ठापेति, जालं फालापेति, कुमिनं विद्धंसापेति, सकुणपञ्जरं विद्धंसापेति, बन्धनमोक्खं कारापेति, 'मा-घात'-भेरिं चारापेति, अञ्ञानि पि जीवितपरित्ताणत्थं एवरूपानि करोति तदा दानमयं होति। यदा पन 'ओजदान-पानदान-जीवितदानानि मय्हं कुलवंसो कुलतन्ति कुलप्पवेणी' ति च वत्तसीसेन ओजदानादीनि पवत्तेति तदा सीलमयं होति। यदा धम्मारम्मणस्मिं खयवयं पट्ठपेति तदा भावनामयं होति।

दानमयं पन हुत्वा पवत्तमानं पि यदा ओजदान-पानदान-जीवितदानानि सहत्था देति, तदा कायकम्मं होति। यदा पुत्तदारादयो आणापेत्वा दापेति, तदा वचीकम्मं होति। यदा कायङ्गवाचङ्गानि अचोपेत्वा ओजदान-पानदान-जीवितदानवसेन विज्जमानकवत्थुं 'दस्सामी'ति मनसा चिन्तेति, तदा मनोकम्मं होति।

यदा पन वुत्तप्पकारं विज्जमानकवत्थुं कुलवंसादिवसेन सहत्था देति, तदा सीलमयं कायकम्मं होति। यदा कुलवंसादिवसेनेव पुत्तदारादयो आणापेत्वा दापेति, तदा वचीकम्मं होति। यदा कुलवंसादिवसेन वुत्तप्पकारं विज्जमानकवत्थुं 'दस्सामी' ति मनसा चिन्तेति, तदा मनोकम्मं होति।

चंकमित्वा धम्मारम्मणे खयवयं पट्ठपेन्तस्स पन भावनामयं कायकम्मं होति। कायङ्गं अचोपेत्वा वाचाय खयवयं पट्ठपेन्तस्स वचीकम्मं होति। कायङ्गवाचङ्गानि अचोपेत्वा मनसा व धम्मारम्मणे खयवयं पट्ठपेन्तस्स मनोकम्मं होति। एवं भावनामयं कायवचीमनोकम्मवसेन तिविधं होति। एवमेत्थ धम्मारम्मणं कुसलं तिविधपुञ्ञकिरियवत्थुवसेन नवहि कम्मद्वारेहि भाजेत्वा दस्सेसि धम्मराजा।

एवमिदं चित्तं नानावत्थुसु नानारम्मणवसेन दीपितं। इदं पन एकवत्थुस्मिं पि नानारम्मणवसेन लब्भति येव। कथं? चतूसु हि पच्चयेसु चीवरे छ आरम्मणानि लब्भन्ति—नवरत्तस्स हि चीवरस्स वण्णो मनापो दस्सनीयो होति, इदं वण्णारम्मणं। परिभोगकाले पन पटपटसद्दं करोति, इदं सद्दारम्मणं। यो तत्थ काळकच्छकादिगन्धो, इदं गन्धारम्मणं। रसारम्मणं पन परिभोगरसवसेन कथितं। या तत्थ सुखसम्फस्सता,

---

अट्ठ पानानीति—

मधुमुद्दिकसालूक—चोचमोचाम्बजम्बुजं।[1]
फारुसं[2] नाग्गिसन्तत्तं पानकं यामकालिकं॥

संघभत्तादीनीति आदि-सद्देन उद्देसभत्त-निमन्तनभत्तादीनि सङ्गण्हन्ति।

तत्थ काळकच्छकादिगन्धो ति[3] तस्मिं चीवरे काळकच्छकादीनं रजनरुक्खतचादीनं गन्धो।

---

१. ०मोचम्ब०–सी०। २. फारुस्सं–सी०। ३. कालकच्छिकादि०–सी०।

इदं फोट्ठब्बारम्मणं। चीवरं पटिच्च उप्पन्ना सुखा वेदना, इदं धम्मारम्मणं। पिण्डपाते रसारम्मणं निप्परियायेनेव लब्भति। एवं चतूसु पच्चयेसु नानारम्मणवसेन योजनं कत्वा दानमयादिभेदो वेदितब्बो।

इमस्स पन चित्तस्स आरम्मणमेव निबद्धं, विना आरम्मणेन अनुप्पज्जनतो। द्वारं पन अनिबद्धं। कस्मा ? कम्मस्स अनिबन्धत्ता। कम्मस्मिं हि अनिबद्धे द्वारं पि अनिबद्धमेव होति।

द्वारकथा

कायकम्मद्वारं

इमस्स पन अत्थस्स पकासनत्थं इमस्मिं ठाने महा-अट्ठकथायं द्वारकथा कथिता। तत्थ तीणि कम्मानि, तीणि कम्मद्वारानि, पञ्च विञ्ञाणानि, पञ्च विञ्ञाणद्वारानि, छ फस्सा, छ फस्सद्वारानि, अट्ठ असंवरा, अट्ठ असंवरद्वारानि, अट्ठ संवरा, अट्ठ संवरद्वारानि, दस अकुसलकम्मपथा, दस कुसलकम्मपथा ति, इदं एत्तकं द्वारकथाय मातिकाठपनं नाम।

तत्थ किञ्चा पि तीणि कम्मानि पठमं वुत्तानि, तानि पन ठपेत्वा आदितो ताव तीणि कम्मद्वारानि भाजेत्वा दस्सितानि। कतमानि तीणि ? कायकम्मद्वारं, वचीकम्मद्वारं, मनोकम्मद्वारं ति।

तत्थ चतुब्बिधो कायो—उपादिन्नको, आहारसमुट्ठानो, उतुसमुट्ठानो, चित्तसमुट्ठानो ति। तत्थ चक्खायतनादीनि जीवितिन्द्रियपरियन्तानि अट्ठ कम्मसमुट्ठानरूपानि पि, कम्मसमुट्ठानानेव चतस्सो धातुयो वण्णो गन्धो रसो ओजा ति अट्ठ उपादिन्नककायो नाम। तानेव अट्ठ आहारजानि आहारसमुट्ठानिककायो नाम। अट्ठ उतुजानि उतुसमुट्ठानिककायो नाम। अट्ठ चित्तजानि चित्तसमुट्ठानिककायो नाम।

द्वारकथावण्णना

कायकम्मद्वारवण्णना

तत्था ति द्वारकथायं। तत्था ति मातिकाथपने[1]।

तत्था ति (१०१–सी०) कम्मद्वारं ति[2] वचने।

तत्था ति[3] चतुब्बिधे काये, निद्धारणे भुम्मं। चक्खायतनादीनीति आदिसद्देन सोतघानजिव्हाकाय (८४-म०)-इत्थिपुरिसिन्द्रियानि सङ्गय्हन्ति। अट्ठकम्मसमुट्ठानरूपानि पि कम्मसमुट्ठानानेव उपादिन्नककायो नामा ति योजना। अपिसद्देन[4] न केवलं चतुधातु-आदीनि अट्ठरूपानि उपादिन्नककायो नाम, अथ खो, चक्खादीनि अट्ठरूपानि उपादिन्नककायो नामा ति ञापेति। अथवा अट्ठकम्मसमुट्ठानरूपानि पि उपादिन्नककायो नाम। चतस्सो ....प०.... ओजा ति अट्ठरूपानि कम्मसमुट्ठानानेव उपादिन्नककायो नामा ति सम्बन्धो। समुट्ठानानेवा ति पदं अट्ठ

१. ०ठपने–सी०। २. कायकम्म०–सी०। ३. ०तस्मिं–सी०। ४. अपि सद्दे–सी०।

तेसु कायकम्मद्वारं ति नेव उपादिन्नककायस्स नामं न इतरेसं। चित्तसमुट्ठानेसु पन अट्ठसु रूपेसु एका विञ्ञत्ति अत्थि, इदं कायकम्मद्वारं नाम। यं सन्धाय वुत्तं—"कतमं तं रूपं कायविञ्ञत्ति ? या कुसलचित्तस्स वा, अकुसलचित्तस्स वा, अब्याकतचित्तस्स वा, अभिक्कमन्तस्स वा पटिक्कमन्तस्स वा, आलोकेन्तस्स वा विलोकेन्तस्स वा, सम्मिञ्जेन्तस्स वा पसारेन्तस्स वा, कायस्स थम्भना संथम्भना संथम्भितत्तं, विञ्ञत्ति विञ्ञापना विञ्ञापितत्तं, इदं तं रूपं कायविञ्ञत्ती" [§६३६] ति।

'अभिक्कमिस्सामि पटिक्कमिस्सामी' ति हि चित्तं उप्पज्जमानं रूपं समुट्ठापेति। तत्थ या पठवीधातु आपोधातु तेजोधातु वायोधातु तन्निस्सितो वण्णो गन्धो रसो ओजा ति इमेसं अट्ठन्नं रूपकलापानं अब्भन्तरे चित्तसमुट्ठाना वायोधातु, सा अत्तना सहजातं रूपं कायं संथंभेति सन्धारेति चालेति अभिक्कमापेति पटिक्कमापेति। तत्थ एकावज्जनवीथियं सत्तसु जवनेसु पठमचित्तसमुट्ठिता वायोधातु संथम्भेतुं सन्धारेतुं सक्कोति, अपरापरं पन चालेतुं न सक्कोति। दुतियादीसु पि एसेव नयो। सत्तमचित्तेन पन समुट्ठिता वायोधातु हेट्ठा छहि चित्तेहि समुट्ठितं वायोधातुं उपत्थम्भनपच्चयं लभित्वा अत्तना सहजातं रूपकायं संथंभेतुं सन्धारेतुं चालेतुं अभिक्कमापेतुं पटिक्कमापेतुं आलोकापेतुं विलोकापेतुं सम्मिञ्जापेतुं पसारेतुं सक्कोति। तेन

रूपानीति पदस्स विसेसनं। एवसद्देन कम्मजानेव अट्ठरूपानि उपादिन्नककायो नाम, न आहार-उतुचित्तजानि उपादिन्नककायो ति ञापेति। तानेवा ति चतुधातु-आदीनि रूपानि।

तेसू ति उपादिन्नककायादीसु। कायकम्मद्वारं ति इदं कस्स नामं ति आह—चित्तसमुट्ठानेसू ति आदि। रूपेसू ति पदं अत्थीति पदे आधारो। यं सन्धाय वुत्तं ति यं रूपं सन्धाय कतमं ....प०.... कायविञ्ञत्ती ति वचनं भगवता वुत्तं। या ति पदं थम्भनादीसु योजेतब्बं। कुसलचित्तस्सा ति आदि कायस्सा ति पदे सम्बन्धो। कुसलचित्तं[1] अस्स पुग्गलस्सा ति कुसलचित्तो। अथवा कुसलचित्तस्स[2] वा ...प०.... अब्याकतचित्तस्स वा ति एत्थ करणत्थे छट्ठी। कुसलचित्तेन वा अकुसलचित्तेन वा अब्याकतचित्तेन वा उप्पन्ना कायस्स थम्भना ति सम्बन्धो। अभिक्कमन्तस्स वा पुग्गलस्स ....प०... वा वासद्दो विकप्पनत्थो।

अभिक्कमिस्सामीति आदि वित्थारो। कथं पन वायोधातुवसेन थम्भनादयो होन्तीति आह तत्था ति आदि। तत्था ति तस्मिं उप्पज्जमानचित्तक्खणे। या वायोधातु सा वायोधातु। तत्था ति तासु चितसमुट्ठितवायोधातूसु, निद्धारणं। एकावज्जनवीथियं ति मनोद्वारवीथिं सन्धाय वुत्तं। पञ्चद्वारवीथियं हि द्वे आवज्जनानि उप्पज्जन्ति, मनोद्वारवीथियं पन मनोद्वारावज्जनमेव। एकं आवज्जनं मनोद्वारावज्जनं एतिस्सा ति एकावज्जना। एकावज्जना च सा वीथि चा ति एकावज्जनवीथि। समुट्ठिता वायोधातू ति पदं सक्कोतीति पदे कत्ता। तेना ति तेन

---

१. कुसलं चित्तं—सी०। २. कुसलस्स चित्तस्स—सी०।

गमनं नाम जायति, आगमनं नाम जायति, गमनागमनं नाम जायति। 'योजनं गतो दसयोजनं गतो' ति वत्तब्बतं आपज्जापेति।

यथा सत्तहि युगेहि आकड्ढितब्बे सकटे पठमयुगे युत्तगोणा युगं ताव संथंभेतुं सन्धारेतुं सक्कोन्ति, चक्कं पन न पवत्तेन्ति; दुतियादीसु पि एसेव नयो; सत्तमयुगे पन गोणे योजेत्वा यदा छेको सारथि धुरे निसीदित्वा योत्तानि आदाय सब्बपुरिमतो पट्ठाय पतोदलट्ठिया गोणे आकोटेति, तदा सब्बे व एकबला हुत्वा धुरं च सन्धारेन्ति चक्कानि च पवत्तेन्ति। 'सकटं गहेत्वा दसयोजनं गतो वीसतियोजनं गतो' ति वत्तब्बतं आपादेन्ति—एवंसम्पदमिदं वेदितब्बं।

तत्थ यो चित्तसमुट्ठानिककायो न सो विञ्ञत्ति, चित्तसमुट्ठानाय पन वायोधातुया सहजातं रूपकायं संथंभेतुं सन्धारेतु चालेतुं पच्चयो भवितुं समत्थो एको आकारविकारो अत्थि, अयं विञ्ञत्ति नाम। सा अट्ठ रूपानि विय न चित्तसमुट्ठाना। यथा पन अनिच्चादिभेदानं धम्मानं जरामरणत्ता, "जरामरणं भिक्खवे, अनिच्चं संखतं" [सं० २.२४] ति आदि वुत्तं, एवं चित्तसमुट्ठानानं रूपानं विञ्ञत्तिताय सा पि चित्तसमुट्ठाना नाम होती ति। विञ्ञापनत्ता पनेसा विञ्ञत्ती ति वुच्चति। किं विञ्ञापेती ति ? एकं कायिककरणं। चक्खुपथस्मिं हि ठितो हत्थं वा पादं वा उक्खिपति, सीसं वा भमुकं वा चालेति, अयं हत्थादीनं आकारो चक्खुविञ्ञेय्यो होती ति। विञ्ञत्ति पि न चक्खुविञ्ञेय्या मनोविञ्ञेय्या एव। चक्खुना हि हत्थविकारादिवसेन विप्फन्दमानं वण्णारम्मणमेव पस्सति। विञ्ञत्तिं पन मनोद्वारिकचित्तेन चिन्तेत्वा 'इदञ्चिदं च एस कारेति मञ्ञे'ति जानाति।

कारणेन। जनो योजनं गतो... प०... (१०२–सी०) आपज्जापेतीति अनेकसहस्सवारं उप्पन्ना वायोधातू ति सम्बन्धो।

वुत्तमेवत्थं उपमाय साधेन्तो आह—यथा हीति आदि।

तत्था ति उपादिन्नकायादीसु। सा अट्ठरूपानीति अट्ठरूपानि चित्तसमुट्ठानानि विय सा विञ्ञत्ति, न[1] चित्तसमुट्ठाना। यदि चित्तसमुट्ठानाभावे सति कस्मा चित्तसमुट्ठाना ति वुत्तं ति पुच्छं सन्धायाह—यथा ति आदि।

जरामरणत्ता ति जरामरणभावतो। (८५–म०) जरामरणं एव जरामरणत्तं। विञ्ञत्ति एव विञ्ञत्तिता। तेन कारणेन वायोधातुया विकारो विञ्ञत्तीति[2] आह–विञ्ञापनत्ता ति आदि। कायिककरणं ति काये पवत्तं कायिकं। क्रियाकरणं। कायिकञ्च तं करणञ्चा ति कायिककरणं। विञ्ञत्ति अधिप्पायं विञ्ञापेति। विञ्ञत्ति पन चक्खुविञ्ञेय्या ति कोचि आसङ्केय्य, तं निवारणत्थं चक्खुपथस्मि ति आदिमाह। आकारो ति उक्खिपनादि-आकारो। मनोविञ्ञेय्या एवा ति वुत्तमत्थं साधेतुं चक्खुविञ्ञेय्या हीति आदि वुत्तं। विञ्ञत्तिं ति पदं चिन्तेत्वा जानातीति पदे पुब्बकालक्रिया। इदञ्चिदञ्च कम्मं एसो जनो जने कारेसीति मञ्ञे इति जानाति पुग्गलो।

---

१. नत्थि–सी०। २. विञ्ञत्ति वुच्चतीति–सी०।

यथा हि अरञ्ञे निदाघसमये उदकट्ठाने मनुस्सा 'इमाय सञ्ञाय इध उदकस्स अत्थिभावं जानिस्सन्ती'ति रुक्खग्गे तालपण्णादीनि बन्धापेन्ति, सुरापानद्वारे धजं उस्सापेन्ति, उद्धं वा पन रुक्खं वातो पहरित्वा चालेति, अन्तो उदके मच्छे चलन्ते उपरि बुब्बुळकानि उट्ठहन्ति, महोघस्स गतमग्गपरियन्ते तिणपण्णकसटं उस्सादितं होति। तत्थ तालपण्ण-धज-साखाचलन-बुब्बुळक-तिणपण्णकसटे दिस्वा यथा चक्खुना अदिट्ठं पि 'एत्थ उदकं भविस्सति, सुरा भविस्सति, अयं रुक्खो वातेन पहटो भविस्सति, अन्तो उदके मच्छो भविस्सति, एत्तकं ठानं अज्झोत्थरित्वा ओघो गतो भविस्सती' ति मनोविञ्ञाणेन जानाति, एवमेव विञ्ञत्ति पि न चक्खुविञ्ञेय्या मनोविञ्ञेय्या व। चक्खुना हि हत्थविकारादिवसेन विप्फन्दमानं वण्णारम्मणमेव पस्सति। विञ्ञत्तिं पन मनोद्वारिकचित्तेन चिन्तेत्वा 'इदञ्चिदं चेस कारेति मञ्ञे'ति जानाति।

न केवलं चेसा विञ्ञापनतो व विञ्ञत्ति नाम। विञ्ञेय्यतो पि पन विञ्ञत्ति येव नाम। अयं हि परेसं अन्तमसो तिरच्छानगतानं पि पाकटा होति। तत्थ तत्थ संनिपतिता हि सोण-सिगाल-काक-गोणादयो दण्डं वा लेड्डुं वा गहेत्वा पहरणाकारे दस्सिते 'अयं नो पहरितुकामो' ति ञत्वा येन वा तेन वा पलायन्ति। पाकारकुट्टादि-अन्तरितस्स पन परस्स अपाकटकालो पि अत्थि। किञ्चा पि तस्मिं खणे अपाकटा सम्मुखीभूतानं पन पाकटत्ता विञ्ञत्ति येव नाम होति।

चित्तसमुट्ठानिके पन काये चलन्ते ते-समुट्ठानिको चलति न चलती ति? सो पि तथेव चलति। तं-गतिको तदनुवत्तिको व होति। यथा हि उदके गच्छन्ते उदके पतितानि सुक्खदण्डकतिणपण्णादीनि पि उदकगतिकानेव भवन्ति, तस्मिं गच्छन्ते

वुत्तमत्थं लोकूपमाय साधेन्तो आह—यथा हीति आदि। तिणपण्णकसटं ति तिणपण्णमेव उल्लापं। उस्सारितं ति लग्गितं। दिस्वा ति पदं जानातीति पदे पुब्बकालक्रिया।

विञ्ञत्तिभावे अञ्ञम्पि कारणं दस्सेतुं न केवलञ्चा ति आदि वुत्तं। अयं हीति आदि दळ्हीकरणं।

हिसच्चं, अयं विञ्ञत्ति परेसं जनानं पाकटं[1] होति, लेड्डं ति[2] लेड्डुं। लेड्डं[3] लेड्डुं ति हि[3] परियायो। तेनेव सतिपट्ठानसंयुत्तट्ठकथायं लेड्डट्ठानं ति लेड्डुट्ठानं ति वुत्तं। धम्मपदट्ठकथायं[4] सामावतीवत्थुम्हि लेड्डं पि दिस्सति। नो ति अम्हे। येन वा तेन वा ति यत्थ वा तत्थ वा ठाने। परस्स पाकटकाले विञ्ञत्ति होतु[5] अपाकटकाले पन कथं विञ्ञत्ति नामा ति चोदनं सन्धायाह—पाकारा ति आदि। पाकारकुट्टादीहि[6] अन्तरिकस्स[7] ब्यवहितस्स।

अत्तना सहजातं रूपकायं चालेतीति वुत्तत्ता चोदनं समुट्ठापेति चित्त इच्चादिना[8]। सो पी ति तेसमुट्ठानिको[9]। तं (१०३-सी०)—गतिको ति तस्स चित्तसमुट्ठानिककायस्स गति विय गति

१. पाकटा—सी०। २. लेड्डन्ति—सी०। ३-३. लेड्डि-लेड्डने लेड्डन्ति पि—सी०। ४. ०पन—सी०। ५. नाम होति—सी०। ६. ०कुड्डा०—सी०। ७. अन्तरिकतस्स—सी०। ८. इत्यादिना—सी०। ९. ०तं अत्तनो सहजातं रूपकायो चा ति—सी० पोत्थके अधिको पाठो।

गच्छन्ति, तिट्ठन्ते तिट्ठन्ति—एवंसम्पदमिदं वेदितब्बं। एवमेसा चित्तसमुट्ठानेसु रूपेसु विञ्ञत्ति कायकम्मद्वारं नामा ति वेदितब्बा।

या पन तस्मिं द्वारे सिद्धा चेतना याय पाणं हन्ति, अदिन्नं आदियति, मिच्छाचारं चरति, पाणातिपातादीहि विरमति, इदं कायकम्मं नाम। एवं परवादिम्हि सति कायो द्वारं, तम्हि द्वारे सिद्धा चेतना कायकम्मं 'कुसलं वा अकुसलं वा'ति ठपेतब्बं। परवादिम्हि पन असति 'अब्याकतं वा'ति तिकं पूरेत्वा व ठपेतब्बं।

तत्थ यथा नगरद्वारं कतट्ठाने येव तिट्ठति, अंगुलिमत्तं पि अपरापरं न संकमति, तेग तेन पन द्वारेन महाजनो सञ्चरति, एवमेव द्वारे द्वारं न चरति, कम्मं पन तस्मिं तस्मिं द्वारे उप्पज्जनतो चरति। तेनाहु **पोराणा**—

द्वारे चरन्ति कम्मानि न द्वारा द्वारचारिनो।
तस्मा द्वारेहि कम्मानि अञ्ञमञ्ञं ववत्थिता ति॥

तत्थ कम्मेन पि द्वारं नामं लभति, द्वारेन पि कम्मं। यथा हि विञ्ञाणादीनं उप्पज्जनट्ठानानि विञ्ञाणद्वारं फस्सद्वारं असंवरद्वारं संवरद्वारं ति नामं लभन्ति, एवं कायकम्मस्स उप्पज्जनट्ठानं कायकम्मद्वारं ति नामं लभति। वचीमनोकम्मद्वारेसु पि एसेव नयो। यथा पन तस्मिं तस्मिं रुक्खे अधिवत्था देवता सिम्बलिदेवता पलासदेवता पुचिमन्ददेवता फन्दनदेवता ति तेन तेन रुक्खेन नामं लभति, एवमेव कायद्वारेन कतं कम्मं पि कायकम्मं ति द्वारेन नामं लभति। वचीकम्म मनोकम्मेसु पि एसेव नयो।

तत्थ अञ्ञो कायो, अञ्ञं कम्मं, कायेन पन कतत्ता तं कायकम्मं ति वुच्चति। तेनाहु अट्ठकथाचरिया—

सूचिया चे कतं कम्मं सूचिकम्मं ति वुच्चति।
सूची च सूचिकम्मं च अञ्ञमञ्ञं ववत्थिता॥

अस्स अत्थीति तं-गतिको। तगतिको ति वत्तब्बे पुब्बे निग्गहितागमं कत्वा वुत्तं। निग्गहितागमो पुब्बे, द्विभावो वा परो सिया ति हि वुत्तं। तदनुवत्तको ति तस्स चित्तसमुट्ठानिककायस्स अनुवत्तको। तस्मिं गच्छन्ते ति आदि उदकगतिकानेवा ति पदस्स अधिप्पायो। एवमेसा ति आदि निगमनं।

एवं द्वारं गहेत्वा[1] इदानि कम्मं दस्सेन्तो आह—या पना ति आदि। तस्मिं द्वारे सिद्धा ति या चेतना तस्मिं कायद्वारे पाकटभाववसेन सिद्धा। याया ति चेतनाय। एवं ति पाणं हनती ति आदिना नयेन, थपेतब्बं ति पदे ततिया-विसेसनं।

इदानि कम्मववत्थानं द्वारववत्थानञ्च दस्सेन्तो आह तत्था ति आदि। तत्था ति द्वारकम्मेसु (८६-म०)निद्धारणं। द्वारे कम्मानि चरन्ति पवत्तन्ति द्वारचारिनो द्वारभावेन[2] पवत्तनका द्वारा न होन्ति, तस्मा द्वारेहि करणभूतेहि[3] कम्मानि ववत्थितानि कम्मद्वारानि अञ्ञमञ्ञं ववत्थितानि[4]।

तत्था ति कायकम्मेसु। तं ति[5] कम्मं।

---

१. दस्सेत्वा–सी०। २. द्वारन्तरभावेन-सी०। ३. कारणभूतेहि-सी०। ४. ववत्थिता–सी०। ५. तं कम्मं–सी०।

वासिया चे कतं कम्मं वासिकम्मं ति वुच्चति ।
वासी च वासिकम्मं च अञ्ञमञ्ञं ववत्थिता ॥
पुरिसेन चे कतं कम्मं पुरिसकम्मं ति वुच्चति ।
पुरिसो च पुरिसकम्मं च अञ्ञमञ्ञं ववत्थिता ॥

एवमेव

कायेन च कतं कम्मं कायकम्मं ति वुच्चति ।
कायो च कायकम्मं च अञ्ञमञ्ञं ववत्थिता ति ॥

'एवं सन्ते नेव द्वारववत्थानं युज्जति, न कम्मववत्थानं । कथं ? कायविञ्ञत्तियं हि "द्वारे चरन्ति कम्मानी"ति वचनतो वचीकम्मं पि पवत्तति, तेन'स्सा कायकम्मद्वारं ति ववत्थानं न युत्तं । कायकम्मं च वचीविञ्ञत्तियं पि पवत्तति, तेन'स्स कायकम्मं ति ववत्थानं न युज्जति' । 'नो न युज्जति । कस्मा ? येभुय्यवुत्तिताय चेव तब्बहुलवुत्तिताय च । कायकम्ममेव हि येभुय्येन कायविञ्ञत्तियं पवत्तति न इतरानि, तस्मा कायकम्मस्स येभुय्येन पवत्तितो अस्सा कायकम्मद्वारभावो सिद्धो । ब्राम्हणगाम-अम्बवन-नागवनादीनं ब्राम्हणगामादिभावो विया ति द्वारववत्थानं युज्जति । कायकम्मं पन कायद्वारम्हि येव बहुलं पवत्तति अप्पं वचीद्वारे । तस्मा कायद्वारे बहुलं पवत्तितो एतस्स कायकम्मभावो सिद्धो, वनचरक-थुल्लकुमारिकादिगोचरानं वनचरकादिभावो विया ति । एवं कम्मववत्थानं पि युज्जती' ति ।

कायकम्मद्वारकथा निट्ठिता ।

तेनस्सा ति तेन कारणेन अस्सा कायविञ्ञत्तिया । तेनस्सा ति तेन अस्स कायकम्मस्स । वुत्तिताया ति वत्ततीति वुत्ति, वुत्तिनो भावो वुत्तिता । तब्बहुलवुत्तिताया ति तस्मिं कायद्वारे बहुलं वत्ततीति तब्बहुलवुत्ति, तस्स भावो···प०···ता[१] । कायकम्ममेव हीति आदि वित्थारो ।

कायकम्मद्वारवण्णना निट्ठिता

---

१. या-म० ।

वचीकम्मद्वारं

वचीकम्मद्वारकथायं पन चेतना—विरति—सद्दवसेन तिविधा वाचा नाम। तत्थ "चतूहि भिक्खवे, अंगेहि समन्नागता वाचा सुभासिता होति नो दुब्भासिता, अनवज्जा च अननुवज्जा च विञ्ञूनं" [सं० १. १८८] ति, अयं चेतना-वाचा नाम। या "चतूहि वचीदुच्चरितेहि आरति विरति"...प०....अयं वुच्चति सम्मावाचा" [विभ० २८७] ति, अयं विरति-वाचा नाम। "वाचा गिरा ब्यप्पथो उदीरणं घोसो घोसकम्मं वाचा वचीभेदो" [§६३७] ति, अयं सद्दवाचा नाम।

तासु वचीकम्मद्वारं ति नेव चेतनाय नामं न विरतिया। सहसद्दा पन एका विञ्ञत्ति अत्थि, इदं वचीकम्मद्वारं नाम। यं सन्धाय वुत्तं—"कतमं तं रूपं वचीविञ्ञत्ति ? या कुसलचित्तस्स वा अकुसलचित्तस्स वा अब्याकतचित्तस्स वा वाचा गिरा ब्यप्पथो उदीरणं घोसो घोसकम्मं वाचा वचीभेदो, अयं वुच्चति वाचा। या ताय वाचाय विञ्ञत्ति विञ्ञापना विञ्ञापितत्तं, इदं तं रूपं वचीविञ्ञत्ती" [§६३७] ति।

'इदं वक्खामि एतं वक्खामी'ति हि वितक्कयतो वितक्कविप्फारसद्दो नाम उप्पज्जति। अयं न सोतविञ्ञेय्यो मनोविञ्ञेय्यो ति महा-अट्ठकथायं आगतो। आगमट्ठकथासु पन " 'वितक्कविप्फारसद्दं' ति वितक्कविप्फारवसेन उप्पन्नं विप्पलपन्तानं सुत्तप्पमत्तादीनं सद्दं; 'सुत्वा' ति तं सुत्वा, यं वितक्कयतो तस्स सो सद्दो उप्पन्नो; तस्स वसेन 'एवं पि ते मनो, इत्थं पि ते मनो' ति आदिसती" ति वत्वा वत्थूनि पि

वचीकम्मद्वारवण्णना

वचीकम्मद्वारकथायं ति पदं वाचा नामा ति पदे आधारो। तत्था ति तिविधासु वाचासु। अननुवज्जा च विञ्ञूनं ति विञ्ञूहि अगरहिता। वदन्ति एताया ति वाचा, सद्दवाचा[1]। वचित्था ति[2] वा वाचा। सद्दो एव वाचा सद्दवाचा।

तासु तिविधासु वाचासु। सहसद्दा ति सह सद्देन वत्ततीति सहसद्दा[3]। कत्तब्बं उच्चारितब्बं त्ति कम्मं। घोसो एव कम्मं घोसकम्मं।

इदं वक्खामि" प०""आगतो ति हि सच्चं, इदं वचनं वक्खामि एतं वचनं वक्खामि इति एवं वितक्कयतो पुग्गलस्स वितक्कविप्फारसद्दो नाम उप्पज्जति, अयं वितक्कविप्फारसद्दो

---

१. ०ति–सी० । २. वचितब्बा ति–सी० । ३. सहसद्दो–सी० ।

कथितानि। पट्ठाने पि 'चित्तसमुट्ठानं सद्दायतनं सोतविञ्ञाणस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो''ति आगतं। तस्मा विना विञ्ञत्तिघटनाय उप्पज्जमानो असोतविञ्ञेय्यो वितक्कविप्फारसद्दो नाम नत्थि।

'इदं वक्खामि एतं वक्खामी' ति उप्पज्जमानं पन चित्तं पठवीधातु आपोधातु तेजोधातु वायोधातु वण्णो गन्धो रसो ओजा ति अट्ठरूपानि समुट्ठापेति। तेसं अब्भन्तरे चित्तसमुट्ठाना पठवीधातु उपादिन्नकं संघट्टयमाना व उप्पज्जति। तेन धातुसंघट्टनेन सहेव सद्दो उप्पज्जति। अयं चित्तसमुट्ठानो सद्दो नाम। अयं न विञ्ञत्ति। तस्सा पन चित्तसमुट्ठानाय पठवीधातुया उपादिन्नकघट्टनस्स पच्चयभूतो एको आकारविकारो अत्थि, अयं वचीविञ्ञत्ति नाम। इतो परं सा अट्ठरूपानि विय न चित्तसमुट्ठाना ति आदि सब्बं हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

इधा पि हि 'तिस्स-दत्त-मित्ता'ति पक्कोसेन्तस्स सद्दं सुत्वा विञ्ञत्तिं मनोद्वारिकचित्तेन चिन्तेत्वा 'इदञ्चिदं च एस कारेति मञ्ञे'ति जानाति। कायविञ्ञत्ति विय च अयं पि तिरच्छानगतानं पि पाकटा होति। 'एहि, याही'ति हि सद्दं सुत्वा

न सोतविञ्ञेय्यो (१०४–सी०) मनोविञ्ञेय्यो इति अयं वादो महा-अट्ठकथायं आगतो। विप्फरणं विपुलवत्तनं[१] विप्फारो वितक्कस्स विप्फारो वितक्कविप्फारो। वितक्कविप्फारेन उप्पन्नो सद्दो वितक्कविप्फारसद्दो।[२]

महा-अट्ठकथायं आगतवादं थपेत्वा अयं न सोतविञ्ञेय्यो ति वचनं पटिसेधेन्तो आह–आगमट्ठकथासू ति आदि। आगमट्ठकथासू ति पदं वत्वा कथितानीति पदे आधारो। वितक्कविप्फारसद्दं ति पदस्स अत्थो। उप्पन्नं ति पदं सद्दं ति पदस्स विसेसनं। सुत्तपमत्तादीनं ति सुत्तकाले पमत्तादीनं जनानं। तं ति पदं[३] सुत्वा ति पदं आदिसती ति[४] पदे पुब्बकालक्रिया। यं वत्थुं। वितक्कयतो तस्स जनस्स सो सद्दो उप्पन्नो, तस्स वत्थुस्स वसेन पटिबन्धेन एवम्पि ते तव मनो, इत्थम्पि ते तव मनो इति एवं आदिसति कथेति अञ्ञो जनो इति वचनं वत्वा[५] वत्थूनि पि कथितानि अट्ठकथाचरियेहीति योजना। वत्थूनि पी ति अपिसद्दो यं वितक्कयतो....प०.. आदिसतीति वचनं अपेक्खति।

पट्ठाने पी ति अपिसद्दो आगमट्ठकथायं आगतवचनं अपेक्खति, पच्चयो इतीति[६] वचनं आगतं। तस्मा ति आगमट्ठकथासु वितक्कविप्फारसद्दस्स (म०–८७) सोतविञ्ञेय्यभावस्स वुत्तता च पट्ठाने चित्तसमुट्ठानसद्दस्स सोतविञ्ञाणस्स आरम्मणपच्चयभावस्स सामञ्ञेन वुत्तता च। विञ्ञतिघट्टनाया ति विञ्ञत्तिघट्टनं विना वज्जेत्वा।

विञ्ञत्तिघट्टनेनेव चित्तसमुट्ठानसद्दस्स उप्पज्जनाकारं पाकटं करोन्तो इदं वक्खामीति आदिमाह। चित्तं समुट्ठापेति तेसं अट्ठन्नं रूपानं। अयं ति चित्तसमुट्ठानसद्दो। इतो ति वुत्तवचनतो। परं ति पदं आदीति पदस्स विसेसनं।

इधा पीति वचीविञ्ञत्तियं, जानातीति पदे आधारो। अयम्पीति[७] वचीविञ्ञत्ति।

---

१. विपुलं पवत्तनं–सी०। २. वितक्क...प०...सद्दो–सी०। ३. सद्दं–सी०। ४. आदिस्सतीति–सी०। ५. सुत्वा–सी०। ६. इति–म०। ७. अयम्पि–सी०।

तिरच्छानगता पि 'इदं नामेस कारेति मञ्ञे'ति ञत्वा आगच्छन्ति चेव गच्छन्ति च ।

ते-समुट्ठानिककायं चालेति न चालेती ति, अयं पन वारो इध न लब्भति । पुरिमचित्तसमुट्ठानाय उपत्थम्भनकिच्चं पि नत्थि । या पन तस्मिं वचीद्वारे सिद्धा चेतना, याय मुसा कथेति, पेसुञ्ञं कथेति, फरुसं कथेति, सम्फं पलपति, मुसावादादीहि विरमति, इदं वचीकम्मं नाम । इतोपरं सब्बं कम्मववत्थानं द्वारववत्थानं च हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं ति ।

वचीकम्मद्वारकथा निट्ठिता ।

मनोकम्मद्वारं

मनोकम्मद्वारकथायं पन कामावचरादिवसेन चतुब्बिधो मनो मनो नाम । तत्थ कामावचरो चतुपञ्ञासविधो होति, रूपावचरो पण्णरसविधो, अरूपावचरो द्वादसविधो, लोकुत्तरो अट्ठविधो ति सब्बो पि एकूननवुतिविधो होति । तत्थ अयं नाम मनो मनोद्वारं न होति ति न वत्तब्बो । यथा हि अयं नाम चेतना कम्मं न होती ति न वत्तब्बा, अन्तमसो पञ्चविञ्ञाणसम्पयुत्ता पि हि चेतना महापकरणे कम्मं त्वेव निद्दिट्ठा, एवमेव अयं नाम मनो मनोद्वारं न होती ति न वत्तब्बो ति ।

एत्थाह—कम्मं नामेतं किं करोती ति? आयूहति, अभिसंखरोति, पिण्डं करोति, चेतेति, कप्पेति, पकप्पेती ति । एवं सन्ते पञ्चविञ्ञाणचेतना किं आयूहति, अभिसंखरोति, पिण्डं करोति, चेतेति, कप्पेति, पकप्पेती ति? सहजातधम्मे । सा पि हि सहजाते सम्पयुत्तखन्धे आयूहति अभिसंखरोति पिण्डं करोति चेतेति कप्पेति पकप्पेती ति । किं वा इमिना वादेन? सब्बसंगाहिकवसेन हेतं वुत्तं । इदं पनेत्थ सन्नि-

---

एहीति आदि दळ्हीकरणं ।

इधा ति वचीविञ्ञत्तियं । उपत्थम्भनकिच्चम्पीति अपिसद्देन केवलं[1] तेसमुट्ठानिककायं चालेति, न चालेतीति वारो न लब्भति । अथ खो उपत्थम्भनकिच्चम्पि लब्भतीति ञापेति ।

वचीकम्मद्वारकथावण्णना निट्ठिता

मनोकम्मद्वारकथावण्णना

तत्था ति कामावचरादीसु । तत्था ति मनेसु ।

एत्थाहा ति एत्थ मनोद्वाराधिकारे ।[2] एतं कम्मं नाम किं करोति (१०५–सी०) इति आह चोदको । एवं ति आयूहनादिभावे । वा[3] अपरो नयो इमिना वादेन कामावचरो ति आदिना वादेन किं पयोजनं । कस्मा ति आह–सब्बा ति आदि । हि यस्मा सब्बा···प०···वसेन सब्बेसं मनानं सङ्गाहिकवसेन एतं कामावचरो ति आदिवचनं वुत्तं आचरियेहि, तस्मा इमिना वादेन किं पयोजनं ति अत्थो । किं पन इधाधिप्पेतं ति आह इदम्पनेत्था ति आदि । एत्थ[4] मनोकम्मद्वाराधिकारे ।

मनोकम्मद्वारवण्णना निट्ठिता ।

---

१. न केवलं–सी० । २. मनोकम्मद्वारा०-सी० । ३. नत्थि–सी० । ४. एत्था ति–सी० ।

द्वानं—तेभूमककुसलाकुसलो एकूनतिंसविधो मनो मनोकम्मद्वारं नाम। या पन तस्मि मनोद्वारे सिद्धा चेतना याय अभिज्झा-ब्यापाद-मिच्छादस्सनानि चेव अनभिज्झा-अब्यापाद-सम्मादस्सनानि च गण्हाति, इदं मनोकम्मं नाम। इतोपरं सब्बं कम्मववत्थानं द्वारववत्थानं च हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं ति।

मनोकम्मद्वारकथा निट्ठिता।

इमानि तीणि कम्मद्वारानि नाम

कम्मकथा

इदानि यानि तीणि कम्मानि ठपेत्वा इमानि कम्मद्वारानि दस्सितानि, तानि आदिं कत्वा अवसेसस्स द्वारकथाय मातिकाठपनस्स वित्थारकथा होति। तीणि हि कम्मानि—कायकम्मं वचीकम्मं मनोकम्मं ति। किं पनेतं कम्मं नामा ति? चेतना चेव, एकच्चे च चेतनासम्पयुत्ता धम्मा।

तत्थ चेतनाय कम्मभावे इमानि सुत्तानि—"चेतनाहं भिक्खवे, कम्मं वदामि, चेतयित्वा कम्मं करोति कायेन वाचाय मनसा" [अं० ३.१२०]। "काये वा हि, **आ**नन्द, सति कायसंचेतनाहेतु उप्पज्जति अज्झत्तं सुखदुक्खं; वाचाय वा, **आ**नन्द, सति वचीसंचेतनाहेतु उप्पज्जति अज्झत्तं सुखदुक्खं; मने वा, **आ**नन्द, सति मनोसञ्चेतनाहेतु उप्पज्जति अज्झत्तं सुखदुक्खं" [सं० २-३:३५, अं २.१६७]। "तिविधा, भिक्खवे, कायसंचेतना अकुसलं कायकम्मं दुक्खुद्रयं, दुक्खविपाकं; चतुब्बिधा हि भिक्खवे, वचीसंचेतना....प०....तिविधा भिक्खवे, मनोसञ्चेतना, कुसलं मनोकम्मं सुखुद्रयं सुखविपाकं"। "सचायं, **आ**नन्द, **स**मिद्धि मोघपुरिसो **पो**तलिपुत्तस्स परिब्बाजकस्स एवं पुट्ठो एवं ब्याकरेय्य—संचेतनियं, आवुसो, **पो**तलिपुत्त, कम्मं कत्वा कायेन वाचाय मनसा, सुखवेदनियं सुखं सो वेदियति....प०....अदुक्खमसुखवेदनियं अदुक्खमसुखं सो वेदियती ति; एवं ब्याकरमानो खो, **आ**नन्द, **स**मिद्धि मोघपुरिसो **पो**तलिपुत्तस्स परिब्बाजकस्स सम्मा ब्याकरमानो ब्याकरेय्या" [म० ३.२८९] ति। इमानि ताव चेतनाय कम्मभावे सुत्तानि।

चेतनाय संपयुत्तधम्मानं पन कम्मभावो कम्मचतुक्केन दीपितो। वुत्तं हेतं—"चत्तारिमानि भिक्खवे, कम्मानि यानि मया सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा पवेदितानि।

इमानि तीणि आदि निगमनं।

कम्मकथावण्णना

यानि तीणि कम्मानि। तीणि होति आदि वित्थारो। एतं कम्मं नाम किं पन इति[1] चोदको पुच्छति।

तत्था ति चेतनासम्पयुत्तधम्मेसु।

---

१. इमानीति–सी०।

कतमानि चत्तारि ? अत्थि भिक्खवे, कम्मं कण्हं कण्हविपाकं, अत्थि भिक्खवे, कम्मं सुक्कं सुक्कविपाकं, अत्थि भिक्खवे, कम्मं कण्हसुक्कं कण्हसुक्कविपाकं, अत्थि भिक्खवे, कम्मं अकण्ह-असुक्कं अकण्ह-असुक्कविपाकं कम्मं कम्मक्खयाय संवत्तति।....कतमं च भिक्खवे, कम्मं अकण्ह-असुक्कं अकण्ह-असुक्कविपाकं कम्मं कम्मक्खयाय संवत्तति ? यदिदं सत्तसम्बोज्झंगा—सतिसम्बोज्झंगो....प०....उपेक्खासम्बोज्झंगो, इदं वुच्चति भिक्खवे, कम्मं अकण्हं असुक्कं अकण्ह-असुक्क-विपाकं कम्मं कम्मक्खयाय संवत्तति।.... कतमं च भिक्खवे, कम्मं अकण्ह-असुक्कं अकण्ह-असुक्क-विपाकं कम्मं कम्मक्खयाय संवत्तति ? अयमेव अरियो अट्ठंगिको मग्गो—सेय्यथीदं, सम्मादिट्ठि....प०.... सम्मासमाधि। इदं वुच्चति भिक्खवे, कम्मं अकण्ह-असुक्कं अकण्ह-असुक्क-विपाकं कम्मं कम्मक्खयाय संवत्तती" [अं० २.२४५-२५२] ति। एवमिमे बोज्झङ्ग-मग्गङ्ग-भेदतो पण्णरस धम्मा कम्मचतुक्केन दीपिता। अभिज्झा, ब्यापादो, मिच्छादिट्ठि, अनभिज्झा, अब्यापादो, सम्मादिट्ठी ति इमेहि पन छहि सद्धिं एकवीसति चेतना-सम्पयुत्ता धम्मा वेदितब्बा।

तत्थ लोकुत्तरमग्गो भजापियमानो कायकम्मादीनि तीणि कम्मानि भजति। यं हि कायेन दुस्सील्यं अज्झाचरति, तम्हा संवरो कायिको वेदितब्बो। यं वाचाय दुस्सील्यं अज्झाचरति, तम्हा संवरो वाचसिको वेदितब्बो। इति सम्माकम्मन्तो काय-कम्मं, सम्मावाचा वचीकम्मं। एतस्मिं द्वये गहिते सम्मा-आजीवो तप्पक्खिकत्ता गहितो व होति। यं पन मनेन दुस्सील्यं अज्झाचरति, तम्हा संवरो मानसिको वेदितब्बो। सो दिट्ठि-सङ्कप्प-वायाम-सति-समाधिवसेन पञ्चविधो होति। अयं पञ्चविधो पि मनो-कम्मं नाम। एवं लोकुत्तरमग्गो भजापियमानो तीणि कम्मानि भजति।

इमस्मिं ठाने द्वारसंसन्दनं नाम होति। कायवचीद्वारेसु हि चोपनं पत्वा कम्मपथं अप्पत्तं पि अत्थि, मनोद्वारे च समुदाचारं पत्वा कम्मपथं अप्पत्तं अत्थि; तं गहेत्वा तं तं द्वारपक्खिकमेव अकंसु। तत्रायं नयो—यो 'मिगवं गमिस्सामी'ति धनुं सज्जेति, जियं वट्टेति, सत्तिं निसेति, भत्तं भुञ्जति, वत्थं परिदहति, एत्तावता कायद्वारे चोपनं पत्तं होति। सो अरञ्ञे दिवसं चरित्वा अन्तमसो ससबिलालमत्तं पि न लभति, इदं

वुत्तं हेतं ति हि सच्चं, अङ्गुत्तरनिकाये चतुक्कनिपाते कम्मवग्गे एतं वचनं भगवता वुत्तं।

तत्था ति चेतनासम्पयुत्तधम्मेसु, निद्धारणं। यं हीति आदि वित्थारो। एतस्मिं द्वये ति सम्माकम्मन्त-सम्मावाचा ति द्वये। तप्पक्खिकत्ता ति तेसं द्विन्नं पक्खे पवत्तभावतो। सो ति मानसिक-संवरो। अयं संवरो।

कायवचीद्वारेसु हीति आदि वित्थारो। समुदाचारं ति पवत्तनं। तं ति कम्मपथं अपत्तं कम्मं। तत्रा ति द्वारसंसन्दनाधिकारे।

अकुसलं कायकम्मं नाम होति न होती ति ? न होति। कस्मा ? कम्मपथं अप्पत्तताय। केवलं पन कायदुच्चरितं नाम होती ति वेदितब्बं। मच्छगहणादिपयोगेसु पि एसेव नयो।

वचीद्वारे पि 'मिगवं गमिस्सामी'ति 'वेगेन धनु-आदीनि सज्जेथा' ति आणापेत्वा पुरिमनयेनेव अरञ्ञे किञ्चि अलभन्तस्स किञ्चा पि वचीद्वारे चोपनं पत्तं, कम्मपथं अप्पत्तताय पन वचीकम्मं न होति। केवलं वचीदुच्चरितं नाम होती ति वेदितब्बं।

मनोद्वारे पन वधकचेतनाय उप्पन्नमत्ताय एव कम्मपथभेदो होति। सो च खो ब्यापादवसेन न पाणातिपातवसेन। अकुसलं हि कायकम्मं कायवचीद्वारेसु समुट्ठाति; नो मनोद्वारे; तथा अकुसलं वचीकम्मं। अकुसलं मनोकम्मं पन तीसु पि द्वारेसु समुट्ठाति; तथा कुसलानि कायवचीमनोकम्मानि।

कथं ? सहत्था हि पाणं हनन्तस्स अदिन्नं आदियन्तस्स मिच्छाचारं चरन्तस्स कम्मं कायकम्ममेव होति। द्वारं पि कायद्वारमेव होति। एवं ताव अकुसलं कायकम्मं कायद्वारे समुट्ठाति। तेहि पन चित्तेहि सहजाता अभिज्झा-ब्यापाद-मिच्छादिट्ठियो चेतनापक्खिका वा भवन्ति, अब्बोहारिका वा। 'गच्छ इत्थंनामं जीविता वोरोपेहि, इत्थं-नामं भण्डं अवहरा'ति आणापेन्तस्स पन कम्मं कायकम्मं होति, द्वारं वचीद्वारं। एवं अकुसलं कायकम्मं वचीद्वारे समुट्ठाति। तेहि पन चित्तेहि सहजाता अभिज्झा-ब्यापादमिच्छादिट्ठियो चेतनापक्खिका वा भवन्ति अब्बोहारिका वा। एत्तिका आचरियानं समानट्ठकथा नाम।

वितण्डवादी पनाह—'अकुसलं कायकम्मं मनोद्वारे पि समुट्ठाती'ति। सो 'तयो संगहे आरूळ्हसुत्तं आहराही' ति वुत्तो इदं कुलुम्बसुत्तं[1] नाम आहरि—"पुन च परं भिक्खवे, इधेकच्चो समणो वा ब्राह्मणो वा इद्धिमा चेतोवसिप्पत्तो अञ्ञिस्सा कुच्छिगतं गब्भं पापकेन मनसा अनुपेक्खको होति—'अहो वतायं कुच्छिगतो गब्भो न सोत्थिना अभिनिक्खमेय्या' ति। एवं भिक्खवे, कुलुम्बस्स उपघातो होती" ति। इदं सुत्तं आहरित्वा आह—'एवं चिन्तितमत्ते येव पन'स्सा कुच्छिगतो गब्भो फेनपिण्डो विय विलीयति। एत्थ कुतो कायङ्गचोपनं वा वाचङ्गचोपनं वा ? मनोद्वारस्मिं येव पन इदं अकुसलं कायकम्मं समुट्ठाती' ति।

मिगे वनन्ति बाधन्ति एत्था ति मिगवं, अरञ्ञं। 'वन'–बाधने। एत्तावता ति धनुसज्जनादिना कायद्वारे चोपनं चलनं[2] पत्तं कम्मं होति।

वचीद्वारे पी ति पदं आणापेत्वा ति पदे आधारो।

सो च खो कम्मपथभेदो ब्यापादवसेन होति पाणातिपातवसेन न होति।

चेतनाय पक्खो चेतनापक्खो। चेतनापक्खे भवा चेतनापक्खिका। नत्थि वोहारो मनोकम्मं ति नामं एतेसं ति (म०-८८) अब्बोहारिका।

गब्भं ति पुत्तं। अस्सा ति इत्थिया। एत्था ति कुच्छिगतगब्भस्स विलीयने।

१, समन्त०–२:४३७। २. ०किरियं–सी०।

तमेनं 'तव सुत्तस्स अत्थं तुलयिस्सामा'ति वत्वा एवं तुलयिंसु—'त्वं इद्धिया परूपघातं वदेसि। इद्धि नाम चेसा–अधिट्ठाना इद्धि, विकुब्बना इद्धि, मनोमया इद्धि, ञाणविप्फारा इद्धि, समाधिविप्फारा इद्धि, अरिया इद्धि, कम्मविपाकजा इद्धि, पुञ्ञवतो इद्धि, विज्जामया इद्धि, तत्थ तत्थ सम्मापयोगपच्चया इज्झनट्ठेन इद्धी ति दसविधा। तत्थ कतरं इद्धिं वदेसी'ति? 'भावनामयं' ति। 'किं पन भावनामयाय इद्धिया परूपघातकम्मं होती' ति? 'आम, एकच्चे आचरिया 'एकवारं होती' ति; यथा हि परं पहरितुकामेन उदकभरिते घटे खित्ते घटो पि भिज्जति, उदकं पि नस्सति, एवमेव भावनामयाय इद्धिया एकवारं परूपघातकम्मं होति। ततो पट्ठाय पन सा नस्सती' ति।

तमेनं ति वितण्डवादिं, वत्वा ति पदे कम्मं। इति वत्वा एवं पुच्छनवसेन तुलयिंसु आचरिया। इद्धि नामेसा[1] दसविधा ति सम्बन्धो।

तत्थ पकतिया एको बहुकं आवज्जति सतं वा सहस्सं वा[2] आवज्जेत्वा ञाणेन अधिट्ठाति बहुको होमीति एवं विभजित्वा[3] दस्सिता इद्धि अधिट्ठानतो निप्फन्नत्ता अधिट्ठानिद्धि नाम।

सो पकतिवण्णं विजहित्वा कुमारवण्णं वा दस्सेति नागवण्णं वा दस्सेति सुपण्णवण्णं वा दस्सेति[4] (१०६–सी०) इन्दवण्णं वा दस्सेतीति आदिना आगता इद्धि पकतिवण्णविजहनविकारवसेन[5] पवत्तत्ता[6] विकुब्बना[7] इद्धि नाम[7]। इध[8] भिक्खु इमम्हा काया अञ्ञं कायं अभिनिम्मिनाति रूपं मनोमयं सब्बङ्गपच्चङ्गं अभिनिम्मिनाति। इमिना नयेन आगता इध सरीरब्भन्तरे अञ्ञस्सेव मनोमयस्स सरीरस्स निप्फत्तिवसेन पवत्तत्ता मनोमया इद्धि नाम।[8]

ञाणप्पवत्तित्तो पन पुब्बे वा पच्छा वा तङ्खणे वा ञाणानुभावनिब्बत्तो विसेसो ञाणविप्फारिद्धि,[9] आयस्मतो बाकुलस्स[10] ञाणविप्फारिद्धि विय। आयस्मा हि बाकुलो दहरो व मङ्गलदिवसे नदिया न्हापियमानो धातिया पमादेन सोते पतितो तमेनं मच्छो गिलित्वा वाराणसियं[11] तित्थं[11] अगमासि, तं तत्थ मच्छबन्धो गहेत्वा सेट्ठिभरियाय विक्किणि, सा मच्छे सिनेहं उप्पादेत्वा अहमेव नं पचिस्सामीति फालेन्ती मच्छकुच्छियं सुवण्णबिम्बं विय दारकं दिस्वा पुत्तो मे लद्धो ति सोमनस्सजाता अहोसि। इति मच्छकुच्छियं अरोगभावो[12] आयस्मतो बाकुलस्स पच्छिमभविकस्स तेन अत्तभावेन पटिलभितब्ब-अरहत्तञाणानुभावेन[13] निब्बत्ता ञाणविप्फारिद्धि नाम।

समाधितो पुब्बे वा पच्छा वा तङ्खणे वा समथानुभावनिब्बत्तो विसेसो समाधिविप्फा-

---

१. इद्धि नाम····प····सा–सी०। २. ०सतसहस्सं वा–सी०। ३. भज्जित्वा–म०। ४. ०असुरवण्णं वा दस्सेति–सी०। ५ विज्जमान०–सी०। ६. पवत्ता–सी०। ७-७. मनोमयिद्धि नाम–म०। ८-८. म० पोत्थके नत्थि एत्तको पाठो। ९. ञाणविप्फारा इद्धि–सी०। १०. बक्कुलस्स–सी० सब्बत्थ। ११-११. वाराणसीतित्थं–म०। १२. आरोगभावो–सी०। १३. ०अरहत्तमग्गञाणा०–सी०।

रिद्धि,[1] सामावतिया उपासिकाय विय[2] इद्धि[2]। सामावती नाम उदेनस्स महेसी, मागन्धिय-ब्राह्मणो अत्तनो धीताय महेसिट्ठानं पत्थयमानो तस्सा वीणाय आसीविसं पक्खिपापेत्वा राजानं आह महाराज, सामावती तं मारेतुकामा ति वीणाय आसीविसं गहेत्वा परिहरतीति। राजा तं विदित्वा कुपितो सामावतिं वधिस्सामीति धनुं आरोपेत्वा विसप्पीतं[3] खुरप्पं[3] सन्नहि। सामावती सह परिवारा राजानं मेत्ताय फरि। राजा सरं नेव खिपितुं न ओरोपेतुं सक्कोन्तो[4] वेधमानो अट्ठासि। ततो नं देवी आह किं महाराज, किलमसीति। आम किलमामीति। तेन हि धनुं ओरोपेहीति। सरो रञ्ञो पादमूले येव पति। ततो नं देवी महाराज, न अप्पदुट्ठस्स पदुस्सितब्बं ति आवेदति,[5] इति सरं[6] रञ्ञो[6] मुञ्चितुं अविसहनभावो सामावतिया उपासिकाय समाधि (म०-८९)-विप्फारिद्धीति[7]।

पटिकुलादीसु अप्पटिकूलसञ्ञी विहारादिका पन चेतोवसिप्पत्तानं अरियानं येव सम्भवतो अरियिद्धीति वुच्चति (१०७–सी०)।

सब्बेसं पक्खीनं झानं वा विपस्सनं वा विना येव आकासेन गमनं तथा सब्बेसं देवानं पठमकप्पिकानञ्च एकच्चानं मनुस्सानं तथा पियङ्करमाता यक्खिनी उत्तरमाता फुस्समित्ता धम्मगुत्ता ति एवमादीनं विनिपातिकानं[8] आकासेन गमनं कम्मविपाकजिद्धि नाम। अपि च कम्मविपाकजिद्धि नामेसा नागानं नागिद्धि, सुपण्णानं सुपण्णिद्धि, यक्खानं यक्खिद्धि देवानं देविद्धि, राजूनं राजिद्धीति बहुविधा।

चक्कवत्ति-आदीनं वेहासगमनादिका पन पुञ्ञवतो-इद्धि नाम। तथा जोतिकस्स गहपतिस्स जटिलस्स गहपतिस्स घोसितस्स गहपतिस्स पुञ्ञवतो-इद्धि नाम। सङ्खेपतो पन परिपाकगते पुञ्ञसम्भारे इज्झनकविसेसो पुञ्ञवतो-इद्धि[9]। एत्थ[10] जोतिकस्स गहपतिस्स पथविं भिन्दित्वा मणिपासादो उट्ठहि चतुसट्ठि च कप्परुक्खा ति अयमस्स पुञ्ञवतो-इद्धि। जटिलस्स असीतिहत्थो सुवण्णपब्बतो निब्बत्ति[11]। घोसितस्स सत्तसु ठानेसु मारणत्थाय उपक्कमे कते पि अरोगभावो पुञ्ञवतो-इद्धि।

विज्जाधरानं वेहासगमनादि[12] विज्जामयिद्धि। यथाह–कतमा विज्जामया इद्धि? विज्जाधरा विज्जं परिजपित्वा वेहासं गच्छन्ति, आकासे अन्तलिक्खे हत्थिम्पि दस्सेन्ति, विविधम्पि सेनाब्यूहं दस्सेन्तीति, सकटब्यूहादिकरणवसेन यं किञ्चि सिप्पकम्मं, यं किञ्चि वेज्जकम्मं, तिण्णं वेदानं उग्गहणं, तिण्णं पिटकानं उग्गहणं, अन्तमसो नव पदानादीनि[13] उपादाय तं तं कम्मं कत्वा निब्बत्तविसेसो तत्थ तत्थ सम्मापयोगपच्चया[14] इज्झनट्ठेन इद्धि नाम।

---

१. ०नाम–सी०। २-२. इद्धि विय–सी०। ३-३. विसप्पीतखुरप्पं–सी०।
४. असक्कोन्तो–म०। ५. ओवदि–सी०। ६-६. रञ्ञो सरं–सी०।
७. समाधिविप्फारा इद्धीति–सी०। ८. एकच्चानं विनि०–सी०। ९. ०इद्धि नाम–सी०।
१०. तत्थ–सी०। ११. निब्बत्तो–सी०। १२. ०गमनादिका–सी०। १३. वनपथादीनि–म०।
१४. पयोग०–म०।

अथ नं 'भावनामयाय इद्धिया नेव एकवारं न द्वे वारे परूपघातकम्मं होती'ति वत्वा सञ्ञत्ति अगच्छन्तं पुच्छिसु—'भावनामया इद्धि किं कुसला, अकुसला, अब्याकता ? सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता, दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्ता, अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता ? सवितक्कसविचारा, अवितक्कविचारमत्ता, अवितक्क-अविचारा ? कामावचरा, रूपावचरा, अरूपावचरा ?'

इमं पन पञ्हं यो जानाति सो एवं वक्खति—'भावनामया इद्धि कुसला वा होति, अब्याकता वा; अदुक्खमसुखवेदनीया एव, अवितक्क-अविचारा एव, रूपावचरा एवा' ति। सो वत्तब्बो–'पाणातिपातचेतना कुसलादीसु कतरं कोट्ठासं भजती' ति ? जानन्तो वक्खति—'पाणातिपातचेतना अकुसला च, दुक्खवेदनीया च, सवितक्कसविचारा च, कामावचरा एवा'ति। 'एवं सन्ते तव पञ्हो नेव कुसलत्तिकेन समेति, न वेदनत्तिकेन, न वितक्कत्तिकेन, न भुम्भन्तरेना'ति।

'किं पन एवं महन्तं सुत्तं निरत्थकं' ति ? 'नो निरत्थकं; त्वं पन'स्स अत्थं न जानासि। "इद्धिमा चेतोवसिप्पत्तो"ति एत्थ हि न भावनामया इद्धि अधिप्पेता, **आ**थब्बनिद्धि पन अधिप्पेता। सा हि एत्थ लब्भमाना लब्भति। सा पन कायवचीद्वारानि मुञ्चित्वा कातुं न सक्का। **आ**थब्बनिद्धिका हि सत्ताहं अलोणकं भुञ्जित्वा दब्भे अत्थरित्वा पठवियं सयमाना तपं चरित्वा सत्तमे दिवसे सुसानभूमिं सज्जेत्वा सत्तमे पदे ठत्वा हत्थं वट्टेत्वा वट्टेत्वा मुखेन विज्जं परिजप्पन्ति। अथ नेसं कम्मं समिज्झति। एवं अयं पि इद्धि कायवचीद्वारानि मुञ्चित्वा कातुं न सक्का' ति। 'न कायकम्मं मनोद्वारे समुट्ठाती' ति निट्ठमेत्थ गन्तब्बं।

हत्थमुद्दाय पन मुसावादादीनि कथेन्तस्स कम्मं वचीकम्मं, द्वारं पन कायद्वारं होति। एवं अकुसलं वचीकम्मं पि कायद्वारे समुट्ठाति। तेहि पन चित्तेहि सहजाता

तत्था ति तासु दसविधासु इद्धीसु कतरं इद्धिं त्वं वदेसीति इति सकवादी पुच्छति। भावनामयिद्धिं[1] वदेमीति वितण्डवादी आह। भाव····प०····कम्मं किं पन होतीति[2] पुच्छति सकवादी। परूपघातकम्मं[3] एकवारं होति। सा ति इद्धि।

अथा ति अनन्तरं। नं ति परवादिं, वत्वा ति पदे कम्मं। सञ्ञत्तं ति विञ्ञापनं आगच्छन्तं परवादिं आचरिया पुच्छिसु।

यो ति परवादी। सो वत्तब्बो ति सो परवादी सकवादिना वत्तब्बो। जानन्तो परवादी। एवं ति एवं तव[4] वचने सन्ते। भुम्मन्तरेना ति[5] कामावचरादिना।

एवं महन्तं सुत्तं किं पन निरत्थकं इति परवादी पुच्छति। अस्सा ति (१०८–सी०) कुलुम्पसुत्तस्स। को पनस्स[6] अत्थो ति[6] आह–इद्धिमा ति आदि। का पन अधिप्पेता ति आह

---

१. भावनामयं इद्धिं–सी०। २. होति न होतीति–सी०। ३. परूपघातं कम्मं–सी०। ४. नत्थि–सी०। ५. भूमन्तरेना ति–म० सब्बत्थ। ६-६. पनत्थो ति–सी०।

अभिज्झा-ब्यापाद-मिच्छादिट्ठियो चेतनापक्खिका वा भवन्ति, अब्बोहारिका वा। वचीभेदं पन कत्वा मुसावादादीनि कथेन्तस्स कम्मं पि वचीकम्मं द्वारं पि वचीद्वारमेव। एवं अकुसलं वचीकम्मं वचीद्वारे समुट्ठाति। तेहि पन चित्तेहि सहजाता अभिज्झाब्यापादमिच्छादिट्ठियो चेतनापक्खिका वा भवन्ति अब्बोहारिका वा। एत्तिका आचरियानं समानट्ठकथा नाम।

वितण्डवादी पनाह—'अकुसलं वचीकम्मं मनोद्वारे पि समुट्ठाती' ति। सो 'तयो संगहे आरूळ्हसुत्तं आहराही'ति वुत्तो इदं उपोसथक्खन्धकतो सुत्तं आहरि—"यो पन भिक्खु यावततियं अनुस्सावियमाने सरमानो सन्तिं आपत्तिं नाविकरेय्य संपजानमुसावादस्स होती" [विन० १.१०६] ति इदं सुत्तं आहरित्वा आह—'एवं आपत्तिं अनाविकरोन्तो तुण्हीभूतो व अञ्ञं आपत्तिं आपज्जति, एत्थ कुतो कायङ्गचोपनं वा वाचङ्गचोपनं वा? मनोद्वारस्मिं येव पन इदं अकुसलं वचीकम्मं समुट्ठाती' ति।

सो वत्तब्बो—'किं पनेतं सुत्तं नेय्यत्थं उदाहु नीतत्थं'ति? 'नीतत्थमेव मय्हं सुत्तं ति। सो 'मा एवं अवच, तुलयिस्साम'स्स अत्थं'ति वत्वा एवं पुच्छितब्बो—'संपजानमुसावादे पन किं होती' ति?। जानन्तो 'संपजानमुसावादे दुक्कटं होती' ति वक्खति। ततो वत्तब्बो 'विनयस्स द्वे मूलानि—कायो च वाचा च. सम्मासम्बुद्धेन हि सब्बापत्तियो इमेसु येव द्वीसु द्वारेसु पञ्ञत्ता, मनोद्वारे आपत्तिपञ्ञापनं नाम नत्थि। त्वं अतिविय विनये पकतञ्ञू, यो सत्थारा अपञ्ञत्ते ठाने आपत्तिं पञ्ञापेसि, सम्मासम्बुद्धं अब्भाचिक्खसि, जिनचक्कं पहरसी' ति आदिवचनेहि निग्गण्हित्वा उत्तरिं पञ्हं सो एवं पुच्छितब्बो—संपजानमुसावादो किरियतो समुट्ठाति उदाहु अ-किरियतो' ति? जानन्तो 'किरियतो'ति वक्खति। ततो वत्तब्बो—'अनाविकरोन्तो कतरं किरियं करोती' ति?। अद्धा किरियं अपस्सन्तो विघातं आपज्जिस्सति। ततो इमस्स सुत्तस्स अत्थेन सञ्ञापेतब्बो।

आथब्बणिद्धीति[1] आदि। सा हि एत्था ति हि सच्चं, एत्थ इद्धिमा चेतोवसिप्पत्तो ति (म०—९०) वचने सा आथब्बणिद्धि। नेसं ति आथब्बणिद्धिकानं जनानं। अयम्पीति अपिसद्दो अञ्ञं पाणातिपातकम्मं अपेक्खति। एत्था ति इद्धिमा चेतोवसिप्पत्तो ति वचने, कम्मकथाधिकारे वा।

याव ततियं ति पातिमोक्खुद्देसकेन[2] भिक्खुना पातिमोक्खे याव ततियं भिक्खूहि अनुसावियमाने। सम्पजानमुसावादस्सा ति अस्स भिक्खुनो सम्पजानमुसावादो होति। एत्था ति अञ्ञापत्ति-आपज्जने।

सो ति परवादी सकवादिना वत्तब्बो। नीतत्थमेव मय्हं सुत्तं इति परवादी वदति। सो परवादी, पुच्छितब्बो ति पदे कम्मं। त्वं एवं मा अवच अस्स सुत्तस्स अत्थं मयं तुलयिस्साम इति वत्वा एवं सकवादिना पुच्छितब्बो। जानन्तो परवादी। ततो ति तदनन्तरं परवादी सकवादिना वत्तब्बो।

मूलानीति कारणानि। यो त्वं सत्थारा....प०....अब्भाचिक्खसि, त्वं अतिविय विनये पकतञ्ञू सभावञ्ञू। पकतिं जानाति सीलेना ति पकतञ्ञू। अद्धा ति एकन्तेन, क्रियं[3] अप-

---

१. अथब्ब०—सी०। २. पाटि०—सी०। ३. किरियं—सी०।

अयं हेत्थ अत्थो—य्वायं 'संपजानमुसावादो होती' ति वुत्तो, सो आपत्तितो किं होति ? 'कतरापत्ति होती ?' ति अत्थो। 'दुक्कटापत्ति होति'। सा च खो न मुसावादलक्खणेन, भगवतो पन वचनेन वचीद्वारे अकिरिय-समुट्ठाना आपत्ति होती ति वेदितब्बा। वुत्तं पि चेतं—

अनालपन्तो मनुजेन केनचि, वाचा गिरं नो च परे भणेय्य।
आपज्जेय्य वाचसिकं न कायिकं, पञ्हा-मे-सा कुसलेहि चिन्तिता॥

एवं अकुसलं वचीकम्मं न मनोद्वारे समुट्ठाती ति निट्ठमेत्थ गन्तब्बं।

यदा पन अभिज्झासहगतेन चेतसा कायङ्गं चोपेन्तो हत्थगाहादीनि करोति, ब्यापादसहगतेन चेतसा दण्डपरामासादीनि, मिच्छादिट्ठिसहगतेन चेतसा 'खन्धसिवादयो सेट्ठा'ति तेसं अभिवादन-अञ्जलिकम्म-भूतपिट्ठक-परिभण्डादीनि करोति, तदा कम्मं मनोकम्मं होति द्वारं पन कायद्वारं। एवं अकुसलं मनोकम्मं कायद्वारे समुट्ठाति। चेतना पनेत्थ अब्बोहारिका। यदा अभिज्झासहगतेन चेतसा वाचङ्गं चोपेन्तो 'अहो वत यं परस्स, तं मम'स्सा'ति परवित्तूपकरणं अभिज्झायति, ब्यापादसहगतेन चेतसा 'इमे सत्ता हञ्ञन्तु वा, वज्झन्तु वा, उच्छिज्जन्तु वा, मा वा अहेसुं'ति वदति, मिच्छादिट्ठिसहगतेन चेतसा 'नत्थि दिन्नं, नत्थि यिट्ठं'ति आदीनि वदति, तदा कम्मं मनोकम्मं होति, द्वारं पन वचीद्वारं। एवं अकुसलं मनोकम्मं वचीद्वारे समुट्ठाति। चेतना पनेत्थ अब्बोहारिका। यदा पन कायङ्गवाचङ्गानि अचोपेत्वा रहो

स्सन्तो परवादी विघातं[१] किलमनं[२] आपज्जिस्सति। ततो अनन्तरं परवादि सकवादिना[३] इम ....प....सञ्ञापेतब्बो[३]।

अयं हेत्था ति हि सच्चं, एत्थ सम्पजानमुसावादस्सा ति सुत्ते, अयं अत्थो सम्पजानमुसावादो होति[४]—य्वायं यो अयं मुसावादो भगवता वुत्तो सो मुसावादो आपत्तितो आपत्तिवसेन किं[५] होति। आपत्तितो ति पदं किं ति पदे ततियाविसेसनं। सम्पजानमुसावादो दुक्कटापत्ति होति। सा च खो दुक्कटापत्ति मुसावादलक्खणेन मुसावादसङ्खातसभावेन न होति। वुत्तम्पि चेतं ति परिवारे एवं वचनं भगवता वुत्तं।

केनचि मनुजेन सद्धिं अनालपन्तो भिक्खु परे जने वाचा गिरं नो[६] च[६] भणेय्य, सो भिक्खु वाचसिकं आपत्तिं आपज्जेय्य कायिकं आपत्तिं न आपज्जेय्य, एसा पञ्हा कुसलेहि चिन्तिता। एत्था ति कम्मकथाधिकारे।

खन्धो[७] च सिवो च खन्धसिवा। खन्धसिवा आदि येसं ते खन्धसिवादयो। खन्धो ति परमेसरस्स[८] पुत्तो। कुमारो तु खन्धो सत्तिधरो भवे ति (१०९–सी०) अभिधानप्पदीपिका[९]।

---

१. विघाटं–सी०। २. किलमन्तं–म०। ३-३. परवादिना....प०....सञ्ञापेतब्बो–म०। ४. होति इति–सी०। ५. किं पन–सी०। ६-६. नेव–सी०। ७. खन्दो-म०। ८. महेसरस्स–सो०। ९. अभिधानदीपिका–सी०।

निसिन्नो अभिज्झाब्यापादमिच्छादिट्ठिसहगतानि चित्तानि उप्पादेति, तदा कम्मं मनोकम्मं, द्वारं पि मनोद्वारमेव। एवं अकुसलं मनोकम्मं मनोद्वारे समुट्ठाति। इमस्मिं पन ठाने चेतनासम्पयुत्ता धम्मा पि मनोद्वारे येव समुट्ठहन्ति। एवं अकुसलं मनोकम्मं तीसु पि द्वारेसु समुट्ठाती ति वेदितब्बं।

यं पन वुत्तं 'तथा कुसलानि काय-वची-मनोकम्मानी'ति, तत्रायं नयो—यदा हि केनचि कारणेन वत्तुं असक्कोन्तो 'पाणातिपाता अदिन्नादाना कामेसु मिच्छाचारा पटिविरमामी'ति इमानि सिक्खापदानि हत्थमुद्दाय गण्हाति, तदा कम्मं कायकम्मं द्वारं पि कायद्वारमेव। एवं कुसलं कायकम्मं कायद्वारे समुट्ठाति। तेहि चित्तेहि सहगता अनभिज्झादयो चेतनापक्खिका वा होन्ति, अब्बोहारिका वा। यदा पन तानेव सिक्खापदानि वचीभेदं कत्वा गण्हाति, तदा कम्मं कायकम्मं, द्वारं पन वचीद्वारं होति। एवं कुसलं कायकम्मं वचीद्वारे समुट्ठाति। तेहि चित्तेहि सहगता अनभिज्झादयो चेतनापक्खिका वा होन्ति, अब्बोहारिका वा। यदा पन तेसु सिक्खापदेसु दीयमानेसु कायङ्गवाचङ्गानि अचोपेत्वा मनसा व 'पाणातिपाता अदिन्नादाना कामेसु मिच्छाचारा पटिविरमामी'ति गण्हाति, तदा कम्मं कायकम्मं, द्वारं पन मनोद्वारं होति। एवं कुसलं कायकम्मं मनोद्वारे समुट्ठाति। तेहि चित्तेहि सहगता अनभिज्झादयो चेतनापक्खिका वा होन्ति, अब्बोहारिका वा।

'मुसावादा वेरमणी'-आदीनि पन चत्तारि सिक्खापदानि वुत्तनयेनेव कायादीहि गण्हन्तस्स कुसलं वचीकम्मं तीसु द्वारेसु समुट्ठाती ति वेदितब्बं। इधा पि अनभिज्झादयो चेतनापक्खिका वा होन्ति, अब्बोहारिका वा।

अनभिज्झादिसहगतेहि पन चित्तेहि कायङ्गं चोपेत्वा चेतियङ्गणसम्मज्जनगन्धमालादिपूजन-चेतियवन्दनादीनि करोन्तस्स कम्मं मनोकम्मं होति, द्वारं पन कायद्वारं। एवं कुसलं मनोकम्मं कायद्वारे समुट्ठाति। चेतना पनेत्थ अब्बोहारिका। अनभिज्झासहगतेन चित्तेन वाचङ्गं चोपेत्वा 'अहो वत यं परस्स वित्तूपकरणं न तं ममस्सा'ति अनभिज्झायतो अब्यापादसहगतेन चित्तेन 'सब्बे सत्ता अवेरा अब्यापज्जा अनीघा सुखी अत्तानं परिहरन्तू'ति वदन्तस्स सम्मादिट्ठिसहगतेन चित्तेन 'अत्थि दिन्नं' ति आदीनि उदाहरन्तस्स कम्मं मनोकम्मं होति, द्वारं पन वचीद्वारं। एवं कुसलं मनोकम्मं वचीद्वारे समुट्ठाति। चेतना पनेत्थ अब्बोहारिका। कायङ्गवाचङ्गानि पन

तेसं ति खन्धसिवादीनं। अभिवादनञ्च अञ्जलिकम्मञ्च भूतपिट्ठकञ्च परिभण्डञ्च अभि....प०.... परिभण्डानि। तानि आदीनि येसं तानि अभि....प०....भण्डादीनि[1]। भूतपिट्ठकं ति भूतानं खन्धसिवादीनं पिट्ठसंविदहनं। परिभण्डं ति गोमयलेपनादिपरिभण्डं। एत्था ति कायद्वारे समुट्ठितमनोकम्मे।

इधापी ति वचीकम्मे।

---

१. परिभण्डादीनि—सी०।

अचोपेत्वा रहो निसिन्नस्स मनसा व अनभिज्झादिसहगतानि चित्तानि उप्पादेन्तस्स कम्मं मनोकम्मं, द्वारं पि मनोद्वारमेव। एवं कुसलं मनोकम्मं मनोद्वारे समुट्ठाति। इमस्मिं पन ठाने चेतना पि चेतनासम्पयुत्ता धम्मा पि मनोद्वारे येव समुट्ठहन्ति।

तत्थ आणत्तिसमुट्ठितेसु पाणातिपात-अदिन्नादानेसु कम्मं पि कायकम्मद्वारं पि कम्मवसेनेव कायद्वारं ति वदन्तो कम्मं रक्खति, द्वारं भिन्दति नाम। हत्थमुद्दासमुट्ठितेसु मुसावादादीसु द्वारं पि कायद्वारं, कम्मं पि द्वारवसेनेव कायकम्मं ति वदन्तो द्वारं रक्खति कम्मं भिन्दति नाम। तस्मा 'कम्मं रक्खामी'ति द्वारं न भिन्दितब्बं, 'द्वारं रक्खामी'ति कम्मं न भिन्दितब्बं। यथावुत्तेनेव पन नयेन कम्मं च द्वारं च वेदितब्बं। एवं कथेन्तो हि नेव कम्मं न द्वारं भिन्दती ति।

कम्मकथा निट्ठिता

संवरासंवरकथा

इदानि 'पञ्च विञ्ञाणानि पञ्च विञ्ञाणद्वारानी'ति आदीसु चक्खुविञ्ञाणं सोतविञ्ञाणं घाणविञ्ञाणं जिव्हाविञ्ञाणं कायविञ्ञाणं ति इमानि पञ्च विञ्ञाणानि नाम। चक्खुविञ्ञाणद्वारं सोत····घान··जिव्हा····कायविञ्ञाणद्वारं ति इमानि पञ्च विञ्ञाणद्वारानि नाम। इमेसं पञ्चन्नं द्वारानं वसेन उप्पन्ना चेतना नेव कायकम्मं होति, न वचीकम्मं, मनोकम्ममेव होती ति वेदितब्बं।

तत्था ति पाणातिपातादीसु, निद्धारणं। (९१-म०) पाणातिपात-आदिन्नादानेसू ति पदं वदन्तो ति पदे आधारो।

कम्मकथावण्णना निट्ठिता

संवरासंवरकथावण्णना

इदानि····प०····आदीसु विनिच्छयो वेदितब्बो ति सम्बन्धो। चक्खुम्हि निस्सितं विञ्ञाणं चक्खुविञ्ञाणं, चक्खुविञ्ञाणस्स द्वारं चक्खुविञ्ञाणद्वारं, अयं छट्ठी-तप्पुरिसो पठमो विकप्पो। विञ्ञाणस्स द्वारं विञ्ञाणद्वारं, चक्खु एव विञ्ञाणद्वारं चक्खुविञ्ञाणद्वारं, अयं कम्मधारयो दुतियो विकप्पो। चक्खु इति एकं पदं, विञ्ञाणद्वारं ति एकं पदं, अयं वाक्यसङ्घातो विकप्पो नाम। तेन वुत्तं टीकायं चक्खुविञ्ञाणद्वारं ति चक्खुविञ्ञाणस्स द्वारं, तं पन चक्खुमेव। चक्खुमेव विञ्ञाणद्वारं ति वा चक्खु वा विञ्ञाणद्वारं ति। कत्थचि पन टीकायं चक्खुविञ्ञाणद्वारं ति चक्खुविञ्ञाणस्स द्वारं, तं पन चक्खुमेवा ति एत्तकमेव दिस्सति, एवं सति चक्खुमेव विञ्ञाणद्वारं ति वा चक्खु वा विञ्ञाणद्वारं ति वचनं पच्छा अलिखनवसेन नस्सतीति वेदितब्बं। कस्मा अनुटीकायं ततियो विकप्पो ति वुत्तता। टीकायं हि ततियविकप्पे सति ततियो विकप्पो ति वचनं वत्तब्बं, नासतीति। केचि पन टीकाचरियेन वुत्तेहि पठमदुतियविकप्पेहि अञ्ञं ततियविकप्पं दस्सेतुं ततियो विकप्पो ति आदि वुत्तं ति वदन्ति, तं तेसं मतिमत्तमेव। यदि पन टीकायं चक्खुविञ्ञाणद्वारं ति चक्खुविञ्ञाणस्स द्वारं, तं पन चक्खुमेवा ति एत्तकमेव अत्थि, एवं सति अयं अधिप्पायो गहेतब्बो–चक्खुविञ्ञाणद्वारं ति (११०–सी०) चक्खुविञ्ञाणस्स द्वारं ति वचनेन पठमविकप्पो लब्भति, तं पन चक्खुमेवा ति वचनसामत्थियेन दुतियततियविकप्पा लब्भन्ति। अनुटीकायं पन ततियो विकप्पो ति वचनं, तं पन चक्खुमेवा ति एत्थ लब्भमानततियविकप्पं सन्धाय वुत्तं ति अम्हाकं खन्ति।

चक्खुसम्फस्सो सोत···घान···जिव्हा···काय···मनोसम्फस्सो ति इमे पन छ सम्फस्सा नाम। चक्खुसम्फस्सद्वारं सोत···घान···जिव्हा···काय···मनोसम्फस्सद्वारं ति इमानि छ सम्फस्सद्वारानि नाम।

चक्खु-असंवरो सोत···घान···जिव्हा···पसादकाय··चोपनकाय-असंवरो वाचा-असंवरो मनो-असंवरो—इमे अट्ठ असंवरा नाम। ते अत्थतो 'दुस्सील्यं मुट्ठसच्चं अञ्ञाणं अक्खन्ति कोसज्जं'ति इमे पञ्च धम्मा होन्ति। तेसु एकधम्मो पि पञ्चद्वारे वोट्ठब्बनपरियोसानेसु चित्तेसु नुप्पज्जति, जवनक्खणे येव उप्पज्जति। जवने उप्पन्ने पि पञ्चद्वारे असंवरो ति वुच्चति। चक्खुविञ्ञाणसहजातो हि फस्सो चक्खुसम्फस्सो नाम, चेतना मनोकम्मं नाम, तं चित्तं मनोकम्मद्वारं नाम। एत्थ पञ्चविधो असंवरो नत्थि। सम्पटिच्छनसहजातो फस्सो मनोसम्फस्सो नाम, चेतना मनोकम्मं नाम, तं चित्तं मनोकम्मद्वारं नाम। एत्था पि असंवरो नाम नत्थि। सन्तीरणवोट्ठब्बनेसु पि एसेव नयो। जवनसहजातो पन फस्सो मनोसम्फस्सो नाम, चेतना मनोकम्मं नाम, तं चित्तं मनोसम्फस्सद्वारं नाम। एत्थ असंवरो चक्खु-असंवरो नाम होति। सोत-घाणजिव्हापसादकायद्वारेसु पि एसेव नयो।

यदा पन रूपादीसु अञ्ञतरारम्मणं मनोद्वारिकजवनं विना वचीद्वारेन सुद्धं कायद्वारसंखातं चोपनं पापयमानं उप्पज्जति, तदा तेन चित्तेन सहजातो फस्सो मनोसम्फस्सो नाम, चेतना कायकम्मं नाम, तं पन चित्तं अब्बोहारिकं, चोपनस्स उप्पन्नत्ता मनोद्वारिकं ति संखं न गच्छति। एत्थ असंवरो पन चोपनकाय-असंवरो नाम। यदा तादिसं येव जवनं विना कायद्वारेन सुद्धं वचीद्वारसंखातं चोपनं पापयमानं उप्पज्जति, तदा तेन चित्तेन सहजातो फस्सो मनोसम्फस्सो नाम, चेतना वचीकम्मं नाम, तं पन चित्तं अब्बोहारिकं, चोपनस्स उप्पन्नत्ता मनोद्वारं ति संखं न गच्छति। एत्थ असंवरो वाचा-असंवरो नाम। यदा पन तादिसं जवनचित्तं विना कायवचीद्वारेहि सुद्धं मनोद्वार-मेव हुत्वा उप्पज्जति, तदा तेन चित्तेन सहजातो फस्सो मनोसम्फस्सो नाम, चेतना मनोकम्मं नाम, तं पन चित्तं मनोकम्मद्वारं नाम। एत्थ असंवरो मनो-असंवरो नाम। इति इमेसं अट्ठन्नं असंवरानं वसेन चक्खु-असंवरद्वारं, सोत··· घाण···जिव्हा···पसाद-काय···चोपनकाय···वाचा···मनो-असंवरद्वारं' ति इमानि अट्ठ असंवरद्वारानि वेदितब्बानि।

चक्खुसंवरो सोत··घाण··जिव्हा··पसादकाय···चोपनकाय··वाचा··· मनोसंवरो ति इमे पन अट्ठ संवरा नाम। ते अत्थतो 'सीलं सति ञाणं खन्ति विरियं'

ते ति असंवरा। तेसू ति पञ्चसु धम्मेसु। एत्था ति चक्खुविञ्ञाणे। एत्थापी ति सम्पटिच्छने पि। एत्था ति जवने।

चोपनस्सा ति आदि चित्तं अब्बोहारिकं ति पदस्स[1] अधिप्पायो[1]।

१-१. पदे ततियाविसेसनं–म०।

ति इमे पञ्च धम्मा होन्ति। तेसु पि एकधम्मो पि पञ्चद्वारे वोट्ठब्बनपरियोसानेसु चित्तेसु नुप्पज्जति। जवनक्खणे येव उप्पज्जति। जवने उप्पन्नो पि पञ्चद्वारे संवरो ति वुच्चति। तस्स सब्बस्सा पि चक्खुविञ्ञाणसहजातो हि फस्सो चक्खुसम्फस्सो ति आदिना असंवरे वुत्तनयेनेव उप्पत्ति वेदितब्बा। इति इमेसं अट्ठन्नं संवरानं वसेन चक्खुसंवरद्वारं ...प०... मनोसंवरद्वारं ति इमानि अट्ठ संवरद्वारानि वेदितब्बानि।

अकुसलकम्मपथकथा

पाणातिपातो, अदिन्नादानं, कामेसु मिच्छाचारो, मुसावादो, पिसुणा वाचा, फरुसा वाचा, सम्फप्पलापो, अभिज्झा, ब्यापादो, मिच्छादिट्ठी ति इमे पन दस अकुसलकम्मपथा नाम।

तत्थ पाणस्स अतिपातो पाणातिपातो नाम; पाणवधो, पाणघातो ति वुत्तं होति। पाणो ति चेत्थ वोहारतो सत्तो, परमत्थतो जीवितिन्द्रियं। तस्मिं पन पाणे

तस्सा ति संवरस्स उप्पत्तीति पदे सम्बन्धो।[1]

संवरासंवरकथावण्णना निट्ठिता

अकुसलकम्मपथकथावण्णना

सस्स अत्तनो रसो सभावो सरसो। एवसद्देन सीघपातनं निवत्तेति। पतनसभावस्सा ति पदं पाणस्सा ति पदस्स विसेसनं। पतनं सभावो अस्स पाणस्सा ति पतनसभावो। आयुपरिच्छेदानुरूपं जीवितिन्द्रियस्स मरणसंखातं पतनं इधाधिप्पेतं, न खणभिज्जनं। पाणस्सा ति पदं अन्तरा ति पदे सम्बन्धो। कस्मा? अन्तरासद्दस्स सम्बन्धापेक्खत्ता च आयुवेमज्झं अतिक्कमित्वा ति अञ्ञपाळिदस्सनतो[2] च। पाणस्सा ति वा पदं (९२–म०) पातनं ति पदे कम्मं। एव-सद्दो अत्तनो सभावेन पतनं निवत्तेति। अतिपा ति[3] सीघत्थवाचको निपातो। कायवाचाहि न दिन्नं ति अदिन्नं। मिच्छाचरणं मिच्छाचारो।

मुसा अभूतवत्थु[4] वदियति वुच्चति एताया ति मुसावादो। पिसतीति[5] पिसुणा। समग्गे सत्ते[6] अवयवभूते भिन्ने करोतीति अत्थो। पियसुञ्ञं[7] करोतीति वा पिसुणा, निरुत्तिनयेन पदसिद्धि। पिसुणं वदति एताया ति पिसुणवाचा[8]। फरुसयतीति फरुसा। फरुसं वदन्ति[9] एताया ति फरुसवाचा[10]। सं सुट्ठु हितं सुखं[11] च फलति विसरति[12] विनासेती ति सम्फं, सम्फं पलयति एताया ति सम्फप्पलापो।

परसम्पत्तिं अभिमुखं झायतीति अभिज्झा, परसम्पत्तीसु लोभो। हितसुखं[13] ब्यापादेति विनासेती ति ब्यापादो, पटिघो। मिच्छा पस्सतीति मिच्छादिट्ठि।

तत्था ति पाणातिपातादीसु विनिच्छयो वेदितब्बो[14]। पाणसञ्ञिनो ति पदं वधकचेतना ति पदे सम्बन्धो। पाणो इति सञ्ञा पाणसञ्ञा, सा अस्स अत्थीति पाणसञ्ञी।

---

१. नत्थि-म०। २. अञ्ञं पालि दस्सनतो-सी०। ३. अतीवा ति–म०। ४. अभूतं अत्थं-सी०। ५. पिसुतीति–सी०। ६. सत्ते कते–सी०। ७. पियं सुञ्ञं–सी०। ८. पिसुणा वाचा-सी०। ९. वदति-सी०। १०. फरुसा वाचा-सी०। ११. नत्थि-सी०। १२. नत्थि-सी०। १३. हितं सुखं-सी०। १४. योजेतब्बो–सी०।

पाणसञ्ञिनो जीवितिन्द्रियुपच्छेदक-उपक्कमसमुट्ठापिका कायवचीद्वारानं अञ्ञतर-द्वारप्पवत्ता वधकचेतना पाणातिपातो। सो गुणविरहितेसु तिरच्छानगतादीसु पाणेसु खुद्दके पाणे अप्पसावज्जो, महासरीरे महासावज्जो। कस्मा? पयोगमहन्तताय। पयोगसमत्ते पि वत्थुमहन्तताय। गुणवन्तेसु मनुस्सादीसु अप्पगुणे पाणे अप्पसावज्जो, महागुणे महासावज्जो। सरीरगुणानं पन समभावे सति किलेसानं उपक्कमानं च मुदुताय अप्पसावज्जो, तिक्खताय महासावज्जो वेदितब्बो। तस्स पञ्च संभारा होन्ति—पाणो, पाणसञ्ञिता, वधकचित्तं, उपक्कमो, तेन मरणं ति। छप्पयोगा—साहत्थिको, आणत्तिको, निस्सग्गियो, थावरो, विज्जामयो, इद्धिमयो ति। इमस्मिं पन अत्थे वित्थारियमाने अतिपपञ्चो होति। तस्मा तं न वित्थारयाम। अञ्ञं च एवरूपं अत्थिकेहि पन **समन्तपासादिकं विनयट्ठकथं** ओलोकेत्वा गहेतब्बं।

अदिन्नस्स आदानं 'अदिन्नादानं'; परस्सहरणं, थेय्यं, चोरितं ति वुत्तं होति। तत्थ अदिन्नं ति परपरिग्गहितं, यत्थ परो यथाकामकारिकं आपज्जन्तो अदण्डारहो अनुपवज्जो च होति। तस्मिं पन परपरिग्गहिते परपरिग्गहितसञ्ञिनो तदादायक-उपक्कमसमुट्ठापिका थेय्यचेतना अदिन्नादानं। तं हीने परसन्तके अप्पसावज्जं, पणीते महासावज्जं। कस्मा? वत्थुप्पणीतताय। वत्थुसमत्ते सति गुणाधिकानं सन्तके वत्थुस्मिं महासावज्जं। तं तं गुणाधिकं उपादाय ततो ततो हीनगुणस्स सन्तके वत्थु-

---

जीविति····प०····पिका ति जीवितिन्द्रियस्स उपच्छेदक-उपक्कमस्स समुट्ठापिका। सो ति पाणातिपातो। पयोगमहन्तताया ति वीरियस्स (१११–सी०) महन्तभावतो। पयोगसमत्ते पी ति पयोगस्स[1] सदिसभावेपि[1]। वत्थुमहन्तताया ति वत्थुस्स महन्तभावतो। महासरीरे महासावज्जो पाणातिपातो ति योजना। तस्सा ति पाणातिपातस्स। पञ्च सम्भारा पञ्च अङ्गा होन्ति। पणन्ति सत्ता जीवन्ति एतेना ति पाणो। पाणसञ्ञिनो भावो पाणसञ्ञिता। वधकञ्च तं चित्तञ्चा ति वधकचित्तं। उपक्कमनं उपक्कमो, तेना ति उपक्कमेन। पयुज्जियति पाणातिपातो पवत्तियति एतेहीति पयोगो। सको हत्थो सहत्थो। सहत्थेन निब्बत्तो साहत्थिको, सहत्थस्स वा सम्बन्धीति साहत्थिको। आणापनं आणत्ति। आणत्तिया निब्बत्तो आणत्तिको। निस्सज्जनं निस्सग्गो, निस्सग्गो एव निस्सग्गियो। ओपातखणनादिथावरो मारणत्थं[2] आथब्बणादिविज्जापरिजप्पनं विज्जामयो पयोगो। कम्मविपाकजाय इद्धिया पयोजनं। कम्मविपाकजिद्धि च नामेसा राजादीनं राजिद्धि-आदयो। तत्थ पितुरञ्ञो सीहळिन्दस्स दाठाकोटनेन[3] चूळकुटुम्बियमारणे[4] राजिद्धि दट्ठब्बा। तं ति अत्थं। अञ्ञञ्चा ति थेय्यावहारादिकं एवरूपं अञ्ञञ्च अत्थं न वित्थारयाम।

तत्था ति अदिन्नादानं ति वचने। परपरिग्गहितं ति परेन रक्खितं। यत्था ति यस्मिं धने परो जनो यथाकामं कारिकं (९३-म०) इच्छितानुरूपं कारिभावं। ते च खो पयोगा यथानुरूपं

१-१. पयोगसदिसभावे पि–सी०। २. मरणत्थं–सी०। ३. पादाकोटनेन–सी०। ४. चूळसुमन०–सी०।

स्मिं अप्पसावज्जं। तस्स पञ्च संभारा होन्ति–परपरिग्गहितं, परपरिग्गहितसञ्ञिता, थेय्यचित्तं, उपक्कमो, तेन हरणं ति। छप्पयोगा—साहत्थिकादयो व। ते च खो यथानुरूपं थेय्यावहारो, पसय्हावहारो, पटिच्छन्नावहारो, परिकप्पावहारो, कुसावहारो ति इमेसं पञ्चन्नं अवहारानं वसेन पवत्तन्ति। अयमेत्थ संखेपो। वित्थारो पन समन्तपासादिकाय वुत्तो।

'कामेसु मिच्छाचारो' ति एत्थ पन 'कामेसू'ति मेथुनसमाचारेसु; 'मिच्छाचारो' ति एकन्तनिन्दितो लामकाचारो। लक्खणतो पन असद्धम्माधिप्पायेन कायद्वारप्पवत्ता अगमनीयट्ठान-वीतिक्कमचेतना कामेसु मिच्छाचारो।

तत्थ अगमनीयट्ठानं नाम—पुरिसानं ताव मातुरक्खिता, पितुरक्खिता, मातापितुरक्खिता, भातुरक्खिता, भगिनिरक्खिता, ञातिरक्खिता, गोत्तरक्खिता, धम्मरक्खिता, सारक्खा, सपरिदण्डा ति मातुरक्खितादयो दस; धनक्कीता, छन्दवासिनी, भोगवासिनी, पटवासिनी, ओदपत्तकिनी, ओभटचुम्बटा, दासी च भरिया, कम्मकारी

पवत्ता ति सम्बन्धो। थेनेतीति थेनो। थेनस्स भावो थेय्यं। थेय्येन अवहरणं थेय्यावहारो। पसय्ह अभिभवित्वा अवहरणं पसय्हावहारो। तिणपण्णादीहि अङ्गुलिमुद्दिकादिं[1] पटिच्छादेत्वा पच्छा तस्स पटिच्छन्नस्स अवहरणं पटिच्छन्नावहारो। भण्डवसेन ओकासवसेन च परिकप्पेत्वा अवहरणं परिकप्पावहारो। कुसं सङ्कामेत्वा अवहरणं कुसावहारो।

तत्थ अगमनीयट्ठानं ति तस्मिं कामेसु मिच्छाचारे अगमनीयट्ठानं ति पदे आधारो। पुरिसा[2]····प०····नं[2]. नाम ताव पठमं वीसति इत्थियो ति सम्बन्धो। पुरिसानं ति पदं अगमनीयट्ठानं ति पदे सम्बन्धो।

मातुरक्खिता ति यं पितरि[3] नट्ठे वा मते वा[3] घासच्छादनादीहि पटिजग्गमाना वयप्पत्तं (११२–सी०) कुलघरे दस्सामीति यथा पुरिसेन संवासं न कप्पेति, तथा इदं मा कासीति एवं माता रक्खति, अयं मातुरक्खिता नाम। एतेनुपायेन पितुरक्खितादयो पि ञातब्बा।

गोत्तं वा धम्मो वा न रक्खति समानगोत्तेहि एकवंसजातेहि वा मालाकारादि-एकगणपरियापन्नेहि वा[4] रक्खिता गोत्तरक्खिता नाम। समानकुलं[5] धम्मिकेन[5] पण्डरङ्गपरिब्बाजकादिं एकं सत्थारं उद्दिस्स पब्बजितेहि वा रक्खिता, अयं धम्मरक्खिता नाम। सारक्खा नाम ससामिका। सभागकुलानि पन कुच्छिगतेसु पि गब्भेसु कतिकं करोन्ति, सचे मय्हं पुत्तो होति, तुय्हं धीता, अञ्ञत्थ गन्तुं न लभिस्सति, मय्हं पुत्तस्सेव होतू ति। एवं गब्भे पि परिग्गहिता पि[6] सब्बन्तिमेन परिच्छेदेन एसा[7] मे भरिया[7] भविस्सतीति सञ्ञा यस्सा उपरि केनचि मालागुळं[8] परिक्खित्तं होति, एवरूपा सारक्खा नाम। यो इत्थन्नामं इत्थिं गच्छति तस्स

---

१. अङ्गुलिमुद्दिकादीनि–सी०। २-२. पुरिसानं अग····प····नं–सी०। ३-३. पितरि वा मातरि वा–म०। ४. वा नत्थि–सी०। ५-५. समानकुलधम्मिकेहि–सी०। ६. ति–सी०। ७-७. सा मे भरियाय–म०। ८. मालागुलं–सी०।

च भरिया, धजाहटा, मुहुत्तिका ति एता धनक्कीतादयो दसा ति वीसति इत्थियो। इत्थीसु पन द्विन्नं सारक्खा-सपरिदण्डानं, दसन्नं च धनक्कीतादीनं ति द्वादसन्नं इत्थीनं अञ्ञेसं पुरिसानं इदं अगमनीयट्ठानं नाम।

सो पनेस मिच्छाचारो सीलादिगुणरहिते अगमनीयट्ठाने अप्पसावज्जो, सीलादिगुणसम्पन्ने महासावज्जो। तस्स चत्तारो संभारा—अगमनीयवत्थु, तस्मिं सेवनचित्तं, सेवनप्पयोगो, मग्गेन-मग्गपटिपत्ति-अधिवासनं ति। एको पयोगो साहत्थिको एव।

'मुसा' ति विसंवादनपुरेक्खारस्स अत्थभञ्जको वचीपयोगो, कायप्पयोगो वा। विसंवादनाधिप्पायेन परस्स परं विसंवादका कायवचीपयोगसमुट्ठापिका चेतना मुसा-

---

एत्तको दण्डो ति एवं नामं वा ति[1] गेहं वा वीथिं[2] वा उद्दिस्स ठपितदण्डा पन सपरिदण्डा नाम।

धनक्कीता ति भरियाभावत्थं अप्पेन बहुना वा धनेन कीता। पुरिसेन सम्पटिच्छितत्ता छन्देन अत्तनो[2] रुचिया वसतीति छन्दवासिनी। भोगेन वसतीति भोगवासिनी। यो नं वासेति[3] तस्स हत्थतो उदुक्खलमुसलादिघरूपकरणं लभित्वा भरियभावं गच्छन्तिया जनपदित्थिया एतं अधिवचनं। पटेन वसतीति पटवासिनी। निवासनमत्तं पारुपनमत्तं वा लभित्वा भरियभावं उपगच्छन्तिया दलिद्दिया एतं अधिवचनं। ओदपत्तकिनीति उभिन्नं एकिस्सा उदकपातिया हत्थं[4] ओतारेत्वा इदं उदकं इव[5] सं सुट्ठु[6] अभेज्जा[7] होथा ति वत्वा परिग्गहिताय वोहारनामेतं[8]। ओभतं ओरोपितं चुम्बटकं अस्सा ति ओभतचुम्बटा[9] कट्ठहारिकादीनं अञ्ञतरा, यस्सा[10] सीसतो[10] चुम्बटं ओरोपेत्वा घरे वासेति (९४-म०) तस्मा एतं अधिवचनं। दासी च भरिया चा ति अत्तनो दासी च होति भरिया च। कम्मकारी नाम या गेहे भरिया कम्मं करोति, ताय कोचि संवासं करोति, अत्तनो भरियाय अनत्थिको हुत्वा, अयं वुच्चति कम्मकारी[11] भरिया चा ति। धजेन आहटा[12] धजाहटा। उस्सितद्धजाय सेनाय गन्त्वा परविसयं विलुम्पित्वा आनीता ति वुत्तं होति। तं कोचि भरियं करोति, अयं धजाहटा नाम। मुहुत्तिका ति (११३-सी०) या अस्सामिका सब्बन्तिमेन परिच्छेदेन तङ्खणे मुहुत्तमत्तं[13] पटिसंवसितब्बा, अयं मुहुत्तिका नाम। इत्थीसू ति निद्धारणं। द्वादसन्नं इत्थीनं अगमनीयट्ठानं नाम अञ्ञेहि[14] पुरिसेहि[14] इदं ठानं अगमनीयट्ठानं नामा ति सम्बन्धो।

तस्मिं ति अगमनीयवत्थुम्हि। सेवना चित्तं ति[15] सेवनाय पवत्तं चित्तं। सेवनापयोगो ति[16] सेवनाय पयोगो। मग्गेन····प०····पत्तीति अत्तनो मग्गेन इत्थिया मग्गस्स पापुणनं।

विसं····प०····क्खारस्सा ति विसंवादनं पुब्बं करोन्तस्स। तस्सा ति अभूतवत्थुस्स।

---

१. वा—सी०। २-२. नत्थि—म०। ३. गासेति—म०। ४. नत्थि—म०। ५. विय—सी०। ६. संसट्ठा—सी०। ७. अभेदा-सी०। ८. वोहारं नामेतं—सी०। ९. ओभटचुम्बटका—सी०। १०-१०. यस्सा ति पुत्तो—म०। ११. कम्मकारी च—सी०। १२. आहता—सी० सब्बत्थ। १३. मुहुत्तमत्तेन-सी०। १४-१४. अञ्ञे पुरिसा—म०। १५. सेवनचि०—सी०। १६. सेवनप०—सी०।

वादो। अपरो नयो—'मुसा' ति अभूतं अतच्छं वत्थु। 'वादो' ति तस्स भूततो तच्छतो विञ्ञापनं। लक्खणतो पन अतथं वत्थुं तथतो परं विञ्ञापेतुकामस्स तथाविञ्ञत्ति-समुट्ठापिका चेतना मुसावादो ति। सो यमत्थं भञ्जति तस्स अप्पताय अप्पसावज्जो, महन्तताय महासावज्जो। अपि च गहट्ठानं अत्तनो सन्तकं अदातुकामताय 'नत्थी'ति आदिनयप्पवत्तो अप्पसावज्जो। सक्खिना हुत्वा अत्थभञ्जनत्थं वुत्तो महासावज्जो। पब्बजितानं अप्पकं पि तेलं वा सप्पिं वा लभित्वा हस्साधिप्पायेन 'अज्ज गामे तेलं नदी मञ्ञे सन्दती'ति पूरणकथानयेन पवत्तो अप्पसावज्जो। अदिट्ठं येव पन दिट्ठं ति आदिना नयेन वदन्तानं महासावज्जो।

तस्स चत्तारो संभारा होन्ति—अतथं वत्थुं, विसंवादनचित्तं, तज्जो वायामो, परस्स तदत्थविजाननं ति। एको पयोगो—साहत्थिको व। सो कायेन वा कायपटि-बद्धेन वा वाचाय वा परविसंवादककिरियकरणे दट्ठब्बो। ताय चे किरियाय परो तमत्थं जानाति, अयं किरियसमुट्ठापिकचेतनाखणे येव मुसावादकम्मुना बज्झति। यस्मा पन यथा कायपटिबद्धवाचाहि परं विसंवादेति, तथा इमस्स 'इमं भणाही'ति आणापेन्तो पि, पण्णं लिखित्वा पुरतो निस्सज्जन्तो पि, 'अयमत्थो एवं दट्ठब्बो' ति कुड्डादीसु लिखित्वा ठपेन्तो पि; तस्मा एत्थ आणत्तिक-निस्सग्गिय-थावरा पि पयोगा युज्जन्ति। अट्ठकथासु पन अनागतत्ता वीमंसित्वा गहेतब्बा।

'पिसुणा वाचा' ति आदीसु याय वाचाय यस्स तं वाचं भासति तस्स हदये अत्तनो पियभावं परस्स पेसुञ्ञभावं करोति, सा पिसुणा वाचा। याय पन अत्तानं पि परं पि फरुसं करोति, या वाचा सयं पि फरुसा नेव कण्णसुखा, न हदयङ्गमा, अयं 'फरुसा वाचा' नाम। येन सम्फं पलपति, निरत्थकं, सो 'सम्फप्पलापो'। तेसं मूलभूता चेतना पि पिसुणावाचादिनाममेव लभति। सा एव च इध अधिप्पेता ति।

तत्थ संकिलिट्ठचित्तस्स परेसं वा भेदाय अत्तनो पियकम्यताय वा कायवची-पयोगसमुट्ठापिका चेतना पिसुणा वाचा नाम। सा यस्स भेदं करोति तस्स अप्पगुण-ताय अप्पसावज्जा, महागुणताय महासावज्जा। तस्सा चत्तारो संभारा—'भिन्दि-

---

तथा····प०····का ति अतथवत्थुविञ्ञापनविञ्ञत्तिया[1] समुट्ठापिका। यमत्थं ति यं पयोजनं। नदी मञ्ञे ति नदी विय। पूरणकथानयेना ति[2] पूरणस्स[3] कथननयेन पवत्तो मुसावादो, सो मुसावादो।

आणापेन्तो पि[4] पुग्गलो तथा परं विसंवादेतीति[5] सम्बन्धो। एत्था ति मुसावादे वीमंसित्वा गहेतब्बा। आणत्तिकादयो ति सम्बन्धो।

तत्था ति पिसुणवाचा-फरुसवाचासु[6]। इतीति इमिना कारणेन। तस्सा ति पर-

---

१. ०विञ्ञापग०–सी०। २. पूरण-नयेना ति–म०। ३. पुराणस्स–सी०। ४. विस्स-ज्जेन्तो पि, ठपेन्तो पि–सी०। ५. विसंवादेति मुसावादकम्मना बज्जतीति–सी०। ६. पिसुणा० फरुसा०–सी०।

तब्बो परो' इति 'इमे नाना भविस्सन्ती' ति भेदपुरेक्खारता वा, 'इति अहं पियो भविस्सामि विस्सासिको' ति पियकम्यता वा, तज्जो वायामो, तस्स तदत्थविजाननं ति। परे पन अभिन्ने कम्मपथभेदो नत्थि, भिन्ने एव होति।

परस्स मम्मच्छेदक-कायवचीपयोगसमुट्ठापिका एकन्तफरुसचेतना 'फरुसा-वाचा'। तस्सा आविभावत्थमिदं वत्थु—एको किर दारको मातुवचनं अनादियित्वा अरञ्ञं गच्छति। तं माता निवत्तेतुं असक्कोन्ती 'चण्डा तं महिंसी अनुबन्धतू'ति अक्कोसि। अथ'स्स तथेव अरञ्ञे महिंसी उट्ठासि। दारको 'यं मम माता मुखेन कथेसि तं मा होतु, यं चित्तेन चिन्तेसि तं होतू' ति सच्चकिरियं अकासि। महिंसी तत्थेव बद्धा विय अट्ठासि। एवं मम्मच्छेदको पि पयोगो चित्तसण्हताय फरुसवाचा न होति। मातापितरो हि कदाचि पुत्तके एवं पि वदन्ति—'चोरा वो खण्डाखण्डिकं करोन्तू'ति, उप्पलपत्तं पि च नेसं उपरि पतन्तं न इच्छन्ति। आचरियुपज्झाया च कदाचि निस्सितके एवं वदन्ति—'किं इमे अहिरिका अनोत्तप्पिनो वदन्ति, निक्कड्ढथ ने' ति; अथ च नेसं आगमाधिगमसम्पत्तिं इच्छन्ति। यथा पि चित्तसण्हताय फरुसा वाचा न होति, एवं वचनसण्हताय अफरुसवाचा पि न होति। न हि मारापेतुकामस्स 'इमं सुखं सयापेथा'ति वचनं अफरुसवाचा होति। चित्तफरुसताय पनेसा फरुसवाचा व। सा यं सन्धाय पवत्तिता तस्स अप्पगुणताय अप्पसावज्जा, महागुणताय महासा-वज्जा। तस्सा तयो संभारा—अक्कोसितब्बो परो, कुपितचित्तं, अक्कोसना ति।

अनत्थविञ्ञापिका कायवचीपयोगसमुट्ठापिका अकुसलचेतना 'सम्फप्प-लापो'। सो आसेवनमन्दताय अप्पसावज्जो। आसेवनमहन्तताय महासावज्जो। तस्स द्वे संभारा—**भारतयुद्ध-सी**ताहरणादि-निरत्थककथापुरेक्खारता, तथारूपिकथाकथनं च। परे पन तं कथं अगण्हन्ते कम्मपथभेदो नत्थि, परेन सम्फप्पलापे गहिते येव होति।

अभिज्झायती ति 'अभिज्झा'। परभण्डाभिमुखी हुत्वा तन्निन्नताय पवत्तती ति अत्थो। सा 'अहो वत इदं ममस्सा' ति एवं परभण्डाभिज्झायनलक्खणा। अदिन्ना-दानं विय अप्पसावज्जा च। तस्सा द्वे संभारा—परभण्डं, अत्तनो परिणामनं च। पर-भण्डवत्थुके हि लोभे उप्पन्ने पि न ताव कम्मपथभेदो होति याव न 'अहो वत इदं ममस्सा'ति अत्तनो परिणामेति।

जनस्स।

मम्मच्छेदका ति[1] मरन्ति अनेना ति मम्मं। यस्मिं ताळिते[2] न जीवति तं ठानं मम्मं नाम। 'मर'–पाणचागे। खीसुवीयागाही ति (१३६ पवु०) आदि **मोग्गल्लानसुत्तेन** मो। मम्मं छिन्दतीति मम्मच्छेदको। सा यं ति यं पुग्गलं सन्धाय सा फरुसा[3] वाचा[3] पुग्गलेन पवत्तिता।

भारत....प०....रता ति भारतस्स युद्धञ्च सीताय आहरणञ्च, तं आदि यासं कथानं तानि[4] भारतयुद्धसीताहरणादीनि, तानि एव निरत्थककथानि भारत....प०....कथानि, पुरेक्खारानि[5] यस्स सो, तस्स भावो भार....प०....ता।

तन्निन्नताय[6] तस्मिं परभण्डे निन्नताय। तस्सा ति[7] परसत्तस्स।

---

१. ०पी ति–सी०। २. पीळिते–सी०। ३-३. फरुसवाचा–सी०। ४. नत्थि–म०। ५. पुरेक्खारानं–म०। ६. तन्निन्नताया ति–सी०। ७. परस्स चा ति–सी०।

हितसुखं ब्यापादयती ति 'ब्यापादो'। सो परविनासाय मनोपदोसलक्खणो। फरुसा वाचा विय अप्पसावज्जो च महासावज्जो च। तस्स द्वे संभारा—परसत्तो च, तस्स च विनासचिन्ता। परसत्तवत्थुके हि कोधे उप्पन्ने पि न ताव कम्मपथभेदो होति याव 'अहो वतायं उच्छिज्जेय्य विनस्सेय्या' ति तस्स विनासं न चिन्तेति।

यथाभुच्चगहणाभावेन मिच्छा पस्सती ति 'मिच्छादिट्ठि'। सा 'नत्थि दिन्नं' ति आदिना नयेन विपरीतदस्सनलक्खणा। सम्फप्पलापो विय अप्पसावज्जा महासावज्जा च। अपि च अनियता अप्पसावज्जा, नियता महासावज्जा। तस्सा द्वे संभारा—वत्थुनो च गहिताकारविपरीतता, यथा च तं गण्हाति तथाभावेन तस्सुपट्ठानं ति। तत्थ नत्थिक-अहेतुक-अकिरियदिट्ठीहि एव कम्मपथभेदो होति, न अञ्ञदिट्ठीहि।

इमेसं पन दसन्नं अकुसलकम्मपथानं धम्मतो कोट्ठासतो आरम्मणतो वेदनातो मूलतो चा ति पञ्चहाकारेहि विनिच्छयो वेदितब्बो—

तत्थ 'धम्मतो' ति एतेसु हि पटिपाटिया सत्त चेतना धम्मा होन्ति, अभिज्झादयो तयो चेतनासम्पयुत्ता।

'कोट्ठासतो' ति पटिपाटिया सत्त, मिच्छादिट्ठि चा ति इमे अट्ठ कम्मपथा एव होन्ति; नो मूलानि। अभिज्झाब्यापादा कम्मपथा चेव मूलानि च। अभिज्झा हि मूलं पत्वा 'लोभो अकुसलमूलं' होति, ब्यापादो 'दोसो अकुसलमूलं'।

'आरम्मणतो' ति पाणातिपातो जीवितिन्द्रियारम्मणतो संखारारम्मणो होति। अदिन्नादानं सत्तारम्मणं वा होति संखारारम्मणं वा। मिच्छाचारो फोट्ठब्बवसेन संखारारम्मणो; सत्तारम्मणो ति पि एके। मुसावादो सत्तारम्मणो वा, संखारारम्मणो वा। तथा पिसुणा वाचा। फरुसा वाचा सत्तारम्मणा व। सम्फप्पलापो दिट्ठसुतमुतविञ्ञातवसेन सत्तारम्मणो वा संखारारम्मणो वा। तथा अभिज्झा। ब्यापादो सत्तारम्मणा व। मिच्छादिट्ठि तेभूमकधम्मवसेन संखारारम्मणा व।

'वेदनातो' ति पाणातिपातो दुक्खवेदनो होति। किञ्चा पि हि राजानो चोरं दिस्वा हसमाना पि 'गच्छथ नं घातापेथा' ति वदन्ति, सन्निट्ठापकचेतना पन नेसं दुक्खसम्पयुत्ता व होति। अदिन्नादानं ति-वेदनं। तं हि परभण्डं दिस्वा हट्ठ-तुट्ठस्स गण्हतो सुखवेदनं होति, भीततसितस्स गण्हतो दुक्खवेदनं। तथा विपाकनिस्सन्द-

---

तं ति वत्थु[1]। तस्सुपट्ठानं ति तस्स वत्थुस्स उपट्ठानं[2] पाकटभावो। तत्था ति तासु दिट्ठीसु निद्धारणं।

तत्था ति धम्मतो ति आदि पदेसु। एतेसू ति दसाकुसलकम्मपथेसु।

अकुसलकम्मपथकथावण्णना निट्ठिता

---

१. तं वत्थुं—सी०। २. पट्ठानं—म०।

फलानि पच्चवेक्खन्तस्स। गहणकाले मज्झत्तभावे ठितस्स पन गण्हतो अदुक्खमसुखवेदनं होती ति। मिच्छाचारो सुखमज्झत्तवसेन द्वि-वेदनो। सन्निट्ठापकचित्ते पन मज्झत्तवेदनो न होति। मुसावादो अदिन्नादाने वुत्तनयेनेव ति-वेदनो; तथा पिसुणा वाचा। फरुसा वाचा दुक्खवेदना। सम्फप्पलापो ति-वेदनो। परेसु हि साधुकारं देन्तेसु चेलादीनि उक्खिपन्तेसु हट्ठतुट्ठस्स **सी**ताहरण-**भा**रतयुद्धादीनि कथनकाले सो सुखवेदनो होति। पठमं दिन्नवेतनेन एकेन पच्छा आगन्त्वा 'आदितो पट्ठाय कथेही' ति वुत्ते 'अननुसन्धिकं पकिण्णककथं कथेस्सामि नु खो नो'ति दोमनस्सितस्स कथनकाले दुक्खवेदनो होति, मज्झत्तस्स कथयतो अदुक्खमसुखवेदनो होति। अभिज्झा सुखमज्झत्तवसेन द्वि-वेदना; तथा मिच्छादिट्ठि। ब्यापादो दुक्खवेदनो।

'मूलतो' ति पाणातिपातो दोसमोहवसेन द्वि-मूलको होति। अदिन्नादानं दोसमोहवसेन वा लोभमोहवसेन वा। मिच्छाचारो लोभमोहवसेनेव। मुसावादो दोसमोहवसेन वा लोभमोहवसेन वा; तथा पिसुणा वाचा सम्फप्पलापो च। फरुसा वाचा दोसमोहवसेन। अभिज्झा मोहवसेन एकमूला; तथा ब्यापादो। मिच्छादिट्ठि लोभमोहवसेन द्वि-मूला ति।

अकुसलकम्मपथकथा निट्ठिता।

कुसलकम्मपथकथा

पाणातिपातादीहि पन विरतियो अनभिज्झा-अब्यापाद-सम्मादिट्ठियो चा ति इमे दस कुसलकम्मपथा नाम। तत्थ पाणातिपातादयो वुत्तत्था एव। पाणातिपातादीहि एताय विरमन्ति, सयं वा विरमति, विरमणमत्तमेव वा एतं ति विरति। या पाणातिपाता विरमन्तस्स "या तस्मिं समये पाणातिपाता आरति विरती" [विभ० ३४२] ति एवं वुत्ता कुसलचित्तसम्पयुत्ता विरति, सा पभेदतो तिविधा होति—सम्पत्तविरति, समादानविरति, समुच्छेदविरती ति।

तत्थ असमादिन्नसिक्खापदानं अत्तनो जाति-वय-बाहुसच्चादीनि पच्चवेक्खित्वा 'अयुत्तं अम्हाकं एवरूपं पापं कातुं' ति सम्पत्तवत्थुं अवीतिक्कमन्तानं उप्पज्जमाना विरति 'सम्पत्तविरती'ति वेदितब्बा। तत्रिदं वत्थुं—**सी**हळदीपे **च**क्कनउपासकस्स विय। तस्स किर दहरकाले येव मातुया रोगो उप्पज्जि। वेज्जेन च 'अल्लससमंसं लद्धुं वट्टती' ति वुत्तं। ततो **च**क्कनस्स भाता 'गच्छ, तात, खेत्तं आहिण्डाही' ति **च**क्कनं पेसेसि। सो तत्थ गतो। तस्मिं च समये एको ससो तरुणसस्सं खादितुं आगतो होति। सो तं दिस्वा वेगेन धावन्तो वल्लिया बद्धो 'किरि किरी' ति सद्दमकासि। **च**क्कनो तेन सद्देन गन्त्वा तं गहेत्वा चिन्तेसि—'मातु भेसज्जं करोमी' ति।

कुसलकम्मपथकथावण्णना

तत्था ति तिविधासु विरतीसु। अल्ल....प०....तीति वचनं वेज्जेन वुत्तं।

पुन चिन्तेसि—'न मे' तं पटिरूपं य्वाहं मातु जीवितकारणा परं जीविता वोरोपेय्यं' ति। अथ नं 'गच्छ, अरञ्ञे ससेहि सद्धिं तिणोदकं परिभुञ्जा' ति मुञ्चि। भातरा च 'किं तात ससो लद्धो' ति पुच्छितो तं पवत्तिं आचिक्खि। ततो नं भाता परिभासि। सो मातु सन्तिकं गन्त्वा 'यतो'हं जातो नाभिजानामि सञ्चिच्च पाणं जीविता वोरोपेता' ति सच्चं वत्वा अट्ठासि। तावदेव'स्स माता अरोगा अहोसि।

समादिन्नसिक्खापदानं पन सिक्खापदसमादाने व ततुत्तरिं च अत्तनो जीवितं परिच्चजित्वा वत्थुं अवीतिक्कमन्तानं उप्पज्जमाना विरति 'समादानविरती' ति वेदितब्बा। **उत्तरवड्ढमानपब्बतवासि**–उपासकस्स विय। सो किर **अंबरियविहारवा**-सिनो **पिङ्गल–बुद्धरक्खितत्थेरस्स** सन्तिके सिक्खापदानि गहेत्वा खेत्तं कसति। अथ'स्स गोणो नट्ठो। सो तं गवेसन्तो **उत्तरवड्ढमानपब्बतं** आरुहि। तत्थ नं महासप्पो अग्गहेसि। सो चिन्तेसि—'इमाय'स्स तिखिणवासिया सीसं छिन्दामी' ति। पुन चिन्तेसि–'न मे'तं पटिरूपं य्वाहं भावनीयस्स गरुनो सन्तिके सिक्खापदानि गहेत्वा भिन्देय्यं' ति एवं यावततियं चिन्तेत्वा 'जीवितं परिच्चजामि, न सिक्खापदं' ति अंसे ठपितं तिखिणदण्डवासिं अरञ्ञे छड्डेसि। तावदेव नं महावालो मुञ्चित्वा अगमासी ति।

अरियमग्गसंपयुत्ता विरति 'समुच्छेदविरती' ति वेदितब्बा, यस्सा उप्पत्तितो पभुति 'पाणं घातेस्सामी' ति अरियपुग्गलानं चित्तं पि न उप्पज्जती ति।

इदानि यथा अकुसलानं एवं इमेसं पि कुसलकम्मपथानं धम्मतो कोट्ठासतो आरम्मणतो वेदनातो मूलतो ति पञ्चहाकारेहि विनिच्छयो वेदितब्बो–

तत्थ 'धम्मतो' ति एतेसु हि पटिपाटिया सत्त चेतना पि वट्टन्ति, विरतियो पि; अन्ते तयो चेतनासम्पयुत्ता व। 'कोट्ठासतो' ति पटिपाटिया सत्त कम्मपथा एव, नो मूलानि। अन्ते तयो कम्मपथा चेव मूलानि च। अनभिज्झा हि मूलं पत्वा 'अलोभो कुसलमूलं' होति। अब्यापादो 'अदोसो कुसलमूलं', सम्मादिट्ठि 'अमोहो कुसलमूलं'। 'आरम्मणतो'ति पाणातिपातादीनं आरम्मणानेव एतेसं आरम्मणानि। वीतिक्कमितब्बतो येव हि वेरमणी नाम होति। यथा पन निब्बानारम्मणो अरियमग्गो किलेसे पजहति, एवं जीवितिन्द्रियादि-आरम्मणा पेते कम्मपथा पाणातिपातादीनि दुस्सील्यानि पजहन्ती ति वेदितब्बा। 'वेदनातो'ति सब्बे सुखवेदना वा होन्ति मज्झत्तवेदना वा।

समादिन्नसिक्खापदानं अवीतिक्कमन्तानं उप्पज्जमाना ति सम्बन्धो। ततुत्तरिं ति ततो सिक्खापदसमादानतो (९५–म०) उत्तरिं। (११४–सी०) इमायस्सा ति इमाय तिखिणवासिया[1] अस्स सप्पस्स। [2]न मे तं ति मे[3] तं सिक्खापदभिन्दनं[4]।

यथा अकुसलानं पञ्चहाकारेहि विनिच्छयो वेदितब्बो ति योजना।

---

१. तिक्खवासिया-म०। २. न नत्थि-सी०। ३, ०मम-सी०। ४,० सिक्खापदं भिन्दनं –म०।

कुसलं पत्वा हि दुक्खवेदना नाम नत्थि। 'मूलतो'ति पटिपाटिया सत्त ञाणसम्पयुत्तचित्तेन विरमन्तस्स अलोभ-अदोस-अमोहवसेन ति-मूला होन्ति; ञाणविप्पयुत्तचित्तेन विरमन्तस्स द्वि-मूला। अनभिज्झा ञाणसम्पयुत्तचित्तेन विरमन्तस्स द्वि-मूला होति; ञाणविप्पयुत्तचित्तेन एक-मूला। अलोभो पन अत्तना व अत्तनो मूलं न होति। अब्यापादे पि एसेव नयो। सम्मादिट्ठि अलोभादोसवसेन द्वि-मूला वा ति। इमे दस कुसलकम्मपथा नाम।

इदानि इमस्मिं ठाने कम्मपथसंसन्दनं नाम वेदितब्बं। पञ्चफस्सद्वारवसेन हि उप्पन्नो असंवरो अकुसलं मनोकम्ममेव होति। मनोफस्सद्वारवसेन उप्पन्नो तीणि पि कम्मानि होन्ति—सो हि कायद्वारे चोपनं पत्तो अकुसलं कायकम्मं होति, वचीद्वारे अकुसलं वचीकम्मं, उभयत्थ चोपनं अप्पत्तो अकुसलं मनोकम्मं। पञ्च-असंवरद्वारवसेन उप्पन्नो अकुसलं मनोकम्ममेव होति। चोपनकाय-असंवरद्वारवसेन उप्पन्नो अकुसलं कायकम्ममेव होति, वाचा-असंवरद्वारवसेन उप्पन्नो अकुसलं वचीकम्ममेव होति, मनो-असंवरद्वारवसेन उप्पन्नो अकुसलं मनो-कम्ममेव होति। तिविधं कायदुच्चरितं अकुसलं कायकम्ममेव होति, चतुब्बिधं वचीदुच्चरितं अकुसलं वचीकम्ममेव होति, तिविधं मनोदुच्चरितं अकुसलं मनोकम्ममेव होति।

पञ्चफस्सद्वारवसेन उप्पन्नो संवरो पि कुसलं मनोकम्ममेव होति। मनोफस्सद्वारवसेन उप्पन्नो पन अयं पि, असंवरो विय, तीणि पि कम्मानि होति। पञ्चसंवरद्वारवसेन उप्पन्नो पि कुसलं मनोकम्ममेव होति, चोपनकाय-संवरद्वारवसेन उप्पन्नो कुसलं कायकम्ममेव होति, वाचासंवरद्वारवसेन उप्पन्नो कुसलं वचीकम्ममेव होति, मनोसंवरद्वारवसेन उप्पन्नो कुसलं मनोकम्ममेव होति। तिविधं कायसुचरितं कुसलं कायकम्ममेव होति, चतुब्बिधं वचीसुचरितं कुसलं वचीकम्ममेव होति, तिविधं मनोसुचरितं कुसलं मनोकम्ममेव होति।

अकुसलं कायकम्मं पञ्चफस्सद्वारवसेन नुप्पज्जति;[1] मनोफस्सद्वारवसेनेव उप्पज्जति। तथा अकुसलं वचीकम्मं। अकुसलं मनोकम्मं पन छफस्सद्वारवसेन उप्पज्जति; तं कायवचीद्वारेसु चोपनं पत्तं अकुसलं कायकम्मवचीकम्मं होति, चोपनं अप्पत्तं अकुसलं मनोकम्ममेव। यथा च पञ्चफस्सद्वारवसेन, एवं पञ्च-असंवरद्वारवसेन पि अकुसलं कायकम्मं नुप्पज्जति, चोपनकाय-असंवरद्वारवसेन पन वाचा-असंवरद्वारवसेन च उप्पज्जति; मनो-असंवरद्वारवसेन नुप्पज्जति। अकुसलं वचीकम्मं पि पञ्च-असंवरद्वारवसेन नुप्पज्जति,। चोपनकाय-वाचा-असंवरद्वारवसेन उप्पज्जति; मनो-असंवरद्वार-

---

अयम्पी ति[1] संवरो। यथा च पञ्चफस्सद्वारवसेन अकुसलं कायकम्मं उप्पज्जतीति सम्बन्धो।

---

१. नत्थि—म०।

वसेन नुप्पज्जति। अकुसलं मनोकम्मं अट्ठ-असंवरद्वारवसेन पि उप्पज्जतेव। कुसल-कायकम्मादीसु पि एसेव नयो।

अयं पन विसेसो—यथा अकुसलकायकम्मवचीकम्मानि मनो-असंवरद्वारवसेन नुप्पज्जन्ति, न तथा एतानि। एतानि पन कायङ्गवाचङ्गे अचोपेत्वा सिक्खापदानि गण्हन्तस्स मनोसंवरद्वारे पि उप्पज्जन्ति एव। तत्थ कामावचरकुसलचित्तं तिविध-कम्मद्वारवसेन उप्पज्जति, पञ्चविञ्ञाणद्वारवसेन नुप्पज्जति; 'यमिदं चक्खुसम्फस्स-पच्चया उप्पज्जति वेदयितं, सुखं वा दुक्खं वा अदुक्खमसुखं वा' ति इमिना पन नयेन छफस्सद्वारवसेन उप्पज्जति; अट्ठ-असंवरद्वारवसेन नुप्पज्जति, अट्ठसंवरद्वारवसेन उप्प-ज्जति; दस-अकुसलकम्मपथवसेन नुप्पज्जति, दसकुसलकम्मपथवसेन उप्पज्जति; तस्मा इदं पि चित्तं तिविधकम्मद्वारवसेन वा उप्पन्नं होति, छफस्सद्वारवसेन वा, अट्ठसंवर-द्वारवसेन वा दसकुसलकम्मपथवसेन वा। "कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति····प०····रूपारम्मणं वा····प०····धम्मारम्मणं वा" ति [§१] वुत्ते सब्बं वुत्तमेव होती ति।

द्वारकथा निट्ठिता।

यं यं वा पनारब्भा [§१] ति एत्थ अयं योजना—हेट्ठा वुत्तेसु रूपारम्मणा-दीसु रूपारम्मणं वा आरब्भ, आरम्मणं कत्वा ति अत्थो। सद्दारम्मणं वा····प०····धम्मारम्मणं वा आरब्भ उप्पन्नं होती ति। एत्तावता एतस्स चित्तस्स एतेसु आरम्म-णेसु यं किञ्चि एकमेव आरम्मणं अनुञ्ञातसदिसं होति। इदं च एतस्मिं समये एकस्स वा पुग्गलस्स रूपारम्मणं आरब्भ उप्पन्नं पुन अञ्ञस्मिं समये अञ्ञस्स वा पुग्गलस्स सद्दादीसु पि अञ्ञतरं आरम्मणं आरब्भ उप्पज्जति एव। एवं उप्पज्जमानस्स च'स्स एकस्मिं भवे पठमं रूपारम्मणं आरब्भ पवत्ति होति, पच्छा सद्दारम्मणं ति अयं पि कमो नत्थि। रूपादीसु चा पि पठमं नीलारम्मणं पच्छा पीतकारम्मणं ति अयं पि नियमो नत्थि। इति इमं सब्बारम्मणतं च, कमाभावं च, कमाभावे पि च नीलपीता-दीसु नियमाभावं च दस्सेतुं 'यं यं वा पनारब्भा' ति आह।

इदं वुत्तं होति—इमेसु रूपादीसु न यं किंचि एकमेव, अथ खो यं यं वा पना-रब्भ उप्पन्नं होति। एवं उप्पज्जमानं पि च 'पठमं रूपारम्मणं पच्छा सद्दारम्मणं

एतानीति कुसलकायकम्मवचीकम्मानि। तत्था ति तिविधकम्मद्वारादीसु निद्धारणं[1]। यमिदं[2] वेदयितं दसकुसलकम्मपथवसेन वा उप्पन्नं होति। कामावचरं····प०····धम्मारम्मणं वा ति वचने भगवता वुत्ते सब्बं चित्तं वुत्तमेव होतीति।

द्वारकथावण्णना निट्ठिता

अस्सा ति चित्तस्स। कमाभावे[3] पि चा ति चसद्दो नियमाभावं चा ति योजेतब्बो।

---

१. नत्थि-म०। २. यम्पिदं–सी०। ३. कामाभावे–सी०।

आरब्भा' ति एवं पि अनुप्पज्जित्वा यं यं वा पनारब्भ उप्पन्नं होति; 'पटिलोमतो वा अनुलोमतो वा, एकन्तरिक-द्वन्तरिकादिनयेन वा, रूपारम्मणादीसु यं वा तं वा आरम्मणं कत्वा उप्पन्नं होती' ति अत्थो। रूपारम्मणेसु पि च 'पठमं नीलारम्मणं पच्छा पीतारम्मणं' ति इमिना पि नियमेन अनुप्पज्जित्वा, यं यं पनारब्भ 'नीलपीतकादीसु रूपारम्मणेसु यं वा तं वा रूपारम्मणं आरब्भ उप्पन्नं होती' ति अत्थो। सद्दारम्मणादीसु पि एसेव नयो। अयं ताव एका योजना।

अयं पन अपरा—रूपं आरम्मणं एतस्सा ति रूपारम्मणं। ....प०.... धम्मो आरम्मणं एतस्सा ति धम्मारम्मणं। इति रूपारम्मणं वा....प०....धम्मारम्मणं वा चित्तं उप्पन्नं होती ति वत्वा पुन 'यं यं वा पनारब्भा' ति आह। तस्स'त्थो—एतेसु रूपादीसु हेट्ठा वुत्तनयेनेव यं वा तं वा पनारब्भ उप्पन्नं होती ति। महा-अट्ठकथायं पन 'यं-यं-वा-पनके अभिनवं नत्थि, हेट्ठागहितमेव गहितं' ति वत्वा 'रूपं वा आरब्भ ...प०....धम्मं वा आरब्भ, इदं वा इदं वा आरब्भा ति कथेतुं इदं वुत्तं' ति एत्तकमेव आगतं।

तस्मिं समये [§१] ति इदं अनियमनिद्दिट्ठस्स समयस्स नियमतो पटिनिद्देसवचनं। तस्मा 'यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति, तस्मिं येव समये **फस्सो होति** ....प०.... **अविक्खेपो होती**' ति अयमत्थो वेदितब्बो। तत्थ यथेव चित्तं एवं फस्सादीसु पि फस्सो होति। किं होति? 'कामावचरो होति, कुसलो होति, उप्पन्नो होति, सोमनस्ससहगतो होती' ति आदिना नयेन लब्भमानपदवसेन योजना कातब्बा। वेदनायं हि 'सोमनस्ससहगता' ति पञ्चिन्द्रिये च 'ञाणसम्पयुत्तं' ति न लब्भति, तस्मा 'लब्भमानपदवसेना' ति वुत्तं। इदं अट्ठकथामुत्तकं आचरियानं मतं; न पनेतं सारतो दट्ठब्बं।

कस्मा पनेत्थ फस्सो व पठमं वुत्तो ति? चितस्स पठमाभिनिपातत्ता। आरम्मणस्मिं हि चित्तस्स पठमाभिनिपातो हुत्वा फस्सो आरम्मणं फुसमानो उप्पज्जति, तस्मा पठमं वुत्तो। फस्सेन फुसित्वा वेदनाय वेदियति, सञ्ञाय सञ्जानाति, चेतनाय चेतेति। तेन वुत्तं—"फुट्ठो भिक्खवे वेदेति, फुट्ठो सञ्जानाति फुट्ठो चेतेती [सं० ३.६३]" ति। अपि च, अयं फस्सो नाम यथा पासादं पत्वा थम्भो नाम सेसदब्ब-

---

यं-यं-वा-पनके ति यं-यं-वा-पना ति एत्थ वुत्ते यं-यं-वा पनके।

तत्था ति चित्तफस्सादीसु निद्धारणं। पञ्चिन्द्रिये चा ति चसद्दो सोमनस्ससहगता ति च ञाणसम्पयुत्तं ति चा ति योजेतब्बो। इदं ति यथेव चित्तं ति आदिवचनं। एतं ति तत्थ यथेव चित्तं ति आदिवचनं।

एत्थ फस्सादीसु फस्सो व पठमं भगवता कस्मा वुत्तो इति पुच्छा। चित्तस्स पठमाभिनिपातत्ता फस्सो व पठमं वुत्तो। चित्तस्सा ति पदं अभिनिपात इति पदे सम्बन्धो। आरम्म-

सम्भारानं बलपच्चयो, तुला-संघाट-भित्ति-पाद-कूट-गोपानसी-पक्खपासक-मुखवट्टियो थम्भे बद्धा थम्भे पतिट्ठिता, एवमेव सहजातसम्पयुत्तधम्मानं बलवपच्चयो होति। थम्भसदिसो हि एस। अवसेसा दब्बसम्भारसदिसा ति। तस्मा पि पठमं वुत्तो।

इदं पन अकारणं। एकचित्तस्मिं हि उप्पन्नधम्मानं 'अयं पठमं उप्पन्नो अयं पच्छा' ति इदं वत्तुं न लब्भा। बलवपच्चयभावे पि फस्सस्स कारणं न दिस्सति। देसनावारेनेव फस्सो पठमं वुत्तो। वेदना होति फस्सो होति, सञ्ञा होति फस्सो होति, चेतना होति फस्सो होति, चित्तं होति फस्सो होति, वेदना होति सञ्ञा होति, चेतना होति वितक्को होती ति आहरितुं पि हि वट्टेय्य। देसनावारेन पन फस्सो व पठमं वुत्तो ति वेदितब्बो। यथा चेत्थ एवं सेसधम्मेसु पि पुब्बापरक्कमो नाम न परियेसितब्बो।

वचनत्थलक्खणरसादीहि पन धम्मा एव परियेसितब्बा। सेय्यथीदं–फुसती ति फस्सो। स्वायं फुसनलक्खणो, संघट्टनरसो, संनिपातपच्चुपट्ठानो, आपाथगतविसयपद-

---

णेसु फस्सवसेन पठमं अभिनिपातो पठमाभिनिपातो, फस्सो। पठमाभिनिपातस्स भावो....प.... तत्तं।

एवं पठमाभिहितकमं दस्सेत्वा इदानि तमेव दस्सेतुं फस्सेन पना ति आदि वुत्तं। अयं फस्सो नाम बलवपच्चयो होतीति सम्बन्धो। तुला च सङ्घाटो च भित्तिपादो च कूटञ्च गोपानसी च पक्खपासकञ्च मुखवट्टि च तुला...प०...मुखवट्टियो। तलति सङ्घाटेसु पतिट्ठातीति तुला, 'तल'—पतिट्ठायं। अस्सुत्तं पक्खानं समवाहितभावकरणतो तुलति मिनाति एताया ति तुला। 'तुल'—उम्माने[1]। सम्मा घटेन्ति एत्थ गोपानस्यादयो ति सङ्घाटो। भिदियति द्विधा करियतीति भित्ति, 'भिदि'–द्विधाकरणे, ति। भित्तिया पादो भित्तिपादो। कुटियति छिन्दियतीति कूटं, 'कुट'-छेदने, कम्मनि णो। गं वस्सोदकं सूरियादिकिरणञ्च पिवन्ति विनासयन्ति अब्भन्तरमप्पवेसनवसेन (११५–सी०) ति गोपाना, इट्ठकादयो। गोपानानि सिनोन्ति[2] बन्धन्ति एत्था ति गोपानसी। छिन्नं पक्खानं अपत्तनत्थं बन्धन्तो पासो विया ति पक्खपासको। मुखस्स वट्टि मुखववट्टि। थम्भाबद्धा ति थम्भेन आबद्धा पटिबद्धा! तस्मा पी ति अपिसद्दो पठमं उप्पन्नकारणं अपेक्खति।

इदं ति चित्तस्स पठमाभिनिपातत्ता ति आदि वचनं अकारणं। अयुत्तभावं[3] ञापेन्तो आह एकचित्तस्मिं ति आदि, फस्सस्स बलवपच्चयभावे पि कारणं न दिस्सति। अपिसद्देन न केवलं पठमं उप्पन्नभावो न दिस्सति ति ञापेति। चित्तस्स (९६–म०) पठमाभिनिपातत्ता ति आदिवचनं महा-अट्ठकथायं वुत्तं ति दट्ठब्बं। यदि इदं सब्बं अकारणं फस्सो केन कारणेन पठमं वुत्तो ति आह देसना ति आदि। वुत्तमत्थं दळ्हीकरोन्तो[4] आह दस्सनाभेदा ति आदि। एत्था ति फस्से।

फुसनं लक्खणं अस्सा ति फुसनलक्खणो। सङ्घट्टनं रसो अस्सा ति सङ्घट्टनरसो। सन्निपातस्स कारणस्स वसेन पच्चुपट्ठानं अस्सा ति सन्निपातपच्चुपट्ठानो। आपाथगतो विसयो

---

१. उम्मादे–सी०। २. सिमेन्ति–सी०। ३. अयुत्तं अयुत्त०–सी०। ४. दळ्हं करोन्तो–सी०।

ट्ठानो। अयं हि अरूपधम्मो समानो पि आरम्मणे फुसनाकारेनेव पवत्तती ति फुसनलक्खणो। एकदेसेन च अनल्लीयमानो पि रूपं विय चक्खुं, सद्दो विय च सोतं, चित्तं आरम्मणं च संघट्टेती ति संघट्टनरसो। वत्थारम्मणसंघट्टनतो वा उप्पन्नत्ता संपत्ति-अत्थेन पि रसेन संघट्टनरसो ति वेदितब्बो।

वुत्तं हेतं अट्ठकथायं–"चतुभूमिकफस्सो हि नो-फुसनलक्खणो नाम नत्थि। संघट्टनरसो पन पञ्चद्वारिको व होति। पञ्चद्वारिकस्स हि फुसनलक्खणो ति पि संघट्टनरसो ति पि नामं; मनोद्वारिकस्स फुसनलक्खणो त्वेव नामं, न संघट्टनरसो" ति। इदं च वत्वा इदं सुत्तं आभतं–"यथा महाराज द्वे मेण्डा युज्झेय्युं, यथा एको मेण्डो एवं चक्खु दट्ठब्बं, यथा दुतियो मेण्डो एवं रूपं दट्ठब्बं; यथा तेसं संनिपातो एवं फस्सो दट्ठब्बो" [मि० ६२]। एवं फुसनलक्खणो च फस्सो, संघट्टनरसो च। "यथा च महाराज द्वे सम्मा वज्जेय्युं, द्वे पाणियो वज्जेय्युं, यथा एको पाणि एवं चक्खु दट्ठब्बं, यथा दुतियो पाणि एवं रूपं दट्ठब्बं, यथा च तेसं सन्निपातो एवं फस्सो दट्ठब्बो। एवं फुसनलक्खणो च फस्सो संघट्टनरसो चा" [मि० ६३] ति वित्थारो।

यथा वा "चक्खुना रूपं दिस्वा" [म० १.१८०] ति आदीसु चक्खुविञ्ञाणादीनि चक्खु-आदिनामेन वुत्तानि, एवमिधा पि तानि चक्खु-आदिनामेनेव वेदितब्बानि। तस्मा 'एवं चक्खु दट्ठब्बं' ति आदीसु एवं चक्खुविञ्ञाणं दट्ठब्बं ति इमिना नयेन अत्थो वेदितब्बो। एवं सन्ते चित्तारम्मणसंघट्टनतो इमस्मिं पि सुत्ते किच्चट्ठेनेव रसेन संघट्टनरसो ति सिद्धो होति।

पदट्ठानं आसन्नकारणं अस्सा ति आपाथगतविसयपदट्ठानो। ननु अयं धम्मो चेतसिको स्वायं अरूपधम्मो समानो कथं फुसनलक्खणो होतीति चोदनं मनसिकत्वा आह अयं हीति आदि। अपिसद्दो चोदनापक्खं सूचेति। छद्वारे उप्पन्नफस्सो। आरम्मणेन अनल्लीयमानो येव कस्मा सङ्घट्टनरसो नामा ति आह एकदेसेना ति आदि। अनल्लीयमानो पि फस्सो सङ्घट्टेति। पञ्चद्वारे उप्पन्नफस्सस्स सम्पत्तिरसेन सङ्घट्टनरसभावं दस्सेन्तो आह वत्था ति आदि। सम्पज्जनं सम्पत्ति। सम्पत्ति एव अत्थो सम्पत्ति अत्थो। तेन पिसद्दो भुच्चरसं[1] अपेक्खति।

चतु... प०... रसो ति एतं वचनं आचरियेहि अट्ठकथासु वुत्तं, इदं सुत्तं ति महाराज... प०... रसो चा ति इदं सुत्तं। घनभावेन समं भवन्तीति सम्मा। वित्थारो ति सुत्तस्स वित्थारो कातब्बो ति सम्बन्धो। अट्ठकथानयेन चक्खु[2] दट्ठब्बं ति आदि सुत्तानं चक्खादिनिस्सयमेव वुत्तं।

इदानि चक्खु दट्ठब्बं ति आदीसु निस्सितमेव विञ्ञाणं दट्ठब्बं ति दस्सेन्तो आह यथा वा ति आदि। इधापी ति चक्खु दट्ठब्बं ति आदीसु। तानि चक्खुविञ्ञाणादीनि। एवं ति चक्खुविञ्ञाणं (११६–सी०) दट्ठब्बं ति एवं अत्थो। चित्तारम्मणसङ्घट्टनतो ति

---

१. किच्चरसं–सी०। २. चक्खुं–सी०।

तिकसन्निपातसंखातस्स पन अत्तनो कारणस्स वसेन पवेदितत्ता सन्निपात-पच्चुपट्ठानो। अयं हि तत्थ तत्थ "तिण्णं संगतिया फस्सो" [म० १.१४९] ति एवं कारणस्स वसेन पवेदितो ति। इमस्स च सुत्तपदस्स तिण्णं संगतिया फस्सो ति अयमत्थो; न संगतिमत्तमेव फस्सो। एवं पवेदितत्ता पन तेनेवाकारेन पच्चुपट्ठाती ति सन्निपातपच्चुपट्ठानो ति वुत्तो।

फलट्ठेन पन पच्चुपट्ठानेनेस वेदनापच्चुपट्ठानो नाम होति। वेदनं हेस पच्चुपट्ठापेति उप्पादेती ति अत्थो। उप्पादयमानो च यथा बहिद्धा उण्हपच्चया पि लाखा-संखातधातुनिस्सिता उस्मा अत्तनो निस्सये मुदुभावकारी होति, न अत्तनो पच्चयभूते पि बहिद्धा वीतच्चिकङ्गारसंखाते उण्हभावे, एवं वत्थारम्मणसंखातो अञ्ञपच्चयो पि समानो, चित्तनिस्सितत्ता अत्तनो निस्सयभूते चित्ते येव एस वेदनुप्पादको होति, न अत्तनो पच्चयभूते पि वत्थुम्हि आरम्मणे वा ति वेदितब्बो। तज्जासमन्नाहारेन पन इन्द्रियेन च परिक्खते विसये अनन्तरायेन उप्पज्जनतो एस आपाथगतविसयपदट्ठानो ति वुच्चति।

वेदियती ति **वेदना** सा वेदयितलक्खणा, अनुभवनरसा इट्ठाकारसंभोगरसा वा, चेतसिक-अस्सादपच्चुपट्ठाना, पस्सद्धिपदट्ठाना।

पदं सिद्धो ति पदे हेतु। इमस्मि पि सुत्ते ति यथा महाराजा ति आदिके सुत्ते, सिद्धो ति पदे आधारो। पिसद्दो एकदेसेन चा ति आदिवचनं अपेक्खति।

तिण्णं[1] सन्निपातसङ्खातस्सा ति[1] चक्खु-रूप-चक्खुविञ्ञाणादिकस्स तिकस्स कारणस्स[2] सन्निपातो इति कथितस्स। अयं हीति हि सच्चं, अयं फस्सो भगवता पवेदितो। तत्थ तत्था ति तस्मि तस्मि ठाने पवेदितो ति पदे आधारो। इतीति तस्मा अयमत्थो ति सम्बन्धो। सुत्तपदस्सा ति तिण्णं सङ्गति फस्सो ति एवं भगवता पवेदितभावतो। तेनेवाकारेना ति तेनेव तिण्णं (९७–म०) सन्निपाताकारेन फस्सो पच्चुपट्ठाति इति तस्मा सन्नि····प०····वुत्तो भगवता।

फलपच्चुपट्ठानं दस्सेतुं फलट्ठेना ति आदि वुत्तं। फस्सपच्चया वेदना ति वचनतो वेदना पच्चुपट्ठानो ति वुत्तं। वेदनापच्चुपट्ठानं फलं अस्सा ति वेदनापच्चुपट्ठानो। उपादिय-मानो च फस्सो, वेदितब्बे ति पदे कम्मं। उण्हभावे मुदुभावकारी होति। तज्जासमन्नाहारो ति तस्स फस्सस्स कारणभूतो, तस्स अनुरूपो तज्जो। समं आहरणं समन्नाहारो, आवज्जनं। तज्जो एव समन्नाहारो तज्जासमन्नाहारो। तज्जासमन्नाहारसङ्खातेन आवज्जनेन पन चक्खादि-इन्द्रियेन च यथाक्कमं आरम्मणकरणतदभिमुखगते आपाथगते येव विसये अनन्त-रायेन एकन्तेन उप्पज्जनतो एसो फस्सो···प०····वुच्चति पण्डितेना ति योजना। तज्जासमन्ना-हारेन इन्द्रियेन चा ति पदद्वयं परिक्खते ति पदे कत्ता।

वेदयतीति आरम्मणरसं अनुभवति। वेदेन[3] अनुभवनाकारेन अयितं[4] पवत्तं वेदयितं।

१-१. तिकसन्नि–सी०। २. कारकस्स–म० ३. वेदना–सी०। ४. अयित्तं–सी०।

'चतुभूमिकवेदना हि नो-वेदयितलक्खणा नाम नत्थि। अनुभवनरसता पन दुखवेदनायमेव लब्भती'ति वत्वा पुन तं वादं पटिक्खिपित्वा 'सुखवेदना वा होतु, दुक्खवेदना वा, अदुक्खमसुखवेदना वा, सब्बा अनुभवनरसा' ति वत्वा अयमत्थो दीपितो—आरम्मणरसानुभवनट्ठानं पत्वा सेससम्पयुत्तधम्मा एकदेसमत्तकमेव अनुभवन्ति। फस्सस्स हि फुसनमत्तकमेव होति, सञ्ञाय सञ्जाननमत्तकमेव, चेतनाय चेतनमत्तकमेव, विञ्ञाणस्स विजाननमत्तकमेव। एकंसतो पन इस्सरवताय विसविताय सामिभावेन वेदना व आरम्मणरसं अनुभवति।

राजा विय हि वेदना, सूदो विय सेसा धम्मा। यथा सूदो नानारसभोजनं सम्पादेत्वा पेलाय पक्खिपित्वा लञ्छनं दत्वा रञ्ञो सन्तिके ओतारेत्वा लञ्छनं भिन्दित्वा पेलं विवरित्वा सब्बसूपब्यंजनेहि अग्गग्गं आदाय भाजने पक्खिपित्वा सदोसनिद्दोसभाववीमंसनत्थं अज्झोहरति, ततो रञ्ञो नानारसभोजनं उपनेति। राजा इस्सरवताय विसविताय सामी हुत्वा इच्छितिच्छितं भुञ्जति। तत्थ हि सूदस्स भत्तवीमंसनमत्तमिव सेसधम्मानं आरम्मणरसस्स एकदेसानुभवनं। यथा हि सूदो भत्तेकदेसमत्तमेव वीमंसति एवं सेसधम्मा पि आरम्मणरसेकदेसमेव अनुभवन्ति। यथा पन राजा इस्सरवताय विसविताय सामी हुत्वा यदिच्छितं भुञ्जति, एवं वेदना पि इस्सरवताय विसविताय सामिभावेन आरम्मणरसं अनुभवति। तस्मा अनुभवनरसा ति

वेदयितं लक्खणमस्सा ति वेदयितलक्खणा। अनुभवने रसो किच्चं अस्सा ति अनुभवनरसा। इट्ठो एव आकारो इट्ठाकारो। संभुञ्जनं सम्भोगो। इट्ठाकारस्स सम्भोगो इट्ठाकारसम्भोगो। इट्ठाकारसम्भोगो रसो अस्सा ति इ·····प०·····सो। अस्सादियतीति अस्सादो, सुखवेदना। चेतसि भवो चेतसिको (११७–सी०)। चेतसिको एव अस्सादो, चेतसिकअस्सादो,[1] चेतसिक-अस्सादेन पच्चुपट्ठातीति[1] चेतसिक-अस्सादपच्चुपट्ठाना। कायस्स पस्सम्भनं पस्सद्धि। पस्सद्धि पदट्ठानं अस्सा ति पस्सद्धिपदट्ठाना।

चातुभूमिकवेदना हीति[2] आदिवित्थारो। नो नत्थि एव[3] तं वादं ति अनुभवनरसता पन सुखवेदनायमेव लब्भतीति वादं। अयमत्थो ति आरम्मणरसानुभवनट्ठानं ति आदिको अत्थो। एकदेसमत्तमेव अनुभवनं पाकटं करोन्तो आह फस्सस्स हीति आदि। विसवति[4] अरहतीति विस्सवी[5]। विपुब्बो 'सु'–अरहे। विस्सवीया भावो विस्सविता, विस्सवनं[6] वा सज्जनं[7] समत्थं[8] विस्सवो, विपुब्बो 'सु'–सजने। विस्सवो अस्स अत्थीति विस्सवी। विस्सविया भावो विस्सविता।

वुत्तमत्थं लोकूपमाय साधेन्तो आह राजा विया ति आदि। सूदति सामिके भत्तं पग्घरापेतीति सूदो। सूदो पी ति अत्थि, एवं सति **रुद-खिद-मुदमदादि** मोग्गल्लानसुत्तेन (ण्वु० ९५) दक्[9]। तप्पेति एत्था ति पेला, 'पी'–तप्पने। **मादितो लो** ति (ण्वादि० १८८)

१-१. चेतसिकअस्सादपच्चुपट्ठाना–म०। २. चतु०–सी०। ३. अत्थि एव–सी०। ४. वसति–सी०। ५. वसवी–सी०। ६. विसनं–सी०। ७. नत्थि–सी०। ८. समत्तं-म० सी०। ९. दकं–सी०।

वुच्चति । दुतिये अत्थविकप्पे अयं इध अधिप्पेता वेदना यथा वा तथा वा आरम्मणस्स इट्ठाकारमेव सम्भुञ्जती ति इट्ठाकारसम्भोगरसा ति वुत्ता ।

चेतसिक-अस्सादतो पनेसा अत्तनो सभावेनेव उपट्ठानं सन्धाय चेतसिक-अस्सादपच्चुपट्ठाना ति वुत्ता । यस्मा पन "पस्सद्धकायो सुखं वेदेति" [म० १.५०] तस्मा पस्सद्धिपदट्ठाना ति वेदितब्बा ।

नीलादिभेदं आरम्मणं सञ्जानाती ति **सञ्ञा** । सा सञ्जाननलक्खणा पच्चाभिञ्ञाणरसा । चतुभूमिकसञ्ञा हि नो-सञ्जाननलक्खणा नाम नत्थि । सब्बा सञ्जाननलक्खणा व । या पनेत्थ अभिञ्ञाणेन सञ्जानाति सा पच्चाभिञ्ञाणरसा नाम होती ति । तस्सा, वड्ढकिस्स दारुम्हि अभिञ्ञाणं कत्वा पुन तेन अभिञ्ञाणेन तं पच्चाभिजाननकाले, पुरिसस्स काळतिलकादीहि अभिञ्ञाणं सल्लक्खेत्वा पुन तेन अभिञ्ञाणेन असुको नाम एसो ति तस्स पच्चाभिजाननकाले, रञ्ञो पिलन्धनगोपकभण्डागारिकस्स तस्मिं तस्मिं पिलन्धने नामपण्णकं बन्धित्वा 'असुकपिलन्धनं नाम आहरा'ति वुत्ते दीपं जालेत्वा तेन रतनगब्भं पविसित्वा पण्णं वाचेत्वा तस्स तस्सेव पिलन्धनस्स आहरणकाले च, पवत्ति वेदितब्बा ।

अपरो नयो—सब्बसंगाहिकवसेन हि सञ्जाननलक्खणा सञ्ञा । पुन सञ्जाननपच्चयनिमित्तकरणरसा, दारु-आदीसु तच्छकादयो विय । यथागहितनिमित्तवसेन

मोग्गल्लानसुत्तेन लो । पेळाया[1]ति पि अत्थि । तत्था ति सेसधम्मवेदनासु, निद्धारणं । (म०–९८) यथा हीति आदि दळ्हीकरणं । वेदना पी ति अपिसद्दो राजानं अपेक्खति । अत्थविकप्पे ति इट्ठाकारसम्भोगरसा ति अत्थविकप्पे, वुत्ता ति पदे आधारो । अयं इध[2] इमस्मिं चित्ते अधिप्पेता अयं वेदना सोमनस्सवेदना । यथा यथा वा ति येन तेन वा आकारेन । सभावेन परिकप्पनेन चा ति[3] अत्थो, इट्ठाकारस्स इति पदे ततियाविसेसनं ।

चेतसिक-अस्सादतो ति पदं वुत्ता ति पदे ततियाविसेसनं ।

सञ्जानातीति सञ्ञं कत्वा जानाति, नीलादिभेदस्स आरम्मणस्स सञ्जाननं सञ्ञं कत्वा सञ्जाननं लक्खणं एतस्सा ति सञ्जाननलक्खणा । पति पुन अभिञ्ञायते सञ्जानियते पच्चाभिञ्ञाणं, तं रसो किच्चं अस्सा ति पच्चाभिञ्ञाणरसा । एत्था ति एतासु सञ्ञासु, निद्धारणं । या सञ्ञा, अभिञ्ञाणेन····प०····लक्खणेन । तस्सा ति सञ्ञाय, पवत्ति पदे सम्बन्धो ।

तं ति दारुं । काळो एव तिलको काळतिलको । तस्सा ति पुरिसस्स । नामपण्णकं ति नामस्स लिखनपण्णकं[4] । चसद्दो पच्चाभिजाननकाले च पच्चा···प०····ले च आहरणकाले चा ति योजेतब्बो ।

हि सद्दो वित्थारजोतको । इदमेव (११८-सी०) सच्चं ति यथा गहितनिमित्तवसेन

---

१. पेल्ला–सी० । २. इधा ति–सी० । ३. नामा ति–सी० । ४. ०पण्णं–सी० ।

अभिनिवेसकरणपच्चुपट्ठाना, हत्थिदस्सक-अन्धा विय । आरम्मणे अनोगाळ्हवुत्तिताय अचिरट्ठानपच्चुपट्ठाना वा, विज्जु विय । यथा-उपट्ठितविसयपदट्ठाना, तिणपुरिसकेसु मिगपोतकानं 'पुरिसा'ति उप्पन्नसञ्ञा विय । या पनेत्थ ञाणसम्पयुत्ता होति सा सञ्ञा ञाणमेव अनुवत्तति । ससम्भारपठवी-आदीसु सेसधम्मा पठवी-आदीनि विया ति वेदितब्बा ।

चेतयती ति **चेतना** [§१]; सद्धिं अत्तना सम्पयुत्तधम्मे आरम्मणे अभिसन्दहती ति अत्थो । सा चेतयितलक्खणा, चेतनाभावलक्खणा ति अत्थो । आयूहनरसा । चतुभूमिकचेतना हि नो-चेतयितलक्खणा नाम नत्थि । सब्बा चेतयित्तलक्खणा व । आयूहनरसा पन कुसलाकुसलेसु एव होति । कुसलाकुसलकम्मायूहनट्ठानं हि पत्वा सेससम्पयुत्तधम्मानं एकदेसमत्तकमेव किच्चं होति । चेतना पन अतिरेक-उस्साहा अतिरेकवायामा, दिगुण-उस्साहा दिगुणवायामा ।

तेनाहु **पोराणा—"थावरियसभावसण्ठिता च पनेसा चेतना"ति ।** थावरियो ति खेत्तसामी वुच्चति । यथा हि खेत्तसामि-पुरिसो पञ्चपण्णासबलिपुरिसे गहेत्वा 'लायिस्सामी' ति एकतो खेत्तं ओतरति । तस्स अतिरेको उस्साहो अतिरेको वायामो, दिगुणो उस्साहो दिगुणो वायायो होति, 'नरन्तरं गण्हथा' ति आदीनि वदति, सीमं आचिक्खति, तेसं सुराभत्तगन्धमालादीनि जानाति, मग्गं समकं हरति । एवं-सम्पद-मिदं वेदितब्बं । खेत्तसामिपुरिसो विय हि चेतना । पञ्चपण्णासबलिपुरिसा विय-चित्तङ्गवसेन उप्पन्ना पञ्चपण्णासकुसला धम्मा । खेत्तसामिपुरिसस्स दिगुण-उस्साह-दिगुणवायामकरणकालो विय कुसलाकुसलकम्मायूहनट्ठानं पत्वा चेतनाय दिगुणुस्साहो दिगुणवायामो होति । एवमस्सा आयूहनरसता वेदितब्बा ।

सा पनेसा संविदहनपच्चुपट्ठाना । संविदहमाना हि अयं उपट्ठहति, सकिच्चपर-किच्चसाधिका, जेट्ठसिस्स-महावड्ढकि-आदयो विय । यथा हि जेट्ठसिस्सो उपज्झायं दूरतो व आगच्छन्तं दिस्वा सयं अधीयमानो इतरे पि दारके अत्तनो अत्तनो अज्झयन-कम्मे पवत्तयति, तस्मिं हि अधीयितुं आरद्धे ते पि अधीयन्ति, तदनुवत्तिताय । यथा

अभिनिवेसकरणतो यथा····प०···पदट्ठाना ति वुत्तं । अविकप्पसभावत्ता[1] । यथा उपट्ठितविसय-पदट्ठाना ति[1] वुत्तं । तिणपुरिसकेसु तिणेन कतपुरिसरूपेसु । एत्था ति सञ्ञासु ।

अभिसन्दति पवत्तेति गण्हथ गण्हथा ति वदन्ति विय सम्पयुत्तधम्मे आरम्मणे योजेतीति अत्थो । आयूहनरसा ति चेतसि अरियलक्खणा पयोगरसा ति वुत्तं होति ।

थावरस्स खेत्तस्स सामि थावरिको, थावरिको एव थावरियो, थावरियस्स भावेन विय सण्ठिता । हीति आदि वित्थारो ।

संविदहनपच्चुपट्ठाना ति त्वं इदं करोहीति विचारेन्ती विय होतीति । तस्मिं ति जेट्ठ-

---

१-१. ०सभावताय उपट्ठित०—सी० ।

च महावड्ढकी सयं तच्छन्तो इतरे पि तच्छके अत्तनो अत्तनो तच्छनकम्मे पवत्तयति, तस्मिं हि तच्छितुं आरद्धे ते पि तच्छति, तदनुवत्तिताय। यथा च योधनायको सयं युज्झमानो इतरे पि योधे सम्पहारवुत्तियं पवत्तयति, तस्मिं हि युज्झितुं आरद्धे ते पि अनुवत्तमाना युज्झन्ति, तदनुवत्तिताय। एवमेसा पि अत्तनो किच्चेन आरम्मणे वत्तमाना पि अञ्ञे पि सम्पयुत्तधम्मे अत्तनो अत्तनो किरियाय पवत्तेति। तस्सा हि अत्तनो किच्चं आरद्धाय, तं-सम्पयुत्ता पि आरभन्ति। तेन वुत्तं—'सकिच्चपरकिच्चसाधिका, जेट्ठसिस्स-महावड्ढकि-आदयो विया' ति। अच्चायिक-कम्मानुस्सरणादीसु च पनायं सम्पयुत्तधम्मामं उस्साहनभावेन पवत्तमाना पाकटा होती ति वेदितब्बा।

'आरम्मणं चिन्तेती' ति **चित्तं** ति आदिना नयेन चित्तस्स वचनत्थो वुत्तो एव। लक्खणादितो पन विजाननलक्खणं चित्तं, पुब्बङ्गमरसं, सन्दहनपच्चुपट्ठानं, नामरूपपदट्ठानं।

चतुभूमिकचित्तं हि नो-विजाननलक्खणं नाम नत्थि। सब्बं विजाननलक्खणमेव। द्वारं पन पत्वा आरम्मणविभावनट्ठाने चित्तं पुब्बङ्गमं पुरेचारिकं होति। चक्खुना हि दिट्ठं रूपारम्मणं चित्तेनेव विजानाति।....प०....मनेन विञ्ञातं धम्मारम्मणं चित्तेनेव विजानाति। यथा हि नगरगुत्तिको नाम नगरमज्झे सिंघाटके निसीदित्वा 'अयं नेवासिको अयं आगन्तुको' ति आगतागतं जनं उपधारेति ववत्थापेति—एवं-सम्पदमिदं दट्ठब्बं। वुत्तं पि चेतं **महाथेरेन**—"यथा महाराज, नगरगुत्तिको नाम मज्झे नगरे सिंघाटके निसिन्नो पुरत्थिमतो दिसतो पुरिसं आगच्छन्तं पस्सेय्य....पच्छिमतो.... दक्खिणतो....उत्तरतो दिसतो पुरिसं आगच्छन्तं पस्सेय्य, एवमेव खो महाराज, यं चक्खुमा रूपं पस्सति तं विञ्ञाणेन विजानाति, यं सोतेन सद्दं सुणाति, घानेन गन्धं घायति, जिव्हाय रसं सायति, कायेन फोट्ठब्बं फुसति, मनसा धम्मं विजानाति, तं विञ्ञाणेन विजानाती" [मि० ६४-६५] ति। एवं द्वारं पत्वा आरम्मणविभावनट्ठाने चित्तमेव पुब्बङ्गमं चित्तं पुरेचारिकं होति। तस्मा पुब्बङ्गमरसं ति वुच्चति। तदेतं पच्छिमं पच्छिमं उप्पज्जमानं पुरिमं पुरिमं निरन्तरं कत्वा सन्दहमानमेव उपट्ठाती ति सन्दहनपच्चुपट्ठानं। पञ्चवोकारभवे पन'स्स नियमतो नामरूपं, चतुवोकारभवे नाममेव पदट्ठानं। तस्मा नामरूपपदट्ठानं ति वुत्तं।

किं पनेतं चित्तं पुरिमनिद्दिट्ठचित्तेन सद्धिं एकमेव उदाहु अञ्ञं ति ? एकमेव।

सिस्से। ते पी ति दारका। तदनुवत्तितताया ति तं जेट्ठसिस्सं अनुवत्तनभावतो।

सन्दहनं चित्तन्तरस्स अनुपबन्धनं। सन्धानेन पच्चुपट्ठातीति सन्धानपच्चुपट्ठानं।

पत्वा ति पदं विभावन इति पदे समानकालक्रिया। आरम्मणविभावनट्ठाने ति आरम्मणस्स उपधारणट्ठाने। महाथेरेना ति महानागसेनत्थेरेन। सन्दहमानमेवा ति अनुपबन्धनमेव। अस्सा ति चित्तस्स। नियमतो नामरूपपदट्ठानं।

एतं चित्तं पुरिमचित्तेन चित्तं उप्पन्नं ति एत्थ वुत्तेन पुरिमचित्तेन सद्धिं। किं पन

अथ कस्मा पुरिमनिद्दिट्ठं पुन वुत्तं ति ? अविचारितं एतं अट्ठकथायं। अयं पनेत्थ युत्ति–यथा हि रूपादीनि उपादाय पञ्ञत्ता सुरियादयो न अत्थतो रूपादीहि अञ्ञे होन्ति, तेनेव यस्मिं समये सुरियो उदेति तस्मिं समये तस्स तेजसंखातं रूपं पञ्ञायति। एवं वुच्चमाने पि न रूपादीहि अञ्ञो सुरियो नाम अत्थि। न तथा चित्तं; फस्सादयो धम्मे उपादाय पञ्ञापियति; अत्थतो पनेतं तेहि अञ्ञमेव। तेन 'यस्मिं समये चित्तं उप्पन्नं होति एकंसेनेव तस्मिं समये फस्सादीहि अत्थतो अञ्ञदेव तं होती' ति इमस्स अत्थस्स दीपनत्थाय एतं पुन वुत्तं ति वेदितब्बं।

थथा च "यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति····प०···पठवीकसिणं, तस्मिं सयये फस्सो होती" [§१६०] ति आदीसु भावेन्तेन ववत्थापिते समये यो भावेति न सो अत्थतो उप्पज्जति नाम, तेनेव तत्थ यथा फस्सो होति वेदना होती" [§१६०] ति वुत्तं, न एवं "यो भावेति सो होती" ति वुत्तं। "यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होती" [§१] ति आदीसु पन चित्तेन ववत्थापिते समये समयववत्थापितं चित्तं न तथा अत्थतो नुप्पज्जति। यथेव पन तदा 'फस्सो होति वेदना होती' ति वुत्तं, तथा 'चित्तं पि होती' ति इमस्सा पि अत्थस्स दीपनत्थमिदं पुन वुत्तं ति वेदितब्बं।

इदं पनेत्थ सन्निट्ठानं—उद्देसवारे संगण्हनत्थं निद्देसवारे च विभजनत्थं पुरिमेन हि 'चित्त'–सद्देन केवलं समयो ववत्थापितो। तस्मिं पन चित्तेन ववत्थापिते समये ये धम्मा होन्ति तेसं दस्सनत्थं "फस्सो होती [§१]" ति आदि आरद्धं। 'चित्तं' चा पि तस्मिं समये होति येव। तस्मा तस्सा पि संगण्हनत्थमेतं पुन वुत्तं। इमस्मिं च ठाने एतस्मिं अवुच्चमाने "कतमं तस्मिं समये चित्तं" [§६] ति न सक्का भवेय्य निद्देसवारे विभजितुं। एवमस्स विभजनं एव परिहायेथ। तस्मा तस्स निद्देसवारे विभजनत्थं पि एतं पुन वुत्तं ति वेदितब्बं। यस्मा वा "उप्पन्नं होती" ति। [§१] एत्थ चित्तं उप्पन्नं ति

एकमेव उदाहु अञ्ञं इति पुच्छा। एत्थ[1] पच्छिमचित्तं (९९–म०) एकमेव। अथ एकत्ते सति एतं चित्तं कस्मा पुन वुत्तं इति एतं वचनं अट्ठकथायं आचरियेहि अविचारितं। एत्था ति चित्तस्स पुनवचने। यथा हीति आदि वित्थारो। तेनेवा ति कारणेन। रूपम्पि उदेति एवं वुच्चमाने पि रूपादीहि अञ्ञो सूरियो नाम न अत्थि। एतं ति चित्तं। एतेहीति फस्सादीहि। तेना ति कारणेन। तं ति चित्तं।

होतीति आदीसू ति पदं समये ति पदे आधारो। भावेन्तेन पुग्गलेन। समये ति पदं उप्पज्जति नामा ति पदे आधारो। यो पुग्गलो। तेनेवा ति कारणेन, वुत्तं ति पदे हेतु। तत्था ति यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं ति आदीसु, वुत्तं ति पदे आधारो। तदा तस्मिं समये।

इदं ति चित्तं। एत्था ति चित्तस्स पुनवचने। चित्तस्स सङ्गहणत्थं चित्तविभजनत्थञ्च एतं चित्तं पुन (११९–सी०) वुत्तं ति सम्बन्धो। पुरिमेन हीति आदि वित्थारो। तस्सा पी

---

१. एतं–सी०।

एतं देसनासीसमेव, 'न पन चित्तं एककमेव उप्पज्जती'ति अट्ठकथायं विचारितं, तस्मा "उप्पन्नं" ति [§१] एत्था पि चित्तमत्तमेव अगहेत्वा परोपण्णासकुसलधम्मेहि सद्धि येव चित्तं गहितं। एवं तत्थ संखेपतो सब्बे पि चित्तचेतसिकधम्मे गहेत्वा इध सरूपेन पभेदतो दस्सेतुं "फस्सो होती" ति आदि आरद्धं। इति फस्सादयो विय चित्तं पि वुत्त-मेवा ति वेदितब्बं।

वितक्केती ति **वितक्को** [§१]; वितक्कनं वा वितक्को; ऊहनं ति वुत्तं होति। स्वायं आरम्मणे चित्तस्स अभिनिरोपनलक्खणो। सो हि आरम्मणे चित्तं आरोपेति। यथा हि कोचि राजवल्लभं ञातिं वा मित्तं वा निस्साय राजगेहं आरोहति, एवं वितक्कं निस्साय चित्तं आरम्मणं आरोहति। तस्मा सो आरम्मणे चित्तस्स अभिनि-रोपनलक्खणो ति वुत्तो। **नागसेनत्थेरो** पनाह—आकोटनलक्खणो वितक्को। "यथा महाराज भेरी आकोटिता अथ पच्छा अनुरवति अनुसद्दायति, एवमेव खो महाराज यथा आकोटना एवं वितक्को दट्ठब्बो। यथा पच्छा अनुरवना अनुसद्दना एवं विचारो दट्ठब्बो" [मि० ६५] ति। स्वायं आहननपरियाहननरसो। तथा हि तेन योगावचरो आरम्मणं वितक्काहतं वितक्कपरियाहतं करोती ति वुच्चति। आरम्मणे चित्तस्स आनयनपच्चुपट्ठानो।

आरम्मणे तेन चित्तं विचरती ति **विचारो**; विचारणं वा विचारो। अनुसञ्च-रणं ति वुत्तं होति। स्वायं आरम्मणानुमज्जनलक्खणो। तत्थ सहजातानुयोजनरसो। चित्तस्स अनुप्पबन्धपच्चुपट्ठानो।

सन्ते पि च नेसं कत्थचि अवियोगे ओळारिकट्ठेन पुब्बङ्गमट्ठेन च घण्टाभिघातो विय अभिनिरोपनट्ठेन चेतसो पठमाभिनिपातो वितक्को। सुखुमट्ठेन अनुमज्जनसभा-

---

ति चित्तस्स। अपिसद्दो फस्सादयो अपेक्खति। एतस्मि चित्ते। कतमं तस्मि समये चित्तं इति-निद्देसवारे विभजितुं विभजनं न सक्का भवेय्य। एवमस्सा ति एवं विभजितुं असक्कुणेय्यस्स अस्स चित्तस्स। यस्मा ति पदं विचारितं ति पदे क्रियापरामसनं। एत्था ति पदं विचारितं ति पदे आधारो। एतं वचनं। परो....प०.. चित्तं गहितं पट्ठाननयेन गहितं न चित्तसद्दस्स फस्सादिधम्मानं वाचकभावेना ति अधिप्पायो। तत्था ति चित्तं उप्पन्नं ति वचने। इतीति एवं फस्सादयो वत्तब्बा विय चित्तम्पि वत्तब्बमेव इति पि सन्निट्ठानं पण्डितेन वेदितब्बं।

वितक्केतीति आरम्मणं सम्पयुत्तधम्मे अभिनिरोपेति। ऊहनं ति आरम्मणस्स परि-कप्पनं आरम्मणे वा अभिनिरोपनं ति अत्थो। वितक्कं निस्साय चित्तं आरम्मणं आरोपेति। आहननञ्च परियाहननञ्च आहननपरियाहननं। तं रसो किच्चं अस्सा ति आहनन....प०.... रसो। तेना ति वितक्केन। वितक्काहतं ति वितक्केन आहतं आदितो हनितं। आनयनं चित्तस्स आरम्मणे उपनयनं आकड्ढनं वा तथा हुत्वा पच्चुपट्ठानं अस्सा ति आनयनपच्चुपट्ठानो।

तेना ति तेन विचारेन करणभूतेन, हेतूभूतेन वा। तत्था ति आरम्मणे। अनुपबन्धन-पच्चुपट्ठानो ति आरम्मणे चित्तस्स अविच्छिन्नं विय पवत्तिपच्चुपट्ठानो।

कत्थचि चित्तुप्पादे नेसं अवियोगे सन्ते को नेसं विसेसो ति आह सन्ते पि चा ति

वट्टेन घण्टानुरवो विय अनुप्पबन्धो विचारो। विप्फारवा चेत्थ वितक्को, पठमुप्पत्तिकाले परिप्फन्दभूतो चित्तस्स। आकासे उप्पतितुकामस्स पक्खिनो पक्खविक्खेपो विय। पदुमाभिमुखपातो विय च गन्धानुबद्धचेतसो भमरस्स। सन्तवुत्ति विचारो नातिपरिप्फन्दनभावं चित्तस्स, आकासे उप्पतितस्स पक्खिनो पक्खप्पसारणं विय, परिब्भमनं विय च पदुमाभिमुखपतितस्स भमरस्स पदुमस्स उपरिभागे। अट्ठकथायं पन "आकासे गच्छतो महासकुणस्स उभोहि पक्खेहि वातं गहेत्वा पक्खे सन्निसीदापेत्वा गमनं विय आरम्मणे चेतसो अभिनिरोपनभावेन पवत्तो वितक्को। सो हि एकग्गो हुत्वा अप्पेति वातगहणत्थं पक्खे फन्दापयमानस्स गमनं विय। अनुमज्जनभावेन पवत्तो विचारो। सो हि आरम्मणं अनुमज्जती ति वुत्तं, तं अनुप्पबन्धेन पवत्तियं अतिविय युज्जति। सो पन नेसं विसेसो पठमदुतियज्झानेसु पाकटो होति।

अपि च मलग्गहितं कंसभाजनं एकेन हत्थेन दळ्हं गहेत्वा इतरेन हत्थेन चुण्णतेलवालण्डुपकेन वा परिमज्जन्तस्स दळ्हगहणहत्थो विय वितक्को, परिमज्जनहत्थो विय विचारो। तथा कुम्भकारस्स दळ्हप्पहारेन चक्कं भमयित्वा भाजनं करोन्तस्स उप्पीळनहत्थो विय वितक्को, इतो चित्तो च सञ्चरणहत्थो विय विचारो। तथा मण्डलं करोन्तस्स मज्झे सन्निरुज्झित्वा ठितकण्टको विय अभिनिरोपनो वितक्को, बहिपरिब्भमनकण्टको विय अनुमज्जनो विचारो।

आदि। कत्थचीति द्विपञ्चविञ्ञाणवज्जितचतुचत्तालीसकामावचरचित्त–एकादसपठमज्झानचित्तेसु। ओळारिकट्ठेन पुब्बङ्गमट्ठेन चा ति पदद्वयं विया ति पदे (म०–१००) ततियाविसेसनं। अभिनिरोपनट्ठेना ति पदं अभिनिपातो ति पदे ततियाविसेसनं। विप्फारणं विचलनं विप्फारो। विप्फारो अस्स अत्थीति विप्फारवा। एत्था ति वितक्कविचारेसु। पठमु....प०... काले चित्तस्स परिप्फन्दनभूतो वितक्को। गन्धानु....प०... भमरस्स पदुमाभिमुखपातो विय च। चसद्दो विक्खेपो विय च पातो विय चा ति योजेतब्बो। चित्तस्सा ति पदं नाति परिप्फन्दना ति पदे सम्बन्धो। (१२०–सी०) पदुमानं[1] उपरिभागे परिब्भमनं विय च। सो हीति हि सच्चं सो वितक्को एकग्गो हुत्वा एकारम्मणो हुत्वा अप्पेति पवत्तति। तं ति अट्ठकथावचनं।

तेलचुण्णकेना ति तेलेन चुण्णेन मिस्सिततेलेन। लण्डति[2] हिंसति मलभावं ति लण्डु, यदादिना उ। लण्डु च तं उपकञ्चा ति लण्डुपकं, तेन, परिमज्जनानुरूपचारिकादिना ति अत्थो। वासद्दो तेलेन वा ति योजेतब्बो। तथासद्दो अथवासद्दपरियायो। करोन्तस्स पुग्गलस्स कण्टको ति पदे सम्बन्धो।

---

१. पदुमा–सी०। २. ललति–सी०।

पीणयती ति **पीति** [§१]। सा सम्पियायनलक्खणा। कायचित्तपीणनरसा, फरणरसा वा। ओदग्यपच्चुपट्ठाना। सा पनेसा खुद्दिका पीति, खणिका पीति, ओक्कन्तिका पीति, उब्बेगा पीति, फरणा पीती ति पञ्चविधा होति। तत्थ खुद्दिका पीति सरीरे लोमहंसमत्तमेव कातुं सक्कोति। खणिका पीति खणे खणे विज्जुप्पादसदिसा होति। ओक्कन्तिका पीति समुद्दतीरं वीचि विय, कायं ओक्कमित्वा ओक्कमित्वा भिज्जति। उब्बेगा पीति बलवती होति, कायं उद्धग्गं कत्वा आकासे लङ्घापनप्पमाणप्पत्ता।

तथा हि **पुण्णवल्लिकवासी महा**तिस्सत्थेरो पुण्णमदिवसे सायं चेतियङ्गणं गन्त्वा चन्दालोकं दिस्वा महाचेतियाभिमुखो हुत्वा 'इमाय वत वेलाय चतस्सो परिसा महाचेतियं वन्दन्ती' ति पकतिया दिट्ठारम्मणवसेन **बुद्धा**रम्मणं उब्बेगपीतिं उप्पादेत्वा सुधातले पहटचित्रगेण्डुको विय आकासे उप्पतित्वा महाचेतियङ्गणे येव पतिट्ठासि।

तथा **गि**रिकण्डकविहारस्स उपनिस्सये **व**त्तकालकगामे एका कुलधीता पि बलवबुद्धारम्मणाय उब्बेगपीतिया आकासे लङ्घेसि। तस्सा किर मातापितरो सायं धम्मस्सवनत्थाय विहारं गच्छन्ता 'अम्म त्वं गरुभारा, अकाले विचरितुं न सक्कोसि, मयं तुय्हं पत्तिं कत्वा धम्मं सोस्सामा' ति अगमंसु। सा गन्तुकामा पि तेसं वचनं पटिबाहितुं असक्कोन्ती घरे ओहीयित्वा घरद्वारे ठत्वा चन्दालोकेन **गि**रिकण्डके आकासे चेतियङ्गणं ओलोकेन्ती चेतियस्स दीपपूजं अद्दस। चतस्सो च परिसा मालागन्धादीहि चेतियपूजं कत्वा पदक्खिणं करोन्तियो भिक्खुसंघस्स गणसज्झायसद्दं अस्सोसि। अथ'स्सा 'धञ्ञा वतिमे मनुस्सा ये विहारं गन्त्वा एवरूपे चेतियङ्गणे अनुसंचरितुं एवरूपं च मधुरं धम्मकथं सोतुं लभन्ती' ति मुत्तरासिसदिसं चेतियं पस्सन्तिया एव उब्बेग्गा पीति उदपादि। सा आकासे लंघेत्वा मातापितुन्नं पुरिमतरं येव आकासेन चेतियङ्गणे ओरुय्ह चेतियं वन्दित्वा धम्मं सुणमाना अट्ठासि।

अथ नं मातापितरो आगन्त्वा 'अम्म त्वं कतरेन मग्गेन आगता' सी' ति पुच्छिसु। सा 'आकासेन आगतम्हि, न मग्गेना' ति वत्वा 'अम्म आकासेन नाम

पिनयती[1] ति कायचित्तं पिनयति। सम्पियायनलक्खणा ति आरम्मणं कल्लतो गहणलक्खणा। कायचित्तपीननरसा ति कायचित्तानं परिब्रूहनकिच्चा। उदग्गस्स भावो उदग्यं। तत्था ति पीतीसु।

पुण्णवल्लिकवासीति लङ्कादीपे पुण्णवल्लिकवासी।

उपनिस्सये[2] निस्सयभूते। वट्टकाळकगामे ति लङ्कादीपे वट्टकाळकगामे। घराजिरे ति पि अत्थि, घरद्वारे ति[3] अत्थो। अथस्सा ति तदा[4] अस्सा धीताय उदपादीति पदे सम्पदानं। धञ्ञा वतिमे[5] ति इमे मनुस्सा वत एकंसेन धञ्ञा[6] पुञ्ञवन्तो। चसद्दो अनुसञ्चरितुं सोतुञ्चा ति योजेतब्बो।

---

१. पिणयतीति–सी०। २. ०ति–सी०। ३. घरे ति–सी०। ४. तथा–सी०। ५. पुञ्ञा वतिमे–म०। ६. पुञ्ञा–म०।

खीणसवा सञ्चरन्ति, त्वं कथं आगता'सी' ति वुत्ता आह—'मय्हं चन्दालोकेन चेतियं ओलोकेन्तिया ठिताय बुद्धारम्मणा बलवपीति उप्पज्जि, अथाहं नेव अत्तनो ठितभावं न निसिन्नभावं अञ्ञासिं, गहितनिमित्तेनेव पन आकासं लङ्घित्वा चेतियंगणे पतिट्ठितम्ही' ति। एवं उब्बेगा पीति आकासे लंघापनप्पमाणा होति।

फरणापीतिया पन उप्पन्नाय सकलसरीरं फरित्वा पूरितवत्थि विय, महता उदकोघेन पक्खन्तपब्बतकुच्छि विय च अनुपरिप्फुटं होति।

सा पनेसा पञ्चविधा पीति गब्भं गण्हन्ती परिपाकं गच्छन्ती दुविधं पस्सद्धिं परिपूरेति–कायपस्सद्धिं च चित्तपस्सद्धिं च। पस्सद्धि गब्भं गण्हन्ती परिपाकं गच्छन्ती दुविधं पि सुखं परिपूरेति–कायिकं चेतसिकं च। सुखं गब्भं गण्हन्तं परिपाकं गच्छन्तं तिविधंसमाधिं परिपूरेति–खणिकसमाधिं उपचारसमाधिं अप्पनासमाधिं ति। तासु ठपेत्वा अप्पनासमाधिपूरितं इतरा द्वे पि इध युज्जन्ति।

सुखयती ति **सुखं**; यस्सुप्पज्जति तं सुखितं करोती ति अत्थो। सुट्ठु वा खादति, खणति च कायचित्ताबाधं ति सुखं। सोमनस्सवेदनायेतं नामं। तस्स लक्खणादीनि वेदनापदे वुत्तनयेनेव वेदितब्बानि। अपरो नयो—सातलक्खणं सुखं, सम्पयुत्तानं उपब्रूहनरसं, अनुग्गहणपच्चुपट्ठानं।

सति पि च नेसं पीतिसुखानं कत्थचि अविप्पयोगे, इट्ठारम्मणपटिलाभतुट्ठि पीति; पटिलद्धरसानुभवनं सुखं। यत्थ पीति तत्थ सुखं। यत्थ सुखं तत्थ न नियमतो पीति। संखारक्खन्धसंगहिता पीति, वेदनाखन्धसंगहितं सुखं। कन्तारखिन्नस्स वनन्तोदकदस्सनसवणेसु विय पीति। वनच्छायप्पवेस-उदकपरिभोगेसु विय सुखं।

यथा हि पुरिसो च महाकन्तारमग्गं पटिपन्नो घम्मपरेतो तसितो पिपासितो पटिपथं पुरिसं दिस्वा 'कत्थ पानीयं अत्थी' ति पुच्छेय्य। सो 'अटविं उत्तरित्वा व

उप्पन्नाया ति पदं होतीति पदे लक्खणक्रिया। सकलसरीरं फरित्वा अनुपरिप्फुटं होतीति योजना। फरित्वा ति पि अत्थि, फरित्वा ति अत्थो।

कत्थची ति पठमज्झानादिके। इट्ठारम्म....प०....तुट्ठीति इट्ठारम्मणस्स पटिलाभवसेन उप्पज्जनकतुट्ठि। पटिलद्ध....प०....नं ति पटिलद्धस्स आरम्मणरसस्स अनुभवनं। तत्थ सुखं ति सप्पीतिक-एकपञ्ञासचित्तेसु नियमतो सुखं अत्थि। यत्थ[1]....प० पीति सुखसहगतकायविञ्ञाणस्स एकादसचतुत्थज्झानचित्तेसु नियमतो सुखं, न अत्थि, न पीति, कन्तारखिन्नस्स कन्तारे किलमन्तस्स जनस्स। वनं एव वनन्तो। वनन्तो च उदकञ्च वनन्तुदकानि। दस्सनञ्च सवनञ्च दस्सनसवनानि। वनन्तुदकानं दस्सनसवनानि वन....प०....सवनानि। वनच्छायाय पवेसो वनच्छायपवेसो। वनच्छायपवेसो च उदकपरिभोगो च वन....प०....परिभोगानि।

यथा हीति आदि वित्थारो (१११–म०)। उप्पल[2]....प०....दीनीति उप्पलस्स दलं च नालं च पत्तं च तानि आदि[2] येसं तानि। मणिजालवनसण्डं[3] ति (१२१–सी०) मणि-

---

१. तत्थ–सी०। २-२. उप्पल....प....आदि–म०। ३. मणिजालवनसण्डानि–म०।

जातस्सरवनसण्डो अत्थि, तत्थ गन्त्वा लभिस्ससी' ति वदेय्य। सो तस्स कथं सुत्वा हट्ठपहट्ठो भवेय्य। ततो गच्छन्तो भूमियं पतितानि उप्पलदलनालपत्तादीनि दिस्वा सुट्ठुतरं हट्ठपहट्ठो हुत्वा गच्छन्तो अल्लवत्थे अल्लकेसे पुरिसे पस्सेय्य, वनकुक्कुटवनमोरादीनं सद्दं सुणेय्य, जातस्सरपरियन्ते जातं मणिजालसदिसं नीलवनसण्डं पस्सेय्य, सरे जातानि उप्पलपदुमकुमुदादीनि पस्सेय्य, अच्छं विप्पसन्नं उदकं पस्सेय्य। सो भिय्यो हट्ठपहट्ठो हुत्वा जातस्सरं ओतरित्वा यथारुचिं नहात्वा च पिवित्वा च परिप्पस्सद्धदरथो भिसमुळालपोक्खरादीनि खादित्वा नीलुप्पलादीनि पिलन्धित्वा मंदालकमूलानि खन्धे करित्वा उत्तरित्वा साटकं निवासेत्वा, उदकसाटकं आतपे कत्वा, सीतच्छायाय मन्दमन्दे वाते पहरन्ते निपन्नो 'अहो सुखं, अहो सुखं' ति वदेय्य। एवंसम्पदमिदं दट्ठब्बं—तस्स हि पुरिसस्स जातस्सरवनसण्डसवनतो पट्ठाय याव उदकदस्सना हट्ठपहट्ठकालो विय पुब्बभागारम्मणे हट्ठपहट्ठाकारा पीति। नहात्वा च पिवित्वा च सीतच्छायाय मन्दमन्दे वाते पहरन्ते 'अहो सुखं, अहो सुखं' ति वदतो निपन्नकालो विय बलप्पत्तं आरम्मणरसानुभवनाकारसण्ठितं सुखं। तस्मिं तस्मिं समये पाकटभावतो चेतं वुत्तं ति वेदितब्बं। यत्थ पन पीति सुखं पि तत्थ अत्थी ति वुत्तमेवेतं।

चित्तस्सेकग्गता [§१] ति चित्तस्स एकग्गभावो; समाधिस्सेतं नामं। लक्खणादीसु पन'स्स अट्ठकथायं ताव वुत्तं—"पामोक्खलक्खणो च समाधि अविक्खेपलक्खणो च" [ ]। यथा हि कूटागारकण्णिका सेसदब्बसंभारानं आबन्धनतो पमुखा होति एवमेव सब्बकुसलधम्मानं समाधिचित्तेन इज्झनतो सब्बेसं पि तेसं धम्मानं समाधि पामोक्खो होति। तेन वुत्तं—"सेय्यथा पि महाराज कूटागारस्स या काचि गोपानसियो सब्बा ता कूटंगमा होन्ति, कूटनिन्ना कूटसमोसरणा, कूटं तासं अग्गमक्खायति, एवमेव खो महाराज ये केचि कुसला धम्मा सब्बे ते समाधिनिन्ना होन्ति, समाधिपोणा, समाधिपब्भारा, समाधि तेसमग्गमक्खायती" [मि० ४०-४१] ति। यथा च सेनङ्गं

जालसदिसनीलवनसण्डं। मणिजालसदिसं नीलवनसण्डं ति पि पाठो। भिसमूलपोक्खरादीनीति भिसमूलं च पोक्खरं च आदि येसं तानि। मन्दालवमूलानीति मन्दालवानं मन्दालकानं मूलानि। तस्स ही ति आदि सम्पदमिदं ति पदस्स वित्थारो। तस्मिं तस्मिं समये इट्ठारम्मणस्स पटिलाभसमये पटिलद्धस्स रसानुभवनसमयादिके च पीतिसुखानं पाकटभावतो च एतं यथा पुरिसो ति आदि वचनं आचरियेहि वुत्तं। इदं सन्निट्ठानं पण्डितेन वेदितब्बं, पाकटभावतो वुत्तं[१] न[१] पीतिसुखानं विसुं पवत्तनभावतो ति अधिप्पायो। कीदिसं पन पीतिसुखानं उप्पज्जनट्ठानं ति आह यत्था ति आदि। यत्थ अत्थीति एतं वचनं वुत्तमेव।

एकं अग्गं आरम्मणं इमस्सा ति एकग्गं। एकग्गस्स भावो एकग्गता। न्हानियचुण्णानं सम्पिण्डन-उदकं विय।

१-१. वुत्तेन–सी०।

पत्वा राजा नाम यत्थ यत्थ सेना ओसीदति तं तं ठानं गच्छति, तस्स गतगतट्ठाने सेना परिपूरति, परसेना भिज्जित्वा राजानमेव अनुवत्तति, एवमेव सहजातधम्मानं विक्खिपितुं विप्पकिरितुं अप्पदानतो समाधि अविक्खेपलक्खणो नाम होती ति।

अपरो पन नयो—अयं चित्तस्स एकग्गतासंखातो समाधि नाम अविसारण-लक्खणो वा अविक्खेपलक्खणो वा, सहजातानं संपिण्डनरसो नहानियचुण्णानं उदकं विय, उपसमपच्चुपट्ठानो ञाणपच्चुपट्ठानो वा। "समाहितो यथाभूतं पजानाति पस्सती" ति वुत्तं। विसेसतो सुखपदट्ठानो, निवाते दीपच्चीनं ठिति विय चेतसो ठिती ति दट्ठब्बो।

सद्दहन्ति एताय, अयं वा सद्दहति, सद्दहनमत्तमेव वा एसा ति सद्धा। सा च अस्सद्धियस्स अभिभवनतो अधिपतियट्ठेन इन्द्रियं। अधिमोक्खलक्खणे वा इन्दट्ठं कारेती ति इन्द्रियं। सद्धा एव इन्द्रियं **सद्धिन्द्रियं**। सा पनेसा सम्पसादनलक्खणा च सद्धा पक्खन्दनलक्खणा च। यथा हि रञ्ञो चक्कवत्तिस्स उदकप्पसादको मणि उदके पक्खित्तो पंक-सेवाल-पणक-कद्दमं सन्निसीदापेति, उदकं अच्छं करोति विप्पसन्नं अनाविलं, एवमेव सद्धा उप्पज्जमाना नीवरणे विक्खम्भेति, किलेसे सन्निसीदापेति, चित्तं पसादेति, अनाविलं करोति। पसन्नेन चित्तेन योगावचरो कुलपुत्तो दानं देति, सीलं समादियति, उपोसथकम्मं करोति, भावनं आरभति। एवं ताव सद्धा सम्पसादन-लक्खणा ति वेदितब्बा।

तेनाह आयस्मा **नागसेनो**—"यथा महाराज, राजा चक्कवत्ति चतुरंगिनिया सेनाय सद्धिं अद्धानमग्गपटिपन्नो परित्तं उदकं तरेय्य, तं उदकं हत्थीहि च अस्सेहि च रथेहि च पत्तीहि च संखुभितं भवेय्य आविलं लुळितं कललीभूतं, उत्तिण्णो राजा मनुस्से आणापेय्य 'पानीयं भणे आहरथ, तं पिविस्सामी' ति। रञ्ञो च उदकप्प-सादको मणि भवेय्य। 'एवं देवा' ति खो ते मनुस्सा रञ्ञो पटिस्सुणित्वा तं उदकप्प-सादकं मणिं उदके पक्खिपेय्युं। सहसा उदके पक्खित्तमत्ते पङ्क-सेवाल-पणक-कद्दमो च सन्निसीदेय्य, अच्छं भवेय्य उदकं विप्पसन्नं अनाविलं, ततो रञ्ञो पानीयं उपना-मेय्युं—'पिवतु देवो पानीयं'ति। यथा महाराज, उदकं एवं चित्तं दट्ठब्बं। यथा ते मनुस्सा एवं योगावचरो दट्ठब्बो। यथा पङ्कसेवालपणककद्दमो एवं किलेसा दट्ठब्बा। यथा उदकप्पसादको मणि एवं सद्धा दट्ठब्बा। यथा उदकप्पसादकमणिम्हि पक्खित्त-मत्ते पङ्क-सेवाल-पणक-कद्दमो च सन्निसीदति, अच्छं भवति उदकं विप्पसन्नं अनाविलं, एवमेव खो महाराज सद्धा उप्पज्जमाना नीवरणे विक्खम्भेति, विनीवरणं चित्तं होति अच्छं विप्पसन्नं अनाविलं" [मि० ३७] ति।

अधिमोक्खलक्खणे वा इन्दट्ठं कारेतीति अधिमोक्ख...प०...हेतुकं सम्पयुत्तधम्मेहि अत्तनो इन्दभावं परमिस्सरभावं कारयति। पग्गहलक्खणे वा इन्दट्ठं कारेती ति आदीसु पि एसेव नयो।

यथा च पन कुम्भील-मकर-गाह-रक्खसादिसंकिण्णं पूरं महानदिं आगम्म भीरुकजनो उभोसु तीरेसु तिट्ठति। संगामसूरो पन महायोधो आगन्त्वा 'कस्मा ठितत्था'ति पुच्छित्वा 'सप्पटिभयभावेन ओतरितुं न विसहामा'ति वुत्ते सुनिसितं असिं गहेत्वा 'मम पच्छतो एथ, मा भायित्था' ति वत्वा नदिं ओतरित्वा आगतागते कुम्भीलादयो पटिबाहित्वा ओरिमतीरतो मनुस्सानं सोत्थिभावं करोन्तो पारिमतीरं नेति। पारिमतीरतो पि सोत्थिना ओरिमतीरं आनेति। एवमेव दानं ददतो सीलं रक्खतो उपोसथकम्मं करोतो भावनं आरभतो सद्धा पुब्बंगमा पुरेचारिका होति। तेन वुत्तं 'पक्खन्दनलक्खणा च सद्धा' ति।

अपरो नयो—सद्दहनलक्खणा सद्धा, ओकप्पनलक्खणा वा। पसादनरसा उदकप्पसादकमणि विय, पक्खन्दनरसा वा ओघुत्तरणो विय। अकालुस्सियपच्चुपट्ठाना, अधिमुत्तिपच्चुपट्ठाना वा। सद्धेय्यवत्थुपदट्ठाना सोतापत्तियङ्गपदट्ठाना वा, हत्थ-वित्त-बीजानि विय दट्ठब्बा।

वीरस्स भावो विरियं, वीरानं वा कम्मं विरियं। विधिना वा नयेन उपायेन ईरयितब्बं पवत्तयितब्बं ति विरियं। तदेव कोसज्जस्स अभिभवनतो अधिपतियट्ठेन इन्द्रियं। पग्गहनलक्खणे वा इन्दट्ठं कारेती ति इन्द्रियं। विरियमेव इन्द्रियं **विरियिन्द्रियं।**

तं पनेतं उपत्थम्भनलक्खणं च विरियं पग्गहनलक्खणं च। यथा हि जिण्णघरं आगन्तुकेन थूणुपत्थम्भेन तिट्ठति, एवमेव योगावचरो विरियुपत्थम्भेन उपत्थम्भितो हुत्वा सब्बकुसलधम्मेहि न हायति, न परिहायति। एवं ताव' स्स उपत्थम्भनलक्खणता वेदितब्बा। तेनाह थेरो **नागसेनो**—"यथा महाराज, गेहे पि पतन्ते तमञ्ञेन दारुना उपत्थम्भेय्य, उपत्थम्भितं सन्तं एव तं गेहं न पतेय्य, एवमेव खो महाराज उपत्थम्भन-

---

सद्दहनं सद्धेय्य वत्थुनो पत्तियायनं, तंलक्खणं एतिस्सा ति सद्दहनलक्खणा। कासुस्सियमलं विमलेत्वा[1] सम्पयुत्तानं पुग्गलस्सेव वा पसादनं अनाविलभावकरणं किच्चमेतिस्सा ति पसादनरसा ति[2]। अकालुस्सियपच्चुपट्ठाना[3] ति अनाविलभावपच्चुपट्ठाना। सद्दहितब्बं ति सद्धेय्यं। सद्धेय्यं एव वत्थु सद्धेय्यवत्थु। तं पदट्ठानं आसन्नकारणं इमिस्सा ति सद्धेय्यवत्थुपदट्ठाना। सोतापत्तिया अङ्गानि कारणानि सोतापत्तियङ्गानि। तानि पदट्ठानं इमिस्सा ति सोता ....प०....ठाना। हत्थो च वित्तं[4] धनञ्च बीजञ्च हत्थवित्तबीजानि।

वीरानं वा कम्मं ति येन वीरो नाम होति, तं वीरानं कम्मं नाम। वीरियस्स[5] पनस्स एकभावतो[6] तथा वुत्तं। धम्मविनिमुत्तं वा किञ्चि कम्मं नत्थीति वीरियमेव कम्मभावेन[7] वुत्तं ति दट्ठब्बं। नयेन उपायेना ति पदद्वयं विधिना ति पदस्स विवरणं। विपुब्बो 'ईर'–गतियं। इन्दट्ठं कारेतीति इन्द्रियं ति तद्धितविग्गहो। **यदादिना** इयो, इन्दसद्दे अकारस्स रो।

थूणूपत्थम्भेना ति[8] थम्भेन उपत्थम्भेन।

---

१. विधमेत्वा–सी०। २. ०रसा–सी०। ३. अकालुसिय०–सी०। ४. ०च–सी०। ५. वीरियं–सी०। ६. साधकभावतो–सी०। ७. धम्मभावेन–सी०। ८. थूनु०–सी०।

लक्खणं विरियं, विरियुपत्थम्भिता सब्बे कुसलधम्मा न हायन्ति न परिहायन्ती" [मि० ३८] ति। यथा वा पन खुद्दिकाय च महतिकाय च सेनाय संगामे पवत्ते खुद्दिका सेना ओलीयेय्य, ततो रञ्ञो आरोचेय्य, राजा बलवाहनं पेसेय्य, तेन पग्गहिता सकसेना परसेनं पराजेय्य, एवमेव विरियं सहजातसंपयुत्तधम्मानं ओलीयितुं ओसक्कितुं न देति, उक्खिपति, पग्गण्हाति। तेन वुत्तं 'पग्गहनलक्खणं च विरियं' ति।

अपरो नयो—उस्साहन-लक्खणं विरियं, सहजातधम्मानं उपत्थम्भनरसं, असंसीदनभावपच्चुपट्ठानं, "संविग्गो योनिसो पदहती" [अं० २.१२१] ति वचनतो संवेगपदट्ठानं, विरियारम्भवत्थुपदट्ठानं वा। सम्मा आरद्धं सब्बासं सम्पत्तीनं मूलं होती ति वेदितब्बं।

सरन्ति एताय, सयं वा सरति, सरणमत्तमेव वा एसा ति सति। सा च मुट्ठसच्चस्स अभिभवनतो अधिपतियट्ठेन इन्द्रियं, उपट्ठानलक्खणे वा इन्दट्ठं कारेती ति इन्द्रियं। सति एव इन्द्रियं **सतिन्द्रियं**।

सा पनेसा अपिलापनलक्खणा सति उपग्गण्हनलक्खणा च। यथा हि रञ्ञो भण्डागारिको दसविधं रतनं गोपयन्तो सायं पातो राजानं इस्सरियसम्पत्तिं सल्लक्खापेति सारेति, एवमेव सति कुसलं धम्मं सल्लक्खापेति सारेति। तेनाह **थेरो**—"यथा महाराज, रञ्ञो भण्डागारिको राजानं चक्कवत्तिं सायं पातो सरापेति–'एत्तका देव हत्थी, एत्तका अस्सा, एत्तका रथा, एत्तका पत्तियो, एत्तकं हिरञ्ञं, एत्तकं सुवण्णं, एत्तकं सब्बं सापतेय्यं, तं देवो सरतू' ति, एवमेव खो महाराज, सति कुसलधम्मे अपिलापेति—इमे चत्तारो सतिपट्ठाना, इमे चत्तारो सम्मप्पधाना, इमे चत्तारो इद्धिपादा, इमानि पञ्चिन्द्रियानि, इमानि पञ्च बलानि, इमे सत्त बोज्झंगा, अयं अरियो अट्ठंगिको मग्गो, अयं समथो, अयं विपस्सना, अयं विज्जा, अयं विमुत्ति, इमे लोकुत्तरा धम्मा ति। एवं खो महाराज अपिलापनलक्खणा सती" [मि० ३९-४०] ति।

यथा पन रञ्ञो चक्कवत्तिस्स परिणायकरतनं रञ्ञो अहिते च हिते च ञत्वा अहिते अपयापेति, हिते उपयापेति, एवमेव सति हिताहितानं धम्मानं गतियो समन्नेसित्वा 'इमे कायदुच्चरितादयो धम्मा अहिता' ति अहिते धम्मे अपनुदेति, 'इमे कायसुचरितादयो धम्मा हिता' ति हिते धम्मे उपगण्हाति। तेनाह **थेरो**—"यथा महाराज, रञ्ञो परिणायकरतनं रञ्ञो हिताहितं जानाति 'इमे रञ्ञो हिता इमे अहिता, इमे उपकारा इमे अनुपकारा'ति, ततो अहिते अपनुदेति हिते उपगण्हाति, एवमेव खो महाराज, सति उप्पज्जमाना हिताहितानं धम्मानं गतियो समन्नेसति

असंसीदनभावेन पच्चुपट्ठातीति असंसीदनभावपच्चुपट्ठानं। संवेगपदट्ठानं ति संवेगो नाम संवेगमयञाणं।

---

१. थूनू०–सी०।

'इमे धम्मा हिता इमे धम्मा अहिता, इमे धम्मा उपकारा इमे धम्मा अनुपकारा'ति, ततो अहिते धम्मे अपनुदेति हिते धम्मे उपगण्हाति । एवमेव खो महाराज, उपग्गण्हनलक्खणा सती" [मि० ४०] ति ।

अपरो पन नयो—अपिलापनलक्खणा सति, असम्मोसनरसा, आरक्खपच्चुपट्ठाना विसयाभिमुखीभावपच्चुपट्ठाना वा, थिरसञ्ञापदट्ठाना, कायादिसतिपट्ठान-पदट्ठाना वा, आरम्मणे दळ्हं पतिट्ठितत्ता पन एसिका विय, चक्खुद्वारादिरक्खणतो दोवारिको विय च दट्ठब्बा ।

आरम्मणे चित्तं सम्मा आधीयति ठपेती ति समाधि । सो च विक्खेपस्स अभिभवनतो अधिपतियट्ठेन इन्द्रियं । अविक्खेपलक्खणे वा इन्दट्ठं कारेती ति इन्द्रियं । समाधि येव इन्द्रियं **समाधिन्द्रियं** । लक्खणादीनि पन'स्स हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बानि ।

पजानाती ति पञ्ञा । किं पजानाती ति ? 'इदं दुक्खं' ति आदिना नयेन अरियसच्चानि । अट्ठकथायं पन 'पञ्ञापेती ति पञ्ञा' ति वुत्तं । किं ति पञ्ञापेति ? अनिच्चं दुक्खं अनत्ता ति पञ्ञापेति । सा च अविज्जाय अभिभवनतो अधिपतियट्ठेन इन्द्रियं । दस्सनलक्खणे वा इन्दट्ठं कारेती ति पि इन्द्रियं । पञ्ञा व इन्द्रियं **पञ्ञिन्द्रियं ।**

सा पनेसा ओभासनलक्खणा च पञ्ञा पजाननलक्खणा च । यथा हि चतुभित्तिके गेहे रत्तिभागे दीपे जलिते अन्धकारो निरुज्झति आलोको पातुभवति, एवमेव ओभासनलक्खणा पञ्ञा । पञ्ञोभाससमो ओभासो नाम नत्थि । पञ्ञवतो हि एकपल्लंकेन निसिन्नस्स दससहस्सिलोकधातु एकालोका होति । तेनाह थेरो—"यथा महाराज, पुरिसो अन्धकारे गेहे तेलप्पदीपं पवेसेय्य, पविट्ठो पदीपो अन्धकारं विधमेति, ओभासं जनेति, आलोकं विदंसेति, पाकटानि च रूपानि करोति, एवमेव खो महाराज, पञ्ञा उप्पज्जमाना अविज्जन्धकारं विधमेति, विज्जोभासं जनेति, ञाणालोकं विदंसेति, पाकटानि च अरियसच्चानि करोति । एवमेव खो महाराज, ओभासनलक्खणा पञ्ञा" [मि० ४१] ति ।

समनेसित्वा समं सम्मा एसित्वा गवेसित्वा, नकारागमो । थिरसञ्जाननं (१२२–सी०) थिरसञ्ञा, थिरसञ्ञा पदट्ठानं एतिस्सा ति थिरसञ्ञापदट्ठाना । एसिका ति इन्दखीला[1] । (म०–१०२) एसियति गवेसियतीति एसिका, 'एस'–गवेसने, **यदादिना** इको ।

किं ति[2] पुच्छनत्थे निपातो ।

विद्धंसेतीति पकासेति ।

१. ०खीला–सी० । २. किन्तीति–सी० ।

यथा पन छेको भिसक्को आतुरानं सप्पायासप्पायानि भोजनानि जानाति, एवं पञ्ञा उप्पज्जमाना कुसलाकुसले सेवितब्बासेवितब्बे हीनपणीते कण्हसुक्के सप्पटिभाग-अप्पटिभागे धम्मे पजानाति। वुत्तं पि चेतं **धम्मसेनापतिना**—"पजानाति पजानाती ति खो आवुसो, तस्मा पञ्ञा ति वुच्चति। किं च पजानाति? इदं दुक्खं ति पजानाती" [तु० म० १.३६०] ति वित्थारेतब्बं। एवमस्सा पजाननलक्खणता वेदितब्बा।

अपरो नयो—यथासभावपटिवेधलक्खणा पञ्ञा; अक्खलितपटिवेधलक्खणा वा कुसलिस्सासखित्त-उसुपटिवेधो विय। विसयोभासनरसा पदीपो विय। असंमोहपच्चुपट्ठाना अरञ्ञगतसुदेसको विय।

मनुते इति मनो; विजानाती ति अत्थो। अट्ठकथाचरिया पनाहु—नाळिया मिनमानो विय, महातुलाय धारयमानो विय च, आरम्मणं मिनति पजानाती ति मनो। तदेव मननलक्खणे इन्दट्ठं कारेती ति इन्द्रियं। मनो व इन्द्रियं **मनिन्द्रियं**। हेट्ठा वुत्तचित्तस्सेवेतं वेवचनं।

पीतिसोमनस्ससम्पयोगतो सोभनं मनो अस्सा ति सुमनो। सुमनस्स भावो सोमनस्सं। सातलक्खणे इन्दट्ठं कारेती ति इन्द्रियं। सोमनस्समेव इन्द्रियं **सोमनस्सिन्द्रियं**। हेट्ठावुत्तवेदनायेवेतं वेवचनं।

जीवन्ति तेन तं-सम्पयुत्तधम्मा ति जीवितं। अनुपालनलक्खणे इन्दट्ठं कारेती ति इन्द्रियं। जीवितमेव इन्द्रियं **जीवितिन्द्रियं**। तं पवत्तसन्तताधिपतेय्यं होति। सलक्खणादीहि पन अत्तना अविनिब्भुत्तानं धम्मानं अनुपालनलक्खणं जीवितिन्द्रियं, तेसं पवत्तनरसं तेसं येव ठपनपच्चुपट्ठानं, यापयितब्बधम्मपदट्ठानं। सन्ते पि च अनुपालनलक्खणादिम्हि विधाने अत्थिक्खणे येव तं ते धम्मे अनुपालेति उदकं

उसियति[1] खिपियतीति उसु[2], **यदादिना** उ। उसुं इस्सति[3] खिपतीति इस्सासो। उसति वा[4] दाहं करोतीति उसु, 'उस'–दाहे, उ पच्चयो। खित्तो उसु खित्तुसु, खित्तुसुस्स पटिवेधो खित्तुसुपटिवेधो। कुसलिस्सासस्स खित्तुसुपटिवेधो····प०····धो। विसयस्स आरम्मणस्स ओभासनं पकासनं रसो किच्चं एतिस्सा ति विसयोभासरसा[5]। अरियते गम्यते ति अरञ्ञं 'अर'—गमने। **अरहाञ्ञोहास्सहिरञ्ञ् चा** ति (५१ ण्वु०) मोग्गल्लानसुत्तेन ञपच्चयो। अरञ्ञे गता अरञ्ञगता, अरञ्ञगतानं मग्गं सुट्ठु देसेति पकासेतीति अरञ्ञगतसुदेसको[6]।

पीति च सोमनस्सञ्च पीतिसोमनस्सं, पीतिया उपलक्खितं वा सोमनस्सं पीतिसोमनस्सं। तेन सम्पयोगो पीति ····प०····गो।[7]

पवत्ततीति पवत्तं, उपादिन्नक्खन्धा। पवत्तं एव[8] सन्तति पवत्तसन्तति, पवत्तसन्ततिया अधिपतेय्यं पवत्तसन्तताधिपतेय्यं। अनुपालनवसेन यापयितब्बा ति यापयितब्बा, यापयितब्बा एव धम्मा यापयितब्बधम्मा, यापयितब्बधम्मा पदट्ठानं अस्सा ति यापयितब्बधम्मपदट्ठाना[9]।

---

१. इसियति–सी०। २. इसु–सी० सब्बत्थ। ३. असति–सी०। ४. नत्थि–सी०। ५. विसयोभासनरसो–सी०। ६. ०देसिको–सी०। ७. युग्गो–सी०। ८. नत्थि–सी०। ९. ०पदट्ठानं–सी०।

विय उप्पलादीनि, यथासकं पच्चयुप्पन्ने पि च धम्मे पालेति धाती विय कुमारं, सयं-पवत्तितधम्मसम्बन्धेनेव पवत्तयति नियामको विय, न भङ्गतो उद्धं पवत्तयति अत्तनो च पवत्तयितब्बानं च अभावा, न भंगक्खणे ठपेति सयं भिज्जमानत्ता खीयमानो विय वट्टिस्नेहो दीपसिखं। न च अनुपालनपवत्तनठपनानुभावविरहितं यथावुत्तक्खणे तस्स तस्स साधनतो ति दट्ठब्बं।

सम्मादिट्ठि–आदीसु दस्सनट्ठेन **सम्मादिट्ठि**। अभिनिरोपनट्ठेन **सम्मासंकप्पो**, पग्गण्हनट्ठेन **सम्मावायामो**, उपट्ठानट्ठेन **सम्मासति**, अविक्खेपनट्ठेन **सम्मासमाधि** वेदितब्बो। वचनत्थो पन सम्मा पस्सति, सम्मा वा ताय पस्सन्ती ति सम्मादिट्ठि। सम्मा संकप्पेति, सम्मा वा तेन संकप्पेन्ती ति सम्मासङ्कप्पो। सम्मा वायामेति, सम्मा वा तेन वायमन्ती ति सम्मावायामो। सम्मा सरति, सम्मा वा ताय सरन्ती ति सम्मासति। सम्मा समाधियति, सम्मा वा तेन समाधियन्ती ति सम्मासमाधि। अपि च, पसत्था सुन्दरा वा दिट्ठि सम्मादिट्ठी ति। इमिना पि नयेन तेसं वचनत्थो वेदितब्बो। लक्खणादीनि पन हेट्ठा वुत्तानेव।

सद्धाबलादीसु पि सद्धादीनि वुत्तत्थानेव। अकम्पियट्ठेन पन बलं ति वेदितब्बं। एवमेतेसु अस्सद्धिये न कम्पती ति **सद्धाबलं**। कोसज्जे न कम्पती ति **विरियबलं**।

यदि एतं तेसं अनुपालनादि साधकं कथं तेसं निरोधो होति, एवं हि सब्बकालं ठातब्बं ति आह सन्ते पि चा ति आदि। अनुपालनलक्खणादिम्हीति आदिसद्देन पवत्तनथपनानि[1] सङ्गण्हाति। अत्थिक्खणे येवा ति अत्तना[2] अनुपालेतब्बानं अत्तनो वा अत्थिक्खणे येव एकं जीवितिन्द्रियं उदकं विय उप्पलादीनि अनुपालेति, उदकं ति तळाकगतजलं दण्डगतजलं वा। अत्तना अनुप्पादितधम्मे कथं पालेतीति आह यथासकं ति आदि। किमिवा ति आह धाती विय कुमारं ति। यथा सेसधम्मानं पवत्तिकारणेन केनचि भवितब्बं। जीवितस्स पन किं पवत्तिकारणं ति आह सयं····प०···· पवत्तिता ति[3]। यथाकथं विया ति आह नियामको विया ति। नियामको विय अत्तना पवत्तितनावाति सम्बन्धो,[4] न[4] पवत्ति[5] हेतं। नियतीति[6] नियामको। निपुब्ब 'यमु'-गमने, ण्वु। यदि धम्मानं पवत्ति (१२३-सी०) जीवितिन्द्रियपटिबद्धा भङ्गतो उद्धम्पि किं न[7] पवत्तेती ति आह न भङ्गतो····प० ····यतीति। कस्मा ति आह अत्तनो च····प०····अभावा ति। भङ्गक्खणे पन कथं ति आह न भङ्गक्खणे थपेतीति। कस्मा ति आह सयं भिज्जमानत्ता ति। किमिवा ति आह खीयमानो ····प०····दीपसिखं ति। वट्टि च सिनेहो च वट्टिसिनेहो। यदि भङ्गतो उद्धं (१०३–म०) अप्पवत्ता पन भङ्गतो थपेतीति अट्ठप[8]नञ्चअत्थि जीवितिन्द्रियं पवत्तनथपनकिच्चरहितं सिया ति आह न चा ति आदि।

सम्मादिट्ठिआदीसु वचनत्यो वेदितब्बो ति योजना। तासू ति[9] सम्मादिट्ठि-आदीसु। एतेसु सद्धाबलादीसु, निद्धारणं। अस्सद्धिये ति पदं न कम्पतीति पदे हेतु।

---

१. ०ठपनानि–सी०। २. अत्तनो–सी०। ३. पवत्ततीति–सी०। ४-४. सम्बन्धेन–सी०। ५. पवत्तति–सी०। ६. नियमेतीति–सी०। ७. पन–सी०। ८. अट्ठपन च–म०। ९. तेसू ति–सी०।

मुट्ठसच्चे न कम्पती ति **सतिबलं**। उद्धच्चे न कम्पती ति **समाधिबलं**। अविज्जाय न कम्पती ति **पञ्ञाबलं**। अहिरिके न कम्पती ति **हिरिबलं**। अनोत्तप्पे न कम्पती ति **ओत्तप्पबलं** ति। अयं उभयपदवसेन अत्थवण्णना होति।

तत्थ पुरिमानि पञ्च हेट्ठा लक्खणादीहि पकासितानेव। पच्छिमद्वये काय-दुच्चरितादीहि हिरियती ति हिरि; लज्जायेतं अधिवचनं। तेहि येव ओत्तप्पती ति ओत्तप्पं; पापतो उब्बेगस्सेतं अधिवचनं। तेसं नानाकरणदीपनत्थं 'समुट्ठान-अधिपति-लज्जा-भय-लक्खणेन वा' ति इमं मातिकं ठपेत्वा अयं वित्थारकथा वुत्ता—अज्झत्त-समुट्ठाना हिरि नाम; बहिद्धासमुट्ठानं ओत्तप्पं नाम। अत्ताधिपति हिरि नाम; लोकाधिपति ओत्तप्पं नाम। लज्जासभावसण्ठिता हिरि नाम; भयसभावसण्ठितं ओत्तप्पं नाम। सप्पटिस्सवलक्खणा हिरि नाम; वज्जभीरुकभयदस्साविलक्खणं ओत्तप्पं नाम।

तत्थ अज्झत्तसमुट्ठानं हिरिं चतूहि कारणेहि समुट्ठापेति—जातिं पच्चवे-क्खित्वा, वयं पच्चवेक्खित्वा, सूरभावं पच्चवेक्खित्वा, बाहुसच्चं पच्चवेक्खित्वा। कथं? 'पापकरणं नामेतं न जातिसम्पन्नानं कम्मं, हीनजच्चानं केवट्टादीनं इदं कम्मं। मादिसस्स जातिसम्पन्नस्स इदं कम्मं कातुं न युत्त'ति, एवं ताव जातिं पच्चवेक्खित्वा पाणातिपातादिपापं अकरोन्तो हिरिं समुट्ठापेति। यथा 'पापकरणं नामेतं दहरेहि कत्तब्बं कम्मं, मादिसस्स वये ठितस्स इदं कम्मं कातुं न युत्तं' ति, एवं वयं पच्चवे-क्खित्वा पाणातिपातादिपापं अकरोन्तो हिरिं समुट्ठापेति। तथा 'पापकरणं नामेतं दुब्बलजातिकानं कम्मं, न सूरभावानं। मादिसस्स सूरभावसम्पन्नस्स इदं कम्मं कातुं

तत्था ति सद्धाबलादीसु[1]। पच्छिमद्वये ति निद्धारणे भुम्मं। कायदुच्चरितादीहीति हेतुम्हि ततिया। हिरियतीति लज्जनाकारेन जिगुच्छति। तेहि येवा ति कायदुच्चरितादीहि एव। ओत्तप्पतीति उब्बिज्जति। अधिपति ···प०····लक्खणेन च सद्धिं समुट्ठानं होति। अधिपति च लज्जा च भयञ्च लक्खणञ्च अधिपति····प०··· लक्खणं। लज्जा एव सभावो लज्जा-सभावो, तेन सण्ठिता। पटिस्सवनं पटिस्सवो, पटिपुब्ब 'सु'-सवने। सह पटिस्सवेन सप्पटि-स्सवं, यं किञ्चि गारवं। सप्पटिस्सवं लक्खणं सभावं एतिस्सा ति सप्पटिस्सवलक्खणा। वज्जा[2] भायतीति वज्जभीरुकं। वज्जं भयतो पस्सति सीलेना ति भयदस्सावी। वज्जभीरुकञ्च भय-दस्सावी च वज्ज···प०····दस्सावी। वज्जभीरुकभयदस्सावी एव लक्खणं सभावं वज्ज····प० ····वज्जभीरुकभयदस्सावीसभावभूतं ओत्तप्पं ति अत्थो। अथवा वज्जभीरुकभयदस्सावि लक्खणं अस्सा ति वज्जभीरु····प०····लक्खणं। अयं बहुब्बीहि अभेदे भेदकप्पनवसेन वेदितब्बो।

तत्था ति अज्झत्तसमुट्ठानं हिरी-आदीसु। केवट्टादीनं ति के उदके वट्टन्ति परि-

---

१–१. नत्थि–म०। २. वज्जं–सी०।

न युत्तं' ति, एवं सूरभावं पच्चवेक्खित्वा पाणातिपातादिपापं अकरोन्तो हिरिं समुट्ठापेति। तथा 'पापकरणं नामेतं अन्धबालानं कम्मं, न पण्डितानं। मादिसस्स पण्डितस्स बहुस्सुतस्स इदं कम्मं कातुं न युत्तं'ति, एवं बाहुसच्चं पच्चवेक्खित्वा पाणातिपातादिपापं अकरोन्तो हिरिं समुट्ठापेति। एवं अज्झत्तसमुट्ठानहिरिं चतूहि कारणेहि समुट्ठापेति। समुट्ठापेत्वा च पन अत्तनो चित्ते हिरिं पवेसेत्वा पापकम्मं न करोति। एवं अज्झत्तसमुट्ठाना हिरि नाम होति।

कथं बहिद्धासमुट्ठानं ओत्तप्पं नाम? 'सचे त्वं पापकम्मं करिस्ससि चतूसु परिसासु गरहप्पत्तो भविस्ससि।

गरहिस्सन्ति तं विञ्ञू असुचिं नागरिको यथा।
वज्जितो सीलवन्तेहि कथं भिक्खु करिस्ससी' ति॥

एवं पच्चवेक्खन्तो हि बहिद्धासमुट्ठितेन ओत्तप्पेन पापकमं न करोति। एवं बहिद्धासमुट्ठानं ओत्तप्पं नाम होति।

कथं अत्ताधिपति हिरि नाम? इधेकच्चो कुलपुत्तो अत्तानं अधिपतिं जेट्ठकं कत्वा 'मादिसस्स सद्धापब्बजितस्स बहुस्सुतस्स धुतवादस्स न युत्तं पापकम्मं कातुं' ति पापकम्मं न करोति। एवं अत्ताधिपति हिरि नाम होति। तेनाह भगवा—"सो अत्तानं एव अधिपतिं जेट्ठकं करित्वा अकुसलं पजहति कुसलं भावेति, सावज्जं पजहति अनवज्जं भावेति, सुद्धं अत्तानं परिहरती" [अं० १.१३६] ति।

कथं लोकाधिपति ओत्तप्पं नाम? इधेकच्चो कुलपुत्तो लोकं अधिपतिं जेट्ठकं कत्वा पापकम्मं न करोति। यथाह—"महा खो पनायं लोकसंनिवासो। महन्तस्मिं खो पन लोकसंनिवासे सन्ति समणब्राह्मणा इद्धिमन्तो दिब्बचक्खुका परचित्तविदुनो, ते दूरतो पि पस्सन्ति, आसन्ना पि न दिस्सन्ति, चेतसा पि चित्तं पजानन्ति, ते पि मं एवं जानिस्सन्ति 'पस्सथ भो इमं कुलपुत्तं, सद्धाय अगारस्मा अनगारियं पब्बजितो समानो वोकिण्णो विहरति पापकेहि अकुसलेहि धम्मेही' ति। सन्ति देवता इद्धिमन्तियो दिब्बचक्खुका परचित्तविदुनियो। ता दूरतो पि पस्सन्ति, आसन्ना पि न दिस्सन्ति, चेतसा पि चित्तं पजानन्ति, ता पि मं एवं जानिस्सन्ति 'पस्सथ भो इमं

वट्टन्तीति केवट्टा। ते आदयो येसं मिगलुद्दकादीनं ते केवट्टादयो।

विञ्ञू[1] तं तुवं गरहिस्सन्ति नागरिको नगरे जातमनुस्सो असुचिं गूथं वज्जेति यथा, एवं त्वं सीलवन्तेहि वज्जितो भो भिक्खु, त्वं पापं कथं करिस्ससि, अगारस्मा[2] निक्खमित्वा ति सेसो।

अगारस्स हितं कसिवाणिज्जादिकम्मं अगारियं। न (१२४-सी०) अगारियं अनगारियं। पब्बजितो ति उपगतो, पपुब्ब 'वज'-गतियं।

१. विञ्ञु–म०। २. ०ति–सी०।

कुलपुत्तं, सद्धाय अगारस्मा अनगारियं पब्बजितो समानो वोकिण्णो विहरति पापकेहि अकुसलेहि धम्मेही' ति······सो लोकं येव अधिपतिं जेट्ठकं कत्वा अकुसलं पजहति कुसलं भावेति, सावज्जं पजहति अनवज्जं भावेति, सुद्धं अत्तानं परिहरती" [अ० १.१३६-१३७] ति । एवं लोकाधिपति ओत्तप्पं नाम होति ।

लज्जासभावसण्ठिता हिरि, भयसभावसण्ठितं ओत्तप्पं ति । एत्थ पन लज्जा ति लज्जनाकारो; तेन सभावेन सण्ठिता हिरि । भयं ति अपायभयं; तेन सभावेन सण्ठितं ओत्तप्पं । तदुभयं पि पापपरिवज्जने पाकटं होति । एकच्चो हि, यथा नाम एको कुलपुत्तो उच्चारपस्सावादीनि करोन्तो लज्जितब्बयुत्तकं एकं दिस्वा लज्जनाकारप्पत्तो भवेय्य हीळितो, एवमेव अज्जत्तं लज्जिधम्मं ओक्कमित्वा पापकम्मं न करोति । एकच्चो अपायभयभीतो हुत्वा पापकम्मं न करोति । तत्रिदं ओपम्मं—यथा द्वीसु अयोगुळेसु एको सीतलो भवेय्य गूथमक्खितो, एको उण्हो आदित्तो । तत्थ पण्डितो सीतलं गूथमक्खितत्ता जिगुच्छन्तो न गण्हाति, इतरं दाहभयेन । तत्थ सीतलस्स गूथमक्खितत्ता जिगुच्छाय अगण्हनं विय अज्झत्तं लज्जिधम्मं ओक्कमित्वा पापस्स अकरणं । उण्हस्स दाहभयेन अगण्हनं विय अपायभयेन पापस्स अकरणं वेदितब्बं ।

सप्पटिस्सवलक्खणा हिरि, वज्जभीरुकभयदस्साविलक्खणं ओत्तप्पं ति । इदं पि द्वयं पापपरिवज्जने एव पाकटं होति । एकच्चो हि जातिमहत्तपच्चवेक्खणा सत्थुमहत्तपच्चवेक्खणा दायज्जमहत्तपच्चवेक्खणा सब्रह्मचारिमहत्तपच्चवेक्खणा ति चतूहि कारणेहि सप्पटिस्सवलक्खणं हिरिं समुट्ठापेत्वा पापं न करोति । एकच्चो अत्तानुवादभयं परानुवादभयं दण्डभयं दुग्गतिभयं ति चतूहि कारणेहि वज्जभीरुकभयदस्साविलक्खणं ओत्तप्पं समुट्ठापेत्वा पापं न करोति । तत्थ जातिमहत्तपच्चवेक्खणादीनि चेव अत्तानुवादभयादीनि च वित्थारेत्वा कथेतब्बानी ति ।

न लुब्भन्ति एतेन, सयं वा न लुब्भति, अलुब्भनमत्तमेव वा तं ति **अलोभो । अदोसामोहेसु** पि एसेव नयो । तेसु अलोभो आरम्मणे चित्तस्स अगेधलक्खणो,

---

एकच्चो पुग्गलो न करोतीति पदे कत्ता । तत्रा ति हिरि-ओत्तप्पाधिकारे । तत्था ति द्वीसु अयोगुळेसु । तत्था ति तस्मिं अयोगुळानं अगण्हने, निद्धारणं ।

जातिमहत्तपच्चवेक्खणा ति जातिया महन्तभावस्स पच्चवेक्खणेन । अत्तानुवादं[1] भयं ति[1] अत्तानं अनुवदन्तस्स उप्पज्जनकभयं । तत्था ति हिरि-ओत्तप्पाधिकारे । जातिमहत्तपच्चवेक्खणादीनं अत्तानुवादभयादीनञ्च वित्थारो अङ्गुत्तरट्ठकथायं बुद्धघोसाचरियेन वुत्तनयेन वेदितब्बो ।

न लुब्भन्ति तंसम्पयुत्तधम्मा तंसमङ्गिनो वा सत्ता एतेन धम्मेन । अलग्गभावो आरम्मणं निस्साय पवत्तन्तस्स पि आरम्मणसत्तता (म०–१०४)-परिग्गहो कस्सचि वत्थुनो ममत्तवसेन[2]

१-१. अत्तानुवादकभयन्ति–सी० । २. वत्थुममत्तवसेन–म० ।

अलग्गभावलक्खणो वा कमलदले जलबिन्दु विय। अपरिग्गहणरसो मुत्तभिक्खु विय। अनल्लीनभावपच्चुपट्ठानो असुचिम्हि पतितपुरिसो विय। अदोसो अचण्डिक्कलक्खणो, अविरोधलक्खणो वा अनुकूलमित्तो विय। आघातविनयरसो परिळाहविनयरसो वा चन्दनं विय। सोम्मभावपच्चुपट्ठानो पुण्णचन्दो विय। अमोहो लक्खणादीहि हेट्ठा पञ्ञिन्द्रियपदे विभावितो एव। इमेसु पन तीसु अलोभो मच्छेरमलस्स पटिपक्खो, अदोसो दुस्सील्यमलस्स, अमोहो कुसलेसु धम्मेसु अभावनाय। अलोभो चेत्थ दानहेतु, अदोसो सीलहेतु, अमोहो भावनाहेतु।

तेसु अलोभेन अनधिकं गण्हाति, लुद्धस्स अधिकग्गहणतो। अदोसेन अनूनं, दुट्ठस्स ऊनग्गहणतो। अमोहेन अविपरीतं, मूळ्हस्स विपरीतग्गहणतो। अलोभेन चेत्थ विज्जमानं दोसं दोसतो व धारेन्तो दोसे पवत्तति; लुद्धो हि दोसं पटिच्छादेति। अदोसेन विज्जमानं गुणं गुणतो धारेन्तो गुणे पवत्तति; दुट्ठो हि गुणं मक्खेति। अमोहेन याथावसभावं याथावसभावतो धारेन्तो याथावसभावे पवत्तति। मूळ्हो हि 'तच्छमतच्छं अतच्छं तच्छं' ति गण्हाति। अलोभेन च पियविप्पयोगदुक्खं न होति, लुद्धस्स पियसभावतो पियविप्पयोगासहनतो च। अदोसेन अप्पियसम्पयोगदुक्खं न होति, दुट्ठस्स अप्पियसभावतो अप्पियसम्पयोगासहनतो च। अमोहेन इच्छितालाभदुक्खं न होति, अमूळ्हस्स हि 'तं कुतेत्थ लब्भा' ति एवमादि-पच्चवेक्खणसभावतो। अलोभेन चेत्थ जातिदुक्खं न होति, अलोभस्स तण्हापटिपक्खत्ता तण्हामूलकत्ता च जातिदुक्खस्स। अदोसेन जरादुक्खं न होति, तिक्खदोसस्स खिप्पजरासम्भवतो। अमोहेन मरणदुक्खं न होति, संमोहमरणं हि दुक्खं, न च तं अमूळ्हस्स होति।

अलोभेन च गहट्ठानं, अमोहेन पब्बजितानं, अदोसेन पन सब्बेसं पि सुखसंवासता होति, । विसेसतो चेत्थ अलोभेन पेत्तिविसये उपपत्ति न होति। येभुय्येन हि सत्ता तण्हाय पेत्तिविसयं उपपज्जन्ति, तण्हाय च पटिपक्खो अलोभो। अदोसेन निरये उपपत्ति न होति। दोसेन हि चण्डजातिताय दोससदिसं निरयं उपपज्जन्ति। दोसस्स

असङ्गहो। मुत्तभिक्खु विया ति खीणासवभिक्खु विय। चण्डिकस्स भावो चण्डिक्कं, फरुसभावो। चण्डिक्कस्स पटिपक्खं अचण्डिक्कं, अफरुसभावो। अविरोधो अपटिपक्खभावो। आघातविनयरसो ति उपनाहस्स बलवकोपस्स अपनयनरसो। सोम्मभावो वा[1] पामोज्जवसेन सीतलभावो। अलोभादीनं तिण्णं धम्मानं गुणं ञापेन्तो आह–इमेसु पना ति आदि। एत्था ति अलोभादीसु।

पियविप्पयोगदुक्खं ति पियेन विप्पयोगे पवत्तदुक्खं। पियसभावतो ति पियस्स विज्जमानभावतो। इच्छितस्स अलाभेन पवत्तदुक्खं। तण्हामयं[2] मूलं[2] अस्सा ति तण्हामूलकं। तस्स भावो तण्हामूलकत्तं। तं ति सम्मोहमरणं।

गहट्ठानं सब्बेसम्पि सुखसंवासता होति।

---

१. नत्थि–सी०। २-२. तण्हामूलं–सी०।

च पटिपक्खो अदोसो। अमोहेन तिरच्छानयोनियं निब्बत्ति न होति। मोहेन हि निच्चं सम्मूळ्हं तिरच्छानयोनिं उपपज्जन्ति। मोहपटिपक्खो च अमोहो। एतेसु अलोभो रागवसेन उपगमनस्स अभावकरो, अदोसो दोसवसेन अपगमनस्स, अमोहो मोहवसेन मज्झत्तभावस्स। तीहि पि चेतेहि यथापटिपाटिया नेक्खम्मसञ्ञा अब्यापादसञ्ञा अविहिंसासञ्ञा ति इमा तिस्सो सञ्ञा होन्ति। असुभसञ्ञा अप्पमाणसञ्ञा धातुसञ्ञा ति इमा च तिस्सो सञ्ञा होन्ति।

अलोभेन पन कामसुखल्लिकानुयोगन्तस्स, अदोसेन अत्तकिलमथानुयोगन्तस्स परिवज्जनं होति; अमोहेन मज्झिमाय पटिपत्तिया पटिपज्जनं। तथा अलोभेन अभिज्झाकायगन्थस्स पभेदनं होति, अदोसेन ब्यापादकायगन्थस्स, अमोहेन सेसगन्थद्वयस्स। पुरिमानि च द्वे सतिपट्ठानानि पुरिमानं द्विन्नं आनुभावेन, पच्छिमानि पच्छिमस्सेव आनुभावेन इज्झन्ति। अलोभो चेत्थ आरोग्यस्स पच्चयो होति; अलुद्धो हि लोभनीयं पि असप्पायं न सेवति, तेन खो अरोगो होति। अदोसो योब्बनस्स; अदुट्ठो हि वलिपलितावहेन दोसग्गिना अडय्हमानो दीघरत्तं युवा होति। अमोहो दीघायुकताय; अमूळ्हो हि हिताहितं ञत्वा अहितं परिवज्जन्तो हितं च पटिसेवमानो दीघायुको होति। अलोभो चेत्थ भोगसम्पत्तिया पच्चयो होति, चागेन हि भोगपटिलाभो। अदोसो मित्तसम्पत्तिया, मेत्ताय मित्तानं पटिलाभतो चेव अपरिहानितो च। अमोहो अत्तसम्पत्तिया, अमूळ्हो हि अत्तनो हितमेव करोन्तो अत्तानं सम्पादेति। अलोभो च दिब्बविहारस्स पच्चयो होति, अदोसो ब्रह्मविहारस्स, अमोहो अरियविहारस्स।

अलोभेन चेत्थ सकपक्खेसु सत्तसंखारेसु निब्बुतो होति, तेसं विनासेन अभिसंगहेतुकस्स दुक्खस्स अभावा; अदोसेन परपक्खेसु, अदुट्ठस्स वेरीसु पि वेरिसञ्ञाय अभावतो; अमोहेन उदासीनपक्खेसु, अमूळ्हस्स सब्बाभिसंगताय अभावतो। अलोभेन अनिच्चदस्सनं होति; लुद्धो हि उपभोगासाय अनिच्चे पि संखारे अनिच्चतो न पस्सति। अदोसेन दुक्खदस्सनं; अदोसज्झासयो हि परिच्चत्त-आघातवत्थुपरिग्गहो संखारे येव दुक्खतो पस्सति। अमोहेन अनत्तदस्सनं; अमूळ्हो हि याथावगहणकुसलो अपरिणायकं खन्धपञ्चकं अपरिणायकतो बुज्झति। यथा च एतेहि अनिच्चदस्सनादीनि एवमेवेते

कामसुखल्लिकानुयोग-अन्तस्सा ति कामेसु सुखस्स अनुयोगसङ्खातलामकस्स। कामेसु पवत्तं सुखं काममुखं। तं[1] एव[1] कामसुखल्लिका, सकत्थे लिकपच्चयो। कामसुखल्लिकस्स अनुयोगो कामसुखल्लिकानुयोगो। सो एव अन्तो काम....प०....अन्तो। अत्तनो किलमथस्स अनुयोगो लामकस्स।

तेसं ति सत्तसङ्खारानं। अभिसङ्गो हेतु अस्सा ति अभिसङ्गहेतुकं। उपभोगासाया ति उपभोगस्स इच्छा[2]। आघातस्स वत्थु कारणं आघातवत्थु। आघातवत्थुस्स परिग्गहो आघात-

१-१. कामसुखमेव—सी०। २. इच्छाय—सी०।

पि अनिच्चदस्सनादीहि होन्ति। अनिच्चदस्सनेन हि अलोभो होति, दुक्खदस्सनेन हि अदोसो, अनत्तदस्सनेन अमोहो। को हि नाम 'अनिच्चमिदं' ति सम्मा ञत्वा तस्स' त्थाय पिहं उप्पादेय्य, संखारे वा 'दुक्खा' ति जानन्तो अपरं पि अच्चन्तं तिखिणं कोधदुक्खं उप्पादेय्य, अत्तसुञ्ञतं च बुज्झित्वा पुन सम्मोहं आपज्जेय्या ति ?।

नाभिज्झायती ति **अनभिज्झा**। कायिकचेतसिकसुखं इधलोकपरलोकहितं गुणानुभावपटिलद्धं कित्तिसद्दं च न ब्यापादेती ति **अब्यापादो**। सम्मा पस्सति, सोभना वा दिट्ठी ति **सम्मादिट्ठि**। अलोभादीनं येव तानि नामानि। हेट्ठा पनेते धम्मा मूलवसेन गहिता, इध कम्मपथवसेना ति वेदितब्बा।

हिरोत्तप्पानि पि हेट्ठा बलवसेन गहितानि, इध लोकपालवसेन। लोकं हि इमे द्वे धम्मा पालेन्ति। यथाह—"द्वे'मे भिक्खवे, सुक्का धम्मा लोकं पालेन्ति। कतमे द्वे ? हिरि च ओत्तप्पं च। इमे खो भिक्खवे, द्वे सुक्का धम्मा लोकं पालेन्ति। सचे भिक्खवे, द्वे सुक्का धम्मा लोकं न पालेय्युं, नयिध पञ्ञायेत्थ माता ति वा, मातुच्छा ति वा, मातुलानी ति वा, आचरियभरिया ति वा, गरूनं दारा ति वा। सम्भेदं लोको अगमिस्स, यथा अजेळका कुक्कुटसूकरा गोणसिंगाला। यस्मा च खो भिक्खवे, इमे द्वे सुक्का धम्मा लोकं पालेन्ति, तस्मा पञ्ञायति माता ति वा मातुच्छा ति मातुलानी ति वा आचरियभरिया ति वा गरूनं दारा ति वा" [अं० १:४९] ति।

कायपस्सम्भनं **कायपस्सद्धि**। चित्तपस्सम्भनं **चित्तपस्सद्धि**। कायो ति चेत्थ वेदनादयो तयो खन्धा। उभो पि पनेता एकतो कत्वा कायचित्तदरथवूपसमलक्खणा कायचित्तपस्सद्धियो, कायचित्तदरथनिम्मद्दनरसा, कायचित्तानं अपरिप्फन्दनसीतिभावपच्चुपट्ठाना, कायचित्तपदट्ठाना। कायचित्तानं अवूपसमकर-उद्धच्चादिकिलेसपटिपक्खभूता ति दट्ठब्बा। कायस्स लहुभावो **कायलहुता**। चित्तस्स लहुभावो **चित्तलहुता**। ता कायचित्तगरुभाववूपसमलक्खणा, कायचित्तगरुभावनिम्मद्दनरसा, कायचित्तानं अदन्धनतापच्चुपट्ठाना, कायचित्तपदट्ठाना। कायचित्तानं गरुभावकरथीनमिद्धादि-

---

वत्थुपरिग्गहो। परिच्चत्तो आघातवत्थुपरिग्गहो येन सो परिच्च.....प०..... (१२५–सी०) हो। तस्सत्थाया ति तस्स अनिच्चस्स अत्थाय।

नयिधा ति इध लोके न पञ्ञायेथ। अगमिस्सा ति गच्छेय्य।

पस्सम्भनं ति दरथवूपसमो। कायसद्दो समूहवचनो, सो चेत्थ वेदनादिक्खन्धत्तयं, वत्तिच्छावसेन हि सद्दो विसिट्ठवुत्ति होतीति आह—कायो ति चेत्था ति आदि। वेदनादयो ति वेदनासञ्ञासङ्खारक्खन्धा। कायचित्तानं दरथो कायचित्तदरथो। कायचित्तदरथस्स वूपसमो लक्खणं अस्सा ति कायचित्तदरथवूपसमलक्खणा। कायचित्त.....प०.....रसा ति यथावुत्तानमेव पटिपक्खधम्मानं अभिभवनरसा दरथनिम्मद्दनं। अपरिफन्दसीतिभावो ति परिळाहपरिफन्दविरहितो सीतिभावो। अवूपसमं असन्तवुत्तितं करोन्तीति अवूपसमकरा। उद्धच्चपट्ठाना किलेसा उद्धच्चादिकिलेसा। आदिसद्दो हेत्थ पट्ठानवाचको। उद्धच्चं वा आदिं कत्वा सब्बे

किलेसपटिपक्खभूता ति दट्ठब्बा। कायस्स मुदुभावो **कायमुदुता**। चित्तस्स मुदुभावो **चित्तमुदुता**। ता कायचित्तथद्धभाववूपसमलक्खणा, कायचित्तथद्धभावनिम्मद्दनरसा, अप्पटिघातपच्चुपट्ठाना, कायचित्तपदट्ठाना। कायचित्तानं थद्धभावकर-दिट्ठिमानादि-किलेस-पटिपक्खभूता ति दट्ठब्बा।

कायस्स कम्मञ्ञभावो **कायकम्मञ्ञता**। चित्तस्स कम्मञ्ञभावो **चित्तकम्मञ्ञता**। ता कायचित्त-अकम्मञ्ञभाववूपसमलक्खणा, कायचित्त-अकम्मञ्ञभाव-निम्मद्दनरसा, कायचित्तानं आरम्मणकरणसम्पत्तिपच्चुपट्ठाना, कायचित्तपदट्ठाना। कायचित्तानं अकम्मञ्ञभावकरावसेसनीवरणपटिपक्खभूता ति दट्ठब्बा। ता पसादनीयवत्थूसु पसादावहा, हितकिरियासु विनियोगक्खेमभावावहा सुवण्णविसुद्धि विया ति दट्ठब्बा। कायस्स पागुञ्ञभावो **कायपागुञ्ञता**। चित्तस्स पागुञ्ञभावो **चित्तपागुञ्ञता**। ता कायचित्त-अगेलञ्ञभावलक्खणा, कायचित्तगेलञ्ञनिम्मद्दनरसा, निरादीनवपच्चुपट्ठाना, कायचित्तपदट्ठाना। कायचित्तगेलञ्ञकर-अस्सद्धियादिकिलेस-पटिपक्खभूता ति दट्ठब्बा। कायस्स उजुकभावो **कायुजुकता**। चित्तस्स उजुकभावो **चित्तुजुकता**। ता कायचित्त-अज्जवलक्खणा, कायचित्त-कुटिलभावनिम्मद्दनरसा, कायचित्तानं अजिम्हतापच्चुपट्ठाना, कायचित्तपदट्ठाना। कायचित्तानं कुटिलभावकर-मायासाठेय्यादिकिलेसपटिपक्खभूता ति दट्ठब्बा।

किलेसा उद्धच्चादिकिलेसा। एवं (म०-१०५) सेसेसु पि। अवूपसमकरा च ते उद्धच्चादि-किलेसा चा ति अवू....प०....सा। तेसं पटिपक्खा हुत्वा भवन्तीति अवू....प०....भूता[1]। गरुभावो ति दन्धता, थिनमिद्धाधिकानं तथा पवत्तानं खन्धानमेतं अधिवचनं। अदन्धभावो ति दन्धताय पटिपक्खो अगरुभावो। थद्धभावो ति थम्भो दिट्ठमानादिकानं[2] तपट्ठानानं वा चतुन्नं खन्धानं एतं नामं। अप्पटिघातपच्चुपट्ठाना ति थद्धभावनिम्मद्दनतो येव कत्थचि आरम्मणे अप्पटिघाताकारेन पच्चुपट्ठाना। सम्पयुत्तानं वा आरम्मणे अप्पटिघातपच्चुपट्ठाना ति थद्ध-भावनिम्मद्दनतो येव कत्थचि आरम्मणे अप्पटिघाताकारेन पच्चुपतिट्ठन्तीति अप्पटिघातपच्चु-पट्ठाना।

अकम्मञ्ञभावो ति कम्मनि साधु कम्मञ्ञं। न कम्मञ्ञं अकम्मञ्ञं। अकम्मञ्ञस्स भावो अकम्मञ्ञभावो, दानसीलादिपुञ्ञक्रियाय समत्तता, अत्थतो कामच्छन्दादिकिलेसधम्मा तप्पट्ठाना वा चत्तारो अकुसलखन्धा। आरम्मणकरणसम्पत्तीति आरम्मणस्स करणं गहणं आरम्मण-करणं। सम्पज्जनं सम्पत्ति। आरम्मणकरणस्स सम्पत्ति आर....प०....म्पत्ति। अकम्मञ्ञ-भावनिम्मद्दनेनेव सम्पन्नाकारेन आरम्मणस्स गहणं ति अधिप्पायो। विनियो....प०....वहा ति नियुज्जने खमभावस्स आवहा। अगेलञ्ञभावो ति गेलञ्ञं अस्सद्धिया तदेकट्ठा च पापधम्मा। न गेलञ्ञं अगेलञ्ञं। अगेलञ्ञस्स भावो अगेलञ्ञभावो। अगेलञ्ञभावो (१२६-सी०)

---

१. नत्थि-म०। २. दिट्ठमानादिकं-म०।

सरती ति **सति**। सम्पजानाती ति **सम्पजञ्ञं**; समन्ततो पकारेहि जानाती ति अत्थो। सात्थकसम्पजञ्ञं सप्पायसम्पजञ्ञं गोचरसम्पजञ्ञं असम्मोहसम्पजञ्ञं ति इमेसं चतुन्नं पन'स्स वसेन भेदो वेदितब्बो। लक्खणादीनि च तेसं सतिन्द्रिय-पञ्ञिन्द्रियेसु वुत्तनयेनेव वेदितब्बानि। इति हेट्ठा वुत्तमेवेतं धम्मद्वयं पुन इमस्मिं ठाने उपकारवसेन गहितं। कामच्छन्दादयो पच्चनीकधम्मे समेती ति **समथो**। अनिच्चादि-वसेन विविधेहि आकारेहि धम्मे पस्सती ति **विपस्सना**। पञ्ञा'वेसा अत्थतो। इमेसं पि द्विन्नं लक्खणादीनि हेट्ठा वुत्तानेव। इध पनेते युगनद्धवसेन गहिता। सहजातधम्मे पग्गण्हाती ति **पग्गाहो**। उद्धच्चसंखातस्स विक्खेपस्स पटिपक्खभावतो न विक्खेपो ति **अविक्खेपो**। एतेसं पि लक्खणादीनि हेट्ठा वुत्तानेव। इध पनेतं पदद्वयं विरियसमाधि-योजनत्थाय गहितं ति वेदितब्बं।

ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञे पि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा, इमे धम्मा कुसला ति 'फस्सो होति····प०····अविक्खेपो होती' ति न केवलं पदपटिपाटिया उद्दिट्ठा इमे परोपण्णासधम्मा एव, अथ खो यस्मिं समये कामावचरं तिहेतुकं सोम-नस्ससहगतं पठमं असंखारिकं महाचित्तं उप्पन्नं होति, तस्मिं समये ये वा पन अञ्ञे पि तेहि येव फस्सादीहि सम्पयुत्ता हुत्वा पवत्तमाना अत्थि, अत्तनो अत्तनो अनुरूपं पच्चयं पटिच्च समुप्पन्ना रूपाभावेन अरूपिनो, सभावतो उपलब्भमाना धम्मा सब्बे पि इमे धम्मा कुसला।

एत्तावता चित्तङ्गवसेन पालियं आरूळ्हे परोपण्णासधम्मे दीपेत्वा ये-वा-पनक-वसेन अपरे पि नव धम्मे **धम्मराजा** दीपेति। तेसु तेसु हि सुत्तपदेसु 'छन्दो अधि-

---

लक्खणं एतासं ति अगेलञ्ञभावलक्खणा। निरादी····प०····ना ति गेलञ्ञनिम्मद्दनेनेव नत्थि एतासं आदीनवो ति[1] निरादीनवो[2]। न एता आदीनं कपनं[3] वन्ति पवत्तन्तीति वा निरादीनवा। निरादीनवेन पच्चुपट्ठन्तीति निरा····प०····ट्ठाना। निरादीनवं वा नं सम्पयुत्तेसु पच्चुपट्ठा-पेन्तीति निरादीनवपच्चुपट्ठाना। कायचित्तानं कुटिलभावानं मायासाथेय्यादीनं[4] निम्मद्दन-किच्चा। अजिम्हताय अकुटिलभावेन पच्चुपतिट्ठन्ति सम्पयुत्तानं वा अजिम्हतं पच्चुपट्ठापेन्तीति अजिम्हतापच्चुपट्ठाना।

तत्था ति[5] सतिसम्पजञ्ञेसु। अस्सा ति सम्पजञ्ञस्स। एतेसं ति सतिसम्पजञ्ञानं। पञ्ञा वेसा अत्थतो ति सभावतो एसा विपस्सना पञ्ञा एव। युगे सकटयुगे नन्धियन्ति[6] बन्धियन्तीति युगनन्धा[7] गोणा। 'नह'[8]–बन्धने। युगनन्धा विया ति युगनन्धा।

चित्तङ्गवसेना ति चित्तस्स अवयववसेन। ये-वा-पन इति कायन्ति कथियन्तीति ये-वा-पनका। 'का'–धातु कथने। तेसु तेसु हीति दळ्हीकरणं[9]। सुत्तपदेसू ति पाळिया पदेसु।

---

१. आदीनवो दोसो ति–सी०। २. निरादीनवा–सी०। ३. कपणं–सी०। ४. ०साठेय्या०–सी०। ५. का का तत्थाति–सी०। ६. नधियन्ति–सी०। ७. युगनद्धा–सी० सब्बत्थ। ८. सह–म०। ९. आदि दळिह०–सी०।

मोक्खो मनसिकारो तत्रमज्झत्तता करुणा मुदुता कायदुच्चरितविरति वचीदुच्चरितविरति मिच्छाजीवविरती' ति इमे नव धम्मा पञ्ञायन्ति। इमस्मिं चा पि महाचित्ते कत्तुकम्यताकुसलधम्मच्छन्दो अत्थि, चित्तङ्गवसेन पन पाळि न आरूळ्हो। सो इध ये-वा-पनकवसेन गहितो। अधिमोक्खो अत्थि, मनसिकारो अत्थि, तत्रमज्झत्तता अत्थि। मेत्तापुब्बभागो अत्थि; सो अदोसे गहिते गहितो एव होति। करुणापुब्बभागो अत्थि, मुदितापुब्बभागो अत्थि। उपेक्खापुब्बभागो अत्थि; सो पन तत्रमज्झत्तताय गहिताय गहितो एव होति। सम्मावाचा अत्थि, सम्माकम्मन्तो अत्थि। सम्मा-आजीवो अत्थि; चित्तङ्गवसेन पाळि न आरूळ्हो। सो पि इध ये-वा-पनकवसेन गहितो।

इमेसु पन नवसु छन्दो अधिमोक्खो मनसिकारो तत्रमज्झत्तता ति इमे चत्तारो व एकक्खणे लब्भन्ति, सेसा नानक्खणे। यदा हि इमिना चित्तेन मिच्छावाचं पजहति, विरतिवसेन सम्मावाचं पूरेति, तदा छन्दादयो चत्तारो, सम्मावाचा चा ति इमे पञ्च एकक्खणे लब्भन्ति। यदा मिच्छाकम्मन्तं पजहति, विरतिवसेन सम्माकम्मन्तं पूरेति ....प०.... मिच्छा-आजीवं पजहति, विरतिवसेन सम्मा-आजीवं पूरेति, यदा करुणाय परिकम्मं करोति....प०....मुदिताय परिकम्मं करोति, तदा छन्दादयो चत्तारो, मुदितापुब्बभागो चा ति इमे पञ्च एकक्खणे लब्भन्ति। इतो पन मुञ्चित्वा, दानं देन्तस्स सीलं पूरेन्तस्स योगे कम्मं करोन्तस्स चत्तारि अपण्णकङ्गानेव लब्भन्ति।

एवमेतेसु नवसु ये-वा-पनकधम्मेसु 'छन्दो'ति कत्तुकम्यतायेतं अधिवचनं। तस्मा सो कत्तुकम्यतालक्खणो छन्दो, आरम्मणपरियेसनरसो, आरम्मणेन अत्थिकता-

---

इतो ति सम्मावाचापूरणादितो। (म०-१०६) योगेना ति वीरियेन। कस्मा पन येवापनका भगवता सरूपेन पाळियं न उद्धटा। येवा पन धम्मेसु केचि अनियता, केचि फस्सपञ्चमकरासि-आदीसु एकरासिम्पि न गच्छन्ति, केचि दुब्बला, तस्मा पाळियं न उद्धटा ति। तेन अभिधम्मावतारे बुद्धदत्ताचरियेन वुत्तं—

कस्मा ये-वा-पन धम्मा, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
सरूपेनेव सब्बेते, पाळियं न च उद्धटा॥
यस्मा अनियता केचि, यस्मा रासिं[1] भजन्ति न।
यस्मा च दुब्बला केचि, तस्मा वुत्ता न पाळिया ति[2]॥

नामरूपसमासे पन खेमाचरियेन वुत्तं—

दुकवत्थादीसु यस्मा, समीहतं[3] न यन्ति हि।
चित्तस्स च पुथुभावं, दीपेतुञ्च अपण्णकं॥
तस्मा ये-वा-पन धम्मा[4], मुनिन्देन पकासिता ति। (१० पिट्ठे)

छन्दनं छन्दो, आरम्मणेन अत्थिकता। छन्दो कामो ति[5] आदीसु पन तण्हा पि छन्दो ति वुच्चति[6]। छन्दं जनेति वायमतीति (१२७-सी०) आदीसु पन[7] वीरियम्पि[8]। ततो

---

१. रासि०-सी०। २. पाळियं ति-सी०। ३. सङ्गहं च-सी०। ४. येवा पना-धम्मा -सी०। ५. कामेति-सी०। ६. वुत्तं-सी० ७. नत्थि-सी०। ८. वीरियम्पीति-सी०।

पच्चुपट्ठानो। तदेव'स्स पदट्ठानं। आरम्मणगहणे चायं चेतसो हत्थप्पसारणं विय दट्ठब्बो। अधिमुच्चनं 'अधिमोक्खो'। सो सन्निट्ठानलक्खणो, असंसप्पनरसो, निच्छयपच्चुपट्ठानो सन्निट्ठातब्बधम्मपदट्ठानो। आरम्मणे निच्चलभावेन इन्दखीलो विय दट्ठब्बो। किरिया कारो, मनस्मिं कारो 'मनसिकारो'। पुरिममनतो विसदिसं मनं करोती ति पि मनसिकारो। स्वायं आरम्मणपटिपादको वीथिपटिपादको जवनपटिपादको ति तिप्पकारो। तत्थ आरम्मणपटिपादको मनस्मिं करोती ति मनसिकारो। सो सारणलक्खणो, सम्पयुत्तानं आरम्मणे सम्पयोजनरसो, आरम्मणाभिमुखभावपच्चुपट्ठानो, संखारक्खन्धपरियापन्नो। आरम्मणपटिपादकत्तेन सम्पयुत्तानं सारथि विय दट्ठब्बो। वीथिपटिपादको ति पन पञ्चद्वारावज्जनस्सेतं अधिवचनं। जवनपटिपादको ति मनोद्वारावज्जनस्स। न ते इध अधिप्पेता।

तेसु धम्मेसु मज्झत्तता 'तत्रमज्झत्तता'। सा चित्तचेतसिकानं समवाहितलक्खणा, ऊनाधिकनिवारणरसा, पक्खपातुपच्छेदनरसा वा; मज्झत्तभावपच्चुपट्ठाना। चित्तचेतसिकानं अज्झुपेक्खनवसेन समप्पवत्तानं आजानेय्यानं अज्झुपेक्खनसारथि विय दट्ठब्बा। 'करुणा मुदिता' ब्रह्मविहारनिद्देसे आविभविस्सन्ति। केवलं हि ता अप्पनापत्ता रूपावचरा, इध कामावचरा ति अयमेव विसेसो। कायदुच्चरिततो विरति 'कायदुच्चरितविरति'। सेसपदद्वये पि एसेव नयो। लक्खणादितो पनेता तिस्सो पि कायदुच्चरितादिवत्थूनं अवीतिक्कमलक्खणा; अमद्दनलक्खणा ति वुत्तं होति। कायदुच्चरितादिवत्थुतो संकोचनरसा, अकिरियपच्चुपट्ठाना, सद्धा-हिरोत्तप्प-अप्पिच्छतादिगुणपदट्ठाना। पापकिरियतो पि चित्तस्स विमुखभावभूता ति दट्ठब्बा।

निवत्तनत्थं वुत्तं कत्तुकम्यतायेतं अधिवचनं ति। संपुब्ब'सप्प'–गतियं। संसप्पनस्स पटिपक्खं असंसप्पनं। सन्निट्ठातब्बो एव धम्मो सन्निट्ठातब्बधम्मो आरम्मणधम्मो। सन्निट्ठातब्बधम्मो पदट्ठानं अस्सा ति सन्निट्ठातब्बधम्मपदट्ठानो। मनस्मिं करोति मनसि आरम्मणस्स करणं[1]। येन हि मनो आरम्मणे करियति आरम्मणेनस्स संयोजनतो एव तेन आरम्मणम्पि मनसि करियतीति। मनसिकारो चेत्थ अलुत्तसमासो दट्ठब्बो। मनसि करोतीति मनसिकारो[2]। मनसि करोतीति[3] एत्थ उपयोगत्थे भुम्मवचनसमासो[4] दट्ठब्बो। सम्पयुत्तधम्मानं आरम्मणाभिमुखं सारणं विसारणं लक्खणं अस्सा ति सारणलक्खणो। सम्पयुत्तानं आरम्मण....प०....दट्ठब्बो।

सं समं अवाहितं, अत्तनो सम्पयुत्तानं वाहं सककिच्चेसु पवत्तनं समवाहितं। अवपुब्ब'हि'-गतियं। समं वाहितलक्खणं एतिस्सा ति समवाहितलक्खणा। इदं निहीनकिच्चं इदं अतिरेककिच्चं ति एवं पक्खपातवसेन विय पवत्ति पक्खपातो। पक्खपातस्स उपच्छेदनं विय रसो एतिस्सा ति पक्खापातुपच्छेदनरसा। कायदुच्चरिततो ति वत्थुवीतिक्कमसङ्खातकायदुच्चरिततो। कायदुच्चरितादि-वत्थूनं ति परपाणपरधन (म०–१०७,–पर-इत्थि-आदीनं कायदुच्चरितादीनं आरम्मणभूतानमेव[5]। सद्धा....प०....पदट्ठाना ति एत्थ सद्धादयो सब्बेव[6] धम्मा

---

१. ....प–म०। २. नत्थि–म०। ३. मनसिकरोति–म०। ४. भुम्मवचने समासो–सी०। ५. आलम्बन०–सी०। ६. सब्बे–सी०।

इति फस्सादीनि छ-पञ्ञास ये-वा-पनकवसेन वुत्तानि नवा ति सब्बानि पि इमस्मिं धम्मुद्देसवारे पञ्चसट्ठि धम्मपदानि भवन्ति। तेसु एकक्खणे कदाचि एकसट्ठि भवन्ति, कदाचि समसट्ठि। तानि हि सम्मावाचापूरणादिवसेन वुत्तानि। उप्पत्तियं पञ्चसु ठानेसु एकसट्ठि भवन्ति। तेहि मुत्ते एकस्मिं ठाने समसट्ठि भवन्ति। ठपेत्वा पन ये-वा-पनके पालियं यथारुतवसेन गय्हमानानि छपञ्ञासा व होन्ति। अगहितग्गहणेन पनेत्थ फस्सपञ्चकं, वितक्को विचारो पीति चित्तेकग्गता, पञ्चिन्द्रियानि, हिरिबलं ओत्तप्पबलं ति द्वे बलानि, अलोभो अदोसो ति द्वे मूलानि, कायपस्सद्धि चित्तपस्सद्धी ति आदयो द्वादस धम्मा ति समतिंस धम्मा होन्ति।

तेसु समतिंसाय धम्मेसु अट्ठारस धम्मा अविभत्तिका होन्ति, द्वादस धम्मा सविभत्तिका। कतमे अट्ठारस ? फस्सो पञ्ञा चेतना विचारो पीति जीवितिन्द्रियं, कायपस्सद्धि-आदयो द्वादसा ति इमे अट्ठारस अविभत्तिका। वेदना चित्तं वितक्को चित्तेकग्गता, सद्धिन्द्रियं विरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं, हिरिबलं ओत्तप्पबलं, अलोभो अदोसो ति इमे द्वादस सविभत्तिका। तेसु सत्त धम्मा द्वीसु ठानेसु विभत्ता, एको तीसु, द्वे चतूसु, एको छसु, एको सत्तसु ठानेसु विभत्तो।

कथं ? चित्तं वितक्को सद्धा हिरि ओत्तप्पं अलोभो अदोसो ति इमे सत्त द्वीसु ठानेसु विभत्ता। एतेसु हिं चित्तं ताव फस्सपञ्चकं पत्वा चित्तं होती ति वुत्तं, इन्द्रियानि पत्वा मनिन्द्रियं ति। वितक्को झानङ्गानि पत्वा वितक्को होती ति वुत्तो, मग्गङ्गानि पत्वा सम्मासंकप्पो ति। सद्धा इन्द्रियानि पत्वा सद्धिन्द्रियं होती ति वुत्ता, बलानि पत्वा सद्धाबलं ति। हिरि बलानि पत्वा हिरिबलं होती ति वुत्ता, लोकपालदुकं पत्वा हिरी ति। ओत्तप्पे पि एसेव नयो। अलोभो मूलं पत्वा अलोभो होती ति

कायदुच्चरितविरति-आदीनं पदट्ठाना ति एके, अपरे[1] पन[1] कम्मकम्मफलं सद्दहन्तस्स कायदुच्चरित-अकरणतो हिरोतप्पसम्पन्नस्स मुसावादस्सा ति[2] अकथनतो अप्पिच्छता-सन्तुट्ठि-सल्लेखगुणसमन्नागतस्स मिच्छाजीवविवज्जनतो[3] च सद्धादयो तिण्णं धम्मानं यथाक्कमेन पदट्ठाना ति वदन्ति।

तेसू ति पञ्चसट्ठिधम्मपदेसु। तेहीति पञ्चहि[4] अनियत-ये-वा-पनकम्मट्ठानेहि। एत्था ति छपञ्ञासधम्मेसु।

तं तं रासिकिच्चतो विभजनं विभत्ति, विभत्तिय रहिता अविभत्तिका। सह विज्जमाना विभत्ति एतेसं ति सविभत्तिका, किच्चके[5] विभावेन्तो ति अत्थो। तेसू ति द्वादसधम्मेसु।

एतेसू ति सत्तधम्मेसु। हि सद्दो वित्थारजोतको।

(१२८–सी०) चित्तं वितक्को सद्धा च हिरोत्तप्पदुहेतुयो।
इमे द्विट्ठानिका सत्त, तिट्ठाना वेदना मता॥

१-१. अपरेन–सी०। २. मुसा वाचा–सी०। ३. मिच्छाजीवा विव०–सी०। ४. नत्थि–सी०। ५. किच्चतो–सी०।

वुत्तो, कम्मपथं पत्वा अनभिज्झा ति। अदोसो मूलं पत्वा अदोसो होती ति वुत्तो, कम्मपथं पत्वा अब्यापादो ति। इमे सत्त द्वीसु ठानेसु विभत्ता।

वेदना फस्सपञ्चकं पत्वा वेदना होती ति वुत्ता, झानङ्गानि पत्वा सुखं ति, इन्द्रियानि पत्वा सोमनस्सिन्द्रियं ति। एवं एको धम्मो तीसु ठानेसु विभत्तो।

विरियं पन इन्द्रियानि पत्वा विरियिन्द्रियं होती ति वुत्तं, मग्गङ्गानि पत्वा सम्मावायामो ति, बलानि पत्वा विरियबलं ति, पिट्ठिदुकं पत्वा पग्गाहो ति। सति पि इन्द्रियानि पत्वा सतिन्द्रियं होती ति वुत्ता, मग्गङ्गानि पत्वा सम्मासती ति, बलानि पत्वा सतिबलं ति, उपकारदुकं पत्वा सति होती ति वुत्ता। एवं इमे द्वे धम्मा चतूसु ठानेसु विभत्ता।

समाधि पन झानङ्गानि पत्वा चित्तस्सेकग्गता होती ति वुत्तो, इन्द्रियानि पत्वा समाधिन्द्रियं ति, मग्गङ्गानि पत्वा सम्मासमाधी ति। बलानि पत्वा समाधिबलं ति, पिट्ठिदुकं पत्वा समथो अविक्खेपो ति। एवमयं एको धम्मो छसु ठानेसु विभत्तो।

पञ्ञा पन इन्द्रियानि पत्वा पञ्ञिन्द्रियं होती ति वुत्ता, मग्गङ्गानि पत्वा सम्मादिट्ठी ति, बलानि पत्वा पञ्ञाबलं ति, मूलानि पत्वा अमोहो ति, कम्मपथं पत्वा सम्मादिट्ठी ति, पिट्ठिदुकं पत्वा सम्पजञ्ञं विपस्सना ति। एवं एको धम्मो सत्तसु ठानेसु विभत्तो।

सचे पन कोचि वदेय्य—'एत्थ अपुब्बं नाम नत्थि, हेट्ठा गहितमेव गण्हित्वा तस्मिं तस्मिं ठाने पदं पूरितं, अननुसन्धिका कथा उप्पटिपाटिया चोरेहि आभतभण्डसदिसा, गोयूथेन गतमग्गे आलुळिततिणसदिसा अजानित्वा कथिता' ति, सो 'मा हेवं' ति पटिसेधेत्वा वत्तब्बो—'बुद्धानं देसना अननुसन्धिका नाम नत्थि, सानुसन्धिका होति। अजानित्वा कथिता पि नत्थि, सब्बा जानित्वा कथिता येव। सम्मासंबुद्धो हि तेसं तेसं धम्मानं किच्चं जानाति, तं ञत्वा किच्चवसेन विभत्तिं आरोपेन्तो अट्ठारस धम्मा एकेककिच्चा ति ञत्वा एकेकस्मिं ठाने विभत्तिं आरोपेसि। सत्त धम्मा द्वे-द्वे-किच्चा ति ञत्वा द्वीसु ठानेसु विभत्तिं आरोपेसि। वेदना ति-किच्चा ति ञत्वा तीसु ठानेसु विभत्तिं आरोपेसि। विरियसतीनं चत्तारि चत्तारि किच्चानी ति ञत्वा चतूसु चतूसु ठानेसु विभत्तिं आरोपेसि। समाधि छ-किच्चा ति ञत्वा छसु ठानेसु विभत्तिं आरोपेसि। पञ्ञा सत्तकिच्चा ति ञत्वा सत्तसु ठानेसु विभत्तिं आरोपेसि'।

वीरियं सति चतुट्ठाना[1], छट्ठानेकग्गता[2] पि च।
सत्तट्ठाना मति[3] वुत्ता, सम्भिन्ना द्वादसा इमे ति॥

सङ्गहगाथा सविभत्तिधम्मे[4] सुखगहणत्थं नामरूपसमासे[5] वुत्ता।

१. चतुट्ठा–म०। २. सट्ठानेक०–म०। ३. सत्तट्ठाना नामाति–सी०।
४. सविभत्तिक०–सी०। ५. द०–नामरूपसमासे····(११ पिट्ठे)।

तत्रिदं ओपम्मं—एको किर पण्डितो राजा रहोगतो चिन्तेसि—इदं राजकुलसन्तकं न यथा वा तथा वा खादितब्बं, सिप्पानुच्छविकं वेतनं वड्ढेस्सामी' ति। सो सब्बे सिप्पिके सन्निपातापेत्वा 'एकेकसिप्पजाननके पक्कोसथा' ति आह। एवं पक्कोसियमाना अट्ठारस जना उट्ठहिंसु। तेसं एकेकं पटिविंसं दापेत्वा विस्सज्जेसि। 'द्वे सिप्पानि जानन्ता आगच्छन्तू' ति वुत्ते पन सत्त जना आगमिंसु। तेसं द्वे-द्वे पटिविंसे दापेसि। 'तीणि सिप्पानि जानन्ता आगच्छन्तू' ति वुत्ते एको व आगञ्छि। तस्स तयो पटिविंसे दापेसि। 'चत्तारि सिप्पानि जानन्ता आगच्छन्तू' ति वुत्ते द्वे जना आगमिंसु। तेसं चत्तारि चत्तारि पटिविंसे दापेसि। 'पञ्च सिप्पानि जानन्ता आगच्छन्तू' ति वुत्ते एको पि नागञ्छि। 'छ सिप्पानि जानन्ता आगच्छन्तू' ति वुत्ते एको व आगञ्छि। तस्स छ पटिविंसे दापेसि। 'सत्त सिप्पानि जानन्ता आगच्छन्तू' ति वुत्ते एको व आगञ्छि। तस्स सत्त पटिविंसे दापेसि। तत्थ पण्डितो राजा विय अनुत्तरो धम्मराजा। सिप्पजाननका विय चित्तङ्गवसेन उप्पन्ना धम्मा। सिप्पानुच्छविक-वेतनवड्ढनं विय किच्चवसेन तेसं तेसं धम्मानं विभत्ति-आरोपनं। सब्बे पि पनेते धम्मा फस्सपञ्चकवसेन झानङ्गवसेन इन्द्रियवसेन मग्गङ्गवसेन बलवसेन मूलवसेन कम्मपथवसेन लोकपालवसेन पस्सद्धिवसेन लहुतावसेन मुदुतावसेन कम्मञ्ञतावसेन पागुञ्ञतावसेन उजुकतावसेन सतिसम्पजञ्ञवसेन समथविपस्सनावसेन पग्गाहाविक्खेपवसेन सत्तरस रासियो होन्ती ति।

धम्मुद्देसवारकथा निट्ठिता।

निद्देसवारो

इदानि तानेव धम्मुद्देसवारे पालि-आरूळ्हानि छप्पञ्ञासपदानि विभजित्वा दस्सेतुं '**कतमो तस्मिं समये फस्सो होती** [§२] ति आदिना नयेन निद्देसवारो आरद्धो। तत्थ पुच्छाय ताव अयमत्थो—यस्मिं समये कामावचरं कुसलं सोमनस्ससहगतं तिहेतुकं असंखारिकं महाचित्तं उप्पज्जति, तस्मिं समये यो फस्सो होती ति वुत्तो, कतमो सो फस्सो ति इमिना नयेन सब्बपुच्छासु अत्थो वेदितब्बो। **यो तस्मिं समये फस्सो** ति तस्मिं समये यो फुसनकवसेन उप्पन्नो फस्सो, सो **फस्सो** ति। इदं फस्सस्स सभावदीपनतो सभावपदं नाम। **फुसना** ति फुसनाकारो। **संफुसना** ति संफुसनाकारो व; उपसग्गवसेन पदं वड्ढेत्वा वुत्तो। **संफुसितत्तं** ति संफुसितभावो।

तत्रा ति तस्मिं अधिकारे। तत्था ति राजादीसु। एते धम्मा सत्त रासयो होन्तीति योजना।

धम्मुद्देसवारकथावण्णना निट्ठिता

निद्देसवारकथावण्णना

तत्था ति निद्देसवारे।

अयं पनेत्थ योजना—यो तस्मिं समये फुस्सनकवसेन फस्सो, या तस्मिं समये फुसना, या तस्मिं समये संफुसना, यं तस्मिं समये सम्फुसितत्तं; अथ वा, यो तस्मिं समये फुसनकवसेन फस्सो, अञ्ञेना पि च परियायेन फुसना संफुसना संफुसितत्तं ति वुच्चति, अयं तस्मिं समये फस्सो होती ति। वेदनादीनं पि निद्देसेसु इमिना व नयेन पदयोजना वेदितब्बा। अयं पनेत्थ सब्बसाधारणो विभत्तिविनिच्छयो। यानि[१] मानि भगवता पठमं कामावचरं कुसलं महाचित्तं भाजेत्वा दस्सेन्तेन अतिरेकपण्णासपदानि मातिकावसेन ठपेत्वा पुन एकेकं पदं गहेत्वा विभत्तिं आरोपितानि, तानि विभत्तिं गच्छन्तानि हि तीहि कारणेहि विभत्तिं गच्छन्ति; नाना होन्तानि चतूहि कारणेहि नाना भवन्ति। अपरदीपना पनेत्थ द्वे ठानानि गच्छति।

कथं? एतानि हि ब्यञ्जनवसेन उपसग्गवसेन अत्थवसेना ति इमेहि तीहि कारणेहि विभत्तिं गच्छन्ति। तत्थ **कोधो कुज्झना कुज्झितत्तं, दोसो दुस्सना दुस्सितत्तं** [§१०६०] एवं ब्यञ्जनवसेन विभत्तिगमनं वेदितब्बं। एत्थ हि एको व कोधो ब्यञ्जनवसेन एवं विभत्तिं गतो। **चारो विचारो अनुविचारो उपविचारो** [§८] ति एवं पन उपसग्गवसेन विभत्तिगमनं वेदितब्बं। **पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा** [§१६] ति एवं अत्थवसेन विभत्तिगमनं वेदितब्बं। तेसु फस्सपदनिद्देसे ताव इमा तिस्सो पि विभत्तियो लब्भन्ति। 'फस्सो फुसना'ति हि ब्यञ्जनवसेन विभत्तिगमनं होति। 'सम्फुसना'ति उपसग्गवसेन। 'संफुसितत्तं'ति अत्थवसेन। इमिना नयेन सब्बपदनिद्देसेसु विभत्तिगमनं वेदितब्बं।

नाना होन्तानि पि पन नामनानत्तेन लक्खणनानत्तेन किच्चनानत्तेन पटिक्खेपनानत्तेना ति इमेहि चतूहि कारणेहि नाना होन्ति। तत्थ **कतमो तस्मिं समये ब्यापादो होति? यो तस्मिं समये दोसो दुस्सना** [§४१९] ति एत्थ ब्यापादो ति वा, दोसो ति वा, द्वे पि एते कोधो एव, नामेन नानत्तं गता ति। एवं 'नामनानत्तेन' नानत्तं वेदितब्बं। रासट्ठेन च पञ्चपि खन्धा एको व खन्धो होति। एत्थ पन रूपं रुप्पनलक्खणं, वेदना वेदयितलक्खणा, सञ्ञा संजाननलक्खणा, चेतना चेतयितलक्खणा, विञ्ञाणं विजाननलक्खणं ति इमिना लक्खणनानत्तेन पञ्चक्खन्धा होन्ति। एवं 'लक्खणनानत्तेन' नानत्तं वेदितब्बं। चत्तारो सम्मप्पधाना—"इध भिक्खु उप्पन्नानं पापकानं अकुसलानं धम्मानं अनुप्पादाय....प०....चित्तं पग्गण्हाति पदहती"

एत्था ति यो तस्मिं समये ति आदिवचने। एत्था ति पठमचित्ते। यानिमानि अतिरेकपण्णासपदानि।

तत्था ति विभत्तिगमनादीसु। एत्थ हीति हि सच्चं। एत्थ कोधो ति वचने[१]। तेसू ति फस्सपदनिद्देसादीसु।

एत्था ति चतूसु कारणेसु। एत्थ पना ति पञ्चक्खन्धेसु। कोधो गरु अस्सा ति कोध-

---

१. आदिवचने–सी०।

[म० २.२३४] ति एवं एकमेव विरियं किच्चनानत्तेन चतूसु ठानेसु आगतं। एवं 'किच्चनानत्तेन' नानत्तं वेदितब्बं। चत्तारो असद्धम्मा—कोधगरुता न सद्धम्मगरुता, मक्खगरुता न सद्धम्मगरुता, लाभगरुता न सद्धम्मगरुता, सक्कारगरुता न सद्धम्मगरुता, एवमादीसु पन 'पटिक्खेपनानत्तेन' नानत्तं वेदितब्बं।

इमानि पन चत्तारि नानत्तानि न फस्से येव लब्भन्ति, सब्बेसु पि फस्सपञ्चकादीसु लब्भन्ति। फस्सस्स हि फस्सो ति नामं····प०····चित्तस्स चित्तं ति। फस्सो च फुसनलक्खणो, वेदना वेदयितलक्खणा, सञ्ञा सञ्जाननलक्खणा, चेतना चेतयितलक्खणा, विञ्ञाणं विजाननलक्खणं। तथा फस्सो फुसनकिच्चो, वेदना अनुभवनकिच्चा, सञ्ञा सञ्जाननकिच्चा, चेतना चेतनकिच्चा, विञ्ञाणं विजाननकिच्चं। एवं किच्चनानत्तेन नानत्तं वेदितब्बं। पटिक्खेपनानत्तं फस्सपञ्चके नत्थि। अलोभादिनिद्देसे पन **अलोभो अलुब्भना अलुब्भितत्तं** [§३२] ति आदिना नयेन लब्भती ति एवं पटिक्खेपनानत्तेन नानत्तं वेदितब्बं।

एवं सब्बपदनिद्देसेसु लब्भमानकवसेन चतुब्बिधं पि नानत्तं वेदितब्बं।

अपरदीपना पन पदत्थुति वा होति दळ्हीकम्मं वा ति एवं द्वे ठानानि गच्छति। यट्ठिकोटिया उप्पीळन्तेन विय हि सकिमेव फस्सो ति वुत्ते एतं पदं फुल्लितमण्डितविभूसितं नाम न होति। पुनप्पुनं ब्यञ्जनवसेन उपसग्गवसेन अत्थवसेन 'फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं' ति वुत्ते फुल्लितमण्डितविभूसितं नाम होति। यथा हि दहरकुमारं नहापेत्वा, मनोरमं वत्थं परिदहापेत्वा पुप्फानि पिलन्धापेत्वा अक्खीनि अञ्जेत्वा अथ'स्स नलाटे एकमेव मनोसिलाय बिन्दुं करेय्युं, तस्स न एत्तावता चित्ततिलको नाम होति। नानावण्णेहि पन परिवारेत्वा बिन्दूसु कतेसु चित्ततिलको नाम होति। एवं-संपदमिदं वेदितब्बं। अयं 'पदत्थुति' नाम। ब्यञ्जनवसेन अत्थवसेन उपसग्गवसेन च पुनप्पुनं भणनमेव दळ्हीकम्मं नाम। यथा हि 'आवुसो' ति वा 'भन्ते' ति वा 'यक्खो' ति वा 'सप्पो' ति वा वुत्ते दळ्हीकम्मं नाम न होति। 'आवुसो आवुसो' 'भन्ते भन्ते' 'यक्खो यक्खो' 'सप्पो सप्पो' ति वुत्ते पन दळ्हीकम्मं नाम होति। एवमेव सकिदेव यट्ठिकोटिया उप्पीळन्तेन विय 'फस्सो' ति वुत्तपदेन दळ्हीकम्मं नाम न होति। पुनप्पुनं ब्यञ्जनवसेन उपसग्गवसेन अत्थवसेन 'फस्सो फुसना सम्फुसना संफुसितत्तं' ति वुत्ते येव 'दळ्हीकम्मं' नाम होति। एवं अपरदीपना च द्वे ठानानि गच्छति।

गरु। कोधं गारवेन विय गरुं[1] कत्वा पग्गण्हतीति अत्थो। कोधगरुनो भावो कोधगरुता। न सद्धम्मगरुता ति सद्धम्मं अगारवेन लामकं कत्वा गहणभावो[1]।

हीति हि सच्चं। सकिं उप्पीळन्तेन विय पुग्गलेन विय भगवता सकिमेव फस्सो ति पदे वुत्ते।

१-१. नत्थि—म०।

एतस्सा पि वसेन लब्भमानकपदनिद्देसेसु सब्बत्थ अत्थो वेदितब्बो। **अयं तस्मिं समये फस्सो होती** [§२] ति यस्मिं समये पठमं कामावचरं महाकुसलं चित्तं उप्पज्जति, तस्मिं समये अयं फस्सो नाम होती ति अत्थो। अयं ताव फस्सपदनिद्देसस्स वण्णना।

इतोपरेसु पन वेदनादिपदानं निद्देसेसु विसेसमत्तमेव वण्णयिस्साम। सेसं इध वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। **यं तस्मिं समये** [§३] ति एत्थ किञ्चापि **कतमा तस्मिं समये वेदना** [§३] ति आदि आरद्धं, 'सात'-पदवसेव पन 'यं' ति वुत्तं। **तज्जामनोविञ्ञाण-धातुसम्फस्सजं** [§३] ति एत्थ 'तज्जा' वुच्चति तस्स सातस्स सुखस्स अनुच्छविका सारुप्पा। अनुच्छविक'त्थो पि हि अयं 'तज्जा'-सद्दो होति। यथाह—"तज्जं तस्सारुप्पं कथं मन्तेती" [म० ३.२३३] ति ? तेहि वा रूपादीहि आरम्मणेहि इमस्स च सुखस्स पच्चयेहि जाता ति पि तज्जा। मनोविञ्ञाणमेव निस्सत्तट्ठेन धातू ति **मनोविञ्ञाण-धातु**। सम्फस्सतो जातं, सम्फस्से वा जातं **सम्फस्सजं**। चित्तनिस्सितत्ता **चेतसिकं**। मधुरट्ठेन **सातं**। इदं वुत्तं होति—यं तस्मिं समये यथावुत्तेन अत्थेन तज्जाय मनो-विञ्ञाणधातुया सम्फस्सजं चेतसिकं सातं, अयं तस्मिं समये वेदना होती ति। एवं सब्बपदेहि सद्धिं योजना वेदितब्बा। इदानि **चेतसिकं सुखं** ति आदीसु चेतसिकपदेन कायिकसुखं पटिक्खिपति, सुखपदेन चेतसिकं दुक्खं। **चेतोसम्फस्सजं** ति चित्तसम्फस्से जातं। **सातं सुखं वेदयितं** ति सातं वेदयितं, न असातं वेदयितं; सुखं वेदयितं, न दुक्खं वेदयितं। परतो तीणि पदानि इत्थिलिंगवसेन वुत्तानि। साता वेदना, न असाता; सुखा वेदना, न दुक्खा ति। अयमेव पनेत्थ अत्थो।

सञ्ञानिद्देसे [§४] **तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा** ति तस्सा कुसलसञ्ञाय अनुच्छविकाय मनोविञ्ञाणधातुया सम्फस्सम्हि जाता। **सञ्ञा** ति सभावनामं। **संजानना** ति संजाननाकारो। **संजानितत्तं** ति संजानितभावो। चेतनानिद्देसे [§५] पि इमिना नयेन वेदितब्बो।

एतस्सा पी ति यथावुत्त-अपरदीपनाय। अपिसद्देन न केवलं यथा-वुत्तकारणवसेन सब्बपदनिद्देसेसु लब्भमानपदवसेन नानत्तं वेदितब्बं ति ञापेति।

अयं ताव फस्सपदस्स निद्देसवण्णना[१]

इतो ति फस्सपदनिद्देसतो। इधा ति फस्सपदनिद्देसे। अनुच्छविकत्थो पी ति अपिसद्दो तेहि वा ति आदिना वुच्चमानत्थं अपेक्खति। तस्सारुप्पं ति[२] तस्स फलस्स[३] सारुप्पं[४]। एत्था[५]। ति इत्थिलिङ्गवसेन वुत्तेसु तीसु पदेसु।

---

१. नत्थि–म०। २. तज्जसारूपं ति–सी०। ३. बलस्स–सी०। ४. सारूपं–सी०। ५. इतो पुब्बे–अयं ताव फस्सपदनिद्देसस्सेव–सी० पोत्थके पाठो दिस्सति।

चित्तनिद्देसे [§६] चित्तविचित्तताय **चित्तं**। आरम्मणं मिनमानं जानाती ति **मनो। मानसं** ति मनो एव।

"अन्तलिक्खचरो पासो य्वायं चरति मानसो" [सं० १.१११] ति। एत्थ पन मनसा सम्पयुत्तकधम्मो 'मानसो' ति वुत्तो।

कथं हि भगवा तुय्हं सावको सासने रतो।
अप्पत्तमानसो सेखो कालं कयिरा जने सुतो [सं० १.१२०] ति॥

एत्थ अरहत्तं 'मानसं' ति वुत्तं। इध पन 'मनो' व मानसं। ब्यञ्जनवसेन हेतं पदं वड्ढितं। **हदयं** ति चित्तं। "चित्तं वा ते खिपिस्सामि, हदयं वा ते फालेस्सामी" [सं० १.२०८] ति एत्थ उरो हदयं ति वुत्तं। "हदया हदयं मञ्ञे अञ्ञाय तच्छती" [म० १.४२] ति एत्थ चित्तं। "वक्कं हदयं [म० १.७९]" ति एत्थ हदयवत्थु। इध पन चित्तमेव अब्भन्तरट्ठेन 'हदयं' ति वुत्तं। तमेव परिसुद्धट्ठेन **पण्डरं**। भवङ्गं सन्धायेतं वुत्तं। यथाह—"पभस्सरमिदं भिक्खवे चित्तं, तं च खो आगन्तुकेहि उपक्किलेसेहि उपक्किलिट्ठं" [अं. १.१०] ति। ततो निक्खन्तत्ता पन अकुसलं पि, गंगाय निक्खन्ता नदी **गंगा** विय, गोधावरितो निक्खन्ता **गोधावरी** विय च, पण्डरं त्वेव वुत्तं।

मनो मनायतनं ति इध पन मनोगहणं मनस्सेव आयतनभावदीपनत्थं। तेनेतं दीपेति—'न यिदं देवायतनं विय मनस्सायतनत्ता मनायतनं, अथ खो मनो एव आयतनं मनायतनं' ति। तत्थ निवासनट्ठेन आकरट्ठेन समोसरणट्ठेन सञ्जातिदेसट्ठेन कारणट्ठेन च आयतनं वेदितब्बं। तथा हि लोके 'इस्सरायतनं **वासुदेवायतनं**' ति आदीसु निवासनट्ठानं आयतनं ति वुच्चति। 'सुवण्णायतनं रतनायतनं' ति आदीसु आकरो। सासने पन "मनोरमे आयतने सेवन्ति नं विहंगमा" [अं० २.२०८] ति आदीसु समोसरणट्ठानं। "दक्खिणापथो गुन्नं आयतनं" ति आदीसु सञ्जातिदेसो। "तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने" [अं० १.२३९] ति आदीसु कारणं। इध पन सञ्जातिदेसट्ठेन समोसरणट्ठानट्ठेन कारणट्ठेना ति

अन्तलिक्खचरो (१०८–म०) आकासचरो विय मानसो मनेन युत्तो[1] य्वायं पासो यो अयं रागपासो चरति पवत्तति। भन्ते भगवा सुय्हं सावको....प०....(१२९–सी०) जने सुतो पाकटो कालं कथं करिया[2]। अहं मञ्ञे मञ्ञामि जनो[3] हदयं चित्तं अञ्ञाय जानित्वा तच्छति। अथवा हदया अत्तनो चित्तेन हदयं परस्स चित्तं अञ्ञाय जानित्वा तच्छति। हरतीति हदयं, चित्तं हदयवत्थु च। 'हर'–हरणे। **हदयादयो** ति (१४१ ण्वु०) मोग्गल्लानसुत्तेन यो, रस्स दो च। अकुसलम्पीति पदं वुत्तं ति पदे कम्मं।

तेना ति तेन[4] मनोगहणेन। इदं ति चित्तं। तत्था ति मनायतनं ति वचने। लोके तिं

१. सम्पयुत्तो–सी०। २. कयिरा–सी०। ३. अयं जनो–सी०। ४. नत्थि–सी०।

तिविधा पि वट्टति। फस्सादयो हि धम्मा एत्थ सञ्जायन्तीति सञ्जातिदेसट्ठेना पि एतं आयतनं। बहिद्धा रूपसद्दगन्धरसफोट्ठब्बारम्मणभावेनेत्थ ओसरन्ती ति समोसरणट्ठानट्ठेना पि आयतनं। फस्सादीनं पन सहजातादिपच्चयट्ठेन कारणत्ता कारणट्ठेना पि आयतनं ति वेदितब्बं। **मनिन्द्रियं** वुत्तत्थमेव।

विजानाती ति **विञ्ञाणं** [§६]। विञ्ञाणमेव खन्धो **विञ्ञाणक्खन्धो**। तस्स रासि-आदिवसेन अत्थो वेदितब्बो। महा-उदकक्खन्धो त्वेव संखं गच्छती ति। एत्थ हि रासट्ठेन खन्धो वुत्तो। "सीलक्खन्धो समाधिक्खन्धो" ति आदीसु गुणट्ठेन। "अद्दसा खो भगवा महन्तं दारुक्खन्धं" [सं० ३.१६२] ति एत्थ पण्णत्तिमत्तट्ठेन। इध पन रूळ्हितो खन्धो वुत्तो। रासट्ठेन हि विञ्ञाणक्खन्धस्स एकदेसो एकं विञ्ञाणं। तस्मा यथा रुक्खस्स एकदेसं छिन्दतो रुक्खं छिन्दती ति वुच्चति, एवमेव विञ्ञाणक्खन्धस्स एकदेसभूतं एकं पि विञ्ञाणं रूळ्हितो विञ्ञाणक्खन्धो ति वुत्तं। **तज्जा मनोविञ्ञाणधातू** ति तेसं फस्सादीनं धम्मानं अनुच्छविको मनोविञ्ञाणधातु। इमस्मिं हि पदे एकमेव चित्तं मिननट्ठेन मनो, विजाननट्ठेन विञ्ञाणं, सभावट्ठेन निस्सत्तट्ठेन वा धातू ति तीहि नामेहि वुत्तं।

इति इमस्मिं फस्सपञ्चके फस्सो ताव यस्मा फस्सो एव, न तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजो, चित्तं च यस्मा तज्जा मनोविञ्ञाणधातु एव, तस्मा इमस्मिं पदद्वये 'तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा' ति पञ्ञत्ति न आरोपिता। वितक्कपदादीसु [§७] पन लब्भमाना पि इध परिच्छिन्नत्ता न उद्धटा। इमेसं च पन फस्सपञ्चकानं धम्मानं पाटियेक्कं पाटियेक्कं विनिब्भोगं कत्वा पञ्ञत्तिं उद्धरमानेन **भगवता** दुक्करं कतं। नाना उदकानं हि नानातेलानं वा एकभाजने पक्खिपित्वा दिवसं निम्मथितानं वण्णगन्धरसानं नानताय दिस्वा वा घायित्वा वा सायित्वा वा नानाकरणं सक्का भवेय्य ञातुं। एवं सन्ते पि तं दुक्करं ति वुत्तं। **सम्मासम्बुद्धेन** पन इमेसं अरूपीनं चित्तचेतसिकानं धम्मानं एकारम्मणे पवत्तमानानं पाटियेक्कं पाटियेक्कं विनिब्भोगं कत्वा पञ्ञत्तिं उद्धरमानेन अतिदुक्करं कतं। तेनाह आयस्मा **नागसेनत्थेरो**—

पदं वुच्चतीति पदे आधारो। सासने पन समोसरणट्ठानं वुच्चतीति योजना। नं रुक्खं। विहङ्गमा पक्खिनो। सति आयतने सति सङ्घातकारणे[1] विज्जमाने तत्र तत्रेव कारणे सक्खितब्बतं सक्खि-अनुरूपभावं पापुणाति जनो। एत्था ति मने।

तस्सा ति खन्धसद्दस्स। तज्जा[2]....प०....धातु एव, तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चित्तं। पदद्वये ति फस्सचित्तपदद्वये। लब्भमाना पि तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा पञ्ञत्ति इध फस्सपञ्चके तज्जा....प०....पञ्ञत्तिया परिच्छिन्नत्ता भगवता न उद्धटा। इमं पञ्ञत्तिं[3] एवं ति जानने तं जाननं। गच्छतीति गङ्गा। **अजवजमुदगदगमा गक** इति (३२ ण्वु०) **मोग्गल्लानसुत्तेन गक**[4]। **मनानं निग्गहितं** ति (मो० ५:९६) सुत्तेन मस्स निग्गहितं। **यमेति** मलं

१. ०सति–सी०। २. तथा–सी०। ३. पञ्ञत्ति–म०। ४. गो–सी०।

"दुक्करं महाराज, **भगवता** कतं ति। "किं भन्ते **नागसेन**, **भगवता** दुक्करं कतं' ति ? 'दुक्करं महाराज, **भगवता** कतं, यं इमेसं अरूपीनं चित्तचेतसिकानं धम्मानं एकारम्मणे वत्तमानानं ववत्थानं अक्खातं—अयं फस्सो, अयं वेदना, अयं सञ्ञा, अयं चेतना, इदं चित्तं' ति। 'ओपम्मं भन्ते, करोही' ति। 'यथा महाराज, कोचिदेव पुरिसो नावाय समुद्दं अज्झोगाहेत्वा हत्थपुटेन उदकं गहेत्वा जिव्हाय सायित्वा जानेय्य नु खो महाराज, सो पुरिसो—इदं **गंगाय** उदकं, इदं **यमुनाय** उदकं, इदं **अचिरवतिया** उदकं, इदं **सरभुया** उदकं, इदं **महिया** उदकं' ति ? 'दुक्करं भन्ते **नागसेन**, जानितुं' ति। ततो दुक्करतरं खो महाराज, **भगवता** कतं यं इमेसं अरूपीनं चित्तचेतसिकानं धम्मानं····प०··· इदं चित्तं" [मि० ९०] ति।

वितक्कनिद्देसे [§७] तक्कनवसेन **तक्को**। तस्स कित्तकं तक्केसि कुम्भं तक्केसि सकटं तक्केसि योजनं तक्केसि अड्ढयोजनं तक्केसी ति एवं तक्कनवसेन पवत्ति वेदितब्बा। इदं तक्कस्स सभावपदं। वितक्कनवसेन **वितक्को**। बलवतरतक्कस्सेतं नामं। सुट्ठु कप्पनवसेन **संकप्पो**। एकग्गं चित्तं आरम्मणे अप्पेती ति **अप्पना**। दुतियपदं उपसग्गवसेन वड्ढितं। बलवतरा वा अप्पना **ब्यप्पना**। आरम्मणे चित्तं अभिनिरोपेति पतिट्ठापेती ति **चेतसो अभिनिरोपना**। याथावताय निय्यानिकताय च कुसलभावप्पत्तो पसट्ठो संकप्पो ति **सम्मासङ्कप्पो**।

विचारनिद्देसे [§८] आरम्मणे चरणवसेन **चारो**। इदमस्स सभावपदं। विचरणकवसेन **विचारो**। अनुगन्त्वा विचरणवसेन **अनुविचारो**। उपगन्त्वा विचरणवसेन **उपविचारो**। उपसग्गवसेन पदानि वड्ढितानि। आरम्मणे चित्तं, सरं विय जियाय, अनुसन्दहित्वा ठपनतो **चित्तस्स अनुसन्धनता**। आरम्मणं अनुपेक्खमानो विय तिट्ठती ति **अनुपेक्खनता**। विचरणवसेन वा उपेक्खनता ति अनुपेक्खनता।

पीतिनिद्देसे [§९] **पीती** ति सभावपदं। पमुदितभावो **पामोज्जं**। आमोदनाकारो **आमोदना**। पमोदनाकारो **पमोदना**। यथा भेसज्जानं वा तेलानं उण्होदकसीतोदकानं वा एकतो करणं मोदना ति वुच्चति, एवमयं पि धम्मानं एकतो करणेन मोदना। उपसग्गवसेन पन वड्ढेत्वा आमोदना पमोदना ति वुत्ता। हासेती ति **हासो**।

नासेती ति यमुना। 'यम'–उपसमे। **वरारकरादि** (ण्वु० १०१) **मोग्गल्लानसुत्तेन** कुनो। अचिरं सीघगति[1] एतिस्सा ति[2] अचिरवती। सरति गच्छतीति सरभू। 'सर'–गतिचिन्तासु। **जम्बादयो ति** (मो० ण्वु० ४) **सुत्तेन** ऊ, ऊम्हि अभो। महीयतीति[3] मही, 'मह'–पूजायं। अपच्चयो। **नदादितो वा ई**, (मो० ३:२७) ति ई।

तस्सा ति वितक्कस्स पवत्ति वेदितब्बा। इदं[4] ति वितक्को ति इदं वचनं। एतं ति वितक्को एतं वचनं[4]।

विन्दति[5] पीतिं एतेना ति वित्तं, धनं। 'विद'-लाभे। **घरादीहि तक्** (मो० ण्वु० ८३)

---

१. सीघं गमनं–सी०। २. एतिस्सं अत्थीति–सी०। ३. ०पूजियतीति–सी०। ४-४. नत्थि–म०। ५. विद्दति–सी०।

पहासेती ति **पहासो** । हट्ठपहट्ठाकारानं एतं अधिवचनं । **वित्ती** ति वित्तं; धनस्सेतं नामं । अयं पन सोमनस्सपच्चयत्ता वित्ति-सरिक्खताय वित्ति । यथा हि धनिनो धनं पटिच्च सोमनस्सं उप्पज्जति, एवं पीतिमतो पि पीतिं पटिच्च सोमनस्सं उप्पज्जति, तस्मा वित्ती ति वुत्ता । तुट्ठिसभावसण्ठिताय पीतिया एतं नामं । पीतिमा पन पुग्गलो कायचित्तानं उग्गतत्ता अब्भुग्गतत्ता उदग्गो ति वुच्चति । उदग्गस्स भावो **ओदग्यं** । अत्तनो मनता **अत्तमनता** । अनभिरद्धस्स हि मनो दुक्खपदट्ठानत्ता अत्तनो मनो नाम न होति, अभिरद्धस्स पन सुखपदट्ठानत्ता अत्तनो मनो नाम होति । इति अत्तनो मनता अत्तमनता, सकमनता । सकमनस्स भावो ति अत्थो । सा पन यस्मा न अञ्ञस्स कस्सचि अत्तनो मनता, चित्तस्सेव पनेसो भावो, चेतसिको धम्मो, तस्मा अत्तमनता **चित्तस्सा** ति वुत्ता ।

चित्तस्सेकग्गतानिद्देसे [§११] अचलभावेन आरम्मणे तिट्ठती ति **ठिति** । परतो पदद्वयं उपसग्गवसेन वड्ढितं । अपि च सम्पयुत्तधम्मे आरम्मणम्हि सम्पिण्डेत्वा तिट्ठती ति **सण्ठिति** । आरम्मणं ओगाहेत्वा अनुपविसित्वा तिट्ठती ति **अवट्ठिति** । कुसलपक्खस्मि हि चत्तारो धम्मा आरम्मणं ओगाहन्ति—सद्धा सति समाधि पञ्ञा ति । तेनेव सद्धा ओकप्पना ति वुत्ता, सति अपिलापना ति, समाधि अवट्ठिती ति, पञ्ञा परियोगाहना ति । अकुसलपक्खे पन तयो धम्मा आरम्मणं ओगाहन्ति—तण्हा दिट्ठि अविज्जा ति । तेनेव ते ओघा ति वुत्ता । चित्तेकग्गता पनेत्थ न बलवती होति । यथा हि रजुट्ठानट्ठाने उदकेन सिञ्चित्वा सम्मट्ठे थोकमेव कालं रजो सन्निसीदति, सुक्खन्ते सुक्खन्ते पुन पकतिभावेनेव वुट्ठाति, एवमेव अकुसलपक्खे चित्तेकग्गता न बलवती होति । यथा पन तस्मिं ठाने घटेहि उदकं आसिञ्चित्वा कुद्दालेन खनित्वा आकोट्टनमद्दनघट्टनानि कत्वा उपलित्ते आदासे विय छाया पञ्ञायति, वस्ससतातिक्कमे पि तं मुहुत्तकतं विय होति, एवमेव कुसलपक्खे चित्तेकग्गता बलवती होति ।

उद्धच्चविचिकिच्छावसेन पवत्तस्स विसाहारस्स पटिपक्खतो **अविसाहारो** । उद्धच्चविचिकिच्छावसेनेव गच्छन्तं चित्तं विक्खिपति नाम । अयं पन तथाविधो विक्खेपो न होती ति **अविक्खेपो** । उद्धच्चविचिकिच्छावसेनेव चित्तं विसाहटं नाम होति, इतो चितो च हरीयति । अयं पन एवं अविसाहटस्स मानसस्स भावो ति **अविसाहटमानसता** । समथो ति तिविधो समथो—चित्तसमथो, अधिकरणसमथो, सब्बसंखारसमथो ति । तत्थ अट्ठसु समापत्तीसु चित्तेकग्गता चित्तसमथो नाम । तं हि

इति सुत्तेन तक् । एतं[1] ति वित्तीति एतं वचनं[1] । अनभिरद्धस्सा ति अनभिरतस्स कुद्धस्स ।

एत्था ति अकुसलपक्खे । रजुट्ठानट्ठाने ति रजस्स उप्पत्तिट्ठाने ।

चित्तं समेति एतेना ति चित्तसमथो । अधिकरणानि समेन्ति एतेना ति अधिकरण-

---

१-१. नत्थि—म० ।

आगम्म चित्तचलनं चित्तविप्फन्दितं सम्मति वूपसम्मति, तस्मा सो चित्तसमथो ति वुच्चति। सम्मुखाविनयादि-सत्तविधो अधिकरणसमथो नाम। तं हि आगम्म तानि अधिकरणानि सम्मन्ति वूपसम्मन्ति, तस्मा सो अधिकरणसमथो ति वुच्चति। यस्मा पन सब्बे संखारा निब्बानं आगम्म सम्मन्ति वूपसम्मन्ति, तस्मा तं सब्बसंखारसमथो ति वुच्चति। इमस्मिं अत्थे चित्तसमथो अधिप्पेतो। समाधिलक्खणे इन्दट्ठं कारेती ति **समाधिन्द्रियं**। उद्धच्चे न कम्पती ति **समाधिबलं**। सम्मासमाधी ति याथावसमाधि निय्यानिकसमाधि कुसलसमाधि।

सद्धिन्द्रियनिद्देसे [§१२] बुद्धादिगुणानं सद्दहनवसेन **सद्धा**। बुद्धादीनि वा रतनानि सद्दहति पत्तियायती ति सद्धा। **सद्दहना** ति सद्दहनाकारो। बुद्धादिगुणे ओगाहति, भिन्दित्वा विय अनुपविसती ति **ओकप्पना**। बुद्धादिगुणेसु एताय सत्ता अतिविय पसीदन्ति, सयं वा अभिप्पसीदती ति **अभिप्पसादो**। इदानि यस्मा सद्धिन्द्रियानं समासपदानं वसेन अञ्ञस्मिं परियाये आरद्धे आदिपदं गहेत्वा व पदभाजनं करीयति—अयं अभिधम्मे धम्मता—तस्मा पुन **सद्धा** ति वुत्तं। यथा वा इत्थिया इन्द्रियं इत्थिन्द्रियं, न तथा इदं। इदं पन सद्धा व इन्द्रियं सद्धिन्द्रियं ति। एवं समानाधिकरणभावं ञापनत्थं पुन सद्धा ति वुत्तं। एवं सब्बपदनिद्देसेसु आदिपदस्स पुन वचनयोजनं वेदितब्बं। अधिमोक्खलक्खणे इन्दट्ठं कारेती ति **सद्धिन्द्रियं**। अस्सद्धिये न कम्पती ति **सद्धाबलं**।

विरियिन्द्रियनिद्देसे [§१३] **चेतसिको** ति इदं विरियस्स नियमतो चेतसिकभावदीपनत्थं वुत्तं। इदं हि विरियं "यदपि भिक्खवे, कायिकं विरियं तदपि विरियसम्बोज्झंगो, यदपि चेतसिकं विरियं तदपि विरियसंबोज्झंगो ति। इति हि'दं उद्देसं आगच्छती" [सं० ४.१००] ति एवमादीसु सुत्तेसु चंकमादीनि करोन्तस्स उप्पन्नत्ता 'कायिकं' ति वुच्चमानं पि कायविञ्ञाणमिव कायिकं नाम नत्थि, चेतसिकमेव पनेतं ति दीपेतुं 'चेतसिको' ति वुत्तं। **विरियारम्भो** ति विरियसंखातो आरम्भो। इमिना सेसारम्भे पटिक्खिपति। अयं हि 'आरम्भ'-सद्दो कम्मे आपत्तियं किरियायं विरिये हिंसाय विकोपने ति अनेकेसु अत्थेसु आगतो।

"यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति सब्बं आरम्भपच्चया।
आरम्भानं निरोधेन नत्थि दुक्खस्स सम्भवो [सु० ३८४ गि०] ति॥

समथो। सब्बसंखारा समेन्ति एतेना ति सब्बसंखारसमथो। तत्था ति (१३०-सी०) चित्तसमथादीसु। तं चित्तेकग्गतं। तं ति सम्मुखाविनयादिं। तं ति निब्बानं।

इदं होति हि सच्चं, इदं वीरियं, कायिकं नाम नत्थीति सम्बन्धो। यदपी ति कायिकं य अपि वीरियं। इति हिदं ति इति एव[1] इदं उद्देसं गच्छति वीरियं ति योजना। उप्पन्नताया

---

१. एवं—सी०।

एत्थ हि कम्मं 'आरम्भो' ति आगतं। "आरम्भति च विप्पटिसारी च होती" [ ] ति एत्थ आपत्ति। "महायञ्ञा महारम्भा न ते होन्ति महप्फला" [ ] ति एत्थ यूपुस्सापनादिकिरिया। "आरम्भथ निक्खमथ युञ्जथ बुद्धसासने [सं० १.१५६] ति एत्थ विरियं। "समणं गोतमं उद्दिस्स पाणं आरभन्ती" [म० २.३९] ति एत्थ हिंसा। "बीजगामभूतगामसमारम्भा पटिविरतो होती" [दीघ० १.६ म० १.२३०] ति एत्थ छेदनभञ्जनादि-विकोपनं। इध पन विरियमेव अधिप्पेतं। तेनाह—'विरियारम्भो ति विरियसंखातो आरम्भो' ति। विरियं हि आरम्भनकवसेन आरम्भो ति वुच्चति। इदमस्स सभावपदं।

कोसज्जतो निक्खमनवसेन **निक्कमो**। परम्परं ठानं अक्कमनवसेन **परक्कमो**। उपगन्त्वा यामनवसेन **उय्यामो**। वायामनवसेन **वायामो**। उस्साहनवसेन **उस्साहो**। अधिमत्तुस्साहनवसेन **उस्सोळ्हि**। थिरभावट्ठेन **थामो**। चित्तचेतसिकानं धारणवसेन अविच्छेदतो वा पवत्तनवसेन कुसलसन्तानं धारेती ति **धिति**। अपरो नयो—निक्कमो चेसो कामानं पनूदनाय, परक्कमो चेसो बन्धनच्छेदाय, उय्यामो चेसो ओघस्स नित्थरणाय, वायामो चेसो पारंगमनट्ठेन, उस्साहो चेसो पुब्बंगमट्ठेन, उस्सोळ्हि चेसो अधिमत्तट्ठेन, थामो चेसो पलिघुग्घाटनताय, धिति चेसा अवट्ठितिकारिताया ति। "कामं तचो च नहारु च अट्ठि च अवसिस्सतू [सं० २.२६] ति एवं-पवत्तिकाले असिथिलपरक्कमवसेन **असिथिलपरक्कमता**; थिरपरक्कमो, दळ्हपरक्कमो ति अत्थो। यस्मा पनेतं विरियं कुसलकम्मकरणट्ठाने छन्दं न निक्खिपति, धुरं न निक्खिपति, न ओतारेति, न विस्सज्जेति, अनोसक्कितमानसतं आवहति, तस्मा **अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता** ति वुत्तं। यथा पन नज्जादिके उदकसम्भिन्नट्ठाने धुरवाहगोणं गण्हथा ति वदन्ति, सो जण्णुना भूमियं उप्पीळेत्वा पि धुरं वहति, भूमियं पतितुं न देति, एवमेव विरियं कुसलकम्मकरणट्ठाने धुरं उक्खिपति पग्गण्हाति, तस्मा **धुरसम्पग्गाहो** ति वुत्तं। पग्गहलक्खणे इन्दट्ठं कारेती ति **विरियिन्द्रियं**। कोसज्जे न कम्पती ति **विरियबलं**। याथावनिय्यानिककुसलवायामताय **सम्मावायामो**।

सतिन्द्रियनिद्देसे [§१४] सरणवसेन **सति**। इदं सतिया सभावपदं। पुनप्पुनं

ति पदं वुच्चमानम्पी ति पदे हेतु। आरम्भपच्चया कम्मपच्चया। यं किञ्चि सब्बं दुक्खं सम्भोति (म०–१०९) पवत्तति। यञ्ञुस्सापनादिक्रिया[1] ति थम्भस्स उस्सापनादिक्रिया। आरम्भन्ती ति हिंसन्ति।

कामानं पनूदनाय एसो धम्मो निक्कमो नाम। पनूदनाया ति पदं निक्कमो ति पदे ततियाविसेसनं। तज्जातिके ति तस्स वीरियनिक्खिपनस्स अनुरूपसभावे। उदक····प०···· भिन्नट्ठाने ति उदकहेतुना[2] भिन्नट्ठाने। सो ति गोणो[2]।

तं ति नामं। एसा[3] ति सति[3]।

---

१. यूथुस्सापनादि०–सी०। २-२. नत्थि–म०। ३-३. नत्थि–म०।

सरणतो अनुस्सरणवसेन **अनुस्सति**। अभिमुखं गन्त्वा विय सरणतो पटिसरणवसेन **पटिस्सति**। उपसग्गवसेन वा वड्ढितमत्तमेतं। सरणाकारो **सरणता**। यस्मा पन सरणता ति तिण्णं सरणानं पि नामं, तस्मा तं पटिसेधेतुं पुन सतिग्गहणं कतं। सतिसंखाता सरणता ति अयं हेत्थ अत्थो। सुतपरियत्तिगहणधारणभावतो **धारणता**। अनुपविसनसंखातेन ओगाहनट्ठेन अपिलापनभावो **अपिलापनता**। यथा हि लाबुकटाहादीनि उदके प्लवन्ति, न अनुपविसन्ति, न तथा आरम्मणे सति। आरम्मणं हि एसा अनुपविसति, तस्मा **अपिलापनता** ति वुत्ता। चिरकतचिरभासितानं न सम्मुस्सनभावतो **असम्मुस्सनता**। उपट्ठानलक्खणे जोतनलक्खणे च इन्दट्ठं कारेती ति इन्द्रियं। सतिसंखातं इन्द्रियं **सतिन्द्रियं**। पमादे न कम्पती ति **सतिबलं**। याथावसति निय्यानिकसति कुसलसती ति **सम्मासति**।

पञ्ञिन्द्रियनिद्देसे [§१६] तस्स तस्स अत्थस्स पाकटकरणसंखातेन पञ्ञापनट्ठेन **पञ्ञा**। तेन तेन वा अनिच्चादिना पकारेन धम्मे जानाती ति पञ्ञा। इदमस्सा सभावपदं। पजाननाकारो **पजानना**। अनिच्चादीनि विचिनाती ति **विचयो**। **पविचयो** ति उपसग्गेन पदं वड्ढितं। चतुसच्चधम्मे विचिनाती ति **धम्मविचयो**। अनिच्चादीनं सल्लक्खणवसेन **सल्लक्खणा**। सा एव उपसग्गनानत्तेन **उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा** ति वुत्ता। पण्डितस्स भावो **पण्डिच्चं**। कुसलस्स भावो **कोसल्लं**। निपुणस्स भावो **नेपुञ्ञं**। अनिच्चादीनं विभावनवसेन **वेभब्या**। अनिच्चादीनं चिन्तनकवसेन **चिन्ता**। यस्स वा उप्पज्जति तं अनिच्चादीनि चिन्तापेती ति चिन्ता। अनिच्चादीनि उपपरिक्खती ति **उपपरिक्खा**।

भूरी ति पठविया नामं। अयं हि सण्हट्ठेन वित्थटट्ठेन च भूरी विया ति **भूरी**। तेन वुत्तं—"भूरी वुच्चति पठवी। ताय पठवीसमाय वित्थटाय विपुलाय पञ्ञाय समन्नागतो ति भूरिपञ्ञो ति। अपि च पञ्ञायेतं अधिवचनं भूरी" [पटि० ४५८] ति। भूते अत्थे रमती ति भूरी। असनि विय सिलुच्चये किलेसे मेधति हिंसती ति **मेधा**। खिप्पं गहणधारणट्ठेन वा मेधा। यस्स उप्पज्जति तं सत्तं हितपटिपत्तियं सम्पयुत्तधम्मे च याथावलक्खणपटिवेधे परिणेती ति **परिणायिका**। अनिच्चादिवसेन धम्मे विपस्सती ति **विपस्सना**। सम्मा पकारेहि अनिच्चादीनि जानाती ति **सम्पजञ्ञं**। उप्पथं पटिपन्ने सिन्धवे वीथि-आरोपणत्थं विज्झनपतोदो विय उप्पथे धावनककूटचित्तं वीथि-आरोपणत्थं विज्झती ति **पतोदो**।

दस्सनलक्खणे इन्दट्ठं कारेती ति इन्द्रियं। पञ्ञासंखातं इन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं। अविज्जाय न कम्पती ति **पञ्ञाबलं**। किलेसच्छेदनट्ठेन पञ्ञा व सत्थं **पञ्ञासत्थं**।

सिद्धे ति पदं कता ति पदे लक्खणक्रिया। यानेतानि सुत्तानि चतुक्कनिपाते अङ्गु-

अच्चुग्गतट्ठेन पञ्ञा व पासादो **पञ्ञापासादो**। आलोकनट्ठेन पञ्ञा व आलोको **पञ्ञा-आलोको**। ओभासनट्ठेन पञ्ञा व ओभासो **पञ्ञा-ओभासो**। पज्जोतनट्ठेन पञ्ञा व पज्जोतो **पञ्ञापज्जोतो**। पञ्ञवतो हि एकपल्लंकेन निसिन्नस्स दससहस्सि-लोकधातु एकालोका एकोभासा एकपज्जोता होति, तेनेतं वुत्तं। इमेसु पन तीसु पदेसु एकपदेन पि एकस्मिं अत्थे सिद्धे, यानेतानि "चत्तारो'मे भिक्खवे, आलोका। कतमे चत्तारो ? चन्दालोको सुरियालोको अग्गालोको पञ्ञालोको। इमे खो भिक्खवे, चत्तारो आलोका। एतदग्गं भिक्खवे, इमेसं चतुन्नं आलोकानं यदिदं पञ्ञालोको" ति। तथा "चत्तारो'मे भिक्खवे, ओभासा....प० ...चत्तारो'मे भिक्खवे, पज्जोता" [अं० २.१४७] ति सत्तानं अज्झासयवसेन सुत्तानि देसितानि, तदनुरूपेनेव इदानि देसना कता। अत्थो हि अनेकेहि आकारेहि विभज्जमानो सुविभत्तो होति। अञ्ञथा व अञ्ञो बुज्झति, अञ्ञथा व अञ्ञो ति।

रतिकारणट्ठेन रतिदायकट्ठेन रतिजनकट्ठेन चित्तिकतट्ठेन दुल्लभपातुभावट्ठेन अतुलट्ठेन अनोमसत्तपरिभोगट्ठेन च पञ्ञा व रतनं **पञ्ञारतनं**। न तेन सत्ता मुय्हन्ति, सयं वा आरम्मणे न मुय्हती ति **अमोहो**। **धम्मविचयपदं** वुत्तत्थमेव। कस्मा पनेतं पुन वुत्तं ति ? अमोहस्स मोहपटिपक्खभावदीपनत्थं। तेनेतं दीपेति—य्वायं अमोहो सो न केवलं मोहतो अञ्ञो धम्मो, मोहस्स पन पटिपक्खो, धम्मविचयसंखातो अमोहो नाम इध अधिप्पेतो ति। **सम्मादिट्ठी** ति याथावनिय्यानिककुसलदिट्ठि।

जीवितिन्द्रियनिद्देसे [§१९] **यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयू** ति तेसं सम्प-युत्तकानं अरूपधम्मानं यो आयापनट्ठेन आयु, तस्मिं हि सति अरूपधम्मा अयन्ति गच्छन्ति पवत्तन्ति, तस्मा **आयू** ति वुच्चति। इदमस्स सभावपदं। यस्मा पनेते धम्मा आयुस्मिं येव सति तिट्ठन्ति यपेन्ति यापेन्ति इरियन्ति वत्तन्ति पालयन्ति, तस्मा **ठिती** ति आदीनि वुत्तानि। वचनत्थो पनेत्थ—एताय तिट्ठन्ती ति ठिति। यपेन्ती ति **यपना**। तथा **यापना**। एवं बुज्झनकसत्तानं पन वसेन पुरिमपदे रस्सत्तं कतं। एताय इरियन्ती ति **इरियना**। वत्तन्ती ति **वत्तना**। पालयन्ती ति **पालना**। जीवन्ति एतेना ति **जीवितं**। अनुपालनलक्खणे इन्दट्ठं कारेती ति **जीवितिन्द्रियं**।

हिरिबलनिद्देसे [§३०] **यं तस्मिं समये** ति येन धम्मेन तस्मिं समये। लिङ्ग-विपल्लासं वा कत्वा यो धम्मो तस्मिं समये ति पि अत्थो वेदितब्बो। **हिरियितब्बेना** ति उपयोगत्थे करणवचनं। हिरियितब्बयुत्तकं कायदुच्चरितादिधम्मं हिरीयति जिगु-च्छती ति अत्थो। **पापकानं** ति लामकानं। **अकुसलानं धम्मानं** ति अकोसल्लसम्भूतानं

त्तरनिकाये[1] भगवता वुत्तानि। तदनुरूपेनेवा ति तेसं सुत्तानं अनुरूपेन, इधा पि देसना कता ति सम्बन्धो।

यो[2] ति धम्मो[2]। एत्था ति ठितीति आदीसु।

---

१. अं० नि० २ भागे १४७ पिट्ठे। २-२. नत्थि—म०।

धम्मानं । **समापत्तिया** ति इदं पि उपयोगत्थे करणवचनं । तेसं तेसं धम्मानं समापत्तिं पटिलाभं समङ्गिभावं हिरीयति जिगुच्छती ति अत्थो । ओत्तप्पबलनिद्देसे [§३१] ओत्तप्पितब्बेना ति हेत्वत्थे करणवचनं । ओत्तप्पितब्बयुत्तकेन ओत्तप्पस्स हेतुभूतेन कायदुच्चरितादिना वुत्तप्पकाराय च समापत्तिया ओत्तप्पस्स हेतुभूताय ओत्तप्पति, भायती ति अत्थो ।

अलोभनिद्देसे [§३२] अलुब्भनकवसेन **अलोभो ।** न लुब्भती ति पि अलोभो । इदमस्स सभावपदं । **अलुब्भना** ति अलुब्भनाकारो । लोभसमङ्गिपुग्गलो लुब्भितो नाम । न लुब्भितो अलुब्भितो । अलुब्भितस्स भावो **अलुब्भितत्तं ।** सारागपटिक्खेपतो न सारागो ति **असारागो । असारज्जना** ति असारज्जनाकारो । असारज्जितस्स भावो **असारज्जितत्तं** । न अभिज्झायती ति **अनभिज्झा । अलोभो कुसलमूलं** ति अलोभसंखातं कुसलमूलं । अलोभो हि कुसलानं धम्मानं मूलं पच्चयट्ठेना ति कुसलमूलं । कुसलं च तं पच्चयट्ठेन मूलं चा ति पि कुसलमूलं ।

अदोसनिद्देसे [§३३] अदुस्सनकवसेन **अदोसो** । न दुस्सती ति पि अदोसो । इदमस्स सभावपदं । **अदुस्सना** ति अदुस्सनाकारो । अदुस्सितस्स भावो **अदुस्सितत्तं ।** ब्यापादपटिक्खेपतो न ब्यापादो ति **अब्यापादो** । कोधदुक्खपटिक्खेपतो न ब्यापज्जो ति **अब्यापज्जो** । अदोससंखातं कुसलमूलं **अदोसो कुसलमूलं** । तं वुत्तत्थमेव ।

कायपस्सद्धिनिद्देसादीसु [§४०....] यस्मा कायो ति तयो खन्धा अधिप्पेता तस्मा **वेदनाखन्धस्सा** ति वुत्तं । पस्सम्भन्ति एताय ते धम्मा, विगतदरथा भवन्ति, समस्सासप्पत्ता ति **पस्सद्धि ।** दुतियपदं उपसग्गवसेन वड्ढितं । **पस्सम्भना** ति पस्सम्भनाकारो । दुतियपदं उपसग्गवसेन वड्ढितं । पस्सद्धिसमङ्गिताय पटिप्पस्सम्भितस्स खन्धत्तयस्स भावो **पटिप्पस्सम्भितत्तं** । सब्बपदेहि पि तिण्णं खन्धानं किलेसदरथपटिप्पस्सद्धि एव कथिता । दुतियनयेन विञ्ञाणक्खन्धस्स दरथपटिप्पस्सद्धि एव कथिता । **लहुता** ति लहुताकारो । **लहुपरिणामता** ति लहुपरिणामो एतेसं धम्मानं ति लहुपरिणामा; तेसं भावो लहुपरिणामता; सीघं सीघं पवत्तनसमत्थता ति वुत्तं होति । **अदन्धनता** ति गरुभावपटिक्खेपवचनमेतं; अभारियता ति अत्थो । **अवित्थनता** ति थीनमानादि-किलेसभारस्स अभावेन अथद्धता । एवं पठमेन तिण्णं खन्धानं लहुताकारो कथितो । दुतियनयेन विञ्ञाणक्खन्धस्स लहुताकारो कथितो ।

मुदुता [§४४] ति मुदुभावो । **मद्दवता** ति मद्दवं वुच्चति सिनिद्धं, मट्ठं; मुदुनो भावो मद्दवता । **अकक्खळता** अकक्खळभावो । **अकठिनता** ति अकठिनभावो । इधा पि पुरिमनयेन तिण्णं खन्धानं, पच्छिमनयेन विञ्ञाणक्खन्धस्स मुदुताकारो कथितो । **कम्मञ्ञता** ति कम्मनि साधुता; कुसलकिरियाय विनियोगक्खमता ति अत्थो । सेस-

---

गोमुत्त....प०....पटिक्खेपो ति गोमुत्तवङ्कस्स[1]विय वङ्कभावस्स पटिक्खेपो[1] ।

१-१. नत्थि—म० ।

पदद्वयं ब्यञ्जनवसेन वड्ढितं। पदद्वयेना पि हि पुरिमनयेन तिण्णं खन्धानं, पच्छिमनयेन विञ्ञाणक्खन्धस्स कम्मनियाकारो व कथितो। **पगुणता** ति पगुणभावो, अनातुरता निग्गिलानता ति अत्थो। सेसपदद्वयं ब्यञ्जनवसेन वड्ढितं। इधा पि पुरिमनयेन तिण्णं खन्धानं, पच्छिमनयेन विञ्ञाणक्खन्धस्स निग्गिलानाकारो व कथितो। **उजुता** [§५०] ति उजुभावो, उजुकेन आकारेन पवत्तनता ति अत्थो। अकुसलस्स खन्धत्तयस्स विञ्ञाणस्स च भावो **उजुकता। अजिम्हता** ति गोमुत्तवङ्कभावपटिक्खेपो। **अवङ्कता** ति चन्दलेखावङ्कभावपटिक्खेपो। **अकुटिलता** ति नङ्गलकोटिवङ्कभावपटिक्खेपो।

यो हि पापं कत्वा व 'न करोमी'ति भासति, सो गन्त्वा पच्चोसक्कनताय 'गोमुत्तवङ्को' नाम होति। यो पापं करोन्तो व 'भायामहं पापस्सा'ति भासति, सो येभुय्येन कुटिलताय 'चन्दलेखावङ्को' नाम होति। यो पापं करोन्तो व 'को पापस्स न भायेय्या' ति भासति, सो नातिकुटिलताय 'नङ्गलकोटिवङ्को' नाम होति। यस्स वा तीणि कम्मद्वारानि असुद्धानि, सो 'गोमुत्तवङ्को' नाम होति। यस्स यानि कानि चि द्वे, सो 'चन्दलेखावङ्को' नाम। यस्स यं किञ्चि एकं, सो 'नंगलकोटिवङ्को' नाम। दीघभाणका पनाहु—एकच्चो भिक्खु पठमवये एकवीसतिया अनेसनासु, छसु च अगोचरेसु चरति, अयं 'गोमुत्तवङ्को' नाम। एको पठमवये चतुपारिसुद्धिसीलं परिपूरेति, लज्जी कुक्कुच्चको सिक्खाकामो होति, मज्झिमवयपच्छिमवयेसु पुरिमसदिसो, अयं 'चंदलेखावङ्को' नाम। एको पठमवये पि मज्झिमवये पि चतुपारिसुद्धिसीलं पूरेति, लज्जी कुक्कुच्चको सिक्खाकामो होति, पच्छिमवये पुरिमसदिसो। अयं 'नंगलकोटिवंको' नाम।

तस्स किलेसवसेन एवं-वंकस्स पुग्गलस्स भावो जिम्हता वंकता कुटिलता ति वुच्चति। तासं पटिक्खेपवसेन अजिम्हतादिका वुत्ता। खन्धाधिट्ठा नाम देसना कता। खन्धानं हि एता अजिम्हतादिका, न पुग्गलस्सा ति। एवं सब्बेहि पि इमेहि पदेहि पुरिमनयेन तिण्णं खन्धानं, पच्छिमनयेन विञ्ञाणक्खन्धस्सा ति अरूपीनं धम्मानं निक्किलेसताय उजुकाकारो कथितो ति वेदितब्बो।

इदानि य्वायं **ये वा पना** ति [§५७] अप्पनावारो वुत्तो, तेन धम्मुद्देसवारे दस्सितानं 'ये-वा-पनकानं येव संखेपतो निद्देसो कथितो होती ति।

निद्देसवारकथा निट्ठिता।

एसितब्बा गवेसितब्बा ति एसना। 'एस'-[1]गवेसने। न एसना अनेसना[1]।

तेना ति अप्पनावारेन।

निद्देसवारकथावण्णना निट्ठिता।

१-१. नत्थि—म०।

एत्तावता पुच्छा समयनिद्देसो धम्मुद्देसो अप्पना ति उद्देसवारे चतूहि परिच्छेदेहि, पुच्छा समयनिद्देसो धम्मुद्देसो अप्पना ति निद्देसवारे चतूहि परिच्छेदेही ति अट्ठपरिच्छेदपतिमण्डितो धम्मववत्थानवारो निट्ठितो व होति।

(ii) सङ्गहवारो

इदानि **तस्मि खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ती** [§५८] ति संगहवारो आरद्धो। सो उद्देस-निद्देस-पटिनिद्देसानं वसेन तिविधो होति। तत्थ 'तस्मि खो पन समये चत्तारो खन्धा ति एवमादिको उद्देसो। **'कतमे तस्मि समये चत्तारो खन्धा** [§५९] ति आदिको निद्देसो। **कतमो तस्मि समये वेदनाखन्धो** [§६०] ति आदिको पटिनिद्देसो ति वेदितब्बो। तत्थ उद्देसवारे चत्तारो खन्धा ति आदयो तेवीसति कोट्ठासा होन्ति। तेसं एवमत्थो वेदितब्बो—

यस्मि समये कामावचरं पठमं महाकुसलचित्तं उप्पज्जति, ये तस्मि समये चित्तंगवसेन उप्पन्ना, ठपेत्वा ये-वा-पनके, पाळि आरूळ्हा अतिरेकपण्णासधम्मा, ते सब्बे पि संगय्हमाना रासट्ठेन **चत्तारो** व **खन्धा** होन्ति। हेट्ठा वुत्तेन आयतनट्ठेन **द्वे** व **आयतनानि** होन्ति। सभावट्ठेन सुञ्ञतट्ठेन निस्सत्तट्ठेन **द्वे** व **धातुयो** होन्ति। पच्चयसंखातेन आहारट्ठेन **तयो**' वेत्थ धम्मा **आहारा** होन्ति। अवसेसा नो-आहारा। 'किं पनेते अञ्ञमञ्ञं वा तं-समुट्ठानरूपस्स वा पच्चया न होन्ती' ति? 'नो न होन्ति। इमे पन तथा च होन्ति, अञ्ञथा चा ति समाने पि पच्चयत्ते अतिरेकपच्चया होन्ति, तस्मा आहारा ति वुत्ता। कथं? एतेसु हि फस्साहारो, येसं धम्मानं अवसेसा चित्तचेतसिका पच्चया होन्ति, तेसं च पच्चयो होति, तिस्सो च वेदना आहरति। मनोसञ्चेतनाहारो तेसं च पच्चयो होति तयो च भवे आहरति। विञ्ञाणाहारो तेसं च पच्चयो होति पटिसन्धि-नामरूपं च आहरति'। 'ननु च सो विपाको व, इदं पन कुसलविञ्ञाणं' ति? 'किञ्चा पि कुसलविञ्ञाणं, तं-सरिक्खताय पन विञ्ञाणाहारो त्वेवं वुत्तं। उपत्थम्भकट्ठेन वा इमे तयो आहारा ति वुत्ता। इमे हि सम्पयुत्तधम्मानं, कबळिंकाराहारो विय रूपकायस्स, उपत्थम्भकपच्चया होन्ति। तेनेव वुत्तं—"अरूपिनो आहारा सम्पयुत्तकानं धम्मानं तं-समुट्ठानानं च रूपानं आहारपच्चयेन पच्चयो" [तिकप० १.९]' ति।

एत्तावता ति एत्तकेन वचनेन, निट्ठितो ति पदे ततियाविसेसनं।

सङ्गहवारवण्णना

सो[1] ति सङ्गहवारो[1]। तत्था ति उद्देसवारादीसु। तेसं ति चत्तारो खन्धा ति आदीनं।

एत्था ति अतिरेकपण्णासधम्मेसु। एते ति अवसेसधम्मा। इमे पन तयो धम्मा, तथा च तेन पच्चयेन पच्चया होन्ति। अञ्ञथा च अञ्ञेन पच्चया होन्ति। इति तस्मा……प…… इमे धम्मा अतिरेकपच्चया होन्ति। कथं[2] ति[2] आदि वित्थारो। एतेसु[3] ति फस्साहारादीसु।

१-१. नत्थि—म०। २-२. तथन्ति—म०। ३. तेसू ति—म०।

अपरो नयो—अज्झत्तिकसन्ततिया विसेसपच्चयत्ता कबळिकाराहारो च इमे च तयो धम्मा आहारा ति वुत्ता। विसेसपच्चयो हि कबळिंकाराहारभक्खानं सत्तानं रूपकायस्स कबळिंकारो आहारो; नामकाये वेदनाय फस्सो, विञ्ञाणस्स मनोसञ्चेतना, नामरूपस्स विञ्ञाणं। यथाह—"सेय्यथा पि भिक्खवे, अयं कायो आहारट्ठितिको, आहारं पटिच्च तिट्ठति, अनाहारो नो तिट्ठती" [सं० ४.६१] ति। तथा फस्सपच्चया वेदना, संखारपच्चया विञ्ञाणं, विञ्ञाणपच्चया नामरूपं ति। अधिपतियट्ठेन पन अट्ठेव धम्मा इन्द्रियानि होन्ति, न अवसेसा। तेन वुत्तं—**अट्ठिन्द्रियानि होन्ती** ति। उपनिज्झायनट्ठेन पञ्चे व धम्मा झानङ्गानि होन्ति। तेन वुत्तं—**पञ्चङ्गिकं झानं होती** ति। निय्यानट्ठेन च हेत्वट्ठेन च पञ्चेव धम्मा मग्गङ्गानि होन्ति। तेन वुत्तं—**पञ्चङ्गिको मग्गो होती** ति। किञ्चा पि हि अट्ठङ्गिको अरियमग्गो, लोकियचित्ते पन एकक्खणे तिस्सो विरतियो न लब्भन्ति, तस्मा पञ्चङ्गिको वुत्तो।

'ननु च "यथागतमग्गो ति भिक्खु अरियस्सेतं अट्ठङ्गिकस्स मग्गस्स अधिवचनं" [सं० ३.१७४] ति इमस्मिं सुत्ते 'यथेव लोकुत्तरमग्गो अट्ठङ्गिको, पुब्बभागविपस्सनामग्गो पि तथेव अट्ठङ्गिको' ति 'यथागत'-वचनेन इमस्स'-त्थस्स दीपितत्ता, लोकियमग्गेना पि अट्ठङ्गिकेन भवितब्बं'ति ? 'न भवितब्बं। अयं हि सुत्तन्तिकदेसना नाम परियायदेसना। तेनेवाह—"पुब्बे व खो पन'स्स कायकम्मं वचीकम्मं आजीवो सुपरिसुद्धो होती" [म० ३.३९१] ति। अयं पन निप्परियायदेसना। लोकियचित्तस्मिं हि तिस्सो विरतियो एकक्खणे न लब्भन्ति, तस्मा 'पञ्चङ्गिकं' व वुत्तो ति।

अकम्पियट्ठेन पन सत्तेव धम्मा **बलानि** होन्ति। मूलट्ठेन तयो व धम्मा **हेतू**। फुसनट्ठेन एको व धम्मो **फस्सो**। वेदयितट्ठेन एको व धम्मो **वेदना**। सञ्जाननट्ठेन एको व धम्मो **सञ्ञा**। सञ्चेतनट्ठेन एको व धम्मो **चेतना**। चित्तविचित्तट्ठेन एको व धम्मो **चित्तं**। रासट्ठेन चेव वेदयितट्ठेन च एको व धम्मो **वेदनाखन्धो**। रासट्ठेन च सञ्जाननट्ठेन च एको व धम्मो **सञ्ञाखन्धो**। रासट्ठेन च अभिसंखरणट्ठेन च

फस्साहारो ति पदं होति आहरतीति पदद्वये कत्ता। आहरतीति पच्चयभावेन पवत्तेति। सो ति विञ्ञाणाहारो। इदं[1] ति चित्तं[1]। तं-सरिक्खताया ति तेन विपाकेन सदिसताय। इदं चित्तं पि[2] एवं वुत्तं नाम[2]। तयो[3] ति धम्मा[3]।

रूपकायस्स[4] विसेसपच्चयो कबळिङ्कारो[5] आहारो। (१३१–सी०) नामकाये ति निद्धारणे भुम्मं। वेदनाय विसेसपच्चयो फस्सो। ननु च अट्ठङ्गिको मग्गो, कस्मा पन पञ्चङ्गिको मग्गो ति वुत्तो ति आह—किञ्चा पी ति आदि।

पुब्बभागे पवत्तमग्गस्स अनुरूपं गच्छति पवत्ततीति यथागतो। यथागतो च सो मग्गो चा ति यथागतमग्गो। पुब्ब....प....मग्गो ति पुब्बकाले पवत्तविपस्सनाय सम्पयुत्तमग्गो।

१-१. नत्थि–म०। २-२. चित्तं....प....वुत्तं–सी०। ३-३. नत्थि–म०। ४. नामरूपस्स–सी०। ५. कवलिङ्कारो–सी०; कबळीकारो–म०।

एको व धम्मो **संखारक्खन्धो**। रासट्ठेन च चित्तविचित्तट्ठेन च एको व धम्मो **विञ्ञाणक्खन्धो**। विजाननट्ठेन चेव हेट्ठा वुत्त-आयतनट्ठेन च एकमेव **मनायतनं**। विजाननट्ठेन अधिपतियट्ठेन च एकमेव **मनिन्द्रियं**। विजाननट्ठेन सभावसुञ्ञत-निस्सत्तट्ठेन च एको व धम्मो **मनोविञ्ञाणधातु** नाम होति, न अवसेसा। ठपेत्वा पन चित्तं, यथावुत्तेन अत्थेन अवसेसा सब्बे पि धम्मा **एकं धम्मायतनमेव**, **एका च धम्मधातु** येव होन्ती ति।

ये वा पन तस्मिं समये ति इमिना पन अप्पनावारेन इधापि हेट्ठा वुत्ता ये-वा-पनका संगहिता व। यथा च इध एवं सब्बत्थ। इतो परं हि एत्तकं पि न विचारयिस्साम। निद्देस-पटिनिद्देसवारेसु हेट्ठा वुत्तनयेनेव अत्थो वेदितब्बो ति।

संगहवारो निट्ठितो।

कोट्ठासवारो ति पि एतस्सेव नामं।

(iii) सुञ्ञतवारो

इदानि **तस्मिं खो पन समये धम्मा होन्ती** [§१२१] ति सुञ्ञतवारो आरद्धो। सो उद्देस-निद्देसवसेन द्विधा ववत्थितो। तत्थ उद्देसवारे **धम्मा होन्ती**' ति इमिना सद्धिं चतुवीसति कोट्ठासा होन्ति। सब्बकोट्ठासेसु च 'चत्तारो द्वे तयो' ति गणनपरिच्छेदो न वुत्तो। कस्मा ? संगहवारे परिच्छिन्नत्ता। तत्थ परिच्छिन्नधम्मा येव हि इधा पि वुत्ता। न हेत्थ सत्तो वा भावो वा अत्ता वा उपलब्भति। धम्मा व एत धम्ममत्ता असारा अपरिणायिका ति इमिस्सा सुञ्ञताय दीपनत्थं वुत्ता। तस्मा एवमेत्थ अत्थो वेदितब्बो—

यस्मिं समये कामावचरं पठमं महाकुसलचित्तं उप्पज्जति, तस्मिं समये चितङ्गवसेन उप्पन्ना अतिरेकपण्णासधम्मा सभावट्ठेन धम्मा एव होन्ति। न अञ्ञो कोचि सत्तो वा भावो वा पोसो वा पुग्गलो वा होती ति। तथा रासट्ठेन खन्धा व होन्ती ति। एवं पुरिमनयेनेव सब्बपदेसु अत्थयोजना वेदितब्बा। यस्मा पन झानतो अञ्ञं झानङ्गं, मग्गतो वा अञ्ञं मग्गङ्गं नत्थि, तस्मा इध 'झानं होति, मग्गो होति' [§१२१] इच्चेव वुत्तं। उपनिज्झायनट्ठेन हि झानमेव हेत्वट्ठेन मग्गो व होति। न

इधा पी ति सङ्गहवारस्स उद्देसवारे। सब्बत्था ति उद्देसवारादीसु।

संगहवारवण्णना निट्ठिता

सुञ्ञतवारवण्णना

पठमचित्तवण्णना

तत्था ति उद्देस-निद्देसवारेसु। तत्था ति सङ्गहवारे। इधा पी ति सुञ्ञतवारे। न हेत्था ति हि सच्चं, एतेसु धम्मेसु न उपलब्भति।

एत्था ति धम्मा होन्तीति वचने।

सुञ्ञतवारवण्णना निट्ठिता

पठमचित्तवण्णना निट्ठिता

अञ्ञो कोचि सत्तो वा भावो वा ति । एवं सब्बपदेसु अत्थयोजना कातब्बा । निद्देसवारो उत्तानत्थो येवा ति ।

सुञ्ञतवारो निट्ठितो ।

निट्ठिता च तीहि महावारेहि मण्डेत्वा निद्दिट्ठस्स पठमचित्तस्स अत्थवण्णना ।

दुतियं चित्तं

इदानि दुतियचित्तादीनि दस्सेतुं पुन "कतमे धम्मा" [§१४६] ति आदि आरद्धं । तेसु सब्बेसु पि पठमचित्ते वुत्तनयेनेव तयो तयो महावारा वेदितब्बा । न केवलं च महावारा एव, पठमचित्ते वुत्तसदिसानं सब्बपदानं अत्थो पि वुत्तनयेनेव वेदितब्बो । इतोपरं हि अपुब्बपदवण्णनं येव करिस्साम । इमस्मिं ताव दुतियचित्तनिद्देसे **ससंखारेना** ति इदमेव अपुब्बं । तस्स'त्थो—सह संखारेना ति ससंखारो । तेन ससंखारेन सप्पयोगेन स-उपायेन पच्चयगणेना ति अत्थो । येन हि आरम्मणादिना पच्चयगणेन पठमं महाचित्तं उप्पज्जति, तेनेव सप्पयोगेन स-उपायेन इदं उप्पज्जति । तस्सेवं उप्पत्ति वेदितब्बा—इधेकच्चो भिक्खु विहारपच्चन्ते वसमानो चेतियंगणसम्मज्जनवेलाय वा थेरुपट्ठानवेलाय वा सम्पत्ताय, धम्मस्सवणदिवसे वा सम्पत्ते 'मय्हं गन्त्वा पच्चागच्छतो अतिदूरं भविस्सति, न गमिस्सामी' ति चिन्तेत्वा पुन चिन्तेसि—'भिक्खुस्स नाम चेतियंगणं वा थेरुपट्ठानं वा धम्मस्सवनं वा अगन्तुं असारुप्पं, गमिस्सामी' ति गच्छति । तस्सेवं अत्तनो पयोगेन वा, परेन वा वत्तादीनं अकरणे आदीनवं करणे च आनिसंसं दस्सेत्वा ओवदियमानस्स, निग्गहवसेन वा 'एहि, इदं करोही' ति कारियमानस्स उप्पन्नं कुसलचित्तं ससंखारेन पच्चयगणेन उप्पन्नं नाम होती ति ।

दुतियचित्तं निट्ठितं ।

ततियं चित्तं

ततिये [§१४७] **ञाणविप्पयुत्तं** ति ञाणेन विप्पयुत्तं ति ञाणविप्पयुत्तं । इदं

दुतियचित्तवण्णना

तेसू ति दुतियचित्तादीनं[1] उद्देसेसु[1] वेदितब्बो ति पदे आधारो । तस्सा[2] ति दुतियचित्तस्स[2] । तेनेवा ति पच्चयगणेन उप्पज्जतीति पदे करणं । सप्पयोगेन स-उपायेना ति पदद्वयं उप्पज्जतीति पदे ततियाविसेसनं । इदं ति दुतियचित्तं । तस्सा ति दुतियचित्तस्स । तस्सेवं ति एवं तस्स भिक्खुनो । अत्तनो पयोगेन वा उप्पन्नं ति योजना ।

दुतियचित्तं समत्तं ।

ततियचित्तवण्णना

एत्था ति (११०-म०) ततियचित्ते ।

ततियचित्तवण्णनासमत्ता

१-१. ०चित्तादिनिद्देसेसु—सी० । २-२. नत्थि—म० ।

पि हि आरम्मणे हट्ठपहट्ठं होति परिच्छिन्दनकञाणं पनेत्थ न होति। तस्मा इदं दहरकुमारकानं भिक्खुं दिस्वा 'अयं थेरो मय्हं' ति वन्दनकाले, तेनेव नयेन चेतियवन्दनधम्मस्सवणकालादीसु च उप्पज्जती ति वेदितब्बं। पाळियं पनेत्थ सत्तसु ठानेसु पञ्ञा परिहायति। सेसं पाकतिकमेवा ति।

ततियचित्तं निट्ठितं।

चतुत्थं चित्तं

चतुत्थचित्ते पि [§१४९] एसेव नयो। इदं पन **ससंखारेना** ति वचनतो यदा मातापितरो दहरकुमारके सीसे गहेत्वा चेतियादीनि वन्दापेन्ति ते च अनत्थिका समाना पि हट्ठपहट्ठा वन्दन्ति। एवरूपे काले लब्भती ति वेदितब्बं।

पञ्चमं चित्तं

पञ्चमे [§१५०] **उपेक्खासहगतं** ति उपेक्खावेदनाय सम्पयुत्तं। इदं हि आरम्मणे मज्झत्तं होति। परिच्छिन्दनकञाणं पेत्थ होति येव। पालियं पनेत्थ झानचतुक्के उपेक्खा होति इन्द्रियट्ठके उपेक्खिन्द्रियं होती ति वत्वा सब्बेसं पि वेदनापदानं निद्देसे सातासातसुखदुक्खपरिक्खेपवसेन देसनं कत्वा अदुक्खमसुखवेदना कथिता। तस्मा मज्झत्तलक्खणे इन्दट्ठकरणवसेन उपेक्खिन्द्रियभावो वेदितब्बो। पदपटिपाटिया च एकस्मिं ठाने पीति परिहीना व। तस्मा चित्तङ्गवसेन पाळि आरूळ्हा पञ्चपण्णासेव धम्मा होन्ति। तेसं वसेन सब्बकोट्ठासेसु सब्बवारेसु च विनिच्छयो वेदितब्बो।

[छट्ठ-सत्तम-अट्ठमानि चित्तानि]

छट्ठसत्तम-अट्ठमानि दुतियततियचतुत्थेसु वुत्तनयेनेव वेदितब्बानि। केवलं इमेसु वेदनापरिवत्तनं चेव पीतिपरिहानं च होति। सेसं सद्धिं उप्पत्तिनयेन तादिसमेव। करुणामुदितापरिकम्मकाले पि हि इमेसं उप्पत्ति महा-अट्ठकथायं अनुञ्ञाता एव।

इमानि अट्ठ कामावचरकुसलचित्तानि नाम।

पञ्चमचित्तवण्णना

एत्था ति पञ्चमे। तस्सा ति अदुक्खमसुखवेदनायं। तेसं ति पण्णासधम्मानं।

पञ्चमचित्तवण्णना समत्ता

छट्ठ-सत्तम-अट्ठमचित्तवण्णना

इमेसू[1] ति छट्ठ-सत्तम-अट्ठमचित्तेसु[1]। इमेसं ति छट्ठ-सत्तम-अट्ठमचित्तानं[2]।

अट्ठकामावचरकुसलचित्तवण्णना समत्ता

१-१. नत्थि—म०। २. छट्ठसत्तमट्ठमानं—म०।

दस पुञ्ञकिरियवत्थूनि

तानि सब्बानि पि दसहि पुञ्ञकिरियवत्थूहि दीपेतब्बानि। कथं ? दानमयं पुञ्ञकिरियवत्थु, सीलमयं...., भावनामयं...., अपचितिसहगतं..., वेय्यावच्चसहगतं..., पत्तानुप्पदानं...., अब्भनुमोदनं ..., देसनामयं...., सवणमयं...., दिट्ठुजुकम्मपुञ्ञकिरियवत्थू ति इमानि दस पुञ्ञकिरियवत्थूनि नाम।

तत्थ दानमेव दानमयं। पुञ्ञकिरिया च सा तेसं तेसं आनिसंसानं वत्थु चा ति पुञ्ञकिरियवत्थु नाम। सेसेसु पि एसेव नयो। तत्थ चीवरादीसु चतूसु पच्चयेसु, रूपादीसु वा छसु आरम्मणेसु, अन्नादीसु वा दससु दानवत्थूसु, तं तं देन्तस्स तेसं तेसं उप्पादनतो पट्ठाय पुब्बभागे, परिच्चागकाले, पच्छा सोमनस्सचित्तेन अनुस्सरणे चा ति तीसु कालेसु पवत्ता चेतना (i) 'दानमयं पुञ्ञकिरियवत्थु' नाम। पञ्चसीलं अट्ठसीलं दससीलं समादियन्तस्स, 'पब्बजिस्सामी' ति विहारं गच्छन्तस्स, पब्बजन्तस्स, 'मनोरथं मत्थकं पापेत्वा पब्बजितो वत'म्हि, साधु सुट्ठू'ति आवज्जेन्तस्स, पातिमोक्खं संवरन्तस्स, चीवरादयो पच्चये पच्चवेक्खन्तस्स, आपाथगतेसु रूपादीसु चक्खुद्वारादीनि संवरन्तस्स, आजीवं सोधेन्तस्स च पवत्ता चेतना (ii) 'सीलमयं पुञ्ञकिरियवत्थु' नाम। पटिसम्भिदायं वुत्तेन विपस्सनामग्गेन चक्खुं अनिच्चतो दुक्खतो अनत्ततो भावेन्तस्स, सोतं....प० ...मनं,....रूपे....प०....धम्मे,....चक्खुविञ्ञाणं....प०....मनोविञ्ञाणं,...चक्खुसम्फस्सं....प०....मनोसम्फस्सं, चक्खुसम्फस्सजं वेदनं....प०....मनोसम्फस्सजं वेदनं, रूपसञ्ञं····प०··· जरामरणं अनिच्चतो दुक्खतो अनत्ततो भावेन्तस्स पवत्ता चेतना, अट्ठतिंसाय वा आरम्मणेसु अप्पनं अप्पत्ता सब्बा पि चेतना (iii) 'भावनामयं पुञ्ञकिरियवत्थु' नाम। महल्लकं पन दिस्वा पच्चुग्गमन-पत्तचीवरपटिग्गहण-अभिवादन-मग्गसम्पदानादिवसेन (iv) 'अपचितिसहगतं' वेदितब्बं। वुड्ढतरानं वत्तपटिवत्तकरणवसेन गामं पिण्डाय पविट्ठं भिक्खुं दिस्वा पत्तं गहेत्वा गामे भिक्खं समादपेत्वा उपसंहरणवसेन, 'गच्छ भिक्खूनं पत्तं आहरा' ति सुत्वा वेगेन गन्त्वा पत्ताहरणादिवसेन च कायवेय्यावटिककाले (v) 'वेय्यावच्चसहगतं' वेदितब्बं।

दानं दत्वा गन्धादीहि पूजं कत्वा 'असुकस्स नाम पत्ति होतू' ति वा, 'सब्बसत्तानं होतू' ति वा पत्तिं ददतो (vi) 'पत्तानुप्पदानं' वेदितब्बं। किं पनेवं पत्तिं ददतो पुञ्ञक्खयो होती ति ?। न होति। यथा पन एकं पदीपं जालेत्वा ततो दीपसहस्सं जालेन्तस्स पठमदीपो खीणो ति न वत्तब्बो; पुरिमालोकेन पन सद्धिं पच्छिमालोको

दसपुञ्ञकिरियवत्थुवण्णना

तत्था ति दसपुञ्ञक्रियवत्थूसु। पुञ्ञपच्चयेसू[1] ति आदीसु निद्धारणे भुम्मं। तेसं ति चीवरादीनं। (१३२–सी०) विपस्सनामग्गेना ति विपस्सनाय उपायेन।

तं ति देसनं। विमुत्तायतनसीसेना ति निब्बानसंखातस्स आयतनस्स उपायभागेन। निब्बानस्स वा पटिलाभस्स पट्ठानकारणभावेन। तं ति सवनं[2]।

१. पच्चयेसू ति–सी०। २. सवणं–सी०।

एकतो हुत्वा अतिमहा होति। एवमेव पत्तिं ददतो परिहानि नाम नत्थि। वुड्ढि येव पन होती ति वेदितब्बा। परेहि दिन्नाय पत्तिया वा अञ्ञाय वा पुञ्ञकिरियाय 'साधु सुट्ठू' ति अनुमोदनवसेन (vii) 'अब्भनुमोदनं' वेदितब्बं। एको 'एवं धम्मकथिको ति मं जानिस्सन्ती' ति इच्छाय ठत्वा लाभगरुको हुत्वा देसेति, तं न महप्फलं। एको अत्तनो पगुणं धम्मं अपच्चासिंसमानो विमुत्तायतनसीसेन परेसं देसेति, इदं (viii) 'देसनामयं पुञ्ञकिरियवत्थु' नाम। एको सुणन्तो 'इति मं सद्धो ति जानिस्सन्ती' ति सुणाति, तं न महप्फलं। एको 'एवं मे महप्फलं भविस्सती' ति हितफरणेन मुदुचित्तेन धम्मं सुणाति इदं (ix) 'सवणमयं पुञ्ञकिरियवत्थु' नाम। दिट्ठिं उजुं करोन्तस्स (x) 'दिट्ठुजुकम्मपुञ्ञकिरियवत्थु' नाम।

दीघभाणका पनाहु—'दिट्ठुजुकम्मं सब्बेसं नियमलक्खणं, यं किञ्चि पुञ्ञं करोन्तस्स हि दिट्ठिया उजुकभावेनेव महप्फलं होती' ति। एतेसु पन पुञ्ञकिरियवत्थूसु दानमयं ताव 'दानं दस्सामी'ति चिन्तेन्तस्स उप्पज्जति, दानं ददतो उप्पज्जति, 'दिन्नं मे' ति पच्चवेक्खन्तस्स उप्पज्जति। एवं पुब्बचेतनं मुञ्चनचेतनं अपरचेतनं ति तिस्सो चेतना एकतो कत्वा 'दानमयं पुञ्ञकिरियवत्थु' नाम होति। सीलमयं पि 'सीलं पूरेस्सामी'ति चिन्तेन्तस्स उप्पज्जति, सीलपूरणकाले उप्पज्जति, 'पूरितं मे' ति पच्चवेक्खन्तस्स उप्पज्जति। ता सब्बा पि एकतो कत्वा 'सीलमयं पुञ्ञकिरियवत्थु' नाम होति।....प०....दिट्ठुजुकम्मं पि 'दिट्ठिं उजुकं करिस्सामी' ति चिन्तेन्तस्स उप्पज्जति, दिट्ठिं उजुकं करोन्तस्स उप्पज्जति, 'दिट्ठि मे उजुका कता' ति पच्चवेक्खन्तस्स उप्पज्जति। ता सब्बा पि एकतो कत्वा 'दिट्ठुजुकम्मं पुञ्ञकिरियवत्थु' नाम होति।

सुत्ते पन तीणि येव पुञ्ञकिरियवत्थूनि आगतानि। तेसु इतरेसं पि संगहो वेदितब्बो। अपचिति-वेय्यावच्चानि हि सीलमये संगहं गच्छन्ति। पत्तानुप्पदान-अब्भनुमोदनानि दानमये। देसना-सवण-दिट्ठुजुकम्मानि भावनामये। ये पन दिट्ठुजुकम्मं सब्बेसं नियमलक्खणं'ति वदन्ति तेसं तं तीसु पि संगहं गच्छति। एवमेतानि संखेपतो तीणि हुत्वा वित्थारतो पन दस होन्ति।

तेसु 'दानं दस्सामी'ति चिन्तेन्तो अट्ठन्नं कामावचरकुसलचित्तानं अञ्ञतरेनेव चिन्तेति; ददमानो पि तेसं येव अञ्ञतरेन देति; 'दानं मे दिन्नं'ति पच्चवेक्खन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन पच्चवेक्खति। 'सीलं पूरेस्सामी'ति चिन्तेन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन चिन्तेति; सीलं पूरेन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन पूरेति, 'सीलं मे पूरितं' ति पच्चवेक्खन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन पच्चवेक्खति। 'भावनं भावेस्सामी'

तीणि येवा ति दान-सील-भावनामयानि। तेसू ति तीसु पुञ्ञक्रियवत्थूसु। तेसं ति तेसं आचरियानं वादे। तं दिट्ठिजुकम्मं[1]।

तेसू ति दस पुञ्ञक्रियवत्थूसु।

---

१. दिट्ठिज्जु०–सी०।

ति चिन्तेन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन चिन्तेति; भावनं भावेन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन भावेति; 'भावना मे भाविता'ति पच्चवेक्खन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन पच्चवेक्खति। जेट्ठापचितिकम्मं करिस्सामी'ति चिन्तेन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन चिन्तेति, करोन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन करोति, 'कतं मे' ति पच्चवेक्खन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन पच्चवेक्खति। 'कायवेय्यावटिककम्मं करिस्सामी' ति चिन्तेन्तो पि, करोन्तो पि, 'कतं मे' ति पच्चवेक्खन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन पच्चवेक्खति।

'पत्तिं दस्सामी'ति चिन्तेन्तो पि, ददन्तो पि, दिन्ना मे'ति पच्चवेक्खन्तो पि, 'पत्तिं वा सेसकुसलं वा अनुमोदिस्सामी'ति चिन्तेन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन चिन्तेति; अनुमोदन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन अनुमोदति, 'अनुमोदितं मे' ति पच्चवेक्खन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन पच्चवेक्खति। 'धम्मं देसेस्सामी' ति चिन्तेन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन चिन्तेति, देसेन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन देसेति, 'देसितो मे' ति पच्चवेक्खन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन पच्चवेक्खति। 'धम्मं सोस्सामी' ति चिन्तेन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन चिन्तेति, सुणन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन सुणाति, 'सुतं मे'ति पच्चवेक्खन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन पच्चवेक्खति। 'दिट्ठिं उजुकं करिस्सामी' ति चिन्तेन्तो पि तेसं येव अञ्ञतरेन चिन्तेति, उजुकं करोन्तो पन चतुन्नं ञाणसम्पयुत्तानं अञ्ञतरेन करोति, 'दिट्ठि मे उजुका कता'ति पच्चवेक्खन्तो अट्ठन्नं अञ्ञतरेन पच्चवेक्खति।

इमस्मिं ठाने चत्तारि अनन्तानि नाम गहितानि। चत्तारि हि अनन्तानि—आकासो अनन्तो, चक्कवाळानि अनन्तानि, सत्तनिकायो अनन्तो, बुद्धञाणं अनन्तं। आकासस्स हि पुरत्थिमदिसाय वा पच्छिमुत्तरदक्खिणासु वा एत्तकानि वा योजनसतानि एत्तकानि वा योजनसहस्सानी ति परिच्छेदो नत्थि। **सि**नेरुमत्तं पि अयोकूटं पठविं द्विधा कत्वा हेट्ठा खित्तं भस्सेथेव, नो पतिट्ठं लभेथ, एवं (१) आकासं अनन्तं नाम। चक्कवाळानं पि सतेहि वा सहस्सेहि वा परिच्छेदो नत्थि। सचे पि हि **अक**निट्ठभवने निब्बत्ता, दळ्हथामधनुग्गहस्स सल्लहुकेन सरेन तिरियं तालच्छायं अतिक्कमनमत्तेन कालेन चक्कवाळसतसहस्स-अतिक्कमनसमत्थेन जवेन समन्नागता चत्तारो **म**हाब्रह्मानो 'चक्कवाळपरियन्तं पस्सिस्सामा' ति तेन जवेन धावेय्युं, चक्कवाळपरियन्तं अदिस्वा व परिनिब्बायेय्युं, एवं (२) चक्कवाळानि अनन्तानि नाम। एत्तकेसु पन चक्कवाळेसु उदकट्ठकथलट्ठकसत्तानं पमाणं नत्थि। एवं (३) सत्तनिकायो अनन्तो नाम। ततो पि (४) **बु**द्धञाणं अनन्तमेव।

भस्सते येवा ति[1] पतेय्येव[2]। निब्बत्ता ति पदं महाब्रह्मानो ति पदस्स विसेसनं। असनेना ति[3] सरेन, अतिक्कमन इति पदे करणं। असियति खिपियती ति असनो। 'अस'-खिपने,

---

१. भस्सेथेवाति–सी०। २. पतेयेव–म०। ३. नासनेनाति–सी०।

एवं अपरिमाणेसु चक्कवाळेसु अपरिमाणानं सत्तानं कामावचरसोमनस्ससहगत-ञाणसम्पयुत्त-असंखारिक-कुसलचित्तानि एकस्स बहूनि उप्पज्जन्ति। बहुन्नं पि बहूनि उप्पज्जन्ति। तानि सब्बानि पि कामावचरट्ठेन सोमनस्ससहगतट्ठेन ञाणसम्पयुत्तट्ठेन असंखारिकट्ठेन एकत्तं गच्छन्ति। एकमेव सोमनस्ससहगतं तिहेतुकं असंखारिकं महाचित्तं होति। तथा स-संखारिकं महाचित्तं····प०····तथा उपेक्खासहगतं ञाणविप्पयुत्तं दुहेतुकं ससंखारिकं चित्तं ति। एवं सब्बानि पि अपरिमाणेसु चक्कवाळेसु अपरिमाणानं सत्तानं उप्पज्जमानानि कामावचरकुसलचित्तानि सम्मासम्बुद्धो महातुलाय तुलयमानो विय, तुम्बे पक्खिपित्वा मिनमानो विय, सब्बञ्ञुतञाणेन परिच्छिन्दित्वा 'अट्ठेवेतानी' ति सरिक्खट्ठेन अट्ठेव कोट्ठासे कत्वा दस्सेसि।

पुन इमस्मिं ठाने छब्बिधेन पुञ्ञायूहनं नाम गहितं। पुञ्ञं हि अत्थि सयंकारं अत्थि परंकारं, अत्थि साहत्थिकं, अत्थि आणत्तिकं, अत्थि सम्पजानकतं, अत्थि असम्पजानकतं। तत्थ अत्तनो धम्मताय कतं 'सयंकारं' नाम। परं करोन्तं दिस्वा कतं 'परंकारं' नाम। सहत्थेन कतं 'साहत्थिकं' नाम। आणापेत्वा कारितं 'आणत्तिकं' नाम। कम्मं च फलं च सद्दहित्वा कतं 'सम्पजानकतं' नाम। कम्मं पि फलं पि अजानित्वा कतं 'असम्पजानकतं' नाम। तेसु सयंकारं करोन्तो पि इमेसं अट्ठन्नं कुसलचित्तानं अञ्ञतरेनेव करोति। परंकारं करोन्तो पि, सहत्थेन करोन्तो पि, आणापेत्वा करोन्तो पि इमेसं अट्ठन्नं कुसलचित्तानं अञ्ञतरेनेव करोति। सम्पजानकरणं पन चतूहि ञाणसम्पयुत्तेहि होति। असम्पजानकरणं चतूहि ञाणविप्पयुत्तेहि।

अपरा पि इमस्मिं ठाने चतस्सो दक्खिणाविसुद्धियो गहिता—पच्चयानं धम्मिकता, चेतना-महत्तं, वत्थुसम्पत्ति, गुणातिरेकता ति। तत्थ धम्मेन समेन उप्पन्ना पच्चया 'धम्मिका' नाम। सद्दहित्वा ओकप्पेत्वा ददतो पन 'चेतना-महत्तं' नाम होति। खीणासवभावो 'वत्थुसम्पत्ति' नाम। खीणासवस्सेव निरोधा वुट्ठितभावो 'गुणातिरेकता' नाम। इमानि चत्तारि समोधानेत्वा दातुं सक्कोन्तस्स कामावचरकुसलं इमस्मिं येव अत्तभावे विपाकं देति। पुण्णकसेट्ठि-काकवलिय-सुमनमालाकारादीनं विय।

कम्मे यु। तालच्छायं ति तालरुक्खस्स छायं।

कामावचरकुसलचित्तानीति[1] पदं परिच्छिन्दित्वा दस्सेसीति पदद्वये कम्मं। तुम्बे ति आळके। सरिक्खट्ठेना ति सदिसभावेन।

तत्था ति[2] चतूसु दक्खिणविसुद्धीसु। पुण्णक····प०····कारादीनं कामावचरकुसलं इमस्मिं अत्तभावे विपाकं देति विय। पुण्णकस्स सुमनमालाकारस्स च वत्थु[3] धम्मपदट्ठकथायं

१. कामावचरानीति—म०। २. तत्था ति सयंकारादीसु। तेसू ति सयंकारादीसु। तत्था ति०—सी०। ३. वत्थुं—सी० सब्बत्थ।

संखेपतो पनेतं सब्बं पि कामावचरकुसलं चित्तं 'चित्तं'ति करित्वा चित्तविचित्तट्ठेन एकमेव होति। वेदनावसेन सोमनस्ससहगतं उपेक्खासहगतं ति दुविधं होति। ञाणविभत्तिदेसनावसेन चतुब्बिधं होति। सोमनस्ससहगतं ञाणसम्पयुत्तं असंखारिकं महाचित्तं हि उपेक्खाहगतं ञाणसम्पयुत्तं असंखारिकं महाचित्तं च ञाणसम्पयुत्तट्ठेन असंखारिकट्ठेन च एकमेव होति। तथा ञाणसम्पयुत्तं ससंक्खारिकं, ञाणविप्पयुत्तं असंखारिकं, ञाणविप्पयुत्तं ससंखारिकं चा ति। एवं ञाणविभत्तिदेसनावसेन चतुब्बिधे पनेतस्मिं असंखार-ससंखारविभत्तितो चत्तारि असंखारिकानि चत्तारि ससंखारिकानी ति अट्ठेव कुसलचित्तानि होन्ति। तानि याथावतो ञत्वा भगवा सब्बञ्ञू गुणी वरो मुनि सेट्ठो आचिक्खति देसेति पञ्ञपेति पट्ठपेति विवरति विभजति उत्तानीकरोती ति।

अट्ठसालिनिया धम्मसंगहट्ठकथाय

कामावचरकुसलनिद्देसो

समत्तो।

वुत्तनयेन वेदितब्बं। काळवलियस्स[1] वत्थु मज्झिमनिकाये देवदहसुत्तट्ठकथायं वुत्तनयेन वेदितब्बं।

वुत्तनयेन ञाणविभत्तिदेसनावसेना ति ञाणेन विभजनदेसनावसेन[2]। एतस्मिं ति चित्ते, होन्तीति पदे आधारो। असङ्खार....प०.. तो ति पदं अट्ठेवा ति पदे ततियाविसेसनं। गणिवरो ति गणो एतेसं अत्थीति गणिनो। गणीनं वरो गणिवरो। अनिद्धारणलक्खणाया ति[3] छट्ठिया समासो[4] पटिसेधितो। तेन बुद्धदत्ताचरियेन बुद्धवंसट्ठकथायं वुत्तं द्विपदानं[5] उत्तमो ति[6] द्विपदुत्तमं।[7]। एत्थ पन निद्धारणलक्खणस्स अभावतो छट्ठीसमासस्स पटिसेधो नत्थि, निद्धारणलक्खणाय समासो[8] पटिसिद्धो ति[9]।

दसपुञ्ञकिरियवत्थुवण्णनासमत्ता

कामावचरकुसलकथावण्णना निट्ठिता।

---

१. काल०–सी०। २. विभज्जन०–सी०। ३. अनिद्धारणलक्खणाय–सी०। ४. ०निद्धारणलक्खणाय हि छट्ठिया समासो–सी०। ५. द्विपदुत्तमो ति दिपदानं–सी०। ६. उत्तमो–सी०। ७. दिपदुत्तमो–सी०। ८. छट्ठिया०–सी०। ९. पटिसेधो ति–म०।

चित्तुप्पादकण्डं
रूपावचरकुसलकथा

इदानि रूपावचरकुसलं दस्सेतुं **कतमे धम्मा कुसला** [§१३०] ति आदि आरद्धं। तत्थ **रूपूपपत्तिया मग्गं भावेती** ति रूपं वुच्चति रूपभवो। **उपपत्ती** ति निब्बत्ति जाति सञ्जाति। **मग्गो** ति उपायो। वचनत्थो पनेत्थ—तं उपपत्तिं मग्गति गवेसति जनेति निप्फादेती ति मग्गो। इदं वुत्तं होति—येन मग्गेन रूपभवे उपपत्ति होति निब्बत्ति जाति सञ्जाति, तं मग्गं भावेती ति। किं पनेतेन नियमतो रूपभवे उपपत्ति होती ति? न होति। "समाधिं भिक्खवे, भावेथ, समाहितो यथाभूतं पजानाति पस्सती" [सं० २-३:२५२; ४:३५५] ति एवं वुत्ते न हि निब्बेधभागियेन रूपभवातिक्कमो पि होति। रूपूपपत्तिया पन इतो अञ्ञो मग्गो नाम नत्थि, तेन वुत्तं 'रूपूपपत्तिया मग्गं भावेती' ति। अत्थतो चायं मग्गो नाम चेतना पि होति, चेतनाय सम्पयुत्तधम्मा पि, तदुभयं पि। "निरयं चाहं सारिपुत्त, पजानामि निरयगामिं च मग्गं" [म० १.१०४] ति हि एत्थ चेतना व मग्गो नाम।

"सद्धा हिरियं कुसलं च दानं धम्मा एते सप्पुरिसानुयाता।

एतं हि मग्गं दिवियं वदन्ति एतेन हि गच्छति देवलोकं" [अं० ३.३३७]

ति। एत्थ चेतनासम्पयुत्ता धम्मा मग्गो नाम। "अयं भिक्खवे मग्गो, अयं पटिपदा" [म० ३.१६२] ति **संखारुप्पत्तिसुत्तादीसु** [म० ३:१६२-१६७] चेतना पि चेतनासम्पयुत्तधम्मा पि मग्गो नाम। इमस्मिं पन ठाने 'झानं' ति वचनतो चेतनासम्पयुत्ता अधिप्पेता। यस्मा पन झानचेतना पटिसन्धिं आकड्ढति, तस्मा चेतना पि चेतनासम्पयुत्तधम्मा पि वट्टन्ति येव।

चित्तुप्पादकण्डं
रूपावचरकुसलकथावण्णना

तत्था ति कतमे धम्मा कुसला ति आदिवचने। एत्था ति मग्गो ति वचने। एतेना[१] ति मग्गेन[१]। निब्बेधभागियेना ति (१३३—सी०) रूपभवस्स निब्बिन्धनभागे[२] पवत्तनेन। नत्थीति (१११—म०) इतिसद्दो समापनत्थो। सद्धा च हिरी च कुसलं दानञ्च इति एते धम्मा सप्पुरिसानुयाता सप्पुरिसेहि अनुगता। हि सच्चं। पण्डिता एतं मग्गं दिवियं देवलोकमग्गं वदन्ति। हि सच्चं, जनो एतेन मग्गेन देवलोकं गच्छति। हिरिनो भावो हिरियं। दीयति एतेना ति दानं। दिवं गमेतीति दिवियो, मग्गो। अथवा सद्धा हिरियं[३] कुसलं दानञ्च[३], एते धम्मा सप्पुरिसानुयाता। झानचेतना ति झानेन सम्पयुत्तचेतना[४]।

१-१. नत्थि—म०। २. निब्बिन्दनभागे—सी०। ३-३. कुसलदानञ्च—सी०। ४. सम्पयुत्ता चेतना—सी०।

भावेती ति जनेति उप्पादेति वड्ढेति। अयं ताव इध भावनाय अत्थो। अञ्ञत्थ पन उपसग्गवसेन सम्भावना परिभावना विभावना ति एवं अञ्ञथा पि अत्थो होति। तत्थ "इध उदायि, मम सावका अधिसीले सम्भावेन्ति—सीलवा समणो गोतमो, परमेन सीलक्खन्धेन समन्नागतो" [म० २.२३२] ति अयं सम्भावना नाम; ओकप्पना ति अत्थो। "सीलपरिभावितो समाधि महप्फलो होति महानिसंसो, समाधिपरिभाविता पञ्ञा महप्फला होति महानिसंसा, पञ्ञापरिभावितं चित्तं सम्मदेव आसवेहि विमुच्चती" [दी० २.६५] ति अयं परिभावना नाम; वासना ति अत्थो। "इंघ रूपं विभावेहि, वेदनं····सञ्ञं····संखारे····विञ्ञाणं विभावेही" [ ] ति अयं विभावना नाम; अन्तरधापना ति अत्थो। "पुन च परं उदायि, अक्खाता मया सावकानं पटिपदा, यथापटिपन्ना मे सावका चत्तारो सतिपट्ठाने भावेन्ती" [म० २.२३४] ति, अयं पन उप्पादनवड्ढनट्ठेन भावना नाम। इमस्मिं पि ठाने अयमेव अधिप्पेता। तेन वुत्तं–'भावेती ति जनेति उप्पादेति वड्ढेती' ति।

कस्मा पनेत्थ, यथा कामावचरकुसलनिद्देसे धम्मपुब्बंगमा देसना कता तथा पन अकत्वा, पुग्गलपुब्बंगमा कता ति? पटिपदाय साधेतब्बतो ति। इदं हि चतुसू पटिपदासु अञ्ञतराय साधेतब्बं; न कामावचरं विय विना पटिपदाय उप्पज्जति। पटिपदा च नामेसा पटिपन्नके सति होती ति एतमत्थं दस्सेतुं पुग्गलपुब्बंगमं देसनं करोन्तो 'रूपूपपत्तिया मग्गं भावेती' [§१६०] ति आह।

विविच्चेव कामेही ति कामेहि विविच्चित्वा, विना हुत्वा, अपक्कमित्वा। यो पनायमेत्थ 'एव'-कारो सो नियमत्थो ति वेदितब्बो। यस्मा च नियमत्थो, तस्मा

अञ्ञत्था ति अञ्ञस्मिं ठाने। उपसग्गवसेना ति पदं होतीति पदे ततियाविसेसनं। तत्था ति सम्भावनादीसु। सम्भावेन्तीति सद्दहन्ति। यथा ति येन कारणेन। पटिपन्ना मे मय्हं सावका····प०····भावेन्ति[1] वड्ढेन्ति तथा मया अक्खाता।

एत्था ति रूपावचरकुसलचित्तनिद्देसे। पटिपदाया ति पदं साधेतब्बतो ति पदे करणं विसेसनं वा। इदं ति रूपावचरकुसलचित्तं।

कामेहीति[2] वत्थुकामेहि[2]। अपक्कमित्वा ति पजहनवसेन अतिक्कमित्वा। एत्था ति विविच्चेवा ति पदे[3]। यस्मा च एवकारो नियमत्थो, तस्मा दीपेतीति सम्बन्धो। अस्सा ति पठमज्झानस्स। चसद्दो पटिपक्खभावञ्च अधिगमञ्चा ति योजेतब्बो। वुत्तमेवत्थं पाकटतरं

---

१. भावेन्तीति–सी०। २-२. नत्थि–म०। ३. ०सो च एवकारो–सी०।

तस्मिं पठमज्झानं उपसम्पज्ज विहरणसमये अविज्जमानानं पि कामानं तस्स पठमज्झानस्स पटिपक्खभावं, कामपरिच्चागेनेव च'स्स अधिगमं दीपेति। कथं? 'विविच्चेव कामेही' ति एवं हि नियमे करियमाने इदं पञ्ञायति—ननु च'स्स झानस्स कामा पटिपक्खभूता येसु सति इदं नप्पवत्तति, अन्धकारे सति पदीपोभासो विय? तेसं परिच्चागेनेव च'स्स अधिगमो होति ओरिमतीरपरिच्चागेन पारिमतीरस्सेव। तस्मा नियमं करोती ति।

तत्थ सिया—'कस्मा पनेस पुब्बपदे येव वुत्तो, न उत्तरपदे? किं अकुसलेहि धम्मेहि अविविच्चा पि झानं उपसम्पज्ज विहरेय्या ति?' 'न खो पनेतं एवं दट्ठब्बं। तं निस्सरणतो हि पुब्बपदे एस वुत्तो। कामधातुसमतिक्कमनतो हि कामरागपटिपक्खतो च इदं झानं कामानमेव निस्सरणं। यथाह—"कामानमेतं निस्सरणं यदिदं नेक्खम्मं" [दी० ३.२१२] ति। उत्तरपदे पि पन, यथा "इधेव भिक्खवे, पठमो समणो, इध दुतियो समणो" [म० १.९०; अं० २.२५३] ति एत्थ 'एव'-कारो आनेत्वा वुच्चति, एवं वत्तब्बो। न हि सक्का इतो अञ्ञेहि पि नीवरणसंखातेहि अकुसलेहि धम्मेहि अविविच्च झानं उपसम्पज्ज विहरितुं, तस्मा 'विविच्चेव कामेहि विविच्चेव अकुस-

---

करोन्तो आह—कथं ति आदि। हि सच्चं। विवि····प०····इति एवं नियमे भगवता करियमाने[1], येसु कामेसु सति इदं झानं न पवत्तति, किमिव अन्धकारे सति पदीपोभासो न पवत्तति विय। ते कामा इमस्स झानस्स पटिपक्खभूता, तेसं कामानं परिच्चागेनेव अस्स झानस्स अधिगमो होति। ओरि[2]····प०····तीरस्स अधिगमो इध, तस्मा भगवा नियमं करोति इति इदं वचनं पञ्ञायति[3] एवा ति सम्बन्धो। करियमाने ति[4] पदं पञ्ञायतीति पदे लक्खणक्रिया।

तत्था ति विविच्चेव कामेहीति वचने। एस[5] एवकारो पुब्बपदे एसो एवकारो भगवता वुत्तो उत्तरपदे न वुत्तो? पुग्गलो अकुसलेहि····प०····विहरेय्य इति चोदना सिया ति योजना। पनसद्दो वचनालङ्कारो। अपिसद्दो विविच्चा ति अत्थं अपेक्खति। एतं[6] पुब्बपदे येव अवधारणवचनं। एवं (१३४–सी०) अकुसलधम्मेहि अविविच्च झानं उपसम्पज्ज विहरन्तेन[7] पण्डितेन न खो पन दट्ठब्बं। कस्मा? कामेहि एवा ति अवधारणस्स अकतत्ता। एवं अदट्ठब्बभावे सति कस्मा पुब्बपदे येव एवकारो च[8] वुत्तो ति आह—तं निस्सरणतो हीति आदि। हि सच्चं। तं नि····प०····तो तेसं कामानं निस्सरणतो पहानतो पुब्बपदे एसो एवकारो भगवता वुत्तो। कथं पन समाने विक्खम्भने कामानमेवेतं (११२–म०) निस्सरणं न ब्यापादादीनं ति चोदनं

---

१. कयिरमाने–सी०। २. ओर····सी०। ३. ०नून पञ्ञायति–सी०। ४. कयिर०–सी० सब्बत्थ। ५. एसो–सी०। ६. नत्थि–सी०। ७. विहरणेन–म०। ८. नत्थि–सी०।

लेहि धम्मेही' ति एवं पदद्वये पि एस दट्ठब्बो। पदद्वये पि च किञ्चा पि **विविच्चा** ति इमिना साधारणवचनेन तदङ्गविवेकादयो कायविवेकादयो च सब्बे पि विवेका संगहं गच्छन्ति, तथा पि कायविवेको चित्तविवेको विक्खम्भनविवेको ति तयो एव इध दट्ठब्बा।

कामेही ति इमिना पदेन ये च **निद्देसे** "कतमे वत्थुकामा? मनापिया रूपा" [महानि० १] ति आदिना नयेन वत्थुकामा वुत्ता, ये च तत्थेव **विभंगे** च "छन्दो कामो, रागो कामो, छन्दरागो कामो; संकप्पो कामो, रागो कामो, संकप्परागो कामो; इमे वुच्चन्ति कामा" [महानि० १; विभ० ३०८] ति एवं किलेसकामा वुत्ता, ते सब्बे पि संगहिता इच्चेव दट्ठब्बा। एवं हि सति विविच्चेव कामेही ति वत्थुकामेहि पि विविच्चेवा ति अत्थो युज्जति। तेन कायविवेको वुत्तो होति। **विविच्च अकुसलेहि धम्मेही** ति किलेसकामेहि सब्बाकुसलेहि वा विविच्चा ति अत्थो युज्जति। तेन चित्तविवेको वुत्तो होति। पुरिमेन चेत्थ वत्थुकामेहि विवेकवचनतो येव कामसुख-

---

मनसिकत्वा आह—कामधातू ति आदि। कामधातुसमतिक्कमनतो ति कामभवस्स समतिक्कम-पटिपदाभावतो। कामरागपटिपक्खतो कामरागस्स पच्चत्थिकभावतो[1]। अत्तना वुत्तमत्थं पाळिया साधेन्तो आह—यथाहा ति आदि। एतं[2] ति नेक्खम्मं[2]। नेक्खम्मं ति पठमज्झानं। एवसद्दो पुब्बपदे वुत्तो पि उत्तरपदे इच्छितब्बो ति ञापेन्तो आह—उत्तरपदे पी ति आदि। उत्तरपदे पी ति पदं वत्तब्बो ति पदे आधारो। कस्मा वत्तब्बो ति आह—न हीति आदि। इतो ति कामच्छन्दतो। एस दट्ठब्बो ति एस[3] नियमो दट्ठब्बो। किं पन विविच्चा ति एत्थ सब्बविवेकसाधारणवचनतो सब्बे विवेका सङ्गहेतब्बा ति पुच्छं सन्धायाह—पदद्वये पि चा ति आदि। साधारणवचनेना ति सब्बविवेकसाधारणवचनेन। तदङ्गविवेकादयो ति तदङ्गविक्ख-म्भनसमुच्छेदपटिप्पस्सद्धिनिस्सरणविवेका। कायविवेकादयो ति कायचित्त-उपधिविवेका। तयो एव इध दट्ठब्बा ति तयो एव इध झानकथायं दट्ठब्बा। कस्मा? समुच्छेदविवेकादीनं असम्भवतो।

पदेना ति पदं सङ्गहिता ति पदे करणं। ये च वत्थुकामा निद्देसे[4] सारिपुत्तत्थेरेन वुत्ता। तत्थेवा ति निद्देसे एव। विभङ्गे ति झानविभङ्गे। सब्बकामानं गहणं किं पयोजनं ति आह—एवं हीति आदि। हि सच्चं, एवं उभयेसम्पि कामानं सङ्गहे सति। वत्थुकामेहि पी ति पिसद्दो विविच्चेवा ति[5] योजेतब्बो। तेना ति वत्थुकामविवेकेन कायविवेको वुत्तो होति। कस्मा?

---

१. पच्चनिक०—सी०। २-२. नत्थि—म०। ३. एसो—सी०। ४. ०महानिद्देसे—सी०। ५. पी ति—सी०।

परिच्चागो, दुतियेन किलेसकामेहि विवेकवचनतो नेक्खम्मसुखपरिग्गहो विभावितो होति।

एवं वत्थुकाम-किलेसकामविवेकवचनतो येव च एतेसं पठमेन संकिलेसवत्थुप्पहानं, दुतियेन संकिलेसप्पहानं; पठमेन लोलभावस्स हेतुपरिच्चागो, दुतियेन बालभावस्स; पठमेन पयोगसुद्धि, दुतियेन आसयपोसनं विभावितं होती ति पि ञातब्बं। एस ताव नयो 'कामेही' ति एत्थ वुत्तकामेसु वत्थुकामपक्खे। किलेसकामपक्खे पन 'छन्दो ति च रागो' ति च एवमादीहि अनेकभेदो कामच्छन्दो येव कामो ति अधिप्पेतो। सो च अकुसलपरियापन्नो पि समानो "तत्थ कतमो कामच्छन्दो कामो?', [तु० विभ० ३०८] ति आदिना नयेन **विभंगे** झानंगपटिपक्खतो विसुं वुत्तो। किलेसकामत्ता वा पुरिमपदे वुत्तो, अकुसलपरियापन्नत्ता दुतियपदे। अनेकभेदतो च'स्स 'कामतो' ति अवत्वा 'कामेही' ति वुत्तं।

अञ्ञेसं पि च धम्मानं अकुसलभावे विज्जमाने "तत्थ कतमे अकुसला धम्मा? कामच्छन्दो" [विभ० ३०८] ति आदिना नयेन **विभंगे** उपरिज्झानङ्गपच्चनीकपटिपक्खभावदस्सनतो नीवरणानेव वुत्तानी ति। नीवरणानि हि झानङ्गपच्चनीकानि। तेसं झानङ्गानेव पटिपक्खानि, विद्धंसकानि, विघातकानी ति वुत्तं होति। तथा हि

पुत्तदारादिपरिग्गहविवेकदीपनतो। पुरिमेना ति कायविवेकेन। एत्था ति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहीति एतस्मिं पदद्वये।

इतो वा पदद्वयतो (१३५-सी०) निद्धारिते विवेकद्वये। दुतियेना ति चित्तविवेकेन। एतेसं ति यथावुत्तानं द्विन्नं पदानं, निद्धारणे छट्ठी। संकिलेसवत्थुपहानं ति तण्हादिसंकिलेसानं वत्थुनो पहानं। लोलभावस्सा ति तत्थ तत्थ रूपादीसु तण्हुप्पादस्स। हेतू ति वत्थुकामा। बालभावस्स हेतुपरिच्चागो ति सम्बन्धो। बालभावो ति अविज्जा दुच्चिन्तितादि[1] वा। हेतू ति अयोनिसो मनसिकारो सब्बे पि वा अकुसला धम्मा। आसयपोसनं ति अज्झासयविसोधनं। वत्थुकामेसू ति[2] निद्धारणे भुम्मं। कामच्छन्दो येवा ति एवसद्देन न[3] कत्तुकम्यताछन्दो[4] नापि[4] कुसलच्छन्दो ति ञापेति, सो[5] ति कामो[5] वुत्तो ति पदे कम्मं। अकुसलपरियापन्नो पी ति विविच्च (११३-म०) अकुसलेहीति एत्थ वुत्तेसु अकुसलेसु अन्तोगधे पि, झानपटिपक्खतो ति झानस्स पटिपक्खभावतो, वुत्तो ति पदे हेतु। यदि किलेसकामो व पुरिमपदेन वुत्तो तं कथं बहुवचनं ति आह—अनेकभेदतो ति आदि। अस्सा ति किलेसकामस्स।

अञ्ञेसम्पि[6] चा ति[6] दिट्ठिमान-अहिरिकानोत्तप्पादीनं तंसङ्गहितफस्सादीनञ्च। विज्जमाने ति पदं वुत्तानीति पदे लक्खणक्रिया। उपरिझानङ्गपच्चनीकपटिपक्खभावस्स

---

१. दुच्चिवन्तितचिन्तितादि–सी०। २. कामेसू ति–सी०। ३. नत्थि–सी०। ४-४. कत्तुकम्यताछन्देनापि-सी०। ५-५. नत्थि–म०। ६-६. अञ्ञेसं पटिच्चा ति–सी०।

"समाधि कामच्छन्दस्स पटिपक्खो, पीति ब्यापादस्स, वितक्को थीनमिद्धस्स, सुखं उद्धच्चकुक्कुच्चस्स, विचारो विचिकिच्छाया" ति पेटके वुत्तं।

एवमेत्थ 'विविच्चेव कामेही' ति इमिना कामच्छन्दस्स विक्खम्भनविवेको वुत्तो होति। 'विविच्च अकुसलेहि धम्मेही' ति इमिना पञ्चन्नं पि नीवरणानं। अगहितग्गहणेन पन पठमेन कामच्छन्दस्स, दुतियेन सेसनीवरणानं; तथा पठमेन तीसु अकुसलमूलेसु पञ्चकामगुणभेदविसयस्स लोभस्स, दुतियेन आघातवत्थुभेदादिविसयानं दोसमोहानं। ओघादीसु वा धम्मेसु पठमेन कामोघ-कामयोग-कामासव-कामुपादान-अभिज्झाकायगन्थ-कामरागसंयोजनानं, दुतियेन अवसेस-ओघ-योगासव-उपादान-गन्थ-संयोजनानं। पठमेन च तण्हाय तं-सम्पयुत्तकानं च, दुतियेन अविज्जाय तं-सम्पयुत्तकानं च। अपि च पठमेन लोभसम्पयुत्त-अट्ठचित्तुप्पादानं, दुतियेन सेसानं चतुन्नं अकुसलचित्तुप्पादानं विक्खम्भनविवेको वुत्तो होती ति वेदितब्बो। अयं ताव 'विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेही' ति एत्थ अत्थप्पकासना।

एत्तावता पठमस्स झानस्स पहानङ्गं दस्सेत्वा इदानि सम्पयोगङ्गं दस्सेतुं **सवितक्कं सविचारं** ति आदि वुत्तं। तत्थ हेट्ठा वुत्तलक्खणादिविभागेन अप्पनासम्पयोगतो रूपावचरभावप्पत्तेन वितक्केन चेव विचारेन च सह वत्तति। रुक्खो विय पुप्फेन फलेन चा ति इदं झानं सवितक्कं सविचारं ति वुच्चति। **विभंगे** पन "इमिना

दस्सनतो ति सवितक्कसविचारं ति आदिना उपरि वुच्चमानझानङ्गानि उपरिझानङ्गानि। उपरिझानङ्गानं अत्तनो पच्चनीकानं पटिपक्खभावो उपरिझानङ्गपच्चनीकपटिपक्खभावो। उपरि···प०···दस्सनं। ततो उपरिझानङ्गानं अत्तनो पच्चनीकानं पटिपक्खभावदस्सनतो ति अत्थो। उपरिझानङ्गानं पच्चनीयपटिपक्खभावदस्सनतो ति पाठो। उपरिवुच्चमानझानङ्गानं उजुविपच्चनीकवसेन पटिपक्खभावदस्सनतो ति अत्थो। झानङ्गपच्चनीकतो ति झानङ्गानं पच्चनीकानि। पेटके ति महाकच्चायनत्थेरेन देसिता पिटकानं संवण्णना पेटकं।

एत्थ एतस्मिं पेटके। विक्खम्भनविवेको वुत्तो ति पदं नीवरणतो झानङ्गानं पच्चनीकानं ति आदीसु योजेतब्बं। अकुसलमूलेसू ति निद्धारणं। आघातवत्थुभेदादीति आदिसद्देन दुक्खादि-पुब्बन्तादि-भेदविसयस्स गहणं।

पहानङ्गं ति पहानस्स अङ्गं अवयवं। तत्था ति सवितक्कं ति आदिवचने[1] विनिच्छयो वेदितब्बो। वुत्त···प०···विभागेना ति[2] पदं वितक्केन चेव विचारेन चा ति पदद्वयस्स[2] विसेसनं, (१३६–सी०) पुग्गलाधिट्ठाना देसना कता। कस्मा? झानभावनाय पुग्गलवसेन देसितब्बत्ता झानसमङ्गिनो वितक्कविचारसमङ्गितादस्सनस्सेव[3] सवितक्कसविचारा वुत्ता ति

---

१. वचने–सी०। २. नत्थि–म०। ३. ०दस्सनेन झानस्सेव–सी०।

च वितक्केन इमिना च विचारेन उपेतो होति समुपेतो होती" [विभ० ३०९] ति आदिना नयेन पुग्गलाधिट्ठाना देसना कता। अत्थो पन तत्रा पि एवमेव दट्ठब्बो। **विवेकजं** ति—एत्थ विवित्ति विवेको। नीवरणविगमो ति अत्थो। विवित्तो ति वा विवेको, नीवरणविवित्तो झानसम्पयुत्तधम्मरासी ति अत्थो। तस्मा विवेका, तस्मिं वा विवेके, जातं ति विवेकजं।

पीतिसुखं ति—एत्थ पीतिसुखानि हेट्ठा पकासितानेव। तेसु वुत्तप्पकाराय पञ्चविधाय पीतिया अप्पनासमाधिस्स मूलं हुत्वा वड्ढमाना समाधिसम्पयोगं गता फरणा पीति—अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता पीती ति। अयं च पीति इदं च सुखं अस्स झानस्स, अस्मिं वा झाने अत्थी ति इदं झानं पीतिसुखं ति वुच्चति। अथ वा पीति च सुखं च पीतिसुखं, धम्मविनयादयो विय। विवेकजं पीतिसुखमस्स झानस्स, इमस्मिं वा झाने, अत्थी ति एवं पि विवेकजं पीतिसुखं। यथेव हि झानं एवं पीतिसुखं पेत्थ विवेकजमेव होति। तं च'स्स अत्थि। तस्मा एकपदेनेव 'विवेकजपीतिसुखं' ति पि वुत्तं युज्जति। **विभंगे** पन "इदं सुखं इमाय पीतिया सहगतं" [विभ० ३०९] ति आदिना नयेन वुत्तं। अत्थो पन तत्था पि एवमेव दट्ठब्बो।

पठमं झानं ति—एत्थ गणनानुपुब्बता **पठमं**। पठमं उप्पन्नं ति पि पठमं। पठमं समापज्जितब्बं ति पि पठमं। इदं पन न एकन्तलक्खणं। चिण्णवसीभावो हि अट्ठसमापत्तिलाभी आदितो पट्ठाय मत्थकं पापेन्तो पि समापज्जितुं सक्कोति। मत्थकतो पट्ठाय आदिं पापेन्तो पि समापज्जितुं सक्कोति। अन्तरन्तरा ओक्कमन्तो पि सक्कोति। एवं पुब्बुप्पत्तियट्ठेन पन पठमं नाम होति। **झानं** ति दुविधं झानं—आरम्मणूपनिज्झानं लक्खणूपनिज्झानं ति। तत्थ अट्ठसमापत्तियो पठवीकसिणादि-आरम्मणं उपनिज्झायन्ती ति आरम्मणूपनिज्झानं ति संखं गता। विपस्सनामग्ग-फलानि पन लक्खणूपनिज्झानं नाम। तत्थ विपस्सना अनिच्चादिलक्खणस्स उप-

---

आह—अत्थो पन····प०···दट्ठब्बो ति। तत्रा पी ति विभङ्गे विवेकसद्दस्स भावसाधनतं सन्धा-याह[1]—तस्मा विवेका ति। तस्मा विवेका ति पदं जातं ति पदे हेतु। विवेकसद्दस्स कत्तुसाध-नतं सन्धायाह—तस्मिं विवेके ति।

तेसु पीतिसुखेसु। पीतिया ति निद्धारणं। या फरणा पीति। पीति च सुखं च पीति-सुखं[2] अस्स झानस्स अस्मिं वा झाने अत्थीति[2] पीतिसुखं। **सद्धादितो णा** ति (क० ३७२) सुत्तेन णो। यथेव हि झानं विवेकजं। एत्था ति झाने। तं चस्सा ति तं पीतिसुखं अस्स झानस्स। तत्था[3] ति विभङ्गे[3]।

एत्था[4] ति द्वीसु पदेसु[4]। गणनानुपुब्बिताया ति पि पाठो। इदं ति पठमं समापज्जि-तब्बं ति पि पठमं ति इदं वचनं। तत्था ति आरम्मणूपनिज्झानादीसु। तत्था ति विपस्सना-

१. सन्धाय–म०। २-२. नत्थि–म०। ३-३. नत्थि–म०। ४-४. नत्थि–म०।

निज्झानतो लक्खणूपनिज्झानं। विपस्सनाय कतकिच्चस्स मग्गेन इज्झनतो मग्गो लक्खणूपनिज्झानं। फलं पन निरोधसच्चं तथलक्खणं उपनिज्झायती ति लक्खणूपनिज्झानं नाम। तेसु इमस्मिं अत्थे आरम्मणूपनिज्झानं अधिप्पेतं। तस्मा आरम्मणूपनिज्झानतो पच्चनीकज्झापनतो वा झानं ति वेदितब्बं।

उपसम्पज्जा ति उपगन्त्वा, पापुणित्वा ति वुत्तं होति। उपसम्पादयित्वा वा निप्फादेत्वा ति वुत्तं होति। **विभंगे** पन "उपसम्पज्जा ति पठमस्स झानस्स लाभो पटिलाभो पत्ति सम्पत्ति फुसना सच्छिकिरिया उपसम्पदा" [विभ० ३०९] ति वुत्तं। तस्सा पि एवमेव'त्थो दट्ठब्बो। **विहरती** ति तदनुरूपेन इरियापथविहारेन इतिवुत्तप्पकारज्झानसमङ्गी हुत्वा अत्तभावस्स इरियनं वुत्ति पालनं यपनं यापनं चारं विहारं अभिनिप्फादेति। वुत्तं हेतं **विभंगे**—"विहरती ति इरियति वत्तति पालेति यपेति यापेति चरति विहरति, तेन वुच्चति विहरती" [विभ० २९६; ३०९] ति। **पठवीकसिणं** ति एत्थ पठवीमण्डलं पि सकलट्ठेन पठवीकसिणं ति वच्चति। तं निस्साय पटिलद्धनिमित्तं पि। निमित्ते पटिलद्धज्झानं पि। तत्थ इमस्मिं अत्थे झानं पठवीकसिणं ति वेदितब्बं। पठवीकसिणसंखातं झानं उपसम्पज्ज विहरती ति अयं हेत्थ संखेपत्थो।

इमस्मिं पन पठवीकसिणे परिकम्मं कत्वा चतुक्कपञ्चकज्झानानि निब्बत्तेत्वा झानपदट्ठानं विपस्सनं वड्ढेत्वा अरहत्तं पत्तुकामेन कुलपुत्तेन किं कातब्बं ति? आदितो ताव **पा**तिमोक्खसंवर-इन्द्रियसंवर-आजोवपारिसुद्धि-पच्चयसंनिस्सितसंखातानि चत्तारि सीलानि विसोधेत्वा सुपरिसुद्धे सीले पतिट्ठितेन, य्वास्स आवासादीसु

मग्गफलेसु। तथलक्खणं ति अविपरीतसभावं। तेसू ति आरम्मणूपनिज्झानादीसु। पच्चनीकझापनतो ति नीवरणादिविपच्चनीकधम्मानं[1] दहनतो विक्खम्भनवसेन च[2] पजहनतो[2] ति अत्थो।

उपसम्पज्जा ति एत्थ उप-सं-सद्दानं उपलब्भतीति आदीसु विय निरत्थकता ति दस्सेतुं (११४–म०) उपगन्त्वा ति आदिं वत्वा पुन उपसंसद्दानं सात्थकभावं दस्सेतुं उपसम्पादयित्वा वा ति आदि वुत्तं। तस्सा[3] पी ति विभङ्गे वुत्तस्स उपसम्पज्जा ति वचनस्स। तदनुरूपेना[4] ति तस्स झानस्स अनुरूपेन[4]। वुत्ति पि आदीनि वेवचनानि। तं[5] ति पठमकसिणं[5]। पटिलद्धझानं पि पथवीकसिणं ति वुच्चतीति सम्बन्धो। तत्था ति पथवीमण्डलनिमित्तझानेसु। अयं[6] संखेपत्थो[6]। एत्था ति पथवीकसिणं ति वचने, पठमज्झानाधिकारे[7] वा[7]।

किं कातब्बं ति पुच्छा सिया ति योजना। य्वास्सा[8] ति अस्स कुलपुत्तस्स यो अयं[9] पलिबोधो अत्थि। आवासादीसु दससू ति—

---

१. नीवरणादीनं विपच्च०–सी०। २-२. जहनतो–म०। ३. तस्स–म०। ४-४. नत्थि–म०। ५-५. नत्थि–म०। ६-६. नत्थि–म०। ७-७. नत्थि–म०। ८. यस्सा–म०। ९. नत्थि–म०।

दससु पलिबोधेसु पलिबोधो अत्थि, तं उपच्छिन्दित्वा कम्मट्ठानदायकं कल्याणमित्तं उपसङ्कमित्वा पालिया आगतेसु अट्ठतिंसाय कम्मट्ठानेसु अत्तनो चरियानुकूलं कम्मट्ठानं उपपरिक्खन्तेन सचस्स इदं पठवीकसिणं अनुकूलं होति, इदमेव कम्मट्ठानं गहेत्वा झानभावनाय अननुरूपं विहारं पहाय अनुरूपे विहारे विहरन्तेन दुक्खपलिबोधुपच्छेदं कत्वा कसिणपरिकम्मनिमित्तानुरक्खण-सत्त-असप्पायपरिवज्जन-सत्तसप्पायसेवन-दसविध-अप्पनाकोसल्लप्पभेदं सब्बं भावनाविधानं अपरिहापेन्तेन ञाणाधिगमत्थाय पटिपज्जितब्बं। अयमेत्थ संखेपो। वित्थारो पन **विसुद्धिमग्गे** वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। यथा चेत्थ एवं इतो परेसु पि। सब्बकम्मट्ठानानं हि भावनाविधानं सब्बं अट्ठकथानयेन गहेत्वा **विसुद्धिमग्गे** वित्थारितं। किं तेन तत्थ तत्थ पुन वुत्तेना ति न तं पुन वित्थारयाम। पालिया पन हेट्ठा अनागतं अत्थं अपरिहापेत्वा निरन्तरं अनुपदवण्णनमेव करिस्साम।

आवासो च कुलं लाभो गणं कम्मं च पञ्चमं।
अद्धानं ञाति आबाधो गन्थो इद्धीति ते दसा ति।।
(विसु० ३ : ७३ बौ० भा०)

सचस्सा ति अस्स कुलपुत्तस्स सचे होति। खुद्दकपलिबोधुपच्छेदकं कत्वा ति—

दीघा केसा नखा लोमा छिन्दितब्बा च[1] योगिना।
चीवरं रज्जितब्बं तं किलिट्ठं तु सचे सिया[1]।
सचे पत्ते मलं होति पचितब्बो च सुट्ठु सो ति॥

कसिणपरिकम्मं च (१३७–सी०) निमित्तं च कसिणपरिकम्मनिमित्तानि। तेसं अनुरक्खणं च सत्त-असप्पायपरिवज्जनं च[2] सत्तसप्पायसेवनं च दसविधं अप्पनाकोसल्लं च कसिण····प०····सल्लं। तं-पभेदो यस्स तं कसिण····प०····कोसल्लप्पभेदं। तं[3] सत्त-असप्पायपरिवज्जनं ति—

आवासो गोचरो भस्सं पुग्गलो भोजनं उतु।
इरियापथो ति सत्तेते असप्पाये विवज्जये॥
सप्पाये सत्त सेवेथ एवं हि पटिपज्जतो।
नचिरेनेव कालेन होति भिक्खुस्स अप्पना ति॥
(विसु० ४ : १०२ बौ० भा०)

एत्था ति ठाने[4]। एत्था ति[4] पठमज्झाने। परेसु पी ति[5] दुतियज्झानादीसु। किं[6] पयोजनं[6], तेना ति भावनाविधानेन। तं ति भावनाविधानं।

१-१. तिचीवरं रज्जितब्बं किलिट्ठन्तु–म०। २. वज्जनञ्च–म०। ३. नत्थि–म०। ४-४. नत्थि–म०। ५. परेसू ति–म०। ६-६. नत्थि–म०।

तस्मि समये ति तस्मिं पठमज्झानं उपसम्पज्ज विहरणसमये। **फस्सो होति**···प०···**अविक्खेपो होती** ति इमे कामावचर-पठमकुसलचित्ते वुत्तप्पकारा व पदपटिपाटिया छप्पण्णास धम्मा होन्ति। केवलं हि ते कामावचरा, इमे भुम्मन्तरवसेन महग्गता रूपावचरा ति अयमेत्थ विसेसो। सेसं तादिसमेव। ये-वा-पनका पनेत्थ छन्दादयो चत्तारो व लब्भन्ति। कोट्ठासवार-सुञ्ञतवारा पाकतिका एवा ति।

पठमं।

दुतियज्झाननिद्देसे [§१६१ **वितक्कविचारानं वूपसमा** [§१६१] ति वितक्कस्स च विचारस्स चा ति इमेसं द्विन्नं वूपसमा, समतिक्कमा; दुतियज्झानक्खणे अपातुभावा ति वुत्तं होति। तत्थ किञ्चा पि दुतियज्झाने सब्बे पि पठमज्झानधम्मा न सन्ति, अञ्ञे येव हि पठमज्झाने फस्सादयो अञ्ञे इध, ओळारिकस्स पन ओळारिकस्स अङ्गस्स समतिक्कमा पठमज्झानतो परेसं दुतियज्झानादीनं अधिगमो होती ति दीपनत्थं वितक्कविचारानं वूपसमा ति एवं वुत्तं ति वेदितब्बं। **अज्झत्तं** ति—नियकज्झत्तं अधिप्पेतं। **विभंगे** पन "अज्झत्तं पच्चत्तं" [विभ० ३१०] ति एत्तकमेव वुत्तं। यस्मा नियकज्झत्तं अधिप्पेतं, तस्मा अत्तनो सन्ताने जातं, अत्तनो सन्ताने निब्बत्तं ति अयमेत्थ अत्थो।

सम्पसादनं ति सम्पसादनं वुच्चति सद्धा। सम्पसादनयोगतो झानं पि सम्पसादनं, नीलवण्णयोगतो नीलवत्थं विय। यस्मा वा तं झानं सम्पसादन-समन्नागतत्ता

एत्था ति पठमज्झाने।

पठमज्झानं निट्ठितं।

द्विन्नं[1] ति धम्मानं। अपातुभावा ति अनुप्पादा ति अत्थो[1]। ननु च दुतियज्झाने सब्बेसं पि पठमज्झानधम्मानं वूपसमो, अथ किमत्थं दुतियज्झाने वितक्कविचारानमेव वूपसमो वुत्तो ति चोदनं सन्धायाह—तत्थ किञ्चा पी ति आदि। तत्था ति दुतियज्झाननिद्देसे। तत्था ति दुतियज्झाननिद्देसे, वुत्तं ति पदे आधारो। किञ्चा[2] पी ति न सन्ति[2], अञ्ञे इधा ति इध दुतियज्झाने अञ्ञे फस्सादयो। दीपनत्थं ति ञापनत्थं[3]। नियकज्झत्तं (११५–म०) अधिप्पेतं न[4] अज्झत्तज्झत्तादीति अधिप्पायो। धम्मसङ्गणियं अज्झत्तं ति एत्तकमेव वुत्तं, विभङ्गे पन किं वुत्तं ति आह विभङ्गे पना ति आदि। पनसद्दो विसेसत्थो। यं पन अज्झत्तं ति नियकज्झत्तं अधिप्पेतं, न अज्झत्तज्झत्तादीति दस्सेन्तो आह अज्झत्तं ति नियकज्झत्तं अधिप्पेतं ति। तत्थ कारणमाह विभङ्गे पना ति आदि। पनसद्दो अपिसद्दत्थो, विभङ्गे पी ति अत्थो। अयमेव पाठो ति सारत्थदीपनियं विनयटीकाकारेन[5] सारिपुत्तत्थेरेन वुत्तं। तं[6] वीमंसित्वा गहेतब्बं। एत्था ति अज्झत्तं ति वचने।

इमस्मिं अत्थविकप्पे सम्पसादयतीति इमस्मिं पक्खे। चेतसो ति पदं सम्पसादनं ति

१-१. नत्थि–म०। २-२. नत्थि–म०। ३. ०इधा ति दुतियझाने–सी०। ४. नत्थि–सी०। ५. टीकाकारेन–सी०। ६. तं पि–सी०।

वितक्कविचारक्खोभवूपसमेन च चेतो सम्पसादयति, तस्मा सम्पसादनं ति वुत्तं। इमस्मिं च अत्थविकप्पे 'सम्पसादनं **चेतसो**' ति एवं पदसम्बन्धो वेदितब्बो। पुरिमस्मिं पन अत्थविकप्पे 'चेतसो' ति एतं एकोदिभावेन सद्धिं योजेतब्बं। तत्रायं अत्थयोजना—एको उदेती ति **एकोदि**, वितक्कविचारेहि अनज्झारूळ्हत्ता अग्गो सेट्ठो हुत्वा उदेती ति अत्थो। सेट्ठो पि हि लोके एको ति वुच्चति। वितक्कविचारविरहितो वा एको असहायो हुत्वा ति पि वत्तुं वट्टति। अथ वा सम्पयुत्तधम्मे उदायती ति उदि। उट्ठापेती ति अत्थो। सेट्ठट्ठेन एको च सो उदि चा ति एकोदि। समाधिस्सेतं अधिवचनं। इति इमं एकोदिं भावेति वड्ढेती ति इदं दुतियज्झानं एकोदिभावं। सो पनायं एकोदि यस्मा चेतसो, न सत्तस्स, न जीवस्स, तस्मा एतं 'चेतसो एकोदिभावं' ति वुत्तं।

'ननु चायं सद्धा पठमज्झाने पि अत्थि, अयं च एकोदिनामको समाधि, अथ कस्मा इदमेव सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं चा ति वुत्तं ति ? वुच्चते—'अदुं हि पठमज्झानं वितक्कविचारक्खोभेन वीचितरंगसमाकुलमिव जलं न सुप्पसन्नं होति, तस्मा सतिया पि सद्धाय 'सम्पसादनं' ति न वुत्तं। न सुप्पसन्नत्ता येव चेत्थ समाधि पि न सुट्ठु पाकटो। तस्मा एकोदिभावं ति पि न वुत्तं। इमस्मिं पन झाने वितक्कविचारपलिबोधाभावेन लद्धोकासा बलवती सद्धा, बलवसद्धासहायपटिलाभेनेव समाधि पि पाकटो। तस्मा इदमेव एवं वुत्तं ति वेदितब्बं। **विभंगे** पन "सम्पसादनं ति या सद्धा सद्दहना ओकप्पना अभिप्पसादो; चेतसो एकोदिभावं ति या चित्तस्स ठिति सण्ठिति····प०····सम्मासमाधी" [विभ० ३१०] ति एत्तकमेव वुत्तं। एवं वुत्तेन पनेतेन सद्धिं अयं अत्थवण्णना यथा न विरुज्झति अञ्ञदत्थु संसन्दति चेव समेति च, एवं वेदितब्बा।

(१३८–सी०) पदे कम्मं। पुरिमस्मिं ति सम्पसादनयोगतो[1] झानम्पि[1] सम्पसादनं ति पक्खे। चेतसो ति एकोदिभावं ति पदे सामि, एतं[2] वचनं[2]। तत्रा ति चेतसो एकोदिभावं ति वचने। एकोदीति[3] समाधि[3]। वितक्कविचारेहीति पदं अनज्झारूळ्हत्ता ति पदे कत्ता, न अधिरूळ्हभावतो ति अत्थो। इति पी ति इति पि अत्थो। इतीति[4] एवं[4]। इतीति तस्मा। एतं ति दुतियझानं[5]।

चोदनं ठपेन्तो आह ननु चायं ति आदि। पनसद्दो विसेसत्थो। अयं च समाधि पठमझाने अत्थि। इदमेवा ति दुतियझानं। अदुं हीति हि सच्चं, अदुं पठमझानं। वितक्कविचारक्खोभेना ति वितक्कविचारेहि खोभेन, न सुप्पसन्नं ति पदे हेतु। एत्था[6] ति पठमज्झाने समाधि पि न सुट्ठु पाकटो होति, एत्तकमेव वचनं[6]। एवं वुत्तेना ति सद्धाचित्तेकग्गतानं एवं सद्दहना ति आदिना पवत्ति-आकारविसेसभावनवसेन वुत्तेन एतेन विभङ्गपाठेन। अयं अत्थवण्णना ति सम्पसादनयोगतो सम्पसादनं। एकोदि भावेतीति एकोदिभावं ति झानं वुत्तं ति एवं

१-१. सम्पसादनयोगझानं पि–म०। २-२. नत्थि–म०। ३-३. नत्थि–म०। ४-४. नत्थि–सी०। ५. झानं–म०। ६-६. नत्थि–म०।

अवितक्कं अविचारं ति भावनाय पहीनत्ता एतस्मिं एतस्स वा वितक्को नत्थी ति अवितक्कं। इमिना व नयेन अविचारं। **विभंगे** पि वुत्तं—"इति अयं च वितक्को अयं च विचारो सन्ता होन्ति समिता वूपसन्ता अत्थंगता अब्भत्थंगता अप्पिता ब्यप्पिता सोसिता विसोसिता ब्यन्तिकता, तेन वुच्चति अवितक्कं अविचारं" [विभ० ३१०] ति। एत्थाह—ननु च वितक्कविचारानं वूपसमा ति इमिना पि अयमत्थो सिद्धो? अथ कस्मा पुन 'वुत्तं अवितक्कं अविचारं' ति? वुच्चते—एवमेतं, सिद्धो' वायमत्थो, न पनेतं तदत्थदीपकं। ननु अवोचुम्ह—'ओळारिकस्स पन ओळारिकस्स अङ्गस्स समतिक्कमा पठमज्झानतो परेसं दुतियज्झानादीनं समधिगमो होती ति दस्सनत्थं वितक्कविचारानं वूपसमा ति एवं वुत्तं'ति।

अपि च वितक्कविचारानं वूपसमा इदं सम्पसादनं, न किलेसकालुस्सियस्स; वितक्कविचारानं च वूपसमा एकोदिभावं, न उपचारज्झानमिव नीवरणप्पहाना; न पठमज्झानमिव च अङ्गपातुभावा ति एवं सम्पसादन-एकोदिभावानं हेतुपरिदीपकमिदं वचनं। तथा वितक्कविचारानं वूपसमा इदं अवितक्कं अविचारं, न ततियचतुत्थज्झानानि विय, चक्खुविञ्ञाणादीनि विय च, अभावा ति एवं अवितक्काविचारभावस्स हेतुपरिदीपकं च, न वितक्कविचाराभावमत्तपरिदीपकं। वितक्कविचारा-

---

पवत्त-अत्थवण्णना। विभङ्गपाठेन सद्धिं इमिस्सा अत्थवण्णनाय अविरोधो येन सम्पसादनेन योगा ति आदिना टीकाकार-आनन्दाचरियेन वुत्तो।

सन्ता ति समं निरोधं गता। समिता ति भावनाय समं गमिता निरोधिता। वूपसन्ता ति ततो[1] एव सुट्ठु वूपसन्ता। अत्थङ्गता ति विनासं गता। अब्भत्थङ्गता उपसग्गेन पदं वड्ढितं[2]। ब्यप्पिता ति[3] विनासं गमिता। सोसिता ति सोसं[4] सुक्खभावं इता गता[4]। ब्यन्तीकता ति विहनिकता। एत्थाहा ति अवितक्कं अविचारं ति वचने चोदको आह। इमिना[5] च पदेन[5]। अयमत्थो ति भावनाय पहीनत्ता वितक्कविचारानं अभावसंखातो अत्थो। चोदकेन वुत्तमत्थं सम्पटिच्छन्तो आह—एवमेतं[6] सिद्धो वायमत्थो ति। एतं ति वितक्कविचारानं वूपसमा ति एतं वचनं। अथवा एवमेतं निपातसमुदायो, एवमेवा ति अत्थो। चोदकेन परिहरन्तो[7] (११६-म०) आह—न पनेतं ति आदि। एतं ति वितक्कविचारानं वूपसमा ति वचनं। तदत्थदीपकं ति[8] वितक्कविचाराभावमत्तसंखातस्स[9] अत्थस्स दीपकं।

अपि चा ति अञ्ञं वचनं वत्तब्बं अत्थि[10] न किलेसकालुस्सियस्स[11] वूपसमा इदं झानं[12] न उपचारज्झानं (१३९-सी०) इव नीवरणप्पहाना इदं एकोदिभावं, न पठमज्झानं इव च वितक्कादि-अङ्गपातुभावा इदं एकोदिभावं ति सम्बन्धो। चसद्दो नीवरणप्पहाना च अङ्ग-

---

१. गतो–सी०। २. वुत्तं–सी०। ३. ०वि अप्पिता–सी०। ४-४. सोसभावं इता नेता–म०। ५-५. नत्थि–म०। ६. एवमेवं–म०। ७. वुत्तमत्थं परि०–सी०। ८. ०तस्स–सी०। ९. वितक्कविचारभाव०–सी०। १०. नत्थि–सी०। ११. कालुस्सयस्स–सी०। १२. सम्पसादनं–सी०।

भावमत्तपरिदीपकमेव पन अवितक्कं अविचारं ति इदं वचनं, तस्मा पुरिमं वत्वा पि पुन वत्तब्बमेवा ति।

समाधिजं ति पठमज्झानसमाधितो सम्पयुत्तसमाधितो वा जातं ति अत्थो। तत्थ किञ्चा पि पठमं पि सम्पयुत्तसमाधितो जातं, अथ खो अयमेव समाधि 'समाधी' ति वत्तब्बतं अरहति, वितक्कविचारक्खोभविरहेन अतिविय अचलत्ता सुप्पसन्नत्ता च। तस्मा इमस्स वण्णभणनत्थं इदमेव समाधिजं ति वुत्तं। **पीतिसुखं** ति इदं वुत्तनयमेव। **दुतियं** ति गणनानुपुब्बता दुतियं। इदं दुतियं समापज्जती ति पि दुतियं। **तस्मिं समये फस्सो होती** ति आदीसु झानपञ्चके वितक्कविचारपदानि परिहीनानि मग्गपञ्चके च सम्मासङ्कप्पपदं परिहीनं। तेसं वसेन सविभत्तिकाविभत्तिकपदविनिच्छयो वेदितब्बो। कोट्ठासवारे पि **तिवङ्गिकं झानं होति, चतुरंगिको मग्गो होती** [§ १६१] ति आगतं। सेसं पठमज्झानसदिसमेवा ति।

दुतियं।

ततियज्झाननिद्देसे [§ १६३] **पीतिया च विरागा** ति विरागो नाम वुत्तप्पकाराय पीतिया जिगुच्छनं वा समतिक्कमो वा। उभिन्नं पन अन्तरा 'च'–सद्दो सम्पिण्डनत्थो। सो वूपसमं वा सम्पिण्डेति वितक्कविचारानं वूपसमं वा। तत्थ यदा वूपसममेव सम्पिण्डेति तदा पीतिया विरागा च, किञ्च भिय्यो 'वूपसमा' चा ति एवं योजना वेदितब्बा। इमिस्सा च योजनाय विरागो जिगुच्छनत्थो होति। तस्मा पीतिया जिगुच्छना च वूपसमा चा ति अयमत्थो दट्ठब्बो। यदा पन वितक्कविचारानं वूपसमं सम्पिण्डेति तदा पीतिया च विरागा किञ्च भिय्यो 'वितक्कविचारानं च वूपसमा' ति एवं योजना वेदितब्बा। इमिस्सा च योजनाय विरागो समतिक्कमनत्थो होति, तस्मा पीतिया च समतिक्कमा वितक्कविचारानं च वूपसमा ति अयमत्थो दट्ठब्बो।

पातुभावा चा ति योजेतब्बो। इतीति[1] तस्मा इदं वचनं वितक्कविचारानं वूपसमा ति इदं वचनं। इदं ति दुतियज्झानं[1]।

पठमज्झानसमाधितो ति उपनिस्सयपच्चयभूततो पठमज्झानसमाधितो जातं। तत्था ति दुतियज्झानाधिकारे, वुत्तं ति पदे आधारो। पठमं पी ति पठमज्झानं पि अचलत्ता सुप्पसन्नत्ता चाति पदद्वयं अरहतीति पदे हेतु। इमस्सा ति दुतियज्झानस्स, वुत्तनयेनेव वेदितब्बं ति सम्बन्धो। पीतिसुखं ति इदं वुत्तनयेनेवा ति पि पाठो। तेसं[2] ति तेसं पदानं वसेन[2]।

दुतियज्झानं समत्तं।

उभिन्नं पन अन्तरा ति पीतिया विरागा ति उभिन्नं पदानं मज्झे। सम्पिण्डनं समुच्चयनं अत्थो यस्स सो सम्पिण्डनत्थो। सो ति सद्दो। तत्था ति तस्मिं सम्पिण्डनद्वये। किञ्च भिय्यो ति किञ्च विरागतो भिय्यो बाहुल्लेन। अत्थि किं ति पदं अत्थीति पदे कत्ता।

१-१. नत्थि–म०। २–२. नत्थि–म०।

कामं चेते वितक्कविचारा दुतियज्झाने येव वूपसन्ता, इमस्स पन झानस्स मग्गपरिदीपनत्थं वण्णभणनत्थं च एतं वुत्तं। वितक्कविचारानं वूपसमा ति हि वुत्ते इदं पञ्ञायति—ननु वितक्कविचारवूपसमो मग्गो इमस्स झानस्सा ति ? यथा च ततिये अरियमग्गे अप्पहीनानं पि सक्कायदिट्ठादीनं "पंचन्नं ओरम्भागियानं संयोजनानं पहाना" [अं० १.२१५] ति एवं पहानं वुच्चमानं वण्णभणनं होति, तदधिगमाय उस्सुक्कानं उस्साहजननत्थं, एवमेव इध अवूपसन्तानं पि वितक्कविचारानं वूपसमो वुच्चमानो वण्णभणनं होति। तेनायमत्थो वुत्तो – 'पीतिया च समतिक्कमा वितक्कविचारानं च वूपसमा'ति।

उपेक्खको च विहरती ति—एत्थ उपपत्तितो इक्खती ति उपेक्खा। समं पस्सति, अपक्खपतिता हुत्वा पस्सती ति अत्थो। ताय विसदाय विपुलाय थामगताय समन्नागतत्ता ततियज्झानसमङ्गी उपेक्खको ति वुच्चति। उपेक्खा पन दसविधा होति—छळङ्गुपेक्खा ब्रह्मविहारुपेक्खा बोज्झङ्गुपेक्खा विरियुपेक्खा संखारुपेक्खा वेदनुपेक्खा विपस्सनुपेक्खा तत्रमज्झत्तुपेक्खा झानुपेक्खा पारिसुद्धि-उपेक्खा ति।

तत्थ या "इध खीणासवो भिक्खु चक्खुना रूपं दिस्वा नेव सुमनो होति, न दुम्मनो, उपेक्खको च विहरति सतो सम्पजानो" [अं० २.२१२; ३.१] ति एवमागता खीणासवस्स छसु द्वारेसु इट्ठानिट्ठछळारम्मणापाथे परिसुद्धपकतिभावाविजहनाकारभूता उपेक्खा, अयं 'छळङ्गुपेक्खा' नाम। या पन "उपेक्खासहगतेन चेतसा एकं दिसं फरित्वा विहरती" [दी० १.२१०] ति एवमागता सत्तेसु मज्झत्ताकारभूता

कामं[1] चा ति एकन्तेन[1]। एतं ति वितक्कविचारानं वूपसमा ति वचनं। वितक्कविचारानं वूपसमा ति हि[2] आदि वित्थारो। इदं[3] ति ततियज्झानं[3]। मग्गो ति इमस्स झानस्स अधिगमस्स उपायो। वुत्तमत्थं उपमाय साधेन्तो आह—यथा चा ति आदि। तदधिगमाया ति तस्स ततियमग्गस्स अधिगमाय उस्सुक्कानं पुग्गलानं। तेना ति तेन कारणेन।

उपपत्तितो ति समवाहितभावेन पटिरूपतो[4]। विसदाया ति संकिलेसविगमेन परिब्यत्ताय। विपुलाया ति सातिसयं महग्गतभावपत्तितो महतिया। थामगताया ति पीतिविगमेन थिरभावपत्ताय। ननु चेत्थ उपेक्खावेदना व न सम्भवति, तस्मा कथमयं[5] झानसमङ्गी उपेक्खाय समन्नागतत्ता उपेक्खको ति वुच्चतीति चोदनायं सति न केवलं (१४०–सी०) वेदनुपेक्खा ति[6] वुच्चति, अथ खो अञ्ञा पि उपेक्खा विज्जन्तीति दस्सेन्तो आह—उपेक्खा पना ति आदि।

तत्था ति तासु[7] दसविधासु उपेक्खासु या उपेक्खा ति योजना। इधा[8] ति सासने। अयं ति उपेक्खा। उपेक्खानिमित्तं ति निमित्तभूतं वीरियं[8]। अट्ठ संखारुपेक्खा ति पठमझानपटिलाभत्थाय नीवरणे पटिसंखा सन्तिट्ठना पञ्ञा संखारुपेक्खासु ञाणं, दुतियझानपटि-

---

१-१. नत्थि–म०। २. तं हि–सी०। ३-३. नत्थि–म०। ४. पतिरूपतो–म०। ५. कथं मयं–सी०। ६. वेदनुपेक्खा च उपेक्खा ति–सी०। ७. नत्थि–म०। ८-८. उपेक्खासु वीरियं–म०।

उपेक्खा, अयं 'ब्रह्मविहारुपेक्खा' नाम। या "उपेक्खासम्बोज्झङ्गं भावेति विवेकनिस्सितं" [म० १.११; सं० ३.३१७; ४.८४] ति एवमागता सहजातधम्मानं मज्झत्ताकारभूता उपेक्खा, अयं 'बोज्झङ्गुपेक्खा' नाम। या पन "कालेन कालं उपेक्खानिमित्तं मनसि करोती" [अं० १.२३८] ति एवमागता अनच्चारद्ध-नातिसिथिलविरियसंखाता उपेक्खा अयं 'विरियुपेक्खा' नाम। या "कति संखारुपेक्खा समाधिवसेन उप्पज्जन्ति, कति संखारुपेक्खा विपस्सनावसेन उप्पज्जन्ति? अट्ठ संखारुपेक्खा समाधिवसेन उप्पज्जन्ति, दस संखारुपेक्खा विपस्सनावसेन उप्पज्जन्ती" [पटि० १.७१] ति एवमागता नीवरणादि-पटिसंखासन्तिट्ठानगहणे मज्झत्तभूता उपेक्खा, अयं 'संखारुपेक्खा' नाम।

लाभत्थाय वितक्कविचारे पटिसंखा सन्तिट्ठना पञ्ञा संखारुपेक्खासु ञाणं। ततियझानपटिलाभत्थाय पीतिं पटिसंखा सन्तिट्ठना पञ्ञा संखारुपेक्खासु ञाणं। चतुत्थझानपटिलाभत्थाय सुखदुक्खे[1] (११७–म०) पटिसंखा[1] सन्तिट्ठना पञ्ञा संखारुपेक्खासु ञाणं। आकासानञ्चायतनसमापत्तिपटिलाभत्थाय रूपसञ्ञं पटिघसञ्ञं[2] पटिसंखा सन्तिट्ठना संखारुपेक्खासु ञाणं। विञ्ञाणञ्चायतनसमापत्तिपटिलाभत्थाय आकासानञ्चायतनसञ्ञं पटिसंखा सन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं, आकिञ्चञ्ञायतनसमापत्तिपटिलाभत्थाय विञ्ञाणञ्चायतनसञ्ञं पटिसङ्खा सन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं, नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसमापत्तिपटिलाभत्थाय आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञं पटिसंखा सन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं ति अट्ठ सङ्खारुपेक्खा समाधिवसेन उप्पज्जन्ति।

तत्थ नीवरणपटिसङ्खा ति पञ्च नीवरणानि पहातब्बभावेन पटिग्गहेत्वा ति अत्थो। सन्तिट्ठना ति नीवरणानं पहानाभिमुखीभूतत्ता तेसं पहाने पि अब्यापारभावूपगमनेन मज्झत्ताय सन्तिट्ठना। समं तिट्ठतीति सन्तिट्ठना। सङ्खारुपेक्खासू ति नीवरणप्पहाने ब्यापारकरणेन नीवरणसङ्खातानं सङ्खारानं उपेक्खासू ति अत्थो। एस नयो वितक्कविचारादीसु। दस सङ्खारुपेक्खा ति सोतापत्तिमग्गपटिलाभत्थाय उप्पादं पवत्तं निमित्तं आयूहनं पटिसन्धिं गतिं निब्बत्तिं[3] जातिं जरं ब्याधिं मरणं परिदेवं[4] उपायासं पटिसङ्खा सन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं, सोतापत्तिफलसमापत्तित्थाय उप्पादं पवत्तं निमित्तं आयूहनं पटिसन्धिं....प०[5].... पटिसङ्खा सन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं, सकदागामिमग्गपटिलाभत्थाय....प०.... सकदागामिफलसमापत्तित्थाय[6], अनागामिमग्गपटिलाभत्थाय (१४१–सी०), अनागामिफलसमापत्तित्थाय, अरहत्तमग्गपटिलाभत्थाय उप्पादं पवत्तं निमित्तं आयूहनं पटिसन्धिं....प०.... पेक्खासु ञाणं, अरहत्तफलसमापत्तित्थाय....प०....सुञ्ञतविहारसमापत्तित्थाय....प०....अनिमित्तविहारसमापत्तित्थाय[7] उप्पादं पवत्तं निमित्तं आयूहनं पटिसन्धिं पटिसङ्खा[8] सन्तिट्ठना पञ्ञा[8] सङ्खारुपेक्खासु ञाणं ति दस सङ्खारुपेक्खा विपस्सनावसेन उप्पज्जन्ति। नीवरणादि-

---

१-१. सुखदुक्खपटि०–सी०। २. नानत्तसञ्ञं-सी०। ३. उप्पत्तिं–सी०। ४. सोकं परि०–सी०। ५. नत्थि–सी०। ६. ०समापत्तत्थाय–सी० सब्बत्थ। ७. अनिमित्तसमापत्तत्थाय–सी०। ८-८. नत्थि–सी०।

या पन "यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं" [§§ १५०, १५६] ति एवमागता अदुक्खमसुखसञ्ञिता उपेक्खा अयं 'वेदनुपेक्खा' नाम। या पन "यदत्थि, यं भूतं, तं पजहति, उपेक्खं पटिलभती" [म०३:५९] ति एवमागता विचिनने मज्झत्तभूता उपेक्खा, अयं 'विपस्सनुपेक्खा' नाम। या पन छन्दादीसु ये-वा-पनकेसु आगता सहजातानं समवाहितभूता उपेक्खा अयं 'तत्र-मज्झत्तुपेक्खा' नाम। या "उपेक्खको च विहरती" [§१६३] ति एवमागता अग्गसुखे पि तस्मिं अपक्खपातजननी उपेक्खा, अयं 'झानुपेक्खा' नाम। या पन "उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं" [§१६५] ति एवमागता सब्बपच्चनीकपारिसुद्धा पच्चनीकवूपसमने पि अब्यापारभूता उपेक्खा, अयं 'पारिसुद्धि-उपेक्खा' नाम।

तत्थ छळङ्गुपेक्खा च ब्रह्मविहारुपेक्खा च बोज्झङ्गुपेक्खा च तत्रमज्झत्तुपेक्खा च झानुपेक्खा च पारिसुद्धि-उपेक्खा च अत्थतो एका तत्रमज्झत्तुपेक्खा व होति। तेन तेन अवत्थाभेदेन पन'स्सा अयं भेदो। एकस्सा पि सतो सत्तस्स कुमार-युव-त्थेर-सेनापति-राजादिवसेन भेदो विय। तस्मा तासु यत्थ छळङ्गुपेक्खा न तत्थ बोज्झङ्गुपेक्खादयो, यत्थ वा पन बोज्झङ्गुपेक्खा न तत्थ छळङ्गुपेक्खादयो होन्ती ति वेदितब्बा। यथा चेतासं अत्थतो एकीभावो, एवं संखारुपेक्खा-विपस्सनुपेक्खानं पि। पञ्ञा एव हि सा किच्चवसेन द्विधा भिन्ना।

यथा हि पुरिसस्स सायं गेहं पविट्ठं सप्पं अजपददण्डं गहेत्वा परियेसमानस्स तं थुसकोट्ठके निपन्नं दिस्वा 'सप्पो नु खो नो'ति अवलोकेन्तस्स सोवत्थिकत्तयं दिस्वा

पटिसङ्खासन्तिट्ठनाकारभूतानीति नीवरणा आदि येसं वितक्कविचारादीनं ते नीवरणादयो। नीवरणादीनं पटिसङ्खा नीवरणादिपटिसङ्खा। नीवरणादि पटिसङ्खा च सन्तिट्ठना च नीवरण....प०....सन्तिट्ठना। नीवरणादिपटिसङ्खासन्तिट्ठना एव आकारो नीवरणादि....प०....कारो। नीवरणादिपटिसङ्खासन्तिट्ठनाकारेन भूतानि....प०....नीवरणादिपटिसङ्खासन्तिट्ठनागहणे मज्झत्ताकारभूता ति पि अत्थि, एवं सति (११८-म०) नीवरणादिपटिसङ्खा-सन्तिट्ठना ति पदं या उपेक्खा ति पदस्स विसेसनं ति दट्ठब्बं। गहणे ति सङ्खारानं गहणे।

यदत्थि यं[1] खन्धपञ्चकं अत्थि यं खन्धपञ्चकं भूतं। तं[2] ति द्वयं[2]। समवाहितभूता समं पवत्तिभूता ति अत्थो। अग्गसुखे पी ति उत्तमसुखे सति। पिसद्दो सम्भावनो। तस्मिं ति सुखे। अथवा उत्तमसुखे तस्मिं झाने।

तत्था ति छळङ्गुपेक्खादीसु,। अस्सा ति तत्रमज्झत्तुपेक्खाय। तासू ति छळङ्गुपेक्खादीसु। यत्था ति यस्मिं ठाने, न[3] होन्ति। तत्था ति तस्मिं ठाने। एतासं ति छळङ्गुपेक्खानं[3]। सङ्खारुपेक्खा-विपस्सनुपेक्खानम्पि अत्थतो एकीभावो।

पञ्ञाकिच्चवसेन[4] द्विधा भिन्नतं उपमाय साधेन्तो आह—यथा हीति आदि। अजपद-

---

१. यं भूतं ति यं—सी०। २-२. नत्थि—म०। ३-३. नत्थि—म०। ४. पञ्ञाचित्त०—म०।

निब्बेमतिकस्स 'सप्पो, न सप्पो' ति विचिनने मज्झत्तता होति; एवमेव या आरद्ध-विपस्सकस्स विपस्सनाञाणेन लक्खणत्तये दिट्ठे संखारानं अनिच्चभावादिविचिनने मज्झत्तता उप्पज्जति, अयं 'विपस्सनुपेक्खा'। यथा पन तस्स पुरिसस्स अजपदेन दण्डेन गाळ्हं सप्पं गहेत्वा 'किं नाहं इमं सप्पं गहेत्वा अविहेठेन्तो अत्तानं च इमिना अडंसापेत्वा मुञ्चेय्यं'ति मुञ्चनाकारमेव परियेसतो गहणे मज्झत्तता होति; एवमेव या लक्खणत्तयस्स दिट्ठत्ता, आदित्ते विय तयो भवे पस्सतो, संखारगहणे मज्झत्तता, अयं 'संखारुपेक्खा' नाम। इति विपस्सनुपेक्खाय सिद्धाय संखारुपेक्खा पि सिद्धा व होति। इमिना पनेसा विचिननगहणेसु मज्झत्तसंखातेन किच्चेन द्विधा भिन्ना ति।

विरियुपेक्खा पन वेदनुपेक्खा च अञ्ञमञ्ञं च अवसेसाहि च अत्थतो भिन्ना एवा ति। इति इमासु दससु उपेक्खासु 'झानुपेक्खा' इध अधिप्पेता। सा मज्झत्त-लक्खणा अनाभोगरसा अब्यापारपच्चुपट्ठाना पीतिविरागपदट्ठाना ति। एत्थाह—ननु चायं अत्थतो तत्रमज्झत्तुपेक्खा व होति ? सा च पठमदुतियज्झानेसु पि अत्थि, तस्मा तत्रा पि 'उपेक्खको च विहरती'ति एवमयं वत्तब्बा सिया। सा कस्मा न वुत्ता ति ? अपरिब्यत्तकिच्चतो। अपरिब्यत्तं हि तस्सा तत्थ किच्चं, वितक्कादीहि अभिभूतत्ता। इध पनायं वितक्कविचारपीतीहि अनभिभूतत्ता उक्खित्तसिरा विय हुत्वा परिब्यत्त-किच्चा जाता, तस्मा वुत्ता ति। निट्ठिता 'उपेक्खको च विहरती'ति एतस्स सब्बसो अत्थवण्णना।

इदानि **सतो च सम्पजानो** [§१९३] ति एत्थ सरती ति सतो। सम्पजानाती ति सम्पजानो। पुग्गलेन सति च सम्पजञ्ञं च वुत्तं। तत्थ सरणलक्खणा सति, असम्मु-

दण्डं ति अजपदसदिसदण्डं। तत्थ[1] नं ति[1] तस्मिं गेहे नं[2] सप्पं। इमिना ति सप्पेन, अदंसापेन्तो ति पदे कम्मं। इमिना पनेसा ति इमिना किच्चेन एसा पञ्ञा।

अवसेसाहि चा ति उपेक्खा[3]। इधा ति उपेक्खको ति पदे। सा[4] झानुपेक्खा[4]। अब्यापारपच्चुपट्ठाना ति सति पि सुखपारमिपत्तियं तस्मिं सुखे अब्यापारं[5] हुत्वा पच्चुपतिट्ठति सम्पयुत्तानं वा सुखे अब्यापारं[6] (१४२–सी०) पच्चुपट्ठापेतीति अत्थो। एत्था ति एतस्मि ततियझानाधिकारे चोदको आह। अयं ति झानुपेक्खा। सा ति[7] तत्रमज्झत्तुपेक्खा। तत्रा पी ति पठमदुतियझानेसु पि[7]। अयं ति तत्रमज्झत्तुपेक्खा। तस्सा ति तत्रमज्झत्तुपेक्खाय। तत्था ति[8] पठमदुतियझानेसु[9]। तत्रा पी ति[10] पठमदुतियततियझानेसु पि[10]। अभिभूतत्ता ति पदं अपरिब्यत्तं ति पदे हेतु। इधा ति ततियझाने। एतस्सा[11] ति पदस्स[11]।

इदानि सतो च सम्पजानो ति एत्थ[12] वुच्चती ति अज्झाहरितब्बं। सम्पजानातीति

१-१. तत्था ति–सी०। २. नं ति–सी०। ३. उपेक्खाहि–सी०। ४-४. नत्थि–म०। ५. अब्यावटा–सी०। ६. ब्यापारं–सी०। ७-७. तथापीति पठमदुतियज्झानेसू पि–सी०। ८. तत्रा ति–म०। ९. ०झाने–म०। १०-१०. नत्थि इदं वाक्यं–सी०। ११-११. नत्थि–म०। १२. एत्था ति–सी०।

स्सनरसा, आरक्खपच्चुपट्ठाना। असम्मोहलक्खणं सम्पजञ्ञं, तीरणरसं, पविचयपच्चुपट्ठानं। तत्थ किञ्चा पि इदं सतिसम्पजञ्ञं पुरिमज्झानेसु पि अत्थि—मुट्ठस्सतिस्स हि असम्पजानस्स उपचारमत्तं पि न सम्पज्जति, पगेव अप्पना—ओळारिकत्ता पन तेसं झानानं, भूमियं विय पुरिसस्स, चित्तस्स गति सुखा व होति, अब्यत्तं तत्थ सतिसम्पजञ्ञकिच्चं। ओळारिकङ्गप्पहानेनेव पन सुखुमत्ता इमस्स झानस्स, पुरिसस्स खुरधारायं विय, सतिसम्पजञ्ञकिच्चपरिग्गहिता येव चित्तस्स गति इच्छितब्बा ति इधेव वुत्तं। किं च भिय्यो? यथा धेनुपको वच्छो धेनुतो अपनीतो अरक्खियमानो पुनदेव धेनुं उपगच्छति, एवमिदं ततियज्झानसुखं पीतितो अपनीतं तं सतिसम्पजञ्ञारक्खेन अरक्खियमानं पुनदेव पीतिं उपगच्छेय्य, पीतिसम्पयुत्तमेव सिया। सुखे चा पि सत्ता सारज्जन्ति, इदं च अतिमधुरं सुखं, ततो परं सुखाभावा। सतिसम्पजञ्ञानुभावेन पनेत्थ सुखे असारज्जना होति, नो अञ्ञथा ति इमं पि अत्थविसेसं दस्सेतुं इदमिधेव वुत्तं ति वेदितब्बं।

इदानि **सुखं च कायेन पटिसंवेदेती** [§१६३] ति एत्थ किञ्चा पि ततियज्झानसमङ्गिनो सुखपटिसंवेदनाभोगो नत्थि, एवं सन्ते पि यस्मा तस्स नामकायेन सम्पयुत्तं सुखं, यं वा तं नामकायसम्पयुत्तं सुखं, तं-समुट्ठानेन'स्स यस्मा अतिपणीतेन रूपेन रूपकायो फुट्ठो, कायस्स फुट्ठत्ता झानवुट्ठितो पि सुखं पटिसंवेदेय्य, तस्मा एत-

---

सम्मदेव पजानाति[1]। पुग्गलेना ति पुग्गलाधिट्ठानेन। तत्था ति सतिसम्पजञ्ञेसु[2]। सरणं चिन्तनं उपट्ठानं लक्खणं एतिस्सा ति सरणलक्खणा। पमुस्सनपटिपक्खो अप्पमुस्सनरसो किच्चं एतिस्सा ति अप्पमुस्सनरसा[3]। किलेसेहि आरक्खा हुत्वा[4] पच्चुपतिट्ठति ततो वा आरक्खं पच्चुपट्ठापेतीति आरक्खपच्चुपट्ठाना। असम्मुय्हना[5] सम्मदेव पजाननं सम्मोहपटिपक्खो वा, असम्मोहो लक्खणं एतिस्सा ति असम्मोहलक्खणं, तीरणं[6] किच्चस्स पारगमनं। पविचयो वीमंसा। तत्था ति ततियझानधम्मेसु, निद्धारणं। भूमियं विय पुरिसस्स[7] गति विय सुखा होतीति तीसु ठानेसु गति होति। तत्था ति पुरिमझानेसु। ओळारिकङ्गप्पहानेना ति पीतिसङ्खातस्स ओळारिकङ्गस्स पहानेन। इधा[8] ति ततियज्झाने सुखं[8]। धेनुं पिवतीति धेनुपगो[9]। धेनुया[10] खीरं पिवन्तो ति वुत्तं होति[10]। पीतिसम्पयुत्तं एव[11] सिया ति[12] पदं पुनदेव पीतिं उपगच्छेय्या ति पदस्स (११९-म०) अधिप्पायो। इदञ्च सुखं ति ततियझाने सुखं। एत्था ति ततियझाने। इदं ति सतो सम्पजानो ति पदद्वयं। इधेवा[13] ति इध एव ततियज्झाने[13]।

इदानि....प०....संवेदेतीति एत्थ वचने विनिच्छयो वेदितब्बो। सुखञ्च कायेन पटिसंवेदेतीति एत्थ[14] कथमाभोगेन[14] विना सुखपटिसंवेदना ति आह किञ्चा पी ति आदि। यस्मा

---

१. जानाति–सी०। २. ०सम्पजञ्ञे–सी०। ३. अपमुसन०–सी०। ४. नत्थि–सी०। ५. असम्मुय्हनं–सी०। ६. नत्थि-म०। ७. पुरिसस्सा ति पुरिससस्स–सी०। ८-८. नत्थि–म०। ९. धेनुपो–सी०। १०-१०. तं ति ततियज्झानं–सी०। ११. एवं–सी०। १२. सिया–म०। १३-१३. नत्थि–म०। १४-१४. कतमाभागेन–म०।

मत्थं दस्सेन्तो 'सुखं च कायेन पटिसंवेदेती'ति आह। इदानि **यं तं अरिया आचिक्खन्ति उपेक्खको सतिमा सुखविहारी** [§१६३] ति एत्थ यं-झानहेतु यं-झानकारणा तं ततियज्झानसमङ्गिपुग्गलं बुद्धादयो अरिया "आचिक्खन्ति देसेन्ति पञ्ञपेन्ति पट्ठपेन्ति विवरन्ति विभजन्ति उत्तानीकरोन्ति पकासेन्ति" [विभ० ३१२] पसंसन्ती ति अधिप्पायो—किन्ति ? 'उपेक्खको सतिमा सुखविहारी'ति—तं ततियज्झानं उपसम्पज्ज विहरती ति एवमेत्थ योजना वेदितब्बा।

कस्मा पन तं ते एवं पसंसन्ति ? पसंसारहतो। अयं हि यस्मा अतिमधुरसुखे सुखपारमिप्पत्तो पि ततियज्झाने उपेक्खको, न तत्थ सुखाभिसङ्गेन आकड्ढियति, 'यथा च पीति न उप्पज्जति' एवं उपट्ठितसतिया **सतिमा,** यस्मा च अरियकन्तं अरियजनसेवितमेव च असंकिलिट्ठं सुखं नामकायेन पटिसंवेदेति तस्मा पसंसारहो; इति पसंसारहतो नं अरिया ते एवं पसंसारहहेतुभूते गुणे पकासेन्ता 'उपेक्खको सतिमा सुखविहारी' ति एवं पसंसन्ती ति वेदितब्बं।

ततियं ति गणनानुपुब्बता ततियं। इदं ततियं समापज्जती ति ततियं। **तस्मिं समये फस्सो होती** ति आदीसु झानपञ्चके पीतिपदं पि परिहीनं। तस्सा पि वसेन

तस्स नामकायेन सम्पयुत्तं सुखं, तस्मा एतमत्थं दस्सेन्तो सुखञ्च कायेन पटिसंवेदेतीति आहा ति योजेतब्बं। तस्सा ति झानसमङ्गिनो। यं वा यथावुत्तं नामकायसम्पयुत्तसुखं। तंसमुट्ठानेन ततो समुट्ठितेन अतिपणीतेन रूपेन अस्स झानसमङ्गिनो रूपकायो यस्मा फुट्ठो, तस्मा एतमत्थं ति सम्बन्धितब्बं। कायस्सा ति रूपकायस्स[१]। फुट्ठत्ता ति[२] ब्यापितब्बत्ता। झानावुट्ठितो पी ति झानम्हा वुट्ठितो पि। सुखं (१४३–सी०) पटिसंवेदेय्या ति चित्तसमुट्ठितरूपेहि अवसेसतिसमुट्ठितरूपसङ्घट्टने उप्पन्नकायविञ्ञाणेन कायिकसुखं पटिसंवेदेय्य। एतमत्थं ति वुत्तनयेन चेतसिककायिकसुखपटिसंवेदनासङ्खातं अत्थं। यं ति हेतु-अत्थे निपातो, यस्मा ति अत्थो। एत्था ति पदं अधिप्पायो ति पदे आधारो। किं तीति पसंसाकारपुच्छा। सुखविहारीति एत्थ पदे इतिसद्दो पसंसन्तीति पदे आकारो[३]। एत्था ति यं तं अरिया ति आदिवचनेन।

तं[४] ति ततियज्झानसमङ्गिपुग्गलं। ते ति अरिया। अयं ति ततियज्झानसमङ्गी पुग्गलो[४]। सुखपारमिपत्तो पी ति सुखस्स परमपरियन्तं[५] पत्तो पि। सुखाभिसङ्गेना ति सुखस्मिं आलयेन, आकड्ढियतीति पदे कत्ता। असंकिलिट्ठं ति संकिलेसेहि[६] असंकिलिट्ठं। झानक्खणे निप्परियायतो चेतसिकसुखमेव लब्भतीति सुखं नामकायेन पटिसंवेदेतीति वुत्तं। तं[७] ति पुग्गलं[७]।

तस्सा[८] पी ति पटिपदाय[८]।

ततियज्झानं समत्तं।

---

१. रूपकाये–म०। २. फुटत्ता–सी०। ३. आधारो–सी०। ४-४. नत्थि–म०। ५. परमं परि०–सी०। ६. किलेसेहि असम्मस्सत्ता–सी०। ७-७. नत्थि–म०। ८-८. नत्थि–म०।

सविभत्तिकाविभत्तिकपदविनिच्छयो वेदितब्बो। कोट्ठासवारे पि दुवङ्गिकं झानं होती ति आगतं। सेसं दुतियज्झानसदिसमेवा ति।

ततियं।

चतुत्थज्झाननिद्देसे **सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना** [§१६५] ति कायिकसुखस्स च कायिकदुक्खस्स च पहाना। **पुब्बे वा** ति तं च खो पुब्बे व, न चतुत्थज्झानक्खणे। **सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थंगमा** ति चेतसिकसुखस्स चेतसिकदुक्खस्स चा ति इमेसं पि द्विन्नं पुब्बे व अत्थंगमा; पहाना इच्चेव वुत्तं होति।

कदा पन नेसं पहानं होति? चतुन्नं झानानमुपचारक्खणे। सोमनस्सं हि चतुत्थज्झानस्स उपचारक्खणे येव पहीयति। दुखदोमनस्ससुखानि पठमदुतियततियानं उपचारक्खणेसु। एवमेतेसं पहानक्कमेन अवुत्तानं इन्द्रियविभंगे [विभ० १५६] पन इन्द्रियानं उद्देसक्कमेनेव इधा पि वुत्तानं सुख-दुक्ख-सोमनस्स-दोमनस्सानं पहानं वेदितब्बं। यदि पनेतानि तस्स तस्स झानस्स उपचारक्खणे येव पहीयन्ति, अथ कस्मा "कत्थ चुप्पन्नं दुक्खिन्द्रियं अपरिसेसं निरुज्झति? इध भिक्खवे, भिक्खु विविच्चेव कामेहि....प०....पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, एत्थुप्पन्नं दुक्खिन्द्रियं अपरिसेसं निरुज्झति। कत्थ चुप्पन्नं दोमनस्सिन्द्रियं.... सुखिन्द्रियं....सोमनस्सिन्द्रियं अपरिसेसं निरुज्झति? इध भिक्खवे, भिक्खु सुखस्स च पहाना....प०....चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति। एत्थुप्पन्नं सोमनस्सिन्द्रियं अपरिसेसं निरुज्झती" [सं० ४.१८५-१८६] ति एवं झानेस्वेव निरोधो वुत्तो ति? अतिसयनिरोधत्ता। अतिसयनिरोधो हि तेसं पठमज्झानादीसु, न निरोधो येव। निरोधो येव पन उपचारक्खणे, नातिसयनिरोधो।

तं च खो ति पहानं पुब्बेव होति। पुब्बे वा ति वुत्तत्ता।

कदा पन तेसं पहानं होतीति चोदनं समुट्ठापेत्वा आह—चतुन्नं झानानं उपचारक्खणे ति, एवं वेदितब्बं ति सम्बन्धो। तेसं[1] ति धम्मानं[1]। पहानक्कमेन वुत्तानं[2] ति कमो नाम पहानक्कमधम्मानं[2]। उप्पटिपाटितेन पन वुच्चमाने दुक्खं दोमनस्सं सुखं सोमनस्सं ति वत्तब्बं सिया, कस्मा ते अञ्ञथा वचनं ति आह—इन्द्रियविभङ्गे पना ति आदि। इन्द्रियविभङ्गे ति पदं उद्देसं ति पदे आधारो। उद्देसक्कमेना ति सुखिन्द्रियं दुक्खिन्द्रियं[3] सोमनस्सिन्द्रियं दोमनस्सिन्द्रियं ति एवं पवत्त-उद्देसक्कमेन। इधा पी ति चतुत्थझाननिद्देसे[4]। एतानीति सुखदुक्खादीनि। अथ कस्मा झानेस्वेव निरोधो वुत्तो ति सम्बन्धो। कत्थ चुप्पन्नं दुक्खिन्द्रियं ति अत्तनो पच्चयेहि उप्पन्नं अविक्खम्भितं दुक्खिन्द्रियं कत्थ च अपरिसेसं निरुज्झति। कत्थ चा ति पदं निरुज्झतीति (म०–१२०) पदे हेतु। एत्था ति पठमज्झाने, निरुज्झतीति पदे हेतु।

१-१. नत्थि–म०। २-२. अवुत्तानं ति एव पहाणक्कमो नाम पहायकधम्मानं–सी०। ३. नत्थि–सी०। ४. ०अभि धम्मसङ्गणियं–सी०।

तथा हि नानावज्जने पठमज्झानूपचारे निरुद्धस्सा पि दुक्खिन्द्रियस्स डंसमकसादिसम्फस्सेन वा, विसमासनूपतापेन वा सिया उप्पत्ति, न त्वेव अन्तो-अप्पनायं। उपचारे वा निरुद्धं पेतं न सुट्ठु निरुद्धं होति, पटिपक्खेन अविहतत्ता। अन्तो अप्पनायं पन पीतिफरणेन सब्बो कायो सुखोक्कन्तो होति। सुखोक्कन्तकायस्स च सुट्ठु निरुद्धं होति दुक्खिन्द्रियं, पटिपक्खेन विहतत्ता। नानावज्जने येव च दुतियज्झानूपचारे पहीनस्स दोमनस्सिन्द्रियस्स, यस्मा एतं वितक्कविचारपच्चये पि कायकिलमथे चित्तूपघाते च सति उप्पज्जति, वितक्कविचाराभावे च नेव उप्पज्जति; यत्थ पन उप्पज्जति तत्थ वितक्कविचारभावे; अप्पहीना एव च दुतियज्झानूपचारे वितक्कविचारा ति तत्थ'स्स सिया उप्पत्ति, अप्पहीनपच्चयत्ता; न त्वेव दुतियज्झाने, पहीनपच्चयत्ता।

तथा ततियज्झानूपचारे पहीनस्सा पि सुखिन्द्रियस्स पीतिसमुट्ठानप्पणीतरूपफुट्ठकायस्स सिया उप्पत्ति, न त्वेव ततियज्झाने। ततियज्झाने हि पच्चयभूता पीति

झानेस्वेव....प०... वुत्तो ति पुच्छा सिया। दुक्खादीनं (१४४–सी०) अतिसयनिरोधत्ता झानेस्वेव निरोधो भगवता वुत्तो। अतिसयनिरोधो ति सुट्ठु पहानं उजुपटिपक्खेन वूपसमो। निरोधो ति पहानमत्तं।

नानावज्जने ति येन आवज्जनेन अप्पनावीथि ततो[1] भिन्नावज्जने, अनेकावज्जने वा। अप्पनावीथियं हि उपचारो एकावज्जनो। इतरो अनेकावज्जनो अनेकक्खत्तुं पवत्तनतो। विसमासनूपतापेना ति विसमनिसज्ज-उप्पन्नकिलमथेन[2] दुक्खिन्द्रियस्स उप्पत्ति सिया। नत्वेव अन्तो अप्पनायं उप्पत्ति। एतं ति दुक्खिन्द्रियं। पटिपक्खेना ति झानसङ्खातेन पटिपक्खेन, अविहतत्ता ति पदे कत्ता। वितक्कविचारपच्चये पी ति पिसद्दो अट्ठानप्पयुत्तो, सो पहीनस्सा ति एत्थ आनेत्वा सम्बन्धितब्बो। पहीनस्सा पि दोमनस्सिन्द्रियस्सा ति पदं सिया उप्पत्ती ति पदे[3] सम्बन्धो। एतं ति दोमनस्सिन्द्रियं, उप्पज्जतीति पदे कत्ता। वितक्कविचारा पच्चया एतस्सा ति वितक्कविचारपच्चया[4]। यत्थ पन चित्तुप्पादे दोमनस्सिन्द्रियं उप्पज्जति। वितक्कविचारभावे ति एत्थ उप्पज्जति दोमनस्सिन्द्रियं आनेत्वा सम्बन्धितब्बं। तत्थस्स सिया उप्पत्तीति तत्थ दुतियझानूपचारे अस्स पहीनस्सा पि दोमनस्सिन्द्रियस्स उप्पत्ति सिया भवेय्य। अप्पहीना वितक्कविचारसङ्खाता पच्चया यस्मिं झानुपचारे तं अप्पहीनपच्चयं। तस्स भावो पहीनस्स पच्चयत्तं।

पहीनम्पि सोमनस्सिन्द्रियं पीति विय न दूरेति कत्वा आसन्नत्ता ति चसद्दो आसन्नत्ता चा ति योजेतब्बो। तत्थ तत्था ति तस्मिं तस्मिं ठाने।

---

१. गतो–सी०। २. विसमनिसज्जाय उप्पन्न०–सी०। ३. नत्थि–सी०। ४. ०पच्चयो–सी०।

सब्बसो निरुज्झति। तथा चतुत्थज्झानूपचारे पहीनस्सा पि सोमनस्सिन्द्रियस्स आसन्नत्ता, अप्पनापत्ताय उपेक्खायाभावेन सम्मा अनतिक्कन्तत्ता च, सिया उप्पत्ति, न त्वेव चतुत्थज्झाने। तस्मा एव च 'एत्थुप्पन्नं दुक्खिन्द्रियं अपरिसेसं निरुज्झती'ति तत्थ तत्थ अपरिसेसग्गहणं कतं ति।

एत्थाह—'अथेवं तस्स तस्स झानस्सूपचारे पहीना पि एता वेदना इध कस्मा समाहटा'ति? 'सुखगहणत्थं। या हि अयं 'अदुक्खमसुखं' ति एत्थ अदुक्खमसुखा वेदना वुत्ता, सा सुखुमा, दुब्बिञ्ञेय्या, न सक्का सुखेन गहेतुं। तस्मा यथा नाम दुट्ठस्स यथातथा वा उपसंकमित्वा गहेतुं असक्कुणेय्यस्स गोणस्स गहणत्थं गोपो एकस्मिं वजे सब्बा गावो समाहरति, अथेकेकं नीहरन्तो पटिपाटिया आगतं 'अयं सो, गण्हथ नं' ति तं पि गाहापयति; एवमेव भगवा सुखगहणत्थं सब्बा एता समाहरी ति। एवं हि समाहटा एता दस्सेत्वा यं नेव-सुखं-न-दुक्खं, न-सोमनस्सं-न-दोमनस्सं, अयं अदुक्खमसुखा वेदना ति सक्का होति एसा गाहयितुं। अपि च अदुक्खमसुखाय चेतोविमुत्तिया पच्चयदस्सनत्थं चा पि एता वुत्ता ति वेदितब्बा। सुखदुक्खप्पहानादयो हि तस्सा पच्चया। यथाह—"चत्तारो खो आवुसो, पच्चया अदुक्खमसुखाय चेतोविमुत्तिया समापत्तिया। इधावुसो, भिक्खु सुखस्स च पहाना····प०····चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, इमे खो आवुसो, चत्तारो पच्चया अदुक्खमसुखाय चेतोविमुत्तिया समापत्तिया" [म० १.३६६] ति।

यथा वा अञ्ञत्थ पहीना पि सक्कायदिट्ठि-आदयो ततियमग्गस्स वण्णभणनत्थं तत्थ पहीना ति वुत्ता, एवं वण्णभणनत्थं पेतस्स झानस्स ता इध वुत्ता ति वेदितब्बा। पच्चयघातेन वा एत्थ रागदोसानं अतिदूरभावं दस्सेतुं पेता वुत्ता ति वेदितब्बा। एतासु हि सुखं सोमनस्सस्स पच्चयो, सोमनस्सं रागस्स; दुक्खं दोमनस्सस्स, दोमनस्सं दोसस्स। सुखादिघातेन च सप्पच्चया रागदोसा हता ति अतिदूरे होन्ती ति।

एत्थाहा ति चतुत्थज्झानाधिकारे चोदको आह। अथेवं ति एवं यदि पहीना पि या होति आदि वित्थारो। तस्मा ति पदं समाहता ति पदे हेतु। गोणस्सा ति पदं गहणत्थं ति पदे कम्मं। समाहरीति सङ्गहेत्वा आहरि, दस्सेत्वा सक्का होतीति (१४५–सी०) सम्बन्धो। अदुक्खमसुखाय चेतोविमुत्तिया ति इदमेव चतुत्थज्झानं दट्ठब्बं। पच्चयदस्सनत्थं ति अधिगमस्स उपायभूतपच्चयदस्सनत्थं। एता[1] ति वेदना[1]। तस्सा ति अदुक्खमसुखाय चेतोविमुत्तिया। इधा[2] ति सासने[2]।

अञ्ञत्था ति सोतापत्तिमग्गादीसु। तत्था ति ततियमग्गे[3]। इधा ति चतुत्थज्झाने। एता ति सुखादयो वेदना। सुखं ति कायिकं सुखं। सुखादिघातेना ति सुखादीनं पहानेन।

१-१. नत्थि–म०। २-२. नत्थि–म०। ३. ०एता ति वेदना–सी०।

अदुक्खमसुखं ति दुक्खाभावेन अदुक्खं, सुखाभावेन असुखं। एतेनेत्थ दुक्ख-सुखपटिपक्खभूतं ततियवेदनं दीपेति, न दुक्खसुखाभावमत्तं। ततियवेदना नाम अदुक्खमसुखा। उपेक्खा ति पि वुच्चति। सा इट्ठानिट्ठविपरीतानुभवनलक्खणा, मज्झत्तरसा, अविभूतपच्चुपट्ठाना, सुखदुक्खनिरोधपदट्ठाना ति वेदितब्बा।

उपेक्खासतिपारिसुद्धि ति उपेक्खाय जनितसतिपारिसुद्धिं। इमस्मिं हि झाने सुपरिसुद्धा सति। या च तस्सा सतिया पारिसुद्धि सा उपेक्खाय कता, न अञ्ञेन। तस्मा एतं उपेक्खासतिपारिसुद्धी ति वुच्चति। **विभंगे** पि वुत्तं—"अयं सति इमाय उपेक्खाय विवटा होति परिसुद्धा परियोदाता, तेन वुच्चति उपेक्खासतिपारिसुद्धी" [विभ० ३१४] ति। याय च उपेक्खाय एत्थ सतिपारिसुद्धि होति सा अत्थतो तत्र-मज्झत्तता ति वेदितब्बा। न केवलं चेत्थ सति येव परिसुद्धा अपि च खो सब्बे पि सम्पयुत्तधम्मा। सतिसीसेन पन देसना वुत्ता। तत्थ किञ्चा पि अयं उपेक्खा हेट्ठा पि तीसु झानेसु विज्जति—यथा पन दिवा सुरियप्पभाभिभवा सोम्मभावेन च अत्तनो उपकारकत्तेन वा सभागाय रत्तिया अलाभा दिवा विज्जमाना पि चन्दलेखा अपरि-सुद्धा होति अपरियोदाता—एवमयं पि तत्रमज्झत्तुपेक्खाचन्दलेखा वितक्कादिपच्च-नीकधम्मतेजाभिभवा सभागाय च उपेक्खावेदनारत्तिया अप्पटिलाभा विज्जमाना पि पठमादिज्झानभेदेसु अपरिसुद्धा होति। तस्सा च अपरिसुद्धाय दिवा अपरिसुद्धचन्द-लेखाय पभा विय सहजाता पि सति-आदयो अपरिसुद्धा व होन्ति। तस्मा तेसु एकं पि 'उपेक्खासतिपारिसुद्धी' ति न वुत्तं। इध पन वितक्कादिपच्चनीकधम्मतेजाभिभवा-भावा सभागाय च उपेक्खावेदनारत्तिया पटिलाभा अयं तत्रमज्झत्तुपेक्खाचन्दलेखा

एतेनेवा ति सुखदुक्खपटिक्खेपवचनेन। एत्था ति अदुक्खमसुखं ति वचने दीपेति। सा[1] ति अदुक्खमसुखा[1]। इट्ठानिट्ठविपरीतानुभवनलक्खणा ति इट्ठानिट्ठविपरीतस्स (म०-१२१) मज्झत्तारम्मणस्स इट्ठानिट्ठविपरीतं वा मज्झत्ताकारेन अनुभवनलक्खणा।

उपेक्खाया ति पदं कता ति पदे कत्ता। अञ्ञेन[2] धम्मेन न कता[2]। एतं ति झानं। एत्था ति चतुत्थज्झाने। यदि तत्रमज्झत्तता इध उपेक्खा ति अधिप्पेता, कथं सति येव परि-सुद्धा ति वुत्ता ति आह—न केवलं ति आदि। सतिसीसेना ति सतिं उत्तमङ्गं कत्वा पट्ठानं[3] कत्वा ति वुत्तं होति। एवम्पि कस्मा इधेव सतिपारिसुद्धीति वुत्ता ति अनुयोगं सन्धाय तत्थ किं चा पी ति आदि वुत्तं। तत्था ति चतुत्थज्झानधम्मेसु, निद्धारणं। सूरियप्पभाभिभवा ति सूरियप्पभा-अभिभुय्यमानत्ता[4]। सोम्मभावेन चा ति पि अत्थि, चसद्दो वासद्दत्थो। रत्तिया ति पदं अलाभा ति पदे कम्मं। वितक्कादि···प०···भिभवा ति वितक्कादिपच्चनीकधम्मानं तेज-नत्ता[5] सभागाय[6] चा ति चसद्दो अभिभवा च अप्पटिलाभा चा ति योजेतब्बो। पठमज्झानादि-भेदेसू ति पदं विज्जमाना पी ति पदे आधारो। तस्सा[7] ति तत्रमज्झत्तुपेक्खाय। अपरिसुद्धा

१-१. नत्थि–म०। २-२. नत्थि–म०। ३. पधानं–सी०। ४. सूरियप्पभाय अभि-भुय्य०–सी० ५. तेजेनभिभुय्यमानत्ता–सी०। ६. सभागताय–सी०। ७. तत्रा ति तस्सा–म०।

अतिविय परिसुद्धा। तस्सा परिसुद्धत्ता परिसुद्धचन्दलेखाय पभा विय सहजाता पि सति-आदयो परिसुद्धा होन्ति परियोदाता। तस्मा इदमेव उपेक्खासतिपारिसुद्धी ति वुत्तं ति वेदितब्बं।

चतुत्थं ति गणनानुपुब्बतो चतुत्थं। इदं चतुत्थं समापज्जती ति पि चतुत्थं। **फस्सो होती** ति आदीसु फस्सपञ्चके ताव **वेदना** ति उपेक्खावेदना वेदितब्बा। झान-पञ्चक-इन्द्रियट्ठानेसु पन उपेक्खा होति उपेक्खिन्द्रियं होती ति वुत्तमेव। सेसानि ततिये परिहीनपदानि इधा पि परिहीनानेव। कोट्ठासवारे पि **दुवंगिकं झानं** ति उपेक्खाचित्तेकग्गतावसेनेव वेदितब्बं। सेसं सब्बं ततियसदिसमेवा ति।

चतुक्कनयो निट्ठितो।

इदानि **कतमे धम्मा कुसला** [§ १६७] ति पञ्चकनयो आरद्धो। कस्मा इति चे, पुग्गलज्झासयवसेन चेव देसनाविलासेन च। सन्निसिन्नदेवपरिसाय किर एकच्चानं देवानं वितक्को एव ओळारिकतो उपट्ठासि, विचारपीतिसुखचित्तेकग्गता सन्ततो। तेसं सप्पायवसेन सत्था चतुरंगिकं अवितक्कं विचारमत्तं दुतियज्झानं नाम भाजेसि। एकच्चानं विचारो ओळारिकतो उपट्ठासि, पीतिसुखचित्तेकग्गता सन्ततो। तेसं सप्पायवसेन तिवंगिकं ततियज्झानं नाम भाजेसि। एकच्चानं पीति ओळारिकतो उपट्ठासि, सुखचित्तेकग्गता सन्ततो। तेसं सप्पायवसेन दुवंगिकं चतुत्थज्झानं नाम भाजेसि। एकच्चानं सुखं ओळारिकतो उपट्ठासि, उपेक्खा-चित्तेकग्गता सन्ततो। तेसं सप्पायवसेन दुवंगिकं पञ्चमज्झानं नाम भाजेसि। अयं ताव 'पुग्गलज्झासयो'। यस्मा पन धम्मधातुया सुप्पटिविद्धत्ता देसना विलासप्पत्ता नाम होति—सा तथागतस्स सुट्ठु पटिविद्धा—तस्मा ञाणमहत्तताय देसनाविधाने सुकुसलो देसनाविलासप्पत्तो सत्था यं यं अङ्गं लब्भति तस्स तस्स वसेन यथा यथा इच्छति तथा तथा देसनं नियामेती ति सो इध पञ्चङ्गिकं पठमज्झानं भाजेसि, चतुरङ्गिकं अवितक्कविचारमत्तं दुतियज्झानं, तिवङ्गिकं ततियज्झानं, दुवङ्गिकं चतुत्थज्झानं, दुवङ्गिकमेव पञ्चमज्झानं भाजेसि। अयं 'देसनाविलासो' नाम।

ति पदं अपरिसुद्धा होन्तीति पदे लक्खणक्रिया। तेसू ति पठमज्झानादीसु एकं पि झानं। इधा[1] ति चतुत्थज्झाने। तस्सा[2] ति उपेक्खाय[2]। इदमेवा ति चतुत्थज्झानं।

सेसानि[3] पदानि। इधा पी ति चतुत्थज्झाने। सेसं वचनं।

चतुक्कनयवण्णना निट्ठिता।

(१४६–सी०) तेसं ति देवानं। एकच्चानं ति देवानं। अयं ति देसना[3]। धम्मधातुया ति भावयोगे छट्ठी। धम्मं धारेति जानातीति धम्मधातु, सब्बञ्ञुतञाणं। सुट्ठु पटिविज्झतीति सुप्पटिविद्धं। सुप्पटिविद्धस्स भावो सुप्पटिविद्धत्तं। सा[4] ति धातु[4]। तथा-

---

१. इधा पी ति–म०। २-२. नत्थि–म०। ३-३. नत्थि–म०। ४-४. सति–म०।

अपि च ये भगवता "तयो' मे समाधी–सवितक्कसविचारो समाधि, अवितक्कविचारमत्तो समाधि, अवितक्क-अविचारो समाधी" ति (दी० ३:१७२) सुत्तन्ते तयो समाधी देसिता, तेसु हेट्ठा सवितक्कसविचारो समाधि अवितक्क-अविचारो समाधि भाजेत्वा दस्सितो, अवितक्कविचारमत्तो पन न दस्सितो। तं दस्सेतुं पि अयं पञ्चकनयो आरद्धो ति वेदितब्बो। तत्थ दुतियज्झाननिद्देसे [§१६८] फस्सादीसु वितक्कमत्तं परिहायति, कोट्ठासवारे "चतुरङ्गिकं झानं होति चतुरङ्गिको मग्गो होती" ति अयमेव विसेसो। सेसं सब्बं पठमज्झानसदिसमेव। यानि च चतुक्कनये दुतियततियचतुत्थानि तानि इध ततियचतुत्थपञ्चमानि। तेसं अधिगमपटिपाटिया दीपनत्थं अयं नयो वेदितब्बो—

एको किर अमच्चपुत्तो राजानं उपट्ठातुं जनपदतो नगरं आगतो। सो एकदिवसमेव राजानं दिस्वा पानब्यसनेन सब्बं विभवजातं नासेसि। तं एकदिवसं सुरामदमत्तं निच्चोलं कत्वा जिण्णकटसारकमत्तेन पटिच्छादेत्वा पानागारतो नीहरिंसु। तमेनं संकारकूटे निपज्जित्वा निद्दायन्तं एको अंगविज्जापाठको दिस्वा 'अयं पुरिसो महाजनस्स अवस्सयो भविस्सति, पटिजग्गितब्बो एसो'ति सन्निट्ठानं कत्वा मत्तिकाय नहापेत्वा थूलसाटकयुगं निवासापेत्वा पुन गन्धोदकेन नहापेत्वा सुखुमेन दुकूलयुगलेन अच्छादेत्वा पासादं आरोपेत्वा सुभोजनं भोजेत्वा 'एवं नं परिहरेय्याथा' ति परिचारके पटिपादेत्वा पक्कामि। अथ नं ते सयनं आरोपेसुं। पानागारगमनपटिबाहनत्थं च नं चत्तारो ताव जना चतूसु हत्थपादेसु उप्पीळेत्वा अट्ठंसु। एको पादे परिमज्जि। एको तालवण्टं गहेत्वा वीजि। एको वीणं वादयमानो गायन्तो निसीदि।

गतस्सा ति पदं पटिविद्धा ति पदे कत्ता। तस्स[१] तस्सा ति अङ्गस्स[१]। सो इधा ति सो सत्था इध पञ्चकनये।

ये[२] च तयो समाधयो[२] भगवता देसिता ति योजना। तेसू ति तीसु समाधीसु[३]। तं ति अवितक्कविचारमत्तं। तत्था ति पठमज्झाननिद्देसादीसु, निद्धारणं। तानीति[४] झानानि[४]। इधा ति पञ्चकनये[५]। तेसं ति पठमज्झानादीनं, अधिगम इति पदे[६] कम्मं[६]।

हत्थादि-अङ्गं विजानाति एताया ति अङ्गविज्जा। अङ्गविज्जं पठतीति अङ्गविज्जापाठको[७]। पटिच्छादेत्वा[८] ति सम्पटिच्छापेत्वा। नं ति अमच्चपुत्तं। ते ति परिचारका[९]। तत्था ति तेसु जनेसु।

१-१. नत्थि–म०। २-२. नयेन वा ति समाधि–म०। ३. ०एत्था ति चतुक्कनये–सी०। ४-४. नत्थि–म०। ५. पटिपादेत्वा ति सम्पटिच्छापेत्वा। नं ति अमच्चपुत्तं। ते ति परिवारका–सी०। ६-६. सो ति अमच्चपुत्तो। तं ति अमच्चपुत्तं। एको ति आचरियो–सी०। ७. ०अधिगम ना ति पदे कम्मं–सी०। ८. पटिपादेत्वा–सी०। ९. ०नं ति अम्मच्चपुत्तं–सी०।

सो सयनूपगमनेन विगतकिलमथो थोकं निद्दायित्वा उट्ठितो हत्थपादनिप्पीळनं असहमानो 'को मे हत्थपादे उप्पीळेती'ति ? अपगच्छा'ति तज्जेसि। ते एकवचनेनेव अपगच्छिसु। ततो पुन थोकं निद्दायित्वा वुट्ठितो पादपरिमज्जनं असहमानो 'को मे पादे परिमज्जति ? अपगच्छा'ति आह। सो पि एकवचनेनेव अपगच्छि। पुन थोकं निद्दायित्वा वुट्ठितो वातवुट्ठि विय तालवण्टवातं असहन्तो 'को एस ? अपगच्छतू'ति आह। सो पि एकवचनेनेव अपगच्छि। पुन थोकं निद्दायित्वा वुट्ठितो कण्णसूलं विय गीतवादितसद्दं असहमानो वीणावादकं तज्जेसि। सो पि एकवचनेनेव अपगच्छि। अथेवं अनुक्कमेन पहीन-किलमथुप्पीळन-परिमज्जन-वातप्पहार-गीतवादितसद्दूपद्दवो सुखं सयित्वा वुट्ठाय रञ्ञो सन्तिकं अगमासि। राजा पि'स्स महन्तं इस्सरियमदासि। सो महाजनस्स अवस्सयो जातो।

तत्थ पानब्यसनेन पारिजुञ्ञप्पत्तो सो अमच्चपुत्तो विय अनेकब्यसनपारिजुञ्ञप्पत्तो घरावासगतो कुलपुत्तो दट्ठब्बो। अङ्गविज्जापाठको पुरिसो विय तथागतो। तस्स पुरिसस्स 'अयं महाजनस्स अवस्सयो भविस्सति, पटिजग्गनं अरहती'ति सन्निट्ठानं विय तथागतस्स 'अयं महाजनस्स अवस्सयो भविस्सति, पब्बज्जं अरहति कुलपुत्तो' ति सन्निट्ठानकरणं। अथ'स्स अमच्चपुत्तस्स मत्तिकामत्तेन नहापनं विय कुलपुत्तस्सा पि पब्बज्जापटिलाभो। अथ'स्स थूलसाटकनिवासनं विय इमस्सा पि दससिक्खापदसंखातसीलवत्थनिवासनं। पुन तस्स गन्धोदकेन नहापनं विय इमस्सा पि पातिमोक्खसंवरादि-सीलगन्धोदकनहापनं। पुन तस्स सुखुमदुकूलयुगच्छादनं विय इमस्सा पि यथावुत्तसीलविसुद्धिसम्पदासंखातदुकूलच्छादनं। दुकूलच्छादितस्स पन'स्स पासादारोपनं विय इमस्सा पि सीलविसुद्धिदुकूलच्छादितस्स समाधिभावनापासादारोपनं। ततो तस्स सुभोजनभुञ्जनं विय इमस्सा पि समाधि-उपकारकसतिसम्पजञ्ञादिधम्मामतपरिभुञ्जनं। भुत्तभोजनस्स पन तस्स परिचारकेहि सयनारोपनं विय इमस्सा पि वितक्कादीहि उपचारज्झानारोपनं। पुन तस्स पानागारगमनपटिबाहनत्थं हत्थपादुप्पीळनकपुरिसचतुक्कं विय इमस्सा पि कामसञ्ञाभिमुखगमनपटिबाहनत्थं आरम्मणे चित्तुप्पीळको नेक्खम्मवितक्को। तस्स पादपरिमज्जनपुरिसो विय इमस्सा पि आरम्मणे चित्तानुमज्जको विचारो। तस्स तालवण्टवातदायको विय इमस्सा पि

सो[1] ति अमच्चपुत्तो[1]। किलमथो च उप्पीळनं च परिमज्जनं च वातप्पहारो च गीतवादितसद्दो च किलमथु....प०....वादितसद्दा। ते[2] एव उपद्दवा किलमथु....प०....पद्दवा। पहीना किलमथुप्पीळनपरिमज्जनवातप्पहारगीतवादितसद्दुपद्दवा येन सो पहीनकिलमथु....प०....पद्दवो[3]।

तत्था ति तस्मि हेट्ठा वुत्तवचने, उपमासंसन्दनं दट्ठब्बं ति योजना। पारिजुञ्ञप्पत्तो ति अवुद्धिभावप्पत्तो।

१-१. नत्थि—म०। २. ०किलमथु....प०....वादितसद्दा—सी०। ३. पद्दवा—म०।

चेतसो सीतलभावदायिका पीति। तस्स सीतानुग्गहकरो गन्धब्बपुरिसो विय इमस्सा पि चित्तानुग्गहकं सोमनस्सं।

तस्स सयनूपगमनेन विगतकिलमथस्स थोकं निद्दूपगमनं विय इमस्सा पि उपचारज्झानसन्निस्सयेन विगतनीवरणकिलमथस्स पठमज्झानूपगमनं। अथस्स निद्दायित्वा वुट्ठितस्स हत्थपादुप्पीळनासहनेन हत्थपादुप्पीळकानं सन्तज्जनं तेसं च अपगमनेन पुन थोकं निद्दूपगमनं विय इमस्सा पि पठमज्झानतो वुट्ठितस्स चित्तुप्पीळनकवितक्कासहनेन वितक्कदोसदस्सनं, वितक्कप्पहाना चपुन अवितक्कविचारमत्तज्झानूपगमनं। ततो तस्स पुनप्पुनं निद्दायित्वा वुट्ठितस्स यथावुत्तेन कमेन पादपरिमज्जनादीनं असहनेन पटिपाटिया पादपरिमज्जकादीनं सन्तज्जनं, तेसं च अपगमनेन पुनप्पुनं थोकं निद्दूपगमनं विय इमस्सा पि पुनप्पुनं दुतियादीहि झानेहि वुट्ठितस्स यथावुत्तदोसानं विचारादीनं असहनेन पटिपाटिया विचारादिदोसदस्सनं। तेसं तेसं च पहाना पुनप्पुनं अवितक्काविचार-निप्पीतिक-पहीनसोमनस्सज्झानूपगमनं। तस्स पन सयना वुट्ठाय रञ्ञो सन्तिकं गतस्स इस्सरियसम्पत्ति विय इमस्सा पि पञ्चमज्झानतो वुट्ठितस्स विप्पस्सनामग्गं उपगतस्स अरहत्तप्पत्ति। तस्स पत्तिस्सरियस्स बहुन्नं जनानं अवस्सयभावो विय इमस्सा पि अरहत्तप्पत्तस्स बहुन्नं अवस्सयभावो पि वेदितब्बो। एत्तावता हि एस अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं नाम होती ति।

पञ्चकनयो निट्ठितो।

पटिपदाकथा

एत्तावत्ता चतुक्कपञ्चकनयद्वयभेदो सुद्धिकनवको नाम पकासितो होति। अत्थतो पनेस पञ्चकनये चतुक्कनयस्स पविट्ठत्ता झानपञ्चको एवा ति वेदितब्बो।

इदानि यस्मा एतं झानं नाम पटिपदाकमेन सिज्झति, तस्मा'स्स पटिपदाभेदं दस्सेतुं पुन **कतमे धम्मा कुसला** [§ १७६] ति आदि आरद्धं। तत्थ दुक्खा पटिपदा अस्सा ति **दुक्खापटिपदं**। दन्धा अभिञ्ञा अस्सा ति **दन्धाभिञ्ञं**। इति दुक्खापटिपदं ति वा दन्धाभिञ्ञं ति वा पठवीकसिणं ति वा तीणि पि झानस्सेव नामानि। **दुक्खापटिपदं खिप्पाभिञ्ञं** ति आदीसु पि एसेव नयो।

एत्तावता ही ति हि सच्चं, एत्तावता अरहत्तुप्पत्तिया[1]। एसो कुलपुत्तो।

पञ्चकनयवण्णना निट्ठिता।

पटिपदाकथावण्णना

एत्तावता[2] ति एत्तकेन वचनेन[2]। एसो ति सुद्धिकनवको।

अस्सा ति झानस्स। तत्था ति कतमे धम्मा कुसला ति आदिवचने विनिच्छयो वेदितब्बो। अस्सा ति झानस्स।

१. नत्थि–म०। २-२. एत्तकेन–म०।

तत्थ पठमसमन्नाहारतो पट्ठाय याव तस्स तस्स झानस्स उपचारं उप्पज्जति ताव पवत्ता झानभावना 'पटिपदा' ति वुच्चति। उपचारतो पन पट्ठाय याव अप्पना ताव पवत्ता पञ्ञा 'अभिञ्ञा' ति वुच्चति। सा पनेसा पटिपदा एकच्चस्स दुक्खा होति। नीवरणादिपच्चनीकधम्मसमुदाचारगहणताय किच्छा असुखसेवना ति अत्थो। एकच्चस्स तदभावेन सुखा। अभिञ्ञा पि एकच्चस्स दन्धा होति, मन्दा, अ-सीघप्पवत्तिनी। एकच्चस्स खिप्पा अ-मन्दा सीघप्पवत्तिनी।

तस्मा यो आदितो आदितो किलसे विक्खम्भेन्तो दुक्खेन ससंखारेन सम्पयोगेन किलमन्तो विक्खम्भेति, तस्स दुक्खा पटिपदा नाम होति। यो पन विक्खम्भितकिलेसो अप्पनापरिवासं वसन्तो चिरेन अङ्गपातुभावं पापुणाति, तस्स दन्धाभिञ्ञा नाम होति। यो खिप्पं अंगपातुभावं पापुणाति तस्स खिप्पाभिञ्ञा नाम होति। यो किलेसे विक्खम्भेन्तो सुखेन अकिलमन्तो विक्खम्भेति, तस्स सुखा पटिपदा नाम होति। तत्थ यानि सप्पायासप्पायानि च पलिबोधुपच्छेदादीनि पुब्बकिच्चानि च अप्पनाकोसल्लानि च विसुद्धिमग्गे चित्तभावनानिद्देसे निद्दिट्ठानि, तेसु यो असप्पायसेवी होति, तस्स दुक्खा पटिपदा दन्धा च अभिञ्ञा होति। सप्पायसेविनो सुखा पटिपदा खिप्पा च अभिञ्ञा। यो पन पुब्बभागे असप्पायं सेवित्वा अपरभागे सप्पायसेवी होति, पुब्बभागे वा सप्पायं सेवित्वा अपरभागे असप्पायसेवी, तस्स वोमिस्सकता वेदितब्बा।

अपि च तथा पलिबोधुपच्छेदादिकं पुब्बकिच्चं असम्पादेत्वा भावनं अनुयुत्तस्स दुक्खापटिपदा होति, विपरियायेन सुखा। अप्पनाकोसल्लानि पन असम्पादेन्तस्स दन्धाभिञ्ञा होति, सम्पादेन्तस्स खिप्पा। अपि च तण्हा-अविज्जावसेन समथविपस्सनाधिकारवसेन चा पि एतासं पभेदो वेदितब्बो। तण्हाभिभूतस्स हि दुक्खापटिपदा होति, अनभिभूतस्स सुखा। अविज्जाभिभूतस्स च दन्धाभिञ्ञा होति, अनभिभूतस्स

(म०–१२२) तत्था ति पटिपदादीसु। पठमसमन्नाहारतो ति कतपुब्बकिच्चस्स[1] (१४७-सी०) पथवीकसिणादीसु सब्बपठमं पथवीति आदिना पवत्तमनसिकारतो ति अत्थो[2]। नीवरणादि....प०....ताया ति नीवरणादिपच्चनीकधम्मानं पवत्तनसङ्खातग्गहणताय। सेवना ति सेवितब्बा[3]। तदभावेना ति तस्स नीवरणादिपच्चनीकधम्मानं[4] समुदाचारस्स[4] अभावेन।

अप्पनापरिवासं ति अप्पनाय परिवासं वसन्तो, झानपटिलाभं आगमेन्तो ति अधिप्पायो। अङ्गपातुभावं ति वितक्कादिझानङ्गपटिलाभं। तत्था ति झानाधिकारे[5] वत्तब्बानि। तेसू ति सप्पायादीसु। यो[6] पुग्गलो। तस्स पुग्गलस्स[6]।

एतासम्पीति पटिपदादीनं। तण्हाभिभूतस्स हीति आदि वित्थारो। अकताधिकारो ति अकतपत्थनो।

---

१. कत्तब्बकिच्चस्स–म०। २. ०एकच्चस्स पुग्गलस्स–सी०। ३. ०एकच्चस्स पुग्गलस्स-सी०। ४-४. पच्चनीकधम्मसमुदा०-सी०। ५. तस्मि झाना०-सी०। ६-६. नत्थि–म०।

खिप्पा। यो च समत्थे अकताधिकारो तस्स दुक्खा पटिपदा होति, कताधिकारस्स सुखा। यो पन विपस्सनाय अकताधिकारो होति, तस्स दन्धा अभिञ्ञा होति, कताधिकारस्स खिप्पा। किलेसिन्द्रियवसेन पि एतासं पभेदो वेदितब्बो। तिब्बकिलेसस्स हि मुदिन्द्रियस्स दुक्खा पटिपदा होति दन्धा च अभिञ्ञा, तिक्खिन्द्रियस्स पन खिप्पा अभिञ्ञा। मन्दकिलेसस्स च मुदिन्द्रियस्स सुखापटिपदा होति दन्धा च अभिञ्ञा, तिक्खिन्द्रियस्स पन खिप्पा अभिञ्ञा ति।

इति इमासु पटिपदा-अभिञ्ञासु यो पुग्गलो दुक्खाय पटिपदाय दन्धाय अभिञ्ञाय झानं पापुणाति, तस्स तं झानं दुक्खापटिपदं दन्धाभिञ्ञं ति वुच्चति। सेसेसु पि एसेव नयो।

तत्थ 'तदनुधम्मता सति सन्तिट्ठति ठितिभागिनी पञ्ञा' [तु०पटि ४०] ति एवं वुत्तसतिया वा तं-तं झाननिकन्तिया वा विक्खम्भने पटिपदा, तं-तं-झानूपचारप्पत्तस्स अप्पनापरिवासे अभिञ्ञा च वेदितब्बा। आगमनवसेना पि च पटिपदाभिञ्ञा होन्ति येव। दुक्खापटिपदं हि दन्धाभिञ्ञं पठमज्झानं पत्वा पवत्तं दुतियं पि तादिसमेव होति। ततियचतुत्थे पि एसेव नयो। यथा च चतुक्कनये एवं पञ्चकनये पि पटिपदावसेन चतुधा भेदो वेदितब्बो। इति पटिपदावसेन पि चत्तारो नवका वुत्ता होन्ति। तेसु पाठतो छत्तिंस चित्तानि, अत्थतो पन पञ्चकनये चतुक्कनयस्स पविट्ठत्ता वीसतिमेव भवन्ती ति।

पटिपदा निट्ठिता।

आरम्मणचतुक्कं

इदानि यस्मा एतं झानं नाम यथा पटिपदाभेदेन एवं आरम्मणभेदेना पि चतुब्बिधं होति। तस्मा'स्स तं भेदं दस्सेतुं पुन **कतमे धम्मा कुसला** [§ १८१] ति आदि आरद्धं। तत्थ **परित्तं परित्तारम्मणं** ति आदीसु यं अप्पगुणं होति, उपरिज्झानस्स पच्चयो भवितुं न सक्कोति, इदं **परित्तं** नाम। यं पन अवड्ढिते सुप्पमत्ते वा सरावमत्ते वा आरम्मणे पवत्तं, तं परित्तं आरम्मणं अस्सा ति **परित्तारम्मणं**। यं पगुणं सुभावितं उपरिज्झानस्स पच्चयो भवितुं सक्कोति, इदं **अप्पमाणं** [§१८३] नाम।

तत्था ति तस्मिं झानाधिकारे, वेदितब्बा ति पदे आधारो। तदनुधम्मता ति तस्स पठमादिझानस्स अनुरूपसभावा, सकत्थे 'ता' पच्चयो। सन्तिट्ठतीति सम्मा तिट्ठति, ठितिभागिनी तप्पटिभागे पवत्तिनी। सतिया निकन्तिया ति पदद्वयं विक्खम्भने ति पदे कम्मं। यथा चतुक्कनये चतुधा भेदो वेदितब्बो। तेसू ति चतूसु नवकेसु।

पटिपदाकथावण्णना निट्ठिता

आरम्मणचतुक्कवण्णना

तत्था ति[1] कतमे धम्मा कुसला ति आदिवचने[2]। एत्था ति आरम्मणचतुक्के।

आरम्मणचतुक्कवण्णना निट्ठिता।

१. अस्सा ति झानस्स। तत्था ति–सी०। २. ०यं ति झानं। अप्पगुणं ति पंचहि वसितादीहि अवसितं। अस्स झानस्स–सी०।

यं विपुले आरम्मणे पवत्तं तं वुड्ढिप्पमाणत्ता अप्पमाणं आरम्मणं अस्सा ति **अप्पमाणारम्मणं** [§१८४] वुत्तलक्खणवोमिस्सताय पन वोमिस्सकनयो वेदितब्बो। इति आरम्मणवसेन पि चत्तारो नवका वुत्ता होन्ति। चित्तगणना पेत्थ पुरिमसदिसा एवा ति।

आरम्मणचतुक्कं निट्ठितं

कसिणकथा

इदानि आरम्मण-पटिपदामिस्सकं सोळसक्खत्तुकनयं दस्सेतुं पुन **कतमे धम्मा कुसला** [§१८६] ति आदि आरद्धं। तत्थ पठमनये वुत्तज्झानं दुक्खापटिपदत्ता दन्धाभिञ्ञत्ता परित्तत्ता परित्तारम्मणत्ता ति चतूहि कारणेहि हीनं, सोळसमनये वुत्तज्झानं सुखापटिपदत्ता खिप्पाभिञ्ञत्ता अप्पमाणत्ता अप्पमाणारम्मणत्ता ति चतूहि कारणेहि पणीतं। सेसेसु चुद्दससु एकेन द्वीहि तीहि च कारणेहि हीनपणीतता वेदितब्बा।

कस्मा पनायं नयो देसितो ति? ञानुप्पत्तिकारणत्ता। सम्मासम्बुद्धेन हि पठवीकसिणे सुद्धिकज्झानं चतुक्कनयवसेन पञ्चकनयवसेन च दस्सितं; तथा सुद्धिकपटिपदा, तथा सुद्धिकारम्मणं। तत्थ या देवता पठवीकसिणे सुद्धिकज्झानं चतुक्कनयवसेन देसियमानं बुज्झितुं सक्कोन्ति, तासं सप्पायवसेन सुद्धिकज्झाने चतुक्कनयो देसितो। या पञ्चकनयवसेन देसियमानं बुज्झितुं सक्कोन्ति, तासं सप्पायवसेन पञ्चकनयो। या सुद्धिकपटिपदाय, सुद्धिकारम्मणे चतुक्कनयवसेन देसियमानं बुज्झितुं सक्कोन्ति, तासं सप्पायवसेन सुद्धिकपटिपदाय सुद्धिकारम्मणे चतुक्कनयो देसितो। या पञ्चकनयवसेन देसियमानं बुज्झितुं सक्कोन्ति तासं सप्पायवसेन पञ्चकनयो। इति हेट्ठा पुग्गलज्झासयवसेन देसना कता।

देसनाविलासप्पत्तो चेस पभिन्नपटिसम्भिदो दसबलचतुवेसारज्जविसदञाणो धम्मानं याथावसरसलक्खणस्स सुप्पटिविद्धत्ता धम्मपञ्ञत्तिकुसलताय यो यो नयो लब्भति तस्स तस्स वसेन देसनं नियामेतुं सक्कोति, तस्मा इमाय देसनाविलासप्पत्तिया पि तेन एसा पठवीकसिणे सुद्धिकचतुक्कनयादिवसेन देसना कता। यस्मा पन ये केचि

कसिणकथावण्णना

तत्था ति कतमे धम्मा ति[1] आदिवचने विनिच्छयो वेदितब्बो।

तत्था ति चतुक्कनयादीसु, निद्धारणं। या[2] देवता। तासं देवतानं। हेट्ठा ति सोळसक्खत्तुं पुब्बे[2]।

दसबलानि च चतुवेसारज्जानि च दस[3]....प०[3]....नि। विसदानि ञाणानि विसदञाणानि। दसबलचतुवेसारज्जानि विसदञाणानि यस्स सो दसबल....प०....विसदञाणो। याथावसरसलक्खणस्सा ति अविपरीतस्स अत्तनो सभावसङ्खातस्स[4] लक्खणस्स[4]। धम्म-

१. धम्मा कुसला ति–सी०। २-२. नत्थि–म०। ३-३. दसबलचतुवेसारज्जानि–सी०। ४-४. सभावसंखातलक्खणस्स–सी०।

ञानं उप्पादेन्ति नाम न ते आरम्मणपटिपदाहि विना उप्पादेतुं सक्कोन्ति, तस्मा नियमतो ञानुप्पत्तिकारणत्ता अयं सोळसक्खत्तुकनयो कथितो।

एत्तावता सुद्धिकनवको, चत्तारो पटिपदानवका, चत्तारो आरम्मणनवका, इमे च सोळसनवका ति पञ्चवीसतिनवका कथिता होन्ति। तत्थ एकेकस्मिं नवके चतुक्कपञ्चकवसेन द्वे द्वे नया ति पञ्ञास नया। तत्थ पञ्चवीसतिया चतुक्कनयेसु सतं, पञ्चकनयेसु पञ्चवीससतं ति पाठतो पञ्चवीसाधिकानि द्वे ञानचित्तसतानि होन्ति। पञ्चकनये पन चतुक्कनयस्स पविट्ठत्ता अत्थतो पञ्चवीसमेव चित्तसतं होति। यानि चेतानि पाठे पञ्चवीसाधिकानि द्वे चित्तसतानि तेसु एकेकस्स निद्देसे धम्मववत्थानादयो तयो तयो महावारा होन्ति। ते पन तत्थ तत्थ नयमत्तमेव दस्सेत्वा संखित्ता ति।

पठवीकसिणं निट्ठितं।

सेसकसिणा

इदानि यस्मा आपोकसिणादीसु पि एतानि ञानानि उप्पज्जन्ति, तस्मा तेसं दस्सनत्थं पुन **कतमे धम्मा कुसला** [§ २०३] ति आदि आरद्धं। तेसु सब्बो पालिनयो च अत्थविभावना च चित्तगणना च वारसंखेपो च पठवीकसिणे वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। भावनानयो पन कसिणपरिकम्मं आदिं कत्वा सब्बो **विसुद्धिमग्गे** (४-५ परि०) पकासितो एव। **महासकुलुदायिसुत्ते** (म० २:२३६-२३७) पन दस कसिणानि वुत्तानि। तेसु विञ्ञाणकसिणं आकासे पवत्तितमहग्गतविञ्ञाणं पि तत्थ परिकम्मं कत्वा निब्बत्ता विञ्ञाणञ्चायतनसमापत्ति पि होती ति सब्बप्पकारेन आरुप्पदेसनमेव भजति, तस्मा इमस्मिं ठाने न कथितं।

पञ्ञत्तिकुसलताया ति पदं सक्कोती ति पदे (१४८–सी०) हेतु। विलासपत्तिया[१] पी ति पिसद्दो पुग्गलज्झासयं अपेक्खति। तेना ति भगवता, कता ति पदे कत्ता। ये[२] केचि पुग्गला ते पुग्गला[२]।

तत्था ति पञ्चवीसतिनवकेसु। नवके ति पदं द्वे द्वे नया ति पदे आधारो। तत्था ति पञ्ञासनयेसु। तेसू ति पञ्च वीसाधिकेसु द्विचित्तसतेसु। एकेकस्सा ति चित्तस्स। ते ति महावारा। तत्थ[3] तत्था ति तस्मिं तस्मिं ठाने[3]।

पठवीकसिणकथा निट्ठिता

सेसकसिणकथावण्णना

तेसं ति ञानानं। तेसू ति ञानेसु। तेसू ति दसकसिणेसु। इमस्मिं ठाने विञ्ञाणकसिणं भगवता न कथितं। तत्था ति पुरिमपच्छिमनयेसु, न आरुळ्हं आकासकसिणं ति सम्बन्धो।

१. विलासमपत्तिया–सी०। २-२. नत्थि–म०। ३-३. नत्थि–म०। ४. निरोधसमापत्तिया–सी०।

आकासकसिणं ति पन कसिणुग्घाटितमाकासं पि, तं आरम्मणं कत्वा पवत्तक्खन्धा पि, भित्तिच्छिद्दादीसु अञ्ञतरस्मिं गहेतब्बनिमित्तं परिच्छेदाकासं पि, तं आरम्मणं कत्वा उप्पन्नं चतुक्कपञ्चकज्झानं पि वुच्चति। तत्थ पुरिमनयो आरुप्पदेसनं भजति, पच्छिमनयो रूपावचरदेसनं। इति मिस्सकत्ता इमं रूपावचरदेसनं न आरूळ्हं। परिच्छेदाकासे निब्बत्तज्झानं पन रूपूपपत्तिया मग्गो होति तस्मा तं गहेतब्बं। तस्मिं पन चतुक्कपञ्चकज्झानमेव उप्पज्जति, अरूपज्झानं नुप्पज्जति। कस्मा? कसिणुग्घाटनस्स अलाभतो। तं हि पुनप्पुनं उग्घाटियमानं पि आकासमेव होती ति न तत्थ कसिणुग्घाटनं लब्भति, तस्मा तत्थ उप्पन्नं झानं दिट्ठधम्मसुखविहाराय संवत्तति, अभिञ्ञापादकं होति, विपस्सनापादकं होति, निरोधपादकं न होति।

अनुपुब्बनिरोधो पनेत्थ याव पञ्चमज्झाना लब्भति वट्टपादकं होति येव। यथा चेतं एवं पुरिमकसिणेसु उप्पन्नज्झानं पि। निरोधपादकभावो पन तत्थ विसेसो। सेसमेत्थ आकासकसिणे यं वत्तब्बं सिया तं सब्बं **विसुद्धिमग्गे** (५:२४-२६) वुत्तमेव। 'एको पि हुत्वा बहुधा होती' ति [दी० १.६८] आदिनयं पन विकुब्बनं इच्छन्तेन पुरिमेसु अट्ठसु कसिणेसु अट्ठ समापत्तियो निब्बत्तेत्वा कसिणानुलोमतो कसिणपटिलोमतो, कसिणानुलोमपटिलोमतो; झानानुलोमतो झानपटिलोमतो, झानानुलोमपटिलोमतो; झानुक्कन्तिकतो, कसिणुक्कन्तिकतो, झानकसिणुक्कन्तिकतो; अङ्गसंकन्तितो, आरम्मणसंकन्तितो, अङ्गारम्मणसंकन्तितो; अङ्गववत्थानतो, आरम्मणववत्थानतो ति इमेहि चुद्दसहि आकारेहि चित्तं परिदमेतब्बं। तेसं वित्थारकथा **विसुद्धिमग्गे** (१२:२-७) वुत्ता येव।

एवं पन चुद्दसहि आकारेहि चित्तं अपरिदमेत्वा, पुब्बे अभावितभावनो आदिकम्मिको योगावचरो इद्धिविकुब्बनं सम्पादेस्सती ति नेतं ठानं विज्जति। आदि-

---

तं ति परिच्छेदाकासे निब्बत्तज्झानं। तस्मिं ति परिच्छेदाकासे। तं हीति हि सच्चं तं परिच्छेदाकासं। तत्था ति परिच्छेदाकासे। अभिञ्ञापादकं ति अभिञ्ञानं कारणं। विपस्सनापादकं ति विपस्सनाय पादकं एतं झानं होति, निरोधपादकं ति (म०–१२३) निरोधस्स[1] समापत्तिया[1] पादकं न होति।

अनुपुब्बनिरोधो ति अनुपुब्बेन निरोधो। तत्था ति रूपावचरझाने। वट्टपादकं ति वट्टस्स कारणं। यथा चेतं ति यथा च एतं परिच्छेदाकासे निब्बत्तझानं अभिञ्ञापादकादिकं[2] होति। तत्था ति पुरिमकसिणेसु उप्पन्नझानेसु। एत्था ति रूपावचरझानाधिकारे। इच्छन्तेन योगावचरेन[3], परिदमेतब्बं ति पदे कत्ता। निब्बत्तेत्वा परिदमेतब्बं ति सम्बन्धो। तेसं ति चुद्दसन्नं आकारानं।

थेरम्बत्थले ति सीहलदीपे महामहिन्दत्थेरस्स निपतट्ठानभूते[4] अम्बत्थले।

कसिणकथावण्णना निट्ठिता।

१-१. निरोधसमापत्तिया–सी०। २. अभिञ्ञापादकं–सी०। ३. योगावचरेना ति पदं–सी०। ४. पतनभूते–म०।

कम्मिकस्स हि कसिणपरिकम्मं पि भारो; सतेसु सहस्सेसु एको व सक्कोति। कत-कसिणपरिकम्मस्स निमित्तुप्पादनं भारो; सतेसु सहस्सेसु एको व सक्कोति। उप्पन्ने पि निमित्ते तं वड्ढेत्वा अप्पनाधिगमो भारो, सतेसु सहस्सेसु एको व सक्कोति। अधि-गत-अप्पनस्स चुद्दसहाकारेहि चित्तपरिदमनं भारो; सतेसु सहस्सेसु एको व सक्कोति। चुद्दसहाकारेहि परिदमितचित्तस्सा पि इद्धिविकुब्बनं नाम भारो, सतेसु सहस्सेसु एको व सक्कोति। विकुब्बनप्पत्तस्सा पि खिप्पनिसन्ति नाम भारो; सतेसु सहस्सेसु एको व खिप्पनिसन्ति होती ति। **थेरम्बत्थले** महारोहणगुत्तत्थेरस्स गिलानुपट्ठानं आगतेसु तिंसमत्तेसु इद्धिमन्तसहस्सेसु उपसम्पदाय अट्ठवस्सिको रक्खितत्थेरो विय। सब्बं वत्थु **विसुद्धिमग्गे** (१२:४-९) वित्थारितमेवा ति।

कसिणकथा निट्ठिता।

अभिभायतनकथा

एवं अट्ठसु कसिणेसु रूपावचरकुसलं निद्दिसित्वा, इदानि यस्मा समाने पि आरम्मणे भावनाय असमानत्ता इमेसु अट्ठसु कसिणेसु अञ्ञं पि अभिभायतनसंखातं रूपावचरकुसलं पवत्तति, तस्मा तं दस्सेतुं पुन **कतमे धम्मा कुसला** [§ २०४] ति आदि आरद्धं। तत्थ **अज्झत्तं अरूपसञ्ञी** ति अलाभिताय वा अनत्थिकताय वा अज्झत्तकरूपे परिकम्मसञ्ञाविरहितो। **बहिद्धा रूपानि पस्सती** ति बहिद्धा अट्ठसु कसिणेसु कतपरिकम्मताय परिकम्मवसेन चेव अप्पनावसेन च तानि बहिद्धा अट्ठसु कसिणेसु रूपानि पस्सति। **परित्तानी** ति अवड्ढितानि। **तानि अभिभुय्या** ति यथा नाम सम्पन्नगहणिको कटच्छुमत्तं भत्तं लभित्वा 'किमेत्थ भुञ्जितब्बं अत्थी' ति संकड्ढित्वा एककबळमेव करोति, एवमेव ञाणुत्तरिको पुग्गलो विसदञाणो 'किमेत्थ परित्ते आरम्मणे समापज्जितब्बं अत्थि, नायं मम भारो' ति तानि रूपानि अभि-भवित्वा समापज्जति। सह निमित्तुप्पादनेनेवेत्थ अप्पनं निब्बत्तेती ति अत्थो। **जानामि पस्सामी** ति इमिना पन'स्स पुब्बाभोगो कथितो ति। **आगमट्ठकथासु** पन वुत्तं—

अभिभायतनकथावण्णना

तत्था ति कतमे धम्मा ति आदिवचने विनिच्छयो वेदितब्बो। सम्पन्नगहणिको ति गण्हातीति गहणी, असितादिपाचको अग्गि। 'गह'-उपादाने। **गहादीह्यणी** ति (६२ ण्वु०) मोग्गलानसुत्तेन अणी[1]। सम्पन्ना[2] गहणी यस्स सो सम्पन्नगहणिको[2]। एत्था ति कटच्छुप्प-माणे भत्ते। एत्थ[3] आरम्मणे[3]। निमित्तुप्पादेनेवा ति पटिभागनिमित्तस्स वा उप्पादेनेव[4] सह[4] (१४९–सी०) निब्बत्तेतीति इदं अप्पनाय सीघप्पवत्तं सन्धाय वुत्तं। उपचारुप्पत्ति हि पञ्चम-वीथिं अनतिक्कमित्वा अप्पनं निब्बत्तेति। अयं सीघप्पवत्ति नाम। न हि निमित्तप्पत्तिया सह

१. णी–सी०। २-२. सम्पन्नो गहणिको–म०। ३-३. नत्थि–म०। ४-४. ''''प०'''' म०।

इमिना'स्स आभोगो कथितो। सो च खो समापत्तितो वुट्ठितस्स, न अन्तोसमापत्तियं [ ] ति।

अप्पमाणानी [§ २२५] ति वड्ढितप्पमाणानि। **अभिभुय्या** ति एत्थ यथा च महग्घसो पुरिसो एकं भत्तवड्ढितकं लभित्वा 'अञ्ञं पि होतु अञ्ञं पि होतू' ति 'किं एको मय्हं करिस्सती' ति तं न पन महन्ततो पस्सति, एवमेव ञाणुत्तरिको पुग्गलो विसदञाणो 'किं एत्थ समापज्जितब्बं, न इदं अप्पमाणं, न मय्हं चित्तेकग्गताकरणे भारो अत्थी' ति तानि अभिभवित्वा समापज्जति। सह निमित्तुप्पादनेनेवेत्थ अप्पनं निब्बत्तेती ति अत्थो। **परित्तं परित्तारम्मणं अप्पमाणं परित्तारम्मणं** [§§ २११, २१२] ति इध परित्तानी ति आगतत्ता अप्पमाणारम्मणता न गहिता, परतो अप्पमाणानी ति वा आगतत्ता परित्तारम्मणता। अट्ठकथायं पन वुत्तं—'इमस्मिं ठाने चत्तारि चत्तारि आरम्मणानि अगहेत्वा द्वे द्वे येव च गहितानि। किं कारणा? चतूसु हि गहितेसु देसना सोळसक्खत्तुका होति, सत्थारा च हेट्ठा सोळसक्खत्तुकदेसना किलञ्जम्हि तिले पत्थरन्तेन विय वित्थारतो कथिता। तत्थ इमस्मिं ठाने अट्ठक्खत्तुकदेसनं कातुं अज्झासयो। तस्मा द्वे द्वे येव गहितानी ति वेदितब्बानि। **सुवण्णदुब्बण्णानी** [§२४४] ति परिसुद्धापरिसुद्धवण्णानि। परिसुद्धानि हि नीलादीनि सुवण्णानि, अपरिसुद्धानि च दुब्बण्णानी ति इध अधिप्पेतानि। आगमट्ठकथासु पन 'सुवण्णानि वा होन्तु दुब्बण्णानि वा, परित्त-अप्पमाणवसेनेव इमानि अभिभायतनानि देसितानी' ति वुत्तं।

इमेसु पन चतूसु परित्तं वितक्कचरितवसेन आगतं, अप्पमाणं मोहचरितवसेन, सुवण्णं दोसचरितवसेन, दुब्बण्णं रागचरितवसेन। एतेसं हि एतानि सप्पायानि। सा च तेसं सप्पायता वित्थारतो **विसुद्धिमग्गे** (३:१५-२३) चरियनिद्देसे वुत्ता। कस्मा पन, यथा सुत्तन्ते "अज्झत्तं रूपसञ्ञी एको बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानी" [दी० २.८६] ति आदि वुत्तं, एवं अवत्वा इध चतूसु पि अभिभायतनेसु अज्झत्तं अरूपसञ्ञिता वुत्ता ति? अज्झत्तरूपानं अनभिभवनीयतो। तत्थ वा हि इध वा बहिद्धारूपानेव अभिभवितब्बानि, तस्मा तानि नियमतो वत्तब्बानी ति तत्र पि इधा पि वुत्तानि। **अज्झत्तं अरूपसञ्ञी** [§२४४] ति इदं पन सत्थु देसनाविलासमत्तमेव।

अप्पनाय उप्पत्ति होति। एत्था ति परित्तके आरम्मणे। अस्सा ति योगावचरस्स। सो ति अभोगो।

एत्था ति एतस्मिं बचने विनिच्छयो वेदितब्बो। एसो[1] भत्तवड्ढको[1]। एत्था[2] ति आरम्मणे। इदं आरम्मणं। तानि आरम्मणानि। एत्थ ठाने। इध वाक्ये द्वे द्वे एव च आरम्मणानि। चतुसू ति आरम्मणेसु[2]। तस्सा ति सत्थुनो।

एतेसं हीति हि सच्चं एतेसं वितक्कचरितादीनं पुग्गलानं[3]। एतानि परित्तादीनि।

१-१. एसा वड्ढका–म०। २-२. इध पठमनये–म०। ३. नत्थि–म०।

अयं ताव चतूसु अभिभायतनेसु अनुपुब्बपदवण्णना।

सुद्धिकनये पटिपदाभेदो पनेत्थ पठवीकसिणे वुत्तनयेनेव एकेकस्मिं अभिभायतने वेदितब्बो। केवलं हि एत्थ आरम्मणचतुक्कं आरम्मणदुकं होति, सोळसक्खत्तुकं च अट्ठक्खत्तुकं। सेसं तादिसमेव। एवमेत्थ एकेकस्मिं अभिभायतने एको सुद्धिकनवको, चत्तारो पटिपदानवका, द्वे आरम्मणनवका, आरम्मणपटिपदामिस्सके अट्ठ नवका ति पण्णरस नवका ति चतूसु पि अभिभायतनेसु समसट्ठि नवका वेदितब्बा।

पञ्चमाभिभायतनादीसु **नीलानी** [§२४६] ति सब्बसंगाहिकवसेन वुत्तं। **नीलवण्णादीनि** वण्णवसेन, **नीलनिदस्सनानी** ति निदस्सनवसेन, अपञ्ञायमानविवरानि, असम्भिन्नवण्णानि, एकनीलानेव हुत्वा दिस्सन्ती ति वुत्तं होति। **नीलनिभासानी** ति इदं पन ओभासनवसेन वुत्तं; नीलोभासानि नीलप्पभायुत्तानी ति अत्थो। एतेन नेसं सुविसुद्धितं दस्सेति। सुविसुद्धवण्णवसेन हि इमानि चत्तारि अभिभायतनानि वुत्तानि। **पीतानी** [§२४७] ति आदीसु पि इमिना व नयेन अत्थो वेदितब्बो। नीलकसिणं उग्गण्हन्तो नीलस्मिं निमित्तं गण्हाति। पुप्फस्मिं वा वत्थस्मिं वा वण्णधातुया वा ति आदिकं पनेत्थ कसिणकरणं च परिकम्मं च अप्पनाविधानं च सब्बं **विसुद्धिमग्गे** (५:९-१४) वित्थारतो वुत्तमेव। यथा च पठवीकसिणे एवमिध एकेकस्मिं अभिभायतने व पञ्चवीसति नवका वेदितब्बा।

अभिभायतनकथा निट्ठिता।

विमोक्खकथा

इदानि यस्मा इदं रूपावचरकुसलं नाम न केवलं आरम्मणसंखातानं आयत-

सप्पायानि अनुरूपानि। नेसं ति वितक्कचरितादीनं पुग्गलानं[1]। इधा ति[2] अभिधम्मे। तत्थ वा हीति हि सच्चं। इध[3] वा ति अभिधम्मे। तानि रूपानि। तत्रा ति सुत्तन्ते। इधापी ति अभिधम्मे[3]।

एत्था ति अभिभायतनेसु, निद्धारणं। एत्था[4] ति पथवीकसिणे[4]। इधा ति अभिधम्मे[5]। एत्था ति अभिभायतनेसु।

इदं पन वचनं। एतेना ति नीलनिभासानीति[6] वचनेन। नेसं ति अभिभायतनानं। एत्था ति अभिभायतने। यथा च[7] पथवीकसिणे पञ्चवीसति नवका वेदितब्बा। इध[8] अभिभायतने।

अभिभायतनकथावण्णना निट्ठिता।

विमोक्खकथावण्णना

विमोक्खो इति धम्मो पण्डितेन वेदितब्बो ति पुच्छा।

---

१. नत्थि–म०। २. इध वा ति–सी०। ३-३. तत्थ सुत्तन्ते–म०। ४-४. एत्था ति सुत्तन्ते–सी०। ५. ०एत्थ ठाने। इध वाक्ये। द्वे द्वे एव च आरम्मणानि। चतुसू ति आरम्मणेसु–सी० पोत्थके अधिको पाठो। ६. नीलोभासानीति–सी०। ७. नत्थि–म०। ८. इधा ति–सी०।

नानं अभिभवनतो अभिभायतनवसेनेव उप्पज्जति, अथ खो विमोक्खवसेन पि उप्पज्जति, तस्मा तं पि नयं दस्सेतुं पुन **कतमे धम्मा कुसला** [§२४८] ति आदि आरद्धं । केन पन'ट्ठेन विमोक्खो वेदितब्बो ति ? अधिमुच्चनट्ठेन । को अयं अधिमुच्चनट्ठो नाम ? पच्चनीकधम्मेहि च सुट्ठु विमुच्चनट्ठो, आरम्मणे च अभिरतिवसेन सुट्ठु अधिमुच्चनट्ठो । पितु अङ्के विस्सट्ठा अंगपच्चंगस्स दारकस्स सयनं विय अनिग्गहितभावेन निरासंकताय आरम्मणे पवत्तती ति वुत्तं होति । एवंलक्खणं हि विमोक्खभावप्पत्तं रूपावचरकुसलं दस्सेतुं अयं नयो **आरद्धो** ।

तत्थ **रूपी** [§२४८] ति अज्झत्तं केसादीसु उप्पादितं रूपज्झानं रूपं, तदस्स अत्थी ति रूपी । अज्झत्तं हि नीलपरिकम्मं करोन्तो केसे वा पित्ते वा अक्खितारकाय वा करोति । पीतपरिकम्मं करोन्तो मेदे वा छविया वा अक्खीनं पीतकट्ठाने वा करोति । लोहितपरिकम्मं करोन्तो मंसे वा लोहिते वा जिव्हाय वा हत्थतलपादतलेसु वा अक्खीनं रत्तट्ठाने वा करोति । ओदातपरिकम्मं करोन्तो अट्ठिम्हि वा दन्ते वा नखे वा अक्खीनं सेतट्ठाने वा करोति । एवं परिकम्मं कत्वा उप्पन्नज्झानसमङ्गीनं सन्धायेतं वुत्तं । **रूपानि पस्सती** ति बहिद्धा पि नीलकसिणादिरूपानि झानचक्खुना पस्सति । इमिना अज्झत्तबहिद्धावत्थुकेसु कसिणेसु झानपटिलाभो दस्सितो ।

अज्झत्तं अरूपसञ्ञी [§२४९] ति अज्झत्तं न रूपसञ्ञी । अत्तनो केसादीसु अनुप्पादितरूपावचरज्झानो ति अत्थो । इमिना बहिद्धा परिकम्मं कत्वा बहिद्धा व पटिलद्धज्झानता दस्सिता । **सुभं** [§२५०] ति इमिना सुविसुद्धेसु नीलादीसु वण्णकसिणेसु झानानि दस्सितानि । तत्थ किञ्चा पि अन्तो अप्पनाय 'सुभं' ति आभोगो नत्थि, यो पन सुविसुद्धं सुभकसिणं आरम्मणं कत्वा विहरति, सो यस्मा 'सुभं' ति....प०....पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तथा दुतियादीनि, तस्मा एवं देसना कता । **प**टिसम्भिदामग्गे पन "कथं सुभं त्वेव अधिमुत्तो होती ति विमोक्खो ? इध भिक्खु मेत्तासहगतेन चेतसा एकं दिसं....प०....विहरति, मेत्ताय भावितत्ता सत्ता अप्पटिकूला होन्ति; करुणा.... मुदिता....उपेक्खासहगतेन चेतसा एकं दिसं....प०....विहरति, उपेक्खाय भावितत्ता

तत्था ति रूपीति आदिपदेसु, निद्धारण । अज्झत्तं[1] ति केसादीसू ति पदस्स विसेसनं । तदस्सा ति तं रूपं अस्स पुग्गलस्स । अज्झत्तं हीति आदि दळ्हीकरणं । उप्पन्नझानसमङ्गीनं पुग्गलं सन्धाय एतं रूपीति वचनं भगवता वुत्तं । इमिना ति बहिद्धा रूपानि पस्सतीति वचनेन ।

रूपेन[2] रूपावचरज्झानेन सम्पयुत्ता[2] सञ्ञा रूपसञ्ञा । सा[3] रूपावचरसञ्ञा[4] अस्स अत्थीति रूपसञ्ञी । न रूपसञ्ञी अरूपसञ्ञी । तत्था ति वण्णकसिणेसु पवत्तझानेसु, नत्थी

---

१. अज्झत्तं ति पदं–सी० । २-२. रूपे–म० । ३. नत्थि–सी० । ४. नत्थि–म० ।

सत्ता अप्पटिकूला होन्ति, एवं सुभं त्वेव अधिमुत्तो होती'' [पटि० २७८–२७९] ति विमोक्खो ति वुत्तं। इध पन उपरि पालियं येव ब्रह्मविहारानं आगतत्ता तं नयं पटिक्खिपित्वा सुनीलक-सुपीतक-सुलोहितक-सु-ओदातक-परिसुद्धनीलक-परिसुद्धपीतक-परिसुद्धलोहितक- परिसुद्ध-ओदातकवसेनेव सुभविमोक्खो अनुञ्ञातो।

इति कसिणं ति वा अभिभायतनं ति वा विमोक्खो ति वा रूपावचरज्झानमेव। तं हि आरम्मणस्स सकलट्ठेन कसिणं नाम, आरम्मणं अभिभवनट्ठेन अभिभायतनं नाम, आरम्मणे अधिमुच्चनट्ठेन पच्चनीकधम्मेहि च विमुच्चनट्ठेन विमोक्खो नामा ति वुत्तं। तत्थ कसिणदेसना अभिधम्मवसेन, इतरा पन सुत्तन्तदेसनावसेन वुत्ता ति वेदितब्बा। अयमेत्थ अनुपुब्ब-पदवण्णना। एकेकस्मिं पन विमोक्खे पठवीकसिणे विय पञ्चवीसति पञ्चवीसति कत्वा पञ्चसत्तति नवका वेदितब्बा।

विमोक्खकथा निट्ठिता।

ब्रह्मविहारकथा

इदानि मेत्तादिब्रह्मविहारवसेन पवत्तमानं रूपावचरकुसलं दस्सेतुं पुन **कतमे धम्मा कुसला** [§२५१] ति आरद्धं। तत्थ **मेत्तासहगतं** ति मेत्ताय समन्नागतं। परतो करुणासहगतादीसु पि एसेव नयो। येन पनेस विधानेन पटिपन्नो मेत्तादिसहगतानि झानानि उपसम्पज्ज विहरति, तं मेत्तादीनं भावनाविधानं **विसुद्धिमग्गे** (९ परि०) वित्थारितमेव। अवसेसाय पालिया अत्थो पठवीकसिणे वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। केवलं हि पठवीकसिणे पञ्चवीसति नवका, इध पुरिमासु तीसु तिकचतुक्कझानिकवसेन

ति पदे आधारो[1]। इधा ति (१५०–सी०) अभिधम्मे। अनुञ्ञातो ति पदे आधारो।

तं हीति हि सच्चं, तं झानं। (१२४–म०) आरम्मणस्सा ति पदं सकलट्ठेना ति पदे सम्बन्धो। सकलट्ठेना ति एत्थ आरम्मणं कसिणं नाम। आरम्मणप्पटिबद्धझानं पि कसिणं नामा ति अधिप्पायो। तत्था ति कसिणदेसनादीसु। इतरा[2] पना ति अभिभायतन-विमोक्खा[2]। एत्था ति विमोक्खे।

विमोक्खकथावण्णना निट्ठिता।

ब्रह्मविहारकथावण्णना

तत्था[3] ति कतमे धम्मा कुसला ति आदिवचने विनिच्छयो वेदितब्बो[3]। येन पनेसो[4] ति येन विधानेन एसो पुग्गलो। इधा ति ब्रह्मविहारे। तीसू ति मेत्ता-करुणा-मुदितादीसु।

---

१. ०यो पन पुग्गलो सो पुग्गलो–सी०। २-२. नत्थि–म०। ३-३. नत्थि–म०। ४. पनेसा–सी०; एसो–म०।

पञ्चवीसति सत्तका, उपेक्खाय चतुत्थज्झानवसेन पञ्चवीसति एकका, करुणामुदितासु च छन्दादीहि चतूहि सद्धिं करुणामुदिता ति इमे पि ये-वा-पनका लब्भन्ति। दुक्खापटिपदादिभावो चेत्थ मेत्ताय ताव ब्यापादविक्खम्भनवसेन, करुणाय विहिंसाविक्खम्भनवसेन, मुदिताय अरतिविक्खम्भनवसेन, उपेक्खाय रागपटिघविक्खम्भनवसेन वेदितब्बो। परित्तारम्मणता पन न, बहुसत्तारम्मणवसेन; अप्पमाणारम्मणता बहुसत्तारम्मणवसेन होती ति अयं विसेसो। सेसं तादिसमेव।

पकिण्णककथा

एवं ताव पालिवसेनेव—

ब्रह्मुत्तमेन कथिते ब्रह्मविहारे इमे इति विदित्वा।
भिय्यो एतेसु अयं पकिण्णककथा पि विञ्ञेय्या॥

एतासु हि मेत्ता-करुणा-मुदिता-उपेक्खासु अत्थतो ताव मेज्जती ति **मेत्ता**; सिनेहती ति अत्थो। मित्ते वा भवा, मित्तस्स वा एसा पवत्तती ति मेत्ता। परदुक्खे सति साधूनं हदयकम्पनं करोती ति **करुणा** [§२५८]। किणाति वा परदुक्खं हिंसति विनासेती ति करुणा। किरियति वा दुक्खितेसु करणवसेन पसारियती ति करुणा। मोदन्ति ताय तं-समङ्गिनो, सयं वा मोदति, मोदनमत्तमेव वा तं ति **मुदिता** [§२६०]। 'अवेरा होन्तू' ति आदिब्यापादप्पहानेन मज्झत्तभावूपगमनेन च उपेक्खती ति **उपेक्खा** [§२६२]।

करुणामुदितादीसु[1] चा ति निद्धारणं[1]। एत्था ति ब्रह्मविहारे। दुक्खापटिपदादिभावो ति च वेदितब्बो ति योजना। परित्तारम्मणता पन न[2] बहुसत्तारम्मणवसेन होति[3]।

पकिण्णककथावण्णना

पाळिवसेनेवा ति पदं विदित्वा ति पदे ततियाविसेसनं। ब्रह्मुत्तमेन भगवता कथिते इमे ब्रह्मविहारे इति एवं विदित्वा भिय्यो बाहुल्लेन एतेसु ब्रह्मविहारेसु अयं पकिण्णकथा पि[4] पण्डितेन विञ्ञेय्या।

एतासु हीति आदि वित्थारो। हि सच्चं एतासु मेत्ता.....प०.....उपेक्खासु अत्थतो[5] ताव[5] विनिच्छयो वेदितब्बो। करोतीति करुणा। किं करोति? केसं किं निमित्तं? ति आह— परदुक्खे सति साधूनं कम्पनं ति। कम्पनं ति परेसं दुक्खं दिस्वा दुक्खस्स असहनाकारेन चित्तस्स अञ्ञथत्तं। तदिदं सप्पुरिसानं येव होतीति आह—साधूनं ति। सप्पुरिसा हि अत्तहित्त-परहितसाधनेन साधू ति वुच्चन्ति। किणातीति[6] पदस्स अत्थं विवरन्तो आह—हिंसति विनासेतीति[7]। तं-समङ्गिनो ति मुदिताय समङ्गिनो सत्ता।

१-१. नत्थि–सी०। २. नत्थि–सी०। ३. न होति–सी०।
४. नत्थि–सी०। ५-५. अत्थतो व–म०। ६. किनातीति–म०। ७. नत्थि–म०।

लक्खणादितो पनेत्थ हिताकारप्पवत्तिलक्खणा 'मेत्ता', हितूपसंहाररसा, आघातविनयनपच्चुपट्ठाना, सत्तानं मनापभावदस्सनपदट्ठाना। ब्यापादूपसमो एतिस्सा सम्पत्ति, सिनेहसम्भवो विपत्ति। दुक्खापनयनाकारप्पवत्तिलक्खणा 'करुणा', परदुक्खासहनरसा, अविहिंसापच्चुपट्ठाना, दुक्खाभिभूतानं अनाथभावदस्सनपदट्ठाना। विहिंसूपसमो तस्सा संपत्ति, सोकसम्भवो विपत्ति। पमोदलक्खणा 'मुदिता', अनिस्सायनरसा, अरतिविघातपच्चुपट्ठाना, सत्तानं सम्पत्तिदस्सनपदट्ठाना। अरतिवूपसमो तस्सा सम्पत्ति, पहाससम्भवो विपत्ति। सत्तेसु मज्झत्ताकारप्पवत्तिलक्खणा 'उपेक्खा', सत्तेसु समभावदस्सनरसा, पटिघानुनयवूपसमपच्चुपट्ठाना, "कम्मस्सका सत्ता, ते कस्स रुचिया सुखिता वा भविस्सन्ति, दुक्खतो वा मुच्चिस्सन्ति, पत्तसम्पत्तितो न परिहायिस्सन्ती ?" [ ] ति एवं पवत्तकम्मस्सकतादस्सनपदट्ठाना। पटिघानुनयवूपसमो तस्सा सम्पत्ति, गेहसिताय अञ्ञाणुपेक्खाय सम्भवो विपत्ति।

चतुन्नं पि पनेतेसं ब्रह्मविहारानं विपस्सनासुखं चेव भवसम्पत्ति च साधारणप्पयोजनं, ब्यापादादिपटिघातो आवेणिकं। ब्यापादपटिघातप्पयोजना हेत्थ मेत्ता, विहिंसा-अरति-रागपटिघातप्पयोजना इतरा। वुत्तं पि चेतं—"निस्सरणं हेतं आवुसो, ब्यापादस्स यदिदं मेत्ताचेतोविमुत्ति, निस्सरणं हेतं आवुसो, विहेसाय यदिदं करुणाचेतोविमुत्ति; निस्सरणं हेतं आवुसो, अरतिया यदिदं मुदिताचेतोविमुत्ति, निस्सरणं हेतं आवुसो, रागस्स यदिदं उपेक्खाचेतोविमुत्ती" [दी० ३.१९१-१९२] ति।

एत्था ति मेत्तादीसु लक्खणादितो विनिच्छयो[1] वेदितब्बो। हिताकारेन पवत्तिलक्खणं एतिस्सा ति हिताकारप्पवत्तिलक्खणा[2]। मनापभावदस्सनपदट्ठाना। परेसं दुक्खस्स असहनं अनधिवासनं परदुक्खासहनं। न विहिंसा अविहिंसा[3] सत्तानं अविहेठनं। अविहिंसं पच्चुपट्ठापेतीति[4] विहिंसाय वा पटिपक्खभावेन पच्चुपतिट्ठतीति अविहिंसा-(१५१-सी०)-पच्चुपट्ठाना[5]। पमोदलक्खणा ति परसम्पत्तिया पमोदलक्खणा। अनिस्सायनरसा ति इस्सायनस्स उस्सूयनस्स पटिपक्खभावकिच्चा। सत्तानं सम्पत्तिया पन्तसेनासने कुसलधम्मेसु च अरमनं अरति। सभावत्थतो[6] इस्साधिकदोमनस्ससहगतं[7] थिनमिद्धादिकं च उद्धच्चं अरतिया विघातेन विहननाकारेन पच्चुपतिट्ठति अरतियादिघातं[8] वूपसमं[9] पच्चुपट्ठापेतीति अरतिविघातपच्चुपट्ठाना[10]। कम्मं सकं एतेसं ति कम्मस्सका। ते ति सत्ता। कस्सा ति कस्स जनस्स।

एत्था ति मेत्तादीसु। इतरा[11] ति करुणा-मुदिता उपेक्खा। एतं वचनं। एतं मेत्ताचेतोविमुत्ति। यदिदं या अयं मेत्ताचेतोविमुत्ति[11]।

---

१. नत्थि–म०। २. नत्थि–म०। ३. नत्थि–म०। ४. पच्चुपट्ठापेति-म०। ५. ०पच्चुपट्ठानं–म०। ६. सा अत्थतो–सी०। ७. इस्साधिकं दोमनस्स०–सी०। ८. ०घाटं–सी० सब्बत्थ। ९. ०पच्चुपट्ठाति अरतिविघाटं–सी०। १०. अरतिया विघात०–म०। ११-११. नत्थि–म०।

एकमेकस्स चेत्थ आसन्नदूरवसेन द्वे द्वे पच्चत्थिका। मेत्ताब्रह्मविहारस्स हि, समीपचारो विय पुरिसस्स सपत्तो, गुणदस्सनसभागताय रागो आसन्नपच्चत्थिको। सो लहुं ओतारं लभति। तस्मा ततो सुट्ठु मेत्ता रक्खितब्बा। पब्बतादिगहननिस्सितो विय पुरिसस्स सपत्तो सभागविसभागताय ब्यापादो दूरपच्चत्थिको। तस्मा ततो निब्भयेन मेत्तायितब्बं। मेत्तायिस्सति च नाम कोपं च करिस्सती ति अट्ठानमेतं।

करुणाब्रह्मविहारस्स "चक्खुविञ्ञेय्यानं रूपानं इट्ठानं कन्तानं मनापानं मनोरमानं लोकामिसपटिसंयुत्तानं अप्पटिलाभं वा अप्पटिलाभतो समनुपस्सतो पुब्बे वा पटिलद्धपुब्बं अतीतं निरुद्धं विपरिणतं समनुस्सरतो उप्पज्जति दोमनस्सं। यं एवरूपं दोमनस्सं इदं वुच्चति गेहनिस्सितं दोमनस्सं" [म० ३.२९९] ति आदिना नयेन आगतं गेहसितं दोमनस्सं विपत्तिदस्सनसभागताय आसन्नपच्चत्थिकं। सभागविसभागताय विहेसा दूरपच्चत्थिका। तस्मा ततो निब्भयेन करुणायितब्बं। करुणं च नाम करिस्सति पाणिप्पहारादीहि च विहेसिस्सती ति अट्ठानमेतं।

मुदिताब्रह्मविहारस्स "चक्खुविञ्ञेय्यानं रूपानं इट्ठानं कन्तानं मनापानं मनोरमानं लोकामिसपटिसंयुत्तानं पटिलाभं वा पटिलाभतो समनुपस्सतो पुब्बे वा पटिलद्धपुब्बं अतीतं निरुद्धं विपरिणतं समनुस्सरतो उप्पज्जति सोमनस्सं। यं एवरूपं सोमनस्सं इदं वुच्चति गेहनिस्सितं सोमनस्सं" [म० ३.२९९] ति आदिना नयेन आगतं गेहसितं सोमनस्सं सम्पत्तिदस्सनसभागताय आसन्नपच्चत्थिकं। सभागविसभागताय अरति दूरपच्चत्थिका। तस्मा ततो निब्भयेन मुदिता भावेतब्बा। पमुदितो च नाम भविस्सति पन्तसेनासनेसु च अधिकुसलधम्मेसु च उक्कण्ठिस्सती ति अट्ठानमेतं।

उपेक्खाब्रह्मविहारस्स पन "चक्खुना रूपं दिस्वा उप्पज्जति उपेक्खा बालस्स मूळ्हस्स पुथुज्जनस्स अनोधिजिनस्स अविपाकजिनस्स अनादीनवदस्साविनो अस्सुतवतो पुथुज्जनस्स। या एवरूपा उपेक्खा रूपं सा नातिवत्तति। तस्मा सा उपेक्खा गेहनिस्सिता ति वुच्चती" [म० ३.३००] ति आदिनयेन आगता गेहसिता अञ्ञाणुपेक्खा दोसगुणानं अविचारणवसेन सभागत्ता आसन्नपच्चत्थिका। सभागविसभागताय राग-

---

एकमेकस्सा[1] ति ब्रह्मविहारस्स[1]। समीपचारो पुरिसस्स सपत्तो पुरिसो विय। सो ति रागो लहुं ओकासं लभति। ततो रागतो सुट्ठु मेत्ता योगावचरेन रक्खितब्बा। अट्ठानं[2] अकारणं। एतं वचनं[2]।

करुणा (१२५-म०)-ब्रह्मविहारस्स आसन्नपच्चत्थिकं ति सम्बन्धो। रूपानं ति पदं अप्पटिलाभं ति पदे कम्मं। अप्पटिलाभतो ति पदं समनुपस्सतो ति पदे ततियाविसेसनं। समनुपस्सतो[3] ति समनुपस्सन्तस्स पुग्गलस्स। ततो ति दूरपच्चत्थिकतो[3]।

१-१. नत्थि-म०। २-२. नत्थि-म०। ३-३. नत्थि-म०।

पटिघा दूरपच्चत्थिका। तस्मा ततो निब्भयेन उपेक्खितब्बं। उपेक्खिस्सति च नाम रज्जिस्सति च पटिहञ्ञिस्सति चा ति अट्ठानमेतं।

सब्बेसं पि च एतेसं कत्तुकम्यता-छन्दो आदि, नीवरणादि-विक्खम्भनं मज्झं, अप्पना परियोसानं, पञ्ञत्तिधम्मवसेन एको वा सत्तो अनेके वा सत्ता आरम्मणं, उपचारे वा अप्पनाय वा पत्ताय आरम्मणवड्ढनं।

तत्रायं वड्ढनक्कमो। यथा हि कुसलो कस्सको कसितब्बट्ठानं परिच्छिन्दित्वा कसति, एवं पठममेव एकं आवासं परिच्छिन्दित्वा तत्थ सत्तेसु 'इमस्मिं आवासे सत्ता अवेरा होन्तू' ति आदिना नयेन मेत्ता भावेतब्बा। तत्थ चित्तं मुदुं कम्मनियं कत्वा द्वे आवासा परिच्छिन्दितब्बा। ततो अनुक्कमेन तयो चत्तारो पञ्च छ सत्त अट्ठ नव दस, एका रच्छा, उपड्ढगामो, गामो, जनपदो, रज्जं एका दिसा ति एवं याव एक-चक्कवाळं, ततो वा पन भिय्यो तत्थ तत्थ सत्तेसु मेत्ता भावेतब्बा। तथा करुणादयो ति। अयमेत्थ आरम्मणवड्ढनक्कमो।

यथा पन कसिणानं निस्सन्दो आरुप्पा, समाधीनं निस्सन्दो नेवसञ्ञाना-सञ्ञायतनं, विपस्सनानं निस्सन्दो फलसमापत्ति, समथविपस्सनानं निस्सन्दो निरोध-समापत्ति, एवं पुरिमब्रह्मविहारत्तयस्स निस्सन्दो एत्थ उपेक्खाब्रह्मविहारो। यथा हि थम्भे अनुस्सापेत्वा तुलासंघाटं अनारोपेत्वा न सक्का आकासे कूटगोपानसियो ठपेतुं, एवं पुरिमेसु ततियज्झानं विना न सक्का चतुत्थं भावेतुं। कसिणेसु पन उप्पन्नततिय-ज्झानस्स एसा नुप्पज्जति विसभागारम्मणत्ता ति।

एतेसं[1] ति चतुन्नं ब्रह्मविहारानं। पञ्ञत्तिधम्मवसेना ति पदं आरम्मणं ति पदे ततियाविसेसनं[1]। पत्ताया ति पदं वड्ढनं ति पदे लक्खणक्रिया।

तत्रा ति ब्रह्मविहाराधिकारे। तत्था ति आवासे। सत्तेसू ति पदं भावेतब्बा ति पदे आधारो।

तत्था[2] ति[2] सत्तेसु। ततो ति आवासतो। अनुक्कमेन[3]....प०....दस आवासा एका रच्छा....प०....एकचक्कवाळं ठानं परिच्छिन्दितब्बं। ततो वा पन चक्कवाळतो भिय्यो ठानं परिच्छिन्दितब्बं ति योजना। तत्थ ठाने। एत्था ति ब्रह्मविहाराधिकारे[3]।

निस्सन्दो ति फलं। एत्था ति ब्रह्मविहारेसु। पुरिमेसू ति[4] ब्रह्मविहारेसु, आधारो[4]। ततियज्झानं विना ति उप्पन्नततियज्झानं वज्जेत्वा। उप्पन्नं ततियज्झानं यस्स सो उप्पन्नततिय-ज्झानो। एसा[5] उपेक्खा।

१-१. नत्थि-म०। २-२. तत्थ तत्थ–म०। ३-३. अयं कमो। एत्था ति तेसु चतूसु ब्रह्मविहारेसु–सी०। ४-४. सी० पोत्थके अयं पाठो नत्थि। ५. एसा ति–सी०।

तत्थ सिया—'कस्मा पनेता मेत्ता-करुणा-मुदिता-उपेक्खा ब्रह्मविहारा ति वुच्चन्ति ? कस्मा चतस्सो व ? को च एतासं कमो ? विभंगे (१३:३२७) कस्मा अप्पमञ्ञा ति वुत्ता ति ?

वुच्चते—सेट्ठट्ठेन ताव निद्दोसभावेन चेत्थ ब्रह्मविहारता वेदितब्बा। सत्तेसु हि सम्मापटिपत्तिभावेन सेट्ठा एते विहारा। यथा च ब्रह्मानो निद्दोसचित्ता विहरन्ति, एवं एतेहि सम्पयुत्ता योगिनो ब्रह्मसमा व हुत्वा विहरन्ती ति सेट्ठट्ठेन निद्दोसभावेन च ब्रह्मविहारा ति वुच्चन्ति।

कस्मा चतस्सो ति आदि-पञ्हस्स पन इदं विस्सज्जनं—

विसुद्धिमग्गादिवसा चतस्सो हितादि-आकारवसा पनासं।
कमो, पवत्तन्ति च अप्पमाणे ता गोचरे येन तदप्पमञ्ञा ति॥

एतासु हि यस्मा मेत्ता ब्यापादबहुलस्स, करुणा विहिंसाबहुलस्स, मुदिता अरतिबहुलस्स, उपेक्खा रागबहुलस्स विसुद्धिमग्गो; यस्मा च हितूपसंहार-अहितापनयन-सम्पत्तिमोदन-अनाभोगवसेन चतुब्बिधो येव सत्तेसु मनसिकारो; यस्मा च यथा माता दहर-गिलान-योब्बनप्पत्त-सकिच्चपसुतेसु चतूसु पुत्तेसु दहरस्स अभिवुड्ढिकामा होति, गिलानस्स गेलञ्ञापनयनकामा, योब्बनप्पत्तस्स योब्बनसम्पत्तिया चिरट्ठितिकामा, सकिच्चपसुतस्स किस्मिञ्चि पि परियाये अब्यावटा होति, तथा अप्पमञ्ञाविहारिकेना पि सब्बसत्तेसु मेत्तादिवसेन भवितब्बं, तस्मा इतो विसुद्धिमग्गादिवसा चतस्सो व अप्पमञ्ञा।

यस्मा पन चतस्सो पेता भावेतुकामेन पठमं हिताकारप्पवत्तिवसेन सत्तेसु पटिप्पज्जितब्बं, हिताकारप्पवत्तिलक्खणा च मेत्ता; ततो एव पत्थितहितानं सत्तानं दुक्खाभिभवं दिस्वा वा सुत्वा वा सम्भावेत्वा वा दुक्खापनयनाकारप्पवत्तिवसेन, दुक्खा-

---

तत्थ सिया ति तस्मिं ब्रह्मविहाराधिकारे इति पुच्छा सिया। एतासं[1] ति चतुन्नं ब्रह्मविहारानं[1]।

विस्सज्जनं मया वुच्चते। एत्था ति मेत्तादीसु, वेदितब्बा ति पदे आधारो। सत्तेसू ति आदि वित्थारो। एतेहीति मेत्तादिब्रह्मविहारेहि।

विसुद्धिमग्गादिवसा चतस्सो अप्पमञ्ञायो। हितादि-आकारवसा पन आसं ब्रह्मविहारानं कमो। मेत्तादयो[2] अप्पमाणे गोचरे येन यस्मा पवत्तन्ति, तं तस्मा ता मेत्तादयो अप्पमञ्ञा ति योजना। एतासु (१५२) हीति आदि वित्थारो। ब्यापादबहुलस्स[3] पुग्गलस्स[3]। पुत्तेसू ति निद्धारणं। परियाये ति कारणे। अप्पमञ्ञाविहारिकेना पि पुग्गलेन, भवितब्बं ति पदे कत्ता।

ततो ति अनन्तरं। दुक्खापनयनाकारप्पवत्तिवसेन सत्तेसु पटिपज्जितब्बं ति सम्बन्धो।

१-१. नत्थि–म०। २. ता मेत्ता०–सी०। ३-३. नत्थि–म०।

पनयनाकारपवत्तिकलक्खणा च करुणा; अथेवं पत्थितहितानं पत्थितदुक्खापगमानं च नेसं सम्पत्तिं दिस्वा सम्पत्तिमोदनवसेन, पमोदनलक्खणा च मुदिता; ततो परं पन कत्तब्बाभावतो अज्झुपेक्खिकतासंखातेन मज्झत्ताकारेन पटिपज्जितब्बं, मज्झत्ताकारप्पवत्तिलक्खणा च उपेक्खा; तस्मा इतो हितादि-आकारवसा पनासं पठमं मेत्ता वुत्ता । अथ करुणा-मुदिता-उपेक्खा ति अयं कमो वेदितब्बो ।

यस्मा पन सब्बा पेता अप्पमाणे गोचरे पवत्तन्ति, अप्पमाणा हि सत्ता एतासं गोचरभूता, 'एकसत्तस्स पि च एत्तके पदेसे मेत्तादयो भावेतब्बा' ति एवं पमाणं अगहेत्वा सकलफरणवसेनेव पवत्ता ति, तेन वुत्तं—

विसुद्धिमग्गादिवसा चतस्सो हितादि-आकारवसा पनासं ।
कमो, पवत्तन्ति च अप्पमाणे ता गोचरे येन तदप्पमञ्ञा ति ॥

एवं अप्पमाणगोचरताय एकलक्खणासु चापि एतासु पुरिमा तिस्सो तिकचतुक्कज्झानिका व होन्ति । कस्मा ? सोमनस्साविप्पयोगतो । कस्मा पनासं सोमनस्सेन अविप्पयोगो ति ? दोमनस्ससमुट्ठितानं ब्यापादादीनं निस्सरणत्ता । पच्छिमा पन अवसेसज्झानिका व । कस्मा ? उपेक्खावेदनासम्पयोगतो । न हि सत्तेसु मज्झत्ताकारप्पवत्ता ब्रह्मविहारुपेक्खा उपेक्खावेदनं विना वत्तती ति ।

ब्रह्मविहारकथा निट्ठिता ।

असुभकथा

इदानि रागचरितसत्तानं एकन्तहितं नानारम्मणेसु एकेकज्झानवसेनेव पवत्तमानं रूपावचरकुसलं दस्सेतुं पुन **कतमे धम्मा कुसला** [§ २६३] ति आदि आरद्धं ।

अथा ति अनन्तरं । तेसं[1] सत्तानं । आसं ति चतुन्नं ब्रह्मविहानं[1] । एकसत्तस्सा पि च पमाणं अग्गहेत्वा ति सम्बन्धो । पवत्ता, तस्मा मेत्तादयो अप्पमञ्ञा ति सम्बन्धो ।

अप्पमाणगोचरताया ति पदं एकलक्खणासु पि चा ति[2] विसेसनं । एतासू ति अप्पमञ्ञासु । आसं ति पुरिमानं तिस्सन्नं अप्पमञ्ञानं । निस्सरन्ति[3] एत्था ति निस्सरणा । निस्सरणानं भावो निस्सरणत्तं ।

ब्रह्मविहारकथावण्णना निट्ठिता ।

असुभकथावण्णना

रागो चरितं एतेसं ति रागचरिता । रागचरिता च ते सत्ता चा ति रागचरितसत्ता । एकन्तहितं ति एकन्तेनानुरूपं । तत्था ति कतने धम्मा ति आदिवचने[4] । उद्धु ···प०····

१-१. नत्थि–म० । २. चा ति पदे ततिया०–सी० । ३. ०निग्गच्छन्ति–सी० । ४. विनिच्छयो वेदितब्बो–सी० ।

तत्थ **उद्धुमातकसञ्ञासहगतं** ति आदीसु, भस्ता विय वायुना, उद्धं जीवितपरियादाना यथानुक्कमं समुग्गतेन सूनभावेन उद्धुमातत्ता उद्धुमातं । उद्धुमातमेव **उद्धुमातकं** । पटिकूलत्ता वा कुच्छितं उद्धुमातं ति उद्धुमातकं । तथारूपस्स छवसरीरस्सेतं अधिवचनं । विनीलं वुच्चति विपरिभिन्नवण्णं । विनीलमेव **विनीलकं** । पटिकूलत्ता वा कुच्छितं विनीलं ति विनीलकं । मंसुस्सदट्ठानेसु रत्तवण्णस्स, पुब्बसन्निचयट्ठानेसु सेतवण्णस्स, येभुय्येन च नीलवण्णस्स, नीलट्ठाने नीलसाटकपारुतस्सेव छवसरीरस्सेतं अधिवचनं । परिभिन्नट्ठानेसु विस्सन्दमानं पुब्बं विपुब्बं । विपुब्बमेव **विपुब्बकं** । पटिकूलत्ता वा कुच्छितं विपुब्बं ति विपुब्बकं । तथारूपस्स छवसरीरस्सेतं अधिवचनं । विच्छिद्दं ति वुच्चति द्विधाछिन्दनेन अपवारितं, विच्छिद्दमेव **विच्छिद्दकं** । पटिकूलत्ता वा कुच्छितं विच्छिद्दं ति विच्छिद्दकं । वेमज्झे छिन्नस्स छवसरीरस्सेतं अधिवचनं । इतो च एत्तो च विविधाकारेन सोणसिगालादीहि खादितं विक्खायितं । विक्खायितमेव **विक्खायितकं** । पटिकूलत्ता वा कुच्छितं विक्खायितं ति विक्खायितकं । तथारूपस्स छवसरीरस्सेतं अधिवचनं । विविधं खित्तं विक्खित्तं । विक्खित्तमेव **विक्खित्तकं** । पटिकूलत्ता वा कुच्छितं विक्खित्तं ति विक्खित्तकं । 'अञ्ञेन हत्थं अञ्ञेन पादं अञ्ञेन सीसं' ति एवं ततो ततो खित्तस्स छवसरीरस्सेतं अधिवचनं । हतं च तं पुरिमनयेनेव विक्खित्तकं चा ति **हतविक्खित्तकं** । काकपदाकारेन अंगपच्चंगेसु सत्थेन हनित्वा वुत्तनयेन विक्खित्तस्स छवसरीरस्सेतं अधिवचनं । लोहितं किरति, विक्खिपति, इतो चितो च पग्घरती ति **लोहितकं** । पग्घरितलोहितमक्खितस्स छवसरीरस्सेतं अधिवचनं । पुळवा वुच्चन्ति किमियो । पुळवे किरती ति **पुळवकं** । किमिपरिपुण्णस्स छवसरीरस्सेतं अधिवचनं । अट्ठि येव अट्ठिकं । पटिकूलत्ता वा कुच्छितं अट्ठी ति **अट्ठिकं** । अट्ठिसंखलिकाय पि एकट्ठिकस्सा पि एतं अधिवचनं ।

इमानि च पन उद्धुमातकादीनि निस्साय उप्पन्ननिमित्तानं पि निमित्तेसु पटि-

---

आदीसु वचनेसु विनिच्छयो वेदितब्बो । वायुना समुग्गता[1] भस्मा[2] विय, जीवितपरियादाना जीवितस्स परिक्खया, उद्धं यथाक्कमं समुग्गतेना ति योजना । भस्मं करोति[3] अनेना ति भस्मा[4] । 'भस'-भस्मीकरणे[5] । अस्मादयो ति[6] (१३७ ण्वु०) मोग्गल्लानसुत्तेन[7] म[8] । उद्धं धुमातं[9] उद्धुमातं । उद्धुमातमेवा ति (म०–१२६) वचनेन सकत्थे को ति ञापेति । कुच्छितं ति वचनेन कुच्छितत्थे को ति ञापेति । येभुय्येन चा ति येभुय्येन नीलट्ठाने नीलवण्णस्स च नीलसाटकं[10] पारुतस्स[10] इव । अञ्ञेन हत्थं ति अञ्ञस्मिं ठाने हत्थं अत्थि । काकपदाकारेना ति काकपदसदिसेन ।

निमित्तेसू ति पदं पटिलद्ध[11] इति[11] पदे निमित्तं । तत्था ति उद्धुमातकसञ्ञा ति

---

१. ०हुत्वा–सी० । २. भस्ता–सी० । ३. करोन्ति–सी० । ४. भस्ता–सी० । ५. भस-भस्मं करणे–सी० । ६. भद्रादयो ति–सी० । ७. सुत्तेन–सी० । ८. त्र–सी० । ९. उम्मातं–सी० । १०-१०. नीलसाटकस्स–सी० । ११-११. पटिलद्धा ति–सी० ।

लद्धज्झानानं पि एतानेव नामानि । तत्थ उद्धुमातकनिमित्ते अप्पनावसेन उप्पन्ना सञ्ञा उद्धुमातकसञ्ञा । ताय उद्धुमातकसञ्ञाय सम्पयोगट्ठेन सहगतं **उद्धुमातकसञ्ञासहगतं । विनीलकसञ्ञासहगता**दीसु [§ २६४] पि एसेव नयो । यं पनेत्थ भावनाविधानं वत्तब्बं भवेय्य, तं सब्बाकारेन पि **विसुद्धिमग्गे** [६.१२-८१] वुत्तमेव । अवसेसा पालिवण्णना हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बा । केवलं हि इध, चतुत्थज्झानवसेन उपेक्खाब्रह्मविहारे विय, पठमज्झानवसेन एकेकस्मिं पञ्चवीसति पञ्चवीसति एकका होन्ति । असुभारम्मणस्स च अवड्ढनियत्ता, परित्ते उद्धुमातकट्ठाने उप्पन्ननिमित्तारम्मणं परित्तारम्मणं, महन्ते अप्पमाणारम्मणं वेदितब्बं । सेसेसु पि एसेव नयो ।

पकिण्णककथा

इति असुभानि सुभगुणो दससतलोचनेन थुतकित्ति ।
यानि अवोच दसबलो एकेकज्झानहेतूनि ॥
एवं पालिनयेनेव सब्बानि तानि जानित्वा ।
तेस्वेव अयं भिय्यो पकिण्णककथा पि विञ्ञेय्या ॥

एतेसु हि यत्थकत्थचि अधिगतज्झानो सुविक्खम्भितरागत्ता वीतरागो विय निल्लोलुप्पचारो होति । एवं सन्ते पि य्वायं असुभप्पभेदो वुत्तो, सो सरीरसभावप्पत्तिवसेन च रागचरितभेदवसेन चा ति वेदितब्बो ।

छवसरीरं हि पटिकूलभावं आपज्जमानं उद्धुमातकसभावप्पत्तं वा सिया,

---

आदिवचने विनिच्छयो । एत्था ति असुभाधिकारे । तं[1] ति भावनाविधानं[1] । इधा[2] ति असुभे[2] होन्ती ति पदे (२५३-सी०) आधारो । चतुत्थज्झानवसेन एका उपेक्खा ब्रह्मविहारे विय । पठमज्झानवसेना ति पदं एका ति पदे ततियाविसेसनं ,

पकिण्णककथावण्णना

इति एवं, सुभगुणो दससतलोचनेनन सहस्सलोचनेन[3] सक्केन[3] । थुतिकित्ति दसबलो भगवा एकेकज्झानहेतूनि यानि दस असुभानि अवोच । एवं पालिनयेनेव ताव सब्बानि असुभानि जानित्वा तेस्वेव असुभेसु भिय्यो अयं पकिण्णककथा पि पण्डितेन विञ्ञेय्या ति सम्बन्धो । दससतलोचनेना ति पदं थुतीति[4] पदे ततियाविसेसनं कत्ता । थुति[5] कित्ति यस्स सो थुतिकित्ति[6] ।

एतेसु हीति आदि वित्थारो । हि सच्चं एतेसु असुभेसु । यत्थ कत्थचि असुभे । सो ति असुभप्पभेदो । सरीर....प०....इति वेदितब्बो ।

विनीलकादीनं ति निद्धारणे छट्ठी । अञ्ञतरसभावपत्तं वा सिया इति एवं यादिसं

१-१. नत्थि–म० । २-२. इधा ति पदं-सी० । ३-३. नत्थि-सी० । ४. थुतकित्ति इति–सी० । ५. थुता–सी० । ६. थुतकित्ति–सी० ।

विनीलकादीनं वा अञ्ञतरसभावप्पत्तं। इति यादिसं यादिसं सक्का होति लद्धुं तादिसे तादिसे उद्धुमातकपटिकूलं विनीलकपटिकूलं ति एवं निमित्तं गण्हितब्बमेवा ति सरीरसभावप्पत्तिवसेन दसधा असुभप्पभेदो वुत्तो ति वेदितब्बो।

विसेसतो चेत्थ उद्धुमातकं सरीरसण्ठानविपत्तिप्पकासनतो सरीरसण्ठान-रागिनो सप्पायं। विनीलकं छविरागविपत्तिप्पकासनतो सरीरवण्णरागिनो सप्पायं। विपुब्बकं कायवण्णपटिबद्धस्स दुग्गन्धभावस्स पकासनतो मालागन्धादिवसेन समुट्ठा-पितसरीरगन्धरागिनो सप्पायं। विच्छिद्दकं अन्तोसुसिरभावप्पकासनतो सरीरे घनभाव-रागिनो सप्पायं। विच्छिद्दकं अन्तोसुसिरभावप्पकासनतो सरीरे घनभावरागिनो सप्पायं। विक्खायितकं मंसूपचयसम्पत्तिविनासप्पकासनतो थनादीसु सरीरप्पभेदेसु मंसूपचयरागिनो सप्पायं। विक्खित्तकं अंगपच्चंगानं विक्खेपप्पकासनतो अंगपच्चंग-लीलारागिनो सप्पायं। हतविक्खित्तकं सरीरसंघाटभेदविकारप्पकासनतो सरीरसंघाट-सम्पत्तिरागिनो सप्पायं। लोहितकं लोहितमक्खितपटिकूलभावप्पकासनतो अलंकार-जनितसोभरागिनो सप्पायं। पुळवकं कायस्स अनेककिमिकुलसाधारणभावप्पकासनतो काये ममत्तरागिनो सप्पायं। अट्ठिकं सरीरट्ठीनं पटिकूलभावप्पकासनतो दन्तसम्पत्ति-रागिनो सप्पायं ति। एवं रागचरितभेदवसेना पि दसधा असुभप्पभेदो वुत्तो ति वेदितब्बो।

यस्मा पन दसविधे पि एतस्मिं असुभे सेय्यथा पि नाम अपरिसण्ठितजलाय सीघसोताय नदिया अरित्तबलेनेव नावा तिट्ठति, विना अरित्तेन न सक्का ठपेतुं, एव-मेव दुब्बलत्ता आरम्मणस्स वितक्कबलेनेव चित्तं एकग्गं हुत्वा तिट्ठति, विना वित-क्केन न सक्का ठपेतुं, तस्मा पठमज्झानमेवेत्थ होति, न दुतियादीनि।

पटिकूले पि तस्मिं आरम्मणे 'अद्धा इमाय पटिपदाय जरामरणम्हा परिमुच्चि-स्सामी' ति एवं आनिसंसदस्साविताय चेव नीवरणसंतापप्पहानेन च पीतिसोमनस्सं उप्पज्जति, 'बहुं दानि वेतनं लभिस्सामी'ति आनिसंसदस्साविनो पुप्फछड्डकस्स गूथरासिम्हि विय, उप्पन्नब्याधिदुक्खस्स रोगिनो वमनविरेचनप्पवत्तियं विय च।

छवसरीरं लद्धुं सक्का होति, तादिसे छवसरीरे निमित्तं गहेतब्बमेवा ति योजना।

एत्था ति, उद्धुमातुकादीसु। सरीरसण्ठानस्स विपत्तिया पकासनतो पाकटकरणतो। सरीरसण्ठाने रागो सरीरसण्ठानरागो। सरीरसण्ठानरागो अस्स अत्थीति सरीरसण्ठानरागी। ममत्तरागिनो ति मम अत्ता ममत्ता। ममत्ता इति रागो ममत्तरागो। ममत्तरागो अस्स अत्थीति ममत्तरागी।

एतस्मिं असुभे एकग्गतं हुत्वा यस्मा तिट्ठतीति योजना। एत्था ति असुभे।

पुप्फछड्डकस्स गूथरासिम्हि विय पीतिसोमनस्सं उप्पज्जतीति सम्बन्धो।

दसविधं पि चेतं असुभं लक्खणतो एकमेव होति। दसविधस्सा पि हि एतस्स असुचिदुग्गन्धजेगुच्छपटिकूलभावो एव लक्खणं। तदेतं इमिना लक्खणेन न केवलं मतसरीरे, दन्तट्ठिकदस्साविनो पन **चे**तियपब्बतवासिनो **म**हातिस्सत्थेरस्स विय, हत्थिक्खन्धगतं राजानं उल्लोकेन्तस्स **संघ**रक्खितत्थेरुपट्ठाकसामणेरस्स विय च, जीवमानकसरीरे पि उपट्ठाति। यथेव हि मतसरीरं एवं जीवमानकं पि असुभमेव। असुभलक्खणं पनेत्थ आगन्तुकेन अलंकारेन पटिच्छन्नत्ता न पञ्ञायती ति।

असुभकथा निट्ठिता।

———

किं पन पठवीकसिणं आदिं कत्वा अट्ठिकसञ्ञापरियोसाना'वेसा रूपावचरप्पना, उदाहु अञ्ञा पि अत्थी ति? अत्थि; आनापानज्झानं च कायगतासतिभावना च इध न कथिता। किञ्चा पि न कथिता वायोकसिणे पन गहिते आनापानज्झानं पि गहितमेव; वण्णकसिणेसु च गहितेसु केसादीसु चतुक्कपञ्चकज्झानवसेन उप्पन्ना कायगता सति, दससु च असुभेसु गहितेसु द्वत्तिंसाकारपटिकूलमनसिकारज्झानवसेन चेव नवसीवथिकावण्णज्झानवसेन च पवत्ता कायगतासति गहिता'वा ति। सब्बा पि रूपावचरप्पना इध कथिता व होती ति।

रूपावचरकुसलकथा निट्ठिता।

———

एतं ति असुभं। एतस्सा[1] ति असुभस्स। तदेतं असुभं[1]। इमिना लक्खणेन इमिना असुभसभावेन, न केवलं मतसरीरे उपट्ठाति, दन्तट्ठिकदस्साविनो पन सीहळदीपे चेतियपब्बतवासीमहातिस्सत्थेरस्स विय, तदेतं असुभं इमिना लक्खणेन जीवमानकसरीरे पि उपट्ठातीति सम्बन्धो। यथेव हीति हि सच्चं यथेव मतसरीरं असुभं। एत्था ति जीवमानसरीरे।

असुभकथावण्णना निट्ठिता।

इधा ति अभिधम्मे। पटिकूल····प०····वसेना ति पटिकूलं[2] ति मनसिकारेन पवत्तट्ठानवसेन[3]। नवा च ते (म०-१२७) सिवट्ठिका[4] चा ति नवसिवट्ठिका एकाहमत्तं द्वीहमत्तं ति आदिना (१५४-सी०) वुत्ता[5] नवसिवट्ठिकप्पकारानि[6] झानानि नवसिवट्ठिकावण्णझानानि। अथवा—नवसिवट्ठिकासु वण्णवसेन पवत्तं झानं नवसिवट्ठिकावण्णझानं।

रूपावचरकथावण्णना निट्ठिता।

■

१-१. नत्थि–म०। २. पटिक्कूलं ति–सी०। ३. पवत्तज्झानवसेन–सी०। ४. सिवथिका–सी० सब्बत्थ। ५. नत्थि–सी०। ६. नवसिवथिका। नवसिवथिकप्पकारानि–सी०।

चित्तुप्पादकण्डं आरुप्पकुसलकथा

इदानि अरूपावचरकुसलं दस्सेतुं पुन **कतमे धम्मा कुसला** [§ध०७२] ति आदि आरद्धं। तत्थ **अरूपूपपत्तिया** ति अरूपभवो अरूपं, अरूपे उपपत्ति अरूपूपपत्ति, तस्सा अरूपूपपत्तिया। **मग्गं भावेती** ति उपायं हेतुं कारणं उप्पादेति वड्ढेति। **सब्बसो** ति सब्बाकारेन। सब्बासं वा अनवसेसानं ति अत्थो। **रूपसञ्ञानं** ति सञ्ञासीसेन वुत्तरूपावचरज्झानानं चेव तदारम्मणानं च। रूपावचरज्झानं पि हि रूपं ति वुच्चति 'रूपी रूपानि पस्सती'ति [दी० २.५६, ८८] आदीसु। तस्स आरम्मणं पि "बहिद्धा रूपानि पस्सति सुवण्णदुब्बण्णानी" [दी० २.८६] ति आदीसु; तस्मा इध रूपे सञ्ञा रूपसञ्ञा ति एवं सञ्ञासीसेन वुत्तरूपावचरज्झानस्सेतं अधिवचनं। रूपं सञ्ञा अस्सा ति रूपसञ्ञं, रूपमस्स नामं ति वुत्तं होति। एवं पठवीकसिणादिभेदस्स तदारम्मणस्स चेतं अधिवचनं ति वेदितब्बं।

समतिक्कमा ति विरागा च निरोधा च। किं वुत्तं होति? एतासं कुसलविपाककिरियावसेन पञ्चदसन्नं झानसंखातानं रूपसञ्ञानं, एतासं च पठवीकसिणादिवसेन अट्ठन्नं आरम्मणसंखातानं रूपसञ्ञानं, सब्बाकारेन अनवसेसानं वा विरागा च निरोधा च विरागहेतु चेव निरोधहेतु च आकासानञ्चायतनं उपसम्पज्ज विहरति। न हि सक्का सब्बसो अनतिक्कन्तरूपसञ्ञेन एतं उपसम्पज्ज विहरितुं ति। तत्थ यस्मा आरम्मणे अविरत्तस्स सञ्ञासमतिक्कमो न होति, समतिक्कन्तासु च सञ्ञासु आरम्मणं समतिक्कन्तमेव होति, तस्मा आरम्मणसमतिक्कमं अवत्वा "तत्थ कतमा रूपसञ्ञा? रूपावचरसमापत्तिं समापन्नस्स वा उपपन्नस्स वा दिट्ठधम्मसुखविहारिस्स वा सञ्ञा सञ्जानना संजानितत्तं, इमा वुच्चन्ति रूपसञ्ञायो। इमा रूपसञ्ञायो अतिक्कन्तो होति, वीतिक्कन्तो, समतिक्कन्तो, तेन वुच्चति सब्बसो रूपसञ्ञानं समतिक्कमा"ति

चित्तुप्पादकण्डं अरूपावचरकुसलकथावण्णना

तदारम्मणादीनं ति[1] तस्स झानस्स आरम्मणानं। अस्स झानस्स आरम्मणम्पि वुच्चति, तस्मा इध रूपसञ्ञानं ति वचने इति सन्निट्ठानं वेदितब्बं ति योजना। अस्सा ति आरम्मणस्स। तदारम्मणस्सा ति तस्स झानस्स आरम्मणस्स। एतं ति रूपसञ्ञानं ति वचनं।

अनतिक्कन्तरूपसञ्ञेना ति अनतिक्कन्ता रूपसञ्ञा यस्स पुग्गलस्स अनतिक्कन्तरूपसञ्ञो। एतं ति आकासानञ्चायतनं। तत्था ति आरम्मणसञ्ञासु[2], निद्धारणं। तस्मा तं अवत्वा समतिक्कमो भगवता वुत्तो ति सम्बन्धो। न एकस्मिं येव आरम्मणे पत्तब्बानि पठम-

---

१. तत्था ति कतमे धम्मा कुसला ति आदिम्हि वचने, विग्गहादयो सद्धा विञ्ञुना दट्ठब्बा। तदारम्म०–सी० पोत्थके अयमधिको पाठो। २. आरम्मणेसु–सी०।

एवं **विभंगे** [३१४] सञ्ञानं येव समतिक्कमो वुत्तो। यस्मा पन आरम्मणसमतिक्कमेन पत्तब्बा एता समापत्तियो, न एकस्मिं येव आरम्मणे पठमज्झानादीनि विय, तस्मा अयं आरम्मणसमतिक्कमनवसेना पि अत्थवण्णना कता ति वेदितब्बा।

पटिघसञ्ञानं अत्थङ्गमा ति चक्खादीनं वत्थूनं रूपादीनं आरम्मणानं च पटिघातेन समुप्पन्ना सञ्ञा पटिघसञ्ञा। रूपसञ्ञादीनं एतं अधिवचनं। यथाह— "तत्थ कतमा पटिघसञ्ञा? रूपसञ्ञा सद्दसञ्ञा गन्धसञ्ञा रससञ्ञा फोट्ठब्बसञ्ञा, इमा वुच्चन्ति पटिघसञ्ञायो" [वि० ३१४] ति। तासं कुसलविपाकानं पञ्चन्नं अकुसलविपाकानं पञ्चन्नं ति सब्बसो दसन्नं पि पटिघसञ्ञानं अत्थङ्गमा पहाना असमुप्पादा अप्पवत्तिं कत्वा ति वुत्तं होति। कामं चेता पठमज्झानादीनि समापन्नस्सा पि न सन्ति—न हि तस्मिं समये पञ्चद्वारेन चित्तं पवत्तति—एवं सन्ते पि, अञ्ञत्थ पहीनानं सुखदुक्खानं चतुत्थज्झाने विय, सक्कायदिट्ठादीनं ततियमग्गे विय च, इमस्मिं झाने उस्साहजननत्थं इमस्स झानस्स पसंसावसेन एतासं एत्थ वुत्तवचनं वेदितब्बं।

अथ वा किञ्चा पि ता रूपावचरं समापन्नस्स न सन्ति, अथ खो न पहीनत्ता न सन्ति। न हि रूपविरागाय रूपावचरभावना संवत्तति, रूपायत्ता च एतासं पवत्ति। अयं पन भावना रूपविरागाय संवत्तति। तस्मा ता एत्थ पहीना ति वत्तुं वट्टति। न केवलं च वत्तुं, एकंसेनेव एवं धारेतुं पि वट्टति। तासं हि इतो पुब्बे अप्पहीनत्ता एव पठमज्झानं समापन्नस्स "सद्दो कण्टको" [अं० ४.२०७] ति वुत्तो भगवता। इध च पहीनत्ता येव अरूपसमापत्तीनं आनेञ्जता सन्तविमोक्खता च वुत्ता। **आळारो** च **कालामो** आरुप्पसमापन्नो पञ्चमत्तानि सकटसतानि निस्साय अतिक्कमन्तानि नेव अद्दस, न पन सद्दं अस्सोसी ति।

झानादीनि विय। सञ्ञासीसेन वुत्तन्त्यादिका अयं अत्थवण्णना कता आचरियेहि इति पण्डितेन वेदितब्बा।

कामञ्चेता ति कामञ्च एता पटिघसञ्ञा। अपिसद्दो सम्भावने, पगेव अरूपसमापन्नस्सा ति अधिप्पायो। तस्मिं समये ति पठमज्झानादीनं समापज्जनकाले। एवं ति पटिघसञ्ञानं अभावे। अञ्ञत्था ति झाने मग्गे चतुत्थज्झाने वचन विय। एत्था ति[1] आकासानञ्चायतने।

रूपायत्ता च रूपेन पटिबद्धा एतासं पटिघसञ्ञानं पवत्ति। न केवलञ्च वत्तुं वचनं पवत्ति धारेतुम्पी ति धारणं, एतासं हीति हि सच्चं[1] एतासं[2] पटिघसञ्ञानं। इतो ति पठमज्झानसमापन्नकालतो[3]। इध चा ति आकासानञ्चायतने। आनेञ्जता ति[4] अचलता। द्वे[5]नासयो निस्साय अतिक्कमन्तानि सकटसतानि नेव अद्दसा ति योजना[5]। अस्सोसीति इतिसद्दो वुत्ता ति पदे आधारो[6]।

१-१ नत्थि पाठो–सी०। २. एतासं ति–सी०। ३. आकासानञ्चायतनतो–सी०। ४. आनञ्ज०–सी०। ५-५. नत्थि अयं पाठो–सी०। ६. आकारो–सी०।

नानत्तसञ्ञानं अमनसिकारा [वि० ३१४] ति नानत्ते वा गोचरे पवत्तानं सञ्ञानं नानत्तानं वा सञ्ञानं। यस्मा हि एता "तत्थ कतमा नानत्तसञ्ञा? असमापन्नस्स मनोधातुसमङ्गिस्स वा मनोविञ्ञाणधातुसमङ्गिस्स वा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं, इमा वुच्चन्ति नानत्तसञ्ञायो" [वि० ३१४] ति एवं **विभंगे** विभजित्वा वुत्तत्ता इध अधिप्पेता; असमापन्नस्स मनोधातु-मनोविञ्ञाणधातुसंगहिता सञ्ञा रूपसद्दादि-भेदे नानत्ते नानासभावे गोचरे पवत्तन्ति; यस्मा चेता अट्ठ कामावचरकुसलसञ्ञा, द्वादस अकुसलसञ्ञा, एकादस कामावचरकुसलविपाकसञ्ञा, द्वे अकुसलविपाकसञ्ञा, एकादस कामावचरकिरियसञ्ञा ति एवं चतुचत्ताळीसं पि सञ्ञा नानत्ता नानासभावा अञ्ञमञ्ञं असदिसा, तस्मा नानत्तसञ्ञा ति वुत्ता। तासं सब्बसो नानत्तसञ्ञानं अमनसिकारा अनावज्जना असमन्नाहारा अपच्चवेक्खणा। यस्मा ता नावज्जति, न मनसिकरोति, न पच्चवेक्खति, तस्मा ति वुत्तं होति।

यस्मा चेत्थ पुरिमा रूपसञ्ञा पटिघसञ्ञा च इमिना झानेन निब्बत्ते भवे पि न विज्जन्ति, पगेव तस्मिं भवे इमं झानं उपसम्पज्ज विहरणकाले, तस्मा तासं 'समतिक्कमा अत्थंगमा' ति द्वेधा पि अभावो येव वुत्तं। नानत्तसञ्ञासु पन यस्मा अट्ठ कामावचरकुसलसञ्ञा, नव किरियसञ्ञा, दस अकुसलसञ्ञा ति इमा सत्तवीसति सञ्ञा इमिना झानेन निब्बत्ते भवे विज्जन्ति, तस्मा तासं अमनसिकारा ति वुत्तं ति वेदितब्बं। तत्रापि हि इदं झानं उपसम्पज्ज विहरन्तो तासं अमनसिकारा येव उपसम्पज्ज विहरति। ता पन मनसिकरोन्तो असमापन्नो होती ति।

संखेपतो चेत्थ 'रूपसञ्ञानं समतिक्कमा' ति इमिना सब्बरूपावचरधम्मानं पहानं वुत्तं। 'पटिघसञ्ञानं अत्थङ्गमा नानत्तसञ्ञानं अमनसिकारा' ति इमिना

यस्मा ही ति हि सच्चं एता[1] सञ्ञा[1] भगवता विभजित्वा वुत्तं। इध[2] पदे, अधिप्पेता मनोधातु....प०....सङ्गहिता एता सञ्ञा गोचरे यस्मा पवत्तेन्ति[2]। यस्मा चेता ति एता सञ्ञा नानत्ता[3]। द्वे[4] ति सम्पटिच्छन्न-सन्तीरणा[4]। ता ति सञ्ञा।

एत्था[5] ति तीसु सञ्ञासु, निद्धारणं। पगेवा ति वत्तब्बं[5]। तासं ति सञ्ञानं, अभावो येवा ति पदे (म०-१२८) सम्बन्धो। नानत्तसञ्ञासू[6] ति निद्धारणं[6]। नव[7] क्रियासञ्ञा ति महाक्रिया अट्ठ मनोद्वारावज्जनं एकं। दस अकुसलसञ्ञा ति द्वे दोसवज्जिता[7]। तत्रा पी ति निब्बत्ते भवे।

एत्था ति रूपसञ्ञानं समतिक्कमा ति आदिपदेसु, निद्धारणं[8]। इति भगवा वण्णं कथेसि[8]।

१-१. नत्थि–म०। २-२. नत्थि–सी०। ३. सञ्ञा यस्मा नानत्ता–सी०। ४-४. पुग्गलो....प०....होतीति सम्बन्धो। तस्मा ति पदं उपसम्पज्जा ति पदे हेतु–म०। ५-५. एत्था ति आकासानञ्चायतने–सी०। ६-६. नत्थि–सी०। ७-७. नत्थि–म०। ८-८. सी० पोत्थके पाठो अयं नत्थि।

सब्बेसं कामावचरचित्तचेतसिकानं च पहानं अमनसिकारो च वुत्तो ति वेदितब्बो। इति **भगवा** 'पण्णरसन्नं रूपसञ्ञानं समतिक्कमेन, दसन्नं पटिघसञ्ञानं अत्थंगमेन, चतुचत्ताळीसाय नानात्तसञ्ञानं अमनसिकारेना' ति तीहि पदेहि आकासानञ्चायतनसमापत्तिया वण्णं कथेसि।

किं-कारणा ति चे, सोतूनं उस्साहजननत्थं च पलोभनत्थं च। सचे हि केचि अपण्डिता वदेय्युं 'सत्था आकासानञ्चायतनसमापत्तिं निब्बत्तेथा ति वदति, को नु खो एताय निब्बत्तिताय अत्थो? को आनिसंसो?' ति, ते एवं वत्तुं मा लभन्तू ति इमेहि आकारेहि समापत्तिया वण्णं कथेसि। तं हि तेसं सुत्वा एवं भविस्सति—'एवं-सन्ता किर अयं समापत्ति, एवं-पणीता, निब्बत्तेस्साम नं' ति। अथ'स्सा निब्बत्तनत्थाय उस्साहं करिस्सन्ती ति। पलोभनत्थं चा पि तेसं एतिस्सा वण्णं कथेसि, विसकण्टकवाणिजो विय।

विसकण्टकवाणिजो नाम गुळवाणिजो ति वुच्चति। सो किर गुळफाणितखण्डसक्करादीनि सकटेनादाय पच्चन्तगामं गन्त्वा 'विसकण्टकं गण्हथ विसकण्टकं गण्हथा'ति उग्घोसेसि। तं सुत्वा गामिका 'विसं नाम कक्खळं, यो नं खादति सो मरति, कण्टको पि विज्झित्वा मारेति। उभो पेते कक्खळा, को एत्थ आनिसंसो'ति गेहद्वारानि थकेसुं, दारके च पलापेसुं। तं दिस्वा वाणिजो 'अवोहारकुसला इमे गामिका, हन्द ने उपायेन गण्हापेमी' ति 'अतिमधुरं गण्हथ अतिसादुं गण्हथा, गुळं फाणितं सक्करं समग्घं लब्भति, कूटमासक-कूटकहापणादीहि पि लब्भती' ति उग्घोसेसि। तं सुत्वा गामिका हट्ठपहट्ठा निग्गन्त्वा बहुं पि मूलं दत्वा गण्हिंसु।

किं[1] कारणा इति चोदको चे वदेय्य[1] सचे हीति आदि वित्थारो। ते ति अपण्डिता इमं[2] मनसिकत्वा वण्णं कथेसि भगवा[2]। तं हीति हि सच्चं वण्णं[3] सुत्वा नेसं अपण्डितानं एवं परिवितक्को भविस्सति। नं ति (१५५–सी०) समापत्तिं। अथस्सा ति तदा[4] अस्स समापत्तिस्स[4]। तेसं ति अपण्डितानं····प०····लोभनत्थं ति पदे कम्मं।

रोगस्स विस्सरकत्ता[5] विसञ्च तं कण्टकञ्चा ति विसकण्टकं। विसकण्टकस्स विक्कयिको वाणिजो विस-कण्टक-वाणिजो। गुळो च फाणितञ्च खण्डो च सक्करो च गुळ....प०···· सक्करा। ते आदयो[6] येसं उच्छुविकारादीनं ते गुळ····प०···सक्करादयो। गुति[7] सद्दं पवत्तेती ति गुळो, पक्करसो[8], 'गु'-सद्दे। गुतोळक् चा ति (मो० २२६ ण्वु०) सुत्तेन ळक्। गुळति रक्खतीति वा गुळो। 'गुळ-रक्खायं। अञ्ञत्थ पन गुडो ति पि अत्थि। फाणितं गुळतो किञ्चि थद्धं। खण्डो ततो थद्धो। रोगं सरति हिंसती ति सक्करो, **यदादिना** कारपच्चयो। सक्खरो

१-१. नत्थि सी० पोत्थके पाठो। २-२. सी० पोत्थके नत्थायं पाठो। ३. तं वण्णं–सी०। ४-४. तथा अस्सा समापत्तिया–सी०। ५. विसकरत्ता–सी०। ६. आदि-सी०। ७. गवति–सी०। ८. पण्णरसो–म०।

तत्थ वाणिजस्स 'विसकण्टकं गण्हथा' ति उग्घोसनं विय **भगवतो** 'आकासानञ्चायतनसमापत्तिं निब्बत्तेथा' ति वचनं। 'उभो पेते कक्खळा, को एत्थ आनिसंसो ?' ति गामिकानं चिन्तनं विय '**भगवा** आकासानञ्चायतनं निब्बत्तेथा ति आह, को एत्थ आनिसंसो ? नास्स गुणं जानामा' ति सोतूनं चिन्तनं। अथ'स्स वाणिजस्स 'अतिमधुरं गण्हथा' ति आदिवचनं विय **भगवतो** रूपसञ्ञासमतिक्कमादिकं आनिसंसप्पकासनं। इदं हि सुत्वा ते बहुं पि मूलं दत्वा, गामिका विय गुळं, इमिना आनिसंसेन पलोभितचित्ता महन्तं पि उस्साहं कत्वा इमं समापत्तिं निब्बत्तेस्सन्ती ति उस्साहजननत्थं च पलोभनत्थं च कथेसि।

आकासानञ्चायतनसञ्ञासहगतं [ध० ७२] ति एत्थ नास्स अन्तो ति अनन्तं। आकासं अनन्तं आकासानन्तं। आकासानन्तमेव आकासानञ्चं। तं आकासानञ्चं अधिट्ठानट्ठेन आयतनमस्स ससम्पयुत्तधम्मस्स झानस्स, देवानं देवायतनमिवा ति आकासानञ्चायतनं। इति आकासानञ्चं च तं आयतनं चा ति पि आकासानञ्चायतनं। कसिणुग्घाटिमाकासस्सेतं अधिवचनं। तस्मिं आकासानञ्चायतने अप्पनापत्ताय सञ्ञाय सहगतं आकासानञ्चायतनसञ्ञासहगतं।

यथा पन अञ्ञत्थ 'अनन्तो आकासो' ति वुत्तं, एवमिध अनन्तं ति वा परित्तं ति वा न गहितं। कस्मा ? अनन्ते हि गहिते परित्तं न गय्हति, परित्ते गहिते अनन्तं न गय्हति। एवं सन्ते आरम्मणचतुक्कं न पूरति, देसना सोळसक्खत्तुका न होति। **सम्मासंबुद्धस्स** च इमस्मिं ठाने देसनं सोळसक्खत्तुकं कातुं अज्झासयो, तस्मा अनन्तं ति वा परित्तं ति वा ति अवत्वा 'आकासानञ्चायतनसञ्ञासहगतं' ति आह। एवं

ति पि अत्थि, सरति गच्छति विकारं ति सक्खरो, **पुससरेहिखरो ति** (१६८–ण्वु०) **मोग्गल्लानसुत्तेन** खरपच्चयो। नं ति विसं। एत्था ति विसकण्टके। तं दिस्वा ति गामिकानं[1] तं आकारं दिस्वा। ने ति गामिके।

तत्था ति तस्मिं वचने। उपमाय संसन्दनं वेदितब्बं। अस्सा ति[2] आकासानञ्चायतनस्स। अथा ति पच्छा। इदं हीति हि सच्चं, ते गामिका, इदं आनिसंसं सुत्वा बहुम्पि मूलं दत्वा, गुळं गण्हन्ता ते गामिका विय, इमिना....प०....निब्बत्तेस्सन्तीति योजना[2]।

आकासा....प०....गतं ति एत्थ विनिच्छयो वेदितब्बो। अधिट्ठानट्ठेना ति ससम्पयुत्तधम्मस्स अस्स झानस्स पतिट्ठानसभावेन। कसिणं उग्घाटियति अमनसिकारवसेन उद्धरियति एत्था ति कसिणुग्घाटो। कसिणुग्घाटो एव कसिणुग्घाटिमं। **अण्वादित्विमो ति** (४:६२) **मोग्गलानसुत्तेन** सकत्थे इमो। कसिणुग्घाटिमं आकासं कसिणुग्घाटिमाकासं।

ननु च अभिधम्मदेसना[3] सुत्तेसु देसनाय[3] सदिसा कत्तब्बा[4] कस्मा न कता ति आह यथा पना ति आदि। अनन्ते हीति हि सच्चं, अनन्ते गहिते। एवं ति एकस्स गहणे। एवं

---

१. गामिका–सी०। २-२. अयं पाठो सी० पोत्थके नत्थि। ३-३. अभिधम्मदेसनाय–सी०। ४. कातब्बा–सी०।

हि सति उभयं पि गहितमेव होति । आरम्मणचतुक्कं पूरति, देसना सोळसक्खत्तुका सम्पज्जति । अवसेसो पालि-अत्थो हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बो ।

रूपावचरचतुत्थज्झान-निकन्ति-परियादानदुक्खताय चेत्थ दुक्खा पटिपदा, परियादिन्ननिकन्तिकस्स अप्पनापरिवासदन्धताय दन्धाभिञ्ञा होति । विपरियायेन सुखा पटिपदा खिप्पाभिञ्ञा च वेदितब्बा । परित्तकसिणुग्घाटिमाकासे पन पवत्तं ञानं परित्तारम्मणं विपुलकसिणुग्घाटिमाकासे पवत्तं अप्पमाणारम्मणं ति वेदितब्बं । उपेक्खाब्रह्मविहारे विय च इधा पि चतुत्थज्झानवसेन पञ्चवीसति एकका होन्ति । यथा चेत्थ एवं इतोपरेसु पि । विसेसमत्तमेव पन तेसु वण्णयिस्साम ।

आकासानञ्चायतनं समतिक्कम्मा [ध० ७२] ति, एत्थ ताव पुब्बे वुत्तनयेनेव आकासानञ्चं आयतनमस्स अधिट्ठानट्ठेना ति ञानं पि आकासानञ्चायतनं । वुत्तनयेनेव आरम्मणं पि । एवमेतं ञानं च आरम्मणं च उभयं पि अप्पवत्तिकरणेन च अमनसिकारेन च समतिक्कमित्वा व यस्मा इदं विञ्ञाणञ्चायतनं उपसम्पज्ज विहरितब्बं, तस्मा उभयं पेतं एकज्झं कत्वा 'आकासानञ्चायतनं समतिक्कम्मा' ति इदं वुत्तं ति वेदितब्बं ।

विञ्ञाणञ्चायतनसञ्ञासहगतं [ध० ७२] ति, एत्थ पन अनन्तं ति मनसिकातब्बवसेन नास्स अन्तो ति अनन्तं । अनन्तमेव आनञ्चं । विञ्ञाणं आनञ्चं विञ्ञाणानञ्चं ति अवत्वा विञ्ञाणञ्चं ति वुत्तं । अयं हेत्थ रूळ्हिसद्दो । तदेव विञ्ञाणञ्चं अधिट्ठानट्ठेन इमिस्सा सञ्ञाय आयतनं ति विञ्ञाणञ्चायतनं । तस्मिं विञ्ञाणञ्चायतने पवत्ताय सञ्ञाय सहगतं ति विञ्ञाणञ्चायतनसञ्ञासहगतं । आकासे पवत्तविञ्ञाणारम्मणस्स ञानस्सेतं अधिवचनं । इध आकासानञ्चायतन-

---

होती ति हि सच्चं, एवं आकासानञ्चायतनसञ्ञासहगतं ति वचने । उभयम्पीति अनन्तं परित्तं ति उभयं ।

रूपा·····प०·····दुक्खताया ति रूपावचरे चतुत्थझाने निकन्तिया परियादानस्स परिक्खयस्स दुक्खताय । एत्था ति (१२९-म०) आकासानञ्चायतने । इधा पी ति आकासानञ्चायतने । यथा च एत्थ आकासानञ्चायतने पञ्चवीसति एकका होन्ति, एवं इतो आकासानञ्चायतनतो परेसु विञ्ञाणञ्चायतनादीसु चतुत्थझानवसेन पञ्चवीसति एकका होन्ति । तेसु पी ति विञ्ञाणञ्चायतनादीसु ।

आकासान[1]·····प०·····एत्थ वचने ताव आकासानञ्चायतनं नामा ति योजना । आकासानञ्चं···प०···ञानम्पि, बहुब्बीहि । आरम्मणम्पि आकासानञ्चायतनं नाम, कम्मधारयो । पुग्गलेन समतिक्कमित्वा व उपसम्पज्ज विहरितब्बं[1] ।

अयं हेत्था ति हि सच्चं अयं विञ्ञाणञ्चं ति (१५६–सी०) सद्दो[2] वाचकभावेन पाकट-

---

१-१. अयं सी० पोत्थके नत्थि । २. ०एत्थ विञ्ञाणञ्चे रूळ्हसद्दो–सी० ।

समापत्तिया निकन्तिपरियादानदुक्खताय दुक्खा पटिपदा, परियादिन्ननिकन्तिकस्स अप्पनापरिवासदन्धताय दन्धाभिञ्ञा। विपरियायेन सुखा पटिपदा खिप्पाभिञ्ञा च। परित्तकसिणुग्घाटिमाकासारम्मणं समापत्तिं आरब्भ पवत्तिया परित्तारम्मणता, विपरियायेन अप्पमाणारम्मणता वेदितब्बा। सेसं पुरिमसदिसमेव।

विञ्ञाणञ्चायतनं समतिक्कम्मा [ध० ७३] ति एत्था पि पुब्बे वुत्तनयेनेव विञ्ञाणञ्चायतनमस्स अधिट्ठानट्ठेना ति झानं पि विञ्ञाणञ्चायतनं। वुत्तनयेनेव आरम्मणं पि। एवमेतं झानं च आरम्मणं चा ति उभयं पि अप्पवत्तिकरणेन च अमनसिकारेन च समतिक्कमित्वा व यस्मा इदं आकिञ्चञ्ञायतनं उपसम्पज्ज विहातब्बं, तस्मा उभयं पेतं एकज्झं कत्वा 'विञ्ञाणञ्चायतनं समतिक्कम्मा' ति इदं वुत्तं ति वेदितब्बं।

आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञासहगतं [ध०७३]ति एत्थ पन नास्स किञ्चनं ति अकिञ्चनं; अन्तमसो भंगमत्तं पि अस्स अवसिट्ठं नत्थी ति वुत्तं होति। अकिञ्चनस्स भावो आकिञ्चञ्ञं। आकासानञ्चायतनविञ्ञाणापगमारम्मणस्सेतं अधिवचनं। तं आकिञ्चञ्ञं अधिट्ठानट्ठेन इमिस्सा सञ्ञाय आयतनं ति आकिञ्चञ्ञायतनं। तस्मिं आकिञ्चञ्ञायतने पवत्ताय सञ्ञाय सहगतं ति आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञासहगतं। आकासे पवत्तितविञ्ञाणापगमारम्मणस्स झानस्सेतं अधिवचनं। इध विञ्ञाणञ्चायतनसमापत्तिया निकन्तिपरियादानदुक्खताय दुक्खा पटिपदा, परियादिन्ननिकन्तिकस्स अप्पनापरिवासदन्धताय दन्धाभिञ्ञा। विपरियायेन सुखापटिपदा खिप्पाभिञ्ञा च। परित्तकसिणुग्घाटिमाकासे पवत्तितविञ्ञाणापगमारम्मणताय परित्तारम्मणता, विपरियायेन अप्पमाणारम्मणता वेदितब्बा। सेसं पुरिमसदिसमेव।

आकिञ्चञ्ञायतनं समतिक्कम्मा [ध० ७३] ति एत्था पि पुब्बे वुत्तनयेनेव आकिञ्चञ्ञं आयतनमस्स अधिट्ठानट्ठेना ति झानं पि आकिञ्चञ्ञायतनं। वुत्तनयेनेव आरम्मणं पि। एवमेतं झानं च आरम्मणं चा ति उभयं पि अप्पवत्तिकरणेन च अमनसिकारेन च समतिक्कमित्वा च यस्मा इदं नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं उपसम्पज्ज विहातब्बं, तस्मा उभयं पेतं एकज्झं कत्वा 'आकिञ्चञ्ञायतनं समतिक्कम्मा' ति इदं वुत्तं ति वेदितब्बं।

सद्दो। इधा पि विञ्ञाणञ्चायतने दुक्खापटिपदा वेदितब्बा ति योजना।

नास्सा ति न[1] आकासानञ्चायतनविञ्ञाणस्स। इधा ति आकिञ्चायतने।

---

१. न अस्स–सी०।

नेवसञ्ञानासञ्ञासहगतं [ध ७३] ति एत्थ पन याय सञ्ञाय सभावतो नं नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं ति वुच्चति, यथा-पटिपन्नस्स सा सञ्ञा होति, तं ताव दस्सेतुं **विभंगे** "नेवसञ्ञी-नासञ्ञी" ति पदं उद्धरित्वा "तं येव आकिञ्चञ्ञायतनं सन्ततो मनसिकरोति संखारावसेससमापत्तिं भावेति, तेन वुच्चति नेवसञ्ञी-नासञ्ञी ति" [वि० ३१६] वुत्तं। तत्थ 'सन्ततो मनसिकरोती'ति 'सन्ता वतायं समापत्ति, यत्र हि नाम नत्थिभावं पि आरम्मणं कत्वा ठस्सती' ति एवं सन्तारम्मणताय नं 'सन्ता' ति मनसिकरोति। सन्ततो चे मनसिकरोति, कथं समतिक्कमो होती ति ? अनावज्जितुकामताय। सो हि किञ्चा पि तं सन्ततो मनसिकरोति, अथ ख्वस्स 'अहमेतं आवज्जिस्सामि समापज्जिस्सामि अधिट्ठहिस्सामि वुट्ठहिस्सामि पच्चवेक्खिस्सामी'ति एस आभोगो समन्नाहारो मनसिकारो न होति। कस्मा ? आकिञ्चञ्ञायतनतो नेवसञ्ञानासञ्ञायतनस्स सन्ततर-पणीततरताय।

यथा हि राजा महच्चराजानुभावेन हत्थिक्खन्धगतो नगरवीथियं विचरन्तो दन्तकारादयो सिप्पिके एकं वत्थं दळ्हं निवासेत्वा एकेन सीसं वेठेत्वा दन्तचुण्णादीहि समोकिण्णगत्ते अनेकानि दन्तविकति-आदीनि करोन्ते दिस्वा 'अहो वत रे छेका आचरिया, ईदिसानि पि नाम सिप्पानि करिस्सन्ती'ति, एवं तेसं छेकताय तुस्सति, न च'स्स एवं होति—'अहो वताहं रज्जं पहाय एवरूपो सिप्पिको भवेय्यं'ति। तं किस्स हेतु ? रज्जसिरिया महानिसंसताय। सो सिप्पिके समतिक्कमित्वा व गच्छति। एवमेव एस किञ्चा पि तं समापत्तिं सन्ततो मनसिकरोति, अथ ख्वस्स 'अहमेतं समापत्तिं आवज्जिस्सामि समापज्जिस्सामि अधिट्ठहिस्सामि वुट्ठहिस्सामि पच्चवेक्खिस्सामी'ति नेव एस आभोगो समन्नाहारो मनसिकारो होति। सो तं सन्ततो मनसिकरोन्तो पुब्बे वुत्तनयेनेव तं परमं सुखुमं अप्पनापत्तं सञ्ञं पापुणाति, याय 'नेवसञ्ञी-नासञ्ञी नाम होति, संखारावसेसं समापत्तिं भावेती'ति वुच्चति। 'संखारावसेससमापत्तिं'ति अच्चन्तसुखुमभावप्पत्तसंखारं चतुत्थारुप्पसमापत्तिं।

सभावतो ति[1] विज्जमानतो। तं ति झानं। यथा ति येन पकारेन पटिपन्नस्स पुग्गलस्स। तं ति तं[2] पकारं। तत्था ति तञ्ञेवा ति आदि पदेसु[3], निद्धारणं। यत्र हि नाम या नाम समापत्ति। नत्थिभावम्पि....प.. ठस्सति। अयं समापत्ति वत एकंसेन सन्ता ति योजना। अपिसद्दो सम्भावने[4]। नं ति समापत्तिं। सन्ततो[5]....प०....होति[5] इति पुच्छा सिया। सो हीति आदि वित्थारो। अथ ख्वस्सा ति अथ खो सच्चतो अस्स पुग्गलस्स आभोगो न होति।

वुत्तमत्थं लोकूपमाय साधेन्तो आह–यथा हीति आदि। महच्चा ति महता, ततियत्थे पठमा। एकेन वत्थेन। दन्तचुण्णादीहीति हत्थि-आदीनं दन्तानं चुण्णादीहि। अरे ति पसंसायं निपातो, साधू ति अत्थो। न चस्सा ति अस्स रञ्ञो एवं वितक्कनं न च होति। एसो ति योगी। याय सङ्खारावसेससञ्ञाय पुग्गलो नेव.. प०.. नाम होति। पुग्गलो[6] सङ्खारा...प०... भावेति इति पण्डितेन वुच्चति[6]। सो पुग्गलो। तं समापत्तिं[7]... प०....अप्पनापत्तं[8] तं सञ्ञं

---

१. भावतो ति–म०। २. नत्थि–सी०। ३. पदे–सी०। ४. सम्भावनो-सी०। ५-५. भोति –सी०। ६-६. सी० पोत्थके नत्थायं पाठो। ७. समापत्ति–म०। ८. अप्पनापत्तिं–सी०।

इदानि यं तं एवं अधिगताय सञ्ञाय वसेन नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं ति वुच्चति, तं अत्थतो दस्सेतुं "नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं ति नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं समापन्नस्स वा, उपपन्नस्स वा, दिट्ठधम्मसुखविहारस्स वा चित्तचेतसिका धम्मा" [वि० ३१६] वुत्तं। तेसु इध समापन्नस्स चित्तचेतसिका धम्मा अधिप्पेता। वचनत्थो पनेत्थ--ओळारिकाय सञ्ञाय अभावतो, सुखुमाय च भावतो, नेव'स्स ससम्पयुत्त-धम्मस्स झानस्स सञ्ञा, नासञ्ञा ति नेवसञ्ञानासञ्ञं। नेवसञ्ञानासञ्ञं च तं मनायतनधम्मायतनपरियापन्नत्ता आयतनं चा ति नेव-सञ्ञा-नासञ्ञायतनं।

अथ वा या' यमेत्थ सञ्ञा, सा पटुसञ्ञाकिच्चं कातुं असमत्थताय नेव-सञ्ञा, संखारावसेससुखुमभावेन विज्जमानत्ता नासञ्ञा ति नेव-सञ्ञानासञ्ञा। नेव-सञ्ञा-नासञ्ञा च सा सेसधम्मानं अधिट्ठानट्ठेन आयतनं चा ति नेव-सञ्ञा-नासञ्ञायतनं। न केवलं चेत्थ सञ्ञा व एदिसी, अथ खो वेदना पि नेव-वेदना-नावेदना, चित्तं पि नेव-चित्तं-नाचित्तं, फस्सो पि नेव-फस्सो-नाफस्सो। एस नयो सेससम्पयुत्तधम्मेसु। सञ्ञासीसेन पनायं देसना कता ति वेदितब्बा।

पत्तमक्खनतेलप्पभुतीहि च उपमाहि एस अत्थो विभावेतब्बो—सामणेरो किल तेलेन पत्तं मक्खेत्वा ठपेसि। तं यागुपानकाले थेरो 'पत्तमाहरा' ति आह। सो 'पत्ते तेलमत्थि भन्ते'ति आह। ततो 'आहार, सामणेर, तेलनाळिं पूरेस्सामा'ति वुत्ते 'नत्थि भन्ते तेलं' ति आह। तत्थ यथा अन्तो वुत्थत्ता यागुया सद्धिं अकप्पियट्ठेन तेलं अत्थी ति होति, नाळिपूरणादीनं अभाववसेन नत्थी ति होति, एवं सा पि सञ्ञा पटुसञ्ञा-किच्चं कातुं असमत्थताय नेव-सञ्ञा, संखारावसेससुखुमभावेन विज्जमानत्ता नासञ्ञा होति।

किं पनेत्थ सञ्ञाकिच्चं ति ? आरम्मणसञ्जाननं चेव विपस्सनाय च विसयभावं उपगन्त्वा निब्बिदाजननं। दहनकिच्चमिव हि सुखोदके तेजोधातु, सञ्जाननकिच्चं

पापुणातीति योजना। वुत्तनयेना ति अप्पवत्तिकरण-अमनसिकरणसङ्खातेन नयेन।

यं ति झानं, तं झानं अत्थतो दस्सेतुं नेव····प०····धम्मा ति वचनं भगवता वुत्तं। तेसू ति समापन्नादिपुग्गलानं चित्तचेतसिकेसु, निद्धारणं। इधा ति चतुत्थारुप्पाधिकारे। एत्था ति नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं ति वचने।

यायमेत्था ति एत्थ चतुत्थारुप्पे या अयं सञ्ञा। सेसधम्मानं ति फस्सादीनं सेस-धम्मानं। निस्सयादिपच्चयेन अधिट्ठानट्ठेन। एत्था ति चतुत्थारुप्पे।

अथ खो ति सच्चतो तं सामणेरं। ततो ति अनन्तरं। तत्था ति तस्मि वचने। उपमा-संसन्दनं दट्ठब्बं। अन्तो (१३०-म०) वुट्ठताया ति[1] तेलपत्तो[2] अन्तो वुट्ठताय। अकप्पिय-ट्ठेना ति अननुरूपभावेन। तेलं अत्थि इति वचनं होति। नत्थी ति वचनं होति।

किं पन एत्थ चतुत्थारुप्पे सञ्ञाकिच्चं सञ्ञाय किच्चं इति पुच्छा। दहनकिच्चमिव

---

१. वुत्थताया ति–सी० सब्बत्थ। २. तेलस्स पत्तो–सी०।

चेसा पटुं कातुं न सक्कोति। सेससमापत्तीसु सञ्ञा विय विपस्सनाय विसयभावं उपगन्त्वा निब्बिदाजननं पि कातुं न सक्कोति। अञ्ञेसु हि खन्धेसु अकताभिनिवेसो भिक्खु नेवसञ्ञानासञ्ञायतनक्खन्धे सम्मसित्वा निब्बिदं पत्तुं समत्थो नाम नत्थि। अपि च आयस्मा **सारिपुत्तो**, पकतिविपस्सको पन महापञ्ञो **सारिपुत्तसदिसो** व सक्कुणेय्य। सो पि "एवं किरिमे धम्मा अहुत्वा सम्भोन्ति, हुत्वा पटिवेन्ती" ति [म० ३.९१] एवं कलापसम्मसनवसेनेव, नो अनुपदधम्मविपस्सनावसेन। एवं सुखुमत्तं गता एसा समापत्ति।

यथा च पत्तमक्खनतेलूपमाय एवं मग्गुदकूपमाय पि अयमत्थो विभावेतब्बो। मग्गपटिपन्नस्स किर थेरस्स पुरतो गच्छन्तो सामणेरो थोकमुदकं दिस्वा 'उदकं भन्ते, उपाहना ओमुञ्चथा ति आह। ततो थेरेन 'सचे उदकमत्थि, आहर नहानसाटकं, नहायिस्सामा'ति वुत्ते 'नत्थि भन्ते'ति आह। तत्थ यथा उपाहनतेमनमत्तट्ठेन उदकं अत्थी ति होति, नहानट्ठेन नत्थी ति होति, एवं पि सा पटुसञ्ञाकिच्चं कातुं असमत्थताय नेव-सञ्ञा, संखारावसेससुखुमभावेन विज्जमानत्ता नासञ्ञा होति। न केवलं च एताहेव, अञ्ञाहि पि अनुरूपाहि उपमाहि एस अत्थो विभावेतब्बो।

इति इमाय नेवसञ्ञानासञ्ञायतने पवत्ताय सञ्ञाय नेवसञ्ञानासञ्ञायतनभूताय वा सञ्ञाय सहगतं ति नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसञ्ञासहगतं। आकिञ्चञ्ञायतनसमापत्ति-आरम्मणस्स झानस्सेतं अधिवचनं। इध आकिञ्चञ्ञायतनसमापत्तिया निकन्तिपरियादानदुक्खताय दुक्खापटिपदा, परियादिन्ननिकन्तिस्स अप्पनापरिवासदन्धताय दन्धाभिञ्ञा। विपरियायेन सुखा पटिपदा खिप्पाभिञ्ञा च। परित्तकसिणुग्घाटिमाकासे पवत्तितविञ्ञाणापगमारम्मणं समापत्तिं आरब्भ पवत्तिताय परित्तारम्मणता, विपरियायेन अप्पमाणारम्मणता वेदितब्बा। सेसं पुरिमसदिसमेव।

हीति आदि दळ्हीकरणं। एसा ति सञ्ञानिब्बिदाजननं कातुं न सक्कोतीति वुत्तमत्थं दळ्हं करोन्तो आह–अञ्ञेसु हीति[1] आदि। सो[2] पी ति[2] आयस्मा सारिपुत्तो। पकति[3]....प०.... सदिसो व पुग्गलो सक्कुणेय्य। पनसद्दो विसेसत्थो[3]। किरिमे ति किर इमे धम्मा। सम्भोन्तीति पवत्तन्ति (१५७–सी०)। पटिवेन्तीति निरुज्झन्ति। कलापसम्मसनवसेनेव[4] सक्कुणेय्य....प०....णेय्या ति योजना।

न केवलं एताहेव उपमाहि एस अत्थो-विभावेतब्बो।

इधा ति चतुत्थारुप्पे[4]।

---

१. पीति–सी०। २-२. नत्थि–म०। ३-३. नत्थायं सी० पोत्थके पाठो। ४-४. अयं पाठो सी० पोत्थके न दिस्सति।

पकिण्णककथा

असदिसरूपो **नाथो** आरुप्पं यं चतुब्बिधं आह।
तं इति ञत्वा तस्मिं पकिण्णककथा पि विञ्ञेय्या॥

अरूपसमापत्तियो हि

आरम्मणातिक्कमतो चतस्सो पि भवन्ति'मा।
अंगातिक्कममेतासं न इच्छन्ति विभाविनो॥

एतासु हि रूपनिमित्तातिक्कमतो पठमा, आकासातिक्कमतो दुतिया, आकासे पवत्तितविञ्ञाणातिक्कमतो ततिया, आकासे पवत्तितविञ्ञाणस्स अपगमातिक्कमतो चतुत्था ति सब्बथा 'आरम्मणातिक्कमतो चतस्सो पि भवन्ति'मा' अरूपसमापत्तियो ति वेदितब्बा। अंगातिक्कमं पन एतासं न इच्छन्ति पण्डिता। न हि रूपावचरसमापत्तीसु विय एतासु अंगातिक्कमो अत्थि। सब्बासु पि हि एतासु उपेक्खाचित्तेकग्गता ति द्वे एव झानंगानि होन्ति।

एवं सन्ते पि

सुप्पणीततरा होन्ति पच्छिमा पच्छिमा इध।
उपमा तत्थ विञ्ञेय्या पासादतल साटिका॥

यथा हि चतुभूमकस्स पासादस्स हेट्ठिमतले दिब्बनच्चगीतवादितसुरभिगन्धमाला-सादुरसपानभोजन-सयनच्छादनादिवसेन पणीता पञ्च कामगुणा पच्चुपट्ठिता अस्सु, दुतिये ततो पणीततरा, ततिये ततो पणीततरा, चतुत्थे सब्बपणीता; तत्थ किञ्चा पि तानि चत्तारि पि पासादतलानेव, नत्थि तेसं पासादतलभावेन विसेसो, पञ्चकामगुणसमिद्धिविसेसेन पन हेट्ठिमतो हेट्ठिमतो उपरिमं उपरिमं पणीततरं होति।

पकिण्णककथावण्णना

असदिसरूपो नाथो चतुब्बिधं यं आरुप्पं ञत्वा तस्मिं आरुप्पे पकिण्णककथा पि पण्डितेन विञ्ञेय्या ति सम्बन्धो।

अरूपसमापत्तियो ही ति आदि वित्थारो। हि सच्चं, चतस्सो इमा अरूपसमापत्तियो आरम्मणातिक्कमतो भवन्ति। विभाविनो एतासं अरूपसमापत्तीनं अङ्गातिक्कमं न इच्छन्ति। एतासु हीति आदि वित्थारो। हि सच्चं, एतासु अरूपसमापत्तीसु। रूपं एव निमित्तं। न हीति आदि दळ्हीकरणं।

एवं ति झानङ्गद्वये, सन्ते पि[1] होन्तीति पदे लक्खणकिया। इध[2] अरूपसमापत्तीसु। पच्छिमा अरूपसमापत्तीसु[3] पणीततरा होन्ति। पासादतलसाटिका पासादतलसाटिकसङ्खाता उपमा तत्थ अरूपसमापत्तीसु पण्डितेन विञ्ञेय्या। यथा हीति आदि वित्थारो। तत्था ति पासादे।

---

१. सन्ते पी ति पदं–सी०। २. इधा ति–सी०। ३. पच्छिमा अरूप०–सी०।

यथा च एकाय इत्थिया कन्तित-थूल-सण्ह-सण्हतर-सण्हतमसुत्तानं चतुपल-तिपल-दुपल-एकपलसाटिका अस्सु, आयामेन च वित्थारेन च समप्पमाणा; तत्थ किञ्चा पि ता साटिका चतस्सो पि आयामतो च वित्थारतो च समप्पमाणा, नत्थि तासं पमाणतो विसेसो, सुखसम्फस्स-सुखुमभाव-महग्घभावेहि पन पुरिमाय पुरिमाय पच्छिमा पच्छिमा पणीततरा होन्ति, एवमेव किञ्चा पि चतूसु पि एतासु उपेक्खा-चित्तेकग्गता ति एतानि द्वे येव अंगानि होन्ति, अथ खो भावनाविसेसेन तेसं अंगानं पणीत-पणीततर-भावेन सुप्पणीततरा होन्ति पच्छिमा पच्छिमा इधा ति वेदितब्बा।

एवं अनुपुब्बेन पणीत-पणीता चेता

असुचिम्हि मण्डपे लग्गो एको तन्निसितो परो।
अञ्ञो बहि अनिस्साय तं तं निस्साय चापरो॥
ठितो चतूहि एकेहि पुरिसेहि यथाक्कमं।
समानताय ञातब्बा चतस्सो पि विभाविना॥

तत्रायमत्थयोजना—असुचिम्हि किर देसे एको मण्डपो। अथेको पुरिसो आगन्त्वा तं असुचिं जिगुच्छमानो तं मण्डपं हत्थेहि आलम्बित्वा तत्थ लग्गो, लग्गितो विय अट्ठासि। अथापरो आगन्त्वा तं मण्डपलग्गं पुरिसं निस्सितो। अथ'ञ्ञो आगन्त्वा चिन्तेसि—'यो एस मण्डपलग्गो, यो च तं निस्सितो, उभो पेते दुट्ठिता; धुवो च नेसं मण्डपपाते पातो, हन्दाहं बहि येव तिट्ठामी' ति सो तं निस्सितं अनिस्साय बहि येव अट्ठासि। अथापरो आगन्त्वा मण्डपलग्गस्स तं-निस्सितस्स च अखेमभावं चिन्तेत्वा बहिट्ठितं च सुट्ठितं ति मत्वा तं निस्साय अट्ठासि।

तत्थ असुचिम्हि देसे मण्डपो विय कसिणुग्घाटिमाकासं दट्ठब्बं। असुचि-जिगुच्छाय मण्डपलग्गो पुरिसो विय रूपनिमित्तजिगुच्छाय आकासारम्मणं आकासा-नञ्चायतनं। मण्डपलग्गं पुरिसं निस्सितो विय आकासारम्मणं आकासानञ्चायतनं आरब्भ पवत्तं विञ्ञाणञ्चायतनं। तेसं द्विन्नं पि अखेमभावं चिन्तेत्वा अनिस्साय तं मण्डपलग्गं, बहि ठितो विय, आकासानञ्चायतनं आरम्मणं अकत्वा तदभावारम्मणं

इत्थिया ति पदं कन्तित इति पदे कत्ता। तत्था ति तासु साटिकासु, नत्थीति पदे अभेदेन आधारो।

असुचिम्हि देसे मण्डपे एको पुरिसो लग्गो, परो पुरिसो तं मण्डपलग्गं पुरिसं निस्सितो, अञ्ञो तं पुरिसं अनिस्साय बहिट्ठितो, अपरो तं बहिट्ठितं पुरिसं निस्सायट्ठितो, चतूहि एतेहि पुरिसेहि यथाक्कमं समानस्स समानभावेन चतस्सो पि एता अरूपसमापत्तियो विभाविना ञातब्बा। तत्रा ति गाथायं। अथा ति पच्छा। नं पदेसं। तत्थ वचने उपमासंसन्दनं। मण्डप-लग्गं पुरिसं अनिस्साय बहिट्ठितो।

तदभावारम्मणं ति तस्स आकासानञ्चायतनस्स अभावो आरम्मणं अस्सा ति तद-भावारम्मणं।

आकिञ्चञ्ञायतनं। मण्डपलग्गस्स तं-निस्सितस्स च अखेमतं चिन्तेत्वा बहिठितं च 'सुट्ठितो'ति मन्त्वा तं निस्साय ठितो विय विञ्ञाणाभावसंखाते बहि पदेसे ठितं आकिञ्चञ्ञायतनं आरब्भ पवत्तं नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं दट्ठब्बं।

एवं पवत्तमानं च

आरम्मणं करोतेव अञ्ञाभावेन तं इदं।
दिट्ठदोसं पि राजानं वुत्तिहेतु यथा जनो॥

इदं हि नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं 'आसन्नविञ्ञाणञ्चायतनपच्चत्थिका अयं समापत्ती' ति एवं दिट्ठदोसं पि तं आकिञ्चञ्ञायतनं अञ्ञस्स आरम्मणस्स अभावा आरम्मणं करोतेव। यथा किं? 'दिट्ठदोसं पि राजानं वुत्तिहेतु यथा जनो'। यथा हि असंयतं फरुसकायवचीमनोसमाचारं कञ्चि सब्बदिसम्पतिं राजानं 'फरुससमाचारो अयं'ति एवं दिट्ठदोसं पि अञ्ञत्थ वुत्तिं अलभमानो जनो वुत्तिहेतु तं निस्साय वत्तति, एवं दिट्ठदोसं पि तं आकिञ्चञ्ञायतनं अञ्ञं आरम्मणं अलभमानमिदं नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं आरम्मणं करोतेव।

एवं कुरुमानं च

आरूळ्हो दीघनिस्सेणिं यथा निस्सेणिबाहुकं।
पब्बतग्गं च आरूळ्हो यथा पब्बतमत्थकं॥
यथा वा गिरिमारूळ्हो अत्तनो एव जण्णुकं।
ओलुब्भति तथेवेतं झानमोलुब्भ वत्तती ति॥

आरुप्पकुसलकथा निट्ठिता।

इदानि यस्मा सब्बानि पेतानि तेभूमककुसलानि हीनादिना पभेदेन वत्तन्ति,

---

जनो वुत्तिहेतु जीवितवुत्तिकारणा। दिट्ठदोसम्पि राजानं निस्साय पवत्तति यथा, वुत्तं यथा एवं पवत्तमानञ्च इदं नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं अञ्ञाभावेन अञ्ञस्स [१३१-म०] आरम्मणस्स अभावेन दिट्ठदोसम्पि तं आकिञ्चञ्ञायतनं आरम्मणं करोतेवा ति योजना। असंयतं[1]... प०....दिट्ठदोसम्पि राजानं निस्साय पवत्ततीति योजना।[1]

दीघनिस्सेणिं आरुळ्हो जनो निस्सेणिबाहुकं ओलुब्भति यथा। पब्बतग्गञ्च आरुळ्हो जनो पब्बतमत्थकं ओलुब्भति यथा। वा अपरो नयो गिरि-आरुळ्हो जनो अत्तनो येव जण्णुकं ओलुब्भति यथा। तथेव एवं कुरुमानञ्च इदं नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं एतं झानं आकिञ्चञ्ञायतनं (१५८-सी०) ओलुब्भ निस्साय वत्ततीति योजना।

आरुप्पकुसलकथा निट्ठिता

तत्था ति हीनं ति आदिपदेसु। यस्सा ति कुसलस्स।

१-१. अयं पाठो सी० पोत्थके न दिस्सति।

तस्मा नेसं तं पभेदं दस्सेतुं पुन **कतमे धम्मा कुसला** ति [ध० ७०] आदि आरद्धं। तत्थ **हीनं** [ध० ७०] ति लामकं। तं आयूहनवसेन वेदितब्बं। हीनुत्तमानं मज्झे भवं **मज्झिमं**। पधानभावं नीतं **पणीतं**; उत्तमं ति अत्थो। तानि पि आयूहनवसेनेव वेदितब्बानि। यस्स हि आयूहनक्खणे छन्दो वा हीनो होति; विरियं वा, चित्तं वा, वीमंसा वा, तं हीनं नाम। यस्स च ते धम्मा मज्झिमा पणीता, तं मज्झिमं चेव पणीतं च। यं पन कत्तुकम्यतासंखातं छन्दं धुरं छन्दं जेट्ठकं छन्दं पुब्बंगमं कत्वा आयूहितं, तं छन्दाधिपतितो आगतत्ता **छन्दाधिपतेय्यं** नाम। **विरियाधिपतेय्यादीसु** पि एसेव नयो।

इमस्मिं पन ठाने ठत्वा नया गणेतब्बा। सब्बपठमं विभत्तो हि एको नयो, हीनं ति एको, मज्झिमं ति एको, पणीतं ति एको, छन्दाधिपतेय्यं ति एको। इमे ताव छन्दाधिपतेय्ये पञ्च नया। एवं विरियाधिपतेय्यादीसु पी ति चत्तारो पञ्चका वीसति होन्ति। पुरिमो वा एको सुद्धिकनयो, हीनं ति आदयो तयो, छन्दाधिपतेय्यं ति आदयो चत्तारो, छन्दाधिपतेय्यं हीनं ति आदयो द्वादसा ति एवं पि वीसति नया होन्ति। इमे वीसति महानया कत्थ विभत्ता ति ? महापकरणे हीनत्तिके विभत्ता।

इमस्मिं पन ठाने हीनत्तिकतो मज्झिमरासिं गहेत्वा हीनमज्झिमपणीतवसेन तयो कोट्ठासा कातब्बा। ततो पि मज्झिमरासिं ठपेत्वा हीन-पणीते गहेत्वा नव नव कोट्ठासा कातब्बा। हीनस्मिं येव हि हीनं अत्थि मज्झिमं अत्थि पणीतं अत्थि। पणीतस्मिं पि हीनं अत्थि मज्झिमं अत्थि पणीतं अत्थि। तथा हीनहीनस्मिं हीनं, हीनहीनस्मिं मज्झिमं, हीनहीनस्मिं पणीतं। हीनमज्झिमस्मिं हीनं, हीनमज्झिमस्मिं मज्झिमं, हीनमज्झिमस्मिं पणीतं। हीनपणीतस्मिं हीनं, हीनपणीतस्मिं मज्झिमं, हीनपणीतस्मिं पणीतं ति अयमेको नवको। पणीतहीनस्मिं पि हीनं नाम अत्थि, पणीतहीनस्मिं मज्झिमं, पणीतहीनस्मिं पणीतं। तथा पणीतमज्झिमस्मिं हीनं, पणीतमज्झिमस्मिं मज्झिमं, पणीतमज्झिमस्मिं पणीतं। पणीतपणीतस्मिं हीनं, पणीतपणीतस्मिं मज्झिमं, पणीतपणीतस्मिं पणीतं ति। अयं दुतियो नवको ति द्वे नवका अट्ठारस। इमानि अट्ठारस कम्मद्वारानि नाम। इमेहि पभावितत्ता, इमेसं वसेन, अट्ठारस खत्तिया, अट्ठारस ब्राह्मणा, अट्ठारस्स वेस्सा, अट्ठारस सुद्दा, अट्ठचत्ताळीस गोत्तचरणानि वेदितब्बानि।

कत्थ विभत्तं[1] कस्मिं ठाने इमे महानया भगवता विभत्ता इति पुच्छा।

ततो पीति तीहि कोट्ठासेहि। इमेहि पभावितत्ता इमेहि अट्ठारसकम्मद्वारेहि जनितत्ता वेदितब्बानीति पदे हेतु। इमेसं ति कम्मद्वारानं। वसेना ति पदं वेदितब्बानीति पदे ततिया-विसेसनं। भारद्वाजगोतमादयो गोत्ता च कठकलापादयो[2] चरणानि।

---

१. विभत्ता ति–सी०। २. कपालादयो–म०।

पकिण्णककथा

इमेसु पन तेभूमकेसु कुसलेसु कामावचरकुसलं तिहेतुकं पि दुहेतुकं पि होति ञाणसम्पयुत्तविप्पयुत्तवसेन । रूपावचरारूपावचरं पन तिहेतुकमेव ञाणसम्पयुत्तमेव । कामावचरं चेत्थ अधिपतिना सहा पि उप्पज्जति विना पि । रूपावचरारूपावचरं अधिपतिसम्पयुत्तमेव होति । कामावचरकुसलेसु चेत्थ आरम्मणाधिपति सहजाताधिपती ति द्वे पि अधिपतयो लब्भन्ति । रूपावचरारूपावचरेसु आरम्मणाधिपति न लब्भति, सहजाताधिपति येव लब्भति । तत्थ चित्तस्स चित्ताधिपतेय्यभावो सम्पयुत्तधम्मानं वसेन वुत्तो । द्विन्नं पन चित्तानं एकतो अभावेन सम्पयुत्तचित्तस्स चित्ताधिपति नाम नत्थि । तथा छन्दादीनं छन्दाधिपति-आदयो । केचि पन 'सचे चित्तवतो कुसलं होति, मय्हं भविस्सती ति एवं यं चित्तं धुरं कत्वा जेट्ठकं कत्वा अपरं कुसलचित्तं आयूहितं, तस्स तं पुरिमं चित्तं चित्ताधिपति नाम होति, ततो आगतत्ता इदं चित्ताधिपतेय्यं नामा' ति एवं आगमनवसेन अधिपतिं नामं इच्छन्ति । अयं पन नयो नेव पालियं न अट्ठकथाय दिस्सति । तस्मा वुत्तनयेनेव अधिपतिभावो वेदितब्बो ।

इमेसु च एकूनवीसतिया महानयेसु पुरिमे सुद्धिकनये वुत्तपरिमाणानेव चित्तानि च नवका च पाठवारा च होन्ति । तस्मा ञाणसम्पयुत्तेसु वुत्तपरिमाणतो वीसतिगुणो चित्त-नवक-वारभेदो वेदितब्बो, चतूसु ञाणविप्पयुत्तेसु सोळसगुणो ति, अयं तेभूमककुसले पकिण्णककथा नामा ति ।

तेभूमककुसलं निट्ठितं ।

पकिण्णककथावण्णना

एत्था ति तेभूमककुसलेसु । तत्था ति सहजाताधिपतीसु, निद्धारणं । चित्ताधिपतितो आगतं चित्ताधिपतेय्यं । चित्ताधिपतेय्यस्स भावो चित्ताधिपतेय्यभावो । ततो ति पुरिमचित्ताधिपतितो आगच्छति ।

तेभूमककुसलेसु । एतेन चित्ताधिपतिना आगमनचित्तानि च नवकानि च वारा च चित्तनवकवारा । तेसं भेदो चित्त····प०····भेदो ।

पकिण्णककथावण्णना निट्ठिता

तेभूमककुसलं निट्ठितं

चित्तुप्पादकण्डं लोकुत्तरकुसलं

पठमो मग्गो

एवं भवत्तयसम्पत्तिनिब्बत्तकं कुसलं दस्सेत्वा इदानि सब्बभवसमतिक्कमनाय लोकुत्तरं कुसलं दस्सेतुं पुन **कतमे धम्मा कुसला** [ध० ७४] ति आदि आरद्धं। तत्थ **लोकुत्तरं** ति केनट्ठेन लोकुत्तरं ? लोकं तरती ति, लोकं उत्तरती ति लोकुत्तरं; लोकत्तयं समतिक्कम्म अभिभुय्य तिट्ठती ति लोकुत्तरं। **झानं भावेती** ति एकचित्तक्खणिकं अप्पनाझानं जनेति वड्ढेति। लोकतो निय्याति वट्टतो निय्याती ति **निय्यानिकं**। निय्याति वा एतेना ति निय्यानिकं। तं-समङ्गी हि पुग्गलो दुक्खं परिजानन्तो निय्याति, समुदयं पजहन्तो निय्याति, निरोधं सच्छिकरोन्तो निय्याति, मग्गं भावेन्तो निय्याति। तथा पन तेभूमककुसलं वट्टस्मिं चुतिपटिसन्धियो आचिनति वड्ढेती ति आचयगामी नाम होति, न तथा इदं। इदं पन यथा एकस्मिं पुरिसे अट्ठारसहत्थं पाकारं उपचिनन्ते अपरो महामुग्गरं गहेत्वा तेन चितचितट्ठानं अपचिनन्तो विद्धंसेन्तो गच्छेय्य, एवमेव तेभूमककुसलेन आचिता चुतिपटिसन्धियो पच्चयवेकल्लकरणेन अपचिनन्तं विद्धंसेन्तं गच्छती ति **अपचयगामी**।

दिट्ठिगतानं पहानाया [ध० ७४] ति, एत्थ दिट्ठियो एव दिट्ठिगतानि, गूथगतं मुत्तगतं ति आदीनि विय। द्वासट्ठिया वा दिट्ठीनं अन्तोगधत्ता दिट्ठीसु गतानी ति पि दिट्ठिगतानि। दिट्ठिया व गतं एतेसं ति दिट्ठिगतानि। दिट्ठिसदिसगमनानि दिट्ठिसदिसप्पवत्तानी ति अत्थो। कानि पन तानी ति ? ससम्पयुत्तानि सक्कायदिट्ठि-विचिकिच्छा-सीलब्बतपरामास-अपायगमनीय-रागदोसमोहाकुसलानि। तानि हि याव पठममग्गभावना ताव पवत्तिसब्भावतो दिट्ठिसदिसगमनानी ति वुच्चन्ति। इति दिट्ठियो च दिट्ठिगतानि च दिट्ठिगतानि। तेसं दिट्ठिगतानं। **पहानाया** ति समुच्छेदवसेन पजहनत्थाय।

चित्तुप्पादकण्डं लोकुत्तरकुसलकथावण्णना

तत्था ति कतमे धम्मा ति आदिवचने विनिच्छयो वेदितब्बो। निय्याति वा एतेना ति वा अपरो नयो। एतेन ञानेन पुग्गलो निय्याति इति तस्मा तं ञानं निय्यानिकं। तं-समङ्गीति तेन ञानेन समङ्गी। इदं पना ति लोकुत्तरकुसलं, गच्छतीति पदे कत्ता। तेना ति पुरिसेन, चित्तं ति पदे कत्ता। पच्चयवेकल्लकरणेना ति पच्चयानं अपरिपुण्णभावकरणेन।

दिट्ठिया व दिट्ठिया गतं इव। एतेसं सक्कायदिट्ठि-आदीनं गतं गमनं। कानि पन तानि दिट्ठिसदिसगमनानि इति पुच्छा। तानि हीति हि सच्चं तानि सक्कायदिट्ठि-आदीनि।

पठमाया ति गणनवसेन पि पठमुप्पत्तिवसेन पि पठमाय। **भूमिया** ति "अनन्तरहिताय भूमिया" [म० २.२८३] ति आदीसु ताव अयं महापठवी भूमी ति वुच्चति। "सुखभूमियं कामावचरे" [ध०२२९,२३१] ति आदीसु चित्तुप्पादो। इध पन सामञ्ञफलं अधिप्पेतं। तं हि सम्पयुत्तानं निस्सयभावतो ते धम्मा भवन्ति एत्था ति भूमि। यस्मा वा समाने पि लोकुत्तरभावे सयं पि भवति उप्पज्जति, न निब्बानं विय अपातुभावं, तस्मा पि भूमी ति वुच्चति; तस्सा पठमाय भूमिया। **पत्तिया** ति सोतापत्तिफल-संखातस्स पठमस्स सामञ्ञफलस्स पत्तत्थाय पटिलाभत्थाया ति एवमेत्थ अत्थो वेदितब्बो। **विविच्चा** ति समुच्छेदविवेकवसेन विविच्चित्वा, विना हुत्वा।

इदानि किञ्चा पि लोकियज्झानं पि न विना पटिपदाय इज्झति, एवं सन्ते पि इध सुद्धिकनयं पहाय लोकुत्तरज्झानं पटिपदाय सद्धिं येव गरुं कत्वा देसेतुकामताय **दुक्खापटिपदं दन्धाभिञ्ञं** ति [ध० ७४] आदिमाह। तत्थ यो आदितो किलेसे विक्खम्भेन्तो दुक्खेन ससंखारेन सम्पयोगेन किलमन्तो विक्खम्भेति तस्स दुक्खापटिपदा; यो पन विक्खम्भितकिलेसो विपस्सनापरिवासं वसन्तो चिरेन मग्गपातुभावं पापुणाति तस्स दन्धाभिञ्ञा होति। इति यो कोचि वारो दुक्खापटिपदा-दन्धाभिञ्ञो नाम कतो। कतमं पन वारं रोचेसुं ति ? यत्थ सकिं विक्खम्भिता किलेसा समुदाचरित्वा दुतियं पि विक्खम्भिता पुन समुदाचरन्ति, ततियं विक्खम्भिते पन तथा विक्खम्भिते व कत्वा मग्गेन समुग्घातं पापेति, इमं वारं रोचेसुं। इमस्स वारस्स दुक्खापटिपदा दन्धाभिञ्ञा ति नामं कतं।

एत्तकेन पन न पाकटं होति। तस्मा एवमेत्थ-आदितो पट्ठाय विभावना वेदितब्बा—यो हि चत्तारि महाभूतानि परिग्गहेत्वा उपादारूपं परिगण्हाति, अरूपं

इधा ति भूमिया ति[1] पदे। तं ति सामञ्ञफलं। ते धम्मा [१३२-म०] ते सम्पयुत्तधम्मा। एत्थ सामञ्ञफले भवन्ति इति भूमि। सयम्पि सामञ्ञफलं भवति।

लोकियझानम्पि पटिपदं विना न इज्झति, एवं सन्ते पि सुद्धिकनयो वुत्तो। कस्मा इध सुद्धिकनयं पहाय मिस्सकनयो ति आह—किञ्चापीति आदि। लोकियझानम्पीति अपिसद्दो लोकुत्तरं[2] अपेक्खति। एवं ति अस्मिं[3] झाने[3]। इध लोकुत्तरे। तत्था ति दुक्खापटिपदं (१५९–सी०) आदिवचने विनिच्छयो वेदितब्बो। विक्खम्भिता किलेसा येन सो विक्खम्भितकिलेसो। विपस्सनापरिवासं वसन्तो ति विपस्सनं करोन्तो ति अधिप्पायो। नामं आचरियेहि कतं यस्स वारस्स सो नामकतो। अथवा यो कोचि वारो दुक्खापटिपदा दन्धाभिञ्ञो नाम आचरियेहि कतो। कतरं पन वारं आचरिया रोचेसुं इति पुच्छा। यत्था ति यस्मिं वारे पापेतीति पदे आधारो। समुदाचरित्वा ति पवत्तित्वा।

एत्तकेन पन वुत्तवचनेन तं नामं न पाकटं होति। एत्था ति दुक्खापटिपदं ति आदि-

---

१. भूमिद्धिया–सी०। २. ०झानं–सी०। ३-३. असिज्झने–सी०।

परिग्गण्हाति, 'रूपारूपं' पन परिग्गण्हन्तो दुक्खेन कसिरेन किलमन्तो परिग्गहेतुं सक्कोति, तस्स दुक्खापटिपदा नाम होति। परिग्गहितरूपारूपस्स पन विपस्सनापरिवासे मग्गपातुभावदन्धताय दन्धाभिञ्ञा नाम होति। यो पि रूपारूपं परिग्गहेत्वा 'नामरूपं' ववत्थपेन्तो दुक्खेन कसिरेन किलमन्तो ववत्थापेति, ववत्थापिते च नामरूपे विपस्सनापरिवासं वसन्तो चिरेन मग्गं उप्पादेतुं सक्कोति, तस्सा पि दुक्खापटिपदा दन्धाभिञ्ञा नाम होति। अपरो नामरूपं ववत्थपेत्वा 'पच्चये' परिग्गण्हन्तो दुक्खेन कसिरेन किलमन्तो परिग्गण्हाति, पच्चये च परिग्गहेत्वा विपस्सनापरिवासं वसन्तो चिरेन मग्गं उप्पादेति, एवं पि दुक्खापटिपदा दन्धाभिञ्ञा नाम होति। अपरो पच्चये पि परिग्गहेत्वा 'लक्खणानि' पटिविज्झन्तो दुक्खेन कसिरेन किलमन्तो पटिविज्झति, पटिविद्धलक्खणो च विपस्सनापरिवासं वसन्तो चिरेन मग्गं उप्पादेति, एवं पि दुक्खापटिपदा दन्धाभिञ्ञा नाम होति। अपरो लक्खणानि पटिविज्झित्वा विपस्सनाञाणे तिक्खे सूरे पसन्ने च वहन्तो उप्पन्नं 'विपस्सनानिकन्ति' परियादियमानो दुक्खेन कसिरेन किलमन्तो परियादियति, निकन्ति च परियादियित्वा विपस्सनापरिवासं वसन्तो चिरेन मग्गं उप्पादेति, एवं पि दुक्खापटिपदा दन्धाभिञ्ञा नाम होति। इमं वारं रोचेसुं। इमस्स वारस्स एतं नाम कतं। इमिना व उपायेन परतो तिस्सो पटिपदा वेदितब्बा।

फस्सो होती [ध० ७४] ति आदीसु अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं, सम्मावाचा, सम्माकम्मन्तो, सम्मा-आजीवो ति चत्तारि पदानि अधिकानि। निद्देसवारे च वितक्कादिनिद्देसेसु 'मग्गङ्गं' [ध० ७५] ति आदीनि पदानि अधिकानि। सेसं सब्बं हेट्ठा [§§२-५७] वुत्तसदिसमेव। भुम्मन्तरवसेन पन लोकुत्तरता व इध विसेसो। तत्थ अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं ति 'अनमतग्गे संसारवट्टे अनञ्ञातं अमतपदं चतुसच्चधम्ममेव जानिस्सामो' ति पटिपन्नस्स इमिना पुब्बभागेन उप्पन्नं इन्द्रियं। लक्खणादीनि पनस्स हेट्ठा पञ्चिन्द्रिये वुत्तनयेनेव वेदितब्बानि।

सुन्दरा पसत्था वा वाचा **सम्मावाचा** [ध० ७४]। वचीदुच्चरितसमुग्घातिकाय मिच्छावाचाविरतिया एतं अधिवचनं। सा परिग्गहलक्खणा विरमणरसा मिच्छावाचापहानपच्चुपट्ठाना। सुन्दरो पसत्थो वा कम्मन्तो **सम्माकम्मन्तो**। मिच्छाकम्मन्तसमुच्छेदिकाय पाणातिपातादिविरतिया एतं नामं। सो समुट्ठानलक्खणो विरमणरसो मिच्छाकम्मन्तप्पहानपच्चुपट्ठानो। सुन्दरो पसत्थो वा आजीवो **सम्मा-**

वचने। यो हीति आदि वित्थारो।

तत्थ[1] फस्सो ति आदि पदेसु, निद्धारणं। अस्सा ति अनञ्ञातञ्ञ....प०...।

ञायेन युत्तिया आजीवस्स पवत्तिरसो किच्चं अस्सा ति ञायाजीवपवत्तिरसो। एतासु

१. तत्था ति–सी०।

आजीवो। मिच्छाजीवविरतिया एतं अधिवचनं। सो वोदानलक्खणो ञायाजीवप्पवत्तिरसो मिच्छाजीवप्पहानपच्चुपट्ठानो। अपि च हेट्ठा विरतित्तये वुत्तवसेन पेत्थ लक्खणादीनि वेदितब्बानि। इति इमेसं तिण्णं धम्मानं वसेन हेट्ठा वुत्तं मग्गपञ्चकं इध मग्गट्ठकं वेदितब्बं। ये-वा-पनकेसु च इमेसं अभावो। तथा करुणा-मुदितानं। इमे हि तयो धम्मा इध पालियं आगतत्ता व ये-वा-पनकेसु न गहिता। करुणामुदिता पन सत्तारम्मणा, इमे धम्मा निब्बानारम्मणा ति ता पेत्थ न गहिता। अयं ताव उद्देसवारे विसेसत्थो।

निद्देसवारे पन **मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं** [ध०७५] ति एत्थ ताव मग्गस्स अङ्गं ति मग्गङ्गं; मग्गकोट्ठासो ति अत्थो। यथा पन अरञ्ञे परियापन्नं अरञ्ञपरियापन्नं नाम होति, एवं मग्गे परियापन्नं मग्गपरियापन्नं। मग्गसन्निस्सितं ति अत्थो। **पीतिसम्बोज्झंगो** [ध० ७५] ति एत्थ पीति येव सम्बोज्झंगो पीतिसम्बोज्झंगो। तत्थ बोधिया बोधिस्स वा अङ्गो ति बोज्झंगो। इदं वुत्तं होति—या'यं धम्मसामग्गी याय लोकुत्तरमग्गक्खणे उप्पज्जमानाय लीन-उद्धच्च-पतिट्ठानायूहन-कामसुख'त्तकिलमथानुयोग-उच्छेदसस्सताभिनिवेसादीनं अनेकेसं उपद्दवानं पटिपक्खभूताय सति-धम्मविचय-विरिय-पीति-पस्सद्धि-समाधि-उपेक्खासंखाताय धम्मसामग्गिया अरियसावको बुज्झती ति कत्वा बोधी ति वुच्चति। बुज्झती ति किलेससन्ताननिद्दाय उट्ठहति, चत्तारि वा अरियसच्चानि पटिविज्झति, निब्बानमेव वा सच्छिकरोति। तस्सा धम्मसामग्गिसंखाताय बोधिया अंगो ति पि बोज्झंगो, झानंग-मग्गंगादीनि विय। यो पेस यथावुत्तप्पकाराय एताय धम्मसामग्गिया बुज्झती ति कत्वा अरियसावको बोधी ति वुच्चति, तस्स बोधिस्स अंगो ति पि बोज्झंगो; सेनंग-रथंगादयो विय। तेनाहु अट्ठकथाचरिया—"बुज्झनकस्स पुग्गलस्स अंगानी ति बोज्झंगा" [ ] ति।

अपि च "बोज्झंगा ति केनट्ठेन बोज्झंगा? बोधाय संवत्तन्ती ति बोज्झंगा, बुज्झन्ती ति बोज्झंगा, अनुबुज्झन्ती ति बोज्झंगा, पटिबुज्झन्ती ति बोज्झंगा, सम्बुज्झन्ती ति सम्बोज्झंगा" [पटि०३६३] ति इमिना पटिसम्भिदानयेना पि बोज्झं-

---

सम्मावाचादीसु। इमेसं ति सम्मावाचादीनं। अभावहेतुं ञापेन्तो आह—इमे हीति आदि। ता पेत्था ति ता पि करुणा मुदिता एत्थ ये-वा-पनकेसु न गहिता।

मग्गङ्ग ···प०····च्छयो वेदितब्बो ति योजना। तत्था पी ति सम्बोज्झङ्गो ति वचने। याय धम्मसामग्गिया अरिय····प०··· कत्वा करणहेतु। कामसुखञ्च अत्तकिलमथो च कामसुखत्तकिलमथा। कामसुखत्तकिलमथानं अनुयोगो काम····प०····योगो। उच्छेदो च सस्सतो च उच्छेदसस्सतो इति अभिनिवेसो उच्छेद····प०····भिनिवेसो। लीनञ्च उद्धच्चञ्च पतिट्ठानं च आयूहनञ्च कामसुखत्तकिलमथानुयोगो च उच्छेदसस्सताभिनिवेसो च लीनुद्धच्च···प०···· निवेसा। ते आदयो येसं ते लीनुद्धच्च····प०····वेसादयो। यो पेसो ति यो पि एसो अरियसावको ति सम्बन्धो।

गत्थो वेदितब्बो। पसत्थो सुन्दरो वा बोज्झंगो सम्बोज्झंगो। एवं पीति येव सम्बोज्झंगो पीतिसम्बोज्झंगो ति। चित्तेकग्गतानिद्देसादीसु [ध० ७५-७७] पि इमिना व नयेन अत्थो वेदितब्बो।

तेसं धम्मानं [ध० ७७] ति ये तस्मिं समये पटिवेधं गच्छन्ति चतुसच्चधम्मा, तेसं धम्मानं। **अञ्ञातानं** ति किञ्चा पि पठममग्गेन ते धम्मा ञाता नाम होन्ति, यथा पन पकतिया अनागतपुब्बं विहारं आगन्त्वा विहारमज्झे ठितो पि पुग्गलो पकतिया अनागतभावं उपादाय 'अनागतपुब्बं ठानं आगतो'म्ही' ति वदति, यथा च पकतिया अ-पिलन्धपुब्बं मालं पिलन्धित्वा, अनिवत्थपुब्बं वत्थं निवासेत्वा, अभुत्तपुब्बं भुञ्जित्वा, पकतिया अभुत्तभावं उपादाय अभुत्तपुब्बं भोजनं भुत्तो'म्ही ति वदति, एवमिधा पि यस्मा पकतिया इमिना पुग्गलेन इमे धम्मा न ञातपुब्बा तस्मा अञ्ञातानं ति वुत्तं। अदिट्ठादीसु पि एसेव नयो। तत्थ **अदिट्ठानं** ति इतो पुब्बे पञ्ञाचक्खुना अदिट्ठानं। **अप्पत्तानं** ति अधिगमनवसेन अप्पत्तानं। **अविदितानं** ति ञाणेन अपाकटकतानं। **असच्छिकतानं** ति अपच्चक्खकतानं। **सच्छिकिरियाया** ति पच्चक्खकरणत्थं। यथा च इमिना पदेन, एवं सेसेहि पि सद्धिं अञ्ञातानं ञाणाय, अदिट्ठानं दस्सनाय, अप्पत्तानं पत्तिया, अविदितानं वेदाया ति योजना कातब्बा।

चतूहि वचीदुच्चरितेही [ध० ७८] ति आदीसु वची ति वचीविञ्ञत्ति वेदितब्बा। तिण्णं दोसानं येन केनचि दुट्ठानि चरितानी ति दुच्चरितानि। वचीतो पवत्तानि दुच्चरितानि वचीदुच्चरितानि, वचिया वा निप्फादितानि दुच्चरितानि वचीदुच्चरितानि। तेहि वचीदुच्चरितेहि। आरका रमती ति **आरति**। विना तेहि रमती ति **विरति**। ततो ततो पटिनिवत्ता व हुत्वा तेहि विना रमती ति **पटिविरति**। उपसग्गवसेन वा पदं वड्ढितं। सब्बमिदं ओरमणभावस्सेव अधिवचनं। वेरं मनति, विनासेती ति **वेरमणी**। इदं पि ओरमणस्सेव वेवचनं। याय पन चेतनाय मुसावादादीनि भासमानो करोति नाम, अयं लोकुत्तरमग्गविरति। उप्पज्जित्वा तं किरियं कातुं न देति, किरियापथं पच्छिन्दती ति **अकिरिया**। तथा तं करणं कातुं न देति, करणपथं पच्छिन्दती ति **अकरणं**। याय च चेतनाय चतुब्बिधं वचीदुच्चरितं भासमानो अज्झापज्जति नाम, अयं उप्पज्जित्वा तथा अज्झापज्जितुं न देती ति **अनज्झापत्ति**।

इधा पी ति पठममग्गाधिकारे, वुत्तं ति पदे आधारो। तत्था ति अदिट्ठानं ति आदीसु। इतो ति पठममग्गतो। इमिना पदेना ति असच्छिकतानं ति पदेन सच्छिकिरियाया ति योजना कता[1]। सेसेहि पी ति अञ्ञातानं ति आदीहि।

तिण्णं दोसानं ति रागदोसमोहानं, निद्धारणे छट्ठी। विना तेहीति वचीदुच्चरितेहि विना[2]।

---

१. नत्थि–सी०। २. ०अयं यस्मा वादा–सी०।

वेला अनतिक्कमो ति एत्थ "ताय वेलाया" [सं० १.७५] ति आदीसु ताव कालो वेला ति आगतो। "उरुवेलायं विहरती" [सं० १.१०२] ति एत्थ रासि। "ठितधम्मो वेलं नातिवत्तती" [ ] ति एत्थ सीमा। इधा पि सीमा व। अनतिक्कमनियट्ठेन हि चत्तारि वचीसुचरितानि वेला ति अधिप्पेतानि। इति याय चेतनाय चत्तारि वचीदुच्चरितानि भासमानो वेलं अतिक्कमति नाम, अयं उप्पज्जित्वा तं वेलं अतिक्कमितुं न देती ति वेला, अनतिक्कमो ति वुत्ता। वेलायती ति वा वेला, चेलयति विद्धंसेती ति अत्थो। किं वेलायति ? चतुब्बिधं वचीदुच्चरितं। इति वेलयनतो 'वेला'। पुरिसस्स पन हितसुखं अनतिक्कमित्वा पवत्तती ति 'अनतिक्कमो'। एवमेत्थ पदद्वयवसेना पि अत्थो वेदितब्बो। सेतुं हनती ति **सेतुघातो**; चतुन्नं वचीदुच्चरितानं पदघातो पच्चयघातो ति अत्थो। पच्चयो हि इध सेतू ति अधिप्पेतो। तत्रायं वचनत्थो—रागादिको चतुन्नं वचीदुच्चरितानं पच्चयो वट्टस्मि पुग्गलं सिनोति बन्धती ति सेतु। सेतुस्स घातो सेतुघातो। वचीदुच्चरितपच्चयसमुग्घातिकाय विरतिया एतं अधिवचनं। अयं पन सम्मावाचासंखाता विरति पुब्बभागे नानाचित्तेसु लब्भति। अञ्ञेनेव हि चित्तेन मुसावादा विरमति, अञ्ञेन पेसुञ्ञादीहि। लोकुत्तरमग्गक्खणे पन एकचित्तस्मिं येव लब्भति। चतुब्बिधाय हि वचीदुच्चरितचेतनाय पदच्छेदं कुरुमाना मग्गङ्गं पूरयमाना एका व विरति उप्पज्जति।

कायदुच्चरितेही [ध० ७८] ति कायतो पवत्तेहि कायेन वा निप्फादितेहि पाणातिपातादीहि दुच्चरितेहि। सेसं पुरिमनयेनेव वेदितब्बं। अयं पि सम्माकम्मन्तसंखाता विरति पुब्बभागे नानाचित्तेसु लब्भति। अञ्ञेनेव हि चित्तेन पाणातिपाता विरमति, अञ्ञेन अदिन्नादान-मिच्छाचारेहि। लोकुत्तरमग्गक्खणे पन एकचित्तस्मिं येव लब्भति। तिविधाय हि कायदुच्चरितचेतनाय पदच्छेदं कुरुमाना मग्गङ्गं पूरयमाना एका व विरति उप्पज्जति।

सम्मा-आजीवनिद्देसे **अकिरिया** [ध० ७८] ति आदीसु याय चेतनाय मिच्छाजीवं आजीवमानो किरियं करोति नाम, अयं उप्पज्जित्वा तं किरियं कातुं न देती

एवमेत्था ति वेलायतीति आदिना। एत्थ [१३३-म०] वेला-अनतिक्कमो ति वचने। पदद्वयेना ति वेला अनतिक्कमो ति पदद्वयवसेन। अपिसद्दो पुब्बे वुत्तं एकपदभूतं वेला अनतिक्कमो ति पदं अपेक्खति। तत्रा०(१६०-सी०) ति सेतुघातो ति वचने। पदच्छेदं ति हेतुच्छेदं।

आजीवो[1] च····प०····अयं आजीवो वाचाकम्मन्ततो भगवता नीहरित्वा दस्सितो ति आचरिया वदन्ति[1]। एवं[2] नीहरित्वा दस्सने। इतिसद्दो[3] समापनो[3]।

१–१. अयं पाठो सी० पोत्थके नत्थि। २. एवं ति–सी०। ३–३. सी० पोत्थके नत्थि।

ति अकिरिया ति। इमिना नयेन योजना वेदितब्बा। आजीवो च नामेस पाटियेक्को नत्थि, वाचाकम्मन्तेसु गहितेसु गहितो व होति, तप्पक्खिकत्ता। धुवपटिसेवनवसेन पनायं ततो नीहरित्वा दस्सितो ति। एवं सन्ते सम्मा-आजीवो सकिच्चको न होति, अट्ठ मग्गङ्गानि न परिपूरेन्ति, तस्मा सम्मा-आजीवो सकिच्चको कातब्बो, अट्ठ मग्गङ्गानि परिपूरेतब्बानी ति।

तत्रायं नयो—आजीवो नाम भिज्जमानो कायवचीद्वारेसु येव भिज्जति। मनोद्वारे आजीवभेदो नाम नत्थि। पूरयमानो पि तस्मिं येव द्वारद्वये पूरति। मनोद्वारे आजीवपूरणं नाम नत्थि। कायद्वारे पन वीतिक्कमो आजीवहेतुको पि अत्थि न आजीवहेतुको पि। तथा वचीद्वारे। तत्थ यं राज-राजमहामत्ता खिड्डापसुता सूरभावं दस्सेन्ता मिगवधं वा पन्थदूहनं वा परदारवीतिक्कमं वा करोन्ति, इदं अकुसलं कायकम्मं नाम। ततो विरति पि 'सम्माकम्मन्तो' नाम। यं पन न आजीवहेतुकं चतुब्बिधं वचीदुच्चरितं भासन्ति, इदं अकुसलं वचीकम्मं नाम। ततो विरति पि 'सम्मावाचा' नाम। यं पन आजीवहेतु नेसादमच्छबन्धादयो पाणं हनन्ति, अदिन्नं आदियन्ति, मिच्छाचारं चरन्ति, अयं मिच्छाजीवो नाम। ततो विरति 'सम्मा-आजीवो' नाम। यं पि लञ्चं गहेत्वा मुसा भणन्ति, पेसुञ्ञ-फरुस-सम्फप्पलापे पवत्तेन्ति, अयं पि मिच्छाजीवो नाम। ततो विरति सम्मा-आजीवो नाम।

महासीवत्थेरो पनाह—'कायवचीद्वारेसु वीतिक्कमो आजीवहेतुको वा होतु नो वा आजीवहेतुको, अकुसलं कायकम्मं वचीकम्मं त्वेव संखं गच्छति। ततो विरति पि सम्माकम्मन्तो सम्मावाचा त्वेव वुच्चती' ति। आजीवो कुहिं ति वुत्ते पन 'तीणि कुहनवत्थूनि निस्साय चत्तारो पच्चये उप्पादेत्वा तेसं परिभोगो' ति आह। अयं पन कोटिप्पत्तो मिच्छाजीवो। ततो विरति सम्मा-आजीवो नाम। अयं पि सम्मा-आजीवो पुब्बभागे नानाचित्तेसु लब्भति, अञ्ञेनेव हि चित्तेन कायद्वारवीतिक्कमा विरमति, अञ्ञेन वचीद्वारवीतिक्कमा। लोकुत्तरमग्गक्खणे पन एकचित्तस्मिं येव लब्भति। कायवचीद्वारेसु हि सत्तकम्मपथवसेन उप्पन्नाय मिच्छाजीवसंखाताय दुस्सील्यचेतनाय पदच्छेदं कुरुमाना मग्गङ्गं पूरयमाना एका व विरति उप्पज्जती ति। अयं निद्देसवारे विसेसो।

तत्रा ति सकिच्चभावकरणे अट्ठमग्गङ्गपूरणे[1] च। आजीवो हेतु यस्स सो आजीवहेतुको। तत्था ति आजीवहेतु-अनाजीवहेतुके वीतिक्कमे[2], निद्धारणं। यं ति[3] पदं करोन्तीति पदे क्रियापरामसनं[3]। यं पना ति पदं हनन्तीति आदिपदेसु क्रियापरामसनं।

तेसं चतुपच्चयानं परिभोगो आजीवो इति आह महासीवत्थेरो ति योजना।

---

१. अट्ठमग्गपूरणो—सी०। २. अतिक्कमे—सी०। ३–३. यं ति पदं सूरभावं ति आदिपदस्स विसेसनं—सी०।

यं पनेतं इन्द्रियेसु अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं वड्ढितं, मग्गङ्गेसु च सम्मावाचादीनि, तेसं वसेन संगहवारे "नविन्द्रियानि, अट्ठंगिको मग्गो" [ध० ८४] ति वुत्तं। सुञ्ञतवारो पाकतिको येवा ति। अयं ताव सुद्धिकपटिपदाय विसेसो।

इतो परं सुद्धिकसुञ्ञतं-सुञ्ञतपटिपदा-सुद्धिक-अप्पणिहितं-अप्पणिहितपटिपदा ति अयं देसनाभेदो होति। तत्थ **सुञ्ञतं** [ध०८६] ति लोकुत्तरमग्गस्स नामं। सो हि आगमनतो सगुणतो आरम्मणतो ति तीहि कारणेहि नामं लभति। कथं? इध भिक्खु अनत्ततो अभिनिविसित्वा अनत्ततो संखारे पस्सति। यस्मा पन अनत्ततो दिट्ठमत्तेनेव मग्गवुट्ठानं नाम न होति, अनिच्चतो पि दुक्खतो पि दट्ठुमेव वट्टति, तस्मा 'अनिच्चं दुक्खं अनत्ता' ति तिविधं अनुपस्सनं आरोपेत्वा सम्मसन्तो चरति। वुट्ठानगामिनी-विपस्सना पन'स्स तेभूमके पि संखारे सुञ्ञतो व पस्सति। अयं विपस्सना सुञ्ञता नाम होति।

सा आगमनीयट्ठाने ठत्वा अत्तनो मग्गस्स 'सुञ्ञतं' ति नामं देति। एवं मग्गो 'आगमनतो' सुञ्ञतनामं लभति। यस्मा पन सो रागादीहि सुञ्ञो तस्मा 'सगुणेनेव' सुञ्ञतनामं लभति। निब्बानं पि रागादीहि सुञ्ञत्ता सुञ्ञतं ति वुच्चति। तं आरम्मणं कत्वा उप्पन्नत्ता मग्गो 'आरम्मणतो' सुञ्ञतनामं लभति। तत्थ सुत्तन्तिक-परियायेन सगुणतो पि आरम्मणतो पि नामं लभति। परियायदेसना हेसा। अभिधम्म-कथा पन निप्परियायदेसना। तस्मा इध सगुणतो वा आरम्मणतो वा नामं न लभति, आगमनतो व लभति। आगमनमेव हि धुरं। तं दुविधं होति—विपस्सनागमनं मग्गागमनं ति। तत्थ मग्गस्स आगतट्ठाने विपस्सनागमनं धुरं, फलस्स आगतट्ठाने मग्गागमनं धुरं। इध मग्गस्स आगतत्ता विपस्सनागमनमेव धुरं जातं।

सम्मावाचादीनि वड्ढितानि। तेसं ति अनञ्जातञ्ञस्सामीतिन्द्रियानं[1]।

तत्थ[2] सुञ्ञतादीसु, निद्धारणं।

आगच्छति एताय[3] वुट्ठानगामिनीविपस्सनाया ति[4] आगमनं। सस्स अत्तनो गुणो सगुणो। कथं ति आदि वित्थारो। मग्गवुट्ठानं ति मग्गस्स पवत्तनं। बहिद्धा निमित्तभूता वत्थुतो चेव वुट्ठातीति वुट्ठानं, मग्गो। उपुब्ब 'ठा'—गतिनिवत्तिम्हि, यु, वकारागमो। वुट्ठानं गच्छती ति वुट्ठानगामिनी। मग्गेन सद्धिं घटियतीति अधिप्पायो। वुट्ठानगामिनी च सा विपस्सना चा ति वुट्ठानगामिनीविपस्सना, अनुलोमञाणसङ्गहितं सङ्खारुपेक्खाञाणं। अस्सा ति भिक्खुस्स।

आगच्छति एतेना ति आगमनीयं। आगमनीयं एवट्ठानं[5] आगमनीयट्ठानं[6]। तत्था

---

१. ०पदानं सी०। २. तत्था ति–सी०। ३. मग्गो एताय–सी०। ४. वुट्ठानगा-मिनिया विपस्स०–सी०। ५. उपट्ठानं–सी०। ६. आगमनीयं-उपट्ठानं–सी०।

अप्पणिहितं [ध० ८८] ति, एत्था पि अप्पणिहितं ति मग्गस्सेतं नामं। इदं पि नामं मग्गो तीहेव कारणेहि लभति। कथं? इध भिक्खु आदितो व दुक्खतो अभिनिविसित्वा दुक्खतो संखारे पस्सति। यस्मा पन दुक्खतो दिट्ठमत्तेनेव मग्ग-वुट्ठानं नाम न होति, अनिच्चतो पि अनत्ततो पि दट्ठुमेव वट्टति, तस्मा 'अनिच्चं दुक्खं अनत्ता' ति तिविधं अनुपस्सनं आरोपेत्वा सम्मसन्तो चरति। वुट्ठानगामिनी विपस्सना पन'स्स तेभूमकेसु संखारेसु पणिधिं सोसेत्वा परियादियित्वा विस्सज्जेति। अयं विपस्सना अप्पणिहिता नाम होति।

सा आगमनियट्ठाने ठत्वा अत्तनो मग्गस्स 'अप्पणिहितं' ति नामं देति। एवं मग्गो 'आगमनतो' अप्पणिहितनामं लभति। यस्मा पन तत्थ रागदोसमोहपणिधयो नत्थि, तस्मा 'सगुणेनेव' अप्पणिहितं नामं लभति। निब्बानं पि तेसं पणिधीनं अभावा अप्पणिहितं ति वुच्चति। तं आरम्मणं कत्वा उप्पन्नत्ता मग्गो अप्पणिहितं ति नामं लभति। तत्थ सुत्तन्तिकपरियायेन सगुणतो पि आरम्मणतो पि नामं लभति। परि-यायदेसना हेसा। अभिधम्मकथा पन निप्परियाय-देसना। तस्मा इध सगुणतो वा आरम्मणतो वा नामं न लभति, आगमनतो व लभति। आगमनमेव हि धुरं। तं दुविधं होति—विपस्सनागमनं मग्गागमनं ति। तत्थ मग्गस्स आगतट्ठाने विपस्सना-गमनं धुरं, फलस्स आगतट्ठाने मग्गागमनं धुरं। इध मग्गस्स आगत्तता विपस्सना-गमनमेव धुरं जातं।

ननु च सुञ्ञतो अनिमित्तो अप्पणिहितो ति तीणि मग्गस्स नामानि? यथाह— "तयो'मे भिक्खवे, विमोक्खा—सुञ्ञतो विमोक्खो, अनिमित्तो विमोक्खो, अप्पणिहितो विमोक्खो" [पटि० २७३] ति। तेसु इध द्वे मग्गे गहेत्वा अनिमित्तो कस्मा न गहितो ति? आगमनाभावतो। अनिमित्तविपस्सना हि सयं आगमनियट्ठाने ठत्वा अत्तनो मग्गस्स नामं दातुं न सक्कोति। सम्मासम्बुद्धो पन अत्तनो पुत्तस्स राहुलत्थेरस्स

अनिमित्तं च भावेहि मानानुसयमुज्जह।
ततो मानाभिसमया उपसन्तो चरिस्ससी [सु० ३१८ पिट्ठे] ति॥

ति आगमने[1]। तत्था ति तस्मिं आगमनीयद्वये[1], निद्धारणं। इध[2] अभिधम्मे।

पणिधिं ति तण्हं।

तत्था ति मग्गे।

तेसू ति तीसु मग्गेसु। इधा ति अभिधम्मे। आगमनाभावतो आगमनस्स अभावतो अनिमित्तो[3] न गहितो। कस्मा आगमनं नत्थीति आह—अनिमित्तविपस्सना हीति आदि। किं पन भगवा अनिमित्तविपस्सनं न कथेसीति आह—सम्मासम्बुद्धो हीति[4] आदि। राहुलत्थेरस्सा

१-१. आगमनीय-उपट्ठानादीसु-सी०। २. इधा ति-सी०। ३. निमित्तो-सी०। ४. ति-सी०।

अनिमित्तविपस्सनं कथेसि। विपस्सना हि निच्चनिमित्तं धुवनिमित्तं सुखनिमित्तं अत्तनिमित्तं च उग्घाटेति। तस्मा अनिमित्ता ति कथिता। सा पि किञ्चा पि तं निमित्तं उग्घाटेति, सयं पन निमित्तधम्मेसु चरती ति सनिमित्ता व होति। तस्मा सयं आगमनियट्ठाने ठत्वा अत्तनो मग्गस्स नामं दातुं न सक्कोति।

अपरो नयो—**अभिधम्मो** नाम परमत्थदेसना। अनिमित्तमग्गस्स च परमत्थतो हेतुवेकल्लमेव होति। कथं ? अनिच्चानुपस्सनाय हि वसेन अनिमित्तविमोक्खो कथितो। तेनेव विमोक्खेन सद्धिन्द्रियं अधिमत्तं होति। तं अरियमग्गे एकङ्गं पि न होति, अमग्गङ्गत्ता अत्तनो मग्गस्स परमत्थतो व नामं दातुं न सक्कोति। इतरेसु पन द्वीसु अनत्तानुपस्सनाय ताव वसेनेव सुञ्ञतो विमोक्खो, दुक्खानुपस्सनाय वसेन अप्पणिहितो विमोक्खो कथितो। तेसु सुञ्ञतविमोक्खेन पञ्ञिन्द्रियं अधिमत्तं होति, अप्पणिहितविमोक्खेन समाधिन्द्रियं। तानि अरियमग्गस्स अङ्गत्ता अत्तनो मग्गस्स परमत्थतो नामं दातुं सक्कोन्ति। मग्गारम्मणत्तिके पि हि मग्गाधिपतिधम्मविभजने छन्दचित्तानं अधिपतिकाले तेसं धम्मानं अमग्गङ्गत्ता च मग्गाधिपतिभावो न वुत्तो। एवं-सम्पदमिदं वेदितब्बं ति। अयमेत्थ **अट्ठकथामुत्तको** एकस्साचरियस्स मतिविनिच्छयो। एवं सब्बथा पि अनिमित्तविपस्सना सयं आगमनियट्ठाने ठत्वा अत्तनो मग्गस्स नामं दातुं न सक्कोती ति अनिमित्तमग्गो न गहितो।

ति पदं कथेसीति[१] पदे सम्पदानं। राहुल, त्वं अनिमित्तञ्च अनिमित्तविपस्सनं भावेहि वड्ढेहि, मानानुसयं उज्जह पजह,[२] ततो मानाभिसमया तस्मा मानस्स[३] पहाना[३] उपसन्तो किलेसेहि उपसन्तो चरिस्ससि फलसुखेन विहरिस्ससि। इति अनिमित्तविपस्सनं अनिच्चानुपस्सनं भावेहि वड्ढेहि, कथेसि सुत्तनिपाते ति सम्बन्धो। कस्मा सा (१६१–सी०) विपस्सना अनिमित्ता नामा ति आह–विपस्सना हीति आदि। निच्चनिमित्तं ति [१३४-म०] आदि[४] निच्चसङ्खारं उग्घाटेतीति सङ्खारा निच्चा धुवा ति आदीनं गहणे[५] हेतुभावेन[५] उग्घाटेति; यदि सा अनिमित्ता नाम कस्मा मग्गस्स नामं न देती ति[६] आगमनाभावतो[७] आगमनस्स अभावतो अनिमित्ता[७]। हेसा ति[८] आदि निमित्तधम्मेसु चरतीति सपरिग्गहेसु खन्धेसु चरति पवत्तति, इति तस्मा सनिमित्ता व निमित्तसहिता एव होति।

अट्ठकथामुत्तकं एकस्स आचरियस्स मतिविनिच्छयं दस्सेन्तो आह–अपरो नयो ति आदि। अधिमत्तं ति अधिकं। तं ति सद्धिन्द्रियं, एकङ्गं पी ति अपिसद्दो सम्भावने। द्वीसू ति सुञ्ञत-अप्पणिहितविमोक्खेसु। तेसू ति सुञ्ञत-अप्पणिहित-विमोक्खेसु। तानीति पञ्ञिन्द्रियसमाधिन्द्रियानि सद्धिन्द्रियमग्गस्स[९] नाम दानभावं[१०] पाळियं वुत्तवचनेन दळ्हं करोन्तो आह–

---

१. कथेतीति–सी०। २. नत्थि–सी०। ३–३. मानपहाना–सी०। ४. नत्थि–सी०। ५–५. अग्गहणभावेन–सी०। ६. देतीति आह–सी०। ७–७. नत्थि–सी० पोत्थके एसो पाठो। ८. सा ति–सी०। ९. सद्धिन्द्रियस्स मग्गभावं–सी०। १०. लभमानभावं–सी०।

केचि पन 'अनिमित्तमग्गो आगमनतो नामं अलभन्तो पि सुत्तन्तपरियायेन सगुणतो च आरम्मणतो च नामं लभती' ति आहंसु। ते इदं वत्वा पटिक्खित्ता— 'अनिमित्तमग्गे सगुणतो च आरम्मणतो च नामं लभन्ते सुञ्ञत-अप्पणिहितमग्गा पि सगुणतो येव आरम्मणतो येव च इदं नामं लभेय्युं। न पन लभन्ति। किं-कारणा? अयं हि मग्गो नाम द्वीहि कारणेहि नामं लभति—सरसतो च पच्चनीकतो च; सभावतो च पटिपक्खतो चा ति अत्थो। तत्थ सुञ्ञत-अप्पणिहितमग्गा सरसतो पि पच्चनीकतो पि नामं लभन्ति। सुञ्ञत-अप्पणिहितमग्गा हि रागादीहि सुञ्ञा, रागप्पणिधि-आदीहि च अप्पणिहिता ति एवं 'सरसतो' पि नामं लभन्ति। सुञ्ञतो च अत्ताभिनिवेसस्स पटिपक्खो, अप्पणिहितो पणिधिस्सा ति एवं 'पच्चनीकतो' नामं लभन्ति। अनिमित्तमग्गो पन रागादिनिमित्तानं निच्चनिमित्तादीनं च अभावेन सरसतो च नामं लभति, नो पच्चनीकतो। न हि सो संखारनिमित्तारम्मणाय अनिच्चानुपस्सनाय पटिपक्खो। अनिच्चानुपस्सना पन'स्स अनुलोमभावे ठिता ति। एवं सब्बथा पि अभिधम्मपरियायेन अनिमित्तमग्गो नाम नत्थी ति।

सुत्तन्तिकपरियायेन पनेस एवं आहरित्वा दीपितो—यस्मिं हि वारे मग्गवुट्ठानं होति, तीणि लक्खणानि एकावज्जनेन विय आपाथं आगच्छन्ति, तिण्णं च एकतो आपाथगमनं नाम नत्थि। कम्मट्ठानस्स पन विभूतभावदीपनत्थं एतं वुत्तं। आदितो हि यत्थकत्थचि अभिनिवेसो होतु, वुट्ठानगामिनी पन विपस्सना यं यं सम्मसित्वा वुट्ठाति तस्स तस्सेव वसेन आगमनियट्ठाने ठत्वा अत्तनो मग्गस्स नामं देति। कथं? अनिच्चादीसु हि यत्थकत्थचि अभिनिविसित्वा इतरं पि लक्खणद्वयं दट्ठुं वट्टति येव। एवं लक्खणदस्सनमत्तेनेव हि मग्गवुट्ठानं नाम न होति, तस्मा अनिच्चतो अभिनिविट्ठो भिक्खु न केवलं अनिच्चतो व वुट्ठाति, दुक्खतो पि वुट्ठाति, अनत्ततो पि वुट्ठाति एव। दुक्खतो अनत्ततो अभिनिविट्ठे पि एसेव नयो। इति आदितो यत्थकत्थचि अभिनिवेसो होतु, वुट्ठानगामिनी पन विपस्सना यं यं सम्मसित्वा वुट्ठाति तस्स तस्सेव वसेन

मग्गारम्मणत्तिके पी ति आदि। अपिसद्दो कुसलत्तिकं अपेक्खति, तेसं धम्मानं ति छन्दचित्तानं। मग्गो एव अधिपति मग्गाधिपति[1]। मग्गाधिपति[1] इति भावो मग्गाधिपतिभावो। एत्था ति लोकुत्तरझाने।

ते आचरिया। यथा ति सुञ्ञतादिमग्गेसु। अप्पणिहितो पणिधिस्स पटिपक्खो। न हीति आदि दळ्हीकरणं। सो अनिमित्तमग्गो। सङ्खारा एव निमित्तं आरम्मणं एतिस्सा ति सङ्खारनिमित्तारम्मणा। अनिच्चानुपस्सना पन किं भूता ति[2] आह—अनिच्चा ति आदि।

अस्स अनिमित्तमग्गस्स अनुलोमभावे अनुरूपभावे एवं अनिच्चतो वुट्ठहन्तस्स मग्गो अनिमित्तो होतीति आहरित्वा अट्ठकथाचरियेहि एसो अनिमित्तमग्गो दीपितो। यस्मिं हीति आदि वित्थारो। एतं ति तीणि लक्खणानि····प०····आगच्छन्तीति वचनं। आदितो हीति

१-१. नत्थि सी० पोत्थके। २. किं निमित्ता—सी०।

आगमनियट्ठाने ठत्वा अत्तनो मग्गस्स नामं देति। तत्थ अनिच्चतो वुट्ठहन्तस्स मग्गो अनिमित्तो नाम होति, दुक्खतो वुट्ठहन्तस्स अप्पणिहितो, अनत्ततो वुट्ठहन्तस्स सुञ्ञतो ति। एवं सुत्तन्तपरियायेन आहरित्वा दीपितो।

वुट्ठानगामिनी पन विपस्सना किमारम्मणा ति? लक्खणारम्मणा ति। लक्खणं नाम पञ्ञत्तिगहितं, न-वत्तब्बधम्मभूतं। यो पन अनिच्चं दुक्खं अनत्ता ति तीणि लक्खणानि सल्लक्खेति, तस्स पञ्चक्खन्धा कण्ठे बद्धकुणपं विय होन्ति। संखारारम्मण-मेव ञाणं संखारतो वुट्ठाति। यथा हि एको भिक्खु पत्तं किणितुकामो पत्तवाणिजेन पत्तं आभतं दिस्वा हट्ठपहट्ठो गण्हिस्सामी ति चिन्तेत्वा वीमंसमानो तीणि छिद्दानि पस्सेय्य, सो न छिद्देसु निरालयो होति, पत्ते पन निरालयो होति; एवमेव तीणि लक्खणानि सल्लक्खेत्वा संखारेसु निरालयो होति। संखारारम्मणेनेव ञाणेन संखारतो वुट्ठाती ति वेदितब्बं। दुस्सोपमे पि एसेव नयो।

इति भगवा लोकुत्तरज्झानं भाजेन्तो सुद्धिकपटिपदाय चतुक्कनयं पञ्चकनयं ति द्वे पि नये आहरि। तथा सुद्धिकसुञ्ञताय सुञ्ञतपटिपदाय सुद्धिक-अप्पणिहिते अप्पणि-हितपटिपदाया ति। कस्मा एवं आहरी ति? पुग्गल'ज्झासयेन चेव देसनाविलासेन च। तदुभयं पि हेट्ठा वुत्तनयेन वेदितब्बं। एवं लोकुत्तरं झानं भावेती ति एत्थ सुद्धिकपटिपदाय चतुक्कपञ्चकवसेन द्वे नया, तथा सेसेसू ति सब्बेसु पञ्चसु कोट्ठा-सेसु दस नया भाजिता।

पकिण्णककथा

तत्रिदं पकिण्णकं—

अज्झत्तं च बहिद्धा च रूपारूपेसु पञ्चसु।
सत्तट्ठङ्गपरिणामं निमित्तं पटिपदा-पती ति॥

लोकुत्तरमग्गे हि अज्झत्तं अभिनिविसित्वा अज्झत्तं वुट्ठाति, अज्झत्तं अभिनिविसित्वा बहिद्धा वुट्ठाति, बहिद्धा अभिनिविसित्वा बहिद्धा वुट्ठाति, बहिद्धा अभिनिविसित्वा

आदि दळ्हीकरणं। यत्थ कत्थचि अनिच्चादिके। अनिच्चादीसू ति आदि वित्थारो। तत्था ति अनिमित्तमग्गादीसु, निद्धारणं।

किमारम्मणा इति पुच्छा। किं आरम्मणं एतिस्सा ति किमारम्मणा। लक्खणारम्मणा इति विस्सज्जनं। पञ्ञत्तिगतिकं ति पञ्ञत्तीसु अन्तोगधं।

तथा ति द्वे पि नये आहरीति आकड्ढति। कस्मा भगवा एवं आहरि इति पुच्छा। सेसेसू ति सुद्धिकसुञ्ञतादीसु।

पकिण्णककथावण्णना

अज्झत्तञ्च बहिद्धा च[1] रूपारूपेसु पञ्चसु खन्धेसु च अभिनिविसित्वा पुग्गलो वुट्ठाति। सत्तट्ठङ्गपरिणामं सत्त-अट्ठादि-अङ्गानं परिणामो निमित्तं पटिपदा च पति अधिपति चा ति

१. नत्थि—म०।

अज्झत्तं वुट्ठाति। रूपे अभिनिविसित्वा रूपा वुट्ठाति, रूपे अभिनिविसित्वा अरूपा वुट्ठाति। अरूपे अभिनिविसित्वा अरूपा वुट्ठाति, अरूपे अभिनिविसित्वा रूपा वुट्ठाति, एकप्पहारेन पञ्चहि खन्धेहि वुट्ठाति। 'सत्त-अट्ठंगपरिणामं'ति सो पनेस मग्गो अट्ठङ्गिको पि सत्तङ्गिको पि होति। बोज्झंगा पि सत्त वा होन्ति छ वा। झानं पि पञ्चङ्गिकं वा होति चतुरङ्गिकं वा; तिवंगिकं वा दुवंङ्गिकं वा। एवं सत्त-अठ्ठादीनं अंगानं परिणामो वेदितब्बो ति अत्थो। 'निमित्तं पटिपदा-पती' ति निमित्तं ति यतो वुट्ठानं होति; 'पटिपदा-पती'ति पटिपदाय च अधिपतिनो च चलना-चलनं वेदितब्बं।

तत्थ अज्झत्तं अभिनिविसित्वा अज्झत्तं वुट्ठातीति आदीसु ताव इधेकच्चो आदितो व अज्झत्तं पञ्चसु खन्धेसु अभिनिविसति, अभिनिविसित्वा ते अनिच्चादितो पस्सति, यस्मा पन न सुद्ध-अज्झत्तदस्सनमत्तेनेव मग्गवुट्ठानं होति, बहिद्धा पि दट्ठब्ब-मेव, तस्मा परस्स खन्धे पि अनुपादिन्नसंखारेसु पि अनिच्चं दुक्खमनत्ता ति पस्सति। सो कालेन अज्झत्तं सम्मसति कालेन बहिद्धा ति। तस्सेवं सम्मसतो अज्झत्तं सम्म-सनकाले विपस्सना मग्गेन सद्धिं घटीयति। एवं अज्झत्तं अभिनिविसित्वा अज्झत्तं वुट्ठाति नाम। सचे पन'स्स बहिद्धा सम्मसनकाले विपस्सना मग्गेन सद्धिं घटियति, एवं अज्झत्तं अभिनिविसित्वा बहिद्धा वुट्ठाति नाम। एसेव नयो बहिद्धा अभिनिवि-सित्वा बहिद्धा च अज्झत्तं च वुट्ठाने पि।

अपरो आदितो च रूपे अभिनिविसति अभिनिविसित्वा भूतरूपं च उपादारूपं च परिच्छिन्दित्वा अनिच्चादितो पस्सति, यस्मा पन न सुद्धरूपदस्सनमत्तेन मग्ग-वुट्ठानं होति अरूपं पि दट्ठब्बमेव, तस्मा तं रूपं आरम्मणं कत्वा उप्पन्नं वेदनं सञ्ञं संखारे विञ्ञाणं च इदं अरूपं ति परिच्छिन्दित्वा अनिच्चादितो पस्सति। सो कालेन रूपं सम्मसति कालेन अरूपं। तस्सेवं सम्मसतो रूपसम्मसनकाले विपस्सना मग्गेन सद्धिं घटीयति। एवं रूपे अभिनिविसित्वा रूपा वुट्ठाति नाम। सचे पनस्स अरूपसम्मसनकाले विपस्सना मग्गेन सद्धिं घटीयति, एवं रूपं अभिनिविसित्वा अरूपा वुट्ठाति नाम। एसेव नयो अरूपे अभिनिविसित्वा अरूपा च रूपा च वुट्ठाने पि।

सम्बन्धो। गाथाय (१६२–सी०) अत्थं वित्थारेन्तो आह–लोकुत्तरमग्गे हीति आदि। लोकु-त्तरमग्गे ति पदं वुट्ठातीति पदे विसयवसेन आधारो। अज्झत्तं अत्तनो खन्धेसु। अभिनिवि-सित्वा ति आरम्मणकरणवसेन (१३५-म०) पविसित्वा। अज्झत्तं अत्तनो खन्धतो[1] विपस्सनाय मग्गेन सद्धिं घटनवसेन वुट्ठाति। लोकुत्तरमग्गे ति पि अत्थि।

तत्था ति अज्झत्तं अभिनिसित्वा ति आदिपदेसु, निद्धारणं। अज्झत्तं····प०····वुट्ठा-तीति आदीसु विनिच्छयो ताव पठमं वेदितब्बो ति योजना। बहिद्धा पि खन्धे दट्ठब्बमेव पुग्गलेन ञाणचक्खुना पस्सितब्बमेव। तस्सेवं ति तस्स पुग्गलस्स एवं। अस्सा ति पुग्गलस्स।

---

१. खन्धे–सी०।

"यं किंचि समुदयधम्मं सब्बं तं निरोधधम्मं" [म० २:५३] ति एवं अभिनिविसित्वा एवमेव वुट्ठानकाले पन एकप्पहारेन पञ्चहि खन्धेहि वुट्ठाति नामा ति। अयं तिक्खविपस्सकस्स महापञ्ञस्स भिक्खुनो विपस्सना।

यथा हि छातज्झत्तस्स पुरिसस्स भत्तमज्झे गूथपिण्डं ठपेत्वा नानग्गरसभोजनपुण्णपातिं उपनेय्युं, सो ब्यञ्जनं हत्थेन वियूहन्तो तं गूथपिण्डं दिस्वा 'किमिदं' ति पुच्छित्वा गूथपिण्डो ति वुत्ते 'धि धि अपनेथा' ति भत्ते पि पातियं पि निरालयो होति। एवं-सम्पदमिदं दट्ठब्बं। भोजनपातिदस्सनस्मिं हि तस्स अत्तमनकालो विय इमस्स भिक्खुनो बालपुथुज्जनकाले पञ्चक्खन्धे 'अहं ममं'ति गहितकालो। गूथपिण्डस्स दिट्ठकालो विय तिण्णं लक्खणानं सल्लक्खितकालो। भत्ते पि पातियं पि निरालयकालो विय तिक्खविपस्सकस्स महापञ्ञस्स भिक्खुनो "यं किंचि समुदयधम्मं सब्बं तं निरोधधम्मं" [दी० १.९५] ति पञ्चहि खन्धेहि एकप्पहारेन वुट्ठितकालो वेदितब्बो।

'सत्त-अट्ठङ्गपरिणामं' ति एत्थ अयं वुत्तप्पभेदो अङ्गपरिणामो यथा होति तथा वेदितब्बो। संखारुपेक्खाञाणमेव हि अरियमग्गस्स बोज्झङ्गमग्गङ्ग-झानङ्गविसेसं नियमेति। केचि पन थेरा 'बोज्झङ्ग-मग्गङ्ग-झानङ्गविसेसं पादकज्झानं नियमेती' ति वदन्ति। केचि 'विपस्सनाय आरम्मणभूता खन्धा नियमेन्ती' ति वदन्ति। केचि 'पुग्गलज्झासयो नियमेती' ति वदन्ति। तेसं पि वादेसु अयं संखारुपेक्खासंखाता पुब्बभागा वुट्ठानगामिनी विपस्सना व नियमेती ति वेदितब्बा।

तत्रायं आनुपुब्बी कथा—विपस्सनानियमेन हि सुक्खविपस्सकस्स उप्पन्नमग्गो पि समापत्तिलाभिनो झानं पादकं अकत्वा उप्पन्नमग्गो पि पठमज्झानं पादकं कत्वा पकिण्णकसंखारे सम्मसित्वा उप्पादितमग्गो पि पठमज्झानिको होति। सब्बेसु सत्त बोज्झंगानि अट्ठ मग्गंगानि पञ्च झानंगानि होन्ति। तेसं पि हि पुब्बभागविपस्सना सोमनस्ससहगता पि उपेक्खासहगता पि हुत्वा वुट्ठानकाले संखारुपेक्खाभावप्पत्ता सोमनस्ससहगता व होति।

धि धीति जिगुच्छनीयं, धि धीति जिगुच्छत्थवाचको निपातो। भोजनपातिदस्सनस्मि हीति आदि विवरणं[1]।

सत्तट्ठङ्गपरिणामं ति एत्थ वचने, वेदितब्बो ति पदे आधारो। हिसद्दो दळ्हीकरणं। तेसम्पीति थेरानम्पि। पिसद्दो अत्तनो वादं अपेक्खति।

तत्रा ति लोकुत्तरझाने। सुक्खा[2] लूखा असिनिद्धा विपस्सना अस्सा ति सुक्खविपस्सको। सब्बेसू ति सुक्खविपस्सकस्स उप्पन्नमग्गादीसु। विपस्सना पन किं भूता ति आह—तेसं हीति आदि। हि सच्चं, तेसम्पि मग्गानं।

---

१. नीवरणं—सी०। २. लूखा—सी०।

पञ्चकनये दुतियततियचतुत्थज्झानानि पादकानि कत्वा उप्पादितमग्गेसु यथाक्कमेनेव झानं चतुरंगिकं तिवंगिकं च दुवंगिकं च होति। सब्बेसु पन सत्त मग्गंगानि होन्ति, चतुत्थे छ बोज्झंगानि। अयं विसेसो पादकज्झाननियमेन चेव विपस्सनानियमेन च होति। तेसं पि हि पुब्बभागविपस्सना सोमनस्ससहगता पि उपेक्खासहगता पि होति। वुट्ठानगामिनी सोमनस्ससहगता व।

पञ्चमज्झानं पादकं कत्वा निब्बत्तितमग्गे पन उपेक्खा-चित्तेकग्गतावसेन द्वे झानंगानि बोज्झंग-मग्गंगानि छ सत्त चेव। अयं पि विसेसो उभयनियमवसेन होति। इमस्मिं हि नये पुब्बभागविपस्सना सोमनस्ससहगता वा उपेक्खासहगता वा होति, वुट्ठानगामिनी उपेक्खासहगता व। अरूपज्झानानि पादकानि कत्वा उप्पादितमग्गे पि एसेव नयो। एवं पादकज्झानतो वुट्ठाय ये केचि संखारे सम्मसित्वा निब्बत्तितमग्गस्स आसन्नप्पदेसे वुट्ठिता समापत्ति अत्तनो सदिसभावं करोति, भूमिवण्णो विय गोधावण्णस्स।

दुतियत्थेरवादे पन यतो यतो समापत्तितो वुट्ठाय ये ये समापत्तिधम्मे सम्मसित्वा मग्गो निब्बत्तितो होति तं तं समापत्तिसदिसो व होति, सम्मसितसमापत्तिसदिसो ति अत्थो। सचे पन कामावचरधम्मे सम्मसति पठमज्झानिको व होति। तत्रा पि विपस्सनानियमो वुत्तनयेनेव वेदितब्बो।

ततियत्थेरवादे 'अहो वतायं सत्तङ्गिकं मग्गं पापुणेय्यं, अट्ठङ्गिकं मग्गं पापुणेय्यं' ति अत्तनो अज्झासयानुरूपेन यं यं झानं पादकं कत्वा ये वा ये वा झानधम्मे सम्मसित्वा मग्गो निब्बत्तितो होति तं-तं झानसदिसो व होति। पादकज्झानं पन सम्मसितज्झानं वा विना, अज्झासयमत्तेनेव तं न इज्झति। स्वायमत्थो नन्दकोवादसुत्तेन दीपेतब्बो। वुत्तं हेतं—"सेय्यथा पि भिक्खवे, तदहुपोसथे पण्णरसे न होति बहुनो जनस्स कंखा वा विमति वा 'ऊनो नु खो चन्दो पुण्णो नु खो चन्दा' ति, अथ खो पुण्णो चन्दो त्वेव होति, एवमेव खो भिक्खवे, ता भिक्खुनियो नन्दकस्स धम्मदेसनाय अत्तमना चेव परिपुण्णसंकप्पा च। तासं भिक्खवे, पञ्चन्नं भिक्खुनीसतानं या पच्छिमिका भिक्खुनी सा सोतापन्ना अविनिपातधम्मा नियता सम्बोधिपरायणा" [म० ३.३७५] ति। तासु हि यस्सा भिक्खुनिया सोतापत्तिफलस्स उपनिस्सयो, सा सोतापत्तिफलेनेव परिपुण्णसंकप्पा होति, यस्सा ... प० ... अरहत्तस्स उपनिस्सयो सा अरहत्तेनेव। एवमेव अत्तनो अज्झासयानुरूपेन यं यं झानं पादकं कत्वा ये वा ये वा झानधम्मे सम्मसित्वा मग्गो निब्बत्तितो तं-तं झानसदिसो व होति। पादकज्झानं पन

भूमिवण्णो विय गोधावण्णस्स अत्तनो सदिसभावं करोति।

स्वायमत्थो ति पादकझानसम्मसितझानेहि विना अज्झासयमत्तेनेव तंतं-झानसदिसभावस्स असिज्झनसङ्खातो सो अयमत्थो मज्झिमनिकाये सळायतनवग्गे नन्दकोवादसुत्तेन दीपेतब्बो पण्डितेन। तासु हीति हि सच्चं तासु भिक्खुनीसु। एत्था पि चा ति ततियत्थेरवादे।

सम्मसितज्झानं वा विना, अज्झासयमत्तेनेव तं न इज्झती ति। एत्था पि च विपस्सना-नियमो वुत्तनयेनेव वेदितब्बो।

तत्थ 'पादकज्झानमेव नियमेती' ति एवं-वादिं **ति**पिटकचूळनागत्थेरं अन्ते-वासिका आहंसु—'भन्ते, यत्थ ताव पादकज्झानं अत्थि तत्थ तं नियमेतु; यस्मिं पन पादकज्झ.नं नत्थि, तस्मिं अरूपभवे किं नियमेती ति?' 'आवुसो, तत्था पि पादक-ज्झानमेव नियमेती ति। यो हि भिक्खु अट्ठसमापत्तिलाभी पठमज्झानं पादकं कत्वा सोतापत्तिमग्गफलानि निब्बत्तेत्वा अपरिहीनज्झानो कालं कत्वा अरूपभवे निब्बत्तो, पठमज्झानिकाय सोतापत्तिफलसमापत्तिया वुट्ठाय विपस्सनं पट्ठपेत्वा उपरि तीणि मग्गफलानि निब्बत्तेति, तस्स तानि पठमज्झानिकानेव होन्ति। दुतियज्झानिकादीसु पि एसेव नयो। अरूपे तिकचतुक्कज्झानं उप्पज्जति, तं च खो लोकुत्तरं न लोकियं। एवं तत्था पि पादकज्झानमेव नियमेति आवुसो' ति। 'सुकथितो भन्ते पञ्हो' ति।

'विपस्सनाय आरम्मणभता खन्धा नियमेन्ति; यं यं हि सम्मसित्वा वुट्ठाति तं-तं-सदिसो व मग्गो होती'ति एवंवादिं **मो**रवापिवासी-**म**हादत्तत्थेरं पि अन्तेवासिका आहंसु 'भन्ते, तुम्हाकं वादे दोसो पञ्ञायति—रूपं सम्मसित्वा वुट्ठितभिक्खुनो हि रूपसदिसेन अब्याकतेन मग्गेन भवितब्बं, नेवसञ्ञानासञ्ञायतननयतो परिग्गहेत्वा वुट्ठितस्स तं-सदिसेनेव नेवसञ्ञानासञ्ञायतनभावप्पत्तेन मग्गेन भवितब्बं' ति। 'न आवुसो, एवं होति। लोकुत्तरमग्गो हि अप्पनं अप्पत्तो नाम नत्थि, तस्मा रूपं सम्मसित्वा वुट्ठितस्स अट्ठंगिको सोमनस्ससहगतो मग्गो होति, नेवसञ्ञानासञ्ञा-यतनं सम्मसित्वा वुट्ठितस्सा पि न सब्बाकारेन तादिसो होति, सत्तंगिको पन उपेक्खा-सहगतमग्गो होती'ति।

'पुग्गलज्झासयो नियमेती' ति वादिनो **चू**ळाभयत्थेरस्सा पि वादं आहरित्वा **ति**पिटकचूळनागत्थेरस्स कथयिंसु। सो आह—'यस्स ताव पादकज्झानं अत्थि तस्स पुग्गलज्झासयो नियमेतु, यस्स तं नत्थि तस्स कतरज्झासयो नियमेस्सती ति निद्धनस्स वुड्ढिगवेसनकालो विय होती' ति। तं कथं आहरित्वा **ति**पिटकचूळाभयत्थेरस्स कथ-यिंसु। सो 'पादकज्झानवतो इदं कथितं आवुसो' ति आह।

तत्था ति वादेसु, निद्धारणं। यत्था ति यस्मिं ठाने। तं ति पादकज्झानं। तत्था पी ति अरूपभवे। तानीति उपरि तीणि मग्गफलानि। तञ्च खो ति तिकचतुक्कज्झानं। एवं तत्था पी ति एवं अरूपभवे पि[1]।

न आवुसो एवं वचनं न होति।

यस्स तं ति यस्स पुग्गलस्स तं पादकज्झानं। निद्धनस्स पुग्गलस्स वड्ढिगवेसनकालो विय धनवड्ढिया गवेसनकालो विय। सो तिपिटकचूळाभयत्थेरो आवुसो, पादकज्झानवतो इदं पुग्गलज्झासयो नियमेतीति इदं[2] वचनं मया कथितं इति आह।

१. लोकुत्तरभावे पि–सी०। २. नत्थि–सी०।

यथा पन पादकज्झानवतो, सम्मसितज्झानवतो पि तथेव वेदितब्बं। पञ्चमज्झानतो वुट्ठाय हि पठमज्झानादीनि सम्मसतो उप्पन्नमग्गो पठमत्थेरवादेन पञ्चमज्झानिको। दुतियवादेन पठमादिज्झानिको आपज्जती ति पि द्वे पि वादा विरुज्झन्ति। ततियवादेन पनेत्थ 'यं इच्छति तज्झानिको होती'ति ते च वादा न विरुज्झन्ति, अज्झासयो च सात्थिको होती ति। एवं तयो पि थेरा पण्डिता ब्यत्ता बुद्धिसम्पन्ना व। तेन तेसं वादं तन्ति कत्वा ठपयिंसु। इध पन अत्थमेव उद्धरित्वा तयो पेते वादे विपस्सना व नियामेती ति दस्सितं।

इदानि 'निमित्तं-पटिपदा-पती ति एत्थ एवं अंगपरिणामवतो मग्गस्स उप्पादकाले गोत्रभू कुतो वुट्ठाति ? मग्गो कुतो ति ? गोत्रभू ताव निमित्ततो वुट्ठाति, पवत्तं छेत्तुं न सक्कोति, एकतो-वुट्ठानो हेस। मग्गो निमित्ततो वुट्ठाति, पवत्तं छिन्दती ति उभतो-वुट्ठानो हेस। तेसं अयं उप्पत्तिनयो—यस्मिं हि वारे मग्गवुट्ठानं होति, तस्मिं अनुलोमं नेव एकं होति, न पञ्चमं। एकं हि आसेवनं न लभति, पञ्चमं भवंगस्स आसन्नत्ता पवेधति। तदा हि जवनं पतितं नाम होति। तस्मा नेव एकं होति न पञ्चमं। महापञ्ञस्स पन द्वे अनुलोमानि होन्ति, ततियं गोत्रभू, चतुत्थं मग्गचित्तं,

---

यथा पन पादकज्ञानवतो पुग्गलस्स इदं वेदितब्बं। सम्मसितज्ञानवतो पि पुग्गलस्स तथेव इदं वेदितब्बं ति (१६३–सी०) सम्बन्धो। हिसद्दो दळ्हीकरणं। द्वे पि वादा पठमदुतियत्थेरवादा। ततियवादेना ति पदं न विरुज्झन्ति होतीति पदद्वये आधारो। एत्था ति ज्ञाने[1], निद्धारणं। यं ज्ञानं पुग्गलो[2] इच्छति तं ज्ञानिको तेन ज्ञानेन सदिसो मग्गो होति इति तस्मा ते च वादा न[3] विरुज्झन्ति····प०····तीति द्वे च सद्दा अञ्ञमञ्ञापेक्खा। तयो पि थेरा लङ्कादीपे निवासिनो ति आहरित्वा सम्बन्धितब्बं। तेना ति कारणेन। तेसं थेरानं वादं तन्ति (१३६-म०) कत्वा थपयिंसु आचरिया। इध पन अट्ठसालिनिया नियामे[4] एकन्तिकं ति[4] विपस्सनासङ्खातं अत्थमेव उद्धरित्वा तयो पि एते वादे विपस्सना व नियामेति इति वचनं आचरियेन दस्सितं। वुच्चति[5] एतेना ति वादा[6] कारणभूतानि पादकज्ञानानि वादा[7]।

इदानि····प०····एत्थ वचने विनिच्छयो वेदितब्बो। एकतो-वुट्ठानो हेसा ति हि सच्चं एसो गोत्रभू एकतो-वुट्ठानो। तेसं ति गोत्रभुमग्गानं। यस्मिं हीति आदि वित्थारो। हि सच्च यस्मिं वारे। यस्मिं मग्गवीथियं मग्गवुट्ठानं मग्गस्स पवत्तनं होति तस्मिं वारे अनुलोमं एकं नेव होति। अनुलोमं पञ्चमं न होति। कस्मा न होतीति आह—एकं हीति आदि। हि यस्मा एकं अनुलोमं आसेवनं आसेवनपच्चयं न लभति। तदा[8] हीति हि सच्चं तदा पञ्चमक्खणे जवनं पतितं नाम पवत्तं निरुद्धं नाम होति। अनुलोमं एकं पञ्चमं न होतीति वुत्तं, कति पन होन्तीति आह—महापञ्ञस्सा ति आदि। भवङ्गोतरणं ति चित्तस्स भवङ्गं ओतरणं। मन्द-

---

१. ज्ञानेसु–सी०। २. पुग्गलेन–म०। ३. नत्थि–म०। ४-४. अट्ठसालिनियामनेकं ति–म०। ५. वुच्चन्ति–सी०। ६. वादो–सी०। ७. वादो–सी०। ८. तथा–म०।

तीणि फलानि, ततो भवंगोतरणं। मज्झिमपञ्ञस्स पन तीणि अनुलोमानि होन्ति, चतुत्थं गोत्रभू, पञ्चमं मग्गचित्तं, द्वे फलानि, ततो भवंगोतरणं। मन्दप्पञ्ञस्स चत्तारि अनुलोमानि, पञ्चमं गोत्रभू, छट्ठं मग्गचित्तं, सत्तमं फलं, ततो भवंगोतरणं।

तत्र महापञ्ञमन्दपञ्ञानं वसेन अकथेत्वा मज्झिमपञ्ञस्स वसेन कथेतब्बं। यस्मिं हि वारे मग्गवुट्ठानं होति, किरियाहेतुकमनोविञ्ञाणधातु उपेक्खासहगता मनोद्वारावज्जनं हुत्वा विपस्सनागोचरे खन्धे आरम्मणं कत्वा भवंगं आवट्टेति। तदनन्तरं तेनावज्जनेन गहितक्खन्धे गहेत्वा उप्पज्जति पठमजवनं अनुलोमञाणं। तं तेसु खन्धेसु अनिच्चा ति वा दुक्खा ति वा अनत्ता ति वा पवत्तित्वा ओळारिकोळारिकं सच्चपटिच्छादकं तमं विनोदेत्वा तीणि लक्खणानि भिय्यो भिय्यो पाकटानि कत्वा निरुज्झति। तदनन्तरं उप्पज्जति दुतियानुलोमं। तेसु पुरिमं अनासेवनं। दुतियस्स पुरिमं आसेवनं होति। तं तिक्खं सूरं पसन्नं हुत्वा तस्मिं येव आरम्मणे तेनेवाकारेन पवत्तित्वा मज्झिमप्पमाणं सच्चपटिच्छादकं तमं विनोदेत्वा तीणि लक्खणानि भिय्यो भिय्यो पाकटानि कत्वा निरुज्झति। तदनन्तरं उप्पज्जति ततियानुलोमं। तस्स दुतियं आसेवनं होति। तं पि लद्धासेवनत्ता तिक्खं सूरं विपस्सनं हुत्वा तस्मिं येवारम्मणे तेनेवाकारेन पवत्तित्वा तदवसेसं अणुसहगतं सच्चपटिच्छादकं तमं विनोदेत्वा निरवसेसं कत्वा तीणि लक्खणानि भिय्यो भिय्यो पाकटानि कत्वा निरुज्झति। एवं तीहि अनुलोमेहि सच्चपटिच्छादकतमे विनोदिते तदनन्तरं उप्पज्जति गोत्रभूञाणं निब्बानं आरम्मणं कुरुमानं।

पञ्ञस्स चत्तारि अनुलोमानीति इदं पोराणट्ठकथायं आगतनयेन वुत्तं, मग्गस्स वीथियं हि चत्तारि अनुलोमानि बुद्धघोसाचरियेन न अधिप्पेतानि, तस्मा विसुद्धिमग्गे पटिसेधितानि, तेनेव सच्चसङ्खेपे वुत्तं।

विसुद्धिमग्गे चत्तारि, पटिसिद्धानि सब्बसो।
अट्ठसालिनियं[1] एवं,[2] वुत्तता एवमीरितं ति॥ (सच्च० ३५८ का०)

यदि चत्तारि अनुलोमानि इध[3] आचरियेन अधिप्पेतानि, अट्ठसालिनिया[4] वुत्तवचनं विसुद्धिमग्गे वुत्तवचनेन विरुज्झति, तस्मा मन्दपञ्ञस्स चत्तारि अनुलोमानीति वचनं पोराणट्ठकथायं आगतनयेन वुत्तं ति दट्ठब्बं।

तत्था ति लोकुत्तरज्झाने (१६४-सी०)। द्विन्नं अनुलोमञाणानं[5] तीसु अन्तोगधत्ता चेव चतुन्नं अनुलोमानं अलब्भमानत्ता च महापञ्ञमन्दपञ्ञानं वसेन अकथेत्वा ति वुत्तं। मग्गवुट्ठानं कथेतब्बं पण्डितेना ति योजना। तं ति अनुलोमञाणं। तेसु द्वीसु अनुलोमेसु। पुरिमं अनुलोमं। नत्थि आसेवनं अस्सा ति अनासेवनं। पुरिमं दुतियस्स आसेवनं होति।[6] तं ति दुतियं। तेनेवाकारेना ति अनिच्चादि-आकारेन। तस्सा ति ततियानुलोमस्स। तं पी ति ततियानुलोमं। अणुसहगतं ति सुखुमं। तदनन्तरं निब्बानं आरम्मणं कुरुमानं गोत्रभुञाणं उप्पज्जति।

---

१. अट्ठसालिनिया–सी०। २. एतं–सी०। ३. इव–सी०। ४. अट्ठसालिनियं–सी०। ५. अनुलोमानं–सी०। ६. न होति–सी०।

तत्रायं उपमा–एको किर चक्खुमा पुरिसो नक्खत्तयोगं जानिस्सामी ति रत्तिभागे निक्खमित्वा चन्दं पस्सितुं उद्धं उल्लोकेसि। तस्स वलाहकेहि पटिच्छन्नत्ता चन्दो न पञ्ञायित्थ। अथेको वातो उट्ठहित्वा थूले थूले वलाहके विद्धंसेसि। अपरो मज्झिमे। अपरो सुखुमे। ततो सो पुरिसो विगतवलाहके नभे तं चन्दं दिस्वा नक्खत्तयोगं अञ्ञासि।

तत्थ तयो वलाहका विय सच्चपटिच्छादकं थूलमज्झिमसुखुमकिलेसन्धकारं। तयो वाता विय तीणि अनुलोमचित्तानि। चक्खुमा पुरिसो विय गोत्रभूञाणं। चन्दो विय निब्बानं। एकेकस्स वातस्स यथाक्कमेन वलाहकत्तयविद्धंसनं विय एकेकस्स अनुलोमचित्तस्स सच्चपटिच्छादकतमविनोदनं। विगतवलाहके नभे तस्स पुरिसस्स विसुद्धचन्ददस्सनं विय विगते सच्चपटिच्छादके तमे गोत्रभूञाणस्स विसुद्धनिब्बानं आरम्मणकरणं। यथेव हि तयो वाता चन्दपटिच्छादके वलाहके येव विद्धंसेतुं सक्कोन्ति, न चन्दं दट्ठुं, एवं अनुलोमानि सच्चपटिच्छादकं तमं येव विनोदेतुं सक्कोन्ति, न निब्बानं आरम्मणं कातुं। यथा सो पुरिसो चन्दमेव दट्ठुं सक्कोति न वलाहके विद्धंसेतुं, एवं गोत्रभूञाणं निब्बानमेव आरम्मणं कातुं सक्कोति न किलेसतमं विनोदेतुं।

एवं अनुलोमं संखारारम्मणं होति, गोत्रभू निब्बानारम्मणं। यदि हि गोत्रभू अनुलोमेन गहितारम्मणं गण्हेय्य पुन अनुलोमं तं अनुबन्धेय्या ति मग्गवुट्ठानमेव न भवेय्य। गोत्रभूञाणं पन अनुलोमस्स आरम्मणं अगहेत्वा तं अपच्छतो पवत्तिकं कत्वा सयं अनावज्जनं पि समानं आवज्जनट्ठाने ठत्वा एवं निब्बत्ताही ति मग्गस्स सञ्ञं दत्वा विय निरुज्जति। मग्गो पि तेन दिन्नसञ्ञं अमुञ्चित्वा व अवीचिसन्ततिवसेन तं ञाणं अनुप्पबन्धमानो अनिब्बिद्धपुब्बं अप्पदालितपुब्बं लोभक्खन्धं दोसक्खन्धं मोहक्खन्धं निब्बिज्झमानो व पदालयमानो व निब्बत्तति।

तत्रा ति (१३७-म०) मग्गवीथियं।

तत्था ति वलाहकादीसु, निद्धारणं। तस्सा ति वातस्स। वुत्तमत्थं पाकटं[1] करोति यथेव हीति आदिना।

कस्मा पन गोत्रभु अनुलोमेन गहितारम्मणं न गण्हतीति आह–यदि हीति आदि। अनुलोमं ति अञ्ञं अनुलोमं, अनुबन्धेय्या ति पदे कत्ता। तं ति गोत्रभुठाने अप्पनानुलोमञाणं[2] अनुबन्धेय्या ति पदे कम्मं। इतीति तस्मा। गोत्रभुञाणं पन किं भूतं ति आह—गोत्रभुञाणं पना ति आदि। तं ति अनुलोमं। पच्छतो पवत्तिकं कत्वा सयं अनावज्जनम्पि आवज्जनम्पि। मग्गो गोत्रभुञाणं अनुबन्धमानो पवत्ततीति दस्सेन्तो आह—मग्गो पना ति आदि। तेना ति गोत्रभुञाणेन, दिन्नं इति पदे कत्ता। अवीचिसन्ततिवसेन अनिब्बिद्धपुब्बं ति पुब्बे अनिविद्धं।

---

१. पाकटतरं–सी०। २. उप्पन्नं अनुलोमञाणं–सी०।

तत्रायं उपमा—एको किर इस्सासो धनुसतमत्थके फलकसतं ठपापेत्वा वत्थेन मुखं वेठेत्वा सरं सन्नय्हित्वा चक्कयन्ते अट्ठासि। अञ्ञो पुरिसो चक्कयन्तं आविज्झित्वा यदा इस्सासस्स फलकं अभिमुखं होति तदा तत्थ दण्डकेन सञ्ञं देति, इस्सासो दण्डकसञ्ञं अमुञ्चित्वा व सरं खिपित्वा फलकसतं निब्बिज्झति। तत्थ दण्डकसञ्ञं विय गोत्रभूञाणं। इस्सासो विय मग्गञाणं। इस्सासस्स दण्डकसञ्ञं अमुञ्चित्वा व फलकसतनिब्बिज्झनं विय मग्गञाणस्स गोत्रभूञाणेन दिन्नसञ्ञं अमुञ्चित्वा व निब्बानं आरम्मणं कत्वा अनिब्बिद्धपुब्बानं अप्पदालितपुब्बानं लोभक्खन्धादीनं निब्बिज्झनपदालनं।

भूमिलद्ध-वट्टसेतु-समुग्घातकरणं ति पि एतदेव। मग्गस्स हि एकमेव किच्चं अनुसयप्पजहनं। इति सो अनुसये पजहन्तो निमित्ता वुट्ठाति नाम, पवत्तं छिन्दति नाम। 'निमित्तं'ति रूप-वेदना-सञ्ञा-संखार-विञ्ञाणनिमित्तं। 'पवत्तं'पि रूप-वेदना-सञ्ञा-संखार-विञ्ञाणप्पवत्तमेव। तं दुविधं होति—उपादिन्नकं अनुपादिन्नकं ति।

तेसु मग्गस्स अनुपादिन्नकतो वुट्ठानच्छाया दिस्सती ति वत्वा अनुपादिन्नकतो वुट्ठाती ति वदिंसु। सोतापत्तिमग्गेन हि चत्तारि दिट्ठिगतसम्पयुत्तानि विचिकिच्छासहगतं ति पञ्च चित्तानि पहीयन्ति। तानि रूपं समुट्ठापेन्ति। तं अनुपादिन्नकरूपक्खन्धो। तानि चित्तानि विञ्ञाणक्खन्धो। तं-सम्पयुत्ता वेदना-सञ्ञा-संखारा तयो अरूपक्खन्धा। तत्थ सचे सोतापन्नस्स सोतापत्तिमग्गो अभावितो अभविस्स तानि पञ्च चित्तानि छसु आरम्मणेसु परियुट्ठानं पापुणेय्युं। सोतापत्तिमग्गो पन तेसं परियुट्ठानुप्पत्तिं वारयमानो सेतुसमुग्घातं अभब्बुप्पत्तिकभावं कुरुमानो अनुपादिन्नकतो वुट्ठाति नाम। सकदागामिमग्गेन चत्तारि दिट्ठिविप्पयुत्तानि द्वे दोमनस्ससह-

---

तत्था ति मग्गवीथियं। चक्कयन्ते ति चक्कयन्तविसये[1]। याति गच्छति पवत्ततीति यन्तं। 'या'-गतियं। अन्तपच्चयो। चक्कञ्च तं यन्तञ्चा ति चक्कयन्तं। आविञ्छित्वा ति[2] परिवत्तेत्वा। तत्था ति चक्कयन्ते[3]। दण्डकेना ति पहरणदण्डकेन। तत्था ति दण्डकसञ्ञादीसु, निद्धारणं। एतदेव लोभक्खन्धादिपदालनं भूमि[4]····प०····करणं[4] इति वुच्चति पण्डितेना ति योजना।

भवन्ति किलेसा एत्था ति भूमि[5] उपादानक्खन्धा। भूमि लद्धा एतेहि किलेसेहीति भूमिलद्धा। वट्टं सिनन्ति बन्धन्तीति वट्टसेतु। भूमिलद्धा च वट्टसेतु च भूमिलद्धवट्टसेतु। भूमिलद्धवट्टसेतूनं समुग्घातं भूमिलद्धवट्टसेतुसमुग्घातं। भूमिलद्धवट्टसेतुसमुग्घातस्स करणं भूमिलद्धवट्टसेतुसमुग्घातकरणं[5] (१६५–सी०)। मग्गस्स हीति आदि दळ्हीकरणं।

तेसू ति उपादिन्नत्तिकादीसु। वुट्ठानच्छाया ति वुट्ठानस्स छाया दिस्सति। इति वत्वा वदिंसु आचरिया। सोतापत्तिमग्गेन हीति आदि वित्थारो। तानीति पञ्च चित्तानि। तं ति

---

१. चक्कयन्तस्स समीपे–सी०। २. आविज्झित्वा ति–सी०। ३. फलके–सी०।
४-४. ····प०····नत्थि-म०। ५-५. भूमि····प०····समुग्घातं भूमि····प०····समुग्घाटकरणं–म०।

गतानी ति ओळारिककामरागब्यापादवसेन छ चित्तानि पहीयन्ति। अनागामिमग्गेन अणुसहगतकामरागब्यापादवसेन तानि एव छ चित्तानि पहीयन्ति। अरहत्तमग्गेन चत्तारि दिट्ठिविप्पयुत्तानि उद्धच्चसहगतं चा ति पञ्च अकुसलचित्तानि पहीयन्ति। तत्थ सचे तेसं अरियानं ते मग्गा अभाविता अस्सु, तानि चित्तानि छसु आरम्मणेसु परियुट्ठानं पापुणेय्युं। ते पन तेसं मग्गा परियुट्ठानुप्पत्तिं वारयमाना सेतुसमुग्घातं अभब्बुप्पत्तिकभावं कुरुमाना अनुपादिन्नकतो वुट्ठहन्ति नाम।

उपादिन्नकतो वुट्ठानच्छाया दिस्सती ति वत्वा उपादिन्नकतो वुट्ठाती ति पि वदिंसु। सचे हि सोतापन्नस्स सोतापत्तिमग्गो अभावितो अभविस्स, ठपेत्वा सत्त भवे अनमतग्गे संसारवट्टे उपादिन्नकक्खन्धप्पवत्तं पवत्तेय्य। कस्मा? तस्स पवत्तिया हेतूनं अत्थिताय। तीणि संयोजनानि दिट्ठानुसयो विचिकिच्छानुसयो ति इमे पन पञ्च किलेसे सोतापत्तिमग्गो उप्पज्जमानो व समुग्घातेति। इदानि कुतो सोतापन्नस्स सत्त भवे ठपेत्वा अनमतग्गे संसारवट्टे उपादिन्नकप्पवत्तं पवत्तिस्सति? एवं सोतापत्तिमग्गो उपादिन्नकप्पवत्तं अप्पवत्तं कुरुमानो उपादिन्नकतो वुट्ठाति नाम।

सचे सकदागामिस्स सकदागामिमग्गो अभावितो अभविस्स, ठपेत्वा द्वे भवे पञ्चसु भवेसु उपादिन्नकप्पवत्तं पवत्तेय्य। कस्मा? तस्स पवत्तिया हेतूनं अत्थिताय। ओळारिकानि कामराग-पटिघसंयोजनानि ओळारिको कामरागानुसयो पटिघानुसयो ति इमे पन चत्तारो किलेसे सो मग्गो उपज्जमानो व समुग्घातेति। इदानि कुतो सकदागामिस्स द्वे भवे ठपेत्वा पञ्चसु भवेसु उपादिन्नकप्पवत्तं पवत्तिस्सति? एवं सकदागामिमग्गो उपादिन्नकप्पवत्तं अप्पवत्तं कुरुमानो उपादिन्नकतो वुट्ठाति नाम।

सचे अनागामिस्स अनागामिमग्गो अभावितो अभविस्स, ठपेत्वा एकं भवं दुतियभवे उपादिन्नकप्पवत्तं पवत्तेय्य। कस्मा? तस्स पवत्तिया हेतूनं अत्थिताय। अणुसहगतानि कामरागपटिघसंयोजनानि अणुसहगतो कामरागानुसयो पटिघानुसयो ति इमे पन चत्तारो किलेसे सो मग्गो उप्पज्जमानो व समुग्घातेति। इदानि कुतो अनागामिस्स एकं भवं ठपेत्वा दुतियभवे उपादिन्नकप्पवत्तं पवत्तिस्सति? एवं अनागामिमग्गो उपादिन्नकप्पवत्तं अप्पवत्तं कुरुमानो उपादिन्नकतो वुट्ठाति नाम।

सचे अरहतो अरहत्तमग्गो अभावितो अभविस्स, रूपारूपभवेसु उपादिन्नकप्प-

---

रूपं। तत्था ति चित्तेसु, अभावितो ति पदे पहातब्बवसेन आधारो। तत्था ति वा तस्मिं। तेसं चित्तानं पहाने। सोतापन्नस्सा ति पदं अभावितो ति पदे ततियाकत्ता। परियुट्ठानं ति पवत्तनं। तेसं ति चित्तानं। अभब्बुप्पत्तिकभावं ति उप्पत्तिया अननुरूपभावं। तत्था ति चित्तेसु। तस्मिं वा पहाने। ते पन तेसं ति ते पन मग्गा। परियुट्ठानप्पवत्तिं ति परियुट्ठान-सङ्खातं पवत्तिभावं।

उपादिन्नकं एव पवत्तं उपा....प-....पवत्तं। पवत्तते व पवत्तेय्य एव। तस्सा ति उपादिन्नकपवत्तस्स। इदानीति मग्गुप्पत्तिकाले।

वत्तं पवत्तेय्य। कस्मा ? तस्स पवत्तिया हेतूनं अत्थिताय। रूपरागो अरूपरागो मानो उद्धच्चं अविज्जा मानानुसयो भवरागानुसयो अविज्जानुसयो ति इमे पन अट्ठ किलेसे सो मग्गो उप्पज्जमानो व समुग्घातेति। इदानि कुतो खीणासवस्स पुनब्भवे उपादिन्न-कप्पवत्तं पवत्तिस्सति ? एवं अरहत्तमग्गो उपाद्दिन्नकप्पवत्तं अप्पवत्तं कुरुमानो व उपादिन्नकतो वुट्ठाति नाम।

सोतापत्तिमग्गो चेत्थ अपायभवतो वुट्ठाति, सकदागामिमग्गो सुगतिकामभवेक-देसतो, अनागामिमग्गो कामभवतो, अरहत्तमग्गो रूपारूपभवतो सब्बभवेहि पि वुट्ठाति एवा ति वदन्ति। इमस्स पन'त्थस्साविभावनत्थं अयं पालि—"सोतापत्ति-मग्गञाणेन अभिसंखारविञ्ञाणस्स निरोधेन सत्त भवे ठपेत्वा अनमतग्गे संसारवट्टे येव उप्पज्जेय्युं, नामं च रूपं च एत्थेते निरुज्झन्ति वूपसमन्ति अत्थं गच्छन्ति पटिप्प-स्सम्भन्ति। सकदागामिमग्गञाणेन अभिसंखारविञ्ञाणस्स निरोधेन द्वे भवे ठपेत्वा पञ्चसु भवेसु येव उप्पज्जेय्युं, नामं च रूपं च एत्थेते निरुज्झन्ति वूपसमन्ति अत्थं गच्छन्ति पटिप्पस्सम्भन्ति। अनागामिमग्गञाणेन अभिसंखारविञ्ञाणस्स निरोधेन एकं भवं ठपेत्वा कामधातुया द्वीसु भवेसु येव उप्पज्जेय्युं, नामं च रूपं च एत्थेते निरुज्झन्ति वूसमन्ति अत्थं गच्छन्ति पटिप्पस्सम्भन्ति। अरहत्तमग्गञाणेन अभिसंखार-विञ्ञाणस्स निरोधेन रूपधातुया वा अरूपधातुया वा येव उप्पज्जेय्युं, नामं च रूपं च एत्थेते निरुज्झन्ति वूपसमन्ति अत्थं गच्छन्ति पटिप्पस्सम्भन्ति। अरहतो अनुपादि-सेसाय निब्बाणधातुया परिनिब्बायन्तस्स चरिमविञ्ञाणस्स निरोधेन पञ्ञा च सति च नामं च रूपं च एत्थेते निरुज्झन्ति वूपसमन्ति अत्थं गच्छन्ति पटिप्पस्सम्भन्ती" [　　] ति। अयं ताव निमित्ते विनिच्छयो।

'पटिपदा-पती'ति—एत्थ पन पटिपदा चलति न चलती ति ? चलति। तथा-गतस्स हि सारिपुत्तत्थेरस्स च चत्तारो पि मग्गा सुखापटिपदा खिप्पाभिञ्ञा अहेसुं। महामोग्गल्लानत्थेरस्स पठममग्गो सुखापटिपदो खिप्पाभिञ्ञो, उपरि तयो मग्गा दुक्खापटिपदा खिप्पाभिञ्ञा। कस्मा ? निद्दाभिभूतत्ता। सम्मासम्बुद्धो किर सत्ताहं दहरकुमारकं विय थेरं परिहरि। थेरो पि एकदिवसं निद्दायमानो निसीदि। अथ नं सत्था आह—"मोग्गल्लान, पचलायसि नो त्वं ब्राह्मणा" ति। एवरूपस्स पि महा-

---

एत्था ति चतूसु मग्गेसु। सब्बभवेहि पि वुट्ठाति एव अरहत्तमग्गे, इति वदन्ति आच-रिया। इमस्स पनत्थस्स उपादिन्नकपवत्ततो वुट्ठानसङ्खातस्स अत्थस्स विभावनत्थं अयं पाळि वेदितब्बा। एत्थेते ति एतस्मिं सोतापत्तिमग्गञाणे एते नामरूपधम्मा। चरिमविञ्ञाणस्सा ति चुतिचित्तस्स। एत्थेते[1] ति एतस्मि चुतिचित्तक्खणे एते (१३८-म०) पञ्ञादयो धम्मा। चरिमविञ्ञाणस्सा ति चुतिचित्तस्स[1]।

पटिपदा-पती ति एत्थ पन वचने विनिच्छयो वेदितब्बो। पटि····प०····न चलती ति

१-१. अयं पाठो सी० पोत्थके नत्थि।

भिञ्ञप्पत्तस्स सावकस्स पटिपदा चलति, सेसानं किं न चलिस्सती ति ? एकच्चस्स हि भिक्खुनो चत्तारो मग्गा दुक्खापटिपदा दन्धाभिञ्ञा, होन्ति, एकच्चस्स दुक्खापटिपदा खिप्पाभिञ्ञा, एकच्चस्स सुखापटिपदा दन्धाभिञ्ञा, एकच्चस्स सुखापटिपदा खिप्पाभिञ्ञा ति। एकच्चस्स पठममग्गो दुक्खापटिपदो दन्धाभिञ्ञो होति, दुतियमग्गो दुक्खापटिपदो खिप्पाभिञ्ञो, ततियमग्गो सुखापटिपदो दन्धाभिञ्ञो, चतुत्थमग्गो सुखापटिपदो खिप्पाभिञ्ञो ति।

यथा च पटिपदा एवं अधिपति पि चलति एव। एकच्चस्स हि भिक्खुनो चत्तारो पि मग्गा छन्दाधिपतेय्या होन्ति, एकच्चस्स विरियाधिपतेय्या, एकच्चस्स चित्ताधिपतेय्या, एकच्चस्स वीमंसाधिपतेय्या। एकच्चस्स पन पठममग्गो छन्दाधिपतेय्यो होति, दुतियो विरियाधिपतेय्यो, ततियो चित्ताधिपतेय्यो, चतुत्थो वीमंसाधिपतेय्यो ति।

पकिण्णककथा निट्ठिता।

पठममग्गो

इदानि यस्मा लोकुत्तरकुसलं भावेन्तो न केवलं उपनिज्झायनट्ठेन झानमेव भावेति, निय्यानट्ठेन पन मग्गं पि भावेति, उपट्ठानट्ठेन सतिपट्ठानं पि, पदहनट्ठेन सम्मप्पधानं पि, इज्झनट्ठेन इद्धिपादं पि, अधिपतियट्ठेन इन्द्रियं पि, अकम्पियट्ठेन बलं पि, बुज्झनट्ठेन बोज्झंगं पि, तथट्ठेन सच्चं पि, अविक्खेपट्ठेन समथं पि, सुञ्ञतट्ठेन धम्मं पि, रासट्ठेन खन्धं पि, आयतनट्ठेन आयतनं पि, सुञ्ञसभावनिस्सत्तट्ठेन धातुं पि, पच्चयट्ठेन आहारं पि, फुसनट्ठेन फस्सं पि, वेदयितट्ठेन वेदनं पि, संजाननट्ठेन सञ्ञं पि, चेतयितट्ठेन चेतनं पि, विजाननट्ठेन चित्तं पि भावेति, तस्मा तेसं एकूनवीसतिया नयानं दस्सनत्थं पुन **कतमे धम्मा कुसला** [ध० ८९] ति आदि वुत्तं।

एवं 'इदं पि भावेति, इदं पि भावेती' ति पुग्गलज्झासयेन चेव देसनाविलासेन च वीसति नया देसिता होन्ति। धम्मं सोतुं निसिन्नदेवपरिसाय हि ये उपनिज्झाय-

---

पुच्छा। परिहरीति रक्खति। त्वं ब्राह्मण, पचलायसि नो अक्खिदलानं पचलभावेन पवत्तसि नु। पपुब्ब-'चल'-कम्पने।

एकच्चस्स[1] हीति दळ्हीकरणं[1]।

पकिण्णककथावण्णना निट्ठिता।

पठममग्गवण्णना

निसिन्नदेवपरिसाय[2] हीति हिसद्दो वित्थारजोतको। तत्था ति झानादीसु। ते येवा ति दस नया[2]।

१-१. नत्थि—म०। २-२. नत्थि—म०।

नट्ठेन लोकुत्तरं 'ञानं' ति कथिते बुज्झन्ति, तेसं सप्पायवसेन ञानं ति कथितं····प० ····ये विजाननट्ठेन 'चित्तं' ति पि वुत्ते बुज्झन्ति, तेसं सप्पायवसेन चित्तं ति कथितं। अयमेत्थ 'पुग्गलज्झासयो'। **सम्मासम्बुद्धो** पन अत्तनो बुद्धसुबोधिताय दसबल-चतुवेसारज्ज-चतुपटिसम्भिदा-छ-असाधारणञाणयोगेन च देसनं यदिच्छकं नियमेत्वा दस्सेति। इच्छन्तो उपनिज्झायनट्ठेन लोकुत्तरं ञानं ति दस्सेति, इच्छन्तो निय्यानट्ठेन····प०····विजाननट्ठेन लोकुत्तरं चित्तं ति। अयं 'देसनाविलासो' नाम। तत्थ यथेव लोकुत्तरं ञानं ति वुत्तट्ठाने दस नया विभत्ता, एवं मग्गादीसु पि ते येव वेदितब्बा। इति वीसतिया ठानेसु दस दस कत्वा द्वे नयसतानि विभत्तानि होन्ति।

इदानि अधिपतिभेदं दस्सेतुं पुन **कतमे धम्मा कुसला** [ध० ८९] ति आदि आरद्धं। तत्थ छन्दं धुरं जेट्ठकं पुब्बंगमं कत्वा निब्बत्तितं ञानं **छन्दाधिपतेय्यं** नाम। सेसेसु पि एसेव नयो। इति पुरिमस्मिं सुद्धिके द्वे नयसतानि छन्दाधिपतेय्यादीसु द्वे द्वे ति नयसहस्सेन भाजेत्वा पठममग्गं दस्सेसि **धम्मराजा**।

पठममग्गो निट्ठितो

दुतियो मग्गो

इदानि दुतियमग्गादीनं दस्सनत्थं पुन **कतमे धम्मा कुसला** [ध० ९०] ति आदि आरद्धं। तत्थ **कामरागब्यापादानं तनुभावाया** [ध० ९०] ति एतेसं किलेसानं तनुभावत्थाय। तत्थ द्वीहि कारणेहि तनुभावो वेदितब्बो—अधिच्चुप्पत्तिया च परियुट्ठानमन्दताय च। सकदागामिस्स हि, वट्टानुसारिमहाजनस्सेव, किलेसा अभिण्हं न उप्पज्जन्ति, कदाचि कदाचि उप्पज्जन्ति; उप्पज्जन्ता पि विरलाकारा हुत्वा उप्पज्जन्ति, विरलवापितक्खेत्ते अंकुरा विय। उप्पज्जमाना पि, वट्टानुसारिमहाजनस्सेव, मद्दन्ता फरन्ता छादेन्ता अन्धकारं करोन्ता न उप्पज्जन्ति। द्वीहि पन मग्गेहि पहीनत्ता मन्दमन्दा उप्पज्जन्ति। तनुकाकारा हुत्वा उप्पज्जन्ति, अब्भपटलं विय मक्खिकापत्तं विय च।

तत्था[1] ति कतमे धम्मा ति आदिवचने[1] विनिच्छयो वेदितब्बो। द्वे द्वे नयसतानि।

पठममग्गवण्णना निट्ठिता

दुतियमग्गवण्णना

तत्था ति कतमे धम्मा ति आदिपदेसु, निद्धारणं। तत्था ति तनुभावाया ति वचने आधारो। अधिच्चुप्पत्तिया चा ति कदाचि उप्पत्तिया। परियुट्ठानमन्दताय[2] चा ति[2] परियुट्ठानानं मद्दन्तानं[3] किलेसानं मन्दताय। हि सच्चं, वट्टा····प०····जनस्स किलेसा अभिण्हं (१६६–सी०) उप्पज्जन्ति इव सकदागामिस्स किलेसा अभिण्हं न उप्पज्जन्ति।

१-१. नत्थि–म०। २-२. मन्दताया ति–सी०। ३. नत्थि–सी०।

तत्थ केचि थेरा वदन्ति—'सकदागामिस्स किलेसा किञ्चा पि चिरेन उप्पज्जन्ति, बहला व हुत्वा उप्पज्जन्ति, तथा हि'स्स पुत्ता च धीतरो च दिस्सन्ती' ति। एतं पन अप्पमाणं। पुत्तधीतरो हि अंगपच्चंगपरामसनमत्तेन पि होन्ति। द्वीहि पन मग्गेहि पहीनत्ता नत्थि किलेसानं बहलत्ता ति। द्वीहि एव कारणेहि'स्स किलेसानं तनुभावो वेदितब्बो—अधिच्चुप्पत्तिया च परियुट्ठानमन्दताय चा ति। **दुतियाया** [ध० ९०] ति गणनावसेना पि दुतियुप्पत्तिवसेना पि दुतियाय। **भूमिया पत्तिया** ति सामञ्ञफलस्स पटिलाभत्थाय। ततियचतुत्थासु पि एसेव नयो। विसेसमत्तं येव पन वक्खाम। **अञ्ञिन्द्रियं** [ध० ९१] ति आजाननकं इन्द्रियं। पठममग्गेन ञातमरियादं अनतिक्कमित्वा तेसं येव तेन मग्गेन ञातानं चतुसच्चधम्मानं जाननकं इन्द्रियं ति वुत्तं होति। निद्देसवारे पि'स्स इमिना पि नयेन अत्थो वेदितब्बो। कोट्ठासवारे इमिना पि सद्धिं नविन्द्रियानि होन्ति। सेसं पुरिमनयेनेव वेदितब्बं।

दुतियमग्गो निट्ठितो।

ततियो मग्गो

ततिये **अनवसेसप्पहानाया** [ध० ९१] ति तेसं येव सकदागामिमग्गेन तनुभूतानं संयोजनानं निस्सेसपजहनत्थाय।

चतुत्थो मग्गो

चतुत्थे **रूपराग-अरूपराग-मान-उद्धच्च-अविज्जाय अनवसेसप्पहानाया** [ध० ९१] ति एतेसं पञ्चन्नं उद्धंभागियसंयोजनानं निस्सेसपजहनत्थाय। तत्थ **रूपरागो** पि रूपभवे छन्दरागो। **अरूपरागो** ति अरूपभवे छन्दरागो। **मानो** ति अरहत्तमग्गवज्झको मानो एव। तथा **उद्धच्चाविज्जा**। इमेसु पन द्वीसु मग्गेसु नवमं अञ्ञिन्द्रियमेव होति। सब्बमग्गेसु पदपटिपाटिया समसट्ठि पदानि, चतूहि अपण्णकंगेहि सद्धिं चतुसट्ठि होन्ति। असंभिन्नतो पन तेत्तिंस। कोट्ठासवार-सुञ्ञतवारा पाकतिका

तत्था ति तनुभावाया ति वचने, वदन्तीति पदे आधारो। तथा हिस्सा ति तथा हि सच्चं, अस्स सकदागामिस्स। नि····प०····पिस्सा ति अस्स अञ्ञिन्द्रियस्स। इमिना ति अञ्ञिन्द्रियेन।

दुतियमग्गवण्णना निट्ठिता

चतुत्थमग्गवण्णना

तत्था ति रूपरागादीसु। इमेसं येवा ति चतुन्नं मग्गानं। इधा ति धम्मसङ्गणियं।

एव। यथा च पठममग्गे एवं दुतियादीसु पि नयसहस्समेवा ति चत्तारो मग्गे चतूहि नयसहस्सेहि भाजेत्वा दस्सेसि **धम्मराजा**। सच्चविभंगे पन सट्ठि नयसहस्सानि लोकुत्तरानि इमेसं येव वसेन निक्खित्तानि। **सतिपट्ठानविभंगे** वीसतिनयसहस्सानि लोकुत्तरानि, **सम्मप्पधानविभंगे** वीसति, **इद्धिपादविभंगे** द्वत्तिस, **बोज्झङ्गविभङ्गे** द्वत्तिस, **मग्गविभंगे** अट्ठवीसति नयसहस्सानि लोकुत्तरानि इमेसं येव वसेन निक्खित्तानि। इध पन चतूसु मग्गेसु चत्तारि येव नयसहस्सानि।

तेसु पठमज्झानिके पठममग्गे अट्ठङ्गानि भाजितानि; तथा दुतियादीसु। तत्थ पठममग्गे सम्मादिट्ठि मिच्छादिट्ठिं पजहती ति सम्मादिट्ठि। सम्मासंकप्पादयो पि मिच्छासंकप्पादीनं पजहनट्ठेन वेदितब्बा। एवं सन्ते 'पठममग्गेनेव द्वासट्ठिया दिट्ठिगतानं पहीनत्ता उपरिमग्गत्तयेन पहातब्बा दिट्ठि नाम नत्थि। तत्थ सम्मादिट्ठी ति नामं कथं होती' ति? 'यथा विसं अत्थि वा, होतु मा वा, अगदो अगदो त्वेव वुच्चति, एवं मिच्छादिट्ठि अत्थि वा, होतु मा वा, अयं सम्मादिट्ठि येव नाम'। 'यदि एवं नाममत्तमेवेतं होति, उपरिमग्गत्तये पन सम्मादिट्ठिया किच्चाभावो आपज्जति, मग्गङ्गानि न परिपूरेन्ति, तस्मा सम्मादिट्ठि सकिच्चका कातब्बा मग्गङ्गानि पूरेतब्बानी'ति।

सकिच्चका चेत्थ सम्मादिट्ठि यथालाभनियमेन दीपेतब्बा। उपरिमग्गत्तयवज्झो हि एको मानो अत्थि, सो दिट्ठिट्ठाने तिट्ठति। सा तं मानं पजहती ति सम्मादिट्ठि। सोतापत्तिमग्गस्मि हि सम्मादिट्ठि मिच्छादिट्ठि पजहति। सोतापन्नस्स पन सकदागामिमग्गवज्झो मानो अत्थि, तं मानं पजहती ति सम्मादिट्ठि। तस्सेव सत्त-अकुसलचित्त-सहजातो संकप्पो अत्थि। तेहेव चित्तेहि वाचंगचोपनं अत्थि, कायङ्गचोपनं अत्थि, पच्चयपरिभोगो अत्थि, सहजातवायामो अत्थि, असतिभावो अत्थि, सहजातचित्तेकग्गता अत्थि। एते मिच्छासंकप्पादयो नाम सकदागामिमग्गे संकप्पादयो। तेसं पहानेन सम्मासंकप्पादयो ति वेदितब्बा। एवं सकदागामिमग्गे अट्ठङ्गानि सकिच्चकानि कत्वा आगतानि। सकदागामिस्स अनागामिमग्गवज्झो मानो अत्थि। सो दिट्ठिट्ठाने तिट्ठति। तस्सेव सत्तहि चित्तेहि सहजाता संकप्पादयो। तेसं पहानेन

तेसू ति पठममग्गादीसु। तत्था ति सम्मादिट्ठि-आदीसु[1]। एवं ति[1] सम्मादिट्ठि[2] मिच्छादिट्ठि[3] पजहतीति[4] वचने। तत्था ति उपरिमग्गत्तये। अलगद्दो ति[5] सप्पो। यदेवं ति मिच्छादिट्ठि अत्थि वा ति[6] आदिवचनं यदि सिया एतं सम्मादिट्ठीति वचनं नाममत्तमेव[7] होति।

एत्था ति उपरिमग्गत्तये। तस्सेवा ति सोतापन्नस्स। पच्चयपरिभोगो ति चीवरादि-

---

१-१. नत्थि–सी०। २. सम्मादिट्ठि–म०। ३. नत्थि–म०। ४. पज्जहतीति–सी०। ५. अगद्दो–सी०। ६. येवा ति–सी०। ७. नाममग्गमेव–सी०।

अनागामिमग्गे अट्ठन्नं अंगानं सकिच्चकता वेदितब्बा। अनागामिस्स अरहत्तमग्गवज्झो मानो अत्थि। सो दिट्ठिट्ठाने तिट्ठति। यानि पन'स्स पञ्च अकुसलचित्तानि, तेहि सहजाता संकप्पादयो। तेसं पहानेन अरहत्तमग्गे अट्ठन्नं अंगानं सकिच्चकता वेदितब्बा।

इमेसु चतूसु मग्गेसु पठममग्गेन चत्तारि सच्चानि दिट्ठानि। 'उपरिमग्गत्तयं दिट्ठकमेव पस्सति, नो अदिट्ठकं पस्सती'ति अयं आचरियानं समान'ट्ठकथा। वितण्डवादी पनाह 'अदिट्ठं पस्सती' ति। सो वत्तब्बो–'पठमग्गे कतमं इन्द्रियं भाजेसी' ति? जानमानो 'अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं'ति वक्खति। उपरिमग्गेसु कतरं?' ति वुत्ते पि 'अञ्ञिन्द्रियं'ति वक्खति। सं वत्तब्बो—'अदिट्ठसच्चदस्सने सति उपरिमग्गेसु पि अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियमेव भाजेहि। एवं ते पञ्हो समेस्सती' ति। 'किलेसे पन अञ्ञे अञ्ञो पजहति; पहीने एव पजहती' ति? 'अञ्ञे अञ्ञो पजहती' ति। 'यदि अञ्ञे अञ्ञो, अप्पहीने किलेसे पजहति। सच्चानि पि अदिट्ठानेव पस्सती'ति एवंवादी पुग्गलो इदं पुच्छितब्बो—'सच्चानि नाम कती' ति? जानन्तो 'चत्तारी' ति वक्खति। सो वत्तब्बो—'तव वादे सोळस सच्चानि आपज्जन्ति। त्वं बुद्धेहि पि अदिट्ठं पस्ससि। बहुसच्चको नाम त्वं। एवं मा गण्हि। सच्चदस्सनं नाम अपुब्बं नत्थि, किलेसे पन अप्पहीने पजहती'ति।

तत्थ सच्चदस्सनस्स अपुब्बाभावे पेलोपमं नाम गहितं—एकस्स च किर चत्तारो रतनपेला सारगब्भे ठपिता। सो रत्तिभागे पेलासु उप्पन्नकिच्चो द्वारं विवरित्वा, दीपं जालेत्वा, दीपेन विहते अन्धकारे, पेलासु पाकटभावं गतासु, तासु किच्चं कत्वा द्वारं पिदहित्वा गतो। पुन अन्धकारो अवत्थरि। दुतियवारे पि ततियवारे पि तथेव अकासि। चतुत्थवारे द्वारे विवटे अन्धकारे पेला न पञ्ञायन्ती ति वीमंसन्तस्सेव सुरियो उग्गञ्छि, सुरियोभासेन विहते अन्धकारे पेलासु किच्चं कत्वा पक्कमि।

तत्थ चत्तारो पेला विय चत्तारि सच्चानि। तासु किच्चे उप्पन्ने द्वारविवरण-

---

पच्चयानं परिभोगो। एते ति सङ्कप्पादयो धम्मा। तस्से वा ति सकदागामिस्स। अस्सा ति अनागामिस्स।

इमेसु मग्गेसू ति निद्धारणे भुम्मं। अदिट्ठकं पस्सति इति पुच्छा। एवं ते ति एवं उपरिमग्गेसु पि अनञ्ञातञ्ञस्सामोतिन्द्रियस्स भाजने ते तव पञ्हो समेस्सति। किलेसे पन....प० ....पजहति इति पुच्छा।

तत्था ति तस्मिं मग्गाधिकारे। एकस्सा ति एकस्स जनस्स। सारगब्भे ति उत्तमधनथपितगब्भे[1]।

तत्था[2] ति पेळादीसु[2]। सोतापत्तिमग्गस्सा ति पदं विपस्सना ति पदे सम्बन्धो।

---

१. उत्तमधनठपितपधानगब्भे–सी०। २-२. नत्थि–सी०।

कालो विय सोतापत्तिमग्गस्स विपस्सनाभिनीहरणकालो । अन्धकारं विय सच्चच्छादकतमं । दीपोभासो विय सोतापत्तिमग्गोभासो । विगते अन्धकारे तस्स पुरिसस्स पेलानं पाकटभावो विय मग्गञाणस्स सच्चानं पाकटभावो । मग्गञाणस्स पाकटानि पन मग्गसमङ्गिस्स पुग्गलस्स पाकटानेव होन्ति । पेलासु किच्चं कत्वा गतकालो विय सोतापत्तिमग्गस्स अत्तना पहातब्बकिलेसे पजहित्वा निरुद्धकालो । पुन अन्धकारावत्थरणं विय उपरिमग्गत्तयवज्झसच्चच्छादकतमं । दुतियवारे द्वारविवरणकालो विय सकदागामिमग्गस्स विपस्सनाभिनीहरणकालो । दीपोभासो विय सकदागामिमग्गोभासो । पेलासु किच्चं कत्वा गतकालो विय सकदागामिमग्गस्स अत्तना पहातब्बकिलेसे पजहित्वा निरुद्धकालो । पुन अन्धकारावत्थरणं विय उपरिमग्गद्वयवज्झसच्चच्छादकतमं । ततियवारे द्वारविवरणकालो विय अनागामिमग्गस्स विपस्सनाभिनीहरणकालो । दीपोभासो विय अनागामिमग्गोभासो । पेलासु किच्चं कत्वा गतकालो विय अनागामिमग्गस्स अत्तना पहातब्बकिलेसे पजहित्वा निरुद्धकालो । पुन अन्धकारावत्थरणं विय उपरि अरहत्तमग्गवज्झसच्चच्छादकतमं । चतुत्थवारे द्वारविवरणकालो विय अरहत्तमग्गस्स विपस्सनाभिनीहरणकालो । सुरियुग्गमनं विय अरहत्तमग्गुप्पादो । अन्धकारविधमनं विय अरहत्तमग्गस्स सच्चच्छादकतमविनोदनं । विहते अन्धकारे तस्स पेलानं पाकटभावो विय अरहत्तमग्गञाणस्स चतुन्नं सच्चानं पाकटभावो । ञाणस्स पाकटानि पन पुग्गलस्स पाकटानेव होन्ति । पेलासु किच्चं कत्वा गतकालो विय अरहत्तमग्गस्स सब्बकिलेसखेपनं । सुरियुग्गमनतो पट्ठाय आलोकस्सेव पवत्तिकालो विय अरहत्तमग्गस्स उप्पन्नकालतो पट्ठाय पुन सच्चच्छादकतमाभावो । इदं ताव सच्चदस्सनस्स अपुब्बाभावे ओपम्मं । दिट्ठक्कमेव हि पस्सति ।

'किलेसे पन अञ्ञे अञ्ञो पजहती'ति एत्थ खारोपमं नाम गहितं । एको पुरिसो किलिट्ठं वत्थं रजकस्स अदासि । रजको ऊसरखारं छारिखारं गोमयखारं ति तयो खारे दत्वा खारेहि खादितभावं ञत्वा उदके विक्खालेत्वा ओळारिकोळारिकं मलं पवाहेसि । ततो न ताव परिसुद्धं ति दुतियं पि तथेव खारे दत्वा, उदके विक्खालेत्वा, ततो नातिसण्हतरं मलं पवाहेसि । ततो न ताव परिसुद्धं ति ततियं पि ते खारे दत्वा उदके विक्खालेत्वा ततो सण्हतरं मलं पवाहेसि । ततो न ताव परिसुद्धं ति चतुत्थं पि ते खारे दत्वा, उदके विक्खालेत्वा अंसु-अब्भन्तरगतं पि निस्सेसं मलं

विपस्सना ति नीहरणकालो ति विपस्सनाय अभिनीहारस्स करणस्स कालो । किं पन सच्चानि पुग्गलस्स[1] पाकटानि होन्तीति आह—ञाणपाकटानीति[2] आदि ।

ऊसखारं[3] ति लवणमत्तिकं । उसति[4] रुजति एतेना ति ऊसो[5] । 'उस'—रुजायं । खारतीति खारो,[6] ऊसो[7] एव खारो[8] । खारेहीति पदं खादित इति पदे ततियाकत्ता । ततो ति

१. मग्गस्स–सी० । २. मग्गञाणस्सा ति–सी० । ३. ओसखारं–सी० । ४. ओसति–सी० । ५. ओसो–सी० । ६. ०दस्सरो–सी० । ७. ओसो–सी० । ८. ०ओसखारो–सी० ।

पवाहेत्वा सामिकस्स अदासि। सो गन्धकरण्डके पक्खिपित्वा इच्छितिच्छितकाले परिदहति।

तत्थ किलिट्ठवत्थं विय किलेसानुगतं चित्तं। तिविधखारदानकालो विय तीसु अनुपस्सनासु कम्मप्पवत्तनकालो। उदके विक्खालेत्वा ओळारिकोळारिकमलप्पवाहनं विय सोतापत्तिमग्गेन पञ्चकिलेसक्खेपनं। दुतियं पि तेसं खारानं अनुप्पदानं विय 'न ताव परिसुद्धं इदं चित्तं'ति तासु येव तीसु अनुपस्सनासु कम्मप्पवत्तनं। ततो नाति-सण्हतरमलप्पवाहनं विय सकदागामिमग्गेन ओळारिकसंयोजनद्वयक्खेपनं। 'न ताव परिसुद्धं वत्थं'ति पुन खारत्तयदानं विय 'न ताव परिसुद्धं इदं चित्तं'ति तासु येव तीसु अनुपस्सनासु कम्मप्पवत्तनं। ततो सण्हतरमलप्पवाहनं विय अनागामिमग्गेन अणुसह-गतसंयोजनद्वयक्खेपनं। 'न ताव परिसुद्धं वत्थं'ति पुन खारत्तयदानं विय 'न ताव परिसुद्धं इदं चित्तं'ति तासु येव तीसु अनुपस्सनासु कम्मप्पवत्तनं। ततो विक्खालनेन अंसु-अब्भन्तरगते मले पवाहेत्वा परिसुद्धस्स रजतपटसदिसस्स गन्धकरण्डके निक्खित्तस्स वत्थस्स इच्छितिच्छितक्खणे परिदहनं विय अरहत्तमग्गेन अट्ठन्नं किलेसानं खेपितत्ता परिसुद्धस्स खीणासवचित्तस्स इच्छितिच्छितक्खणे फलसमापत्तिविहारेन वीतिनामनं। इदं 'अञ्ञे अञ्ञो किलेसे पजहती'ति एत्थ ओपम्मं।

वुत्तं पि चेतं—"सेय्यथा पि आवुसो, वत्थं संकिलिट्ठं मलग्गहितं, तमेनं सामिका रजकस्स अनुप्पदज्जेय्युं। तमेनं रजको दक्खो छेको ऊसे वा खारे वा गोमये वा सम्मद्दित्वा अच्छे उदके विक्खालेति। किञ्चा पि तं होति वत्थं परिसुद्धं परियो-दातं, अथ ख्वस्स होति येव 'अणुसहगतो ऊसगन्धो वा खारगन्धो वा गोमयगन्धो वा असमूहतो'। तमेनं रजको सामिकानं देति। तमेनं सामिका गन्धपरिभाविते करण्डके निक्खिपन्ति'। यो पि'स्स होति अणुसहगतो ओसगन्धो वा खारगन्धो वा गोमयगन्धो वा असमूहतो, सो पि'स्स समुग्घातं गच्छति। एवमेव खो आवुसो, किञ्चा पि अरिय-सावकस्स पञ्च ओरंभागियानि संयोजनानि पहीनानि भवन्ति, अथ ख्वस्स होति येव पञ्चसु उपादानक्खन्धेसु अणुसहगतो 'अस्मी'ति मानो, 'अस्मी'ति छन्दो, 'अस्मी'ति अनुसयो असमूहतो, सो अपरेन समयेन पञ्चसु उपादानक्खन्धेसु उदयब्बयानुपस्सी विहरति—'इति रूपं, इति रूपस्स समुदयो, इति रूपस्स अत्थंगमो; इति वेदना····प० ····इति सञ्ञा····प०····इति संखारा····प०····इति विञ्ञाणं, इति विञ्ञाणस्स

तदनन्तरं। ताव पठमं इदं वत्थं न परिसुद्धं इति मनसिकत्वा। अंसु-अब्भन्तरगतम्पी ति अंसुनो अब्भन्तरे पवत्तम्पि। सो ति सामिको।

तत्था ति किलिट्ठवत्थादीसु, निद्धारणं।

वुत्तं पि चेतं ति एतं (१३९–म०) सेय्यथा पी ति आदिवचनं मज्झिमनिकाये मूल-परियायवग्गे[1] भगवता वुत्तं[2] पि च। ऊसे ति[3] लवणमत्तिकायं। खारे ति छारिकायं[4]।

१. ०सुत्ते–सी०। २. नत्थि–म०। ३. ओसे ति–सी०। ४. खारिकायं–सी०।

समुदयो, इति विञ्ञाणस्स अत्थङ्गमो' ति। तस्सिमेसु पञ्चसु उपादानक्खन्धेसु उदयब्बयानुपस्सिनो विहरतो यो पि'स्स होति पञ्चसु उपादानक्खन्धेसु अणुसहगतो 'अस्मी' ति मानो, 'अस्मी' ति छन्दो, 'अस्मी' ति अनुसयो असमूहतो, सो पि'स्स समुग्घातं गच्छती" [सं० २-३.३५०-३५१] ति।

तत्थ सोतापत्तिमग्गेन पञ्च अकुसलचित्तानि पहीयन्ति सद्धिं चित्तङ्गवसेन उप्पज्जनकपापधम्मेहि। सकदागामिमग्गेन द्वे सोमनस्ससहगतचित्तानि तनूनि भवन्ति सद्धिं चित्तंगवसेन उप्पज्जनकपापधम्मेहि। अनागामिमग्गेन तानि येव पहीयन्ति सद्धिं सम्पयुत्तधम्मेहि। अरहत्तमग्गेन पञ्च अकुसलचित्तानि पहीयन्ति सद्धिं चित्तङ्गवसेन उप्पज्जनकपापधम्मेहि। इमेसं द्वादसन्नं अकुसलचित्तानं पहीनकालतो पट्ठाय खीणासवस्स चित्तङ्गवसेन पुन पच्छतो पवत्तनकिलेसो नाम न होति।

तत्रिदं ओपम्मं—एको किर महाराजा पच्चन्ते आरक्खं दत्वा महानगरे इस्सरियं अनुभवन्तो वसति। अथ'स्स पच्चन्तो कुप्पितो। तस्मिं समये द्वादस चोरजेट्ठका अनेकेहि पुरिससहस्सेहि सद्धिं रट्ठं विलुम्पन्ति। पच्चन्तवासिनो महामत्ता 'पच्चन्तो कुप्पितो' ति रञ्ञो पहिणिंसु। राजा 'विस्सत्था गण्हथ, अहं तुम्हाकं कत्तब्बं करिस्सामी' ति सासनं पहिणि। ते पठमसम्पहारेनेव अनेकेहि पुरिससहस्सेहि सद्धिं पञ्च चोरजेट्ठके घातयिंसु। सेसा सत्त जना अत्तनो अत्तनो परिवारे गहेत्वा पब्बतं पविसिंसु। अमच्चा तं पवत्तिं रञ्ञो पेसयिंसु। राजा 'तुम्हाकं कत्तब्बयुत्तं अहं जानिस्सामि, ते पि गण्हथा' ति धनं पहिणि। ते दुतियसम्पहारेनेव द्वे चोरजेट्ठके पहरिंसु, परिवारे पि तेसं दुब्बले अकंसु। ते सब्बे पि पलायित्वा पब्बतं पविसिंसु। तं पि पवत्तिं अमच्चा रञ्ञो पेसयिंसु। पुन राजा 'विस्सत्था गण्हन्तू' ति धनं पहिणि। ते ततियसम्पहारेन सद्धिं सहायपुरिसेहि द्वे चोरजेट्ठके घातयित्वा तं पवत्तिं रञ्ञो पेसयिंसु। पुन राजा 'अवसेसे विस्सत्था गण्हन्तू' ति धनं पेसेसि। ते चतुत्थसम्पहारेन स-परिवारे पञ्च चोरजेट्ठके घातयिंसु। द्वादसन्नं चोरजनानं घातितकालतो पट्ठाय कोचि चोरो नाम नत्थि। खेमा जनपदा उरे पुत्ते नच्चन्ता मञ्ञे विहरन्ति। राजा विजितसंगामेहि योधेहि परिवुतो वरपासादगतो महासम्पत्तिं अनुभवि।

अथ खवस्सा ति अथ खो सच्चतो अस्स वत्थस्स। यो पिस्सा ति अस्स वत्थस्स यो पि ऊसगन्धो[1]। अथ खवस्सा[2] ति अस्स अरियसावकस्स।

तत्था ति सोतापत्तिमग्गादीसु।

तत्रा ति (१६७-सी०) चतुन्नं मग्गानं अकुसलपहाने। तेसं ति द्विन्नं चोरजेट्ठकानं[2]। नच्चन्ता मञ्ञे ति नच्चापेन्तो विय।

---

१. ओसगन्धो-सी०। २-२. नत्थि-म०।

तत्थ महन्तो राजा विय **धम्मराजा**। पच्चन्तवासिनो अमच्चा विय योगावचरकुलपुत्ता। द्वादस चोरजेट्ठका विय द्वादस अकुसलचित्तानि। तेसं सहाया अनेकसहस्सपुरिसा विय चित्तङ्गवसेन उप्पज्जनकपापधम्मा। रञ्ञो पच्चन्तो कुप्पितो ति पहितकालो विय आरम्मणे किलेसेसु उप्पन्नेसु 'भन्ते, किलेसो मे उप्पन्नो' ति **सत्थु** आरोचनकालो। 'विस्सत्था गण्हन्तू' ति धनदानं विय 'किलेसे निग्गण्ह भिक्खू' ति **धम्मरञ्ञो** कम्मट्ठानाचिक्खनं। सपरिवारानं पञ्चन्नं चोरजेट्ठकानं घातितकालो विय सोतापत्तिमग्गेन ससम्पयुत्तानं पञ्चन्नं अकुसलचित्तानं पहानं। पुन रञ्ञो पवत्तिपेसनं विय **सम्मासम्बुद्धस्स** पटिलद्धगुणारोचनं। 'सेसके गण्हन्तू' ति पुन धनदानं विय **भगवतो** सकदागामिमग्गस्स विपस्सनाचिक्खनं। दुतियसम्पहारेन सपरिवारानं द्विन्नं चोरजेट्ठकानं दुब्बलीकरणं विय सकदागामिमग्गेन सम्पयुत्तानं द्विन्नं दोमनस्सचित्तानं तनुभावकरणं। पुन रञ्ञो पवत्तिपेसनं विय **सत्थु** पटिलद्धगुणारोचनं। 'विस्सत्था गण्हन्तू' ति पुन धनदानं विय **भगवतो** अनागामिमग्गस्स विपस्सनाचिक्खनं। ततियसम्पहारेन सपरिवारानं द्विन्नं चोरजेट्ठकानं घातनं विय अनागामिमग्गेन सम्पयुत्तानं द्विन्नं दोमनस्सचित्तानं पहानं। पुन रञ्ञो पवत्तिपेसनं विय **तथागतस्स** पटिलद्धगुणारोचनं। 'विस्सत्था गण्हन्तू' ति पुन धनदानं विय **भगवतो** अरहत्तमग्गस्स विपस्सनाचिक्खनं। चतुत्थसम्पहारेन सपरिवारानं पञ्चन्नं जेट्ठकानं घातितकालतो पट्ठाय जनपदस्स खेमकालो विय अरहत्तमग्गेन स-सम्पयुत्तेसु पञ्चसु अकुसलचित्तेसु पहीनेसु द्वादसन्नं अकुसलचित्तानं पहीनकालतो पट्ठाय पुन चित्तङ्गवसेन उप्पज्जनकस्स अकुसलधम्मस्स अभावो। रञ्ञो विजितसंगामस्स अमच्चगणपरिवुतस्स वरपासादे महासम्पत्ति-अनुभवनं विय खीणासवपरिवुतस्स **धम्मरञ्ञो** सुञ्ञत-अनिमित्त-अप्पणिहितभेदेसु समापत्तिसुखेसु इच्छितिच्छितफलसमापत्तिसुखानुभवनं वेदितब्बं ति।

कुसला धम्मा ति पदस्स वण्णना निट्ठिता।

तत्था ति राजादीसु, निद्धारणं।

चतुत्थमग्गवण्णना निट्ठिता

कुसलकथावण्णना निट्ठिता

●

अकुसला धम्मा

इदानि अकुसलपदं भाजेत्वा दस्सेतुं **कतमे धम्मा अकुसला** [ध० ९२] ति आदि आरद्धं। तत्थ धम्मववत्थानादिवारप्पभेदो च हेट्ठा आगतानं पदानं अत्थविनिच्छयो च हेट्ठावुत्तनयेनेव वेदितब्बो। तत्थ तत्थ पन विसेसमत्तमेव वण्णयिस्साम। तत्थ समयववत्थाने ताव यस्मा, कुसलस्स विय, अकुसलस्स भूमिभेदो नत्थि, तस्मा एकन्तकामावचरं पि समानं एतं 'कामावचरं' ति न वुत्तं। **दिट्ठिगतसम्पयुत्तं** [ध० ९२] ति एत्थ दिट्ठि येव दिट्ठिगतं 'गूथगतं मुत्तगतं' ति आदीनि विय। गन्तब्बाभावतो वा दिट्ठिया गतमत्तमेवेतं ति पि दिट्ठिगतं। तेन सम्पयुत्तं ति दिट्ठिगतसम्पयुत्तं।

तत्थ असद्धम्मसवनं, अकल्याणमित्तता, अरियानं अदस्सनकामतादीनि अयोनिसो मनसिकारो ति एवमादीहि कारणेहि इमस्स दिट्ठिगतसंखातस्स मिच्छादस्सनस्स उप्पत्ति वेदितब्बा। ये हि एते दिट्ठिवादपटिसंयुत्ता असद्धम्मा तेसं बहुमानपुब्बंगमेन अतिक्कन्तमज्झत्तेन उपपरिक्खारहितेन सवनेन, ये च दिट्ठिविपन्ना अकल्याणमित्ता तं-सम्पवङ्कसंखाताय अकल्याणमित्तताय, बुद्धादीनं अरियानं चेव सप्पुरिसानं च अदस्सनकामताय चतुसतिपट्ठानादिभेदे अरियधम्मे चेव सप्पुरिसधम्मे च अकोविदत्तेन पातिमोक्खसंवर-इन्द्रियसंवर-सतिसंवर-ञाणसंवर-पहानसंवरप्पभेदे

---

१. चित्तुप्पादकण्डं अकुसलकथावण्णना

तत्था ति अकुसला ति आदि वचने। तत्थ तत्था ति तस्मिं तस्मिं ठाने। तत्था ति अकुसलाधिकारे, न वुत्तं ति पदे आधारो। दिट्ठि··· प०··· एत्थ विनिच्छयो वेदितब्बो।

तत्था ति दिट्ठिगतसम्पयुत्तं ति वचने, वेदितब्बो ति पदे आधारो। ये हीति आदि वित्थारो। हि सच्चं दिट्ठि····प०····ये एते असद्धम्मा तेसं असद्धम्मानं, सवनेना ति पदे कम्मं। बहुमानं पुब्बङ्गमं यस्स तं बहुमानपुब्बङ्गमं। अतिक्कन्तं अज्झत्तं उपपरिक्खाय विरहितं उप····प०····हितं। सवनेना ति पदं उप्पज्जतीति पदे ततियाविसेसनं। दिट्ठिविपन्ना सम्मादिट्ठि-अपरिपुण्णा ये च अकल्याणमित्ता तं····प०····ताय तेसं अकल्याणमित्तानं सेवनसङ्खाता। अ···प०····ताय एतं उप्पज्जति। ये[1] च पी ति च सद्दो सवनेन च अकल्याणमित्तताय चा ति योजेतब्बो। ये वा पी ति अत्थि वासद्दो चसद्दत्थो। पातिमोक्खसंवरो सकलविनयपिटकपरियापन्नं सिक्खापदसीलं[1]। संवरभेदसङ्खातेना ति संवरस्स भिज्जनसङ्खातेन। तेहेव कारणेहीति पदं परिभावितेना ति पदे कत्ता। कुच्छितं तुहतीति[2] कोतूहलं[3]। 'तुह'-हिंसायं[4]। **यवादिना** अलोपो[5]।

१-१. सी० पोत्थके अयं पाठो न दिस्सतेव। २. तुळतीति—सी०। ३. कोतूहळं—सी०। ४. तुळ-हिंसायं—सी०। ५. गलो—सी०।

अरियधम्मे चेव सप्पुरिसधम्मे च संवरभेदसंखातेन अविनयेन तेहेव कारणेहि परिभावितेन अयोनिसो-मनसिकारेन कोतूहलमंगलादिपसुतताय च एतं उप्पज्जती ति वेदितब्बं। असंखारभावो पन'स्स चित्तस्स हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बो।

धम्मुद्देसवारे **फस्सो** [ध० ९२] ति अकुसलचित्तसहजातो फस्सो। वेदनादीसु पि एसेव नयो। इति अकुसलमत्तमेव एतेसं पुरिमेहि विसेसो। **चित्तस्सेकग्गता होती** ति पाणातिपातादीसु पि अविक्खित्तभावेन चित्तस्स एकग्गता होति। मनुस्सा हि चित्तं समादियित्वा अविक्खित्ता हुत्वा अविरज्झमानानि सत्थकानि पाणसरीरेसु निपातेन्ति, सुसमाहिता परसन्तकं हरन्ति, एकरसेन चित्तेन मिच्छाचारं आपज्जन्ति। एवं अकुसलप्पवत्तियं पि चित्तस्स एकग्गता होति। **मिच्छादिट्ठी** [ध० ९२] ति अ-याथाव-दिट्ठि, विरज्झित्वा गहणतो वा वितथा दिट्ठी ति मिच्छादिट्ठि। अनत्थावहत्ता पण्डितेहि जिगुच्छिता दिट्ठी ति पि मिच्छादिट्ठि। **मिच्छासंकप्पादीसु** पि एसेव नयो। अपि च मिच्छा पस्सन्ति ताय, सयं वा मिच्छा पस्सति, मिच्छादस्सनमत्तमेव वा एसा ति मिच्छादिट्ठि। सा अयोनिसो-अभिनिवेसलक्खणा, परामासरसा, मिच्छाभिनिवेसपच्चुपट्ठाना, अरियानं अदस्सनकामतादिपदट्ठाना; परमं वज्जं ति दट्ठब्बा। मिच्छासंकप्पादीसु 'मिच्छा'ति पदमत्तमेव विसेसो। सेसं कुसलाधिकारे वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

अहिरिकबलं अनोत्तप्पबलं ति एत्थ बलत्थो निद्देसवारे आविभविस्सति। इतरेसु पन—न हिरियती ति अहिरिको। अहिरिकस्स भावो **अहिरिकं**। न ओत्तप्पं **अनोत्तप्पं**। तेसु अहिरिकं कायदुच्चरितादीहि अजिगुच्छनलक्खणं, अलज्जनलक्खणं

वण्णविपरियायो[1]। पसुतताय[2] चा ति[2] चसद्दो अदस्सनकामताय[3] च अकोविदत्तेन च अविनयेन च अयो····प०····रेन च कोतू····प०····योजेतब्बो।[3]

एतेसं ति फस्सादीनं। पाणा····प०····दीसु पी ति अपिसद्दो कुसलप्पवत्तिं अपेक्खति। मनुस्सा हीति आदि दळ्हीकरणं। पाणसरीरेसू ति सत्तानं सरीरेसु। एकरसेना ति एकसभावेन। मिच्छा पस्सन्तीति धम्मसभावस्स विपरीतवसेन अनिच्चं निच्चादिवसेन पस्सन्ति। अयोनिसो अभिनिवेसो ति उप्पथाभिनिवेसो। परामासो ति धम्मसभावं (१४०-म०) अतिक्कमित्वा परतो मिच्छादितो परपच्चयतो आमसनं[4]। मिच्छाभिनिवेसं ति विपरीतगाहवसेन इदमेव सच्चं मोघमञ्ञं ति अभिनिविसनं। अरियानं अदस्सनकामतादीति आदिसद्देन सद्धम्मस्स असोतुकामतादिं सङ्गण्हाति।

इतरेसू ति अहिरीकं अनोत्तप्पं ति पदेसु अत्थो वेदितब्बो। न हिरीयति न लज्जति। अहिरीको ति पुग्गलो धम्मसमूहो (१६८-सी०) वा। अहिरिक्कं ति वत्तब्बे एकस्स ककारस्स लोपं कत्वा अहिरीकं ति वुत्तं। न ओत्तप्पं ति ओत्तप्पस्स पटिपक्खभूतं धम्ममाह। अजिगुच्छनं

१. ०यदादिना अलो—सी०। २-२. नत्थि—सी०। ३-३. सवणेन चा ति आदिपदेसु योजेतब्बो—सी०। ४. वा आमसनं—सी०।

वा। अनोत्तप्पं तेहेव असारज्जनलक्खणं अनुत्तासलक्खणं वा। अहिरिकमेव बलं अहिरिकबलं। अनोत्तप्पमेव बलं अनोत्तप्पबलं। अयमेत्थ संखेपत्थो। वित्थारो पन हेट्ठावुत्तपटिपक्खवसेन वेदितब्बो।

लुब्भन्ति तेन, सयं वा लुब्भति, लुब्भनमत्तमेव वा तं ति **लोभो**। मुय्हन्ति तेन, सयं वा मुय्हन्ति, मुय्हनमत्तमेव वा तं ति **मोहो**। तेसु लोभो आरम्मणगहणलक्खणो मक्कटालेपो विय, अभिसंगरसो तत्तकपाले खित्तमंसपेसी विय, अपरिच्चागपच्चुपट्ठानो तेलञ्जनरागो विय, संयोजनियधम्मेसु अस्साददस्सनपदट्ठानो। तण्हानदीभावेन वड्ढमानो, सीघसोता नदी विय महासमुद्दं, अपायमेव गहेत्वा गच्छती ति दट्ठब्बो। मोहो चित्तस्स अन्धभावलक्खणो अञ्ञाणलक्खणो वा, असम्पटिवेधरसो

ति अहीळनं अलज्जा। अजिगुच्छनलक्खणं ति सभागवसेन वुत्तं। अलज्जालक्खणं ति कुसलाब्याकतस्स साधारणहिरिया पटिपक्खवसेन[1] गहेतब्बानीति न तानि इध वुत्तानि। तेसू ति अलज्जाकारेन[2] पापानं करणरसं अहिरीकं। अनुत्तासाकारो[3] अनोत्तप्पं। वुत्तप्पकारेनेव[3] पापतो असङ्कोचनपच्चुपट्ठानानि अत्तनि परेसु च अगारव-पदट्ठानानि।

तेसू ति लोभमोहेसु। आरम्मणगहणलक्खणो ति एत्थ आरम्मणग्गहणं नाम 'मम इदं' ति तण्हाभिनिवेसेन अभिनिविसित्वा आरम्मणस्स अविस्सज्जनं। आलिम्पति एतेना ति आलेपो। मक्कटस्स आलेपो मक्कटालेपो। अभिसङ्गो ति अतिसयवताय आसत्ति। अपरिच्चागो ति अविजहनं। तेलञ्जनरागो विया ति धोवित्वा[4] परिच्चजितुं असक्कुणेय्यो तेल-मक्खित-अञ्जनरागो विय[4]। अस्सादानुपस्सिनो तण्हा पवड्ढतीति वुत्त-अस्साददस्सनपदट्ठानो ति[5] अस्सादनवसेन दस्सनं अस्साददस्सनं। ननु च अस्साद-दस्सनम्पि अत्थतो लोभो येवा ति कथं सयं अत्तनो पदट्ठानं होति, सच्चं पठमं नातिबलवतो लोभवसेन अस्साददस्सनो पच्छा बलवलोभो होतीति तस्स तं पदट्ठानता वुत्ता तेनेव च तण्हा पवड्ढतीति वुत्तं। अपरे पन अस्सादो नाम सुखवेदना। अस्साददस्सनं ति अस्साददिट्ठीति[6] एत्तकमेव वुत्तं। मुय्हन्तीति न बुज्झन्ति। चित्तस्स अन्धभावो ति धम्मसभावस्स याथावतो अदस्सनं। अञ्ञाणं ति ञाणपटिपक्खो धम्मो। तत्थ परिणामलक्खणं[7] सभाववसेन वुत्तं, इतरं पटिपक्खवसेन। अथवा अञ्ञाणलक्खणा ति[8] किच्चवसेन वुत्तं; सो हि अप्पटिवेधरसो[9]। अप्पटिवेधो[10] ति धम्मसभावं सम्पटिच्छितुं असमत्थता। आरम्मणसभावच्छादनरसो ति यथा-

---

१. तेहि येवा ति ताय दुच्चरितादीहि एवं। असारज्जं ति निब्भयता। अनुत्तासं ति असब्भमो। रसादीनि हिरीओत्तप्पेसु वुत्तपटिपक्खवसेन–सी०। २. अलज्जनाकारेन–सी०। ३-३. अनुत्तासाकारेन अनोत्तप्पाकारेनेव–सी०। ४-४. नत्थि–म०। ५. वुत्तं अस्साद०–सी०।

६. ०वदन्ति। सुखवेदनाय वा कारणभूतं। सुभनिमित्तं अस्सादो नाम। असुभे सुभं ति पवत्ता तयो विपल्लासा अस्साददस्सनं नामा ति केचि। टीकायं पन अस्साददस्सनं ति अस्साददिट्ठीति–सी०। ७. पुरिमलक्खणं–सी०। ८. ०लक्खणो ति–सी०। ९. असम्पटिवेधरसो वुत्तो–सी०। १०. असम्पटिवेधो ति–सी०।

आरम्मणसभावच्छादनरसो वा, असम्मापटिपत्तिपच्चुपट्ठानो अन्धकारपच्चुपट्ठानो वा, अयोनिसो-मनसिकारपदट्ठानो। सब्बाकुसलानं मूलं ति दट्ठब्बो।

अभिज्झायन्ति ताय, सयं वा अभिज्झायति, अभिज्झायनमत्तमेव वा एसा ति **अभिज्झा**। सा परसम्पत्तीनं सककरण-इच्छालक्खणा, तेनाकारेन एसनभावरसा, परसम्पत्ति-अभिमुखभावपच्चुपट्ठाना, परसम्पत्तीसु अभिरतिपदट्ठाना। परसम्पत्ति-अभिमुखा एव हि सा उपट्ठहति। तासु च अभिरतिया सति पवत्तति, परसम्पत्तीसु चेतसो हत्थप्पसारो विय दट्ठब्बा। **समथो होती** ति आदीसु अञ्ञेसु किच्चेसु विक्खेप-समनतो समथो ति। अकुसलप्पवत्तियं चित्तं पग्गण्हाती ति **पग्गाहो**। न विक्खिपती ति **अविक्खेपो**।

इमस्मिं चित्ते सद्धा, सति, पञ्ञा, छ युगलकानी ति इमे धम्मा न गहिता। कस्मा? अस्सद्धियचित्ते पसादो नाम नत्थि। तस्मा ताव सद्धा न गहिता। किं पन दिट्ठिगतिका अत्तनो अत्तनो सत्थारानं न सद्दहन्ती ति?। सद्दहन्ति। सा पन सद्धा नाम न होति, वचनसम्पटिच्छनमत्तमेवेतं। अत्थतो अनुपपरिक्खा वा होति, दिट्ठि वा। अस्सद्धियचित्ते पन सति नत्थी ति न गहिता। किं दिट्ठिगतिका अत्तना कतकम्मं न सरन्ती ति?। सरन्ति। सा पन सति नाम न होति। केवलं तेनाकारेन अकुसल-चित्तप्पवत्ति। तस्मा सति न गहिता। अथ कस्मा मिच्छासती ति सुत्तन्ते वुत्ता? सा पन अकुसलक्खन्धानं सतिविरहितत्ता सतिपटिपक्खत्ता च मिच्छामग्गमिच्छत्तानं पूरणत्थं तत्थ परियायेन देसना कता। निप्परियायेन पनेसा नत्थि। तस्मा न गहिता। अन्धबालचित्ते पन तस्मिं पञ्ञा नत्थी ति न गहिता। किं दिट्ठिगतिकानं वञ्चना-पञ्ञा नत्थी ति? अत्थि। न पनेसा पञ्ञा, माया नामेसा होति। सा अत्थतो तण्हा व। इदं पन चित्तं सदरथं गरुकं भारियं कक्खलं थद्धं अकम्मञ्ञं गिलानं वङ्कं कुटिलं। तस्मा पस्सद्धादीनि युगलकानि न गहितानि।

(१६९–सी०) ञाणं मोहसमङ्गी पुग्गलो वा आरम्मणसभावं पटिविज्झितुं न लभति, मोहस्स तथा पवत्ति आरम्मणसभावच्छादनं। यस्स (१४१-म०) उप्पज्जति तस्स अन्धकारं अन्धकारो अन्धकारेन पच्चुपट्ठाति तं वा पच्चुपट्ठापेतीति अन्धकारपच्चुपट्ठानो।

पर....प०....एव हीति दळ्हीकरणं। सा ति अभिज्झा। तासू ति परसम्पत्तीसु। समथो होतीति आदीसु विनिच्छयो वेदितब्बो।

किं[1] प....प०....हन्तीति पुच्छा। सा पन सद्दहना। एतं सद्दहनं वचन ....प०....मेव। सा पन सरणा। अथ सतिया भावेन सति कस्मा....प०....सुत्ते सति वुत्ता[1]। दिट्ठि येव दिट्ठि-गतं। दिट्ठिगतं एतेसं अत्थीति दिट्ठिगतिका। **दण्डादितो इक** ई (क० २.८.२३)ति इको। सत्थारानं वचनं ति सम्बन्धो। तत्था ति सुत्ते। एसा[2] मिच्छा सति।

१-१. अयं पाठो सी० पोत्थके नत्थि। २. एसा ति–सी०।

एत्तावता पदपटिपाटिया चित्तङ्गवसेन पालिं आरूळ्हानि द्वत्तिंस पदानि दस्सेत्वा इदानि ये-वा-पनकधम्मे दस्सेतुं **ये वा पन तस्मिं समये** [ध० ९२] ति आदिमाह। तत्थ सब्बेसु पि अकुसलचित्तेसु छन्दो अधिमोक्खो मनसिकारो मानो इस्सा मच्छरियं थीनं मिद्धं उद्धच्चं कुक्कुच्चं ति इमे दसेव ये-वा-पनका होन्ति धम्मा, सुत्तागता, सुत्तपदेसु दिस्सरे ति वुत्ता। इमस्मिं पन चित्ते छन्दो अधिमोक्खो मनसिकारो उद्धच्चं ति इमे अपण्णकंगसंखाता चत्तारो ये-वा-पनका होन्ति। तत्थ छन्दादयो हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बा। केवलं हि ते कुसला, इमे अकुसला। इतरं पन उद्धतस्स भावो 'उद्धच्चं'। तं चेतसो अवूपसमनलक्खणं वाताभिघातचलजलं विय, अनवट्ठानरसं वाताभिघातचलधजपताका विय, भन्तत्तपच्चुपट्ठानं पासाणाभिघात-समुद्धत-भस्मं विय, चेतसो अवूपसमे अयोनिसो-मनसिकारपदट्ठानं। चित्तविक्खेपो ति दट्ठब्बं।

इति फस्सादीनि द्वत्तिंस, ये-वा-पनकवसेन वुत्तानि चत्तारी ति सब्बानि पि इमस्मिं धम्मुद्देसवारे छत्तिंस धम्मपदानि भवन्ति। चत्तारि अपण्णकंगानि हापेत्वा पालियं आगतानि द्वत्तिंसमेव। अगहितगहणेन पनेत्थ फस्सपञ्चकं, वितक्को विचारो पीति चित्तेकग्गता विरियिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं मिच्छादिट्ठि लोभो मोहो अहिरिकं अनोत्तप्पं ति सोळस धम्मा होन्ति। तेसु सोळससु सत्त धम्मा अविभत्तिका होन्ति, नव स-विभत्तिका। कतमे सत्त ? फस्सो सञ्ञा चेतना विचारो पीति जीवितिन्द्रियं मोहो ति इमे सत्त अ-विभत्तिका। वेदना चित्तं वितक्को चित्तेकग्गता विरियिन्द्रियं मिच्छादिट्ठि अहिरिकं अनोत्तप्पं लोभो ति इमे नव स-विभत्तिका।

तेसु छ धम्मा द्वीसु ठानेसु विभत्ता, एको तीसु, एको चतूसु, एको छसु। कथं ? चित्तं वितक्को मिच्छादिट्ठि अहिरिकबलं अनोत्तप्पबलं लोभो ति इमे छ द्वीसु ठानेसु विभत्ता। एतेसु हि चित्तं ताव फस्सपञ्चकं पत्वा चित्तं होती ति वुत्तं, इन्द्रियानि पत्वा मनिन्द्रियं ति। वितक्को झानङ्गानि पत्वा वितक्को होती ति वुत्तो, मग्गङ्गानि पत्वा मिच्छासंकप्पो ति। मिच्छादिट्ठि मग्गङ्गेसु पि कम्मपथेसु पि मिच्छा-

---

तत्था ति येवा पना ति आदिवचने विनिच्छयो वेदितब्बो। धम्मा[१]....प०....इतिस्सयेना ति एवं वुत्तो येवा पनका होन्ति।[१] तत्था ति छन्दादीसु, निद्धारणं। ते ति छन्दादयो। इतरं उद्धच्चं वेदितब्बं। उद्धं उद्धं गच्छतीति उद्धतो। 'हन' गतियं। तो। **यदादिना** हनिस्स[२] धो। उद्धतस्स भावो उद्धच्चं। वाता....प०....पताका[३] विया ति वातप्पहारेनेव चलधजपटाका विय अनवट्ठानकिच्चा[४]। भन्तत्तं ति परिब्भमनाकारो। अयोनिसो मनसिकारो ति उद्धच्चनिमित्तस्स आरम्मणस्स मनसिकरण।

एत्था ति धम्मुद्देसवारे। तेसू ति नव सविभत्तिकेसु।

एतेसू ति छसु धम्मेसु।

१-१. सी० पोत्थके न दिस्सति। २. नहस्स—सी०। ३. पटाका—सी०।
४. किच्चं-सी०।

दिट्ठि येव। अहिरिकं बलानि पत्वा अहिरिकबलं होती ति वुत्तं, लोकनासकमूलं पत्वा अहिरिकं ति। अनोत्तप्पे पि एसेव नयो। लोभो मूलं पत्वा लोभो होती ति वुत्तो। कम्मपथं पत्वा अभिज्झा ति। इमे छ द्वीसु ठानेसु विभत्ता। वेदना पन फस्सपञ्चकं पत्वा वेदना होती ति वुत्ता, झानंगानि पत्वा सुखं ति, इन्द्रियानि पत्वा सोमनस्सिन्द्रियं ति। एवं एको धम्मो तीसु ठानेसु विभत्तो। विरियं पन इन्द्रियानि पत्वा विरियिन्द्रियं होती ति वुत्तं, मग्गङ्गानि पत्वा मिच्छावायामो ति, बलानि पत्वा विरियबलं ति, पिट्ठिदुकं पत्वा पग्गाहो ति। एवं अयं एको धम्मो चतूसु ठानेसु विभत्तो। समाधि पन झानङ्गानि पत्वा चित्तस्सेकग्गता होती ति वुत्तो, इन्द्रियानि पत्वा समाधिन्द्रियं, मग्गंगानि पत्वा मिच्छासमाधी ति, बलानि पत्वा समाधिबलं ति, पिट्ठिदुकं पत्वा दुतियदुके एककवसनेव समथो ति, ततिये अविक्खेपो ति। एवमयं एको धम्मो छसु ठानेसु विभत्तो।

सब्बे पि पनेते धम्मा फस्सपञ्चकवसेन झानङ्गवसेन इन्द्रियवसेन मग्गङ्गवसेन बलवसेन मूलवसेन कम्मपथवसेन लोकनासकवसेन पिट्ठिदुकवसेना ति नव रासयो होन्ति। तत्थ यं वत्तब्बं तं पठमकुसलचित्तनिद्देसे [ध० ११०-१११] वुत्तमेवा ति।

धम्मुद्देसवारकथा निट्ठिता।

निद्देसवारो

निद्देसवारे चित्तेकग्गतानिद्देसे [ध० ९३] ताव **सण्ठिति अवट्ठिती** ति वुत्तं। इदं द्वयं ठितिवेवचनमेव। यं पन कुसलनिद्देसे '**आरम्मणं** ओगाहेत्वा अनुपविसित्वा तिट्ठती ति अवट्ठिती'ति वुत्तं, तं इध न लब्भति। अकुसलस्मिं हि दुब्बला चित्तेकग्गता ति हेट्ठा दीपितमेव। उद्धच्चविचिकिच्छावसेन पवत्तस्स विसाहारस्स पटिपक्खतो अविसाहारो [अट्ठ० २५० पिट्ठे] ति एवरूपो पि अत्थो इध न लब्भति। सहजातधम्मे पन न विसंहरती ति **अविसाहारो**। न विक्खिपती ति **अविक्खेपो**। अकुसलचित्तेकग्गतावसेन अविसाहटमानसस्स भावो **अविसाहटमानसता**। सहजातधम्मेसु न कम्पती ति **समाधिबलं**। अ-याथाव-समाधानतो **मिच्छासमाधी** ति एवमिध अत्थो दट्ठब्बो। विरिन्द्रियनिद्देसे [ध० ९३] यो हेट्ठा 'निक्कमो चेसो कामानं पनूदनाया'ति आदिनयो वुत्तो, सो इध न लब्भति। सहजातधम्मेसु अकम्पनट्ठेनेव **विरियबलं** वेदितब्बं।

तत्था ति धम्मुद्देसवारे यं वचनं।

धम्मुद्देसवारकथा निट्ठिता

निद्देसवारकथावण्णना

तं इधा ति वचनं[1], इध अकुसलनिद्देसे। अकुसल[2]·····प०·····ता ति इदं वचनं हेट्ठा दीपितमेव। उद्धच्चसहगतत्ता दुब्बला[2]।

१. तं वचनं—सी०। २-२. सी० पोत्थके अयं पाठो न दिस्सति।

मिच्छादिट्ठिनिद्देसे [ध० ९४] अ-याथाव-दस्सनट्ठेन **मिच्छादिट्ठि**। दिट्ठीसु गतं इदं दस्सनं, द्वासट्ठिदिट्ठि-अन्तोगधत्ता ति **दिट्ठिगतं**। हेट्ठा पि'स्स अत्थो वुत्तो येव। दिट्ठि येव दुरतिक्कमनट्ठेन **दिट्ठिगहनं**, तिणगहन-वनगहन-पब्बतगहनानि विय। दिट्ठि येव सासङ्कसप्पटिभयट्ठेन **दिट्ठिकन्तारो**, चोरकन्तार-वाळकन्तार-मरुकन्तार-निरूदक-कन्तारदुब्भिक्खकन्तारा विय। सम्मादिट्ठिया विनिविज्झनट्ठेन विलोमनट्ठेन च **दिट्ठि-विसुकायिकं**। मिच्छादस्सनं हि उप्पज्जमानं सम्मादस्सनं विनिविज्झति चेव विलोमेति च। कदाचि सस्सतस्स कदाचि उच्छेदस्स गहणतो दिट्ठिया विरूपं फन्दितं ति **दिट्ठिविप्फन्दितं**। दिट्ठिगतिको हि एकस्मिं पतिट्ठातुं न सक्कोति, कदाचि सस्सतं अनुपतति कदाचि उच्छेदं। दिट्ठि येव बन्धनट्ठेन संयोजनं ति। सुंसुमारादयो विय पुरिसं, आरम्मणं दळ्हं गण्हाती ति **गाहो**। पतिट्ठहनतो **पतिट्ठाहो**। अयं हि बलवप्प-वत्तिभावेन पतिट्ठहित्वा गण्हाति। निच्चादिवसेन अभिनिविसती ति **अभिनिवेसो**। धम्मसभावं अतिक्कमित्वा निच्चादिवसेन परतो आमसती ति **परामासो**। अनत्थावहत्ता कुच्छितो मग्गो, कुच्छितानं वा अपायानं मग्गो ति **कुम्मग्गो**। अ-याथावपथतो **मिच्छापथो**। यथा हि दिसामूळ्हेन अयं असुकगामस्स नाम पथो ति गहितो पि तं गामं न सम्पापेति, एवं दिट्ठिगतिकेन सुगतिपथो ति गहितो पि दिट्ठिसुगतिं न पापेती ति अ-याथावपथो, मिच्छापथो। मिच्छासभावतो **मिच्छत्तं**। तत्थेव परिब्भमनतो तरन्ति एत्थ बाला ति तित्थं। तित्थं च तं अनत्थानं च आयतनं ति **तित्थायतनं**। तित्थियानं वा सञ्जातिदेसट्ठेन निवासनट्ठेन च आयतनं ति पि तित्थायतनं। विपरियेस-भूतो गाहो, विपरियेसतो वा गाहो ति **विपरियेसगाहो**; विपल्लत्थगाहो ति अत्थो।

अहिरिकानोत्तप्पनिद्देसेसु [ध० ९५] हिरोत्तप्पनिद्देसविपरियायेन अत्थो वेदितब्बो। सहजातधम्मेसु पन अकम्पनट्ठेनेव **अहिरिकबलं अनोत्तप्पबलं** च वेदितब्बं। लोभमोहनिद्देसेसु [ध० ९५-९६] लुब्भती ति **लोभो**। **लुब्भना** ति लुब्भनाकारो। लोभसम्पयुत्तं चित्तं, पुग्गलो वा लुब्भितो; लुब्भितस्स भावो **लुब्भितत्तं**। सारज्जती ति **सारागो**। सारज्जनाकारो **सारज्जना**। सारज्जितस्स भावो **सारज्जि-तत्तं**। अभिज्झायनट्ठेन **अभिज्झा**। पुन 'लोभ'-वचने कारणं वुत्तमेव। अकुसलं च तं मूलं, अकुसलानं मूलं ति **अकुसलमूलं**।

अस्सा ति दिट्ठिगतं ति पदस्स। कं उदकं तारेन्ति एत्था ति कन्तारो। चोरेहि अधिट्ठितो कन्तारो चोरकन्तारो। सीहादिवाळेहि अधिट्ठितो कन्तारो वाळकन्तारो। मरन्ति सत्ता एतेना ति मरु, वालिका। 'मर'पाणचागे। **भरमरादि** (२ ण्वु०) मोग्गल्लानसुत्तेन उ। **यवादिना** वा उ। मरूनं पतिट्ठितट्ठानो कन्तारो[1]। नत्थि उदकं एत्था ति निरुदको। नत्थि भिक्खं एत्था ति दुब्भिक्खो। फन्दितं ति फन्दनं, भावे तो। दिसामुळ्हेन जनेन गहितो ति मग्गो। तत्थेवा ति दिट्ठियं।

१. ०मरुकन्तारो–सी०।

ञाणदस्सनपटिपक्खतो **अञ्ञाणं अदस्सनं**। अभिमुखो हुत्वा धम्मेन न समेति, न सम्मा गच्छती ति **अनभिसमयो**। अनुरूपतो धम्मे बुज्झती ति अनुबोधो। तप्पटिपक्खताय **अननुबोधो**। अनिच्चादीहि सद्धिं योजेत्वा न बुज्झती ति **असम्बोधो**। असन्तं असमं च बुज्झती ति पि असम्बोधो। चतुसच्चधम्मं न पटिविज्झती ति **अप्पटिवेधो**। रूपादिसु एकधम्मं पि अनिच्चादिसामञ्ञतो न संगण्हाती ति **असंगाहना**। तमेव धम्मं न परियोगाहती ति **अपरियोगाहना**। न समं पेक्खती ति **असमपेक्खना**। धम्मानं सभावं पति न पेक्खती ति **अपच्चवेक्खना**। कुसलाकुसलकम्मेसु विपरीतवुत्तिया सभावतो गहणाभावेन वा एकं पि कम्मं एतस्स पच्चक्खं नत्थि, सयं वा कस्सचि कम्मस्स पच्चक्खकरणं नाम न होती ति **अपच्चक्खकम्मं**। यं एतस्मिं अनुप्पज्जमाने चित्तसन्तानं मेज्झं भवेय्य, सुचि, वोदानं, तं दुट्ठं मेज्झं इमिना ति **दुम्मेज्झं**। बालानं भावो ति **बाल्यं**। मुय्हती ति **मोहो**। बलवतरो मोहो **पमोहो**। समन्ततो मुय्हती ति **सम्मोहो**। विज्जाय पटिपक्खभावतो न विज्जा ति **अविज्जा**। ओघ-योगत्थो वुत्तो येव। थामगतट्ठेन अनुसेती ति **अनुसयो**। चित्तं परियुट्ठाति, अभिभवती ति **परियुट्ठानं**। हितगहणाभावेन हिताभिमुखं गन्तुं न सक्कोति, अञ्ञदत्थु लंगति येवा ति **लंगी**; खञ्जती ति अत्थो। दुरुग्घाटन'ट्ठेन वा लङ्गी। यथा हि महापलिघसंखाता लङ्गी दुरुग्घाता होति, एवमयं पि लंगी विया ति लंगी। सेसं उत्तानत्थमेव।

संगहवार-सुञ्ञतवारा पि हेट्ठा वुत्तनयेनेव अत्थतो वेदितब्बा।

पठमचित्तं निट्ठितं।

दुतियचित्ते [ध० ९७] **ससंखारेना** ति पदं विसेसं। तं पि हेट्ठा वुत्तत्थमेव। इदं पन चित्तं किञ्चा पि छसु आरम्मणेसु सोमनस्सितस्स लोभं उप्पादेत्वा 'सत्तो सत्तो' ति आदिना नयेन परामसन्तस्स उप्पज्जति, तथा पि ससंखारिकत्ता सप्पयोगेन स-उपायेन उप्पज्जनतो—यदा कुलपुत्तो मिच्छादिट्ठिककुलस्स कुमारिकं पत्थेति। ते च 'अञ्ञदिट्ठिका तुम्हे'ति कुमारिकं न देन्ति। अथ'ञ्ञे ञातका 'यं तुम्हे करोथ तमेवायं करिस्सती'ति दापेन्ति। सो तेहि सद्धिं तित्थिये उपसंकमति।

एतस्मिं ति[1] मोहे। अनुप्पज्जमाने न उप्पज्जमाने यं चित्तसन्तानं। सुचि वोदानं ति पदं मेज्झं ति पदस्स विवरणं। मेज्झत्तं चित्तसन्तानं इमिना मोहेन दुट्ठं ति पदे कत्ता। हितग्गहणाभावेना ति पदं न सक्कोती ति पदे ततियाविसेसनं। अञ्ञदत्थु (१७०-सी०) एकन्तेन लङ्ग[2]ति येव[2] अतिक्कमति। दुरुग्घाटा[3] ति दुविवरणा।

पठमचित्तवण्णना निट्ठिता

उप्पज्जनतो ति पदं वेदितब्बं ति पदे हेतु। ते ति मिच्छादिट्ठिका। इदं ति चित्तं।

---

१. यं एतस्मिं ति एतस्मिं-सी०। २-२. लङ्घति येवा ति-सी०। ३. दुरुग्घाटा-सी०।

आदितो व वेमतिको होति । गच्छन्ते गच्छन्ते काले एतेसं किरिया मनापा ति लद्धिं रोचेति, दिट्ठिं गण्हाति—एवरूपे काले इदं लब्भती ति वेदितब्बं ।

ये-वा-पनकेसु पनेत्थ थीनमिद्धं अधिकं । तत्थ थीनता 'थीनं' । मिद्धनता 'मिद्धं'; अनुस्साहनता सत्तिविघातो चा ति अत्थो । थीनं च मिद्धं च थीनमिद्धं । तत्थ थीनं अनुस्साहनलक्खणं, विरियविनोदनरसं, संसीदनपच्चुपट्ठानं । मिद्धं अकम्मञ्ञता-लक्खणं, ओनहनरसं, लीनतापच्चुपट्ठानं पचलायिकनिद्दापच्चुपट्ठानं वा । उभयं पि अरति-तन्दि-विजम्भिकादीसु अयोनिसो-मनसिकारपदट्ठानं ति ।

दुतियचित्तं ।

ततियं [ध० ९८] छसु आरम्मणेसु सोमनस्सितस्स लोभं उप्पादेत्वा 'सत्तो सत्तो' ति आदिना नयेन परामसन्तस्स निराजन-मल्लयुद्ध-नटसमज्जादीनि पस्सतो

एत्था ति एतस्मिं । तत्था ति तस्मिं थिनमिद्धे । थिनस्स चित्तस्स भावो थिनता । मिज्झनस्स चित्तस्स भावो [१४२-म०] मिज्झनता । मिद्धता ति पि । नत्थि उस्साहसंहननं अस्सा ति अनुस्साहसंहननं । तस्स भावो....प०....नता । सत्तिया विघातो[१] । असत्ति[२] पि पाठो[२] । तस्स अत्थो । यस्मा तं मिद्धं उप्पन्नमेव सतिविनासनं उप्पज्जति यस्मा नत्थि एतस्स सतीति सम्पयुत्तचित्तं असति[३] । तस्स भावो पि असति[४] । सो विघातो ति असति-विघातो[५] । थियति[६] अनुस्साहनावसीदनवसेन संहतीति थिनं[६], 'थि'-धातु संहनने । यु । मिहति वा असामत्थियं होतीति मिद्धं । 'मिह'-असामत्थिये । तो । तत्था ति तस्मिं थिन-मिद्धे । अनुस्साहलक्खणं ति उस्साहपटिपक्खलक्खणं ति । वीरियविनोदनं ति[७] वीरियस्स विनोदनं[८] खिपनं । सम्पयुत्तधम्मानं संसीदनाकारेन पच्चुपट्ठाति तेसं वा संसीदनं पच्चु-पट्ठानं । वेदनादिक्खन्धत्तयस्स अकम्मञ्ञतालक्खणं अस्सा ति अकम्मञ्ञतालक्खणं[९] । ओनाहनं ति[१०] विञ्ञाणद्वारानं पिदहनं, सम्पयुत्तानं बन्धनं वा । लीनता ति लीनाकारो । आरम्मणग्गहणे सङ्कोचो[११] । अक्खिदलानं पचलभावेन अयनं पवत्तनं पचलायिका । पपुब्बो 'चल'-कम्पने । 'इ'-गतियं । णु । अको । अस्स इ । निदायते निद्दा । निपुब्बो 'दा'-सुपने । अपच्चयो । पचलायिका निद्दा । पचलायिकानिद्दं पच्चुपट्ठापेतीति पचलायिकानिद्दापच्चुपट्ठानं । अरतीति उक्कण्ठिका । तन्दीति अतिसीतादिपच्चया उप्पन्न-आगन्तुककायालसियं[१२] । विजम्भिता ति कायस्स विनमना । आदिसद्देन भत्तसम्मदादिं[१३] सङ्गण्हाति[१४] । अरति....प०....निमित्तत्थे

---

१. विघातनं हननं सत्तिविघातो–सी० । २-२. असत्तिविघाटो ति पि पाठो–सी० । ३. असत्ति–सी० । ४. असत्ति–सी० सब्बत्थ । ५. असत्ति०–सी० । ६-६. अयं पाठो सी० पोत्थके नत्थि । ७. ०विरोदनं ति–सी० । ८. विरोदनं-सी० । ९. ०अस्सा ति अकम्मञ्ञ-तालक्खणं–सी० । १०. विजहन्तीति-सी० । ११. संकोपो-सी० । १२. उप्पन्नं आगन्तुक ०सी० । १३. ०सम्मदादि–सी० । १४. संगय्हति–सी० ।

मनापियसद्दसवनादीसु पसुतस्स वा उप्पज्जति। इध मानेन सद्धिं पञ्च अपण्णकङ्गानि होन्ति। तत्थ मञ्ञती ति 'मानो'। सो उन्नतिलक्खणो, सम्पग्गहरसो, केतुकम्यता-पच्चुपट्ठानो, दिट्ठिविप्पयुत्तलोभपदट्ठानो, उम्मादो विय दट्ठब्बो ति।

ततियं।

चतुत्थं [ध० ९९] वुत्तप्पकारेसु येव ठानेसु यदा सीसे खेळं खिपन्ति, पादपंसुं ओकिरन्ति, तदा तस्स तस्स परिहरणत्थं स-उस्साहेन अन्तरन्तरा ओलोकेन्तानं राजनाटकेसु निक्खमन्तेसु उस्सारणाय वत्तमानाय तेन तेन छिद्देन ओलोकेन्तानं चा ति एवमादीसु ठानेसु उप्पज्जति। इध मानथीनमिद्धेहि सद्धिं सत्त ये-वा-पनका होन्ति। उभयत्था पि मिच्छादिट्ठि परिहायति। तं ठपेत्वा सेसानं वसेन धम्मगणना वेदितब्बा ति।

चतुत्थं।

पञ्चमं [ध० ९९] छसु आरम्मणेसु वेदनावसेन मज्झत्तस्स लोभं उप्पादेत्वा 'सत्तो सत्तो' ति आदिना नयेन परामसन्तस्स उप्पज्जति। सोमनस्सट्ठाने पनेत्थ उपेक्खावेदना होति, पीतिपदं परिहायति। सेसं सब्बं पठमचित्तसदिसमेव।

पञ्चमं।

भुम्मं।

राजा च मल्लयुद्धञ्च[1] नटसमज्जञ्च[2] तानि आदीनि येसं तानि राजा··प०····नि। इधा ति ततियचित्ते। तत्था ति मानो ति पदे विनिच्छयो वेदितब्बो। (१७१–सी०) मञ्ञती ति अभिमञ्ञति, अहंकारं करोतीति अत्थो। उन्नतीति सेय्यादिवसेन उद्धतो नामनं। सम्पग्गहरसो ति उन्नतिवसेन अत्तनो सम्पयुत्तधम्मानं वा सम्पग्गहणकिच्चो। केतु····प०···· पच्चुपट्ठानो ति एत्थ केतु वुच्चति अच्चुग्गतधजो। इध पन केतु विया ति केतु। उळारग-मादिभावो। केतुं कामेतीति केतुकामो, तस्स भावो केतुकम्यं। केतुकम्यं एव केतुकम्यता। अहं ति पवत्तनतो मानस्स दिट्ठिसदिसी पवत्ति, तस्मा दिट्ठिमाना एकचित्तुप्पादे न पवत्तन्ति। केसरसीहा[3] विय एकगुहायं[4], तस्मा मानो दिट्ठिविप्पयुत्तचित्ते सब्बदा न[5] अनुप्पज्जमानो ति पि[6] दिट्ठिसम्पयुत्ते चित्ते नियमेन अनुपज्जनतो दिट्ठिविप्पयुत्तलोभपदट्ठानो मानो। उम्मदति एतेना ति उम्मादो। उ पुब्ब 'मद'-उम्मादे। विसरुजपदादितो ण इति (क० ४.१.५) [१४३-म०] सुत्तेन णो।

वुत्त····प०····ठानेसू ति राजमल्लयुद्धादिना वुत्तप्पकारे ठानेसु। ओलोकेन्तानं ति पदे आधारो। तस्सा ति खेळादिकस्स। ओलोकेन्तानं जनानं चतुत्थं उप्पज्जति। उस्सारणाया ति

---

१. मल्लं च युद्धं च–सी०। २. ०राज····प०····समज्जानि–सी०। ३. द्वे केसरसीहा–सा०। ४. ०गुहाय–म०। ५. नत्थि–सी०। ६. अनुपज्जमाना– म०।

छट्ठसत्तम'ट्ठमानि [ध० १००-१०१] वेदनं परिवत्तेत्वा पीतिपदं च हापेत्वा दुतिय-ततिय-चतुत्थेसु वुत्तनयेनेव वेदितब्बानि ।

इमेसु अट्ठसु लोभसहगतचित्तेसु सहजाताधिपति आरम्मणाधिपती ति पि अधिपतयो लब्भन्ति ।

छट्ठ-सत्तम-अट्ठमानि

नवमं [ध० १०२] छसु आरम्मणेसु दोमनस्सितस्स पटिघं उप्पादयतो उप्पज्जति । तस्स समयववत्थानवारे ताव दुट्ठु मनो, हीनवेदनत्ता वा कुच्छितं मनो ति दुम्मनो; दुम्मनस्स भावो **दोमनस्सं** । तेन सहगतं ति **दोमनस्ससहगतं** । असम्पियायनभावेन आरम्मणस्मिं पटिहञ्ञती ति पटिघं । तेन सम्पयुत्तं ति **पटिघसम्पयुत्तं** । धम्मुद्देसे तीसु पि ठानेसु दोमनस्सवेदना व आगता । तत्थ वेदनापदं वुत्तत्थमेव । तथा दुक्खदोमनस्सपदानि । लक्खणादितो पन अनिट्ठारम्मणानुभवनलक्खणं दोमनस्सं, यथा तथा वा अनिट्ठाकारसम्भोगरसं, चेतसिकाबाधपच्चुपट्ठानं, एकन्तेनेव हदयवत्थुपदट्ठानं । मूल-कम्मपथेसु यथा पुरिमचित्तेसु लोभो होति, अभिज्झा होती ति आगतं, एवं दोसो होति, ब्यापादो होती ति वुत्तं । तत्थ दुस्सन्ति तेन, सयं वा दुस्सति, दुस्सनमत्तमेव वा तं ति **दोसो** । सो चण्डिक्कलक्खणो पहटासीविसो विय, विसप्पनरसो विसनिपातो विय, अत्तनो निस्सयदहनरसो वा दावग्गि विय, दुस्सनपच्चुपट्ठानो लद्धोकासो विय सपत्तो, आघातवत्थुपदट्ठानो विससंसट्ठपूतिमुत्तं विय दट्ठब्बो ।

अपगमनाय । वत्तमानाया ति पदं ओलोकेन्तानं ति पदे लक्खणक्रिया । इधा ति चतुत्थे । उभयत्था पी ति ततियचतुत्थेसु । तं ति दिट्ठि ।

चतुत्थं निट्ठितं

एत्था ति पञ्चमे ।

तस्सा ति नवमस्स । समयववत्थानवारे[1] ताव[1] विनिच्छयो । तत्था ति वेदनादिपदेसु । लक्खणादितो विनिच्छयो वेदितब्बो । सभावतो परिकप्पतो वा अनिट्ठस्स आरम्मणस्स अनिट्ठाकारं वा आरम्मणस्स अनुभवनं अनिट्ठारम्मणानु भवनं । तं लक्खणमस्सा ति अनिट्ठारम्मणानुभवनलक्खणं । यथाभूतेन वा तथागुणेन वा अनिट्ठाकारेन आरम्मणस्स सम्भुञ्जनरसं अनुभवनकिच्चं ति अत्थो । दोमनस्सस्स एकन्तेन कामधातुयं येव पवत्तनतो आह—हदयवत्थुपदट्ठानं ति । मूलकम्मपथेसू ति पदं वुत्तं ति पदे आधारो । तत्था ति दोसब्यापादेसु । आसुं विसं अस्सा ति आसीविसो । उस्स ई । पहतो च सो आसीविसो चा ति पहतासीविसो । अत्तनो पवत्ति-आकारवसेन विरूपं सप्पनं अनिट्ठरूपसमुट्ठापनवसेन वा विसप्पनं, सरीरकम्पनं । तं रसो किच्चं सम्पत्ति वा अस्सा ति विसप्पनरसो । विसनिपातो ति विसस्स निपतनं । (१७२-सी०) निस्सयहदयवत्थुनो सकलस्सेव वा कायस्स मिलातभावापादनतो[2] आह—अत्तनो निस्सयदहनरसो ति । किमिवा ति आह—दावग्गि विया ति । सो हि वनघटे येव उप्पन्नो तमेव दहति । दुस्सनपच्चुपट्ठानो ति अत्तनो

१-१. समयववत्थावत्तमानाया ति पदं निवारेता-म० । २. पिदहनतो-सी० ।

ब्यापज्जति तेन चित्तं, पूतिभावं उपगच्छति, विनयति ब्यापादयति वा विनयाचार-रूपसम्पत्तिहितसुखादीनी ति **ब्यापादो**। अत्थतो पनेस दोसो येव।

इध पदपटिपाटिया एकूनतिंस पदानि होन्ति। अगहितगहणेन चुद्दस। तेसं वसेन सविभत्तिकाविभत्तिकरासिभेदो वेदितब्बो। ये-वा-पनकेसु छन्दाधिमोक्ख-मनसिकार-उद्धच्चादीनि नियतानि। इस्सा-मच्छरिय-कुक्कुच्चेसु पन अञ्ञतरेन सद्धिं पञ्च पञ्च हुत्वा पि उप्पज्जन्ति। एवं इमे पि तयो धम्मा अनियत-ये-वा-पनका नाम। तेसु इस्सती ति 'इस्सा'। सा परसम्पत्तीनं उसूयनलक्खणा, तत्थेव अनभिरतिरसा, ततो विमुखभावपच्चुपट्ठाना परसम्पत्तिपदट्ठाना। संयोजनं ति दट्ठब्बा। मच्छेरस्स भावो 'मच्छरियं'। तं लद्धानं वा लभितब्बानं वा अत्तनो सम्पत्तीनं निगूहनलक्खणं, तासं येव परेहि साधारणभाव-अक्खमनरसं, संकोचनपच्चुपट्ठानं कटुकञ्चुकतापच्चुपट्ठानं वा, अत्तसम्पत्तिपदट्ठानं। चेतसो विरूपभावो ति दट्ठब्बं। कुच्छितं कतं कुकतं। तस्स भावो 'कुक्कुच्चं'। तं पच्छानुतापनलक्खणं, कताकतानुसोचनरसं, विप्पटिसारपच्चुपट्ठानं, कताकतपदट्ठानं। दासब्यं विय दट्ठब्बं। अयं ताव उद्देसवारे विसेसो।

परस्स च दुस्सनाकारेन पच्चुपट्ठानो। अनत्थं मे आचरीति आदीनि नव आघातवत्थुपदट्ठानं अस्सा ति आघातवत्थुपदट्ठानो। नवा ति नवमेव।

तेसू ति इस्सादीसु। इस्सतीति इस्सयति[1]। 'इस्स'-इस्सायं। तत्थेवा ति परसम्पत्तीसु येव इस्सावसेन परसम्पत्तीसु अतुस्सनतो वुत्तं अनभिरतिरसो ति। ततो ति परसम्पत्तितो। मच्छेरस्स[2] भावो[2], मच्छेरभावो ति पि अत्थि, एवं सति छरपच्चयो व, विसेसो। अथवा मसति मच्छरियतीति मच्छरं। 'मसु'-मच्छरे। मच्छरं एतस्सा ति मच्छरो, पुग्गलो। **सद्धादितो णा** ति (क० २.८.२७) णो। मच्छरस्स भावो मच्छरियं। **ण्यत्तता भावे तु** (क० २.८.१७) ति तुसद्देन इयो। निगूहनं ति अत्तनो सम्पत्तिं परेसं अदस्सनं। सङ्कोचनं ति अस्स सम्पत्तीनं परेहि (१४४–म०) साधारणभावो करणस्स अरुचनाकारेन पटिकूटं[3] कटति तित्तभावेन गच्छति पवत्ततीति कटुको, रसो। 'कट'-गतियं। ण्वु। उत्तं। अञ्चुनं[4] पवत्तनं अञ्चुकं। 'अञ्च'-गतियं। ण्वु। उत्तं। कटुकाकारेन कटुकसदिसेन अञ्चुकं गति अस्सा ति कटुकञ्चुकं। तस्स भावो कटुकञ्चुकता, सदिसाकारो। कटुकञ्चुकताय पच्चुपट्ठानं कटु''''प०''''नं। कुच्छितं कतं ति कताकतं आरब्भ उप्पज्जनक-विप्पटिसारचित्तं गरहितब्बतो कुच्छितं कतं अस्सा ति कुकतस्स चित्तस्स। पच्छानुतापनं ति पच्छा अनुतपनं वा बाधनं। कताकतानुसोचनं ति कताकतस्स सुचरितस्स अनुसोचनं अकतं वत कल्याणं ति आदिना अनुतपनं, विप्पटिसारो ति कताकारविसिट्ठस्स सुचरितस्स अनुसोचनवसेन विरूपं सरणं पवत्तनं। पटिसद्दो धात्वानुवत्तको। दासस्स भावो दासब्यं। **ब्यबद्धदासा वा** ति (४.६०) मोग्गल्लानसुत्तेन ब्यो।

---

१. उसूयति–सी०। २-२. मच्छेरभावो ति सति परसम्पत्ति-उसूयनभावेन गण्हतीति मच्छेरो। मस-आमसने। यदादिना मच्छरपच्चयो–सी०। ३. पटिकुज्झनं–सी०। ४. अञ्चनं–सी०।

निद्देसवारे वेदनानिद्देसे [ध० १०२] **असातं** सातपटिपक्खवसेन वेदितब्बं। दोसनिद्देसे [ध० १०३] दुस्सती **दोसो**। **दुस्सना** ति दुस्सनाकारो। **दुस्सितत्तं** ति दुस्सितभावो। पकतिभावविजहनट्ठेन ब्यापज्जनं **ब्यापत्ति**। **ब्यापज्जना** ति ब्यापज्जनाकारो। विरुज्झती ति **विरोधो**। पुनप्पुनं पटिविरुज्जती ति **पटिविरोधो**। विरुद्धाकारपटिविरुद्धाकारवसेन वा इदं वुत्तं। चण्डिको वुच्चति चण्डो, थद्धपुग्गलो; तस्स भावो **चण्डिक्कं**। न एतेन सुरोपितं वचनं होति, दुरुत्तं अपरिपुण्णमेव होती ति **अ-सुरोपो**। कुद्धकाले हि परिपुण्णवचनं नाम नत्थि। सचे पि कस्सचि होति तं अप्पमाणं। अपरे पन अस्सुजननट्ठेन अस्सुरोपनतो अस्सुरोपो ति वदन्ति। तं अकारणं, सोमनस्सस्सा पि अस्सुजननतो। हेट्ठावुत्त-अत्तमनतापटिपक्खतो न अत्तमनता ति **अनत्तमनता**। सा पन यस्मा चित्तस्सेव, न सत्तस्स, तस्मा **चित्तस्सा** ति वुत्तं। सेसमेत्थ संगह-सुञ्ञतवारेसु [ध० १०३] च हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं ति।

नवमं।

दसमं [ध० १०३] ससंखारत्ता परेहि उस्साहितस्स वा, परेसं वा अपराधं सारितस्स, सयमेव वा परेसं अपराधं अनुस्सरित्वा अनुस्सरित्वा कुज्झमानस्स उप्पज्जति। इधा पि पदपटिपाटिया एकूनतिंस, अगहितगहणेन चुद्दसेव पदानि होन्ति। ये-वा-पनकेसु पन थीनमिद्धं पि लब्भति। तस्मा एत्थ विना इस्सा-मच्छरिय-कुक्कुच्चेहि चत्तारि अपण्णकङ्गानि थीनमिद्धं ति इमे छ इस्सादीनं उप्पत्तिकाले तेसु अञ्ञतरेन सद्धिं सत्त सत्त ये-वा-पनका एकक्खणे उप्पज्जन्ति। सेसं सब्बं सब्बवारेसु नवमसदिसमेव।

इमेसु पन द्वीसु दोमनस्सचित्तेसु सहजाताधिपति येव लब्भति, नो आरम्मणाधिपति। न हि कुद्धो किञ्चि गरुं करोती ति।

दसमं।

एकादसमं [ध० १०४] छसु आरम्मणेसु वेदनावसेन मज्झत्तस्स कंखापवत्ति-

---

इदं ति रोधो ति वचनद्वयं। एतेना ति दोसेन। सुरोपितं ति सुट्ठु रोपितं ति सुरोपितं। दुरुत्तं ति आदि न सुरोपितं ति पदस्स अधिप्पायो। नत्थि सुरोपं सुरोपितं (१७३-सी०) एतेना ति असुरुपो[1]। सचे पि परिपुण्णवचनं कस्सचि जनस्स होति। अपरे आचरिया वदन्ति।

एत्था ति दसमे। इस्सा....प०....कुक्कुच्चेहीति पदं विना ति अपादानं चत्तारीति छन्दादीनि। तेसू ति इस्सादीसु।

तस्सा ति एकादसमस्स। तस्सा ति विचिकिच्छासम्पयुत्तं ति पदस्स। तत्था ति

---

१. असुरोपो–सी०।

काले उप्पज्जति। तस्स समयववत्थाने विचिकिच्छासम्पयुत्तं ति पदं अपुब्बं। तस्स' त्थो—विचिकिच्छाय सम्पयुत्तं ति **विचिकिच्छासम्पयुत्तं**। धम्मुद्देसे 'विचिकिच्छा होती' ति पदमेव विसेसो। तत्थ विगता चिकिच्छा ति **विचिकिच्छा**। सभावं वा विचिनन्तो एताय किच्छति किलमती ति विचिकिच्छा। सा संसयलक्खणा, कम्पन-रसा, अनिच्छयपच्चुपट्ठाना अनेकंसगाह-पच्चुपट्ठाना वा, अयोनिसो-मनसिकारपद-ट्ठाना। पटिपत्ति-अन्तरायकरा ति दट्ठब्बा। इध पदपटिपाटिया तेवीसति पदानि होन्ति। अगहितगहणेन चुद्दस। तेसं वसेन सविभत्तिकाविभत्तिक-रासिविनिच्छयो वेदितब्बो। मनसिकारो उद्धच्चं ति द्वे येव ये-वा-पनका।

निद्देसवारस्स चित्तेकग्गतानिद्देसे [ध० १०४] यस्मा इदं दुब्बलं चित्तं पवत्त-ट्ठितिमत्तमेवेत्थ होति, तस्मा 'सण्ठिती' ति आदीनि अवत्वा चित्तस्स 'ठिती' ति एक-मेव पदं वुत्तं। तेनेव च कारणेन उद्देसवारे पि 'समाधिन्द्रियं' ति आदि न वुत्तं। विचिकिच्छानिद्देसे [ध० १०४] कंखनवसेन **कंखा**। कंखाय आयना ति **कंखायना**। पुरिमकंखा हि उत्तरकंखं आयति नाम। आकारवसेन वा एतं वुत्तं। कंखासमंगि-चित्तं कंखाय आयितत्ता कंखायितं नाम। तस्स भावो **कंखायितत्तं**। **विमती** ति न-मति। **विचिकिच्छा** वुत्तत्था एव। कम्पनट्ठेन द्विधा एळयती ति **द्वेळ्हकं**। पटिपत्ति-निवारणेन द्वेधा पथो विया ति **द्वेधापथो**। 'निच्चं नु खो इदं, अनिच्चं नु खो' ति आदिप्पवत्तिया एकस्मिं आकारे सण्ठातुं असमत्थताय समन्ततो सेती ति **संसयो**। एकंसं गहेतुं असमत्थताय न एकंसगाहो ति **अनेकंस-गाहो**। निच्छेतुं असक्कोन्ती आरम्मणतो ओसक्कती ति **आसप्पना**। ओगाहितुं असक्कोन्ती परि समन्ततो सप्पती ति **परिसप्पना**। परियोगाहितुं असमत्थताय **अपरियोगाहना**। निच्छयवसेन आरम्मणे पवत्तितुं असमत्थताय **थंभितत्तं**; चित्तस्स थद्धभावो ति अत्थो। विचिकिच्छा हि उप्पज्जित्वा चित्तं थद्धं करोति। यस्मा पन सा उप्पज्जमाना आरम्मणं गहेत्वा मनं विलिखती विय, तस्मा **मनोविलेखो** ति वुत्तं। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

एकादसमं।

विचिकिच्छा ति वचने विनिच्छयो। विगता चिकिच्छा ति[1] निस्सकत्थे पच्चत्तवचनं, विगत-चिकिच्छाया ति अत्थो। सभावा....प०....किच्छादीति करणसाधनपठमातप्पुरिसो।[2] एवं नु खो ति आदिना सप्पनवसेन[3] सेति, समन्ततो वा सेतीति संसयो। कम्पनरसा ति चित्तस्स कम्पनकिच्चा। अनिच्छयाकारेन पच्चुपट्ठाति, अनिच्छयं वा पच्चुपट्ठापेतीति अनिच्छयपच्चु-पट्ठानो। अनेकंसग्गाहो ति न एकंसग्गाहो। इधा ति एकादसमे। तेसं ति चुद्दसपदानं।

पवत्तट्ठितिमत्तं ति चेतसो पवत्तपच्चयट्ठिमत्तं। एत्था ति चित्ते। कङ्खाया ति पदं आयना ति[4] पदे कम्मं। एतं ति निद्देसे....प०....से विनिच्छयो।

---

१. ०पठमा तप्पुरिसो—सी०। २. करणसाधनं०—सी०। ३. संसप्पनवसेन—सी०। ४. आन्यना ति—सी०।

द्वादसमे [ध० १०५] समयववत्थाने उद्धच्चेन सम्पयुत्तं ति **उद्धच्चसम्पयुत्तं**। इदं हि चित्तं छसु आरम्मणेसु वेदनावसेन मज्झत्तं हुत्वा उद्धतं होति। इध धम्मुद्देसे 'विचिकिच्छा'-ठाने 'उद्धच्चं' होती ति आगतं। पदपटिपाटिया अट्ठवीसतिपदानि होन्ति। अगहितगहणेन चुद्दस। तेसं वसेन सविभत्तिकाविभत्तिक-रासिविधानं वेदितब्बं। अधिमोक्खो मनसिकारो ति द्वे व ये-वा-पनका। निद्देसवारस्स उद्धच्च-निद्देसे [ध० १०५] **चित्तस्सा** ति न सत्तस्स, न पोसस्स। **उद्धच्चं** ति उद्धताकारो। न-वूपसमो ति **अ-वूपसमो**। चेतो विक्खिपती ति **चेतसो विक्खेपो**। **भन्तत्तं चित्तस्सा** ति चित्तस्स भन्तभावो, भन्तयान-भन्तगोणादीनं विय। इमिना एकारम्मणस्मिं येव विप्फन्दनं कथितं। उद्धच्चं हि एकारम्मणे विप्फन्दति, विचिकिच्छा नानारम्मणे। सेसं सब्बवारेसु हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

द्वादसमं

इदानि इमस्मिं चित्तद्वये पकिण्णकविनिच्छयो होति। 'आरम्मणे पवट्टक-चित्तानि नाम कती ?' ति वुत्तस्मिं हि 'इमानेव द्वे' ति वत्तब्बं। तत्थ विचिकिच्छासह-गतं एकन्तेन पवट्टति, उद्धच्चसहगतं पन लद्धाधिमोक्खत्ता लद्धपतिट्ठा व पवट्टति। यथा हि वट्ट-चतुरस्सेसु द्वीसु मणीसु पब्भारट्ठाने पवट्टेत्वा विस्सट्ठेसु वट्टमणि एकन्ते-नेव पवट्टति, चतुरस्सो पतिट्ठाय पतिट्ठाय पवट्टति, एवं-सम्पदमिदं वेदितब्बं। सब्बेसु पि हीनादिभेदो [ध० ७३] न उद्धटो, सब्बेसं एकन्तहीनत्ता। सहजाता-धिपति लब्भमानो पि न उद्धटो, हेट्ठा दस्सितनयत्ता। ञाणाभावतो पनेत्थ वीमंसा-धिपति नाम नत्थि। पच्छिमद्वये सेसो पि नत्थि येव। कस्मा ? कंचि धम्मं धुरं कत्वा अनुप्पज्जनतो, पट्ठाने [तिकप० ८६] च पटिसिद्धतो।

इमेहि पन द्वादसहि अकुसलचित्तेहि कम्मे आयूहिते, ठपेत्वा उद्धच्चसहगतं, सेसानि एकादसेव पटिसन्धिं आकड्ढन्ति। विचिकिच्छासहगते अलद्धाधिमोक्खे दुब्बले पि पटिसन्धिं आकड्ढमाने उद्धच्चसहगतं लद्धाधिमोक्खं बलवं कस्मा नाक-ड्ढती ति ? दस्सनेन पहातब्बाभावतो। यदि हि आकड्ढेय्य 'दस्सनेन पहातब्ब,-पद-

---

चित्तस्सा[1] ति थपनं[2]। न तस्स उद्धच्चं होति। कङ्खायना ति[2] पदं विक्खिपतीति पदे कम्मं। चेतसो विक्खेपो ति अलुत्तसमासो। भन्तयान''''प०''''दीनं भन्तभावो विय। इमिना ति भन्तत्तं ति पदेन। हिसद्दो वित्थारो। हि सच्चं।

आरम्मणे''''प०''''कतिवचने वुत्तस्मिं इमानेव द्वे ति वचनं वत्तब्बं। तत्था ति द्वीसु चित्तेसु। सब्बेसु पी ति द्वादसाकुसलेसु। एत्था ति अकुसलेसु। सेसो पि अधिपतिं आकड्ढन्तीति।

अलद्धं अधिमोक्खं येन तं अलद्धाधिमोक्खं। तं ति उद्धच्चसहगतं। तेसु हीति हि

---

१. चेतो ति–सी०। २-२. सी० पोत्थके अयं पाठो नत्थीति।

विभंगे आगच्छेय्य, तस्मा, ठपेत्वा तं, सेसानि एकादस आकड्ढन्ति। तेसु हि येन केनचि कम्मे आयूहिते ताय चेतनाय चतूसु अपायेसु पटिसन्धि होति। अकुसलविपाकेसु अहेतुकमनोविञ्ञाणधातु उपेक्खासहगता पटिसन्धिं गण्हाति। इतरस्सा पि एत्थेव पटिसन्धिदानं भवेय्य। यस्मा पन तं नत्थि, तस्मा 'दस्सनेन पहातब्ब'-पदविभंगे नागतं ति।

अकुसला धम्मा ति पदस्स वण्णना निट्ठिता।

अब्याकतधम्मकथा

विपाककथा

इदानि अब्याकतपदं भाजेत्वा दस्सेतुं **कतमे धम्मा अब्याकता** ति [ध० १०७] आदि आरद्धं। तत्थ चतुब्बिधं अब्याकतं—विपाकं किरियं रूपं निब्बानं ति। तेसु विपाकाब्याकतं। विपाकाब्याकते पि कुसलविपाकं। तस्मिं पि परित्तविपाकं। तस्मिं पि अहेतुकं। तस्मिं पि पञ्चविञ्ञाणं। तस्मिं पि द्वारपटिपाटिया चक्खुविञ्ञाणं। तस्सा पि, ठपेत्वा द्वारारम्मणादिसाधारणपच्चयं, असाधारणकम्मपच्चयवसेन उप्पत्तिं दीपेतुं **कामावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता** ति आदि वुत्तं। तत्थ **कतत्ता** ति कतकारणा। **उपचितत्ता** ति आचितत्ता, वड्ढितकारणा। **चक्खुविञ्ञाणं** ति कारणभूतस्स चक्खुस्स विञ्ञाणं, चक्खुतो वा पवत्तं, चक्खुस्मिं वा निस्सितं विञ्ञाणं ति चक्खुविञ्ञाणं।

सच्चं। तेसु एकादसाकुसलेसु। येन केनचि अकुसलचित्तेन। इतरस्सा पि उद्धच्चसहगतस्स। एत्थेव अपायेसु। तं ति पटिसन्धिदानं।

दस्सनेन पहातब्बेस्ववुत्तत्ता व तादिना।
उद्धच्चं सन्धिफलदं, न होतेवा ति निच्छयो ति॥

सच्चसङ्खेपटीकायं वाचिस्सराचरियेन वुत्तं।

अकुसलं निट्ठितं।

चित्तुप्पादकण्डं अब्याकतपदं

विपाकचित्तकथावण्णना

तत्था ति अब्याकता ति वचने, तेसु वा[1] विपाकादीसु। विपाकाब्याकतं (१७४–सी०) भाजेत्वा दस्सेतुं कतमे धम्मा अब्याकता ति आदि आरद्धं। धिपाकाब्याकते पी ति निद्धारणं। तस्मिं पी ति कुसलविपाके। तस्मिं पीति परित्तविपाके, निद्धारणं। तस्सा पीति चक्खुविञ्ञाणस्स। द्वारञ्च आरम्मणञ्च द्वारारम्मणं। तं आदि यस्स सो द्वारारम्मणादि। साधारणो च सो पच्चयो चा ति साधारणपच्चयो। द्वारारम्मणादि च सो साधारणपच्चयो चा ति द्वारा···· प०····पच्चयो। तत्था ति कतत्ता ति आदिपदेसु, निद्धारणं।

---

१. नत्थि–सी०।

परतो सोतविञ्ञाणादीसु पि एसेव नयो। तत्थ चक्खुसन्निस्सितरूपविजानन-लक्खणं चक्खुविञ्ञाणं, रूपमत्तारम्मणरसं, रूपाभिमुखभावपच्चुपट्ठानं, रूपारम्मणाय किरियमनोधातुया अपगमपदट्ठानं। परतो आगतानि सोतादिसन्निस्सित-सद्दादि-विजाननलक्खणानि सोत-घाण-जिव्हा-कायविञ्ञाणानि सद्दादिमत्तारम्मण-रसानि, सद्दादि-अभिमुखभाव-पच्चुपट्ठानानि, सद्दादि-आरम्मणानं किरियमनो-धातूनं अपगमपदट्ठानानि।

इध पन पदपटिपाटिया दस पदानि होन्ति। अगहितगहणेन सत्त। तेसु पञ्च अविभत्तिकानि, द्वे सविभत्तिकानि। तेसु चित्तं फस्सपञ्चकवसेन चेव इन्द्रियवसेन च द्वीसु ठानेसु विभत्तिं गच्छति, वेदना फस्सपञ्चक-झानंग-इन्द्रियवसेन तीसु येव। रासयो पि इमे व तयो होन्ति। ये-वा-पनको एको मनसिकारो एव।

निद्देसवारे चक्खुविञ्ञाणं **पण्डरं** ति [ध० १०८] वत्थुतो वुत्तं। कुसलं हि अत्तनो परिसुद्धताय पण्डरं नाम, अकुसलं भवंगनिस्सन्देन, विपाकं वत्थुपण्डरताय पण्डरं नाम। चित्तेकग्गतानिद्देसे [ध० १०८] **चित्तस्स ठिती** ति एकमेव पदं वुत्तं। इदं पि हि दुब्बलं चित्तं पवत्तट्ठितिमत्तमेवेत्थ लब्भति, 'सण्ठिति-अवट्ठिति'-भावं पापुणितुं न सक्कोति।

संगहवारे [ध० १०८-१०९] झानंग-मग्गंगानि न उद्धटानि। कस्मा? वितक्क-पच्छिमकं हि झानं नाम, हेतुपच्छिमको मग्गो नाम। पकतिया अवितक्कचित्ते झानंगं न लब्भति, अहेतुकचित्ते च मग्गङ्गं। तस्मा इध उभयं पि न उद्धटं। संसारक्खन्धो [ध० १०८] पनेत्थ चतुरंगिको येव भाजितो। सुञ्ञतवारो पाकतिको येव। सोत-विञ्ञाणादिनिद्देसा पि इमिना व नयेन वेदितब्बा। केवलं हि चक्खुविञ्ञाणादीसु 'उपेक्खा भाजिता, कायविञ्ञाणे 'सुखं' ति, अयमेत्थ विसेसो।

सो पि घट्टनवसेन होती ति वेदितब्बो। चक्खुद्वारादीसु हि चतूसु उपादा-रूपमेव उपादारूपं घट्टेति, उपादारूपे येव उपादारूपं घट्टेन्ते पटिघट्टनानिघंसो बलवा

तत्था ति चक्खुविञ्ञाणादीसु। रूपमत्तारम्मणरसं ति मत्तसद्देन यथा आरम्मणन्तरं निवत्तेति, एवं रूपारम्मणे पी ति लब्भमाने एकच्चे विसेसे निवत्तेति, न हि चक्खुविञ्ञाणं वण्णमत्ततो अञ्ञं किञ्चि नीलादिविसेसं ववत्थपेतुं[1] सक्कोति। चक्खुविञ्ञाणस्स रूपस्स अभि-मुखभावेन पच्चुपट्ठानं।

इधा ति चक्खुविञ्ञाणे। तेसू ति द्वीसु सविभत्तिकेसु।

झानमग्गङ्गं एत्था ति चक्खुविञ्ञाणे। एत्था ति चक्खुविञ्ञाणादीसु।

अयं विसेसो केन होतीति आह—सो पी ति आदि। हिसद्दो वित्थारो। चतूसू ति पदं

---

१. तथा गहेतुं–सी०।

न होति। चतुन्नं अधिकरणीनं उपरि चत्तारो कप्पासपिचुपिण्डे ठपेत्वा पिचुपिण्डेनेव पहटकालो विय फुट्ठमत्तमेव होति। वेदना मज्झत्तट्ठाने तिट्ठति। कायद्वारे पन बहिद्धा महाभूतारम्मणं अज्झत्तिकं कायप्पसादं घट्टेत्वा पसादपच्चयेसु महाभूतेसु पटिहञ्ञति। यथा अधिकरणीमत्थके कप्पासपिचुपिण्डं ठपेत्वा कूटेन पहरन्तस्स कप्पासपिचुपिण्डं भिन्दित्वा कूटं अधिकरणिं गण्हाति, निघंसो बलवा होति, एवमेव पटिघट्टनानिघंसो बलवा होति। इट्ठे आरम्मणे सुखसहगतं कायविञ्ञाणं उप्पज्जति, अनिट्ठे दुक्खसहगतं।

इमेसं पन पञ्चन्नं चित्तानं वत्थुद्वारारम्मणानि निबद्धानेव होन्ति, वत्थादिसंकमनं नामेत्थ नत्थि। कुसलविपाकं चक्खुविञ्ञाणं हि चक्खुप्पसादं वत्थुं कत्वा इट्ठे च इट्ठमज्झत्ते च चतुसमुट्ठानिकरूपारम्मणे दस्सनकिच्चं साधयमानं चक्खुद्वारे ठत्वा विपच्चति। सोतविञ्ञाणादीनि सोतप्पसादादयो वत्थुं कत्वा इट्ठ-इट्ठमज्झत्तेसु सद्दादीसु सवन-घायन-सायन-फुसनकिच्चानि साधयमानानि सोतद्वारादीसु ठत्वा विपच्चन्ति। सद्दो पनेत्थ द्वि-समुट्ठानिको येव होति।

मनोधातुनिद्देसे [ध० १११] सभावसुञ्ञतनिस्सत्तट्ठेन मनो येव धातु **मनोधातु**। सा चक्खुविञ्ञाणादीनं अनन्तरं रूपादिविजाननलक्खणा, रूपादीनं सम्पटिच्छनरसा, तथाभावपच्चुपट्ठाना, चक्खुविञ्ञाणादि-अपगमपदट्ठाना। इध धम्मुद्देसे द्वादसपदानि होन्ति। अगहितगहणेन नव। तेसु सत्त अविभत्तिकानि द्वे सविभत्तिकानि। अधिमोक्खो मनसिकारो ति द्वे ये-वा-पनका।

वितक्कनिद्देसो [ध० ११२] अभिनिरोपनं पापेत्वा ठपितो। यस्मा पनेतं चित्तं नेव-कुसलं नाकुसलं, तस्मा सम्मासंकप्पो ति वा मिच्छासंकप्पो ति वा न वुत्तं। संगहवारे [ध० ११२] लब्भमानं पि झानङ्गं पञ्चविञ्ञाणसोते पतित्वा गतं ति न उद्धटं। मग्गङ्गं पन न लब्भति एवा ति न उद्धटं। सुञ्ञतवारो पाकतिको येव।

इमस्स चित्तस्स वत्थु निबद्धं हदयवत्थुमेव होति। द्वारारम्मणानि अनिबद्धानि। तत्थ किञ्चा पि द्वारारम्मणानि संकमन्ति, ठानं पन एकं। सम्पटिच्छनकिच्चमेव हेतं होति। इदं हि पञ्चद्वारे पञ्चसु आरम्मणेसु सम्पटिच्छनं हुत्वा विपच्चति। कुसलविपाकेसु चक्खुविञ्ञाणादीसु निरुद्धेसु तं-समनन्तरा तानेव ठानप्पत्तानि रूपारम्मणादीनि सम्पटिच्छति।

घट्टेतीति पदे आधारो। पटिघट्टनानिघंसो ति पटिघट्टनसङ्खातो निघंसो।

एत्था ति चक्खुविञ्ञाणादीसु। एत्था ति सद्दादीसु।

तथाभावेन सम्पटिच्छितभावेन पच्चुपट्ठातीति तथाभावपच्चुपट्ठाना। इधा ति मनोधातुनिद्देसे।

गतं ति पवत्तं।

तत्था ति तस्मि चित्ते। तं-समनन्तरा ति तेसं चक्खुविञ्ञाणादीनं अनन्तरा। इट्ठमज्झत्तारम्मणा पवत्तति।

मनोविञ्ञाणधातुनिद्देसेसु [ध० ११३-११७] पठममनोविञ्ञाणधातुया 'पीति'-पदं [ध० ११३] अधिकं। वेदना पि 'सोमनस्स'-वेदना होति। अयं हि इट्ठारम्मणस्मिं येव पवत्तती ति। दुतियमनोविञ्ञाणधातु [ध० ११५] इट्ठमज्झत्तारम्मणे। तस्मा तत्थ 'उपेक्खा'-वेदना होति। पदानि मनोधातुनिद्देस-सदिसानेव। उभयत्था पि पञ्चविञ्ञाणसोते पतित्वा गतत्ता येव झानङ्गानि न उद्धटानि। मग्गङ्गानि अलाभतो येव। सेसं सब्बत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। लक्खणादितो पनेसा दुविधा पि मनोविञ्ञाणधातु अहेतुकविपाका, छळारम्मणविजाननलक्खणा, सन्तीरणादिरसा, तथाभावपच्चुपट्ठाना, हदयवत्थुपदट्ठाना ति वेदितब्बा।

तत्थ पठमा [ध० ११३] द्वीसु ठानेसु विपच्चति। सा हि पञ्चद्वारे कुसलविपाक-चक्खुविञ्ञाणादि-अनन्तरं, विपाकमनोधातुया तं आरम्मणं सम्पटिच्छित्वा निरुद्धाय, तस्मिं येवारम्मणे सन्तीरणकिच्चं साधयमाना पञ्चसु द्वारेसु ठत्वा विपच्चति। छसु द्वारेसु पन बलवारम्मणे तदारम्मणं हुत्वा विपच्चति। कथं? यथा हि चण्डसोते, तिरियं नावाय गच्छन्तिया, उदकं छिज्जित्वा थोकं ठानं नावं अनुबन्धित्वा यथासोतमेव गच्छति, एवमेव छसु द्वारेसु बलवारम्मणे पलोभयमाने आपाथगते जवनं जवति। तस्मिं जविते भवंगस्स वारो। इदं पन चित्तं भवंगस्स वारं अदत्वा जवनेन गहितारम्मणं गहेत्वा एकं द्वे चित्तवारे पवत्तित्वा भवंगमेव ओतरति। गवक्खन्धे नदिं तरन्ते पि एवमेव उपमा वित्थारेतब्बा। एवमेसा यं जवने गहितारम्मणं तस्सेव गहितत्ता तदारम्मणं नाम हुत्वा विपच्चति।

दुतिया [ध० ११५] पन पञ्चसु ठानेसु विपच्चति। कथं? मनुस्सलोके ताव जच्चन्ध-जच्चबधिर-जच्चजळ-जच्चुम्मत्तक-उभतोब्यञ्जनक-नपुंसकानं पटिसन्धिगहणकाले (i) पटिसन्धि हुत्वा विपच्चति। पटिसन्धिया वीतिवत्ताय यावतायुकं (ii) भवंगं हुत्वा विपच्चति। इट्ठमज्झत्ते पञ्चारम्मणवीथिया (iii) सन्तीरणं

तत्था ति दुतियमनोविञ्ञाणधातुयं। उभयथा पी ति मनोविञ्ञाणधातुद्वये मग्गङ्गानि अलभतो येव न उद्धटानि। लक्खणादितो पन वेदितब्बो। तथाभावेन सन्तीरणादिभावेन पच्चुपट्ठानो।

तत्था ति द्वीसु मनोविञ्ञाणधातूसु। बलवारम्मणेसू ति[2] महन्तविभूतारम्मणेसु[2]। यथासोतमेवा ति सोतस्स अनुरूपमेव। जवतीति पवत्तति। वारो ति ओकासो। इदं पन चित्तं ति वचनं चित्तसामञ्ञं गहेत्वा वुत्तं, तस्मा चित्तं ति पदं ओतरतीति पदे कत्ता। भवङ्गमेवा (१७५–सी०) ति कम्मं। एकं द्वे चित्तवारे ति एत्थ एकं ति पदं केसञ्चि आचरियानं मतेन वुत्तं, न हि तदारम्मणं एतं होति। तेन यं पन परमत्थविनिच्छये अनुरुद्धाचरियेन वुत्तं "**सकिं द्वे वा तदालम्बं, सकिमावज्जनादयो** ति" तं **मज्झिमभाणकमतेन** वुत्तं ति **अभिधम्मत्थसङ्गह-**

२-२. बलवारम्मणे ति अतिमहन्त०–सी०।

हुत्वा, बलवारम्मणे छसु द्वारेसु (iv) तदारम्मणं हुत्वा, मरणकाले (v) चुति हुत्वा ति इमेसु पञ्चसु ठानेसु विपच्चती ति।

मनोविञ्ञाणधातुद्वयं निट्ठितं।

अट्ठ महाविपाका

इदानि अट्ठ महाविपाकचित्तानि दस्सेतुं पुन **कतमे धम्मा अब्याकता** [ध० ११७] ति आदि आरद्धं। तत्थ पालियं नयमत्तं दस्सेत्वा सब्बवारा संखित्ता। तेसं अत्थो हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। यो पनेत्थ विसेसो तं दस्सेतुं **अलोभो अब्याकतमूलं** [ध० ११८] ति आदि वुत्तं। यं पि न वुत्तं तं एवं वेदितब्बं—यो हि कामावचरकुसलेसु कम्मद्वार-कम्मपथ-पुञ्ञकिरियवत्थुभेदो वुत्तो सो इध नत्थि। कस्मा ? अविञ्ञत्तिजनकतो अविपाक-धम्मतो तथा-अप्पवत्तितो च। या पि ये-वापनकेसु करुणा-मुदिता वुत्ता, ता सत्तारम्मणत्ता विपाकेसु न सन्ति। एकन्तपरित्तारम्मणानि हि कामावचरविपाकानि। न केवलं च करुणा-मुदिता, विरतियो पेत्थ न सन्ति। पञ्च सिक्खापदानि कुसलानेवा' ति हि वुत्तं। असंखार-ससंखारविधानं चेत्थ कुसलतो चेव पच्चयभेदतो च वेदितब्बं। असंखारिकस्स हि कुसलस्स असंखारिकमेव विपाकं, ससंखारिकस्स ससंखारिकं। बलवपच्चयेहि च उप्पन्नं असंखारिकं, इतरेहि इतरं। हीनादिभेदे पि इमानि हीनमज्झिम-पणीतेहि छन्दादीहि अनिप्फादितत्ता हीन-मज्झिम-पणीतानि नाम न होन्ति। हीनस्स पन कुसलस्स विपाकं हीनं, मज्झिमस्स मज्झिमं, पणीतस्स पणीतं। अधिपतिनो पेत्थ न सन्ति। कस्मा ? छन्दादीनि धुरं कत्वा अनुप्पादेतब्बतो। सेसं सब्बं अट्ठसु कुसलेसु वुत्तसदिसमेव।

टीकायं सुमङ्गलाचरियेन वुत्तं ति। सायं ति पठमविञ्ञाणधातु। तस्सा ति मनो विञ्ञाणधातुया, चुति हुत्वा विपच्चतीति सम्बन्धो।

मनोविञ्ञाणधातुद्वयकथा निट्ठिता

अट्ठमहाविपाककथावण्णना

तत्था ति महाविपाकचित्ते। तेसं ति सब्बवारानं। एत्था ति महाविपाकचित्तेसु। इधा ति महाविपाकचित्तेसु[1]। अविञ्ञत्तिजननतो ति पदेन कम्मद्वारं नत्थीति ञापेति। अविपाकधम्मतो ति अविपाकभावतो, इमिना कम्मभेदो[2] नत्थीति ञापेति। तथा-अप्पवत्तितो ति पदेन पुञ्ञक्रियावत्थुभेदो नत्थीति ञापेति। या पि[3] करुणा-मुदिता। एत्था ति महाविपाकेसु। पाणातिपाता वेरमणि-आदयो पञ्चसिक्खापदा कुसला येव, इदं[4] वचनं सिक्खापदविभङ्गे भगवता हि यस्मा वुत्तं, तस्मा विरतियो पि एत्थ न सन्तीति योजना। एत्था ति महाविपाकेसु। हीनादिभेदं ति पि[5] इमानि विपाकानि····प०····योजना।

१. ०चित्ते—सी०। २. कम्मपथभेदो—सी०। ३. यापि ता—सी०। ४. इति—सी०। ५. हीनादिभेदे पी ति—सी०।

इदानि इमेसं अट्ठन्नं महाविपाकचित्तानं विपच्चनट्ठानं वेदितब्बं। एतानि हि चतूसु ठानेसु विपच्चन्ति—पटिसन्धियं, भवंगे, चुतियं, तदारम्मणे ति। कथं? मनुस्सेसु ताव कामावचरदेवेसु च पुञ्ञवन्तानं दुहेतुक-तिहेतुकानं पटिसन्धिगहणकाले (i) पटिसन्धि हुत्वा विपच्चन्ति। पटिसन्धिया वीतिवत्ताय पवत्ते सट्ठि पि असीतिं पि वस्सानि असंखेय्यं पि आयुकालं (ii) भवङ्गं हुत्वा, बलवारम्मणे छसु द्वारेसु (iii) तदारम्मणं हुत्वा, मरणकाले (iv) चुति हुत्वा ति। एवं चतूसु ठानेसु विपच्चन्ति। तत्थ सब्बे पि सब्बञ्ञुबोधिसत्ता पच्छिमपटिसन्धिगहणे पठमेन सोमनस्ससहगत-तिहेतुक-असंखारिक-महाविपाकचित्तेन पटिसन्धिं गण्हन्ति। तं पन मेत्तापुब्बभागचित्तस्स विपाकं होति। तेन दिन्नाय पटिसन्धिया असंखेय्यं आयु। कालवसेन पन परिणमति।

महासीवत्थेरो पनाह—'सोमनस्ससहगततो उपेक्खासहगतं बलवतरं। तेन पटिसन्धिं गण्हन्ति। तेन गहितपटिसन्धिका हि महज्झासया होन्ति। दिब्बेसु पि आरम्मणेसु उप्पिलाविनो न होन्ति, तिपिटकचूळनागत्थेरादयो विय'। अट्ठकथायं पन—'अयं थेरस्स मनोरथो,' 'नत्थि एतं'ति पटिक्खिपित्वा 'सब्बञ्ञुबोधिसत्तानं हितूपचारो बलवा होति, तस्मा मेत्तापुब्बभाग-कामावचर-कुसलविपाक-सोमनस्स-सहगत-तिहेतुक-असंखारिकचित्तेन पटिसन्धिं गण्हन्ती'ति वुत्तं।

विपाकुद्धारकथा

इदानि विपाकुद्धारकथायं मातिका ठपेतब्बा—(i) तिपिटकचूळनागत्थेरो ताव आह—एकाय कुसलचेतनाय सोळस विपाकचित्तानि उप्पज्जन्ति। एत्थेव द्वादसकमग्गो पि अहेतुकट्ठकं पी ति। (ii) मोरवापीवासी महादत्तत्थेरो पनाह—एकाय कुसलचेतनाय द्वादस विपाकचित्तानि उप्पज्जन्ति। एत्थेव दसकमग्गो पि अहेतुकट्ठकं पी ति। (iii) तिपिटकमहाधम्मरक्खितत्थेरो आह—एकाय कुसलचेतनाय दस विपाकचित्तानि उप्पज्जन्ति, एत्थेव अहेतुकट्ठकं ति।

विपच्चनट्ठानं ति विपच्चनवसेन पवत्तनट्ठानं। पटिसन्धिभवङ्गचुतितदारम्मणवसेन चतुकिच्चानमेव तेसं पवत्ति ओकासो ति अत्थो। तत्था ति पठममहाविपाकचित्तेसु, निद्धारणं। तं ति चित्तं। मेत्ता-पुब्बभागचित्तस्सा ति मेत्ताय पुरिमकोट्ठासवसेन पवत्तचित्तस्स। तेना ति मेत्तापुब्बभागचित्तेन, दिन्नाया ति पदे कत्ता। असङ्खेय्यं आयु होति। असङ्खेय्यं ति अच्चन्तसंयोगो। कालवसेन पन परिणमति पवत्तेति, तेन गहितपटिसन्धिको बोधिसत्तो ति सम्बन्धो। आयु वा परिणमति।

तेन उपेक्खासहगतेन। पटिसन्धिं गण्हन्ति बोधिसत्ता। उप्पिलाविनो ति[1] अट्ठितचित्ता। थेरस्सा ति महासीवत्थेरस्स। नत्थि एतं वचनं इति (१४७-म०) पटिक्खिपित्वा वुत्तं सङ्गहकारे-

---

१. उब्बिलाविनो ति–सी०।

(i)

इमस्मि ठाने साकेतपञ्हं नाम गण्हिसु । साकेते किर उपासका सालायं निसीदित्वा 'किं नु खो एकाय चेतनाय कम्मे आयूहिते एका पटिसन्धि होति उदाहु नाना ?' ति पञ्हं समुट्ठापेत्वा निच्छेतुं असक्कोन्ता आभिधम्मिकत्थेरे उपसंकमित्वा पुच्छिसु । थेरा 'यथा एकस्मा अम्बबीजा एको व अंकुरो निक्खमति, एवं एका व पटिसन्धि होती'ति सञ्ञापेसुं । अथ एकदिवसं 'किं नु खो नानाचेतनाहि कम्मे आयूहिते पटिसन्धियो नाना होन्ति उदाहु एका ?' ति पञ्हं समुट्ठापेत्वा निच्छेतुं असक्कोन्ता थेरे पुच्छिसु । थेरा 'यथा बहूसु अम्बबीजेसु रोपितेसु बहू अंकुरा निक्खमन्ति, एवं बहुका व पटिसन्धियो होन्ती'ति सञ्ञापेसुं ।

अपरं पि इमस्मि ठाने उस्सदकित्तनं नाम गहितं । इमेसं हि सत्तानं लोभो पि उस्सन्नो होति, दोसो पि मोहो पि; अलोभो पि अदोसो पि अमोहो पि । तं पनेतं तेसं उस्सन्नभावं को नियामेती ति ?। पुब्बहेतु नियामेति । कम्मायूहनक्खणे येव नानत्तं होति । कथं ? "यस्स हि कम्मायूहनक्खणे लोभो बलवा होति अलोभो मन्दो, अदोसामोहा बलवन्तो दोसमोहा मन्दा, तस्स मन्दो अलोभो लोभं परियादातुं न सक्कोति, अदोसामोहा पन बलवन्तो दोसमोहे परियादातुं सक्कोन्ति । तस्मा सो तेन कम्मेन दिन्नपटिसन्धिवसेन निब्बत्तो लुद्धो होति, सुखसीलो अक्कोधनो, पञ्ञवा पन वजिरूपमञ्ञाणो ति ।

"यस्स पन कम्मायूहनक्खणे लोभदोसा बलवन्तो होन्ति अलोभादोसा मन्दा, अमोहो च बलवा मोहो मन्दो, सो पुरिमनयेनेव लुद्धो चेव होति दुट्ठो च, पञ्ञवा पन होति वजिरूपमञ्ञाणो दत्ताभयत्थेरो विय । यस्स पन कम्मायूहनक्खणे लोभादोसमोहा बलवन्तो होन्ति इतरे मन्दा, सो पुरिमनयेनेव लुद्धो चेव होति दन्धो च, सुखसीलको पन होति अक्कोधनो । तथा यस्स कम्मायूहनक्खणे तयो पि लोभदोसमोहा बलवन्तो होन्ति अलोभादयो मन्दा, सो पुरिमनयेनेव लुद्धो चेव दुट्ठो च मूळ्हो च ।

"यस्स पन कम्मायूहनक्खणे अलोभदोसमोहा बलवन्तो होन्ति इतरे मन्दा, सो पुरिमनयेनेव अप्पकिलेसो होति, दिब्बारम्मणं पि दिस्वा निच्चलो, दुट्ठो पन होति दन्धपञ्ञो चा ति । यस्स पन कम्मायूहनक्खणे अलोभादोसमोहा बलवन्तो होन्ति इतरे मन्दा, सो पुरिमनयेनेव अलुद्धो चेव होति, सुखसीलको च, दन्धो पन होति । तथा यस्स कम्मायूहनक्खणे अलोभदोसामोहा बलवन्तो होन्ति इतरे मन्दा,

---

हीति योजना । हितूपचारो ति हितस्स उपचरणं ।

यस्सा ति सत्तस्स भवङ्गचित्तं[1] ।

---

१. नत्थि अयं सी० पोत्थके पाठो ।

सो पुरिमनयेनेव अलुद्धो चेव होति पञ्ञवा च, दुट्ठो पन होति कोधनो। यस्स पन कम्मायूहनक्खणे तयो पि अलोभादयो बलवन्तो होन्ति लोभादयो मन्दा, सो 'महासंघरक्खितत्थेरो विय अलुद्धो अदुट्ठो पञ्ञवा च होती" ति।

अपरं पि इमस्मिं ठाने हेतुकित्तनं नाम गहितं। तिहेतुककम्मं हि तिहेतुकं पि दुहेतुकं पि अहेतुकं पि विपाकं देति। दुहेतुककम्मं तिहेतुकं विपाकं न देति, इतरे देति। तिहेतुककम्मेन पटिसन्धि तिहेतुका पि होति, दुहेतुका पि; अहेतुका न होति। दुहेतुकेन दुहेतुका पि होति अहेतुका पि; तिहेतुका न होति। असंखारिकं कुसलं असंखारिकं पि ससंखारिकं पि विपाकं देति। ससंखारिकं ससंखारिकं पि असंखारिकं पि विपाकं देति। आरम्मणेन वेदना परिवत्तेतब्बा। जवनेन तदारम्मणं नियामेतब्बं।

इदानि तस्स तस्स थेरस्स वादे सोळस मग्गादयो वेदितब्बा। पठमकामावचरकुसलसदिसेन हि पठममहाविपाकचित्तेन गहितपटिसन्धिकस्स गब्भवासतो निक्खमित्वा संवरासंवरे पट्ठपेतुं समत्थभावं उपगतस्स चक्खुद्वारस्मिं 'इट्ठारम्मणे' आपाथगते किरियमनोधातुया भवङ्गे अनावट्टिते येव अतिक्कमन-आरम्मणानं पमाणं नत्थि। कस्मा एवं होति? आरम्मणदुब्बलताय। अयं ताव एको मोघवारो। सचे पन भवङ्गं आवट्टेति, किरियमनोधातुया भवंगे आवट्टिते, वोट्ठपनं अपापेत्वा व, अन्तरा, चक्खुविञ्ञाणे वा सम्पटिच्छने वा सन्तीरणे वा ठत्वा निवत्तिस्सती ति नेतं ठानं विज्जति। वोट्ठपने पन ठत्वा एकं वा द्वे वा चित्तानि पवत्तन्ति। ततो आसेवनं लभित्वा

कस्मा[1] एवं अनावत्तनाकारेन होति। आरम्मणस्स याव वोट्ठब्बनुप्पादा असण्ठहनभावेन[1] आरम्मणदुब्बलताय[2]। आरम्मणस्स दुब्बलताय एतं[3] होति[3]। अयं ताव एको मोघवारो ति वचनं अतिपरित्तारम्मणं सन्धाय वुत्तं। क्रियमनोधातु[4] सचे पन भवङ्गं आवट्टेति[4]। आवट्टिते ति[5] पदं निवत्तस्सती ति पदे लक्खणक्रिया। चित्तं वोट्ठब्बनं अपापेत्वा अन्तरा···· प०····धानं नत्थि[5]। अपापेत्वा ति पदं ठत्वा ति पदे पुब्बकालक्रिया। (१७६–सी०) एकं वा[6] द्वे वा चित्तानि[7] पवत्तन्ति। ततो तस्मा वोट्ठब्बनचित्तं आसेवनं लभित्वा जवनट्ठाने जवनस्स उप्पज्जनट्ठाने ठत्वा द्वितिक्खत्तुं उप्पज्जित्वान जवनभावेन पुन भवङ्गं ओतरतीति योजना। भवङ्गं ति पदं ओतरती ति पदे कम्मं। एकं वा ति वचनं केसञ्चि आचरियानं मतेन वुत्तं ति गहेतब्बं। तथा ति[8] अभिधम्मत्थसङ्गहादिप्पकरणेसु[9] परित्तारम्मणे द्वितिक्खत्तुं वोट्ठब्बनमेव परिवत्ततीति[10] एत्तकमेव वुत्तं, न वुत्तं एकं ति। अथवा एकं वा चित्तस्स अतिमहन्तारम्मणादीसु पवत्तिं सन्धाय वुत्तं। न परित्तारम्मणे पवत्तिं सन्धाय वुत्तं। वासद्दो तीणि चित्तानीति इममत्थं समुच्चेति। इदम्पि चित्तं आरम्मणस्स वोट्ठब्बनसमकालमेव अतीत-

---

१-१. नत्थि सी० पोत्थके पाठो। २. आरम्मणदुब्बलताया ति–सी०। ३-३. नत्थि–सी०। ४-४. नत्थायं सी० पोत्थके पाठो। ५-५. नत्थायं सी० पोत्थके पाठो। ६. नत्थि–सी०। ७. ०वोट्ठब्बनचित्तानि–सी०। ८. तथा हि–सी०। ९. अभिधम्मसङ्गादि०–सी०। १०. पवत्ततीति–सी०।

जवनट्ठाने ठत्वा पुन भवंगं ओतरती ति इदं पि आरम्मणदुब्बलताय एव होति। अयं पन वारो 'दिट्ठं विय मे, सुतं विय मे'ति आदीनि वदनकाले लब्भति। अयं पि दुतियो मोघवारो।

अपरस्स किरियमनोधातुया भवंगे आवट्टिते वीथिचित्तानि उप्पज्जन्ति, जवनं जवति। जवनपरियोसाने पन तदारम्मणस्स वारो। तस्मिं अनुप्पन्ने येव भवङ्गं ओतरति। तत्रायं उपमा—यथा हि नदिया आवरणं बन्धित्वा महामातिकाभिमुखे उदके कते उदकं गन्त्वा उभोसु तीरेसु केदारे पूरेत्वा अतिरेकं कक्कटकमग्गादीहि पलायित्वा पुन नदिमेव ओतरति, एवमेतं दट्ठब्बं। एत्थ हि नदियं उदकप्पवत्तनकालो विय भवंगवीथिप्पवत्तनकालो। आवरणबन्धकालो विय किरियमनोधातुया भवङ्गस्स आवट्टनकालो। महामातिकाय उदकप्पवत्तनकालो विय वीथिचित्तप्पवत्ति। उभोसु तीरेसु केदारपूरणं विय जवनं। कक्कटकमग्गादीहि पलायित्वा पुन उदकस्स ओतरणं विय जवनस्स जवित्वा तदारम्मणे अनुप्पन्ने येव पुन भवंगोतरणं। एवं भवंगोतरण-चित्तानं पि गणनपथो नत्थि। इदं पि आरम्मणदुब्बलताय एव होति। अयं ततियो मोघवारो।

सचे पन बलवारम्मणं आपाथगतं होति किरियमनोधातुया भवंगे आवट्टिते चक्खुविञ्ञाणादीनि उप्पज्जन्ति। जवनट्ठाने पठमकामावचरकुसलचित्तं जवनं हुत्वा छ सत्त वारे जवित्वा तदारम्मणस्स वारं देति। तदारम्मणं पतिट्ठहमानं तं-सदिसमेव महाविपाकचित्तं पतिट्ठाति। इदं द्वे नामानि लभति—पटिसन्धिचित्तसदिसत्ता 'मूलभवंगं'ति च, यं जवनेन गहितं आरम्मणं तस्स गहितत्ता 'तदारम्मणं' ति च। इमस्मिं ठाने चक्खुविञ्ञाणं सम्पटिच्छनं सन्तीरणं तदारम्मणं ति चत्तारि विपाकचित्तानि गणनूपगानि होन्ति। यदा पन दुतियकुसलचित्तं जवनं होति, तं-सदिसं दुतियविपाकचित्तमेव तदारम्मणं हुत्वा पतिट्ठाति। इदं पि द्वे नामानि लभति।

भावेन आरम्मणदुब्बलताय एवं वुत्ताकारेन होति। इदं ति चित्तसामञ्ञं सन्धाय वुत्तं। पिसद्दो एवं होतीति एत्थ कत्तुभूतं चित्तं अपेक्खति। मोघवारो ति जवनतदारम्मणेहि तुच्छता मोघवारो, इदं परित्तारम्मणं सन्धाय वुत्तं।

तस्मिं ति तदारम्मणे। तत्रा ति ततियमोघवारे। एत्थ हीति आदि वित्थारो। हि सच्चं, एत्थ नदियं उदकपवत्तकालादीसु, निद्धारणं। भवङ्गवीथिं ति भवङ्गस्स सन्ततिं। जवनचित्तं जवित्वा भवङ्गोतरणं ति सम्बन्धो। भवङ्गं ति पदं ओतरतीति[1] पदे कम्मं। पिसद्दो अतिक्कमन-आरम्मणानं ति[2] अपेक्खति। इदं चित्तं आरम्मणस्स जवनसमकालमेव अतीतभावेन आरम्मग··प०····होति। ततियो मोघवारो ति तदारम्मणतो तुच्छत्ता मोघवारो[3]।

इदं महन्तारम्मणं सन्धाय वुत्तं। बलवारम्मणं ति अतिमहन्तारम्मणं। तस्स जवनस्स आरम्मणं आरम्मणस्सा ति तदारम्मणतो तुच्छता मोघवारो। मज्झपदलोपो ब्रह्मस्सरो ति

---

१. ओतरेणा ति–सी०। २. अतिक्कमनक-आर–सी०। ३. ०ति–सी०।

पटिसन्धिचित्तेन असदिसत्ता 'आगन्तुकभवंगं ' ति च पुरिमनयेनेव 'तदारम्मणं'ति च। इमिना सद्धिं पुरिमानि चत्तारि पञ्च होन्ति। यदा पन ततियकुसलचित्तं जवनं होति, तं-सदिसं ततियं विपाकचित्तं तदारम्मणं हुत्वा पतिट्ठाति। इदं पि वुत्तनयेनेव 'आगन्तुकभवंगं' 'तदारम्मणं' ति च द्वे नामानि लभति। इमिना सद्धिं पुरिमानि पञ्च छ होन्ति। यदा पन चतुत्थकुसलचित्तं जवनं होति, तं-सदिसं चतुत्थं विपाकचित्तं तदारम्मणं हुत्वा पतिट्ठाति। इदं पि वुत्तनयेनेव 'आगन्तुकभवंगं' 'तदारम्मणं' ति च द्वे नामानि लभति। इमिना सद्धिं पुरिमानि छ सत्त होन्ति।

यदा पन तस्मिं द्वारे 'इट्ठमज्झत्तारम्मणं आपाथमागच्छति, तत्रा पि वुत्तनयेनेव तयो मोघवारा लभन्ति। यस्मा पन आरम्मणेन वेदना परिवत्तति तस्मा तत्थ उपेक्खासहगतं सन्तीरणं। चतुन्नं च उपेक्खासहगत-महाकुसलजवनानं परियोसाने चत्तारि उपेक्खासहगत-महाविपाकचित्तानेव तदारम्मणभावेन पतिट्ठहन्ति। तानि पि वुत्तनयेनेव 'आगन्तुकभवंगं' 'तदारम्मणं' ति च द्वे नामानि लभन्ति। 'पिट्ठिभवंगानी' ति पि वुच्चन्ति एव। इति इमानि पञ्च पुरिमेहि सत्तहि सद्धिं द्वादस होन्ति।

एवं चक्खुद्वारे द्वादस, सोतद्वारादीसु द्वादस द्वादसा ति, समसट्ठि होन्ति। एवं एकाय चेतनाय कम्मे आयूहिते समसट्ठि विपाकचित्तानि उप्पज्जन्ति। अगहितगहणेन पन चक्खुद्वारे द्वादस, सोत-घान-जिव्हा-कायविञ्ञाणानि चत्तारी ति सोळस होन्ति।

इमस्मिं ठाने अम्बोपमं नाम गण्हिसु—एको किर पुरिसो फलितम्बरुक्खमूले ससीसं पारुपित्वा निपन्नो निद्दायति। अथेकं अम्बपक्कं वण्टतो मुञ्चित्वा तस्स कण्णसक्खलिं पुञ्छमानं विय 'धं'ति भूमियं पतति। सो तस्स सद्देन पबुज्झित्वा उम्मीलेत्वा ओलोकेसि। ततो हत्थं पसारेत्वा फलं गहेत्वा मद्दित्वा उपसिंघित्वा परिभुञ्जि। तत्थ, तस्स पुरिसस्स अम्बरुक्खमूले निद्दायनकालो विय भवङ्गसमङ्गिकालो। अम्बपक्कस्स वण्टतो मुञ्चित्वा कण्णसक्खलिं पुञ्छित्वा पतनकालो विय आरम्मणस्स पसादघट्टनकालो। पतनसद्देन पबुद्धकालो विय किरियमनोधातुया भवंगस्स आवट्टितकालो। उम्मीलेत्वा ओलोकितकालो विय चक्खुविञ्ञाणस्स दस्सनकिच्चसाधनकालो। हत्थं पसारेत्वा गहितकालो विय विपाकमनोधातुया आरम्मणस्स सम्पटिच्छनकालो। गहेत्वा मद्दितकालो विय विपाकमनोविञ्ञाणधातुया आरम्मणस्स सन्तीरणकालो।

विय। मूलसदिसं भवङ्गं मूलभवङ्गं। तदारम्मणम्पि हि भवङ्गसभावत्ता[1] (१४८-म०)। भवङ्गं ति वुच्चति। गणनं उपगच्छन्तीति गणनूपगानि, विपाकगणनूपगानीति अत्थो। पुरिमानि चत्तारि विपाकचित्तानि इमिना सद्धिं पञ्च होन्तीति सम्बन्धो।

तत्था ति[2] इट्ठमज्झत्तारम्मणे। तानीति चत्तारि उपेक्खासहगतमहाविपाकानि।

अथा ति तदा। तस्सा ति पुरिसस्स। तं ति इति पतीति पदे आधारो[3]। तस्सा ति

---

१. भवङ्गसदिसभावत्ता–सी०। २. तत्रा पी ति–सी०। ३. आकारो-म०।

उपसिंघितकालो विय किरियमनोविञ्ञाणधातुया आरम्मणस्स ववत्थापितकालो। परिभुत्तकालो विय जवनस्स आरम्मणरसं अनुभवितकालो।

अयं उपमा किं दीपेति ? आरम्मणस्स पसादघट्टनमेव किच्चं। तेन पसादे घट्टिते किरियमनोधातुया भवंगावट्टनमेव, चक्खुविञ्ञाणस्स दस्सनमत्तमेव, विपाकमनोधातुया आरम्मणसम्पटिच्छनमत्तमेव, विपाकमनोविञ्ञाणधातुया आरम्मणसन्तीरणमत्तकमेव, किरियमनोविञ्ञाणधातुया आरम्मणववत्थापनमत्तकमेव किच्चं। एकन्तेन आरम्मणरसं जवनमेव अनुभवती ति दीपेति।

एत्थ च 'त्वं भवंगं नाम होहि, त्वं आवज्जनं नाम, त्वं दस्सनं नाम, त्वं सम्पटिच्छनं नाम, त्वं सन्तीरणं नाम, त्वं वोट्ठपनं नाम, त्वं जवनं नाम, त्वं तदारम्मणं नाम होही'ति कोचि कत्ता वा कारेता वा नत्थि।

इमस्मिं पन ठाने पञ्चविधं नियामं नाम गण्हिसु—बीजनियामं उतुनियामं कम्मनियामं धम्मनियामं चित्तनियामं ति। तत्थ कुलत्थगच्छस्स उत्तरग्गभावो, दक्खिणवल्लिया दक्खिणतो रुक्खपरिहरणं, सुरियावट्टपुप्फानं सुरियाभिमुखभावो, मालुवलताय रुक्खाभिमुखगमनं, नाळिकेरस्स मत्थकच्छिद्दसब्भावो ति तेसं तेसं बीजानं तं-तं-सदिसफलदानं (i) बीजनियामो नाम। तस्मिं तस्मिं समये तेसं तेसं रुक्खानं एकप्पहारेन पुप्फफलपल्लवगहणं (ii) उतुनियामो नाम। तिहेतुककम्मं तिहेतुकदुहेतुकाहेतुकं विपाकं देति। दुहेतुककम्मं दुहेतुकाहेतुकं विपाकं देति, तिहेतुकं न देती ति, एवं तस्स तस्स कम्मस्स तं-तं-सदिसविपाकदानमेव (iii) कम्मनियामो नाम।

अम्बपातस्स[1]। ततो ति तदनन्तरं। तत्था ति उपमासंसन्दनं[2] वेदितब्बं।

भवङ्गावट्टनमेवा ति[3] आदीसु किच्चं ति पदं योजेतब्बं।

एत्थ चा ति एतिस्सं चित्तप्पवत्तियं नत्थीति पदे आधारो (१७७-सी०)।

तत्था ति पञ्चविधे नियामे, निद्धारणं। कुलत्थगच्छस्सा ति कुलत्थनामकस्स मासगच्छस्स उत्तरग्गभावो। भावो[4] उत्तरदिसायं गत-अग्गभावो। दक्खिणवल्लिया ति दक्खिणतो रुक्खं परिवारिताय वल्लिया। रुक्खहरणं ति रुक्खस्स परिवारणं। सूरियं आवत्ततीति सूरियावट्टं। सूरियावट्टं पुप्फं येसं गच्छानं ते सूरियावट्टपुप्फा[4]। सूरियावट्टपुप्फस्स[5] सूरियाभिमुखभावो ति सूरियस्स अभिमुखभावो। मालुवालताया ति मालुवा नाम लताय। मलति धारेतीति मालुवा। **अलमलबिला णुवो** ति (२०२ ण्वु०) **मोग्गलानसुत्तेन** णुवो। रुक्खाभिमुखगमनं ति रुक्खस्स अभिमुखगमनं, तं-तं-सदिसफलदानं ति तेन तेन बीजेन सदिसफलदानं।

---

१. अम्बपक्कस्स–सी०। २. उपमायं उपमासंसन्दनं–सी०। ३. भवङ्गावज्जन०–सी०। ४-४. नत्थि–म०। ५. नत्थि–सी०।

अपरो पि कम्मसरिक्खक-विपाकवसेनेव कम्मनियामो होति। तस्स दीपनत्थं इदं वत्थुं कथेन्ति—**सम्मासम्बुद्धकाले सावत्थिया** द्वारगामो झायि। ततो पज्जलितं तिणकरळं उट्ठहित्वा आकासेन गच्छतो काकस्स गीवाय पटिमुञ्चि। सो विरवन्तो भूमियं पतित्वा कालमकासि। महासमुद्दे पि एका नावा निच्चला अट्ठासि। हेट्ठा केनचि निरुद्धभावं अपस्सन्ता काळकण्णिसलाकं चारेसुं। सा नाविकस्सेव उपासिकाय हत्थे पतिता। ततो एकिस्सा कारणा सब्बे मा नस्सन्तु, उदके तं खिपामा ति आहंसु। नाविको 'न सक्खिस्सामि एतं उदके प्लवमानं पस्सितुं'ति वालिकाघटं गीवायं बन्धापेत्वा खिपापेसि। तं खणं येव नावा खित्तसरो विय निक्खन्ता। एको भिक्खु लेणे वसति। महन्तं पब्बतकूटं पतित्वा द्वारं पिदहि। तं सत्तमे दिवसे सयमेव अपगतं।

सम्मासम्बुद्धस्स जेतवने निसीदित्वा धम्मं कथेन्तस्स इमानि तीणि वत्थूनि एकप्पहारेनेव आरोचेसुं। सत्था 'न एतं अञ्ञेहि कतं, तेहि कतकम्ममेव तं' ति अतीतं आहरित्वा दस्सेन्तो आह—काको पुरिमत्तभावे मनुस्सो हुत्वा एकं दुट्ठगोणं दमेतुं असक्कोन्तो गीवायं पलालवेणिं बन्धित्वा अग्गिं अदासि। गोणो तेनेव मतो। इदानि तं कम्मं एतस्स आकासेन गच्छतो पि न मुञ्चितुं अदासि। सा पि इत्थी पुरिमत्तभावे एका इत्थी एव। एको कुक्कुरो ताय परिचितो हुत्वा अरञ्ञं गच्छन्तिया सद्धिं गच्छति, सद्धिमेवागच्छति। मनुस्सा 'निक्खन्तो इदानि अम्हाकं सुनखलुद्दको' ति उप्पण्डेन्ति। सा तेन अट्टियमाना कुक्कुरं निवारेतुं असक्कोन्ती वालिकाघटं गीवाय बन्धित्वा उदके खिपि। तं कम्मं तस्सा समुद्दमज्झे मुञ्चितुं नादासि। सो पि भिक्खु पुरिमत्तभावे गोपालको हुत्वा बिलं पविट्ठाय गोधाय साखाभंगमुट्ठिया द्वारं थकेसि। ततो सत्तमे दिवसे सयमेव आगन्त्वा विवरि। गोधा कम्पमाना निक्खमि। करुणाय

बीजनियामो ति बीजधम्मता। पल्लति[1] पवत्ततीति पल्लवं, 'पल्ल' गमने। **पिलादीय्हवो** ति (१९९ ण्वु०) **मोग्गलानसुत्तेन** अवो, पुप्फञ्च फलञ्च पल्लवञ्च पुप्फफलपल्लवानि। तेसं गहणं। तस्स कम्मनियामस्स दीपनत्थं इदं वत्थुं आचरिया कथेन्ति।

द्वारगामो ति द्वारस्स समीपगामो, अग्गिना झायि। ततो झायितगामतो। वारयिंसू ति विचारयिंसु। ततो ति[2] तदा[2]। सा ति पट्ठाका[3]। नं ति उपासकं। तं ति पब्बतकूटं।

एतं कम्मं अञ्ञेहि जनेहि न कतं, एतं कम्मं तेहेव कम्मादीहि कतकम्ममेव। काति[4] सद्दं करोती ति काको, वायसो। 'का'-सद्दे। **इमि-काकरअरवकसकवाहिको ति** (१४ ण्वु०) **मोग्गल्लानसुत्तेन** को। तेनेवा ति अग्गिदानेन। कुकति ससादयो आददातीति कुक्कुरो। 'कुक-आदाने। कस्स द्वित्तं। **विधुरादयो** ति (१४८ ण्वु०) **मोग्गल्लानसुत्तेन**, उरो। परिचितो ति विस्सासिको। तेना ति सुनखेन।

---

१. पल्लवति–सी०। २-२. नत्थि–सी०। ३. सलाका–सी०। ४. का का ति–सी०।

तं न मारेसि। तं कम्मं तस्स पब्बतन्तरं पविसित्वा निसिन्नस्स मुञ्चितुं नादासि। इति इमानि तीणि वत्थूनि समोधानेत्वा इमं गाथमाह—

न अन्तलिक्खे न समुद्दमज्झे न पब्बतानं विवरं पविस्स।
न विज्जते सो जगतिप्पदेसो यत्थट्ठितो मुच्चेय्य पापकम्मा [ध० १२७का०] ति॥

अयं कम्मनियामो येव नाम। अञ्ञानि पि एवरूपानि वत्थूनि कथेतब्बानि।

बोधिसत्तानं पन पटिसन्धिगहणे, मातुकुच्छितो निक्खमने, अभिसम्बोधियं तथागतस्स धम्मचक्कप्पवत्तने, आयुसंखारस्स वोस्सजने, परिनिब्बाने च दससहस्स-चक्कवाळकम्पनं (iv) धम्मनियामो नाम। आरम्मणेन पन पसादे घट्टिते 'त्वं आवज्जनं होहि.....प०.....त्वं जवनं नाम होही'ति कोचि कत्ता वा कारेता वा नत्थि, अत्तनो पन धम्मताय एव आरम्मणेन पन पसादस्स घट्टितकालतो पट्ठाय किरियमनोधातुचित्तं भवंगं आवट्टेति, चक्खुविञ्ञाणं दस्सनकिच्चं साधेति, विपाकमनोधातु सम्पटिच्छनकिच्चं साधेति, विपाकमनोविञ्ञाणधातु सन्तीरणकिच्चं साधेति, किरियमनोविञ्ञाणधातु वोट्ठपनकिच्चं साधेति, जवनं आरम्मणरसं अनुभवती ति अयं (v) चित्तनियामो नाम। अयं इध अधिप्पेतो।

ससंखारिक-तिहेतुककुसलेना पि उपेक्खासहगत-असंखारिक-ससंखारिककुसलचित्तेहि पि कम्मे आयूहिते तं-सदिसविपाकचित्तेहि दिन्नाय पटिसन्धिया एसेव नयो। उपेक्खासहगतद्वये पन पठमं 'इट्ठमज्झत्तारम्मणवसेन' पवत्ति दस्सेत्वा पच्छा 'इट्ठारम्मणवसेन' दस्सेतब्बा। एवं पि एकेकस्मिं द्वारे द्वादस द्वादस हुत्वा समसट्ठि होन्ति। अगहितगहणेन सोळस विपाकचित्तानि उप्पज्जन्ति।

इमस्मिं ठाने पञ्च-उच्छु-नाळियन्तोपमं नाम गण्हिंसु। उच्छुपीळनसमये किर एकस्मा गामा एकादस यन्तवाहा निक्खमित्वा एकं उच्छुवाटं दिस्वा तस्स परिपक्कभावं ञत्वा उच्छुसामिकं उपसंकमित्वा 'यन्तवाहा मयं' ति आरोचेसुं। सो 'अहं तुम्हे येव परियेसामी' ति उच्छुसालं ते गहेत्वा अगमासि। ते तत्थ नाळियन्तं सज्जेत्वा 'मयं एकादस जना, अपरं पि एकं लद्धुं वट्टति, वेतनेन गण्हथा' ति आहंसु। उच्छुसामिको 'अहमेव सहायो भविस्सामी' ति उच्छूनं सालं पूरापेत्वा तेसं सहायो अहोसि। ते

अन्तलिक्खे ठितो पापकम्मा न मुच्चेय्य। पविस्स पविसित्वा ठितो। तत्रा ति जगतिपदेसे।

इधा ति इमस्मिं ठाने।

तं-सदिस[1]-विपाकचित्तेना ति पदं दिन्नाया ति पदे कत्ता। उपेक्खासहगतद्वये ति पदं पवत्ततीति पदे आधारो। एवम्पीति पिसद्दो एवं चक्खुद्वारे ति आदि वुत्तनयं अपेक्खति।

यन्तं वहन्तीति यन्तवाहा। उच्छुवाटं ति उच्छुखेत्तं। तस्सा ति उच्छुवाटस्स। तत्था

---

१. तंसदिसं—सी०।

अत्तनो अत्तनो किच्चानि कत्वा, फाणितपाकेन उच्छुरसे पक्के, गुळबन्धकेन बद्धे, उच्छुसामिकेन तुलयित्वा भागेसु दिन्नेसु, अत्तनो अत्तनो भागं आदाय सालं सालासामिकस्स पटिच्छापेत्वा, एतेनेव उपायेन अपरासु पि चतूसु सालासु कम्मं कत्वा पक्कमिंसु।

तत्थ पञ्च यन्तसाला विय पञ्च पसादा दट्ठब्बा। पञ्च उच्छुवाटा विय पञ्च आरम्मणानि। एकादस विचरणयन्तवाहा विय एकादस विपाकचित्तानि। पञ्च-उच्छुसालासामिको विय पञ्च विञ्ञाणानि। पठमसालायं सामिकेन सद्धिं द्वादसन्नं जनानं एकतो हुत्वा कतकम्मानं भागगहणकालो विय एकादसन्नं विपाकचित्तानं चक्खुविञ्ञाणेन सद्धिं एकतो हुत्वा चक्खुद्वारे रूपारम्मणे सकसककिच्चकरणकालो। सालासामिकस्स सालाय संपटिच्छनकालो विय चक्खुविञ्ञाणस्स द्वारसंकन्ति-अकरणं। दुतिय-ततिय-चतुत्थ-पञ्चमसालाय द्वादसन्नं एकतो हुत्वा कतकम्मानं भागगहणकालो विय एकादसन्नं विपाकचित्तानं कायविञ्ञाणेन सद्धिं एकतो हुत्वा कायद्वारे फोट्ठब्बारम्मणे सकसककिच्चकरणकालो। सालासामिकस्स सालाय सम्पटिच्छनकालो विय कायविञ्ञाणस्स द्वारसंकन्ति-अकरणं वेदितब्बं।

एत्तावता तिहेतुककम्मेन पटिसन्धि तिहेतुका होती ति वारो कथितो। या पन तेन दुहेतुकपटिसन्धि होति, सा पटिच्छन्ना व हुत्वा गता।

इदानि दुहेतुककम्मेन दुहेतुकपटिसन्धि होती ति वारो कथेतब्बो। दुहेतुकेन हि सोमनस्ससहगतासंखारिकचित्तेन कम्मे आयूहिते तं-सदिसेनेव दुहेतुकविपाकचित्तेन गहितपटिसन्धिकस्स वुत्तनयेनेव चक्खुद्वारे 'इट्ठारम्मणे' आपाथमागते तयो मोघवारा। दुहेतुक-सोमनस्ससहगतासंखारिक-जवनावसाने तं-सदिसमेव 'मूलभवंग'-संखातं तदारम्मणं। ससंखारिकजवनावसाने तं-सदिसमेव 'आगन्तुकभवंग'-संखातं तदारम्मणं। 'इट्ठमज्झत्तारम्मणे' द्विन्नं उपेक्खासहगतजवनानं अवसाने तादिसानेव द्वे तदारम्मणानि उप्पज्जन्ति।

इध एकेकस्मिं द्वारे अट्ठ-अट्ठ कत्वा समचत्तालीसचित्तानि। अगहितगहणेन पन चक्खुद्वारे अट्ठ, सोत-घान-जिव्हा-कायविञ्ञाणानि चत्तारी ति द्वादस होन्ति। एवं एकाय चेतनाय कम्मे आयूहिते द्वादस विपाकचित्तानि उप्पज्जन्ति। अम्बोपमं च

ति उच्छुसालायं। ते यन्तवाहा कत्वा आदाया ति सम्बन्धो। गुळबन्धकेना ति (१४९-म०) गुळभावबन्धकेन, बद्धो ति पदे ततियाविसेसनं। बद्धो ति दिन्नासू ति पदे लक्खणक्रिया। उच्छुसामिकेना[1] ति दिन्नेसू ति पदे कत्ता। दिन्नेसू ति आदाया ति पदे भावलक्खणं।

तत्था ति पञ्च-(१७८-सी०) यन्तसालादीसु, निद्धारणं। तेना ति तिहेतुककम्मेन या[2] दुहेतुकपटिसन्धि। पटिच्छन्ना अपाकटा व हुत्वा गता पवत्ता।

इधा ति इमस्मिं वारे। यन्तवाहो····प०····एत्थवारे सत्त यन्तवाहा इच्छितब्बा।

---

१. ०पदं–सी०। २. या पन–सी०।

नियामकथा पाकतिका एव । दुहेतुक-सेसचित्तत्तयसदिसविपाकेन गहितपटिसन्धिके पि एसेव नयो । यन्तवाहोपमाय पनेत्थ सत्त यन्तवाहा । तेहि सत्तयन्ते नाम सज्जिते सालासामिकं अट्ठमं कत्वा वुत्तनयानुसारेनेव योजना वेदितब्बा ।

एत्तावता दुहेतुककम्मेन दुहेतुकपटिसन्धि होती ति वारो कथितो ।

इदानि अहेतुकपटिसन्धिकथा होति—चतुन्नं हि दुहेतुक-कुसलचित्तानं अञ्ञतरेन कम्मे आयूहिते कुसलविपाक-उपेक्खासहगत-अहेतुकमनोविञ्ञाणधातुचित्तेन गहितपटिसन्धिकस्स पटिसन्धि कम्मसदिसा ति न वत्तब्बा । कम्मं हि दुहेतुकं पटिसन्धि अहेतुका । तस्स वुड्ढिप्पत्तस्स चक्खुद्वारे 'इट्ठमज्झत्तारम्मणे' आपाथमागते पुरिमनयेनेव तयो मोघवारा वेदितब्बा । चतुन्नं पन दुहेतुक-कुसलचित्तानं अञ्ञतरजवनस्स परियोसाने अहेतुकचित्तं तदारम्मणभावेन पतिट्ठाति । तं 'मूलभवंगं' 'तदारम्मणं' ति द्वे नामानि लभति । एवमेत्थ चक्खुविञ्ञाणं सम्पटिच्छनं उपेक्खासहगतं । सन्तीरणं तदारम्मणं पि उपेक्खासहगतमेवा ति तेसु एकं गहेत्वा गणनूपगानि तीणेव होन्ति । 'इट्ठारम्मणे' पन सन्तीरणं पि तदारम्मणं पि सोमनस्ससहगतमेव । तेसु एकं गहेत्वा पुरिमानि तीणि चत्तारि होन्ति । एवं पञ्चसु द्वारेसु चत्तारि चत्तारि कत्वा एकाय चेतनाय कम्मे आयूहिते वीसति विपाकचित्तानि उप्पज्जन्ती ति वेदितब्बानि । अगहितगहणेन पन चक्खुद्वारे चत्तारि सोत-घान-जिव्हा-कायविञ्ञाणानि चत्तारी ति अट्ठ होन्ति । इदं 'अहेतुकट्ठकं' नाम । इदं मनुस्सलोकेन गहितं । चतूसु पन अपायेसु पवत्ते लब्भति ।

यदा हि महामोग्गल्लानत्थेरो निरये पदुमं मापेत्वा पदुमकण्णिकाय निसिन्नो नेरयिकानं धम्मकथं कथेसि, तदा तेसं थेरं पस्सन्तानं कुसलविपाकं चक्खुविञ्ञाणं उप्पज्जति । सद्दं सुणन्तानं सोतविञ्ञाणं, चन्दनवने दिवाविहारं निसीदित्वा गतस्स चीवरगन्धघायनकाले घाणविञ्ञाणं, निरयग्गिं निब्बापेतुं देवं वस्सापेत्वा पानीयदानकाले जिव्हाविञ्ञाणं, मन्दमन्दवातसमुट्ठापनकाले कायविञ्ञाणं ति एवं चक्खुविञ्ञाणादीनि पञ्च, एकं सपटिच्छनं, द्वे सन्तीरणानी ति अहेतुकट्ठकं लब्भति ।

तेहीति यन्तवाहेहि । सज्जिते ति पदं कत्वा ति पदे भावलक्खणं । कत्वा वेदितब्बा पण्डितेन ।

वुड्ढिप्पत्तस्सा ति मातुकुच्छितो निक्खमित्वा संवरासंवरे थपेतुं समत्थभावे बुद्धिसम्पत्तस्स तस्स जनस्स । एत्था ति चक्खुद्वारे । इतीति[1] तस्मा[1] । तेसु[2] द्वीसु चित्तेसु । इदं अहेतुकट्ठकं मनुस्सलोकेन मनुस्सकवसेन[3] गहितं आचरियेहि मनुस्सलोके[4] सन्धाय वुत्तं ति अधिप्पायो । चतूसु अपायेसु पवत्तं इदं अहेतुकट्ठकं लब्भति ।

लभनभावं ब्यापेन्तो आह-यदा ति आदि । चन्दनवने अनोतत्तदहसमीपे चन्दनवने दिवाविहारं निसीदित्वा निरयं गतस्स थेरस्स । अभिधम्मावतारटीकायं पन आनीतेन मापितं

१-१. नत्थि–सी० । २. तेसू ति–सी० । ३. मनुस्सलोकवसेन–सी० ।
४. ०लोकं–सी० ।

नाग-सुपण्ण-वेमानिक-पेतानं पि अकुसलेन पटिसन्धि होति। पवत्ते कुसलं विपच्चति। तथा चक्कवत्तिनो मंगलहत्थि-अस्सादीनं।

अयं ताव 'इट्ठ-इट्ठमज्झत्तारम्मणेसु' कुसलजवनवसेन कथामग्गो।

'इट्ठारम्मणे' पन चतूसु सोमनस्ससहगत-अकुसलचित्तेसु जवितेसु कुसलविपाकं सोमनस्ससहगताहेतुकचित्तं तदारम्मणं होति। 'इट्ठमज्झत्तारम्मणे' चतूसु उपेक्खासहगत-लोभसम्पयुत्तेसु जवितेसु कुसलविपाकं उपेक्खासहगताहेतुकचित्तं तदारम्मणं होति। यं पन 'जवनेन तदारम्मणं नियामेतब्बं'ति वुत्तं तं कुसलं सन्धाय वुत्तं ति वेदितब्बं। दोमनस्ससहगतजवनानन्तरं तदारम्मणं उप्पज्जमानं किं उप्पज्जती ति? अकुसलविपाकाहेतुकमनोविञ्ञाणधातुचित्तं उप्पज्जति। इदं पन जवनं कुसलत्थाय वा अकुसलत्थाय वा को नियामेती ति? आवज्जनं चेव वोट्ठपनं च। आवज्जनेन हि योनिसो आवट्टिते वोट्ठपनेन अयोनिसो ववत्थापिते जवनं अकुसलं भविस्सती ति अट्ठानमेतं। आवज्जनेन अयोनिसो आवट्टिते वोट्ठपनेन योनिसो ववत्थापिते जवनं कुसलं भविस्सती ति अट्ठानमेतं। उभयेन पन योनिसो आवट्टिते ववत्थापिते जवनं कुसलं होति, अयोनिसो अकुसलं ति वेदितब्बं।

'इट्ठारम्मणे' पन कंखतो उद्धतस्स च तदारम्मणं किं होती ति? इट्ठारम्मणस्मि कंखा होतु वा मा वा, उद्धतो वा होतु मा वा, कुसलविपाकाहेतुकसोमनस्सचित्तमेव तदारम्मणं होति, 'इट्ठमज्झत्तारम्मणे' कुसलविपाकाहेतुक-उपेक्खासहगतं' ति, अयं पनेत्थ संखेपतो अत्थदीपना महाधम्मरक्खितत्थेरवादो नाम। सोमनस्ससहगतस्मि हि जवने जविते पञ्च तदारम्मणानि गवेसितब्बानि। उपेक्खासहगतस्मि जवने जविते छ गवेसितब्बानि। अथ'स्स यदा सोमनस्ससहगतपटिसन्धिकस्स पवत्ते झानं निब्बत्तेत्वा पमादेन परिहीनज्झानस्स 'पणीतधम्मो मे नट्ठो'ति पच्चवेक्खतो विप्पटि-

---

ति सुमङ्गलाचरियेन वुत्तं। तथा ति इमिना अकुसलेन पटिसन्धि होतीति आदिं आकड्ढति। कथामग्गो ति कथापबन्धो।

तं वचनं कुसलाकुसलजवनं सन्धाय वुत्तं अकट्ठकथायं इति सन्निट्ठानं वेदितब्बं पण्डितेन। दोमनस्स····प०····किं उप्पज्जती ति पुच्छा। इदं[1] जवनं ति पदं नियामेतीति पदे कम्मं। कुसलत्ताया ति कुसलभावाय को नियामेती ति पुच्छा। आवज्जनञ्च जवनं नियामेति। आवज्जने हीति आदि वित्थारो। आवज्जने ति पदं आवट्टिते ति पदे कत्ता। योनिसो ति उपायेन, आवट्टिते ति भवङ्गस्स निवत्तने। आवट्टनं आवट्टितं, भावसाधनं। ववत्थापिते ति आरम्मणस्स ववत्थापने। अट्ठानमेतं ति एतं वचनं अयुत्तं। उभयेना ति आवज्जनवोट्ठब्बनेन।

एत्था ति तदारम्मणनियमट्ठाने। पञ्चतदारम्मणानीति सोमनस्ससहगतानि पञ्च तदारम्मणचित्तानि। छा ति उपेक्खासहगतानि छ, अथा ति यथावुत्तवचने। अथ यदि

---

१. इदं पन—सी०।

सारिवसेन दोमनस्सं उप्पज्जति, तदा किं उप्पज्जति ? 'सोमनस्सानन्तरं हि दोमनस्सं दोमनस्सानन्तरं च सोमनस्सं' पट्ठाने पटिसिद्धं । महग्गतधम्मं आरब्भ जविते जवने तदारम्मणं पि तत्थेव पटिसिद्धं ति ?

कुसलविपाका वा अकुसलविपाका वा उपेक्खासहगताहेतुकमनोविञ्ञाणधातु उप्पज्जति, किमस्सा आवज्जनं ति ? 'भवंगावज्जनानं विय नत्थस्सा आवज्जनकिच्चं' ति । 'एतानि ताव अत्तनो निन्नत्ता च चिण्णत्ता च समुदाचारत्ता च उप्पज्जन्तु, अयं कथं उप्पज्जती'ति ? 'यथा निरोधस्स अनन्तरपच्चयं नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं, निरोधा वुट्ठहन्तस्स फलसमापत्तिचित्तं, अरियमग्गचित्तं, मग्गानन्तरानि फलचित्तानि, एवं असन्ते पि आवज्जने, निन्नचिण्णसमुदाचारभावेन उप्पज्जन्ति । विना हि आवज्जनेन चित्तं उप्पज्जति, आरम्मणेन पन विना नुप्पज्जती'ति । 'अथ किमस्सारम्मणं'ति ? 'रूपादीसु परित्तधम्मेसु अञ्ञतरं । एतेसु हि यदेव तस्मिं समये आपाथगतं होति, तं आरब्भ एतं चित्तं उप्पज्जती'ति वेदितब्बं ।

पकिण्णक-नयो

इदानि सब्बेसं पि एतेसं चित्तानं पाकटभावत्थं अयं पकिण्णकनयो वुत्तो ।

सति । सोमनस्सानन्तरं हीति आदिना चोदकस्स आभोगं दस्सेति । तत्थेव पटिसन्धि सिद्धा ति पट्ठाने भगवता पटिसेधितं इति पुच्छा ।

उपेक्खा ··· प० ···· विञ्ञाणधातु उप्पज्जति । भवङ्गकिच्चेना ति योजना । किं अस्स चित्तस्स आवज्जनं इति पुच्छा । भवङ्गावज्जनानं आवज्जनभावो विय । नत्थस्सा ति (१५० -म०) अस्स अहेतुकमनोविञ्ञाणधातुया आवज्जनकिच्चं आवज्जनेन किच्चं नत्थि । एत्तानीति भवङ्गावज्ज-(१७९-सी०)-नानि । निन्नत्ता ति आरम्मणे[1] निन्नभावतो । चिण्णत्ता ति पुग्गलेन आसेवितभावतो । समुदाचारत्ता ति सयं बहुलं पवत्तभावतो । अयं ति अहेतुकमनोविञ्ञाणधातु । निरोधस्सा ति चित्तचेतसिकानं निरोधस्स अनन्तरपच्चयं ब्यवहितकारणं नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं निरावज्जनं उप्पज्जति । अनन्तरपच्चयं ति एत्थ पट्ठाने वुत्तो अनन्तरपच्चयो नाधिप्पेतो । फलचित्तानि निरावज्जनानि उप्पज्जन्तीति सम्बन्धो । अथ एवं सति किं अस्स चित्तस्स आरम्मणं इति पुच्छा । एतेसू ति परित्तधम्मेसु । यदेवा ति यं एवारम्मणं । किं[2] अस्स चित्तस्स आरम्मणं इति पुच्छा[2] ।

पकिण्णकनयवण्णना

गामे किळनको गामिलो[3] । **यदादिना** इलो । उच्छुसालसामिकोपमाय[4] सह अम्बोपमा च । उपनिस्सयमत्थसो उपनिस्सय-विसयग्गाहो च । कुले नियुत्तो कोलियो । कोलियो एव कोलियको । **यदादिना** सकत्थे को । विस्सयस्स आरम्मणस्स गाहो विसयग्गाहो । उपनिस्सयो च

---

१. आरम्मणस्स-सी० । २-२. नत्थि अयं सी० पोत्थके वाक्यो । ३. गामिल्लो-सी० । ४. कोलियकेन उच्छु०-सी० ।

सुत्तं दोवारिको च गामिल्लो अम्बो कोलियकेन च ।
जच्चन्धो पीठसप्पी च विसयग्गाहो च उपनिस्सयमत्थसो ति ॥

तत्थ 'सुत्तं' ति, एको पन्थ-मक्कटको पञ्चसु दिसासु सुत्तं पसारेत्वा जालं कत्वा मज्झे निपज्जति । पठमदिसाय पसारितसुत्ते पाणकेन वा पतंगेन वा मक्खिकाय वा पहटे निपन्नट्ठानतो चलित्वा निक्खमित्वा सुत्तानुसारेन गन्त्वा तस्स यूसं पिवित्वा पुनागन्त्वा तत्थेव निपज्जति । दुतियदिसादीसु पहटकाले पि एवमेव करोति ।

तत्थ पञ्चसु दिसासु पसारितसुत्तं विय पञ्च पसादा । मज्झे निपन्नमक्कटको विय चित्तं । पाणकादीहि सुत्तघट्टनकालो विय आरम्मणेन पसादस्स घट्टितकालो । मज्झे निपन्नमक्कटस्स चलनं विय पसादघट्टनकं आरम्मणं गहेत्वा किरियमनोधातुया भवंगस्स आवट्टितकालो । सुत्तानुसारेन गमनकालो विय वीथिचित्तस्स पवत्ति । सीसे विज्झित्वा यूसपिवनं विय जवनस्स आरम्मणे जवितकालो । पुनागन्त्वा मज्झे निपज्जनकालो विय चित्तस्स हदयवत्थुमेव निस्साय पवत्तनं ।

इदं ओपम्मं किं दीपेति ? आरम्मणेन पसादे घट्टिते पसादवत्थुकचित्ततो हदयरूपवत्थुकचित्तं पठमतरं उप्पज्जती ति दीपेति । एकेकं आरम्मणं द्वीसु द्वीसु द्वारेसु आपाथमागच्छती ति दीपेति ।

'दोवारिको' ति, एको राजा सयनगतो निद्दायति । तस्स परिचारको पादे परिमज्जन्तो निसीदि । बधिरदोवारिको द्वारे ठितो । तयो पटिहारा पटिपाटिया ठिता । अथेको पच्चन्तवासी मनुस्सो पण्णाकारं आदाय आगन्त्वा द्वारं आकोटेसि । बधिरदोवारिको सद्दं न सुणाति । पादपरिमज्जको सञ्ञं अदासि । ताय सञ्ञाय द्वारं विवरित्वा पस्सि । पठमपटिहारो पण्णाकारं गहेत्वा दुतियस्स अदासि, दुतियो ततियस्स, ततियो रञ्ञो । राजा परिभुञ्जि ।

तत्थ सो राजा विय जवनं दट्ठब्बं । पादपरिमज्जको विय आवज्जनं । बधिरदोवारिको विय चक्खुविञ्ञाणं । तयो पटिहारा विय सम्पटिच्छनादीनि तीणि वीथि-

---

अत्थो च उपनिस्सयमत्थो । मकारो पदसन्धिजो ।

तत्था ति सुत्तदोवारिकादीसु । सुत्तं ति वचने विनिच्छयो वेदितब्बो । पाणकादीनं[1] पन्थे[2] । मग्गे रक्खणको[3] मक्कटको । पन्थमक्कटको[4], उण्णनाभि[5] । पाणकेना ति आदि पहतो ति पदे कत्ता । तस्स सत्तस्स यूसं रुधिरं । तत्थेवा ति जालमज्झे ।

तत्था ति पसारितसुत्तादीसु । पसादस्सा ति पदं घट्टित इति पदे कम्मं ।

उपमा एव ओपम्मं[6] । इति अधिप्पायं इदं ओपम्मं दीपेति ञापेति ।

पटिहरन्तीति पटिहारा । अथा ति तदा । ततियो रञ्ञो अदासि ।

तत्था ति राजादीसु ।

---

१. ०पि–सी० । २. पथे–सी० । ३. रक्खणतो–सी० । ४. पथ०–सी० ।
५. उण्णा नाभि०–सी । ६. उपमं–सी० सब्बत्थ ।

चित्तानि । पच्चन्तवासिनो पण्णाकारमादाय आगन्त्वा द्वाराकोटनं विय आरम्मणस्स पसादघट्टनं । पादपरिमज्जकेन सञ्ञाय दिन्नकालो विय किरियमनोधातुया भवंगस्स आवट्टितकालो । तेन दिन्नसञ्ञाय बधिरदोवारिकस्स द्वारविविरणकालो विय चक्खुविञ्ञाणस्स आरम्मणे दस्सनकिच्चसाधनकालो । पठमपटिहारेन पण्णाकारस्स गहितकालो विय विपाकमनोधातुया आरम्मणस्स सम्पटिच्छनकालो । पठमेन दुतियस्स दिन्नकालो विय विपाकमनोविञ्ञाणधातुया आरम्मणस्स सन्तीरणकालो । दुतियेन ततियस्स दिन्नकालो विय किरियमनोविञ्ञाणधातुया आरम्मणस्स ववत्थापितकालो । ततियेन रञ्ञो दिन्नकालो विय वोट्ठपनेन जवनस्स निय्यादितकालो । रञ्ञो परिभोगकालो विय जवनस्स आरम्मणस्स रसानुभवनकालो ।

इदं ओपम्मं किं दीपेति ? आरम्मणस्स पसादघट्टनमेव किच्चं, किरियमनोधातुया भवंगावट्टनमेव, चक्खुविञ्ञाणादीनं दस्सन-सम्पटिच्छन-सन्तीरण-ववत्थापनमत्तानेव किच्चानि । एकन्तेन जवनमेव आरम्मणरसं अनुभोती ति इदं दीपेति ।

'गामिल्लो'ति, सम्बहुला गामदारका अन्तरवीथियं पंसुकीळं कीळन्ति । तत्थेकस्स हत्थे कहापणो पटिहञ्ञि । सो 'मय्हं हत्थे पटिहतं, किं नु खो एतं ?' ति आह । अथेको 'पण्डरं एतं'ति आह । अपरो सह पंसुना गाळ्हं गण्हि । अञ्ञो 'पुथुलं चतुरस्सं एतं'ति आह । अपरो 'कहापणो एसो ति आह । अथं नं आहरित्वा मातुया अदासि । सा कम्मे उपनेसि ।

तत्थ सम्बहुलानं दारकानं अन्तरवीथियं कीळन्तानं निसिन्नकालो विय भवंगचित्तप्पवत्ति दट्ठब्बा । कहापणस्स हत्थे पटिहतकालो विय आरम्मणेन पसादस्स घट्टितकालो । 'किं नु खो एतं'ति वुत्तकालो विय तं आरम्मणं गहेत्वा किरियमनोधातुया भवंगस्स आवट्टितकालो । 'पण्डरं एतं' ति वुत्तकालो विय चक्खुविञ्ञाणेन दस्सनकिच्चस्स साधितकालो । सह पंसुना गाळ्हं गहितकालो विय विपाकमनोधातुया आरम्मणस्स सम्पटिच्छितकालो । 'पुथुलं चतुरस्सं एतं'ति वुत्तकालो विय विपाकमनोविञ्ञाणधातुया आरम्मणस्स सन्तीरितकालो । 'एसो कहापणो' ति वुत्तकालो विय किरियमनोविञ्ञाणधातुया आरम्मणस्स ववत्थापितकालो । मातरा कम्मे उपनीतकालो विय जवनस्स आरम्मणरसानुभवनं वेदितब्बं ।

इदं ओपम्मं किं दीपेति ? किरयमनोधातु अदिस्वा व भवंगं आवट्टेति, विपाकमनोधातु अदिस्वा व सम्पटिच्छति, विपाकमनोविञ्ञाणधातु अदिस्वा व सन्तीरेति,

---

तत्था ति द्वारकेसु ।[1] आरम्मणेना ति पदं घट्टित इति पदे कत्ता । क्रियमनोधातुया ति पदं आवज्जित इति पदे कत्ता ।

---

१. गामद्वा०–सी० ।

किरियमनोविञ्ञाणधातु अदिस्वा व ववत्थपेति, जवनं अदिस्वा व आरम्मणरसं अनुभोति। एकन्तेन पन चक्खुविञ्ञाणमेव दस्सनकिच्चं साधेती ति दीपेति।

अम्बो कोलियकेन चा'ति, इदं हेट्ठा वुत्तं अम्बोपमं च उच्छुसालासामिकोपमं च सन्धाय वुत्तं।

'जच्चन्धो पीठसप्पी चा'ति, उभो पि किरेते नगरद्वारे सालायं निसीदिंसु। तत्थ पीठसप्पी आह—'भो अन्धक, कस्मा त्वं इध सुस्समानो विचरसि, असुको पदेसो सुभिक्खो बह्वन्नपानो, किं तत्थ गन्त्वा सुखेन जीवितुं न वट्टती'ति?। 'मय्हं ताव तया आचिक्खितं, तुय्हं पन तत्थ गन्त्वा सुखेन जीवितुं किं न वट्टती' ति? 'मय्हं गन्तुं पादा नत्थी'ति। 'मय्हं पि पस्सितुं चक्खूनि नत्थी'ति। 'यदि एवं, तव पादा होन्तु, मम चक्खूनी'ति उभो पि 'साधू' ति सम्पटिच्छित्वा जच्चन्धो पीठसप्पिं खन्धं आरोपेसि। सो तस्स खन्धे निसीदित्वा वामहत्थेन'स्स सीसं परिक्खिपित्वा दक्खिणहत्थेन 'इमस्मिं ठाने मूलं आवरित्वा ठितं, इमस्मिं पासाणो, वामं मुञ्च दक्खिणं गण्ह, दक्खिणं मुञ्च वामं गण्हा ति मग्गं नियामेत्वा आचिक्खति। एवं जच्चन्धस्स पादा पीठसप्पिस्स चक्खूनी ति उभो पि सम्पयोगेन इच्छितट्ठानं गन्त्वा सुखेन जीविंसु।

तत्थ जच्चन्धो विय रूपकायो, पीठसप्पी विय अरूपकायो। पीठसप्पिना विना जच्चन्धस्स दिसं गन्तुं गमनाभिसंखारस्स अनिब्बत्तितकालो विय रूपस्स अरूपेन विना आदानगहणचोपनं पापेतुं असमत्थता। जच्चन्धेन विना पीठसप्पिस्स दिसं गन्तुं गमनाभिसंखारस्स अप्पवत्तनं विय पञ्चवोकारे रूपं विना अरूपस्स अप्पवत्ति। दिन्नं पि सम्पयोगेन इच्छितट्ठानं गन्त्वा सुखेन जीवितकालो विय रूपारूपधम्मान अञ्ञमञ्ञयोगेन सब्बकिच्चेसु पवत्तिसम्भवो ति। अयं पञ्हो पञ्चवोकारभववसेन कथितो।

'विसयग्गाहो' चा ति, चक्खु रूपविसयं गण्हाति। सोतादीनि सद्दादिविसये।

'उपनिस्सयमत्थसो'ति, 'उपनिस्सयतो' च 'अत्थतो' च। तत्थ असंभिन्नत्ता चक्खुस्स, आपाथगतत्ता रूपानं, आलोकसन्निस्सितं, मनसिकारहेतुकं चतूहि पच्चयेहि

तत्थ च जच्चन्धपीठसप्पीसु। मय्हं....प०....न वट्टति इति जच्चन्धं[1] आह। मय्हं. गन्तुं....प०....नत्थि इति पीठसप्पी आह। मय्हम्पि....प०...नत्थि इति जच्चन्धो आह। यदि एवं वचने यदि सति। तव....प०....चक्खूनीति वत्वा उभो[2] जना। सो जच्चन्धो। तस्स पीठसप्पिस्स। अस्सा ति जच्चन्धस्स। मूलं रुक्खमूलं आवरित्वा रुन्धित्वा ठितं।

तत्था ति जच्चन्धादीसु।

तत्था ति उपनिस्सयमत्थेसु। तस्मिं वा उपनिस्सयमत्थसो ति वचने विनिच्छयो वेदितब्बो (१८०–सी०)। असम्भिन्नत्ता ति अविनट्ठभावतो वातपित्तादीहि अनुपहतभावतो

---

१. जच्चन्धो–सी०। २. उभो पि–सी०।

उप्पज्जति चक्खुविञ्ञाणं, सद्धिं सम्पयुत्तधम्मेहि। तत्थ मतस्सा पि चक्खु संभिन्नं होति। जीवतो निरुद्धं पि, पित्तेन वा सेम्हेन वा रुधिरेन वा पलिबुद्धं पि, चक्खुविञ्ञाणस्स पच्चयो भवितुं असक्कोन्तं 'संभिन्नं' नाम होति। सक्कोन्तं असंभिन्नं नाम। सोतादीसु पि एसेव नयो। चक्खुस्मिं पन असंभिन्ने पि बहिद्धा रूपारम्मणे आपाथं अनागच्छन्ते चक्खुविञ्ञाणं नुप्पज्जति। तस्मिं पन आपाथं आगच्छन्ते पि आलोकसन्निस्सये असति नुप्पज्जति। तस्मिं लद्धे पि किरियमनोधातुया भवंगे अनावट्टिते नुप्पज्जती ति। आवट्टिते येव उप्पज्जति। एवं उप्पज्जमानं सम्पयुत्तधम्मेहि सद्धिं येव उप्पज्जती ति। इमे व चत्तारो पच्चये लभित्वा उप्पज्जति चक्खुविञ्ञाणं।

असंभिन्नत्ता सोतस्स, आपाथगतत्ता सद्दानं, आकाससन्निस्सितं, मनसिकारहेतुकं चतूहि पच्चयेहि उप्पज्जति सोतविञ्ञाणं, सद्धिं सम्पयुत्तधम्मेहि। तत्थ 'आकाससन्निस्सितं'ति आकाससन्निस्सयं लद्धा व उप्पज्जति, न विना तेन। न हि पिहितकण्णच्छिद्दस्स सोतविञ्ञाणं पवत्तति। सेसं पुरिमनयेनेव वेदितब्बं। यथा चेत्थ एवं इतो परेसू पि। विसेसमत्तं पन वक्खाम।

असंभिन्नत्ता घाणस्स, आपाथगतत्ता गन्धानं, वायोसन्निस्सितं, मनसिकारहेतुकं चतूहि पच्चयेहि उप्पज्जति घाणविञ्ञाणं, सद्धिं सम्पयुत्तधम्मेहि। तत्थ 'वायोसन्निस्सितं' ति घाणबिलं वायुम्हि पविसन्ते येव उप्पज्जति, तस्मिं असति नुप्पज्जती ति अत्थो।

असंभिन्नत्ता जिव्हाय, आपाथगतत्ता रसानं, आपोसन्निस्सितं, मनसिकारहेतुकं चतूहि पक्चयेहि उप्पज्जति जिव्हाविञ्ञाणं, सद्धिं सम्पयुत्तधम्मेहि। तत्थ 'आपोसन्निस्सितं' ति जिव्हा-तेमनं आपं लद्धा व उप्पज्जति, न विना तेन। सुक्खजिव्हानं हि सुक्खखादनिये जिव्हाय ठपिते पि जिव्हाविञ्ञाणं नुप्पज्जते व।

च। मनसिकारो हेतु अस्सा ति मनसिकारहेतुकं। तत्था ति (१५१-म०) असम्भिन्नत्ता ति वचने[1] विनिच्छयो। निरुद्धम्पि चक्खु। पलिबुद्धम्पि चक्खु। तस्मिं ति रूपारम्मणे। तस्मिं[2] आलोके।

न विना तेना ति तेन आकाससन्निस्सयेन विना[3]। न हीति आदि दळ्हीकरणं। यथा एत्थ सोतविञ्ञाणं सेसं पुरिमनयेनेव[4] वेदितब्बं। एवं इतो सोतविञ्ञाणतो परेसु पि घानविञ्ञाणादीसु। सेसं.....प०.....वेदितब्बं।

तत्था ति पदेसु। वायोसन्निस्सितं ति पदस्स इति अत्थो। तस्मिं ति वायुम्हि।

लद्धा वा ति लभित्वा एव। न विना ति तेन आपेन विना न उप्पज्जति। सुक्खा जिव्हा येसं ते ति सुक्खजिव्हा। हिसद्दो दळ्हीकरणं।

---

१. आदिवचने–सी०। २. तस्मिं ति–सी०। ३. विना न उप्पज्जति–सी०। ४. नयेनेव–म०।

असंभिन्नत्ता कायस्स, आपाथगतत्ता फोट्ठब्बानं, पठवीसन्निस्सितं, मनसिकारहेतुकं चतूहि पच्चयेहि उप्पज्जति कायविञ्ञाणं, सद्धिं सम्पयुत्तधम्मेहि। तत्थ 'पठवीसन्निस्सितं' ति कायप्पसादपच्चयं पठवीसन्निस्सयं लद्धा व उप्पज्जति, न तेन विना। कायद्वारस्मिं हि बहिद्धा महाभूतारम्मणं अज्झत्तिकं कायप्पसादं घट्टेत्वा पसादपच्चयेसु महाभूतेसु पटिहञ्ञति।

असंभिन्नत्ता मनस्स, आपाथगतत्ता धम्मानं, वत्थुसन्निस्सितं, मनसिकारहेतुकं चतूहि पच्चयेहि उप्पज्जति मनोविञ्ञाणं, सद्धिं सम्पयुत्तधम्मेहि। तत्थ 'मनो'ति भवंग-चित्तं। तं निरुद्धं पि, आवज्जनचित्तस्स पच्चयो भवितुं असमत्थं मन्दथामगतमेव पवत्तमानं पि, संभिन्नं नाम होति। आवज्जनस्स पन पच्चयो भवितुं समत्थं असंभिन्नं नाम। 'आपाथगतत्ता धम्मानं' ति धम्मारम्मणे आपाथगते। 'वत्थुसन्निस्सितं'ति हृदयवत्थुसन्निस्सयं लद्धा व उप्पज्जति, न तेन विना। अयं पि पञ्हो पञ्चवोकारभवं संधाय कथितो। 'मनसिकारहेतुकं'ति किरियमनोविञ्ञाणधातुया भवंगे आवट्टिते येव उप्पज्जती ति अत्थो। अयं ताव 'उपनिस्सयमत्थसो' ति एत्थ 'उपनिस्सय'-वण्णना।

'अत्थतो' पन चक्खु दस्सनत्थं, सोतं सवणत्थं, घाणं घायनत्थं, जिव्हा सायनत्था, कायो फुसनत्थो, मनो विजाननत्थो। तत्थ दस्सनं अत्थो अस्सा ति दस्सनत्थं। तं हि तेन निप्फादेतब्बं ति दस्सनत्थं। सेसेसु पि एसेव नयो ति। एत्तावता तिपिटकचूळनागत्थेरवादे सोळसकमग्गो निट्ठितो, सद्धिं द्वादसमग्गेन चेव अहेतुकट्ठकेन चा ति।

(ii)

इदानि मोरवापीवासि-महादत्तत्थेरवादे द्वादसकमग्गकथा होति। तत्थ साकेतपञ्ह-उस्सदकित्तन-हेतुकित्तनानि पाकतिकानेव। अयं पन थेरो असंखारिक-ससंखारिकेसु दोसं दिस्वा 'असंखारिकं असंखारिकमेव विपाकं देति, नो ससंखारिकं; ससंखारिकं पि ससंखारिकमेव विपाकं देति, नो असंखारिकं ति' आह। जवनेन चेस चित्तनियामं न कथेति। आरम्मणेन पन वेदनानियामं कथेति। तेन'स्स विपाकुद्धारे द्वादसकमग्गो नाम जातो। दसकमग्गो पि, अहेतुकट्ठकं पि एत्थेव।

कायपसादपच्चयं ति कायपसादपच्चयभूतं। पथवीसन्निस्सयं ति कारणभूतं पथविं। कायद्वारस्मिं ति पदं घट्टेत्वा ति पदे आधारो।

मन्दतरगतमेवा ति भवङ्गप्पवत्तिवसेन मन्दतरगतमेव हेट्ठा अत्थो पन वेदितब्बो।

तत्था ति दस्सनत्थं ति आदिपदेसु वचनत्थो वेदितब्बो। तं हीति हि सच्चं, दस्सनं तेन चक्खुना।

तत्था ति मोरवापीवासिमहादत्तत्थेरवादे। एसो ति एसो थेरो। तेनस्सा ति तेन कारणेन अस्स थेरस्स। दसकम्मग्गो पि दसकप्पकारो। एत्थेवा ति द्वादसकमग्गे अन्तोगधो ति सम्बन्धो।

तत्रायं नयो—सोमनस्ससहगत-तिहेतुकासंखारिकचित्तेन हि कम्मे आयूहिते तादिसेनेव विपाकचित्तेन गहितपटिसन्धिकस्स वुड्ढिप्पत्तस्स चक्खुद्वारे 'इट्ठारम्मणे' आपाथगते हेट्ठा वुत्तनयेनेव तयो मोघवारा होन्ति। तत्थ कुसलतो चत्तारि सोमनस्स-सहगतानि, अकुसलतो चत्तारि, किरियतो पञ्चा ति इमेसं तेरसन्नं चित्तानं अञ्ञतरेन जवितपरियोसाने तदारम्मणं पतिट्ठहमानं सोमनस्ससहगतासंखारिक-तिहेतुकचित्तं पि दुहेतुकचित्तं पि पतिट्ठाति।

एवमस्स चक्खुद्वारे चक्खुविञ्ञाणादीनि तीणि, तदारम्मणानि द्वे ति, पञ्च गणनूपगानि चित्तानि होन्ति। आरम्मणेन पन वेदनं परिवत्तेत्वा कुसलतो चतुन्नं, अकुसलतो चतुन्नं, किरियतो चतुन्नं ति, द्वादसन्नं उपेक्खासहगतचित्तानं अञ्ञतरेन जवितावसाने उपेक्खासहगत-तिहेतुकासंखारिकविपाकं पि दुहेतुकासंखारिकविपाकं पि तदारम्मणं हुत्वा उप्पज्जति। एवमस्स चक्खुद्वारे उपेक्खासहगतसन्तीरणं, इमानि द्वे तदारम्मणानी ति, इमानि तीणि गणनूपगचित्तानि होन्ति। तानि पुरिमेहि पञ्चहि सद्धिं अट्ठ। सोतद्वारादीसु पि अट्ठ अट्ठा ति एकाय चेतनाय कम्मे आयूहिते समचत्ता-ळीस चित्तानि उप्पज्जन्ति। अगहितगहणेन पन चक्खुद्वारे अट्ठ, सोतविञ्ञाणादीनि चत्तारी ति, द्वादस होन्ति। तत्थ 'मूलभवंगता' 'आगन्तुकभवंगता' 'अम्बोपम-नियाम-कथा' च वुत्तनयेनेव वेदितब्बा।

सोमनस्ससहगत-तिहेतुक-ससंखारिक-कुसलचित्तेन कम्मे आयूहिते पि उपेक्खा-सहगत-तिहेतुक-असंखारिक-ससंखारिकेहि कम्मे आयूहिते पि एसेव नयो। तत्थ यन्तो-पमं पि एत्थ पाकतिकमेव। एत्तावता तिहेतुककम्मेन तिहेतुकपटिसन्धि होती ति वारो कथितो। दुहेतुका होती ति वारो पन पटिच्छन्नो हुत्वा गतो।

इदानि दुहेतुककम्मेन दुहेतुकपटिसन्धिकथा होति। सोमनस्ससहगत-दुहेतुका-संखारिकचित्तेन हि कम्मे आयूहिते तादिसेनेव विपाकचित्तेन गहितपटिसन्धिकस्स वुड्ढिप्पत्तस्स चक्खुद्वारे इट्ठारम्मणे आपाथगते हेट्ठा वुत्तनयेनेव तयो मोघवारा होन्ति। दुहेतुकस्स पन जवन-'किरिया' नत्थि। तस्मा कुसलतो चत्तारि सोमनस्स-सहगतानि, अकुसलतो चत्तारी ति इमेसं अट्ठन्नं अञ्ञतरेन जवितपरियोसाने दुहेतुक-मेव सोमनस्ससहगतासंखारिकं तदारम्मणं होति। एवमस्स चक्खुविञ्ञाणादीनि तीणि, इदं च तदारम्मणं ति, चत्तारि गणनूपगचित्तानि होन्ति। 'इट्ठमज्झत्तारम्मणे'

तत्रा ति द्वादसकमग्गे। तस्सा ति सत्तस्स, तदारम्मणं ति[1] सम्बन्धो। तेरसन्नं चित्तानं ति निद्धारणे छट्ठी। अञ्ञतरेन जवनेन जवित इति पदे कत्ता।

अस्सा ति सत्तस्स। तानि तीणि चित्तानि। तत्था ति द्वादसविपाककथायं, वेदितब्बा ति पदे आधारो।

---

१. पदे–सी०।

पन कुसलतो उपेक्खासहगतानं चतुन्नं, अकुसलतो चतुन्नं ति, अट्ठन्नं अञ्ञतरेन जवितपरियोसाने दुहेतुकमेव उपेक्खासहगतं असंखारिकं तदारम्मणं होति। एवमस्स उपेक्खासहगतं सन्तीरणं, इदं च तदारम्मणं ति, द्वे गणनूपगचित्तानि होन्ति। तानि हि पुरिमेहि चतूहि सद्धिं छ।

सोतद्वारादीसु पि छ छा ति एकाय चेतनाय कम्मे आयूहिते समतिंसचित्तानि उप्पज्जन्ति। अगहितगहणेन पन चक्खुद्वारे छ, सोतविञ्ञाणादीनि चत्तारी ति दस होन्ति। अम्बोपम-नियामकथा पाकतिका एव। यन्तोपमं इध न लब्भती ति वुत्तं। सोमनस्ससहगत-दुहेतुक-ससंखारिक-कुसलचित्तेन कम्मे आयूहिते पि उपेक्खासहगत-दुहेतुक-असंखारिक-ससंखारिकेहि कम्मे आयूहिते पि एसेव नयो। एत्तावता दुहेतुक-कम्मेन दुहेतुकपटिसन्धि होती ति वारो कथितो।

अहेतुका होती ति वारो पन एवं वेदितब्बो—कुसलतो चतूहि ञाणविप्पयुत्तेहि कम्मे आयूहिते, कुसलविपाकाहेतुक-मनोविञ्ञाणधातुया उपेक्खासहगताय पटि-सन्धिया गहिताय, कम्मसदिसा पटिसन्धी ति न वत्तब्बा। इतो पट्ठाय हेट्ठा वुत्तनये-नेव कथेत्वा इट्ठे पि इट्ठमज्झत्ते पि चित्तप्पवत्ति वेदितब्बा। इमस्स हि थेरस्स वादे पिण्डजवनं जवति। सेसजवनं कुसलत्थाय वा अकुसलत्थाय वा को नियामेती ति आदिकथा सब्बा तत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बा। एत्तावता मोरवापीवासि-महादत्तत्थेर-वादे द्वादसकमग्गो निट्ठितो सद्धिं दसकमग्गेन चेव अहेतुकट्ठकेन चा ति।

(iii)

इदानि महाधम्मरक्खितत्थेरवादे दसकमग्गकथा होति। तत्थ साकेतपञ्ह-उस्सदकित्तनानि पाकतिकानेव। हेतुकित्तने पन अयं विसेसो। तिहेतुककम्मं तिहेतुक-विपाकं पि दुहेतुकविपाकं पि अहेतुकविपाकं पि देति। दुहेतुककम्मं तिहेतुकमेव न देति, इतरं देति। तिहेतुककम्मेन पटिसन्धि तिहेतुका व होति; दुहेतुका, अहेतुका न होति। दुहेतुककम्मेन दुहेतुकाहेतुका होति, तिहेतुका न होति। असंखारिककम्मं विपाकं असंखारिकमेव देति, नो ससंखारिकं। ससंखारिकं पि ससंखारिकमेव देति, नो असंखारिकं। आरम्मणेन वेदना परिवत्तेतब्बा। जवनं पिण्डजवनमेव जवति। आदितो पट्ठाय चित्तानि कथेतब्बानी ति।

एत्था ति वारे[1]।

गहिताया ति पदं न वत्तब्बा ति पदे लक्खणक्रिया। इतो पट्ठाया ति इतो कुसलतो चतूहीति आदिवचनतो पट्ठाय। इमस्स हीति आदि दळ्हीकरणं। पिण्डतं विसुत्तजवनं पिण्ड-जवनं। एकेकस्मिं तदारम्मणे पिण्डदस्सितं जवनं पिण्डजवनं। तत्था ति[2] हेट्ठा वचने।

तत्था ति दसकमग्गकथायं। आदितो ति पठमकुसलचित्ततो।

---

१. ०इधा ति वारे–सी०। २. तदा ति–म०।

तत्रायं कथा—एको पठमकुसलचित्तेन कम्मं आयूहति, पठमविपाकचित्तेनेव पटिसन्धिं गण्हाति। अयं कम्मसदिसा पटिसन्धि। तस्स वुड्ढिप्पत्तस्स चक्खुद्वारे 'इट्ठारम्मणे' आपाथगते वुत्तनयेनेव तयो मोघवारा होन्ति। अथ'स्स हेट्ठा वुत्तानं तेरसन्नं सोमनस्ससहगतजवनानं अञ्ञतरेन जवितपरियोसाने पठमविपाकचित्तमेव तदारम्मणं होति। तं 'मूलभवंगं' 'तदारम्मणं' ति द्वे नामानि लभति।

एवमस्स चक्खुविञ्ञाणादीनि तीणि, इदं च तदारम्मणं ति, चत्तारि गणनूपगचित्तानि होन्ति। 'इट्ठमज्झत्तारम्मणे' हेट्ठा वुत्तनयेनेव द्वाससन्नं उपेक्खासहगतजवनानं अञ्ञतरेन जवितपरियोसाने उपेक्खासहगतं तिहेतुकासंखारिकचित्तं तदारम्मणताय पतिट्ठाति। तं 'आगन्तुकभवङ्ग' 'तदारम्मणं' ति द्वे नामानि लभति। एवमस्स उपेक्खासहगतसन्तीरणं इदं च तदारम्मणं ति द्वे गणनूपगचित्तानि। तानि पुरिमेहि चतूहि सद्धिं छ होन्ति। सोतद्वारादीसु पि छ छा ति। एवं एकाय चेतनाय कम्मे आयूहिते पञ्चसु द्वारेसु समतिंसचित्तानि उप्पज्जन्ति। अगहितगहणेन चक्खुद्वारे छ, सोतविञ्ञाणादीनि चत्तारी ति दस होन्ति। अम्बोपम-नियामकथा पाकतिका येव।

दुतिय-ततिय-चतुत्थकुसलचित्तेहि कम्मे आयूहिते पि एत्तकानेव विपाकचित्तानि होन्ति। चतूहि उपेक्खा-सहगतचित्तेहि कम्मे आयूहिते पि एसेव नयो। इध पन पठमं इट्ठमज्झत्तारम्मणं दस्सेतब्बं। पच्छा इट्ठारम्मणेन वेदना परिवत्तेतब्बा। तत्थ अम्बोपम-नियामकथा पाकतिका एव। यन्तोपमं न लब्भति। 'कुसलतो पन चतुन्नं ञाणविप्पयुत्तानं अञ्ञतरेन कम्मे आयूहिते' पि इतो पट्ठाय सब्बं वित्थारेत्वा अहेतुकट्ठकं कथेतब्बं। एत्तावता महाधम्मरक्खितत्थेरवादे दसकमग्गो निट्ठितो होति, सद्धिं अहेतुकट्ठकेना ति।

इमेसं पन तिण्णं थेरानं कतरस्स वादो गहेतब्बो ति? न कस्सचि एकंसेन। सब्बेसं पन वादेसु युत्तं गहेतब्बं। पठमवादस्मिं हि ससंखारासंखारविधानं पच्चयभेदतो अधिप्पेतं। तेनेत्थ, असंखारिककुसलस्स दुब्बलपच्चयेहि उप्पन्नं ससंखारविपाकं, ससंखारिककुसलस्स बलवपच्चयेहि उप्पन्नं असंखारिकविपाकं च गहेत्वा, लब्भमानानि

तत्रा ति हेतुकित्तने आदितो पट्ठाय चित्तानं कथने[1]। अथस्सा ति अथ तदा अस्स सत्तस्स।

इध पना ति चतूहि उपेक्खासहगतचित्तेहि आयूहितकम्मे।

वादो गहेतब्बो (१८१-सी०) इति पुच्छा। न कस्सचि थेरस्स एकंसेन वादो गहेतब्बो। पठमवादस्मि हीति आदि वित्थारो। असङ्खारससङ्खारविधानं ति असङ्खारससङ्खारभेदं[2]।

---

१. ०वा–सी०। २. ०पभेदं–सी०।

पि किरियजवनानि पहाय, कुसलजवनेहि तदारम्मणं आरम्मणेन च वेदनं नियामेत्वा, सेक्ख-पुथुज्जनवसेन सोळसकमग्गो कथितो।

यं पनेत्थ अकुसलजवनावसाने अहेतुकविपाकमेव तदारम्मणं दस्सितं, तं इतरेसु न दस्सितमेव। तस्मा तत्थ तं, तेसु वुत्तं सहेतुकविपाकं च, एत्था पि सब्बमिदं लब्भते व। तत्रायं नयो—यदा हि कुसलजवनानं अन्तरन्तरा अकुसलं जवति, तदा कुसलावसाने आचिण्णसदिसमेव, अकुसलावसाने सहेतुकं तदारम्मणं वुत्तं। यदा निरन्तरं अकुसलमेव तदा अहेतुकं। एवं ताव पठमवादे युत्तं गहेतब्बं।

दुतियवादे पन कुसलतो ससंखार-असंखारविधानं अधिप्पेतं। तेनेत्थ असंखारिककुसलस्स असंखारिकमेव विपाकं, ससंखारिककुसलस्स ससंखारिकमेव गहेत्वा, जवनेन तदारम्मणं अकत्वा, सब्बेसं पि सेक्खासेक्खपुथुज्जनानं उप्पत्तिरहो पिण्डजवनवसेनेव द्वादसकमग्गो कथितो। तिहेतुकजवनावसाने पनेत्थ तिहेतुकं तदारम्मणं युत्तं। दुहेतुकजवनावसाने दुहेतुकं, अहेतुकजवनावसाने अहेतुकं भाजेत्वा पन न वुत्तं। एवं दुतियवादे पि युत्तं गहेतब्बं।

ततियवादे पि कुसलतो व असंखार-ससंखारविधानं अधिप्पेतं। 'तिहेतुककम्मं तिहेतुकविपाकं पि दुहेतुकविपाकं पि अहेतुकविपाकं पि देती'ति पन वचनतो असंखारिकतिहेतुकपटिसन्धिकस्स असंखारिकदुहेतुकेन पि तदारम्मणेन भवितब्बं। तं अदस्सेत्वा हेतुसदिसमेव तदारम्मणं दस्सितं। तं पुरिमाय हेतुकित्तनलद्धिया न युज्जति। केवलं

तेनेत्था ति तेन कारणेन एत्थ पठमवादस्मिं कथितो ति पदे आधारो। आरम्मणे चा ति चसद्दो तदारम्मणञ्च वेदनञ्चा ति [१५२–म०] योजेतब्बो।

यं पनेत्था ति एत्थ पठमवादस्मिं यं पन तदारम्मणं, तं तदारम्मणं। इतरेसु दुतियवादादीसु। आचरियेहि दस्सितं। तस्मा तत्थ पठमवादस्मिं वुत्तं अहेतुकतदारम्मणं[1]। तेसु दुतियवादादीसु वुत्तं सहेतुकविपाकञ्च। एत्था पि पठमवादस्मिं। सब्बं इदं तदारम्मणं लब्भतेव। तत्रा ति तस्मिं लभने। आचिण्णसदिसमेवा ति आचिण्णेन जवनेन सदिसमेव तदारम्मणं युतं। यदा निरन्तरं अकुसलमेव जवति, तदा अहेतुकं तदारम्मणं युत्तं।

तेनेत्था ति तेन कारणेन एत्थ दुतियवादे[2]। एत्था ति[3] तिहेतुकादितदारम्मणेसु निद्धारणं[3]। दुहेतुकजवनावसाने द्विहेतुकतदारम्मणं युत्तं।

अहेतुकं ति पदं न वुत्तं ति पदे कम्मं। वचनतो ति पदं भवितब्बं ति पदे हेतु। असङ्खारदुहेतुकेन[4] पी ति पिसद्दो न केवलं असङ्खारतिहेतुकतदारम्मणेन भवितब्बं ति ञापेति। तदारम्मणेना ति पदं भवितब्बं ति पदे कत्ता। तं ति असङ्खारदुहेतुकतदारम्मणं। तं ति जनककम्महेतु। सदिसस्सेव तदारम्मणस्स दस्सनं। हेतुकित्तनलद्धिया ति जनकहेतुनो

---

१. तं अहेतुकविपाकतदारम्मणं–सी०। २. दुतियपादे–म०। ३-३. नत्थि सी० पोत्थके अयं पाठो। ४. असंखारिक०–सी०।

दसकमग्गविभावनत्थमेव वुत्तं। इतरं पि पन लब्भते व। एवं ततियवादे पि युत्तं गहेतब्बं।

अयं च सब्बा पि पटिसन्धिजनकस्सेव कम्मस्स विपाकं सन्धाय तदारम्मणकथा। 'सहेतुकभवंगं अहेतुकभवङ्गस्स अनन्तरपच्चयेन पच्चयो [३: ४४प०] ति वचनतो पन नानाकम्मेन अहेतुकपटिसन्धिकस्सा पि सहेतुकविपाकं तदारम्मणं उप्पज्जति। तस्स उप्पत्तिविधानं महापकरणे [दुकप० ५२] आविभविस्सती ति।

कामावचरकुसलविपाककथा निट्ठिता।

रूपावचरारूपावचरविपाककथा

इदानि रूपावचरादिविपाकं दस्सेतुं पुन **कतमे धम्मा अब्याकता** ति आदि [ध० ११८-१२०] आरद्धं। तत्थ यस्मा कामावचरविपाकं अत्तनो कुसलेन सदिसं पि होति, असदिसं पि, तस्मा न तं कुसलानुगतिकं कत्वा भाजितं। रूपावचरारूपावचरविपाकं पन यथा हत्थि-अस्स-पब्बतादीनं छाया हत्थि-आदिसदिसा व होन्ति, तथा अत्तनो कुसलसदिसमेव होती ति कुसलानुगतिकं कत्वा भाजितं। कामावचरकम्मं च यदा कदाचि विपाकं देति, रूपावचरारूपावचरं पन अनन्तरा येव, दुतियभवस्मिं येव अत्तभावे, विपाकं देती ति पि कुसलानुगतिकमेव कत्वा भाजितं। सेसं कुसले वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। अयं पि विसेसो—पटिपदादिभेदो च हीन-पणीत-मज्झिमभावो च एतेसु झानागमनतो वेदितब्बो। छन्दादीनं पन अञ्ञतरं धुरं कत्वा अनुप्पादनियत्ता निरधिपतिकानेव एतानी ति।

रूपावचरारूपावचरविपाककथा निट्ठिता।

कथनलद्धिया। केवलं विसेसं दस····प० ·· त्थमेव तं वचनं ततियत्थेरेन वुत्तं। दसकमग्गस्स दसकप्पकारस्स विभावनं पकासनत्थं[1] दसकमग्गविभावनं[2]। इतरम्पीति असङ्खारदुहेतुकतदारम्मणं।

अयञ्च कथा[3]। सन्धाया ति पदं तदारम्मणकथा ति एत्थ कथा ति पदे विसेसनं। अहेतुकपटिसन्धिकस्सा पी ति अपिसद्देन न केवलं सहेतुकपटिसन्धिकस्स सहेतुकविपाकं तदारम्मणं उप्पज्जतीति ञापेति। तस्स सहेतुकविपाकतदारम्मणस्स।

कामावचरकुसलविपाककथा निट्ठिता।

रूपारूपावचरविपाककथावण्णना

तत्था ति अब्याकता ति आदिवचने विनिच्छयो वेदितब्बो। तं (१८२–सी०) कामावचरविपाकं। कुसलानुगतिकं कुसलेन सदिसं कत्वा भगवता न भाजितं। रूपावचरा····प० ····न्ति सम्बन्धो। एतेसू ति रूपावचरारूपावचरविपाकेसु। पटिपदादिभेदो हीति पदे आधारो, वेदितब्बो ति पदे वा। झानागमनतो ति झानसङ्खात-आगमनतो। एतानि रूपावचरविपाकानि।

१. पकासनं–सी०। २. दसमग्ग०–सी०। ३. तदारम्मणकथा–सी०।

लोकुत्तरविपाककथा

लोकुत्तरविपाकं पि कुसलसदिसत्ता कुसलानुगतिकमेव कत्वा भाजितं। यस्मा पन तेभूमककुसलं चुतिपटिसन्धिवसेन वट्टं आचिनाति वड्ढेति, तस्मा तत्थ **कतत्ता उपचितत्ता** ति [ध० ११७-१२०] वुत्तं। लोकुत्तरं पन तेन आचितं पि अपचिनति, सयं पि चुतिपटिसन्धिवसेन न आचिनति, तेनेत्थ 'कतत्ता उपचितत्ता'ति अवत्वा **कतत्ता भावितत्ता** [ध० १२०] ति वुत्तं। **सुञ्ञतं** [ध० १२०] ति आदीसु 'मग्गो' ताव 'आगमनतो सगुणतो आरम्मणतो ति तीहि कारणेहि नामं लभती'ति, इदं हेट्ठा कुसलाधिकारे वित्थारितं। तत्थ सुत्तन्तिकपरियायेन सगुणतो पि आरम्मणतो पि नामं लभति। परियायदेसना हेसा। अभिधम्मकथा पन निप्परियायदेसना। तस्मा इध सगुणतो वा आरम्मणतो वा नामं न लभति, आगमनतो व लभति। आगमनमेव हि धुरं। तं दुविधं होति—विपस्सनागमनं मग्गागमनं ति। तत्थ मग्गस्स आगतट्ठाने विपस्सनागमनं धुरं, फलस्स आगतट्ठाने मग्गागमनं धुरं ति, इदं पि हेट्ठा वुत्तमेव। तेसु इदं फलस्स आगतट्ठानं, तस्मा इध मग्गागमनं धुरं ति वेदितब्बं।

सो पनेस मग्गो आगमनतो 'सुञ्ञतं'ति नामं लभित्वा सगुणतो च आरम्मणतो च 'अनिमित्तो' 'अप्पणिहितो' ति पि वुच्चति। तस्मा सयं आगमनियट्ठाने ठत्वा अत्तनो फलस्स तीणि नामानि देति। कथं? अयं हि सुद्ध-आगमनवसेनेव लद्धनामो 'सुञ्ञतमग्गो' सयं आगमनियट्ठाने ठत्वा अत्तनो फलस्स नामं ददमानो 'सुञ्ञतं' ति नामं अदासि। 'सुञ्ञत-अनिमित्तमग्गो' सयं आगमनियट्ठाने ठत्वा अत्तनो फस्स नामं ददमानो 'अनिमित्तं' ति नामं अकासि। 'सुञ्ञत-अप्पणिहितमग्गो' सयं आगमनियट्ठाने ठत्वा अत्तनो फलस्स नामं ददमानो 'अप्पणिहितं' ति नामं अकासि। इमानि पन तीणि नामानि मग्गानन्तरे फलचित्तस्मिं येव इमिना नयेन लब्भन्ति, न अपरभागे वलञ्जनफलसमापत्तिया।

लोकुत्तरविपाककथावण्णना।

तत्था ति कामावचरविपाकादीसु। तेना ति तेभूमिककुसले आचितम्पि वड्ढितं[1] विपाकं अपचिनति विद्धंसेति। तेनेत्था ति तेन कारणेन एत्थ लोके। सुञ्ञतं ति आदीसु विनिच्छयो वेदितब्बो। तत्था ति तीसु कारणेसु। इधा ति अभिधम्मे। तत्था ति विपस्सनामग्गागमनेसु[2]। [१५३-म०] तेसू ति द्वीसु आगतट्ठानेसु। इधा ति लोकुत्तरविपाके।

अयं हीति आदि वित्थारो। हि सच्चं अयं सुञ्ञतमग्गो। इमिना नयेना ति इमिना कारणेन अपरभागे वळञ्जनकफलसमापत्तिया समापज्जनवसेन अनुभवितब्बफलं समापत्तिया इमानि तीणि नामानि लभन्ति।

१. वड्ढितं पि—सी०। २. विपस्सनागमनमग्गागमनेसु—सी०।

अपरभागे पन अनिच्चादीहि तीहि विपस्सनाहि विपस्सितुं सक्कोति। अथ'स्स वुट्ठित-वुट्ठित-विपस्सनावसेन अनिमित्त-अप्पणिहित-सुञ्ञतसङ्खातानि तीणि फलानि उप्पज्जन्ति। तेसं तानेव सङ्खारारम्मणानि। अनिच्चानुपस्सनादीनि ञाणानि गोत्रभू-ञाणानि नाम होन्ति। सो चायं सुञ्ञतमग्गे वुत्तो। अप्पणिहितमग्गे पि एसेव नयो। अयं हि सुद्ध-आगमनवसेन लद्धनामो 'अप्पणिहितमग्गो' सयं आगमनियट्ठाने ठत्वा अत्तनो फलस्स नामं ददमानो 'अप्पणिहितं' ति नामं अकासि। 'अप्पणिहित-अनिमित्तमग्गो' सयं आगमनियट्ठाने ठत्वा अत्तनो फलस्स नामं ददमानो 'अनिमित्तं' ति नामं अकासि। 'अप्पणिहित-सुञ्ञतमग्गो' सयं आगमनियट्ठाने ठत्वा अत्तनो फलस्स नामं ददमानो 'सुञ्ञतं' ति नामं अकासि। इमानि पि तीणि नामानि मग्गानन्तरे फलचित्तस्मिं येव इमिना नयेन लब्भन्ति, न अपरभागे वलञ्जनसमापत्तिया ति।

एवं इमस्मिं विपाकनिद्देसे कुसलचित्तेहि तिगुणानि विपाकचित्तानि वेदितब्बानि। यथा पन तेभूमककुसलानि अत्तनो विपाकं अधिपतिं लभापेतुं न सक्कोन्ति, न एवं लोकुत्तरकुसलानि। कस्मा? तेभूमककुसलानं हि अञ्ञो आयूहनकालो अञ्ञ विपच्चनकालो। तेनेतानि अत्तनो विपाकं अधिपतिं लभापेतुं न सक्कोन्ति। लोकुत्तरानि पन ताय सद्धाय, तस्मिं विरिये, ताय सतिया, तस्मिं समाधिस्मिं, ताय पञ्ञायो अवूपसन्ताय, अपण्णकं अविरुद्धं मग्गानन्तरमेव विपाकं पटिलभन्ति, तेन अत्तनो विपाकं अधिपतिं लभापेतुं सक्कोन्ति। यथा हि परित्तकस्स अग्गिनो कतट्ठाने अग्गिस्मिं निब्बुतमत्ते येव उण्हाकारो निब्बायित्वा किञ्चि न होति, महन्तं पन आदित्त अग्गिक्खन्धं निब्बापेत्वा गोमयपरिभण्डे कते पि उण्हाकारो अवूपसन्तो व होति, एवमेव तेभूमककुसले अञ्ञो कम्मक्खणो अञ्ञो विपाकक्खणो परित्त-अग्गिट्ठाने उण्हभाव-निब्बुत-कालो विय होति। तस्मा तं अत्तनो विपाकं अधिपतिं लभापेतुं नां सक्कोति। लोकुत्तरे पन ताय सद्धाय....प०....ताय पञ्ञाय अवूपसन्ताय, मग्गा-

---

अथस्सा ति अथ तदा अस्स पुग्गलस्स। तेसं ति तिण्णं फलानं। तानेव ञाणानि सङ्खारं आरम्मणं येसं तानि सङ्खारारम्मणानि। यो चायं नयो सुञ्ञतमग्गे मया वुत्तो। एसेव नयो ति इमिना सङ्खेपेन वुत्तं[1] अत्थं[1] वित्थारेन्तो आह—अयं पि हीति आदि। पिसद्दो सुञ्ञतमग्गं अपेक्खति।

तिगुणानीति तीहि गणेतब्बानि[2]। लोकुत्तरविपाकस्स लोकियविपाकतो विसेसं दस्सेन्तो आह—यथा पना ति आदि। आयूहनकालो ति पवत्तनकालो। विपच्चनकालो ति विपाकदानकालो। लोकुत्तरानीति पदं पटिलभन्तीति पदे कत्ता। ताय सद्धाया ति लोकुत्तरमग्गे पवत्तसद्धाय। तस्मिं वीरिये ति आदीसु एसेव नयो। अवूपसन्ताया ति पदं पटिलभन्तीति पदे लक्खणक्रिया। अविरुद्धं ति पदं अपण्णकं ति पदस्स विवरणं। तेना ति तेन कारणेन लोकुत्त-

---

१-१. वुत्तमत्थं–सी०। २. गुणेतब्बानि–सी०।

नन्तरमेव फलं उप्पज्जति, तस्मा तं अत्तनो विपाकं लभापेती ति वेदितब्बं। तेनाहु **पोराणा**—

'विपाके अधिपति नत्थि ठपेत्वा लोकुत्तरं ति।

चतुत्थमग्गफलनिद्देसे **अञ्ञाताविन्द्रियं** [ध० १३८] ति अञ्ञाताविनो चतूसु सच्चेसु निट्ठितञाणकिच्चस्स इन्द्रियं, अञ्ञातावीनं वा चतूसु सच्चेसु निट्ठितकिच्चानं चत्तारि सच्चानि ञत्वा पटिविज्झित्वा ठितानं धम्मानं अब्भन्तरे इन्दट्ठसाधनेन इन्द्रियं। निद्देसवारे पि'स्स **अञ्ञातावीनं** [ध० १३८] ति आजानित्वा ठितानं। **धम्मानं** ति सम्पयुत्तधम्मानं अब्भन्तरे। **अञ्ञा** ति आजानना, **पञ्ञा** पजानना ति आदीनि वुत्तत्थानेव। **मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं** [ध० १३८] ति फलमग्गस्स अङ्गं, फलमग्गे च परियापन्नं ति अत्थो।

अपि चेत्थ इदं पकिण्णकं—एकं इन्द्रियं एकट्ठानं गच्छति, एकं छट्ठानानि गच्छति, एकं एकट्ठानं गच्छति। एकं हि 'अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं' एकट्ठानं गच्छति सोतापत्तिमग्गं। एकं 'अञ्ञिन्द्रियं' हेट्ठा तीणि फलानि, उपरि तयो मग्गे ति छट्ठानानि गच्छति। एकं 'अञ्ञाताविन्द्रियं' एकं ठानं गच्छति अरहत्तफलं। सब्बेसु पि मग्गफलेसु अत्थतो अट्ठ अट्ठ इन्द्रियानी ति चतुसट्ठि लोकुत्तर-इन्द्रियानि कथितानि। पालितो [ध० ७६-७७] पन नव नव कत्वा द्वासत्तति होन्ति। मग्गे मग्गङ्गा ति वुत्तं। फले पि मग्गङ्गं। मग्गे बोज्झङ्गो ति वुत्तो फले पि बोज्झङ्गो। मग्गक्खणे पि आरति विरती ति वुत्ता फलक्खणे पि आरति विरती ति। तत्थ मग्गो मग्गभावेनेव मग्गो, फलं पन मग्गं उपादाय मग्गो नाम; फलङ्गं फलपरियापन्नं ति वत्तुं पि

रानि सक्कोन्ति। वुत्तमत्थं उपमाय साधेन्तो आह—यथा हीति आदि। जननेन[१] निट्ठापेत्वा कते वा ति सम्बन्धो[१]। गोमयपरिभण्डे ति गोमयेन परिकम्मे, गोमयेन लिम्पने ति अत्थो। तेभूमककुसले ति पदं होतीति पदे आधारो। तं ति तेभूमककुसलं। लोकुत्तरे ति पदं सन्धाया ति आदीसु आधारो। तं ति लोकुत्तरकुसलं।

अञ्ञाताविनो ति पदस्स अत्थं विवरन्तो[२] (१८३–सी०) आह—चतूसु....प०.... किच्चस्सा ति। निट्ठितं ञाणकिच्चं यस्स पुग्गलस्स सो निट्ठितञाणकिच्चो। अञ्ञातावीनं ति पदस्स अत्थं विवरन्तो आह—चतूसु....प०....धम्मानं ति। इन्दट्ठसाधनेना ति इन्दसभावसाधनेन[३]। अस्सा ति अञ्ञाताविन्द्रियं ति पदस्स अत्थो। निद्देसवारे पि अञ्ञाताविन्द्रियं ति पदस्स अत्थो। फलमग्गस्सा ति फले पवत्तमग्गस्स।

अपि चेत्था ति अपि च अञ्ञं वचनं वत्तब्बं अत्थि, एत्थ लोकुत्तरविपाके। इदं पकिण्णकं। एकं हीति आदिवित्थारो। मग्गे मग्गङ्गं ति वचनं भगवता वुत्तं। फले पि मग्गङ्ग

१-१. नत्थि सी० पोत्थके पाठो। २. विवरन्तो–सी० सब्बत्थ।
३. इन्दट्ठ०–सी०।

वट्टति। मग्गो बुज्झनकस्स अङ्गो ति सम्बोज्झङ्गो, फले बुद्धस्स अङ्गो ति सम्बोज्झंगो। मग्गे आरमण-विरमणवसेनेव आरति विरति। फले पन आरति-विरतिवसेना ति।

लोकुत्तरविपाककथा निट्ठिता।

अकुसलविपाककथा

इतो परानि अकुसलविपाकानि—पञ्च चक्खु-सोत-घाण-जिव्हा-कायविञ्ञाणानि, एका मनोधातु, एका मनोविञ्ञाणधातू ति [ध० १३९-१४१] इमानि सत्त चित्तानि—पालितो च अत्थतो च हेट्ठा वुत्तेहि तादिसेहेव कुसलविपाकचित्तेहि सदिसानि। केवलं हि तानि कुसलकम्मपच्चयानि इमानि अकुसलकम्मपच्चयानि। तानि च इट्ठ-इट्ठमज्झत्तेसु आरम्मणेसु वत्तन्ति, इमानि अनिट्ठानिट्ठमज्झत्तेसु। तत्थ च सुखसहगतं कायविञ्ञाणं, इध दुक्खसहगतं। तत्थ च उपेक्खासहगता मनोविञ्ञाणधातु मनुस्सेसु जच्चन्धादीनं पटिसन्धि आदिं कत्वा पञ्चसु ठानेसु विपच्चति। इध पन एकादसविधेना पि अकुसलचित्तेन कम्मे आयूहिते कम्म-कम्मनिमित्त-गतिनिमित्तेसु अञ्ञतरं आरम्मणं कत्वा चतूसु अपायेसु (i) पटिसन्धि हुत्वा विपच्चति; दुतियवारतो पट्ठाय यावतायुकं (ii) भवंगं हुत्वा, अनिट्ठानिट्ठमज्झत्तारम्मणाय पञ्चविञ्ञाणवीथिया (iii) सन्तीरणं हुत्वा, बलवारम्मणे छसु द्वारेसु (iv) तदारम्मणं हुत्वा, मरणकाले (v) चुति हुत्वा ति, एवं पञ्चसु ठानेसु विपच्चती ति।

अकुसलविपाककथा निट्ठिता।

ति वुत्तं ति योजना। फले पि बोज्झङ्गा ति वुत्तो। फलक्खणे पि····प०····योजना। तत्था ति मग्गफलेसु, निद्धारणं। बुज्झनकस्स पुग्गलस्स। बुद्धस्स पुग्गलस्स।

लोकुत्तरविपाककथा निट्ठिता।

अकुसलविपाककथावण्णना

(१५४-म०) इतो ति लोकुत्तरविपाकतो। तानीति कुसलविपाकचित्तानि। कुसलकम्मपच्चयो[1] येसं तानि कुसलकम्मपच्चयानि। इमानि अकुसलविपाकचित्तानि च कुसलविपाकचित्तानि तानि च कुसलविपाकचित्तानि। चसद्दो विसेसाभिधानारम्भो। इमानि अकुसलविपाकचित्तानि अनिट्ठ····प०····णेसु वत्तन्ति। तत्थ चा ति कुसलविपाके आधारो। इधा ति अकुसलविपाके। विपच्चतीति पवत्तति। इध पन अकुसलविपाके मनोविञ्ञाणधातु कत्वा विपच्चति। दुतियवारतो ति पटिसन्धितो परं पठमभवङ्गसङ्खातदुतियवारतो। पञ्चविञ्ञाणवीथिया ति पदं विपच्चती ति पदे आधारो। चुति हुत्वा विपच्चति, एव[2] सद्दो अञ्ञट्ठानं निवत्तेति।

अकुसलविपाककथावण्णना निट्ठिता

---

१. कुसलकम्मं पच्चयो—सी०। २. एवं—सी०।

अब्याकतधम्मकथा

(ii) किरियकथा

इदानि किरियाब्याकतं [ध० १४१-१४६] भाजेत्वा दस्सेतुं पुन **कतमे धम्मा अब्याकता** [ध० १४१] ति आदि आरद्धं। तत्थ **किरिया** ति करणमत्तं। सब्बेसु येव हि किरियचित्तेसु यं पन जवनभावं अप्पत्तं तं वातपुप्फं विय। यं जवनभावप्पत्तं तं छिन्नमूलकरुक्खपुप्फं विय अफलं होति, तं-तं-किच्चसाधनवसेन पवत्तत्ता पन करणमत्तमेव होति। तस्मा किरिया ति वुत्तं। **नेव-कुसला-नाकुसला ति** आदीसु कुसलमूलसंखातस्स कुसलहेतुनो अभावा 'नेव-कुसला'; अकुसलमूलसंखातस्स अकुसलहेतुनो अभावा 'नेव-अकुसला'; योनिसोमनसिकार-अयोनिसोमनसिकार-संखातानं पि कुसलाकुसलप्पच्चयानं अभावा 'नेव-कुसला-नाकुसला'। कुसलाकुसलसंखातस्स जनकहेतुनो अभावा **नेव-कम्मविपाका।**

इधा पि चित्तेकग्गतानिद्देसे पवत्तिट्ठितिमत्तमेव लब्भति। द्वे पञ्चविञ्ञाणानि, तिस्सो मनोधातुयो, तिस्सो मनोविञ्ञाणधातुयो, विचिकिच्छासहगतं ति इमेसु हि सत्तरससु चित्तेसु दुब्बलत्ता 'सण्ठिति अवट्ठिती' [ध० २०] ति आदीनि न लब्भन्ति। सेसं सब्बं विपाकमनोधातुनिद्देसे [ध० १११-११३] वुत्तनयेनेव वेदितब्बं, अञ्ञत्र उप्पत्तिट्ठाना। तं हि चित्तं पञ्चविञ्ञाणानन्तरं उप्पज्जति। इदं पन पञ्चद्वारे वलञ्जनप्पवत्तिकाले सब्बेसं पुरे उप्पज्जति। कथं ? चक्खुद्वारे ताव इट्ठ-इट्ठमज्झत्त-अनिट्ठ-अनिट्ठमज्झत्तेसु रूपारम्मणेसु येन-केनचि पसादे घट्टिते तं आरम्मणं गहेत्वा आवज्जनवसेन पुरेचारिकं हुत्वा भवंगं आवट्टयमानं उप्पज्जति। सोतद्वारादीसु पि एसेव नयो ति।

किरियमनोधातुचित्तं निट्ठितं।

अब्याकतधम्मकथावण्णना किरियकथावण्णना

तत्था ति अब्याकता ति आदिपदेसु, निद्धारणं। करणमत्तं ति पवत्तमत्तं। मत्तसद्देन फलदानं निवत्तेति। सब्बे येव[1] हीति आदि दळ्हीकरणं। छिन्नं मूलं यस्स सो छिन्नमूलको। छिन्नमूलको येव रुक्खो छिन्नमूलकरुक्खो। तत्थ पुप्फछिन्नं[2]....प०....पुप्फं नेव....प०.... आदीसु अत्थो वेदितब्बो। योनिसो....प०....सङ्खातस्सा ति आदिं अपेक्खति।

इधा पी ति क्रियमनोधातुचित्ते। द्वे पञ्चविञ्ञाणानीति आदि दळ्हीकरणं। (१८४-सी०) सोळसचित्तेकग्गताय वीरियाभावतो दुब्बलत्ता विचिकिच्छासहगतचित्तेकग्गताय उद्धच्च-सहगतत्ता दुब्बलत्ता। उप्पतिट्ठाना ति उप्पत्तिट्ठानं अञ्ञत्र वज्जेत्वा। सेसवचनं वेदितब्बं ति योजना। तं हीति हि सच्चं। तं चित्तं विपाकमनोधातुचित्तं। वळञ्ज[3]....प०....पञ्चन्नं चक्खादिद्वारानं पवत्तिकाले। वळञ्जन्ति पटिसन्धि एत्थ द्वारेसु फस्सादयो ति वळञ्जनका।

---

१. सब्बेसु येव–सी०। २. पुप्फं छिन्न०–सी०। ३. वलञ्ज–सी० सब्बत्थ।

मनोविञ्ञाणधातु उप्पन्ना होति····प०···· **सोमनस्ससहगता** [ध० १४२] ति, इदं चित्तं अञ्ञेसं असाधारणं। खीणासवस्सेव पाटिपुग्गलिकं। छसु द्वारेसु लब्भति। चक्खुद्वारे हि पधानसारुप्पं ठानं दिस्वा खीणासवो इमिना चित्तेन सोमनस्सितो होति। सोतद्वारे भण्डभाजनियट्ठानं पत्वा महासद्दं कत्वा लुद्धलुद्धेसु गण्हन्तेसु 'एवरूपा नाम मे लोलुप्पतण्हा पहीना'ति इमिना चित्तेन सोमनस्सितो होति। घाणद्वारे गन्धेहि वा पुप्फेहि वा चेतियं पूजेन्तो इमिना चित्तेन सोमनस्सितो होति। जिव्हाद्वारे रससम्पन्नं पिण्डपातं लद्धं भाजेत्वा परिभुञ्जन्तो 'साराणीयधम्मो वत मे पूरितो'ति इमिना चित्तेन सोमनस्सितो होति। कायद्वारे अभिसमाचारिकवत्तं करोन्तो 'कायद्वारे मे वत्तं परिपूरितं' ति इमिना चित्तेन सोमनस्सितो होति। एवं ताव पञ्चद्वारे लब्भति। मनोद्वारे पन अतीतानागतं आरब्भ उप्पज्जति। जोतिपालमाणव-मखादेवराज-कण्हतापसादिकालस्मिं हि कतं कारणं आवज्जित्वा तथागतो सितं पात्वकासि। तं पन पुब्बेनिवासञ्ञाण-सब्बञ्ञुतञ्ञाणानं किच्चं। तेसं द्विन्नं पन ञाणानं चिण्णपरियन्ते इदं चित्तं हासयमानं उप्पज्जति। अनागते 'तन्तिस्सरो मुतिंगसरो पच्चेकबुद्धो भविस्सती'ति सितं पात्वकासि। तं पन अनागतंसञ्ञाण-सब्बञ्ञुतञ्ञाणानं किच्चं। तेसं पन ञाणानं चिण्णपरियन्ते इदं चित्तं हासयमानं उप्पज्जति।

निद्देसवारे पन'स्स सेस-अहेतुकचित्तेहि बलवतरताय चित्तेकग्गता समाधिबलं पापेत्वा ठपिता। विरियं पि विरियबलं पापेत्वा। उद्देसवारे पन 'समाधिबलं होति विरियबलं होती' ति अनागतत्ता परिपुण्णेन बलट्ठेनेतं द्वयं बलं नाम न होति। यस्मा पन 'नेव-कुसलं-नाकुसलं' तस्मा बलं ति वत्वा न ठपितं। यस्मा पन न निप्परियायेन बलं, तस्मा संगहवारे [ध० १४३] पि 'द्वे बलानि होन्ती' ति न वुत्तं। सेसं सब्बं सोमनस्ससहगताहेतुक-मनोविञ्ञाणधातुनिद्देसे [ध० ११३-११५] वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

इदं ति क्रियमनोधातुचित्तं सब्बेसं सत्तानं। रूपारम्मणेसू ति निद्धारणे भुम्मं। येन केनचि रूपारम्मणेन। घट्टिते ति[1] पदे कत्ता।

अञ्ञेसं ति खीणासवतो अञ्ञेसं सत्तानं। चक्खुद्वारे हीति आदि वित्थारो। पधानसारुप्पट्ठानं ति कत्तब्बवीरियस्स अनुरूपट्ठानं। सोतद्वारे पत्वा सोमनस्सितो[2] ति सम्बन्धो। लुद्धलुद्धेसु[3] जनेसु। गण्हन्तेसू ति लक्खणक्रिया। अभिसमाचारिकवत्तं ति सेट्ठचरितब्बवत्तं। जोतिपाला ति आदि दळ्हीकरणं। तं ति आवज्जनं। चिण्णपरियन्ते ति पवत्तनपरियन्ते।

अस्सा ति हसतुप्पादचित्तस्स। सेस····प····पी ति मनोद्वारावज्जनवज्जेहि सोळसहि सेस····प०····चित्तेहि समाधिवीरियेहि उपत्थद्धत्ता बलवतरत्ता अस्स चित्तस्स। सेस····प०···· चित्तेहीति पदं बलवतरताया ति पदे अपादानं। वीरियं वीरियबलं पापेत्वा व[4] थपितं। इदं [१५५-म०] चित्तं नेव कुसलं नाकुसलं, एतं द्वयं परियायेन बलं नाम यस्मा पन होति तस्मा न वुत्तं। यस्मा च पन परियायेन, यस्मा पन निप्परियायेना ति च पाठो अत्थि। तत्थ

१. घटिते ति–सी०। २. सोमनस्सिको–सी०। ३. लुद्धेसु-सी०। ४. पापेत्वा–सी०।

उपेक्खासहगता ति [ध० १४४] इदं चित्तं तीसु भवेसु सब्बेसं सचित्तकसत्तानं साधारणं, न कस्सचि सचित्तकसत्तस्स न उप्पज्जति नाम। उप्पज्जमानं पन पञ्चद्वारे वोट्ठपनं होति, मनोद्वारे आवज्जनं। छ असाधारणञ्ञाणानि पि इमिना गहितारम्मणमेव गण्हन्ति। महागजं नामेतं चित्तं; इमस्स अनारम्मणं नाम नत्थि। 'असब्बञ्ञुतञ्ञाणं सब्बञ्ञुतञ्ञाणगतिकं नाम कतमं ?' ति वुत्ते 'इदं' ति वत्तब्बं। सेसमेत्थ पुरिमचित्ते वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। केवलं हि तत्थ सप्पीतिकत्ता नवंगिको [ध० १४३] संखारक्खन्धो विभत्तो। इध न-प्पीतिकत्ता अट्ठंगिको [ध० १४४]।

इदानि यानि कुसलतो अट्ठ महाचित्तानेव खीणासवस्स उप्पज्जनताय किरिया [ध० १४४-१४५] ति जातानि, तस्मा तानि कुसलनिद्देसे [ध० १८-४४] वुत्तनयेनेव वेदितब्बानि।

इध ठत्वा हसनकचित्तानि समोधानेतब्बानि। कति पनेतानि होन्ती ति ? तेरस। पथुज्जना हि कुसलतो चतूहि सोमनस्ससहगतेहि, अकुसलतो चतूही ति, अट्ठहि चित्तेहि हसन्ति। सेक्खा कुसलतो चतूहि सोमनस्ससहगतेहि, अकुसलतो द्वीहि दिट्ठिगतविप्पयुत्तसोमनस्ससहगतेही ति, छहि चित्तेहि हसन्ति। खीणासवा किरियतो पञ्चहि सोमनस्ससहगतेहि हसन्ती ति।

रूपावचरारूपावचर-किरिया-निद्देसेसु [ध० १४५-१४६] **दिट्ठधम्मसुखविहारं** [ध० १४५] ति दिट्ठधम्मे, इमस्मिं येव अत्तभावे, सुखविहारमत्तकं। तत्थ खीणासवस्स पुथुज्जनकाले निब्बत्तितसमापत्ति याव नं न समापज्जन्ति ताव कुसला व, समापन्नकाले किरिया होति। खीणासवकाले पन'स्स निब्बत्तितसमापत्ति किरिया व होति। सेसं सब्बं तं-सदिसत्ता कुसलनिद्देसे [ध० ४५-७३] वुत्तनयेनेव वेदितब्बं ति।

अट्ठसालिनिया **धम्मसंगहट्ठकथाय चित्तुप्पादकथा** निट्ठिता।

अब्याकतपदं पन नेव ताव निट्ठितं ति।

चित्तुप्पादकण्डवण्णना निट्ठिता।

निसद्दो न युत्तो। तेन मोहविच्छेदनीयं तं इतरो हेतुक····प०····परियायतो ति वुत्तं ति वुत्तं। इदानि क्रियानि तानि वेदितब्बानी ति योजना।

सब्बञ्ञुतञाणगतिकं ति सब्बञ्ञुतञाणसदिसं। सेसमेत्था ति एत्थ चित्ते सेसं वचनं। तत्था ति हसनचित्ते। इधा ति चित्ते मनसिट्ठाने।

एतानी ति हसनकचित्तानि।

तत्था ति तासु समापत्तीसु। खीणासवो याव यत्तकं कालं समापत्तिं न समापज्जति, ताव खीणासवस्स पुथुज्जन···प०····समापत्तिकुसला व। अस्सा ति अनेन खीणासवेन। तंसदिसत्ता तेन कुसलेन सदिसभावतो। अब्याकतपदं पन ताव पठमं नेव निट्ठातीति[1]।

चित्तुप्पादकण्डवण्णना निट्ठिता

---

१. निट्ठाति–सी०।

४

अब्याकतधम्मकथा

(iii) रूप-अब्याकतकथा

रूपकण्डवण्णना

इदानि रूपकण्डं भाजेत्वा दस्सेतुं पुन **कतमे धम्मा अब्याकता** [ध० १४७] ति आदि आरद्धं। तत्थ किञ्चा पि हेट्ठा चित्तुप्पादकण्डे विपाकाब्याकतं चेव किरियाब्याकतं च निस्सेसं कत्वा भाजितं, रूपाब्याकत-निब्बानाब्याकतानि पन अकथितानि, तानि कथेतुं चतुब्बिधं पि अब्याकतं समोधानेत्वा दस्सेन्तो **कुसलाकुसलानं धम्मानं विपाका** [ध० १४७] ति आदिमाह। तत्थ **कुसलाकुसलानं** ति चतुभूमक-कुसलानं चेव अकुसलानं च। एवं ताव विपाकाब्याकतं कुसलविपाकाकुसलविपाकवसेन द्वीहि पदेहि परियादियित्वा दस्सितं। यस्मा पन तं सब्बं पि कामावचरं वा होति, रूपावचरादीसु वा अञ्ञतरं, तस्मा 'कामावचरा'ति आदिना नयेन तदेव विपाकाब्याकतं भुम्मन्तरवसेन परियादियित्वा दस्सितं। यस्मा पन तं वेदनाखन्धो पि होति····प०···· विञ्ञाणक्खन्धो पि, तस्मा पुन सम्पयुत्तचतुक्खन्धवसेन परियादियित्वा दस्सितं।

एवं विपाकाब्याकतं कुसलाकुसलवसेन भुम्मन्तरवसेन सम्पयुत्तक्खन्धवसेना ति तीहि नयेहि परियादाय दस्सेत्वा, पुन किरियाब्याकतं दस्सेन्तो **ये च धम्मा किरिया** [ध० १४७] ति आदिमाह। तत्थ 'कामावचरा रूपावचरा अरूपावचरा वेदनाखन्धो····प०··विञ्ञाणक्खन्धो' ति वत्तब्बं भवेय्य। हेट्ठा पन गहितमेवा ति नयं दस्सेत्वा निस्सज्जितं। इदानि अविभत्तं दस्सेन्तो **सब्बं च रूपं असंखता च धातू** [ध० १४७] ति आह। तत्थ 'सब्बं च रूपं' ति पदेन पञ्चवीसति रूपानि छन्नवुति रूपकोट्ठासा निप्पदेसतो गहिता ति वेदितब्बा। 'असङ्खता च धातू' ति पदेन निब्बानं निप्पदेसतो गहितं ति। एत्तावता 'अब्याकता धम्मा' ति पदं निट्ठितं होति।

---

२. रूपकण्डवण्णना

रूप-अब्याकतकथावण्णना

तत्था ति अब्याकता ति आदिवचचने, आहा ति पदे आधारो। तानी ति रूपनिब्बानाब्याकतानि। तत्था ति कुसला ति आदिपदेसु। तं ति विपाकाब्याकतं।

तत्था ति ये च धम्मा ति आदिवचने। इति क्रियाब्याकतं वत्तब्बं भवेय्य। हेट्ठा पन क्रियाब्याकतं गहितमेव इति मनसि कत्वा नयं दस्सेत्वा निसज्जि (१८५-सी०) भगवा। तत्था ति सब्बञ्च रूपं असङ्खता च धातू ति वचने।

तत्थ कतमं सब्बं रूपं [ध० १४७] ति इदं कस्मा गहितं ? हेट्ठा रूपाब्याकतं सङ्खेपेनेव कथितं। इदानि तं एकक-दुक-तिक-चतुक्क····प०····एकादसकवसेन वित्थारतो भाजेत्वा दस्सेतुं इदं गहितं। तस्स'त्थो—यं वुत्तं 'सब्बं च रूपं; असङ्खता च धातू' [ध० १४७] ति, तस्मिं पदद्वये 'कतमं सब्बं रूपं नाम ?', इदानि तं भाजेत्वा दस्सेन्तो **चत्तारो च महाभूता** [ध० १४७] ति आदिमाह। तत्थ चत्तारो ति गणनपरिच्छदो। तेन तेसं ऊनाधिकभावं निवारेति। 'च'-सद्दो सम्पिण्डनत्थो। तेन न केवलं चत्तारो महाभूता' व रूपं, अञ्ञं पि अत्थी ति 'उपादारूपं' सम्पिण्डेति। **महाभूता** ति एत्थ महन्त-पातुभावादीहि कारणेहि महाभूतता वेदितब्बा। एतानि हि (i) महन्तपातुभावतो, (iii) महाभूतसामञ्ञतो, (iii) महापरिहारतो, (iv) महाविकारतो, (v) महन्त-भूतत्ता चा ति इमेहि कारणेहि महाभूतानी ति वुच्चन्ति।

तत्थ (i) 'महन्तपातुभावो'ति, एतानि हि (a) अनुपादिन्नकसन्ताने पि (b) उपादिन्नकसन्ताने पि महन्तानि पातुभूतानि। तेसं (a) अनुपादिन्नकसन्ताने एवं महन्तपातुभावता वेदितब्बा—एकं हि चक्कवाळं आयामतो च वित्थारतो च योजनानं द्वादससतसहस्सानि चतुत्तिससतानि पञ्ञासं च योजनानि। परिक्खेपतो पन

सब्बं सतसहस्सानि छत्तिसपरिमण्डलं।
दस चेव सहस्सानि अड्ढुड्ढानि सतानि च॥

तत्थ

दुवे सतसहस्सानि चत्तारि नहुतानि च।
एत्तकं बहलत्तेन सङ्खाता'यं वसुन्धरा॥

तं ति रूपाब्याकतं। इदं ति तत्थ कतमं सब्बं रूपं ति वचनं। तस्सा ति तत्थ कतमं सब्बं रूपं ति वचनस्स। तस्मि द्वये ति निद्धारणे भुम्मं। तं ति रूपं। तत्था ति चत्तारो ति आदिपदेसु। गणनेन परिच्छेदो गणनपरिच्छेदो। तेन गणनपरिच्छेदेन। तेसं महाभूतानं। तेना ति चसद्देन। महाभूता ति एत्थ वचने वेदितब्बो ति पदे आधारो। एतानि हीति आदि वित्थारो, एतानि रूपानि, वुच्चन्तीति पदे कम्मं।

तत्था ति आदि वित्थारो। तत्था ति महन्तपातुभावतो पि आदिपदेसु, निद्धारणं। महन्तपातुभावतो ति वचने विनिच्छयो वेदितब्बो। हि सच्चं एतानि रूपानि। तेसं ति महाभूतानं, एवं वुच्चमाननयेन। हि सच्चं एकं चक्कवाळं आयामतो च····प०····योजनानि च होन्ति।

सब्बचक्कवाळं[1] परिमण्डलसण्ठानं[2] [१५६-म०] परिक्खेपतो छत्तिससतसहस्सानि दस चेव सहस्सानि अड्ढुड्ढानि अड्ढचतुत्थानि योजनसतानि च होन्ति। अड्ढेन चतुत्थानि अड्ढुड्ढानि तीणि सतानि पञ्ञासञ्चा ति अत्थो।

तत्था ति तस्मि चक्कवाळे, वसुन्धरा ति पदे आधारो। नहुतानीति दससहस्सानि।

---

१. सब्बं चक्कवाळं परिमण्डलं०–सी०। २. परिमण्डळ०–सी०।

तस्सा येव सन्धारकं

चत्तारि सतसहस्सानि अट्ठेव नहुतानि च।
एत्तकं बहलत्तेन जलं वाते पतिट्ठितं॥

तस्सा पि सन्धारको

नव सतसहस्सानि मालुतो नभमुग्गतो।
सट्ठि चेव सहस्सानि एसा लोकस्स सण्ठिति॥

एवं सण्ठिते चेत्थ योजनानं

चतुरासीति-सहस्सानि अज्झोगाळ्हो महण्णवे।
अच्चुग्गतो तावदेव **सिनेरुपब्बतुत्तमो**॥
ततो उपड्ढुपड्ढेन पमाणेन यथाक्कमं।
अज्झोगाळ्हुग्गता दिब्बा नानारतनचित्तिता॥
युगंधरो ईसधरो करवीको सुदस्सनो।
नेमिन्धरो विनतको अस्सकण्णो गिरिब्रहा॥
एते सत्त महासेला **सिनेरुस्स** समन्ततो।
महाराजानमावासा देवयक्खनिसेविता॥

एत्तकं ति पदं सङ्खाता ति पदे क्रियाविसेसनं। बहलत्तेन बहलभावेन सङ्खाता कथिता। अयं वसुन्धरा।

तस्सा येव वसुन्धराय। सन्धारकं ति पदं जलं ति पदस्स विसेसनं।

वाते वातस्स उपरि पतिट्ठितं।

तस्सा पि जलस्स सन्धारको।

मालुतो नभं उग्गतो। सण्ठिती ति हेट्ठा उपरितो चा ति सब्बसो ठिति।

एवं सण्ठिते चेत्था ति एवं अवट्ठिते एत्थ चक्कवाळे। एत्था ति पदं सिनेरुपब्बतुत्तमो ति पदे आधारो। योजनानं ति पदं चतुरासीति सहस्सानीति पदे सम्बन्धो।

अज्झोगाळ्हो ति महण्णवे अनुपविसित्वा ठितो। अच्चुग्गतो तावदेवा ति तत्तकमेव चतुरासीति योजनसहस्सानि येव उग्गतो। सिनेरुपब्बतुत्तमो ति पब्बतेसु उत्तमो पब्बतुत्तमो, पब्बतो येव वा उत्तमो पब्बतुत्तमो। सिनेरुसङ्खातो पब्बतुत्तमो सिनेरुपब्बतराजा ति वुत्तं होति।

ततो ति सिनेरुस्स हेट्ठा उपरि च वुत्तप्पमाणतो। उपड्ढुपड्ढेना (१८६-सी०) ति उपड्ढेन उपड्ढेन। इदं वुत्तं होति द्वाचत्तालीसयोजनसहस्सानि[1] समुद्दे अज्झोगाळ्हो, तत्तकमेव उपरि-उग्गतो युगन्धरपब्बतो। एकवीसयोजनसहस्सानि समुद्दे अज्झोगाळ्हो, तत्तकमेव उपरि-उग्गतो

---

१. द्वाचत्ताळीस०—सी०।

योजनानं सतानुच्चो हिमवा पञ्च पब्बतो ।
योजनानं सहस्सानि तीणि आयत-वित्थतो ॥
चतुरासीति-सहस्सेहि कूटेहि पतिमण्डितो ।
ति-पञ्च-योजनक्खन्ध-परिक्खेपा नगव्हया ॥
पञ्ञासयोजनक्खन्ध-साखायामा समन्ततो ।
सतयोजनवित्थिण्णा तावदेव च उग्गता ।
जम्बू, यस्सानुभावेन जम्बुदीपो पकासितो ॥

ईसधरो पब्बतो ति इमिना नयेन सेसेसु पि उपड्ढुपड्ढप्पमाणिका वेदितब्बा । पमाणेना ति पदं अज्झोगळ्हुग्गता ति पदे ततियाविसेनं । अज्झोगाळहुग्गता ति अज्झोगाळ्हा[1] च उग्गता च[2] । दिब्बा ति देवानं निवासभूतत्ता दिब्बा । नानारतनचित्तका ति नानारतनेहि विचित्ता । महासेला ति पदस्स विसेसनं । ब्रहा ति महन्तं । सिनेरुस्स समन्ततो ति परिक्खिपनवसेन सिनेरुस्स समन्ततो ठिता । सिनेरुं हि परिक्खिपित्वा ठितो युगन्धरो । तं परिक्खिपित्वा ठितो ईसधरो । एवं तं तं परिक्खिपित्वा ठितो[3] सिनेरुस्स समन्ततो ति वुत्ता । निमिजातके[4] पन सिनेरुं परिक्खिपित्वा अस्सकण्णो नाम पब्बतो ठितो ति एवं अञ्ञो येव अनुक्कमो आगतो, तथा हि[4] निमिजातके वुत्तं ।

(१५७-म०) सुदस्सनो करवीको, ईसधरो[5] युगन्धरो ।
नेमिन्धरो विनतको, अस्सकण्णो गिरिब्रहा ति ।।

तत्थ अट्ठकथायं इदं वुत्तं अयं महाराज, एतेसं सब्बबाहिरो सुदस्सनो[6] पब्बतो[6] नाम, तदनन्तरं करवीको नाम, सो सुदस्सनतो उच्चतरो । करवीकस्स अनन्तरे ईसधरो[7] नाम, सो करवीकतो उच्चतरो । ईसधरस्स अनन्तरो युगन्धरो नाम, सो ईसधरतो उच्चतरो । युगन्धरस्स अनन्तरे नेमिन्धरो नाम, सो युगन्धरतो उच्चतरो । नेमिन्धरस्स अनन्तरे विनतको नाम, सो नेमिन्धरतो[8] उच्चतरो । विनतकस्स अनन्तरे अस्सकण्णो नाम, सो विनतकतो उच्चतरो ति । एते पब्बता अनुपटिपाटिया समुग्गता सोपानसदिसा हुत्वा ठिता ति । किञ्चा पि अञ्ञो अनुक्कमो वुत्तो, तथा पि नामपरिवत्तनवसेन वुत्तो, न सभावभेदेन वुत्तो। यथा हि इदं बाराणसी-नगरं इदानि बाराणसी नाम । अनागते अयं बाराणसी उप्पलनगरं नाम भविस्सति । पुन उप्पल-नगरं पदुमनगरं नाम भविस्सति । पदुमनगरं मन्दारवनगरं नाम भविस्सति । मन्दारवनगरं (१८७-सी०) केतुमती[9] नाम नगरं[9] भविस्सती ति एवं नगरनामं[10] परिवत्तति, एवं युगन्धर-पब्बतादीनं नामं परिवत्तति । युगन्धरपब्बतादयो हि अञ्ञमञ्ञस्स नामं लभन्ती ति ।

योजनानं सतानुच्चो हिमवा पञ्च पब्बतो[11] योजनानं पञ्चसतानि उच्चो । हिमं अस्स अत्थीति हिमवा । गिम्हसमये हिमं वमती ति वा हिमवा । योजनानं सहस्सानि तीणि आयत-

---

१. ०गाळ्हो–सी० । २. उग्गतो–सी० । ३. ठिता–सी० । ४-४. सी० पोत्थके एत्तको पाठो नत्थि । ५. इसिन्धरो–सी० । ६-६. सुदस्सनपब्बतो–सी० । ७. इसिन्धरो–सी० सब्बत्थ । ८. ततो–सी० । ९-९. केतुमतीनगरं नाम-सी० । १०. नगरस्स नामं–सी० । ११. ०ति हिमवा पब्बतो–सी० ।

यं चेतं जम्बुया पमाणं तदेव असुरानं चित्तपाटलिया, गरुळानं सिम्बलिरुक्खस्स, **अपरगोदाने** कदम्बस्स, **उत्तरकुरूसु** कप्परुक्खस्स, **पुब्बविदेहे** सिरीसस्स, **तावतिंसेसु** पारिच्छत्तकस्सा ति ।

तेनाहु **पोराणा**—

पाटली सिम्बली जम्बू देवानं पारिछत्तको ।
कदम्बो कप्परुक्खो च सिरीसेन भवति सत्तमो ॥
द्वे असीतिसहस्सानि अज्झोगाळ्हो महण्णवे ।
अच्चुग्गतो तावदेव चक्कवाळसिलुच्चयो ।
परिक्खिपित्वान तं सब्बं लोकधातुमयं ठितो ति ॥

(b) उपादिन्नकसन्ताने पि मच्छ-कच्छप-देव-दानवादिसरीरवसेन महन्तानेव पातुभूतानि । वुत्तं हेतं **भगवता**—"सन्ति भिक्खवे महासमुद्दे योजनसतिका पि अत्तभावा ति" [चुल्ल० ३५५] आदि ।

वित्थतो ति योजनानं तीणि सहस्सानि आयामतो वित्थारतो चा ति अत्थो । आयामतो[1] वित्थारतो च तीणि योजनसहस्सानीति वुत्तं होति, चतुरासीति-सहस्सेहि कूटेहि पटिमण्डितो ति सुदस्सनकूटचित्रकूटादीहि चतुरासीति-कूटसहस्सेहि मण्डितो[2] सोभितो ति अत्थो ।

तिपञ्चयोजनक्खन्धपरिक्खेपा ति पन्नरसयोजनप्पमाणक्खन्धपरिक्खेपा[3] । खन्धस्स परिणाहो पन्नरसयोजनप्पमाणो ति वुत्तं होति । तिपञ्चयोजनप्पमाणो खन्धस्स परिक्खेपो यस्सा ति[4] तिपञ्चयोजनक्खन्धपरिक्खेपा । न गच्छतीति नगा, जम्बु, नगा इति अव्हातब्बा ति नगव्हया । नगव्हया ति पदं जम्बू ति पदस्स विसेसनं । पञ्ञासयोजनक्खन्धसाखायामा[5] उब्बेधतो पञ्ञासयोजनप्पमाणक्खन्धसाखा, समन्ततो च (१५८-म०) पञ्ञासयोजनसाखायामा[6], ततो एव सतयोजनवित्थिण्णा तावदेव च उग्गता, जम्बुरुक्खस्स हि मूलतो पट्ठाय याव साखाविटपो ताव पञ्ञासयोजनानि । ततो परम्पि उजुक-उग्गतसाखापण्णासयोजना[7], समन्ततो च एकेका साखा पण्णास योजनानि वड्ढितानि । एवं[8] साखायामा[8] । खन्धो च साखायामो[9] च खन्धसाखायामा । पञ्ञासयोजनप्पमाणक्खन्धसाखायामा यस्सा सा पञ्ञासयोजनक्खन्धसाखायामा । यस्सानुभावेना ति यस्सा जम्बुया महन्तता कप्पट्ठायितादिप्पकारेन पभावेन ।

तदेव····प०····पारिच्छत्तकस्स पमाणं सिरीसेन भवति सत्तमं ति एत्थ सिरीसेना ति पच्चत्ते करणवचनं । सत्तमं ति लिङ्गविपल्लासेन वुत्तं । सिरीसो भवति सत्तमो ति अत्थो । चक्कवाळसिलुच्चयो ति चक्कवाळपब्बतो । परिक्खिपित्वान तं सब्बं लोकधातुमयं ठितो ति

---

१. ०च–सी० । २. पटिमण्डितो–सी० । ३. पण्णरसयोजनप्पमाणा खन्ध०–सी० । ४. यस्सा सा–सी० । ५. ०यामा ति सी० । ६. ०यामा च–सी० । ७. उजुकं उग्गत०–सी० । ८-८. साखा एव आयामा साखायामा–सी० । ९. साखायामा–सी० ।

(ii) 'महाभूतसामञ्ञतो' ति एतानि हि यथा मायाकारो अमणिं येव उदकं मणिं कत्वा दस्सेति, असुवण्णं येव लेड्डुं सुवण्णं कत्वा दस्सेति, यथा च सयं नेव यक्खो न पक्खी समानो यक्खभावं पि पक्खीभावं पि दस्सेति, एवमेव सयं अनीलानेव हुत्वा नीलं उपादारूपं दस्सेन्ति, अपीतानि····अलोहितानि····अनोदातानेव हुत्वा ओदातं उपादारूपं दस्सेन्ती ति मायाकारमहाभूतसामञ्ञतो महाभूतानि। यथा च यक्खादीनि महाभूतानि यं परिगण्हन्ति नेव तेसं तस्स अन्तो न बहिट्ठानं उपलब्भति, न च तं निस्साय न तिट्ठन्ति, एवमेव एतानि पि नेव अञ्ञमञ्ञस्स अन्तो न बहिट्ठितानि हुत्वा उपलब्भन्ति, न च अञ्ञमञ्ञं निस्साय न तिट्ठन्ती ति। अचिन्तेय्यट्ठानताय यक्खादिमहाभूतसामञ्ञतो पि महाभूतानि। यथा च यक्खिनीसङ्खातानि महाभूतानि मनापेहि वण्णसण्ठानविक्खेपेहि अत्तनो भयानकभावं पटिच्छादेत्वा सत्ते वञ्चेन्ति, एवमेव एतानि पि इत्थिपुरिससरीरादीसु मनापेन छविवण्णेन, मनापेन अंगपच्चंग-सण्ठानेन, मनापेन च हत्थपाद-अंगुलिभमुकविक्खेपेन अत्तनो कक्खळतादिभेदं सरस-लक्खणं पटिच्छादेत्वा बालजनं वञ्चेन्ति, अत्तनो सभावं दट्ठुं न देन्ती ति। इति वञ्चनकत्तेन यक्खिनीमहाभूतसामञ्ञतो पि महाभूतानि।

(iii) 'महापरिहारतो' ति महन्तेहि पच्चयेहि परिहरितब्बतो। एतानि हि दिवसे दिवसे उपनेतब्बत्ता महन्तेहि घासच्छादनादीहि भूतानि पवत्तानी ति महा-भूतानि। महापरिहारानि वा भूतानी ति पि महाभूतानि।

(iv) 'महाविकारतो' ति भूतानं महाविकारतो। एतानि हि उपादिन्नानि

हेट्ठा वुत्तं सब्बं तं परिक्खिपित्वान चक्कवाळसिलुच्चयो पतिट्ठितो अयं एको[1] लोकधातु येवा ति वेदितब्बं[1]।

मायाकार····प०····सामञ्ञतो मायाकारो च महाभूता च मायाकारमहाभूता। तेहि सामञ्ञं मायाकार····प०····सामञ्ञं। यं ति यं वत्थुं सत्तं वा। तेसं ति यक्खादिमहाभूतानं ठानं। तस्स वत्थुस्स सत्तस्स वा अन्तो नेव उपलब्भति। एतानि पी ति महाभूतानि अचिन्तेय्य-ट्ठानं[2] येसं तानि अचिन्तेय्यट्ठानानि। तेसं भावो अचिन्तेय्यट्ठानता। या ति पदं सामञ्ञतो ति पदे ततियाविसेसनं। वण्णसण्ठानविक्खेपेहीति वण्णसण्ठानानं चालनेहि। सरसलक्खणं ति अत्तनो सभावसङ्खातं लक्खणं।

परिहरितब्बा ति परिहारा। महन्तेहि पच्चयेहि परिहारा महापरिहारा। परिहरि-तब्बतो ति रक्खितब्बतो। उपनेतब्बत्ता ति परिवत्तेतब्बत्ता। भूतानीति पदस्स अत्थं विवरन्तो आह पवत्तानीति। महापरिहारानीति महन्तेहि परिहरितब्बानि।

महन्तो विकारो येसं तानि महाविकारानि। तत्था ति उपादिन्नुपादिन्नेसु[3]।

१-१. लोकधातु नामा ति अत्थो। मकारो पदसन्धिवसेन (१८८–सी०) आगतो। तं सब्बं लोकधातुं परिक्खिपित्वान अयं चक्कवाळसिलुच्चयो ठितो ति एवं पि अयं वदन्ति एवं वुत्ते पि चक्कवाळपब्बतो पि लोकधातु येवा ति वेदितब्बं–सी०। २. अचिन्तेय्यं ठानं–सी०। ३. उपादिण्णानुपादिण्णेसु–सी०।

पि अनुपादिन्नानि पि महाविकारानि होन्ति। तत्थ अनुपादिन्नानं कप्पवुट्ठाने विकारमहत्तं पाकटं होति, उपादिन्नानं धातुक्खोभकाले। तथा हि

भूमितो वुट्ठिता याव ब्रह्मलोका विधावति।
अच्चि अच्चमतो लोके डय्हमानम्हि तेजसा ॥
कोटिसतसहस्सेकं चक्कवाळं विलीयति।
कुपितेन यदा लोको सलिलेन विनस्सति ॥
कोटिसतसहस्सेकं चक्कवाळं विकीरति।
वायोधातुप्पकोपेन यदा लोको विनस्सति ॥
पत्थद्धो भवति कायो दट्ठो कट्ठमुखेन वा।
पठवीधातुप्पकोपेन होति कट्ठमुखे व सो ॥
पूतिको भवति कायो दट्ठो पूतिमुखेन वा।
आपोधातुप्पकोपेन होति पूतिमुखे व सो ॥
सन्तत्तो भवति कायो दट्ठो अग्गिमुखेन वा।
तेजोधातुप्पकोपेन होति अग्गिमुखे व सो ॥
संछिन्नो भवति कायो दट्ठो सत्थमुखेन वा।
वायोधातुप्पकोपेन होति सत्थमुखे व सो ॥

इति महाविकारानि भूतानी ति महाभूतानि।

कप्प-उट्ठाने[1] कप्पविनासकाले विकारमहत्तता विकारस्स महन्तत्तं उप्पादिन्नानं धातुक्खोभकाले विकारमहत्तं पाकटं होती ति योजना।

लोके तेजस्स[2] अग्गिना दय्हमानम्हि अच्चिमतो अग्गिस्स अच्चिजालाभूमितो वुट्ठिता[3] महाब्रह्मलोका धावति। अच्चिया[4] पूजियतीति अच्चिजाला। 'अच्च'–पूजायं। इ इति (७ ण्वु०) मोग्गल्लानसुत्तेन इ। अच्चि अस्स अत्थी ति अच्चिमा।

यदा लोको कुपितेन (१५९-म०) विनासकेन सलिलेन विनस्सति, तदा कोटिसतसहस्सं एकं चक्कवाळं खारोदकेन विलीयति।

यदा लोको वायोधातुप्पकोपेन कप्पविनासकवायोधातुया विनस्सति, तदा वायोधातु कोटिसतसहस्सं चक्कवाळं[5] विकिरति विद्धंसति।

यथा कट्ठमुखेन सप्पेन दट्ठो कायो पत्थद्धो भवति, एवं पथवीधातुप्पकोपेन सो कायो कट्ठमुखेव कट्ठमुखगतो इव पत्थद्धो होति। अथवा कट्ठमुखेन दट्ठो[6] पि कायो[6] पथवीधातुप्पकोपेनेव पत्थद्धो भवति, तस्मा पथवीधातुया अवियुत्तो सो कायो सब्बदा कट्ठमुखेव कट्ठमुखगतो (१८९–सी०) इव पत्थद्धो[7] होति। अथवा कट्ठमुखेन दट्ठो कायो पत्थद्धो भवति वा मन्ता-

---

१. ०ति–सी०। २. तेजसा–सी०। ३. ०याव–सी०। ४. अच्चियति–सी०। ५. एकं चक्क०–सी०। ६-६. विकारो या–म०। ७. नत्थि–सी०।

(v) 'महन्त-भूतत्ता चा' ति एतानि हि महन्तानि महता वायामेन परिग्गहेतब्बत्ता, भूतानि विज्जमानत्ता ति, महन्त-भूतत्ता च महाभूतानि। एवं महन्तपातुभावादीहि कारणेहि महाभूतानि।

चतुन्नं च महाभूतानं उपादाय रूपं [ध० १४७] ति उपयोगत्थे सामिवचनं। चत्तारि महाभूतानि उपादाय, निस्साय, अमुञ्चित्वा पवत्तं रूपं ति अत्थो। **इदं वुच्चति सब्बं रूपं** [ध० १४७] ति **इदं** चत्तारि महाभूतानि, पदपटिपाटिया निद्दिट्ठानि तेवीसति उपादा-रूपानी ति, सत्तवीसतिप्पभेदं सब्बं रूपं नाम।

इदानि तं वित्थारतो दस्सेतुं एकविधादीहि एकादसहि संगहेहि मातिकं ठपेन्तो **सब्बं रूपं न-हेतू** [ध० १४७] ति आदिमाह। तत्थ 'सब्बं रूपं'ति इदं पदं 'सब्बं रूपं न-हेतु, 'सब्बं रूपं अहेतुकं'ति एवं सब्बपदेहि सद्धिं योजेतब्बं। सब्बानेव चेतानि 'न-हेतू'ति आदीनि तेचत्ताळीस पदानि उद्दिट्ठानि। तेसु पटिपाटिया चत्ताळीसपदानि मातिकतो गहेत्वा ठपितानि, अवसाने तीणि मातिकामुत्तकानी ति। एवं ताव पठमे संगहे पालिववत्थानमेव वेदितब्बं।

तथा दुतियसंगहादीसु। तत्रायं नयो—दुतियसंगहे ताव सतं चत्तारो च दुका। तत्थ **अत्थि रूपं उपादा, अत्थि रूपं नो उपादा** [ध० १४८] ति आदयो आदिम्हि चुद्दस दुका अञ्ञमञ्ञसम्बन्धाभावतो पकिण्णकदुका नाम। ततो **अत्थि रूपं चक्खुसम्फस्सस्स वत्थू** [ध० १४८] ति आदयो पञ्चवीसति दुका वत्थु-अवत्थु-उपपरिक्खणवसेन पवत्तत्ता वत्थुदुका नाम। ततो **अत्थि रूपं चक्खुसम्फस्सस्स आरम्मणं** ति आदयो पञ्चवीसति दुका आरम्मणानारम्मण-उपपरिक्खणवसेन पवत्तत्ता आरम्मण-

---

गदवसेन न भवति वा। पथवीधातुप्पकोपेन मन्तागदरहितो सो कायो कट्ठमुखेव मुखगतो[1] इव एकन्तपत्थद्धो होति।

पूतियो ति आदिगाथासु पि एसेव नयो। कट्ठं विय मुखं यस्स सप्पस्स सो कट्ठमुखो। पूतिभूतं विय मुखं यस्स सो पूतिमुखो। अग्गि इव मुखं यस्स सो अग्गिमुखो। सत्थं इव मुखं यस्स सो सत्थमुखो।

एतानि हीति हि सच्चं। एतानि रूपानि महता वायामेन परिग्गहेतब्बत्ता महन्तानि विज्जमानत्ता भूतानि इति एवं महन्त····प०····महाभूतानी' ति योजना। एवं ति आदि निगमनं।

तं ति रूपं। तत्था ति सब्बं रूपं ति आदिपदेसु। सब्बं रूपं ति पदं योजेतब्बं ति पदे कम्मं। तेसू ति तेचत्तालीसपदेसु। तीणीति उप्पन्नं छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यं अनिच्चं जराभिभूतं ति तीणि।

तथा ति तेन पकारेन। दुतियसङ्गहादीसु पाळिववत्थानं वेदितब्बं। तत्रायं ति आदि

---

१. कट्ठमुख०–सी०।

दुका नाम। ततो **अत्थि रूपं चक्खायतनं** ति आदयो दस आयतनानायतन-उपपरिक्खणवसेन पवत्तत्ता आयतनदुका नाम। ततो **अत्थि रूपं चक्खुधातू** ति आदयो दस धातु-अधातु-उपपरिक्खणवसेन पवत्तत्ता धातुदुका नाम। ततो **अत्थि रूपं चक्खुन्द्रियं** ति आदयो अट्ठ इन्द्रियानिन्द्रिय-उपपरिक्खणवसेन पवत्तत्ता इन्द्रियदुका नाम। ततो **अत्थि रूपं कायविञ्ञत्ती** ति आदयो द्वादस सुखुमासुखुमरूप-उपपरिक्खणवसेन पवत्तत्ता सुखुमरूपदुका नामा ति। इदं दुतियसंगहे पालिववत्थानं।

ततियसंगहे सतं तीणि च तिकानि। तत्थ दुतियसंगहे वुत्तेसु चुद्दससु पकिण्णकदुकेसु एकं अज्झत्तिकदुकं सेसेहि तेरसहि योजेत्वा **यं तं रूपं अज्झत्तिकं तं उपादा; यं तं रूपं बाहिरं तं अत्थि उपादा, अत्थि नो-उपादा** [ध० १५१] ति आदिना नयेन ठपिता तेरस पकिण्णकतिका नाम। ततो तमेव दुकं सेसदुकेहि सद्धिं योजेत्वा **यं तं रूपं बाहिरं तं चक्खुसम्फस्सस्स न-वत्थु, यं तं रूपं अज्झत्तिकं तं अत्थि चक्खुसम्फस्सस्स वत्थु, अत्थि चक्खुसम्फस्सस्स न-वत्थू** ति आदिना नयेन सेसत्तिका ठपिता। तेसं नामं च गणना च तेसं येव वत्थुदुकादीनं वसेन वेदितब्बा ति। इदं ततियसंगहे पालिववत्थानं।

चतुत्थसंगहे द्वावीसति चतुक्का। तत्थ सब्बपच्छिमो **अत्थि रूपं उपादा अत्थि रूपं नो-उपादा** [ध० १५५] ति एवं इध वुत्तमातिकं अनामसित्वा ठपितो। इतरे पन आमसित्वा। कथं? ये ताव दुविधसंगहे पकिण्णकेसु आदितो तयो दुका, तेसु एकेकं गहेत्वा **यं तं रूपं उपादा तं अत्थि उपादिन्नं, अत्थि अनुपादिन्नं** ति आदिना नयेन पञ्चहि पञ्चहि दुकेहि सद्धिं योजेत्वा दुकत्तयमूलका आदिम्हि पञ्चदसचतुक्का ठपिता। इदानि यो'यं चतुत्थो सनिदस्सनदुको सो **यं तं रूपं सनिदस्सनं तं अत्थि सप्पटिघं, अत्थि अप्पटिघं** ति आदिना नयेन परेहि वा, **अत्थि उपादा अत्थि नो-उपादा**

वित्थारो। तत्रा ति[1] दुतियसङ्गहादीसु। आदिम्हि वुत्ता चुद्दस दुका पकिण्णकदुका नाम। ततो ति ततो परं। वत्थु....प०....रिक्खणवसेना ति वत्थूनं विचारणपटिबद्धेन।

एत्था ति तेसु तिकेसु। पकिण्णकदुकेसू ति निद्धारणे भुम्मं। दुकं ति पदं[2] योजेत्वा ति पदे कम्मं। सेसेहि तेरसहि दुकेहि योजेत्वा ति पदं थपिता ति पदे पुब्बकालक्रिया। तेरस तिका[3]। तदेव दुकं ति अज्झत्तिकदुकं। तेसं ति तिकानं।

तत्था ति द्वावीसतिचतुक्केसु। सब्बपच्छिमो चतुक्को। एवं ति वदन्ति वुत्तं इति पदे आकारो। इधा ति रूपकण्डे। अनामसित्वा ति अग्गहेत्वा। इतरे पन चतुक्का इध वुत्तमातिकं आमसित्वा, थपिता, दुविधसङ्गहे ति आदि पदत्तयं। ये[4] दुका ति पदे आधारो। तेसू ति तीसु दुकेसु। [१६०–म०] इदानि यो यं....प०....दुको वेदितब्बो ति योजना। सो ति सनिदस्सनदुको। न गच्छतीति पदे कत्ता। यस्मा न गच्छति[5] तस्मा अनामसित्वा थपिता ति

---

१. तत्था ति–सी०। २. दुक्कं–सी० सब्बत्थ। ३. तिक्का–सी० सब्बत्थ। ४. तयो–सी०। ५. गच्छतीति–सी०।

ति आदिना नयेन पुरिमेहि वा, दुकेहि सद्धिं अत्थाभावतो कमाभावतो विसेसाभावतो च योगं न गच्छति।

सनिदस्सनं हि 'अप्पटिघं' नाम, 'नोपादा' वा नत्थी ति अत्थाभावतो योगं न गच्छति। 'उपादिन्नं पन अनुपादिन्नं च अत्थी ति तं कमाभावतो योगं न गच्छति। सब्बदुका हि पच्छिम-पच्छिमेहेव सद्धिं योजिता। अयमेत्थ कमो। पुरिमेहि पन सद्धिं कमाभावो ति। 'सति अत्थे कमाभावो अकारणं। तस्मा उपादिन्नपदादीहि सद्धिं योजेतब्बो' ति चे—न, विसेसाभावा; उपादिन्नपदादीनि हि इमिना सद्धिं योजितानि। तत्थ 'उपादिन्नं वा सनिदस्सनं, सनिदस्सनं वा उपादिन्नं' ति वुत्ते विसेसो नत्थी ति विसेसाभावा पि योगं न गच्छति। तस्मा तं चतुत्थदुकं अनामसित्वा, ततो परेहि **अत्थि रूपं सप्पटिघं** [ध० १४८] ति आदीहि तीहि दुकेहि सद्धिं **यं तं रूपं सप्पटिघं तं अत्थि इन्द्रियं, अत्थि न-इन्द्रियं, यं तं रूपं अप्पटिघं तं अत्थि इन्द्रियं, अत्थि न-इन्द्रियं** ति आदिना नयेन युज्जमाने द्वे द्वे दुके योजेत्वा छ चतुक्का ठपिता।

यथा चायं चतुत्थदुको योगं न गच्छति, तथा तेन सद्धिं आदिदुको पि। कस्मा? अनुपादारूपस्स एकन्तेन अनिदस्सनत्ता। सो हि **यं तं रूपं नो-उपादा तं अत्थि सनिदस्सनं, अत्थि अनिदस्सनं**—एवं चतुत्थेन दुकेन सद्धिं योजियमानो योगं न

योजना, परेहि वा ति सनिदस्सनदुकतो परभूतेहि वा सद्धिं योगं न गच्छतीति योजना। नयेना ति पदं योगं ति पदे क्रियाविसेसनं[1]।

यं तं रूपं सनिदस्सनं तं अत्थि नो उपादा ति योजेतब्बं। अत्थाभावतो ति अयं हेतु (१९०–सी०) परेहि वा पुरिमेहि वा दुकेहि सद्धिं अयोजने हेतु। कमा....प०....भावतो चा ति इदं[2] हेतुद्वयं पुरिमेहि द्वीहि उपादिन्नकादीहि अयोजने[3] हेतु[3]। निदस्सनं[4] ही ति आदि वित्थारो। एत्था ति दुकयोजनाधिकारे। पुरिमेहि दुकेहि सद्धिं ति कमाभावो ति पदे क्रियाविसेसनं। इतिसद्दो समानो, सति अत्थे ति उपादिन्नानुपादिन्नसङ्खाते अत्थे सति। कमाभावो[5]। इमिना ति सनिदस्सनदुकेन। तत्था ति उपादिन्नकपदादीनं[6] सनिदस्सनदुकेन वा[7] उपादिन्नकपदादीहि सद्धिं योजनेन अकारणं अयुत्तं। योजेतब्बो सनिदस्सनदुको इति चोदको चे वदेय्य, न योजेतब्बो, विसेसाभावा। इमिना ति सनिदस्सनदुकेन। तत्था ति उपादिन्नकपदादीनि[8]। सनिदस्सनदुकेन सद्धिं योजनायं उपादिन्नं वा....प०....इति वचने वुत्ते विसेसो नत्थि, इति एवं विसेसा....प०....न गच्छति[9] सनिदस्सनदुको। तत्था ति वुत्ते ति पदे आधारो। ततो ति चतुत्थदुकतो, तीहि दुकेहि सद्धिं योजेत्वा ति सम्बन्धो।

तेना ति चतुत्थदुकेन। सो हीति आदि वित्थारो। हि सच्चं आदिदुको। तं ति चतुत्थदुकं। यो[10] दुको[10]। येन दुकेन।

---

१. ततियाविसेसनं–सी०। २. पदं–सी०। ३-३. योजनहेतु–सी०। ४. सनिदस्सनं–सी०। ५. कमाभावा–म०। ६. ०पदादीसु–सी०। ७. कमाभावो–सी०। ८. ०पदादीसु–सी०। ९. नच्छेति–म०। १०-१०. ये दुक्का–सी०।

गच्छति। तस्मा तं अतिक्कमित्वा पञ्चमेन सह योजितो। एवं यो येन सद्धिं योगं गच्छति, यो च न गच्छति सो वेदितब्बो ति। इदं चतुत्थसंगहे पालिववत्थानं।

इतो परे पन पञ्चविधसंगहादयो सत्त संगहा असम्मिस्सा एव।

एवं सकलाय पि मातिकाय पालिववत्थानं वेदितब्बं।

इदानि तस्सा अत्थं भाजेत्वा दस्सेतुं **सब्बं रूपं न-हेतुमेवा** [ध० १५९] ति आदि आरद्धं। कस्मा पनेत्थ 'कतमं तं सब्बं रूपं न-हेतू' [ध० १४७] ति पुच्छा न कता ति ? भेदाभावतो। यथा हि दुकादीसु 'उपादारूपं' पि अत्थि 'नो-उपादारूपं पि [ध० १४८], एवमिध 'न-हेतु पि सहेतु पी' ति भेदो नत्थि, तस्मा पुच्छं अकत्वा व विभत्तं। तत्थ 'सब्बं'ति सकलं, निरवसेसं। 'रूपं'ति अयमस्स सीतादीहि रुप्पन-भावदीपनो सामञ्ञलक्खणनिद्देसो। **न हेतुमेवा** [ध० १५९] ति साधारणहेतुपटिक्खेप-निद्देसो।

तत्थ हेतु-हेतु पच्चय-हेतु उत्तम-हेतु साधारण-हेतू ति चतुब्बिधो हेतु। तेसु 'तयो कुसलहेतू, तयो अकुसलहेतू, तयो अब्याकतहेतू [ध० २३९] ति अयं 'हेतुहेतु' नाम। "चत्तारो खो भिक्खवे महाभूता हेतू, चत्तारो महाभूता पच्चया रूपक्खन्धस्स पञ्ञापनाया" [सं० २-३ : ३२४] ति अयं 'पच्चयहेतु' नाम। "कुसलाकुसलं अत्तनो विपाकट्ठाने, उत्तमं इट्ठारम्मणं कुसलविपाकट्ठाने, उत्तमं अनिट्ठारम्मणं अकुसलविपा-कट्ठाने" [ ] ति अयं 'उत्तमहेतु' नाम। यथाह—'अतीतानागतपच्चुप्पन्नानं कम्मसमादानानं ठानसो हेतुसो विपाकं यथाभूतं पजानाती' [सं० ४ : २६० अं० ३.१२२] ति, "एसेव हेतु एस पच्चयो सङ्खारानं यदिदं अविज्जा" [ ] ति

इतो ति चतुत्थसङ्गहतो।

तस्सा ति मातिकाय। एत्था ति सब्बरूपं ति[1] आदिवचने। इतीति इति पुच्छा भेदाभावतो पुच्छं[2] न कत्वा[2]। इधा ति सब्बं रूपं ति आदिवचने। तत्था ति सब्बं रूपं ति आदिपदेसु। अस्सा ति रूपस्स। पटिक्खिपनं पटिक्खेपो। हेतुनो पटिक्खेपो हेतुपटिक्खेपो। हेतु-पटिक्खेपं निद्दिसति पकासेतीति हेतुपटिक्खेपनिद्देसो। न हेतुमेवा ति सद्दो सब्बरूपवाचकभावेन सब्बरूपानं साधारणो च सो हेतुपटिक्खेपनिद्देसो चा ति तथा। अथवा आधारियते अवधारि-यते[3] आधारणं, अवधारणं ति अत्थो। आपुब्ब'धा'-धारणे। भावे यु। सह आधारणेन वत्त-तीति[4] साधारणो। साधारणो न हेतुमेवा ति सद्दो ति अत्थो। साधारणो च सो हेतुपटिक्खेप-निद्देसो चा ति तथा। साधारणं (१६१-म०) हेतुपटिक्खेपनिद्देसो ति पि पाठो सीहळक्खरे दिस्सति। अयं सुविञ्ञेय्यत्ता सुन्दरो।

हेतु नाम सामञ्ञतो चतुधा ति दस्सेन्तो आह—तत्था ति आदि। तत्था ति हेतू ति वचने। हेतु च सो हेतु चा ति हेतुहेतु। मूलभूतहेतू ति अत्थो। पच्चयो एव पच्चयहेतु।

---

१. सब्बं रूपं०–सी०। २-२. पुच्छा न कता–सी०। ३. नत्थि–सी०।
४. पवत्ततीति–सी०।

अविज्जा सङ्खारानं पि साधारणहेतु हुत्वा पच्चयट्ठं फरती ति 'साधारणहेतु' नाम। यथा हि पठवीरसो आपोरसो च मधुरस्सा पि अमधुरस्सा पि पच्चयो, एवं अविज्जा कुसलसङ्खारानं पि अकुसलसङ्खारानं पि साधारणपच्चयो होति। इमस्मि पन'त्थे 'हेतुहेतु' अधिप्पेतो।

इति 'हेतू धम्मा न-हेतू धम्मा' ति मातिकाय [मा० २३] आगतं हेतुभावं रूपस्स नियमेत्वा पटिक्खिपन्तो 'न-हेतुमेवा' ति आह। इमिना नयेन सब्बपदेसु पि पटिक्खेपनिद्देसो च अप्पटिक्खेपनिद्देसो च वेदितब्बो। वचनत्थो पन सब्बपदानं मातिकावण्णनाय वुत्तो येव। **सप्पच्चयमेवा** [ध० १५९] ति एत्थ पन कम्मसमुट्ठानं कम्मपच्चयमेव होति, आहारसमुट्ठानादीनि आहारादिपच्चयानेवा ति एवं रूपस्सेव वुत्तचतुपच्चयवसेन अत्थो वेदितब्बो। **रूपमेवा** ति 'रूपिनो धम्मा अरूपिनो धम्मा' ति मातिकाय [मा० ३३] वुत्तं अरूपिभावं पटिक्खिपति। **उप्पन्नं छहि विञ्ञाणेही**

(१९१–सी०) उत्तमो पधानो हेतु उत्तमहेतु। सङ्खारानं साधारणो च सो हेतु चा ति साधारण हेतु। हेतु-आदीनं सरूपं ञापेन्तो आह—तेसू ति आदि। तेसू ति चतुब्बिधेसु हेतूसु। रूपक्खन्धस्स पञ्ञापनाय पकारेन जाननत्थाय पच्चयो। विपाकट्ठाने ति विपाकस्स पवत्तओकासो। उत्तमं पधानं कम्मं समानानं ति सत्तेहि कतमेव[1] कम्मानं[1]। हेतुसो ति पदं ठानसो ति पदस्स विवरणं। एसे वा ति एसा अविज्जा। यदिदं ति या अयं। पच्चयट्ठं[2] ति पच्चयभावं। वुत्तमत्थं उपमाय पाकटं करोन्तो आह–यथाही ति आदि। चतुब्बिधेसु हेतुसु कतमो हेतु इधाधिप्पेतो ति आह—इमस्मि पनत्थे ति[3]। इमस्मि नहेतू ति ठाने। हेतुहेतु अधिप्पेतो।

कस्मा, मातिकायं न हेतुधम्मा ति आगतस्स सहेतुपटिक्खेपस्स[4] अधिप्पेतत्ता। साधारणहेतु ....प०....पटिक्खेपवसेन[5] वुत्तं। इमस्मिं[6] रूपकण्डे मातिकाय नहेतुपदसङ्गहितत्ता च रूपस्स अवधारितत्ता च वुत्ता तस्मा हेतु अधिप्पेतो। तेन वुत्तं अट्ठकथायं हेतू धम्मा न हेतूधम्मा ति आगतस्स हेतूधम्मा ति मातिकाय आगतं ति। उपरि टीकायञ्च पटिक्खेपनिद्देसो ति इदं मातिकाय आगतपटिक्खेपवसेन वुत्तं। इध पन मातिकाय न हेतुपदादिसङ्गहितत्ता च रूपस्स वुत्ता। तं तं सभावता[7] अवधारितता च अनञ्ञसभावतो ति वुत्तं। कस्मा पन इतरहेतुत्तयं नाधिप्पेतं ति, इतरत्तयस्स अननुपविसनतो[8]। इतरहेतुत्तयं हि न हेतुधम्मा ति एत्थ हेतू ति पदे सभावेन न पविसति। हेतुपटिक्खेपनिद्देसो ति च मातिकाय आगतहेतु–पटिक्खेपवसेनेव वुत्तं। तस्मा इतरहेतुत्तयं, नाधिप्पेतं। केचि पन हेतु-हेतु-अधिप्पेतो ति साधारणहेतुस्स तदन्तोगधत्ता....प०....रूपादि-आरम्मणं पन उत्तमहेतुपरियापन्नं ति वदन्ति। तत्थ हेतु-हेतु-अधिप्पेतो ति साधारणहेतुस्स तदन्तोगधत्ता वुत्तं ति इदं वचनं विरुज्झति। यं पन इतरहेतुद्वयस्स लब्भमानत्ता वुत्तं ति दट्ठब्बं। रूपधम्मेसु हि पच्चयहेतु च उत्तमहेतु [१६२-म०] च

१-१. कतकम्मानं–सी०। २. पच्चयं ति–म०। ३. पनेत्था ति–सी०। ४. हेतुहेतुपटिक्खेपस्स–सी०। ५. ०पटिक्खेपनिद्देसो ति इदं हि मातिकाय आगतपटिक्खेप०–सी०। ६. ०पन–सी०। ७. सभावत्ता–सी० ८. अनुपविसनतो–सी०।

ति पच्चुप्पन्नं रूपमेव चक्खुविञ्ञाणादीहि छहि वेदितब्बं। नियमो पन चक्खुविञ्ञाणादीनि सन्धाय गहितो। न हि तानि अतीतानागतं विजानन्ति। मनोविञ्ञाणं पन अतीतं पि अनागतं पि विजानाति। तं इमस्मिं पञ्चविञ्ञाणसोते पतित्वा सोतपतितमेव हुत्वा गतं।

हुत्वा अभावट्ठेन पन **अनिच्चमेव**। जराय अभिभवितब्बधम्मकत्ता **जराभिभूतमेव**। यस्मा वा रूपकाये जरा पाकटा होति, तस्मा पि 'जराभिभूतमेवा' ति वुत्तं। **एवं एकविधेन रूपसंगहो** ति एत्थ 'विधा'-सद्दो मान-सण्ठानकोट्ठासेसु दिस्सति। "सेय्योहमस्मी ति विधा, सदिसोहमस्मी ति विधा" [विभ० ४३८] ति आदीसु मानो विधा नाम। "कथंविधं सीलवन्तं वदन्ति, कथंविधं पञ्ञवन्तं वदन्ती" [सं० १.५०] ति आदीसु सण्ठानं। 'कथं-विधं' ति हि पदस्स कथं-सण्ठितं ति अत्थो। "एकविधेन ञाणवत्थुं दुविधेन ञाणवत्थुं" [विभ० ३६६, ३६७] ति आदीसु कोट्ठासो विधा नाम। इधा पि कोट्ठासो व अधिप्पेतो।

'संगह'-सद्दो पि सजाति-सञ्जाति-किरिया-गणनाय वसेन चतुब्बिधो। तत्थ "सब्बे खत्तिया आगच्छन्तु, सब्बे ब्राह्मणा, सब्बे वेस्सा, सब्बे सुद्दा आगच्छन्तु" [ ],

---

लब्भन्ति। महाभूता ति पच्चयहेतु नाम, रूपादि-आरम्मणं पन उत्तमहेतु परियापन्नं ति वुत्तं, तं युत्तं विय दिस्सति, तथा पि तं इध टीकावचनेन विरुज्झति न इति तस्मा हेतुभावं ति हेतुहेतु (१९२–सी०) नाम। रूपस्सा ति पदं पटिक्खिपन्तो ति पदे सम्पदानं। नहेतुमेवा ति एत्थ नकारो पटिक्खेपत्थो, एवसद्दो अवधारणत्थो, अयमत्थो ति अत्थो। तेन वुत्तं नियमत्ता ति टीकायञ्च विभागाभावावधारणेन एवसद्देना ति वुत्तं। केचि पन एवसद्दो अक्खेपो[1] न नियमो ति वदन्ति, तं न युत्तं। कस्मा नकारस्स पटिक्खेपत्थवाचकत्ता।[2] सप्पच्चयमेवा ति एत्थ वचनं वेदितब्बो ति आधारो। रूपस्सेवा ति पदं चतुपच्चय इति वचने सम्बन्धो। अतीतम्पि पच्चुप्पन्नं नाम। तेसु इध पचचुप्पन्नरूपमेव अधिप्पेतं ति ञापेतुं पच्चुप्पन्नरूपमेवा ति[3] वुत्तं। न हीति आदि दळ्हीकरणं। तानीति चक्खुविञ्ञाणादीनि। कस्मा पन मनोविञ्ञाणं सन्धाय नियमो न गहितो ति आह–मनोविञ्ञाणं ति आदि। यदि मनोविञ्ञाणं अतीतानागतम्पि विजानाति। कस्मा मनोविञ्ञाणं पच्चुप्पन्नं विजानातीति वुत्तं ति आह–तं ति आदि। तं ति मनोविञ्ञाणं। सोतपतितमेव नाम हुत्वा गतं पवत्तं।

जराया ति पदं अभिभवितब्बं ति पदे कत्ता। अभिभवितब्बो धम्मो सभावो यस्स तं अभिभवितब्बधम्मकं। तस्स भावो अभिभवितब्बधम्मकत्तं। सेय्योहमस्मि इति आकारेन पवत्तो विधा[4] मानो। सण्ठानं विधा[5] नामा ति योजना। इधापीति एकविधो ति पदे।

तत्था ति सजाति-आदीसु। एका जाति येसं ते एकजातिका। हि-सद्दो दळ्हीजोतको। इधा ति इमस्मिं सब्बे पि खत्तिया ति आदिके ठाने। जातिट्ठाननिवुट्ठोकासेना ति[6] जातिट्ठान-

---

१. पटिक्खेपो–सी०। २. पटिक्खेपवाचकत्ता–सी०। ३. पच्चुप्पन्नं रूप०–सी०। ४. नत्थि–सी०। ५. विधामानो–सी०। ६. सजाति०–सी०।

"या चावुसो **वि**साख, सम्मावाचा, यो च सम्माकम्मन्तो, यो च सम्मा-आजीवो—इमे धम्मा सीलक्खन्धे सङ्गहिता" [म० १.३७१] ति अयं 'सजाति-सङ्गहो' नाम। 'एकजातिका आगच्छन्तू'ति वुत्तट्ठाने विय हि इध सब्बे जातिया एकसङ्गहं गता। "सब्बे **कोस**लका आगच्छन्तु, सब्बे **माग**धिका, सब्बे **भा**रुकच्छका आगच्छन्तु [ ]", "यो चावुसो **वि**साख, सम्मावायामो, या च सम्मासति, यो च सम्मासमाधि—इमे धम्मा समाधिक्खन्धे सङ्गहिता" [म० १.३७१] ति अयं 'सञ्जातिसङ्गहो' नाम। एकट्ठाने जाता सम्बद्धा सब्बदा आगच्छन्तू ति वुत्तट्ठाने विय हि इध सब्बे सञ्जा-तिट्ठानेन वुत्थोकासेन एकसङ्गहं गता। "सब्बे हत्थारोहा आगच्छन्तु, सब्बे अस्सारोहा, सब्बे रथिका आगच्छन्तु", [ ] "या चावुसो **वि**साख, सम्मादिट्ठि, यो च सम्मा-सङ्कप्पो—इमे धम्मा पञ्ञाखन्धे सङ्गहिता" [म० १.३७१] ति अयं 'किरियासङ्गहो' नाम। सब्बे व हेते अत्तनो किरियाकरणेन एकसङ्गहं गता। "चक्खायतनं कतमं खन्धगणनं गच्छति ? चक्खायतनं रूपक्खन्धगणनं गच्छति। हञ्चि चक्खायतनं रूपक्खन्धगणनं गच्छति, तेन वत रे वत्तब्बे—चक्खायतनं रूपक्खन्धेन सङ्गहितं" [कथा० २९८] ति, अयं 'गणनसङ्गहो' नाम। अयमिध अधिप्पेतो। एक-कोट्ठासेन रूपगणना ति अयं हेत्थ अत्थो। एस नयो सब्बत्थ।

इदानि दुविधसङ्गहादीसु 'अत्थि रूपं उपादा, अत्थि रूपं नो-उपादा' [ध० १४८] ति एवं भेदसब्भावतो पुच्छापुब्बंगमं पदभाजनं दस्सेन्तो **कतमं तं रूपं उपादा** [ध०-१६०] ति आदिमाह। तत्थ उपादियती ति 'उपादा'; महाभूतानि गहेत्वा, अमुञ्चि-त्वा, तानि निस्साय पवत्तती ति अत्थो। इदानि तं पभेदतो दस्सेन्तो **चक्खायतनं** [ध० १६०] ति आदिमाह। एवं तेवीसतिविधं उपादारूपं संखेपतो उद्दिसित्वा पुन तदेव वित्थारतो निद्दिसन्तो **कतमं तं रूपं चक्खायतनं** [ध० १६०-१६१] ति आदिमाह। तत्थ दुविधं चक्खु—मंसचक्खु पञ्ञाचक्खु च।

एतेसु '**बुद्ध**चक्खु समन्तचक्खु ञाणचक्खु दिब्बचक्खु धम्मचक्खू' ति पञ्चविधं

सङ्खातेन निवुट्ठोकासेन क्रियाकरणेन। खन्धगणनं ति खन्धभावसङ्खातगणनं। हञ्चि यदि गच्छति[1]। इधा ति रूपसङ्गहेना ति पदे। एत्था ति एकविधेना ति आदिवचने। सब्बत्था ति दुविधेन रूपसङ्गहो ति आदिपदेसु।

दुविध····प०····कति आधारो। एवं ति पदं भेद इति पदे सरूपं। भेदसब्भावतो ति पदं दस्सेन्तो ति पदे हेतु। भेदस्स सब्भावतो विज्जमानतो। पुब्बे गमा पवत्ता पुच्छा एतस्स पदभाजनस्सा ति पुच्छापुब्बङ्गमं। तत्था ति उपादा ति वचने[2] विनिच्छयो वेदितब्बो। एतं ति उपादारूपं। तदेवा ति उपादारूपं। तत्था ति चक्खायतनं (१९३—सी०) ति आदिवचने विनिच्छयो।

द्वीसू ति[3] दुविधेसु चक्खुसु। अप्परजक्खादीनं[4] सत्तसमूहं[4]। चक्खदस्सनं[5] चक्खु[5]।

---

१. न गच्छति—सी०। २. आदिवचने—सी०। ३. तेसू ति—सी०। ४-४. अप्प-रजक्खादिसत्तसमूहस्स—सी०। ५-५. चक्खणं दस्सनं चक्खु—सी०।

पञ्ञाचक्खु । तत्थ "अद्दसं खो'हं भिक्खवे, बुद्धचक्खुना लोकं वोलोकेन्तो सत्ते अप्परजक्खे····प०····दुविञ्ञापये' [म० १.२१८-२१९] ति इदं बुद्धचक्खु नाम । "समन्तचक्खु वुच्चति सब्बञ्ञुतञ्ञाणं" [महा० नि० ३०६] ति इदं समन्तचक्खु नाम । "चक्खुं उदपादि ञाणं उदपादी" [दी० २.२७] ति इदं ञाणचक्खु नाम । "अद्दसं खो अहं भिक्खवे, दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेना" [म० १.२२०] ति इदं दिब्बचक्खु नाम। "तस्मिं येवासने विरजं वीतमलं धम्मचक्खुं उदपादी" [दी० १.९५] ति इदं हेट्ठिममग्गत्तयसङ्खातं ञाणं धम्मचक्खु नाम ।

मंसचक्खु पि ससम्भारचक्खु पसादचक्खू ति दुविधं होति । तत्थ य्वायं अक्खिकूपके पतिट्ठितो हेट्ठा अक्खिकूपकट्ठिकेन, उपरि भमुकट्ठिकेन, उभतो अक्खिकूपेहि, अन्तो मत्थलुंगेन, बहिद्धा अक्खिलोमेहि परिच्छिन्नो मंसपिण्डो । संखेपतो 'चतस्सो धातुयो, वण्णो गन्धो रसो ओजा, सम्भवो सण्ठानं, जीवितं भावो कायप्पसादो चक्खुप्पसादो' ति चुद्दस सम्भारा । वित्थारतो 'चतस्सो धातुयो, तन्निस्सितवण्ण-गन्ध-रस-ओजा-सण्ठान-सम्भवा छ' इति इमानि दस चतुसमुट्ठानिकत्ता चत्ताळीसं होन्ति । जीवितं भावो कायप्पसादो चक्खुप्पसादो ति चत्तारि एकन्तं कम्मसमुट्ठानानेवा ति इमेसं चतुचत्ताळीसाय रूपानं वसेन चतुचत्ताळीस सम्भारा । यं लोको सेतं चक्खुं पुथुलं विसटं वित्थिण्णं 'चक्खुं' ति संजानन्तो न चक्खुं सञ्जानाति, वत्थुं चक्खुतो सञ्जानाति, सो मंसपिण्डो अक्खिकूपे पतिट्ठितो, नहारुसुत्तकेन मत्थलुंगेन आवुद्धो, यत्थ सेतं पि अत्थि, कण्हं पि लोहितकं पि, पठवी पि आपो पि तेजो पि वायो पि, यं सेम्हुस्सदत्ता सेतं, पित्तुस्सदत्ता कण्हं, रुधिरुस्सदत्ता लोहितकं, पठवुस्स-

---

[१६३–म०] 'चक्ख'-दस्सने । **भरमरादि** (२०वु०) **मोग्गलानसुत्तेन** उ । बुद्धस्स चक्खु बुद्धचक्खु । समन्ततो सङ्खतासङ्खतस्स चक्खनं दस्सनं, समन्तचक्खु । ञाणं एव चक्खु ञाणचक्खु । दिब्बानं देवानं विया ति[1] दिब्बं । दिब्बञ्च तं चक्खु चा ति दिब्बचक्खु । चतुसच्चधम्मस्स चक्खनं दस्सनं धम्मचक्खु ।

सम्भरियति एतेहि अवयवेहीति सम्भारा । उपत्थम्भकभूता चतुसमुट्ठानिकरूपसन्ततियो । सह सम्भारेही ति ससम्भारं । तत्था ति मंसचक्खूसु । य्वायं परिच्छिन्नो चुद्दससम्भारो चतुचत्तालीससम्भारो मंसपिण्डो ति सम्बन्धो । हेट्ठा अक्खिकूपकट्ठिकेना ति हेट्ठा अक्खिकूपकस्स अट्ठिन····प०····परिच्छिन्नो ति पदे ततियाविसेसनं । भमुकट्ठिकेना ति आदिपदं परिच्छिन्नो ति पदे ततियाविसेसनं । सङ्खेपतो हि चुद्दस····प०····रो ति पदे ततियाविसेसनं । भावो ति इत्थिया इत्थिभावो पुरिसस्स पुम्भावो ति लब्भमानभावो । चुद्दससम्भारा एतस्स मंसपिण्डस्सा ति चुद्दससम्भारो । वित्थारतो ति चतु····प०····रो ति ततियाविसेसनं । इती ति चतु····प०····चतुचत्तालीससम्भारो एतस्सा ति चतु····प०····रा[2] । यं ति यं मंसपिण्डं ।

---

१. सोतं विया ति–सी० । २. रो–सी० ।

दत्ता पत्थिण्णं होति, आपुस्सदत्ता पग्घरति, तेजुस्सदत्ता परिदय्हति, वायुस्सदत्ता सम्भमति, इदं ससम्भारचक्खु नाम।

यो पन एत्थ-सितो एत्थ-पटिबद्धो चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो, इदं पसादचक्खु नाम। तदेतं तस्स ससम्भारचक्खुनो सेतमण्डलपरिक्खित्तस्स कण्हमण्डलस्स मज्झे, अभिमुखे ठितानं सरीरसण्ठानुप्पत्तिदेसभूते दिट्ठिमण्डले, सत्तसु पिचुपटलेसु आसित्तं तेलं पिचुपटलानि विय, सत्त अक्खिपटलानि ब्यापेत्वा, धारण-न्हापन-मण्डन-बीजनकिच्चाहि चतूहि धातीहि खत्तियकुमारो विय, सन्धारणा-आबन्धन-परिपाचन-समुदीरणकिच्चाहि चतूहि धातूहि कतूपकारं, उतुचित्ताहारेहि उपत्थंभियमानं, आयुना अनुपालियमानं, वण्णगन्धरसादीहि परिवुतं, पमाणतो ऊकासिरमत्तं, चक्खुविञ्ञाणादीनं यथारहं वत्थुद्वारभावं साधयमानं तिट्ठति। वुत्तं पि चेतं धम्मसेनापतिना—

"येन चक्खुप्पसादेन रूपानि-मनु-पस्सति।
परित्तं सुखुमं एतं ऊकासिरसमूपमं" [विसु० ३७५] ति॥

सञ्जानन्तो ति पदे कम्मं। लोको ति बालपुथुज्जनलोको। न सञ्जानातीति पदे कत्ता। न्हारुसुत्तकेना ति नहारुसङ्खातरज्जुकेन अन्तो मत्थलुङ्गे आबद्धो पटिबद्धो। यत्था ति मंसपिण्डे। यं ति चक्खुं।

एत्था ति ससम्भारचक्खुम्हि। सितो ति निस्सितो। महाभूतानं ति पदं उपादाया ति पदे कम्मं। यदेतं ति[१] पसादचक्खुं। ब्यापेत्वा तिट्ठतीति योजना। सेतमण्डलपरिक्खित्तस्सा ति सेतमण्डलेन परिक्खित्तस्स। अभिमुखे ठितानं जनानं सरीरस्स सण्ठानं[२]। उप्पज्जति एत्था ति उप्पत्ति। उप्पत्ति एव देसो उप्पत्तिदेसो। सरीरसण्ठानस्स उप्पत्तिदेसो सरीर....प०.... देसो। सरीरसण्ठानुप्पत्तिदेसेन भूतं सरीर....प०....भूतं। पस्सतीति दिट्ठि[३]। चक्खुसञ्ञितस्स[४] दिट्ठिस्स[५] मण्डलं दिट्ठिमण्डलं,[६] अञ्ञत्थ दिट्ठमण्डले हि पि[७] अत्थि। [१९४–सी०] चक्खुसञ्ञिताय दिट्ठिया मण्डले ति अत्थो। पिचुपटलानि ब्यापेत्वा विय। धारणञ्च न्हापनञ्च मण्डनञ्च बीजनञ्च धारण....प०....बीजनानि। तानि किच्चानि यासं ता धारण....प०....किच्चा। चतूहि धातीहि कतूपकारो खत्तियकुमारो विय। सन्धारणञ्च आबन्धनञ्च परिपाचनञ्च[८] समुदीरणञ्च सन्धारण....प०....समुदीरणानि। तानि किच्चानि यासं ता सन्धारणा....प०.... किच्चा। कतोपकारो यस्स तं कतूपकारं। उतु च चित्तञ्च आहारो च उतुचित्ताहारो[९]। आयुना ति चतुनिस्सितेनेव[१०] (१६४-म०)जीवितिन्द्रियेन। ऊहियति विचिनियतीति ऊका[११]। 'ऊहवितक्के। ऊकादयो (१५ ण्वु०) ति मोग्गल्लानसुत्तेन को, निपातना हलोपो। ऊकासिरस्स

---

१. तदेतं ति–सी०। २. ०सरीरसण्ठानं–सी०। ३. दिट्ठं–सी०। ४. दिट्ठिसञ्ञितस्स–सी०। ५. दिट्ठस्स–सी०। ६. दिट्ठ०–सी०। ७. ०ति–सी०। ८. नत्थि–सी०। ९. ०हारा–सी०। १०. चतुधातु०–सी०। ११. ऊको–सी०।

चक्खुं च तं आयतनं चा ति **चक्खायतनं** [ध० १६०]। **यं चक्खुं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो** [ध० १६०] ति इधा पि उपयोगत्थे येव सामिवचनं; चत्तारि महाभूतानि उपादियित्वा पवत्तप्पसादो ति अत्थो। इमिना पसादचक्खुमेव गण्हाति, सेसचक्खुं पटिक्खिपति। यं पन इन्द्रियगोचरसुत्ते [ ] "एकं महाभूतं उपादाय पसादो पठवीधातुया तीहि महाभूतेहि सुसङ्गहितो आपोधातुया च तेजोधातुया च वायोधातुया च," **चतु**परिवत्तसुत्ते "द्विन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो पठवीधातुया च आपोधातुया च द्वीहि महाभूतेहि सुसंगहितो तेजोधातुया च वायोधातुया चा [ ]" ति वुत्तं, तं परियायेन वुत्तं। अयं हि **सुत्तन्तिककथा** नाम परियायदेसना। यो च चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो सो तेसु एकेकस्सा पि द्विन्नं पि पसादो येवा ति इमिना परियायेन तत्थ देसना आगता। **अभिधम्मो** पन निप्परि-

---

पमाणं विय मत्तं पमाणं यस्स तं ऊकासिरमत्तं। चक्खुविञ्ञाणादीनं ति चक्खुविञ्ञाणसम्पटिच्छनादीनं तदारम्मणावसानानं[1]। यथारहं ति चक्खुविञ्ञाणस्स निस्सयभावतो वत्थुभा; पवत्तिमुखभावतो द्वारभावञ्च साधयमानं सम्पटिच्छनादीनं तदारम्मणावसानानं अञ्ञनिस्सितत्ता द्वारभावमेव साधयमानं, न वत्थुभावं ति अधिप्पायो।

तस्स ससम्भारचक्खुनो ति कण्हमडलस्सा ति पदे सम्बन्धो। सेतमण्डलपरिक्खित्तस्सा ति पदं कण्हमण्डलस्सा ति पदस्स विसेसनं। दिट्ठमण्डलस्सा ति पदं मज्झे ति सम्बन्धो। मज्झे ति पदं दिट्ठमण्डले ति पदे आधारो। अभिमुखे ति पदं ठितानं ति पदे आधारो। ठितानं ति पदं सरीर इति पदे सम्बन्धो। सरीर....प०....भूते ति पदं दिट्ठमण्डले ति पदस्स विसेसनं। दिट्ठमण्डले ति पदं सत्त-अक्खिपटलानि तिट्ठन्तीति वा पदे आधारो। धातूहीति पदं कत इति पदे कत्ता। उतुचित्ताहारेहीति पदं उपत्थम्भियमानं ति पदे कत्ता। आयुना ति पदं अनुपालियमानं ति पदे कत्ता। वण्णगन्धरसादीहीति पदं परिवुतं ति पदे कत्ता।

अत्तनो वचनं परवचनेन साधेन्तो आह–वुत्तम्पि चेतं ति आदि।

सत्तो येन चक्खुपसादेन रूपानि अनुपस्सति। एतं ति चक्खु। ऊकासिरसमूपमं ति ऊकासिरसमूपमं। ऊकासिरसमूपमानं ति अत्थो। इदञ्चस्स पतिट्ठानोकासवसेन वुत्तं। न पन अत्तनो पमाणवसेन[2]। तं (१९५–सी०) हि परमाणुपरियन्तेन पमाणेन अतिसुखुममेव। ऊकासिरप्पमाणेन पन देसेन इदं पवत्ततीति। न केवलञ्च इममेव सब्बानि पि सब्बट्ठानिकरूपा तत्थ पवत्तन्तो[3]। इदञ्च तत्थ निब्बत्तं ति पदेसं पूरेत्वा निब्बत्तन्ति।

इमिना ति यं चक्खुं ति आदिवचनेन। सुत्तन्ते आगतदेसना पन अभिधम्मदेसनाय[4] कस्मा न समेतीति मनसिकत्वा आह–यं पना ति आदि। एकं[5]....प०....वायोधातुया च इति यं वचनं। इन्द्रियगोचरसुत्ते वुत्तं द्विन्नं....प०....धातुया च इति यं वचनं चतुपरिवत्तसुत्ते[6]

---

१. तदालम्बना०–सी०। २. ०वुत्तं। न पन अत्तनो पमाणवसेन–सी०। ३. पवत्तन्ते च–सी०। ४. अभिधम्मे देसनाय–सी०। ५. एकं–सी०। ६. चतुपरिवट्ट०–सी०।

यायदेसना नाम। तस्मा इध 'चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादो' ति वुत्तं। 'अयं मे अत्ता' ति बालजनेन परिग्गहितत्ता अत्तभावो वुच्चति सरीरं पि खन्धपञ्चकं पि। तस्मिं परियापन्नो तं-निस्सितो ति **अत्तभावपरियापन्नो** [ध० १६०] चक्खुविञ्ञाणेन पस्सितुं न सक्का ति **अनिदस्सनो**। पटिघट्टननिघंसो एत्थ जायती ति **सप्पटिघो**।

येना ति आदीसु अयं संखेपत्थो—येन कारणभूतेन चक्खुना अयं सत्तो इदं वुत्तप्पकारं रूपं अतीते **पस्सि वा**, वत्तमाने **पस्सति वा**, अनागते **पस्सिस्सति वा**, सचस्स अपरिभिन्नं चक्खुं भवेय्य, अथानेन आपाथगतं रूपं **पस्से** वा, अतीतं वा रूपं अतीतेन चक्खुना पस्सि, पच्चुप्पन्नं पच्चुप्पन्नेन पस्सति, अनागतं अनागतेन पस्सिस्सति, सचे तं रूपं चक्खुस्स आपाथं आगच्छेय्य चक्खुना तं रूपं पस्सेय्या ति इदमेत्थ परिकप्पवचनं। दस्सनपरिणायकट्ठेन **चक्खुं पेतं**, सञ्जातिसमोसरणट्ठेन **चक्खायतनं पेतं**, सुञ्ञतभावनिस्सत्तट्ठेन **चक्खुधातु** पेसा। दस्सनलक्खणे इन्दट्ठं कारेती ति **चक्खुन्द्रियं पेतं**। लुज्जनपलुज्जनट्ठेन **लोको पेसो**। वलञ्जनट्ठेन **द्वारा पेसा**। अपूरणीयट्ठेन **समुद्दो पेसो**। परिसुद्धट्ठेन **पण्डरं पेतं**। फस्सादीनं अभिज्झायनट्ठेन **खेत्तं पेतं**। तेसं येव पतिट्ठट्ठेन **वत्थुं पेतं**। समविसमं दस्सेन्तं अत्तभावं नेती ति **नेत्तं पेतं**। तेनेव अट्ठेन **नयनं पेतं**। सक्कायपरियापन्नट्ठेन **ओरिमं तीरं पेतं**। बहुसाधारणट्ठेन अस्सामिकट्ठेन च **सुञ्ञो गामो पेसो** ति।

एत्तावता 'पस्सि वा' ति आदीहि चतूहि पदेहि चक्खुं पेतं ति आदीनि चुद्दस नामानि योजेत्वा चक्खायतनस्स चत्तारो ववत्थापननया वुत्ता ति वेदितब्बा। कथं? एत्थ हि **येन चक्खुना अनिदस्सनेन सप्पटिघेन रूपं सनिदस्सनं सप्पटिघं पस्सि वा चक्खुं पेतं····प०····सुञ्ञो गामो पेसो, इदं तं रूपं चक्खायतनं** [ध० १६०] ति अयमेको नयो। एवं सेसा पि वेदितब्बा।

भगवता वुत्तं, तं वचनं परियायेन वुत्तं भगवता ति योजना। अयं हीति दळ्होकरणं[1]। परियायं ञापेन्तो आह—यो चा ति आदि। तेसू ति महाभूतेसु, तत्था ति इन्द्रियगोचरसुत्तादीसु। सुत्तन्तदेसना परियायदेसना नाम होतु, किम्भूतो ति पन अभिधम्मो ति[2] आदि[2]। तस्मिं ति [१६५-म०] अत्तभावे। सन्निस्सितो ति अत्तभावनिस्सितो। एत्था ति चक्खुम्हि।

स चस्सा ति सचे अस्स सत्तस्स। अनेना ति[3] तदा अनेन चक्खुना। अपरं नयं दस्सेतुं अतीतं वा रूपं ति आदि वुत्तं। पच्चुप्पन्नरूपं[4] पच्चुप्पन्नेन चक्खुना। एत्था ति पस्से वा ति पदे परिकप्पस्स[5] वचनं[5]। चक्खुपेतं ति[6] चक्खु पि एतं। सुञ्ञत[7]····प०····ट्ठेना ति सुञ्ञतसभावभूतस्स तट्ठेन[8]। दस्सनक्खणे ति इन्दट्ठं ति पदे आधारो। तेसं येवा ति फस्सादीनं। तेनेवत्थेना ति समविसमं[9] दस्सनट्ठेन[9]। सस्स अत्तनो कायो सक्कायो[10]।

एत्तावता वचनेन वुत्ता ति सम्बन्धो। एत्था ति चतूसु नयेसु, सेसा पि नया।

---

१. आदिदळ्ही०—सी०। २-२. धम्मो ति वा अभिधम्मो ति आदि—सी०। ३. अथनेना ति—सी०। ४. पच्चुपन्नं रूपं—सी०। ५-५. परिकप्पवचनं—सी०। ६. चक्खुं पेतं ति—सी०। ७. सुञ्ञतं—सी०। ८. ०भूतनिस्सत्तट्ठेन—सी०। ९-९. समविसमदस्सन०—सी०। १०. नत्थि—म०।

इदानि यस्मा विज्जुनिच्छरणादिकालेसु अनोलोकेतुकामस्सा पि रूपं चक्खुप्पसादं घट्टेति, तस्मा तं आकारं पकासेतुं दुतियो निद्देसवारो [ध० १६०] आरद्धो। तत्थ **यम्हि चक्खुम्ही** ति यम्हि अधिकरणभूते चक्खुम्हि। **रूपं** ति पच्चत्तवचनमेतं। तत्थ **पटिहञ्ञि वा** ति अतीतत्थो। **पटिहञ्ञति वा** ति पच्चुप्पन्नत्थो। **पटिहञ्ञिस्सती** ति वा ति अनागतत्थो। **पटिहञ्ञे वा** ति विकप्पनत्थो। अतीतं हि रूपं अतीते चक्खुस्मि पि पटिहञ्ञि नाम। पच्चुप्पन्नं पच्चुप्पन्ने पटिहञ्ञति नाम। अनागतं अनागते पटिहञ्ञिस्सति नाम। सचे तं रूपं चक्खुस्स आपाथमागच्छेय्य, चक्खुस्मि पटिहञ्ञेय्य तं रूपं ति अयमेत्थ विकप्पो। अत्थतो पन पसादं घट्टयमानमेव रूपं पटिहञ्ञति नाम। इधा पि पुरिमनयेनेव चत्तारो ववत्थापननया वेदितब्बा।

इदानि यस्मा अत्तनो इच्छाय ओलोकेतुकामस्स रूपे चक्खुं उपसंहरतो चक्खु रूपस्मि पटिहञ्ञति, तस्मा तं आकारं पकासेतुं ततियो निद्देसवारो [ध० १६१] आरद्धो। सो अत्थतो पाकटो येव। एत्थ पन चक्खु आरम्मणं सम्पटिच्छमानमेव रूपस्मि पटिहञ्ञति नाम। इधा पि पुरिमनयेनेव चत्तारो ववत्थापननया वेदितब्बा।

इतो परं फस्सपञ्चकानं उप्पत्तिदस्सनवसेन पञ्च, तेसं येव आरम्मणपटिबद्ध-उप्पत्तिदस्सनवसेन पञ्चा ति, दस वारा दस्सिता। तत्थ **चक्खुं निस्साया** [ध० १६१] ति चक्खुं निस्साय, पच्चयं कत्वा। **रूपं आरब्भा** ति रूपारम्मणं आगम्म, सन्धाय, पटिच्च। इमिना चक्खुप्पसादवत्थुकानं फस्सादीनं पुरेजातपच्चयेन चक्खुद्वार-जवन-वीथि-परियापन्नानं आरम्मणाधिपति-आरम्मणूपनिस्सयपच्चयेहि रूपस्स पच्चयभावो दस्सितो। इतरेसु पञ्चसु वारेसु रूपं आरम्मणमस्सा ति रूपारम्मणो ति एवं आरम्मणपच्चयमत्तेनेव पच्चयभावो दस्सितो। यथा पन पुरिमेसु तीसु, एवं इमेसु पि दससु वारेसु चत्तारो ववत्थापननया वेदितब्बा। एवं **कतमं तं रूपं चक्खायतनं** [ध० १६०]

अनोलोकेतुकामस्सा ति पि सत्तस्स। रूपं ति पदं घट्टेतीति पदे कत्ता। तत्था ति पटिहञ्ञीति आदिपदेसु। अतीतं हीति आदि वित्थारो। एत्था ति पटिहञ्ञति[1] वा पदे। इधा पी ति दुतियनिद्देसवारे।

रूपे चक्खुं उपसंहरतो अत्तनो... प०... कामस्स सत्तस्स चक्खू ति योजना। सो ति निद्देसवारो। एत्था ति ततियनिद्देसवारे पटिहञ्ञति नामा ति आधारो। इधा पी ति ततिय-निद्देसवारे।

इतो ति ततियनिद्देसवारतो। पञ्च वारा दस्सिता। तेसं येव फस्सपञ्चमकानं। तत्था ति पदेसु। इमिना ति रूपं आरब्भा ति वचनेन। चसद्दो पुरेजातपच्चयेन आरम्मण... प०... पच्चयेहीति[2] योजेतब्बो। (१९६–सी०) वारेसू ति पदं दस्सितो ति पदे आधारो। यथा पन पुरिमेसू ति तीसु वारेसु[3] चत्तारो नया[4] वेदितब्बा। एवं ति दस्सिता ति पदे आकारो।

---

१. पटिहञ्ञी–सी०। २. पच्चयेहि चा ति–सी०। ३. नत्थि–सी०। ४. नया व–सी०।

ति पुच्छाय उद्धतं चक्खुं 'इदं तं' ति नानप्पकारतो दस्सेतुं, पुरिमा तयो, इमे दसा ति, तेरस निद्देसवारा दस्सिता। एकेकस्मिं चेत्थ चतुन्नं चतुन्नं ववत्थापननयानं आगतत्ता द्विपञ्ञासनयेहि पटिमण्डेत्वा व दस्सिता ति वेदितब्बा।

इतो परेसु सोतायतनादिनिद्देसेसु [ध० १६१····] पि एसेव नयो। विसेसमत्तं पनेत्थ एवं वेदितब्बं—सुणाती ति **सोतं** [ध० १६१]। तं ससम्भारसोतबिलस्स अन्तो तनुतम्बलोमाचिते अंगुलिवेठकसण्ठाने पदेसे वुत्तप्पकाराहि धातूहि कतूपकारं, उतुचित्ताहारेहि उपत्थंभियमानं, आयुना अनुपालियमानं, वण्णादीहि परिवुतं सोतविञ्ञाणादीनं यथारहं वत्थुद्वारभावं साधयमानं तिट्ठति। घायती ति **घाणं** [ध० १६३····]। तं ससम्भारघाणबिलस्स अन्तो अजपदसण्ठाने पदेसे यथावुत्तप्पकार-उपकार-उपत्थंभन-अनुपालनपरिवारं घाणविञ्ञाणादीनं यथारहं वत्थुद्वारभावं साधयमानं तिट्ठति। सायनट्ठेन **जिव्हा** [ध० १६४····]। सा ससम्भारजिव्हामज्झस्स उपरि उप्पलदलग्गसण्ठाने पदेसे यथावुत्तप्पकार-उपकार-उपत्थंभन-अनुपालनपरिवारा जिव्हाविञ्ञाणादीनं यथारहं वत्थुद्वारभावं साधयमाना तिट्ठति। यावता पन इमस्मिं **काये** [ध० १६५····] उपादिन्नकरूपं नाम अत्थि, सब्बत्थ कायायतनं, कप्पासपटले सिनेहो विय, यथावुत्तप्पकार-उपकार-उपत्थंभन-अनुपालनपरिवारमेव हुत्वा कायविञ्ञाणादीनं यथारहं वत्थुद्वारभावं साधयमानं तिट्ठति। अयमेत्थ विसेसो।

सेसो पालिप्पभेदो च अत्थो च चक्खुनिद्देसे [ध० १६०-१६१] वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। केवलं हि इध चक्खुपदस्स ठाने सोतपदादीनि, रूपपदस्स ठाने सद्दपदादीनि, पस्सती ति आदीनं ठाने **सुणी** [ध० १६१] ति आदि-पदानि आगतानि। 'नेत्तं पेतं, नयनं पेतं' [ध० १६०] ति इमस्स च पदद्वयस्स अभावा द्वादस द्वादस नामानि होन्ति। सेसं सब्बत्थ वुत्तसदिसमेव।

तत्थ सिया—यावता इमस्मिं काये उपादिन्नकरूपं नाम अत्थि, सब्बत्थ

चक्खुं ति पदं दस्सेतुं ति पदे कम्मं। इदं तीति चक्खुं इदं इति। एत्था ति तेरससु निद्देसवारेसु। एकेकस्मिं निद्देसवारे, आगतत्ता ति पदे आधारो।

इतो ति चक्खुनिद्देसतो। एत्था ति सोतायतनादिनिद्देसेसु। तनुतम्बलोमाचिते ति सुखुमेहि तम्बवण्णलोमेहि सञ्चिते। अङ्गुलिवेधकसण्ठाने ति अङ्गुलिमुद्दिकासण्ठानमंसयुत्ते। वुत्तप्पकाराहि सन्धारणादिकिच्चाहि। घायतीति गन्धोपादानं करोति। उपकारो च उपत्थम्भनञ्च अनुपालनञ्च परिवारो च उपकारु····प०····परिवारा। यथावुप्पत्तप्पकारा····प०···· परिवारा यस्स तं यथा····प०····परिवारं। सायनट्ठेना ति रसं विन्दनट्ठेन। उप्पलदलग्गसण्ठाने ति मज्झे छिन्नस्स उप्पलदलस्स अग्गभावसण्ठाने। सब्बत्था ति सब्बस्मिं काये तिट्ठतीति पदे आधारो। एत्था ति सोतादिनिद्देसेसु।

सब्बत्था ति सब्बेसु पदेसु। सेसं वचनं।

तत्था ति कायायतनाधिकारे इति [१६६-म०] चोदना सिया। एवं ति कायायत-

कायायतनं, कप्पासपटले सिनेहो विय। 'यदि एवं सन्ते लक्खणसम्मिस्सता आपज्जती' ति ? 'न आपज्जती'ति। 'कस्मा ?' 'अञ्ञस्स अञ्ञत्थ अभावतो'। 'यदि एवं, न सब्बत्थ कायायतनं ति ?' 'नेव परमत्थतो सब्बत्थ। विनिब्भुजित्वा पन'स्स नानाकरणं पञ्ञापेतुं न सक्का, तस्मा एवं वुत्तं। यथा हि रूप-रसादयो, वालिका-चुण्णानि विय, विवेचेतुं असक्कुणेय्यताय अञ्ञमञ्ञब्यापिनो ति वुच्चन्ति, न च परमत्थतो रूपे रसो अत्थि। यदि सिया रूपग्गहणेनेव रसग्गहणं गच्छेय्य। एवं कायायतनं पि परमत्थतो नेव सब्बत्थ अत्थि, न च सब्बत्थ नत्थि, विवेचेतुं असक्कुणेय्यताया ति। एवमेत्थ न लक्खणसम्मिस्सता आपज्जती ति वेदितब्बा'।

अपि च लक्खणादिववत्थापनतो पेतेसं असम्मिस्सता वेदितब्बा—एतेसु हि रूपाभिघातारह-भूतप्पसादलक्खणं दट्ठुकामतानिदान-कम्मसमुट्ठान-भूतप्पसादलक्खणं वा चक्खु, रूपेसु आविञ्जनरसं, चक्खुविञ्ञाणस्स आधारभावपच्चुपट्ठानं, दट्ठुकामतानिदान-कम्मजभूतपदट्ठानं। सद्दादिघातारह-भूतप्पसादलक्खणं सोतुकामतानिदान-कम्मसमुट्ठान-भूतप्पसादलक्खणं वा सोतं, सद्देसु आविञ्जनरसं, सोतविञ्ञाणस्स आधारभावपच्चुपट्ठानं, सोतुकामतानिदान-कम्मजभूतपदट्ठानं। गन्धाभिघातारह-भूतप्पसादलक्खणं घायितुकामतानिदान-कम्मसमुट्ठान-भूतप्पसादलक्खणं वा घाणं,

---

नस्स। सब्बत्थ अत्थिभावे लक्खणेन सम्मिस्सानि लक्खणसम्मिस्सानि। लक्खणसम्मिस्सानं भावो लक्खणसम्मिस्सता। अञ्ञस्स रूपस्स अञ्ञत्थट्ठाने, अञ्ञस्मिं कलापे ति अत्थो। एवं वचनं यदि सिया, सब्बत्थ कायायतनं न होति इति चोदना नेव परमत्थतो सब्बत्थ कायायतनं होति। विनिब्भुजित्वा ति पदं पञ्ञापेतुं ति पदे पुब्बकालक्रिया[1]। पञ्ञापेतुं ति जानापेतुं। एवं ति सब्बत्थ कायायतनं ति वचनं। यथा हीति आदिना वुत्तमत्थं दळ्हं करोति। रूपरसादयो ति पदं वुच्चन्तीति पदे कम्मं। बालिकाय चुण्णानि बालिकाचुण्णानि। रूपे रसो यदि सिया। रूपग्गहणेव[2] गहणं रसो[3] गच्छेय्य, न चा ति सब्बत्थट्ठानेन च सब्बत्थ नत्थि। इति एवं एत्थ चक्खादीसु।

एतेसं चक्खादीनं। एतेसू चक्खादीसु निद्धारणं, हिसद्दो वित्थारजोतको। अभिहननं अभिघातो। रूपे, रूपस्स वा अभिघातो। रूपाभिघातं अरहती ति (१९७-सी०) रूपाभिघातारहो। भूतानं पसादो भूतप्पसादो। रूपाभिघातारहो च सो भूतप्पसादो चा ति रूपाभिघातारहभूतप्पसादो। रूपाभिघातो....प०....पसादो लक्खणं[4]। दट्ठुं कामेताति दट्ठुकामो, पुग्गलो। दट्ठुकामस्स भावो दट्ठुकामता, रूपतण्हा। दट्ठुकामता निदानं यस्स तं दट्ठुकामतानिदानं[5]। दट्ठुकामतानिदानं एव कम्मं दट्ठु....प०....कम्मं। दट्ठुकामतानिदानकम्मं समुट्ठानं एतेसं ति दट्ठुकामतानिदानकम्मसमुट्ठानानि। दट्ठुकाम....प०....समुट्ठानानि एव

---

१. ०यस्सा ति कायायतनस्स–सी०। २. रूपग्गहणे नेव–सी०। ३. रहो–सी०। ४. ०अस्सा ति रूपाभिघात....प०....पसादलक्खणं–सी०। ५. ०उपनिस्सयो यस्स तं दट्ठुकामतानिदानं–सी०।

गन्धेसु आविञ्जनरसं, घाणविञ्ञाणस्स आधारभावपच्चुपट्ठानं घायितुकामतानिदान-कम्मजभूतपदट्ठानं। रसाभिघातारह-भूतप्पसादलक्खणा सायितुकामतानिदान-कम्म-समुट्ठान-भूतप्पसादलक्खणा वा जिव्हा, रसेसु आविञ्जनरसा, जिव्हाविञ्ञाणस्स आधारभावपच्चुपट्ठाना, सायितुकामतानिदानकम्मजभूतपदट्ठाना। फोट्ठब्बाभिघा-तारह-भूतप्पसादलक्खणो फुसितुकामतानिदानकम्मसमुट्ठान-भूतप्पसादलक्खणो वा कायो, फोट्ठब्बेसु आविञ्जनरसो, कायविञ्ञाणस्स आधारभावपच्चुपट्ठानो, फुसितु-कामतानिदानकम्मजभूतपदट्ठानो।

केचि पन 'तेजाधिकानं भूतानं पसादो चक्खु, वायु-पठवी-आपाधिकानं भूतानं पसादा सोत-घाण-जिव्हा, कायो सब्बेसं' ति वदन्ति। अपरे 'तेजाधिकानं पसादो चक्खु, विवर-वायु-आप-पठवाधिकानं पसादा सोत-घाण-जिव्हा-काया' ति वदन्ति। ते वत्तब्बा—'सुत्तं आहरथा' ति। अद्धा सुत्तमेव न दक्खिस्सन्ति।

केचि पनेत्थ 'तेजादीनं गुणेहि रूपादीहि अनुग्गय्हभावतो' ति कारणं वदन्ति। ते वत्तब्बा—'को पनेवं आह—रूपादयो तेजादीनं गुणा ति? अविनिब्भोगेसु हि भूतेसु 'अयं इमस्स गुणो, अयं इमस्स गुणो' ति न लब्भा वत्तु'' ति।

भूतानि दट्ठुकाम....प०[1].... । भूतानं पसादो दट्ठुकामता....प०....पसादो। दट्ठुकामता....प० ....पसादो लक्खणं अस्सा ति दट्ठुकामता....प०....लक्खणं। दट्ठुकामतानिदान–कम्मसमुट्ठानो एव वा भूतपसादो दट्ठुकामता....प०....पसादो। दट्ठुकामता....प०....पसादो लक्खणं अस्सा ति दट्ठुकामता....प०....लक्खणं। दट्ठुकामतानिदानं[2] कम्मसमुट्ठानभूतपसादेन[2] हुत्वा लक्खियतीति वा दट्ठुकामता....प०....लक्खणं। आविञ्छनं आकड्ढनं रसो किच्चं[3] अस्सा ति आविञ्छनरसं। आधारभावेन[4] पच्चुपतिट्ठतीति आधारभावपच्चुपट्ठानं। चक्खु-विञ्ञाणुप्पत्तिसमये सम्भवन्तानि मन्दामन्दमज्झिमायुकानि एकूनपञ्ञासचक्खूनि इध वत्त-ब्बानि। अभिधम्मावतारटीकायं वुत्तनयेन वेदितब्बानि। दट्ठुकामतानिदानकम्मतो जायन्तीति दट्ठुकामता....प०....कम्मजा। ते एव भूता दट्ठुकामता....प०....भूता। दट्ठुकामता....प०.... पदट्ठानं। सद्दाभिघातादीसु पि एसेव नयो।

कायो [१६७-म०] सब्बेसं ति सब्बेसं भूतानं पसादो कायो इति वदन्ति अपरे पर-वादिनो। तेजाधिकानं तेजोधातु-अधिकानं भूतानं पसादो चक्खु। विवर....प०....धिकानं ति आकासाधिकानं भूतानं पसादो सोतं, वायु–अधिकानं घानं, आपाधिकानं जिव्हा....प०.... पथवी–अधिकानं कायो ति अत्थो। ते परवादिनो वत्तब्बा तुम्हे सुत्तं आहरथ इति।

तेजादीनं ति पदं गुणेहीति पदे सम्बन्धो। गुणेहीति रूपादीहीति विसेसनं[5]। रूपादीही ति पदं अनुगय्हभावतो ति[6] पदे ततियाकत्ता। अनुगय्हभावतो [१९८-सी०] ति चक्खादीनं सकिच्च-

---

१. ....प०....भूतानि–सी०। २-२. ०कामतानिदानकम्म०–सी०। ३. किच्चा–सी०। ४. आधारणभावेन–सी०। ५. पदस्स विसेसनं–सी०। ६. अनुगण्हभावतो ति–सी० सब्बत्थ।

अथा पि वदेय्युं—'यथा तेसु तेसु सम्भारेसु तस्स तस्स भूतस्स अधिकताय पठवी-आदीनं सन्धारणादीनि किच्चानि इच्छथ, एवं तेजादि-अधिकेसु सम्भारेसु रूपादीनं अधिकभावदस्सनतो इच्छितब्बमेवेतं रूपादयो तेसं गुणा' ति। ते वत्तब्बा–'इच्छेय्याम, यदि आपाधिकस्स आसवस्स गन्धतो पठवी-अधिके कप्पासे गन्धो अधिकतरो सिया, तेजाधिकस्स च उण्होदकस्स वण्णतो पि सीतूदकस्स वण्णो परिहायेथ। यस्मा पनेतं उभयं पि नत्थि, तस्मा पहायेतं एतेसं निस्सयभूतानं विसेसकप्पनं, यथा अविसेसे पि भूतानं रूपरसादयो अञ्ञमञ्ञं विसदिसा होन्ति, एवं चक्खुप्पसादादयो, अविज्जमाने पि अञ्ञस्मिं विसेसकारणे ति गहेतब्बमेतं। किं पन तं यं अञ्ञमञ्ञस्स असाधारणं ? कम्ममेव तेसं विसेसकारणं। तस्मा कम्मविसेसतो एतेसं विसेसो, न भूतविसेसतो। भूतविसेसे हि सति पसादो व न उप्पज्जति। समानानं हि पसादो, न विसमानं ति पोराणा'।

एवं कम्मविसेसतो विसेसवन्तेसु च एतेसु चक्खुसोतानि असम्पत्तविसयगाहकानि अत्तनो निस्सयं अनल्लीननिस्सये एव विसये विञ्ञाणहेतुत्ता। घाण-जिव्हा-

---

करणे उपकारतप्पभावतो[१] तेजाधिकानं पसादो चक्खू ति आदि योजेतब्बं। ते परवादिनो सकवादिना वत्तब्बा। को पन पुग्गलो रूपादयो ...प०... गुणा इति एवं आह। हिसद्दो दळ्हीकरणं। भूतेसू ति पदं न लब्भा ति पदे आधारो। निद्धारणं अयं[२] रूपधम्मो इमस्स भूतस्स।

तथा पी ति परवादिनो सकवादीनं यदि विभवेय्युं[३]। सम्भारेसू ति पदं भूतस्सा ति पदे आधारो। किच्चानि इच्छथ तुम्हे। सम्भारेसू ति पदं दस्सनतो पदे आधारो। रूपादयो तेसं भूतानं गुणा इति एतं वचनं तुम्हेहि सकवादीहि इच्छितब्बं। ते परवादिनो गुणा ति वचनं इच्छेय्याम यदि सिया परिहायेथा ति योजना। कप्पासे ति पदं गन्धो ति पदे आधारो। आपाधिकस्सा ति आदिकं उभयम्पि एतं वचनं। यस्मा पन नत्थि तस्मा पन एतेसं चक्खादीनं निस्सय...प०...नं एतं विसेसकप्पनं पहाय गहेतब्बं ति सम्बन्धो। पहाया ति पदं गहेतब्बं ति पदे पुब्बकालक्रिया। विसेसकप्पनं ति पदं पहाया ति पदे कम्मं। पहायेथेतं ति पि पाठो। सो न युत्तो। भूतानं अविसेसे[४] रूप...प०...सदिसा होन्ति यथा एवं भूततो अञ्ञस्मिं विसेसकारके अविज्जमाने पि चक्खुपसादादयो अञ्ञमञ्ञविसेसा होन्ति इति एतं वचनं गहेतब्बं तुम्हेहीति योजना। अञ्ञमञ्ञस्स असाधारणं। यं कारणं अत्थि, तं कारणं किं पना ति[५] योजना[५]। नेसं ति चक्खुपसादादीनं। एतेसं ति चक्खुपसादादीनं। न भूतविसेसतो एतेसं विसेसो होति। भूतविसेसे हीति आदि दळ्हीकरणं। किं कारणं ति आह–समानानं हीति आदि। हि सच्चं समानानं भूतानं पसादो, न विसमानं भूतानं पसादो इति पोराणा वदन्ति।

गोचरवसेन चक्खादीनं असम्मिस्सतं दस्सेतुं एवं ति आदि वुत्तं। धम्मविसेसतो ति[६] पदं

---

१. उपकारितब्बभावतो–सी०। २. वा अयं-सी०। ३. पि वदेय्युं-सी०। ४. अविसेसे पि–सी०। ५-५. पयोजनं–सी०। ६. कम्मविसेसतो ति–सी०।

काया सम्पत्तविसयगाहका, निस्सयवसेन चेव सयं च अत्तनो निस्सयं अल्लीने येव विसये विञ्ञाणहेतुत्ता।

अट्ठकथायं पन "आपाथगतत्ता व आरम्मणं सम्पत्तं नाम। चन्दमण्डलसुरियमण्डलानं हि द्वाचत्ताळीसयोजनसहस्समत्थके ठितानं वण्णो चक्खुपसादं घट्टेति। सो दूरे ठत्वा पञ्ञायमानो पि सम्पत्तो येव नाम। तं-गोचरत्ता चक्खुसम्पत्तगोचरमेव नाम। दूरे रुक्खं छिन्दन्तानं पि, रजकानं च वत्थं धोवन्तानं दूरतो व कायविकारो पञ्ञायति। सद्दो पन धातुपरम्पराय आगन्त्वा सोतं घट्टेत्वा सणिकं ववत्थानं गच्छती" [ ] ति वुत्तं। तत्थ किञ्चा पि आपाथगतत्ता आरम्मणं सम्पत्तं ति वुत्तं, चण्दमण्डलादिवण्णो पन चक्खुं असम्पत्तो दूरे ठितो व पञ्ञायति। सद्दो पि सचे सणिकं आगच्छेय्य, दूरे उप्पन्नो पि चिरेन सुय्येय्य, परम्परघट्टनाय आगन्त्वा सोतं घट्टेन्तो असुकदिसाय नामा ति न पञ्ञायेय्य। तस्मा असम्पत्तगोचरानेव तानि। अहि-आदि-समानानि पेतानि।

यथा हि अहि नाम बहि सित्तसम्मट्ठट्ठाने नाभिरमति, संकारट्ठाने तिणपण्णगहनवम्मिकानि येव पविसित्वा निपन्नकाले अभिरमति, एकग्गतं आपज्जति, एवमेव चक्खुं पेतं विसमज्झासयं मट्ठेसु सुवण्णभित्ति-आदीसु नाभिरमति, ओलोकेतुं पि न इच्छति, रूपचित्तपुप्फलताविचित्तेसु येव पन अभिरमति। तादिसेसु हि ठानेसु चक्खुम्हि अप्पहोन्ते मुखं पि विवरित्वा ओलोकेतुकामा होन्ति।

विसेसवन्तो ति[1] पदे ततिया [१६८-म०]-विसेसनं। चसद्दो वाक्यारम्भो। एतेसु चक्खादीसु। अत्तनो ति चक्खुसोतसङ्खातस्स अत्तनो। निस्सयं[2] निस्सयभूतं महाभूतं। निस्सयं ति पदं अल्लीन इति पदे कम्मं, विसये ति पदं विञ्ञाणहेतुत्ता ति पदे आधारो। विञ्ञाणहेतुत्ता ति (१९९-सी०) विञ्ञाणस्स उप्पत्तिहेतुभावतो। निस्सयवसेन चेव सयञ्चा पि पदद्वयं अल्लीने येवा ति पदद्वये[3] ततियाविसेसनं। निस्सयभूतवसेन[4] चेव फोट्ठब्बसङ्खातेन अत्तना चा ति अत्थो। अत्तनो ति घानजिव्हाकायसङ्खातस्स अत्तनो निस्सयं महाभूतं।

अट्ठकथायं ति पदं वुत्तं ति पदे आधारो। आपाथगतत्ता वा ति आरम्मणस्स चक्खुसोतानं आपाथगतभावतो एव। हिसद्दो दळ्हीकरणं। सो ति वण्णो। सीघायायि[5] नस्स नरं वासीसंयोगेन सम्पयुत्तो येव नाम[5]। सो गोचरो अस्सा ति तंगोचरं। तंगोचरस्स भावो तंगोचरत्तं। छिन्दन्तानम्पी ति पिसद्दो चसद्दसमानत्थो, तत्था ति अट्ठकथायं घट्टेन्तो सद्दो असुकदिसाय नाम सद्दो इति न पञ्ञायेय्य पाकटो न भवेय्य।

अज्झासयनिस्सयेहि चक्खादीनं असम्मिस्सतं दस्सेतुं अहीति आदि वुत्तं। एतानि हि चक्खुसोतानि। बहि सित्तमम्मट्ठाठाने[6] ति बहिट्ठान-उदकसिञ्चनट्ठानसम्मज्जनट्ठाने। चक्खु-

---

१. विसेसवन्तेसू ति-सी०। २. नत्थि-सी०। ३. पदे-सी०। ४. निस्सयभूतमहाभूतवसेन-सी०। ५-५. सीघट्ठिदस्सनन्तरं वासिसञ्ञो तेन सम्पत्तो येव नाम-सी०। ६. बहिसित्तसमज्जट्ठाने ति-सी०।

सुंसुमारो पि बहि निक्खन्तो गहेतब्बं न पस्सति, अक्खीनि निम्मीलेत्वा चरति। यदा पन ब्यामसतमत्तं उदकं ओगाहित्वा बिलं पविसित्वा निपन्नो होति, तदा'स्स चित्तं एकग्गं होति सुखं सुपति, एवमेव सोतं पेतं बिलमज्झासयं आकास-सन्निस्सितं कण्णच्छिद्दकूपके येव अज्झासयं करोति। कण्णच्छिद्दाकासो येव तस्स सद्दसवणे पच्चयो होति। अजटाकासो पि वट्टति येव। अन्तो लेणस्मिं हि सज्झाये कयिरमाने न लेणछदनं भिन्दित्वा सद्दो बहि निक्खमति, द्वारवातपानछिद्देहि पन निक्खमित्वा धातुपरम्परायेव घट्टेन्तो गन्त्वा सोतप्पसादं घट्टेति। अथ तस्मिं काले 'असुको नाम सज्झायती' ति लेणपिट्ठे निसिन्ना जानन्ति। एवं सन्ते सम्पत्तगोचरता होति।

'किं पनेतं सम्पत्तगोचरं ति? 'आम, सम्पत्तगोचरं' ति। 'यदि एवं, दूरे भेरी-आदीसु वज्जमानेसु दूरे सद्दो ति जाननं न भवेय्या' ति? 'नो न भवेय्य। सोतप्पसादस्मिं हि घट्टिते दूरे सद्दो आसन्ने सद्दो, परतीरे सद्दो ओरमतीरे सद्दो ति तथा तथा जाननाकारो होति। धम्मता एसा' ति। 'किं एताय धम्मताय? यतो यतो छिद्दं ततो ततो सवनं होति, चन्दिमसुरियादीनं दस्सनं विया ति असम्पत्त-गोचरमेवेतं'।

पक्खी पि रुक्खे वा भूमियं वा न रमति। यदा पन एकं वा द्वे वा लेड्डुपाते अतिक्कम्म अजटाकासं पक्खन्तो होति, तदा एकग्गचित्ततं आपज्जति, एवमेव घाणं

पेतं ति एतं चक्खु पि, नाभिरमतीति आदि क्रियापदेसु कत्ता। ओलोकेतुकामो जनो।

तदास्सा ति तदा अस्स संसुमारस्स[1]। तस्सा ति सोतस्स सोतविञ्ञाणनिस्सयभावेन[2] सद्दसवने पच्चयो होति। तस्सा ति[3] सद्दसवने ति पदे सम्बन्धो। अजटाकासो पि तस्स सोतस्स सद्दसवने पच्चयो वट्टति येव, न निक्खमती ति योजना। अथा ति घट्टनानन्तरं। एवं ति एवं यथावुत्तवचने सन्ते सोतस्स सम्पत्तगोचरत्ता[4]। सम्पत्तगोचरं नाम होतीति योजना।

किं पन एतं सोतं सम्पत्तगोचरं इति पुच्छा। आम, सोतं सम्पत्तगोचरं। यदि एवं ति एवं सोतं सम्पत्तगोचरं यदि सति दूरे ठाने। वज्जमानेसू ति जनेन पहारियमानेसु। न भवेय्य इति चोदना। दूरे सद्दो ति जाननं नो न भवति। हिसद्दो दळ्हीकरणं। घट्टिते ति सद्देन घट्टिते। होती ति पदे लक्खणक्रिया। इति एवं तथा तथा तेन तेन पकारेन। एसा ति जानना धम्मता पकति इति परिहारो। किं एताया ति आदि बुद्धघोसाचरियस्स अधिप्पायो, एताय धम्मताय किं पयोजनं। [१६९-म०] यतो यतो ठानतो छिद्दं होति। इतीति तस्मा। एतं सोतं अ....प०....रं एव।

वातूपनिस्सयो[5] एतस्स[6] गन्धस्स अत्थीति[6] वातूपनिस्सयो गन्धगोचरं। (२००-सी०)

---

१. सुंसुमारस्स–सी०। २. ०निस्सयभावो–सी०। ३. तस्सा ति पदं–सी०। ४. ०गोचरता–सी०। ५. ०गन्धगोचरो–सी०। ६-६. एतस्सा ति–सी०।

पि आकासज्झासयं वातूपनिस्सयगन्धगोचरं। तथा हि गावो नववुट्ठे देवे भूमिं घायित्वा आकासाभिमुखा हुत्वा वातं आकड्ढन्ति। अंगुलीहि गन्धपिण्डं गहेत्वा पि च उपसिंघनकाले वातं अनाकड्ढन्तो नेव तस्स गन्धं जानाति।

कुक्कुरो पि बहि विचरन्तो खेमट्ठानं न पस्सति लेड्डुप्पहारादीहि उपद्दुतो होति। अन्तोगामं पविसित्वा उद्धनट्ठाने छारिकं वियूहित्वा निपन्नस्स पन फासुकं होति, एवमेव, जिव्हा पि आपज्झासया आपोसन्निस्सितरसारम्मणा। तथा हि तियामरत्तिं समणधम्मं कत्वा पि पातो व पत्तचीवरमादाय गामं पविसितब्बं होति। सुक्खखादनीयस्स च न सक्का खेळेन असेदितस्स रसं जानितुं।

सिगालो पि बहि चरन्तो रतिं न विन्दति, आमकसुसाने मनुस्समंसं खादित्वा निपन्नस्सेव पन'स्स फासुकं होति, एवमेव कायो पि उपादिन्नकज्झासयो पठवीसन्निस्सितफोट्ठब्बारम्मणो। तथा हि अञ्ञं उपादिन्नकं अलभमाना सत्ता अत्तनो व हत्थतले सीसं कत्वा निपज्जन्ति। अज्झत्तिकबाहिरा च'स्स पठवी आरम्मणगहणे पच्चयो होति। सुसण्ठितस्सा पि सयनस्स, हत्थे ठितानं पि वा फलानं, न सक्का अनिसीदन्तेन वा अनिप्पीळेन्तेन वा थद्धमुदुभावो जानितुं ति। अज्झत्तिकबाहिरा पठवी एतस्स कायप्पसादस्स फोट्ठब्बजानने पच्चयो होति। एवं लक्खणादिववत्थानतो पेतेसं असम्मिस्सता वेदितब्बा। अञ्ञे येव हि चक्खुप्पसादस्स लक्खण-रस-पच्चुपट्ठान-पदट्ठान-गोचरज्झासय-निस्सया अञ्ञे सोतप्पसादादीनं ति असम्मिस्सानेव चक्खायतनादीनि।

अपि च नेसं असम्मिस्सताय अयं उपमा पि वेदितब्बा—यथा हि पञ्चवण्णानं धजानं उस्सापितानं किञ्चा पि छाया एकाबद्धा विय होति अञ्ञमञ्ञं पन अस-

---

अथवा ततो[1] एव घानविञ्ञाणस्स उपनिस्सयो वातूपनिस्सयो। वातूपनिस्सयो एतस्य गन्धस्स अत्थीति वातूपनिस्सयो। **सद्धादितो णा** (क० २-८-२७) **ति** णो। वातूपनिस्सयो गन्धो गोचरो पच्चयो एतस्स घानस्सा ति वातूपनिस्सयगन्धगोचरं, तथा हीति आदि दळ्हीकरणं। तस्सा ति गन्धपिण्डस्स।

ब्युहित्वा ति[2] ऊहित्वा विसुं करित्वा।

अस्सा ति सिङ्गालस्स[3]। अस्सा ति कायस्स। हिसद्दो दळ्हीकरणं। सयनस्स फलानं ति[4] पदद्वयं भावो ति पदे सम्बन्धो। वा सद्दो सयनस्स वा फलानं वा ति योजेतब्बो। अनिसीदन्तेन वा जनो[5] न न[5] सक्का ति पदे ततियाकत्ता। इतीति तस्मा। एतस्सा ति कायस्स। एवं ति आदि निगमनं। हिसद्दो दळ्हीकरणं।

निस्सयो ति रूपचित्तपुप्फलतादिचित्तट्ठानानि उपमावसेन चक्खादीनं असम्मिस्सतं

---

१. वातो–सी०। २. ब्यूहित्वा ति–सी०। ३. सिगालस्स–सी०। ४. फलकानं ति–सी० सब्बत्थ। ५-५. जनेन–सी०।

म्मिस्सा व, यथा च पञ्चवण्णेन कप्पासेन वट्टिं कत्वा दीपे जालिते किञ्चा पि जाला एकाबद्धा विय होति, तस्स तस्स पन अंसुनो पाटियेक्कं जाला अञ्ञमञ्ञं असम्मिस्सा व, एवमेव किञ्चा पि इमानि पञ्चायतनानि एकस्मिं अत्तभावे समोसटानि अञ्ञमञ्ञं पन असम्मिस्सानेव। न केवलं च इमानेव पञ्च, सेसरूपानि पि असम्मिसानेव। इमस्मिं हि सरीरे हेट्ठिमकायो मज्झिमकायो उपरिमकायो ति तयो कोट्ठासा। तत्थ नाभितो पट्ठाय हेट्ठा हेट्ठिमकायो नाम। तस्मिं कायदसकं, भावदसकं, आहारसमुट्ठानानि अट्ठ, उतुसमुट्ठानानि अट्ठ, चित्तसमुट्ठानानि अट्ठा ति चतुचत्ताळीस रूपानि। नाभितो उद्धं याव गलवाटका मज्झिमकायो नाम। तत्थ कायदसकं, भावदसकं, वत्थुदसकं, आहारसमुट्ठानादीनि तीणि अट्ठकानी ति चतुपञ्ञास रूपानि। गलवाटकतो उद्धं उपरिमकायो नाम। तत्थ चक्खुदसकं, सोतदसकं, घाणदसकं, जिव्हादसकं, कायदसकं, भावदसकं, आहारसमुट्ठानादीनि तीणि अट्ठकानी ति चतुरासीति रूपानि।

तत्थ चक्खुप्पसादस्स पच्चयानि चत्तारि महाभूतानि, वण्णो गन्धो रसो ओजा, जीवितिन्द्रियं चक्खुप्पसादो ति इदं एकन्ततो अविनिब्भुत्तानं दसन्नं निप्फन्नरूपानं वसेन चक्खुदसकं नाम। इमिना नयेन सेसानि पि वेदितब्बानि। तेसु हेट्ठिमकाये रूपं मज्झिमकाय-उपरिमकायरूपेहि सद्धिं असम्मिस्सं। सेसकायद्वये पि रूपं इतरेहि सद्धिं असम्मिस्समेव। यथा हि सायण्हसमये पब्बतच्छाया च रुक्खच्छाया च किञ्चा पि एकाबद्धा विय होन्ति अञ्ञमञ्ञं पन असम्मिस्सा व, एवं इमेसु कायेसु चतुचत्ताळीस चतुपञ्ञास चतुरासीति च रूपानि किञ्चा पि एकाबद्धानि विय होन्ति, अञ्ञमञ्ञं पन असम्मिस्सानेवा ति।

रूपायतननिद्देसे [ध० १६६] वण्णो व **वण्णनिभा;** निभाती ति वा निभा। चक्खुविञ्ञाणस्स पाकटा होती ति अत्थो। वण्णो व निभा वण्णनिभा। सद्धिं

दस्सेन्तो आह—अपि चा ति आदि। नेसं ति चक्खादीनं। यथा हीति आदि वित्थारो। जलिते ति पदं होती ति पदे लक्खणक्रिया। समोसरितानीति ओतरितानि, पवत्तानीति अत्थो। इमानेव पञ्च चक्खादि-आयतनानि असम्मिस्सानेव। इमस्मिं हीति आदि वित्थारो। तत्था ति तीसु कोट्ठासेसु। हेट्ठा पवत्तो कायो। तस्मिं ति हेट्ठिमकाये। अट्ठा ति पथवी-आदीनि रूपानि। तत्था ति मज्झिमकाये।

तत्था ति चक्खुदसकादीसु। इति इदं रूपं चक्खुदसकं नाम। सेसानि पि सोतदसकादीनि। तेसू ति हेट्ठिमकायादीसु पवत्तरूपेसु। इतरेहीति हेट्ठिमकाये पवत्तरूपेहि। उपमाय असम्मिस्सतं साधेन्तो आह—यथा हीति आदि।

रूपायतननिद्देसे विनिच्छयो वेदितब्बो। निसद्दो धात्वत्थं अनुवत्तती ति मनसिकत्वा आह भातीति[1]। निपुब्ब 'भा'-दित्तियं। निदस्सनेन पस्सितब्बभावेन सद्धिं वत्तति। पटिहननं

१. निभातीति–सी०।

निदस्सनेन **सनिदस्सनं**, चक्खुविञ्ञाणेन पस्सितब्बं ति अत्थो। सद्धिं पटिघेन **सप्पटिघं**, पटिघट्टननिघंसजनकं ति अत्थो। नीलादीसु उम्मारपुप्फसमानं **नीलं**, कण्णिकारपुप्फसमानं **पीतकं**, बन्धुजीवकपुप्फसमानं **लोहितकं**, ओसधितारकसमानं **ओदातं**। झामंगारसमानं **काळकं**, मन्दरत्तं सिन्धुवारकण्णवीरमकुलसमानं मञ्जेट्ठकं।

"हरित्तच सामवण्ण कामं सुमुख पक्कमा" ति

एत्थ पन किञ्चा पि 'हरी'ति सुवण्णं वुत्तं, परतो पन'स्स जातरूपगहणेन गहितत्ता इध सामं **हरि** नाम। इमानि सत्त वत्थुं अनामसित्वा सभावेनेव दस्सितानि। **हरिवण्णं** ति हरितसद्दलवण्णं। **अम्बंकुरवण्णं** ति अम्बंकुरेन समानवण्णं। इमानि द्वे वत्थुं आमसित्वा दस्सितानि।

दीघादीनि द्वादस वोहारतो दस्सितानि। सो च नेसं वोहारो उपनिधाय-सिद्धो चेव सन्निवेससिद्धो च। दीघादीनि हि अञ्ञमञ्ञं उपनिधाय सिद्धानि, वट्टादीनि सन्निवेसविसेसेन। तत्थ रस्सं उपनिधाय ततो उच्चतरं **दीघं**, तं उपनिधाय ततो नीचतरं **रस्सं**। थूलं उपनिधाय ततो खुद्दकतरं **अणुं**, तं उपनिधाय ततो महन्ततरं **थूलं**। चक्कसण्ठानं **वट्टं**, कुक्कुटण्डसण्ठानं **परिमण्डलं**। चतूहि अंसेहि युत्तं **चतुरस्सं**। **छळंसा**दीसु एसेव नयो। **निन्नं** ति ओनतं, **थलं** ति उन्नतं। तत्थ यस्मा दीघादीनि फुसित्वा पि सक्का जानितुं, नीलादीनि पनेव न सक्का, तस्मा न निप्परियायेन दीघं रूपायतनं; तथा रस्सादीनि। तं तं निस्साय पन तथा तथा ठितं दीघं रस्सं ति तेन तेन वोहारेन रूपायतनमेवेत्थ भासितं ति वेदितब्बं। **छाया आतपो** ति इदं अञ्ञमञ्ञपरिच्छिन्नं; तथा **आलोको अन्धकारो** च। **अब्भा-महिका** ति आदीनि चत्तारि वत्थुना व दस्सितानि। तत्थ 'अब्भा'ति वलाहको। 'महिका'ति हिमा। इमेहि चतूहि अब्भादीनं वण्णा दस्सिता।

पटिघट्टनं। पटिघट्टनं एव निघंसो पटि····प०····निघंसो। पटिघट्टननिघंसस्स[1] जनकं पटि····प०····जनकं। नीलादीसु विनिच्छयो वेदितब्बो। सिन्धुवार····प०····समानं ति सिन्धवारमकुळेन कणवीरमकुळेन च समानं। चूळहंसजातके विज्जमाने हरित्तच, हेमवण्ण, सुमुख, त्वं कामं यदिच्छकं पक्कम अपगच्छ इति एत्थ पन वचने हरि इति सुवण्णं भगवता किञ्चा पि वुत्तं ति सम्बन्धो। परतो ति जातरूपस्सा ति परतो। अस्सा ति सुवण्णस्स (२०१-सी०)। इधा ति रूपायतननिद्देसे। [१७०·म०] इमानि नीलादीनि।

नेसं ति दीघादीनं। सन्निवेसविसेसेन सिद्धानि। तत्था ति दीघादीसु। ततो रस्सतो। तं दीघं। ततो दीघतो। ततो ति थूलतो। तं अणुं। ततो अणुतो। तत्था ति दीघादीसु, निद्धारणं। निस्साया ति पदं ठितं ति पदे पुब्बकालक्रिया। ठितं ति पदं रूपायतनं ति पदस्स विसेसनं। वोहारेना ति पदं भासितं ति पदे ततियाविसेसनं। एत्था ति रूपायतननिद्देसे। तत्था ति अब्भा ति आदि[2] पदेसु, निद्धारणं। इमेहि चतूहि अब्भादिपदेहि।

---

१. पटिघटन०-सी०। २. नत्थि-सी०।

चन्दमण्डलस्स वण्णनिभा ति आदीहि तेसं तेसं पभा-वण्णा दस्सिता। तत्थ चन्दमण्डलादीनं वत्थूनं एवं विसेसो वेदितब्बो—मणिमयं रजतपटिच्छन्नं एकूनपण्णासयोजनायामवित्थारं चन्दस्स देवपुत्तस्स विमानं **चन्दमण्डलं** नाम। सोवण्णमयं फलिकपटिच्छन्नं समपञ्ञासयोजनायामवित्थारं सुरियस्स देवपुत्तस्स विमानं **सुरियमण्डलं** नाम। सत्तरतनमयानि सत्तट्ठ-दस-द्वादसयोजनायामवित्थारानि तेसं तेसं देवपुत्तानं विमानानि **तारकरूपानि** नाम। तत्थ हेट्ठा, चन्दो, सुरियो उपरि, उभिन्नं अन्तरं योजनं होति। चन्दस्स हेट्ठिमन्ततो सुरियस्स उपरिमन्तो योजनसतं होति। द्वीसु पस्सेसु नक्खत्ततारका गच्छन्ति। एतेसु पन तीसु चन्दो दन्धगमनो, सुरियो सीघगमनो, तारका सब्बसीघगमना। कालेन चन्दिमसुरियानं पुरतो होन्ति कालेन पच्छा। **आदासमण्डलं** ति कंसमयं। **मणी** ति ठपेत्वा वेळुरियं सेसो जोतिरसादि-अनेकप्पभेदो। **संखो** ति सामुद्दिको; **मुत्ता** सामुद्दिका पि सेसा पि। **वेळुरियो** ति वेळुवण्णमणि। **जातरूपं** वुच्चति सत्थुवण्णो। सत्था हि सुवण्णवण्णो, सुवण्णवण्णं पि सत्थुवण्णं। **रजतं** वुच्चति कहापणो—लोहमासको दारुमासको जतुमासको, ये 'वोहारं गच्छन्ती' ति वुत्तं तं सब्बं पि इध गहितं।

यं वा पनञ्ञं पी ति इमिना पालि-आगतं ठपेत्वा सेसं तट्टिकपिलोतिक-कण्णिक-वण्णादिभेदं रूपं गहितं। तं हि सब्बं ये-वा-पनकेसु पविट्ठं। एवमेतं नीलादिभेदेन भिन्नं पि रूपं सब्बं लक्खणादीहि अभिन्नमेव। सब्बं हेतं चक्खुपटिहननलक्खणं रूपं, चक्खुविञ्ञाणस्स विसयभावरसं, तस्सेव गोचरपच्चुपट्ठानं, चतुमहाभूतपदट्ठानं। यथा चेतं तथा सब्बानि पि उपादारूपानि। यत्थ पन विसेसो अत्थि तत्थ वक्खाम। सेसमेत्थ चक्खायतननिद्देसे [ध० १६०-१६१] वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। केवलं हि तत्थ

तेसं चन्दमण्डलादीनं। तत्था ति चन्दमण्डलादिवत्थूसु। तत्था ति चन्दादीसु। हेट्ठा चन्दो होति। उभिन्नं चन्दसूरियादीनं। एतेसू ति चन्दादीसु। दन्धं गमनं अस्सा ति दन्धगमनो। लोहेन कतो मासको लोहमासको। ये मासका वोहारं वोहरितब्बभावं गच्छन्ति इति वचनं वुत्तं लोह····प०····वुत्तं। सब्बम्पि तं वत्थुं। इधा ति रजतं ति पदे।

पाळि-आगतं ति पाळियं आगतं रूपं। तट्टिकञ्च पिलोतिकञ्च कणिकञ्च तट्टिकपिलोतिककण्णिकानि। तेसं वण्णो। सो आदि यस्स सो तट्टिक[1]····प०····वण्णादि। तट्टिक····प०····वण्णादि भेदं तट्टिक····प०····वण्णादिभेदं। तं हीति हि सच्चं, तं रूपं। एतं रूपं ति सम्बन्धो। सब्बं हेतं ति हि सच्चं, सब्बं एतं रूपं ति सम्बन्धो। चक्खुम्हि, चक्खुस्स वा पटिहननं, तं लक्खणमेतस्सा ति चक्खुपटिहननलक्खणं। पटिहननं नाम विसयविसयीनं[2] अञ्ञमञ्ञाभिमुखभावो योग्यदेसावट्ठानं। तस्सेवा ति चक्खुविञ्ञाणस्स। एतं ति रूपं। यत्था ति यस्मिं ठाने। तत्थ ठाने मयं विसेसं वक्खाम। एत्था ति रूपायतन-निद्देसे। यं[3] वचनं हि सच्चं केवलविसेसे[4]। तत्थ चक्खायतननिद्देसे। चक्खु पुब्बङ्गमं यस्स सो चक्खु-

---

१. तट्टिका-सी०। २. विसयीनं-सी०। ३. सेसं-सी०। ४. केवलं विसेसो-सी०।

चक्खुपुब्बंगमो निद्देसो इध पन रूपपुब्बंगमो। तत्थ 'चक्खुं पेतं' ति आदीनि चुद्दस नामानि, इधा पि 'रूपं पेतं' ति आदीनि तीणि। सेसं तादिसमेव। यथा हि चतूहि नयेहि मण्डेत्वा चक्खुं ववत्थापेतुं तेरस वारा वुत्ता, इधा पि ते तथेव वुत्ता ति।

सद्दायतननिद्देसे [ध० १६८-१७०] **भेरिसद्दो** ति महाभेरी-पटहभेरीनं सद्दो। **मुतिंग-संख-पणवसद्दा** पि मुतिंगादिपच्चया सद्दा। गीतसंखातो सद्दो **गीतसद्दो**। वुत्तावसेसानं वीणादीनं तन्तिबद्धानं सद्दो **वादितसद्दो। सम्मसद्दो** ति कंसताल-कट्ठतालसद्दो। **पाणिसद्दो** ति पाणिप्पहारसद्दो। **सत्तानं निग्घोससद्दो** ति बहुन्नं सन्निपतितानं अपञ्ञायमान-पदब्यञ्जन-निग्घोससद्दो। **धातूनं सन्निघातसद्दो** ति रुक्खानं अञ्ञमञ्ञनिघंसन-गण्डिकाकोट्टनादिसद्दो। वातस्स वायतो सद्दो **वातसद्दो**। उदकस्स सन्दमानस्स वा पटिहतस्स वा सद्दो **उदकसद्दो**। मनुस्सानं सल्लापादिसद्दो **मनुस्ससद्दो**। तं ठपेत्वा सेसो सब्बो पि **अमनुस्ससद्दो**। इमिना पदद्वयेन सब्बो पि सद्दो परियादिन्नो।

एवं सन्ते पि वंसफालन-पिलोतिकफालनादीसु पवत्तो पालियं अनागतसद्दो ये-वा-पनकट्ठानं पविट्ठो ति वेदितब्बो। एवमयं भेरीसद्दादिना भेदेन भिन्नो पि

पुब्बङ्गमो। इधा ति रूपायतननिद्देसे। यथा हीति आदिना तदिसमेवा ति वुत्तवचनं समत्थेति। इधापी ति रूपायतननिद्देसे। ते ति तेरस वारा।

भायन्ति एतस्मा ति भेरी। 'भी'-भये। भद्रादयो (१४६ ण्वु०) ति **मोग्गल्लानसुत्तेन** रक्। **नदादितो वा ई** (क० २:४:२८) **ति सुत्तेन ई**। महन्ती च सा भेरी चा ति महाभेरी। पटवि यातीति पटहो। 'पट'-गतियं। तण्हादयो (२२३-ण्वु०) ति **मोग्गल्लानसुत्तेन** हो। अथवा पटि इति सद्दं हतीति पटहो। (२०२-सी०) पटहन्तीति वा पटहो। महाभेरी च पटहभेरी च महाभेरी-पटहभेरियो। मुदं मोदं इङ्गेति गच्छति येना ति मुदिङ्गो। समेति उपसमेतीति सङ्खो। 'सम'-उपस्समखेदेसु। **समा खो** (३० ण्वु०)ति **मोग्गल्लानसुत्तेन** खो। पणियतीति पणवो। (१७१-म०] 'पण'-ब्यवहारजुतीसु[1]। पिलादीय्हवो ति (१९९ ण्वु०) **मोग्गल्लानसुत्तेन** अवो। मुदिङ्गादयो पच्चया येसं ते मुदिङ्गादिपच्चया। पदञ्च ब्यञ्जनञ्च पदब्यञ्जनानि। अपञ्ञायमानानि अपाकटानि पदब्यञ्जनानि यस्स सो... प०....ब्यञ्जनो। रुक्खानं ति पदनिघंसनं इति पदे सम्बन्धो। घण्डिकाय[2] आकोटनं घण्डि-आकोटनं[3]। निघंसनञ्च घण्डि-कोटनञ्च निघंसघण्डि-आकोटनं। तं आदि यस्स रुक्खप्पहरणादिकस्स सो निघं.. प०....कोटनादि। तस्स सद्दो निघं....प०....सद्दो। पटिहतस्स वा ति सत्थादीहि[4] पटिहतस्त। तं ति मनुस्ससद्दं। परियादिण्णो ति निरवसेसेन गहितो।

एवं ति इमिना पदद्वयेन सब्बसद्दस्स गहणे। तेसं ति वारानं। इति तस्मा, मया न

---

१. ०ठितीसु-सी०। २. गण्डिकाय-सी० सब्बत्थ। ३. गण्डिकाकोटनं-सी० सब्बत्थ। ४. सत्थादीहि-सी०।

सद्दो लक्खणादीहि अभिन्नो येव। सब्बो पि हेस सोतपटिहननलक्खणो सद्दो सोतविञ्ञाणस्स विसयभावरसो, तस्सेव गोचरपच्चुपट्ठानो। सेसं चक्खायतननिद्देसे [ध० १६०-१६१] वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। इधा पि हि चतूहि चतूहि नयेहि पटिमण्डिता तेरस वारा वुत्ता। तेसं अत्थो सक्का वुत्तनयेनेव जानितुं ति न वित्थारितो।

गन्धायतननिद्देसे [ध० १७०-१७१] **मूलगन्धो** ति यं किञ्चि मूलं पटिच्च निब्बत्तो गन्धो। **सारगन्धादीसु** पि एसेव नयो। असिद्ध-दुस्सिद्धानं डाकादीनं गन्धो **आमगन्धो**। मच्छसकलिक-पूतिमंस-किलिट्ठसप्पि-आदीनं गन्धो **विस्सगन्धो**। **सुगन्धो** ति इट्ठगन्धो। **दुग्गन्धो** ति अनिट्ठगन्धो। इमिना पदद्वयेन सब्बो पि गन्धो परियादिन्नो। एवं सन्ते पि कण्णकगन्ध-पिलोतिकगन्धादयो पालियं अनागता सब्बे पि गन्धा ये-वा-पनकट्ठानं पविट्ठा ति वेदितब्बा। एवमयं मूलगन्धादिना भेदेन भिन्नो पि गन्धो लक्खणादीहि अभिन्नो येव। सब्बो पि हेस घाणपटिहननलक्खणो गन्धो, घाणविञ्ञाणस्स विसयभावरसो, तस्सेव गोचरपच्चुपट्ठानो। सेसं चक्खायतननिद्देसे [ध० १६०-१६१] वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। इधा पि हि तथेव द्विपञ्ञासनयपटिमण्डिता तेरस वारा वुत्ता। ते अत्थतो पाकटा येव।

रसायतननिद्देसे [ध० १७१-१७२] **मूलरसो** ति यं किञ्चि मूलं पटिच्च निब्बत्तरसो। **खन्धरसादीसु** पि एसेव नयो। **अम्बिलं** ति तक्कम्बिलादि। **मधुरं** ति एकन्ततो गोसप्पि-आदि। मधु पन कसावयुत्तं चिरनिक्खित्तं कसावं होति। फाणितं खारियुत्तं चिरनिक्खित्तं खारियं होति। सप्पि पन चिरनिक्खित्तं वण्णगन्धे जहन्तं पि रसं न जहती ति तदेव एकन्तमधुरं। **तित्तकं** ति निम्बपण्णादि। **कटुकं** ति सिंगिवेरमरिचादि। **लोणिकं** ति सामुद्दिकलोणादि। **खारिकं** ति वातिंगणकळीरादि। **लपिलं** ति बदरसाळव-कपिट्ठसाळवादि। **कसावं** ति हरीटकादि। इमे सब्बे पि रसा

वित्थारिता[1]।

असिद्धदुस्सिद्धानं ति अनिप्फन्नदुन्निप्फन्नानं, अपाकदुपाकानं ति अत्थो। डाकादीनं ति साकादीनं। मच्छानं सकलिका मच्छसकलिका। मच्छसकलिका च पूतिमंसञ्च किलिट्ठसप्पि च मच्छ....प०....सप्पि।

मधू ति मधुकरेहि कतं[2] मधु[2]। तदेवा ति सब्बं[3]। वातिङ्गणो च कळीरो च वातिङ्गणकळीरा। कळीरो ति वंसकळीरो[4]। ते आदि यस्स खारिकरसस्स ति वातिङ्ग....प०....रादि। वदन्ति एतेना ति बदरा। 'वद'-वचने[5]। वदिस्स बदा चा (१६० ण्वु०) ति[6] **मोग्गल्लानसुत्तेन** अरो, वदिस्स बदादेसो च। सलति पवत्तती ति सालवो। अभिसङ्खतबदरादिफलखादनीयं। बदरा च आमलको च कपिट्ठो च सालवो च बदरा....प०....सालवा। ते

---

१. वित्थारितो–सी०। २-२. कतमधु–सी०। ३. सप्पि–सी०। ४. वंसधिकुरा–सी०। ५. वदी-वचने–सी०। ६. वदिस्स बदरा चा ति–सी०।

वत्थुवसेन वुत्ता। तं-तं-वत्थुतो पनेत्थ रसो व अम्बिलादीहि नामेहि वुत्तो ति वेदितब्बो। **सादू** ति इट्ठरसो, **असादू** ति अनिट्ठरसो। इमिना पदद्वयेन सब्बो पि रसो परियादिन्नो।

एवं सन्ते पि लेड्डुरस-भित्तिरस-पिलोतिकरसादयो पालियं अनागता सब्बे पि रसा ये-वा-पनकट्ठानं पविट्ठा ति वेदितब्बा। एवमयं मूलरसादिभेदेन भिन्नो पि रसो लक्खणादीहि अभिन्नो येव। सब्बो पि हेस जिव्हापटिहननलक्खणो रसो, जिव्हाविञ्ञाणस्स विसयभावरसो, तस्सेव गोचरपच्चुपट्ठानो। सेसं चक्खायतननिद्देसे [ध० १६०-१६१] वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। इधा पि तथेव द्विपञ्ञासनयपटिमण्डिता तेरस वारा वुत्ता।

इत्थिन्द्रियनिद्देसे [ध० १७३] **यं** ति कारणवचनं। येन कारणेन **इत्थिया इत्थिलिंगा**दीनि होन्ती ति अयमेत्थ अत्थो। तत्थ 'लिंगं'ति सण्ठानं। इत्थिया हि हत्थ-पाद-गीवा-उदरादीनं सण्ठानं न पुरिसस्स विय होति। इत्थीनं हि हेट्ठिमकायो विसदो होति, उपरिमकायो अविसदो। हत्थपादा खुद्दका, मुखं खुद्दकं। **निमित्तं** ति सञ्जाननं। इत्थीनं हि उरमंसं विसदं होति, मुखं निम्मस्सुदाठिकं। केसबन्धवत्थगहणं पि न पुरिसानं विय होति। **कुत्तं** ति किरिया। इत्थियो हि दहरकाले सुप्पमुसलकेहि कीळन्ति, धीतलिकाय कीळन्ति, मत्तिकवाकेन सुत्तकं नाम कन्तन्ति। **आकप्पो** ति गमनादि-आकारो। इत्थियो हि गच्छमाना अविसदं गच्छन्ति, तिट्ठमाना निपज्जमाना निसीदमाना खादमाना भुञ्जमाना अविसदं भुञ्जन्ति। पुरिसं पि अविसदं दिस्वा 'मातुगामो विय गच्छति तिट्ठति निपज्जति निसीदति खादति भुञ्जती' ति वदन्ति। **इत्थत्तं इत्थिभावो** ति उभयं पि एकत्थं; इत्थिसभावो ति अत्थो। अयं कम्मजो पटिसन्धिसमुट्ठितो। इत्थिलिंगादि पन इत्थिन्द्रियं पटिच्च पवत्ते समुट्ठितं।

आदि यस्स सो बदर····प० ····सालवादि। तानि तानि वत्थूनि तं तं वत्थूनि। एत्था ति रसायतननिद्देसे।

एत्था ति यं ति वचने। तत्था ति लिङ्गादीसु। पुरिसस्स सण्ठानं विय न होति। करणं कुत्तं। सुपन्ति एत्थ सुनखादयो ति सुप्पं[1]। 'सुप'-सये। खिपसुपनीसुपूहि पक् (११६ ण्वु०) इति **मोग्गल्लानसुत्तेन** पक्[2]। सुप्पं एव सुप्पिकं। सकत्थे को! मुसति मरति अनेना ति मुसलो। 'मुस'-पाणचागे। **मुसा कलो** (१८३ ण्वु०) ति **मोग्गल्लानसुत्तेन** कलो। मुसलो एव मुसलको। (२०३-सी०) धीतलिकाया ति धीता इति कतरूपेन। धीता विय धीतलिका। **यवादिना** लिकपच्चयो। वाति गन्धति एतेना ति वाक्को[3]। 'वा'-गतिबन्धने। इभीकाकर-अरवकसकवाहि को (ण्वु० १४) ति **मोग्गल्लानसुत्तेन** को। कस्स द्वित्तं। मत्तिकञ्च वाक्को च मत्तिकवाक्को। वाकेन[4] पि[4] अत्थि। इत्थिया भावो इत्थत्तं, इस्स अत्तं। **अयं** ति अयं इत्थिभावो।

---

१. सुपं-सी०। २. पङ्क-सी०। ३. वाको-सी०। ४-४. वाकेना ति पि-सी०।

यथा हि बीजे सति, बीजं पटिच्च, बीजपच्चया रुक्खो वड्ढित्वा साखाविटपसम्पन्नो हुत्वा आकारं पूरेत्वा तिट्ठति, एवमेव इत्थिभावसङ्खाते इत्थिन्द्रिये सति इत्थिलिंगादीनि होन्ति। बीजं विय हि इत्थिन्द्रियं, बीजं पटिच्च वड्ढित्वा आकासं पूरेत्वा ठितरुक्खो विय इत्थिन्द्रियं पटिच्च इत्थिलिंगादीनि पवत्ते समुट्ठहन्ति। तत्थ इत्थिन्द्रियं न चक्खुविञ्ञेय्यं, मनोविञ्ञेय्यमेव। इत्थिलिंगादीनि चक्खुविञ्ञेय्यानि पि मनोविञ्ञेय्यानि पि। **इदं तं रूपं इत्थिन्द्रियं** ति इदं तं रूपं, यथा चक्खुन्द्रियादीनि पुरिसस्स पि होन्ति, न एवं; नियमतो पन इत्थिया येव इन्द्रियं ति 'इत्थिन्द्रियं'।

पुरिसिन्द्रिये [ध०१७३] पि एसेव नयो। पुरिसलिंगादीनि पन इत्थिलिंगादीनं पटिपक्खतो वेदितब्बानि। पुरिसस्स हि हत्थ-पाद-गीवा-उरादीनं सण्ठानं न इत्थिया विय होति। पुरिसानं हि उपरिमकायो विसदो होति हेट्ठिमकायो अविसदो, हत्थपादा महन्ता, मुखं महन्तं, उरमंसं अविसदं, मस्सुदाठिका उप्पज्जन्ति। केसबन्धवत्थगहणं न इत्थीनं विय होति। दहरकाले रथनङ्गलादीहि कीळन्ति, वालिकपालिं कत्वा वापिं नाम खणन्ति, गमनादीनि विसदानि होन्ति। इत्थिं पि गमनादीनि विसदानि कुरुमानं दिस्वा 'पुरिसो विय गच्छती'ति आदीनि वदन्ति। सेसं इत्थिन्द्रिये वुत्तसदिसमेव।

तत्थ इत्थिभावलक्खणं इत्थिन्द्रियं, इत्थी ति पकासनरसं; इत्थिलिंगनिमित्तकुत्ताकप्पानं कारणभावपच्चुपट्ठानं। पुरिसभावलक्खणं पुरिसिन्द्रियं, पुरिसो ति पकासनरसं, पुरिसलिंग-निमित्त-कुत्ताकप्पानं कारणभावपच्चुपट्ठानं। उभयं पेतं पठमकप्पिकानं पवत्ते समुट्ठाति। अपरभागे पटिसन्धियं। पटिसन्धिसमुट्ठितं पि पवत्ते चलति परिवत्तति। यथाह—"तेन खो पन समयेन अञ्ञतरस्स भिक्खुनो इत्थिलिंगं पातुभूतं होति। तेन खो समयेन अञ्ञतरिस्सा भिक्खुनिया पुरिसलिंगं पातुभूतं होति" [पारा० ४४] ति।

पटिसन्धिसमुट्ठितो ति पटिसन्धिचित्तेन सह एकक्खणे समुट्ठितो। किं पनेतं इत्थिलिङ्गादि इत्थिन्द्रियं विय पटिसन्धिसमुट्ठितं ? नो ति[1] आह—इत्थिलिङ्गं ति आदि।

वुत्तमत्थं [१७२-म०] उपमाय साधेन्तो आह—यथा ति आदि। तत्था ति इन्द्रियादीसु। एसेव नयो ति इमिना नियमतो पुरिसस्सेव इन्द्रियं ति पुरिसिन्द्रियं ति इममत्थं अतिदिसति। वालिकपालिं ति वालिकाय मरियादं।

तत्था ति इत्थिन्द्रियपुरिसिन्द्रियेसु। भवति एतेन चित्तं अभिधानञ्चा ति भावो। इत्थिभावो[2] लक्खणं अस्सा ति इत्थिभावलक्खणं। यस्मा इत्थिन्द्रिये सति इत्थिलिङ्गादयो होन्ति, तेसु च सन्तेसु इत्थीति पकासो होति, तस्मा तं पकासनकारणं ति आह—इत्थीति पकासनरसं ति। उभयम्पि एतं भावरूपं पठमकप्पिकानं पठमकप्पे निब्बत्तनरानं। अपरभागे ति

---

१. जोति–सी०। २. इत्थिया भावो इत्थिभावो, इत्थिभावो–सी०।

इमेसु पन द्वीसु पुरिसलिंगं उत्तमं, इत्थिलिंगं हीनं। तस्मा पुरिसलिंगं बलव-अकुसलकम्मेन अन्तरधायति, इत्थिलिंगं दुब्बलकुसलेन पतिट्ठाति। इत्थिलिंगं पन अन्तरधायन्तं दुब्बल-अकुसलेन अन्तरधायति, पुरिसलिंगं बलवकुसलेन पतिट्ठाति। एवं उभयं पि अकुसलेन अन्तरधायति, कुसलेन पतिट्ठाती ति वेदितब्बं।

उभतोब्यञ्जनकस्स पन किं एकं इन्द्रियं उदाहु द्वे ति ? एकं। तं च खो इत्थि-उभतोब्यञ्जनकस्स इत्थिन्द्रियं, पुरिस-उभतोब्यञ्जनकस्स पुरिसिन्द्रियं। 'एवं सन्ते दुतियब्यञ्जनकस्स अभावो आपज्जति। इन्द्रियं हि ब्यञ्जनकारणं वुत्तं [ ]। तं च'स्स नत्थी' ति ? 'न तस्स इन्द्रियं ब्यञ्जनकारणं'। 'कस्मा' ? 'सदा अभावतो। इत्थि-उभयतोब्यञ्जनकस्स हि यदा इत्थिया रागचित्तं उप्पज्जति, तदा पुरिसब्यञ्जनं पाकटं होति, इत्थि-ब्यञ्जनं पटिच्छन्नं गूळ्हं होति। तथा इतरस्स इतरं। यदि च तेसं इन्द्रियं दुतियब्यञ्जनकारणं भवेय्य, सदा पि ब्यञ्जनद्वयं तिट्ठेय्य। न पन तिट्ठति। तस्मा वेदितब्बमेतं न तस्स तं ब्यञ्जनकारणं। कम्मसहायं पन रागचित्त-मेवेत्थ कारणं। यस्मा च'स्स एकमेव इन्द्रियं होति, तस्मा इत्थि-उभतोब्यञ्जनको

पठमकप्पतो अपरभागे। परिवत्ततीति[१] पदं चलतीति पदस्स अत्थो। पवत्ते समुट्ठाति। अपर-भागे पटिसन्धियं समुट्ठाति। पवत्ते समुट्ठितम्पि पवत्तो[२] च परिवत्ततीति पाठो सेय्यो। उभ-यम्पि एतं भावरूपं। अपर....प०.... समुट्ठाति। उभयम्पि एकं भावरूपं पवत्ते....प०.... परि-वत्ततीति योजना। पिसद्दो पवत्ते पि[३] योजेतब्बो। च-सद्दो एवत्थो[४]। यथाहा ति भगवा यथा[५] आह। तेन खो....प०....होतीति वचनं पठमपाराजिकाय विनीतवत्थुपाळियं भगवा आह।

इमेसु लिङ्गेसु। बलव-अकुसलेना ति परदारकम्मादिपापकम्मेन[६]।

उपनिस्सयभूतेन एकं इन्द्रियं। तञ्च खो इन्द्रियं। एवं सन्ते ति एकस्मिं येव इन्द्रिये सति। हि सच्चं, इन्द्रियं ब्यञ्जनकारणं लिङ्गनिमित्तादिब्यञ्जनस्स कारणं भगवता वुत्तं। तञ्च इन्द्रियस्स[७] अस्स उभतोब्यञ्जनकस्स कारणं भगवता वुत्तं। तञ्च इन्द्रियस्स[८] अस्स उभतो ब्यञ्जनकस्स नत्थि इति पुच्छा। इत्थि उभतोब्यञ्जनं कारणं ति दुतियब्यञ्जनकस्स कारणं। सदा दुतियब्यञ्जनकस्स अभावतो इन्द्रियं ब्यञ्जनकारणं। इत्थिया ति पदं (२०४–सी०) उप्पज्जती ति पदे आधारो। रागचित्तं ति मेथुनरागेन सम्पयुत्तचित्तं। इतरस्स पुरिसुभतो-ब्यञ्जनकस्स। इतरं इत्थिब्यञ्जनं। तेसं ति उभतोब्यञ्जनकारणानं[९]। तस्स उभतोब्यञ्जन-कस्स तं इन्द्रियब्यञ्जन....प०....इति एवं[१०] वचनं पण्डितेन वेदितब्बं ति योजना। किं पन कारणं ति पुच्छं सन्धायाह—कम्मसहायं पना ति आदि। कम्मसहायं ति पुरिमभवस्मिं[११]

---

१. परिवत्त–सी०। २. पवत्ते–सी०। ३. पी ति–सी०। ४. एवसद्दत्थो–सी०। ५. यथा किं–सी०। ६. ०बलवपापकम्मेन–सी०। ७. इन्द्रियं–सी०। ८. इन्द्रियं–सी०। ९. ०ब्यञ्जनकानं–सी०। १०. एतं–सी०। ११. पुरिमभावसिद्धस्स–सी०।

सयं पि गब्भं गण्हाति, परं पि गण्हापेति। पुरिस-उभतोब्यञ्जनको परं गब्भं गण्हापेति, सयं पन न गण्हाती'ति।

जीवितिन्द्रियनिद्देसे [ध० १७३] यं वत्तब्बं तं हेट्ठा अरूपजीवितिन्द्रिये वुत्तमेव। केवलं हि तत्थ **यो तेसं अरूपीनं धम्मानं** [ध० २१] ति वुत्तं, इध रूपजीवितिन्द्रियत्ता **यो तेसं रूपीनं धम्मानं** [ध० १७३] ति अयमेव विसेसो। लक्खणादीनि पन'स्स एवं वेदितब्बानि—सहजात-रूपानुपालनलक्खणं जीवितिन्द्रियं, तेसं पवत्तनरसं, तेसं येव ठपनपच्चुपट्ठानं, यापयितब्बभूतपदट्ठानं ति।

कायविञ्ञत्तिनिद्देसे [ध० १७३] **कायविञ्ञत्ती** ति अत्थे ताव कायेन अत्तनो भावं विञ्ञापेन्तानं तिरच्छानेहि पि पुरिसानं, पुरिसेहि वा तिरच्छानानं पि कायगहणानुसारेन गहिताय एताय भावो विञ्ञायती ति 'विञ्ञत्ति'। सयं कायगहणानुसारेन विञ्ञायती ति पि 'विञ्ञत्ति'। "कायेन संवरो साधू" [धम्म० ३६१ का०] ति आदीसु आगतो चोपनसङ्खातो कायो व विञ्ञत्ति 'कायविञ्ञत्ति'। कायविप्फन्दनेन

इन्द्रियनिब्बत्तककम्मस्स सहायं। रागचित्तं इत्थिया पुरिसस्मिं, पुरिसस्स इत्थिया वा उप्पन्नं मेथुनरागचित्तं। एत्था ति ब्यञ्जनद्वये, करणं ति पदे आधारो। अस्सा ति उभतो-ब्यञ्जनकस्स। एकमेव इन्द्रियं होति।

तत्था ति अरूपजीवितिन्द्रिये। यो तेसं धम्मानं ति वुत्तं ति [१७३-म०] योजना। अस्सा ति जीवितिन्द्रियस्स। तेसं येवा ति सहजातरूपानं। थपना[1] इति पदे कम्मं।

काय....प०....ति एत्थ वचने विनिच्छयो[2] वेदितब्बो। कायेना ति रूपकायेन। अत्तनो भावं ति अत्तनो अधिप्पायं। विञ्ञापेन्तानं ति अत्तनो परेसं ञापेन्तानं। तिरच्छानेहि पी ति पदं विञ्ञायती ति[3] पदे कत्ता। पुरिसानं ति पदं भावो ति पदे सम्बन्धो। कायगहणानुसारेना ति फन्दमानकायगतवण्णस्स गहणभूतानं चक्खुद्वारिकजवनानन्तरप्पवत्तानं निच्छयगहणसङ्खातानं मनोद्वारजवनानं अनुसारणेन तेसं अनन्तरं ति अत्थो। पञ्चद्वारेहि रूपादि-आरम्मणे आपाथगते यथापच्चयं कुसलाकुसलजवने उप्पज्जित्वा भवङ्गं ओतिण्णे मनोद्वारिकजवनं तं येवारम्मणं कत्वा भवङ्गं ओतरति, पुन तस्मिं येव द्वारे विसयं ववत्थपेत्वा जवनं भवङ्गं ओतरति, तस्मा चक्खुद्वारिकजवनानन्तरप्पवत्तानं द्विन्नं जवनवारानमनन्तरं ततियवारप्पवत्ताय मनोद्वारजवनवीथिया एव गहिताय। एताय कारणभूताय चतुत्थवारे मनोद्वारजवने[4] भावो विञ्ञायति। एतेन विञ्ञत्तिसद्दस्स करणसाधनत्तं सयं ति आदिना पन कम्मसाधनत्तमाह। सयं ति पदं विञ्ञायतीति पदे कम्मं। एवं विञ्ञत्तिसद्दस्स कारकद्वये सम्भवं दस्सेत्वा इदानि कायसद्देन सह कम्मधारयसमासं दस्सेतुं कायो ति वोहारस्स विञ्ञत्तिया पवत्ति दस्सेन्तो कायेन संवरो ति आदि सुत्तमाह। कायफन्दनेन (२०५-सी०) अधिप्पायविञ्ञापनहेतुत्ता ति विप्फन्द-

---

१. ठपन-सी०। २. ०ताव-सी०। ३. विञ्ञापेती ति-सी०।
४. ०नेव-सी०।

अधिप्पायविञ्ञापनहेतुत्ता, सयं च तथा विञ्ञेय्यत्ता कायेन विञ्ञत्ती ति पि 'कायविञ्ञत्ति'।

कुसलचित्तस्स वा ति आदीसु अट्ठहि कामावचरेहि अभिञ्ञाचित्तेन चा ति नवहि चित्तेहि कुसलचित्तस्स वा, द्वादसहि पि अकुसलचित्तेहि **अकुसलचित्तस्स** वा, अट्ठहि महाकिरियाहि द्वीहि परित्तकिरियाहि अभिञ्ञापत्ताय एकाय रूपावचर-किरियाया ति एकादसहि किरियचित्तेहि **अब्याकतचित्तस्स** वा। इतो अञ्ञानि चित्तानि विञ्ञत्तिं न जनेन्ति। सेक्खासेक्खपुथुज्जनानं पन एत्तकेहेव चित्तेहि विञ्ञत्ति होती ति एतेसं कुसलादीनं वसेन तीहि पदेहि 'हेतुतो' दस्सिता।

इदानि छहि पदेहि 'फलतो' दस्सेतुं **अभिक्कमन्तस्स** वा ति आदि वुत्तं। अभिक्कमादयो हि विञ्ञत्तिवसेन पवत्तत्ता विञ्ञत्तिफलं नाम। तत्थ 'अभिक्कमन्तस्सा' ति पुरतो कायं अभिहरन्तस्स। **पटिक्कमन्तस्सा** ति पच्छतो पच्चाहरन्तस्स। **आलोकेन्तस्सा** ति उजुकं पेक्खन्तस्स। **विलोकेन्तस्सा** ति इतो चितो च पेक्खन्तस्स। **सम्मिञ्जन्तस्सा** ति सन्धियो संकोचेन्तस्स। **पसारेन्तस्सा** ति सन्धियो पटिप्पणामेन्तस्स।

इदानि छहि पदेहि 'सभावतो' दस्सेतुं **कायस्स थम्भना** ति आदि वुत्तं। तत्थ 'कायस्सा' ति सरीरस्स। कायं थम्भेत्वा थद्धं करोती ति **थम्भना**। तमेव उपसग्गेन वड्ढेत्वा **सन्थम्भना** ति आह। बलवतरा वा थम्भना 'सन्थम्भना'। **सन्थम्भितत्तं** ति सन्थम्भितभावो। विञ्ञापनवसेन **विञ्ञत्ति**। **विञ्ञापना** ति विञ्ञापनाकारो। विञ्ञापितभावो **विञ्ञापितत्तं**। सेसमेत्थ यं वत्तब्बं तं हेट्ठा द्वारकथाय वुत्तमेव।

तथा वचीविञ्ञत्तियं [ध० १७३]। **वचीविञ्ञत्ती** ति पदस्स पन निद्देस-

---

मानकायेन करणभूतेन अधिप्पायविञ्ञापनहेतुभावतो कायेन विञ्ञापेतीति कायविञ्ञत्तीति सम्बन्धो। सयं ति पदं विञ्ञेय्यत्ता ति पदे सम्बन्धो। तथा ति तेन कायगहणानुसारेन।

कुसलचित्तस्स वा ति आदीसु विनिच्छयो वेदितब्बो। चित्तेहीति पदं कुसलचितस्सा ति पदे सरूपनिदस्सनं। अथवा कुसलचित्तं[1] अस्स पुग्गलस्सा ति कुसलचित्तो। चित्तेहीति पदं कुसलचित्तस्सा ति पदे ततियाविसेसनं। अथवा नवहि चित्तेहीति वचनेन कुसलचित्तस्सा ति एत्थ करणे[2] छट्ठीति ञापेति। कुसलचित्तेन वा उप्पन्नथम्भेना ति अत्थो। इतो ति इमेहि चित्तेहि। वसेना ति पदं तीही ति पदे ततियाविसेसनं। हेतुतो दस्सिता विञ्ञत्तीति सम्बन्धो।

फलतो विञ्ञत्तिं दस्सेतुं। विञ्ञत्तिया फलं विञ्ञत्तिफलं। तत्था ति अभिक्कमन्तस्सा ति आदिपदेसु[3]।

तमेवा ति संथम्भना[4] ति [१७४-म०] पदं। सेसमेत्था ति आदिपदेसु[5]। एत्थ काय-विञ्ञत्तियं सेसं वचनं मया वत्तब्बं।

तत्था ति सेसं यं वत्तब्बं ति आदि आकड्ढति। चसद्दो पदस्स च पदानञ्च ति योजे-

---

१. कुसलं चित्तं–सी०। २. करणत्थे–सी०। ३. तत्था ति कायस्सा ति आदिपदेसु–सी०। ४. अथम्भना–सी०। ५. नत्थि–सी०।

पदानं च अत्थो तत्थ न वुत्तो, सो एवं वेदितब्बो—वाचाय अत्तनो भावं विञ्ञापेन्तानं तिरच्छानेहि पि पुरिसानं, पुरिसेहि वा तिरच्छानानं पि, वचीगहणानुसारेन गहिताय एताय भावो विञ्ञायती ति विञ्ञत्ति। सयं वचीगहणानुसारेन विञ्ञायती ति पि विञ्ञत्ति। "साधु वाचाय संवरो" [धम्म० ३६१ का०] ति आदीसु आगता चोपनसङ्खाता वची एव विञ्ञत्ति 'वचीविञ्ञत्ति'। वचीघोसेन अधिप्पायविञ्ञापनहेतुत्ता सयं च तथाविञ्ञेय्यत्ता वाचाय विञ्ञत्ती ति पि 'वचीविञ्ञत्ति'।

वाचा गिरा ति आदीसु वुच्चती ति 'वाचा'। गिरीयती ति 'गिरा'। **ब्यप्पथो** ति वाक्यभेदो। वाक्यं च तं पथो च अत्थं ञातुकामानं ञापेतुकामानं चा ति पि 'ब्यप्पथो'। उदीरियती ति **उदीरणं**। घुस्सती ति **घोसो**। करीयती ति **कम्मं**। घोसो व कम्मं ति **घोसकम्मं**। नानप्पकारेहि कतो घोसो ति अत्थो। वचिया भेदो **वचीभेदो**। सो पन 'न भंगो, पभेदगता वाचा एवा' ति ञापनत्थं **वाचा वचीभेदो** ति वुत्तं। इमेहि सब्बेहि पि पदेहि 'सद्दवाचा' व दस्सिता। इदानि ताय वाचाय सद्धिं योजेत्वा हेट्ठा वुत्तत्थानं विञ्ञत्ति-आदीनं पदानं वसेन तीहाकारेहि सभावतो तं दस्सेतुं **या ताय वाचाय विञ्ञत्ती** ति आदि वुत्तं। तं हेट्ठा वुत्तनयत्ता उत्तानत्थमेव।

इदानि विञ्ञत्तिसमुट्ठापकचित्तेसु असंमोहत्थं द्वत्तिंस-छब्बीस-एकून-वीस-सोळस-पच्छिमानी ति इदं पकिण्णकं वेदितब्बं—द्वत्तिंस चित्तानि हि रूपं समुट्ठापेन्ति, इरियापथं उपत्थम्भेन्ति, दुविधं पि विञ्ञत्तिं जनेन्ति। छब्बीसति विञ्ञत्तिमेव न जनेन्ति, इतरद्वयं करोन्ति। एकूनवीसति रूपमेव समुट्ठापेन्ति, इतरद्वयं न करोन्ति। सोळस इमेसु तीसु एकं पि न करोन्ति।

तब्बो। तत्था ति द्वारकथायं मया न वुत्तो, सो अत्थो पण्डितेन वेदितब्बो। तथा ति वचीगहणानुसारेन।

वाचा गिरा ति आदीसु विनिच्छयो वेदितब्बो। यो सद्दो पुग्गलेन यस्मा वुच्चति तस्मा[1] सो सद्दो वाचा नाम। गिरियति उच्चारियति। वाक्यारम्भो ति वचनस्स भेदो। पथो ति चा ति अत्थं ञापेतुं....प०....मानं पुग्गलानं हेतुं फुस्सयतीति कथियति[2] फुसनसद्देन[3]। करियति[4] उच्चारियति। 'कर'-उच्चारणे। घोसो ति वचीभेदो। पभेदगता ति पभेदं गता, पभेदेन पवत्ता वा। पञ्ञापनत्थं ति जाननत्थं। योजेत्वा ति पदं दस्सेतुं ति पदे पुब्बकालक्रिया। विञ्ञत्ति-आदीनं ति आदिसद्देन विञ्ञापना विञ्ञापितत्तं ति पदद्वयं सङ्गण्हाति। वसेना ति पदं तं[5] हीति[5] पदे ततियाविसेसनं। तं ति विञ्ञत्तीति आदिवचनं।

असम्मोहत्थं ति पदं वेदितब्बं ति पदे सम्पदानं। हिसद्दो वित्थारजोतको। तीसू ति रूप-इरियापथविञ्ञत्तीसु।

---

१. इति तस्मा—सी०। २. कथयति—सी०। ३. 'फुस'-सद्दे—सी०। ४. करियतीति—सी०। ५-५. तीहीति—सी०।

तत्थ द्वत्तिंसा ति हेट्ठा वुत्तानेव कामावचरतो अट्ठ कुसलानि, द्वादस अकुसलानि, किरियतो दस चित्तानि, सेक्खपुथुज्जनानं अभिञ्ञाचित्तं, खीणासवानं अभिञ्ञाचित्तं ति। छब्बीसा ति रूपावचरतो पञ्च कुसलानि, पञ्च किरियानि, अरूपावचरतो चत्तारि कुसलानि, चत्तारि किरियानि, चत्तारि मग्गचित्तानि, चत्तारि फलचित्तानी ति। एकूनवीसा ति कामावचरकुसलविपाकतो एकादस, अकुसलविपाकतो द्वे, किरियतो किरियमनोधातु, रूपावचरतो पञ्च विपाकचित्तानी ति। सोळसा ति द्वे पञ्च विञ्ञाणानि, सब्बसत्तानं पटिसन्धिचित्तं, खीणासवानं चुतिचित्तं, आरुप्पे चत्तारि विपाकचित्तानी ति। इमानि सोळस रूप-इरियापथविञ्ञत्तीसु एकं पि न करोन्ति। अञ्ञानि पि बहूनि आरुप्पे उप्पन्नानि अनोकासगतत्ता रूपं न समुट्ठापेन्ति। यानि पन कायविञ्ञत्तिं समुट्ठापेन्ति तानेव वचीविञ्ञत्तिं ति।

आकासधातुनिद्देसे [ध० १७३] न कसति, न निकसति, कसितुं वा छिन्दितुं वा भिन्दितुं वा न सक्का ति **आकासो**। आकासो व **आकासगतं**, खेळगतादीनि विय। आकासो ति वा गतं ति 'आकासगतं'। न हञ्ञती ति **अघं** अघट्टनीयं ति अत्थो। अघमेव **अघगतं**। छिद्दट्ठेन **विवरो**। विवरो व **विवरगतं**। **असम्फुट्ठं चतूहि महाभूतेहि** ति एतेहि असम्फुट्ठं निज्जटाकासं कथितं। लक्खणादितो पन रूपपरिच्छेदलक्खणा **आकासधातु**, रूपपरियन्तप्पकासनरसा, रूपमरियादपच्चुपट्ठाना असंफुट्ठभाव-छिद्द-विवरभावपच्चुपट्ठाना वा, परिच्छिन्नरूपपदट्ठाना, याय परिच्छिन्नेसु रूपेसु 'इदमितो उद्धं अधो तिरियं' ति च होति।

तत्था ति द्वत्तिंसादीसु। अनोकासगतत्ता ति रूपस्स अनोकासप्पवत्तभावतो। तानेव चित्तानि वचीविञ्ञत्तिं समुट्ठापेन्ति। (२०६–सी०) इतिसद्दो परिसमापनत्थो।

यो सभावो सत्तेन, न कस्सति न[1] सक्का[1] इति तस्मा सो आकासो। कम्मसाधनं। 'कस'-विलेखने। अकासो एव आकासो। गमियति ञायतीति गतं। असम्फुट्ठं····प०····तेहीति वचने कथितं। एतेहीति महाभूतेहि असम्फुट्ठं ति पदे कत्ता। निस्सटं एव आकासं निस्सटाकासं। रूपानि परिच्छिन्दति, सयं वा रूपेहि परिच्छिन्दति, रूपानं वा परिच्छेदमत्तं ति रूपपरिच्छेदो। तं लक्खणमेतिस्सा ति रूपपरिच्छेदलक्खणा। रूप····प०····रसा ति अयं रूपानं हेट्ठिमो परियन्तो, अयमुपरिमो[2], एवं विभागकिच्चा। रूपानं मरियादं हुत्वा पच्चुपट्ठाती ति रूपमरियादपच्चुपट्ठानं[3]। असम्फुट्ठभावछिद्दविवरभावपच्चुपट्ठाना वा ति असम्फुट्ठभावपच्चुपट्ठाना वा छिद्दविवरभावपच्चुपट्ठाना वा ति वुत्तं होति। तत्थ तस्मिं कलापे भूतानं परिच्छेदो तेहेव भूतेहि असम्फुट्ठभावेन पच्चुपट्ठातीति असम्फुट्ठभावपच्चुपट्ठाना। अथवा कलापन्तरभूतानं असम्फुट्ठभावेन अञ्ञमञ्ञं असंकिण्णभावेन पच्चुपट्ठातीति असम्फुट्ठभावपच्चुपट्ठाना। कण्णच्छिद्दमुखविवरादिवसेन [१७५-म०] छिद्दविवरभावेन पच्चुपट्ठातीति छिद्दविवरपच्चु-

---

१-१. कस्सितुं न सक्का ति वा–सी०। २. ०ति–सी०। ३. ०पट्ठाना–सी०।

इतो परे रूपस्स लहुतादीनं [ध० १७४] निद्देसा चित्तस्स लहुतादीसु [ध० २५] वुत्तनयेनेव वेदितब्बा। लक्खणादितो पनेत्थ **अदन्धनता**लक्खणा रूपस्स लहुता, रूपानं गरुभावविनोदनरसा, लहुपरिवत्तिता-पच्चुपट्ठाना, लहुरूपपदट्ठाना। अथद्धता-लक्खणा **रूपस्स मुदुता**, [ध० १७४] रूपानं थद्धभावविनोदनरसा, सब्बकिरियासु अविरोधितापच्चुपट्ठाना, मुदुरूपपदट्ठाना। सरीरकिरियानुकूलकम्मञ्ञभावलक्खणा **रूपस्स कम्मञ्ञता** [ध० १७४], अकम्मञ्ञताविनोदनरसा, अदुब्बलभावपच्चुपट्ठाना, कम्मञ्ञरूपपदट्ठाना। एता पन तिस्सो न अञ्ञमञ्ञं विजहन्ति।

एवं सन्ते पि यो अरोगिनो विय रूपानं लहुभावो, अदन्धता, लहुपरिवत्तिप्पकारो, रूपदन्धत्तकर-धातुक्खोभ-पटिपक्खपच्चयसमुट्ठानो, सो रूपविकारो 'रूपस्स लहुता'। यो सुपरिमद्दितचम्मस्सेव रूपानं मुदुभावो सब्बकिरियाविसेसेसु वसवत्तनभावमद्दवप्पकारो रूपथद्धत्तकर-धातुक्खोभ-पटिपक्खपच्चयसमुट्ठानो, सो रूपविकारो 'रूपस्स मुदुता'। यो पन सुद्धन्तसुवण्णस्सेव रूपानं कम्मञ्ञभावो सरीरकिरियानु-

---

पट्ठाना। येसं रूपानं परिच्छेदो तत्थेव तेसं परिच्छेदभावेन लब्भतीति वुत्तं परिच्छिन्नरूपपदट्ठाना ति। याया ति आकासधातुया परिच्छेन्नेसु रूपेसु। इति वचनं होति।

इतो ति आकासधातुनिद्देसतो। परे निद्देसा। लक्खणादितो रूपस्स[1] लहुतादयो वेदितब्बा ति योजना। एत्था ति रूपस्स लहुतादीसु, निद्धारणं। अदन्धतालक्खणा ति अगरुभावस्स[2] विनोदनं अपनयनं किच्चमेतिस्सा ति गरुभावविनोदनादनरसा[3]। लहुपरिवत्तिता-पच्चुपट्ठाना ति अदन्धस्स अरोगिपुरिसस्स अपरापरं परिवत्तनं विय अदन्धं परिवत्तनं हुत्वा पच्चुपट्ठातीति अत्थो। यस्स रूपस्स लहुता तत्थेव विकारभावेन उपलब्भनतो लहुरूपपदट्ठाना। एवमितरासु पि। अथद्धता ति अकण्ठिनता[4]। अत्तनो मुदुभावेनेव सब्बक्रिया अविरुद्धा हुत्वा पच्चुपट्ठातीति अविरोधपच्चुपट्ठाना। सरीरेन[5] कत्तब्बक्रियानं अनुकूलसङ्खातो कम्मञ्ञभावो लक्खणं एतस्सा ति सरीरक्रियानुकूलकम्मञ्ञभावलक्खणा। अकम्मञ्ञं दुब्बलं नाम होती ति कमञ्ञता (२०७—सी०) अदुब्बलभावपच्चुपट्ठाना ति वुत्ता।

अञ्ञमञ्ञं अविजहने[6] पि तिण्णं विसेसो अत्थीति ञापेन्तो एवं सन्ते पी ति आदिमाह। एवं अञ्ञमञ्ञं अविजहने सन्ते पि वेदितब्बो ति योजना। अरोगिनो पुग्गलस्स रूपानं लहुभावो विय रूपानं यो लहुभावो। अदन्धानं रूपानं भावो अदन्धता, लहुपरिवत्तनं लहुपरिवत्ति च[7] अदन्धलहुपरिवत्ति[7]। अदन्धतालहुपरिवत्ति पकारो यस्स सो अदन्धता·····प०····· पकारो। रूपानं दन्धत्तं रूपदन्धत्तं। रूपदन्धत्तं करोतीति रूपदन्धत्तकरो। धातुं खोभेति चालेतीति धातुक्खोभो, वातपित्तसेम्हपकोपो। 'खुभ'-चलने। रूपदन्धत्तकरो च सो धातु-

---

१. पन रूपस्स—सी०। २. गरुभावस्स—सी०। ३. गरुभाववविनोदनरसा—सी०। ४. अकथिनता—म०। ५. सरीरे-सी०। ६. अविज्जमाने—सी०। ७-७. अदन्धता च लहुपरिवत्ति च अदन्धतालहुपरिवत्ति-सी०।

कूलभावप्पकारो सरीरकिरियानं अननुकूलकर-धातुक्खोभपटिपक्खपच्चयसमुट्ठानो, सो रूपविकारो 'रूपस्स कम्मञ्ञता' ति। एवमेतासं विसेसो वेदितब्बो।

एता पन तिस्सो पि कम्मं कातुं न सक्कोन्ति, आहारादयो व करोन्ति। तथा हि योगिनो 'अज्ज अम्हेहि भोजनसप्पायं लद्धं, कायो नो लहु-मुदु-कम्मञ्ञो' ति वदन्ति। 'अज्ज उतुसप्पायं लद्धं, अज्ज अम्हाकं चित्तं एकग्गं, कायो नो लहुमुदुकम्मञ्ञो' ति वदन्ती ति।

उपचयसन्ततिनिद्देसेसु [ध० १७४] **आयतनानं** ति अड्ढेकादसन्नं रूपायतनानं। **आचयो** ति निब्बत्ति। **सो रूपस्स उपचयो** ति यो आयतनानं आचयो पुनप्पुनं निब्बत्तमानानं, सो रूपस्स उपचयो नाम होति; वड्ढी ति अत्थो। **यो रूपस्स उपचयो सा रूपस्स सन्तती** ति या एवं उपचितानं रूपानं वड्ढि, ततो उत्तरितरं पवत्तिकाले सा रूपस्स सन्तति नाम होति;पवत्ती ति अत्थो। नदीतीरे खतकूपस्मि हि उदकुग्गमकालो विय आचयो, निब्बत्ति; परिपुण्णकालो विय उपचयो, वड्ढि; अज्झोत्थरित्वा गमनकालो विय सन्तति, पवत्ती ति वेदितब्बा।

क्खोभो चा ति रूपदन्धत्तकरधातुक्खोभो। रूपदन्धत्तकरधातुक्खोभस्स पटिपक्खा रूप····प०···· पढिपक्खा। रूपदन्धत्तकरधातुक्खोभपटिपक्खा च ते पच्चया चा ति रूपदन्धत्तकरधातुक्खोभपटिपक्खपच्चया। सप्पाय-उतु-आहारा विक्खित्तता[1]। रूपदन्धत्तकरधातुक्खोभपटिपक्खपच्चयेहि समुट्ठानो रूप···प०····समुट्ठानो। सुपरिमद्दितचम्मस्सेवा ति[2] सुट्ठु परिमद्दितचम्मस्स इव। वसं समत्तभावं[3] वत्तेतीति वसवत्तिनो, पुग्गलो। वसवत्तनस्स भावो वसवत्तनभावो। वसवत्तनभावो च मद्दवञ्च वसवत्तनभावमद्दवं। वसवत्तनभावमद्दवप्पकारो [१७६–म०] विसेसो वस····प····प्पकारो। एतासं ति रूपस्स लहुतादीनं।

एता रूपस्स लहुतादयो। आहारादयो वा ति आदिसद्देन उतुचित्तानि सङ्गण्हन्ति। तथा हीति[4] दळ्हीकरणं। योगिनो ति पदं वदन्ती ति पदे कत्ता। नो ति अम्हाकं। एकं अग्गं आरम्मणं अस्सा ति एकग्गं, एकीभावं[5] अजति[6] गच्छतोति[7] एकग्गं।

उपचयो ति पदस्स अत्थं ञापेन्तो आह—वड्ढीति अत्थो ति। ततो ति वड्ढिकालतो। आचयो ति निब्बत्तीति आदिना वुत्तमत्थं उपमाय साधेन्तो नदीतीरे ति आदि। सन्ततीति पदं वेदितब्बा ति पदे कम्मं। अभिधम्मावतारटीकायं पन पटिसन्धिक्खणे रूपुप्पत्ति आचयभावतो आचयो नाम, ततो परं याव सत्तरसमचित्तुप्पादा वड्ढिभावतो उपचयो नाम। तदा हि रूपस्स कम्मचित्त-उतूहि चयो[8] येव, न हानि[9]। अथवा याव आहारसमुट्ठानं[10] रूपुप्पादो[10] चक्खादि-उप्पादो[11] वा ताव उपच्चयो नाम। ततो परं पन (२०८–सी०) चुतिपरियोसानं सन्ततिनामा ति सुमङ्गलाचरियेन वुत्तं।

---

१. विक्खित्तचित्तता–सी०। २. सुपरिमद्धित०–सी०। ३. समत्थभावं–सी०। ४. ०आदि–सी०। ५. एकभावं–सी०। ६. अग्गति–सी०। ७. ०वा–सी०। ८. आचयो–सी०। ९. होति–सी०। १०-१०. आहारसमुट्ठानरूपुप्पादो–सी०। ११. नत्थि–सी०।

एवं किं कथितं होती ति ? आयतनेन आचयो कथितो, आचयेन आयतनं कथितं। आचयो व कथितो आयतनमेव कथितं। एवं पि किं कथितं होती ति ? चतुसन्ततिरूपानं आचयो उपचयो निब्बत्ति वड्ढि कथिता। अत्थतो हि उभयं पेतं जातिरूपस्सेवाधिवचनं। आकारनानत्तेन पन वेनेय्यवसेन च उपचयो सन्तती ति उद्देसदेसनं कत्वा यस्मा एत्थ अत्थतो नानत्तं नत्थि, तस्मा निद्देसे "यो आयतनानं आचयो सो रूपस्स उपचयो, यो रूपस्स उपचयो सा रूपस्स सन्तती" [ध० १७४] ति वुत्तं। यस्मा च उभयं पेतं जातिरूपस्सेवाधिव्रचनं तस्मा एत्थ आचयलक्खणो रूपस्स उपचयो, पुब्बन्ततो रूपानं उम्मुज्जापनरसो, निय्यातनपच्चुपट्ठानो

एवं यो आयतनानं आचयो ति आदिनिद्देसेन किं भगवता कथितं होति इति पुच्छा। यो आयतनानं ति आदिनिद्देसेन आचयायतनद्वयं कथितं ति आपेन्तो आह–आचयो कथितो आयतनमेव कथितं ति। एवम्पि आयतनेन आचयायतनादिना किं भगवता कथितं इति पुच्छा। चतु....प०....आचयो कथितो चतु....प०....रूपानं[1] उपचयो कथितो ति सम्बन्धो। निब्बत्तीति आदि विवरणं। निब्बत्तीति कथिता वड्ढता कथिता भगवता ति योजना। किं पन उपचयसन्ततियो भिन्ना ति आह–अत्थतो हीति आदि। उपचयसन्ततिसङ्खातं उभयं ति एतं रूपं जातिरूपस्सेतं[2] अधिवचनं। उभयस्स पि रूपुप्पादभावत्ता ति अधिप्पायो। यदि उभयम्पेतं जातिरूपं नाम, कस्मा विभजनं वुत्तं ति आह–आकारा ति आदि। आकारनानत्तेना ति पुनप्पुनं निब्बत्तमानानं ति आदिना वुत्त-आकारनानत्तेन[3]। वेनेय्यानं वसेन चा ति अयं जाति सब्बेसं धम्मानं पभवो सयं न कुतोचि जायतीति वेनेय्यानं वा मिच्छागाहं विधमन्तो यथा[4] जातिनाम न अञ्ञा उपचयसन्ततिवसेन ठितरूपुप्पत्ति येव पन तथा वुच्चति आचयस्स उप्पादो तिस्स पच्चयेहेव जातिपरियायं लभतीति दस्सनत्थं उपचयो सन्ततीति द्विधा भिन्दित्वा दस्सेतीति आचरिया। कस्मा ति[5] पदं वत्तन्तीति[6] पदे पुब्बकालक्रिया। एत्था ति उपचयसन्ततीसु। तस्मा निद्देसेना ति[7] वचनं (१७७-म०) भगवता वुत्तं। तस्मा ति पदं वेदितब्बं[8] ति पदे हेतु। एत्था ति उपचयसन्ततीसु, निद्धारणं। पुब्बन्ततो पुब्बकोट्ठासतो अनागतभावतो ति अत्थो। उपचयमाने[9] रूपधम्मे उप्पादो अनागतलक्खणता उम्मुज्जापेन्तो विय होतीति वुत्तं उम्मुज्जापनरसो ति। रूपानं उम्मुज्जापनं विय रसो अस्सा ति उम्मुज्जापनरसो। इमे रूपधम्मे सम्पटिच्छथा ति निय्यादेन्तो[10] विय दहतीति[11] वुत्तं निय्यादनपच्चुपट्ठानो ति[12]। उपरि चयो उपचयो ति इमस्स अत्थस्स वसेनेव परिपुण्णभावेन पच्चुपट्ठातीति परिपुण्णभावपच्चुपट्ठानो। उपरि[13]चितरूपं[13] उप्पादक्खणगतरूपपदट्ठानं[14] अस्सा ति उपचितरूपपदट्ठानो। पवत्तिलक्खणा ति अनुपबन्धतो उप्पत्तिवसेन पवत्तमानरूपानं पवत्तं ति लक्खितब्बा। अनुपबन्धरसा ति (२०९-सी०) पुब्बापरवसेन अनुपबन्धनकिच्चा। अनुप-

---

१. रूपादीनं–सी०। २. जातिरूपस्सेव–सी०। ३. वुत्तं आकारनानत्तं–सी०। ४. सत्था–सी०। ५. कत्वा ति–सी०। ६. वुत्तं ति–सी०। ७. निद्देसे इति–सी०। ८. वेदितब्बा–सी०। ९. उप्पज्जमाने–सी०। १०. निय्यातेन्तो। ११. गय्हतीति–सी०। १२. निय्यातन०–सी०। १३-१३. उपचितरूपं–सी०। १४. उप्पादक्खणगतं रूपपदट्ठानं–सी०।

परिपुण्णभावपच्चुपट्ठानो वा, उपचितरूपपदट्ठानो। पवत्तिलक्खणा रूपस्स सन्तति, अनुप्पबन्धनरसा, अनुपच्छेदपच्चुपट्ठाना, अनुप्पबन्धरूपपदट्ठाना ति वेदितब्बा।

जरतानिद्देसे [ध० १७५] जीरणकवसेन **जरा**; अयमेत्थ सभावनिद्देसो। जीरणाकारो **जीरणता**। खण्डिच्चं ति आदयो तयो कालातिक्कमे किच्चनिद्देसा। पच्छिमा द्वे पकतिनिद्देसा। अयं हि 'जरा'ति इमिना पदेन सभावतो दीपिता; तेन'स्सा'यं सभावनिद्देसो। 'जीरणता'ति इमिना आकारतो; तेन'स्सा'यं आकारनिद्देसो। **खण्डिच्चं** ति इमिना कालातिक्कमेन दन्तनखानं खण्डितभावकरणकिच्चतो। **पालिच्चं** ति इमिना केसलोमानं पलितभावकरणकिच्चतो। **वलित्तचता** ति इमिना मंसं मिलापेत्वा तचे वलिभावकरणकिच्चतो दीपिता। तेन'स्सा इमे 'खण्डिच्चं'ति आदयो तयो कालातिक्कमे किच्चनिद्देसा। तेहि इमेसं विकारानं दस्सनवसेन पाकटीभूता पाकटजरा दस्सिता। यथेव हि उदकस्स वा अग्गिनो वा तिणरुक्खादीनं सम्भग्गपलिभग्गताय वा झामताय वा गतमग्गो पाकटो होति, न च सो गतमग्गो तानेव उदकादीनि, एवमेव जराय दन्तादीसु खण्डिच्चादिवसेन गतमग्गो पाकटो, चक्खुं उम्मीलेत्वा पि गय्हति, न च खण्डिच्चादीनेव जरा। न हि जरा चक्खुविञ्ञेय्या होति।

आयुनो संहानि इन्द्रियानं परिपाको ति इमेहि पन पदेहि कालातिक्कमे येव अभिब्यत्ताय आयुक्खय-चक्खादि-इन्द्रियपरिपाक-सञ्ञिताय पकतिया दीपिता। तेन'-

---

बन्धरसत्ता येव अनुपच्छेदवसेन पच्चुपट्ठातीति अनुपच्छेदपच्चुपट्ठानो। पुब्बापरवसेन घट्टितरूपेसु उपलब्भनतो वुत्तं अनुपबन्धरूपपदट्ठाना ति।

एत्था ति जरतानिद्देसे। अयं हीति आदि वित्थारो। हि सच्चं, अयं जरता भगवता दस्सिता। तेनस्सा ति तेन कारणेन अस्सा जरताय। अयं जरा ति निद्देसो। तेहीति जरति[1] आदिपदेसु[1] दस्सिता ति पदे करणं। दस्सनवसेना ति पदं पाकटीभूता ति पदे ततियाविसेसनं। यथेव हीति आदिना वुत्तमत्थं उपमाय साधेति। उदकस्स वा अग्गिनो वा ति पदद्वयं गतमग्गो ति पदे सम्बन्धो। तिणरुक्खादीनं ति पदं....प०....झामताया ति[2] पदद्वये सम्बन्धो। संभग्गा[3] च पटिभग्गा[4] च विसुं[5] भग्गा च[5] संभग्गपटिभग्गा[6]। तेसं भावो....प०....ता। अग्गिना झायन्तो ति झामा। झामानं भावो झामता। संभग्ग[7]....प०....ताय वा ति पदद्वयं गतं[8] इति पदे[9] पाकटो[10] इति पदे[10] ततियाविसेसनं। सो गतमग्गो तानेव उदकादीनि न च। जराया ति पदं गतमग्गो ति पदे सम्बन्धो। दन्तादीसू ति पदं गत[11] इति पदे आधारो। खण्डिच्चादिवसेना ति पदं तेना ति[12] पदे ततियाविसेसनं। न हीति आदि दळ्हीकरणं।

पभेदेहीति पदं दीपिता ति पदे करणं। कालातिक्कमे येवा ति अभिब्यत्ताया ति पदे कालसत्तमी। आयुक्खयाया ति पदे[13] ततियाविसेसनं। चक्खादीनं इन्द्रियानं परिपाको

१-१. जरा ति आदिपदेहि–सी०। २. झामताय वा ति–सी०। ३. सम्भत्ता–सी०। ४. पटिभत्ता–सी०। ५-५. नत्थि–सी०। ६. सम्भत्तपटिभत्ता–सी०। ७. सम्भत्त–सी०। ८. गतमग्गो-सी०। ९. ०वा-सी०। १०-१०. पाकटो ति पदे वा-सी०। ११. गतमग्गो-सी०। १२. गतमग्गो इति-सी०। १३. पदं पाकाति पदे-सी०।

स्सिमे पच्छिमा द्वे पकतिनिद्देसा ति वेदितब्बा। तत्थ यस्मा जरं पत्तस्स आयु हायति, तस्मा जरा 'आयुनो संहानी'ति फलूपचारेन वुत्ता। यस्मा च दहरकाले सुप्पसन्नानि, सुखुमं पि अत्तनो विसयं सुखेनेव गण्हनसमत्थानि चक्खादीनि इन्द्रियानि जरं पत्तस्स परिपक्कानि आलुळितानि अविसदानि, ओळारिकं पि अत्तनो विसयं गहेतुं असमत्थानि होन्ति, तस्मा 'इन्द्रियानं परिपाको' ति पि फलूपचारेनेव वुत्ता।

सा पनायं एवं निद्दिट्ठा सब्बा पि जरा पाकटा पटिच्छन्ना ति दुविधा होति। तत्थ दन्तादीसु खण्डभावादिदस्सनतो रूपधम्मेसु जरा पाकट-जरा नाम। अरूपधम्मेसु जरा तादिसस्स विकारस्स अदस्सनतो पटिच्छन्न-जरा नाम। पुन अ वीचि स-वीची ति एवं पि दुविधा होति। मणि-कनक-रजत-पवाळ-चन्दिम-सुरियादीनं विय, मन्ददसकादीसु पाणिनं विय च, पुप्फफलपल्लवादीसु च अपाणिनं विय, अन्तरन्तरा वण्णविसेसानं दुविञ्ञेय्यत्ता जरा अ-वीचि जरा नाम; निरन्तरजरा ति अत्थो। ततो अञ्ञेसु पन यथावुत्तेसु अन्तरन्तरा वण्णविसेसादीनं सुविञ्ञेय्यत्ता जरा स-वीचि जरा नामा ति वेदितब्बा। लक्खणादितो पि रूपपरिपाकलक्खणा रूपस्स जरता, उपनयनरसा, सभावानपगमे पि नवभावापगमपच्चुपट्ठाना, वीहिपुराणभावो विय परिपच्चमानरूपपदट्ठाना ति वेदितब्बा।

चक्खादि....प०....पाका इति सञ्ञिता। सञ्जानितब्बा आयु..प०... सञ्ञिता। पकतिया जरा दीपिता भगवता ति योजना। तत्था ति आयुनो संहानीति आदीसु द्वीसु, निद्धारणं। जरा ति पदं वुत्ता ति पदे कम्मं। (१७८-म०) फलूपचारेना ति फलस्स नामेन, फलस्स वाचकसद्देना ति अधिप्पायो। सुखुमम्पीति अपिसद्दो सम्भावने, पगेव ओळारिके ति अधिप्पायो। विसयं ति रूपादि-आरम्मणं।

सापनायं जरा ति सम्बन्धो। तत्था ति पाकटजरादीसु। रूपधम्मेसू ति पदं जरा ति पदे आधारो। दुविधा जरा होन्ति[१]। तत्था ति अवीचिजरादीसु, मणिसूरियादीनं दुविञ्ञेय्यजरा[२] विया ति योजेतब्बो। चसद्दो अपाणीनं विय चा ति योजेतब्बो। (२१०-सी०) रूप· पुप्फ....प०... पल्लवादीसू ति पदं अपाणीनं ति पदे आधारो। अपाणीनं ति[३] जरा ति[४] विय। ततो ति मणि-आदिठानतो अञ्ञेसु पन यथा वुत्तेसु ठानेसु। लक्खणादितो पि जरा वेदितब्बा ति योजना। रूपपरिपाको ति रूपधम्मानं जिण्णत्ता[५]। जरप्पत्तस्स[६] भङ्गो अवस्सम्भावीति वुत्तं उपनयनरसा ति, भङ्गुपनयनकिच्चा ति अत्थो। सभावानपगमे पि कक्खळत्तादिसभावानपगमे पि। अपगमे पी ति पदं पच्चुपट्ठाना ति पदे लक्खणक्रिया। अपिसद्दो सम्भावने। नवभावो ति उप्पादो। नवभावस्स अपगमो[७] नवाभावेन[८] पच्चुपट्ठातीति नवभावापगमपच्चुपट्ठाना।

---

१. होंति–सी०। २. दुविञ्ञेय्या जरा–सी०। ३. ति नत्थि–सी०। ४. ति नत्थि–सी०। ५. जिण्णता–सी०। ६. जरम्पत्तस्स–सी०। ७. ०नवभावापगमो–सी०। ८. नवभावापगमेन–सी०।

अनिच्चतानिद्देसे [ध० १७४] खयगमनवसेन **खयो,** वयगमनवसेन **वयो,** भिज्जनवसेन **भेदो**। अथवा, यस्मा तं पत्वा रूपं खिय्यति, वेति, भिज्जति च, तस्मा खिय्यति एतस्मिं ति 'खयो', वेति एतस्मिं ति 'वयो', भिज्जति एतस्मिं ति 'भेदो'। उपसग्गवसेन पदं वड्ढेत्वा भेदो व **परिभेदो**। हुत्वा अभावट्ठेन, न निच्चं ति अनिच्चं। तस्स भावो **अनिच्चता**। अन्तरधायति एत्था ति **अन्तरधानं**। मरणं हि पत्वा रूपं अन्तरधायति, अदस्सनं गच्छति। न केवलं च रूपमेव, सब्बे पि पञ्चक्खन्धा। तस्मा पञ्चन्नं पि खन्धानं अनिच्चताय इदमेव लक्खणं ति वेदितब्बं। लक्खणादितो पन परिभेदलक्खणा रूपस्स अनिच्चता, संसीदनरसा, खयवयपच्चुपट्ठाना, परिभिज्जमानरूपपदट्ठाना ति वेदितब्बा। हेट्ठा जाति गहिता जरा गहिता, इमस्मिं ठाने मरणं गहितं। इमे तयो धम्मा इमेसं सत्तानं उक्खित्तासिकपच्चामित्तसदिसा।

यथा हि पुरिसस्स तयो पच्चामित्ता ओतारं गवेसमाना विचरेय्युं। तेसु एको एवं वदेय्य–'एतं नीहरित्वा अटवीपवेसनं मय्हं भारो होतू' ति। दुतियो 'अटवीगतकाले पोथेत्वा पठवियं पातनं मय्हं भारो' ति। ततियो 'पठवीगतकालतो पट्ठाय असिना सीसच्छेदनं मय्हं भारो'ति। एवरूपा इमे जाति-आदयो। नीहरित्वा अटवीपवेसनपच्चामित्तसदिसा हेत्थ जाति, तस्मिं तस्मिं ठाने निब्बत्तापनतो। अटवीगतं पोथेत्वा पठवियं पातनपच्चामित्तसदिसा जरा, निब्बत्तक्खन्धानं दुब्बलपराधीनमञ्चपरायनभावकरणतो। पठवीगतस्स असिना सीसच्छेदनकपच्चामित्तसदिसं मरणं, जरापत्तानं खन्धानं जीवितक्खयं पापनतो ति।

वीहिपुराणभावो विया ति वीहिभावानपगमे पि अभिनवभावापगमनकरो वीहिपुराणभावो विय।

तस्मा ति पदं खयो ति पदे हेतु। रूपं खियति[1] तस्मिं[2] सभावे इति अत्थेन सोसभावो खयो नाम। सब्बे पि पञ्चक्खन्धा अन्तरधायन्ति। अनिच्चताया ति पदं लक्खणं ति पदे ततियाविसेसनं। परिभेदलक्खणा ति परितो सब्बसो भिज्जनं ति लक्खितब्बा। ठितियमेव विनासनसभावेन संसीदन्ती विय होतीति संसीदनरसा। खयवयाकारेन पच्चुपट्ठाती ति खयवयपच्चुपट्ठानं[3]। उक्खित्तो[4] असि येहि ते उक्खित्तासिका। उक्खित्तासिका च ते पच्चामित्ता चा ति उक्खित्तासिकपच्चामित्ता। तेहि सदिसा उक्खित्ता....प०....मित्तसदिसा।

यथा हीति आदिवित्थारो। दुब्भितुं अवतरन्ति एतेना ति ओतारो। तेसू ति तीसु पच्चामित्तेसु। नीहरित्वा ति आदि दळ्हीकरणं। हि सच्चं एत्थ जाति-आदीसु। निब्बत्तापनतो ति पदं नीह....प०....सदिसा ति पदे ञापकहेतु। निब्बत्तक्खन्धानं ति पदं भाव इति पदे सम्बन्धो। दुब्बलपराधीनं ति पदं निब्बत्तक्खन्धानं ति पदस्स विसेसनं। दुब्बलभावेन पराधीनं आयत्तं[5] ति अत्थो। मञ्चेन परायना पटिबद्धा मञ्चपरायना। दुब्बलभावो च पराधीनभावो च

---

१. खयति–सी०। २. एतस्मिं–सी०। ३. ०पच्चुपट्ठाना–सी०।
४. उक्खित्ता–सी०। ५. आयत्तानं–सी०।

कबळिंकाराहारनिद्देसे [ध० १७४] कबळं करीयती ति **कबळिंकारो**। आह-रीयती ति **आहारो**। कबळं कत्वा अज्झोहरीयती ति अत्थो। रूपं आहरती ति 'आहारो'। एवं वत्थुवसेन नामं उद्धरित्वा पुन वत्थुवसेनेवेतं पभेदतो दस्सेतुं **ओदनो कुम्मासो** ति आदि वुत्तं। ओदनादीनि हि फाणितपरियन्तानि द्वादस इधाधिप्पेतस्स आहारस्स वत्थूनि। पालियं अनागतानि मूलफलादीनि ये-वा-पनकं पविट्ठानि। इदानि तानि मूलफलादीनि कत्तब्बतो दस्सेतुं **यम्हि यम्हि जनपदे** ति आदिमाह। तत्थ मुखेन असितब्बं भुञ्जितब्बं ति **मुखासियं**। दन्तेहि विखादितब्बं ति **दन्तविखादनं**। गलेन अज्झोहरितब्बं ति **गलज्झोहरणीयं**। इदानि तं किच्चवसेन दस्सेतुं **कुच्छि-वित्थम्भनं** ति आह। तं हि मूलफलादि ओदनकुम्मासादि वा अज्झोहटं कुच्छि वित्थम्भेति। इदमस्स किच्चं। **याय ओजाय सत्ता यापेन्ती** ति हेट्ठा सब्बपदेहि सवत्थुकं आहारं दस्सेत्वा इदानि निब्बत्तित-ओजमेव दस्सेतुं इदं वुत्तं।

किं पनेत्थ वत्थुस्स किच्चं ? किं ओजाय ? परिस्सयहरण-पालनानि। वत्थुं हि परिस्सयं हरति पालेतुं न सक्कोति, ओजा पालेति परिस्सयं हरितुं न सक्कोति। द्वे पि एकतो हुत्वा पालेतुं पि सक्कोन्ति परिस्सयं पि हरितुं। को पनेस परिस्सयो नाम ? कम्मजतेजो। अन्तोकुच्छियं हि ओदनादिवत्थुस्मिं असति, कम्मजतेजो उट्ठहित्वा उदरपटलं गण्हाति, 'छातो'स्मि, आहारं देथा'ति वदापेति। भुत्तकाले उदरपटलं मुञ्चित्वा वत्थुं गण्हाति। अथ सत्तो एकग्गो होति।

मञ्चपरायनभावो च दुब्बलपराधीनमञ्चपरायनभावो। दुब्बलपराधीनमञ्चपरायनभावस्स करणं दुब्बलपराधीनमञ्च····प०····करणं।

[१७९-म०] यो ओदनादि सत्तेन कबळं करियति इति तस्मा सो कबळिकारो[१]। यदादिना ई। ईकारस्स रस्सो, निग्गहितागमो। सद्दनीतिकारकेन पन अग्गवंसाचरियेन करभूयोगेन इ ई च (२११-सी०) होती ति वुत्तं। आहरती ति पच्चयभावेन उपत्थम्भेती ति अधिप्पायो। पि-सद्दो हेट्ठा वुत्तवचनत्थं अपेक्खति। एतं ति आहारं। इधा ति आहाराधिकारे। कत्तब्बतो ति सत्तेहि कत्तब्बभावतो। तत्था ति मुखासियं ति आदिवचने विनिच्छयो वेदितब्बो। तं ति वत्थुं। तं हीति दळ्हीकरणं[२]। हि सच्चं तं वत्थु मूल प०····दि वासद्देन अज्झोहटं[३]। अस्सा ति ओदनादिवत्थुस्स। याय ओजाय सत्ता यापेन्ती ति पदं इदं ति पदस्स सरूपं। याय····प० ····यापेन्तीति इदं वचनं भगवता वुत्तं ति सम्बन्धो।

एत्थ वत्थु-ओजासु किं पन वत्थुस्स किच्चं किच्चभूतं, किं ओजाय किच्चं इति पुच्छा ति योजना। परि····प०····नानि वत्थु-ओजानं किच्चानि। वत्थूहीति आदि वित्थारो। द्वे पी ति वत्थु-ओजा। कम्मजतेजस्स परिस्सयभावं ञापेन्तो आह-अन्तो ति आदि। वदापेति जनक-कम्मजतेजा ति[४] सम्बन्धो। वत्थुं ति ओदनादिवत्थुं। अथा ति तदा।

---

१. कबलिंकारो—सी० सब्बत्थ। २. आदि दळ्ही०—सी०। ३. अज्झोहतं—सी०। ४. जनं कम्मजतेजो ति—सी०।

यथा हि छायारक्खसो छायं पविट्ठं गहेत्वा देवसङ्खलिकाय बन्धित्वा अत्तनो भवने मोदन्तो छातकाले आगन्त्वा सीसे डंसति। सो डट्ठत्ता विरवति। तं विरवं सुत्वा 'दुक्खप्पत्तो एत्थ अत्थी' ति ततो ततो मनुस्सा आगच्छन्ति। सो आगतागते गहेत्वा खादित्वा भवने मोदति। एवं-सम्पदमिदं वेदितब्बं। छायारक्खसो विय कम्मजतेजो, देवसङ्खलिकाय बन्धित्वा ठपितसत्तो विय उदरपटलं, पुन आगतमनुस्सा विय ओदनादिवत्थु, अत्तनो भवने मोदन्तेन छातकाले ओतरित्वा सीसे डंसनं विय कम्मजतेजस्स वत्थुतो मुत्तस्स उदरपटलगहणं, डट्ठस्स विरवनकालो विय 'आहारं देथा' ति वचनकालो, ताय सञ्ञाय आगतागते गहेत्वा खादित्वा भवने मोदनकालो विय कम्मजतेजेन उदरपटलं मुञ्चित्वा वत्थुस्मिं गहिते एकग्गचित्तता।

तत्थ ओळारिके वत्थुस्मिं ओजा मन्दा होति। सुखुमे बलवती। कुद्रूसकभत्तादीनि हि भुञ्जित्वा मुहुत्तेनेव छातो होति। सप्पि-आदीनि पिवित्वा ठितस्स दिवसं पि भत्तं न रुच्चति। एत्थ च उपादायुपादाय ओळारिकसुखुमता वेदितब्बा। कुम्भीलानं हि आहारं उपादाय मोरानं आहारो सुखुमो। कुम्भीला किर पासाणे गिळन्ति। ते च नेसं कुच्छिप्पत्ता विलीयन्ति। मोरा सप्पविच्छिकादिपाणे खादन्ति। मोरानं पन आहारं उपादाय तरच्छानं आहारो सुखुमो। ते किर तिवस्सछड्डितानि विसाणानि चेव अट्ठीनि च खादन्ति। तानि च नेसं खेळेन तेमितमत्तानेव कन्दमूलं विय मुदुकानि होन्ति। तरच्छानं पि आहारं उपादाय हत्थीनं आहारो सुखुमो। ते हि नानारुक्खसाखादयो खादन्ति। हत्थीनं आहारतो गवयगोकण्णमिगादीनं आहारो सुखुमो। ते किर निस्सारानि नानारुक्खपण्णादीनि खादन्ति। तेसं पि आहारतो गुन्नं आहारो सुखुमो। ते अल्लसुक्खतिणानि खादन्ति। तेसं पि आहारतो ससानं आहारो सुखुमो। ससानं आहारतो सकुणानं आहारो सुखुमो।

वुत्तमत्थं उपमाय पाकटं करोन्तो आह—यथा हीति आदि। छायाय पविट्ठं जनं गण्हनको रक्खसो छायारक्खसो। देवसङ्खलिकाया ति यक्खस्स सङ्खलिकाय इदं सम्पदं पण्डितेन वेदितब्बं। छायारक्खसो विय होति आदि वित्थारो। कम्मजतेजेना ति पदं गहिते ति पदे कत्ता।

तत्था ति ओळारिकादिवत्थूसु, निद्धारणं। वत्थुस्मिं ति पदं ओजा ति पदे आधारो। हिसद्दो दळ्हीकरणं। एत्था ति आहाराधिकारे। कुम्भिलानं हीति आदि वित्थारो। ते[1] पासाणा। नेसं कुम्भिलानं। तीणि वस्सानि तिवस्सं। तिवस्सं छट्टितानि[2] तिवस्सछट्टितानी ति[3] पि अत्थि। तानि च विसाणादीनि। नेसं ति तरच्छानं[4]। ते ति हत्थिनो। गवया च गोकण्णमिगा च गवयगोकण्णमिगा। ते ति गवयादयो। तेसं[5] गवयादीनं। ते ति गावो। तेसं गवानं।

---

१. ते च–सी०। २. छद्दितानि–सी०। सब्बत्थ। ३. तिवस्सछद्दितानि। छड्डितानि–सी०। ४. तरच्छानानं–सी०। ५. तेसं पि–सी०।

सकुणानं आहारतो पच्चन्तवासीनं आहारो सुखुमो। पच्चन्तवासीनं आहारतो गामभोजकानं आहारो सुखुमो। गामभोजकानं आहारतो राजराजमहामत्तानं आहारो सुखुमो। तेसं पि आहारतो चक्कवत्तिनो आहारो सुखुमो। चक्कवत्तिनो आहारतो भुम्मदेवानं आहारो सुखुमो। भुम्मानं देवानं आहारतो **चातुम्महाराजिकानं** आहारो सुखुमो। एवं याव **परनिम्मितवसवत्तीनं** आहारो वित्थारेतब्बो। तेसं पनाहारो सुखुमो त्वेव निट्ठं पत्तो। लक्खणादितो पि ओजालक्खणो कबळिंकाराहारो, रूपाहरणरसो, उपत्थम्भनपच्चुपट्ठानो, कबळं कत्वा आहरितब्बवत्थुपदट्ठानो ति वेदितब्बो।

नो-उपादानिद्देसे [ध० १७५] यथा उपादारूपं उपादियतेव, न अञ्ञेन उपादियति, एवमेतं न उपादियतेवा ति **नो-उपादा**। फुसितब्बं ति **फोट्ठब्बं**। फुसित्वा जानितब्बं ति अत्थो। फोट्ठब्बं च तं आयतनं चा ति **फोट्ठब्बायतनं**। आपो च तं निस्सत्त-सुञ्ञत-सभावट्ठेन धातु चा ति **आपोधातु**।

इदानि यस्मा तीणि रूपानि फुसित्वा जानितब्बानि तस्मा तानि भाजेत्वा दस्सेतुं **कतमं तं रूपं फोट्ठब्बायतनं? पठवीधातू** [ध० १७५] ति आदिमाह। तत्थ कक्खळत्तलक्खणा पठवीधातु, पतिट्ठानरसा, सम्पटिच्छनपच्चुपट्ठाना। **तेजोधातु** उण्हत्तलक्खणा, परिपाचनरसा, मद्दवानुप्पदानपच्चुपट्ठाना। **वायोधातु** वित्थम्भन-लक्खणा, समुदीरणरसा, अभिनीहारपच्चुपट्ठाना। पुरिमा पन 'आपोधातु' पग्घरण-लक्खणा, ब्रूहनरसा, सङ्गहपच्चुपट्ठाना। एकेका चेत्थ सेसत्तयपदट्ठाना ति वेदितब्बा।

गामे उप्पन्नं[1] सुङ्कं[1] भुञ्जतीति गामभोजको[2]। तेसम्पि राजराजमहामत्तानं। तेसं ति परनिम्मितवसवत्तीनं। अत्तनो उदयानन्तरं रूपं जनेतीति ओजा। उपुब्ब 'जन'-जनने। ओजा इति लक्खितब्बो ओजालक्खणो। रूपाहरणरसो ति ओजट्ठमकरूपस्स पच्चयभावेन आहरण-किच्चो। उपत्थम्भनपच्चुपट्ठानो ति ओजट्ठमकरूपाहरणवसेनेव इमस्स कायस्स [२१२-सी०] उप्पत्थम्भनवसेन पच्चुपट्ठानो।

[१८०-म०] उपादारूपं ति पदं उपादियते ति[3] पदे सुद्धकत्ता। अञ्ञेन रूपेन उपादियते ति पदे ततियाकत्ता। एतं ति नो-उपादा रूपं, न उपादियते ति पदे कत्ता।

तानीति[4] तीणि रूपानि। तत्था ति पथवीधातु-आदीसु। लक्खियति एतेना ति लक्खणं। कक्खळत्तं लक्खणं एतिस्सा ति कक्खळत्तलक्खणा। अथवा लक्खियतीति लक्खणं, कम्मसाधनं। कक्खळभावो[5] हुत्वा लक्खियमाना धातु कक्खळत्तलक्खणा। पतिट्ठानरसा ति सहजातधम्मानं पतिट्ठाभावकिच्चा। असहजातानम्पि सन्ततिवसेन पतिट्ठा होतेव। सहजातरूपानं सम्पटिच्छ-नाकारेन ञाणस्स पच्चुपट्ठाति सम्पटिच्छनपच्चुपट्ठाना। परिपाचनरसा ति परिणतभाव-

---

१-१. गामसुङ्कं–सी०। २. ०भोजका–सी०। ३. उपादियते वा ति–सी०। ४. तानि –सी०। ५. ०भावा–सी०।

कक्खळं ति थद्धं। **मुदुकं** ति अ-थद्धं। **सण्हं** ति मट्ठं। **फरुसं** ति खरं। **सुखसम्फस्सं** ति सुखवेदनापच्चयं इट्ठफोट्ठब्बं। **दुक्खसम्फस्सं** ति दुक्खवेदनापच्चयं अनिट्ठफोट्ठब्बं। **गरुकं** ति भारियं। **लहुकं** ति अ-भारियं, सल्लहुकं ति अत्थो। एत्थ च 'कक्खळं मुदुकं सण्हं फरुसं गरुकं लहुकं' ति पदेहि पठवीधातु एव भाजिता। "यदा' यं कायो आयु-सहगतो च होति उस्मासहगतो च विञ्ञाणसहगतो च तदा लहुतरो च होति मुदुतरो च कम्मञ्ञतरो चा" [ ] ति सुत्तन्ते पि लहुमुदुभूतं पठवीधातुमेव सन्धाय वुत्तं।

'सुखसम्फस्सं दुक्खसम्फस्सं' ति पदद्वयेन पन तीणि पि महाभूतानि भाजितानि। पठवीधातु हि सुखसम्फस्सा पि अत्थि दुक्खसम्फस्सा पि। तथा तेजोधातु-वायोधातुयो। तत्थ सुखसम्फस्सा पठवीधातु मुदुतलुणहत्थे दहरे पादे सम्बाहन्ते अस्सादेत्वा अस्सादेत्वा 'सम्बाह तात, सम्बाह ताता'ति वदापनाकारं करोति। सुखसम्फस्सा तेजोधातु सीतसमये अङ्गारकपल्लं आहरित्वा गत्तं सेदेन्ते अस्सादेत्वा अस्सादेत्वा 'सेदेहि ताता'ति वदापनाकारं करोति। सुखसम्फस्सा वायोधातु उण्हसमये वत्तसम्पन्ने दहरे वीजनेन वीजन्ते अस्सादेत्वा अस्सादेत्वा 'वीज ताता' ति वदापनाकारं करोति। थद्धहत्थे पन दहरे पादे सम्बाहन्ते अट्ठीनं भिज्जनकालो विय होति। सो पि 'अपेही' ति वत्तब्बकं आपज्जति। उण्हसमये अङ्गारकपल्ले आभटे 'अपनेहि नं' ति वत्तब्बं होति। सीतसमये वीजनेन वीजन्ते 'अपेहि, मं मा वीजा' ति वत्तब्बं होति। एवमेतासं सुखसम्फस्सता दुक्खसम्फस्सता च वेदितब्बा। **यं फोट्ठब्बं अनिदस्सनं**

करणरसा। मद्दवानुप्पादनपच्चुपट्ठाना बाहिरग्गि विय जतुलोहादीनं सहजातधम्मानं मद्दवकरणरसा। भावानुप्पादनपच्चुपट्ठाना[१]। वित्थम्भनलक्खणा ति पुराणलक्खणा। समुदीरणरसा ति कम्पनरसा। संपुब्बक 'ईर'-कम्पने[२]। भावे य्यु[३]। अभिनीहारो ति भूतत्तयस्स देसन्तरुप्पत्तिहेतुभावो। नीहरणं वा बीजादितो अङ्कुरादिकस्स विय। पग्घरणलक्खणा ति द्रवताभावतो विस्सन्दनलक्खणा। ब्रूहनरसा ति सहजातधम्मानं मिलातभावूपगमनं अदत्वा वड्ढनकिच्चा[४]। सङ्गहपच्चुपट्ठाना ति बाहिरक-उदकं विय नहानियं[५] चुण्णस्स[५] सहजातधम्मानं विकिण्णतं अदत्वा सम्पिण्डनवसेन सङ्गहपच्चुपट्ठाना। एकेका....प०....तब्बा ति पथवीधातु आपादिभूतत्तयपदट्ठाना। आपोधातु पथवीतेजादिभूतत्तयपदट्ठाना ति एवं एकेका धातु अवसिट्ठपदट्ठाना[६]। एत्था ति कक्खळं ति आदिपदेसु, निद्धारणं। यदायं ति यदा अयं कायो आयुसहजातो जीवितिन्द्रियसहगतो। उस्मासहगतो ति कम्मजतेजसहगतो। यदा[७]....प० .. तरो च इति वचनं सुत्ते पि भगवता वुत्तं। अपिसद्दो अभिधम्मं अपेक्खति।

तत्था ति सुखसम्फस्सादि-पथवीधातूसु। पथवीधातू ति पदं करोतीति पदे कत्ता। मुदुतलुणानि[८] हत्थानि येसं ते मुदुतलुणहत्था[८]। सम्बाहन्ते ति पदं करोतीति पदे लक्खणक्रिया।

---

१. मुद्धभावानुप्पाद०—सी०। २. संपुब्ब-'ईर'-कम्पने—सी०। ३. भावे यु—सी०। ४. ०किच्चो—सी०। ५-५. न्हानचुण्णस्स—सी०। ६. अवसिट्ठभूतत्तयपद०—सी०। ७, तदा —सी०। ८-८. मुदुतत्थणा हत्था येसं ते मुदुतत्थणहत्था—सी०।

सप्पटिघं [ध० १७५] ति आदिना नयेन वुत्ता पन चतूहि चतूहि नयेहि पतिमण्डिता तेरस वारा हेट्ठा रूपायतनादीसु वुत्तनयेनेव वेदितब्बा।

किं पनेतानि तीणि महाभूतानि एकप्पहारेनेव आपाथमागच्छन्ति उदाहु नो ति ? आगच्छन्ति। एवं आगतानि कायप्पसादं घट्टेन्ति न घट्टेन्ती ति ? घट्टेन्ति। एकप्पहारेनेव तानि आरम्मणं कत्वा कायविञ्ञाणं उप्पजति नुप्पज्जती ति ? नुप्पज्जति। कस्मा ? आभुजितवसेन वा हि उस्सदवसेन वा आरम्मणकरणं होति।

तत्थ आभुजितवसेन ताव, पत्तस्मिं हि ओदनेन पूरेत्वा आभटे एकं सित्थं गहेत्वा थद्धं वा मुदुकं वा ति वीमंसन्तो किञ्चा पि तत्थ तेजो पि अत्थि वायो पि अत्थि, पठवीधातुमेव पन आभुजति। उण्होदके हत्थं ओतारेत्वा वीमंसन्तो किञ्चा पि तत्थ पठवी पि अत्थि वायो पि अत्थि, तेजोधातुमेव पन आभुजति। उण्हसमये वातपानं विवरित्वा वातेन सरीरं पहारापेन्तो ठितो मन्दमन्दे वाते पहरन्ते किञ्चा पि तत्थ पठवी पि अत्थि तेजो पि अत्थि, वायोधातुमेव पन आभुजति। एवं आभुजनवसेन आरम्मणं करोति नाम।

यो पन उपक्खलति वा सीसेन वा रुक्खं पहरति भुञ्जन्तो वा सक्खरं डंसति, सो किञ्चा पि तत्थ तेजो पि अत्थि वायो पि अत्थि, उस्सदवसेन पन पठवीधातुमेव आरम्मणं करोति। अग्गिं अक्कमन्तो पि किञ्चा पि तत्थ पठवी पि अत्थि वायो पि अत्थि, उस्सदवसेन पन तेजोधातुमेव आरम्मणं करोति। बहलवातो कण्णसक्खलिं

दिन्तो ति दहरे तपेन्तो। सो पी ति दहरो। अपिसद्दो न पगेव थद्धहत्थे महल्लके ति ञापेति। न[1] अङ्गारकपल्ल इति वचनं वत्तब्बं होति। एतेसं[2] ति (२१३–सी०) पथवी-आदीनं[3]।

किं पन....प०....नो इति पुच्छा। तीणि महाभूतानि आगच्छन्ति। एवं आगतानि महाभूतानि....प०.. घट्टेन्ति इति पुच्छा। एतानि तीणि महाभूतानि घट्टेन्तीति सम्बन्धो। एक(१८१–म०) ...प०...नुप्पज्जति[4] इति पुच्छा। एतानि तीणि महाभूतानीति पदं कत्वा ति पदे कम्मं। एकप्पहारेन....प०....कायविञ्ञाणं नुप्पज्जतीति सम्बन्धो। आभुजितवसेन वा आभोगपटिबन्धेन वा उस्सदवसेन वा आरम्मणकायपसादाधिमत्ततापटिबन्धेन वा आरम्मणं, हि यस्मा होति, तस्मा कायविञ्ञाणं नुप्पज्जतीति सम्बन्धो।

तत्था ति आभुजितवसेन आरम्मणकरणे, निद्धारणं। आभुजितवसेन आरम्मणकरण ताव वेदितब्बं ति सम्बन्धो। हिसद्दो वित्थारजोतको। आभते ति पदं गहेत्वा ति पदे लक्खण-क्रिया। थद्धं वा मुदुकं वा आदेनं इति वीमंसन्तो जनो आभुजतीति सम्बन्धो। तत्थ ति एक-सित्थे। आभुजतीति आभोगं करोति। उण्हो[5] तत्था ति उण्होदके। तत्था ति वाते।

सो ति योजना, करोतीति पदे कत्ता। तत्था ति उपक्खलट्ठानादिके। तत्था ति

---

१. नं–सी०। २. एतासं–सी०। ३. पठवीधातु-आदीनं–सी०। ४. ०तीति–सी०। ५. नत्थि–सी०।

पहरित्वा बधिरभावं करोन्तो विय होति। किञ्चा पि तत्थ पठवी पि अत्थि तेजो पि अत्थि, उस्सदवसेन पन वायोधातुमेव आरम्मणं करोति। यं किंचि धातुं आरम्मण करोन्तस्स कायविञ्ञाणं पि एकप्पहारेन नुप्पज्जति। सूचिकलापेन विद्धस्स एकप्प हारेन कायो घट्टियति। यस्मिं यस्मिं पन ठाने कायप्पसादो उस्सन्नो होति, तत्थ तत्थ **कायविञ्ञाणं उप्पज्जति** ध० १७६]। यत्थ यत्था पि पटिघट्टननिघंसो बलवा होति तत्थ तत्थ पठमं उप्पज्जति। कुक्कुटपत्तेन वणे धोवियमाने पि अंसु अंसु कायप्पसादं घट्टेति। यत्थ यत्थ पन पसादो उस्सन्नो होति, तत्थ तत्थेव कायविञ्ञाणं उप्पज्जति- एवं उस्सदवसेन आरम्मणं करोति। उस्सदवसेनेव कायविञ्ञाणं उप्पज्जति नाम।

कथं पन चित्तस्स आरम्मणतो संकन्ति होती ति? द्वीहाकारेहि होति— अज्झासयतो वा विसयाधिमत्ततो वा। विहारपूजादीसु हि 'तानि चेतियानि चेव पटिमायो च वन्दिस्सामि, पोत्थकम्म-चित्तकम्मानि च ओलोकेस्सामी' ति अज्झा सयेन गतो एकं वन्दित्वा वा पस्सित्वा वा इतरस्स वन्दनत्थाय वा दस्सनत्थाय वा मनं कत्वा वन्दितुं पि पस्सितुं पि गच्छति येव, एवं अज्झासयतो संकन्ति नाम। केलासकूटपटिभागं पन महाचेतियं ओलोकेन्तो ठितो पि अपरभागे सब्बतुरियेसु पग्ग- हितेसु रूपारम्मणं विस्सज्जेत्वा सद्दारम्मणं संकमति। मनुञ्ञगन्धेसु पुप्फेसु वा गन्धेसु वा आगतेसु सद्दारम्मणं विस्सज्जेत्वा गन्धारम्मणं संकमति। एवं विसयाधिमत्ततो संकन्ति नाम।

आपोधातुनिद्देसे [ध० १७६] **आपो** ति सभावनिद्देसो। आपो व **आपोगतं**। सिनेहवसेन **सिनेहो**, सिनेहो व **सिनेहगतं**। **बन्धनत्तं रूपस्सा** ति पठवीधातु-आदिकस्स भूतरूपस्स बन्धनभावो। अयपिण्डि-आदीनि हि आपोधातु आबन्धित्वा बद्धानि करोति। ताय आबद्धत्ता तानि बद्धानि नाम होन्ति। पासाण-पब्बत-तालट्ठि-हत्थिदन्त-गोसिंगा- दीसु पि एसेव नयो। सब्बानि हेतानि आपोधातु एव आबन्धित्वा बद्धानि करोति। आपोधातुया आबद्धत्ता व बद्धानि होन्ति।

अग्गिम्हि। तत्था ति बहलवाते। सूचिकलापेना ति पदं विद्धस्सा ति पदे कत्ता। घट्टियतीति पदे वा करणं। जनेन विद्धस्स नरस्स[1]। अंसु अंसू ति पदं घट्टेती ति पदे कत्ता।

कथं पन....प०....होति[2] पुच्छा। द्वीहाकारेहि सङ्कन्ति होति। विहारपूजादीसु हीति आदि वित्थारो। विहा....प०....सू ति[3] गतो ति[3] आधारो। इतरस्सा ति चेतियादिकस्स। अपरभागे ति परकाले। सद्दारम्मणं सङ्कमति चित्तं ति सम्बन्धो।

अयपिण्डि-आदीनीति पदं आबन्धित्वा ति पदे कम्मं। ताया ति आपोधातुया, आबन्ध- ना ति पदे कत्ता। तानीति अयपिण्डि-आदीनि। सब्बानि गहेत्वा ति हि सच्चं सब्बानि एतानि पासाणादीनि।

---

१. जनस्स—सी०। २. होतीति इति—सी०। ३-३. सू ति पदं ततो ति पदे—सी०।

किं पन पठवीधातु सेसधातूनं पतिट्ठा होन्ती फुसित्वा होति उदाहु अफुसित्वा ? आपोधातु वा अवसेसा बन्धमाना फुसित्वा बन्धति उदाहु अफुसित्वा ति ? पठवीधातु ताव आपोधातुया अफुसित्वा व पतिट्ठा होति, तेजोधातुया च वायोधातुया च फुसित्वा। आपोधातु पन पठवीधातुं पि तेजोधातु-वायोधातुयो पि अफुसित्वा व आबन्धति । यदि फुसित्वा आबन्धेय्य फोट्ठब्बायतनं नाम भवेय्य । तेजोधातु-वायोधातूनं पि सेसधातूसु सकसककिच्चकरणे एसेव नयो ।

तेजोधातु हि पठवीधातुं फुसित्वा झापेति । सा पन न उण्हा हुत्वा झायति । यदि उण्हा हुत्वा झायेय्य उण्हत्तलक्खणा नाम भवेय्य । आपोधातुं पन अफुसित्वा व तापेति । सा पि तप्पमाना न उण्हा हुत्वा तप्पति । यदि उण्हा हुत्वा तप्पेय्य उण्हत्तलक्खणा नाम भवेय्य । वायोधातुं पन फुसित्वा व तापेति । सा पि तप्पमाना न उण्हा हुत्वा तप्पति । यदि उण्हा हुत्वा तप्पेय्य उण्हत्तलक्खणा नाम भवेय्य ।

वायोधातु पठवीधातुं फुसित्वा वित्थम्भेति, तथा तेजोधातुं । आपोधातुं पन अफुसित्वा व वित्थम्भेति । उच्छुरसं पचित्वा फाणितपिण्डे कयिरमाने आपोधातु थद्धा होति न होती ति ? न होति । सा हि पग्घरणलक्खणा । पठवीधातु कक्खळलक्खणा । ओमत्तं पन आपो अधिमत्त-पठवी-गतिकं जातं । सा हि रसाकारेन ठितभावं विजहति, लक्खणं न विजहति । फाणितपिण्डे विलीयमाने पि पठवीधातु न विलीयति । कक्खळलक्खणा हि पठवीधातु पग्घरणलक्खणा आपोधातु । ओमत्ता पन पठवी अधिमत्त-आपगतिका होति । सा पिण्डिकाकारेन ठितभावं विजहति, लक्खणं न विजहति ।

पथवीधातु सेसधातूनं फुसित्वा पतिट्ठा होति[1] ? वा अपरो नयो—आपोधातु सेसधातुयो बद्धमाना फुसित्वा आबन्धति, उदाहु अफुसित्वा आबन्धति इति पुच्छा ति योजना । आपोधातुया ति पदं अफुसित्वा वा ति पदे सहयोगततिया, पतिट्ठा ति पदे सम्पदानं वा । पतिट्ठा ति निस्सयपच्चयभावेन पतिट्ठा तेजोधातुया च····प०····फुसित्वा पतिट्ठा होतीति सम्बन्धो । यदि फुसित्वा (२१४–सी०) आबन्धेय्य आपोधातुया ति योजना । तेजोधातु···· प०····धातूनम्पीति पदं करणे ति पदे सम्बन्धो ।

तेजोधातु हीति आदिवित्थारो । सा ति पथवीधातु । न उण्हा हुत्वा ति उण्हसभावा हुत्वा झायति पटिपज्जति तापेति तेजोधातू ति सम्बन्धो । सा ति दुतियपदस्स । सा ति वायोधातू ति अत्थो ।

आपोधातु पन····प०····वित्थम्भेति, वायोधातू ति योजना । (१८२–म०) उच्छुरसं[2] ····प०····न होति पुच्छा[3] । सा हीति आदिना हेतुं ञापेति । ओमत्तं ति ऊना । आपो ति पदं जातं ति पदे कत्ता । अधिमत्त····प०····गतिकं ति अधिकपथवी-अनुगतं । सा हीति आदि दळ्हीकरणं ।

---

१. किं पन होति–सी० । २. उच्छुरस–म० । ३. इति पुच्छा–सी० ।

चतुन्नं हि महाभूतानं भाव'ञ्ञथत्तमेव होति, लक्खण'ञ्ञथत्तं नाम नत्थि। तस्स अभावो अट्ठानपरिकप्पसुत्तेन [अं० १.२०६] दीपितो। वुत्तं हेतं—"सिया खो पनानन्द, चतुन्नं महाभूतानं अञ्ञथत्तं, पठवीधातुया आपोधातुया तेजोधातुया वायोधातुया; न त्वेव बुद्धे अवेच्चप्पसादेन समन्नागतस्स अरियसावकस्स सिया अञ्ञथत्तं" ति। अयं हेत्थ अत्थो—आनन्द, कक्खळत्तलक्खणा पठवीधातु परिवत्तित्वा पग्घरणलक्खणा आपोधातु नाम भवेय्य, अरियसावकस्स पन अञ्ञथत्तं नाम नत्थी ति। एवमेत्थ अट्ठानपरिकप्पो आगतो।

इतो परेसु उपादिन्नरूपादिनिद्देसेसु उपादिन्नपदादीनं अत्थो मातिकाकथाय वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। चक्खायतनादीनि हेट्ठा वित्थारितानेव। तत्थ तत्थ पन विसेसमत्तमेव वक्खाम। उपादिन्ननिद्देसे [ध० १७६] ताव चक्खायतनादीनि एकन्तं उपादिन्नत्ता वुत्तानि। यस्मा पन रूपायतनादीनि उपादिन्नानि पि अत्थि अनुपादिन्नानि पि, तस्मा तानि **यं वा पना** ति सङ्खेपतो दस्सेत्वा पुन **कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं** [ध० १७६] ति आदिना नयेन वित्थारितानि। इमिना उपायेन सब्ब-ये-वा-पनकेसु अत्थो वेदितब्बो।

कस्मा पन 'कम्मस्स कतत्ता' [ध० १७६] ति च 'न-कम्मस्स कतत्ता' [ध० १७६] ति च उभिन्नं पि निद्देसे 'जरता च अनिच्चता च' न गहिता, अनुपादिन्नादीनं [ध० १७६] येव निद्देसेसु गहिता ति ? **न-कम्मस्स कतत्ता** ति एत्थ ताव कम्मतो अञ्ञपच्चयसमुट्ठानं संगहितं। 'कम्मस्स कतत्ता' ति एत्थ कम्मसमुट्ठानमेव। इमानि

चतुन्नं हीति आदि दळ्हीकरणं। भावो एव अञ्ञथत्तं भावञ्ञथत्तं। ओमत्ताधिमत्तसङ्खातं भावञ्ञथत्तं ति अत्थो। लक्खणञ्ञथत्तं ति लक्खणवसेन अञ्ञथत्तं। तस्सा ति लक्खणञ्ञथत्तस्स। वुत्तं हेतं ति हि सच्चं, सिया....प०....सिया अञ्ञथत्तं ति एतं वचनं भगवता वुत्तं। अयं हेत्था ति सच्चं एत्थ अट्ठानपरिकप्पसुत्ते अयं अत्थो अधिप्पायो[1]।

इतो ति आपोधातुनिद्देसतो। तानीति रूपायतनादीनि। दस्सेत्वा ति[2] वित्थारितानीति पदद्वये कम्मं।

कस्मा[3] पन....प०....गहिता इति पुच्छा। इति चा ति पदं उभिन्नम्पी ति पदस्स सरूपनिदस्सनं। अनुपादिन्नानं[4] येव निद्देसेसु गहणेसु जरता अनिच्चता कस्मा गहिता ति सम्बन्धो। न कम्म....प०....एत्थ वचने ताव कम्मतो अञ्ञ..प०...समुट्ठानं[5] सरूपं[5]...प०...[6] सङ्गहितं कम्मस्सकतत्ता ति एत्थ वचने कम्मसमुट्ठानमेव सङ्गहितं। द्वे रूपानीति जरता अनिच्चता ति द्वे रूपानि। सा चा ति नेसं जरता-अनिच्चतानं सा च अनुपादिन्नानं[7] निद्देसे द्वे रूपानि गहितानि भगवता इति वेदितब्बानि पण्डितेन।

---

१. एत्था ति अट्ठानपरिकप्पसुत्ते—सी०। २. ति-नत्थि—सी०। ३. यस्मा—म०। ४. उपादिण्णादीनं—सी०। ५-५. समुट्ठानरूपं—सी०। ६. नत्थि—सी०। ७. अनुप्पत्ति। तत्थ ति अनुपादिण्णादीनं—सी०।

च द्वे रूपानि नेव कम्मतो न अञ्ञस्मा रूपजनकपच्चया उप्पज्जन्ति, तस्मा न गहितानी ति। सा च नेसं अनुप्पत्ति परतो आविभविस्सति। **अनुपादिन्नं** ति [ध० १७६] आदीसु पन केवलं अनुपादिन्नादिग्गहणेन कम्मादिसमुट्ठानता पटिक्खित्ता, न अञ्ञपच्चयसमुट्ठानता अनुञ्ञाता। तस्मा तत्थ गहितानी ति वेदितब्बानि।

चित्तसमुट्ठाननिद्देसे [ध० १७९] **कायविञ्ञत्ति-वचीविञ्ञत्ती** ति इदं द्वयं यस्मा एकन्त-चित्तसमुट्ठानानि भूतानि उपादाय पञ्ञायति, तस्मा वुत्तं। परमत्थतो पन तस्स निस्सयभूतानेव चित्तसमुट्ठानानि, तन्निस्सितत्ता। यथा अनिच्चस्स रूपस्स जरामरणं अनिच्चं नाम होति, एवमिदं पि चित्तसमुट्ठानं नाम जातं। चित्तसहभूनिद्देसे [ध० १७९] पि एसेव नयो। याव चित्तं ताव पञ्ञायनतो इदमेव द्वयं वुत्तं। न पनेतं चित्तेन सहभूतानि विय, वेदनादयो विय च उप्पज्जति। चित्तानुपरिवत्तिताय [ध० १७९] पि एसेव नयो। याव चित्तं ताव पञ्ञायनतो एव हेतं द्वयं चित्तानुपरिवत्ती ति वुत्तं।

ओळारिकं [ध० १८०] ति वत्थारम्मणभूतत्ता संघट्टनवसेन गहेतब्बतो थूलं। वुत्तविपल्लासतो **सुखुमं** [ध० १८०] वेदितब्बं। **दूरे** [ध० १८०] ति घट्टनवसेन अग्गहेतब्बत्ता दुविञ्ञेय्यभावेन समीपे ठितं ति दूरे। इतरं पन घट्टनवसेन गहेतब्बत्ता सुविञ्ञेय्यभावेन दूरे ठितं पि **सन्तिके** [ध० १८०] चक्खायतनादिनिद्देसा हेट्ठा वुत्तनयेनेव वित्थारतो वेदितब्बा।

इदं ताव दुविधेन रूपसंगहे विसेसमत्तं।

तिविधसंगहो [१९१–२१०] उत्तानत्थो येव। चतुब्बिधसंगहावसाने दिट्ठादीनं पच्छिमपदस्स भेदाभावेन आदितो पट्ठाय पुच्छं अकत्वा व[1] **रूपायतनं दिट्ठं सद्दायतनं सुतं** [ध० २२४] ति आदि वुत्तं। तत्थ रूपायतनं चक्खुना ओलोकेत्वा दक्खितुं सक्का ति 'दिट्ठं' नाम जातं। सद्दायतनं सोतेन सद्दं सुत्वा जानितुं सक्का ति 'सुतं' नाम जातं। गन्धायतनादित्तयं घाण-जिव्हा-कायेहि पत्वा गहेतब्बतो मुनित्वा जानितब्बट्ठेन **मुतं** नाम जातं। फुसित्वा विञ्ञाणुप्पत्तिकारणतो 'मुतं' नामा ति वुत्तं। सब्बमेव पन रूपं मनोविञ्ञाणेन जानितब्बं ति **मनसा विञ्ञातं** नाम जातं।

चिसमुट्ठाननिद्देसे ति पदं वुत्तं ति पदे आधारो। इदं द्वयं ति पदं ञायतीति पदे कत्ता, वुत्तं ति पदे[1] कम्मं। तस्सा ति विञ्ञत्तिद्वयस्स। तन्निस्सितत्ता ति चित्तसमुट्ठानानं[2] निस्सितभावतो[2]। जातं ति पदे ञापकहेतु। इदम्पीति विञ्ञत्तिद्वयं। याव चित्तं अत्थि एतं द्वयं विञ्ञत्तिद्वयं।

वत्थारम्मणभूतत्ता ति वत्थुभूत-आरम्मणभूतभावतो। गहेतब्बतो ति पदे हेतु। (२१५-सी०) अग्गहेतब्बत्ता ति पदं दुविञ्ञेय्य इति पदे हेतु। दुविञ्ञेय्यभावेना ति पदं दूरे ति पदे ततियाविसेसनं।

भेदाभावेना ति पदं अकत्वा ति पदे ततियाविसेसनं, हेतु वा। तत्था ति रूपायतनादीसु।

---

११. पदं–म०। २-२. चित्तसमुट्ठाननिस्सितभावतो–सी०।

पञ्चविधसङ्गहनिद्देसे [ध० २२४–२२५] **कक्खळं** ति थद्धं । खरमेव **खरगतं**, फरुसं ति अत्थो । इतरे द्वे पि सभावनिद्देसा येव । **अज्झत्तं** ति नियकज्झत्तं । **बहिद्धा** ति बाहिरं । **उपादिन्नं** ति कम्मसमुट्ठानमेव । अविसेसेन पन सरीरट्ठकस्सेतं गहणं । सरीरट्ठकं हि उपादिन्नं वा होतु अनुपादिन्नं वा, आदिन्नगहितपरामट्ठवसेन उपादिन्नमेव नाम जातं । **तेजोगतं** [ध० २२५] ति सब्बतेजेसु गतं उण्हत्तलक्खणं, तेजो एव वा तेजोभावं गतं ति 'तेजोगतं' । **उस्मा** ति उस्माकारो । **उस्मागतं** ति उस्माभावं गतं । उस्माकारस्सेवेतं नामं । **उसुमं** ति बलव-उस्मा । उसुममेव उसुमभावं गतं ति **उसुमगतं** । वायनकवसेन **वायो** [ध० २२५] । वायो एव वायोभावं गतत्ता **वायोगतं** । **थम्भितत्तं** ति उप्पलनाळतचादीनं विय वातपुण्णानं थम्भितभावो रूपस्स ।

छब्बिधादिसंगहानं तिण्णं ओसानपदस्स भेदाभावतो आदितो पट्ठाय अपुच्छित्वा व निद्देसो कतो । तत्थ चक्खुविञ्ञाणेन जानितुं सक्का ति **चक्खुविञ्ञेय्यं** [ध० २२५]....प० मनोविञ्ञेय्येन जानितुं सक्का ति **मनोविञ्ञेय्यं** ति । तिविधाय मनोधातुया जानितुं सक्का ति **मनोधातुविञ्ञेय्यं** [ध० २२५-२२६] । **सब्बं रूपं** ति एत्थ यस्मा एकं रूपं पि **मनोविञ्ञाणधातुया** अजानितब्बं नाम नत्थि, तस्मा 'सब्बं रूपं' ति वुत्तं । सम्मासम्बुद्धेन हि अभिधम्मं पत्वा नयं कातुं युत्तट्ठाने नयो अकतो नाम नत्थि । इदं च एकरूपस्सा पि मनोविञ्ञाणधातुया अजानितब्बस्स अभावेन नयं कातुं युत्तट्ठानं नाम, तस्मा नयं करोन्तो 'सब्बं रूपं' ति आह । **सुखसम्फस्सो** [ध० २२६] ति सुखवेदनापटिलाभपच्चयो । **दुक्खसम्फस्सो** ति दुक्खवेदनापटिलाभपच्चयो । इधा पि फोट्ठब्बारम्मणस्स सुखदुक्खस्स सब्भावतो अयं नयो दिन्नो ।

द्वे ति कक्खळत्तं कक्खळभावो ति द्वे । भावनिद्देसा ति भाववसेन निद्देसा । सरीरट्ठकस्सा ति पदं गहणं ति पदे कम्मं । सरीरे तिट्ठतीति सरीरट्ठकं । हिसद्दो दळ्हीकरणं । तण्हाय आदियतीति आदिन्ना[1] । गण्हियतीति गहितं । परामसियतीति परामट्ठं, आदिन्नसङ्खातं गहितं आदिन्नगहितं । आदिन्नगहितं एव परामट्ठं आदिन्नगहितपरामट्ठं । तस्सा वसो आदिन्न-...प०....वसो । तेन तण्हाय आरम्मणकरणवसेन (१८३-म०) आदिन्नसङ्खातगहितपरामट्ठभाववसेना ति अत्थो । सब्बं ति सब्बं[2] रूपं[2] । गतं ति पवत्तं । तेजो एव वा तेजोगतं । तेजोभावं गतं पत्तं[3] उण्हत्तलक्खणं । इति तस्मा तेजोगतं ति योजना । उसुममेव उसुमभावं गतं इति तस्मा उसुमगतं ति सम्बन्धो । वायनकवसेना ति गमनवसेन । वातपुण्णानं वातेन पुण्णानं उप्पलनाळतचादीनं[4] थम्भितभावो[5] ति योजना ।

तिण्णं ति सङ्गहानं । ओसानपदस्सा ति मनोविञ्ञेय्यं ति आदिकस्स ओसानपदस्स । तत्था ति छब्बिधादिसङ्गहानं निद्देसे विनिच्छयो वेदितब्बो[6] । सम्मासम्बुद्धेन हीति आदि दळ्हीकरणं । इदं[7] चन्दानं युत्तट्ठानं नातिसम्बन्धो[7] । चसद्दो वाक्यारम्भो । अभावेना ति पदं युत्त इति विसेसनपदे हेतु । सुख....प०....पच्चयो ति सुखवेदनाय पटिलाभस्स पच्चयो ।

---

१. आदिन्नं–सी० । २-२. सब्बरूपं–सी० । ३. पवत्तं–सी० । ४. ०नळतचादीनं–सी० । ५. थम्भितभावो विय रूपस्स थम्भितभावो ति–सी० । ६. नत्थि–सी० । ७-७. इदं च ठानं युत्तट्ठानं नामा ति सम्बन्धो–सी० ।

नवके [ध० २२६] पन इन्द्रियरूपस्स नाम अत्थिताय नयो दिन्नो। तस्सेव सप्पटिघ-अप्पटिघताय दसके [ध० २२६-२२७] नयो दिन्नो। एकादसके [ध० २२७-२२८] अड्ढेकादस आयतनानि विभत्तानि। तेसं तेसं निद्देसवारा हेट्ठा-वुत्तनयेनेव वित्थारतो वेदितब्बा। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेव।

इमेसु पन रूपेसु असंमोहत्थं

समोधानं समुट्ठानं परिनिप्फन्नं च संखतं ति

इदं 'पकिण्णकं' वेदितब्बं। तत्थ 'समोधानं ति सब्बमेव हि रूपं समोधानतो चक्खा-यतनं····प०····कबळिंकारो आहारो [ध० १६०], फोट्ठब्बायतनं आपोधातू [ध० १७५] ति पञ्चवीसतिसंखं होति। तं वत्थुरूपेन सद्धिं छब्बीसतिसंखं वेदितब्बं। इतो अञ्ञं रूपं नाम नत्थी ति। केचि पन 'मिद्धरूपं नाम अत्थी' ति वदन्ति। ते "अद्धा मुनीसि सम्बुद्धो नत्थी नीवरणा तवा" [खु० १: ३५२ सु०नि०] ति आदीनि वत्वा मिद्धरूपं नाम नत्थी ति पटिसेधेतब्बा। अपरे बलरूपेन सद्धिं सत्तवीसति, संभवरूपेन सद्धिं अट्ठ-वीसति, जातिरूपेन सद्धिं एकूनतिंसति, रोगरूपेन सद्धिं समतिंस रूपानी ति वदन्ति। ते पि तेसं विसुं अभावं दस्सेत्वा पटिक्खिपितब्बा। वायोधातुया हि गहिताय बलरूपं गहितमेव, अञ्ञं बलरूपं नाम नत्थि। आपोधातुया संभवरूपं, उपचयसन्ततीहि जातिरूपं, जरता' निच्चताहि गहिताहि रोगरूपं गहितमेव। अञ्ञं रोगरूपं नाम नत्थि। यो पि कण्णरोगादि-आबाधो सो वा विसमपच्चयसमुट्ठितधातुमत्तमेव। न अञ्ञो तत्थ रोगो नाम अत्थी ति समोधानतो छब्बीसति चेव रूपानि।

इधा पी ति सुखसम्फस्सो ति आदिवचने, दिन्नो ति पदे आधारो। फोट्ठब्बं आरम्मणं अस्सा ति फोट्ठब्बारम्मणं। सब्भावतो[1] ति विज्जमानतो।

तस्सेवा ति न इन्द्रियरूपस्स। सप्पटिघ····प०····ताया ति[2] सम्बन्धो। तेसं ति आयतनानं। सेसं वचनं। सब्बत्थ नि‌द्देसेसु।

असम्मोहत्थं ति पदं वेदितब्बं ति पदे सम्पदानं। तत्था ति समोधानादीसु। हि सच्चं, सब्बमेव रूपं समोधानतो रासितो पञ्चवीसति सङ्ख्यं होतीति सम्बन्धो। तं ति पञ्चवीसति रूपं। इतो ति छब्बीसतिरूपतो। केचीति अभयगिरिवासिनो। ते ति ते पुग्गला सकवादिना पटिसे-धेतब्बा ति सम्बन्धो। मुनि च सो इसि चा ति मुनीसि, (२१६—सी०) अथवा मुनि असीति पदच्छेदो। सम्बुद्धो भगवा अद्धा एकन्तेन मुनि नाम असि तव भगवतो नीवरणा नत्थीति योजना। आदिसद्देन थिनमिद्धनीवरणं अविज्जानीवरणेन नीवरणसम्पयुत्तं ति च नीवरणं धम्मं पटिच्च नीवरणो धम्मो उप्पज्जति न पुरेजातपच्चया ति आदिकं[3] वचनं सङ्गण्हति। अपरे परवादिनो बलरूपेन सद्धिं सत्तवीसति रूपानी ति वदन्ति। ते पि परवादिनो तेसं बलरूपानं[4] वायोधातु-आदितो विसुं[5] अभावं नत्थिभावं दस्सेत्वा पटिक्खिपितब्बा। कथं पन अभाव

---

१. सम्भावतो—सी०। २. ताया ति पदे—सी०। ३. च आदिकं—सी०।
४. बलरूपादीनं सी०। ५. विसं—सी०।

'समुट्ठानं' ति कति-रूपानि कति-समुट्ठानानि ? दस एकसमुट्ठानानि, एकं द्वि-समुट्ठानं, तीणि ति-समुट्ठानानि, नव चतु-समुट्ठानानि, द्वे न केनचि समुट्ठहन्ति । तत्थ चक्खुप्पसादो···प०···जीवितिन्द्रियं ति इमानि अट्ठ एकन्तेन कम्मतो व समुट्ठहन्ति । कायविञ्ञत्ति-वचीविञ्ञत्ती ति द्वयं एकन्तेन चित्ततो समुट्ठाती ति दस 'एकसमुट्ठानानि' नाम । सद्दो उतुतो च चित्ततो च समुट्ठाती ति एको 'द्विसमुट्ठानो' नाम । तत्थ अविञ्ञाणकसद्दो उतुतो समुट्ठाति, सविञ्ञाणकसद्दो चित्ततो । लहुतादित्तयं पन उतुचित्ताहारेहि समुट्ठाती ति तीणि 'ति-समुट्ठानानि' नाम । अवसेसानि नव रूपानि तेहि कम्मेन चा ति चतूहि समुट्ठहन्ती ति नव 'चतुसमुट्ठानानि' नाम । जरता-अनिच्चता पन एतेसं एकतो पि न समुट्ठहन्ती ति द्वे 'न केनचि समुट्ठहन्ति' नाम । कस्मा ? अजायनतो ।

न हि एतानि जायन्ति । कस्मा ? जातस्स पाक-भेदत्ता । उप्पन्नं हि रूपं अरूपं वा भिज्जती ति अवस्सं पनेतं सम्पटिच्छितब्बं । न हि उप्पन्नं रूपं वा अरूपं वा

दस्सितब्बो ति आह—वायो-धातुया ति आदि । बलं[1] ना अत्थतो मवायोधातुया व[2] पवत्ति-आकारविसेसो कस्स[3] विप्फारभावतो ति वुत्तं । वायोधातुया हि गहिताय बलरूपं गहितमेवा ति । सम्भवो कामधातुयं[4] एकच्चसत्तानं इन्द्रियपरिपाकपच्चयो आपोधातुया पवत्ति-आकार-विसेसो ति[5] आपोधातुया सम्भवरूपं गहिताय गहितमेवा ति (१८४-म०) सम्बन्धो। उपचय-सन्ततिविनिमुत्तो रूपुप्पादो नत्थि । उप्पादावत्थाय अञ्ञा जाति नाम नत्थेवा ति वुत्तं। उपचय-सन्तति हि जातिरूपं ति । कम्मसमुट्ठानं[6] नास्स विरागस्स[6] विसभागपच्चयसमुट्ठानो धातु-क्खोभो आसन्नकारणं । पगेव इतरस्सेव अत्थतो रूपधम्मानं विपाकावत्थतिट्ठता[7] भङ्गक्खणेसु[7] एव सिया ति वुत्तं जरता[8] अनिच्चताहि इतररूपं[8] गहितमेवा ति । सो ति कण्णरोगादि-आबाधो। विसम···प०···मत्तमेवा ति विसमपच्चयतो समुट्ठितधातुमत्तमेव। तत्था ति कण्णरोगादि-आबाधे।

समुट्ठहन्ति जायन्तीति समुट्ठानानि । कतिहि पच्चयेहि समुट्ठानानि कति-समुट्ठानानि । तत्था ति रूपेसु निद्धारणं । इमानि अट्ठरूपानि । तत्था ति द्विसमुट्ठानसद्दो निद्धारणं । नत्थि विञ्ञाणं येसं वत्थूनं तानि, अविञ्ञाणकानं सद्दो अविञ्ञाणकसद्दो । सह विञ्ञाणेन पवत्ततीति सविञ्ञाणो । तस्स सद्दो सवि···प०···चित्ततो[9] समुट्ठाति । तेही ति उत्तुचित्ताहारेहि । एतेसं ति उतु-आदिपच्चयानं, निद्धारणं । एकतो पि पच्चयतो ।

एतानि जरता-अनिच्चतानि । जातस्स पाकभेदत्ता ति जरताय जातधम्मस्स[10] पाकत्ता अनिच्चताय च भेदत्ता ति अत्थो । इदं वुत्तं होति जरता-अनिच्चतानि[11] उप्पन्नधम्मस्स होन्ति, (२१७—सी०), नो उप्पज्जमानस्स । यदि हि उप्पज्जमानस्स सियुं, तदा तासम्पि जानमानत्त-परियायो युज्जेय्य । उप्पन्नधम्मस्स पन जातितो परा इमासं जरता अनिच्चतानं सम्भवतो

---

१. कायबलं—सी० । २. 'व' नत्थि-सी० । ३. तस्सा-सी० । ४. कामधातुया-सी० । ५. ०वुत्तं-सी० । ६-६. कम्मसमुट्ठानस्स पि रोगस्स-सी० । ७-७. विपाकावत्थाठिति-भङ्गक्खणेसु-सी० । ८-८. जरताय अनिच्चताय हि रोगरूपं-सी० । ९. चित्तते—म० । १०. जातिधम्म०—सी० । ११. ०नाम—सी० ।

अक्खयं नाम दिस्सति। याव पन न भिज्जति ताव'स्स परिपाको ति सिद्धमेतं। 'जातस्स पाक-भेदत्ता' ति यदि च तानि जायेय्युं तेसं पि पाक-भेदा भवेय्युं। न च पाको पच्चति, भेदो वा भिज्जती ति जातस्स पाक-भेदत्ता नेतं द्वयं जायति।

तत्थ सिया—यथा 'कम्मस्स कतत्ता' ति आदिनिद्देसेसु 'रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तती' [ध० १७६] ति वचनेन 'जाति' जायती ति सम्पटिच्छितं होति, एवं 'पाको' पि पच्चतु 'भेदो' पि भिज्जतू' ति। 'न तत्थ 'जाति' जायती ति सम्पटिच्छितं। ये पन धम्मा कम्मादीहि निब्बत्तन्ति तेसं अभिनिब्बत्तिभावतो जातिया तप्पच्चयभाववोहारो अनुमतो। न पन परमत्थतो जाति जायति। जायमानस्स हि अभिनिब्बत्तिमत्तं जाती' ति।

जायन्ति[1] वत्ततीति[1]। उप्पन्नं हीति दळ्हीकरणं[2]। भिज्जति इति एतं वचनं अवस्सं पण्डितेन सम्पटिच्छितब्बं। न हीति दळ्हीकरणं। याव पन रूपानं रूपं भिज्जति ताव अस्स रूपस्स[3] परिपाको इति एतं वचनं सिद्धमेव पाकटं एव। यदि पन कोचि तेसम्पि जातभावे को विरोधो ति पटिपज्जेय्य, तस्स तं दुग्गाहं विधमेन्तो आह यदि चा ति आदि। तानि जरता-अनिच्चतानि। तेसम्पीति जरता-अनिच्चतानं। तेसम्पि पाकभेदा होन्तु, ततो तदा विरोधो ति आह न चा ति आदि। इति तस्मा जातस्सा ति आदि निगमनं। पाकभेदत्ता नेतं द्वयं ति एतं जरता-अनिच्चताद्वयं न जायति।

तत्थ[4] तस्मिं जरता-अनिच्चताद्वयं न पच्चति न भिज्जति वा ति अधिकारे। कम्मस्स ....प०....वचनेन जायति इति वचनं पण्डितेन सम्पटिच्छितं होति यथा एवं....प०....ज्जतु इति वचनं सम्पटिच्छितब्बं, इति चोदना सिया ति योजना। निद्देसू ति वचनेना ति पदे आधारो। अयं पनेत्थ अधिप्पायो यथा कम्मादीहि उप्पज्जनकरूपनिद्देसे (१८५-म०) कतमं तं रूपं उपादिन्नं, चक्खायतनं....प०....कायायतनं इत्थिन्द्रियं[5] जीवितिन्द्रियं यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं....प०....आकासधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो ति आदिना उपचयसन्ततीनं निद्दिट्ठत्ता जाति जायतीति सम्पटिच्छितं होति। तस्सा अपर-जातिया अभावे पि[6] जिरणं भिज्जनम्पि च सम्पटिच्छितब्बं ति न तत्था ति आदि यथासकं[7] परवादिस्स पगमनस्स[8] पटिक्खिपनं। तत्थ तस्मिं कम्मस्स कतत्ता ति आदिनिद्देसे। जाति जायतीति इति वचनं पण्डितेन सम्पटिच्छितब्बं। यदि जायतीति[9] न सम्पटिच्छितं, एवं सति निद्देसे कस्मा वुत्तं ति आह यो पनायं ति[10] आदि। तेसं ति तेसं धम्मानं, अभिनिब्बत्तीति पदे सम्बन्धो। अभिनिब्बत्तीति[11] आगतो ति[11] पदं अनुमतो ति पदे हेतु। जातिया ति पदं भावं इति

१-१. जायन्तीति वुत्तं वट्टति–सी०। २. आदि दळ्ही–सी०। ३. रूपारूपस्स–सी०। ४. तत्था ति–सी०। ५. ०पुरिसिन्द्रियं–सी०। ६. ०एवं जराभङ्गानं अभावे पि–सी०। ७. यथासति–सी०। ८. मनस्स–सी०। ९. जाति जायतीति–सी०। १०. ये पना ति–सी०। ११-११. अभिनिब्बत्तिभावतो ति–सी०।

तत्थ सिया—'यथेव जाति येसं धम्मानं अभिनिब्बत्ति तप्पच्चयभाववोहारं अभिनिब्बत्तिवोहारं च लभति, तथा पाक-भेदा पि येसं धम्मानं पाकभेदा तप्पच्चय-भाववोहारं अभिनिब्बत्तिवोहारं च लभन्तु। एवं इदं पि द्वयं कम्मादिसमुट्ठानमेवा ति वत्तब्बं भविस्सती' ति। 'न पाक-भेदा तं वोहारं लभन्ति। कस्मा? जनकपच्चयानुभावक्खणे अभावतो। जनकपच्चयानं हि उप्पादेतब्बधम्मस्स उप्पादक्खणे येव आनुभावो, न ततो उत्तरिं। तेहि अभिनिब्बत्तिते धम्मक्खणस्मिं च जाति पञ्ञायमाना तप्पच्चयभाववोहारं अभिनिब्बत्तिवोहारं च लभति, तस्मिं खणे सब्भावतो; न इतरद्वयं, तस्मिं खणे अभावतो ति नेवेतं जायती'ति वत्तब्बं।

"जरामरणं भिक्खवे, अनिच्चं संखतं पटिच्चसमुप्पन्नं" [सं० २-३:२४] ति आगतत्ता इदं पि द्वयं जायती ति चे—'न, परियायदेसितत्ता। तत्थ हि पटिच्चसमुप्पन्नानं धम्मानं जरामरणत्ता परियायेन तं पटिच्चसमुप्पन्नं' ति वुत्तं। 'यदि एवं, तयं पेतं पदे सम्बन्धो। तप्पच्चयभावेन[1] (२१८–सी०) पवत्तवोहारो पण्डितेन अनुमतो सम्पटिच्छतो। जायमानस्स हीति आदि दळ्हीकरणं।

तत्था ति आदिना पुन पि परमतासंकितं[2] पटिक्खिपति। तत्थ जरता-अनिच्चताद्वयं न पच्चति न भिज्जति वा ति अधिकारे। येसं धम्मानं अभिनिब्बत्ति अत्थि जाति तप्पच्चयभाव-वोहारं अभिनिब्बत्ति-वोहारञ्च लभति यथेव एवं येसं धम्मानं पाकभेदा अत्थि, पाकभेदा पि तप्प····प०····हारं लभन्तु, एवं लभने सति इदम्पि रूपद्वयं कम्मा····प०····इति वत्तब्बं भविस्सति इति चोदना सिया ति योजना। अभिनिब्बत्ति वोहरन्ति अभिनिब्बत्ति जायतीति एवं अभिनिब्बत्तिवसेन वोहारं[3]। तं वोहरन्ति तप्पच्चयभाववोहारं अभिनिब्बत्तिवोहारं। जनकपच्चयानुभावक्खणे ति जनकपच्चयानं हीति दळ्हीकरणं। जनकपच्चयानं ति पदं आनुभावो ति पदे सम्बन्धो। ततो ति उप्पादक्खणतो। उत्तरिं[4] आनुभावो न होति। तेहीति कम्मादिजनकपच्चयेहि, अभिनिब्बत्तित इति पदे कत्ता। अभिनिब्बत्तिते धम्मक्खणस्मिं ति अभिनिब्बत्तियमानधम्मक्खणस्मिं। चसद्दो वाक्यारम्भो। जायतीति[5] पदं लब्भतीति पदे कत्ता। पञ्ञायमाना ति पदं जायतीति पदस्स विसेसनं। तस्मिं खणे ति तस्मिं अभिनिब्बत्तित-धम्मक्खणस्मिं। सब्भावतो ति जातिया विज्जमानतो, लभतीति पदे हेतु। इतरद्वयं तप्पच्चय-भाववोहारं अभिनिब्बत्तिवोहारं न लभति। तस्मिं खणे रूपद्वयस्स अभावतो इति तस्मा एतं रूपद्वयं जायतीति इति नो वत्तब्बं ति सम्बन्धो।

ननु वुत्तं भगवता सुत्तन्ते 'जरामणं भिक्खवे, अनिच्चं (१८६-सी०) सङ्खतं पटिच्चसमुप्पन्नं' ति। तस्मा कथमेतं वुच्चति जरता-अनिच्चता पन एतेसं एकतो पि न समुट्ठहन्ती ति यो वदेय्य तस्स वितक्कं दस्सेत्वा पटिक्खिपितुं जरामरणं ति आदि वुत्तं। कतत्ता ति[6] वुत्तत्ता इदम्पि रूपद्वयं जायति इति चे मञ्ञसि तुवं इदम्पि रूपद्वयं न जायती ति कस्मा परियायदेसितत्ता परियायेन

---

१. तप्पच्चय··प०····वोहारो ति तप्पच्चयभावेन–सी०। २. सङ्कित्वा–सी०। ३. पवत्तवोहारं–सी०। ४. उत्तरिं–सी०। ५. जातीति–सी०। ६. आगतत्ता–सी०।

अजातत्ता ससविसाणं विय नत्थि; निब्बानं विय वा निच्चं' ति चे—'न, निस्सयपटिबद्धवुत्तितो; पठवी-आदीनं हि निस्सयानं भावे जाति-आदित्तयं पञ्ञायति, तस्मा न नत्थि। तेसं च अभावे न पञ्ञायति, तस्मा न निच्चं। एतं पि च अभिनिवेसं पटिसेधेतुमेव इदं वुत्तं—"जरामरणं भिक्खवे, अनिच्चं संखतं पटिच्चसमुप्पन्नं" [सं० २-३:२४] ति। एवमादीहि नयेहि तानि द्वे रूपानि न केहिचि समुट्ठहन्ती ति वेदितब्बानि।

अपि च 'समुट्ठानं' ति एत्थ अयमञ्ञो पि अत्थो। तस्सायं मातिका—'कम्मजं कम्मपच्चयं कम्मपच्चय-उतुसमुट्ठानं, आहारसमुट्ठानं आहारपच्चयं आहारपच्चय-उतुसमुट्ठानं, उतुसमुट्ठानं उतुपच्चयं उतुपच्चय-उतुसमुट्ठानं, चित्तसमुट्ठानं चित्तपच्चयं चित्तपच्चय-उतुसमुट्ठानं' ति। तत्थ चक्खुप्पसादादि अट्ठविधं रूपं सद्धिं हदयवत्थुना 'कम्मजं' नाम। केसमस्सु-हत्थिदन्ता-अस्सबाला-चामरिबालानी ति एवमादि 'कम्मपच्चयं' नाम। चक्करतनं देवतानं उय्यान-विमानानी ति एवमादि 'कम्मपच्चय-उतुसमुट्ठानं' नाम। आहारतो समुट्ठितं सुद्धट्ठकं 'आहारसमुट्ठानं' नाम। कबळिंकारो आहारो द्विन्नं पि रूपसन्ततीनं पच्चयो होति आहारसमुट्ठानस्स च उपा-

---

देसितभावतो। परियायदेसितभावं विभावेतुं तत्थ हीति वुत्तं[1]। हि सच्चं, मया[2] वुत्तवचनं[2] तत्थ जरामरणं ति आदि वचने वुत्तं ति सम्बन्धो[3]। तं ति रूपद्वयं। एवं ति एवं परियायेन वचने यदि सति। (२१९–सी०) तयं पेतं ति जातिजराभङ्गसङ्खातं एवं लक्खणरूपत्तयं[4] नत्थि। निच्चं वा इति चे मञ्ञसि तुवं ति सम्बन्धो। ससविसाणं विया ति यथा ससविसाणं सब्बसो अजातत्ता नत्थि एवं तयम्पि एतं अजातत्ता नत्थीति अत्थो। निब्बानं विया ति यथा निब्बानं केहिचि अजातत्ता निच्चं एवं तयं पेतं केहिचि अजातत्ता निच्चं ति अत्थो। ना ति तयं पेतं[5] ससविसाणं विय नत्थि, न[6] निब्बानं विय निच्चं वा ति अत्थो। निस्सयपटिबद्धवुत्तितो ति जायमानपरिपच्चमानभिज्जमानानं[7] जाति-आदिमत्तभावेन जायमानादिनिस्सयपटिबद्धवुत्तितो[7]। निस्सयेहि पटिबद्धा निस्सयपटिबद्धा। वत्तनं वुत्ति। निस्सयपटिबद्धा वुत्ति यस्स जाति-आदित्तयस्स तं निस्सयपटिबद्धवुत्ति। तमेव निस्सयपटिबद्धवुत्तितं समत्थेतुं पथवी-आदीनं हीति आदि वुत्तं। हिसद्दो समत्थने वत्तति। भावे ति पदं पञ्ञायतीति पदे लक्खणक्रिया। तेसञ्च निस्सयानं अभावे जातित्तयं न पञ्ञायति। अभिनिवेसं ति जाति-आदित्तयं नत्थि निच्चं वा ति अभिनिवेसं। इदं ति जरामरणं भिक्खवे, अनिच्चं सङ्खतं पटिच्चसमुप्पन्नं ति इदं वचनं भगवता वुत्तं। एवमादीहि नयेहीति एवं आदीहि कारणेहि वेदितब्बानीति सम्बन्धो।

अपि चा ति अपरो नयो। तस्सायं ति कम्मजं[8] उतुसमुट्ठानं[8] ति एवं तस्स अत्थस्स अयं मातिका। कम्मं पच्चयो यस्स तं कम्मपच्चयं, एवमादिरूपं[9] कम्मपच्चयं नाम[9]। तत्था

---

१. आदिवुत्तं–सी०। २-२. नत्थि–सी०। ३. साधारो–सी०। ४. लक्खणत्तयं–सी०। ५. चेतं–सी०। ६. नत्थि–सी०। ७-७. जायमानभिज्जमानानं परिपच्चमानभिज्जमानादिनिस्सयपटि०–सी०। ८-८. कम्मज''''प०''''उतुसमु०–सी०। ९-९. नत्थि–सी०।

दिन्नस्स च । आहारसमुट्ठानस्स जनको हुत्वा पच्चयो होति, कम्मजस्स अनुपालको हुत्वा ति इदं आहारानुपालितं कम्मजरूपं 'आहारपच्चयं' नाम । विसभागाहारं सेवित्वा आतपे गच्छन्तस्स काळकुट्टादीनि उप्पज्जन्ति, इदं 'आहारपच्चय-उतुसमुट्ठानं' नाम । उतुतो समुट्ठितं सुद्धट्ठकं 'उतुसमुट्ठानं' नाम । तस्मिं उतु अञ्ञं अट्ठकं समुट्ठापेति, इदं 'उतुपच्चयं' नाम । तस्मिं पि उतु अञ्ञं अट्ठकं समुट्ठापेति, इदं 'उतुपच्चय-उतुसमुट्ठानं' नाम । एवं तिस्सो येव सन्ततियो घट्टेतुं सक्कोति । न ततो परं । इममत्थं अनुपादिन्नकेना पि दीपेतुं वट्टति । उतुसमुट्ठानो नाम वलाहको । उतुपच्चया नाम वुट्ठिधारा । देवे पन वुट्ठे बीजानि विरूहन्ति, पठवी गन्धं मुञ्चति, पब्बता नीला खायन्ति, समुद्दो वड्ढति, एवं उतुपच्चय-उतुसमुट्ठानं नाम । चित्ततो समुट्ठितं सुद्धट्ठकं 'चित्तसमुट्ठानं' नाम । "पच्छाजाता चित्तचेतसिका धम्मा पुरेजातस्स इमस्स कायस्स पच्छाजातपच्चयेन पच्चयो" [तिकप० ५] ति इदं 'चित्तपच्चयं' नाम । आकासे अन्तलिक्खे हत्थिं पि दस्सेन्ति, अस्सं पि दस्सेन्ति, रथं पि दस्सेन्ति, विविधं पि सेनाब्यूहं दस्सेन्ती ति इदं 'चित्तपच्चय-उतुसमुट्ठानं' नाम ।

'परिनिप्फन्नं' ति पण्णरस रूपा परिनिप्फन्ना नाम, दस रूपा अपरिनिप्फन्ना नाम । 'यदि अपरिनिप्फन्ना, असंखता नाम भवेय्युं' । 'तेसं येव पन रूपानं कायविकारो 'कायविञ्ञत्ति' नाम, वचीविकारो 'वचीविञ्ञत्ति' नाम, छिद्दं विवरं 'आकासधातु' नाम, लहुभावो 'लहुता' नाम, मुदुभावो 'मुदुता' नाम, कम्मञ्ञभावो 'कम्मञ्ञता' नाम, निब्बत्ति 'उपचयो' नाम, पवत्ति 'सन्तति' नाम, जीरणाकारो 'जरता' नाम, हुत्वा अभावाकारो 'अनिच्चता' नाम । इति सब्बं परिनिप्फन्नं संखतमेव होति' ति ।

अट्ठसालिनिया धम्मसंगहट्ठकथाय
रूपकण्ड-वण्णना निट्ठिता ।

ति कम्म-आदीसु, निद्धारणं । एवमादिरूपं कम्मपच्चयं नाम । आहारसमुट्ठानस्स च उपादिन्नस्स चा ति पदद्वयं द्विन्नम्पीति पदस्स सरूपं । तस्मिं ति समुट्ठके[1] विज्जमाने[2] । तस्मिं[3] अट्ठके[3] । घट्टेतुं सक्कोति । उतु ततो ति सन्ततितो परं घट्टेतुं न सक्कोति दीपेतुं वट्टति पण्डितो । अथवा दीपेतुं ति दीपनं भावेतुं पच्चयो । खायन्तीति पाकटा होन्ति ।

दस[4] अपरिनिप्फन्ना ति सुत्वा परो अनिट्ठं आपादेन्तो[5] आह यदीति आदि । (१८७—म०) तेसं येवा ति आदिना पन तं[6] पटिक्खिपति । तेसं येव पन रूपानं ति[7] तेसं येव अट्ठारसन्नं निप्फन्नरूपानं । कायेन पवत्तो विकारो कायविकारो । वचिया[8] पवत्तो विकारो वचीविकारो । इतीति एवं सब्बं रूपं ।

॥ रूपकण्डवण्णना निट्ठिता ॥

---

१. सुद्धट्ठके—सी० । २. ०तु—सी० । ३-३. तस्मिं पी ति अञ्ञस्मिं अट्ठके—सी० । ४. दस रूपा—सी० । ५. पादेन्तो—म० । ६. मतं—सी० । ७. ति नत्थि—सी० । ८. वचसा—सी० ।

५

निक्खेपकण्डवण्णना

१. तिकवण्णना

एत्तावता कुसलत्तिको सब्बेसं कुसलादिधम्मानं पदभाजननयेन वित्थारितो होति। यस्मा पन य्वायं कुसलत्तिकस्स विभाजननयो वुत्तो, सेसत्तिकदुकानं पन एसेव विभाजननयो होति—यथा हि एत्थ, एवं 'कतमे धम्मा सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता ? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं ञाणसम्पयुत्तं रूपारम्मणं वा ""प""ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञे पि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाखन्धं, इमे धम्मा सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता' ति आदिना अनुक्कमेन सब्बतिकदुकेसु सक्का पण्डितेहि विभाजननयं सल्लक्खेतुं—तस्मा तं वित्थारदेसनं निक्खिपित्वा, अञ्ञेन, नातिसंखेपवित्थारेन नयेन सब्बतिकदुकधम्मविभागं दस्सेतुं **कतमे धम्मा कुसला** [ध० २२९] ति **निक्खेपकण्डं** आरद्धं। **चित्तुप्पादकण्डं** हि वित्थारदेसना, अट्ठकथाकण्डं संखेपदेसना। इदं पन **निक्खेपकण्डं चित्तुप्पादकण्डं** उपादाय संखेपो, अट्ठकथाकण्डं उपादाय वित्थारो ति नातिसंखित्तवित्थारधातुकं होति।

निक्खेपकण्डवण्णना

(२२०—सी०) एत्तावता ति कतमे धम्मा कुसला ति आदिना एत्तावतावचनेन। पदभाजननयेना ति पदस्स भाजनसङ्खातेन नयेन भगवता वित्थारिता। यो[१] यं[१] विभाजननयो भगवता वुत्तो। एसेव नयो सेसतिकदुकानम्पि विभाजननयो यस्मा होतीति सम्बन्धो। वुत्तवचनं दळ्हं करोति यथा हीति आदिना। हि सच्चं, एत्थ कुसलत्तिके विभजननयो[२] पण्डितेहि सल्लक्खितो। एवं[3]""प०""सब्बतिकदुकेसु विभजननयं सल्लक्खेतुं पण्डितेहि सक्का ति योजना। पण्डितेही ति पदं सक्का ति पदे ततियाकत्ता। तस्मा ति पदं निक्खिपित्वा ति पदे हेतु। अञ्ञेना ति वित्थारदेसनतो अञ्ञेन। सब्बतिकदुकधम्मविभागं ति सब्बतिकदुकानं धम्मविभजनं चित्तुप्पादकण्डं हीति आदि दळ्हीकरणं। देसियति उच्चारियतीति देसना[४]। इदं पन निक्खेपकण्डं होति ति सम्बन्धो। इतीति तस्मा। सङ्खित्तञ्च वित्थारञ्च सङ्खित्तवित्थारं। सङ्खित्तवित्थारं धातु सभावो यस्स[५] तं सङ्खित्तवित्थारधातुकं।

१-१. य्वायं—सी०। २. विभाजन०—सी० सब्बत्थ। ३. यथा एवं—सी०।
४. ०वित्थारेन पवत्ता देसना वित्थारदेसना—सी०। ५. ०निक्खेपकण्डस्स—सी०।

तयिदं, वित्थारदेसनं निक्खिपित्वा देसितत्ता पि, हेट्ठावुत्तकारणवसेना पि, निक्खेपकण्डं नामा ति वेदितब्बं। वुत्तं हेतं—

मूलतो खन्धतो चा पि द्वारतो चा पि भूमितो।
अत्थतो धम्मतो चा पि नामतो चा पि लिंगतो।
निक्खिपित्वा देसितत्ता निक्खेपो ति पवुच्चती ति॥

इदं हि **तीणि कुसलमूलानी** ति आदिना नयेन मूलतो निक्खिपित्वा देसितं। **तं-सम्पयुत्तो वेदनाखन्धो** [ध० २२९] ति खन्धतो। **तं-समुट्ठानं कायकम्मं** ति द्वारतो। कायद्वारप्पवत्तं हि कम्मं कायकम्मं ति वुच्चति। **सुखभूमियं, कामावचरे** [ध० २२९] ति भूमितो निक्खिपित्वा देसितं। तत्थ तत्थ अत्थ-धम्म-लिंग-नामानं वसेन देसितत्ता अत्थादीनि निक्खिपित्वा देसितं नामा ति वेदितब्बं।

तत्थ कुसलपदनिद्देसे ताव **तीणि** [ध० २२९] ति गणनपरिच्छेदो। कुसलानि च तानि मूलानि च, कुसलानं वा धम्मानं हेतु-पच्चय-पभव-जनक-समुट्ठापक-निब्बत्तकट्ठेन मूलानी ति **कुसलमूलानी** ति। एवं अत्थवसेन दस्सेत्वा इदानि नामवसेन दस्सेतुं **अलोभो अदोसो अमोहो** ति आह। एत्तावता यस्मा मूलेन मुत्तं कुसलं नाम नत्थि, तस्मा चतुभूमिककुसलं तीहि मूलेहि परियादियित्वा दस्सेसि **धम्मराजा**। **तं-सम्पयुत्तो** तेहि अलोभादीहि सम्पयुत्तो। तत्थ अलोभेन सम्पयुत्ते संखार-

---

तयिदं ति तं इदं कण्डं। नामा ति पदे सञ्ञी, वेदितब्बं ति पदे कम्मं। देसितत्ता पी ति पदं नाम वेदितब्बं ति पदद्वये हेतु। वसेना पी ति पदं[१] वेदितब्बं ति पदे[२] ततियाविसेसनं। वित्थारदेसनं ति आदिना वित्थारदेसना निक्खिपियति[३] एत्था ति निक्खेपो, निक्खेपो एव कण्डं निक्खेपकण्डं ति विग्गहो दस्सितो। हेट्ठा ति निदानकथायं। किं पन हेट्ठा वुत्तकारणं ति आह—वुत्तं हेतं ति आदि। हि सच्चं मूलतो....प०....पवुच्चतीति एतं वचनं निदानकथायं मया वुत्तं। इदं हीति आदि वित्थारो। हि सच्चं इदं निक्खेपकण्डं निक्खिपित्वा देसितं भगवता। इदं द्वारतो निक्खिपित्वा देसितं ति सम्बन्धो। हिसद्दो दळ्हीकरणं। तत्थ[४] तत्था ति तस्मि ठाने। वेदितब्बं ति[५] निक्खेपकण्डं ति सम्बन्धो।

तत्था ति कुसलपदनिद्देसेसु[६], निद्धारणं। कुसलपदनिद्देसे विनिच्छयो ताव वेदितब्बो। तीसु[७] (१८८–म०) तीणी ति पदेन गणनपरिच्छेदो वेदितब्बो। गणनेन परिच्छेदो गणनपरिच्छेदो। हेतु नाम मूलवसेन[८] पच्चयो हेतुपच्चयो। पभवति फलं एतस्मा ति पभवो। जनेतीति जनको[९]। समुट्ठाति फलं एतेना ति समुट्ठानं, निब्बत्तेतीति निब्बत्तको। समुट्ठानञ्च तं निब्बत्तको चा ति समुट्ठाननिब्बत्तको। हेतुपच्चयो च पभवजनको च समुट्ठाननिब्बत्तको च हेतु....प०....

---

१. ०नाम–सी०। २. पदद्वये–सी०। ३. निक्खिपति–सी०। ४. नत्थि–सी०। ५. ति नत्थि–सी०। ६. कुसलादिपद०–सी०। ७. नत्थि–सी०। ८. लद्धवसेन–सी०। ९. ० (२२१–सी०) पभवो एव जनको पभवजनको–सी०।

क्खन्धे, अदोसामोहा पि अलोभेन सम्पयुत्तसंखारक्खन्धगहणं येव गच्छन्ति। सेसद्वयवसेन सम्पयोगे पि एसेव नयो। इति चतुभूमिककुसलं पुन तं-सम्पयुत्तकचतुक्खन्धवसेन परियादियित्वा दस्सेसि **धम्मराजा**। **तं-समुट्ठानं** ति तेहि अलोभादीहि समुट्ठितं। इमिना पि नयेन तदेव चतुभूमिककुसलं तिण्णं कम्मद्वारानं वसेन परियादियित्वा दस्सेसि **धम्मराजा**। एवं ताव कुसलं तीसु ठानेसु परियादियित्वा दस्सितं।

अकुसले पि एसेव नयो। द्वादसन्नं हि अकुसलचित्तानं एकं मूलेन मुत्तं नाम नत्थी ति मूलेन परियादियित्वा दस्सेसि **धम्मराजा**। तं-सम्पयुत्तचतुक्खन्धतो च उद्धं अकुसलं नाम नत्थी ति तानेव द्वादस अकुसलचित्तानि चतुक्खन्धवसेन परियादियित्वा दस्सेसि। कायकम्मादिवसेन पन नेसं पवत्तिसब्भावतो कम्मद्वारवसेन परियादियित्वा दस्सेसि **धम्मराजा**। यं पनेत्थ **तदेकट्ठा च किलेसा** [ध० २२९] ति आदि वुत्तं, तत्थ एकस्मिं चित्ते पुग्गले वा ठितं ति 'एकट्ठं'। तत्थ एकस्मिं चित्ते ठितं सहजेकट्ठं नाम होति। एकस्मिं पुग्गले ठितं पहानेकट्ठं नाम। तेन लोभादिना अञ्ञेन वा तत्थ तत्थ निद्दिट्ठेन सह एकस्मिं ठितं ति तदेकट्ठं।

निब्बत्तकानि। हेतुपच्चयपभवजनकसमुट्ठाननिब्बत्तकानि एव अत्थो हेतु....प०.... निब्बत्तकट्ठो[१]। अथवा हेतुपदादीनि परियायवेवचनानि। हिनोति फलं एतस्मा पवत्ततीति हेतु। पटिच्च एतस्मा एतीति पच्चयो। हेतु च पच्चयो च पभवो च जनको च समुट्ठानञ्च निब्बत्तको च हेतु....प०....निब्बत्तकानि। तानि एव अत्थो हेतु....प०....निब्बत्तकट्ठो। अत्थवसेना ति मूलस्स किच्चवसेन। अनुटीकायं[२] पन अत्थवसेना ति तेसं[३] सभावसङ्खातेना ति[४] वुत्तं। दस्सेत्वा कुसलं ति सम्बन्धो[५]। एत्तावता ति अलोभो ति आदिना एत्तावता वचनेन, दस्सेतीति पदे करणं। तत्था ति अलोभादोसु, निद्धारणं। सङ्खारक्खन्धो ति पदं अदोसामोहा पी ति पदे आधारो। अलोभेन सम्पयुत्ता अदोसामोहा पी ति गच्छन्ति, अपिसद्दो अलोभं अपेक्खति। सङ्खारक्खन्धगणनं येवा ति सङ्खारक्खन्धे येव। सेसद्वयवसेना ति अदोसामोहद्वयवसेन।

द्वादसन्नं हीति आदि वित्थारो। अकुसलचित्तानं ति निद्धारणे छट्ठी। एकम्पि अकुसलचित्तं। तेसं अकुसलचित्तानं। पवत्तिसब्भावतो ति पवत्तिया विज्जमानतो। एत्था ति अकुसलनिद्देसे। यं पन वचनं। तत्था ति तदेकट्ठा ति आदिवचने विनिच्छयो। एकस्मिं[६] चित्ते....प०....ठितं धम्मजातं इति एकट्ठं। तत्था ति एकस्मिं चित्ते[७] ठिताधिके[७], निद्धारणं। सह जायतीति सहजं। सहजभावेन एकट्ठं सहजेकट्ठं। तेन लोभादिना सह एकस्मिं ठितं धम्मं[८] जातं[८] तत्थ तत्थ ठाने निद्दिट्ठेन अञ्ञेन वा फस्सादिधम्मेन सह एकस्मिं ठितं इति धम्मजातं तदेकट्ठं।

---

१. ०कत्थो–सी० सब्बत्थ। २. अनुटीका ति–म०। ३. ०मूलानं–सी०। ४. सभावसङ्खातवसेना ति–सी०। ५. नत्थि–सी०। ६. एतस्मिं–सी०। ७-७. चित्तेकट्ठितादिके–सी०। ८-८. धम्मजातं–सी०।

तत्थ 'कतमे धम्मा संकिलिट्ठसंकिलेसिका ? तीणि अकुसलमूलानि—लोभो दोसो मोहो, तदेकट्ठा च किलेसा' ति संकिलिट्ठत्तिके [ध० २३०-२३१]; 'कतमे धम्मा हीना ? तीणि अकुसलमूलानि—लोभो दोसो मोहो, तदेकट्ठा च किलेसा' ति हीनत्तिके [ध० २३५]; 'कतमे धम्मा अकुसला ? तीणि अकुसलमूलानि—लोभो दोसो मोहो तदेकट्ठा च किलेसा' ति इमस्मिं कुसलत्तिके; [ध० २२९] 'कतमे धम्मा संकलिट्ठा ? तीणि अकुसलमूलानि—लोभो दोसो मोहो, तदेकट्ठा च किलेसा' ति किलेसगोच्छके [ध० २७३]; 'कतमे धम्मा स-रणा ? तीणि अकुसलमूलानि—लोभो दोसो मोहो, तदेकट्ठा च किलेसा ति स-रणदुके' [ध० २८३] ति—इमेसु एत्तकेसु ठानेसु 'सहजेकट्ठं' आगतं।

दस्सनेन पहातब्बत्तिके [ध० २३२-२३३] पन 'इमानि तीणि संयोजनानि, तदेकट्ठा च किलेसा' ति दस्सनेन पहातब्बहेतुकत्तिके [ध०२३३] पि 'इमानि तीणि संयोजनानि, तदेकट्ठा च किलेसा ति, पुन तत्थेव तीणि संयोजनानि—सक्कायदिट्ठि विचिकिच्छा सीलब्बतपरामासो ति, इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बा; तदेकट्ठा च लोभो दोसो मोहो, इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बहेतू; तदेकट्ठा च किलेसा तं-सम्पयुत्तो वेदनाखन्धो सञ्ञाखन्धो संखारक्खन्धो विञ्ञाणक्खन्धो, तं-समुट्ठानं कायकम्मं वचीकम्मं मनोकम्मं, इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बहेतुका ति; सम्मप्पधानविभंगे "तत्थ कतमे पापका अकुसला धम्मा ? तीणि अकुसलमूलानि—लोभो दोसो मोहो, तदेकट्ठा च किलेसा" [विभ० २५६] ति—इमेसु पन एत्तकेसु ठानेसु 'पहानेकट्ठं' आगतं ति वेदितब्बं।

अब्याकतपदनिद्देसो [ध० २२९] उत्तानत्थो एवा ति।

इमस्मिं तिके तीणि लक्खणानि तिस्सो पञ्ञत्तियो कसिणुग्घाटिमाकासं अजटाकासं आकिञ्चञ्ञायतनस्स आरम्मणं निरोधसमापत्ति च न लब्भन्ती ति वुत्तं।

वेदनातिकनिद्देसे [ध० २२९-२३०] **सुखभूमियं** ति एत्थ यथा तम्बभूमि कण्हभूमी ति तम्ब-कण्हभूमियो व वुच्चन्ति, एवं सुखं पि सुखभूमि नाम। यथा उच्छु-

---

तत्था ति सहजेकट्ठपहानेकट्ठेसु, निद्धारणं। संकिलिट्ठत्तिके सहजेकट्ठं आगतं ति सम्बन्धो।

तत्थेवा ति दस्सनेन पहातब्बहेतुकत्तिके एव तीणि····प०····हेतुका ति पहानेकट्ठं आगतं इति[1]।

एवं इति[2] इमस्मिं तिके, न लब्भतीति[3] पदे आधारो। इति वचनं आचरियेहि वुत्तं।

(२२२–सी०) सुखभूमियं ति एत्थ वचने, सुखभूमिनामा ति पदे आधारो। भवती ति भूमि, सुखं [१८९–म०] एव भूमि सुखभूमि। भवति एत्था ति भूमि, चित्तं। सुखस्स भूमि

१. इतीति–सी०। २. नत्थि–सी०। ३. लब्भन्तीति–सी०।

भूमि-सालिभूमी ति उच्छुसालीनं उप्पज्जनट्ठानानि वुच्चन्ति, एवं सुखस्स उप्पज्जनट्ठानं चित्तं पि सुखभूमि नाम। तं इध अधिप्पेतं। यस्मा पन सा कामाचरा वा होति, रूपावचरादीसु वा, तस्मा' स्सा तं पभेदं दस्सेतुं **कामावचरे** ति आदि वुत्तं। **सुखवेदनं ठपेत्वा** ति या सा सुखभूमियं सुखवेदना, तं ठपेत्वा। **तं-सम्पयुत्तो** ति तायेव ठपिताय सुखवेदनाय सम्पयुत्तो। सेसपदद्वये पि इमिना व नयेन अत्थो वेदितब्बो। इमस्मिं तिके तिस्सो वेदना, सब्बं रूपं, निब्बानं ति इदं न लब्भति। अयं हि तिको कुसलत्तिके च अलब्भमानेहि इमेहि च तीहि कोट्ठासेहि मुत्तको नाम।

इतो-परेसु पन तिकदुकेसु पालितो च अत्थतो च यं वत्तब्बं सिया तं सब्बं पदानुक्कमेन मातिकाकथाय चेव कुसलादीनं च निद्देसे वुत्तमेव। यं पन यत्थ विसेसमत्तं तदेव वक्खाम।

तत्थ विपाकत्तिके [ध० २३०] ताव किञ्चा पि अरूपधम्मा विय रूपधम्मा पि कम्मसमुट्ठाना अत्थि, अनारम्मणत्ता पन ते कम्मसरिक्खका न होन्ती ति सारम्मणा अरूपधम्मा व कम्मसरिक्खकत्ता विपाका ति वुत्ता, बीजसरिक्खकफलं विय। सालिबीजस्मि हि वापिते अङ्कुरुप्पत्तादीसु निक्खन्तेसु पि सालिफलं ति न वुच्चति। यदा पन सालिसीसं पक्कं होति परिणतं, तदा बीजसरिक्खको सालि एव सालिफलं ति वुच्चति। अङ्कुरुप्पत्तादीनि पन बीजजातानि बीजतो निब्बत्तानी ति वुच्चन्ति, एवमेव रूपं पि कम्मजं ति वा उपादिन्नं ति वा वत्तुं वट्टति।

सुखभूमि। तं ति तं चित्तं। इध भूमियं[1] ति वचने। सा ति चित्तसङ्खाता सुखभूमि। कामावचरा वा रूपावचरादीसु वा ति पदद्वयं होती ति पदे आधारो। तस्सा ति चित्तसङ्खाताय सुखभूमिया। तं पभेदं ति तं कामावचरादिभेदं। यस्मा ति[2] आदिना सुखभूमियं ति पदं सुखवेदनं ति पदे आधारो। कामावचरे ति आदि चतुक्कं सुखभूमियं ति पदस्स समुदायाधारो ति ञापेति। इदम्पीति[3] पिसद्दो[3] तीणि लक्खणादीनि समुच्चेति। अयं हीति आदि दळ्हीकरणं। हि सच्चं, अयं तिको कुसलत्तिके अलब्भमाने ति च इमेहि तीहि कोट्ठासेहि मुत्तको नाम।

तं ति तं वचनं। पदानुक्कमेना ति पदं कथायं ति पदे ततियाविसेसनं। यत्थट्ठाने यं पन विसेसमत्तं। तं विसेसमत्तं मयं वक्खाम।

तत्था ति तिकदुकेसु, निद्धारणं। विपाकत्तिके पन[4] ताव विनिच्छयो। कम्मसमुट्ठाना रूपधम्मा पि अत्थि[5]। ते ति रूपधम्मा। हिसद्दो दळ्हीकरणं। वापिते ति पदं निक्खन्तेसू ति पदे लक्खणक्रिया। निक्खन्तेसू ति पदं न[6] वुच्चतीति पदे लक्खणक्रिया। सालीति[7] न[8] वुच्चतीति पदे कम्मं। परिणतं ति पदं पक्कं ति पदस्स परियायं।

---

१. सुखभूमियं–सी०। २. या सा ति–सी०। ३-३. इदं चा ति चसद्दो–सी०। ४. नत्थि–सी०। ५. किं चापि अत्थि–सी०। ६. नत्थि–सी०। ७. ०पदं–सी०। ८. नत्थि–सी०।

उपादिन्नत्तिके [ध० २३०] किञ्चा पि खीणासवस्स खन्धा 'अम्हाकं मातुलथेरो अम्हाकं चूळपितुथेरो' ति वदन्तानं परेसं उपादानस्स पच्चया होन्ति, मग्ग-फल-निब्बानानि पन अग्गहितानि अपरामट्ठानि अनुपादिन्नानेव। तानि हि, यथा दिवसं सन्तत्तो अयोगुळो मक्खिकानं अभिनिसीदनस्स पच्चयो न होति, एवमेव तेजुस्सदत्ता तण्हामानदिट्ठिवसेन गहणस्स पच्चया न होन्ति। तेन वुत्तं—**इमे धम्मा अनुपादिन्न-अनुपादानिया** [ध० २३०] ति। असंकिलिट्ठ-असंकिलेसिकेसु [ध० २३१] पि एसेव नयो।

वितक्कत्तिके [ध० २३१] वितक्कसहजातेन विचारेन सद्धिं कुसलत्तिके अलब्भमाना व न लब्भन्ति। पीतिसहगतत्तिके [ध० २३१-२३२] पीति-आदयो अत्तना अत्तना सहजातधम्मानं पीतिसहगतादिभावं दत्वा सयं पिट्ठिवत्तका जाता। इमस्मिं तिके द्वे दोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा दुक्खसहगतं कायविञ्ञाणं उपेक्खावेदना रूपं निब्बानं ति—इदं पि न लब्भति। अयं हि तिको कुसलत्तिके व अलब्भमानेहि इमेहि पञ्चहि कोट्ठासेहिं मुत्तको नाम।

दस्सनेन पहातब्बत्तिके [ध० २३२-२३३] **संयोजनानी** ति बन्धनानि। **सक्कायदिट्ठी** ति विज्जमानट्ठेन सति खन्धपञ्चकसङ्खाते काये; सयं वा सती तस्मिं काये दिट्ठी ति 'सक्कायदिट्ठि'। सीलेन सुज्झितुं सक्का, वतेन सुज्झितुं सक्का, सीलवतेहि सुज्झितुं सक्का ति गहितसमादानं पन **सीलब्बतपरामासो** नाम।

इधा [ध० २३२] ति पि देसापदेसे निपातो। स्वायं कत्थचि लोकं उपादाय वुच्चति। यथाह—"इध तथागतो लोके उप्पज्जती" [दी० १. ५५] ति। कत्थचि

उपादिन्नत्तिके विनिच्छयो ति योजना। खीणासवस्स खन्धा उपादानक्खन्धपच्चया[1] किञ्चा पि होन्तीति सम्बन्धो। अग्गहितानीति आदीनि परियायानि। परेहि अग्गहितानीति योजना। तानि हीति आदि दळ्हीकरणं। तानि मग्गफलनिब्बानानि। गहणस्स पच्चया न होन्तीति सम्बन्धो।

अलब्भमाना व तिलक्खणादयो[2]। सहजातधम्मानं पिट्ठियं वट्टतीति[3] पिट्ठिवट्टका। पीति-आदयो सुखसहगता ति आदि पदे सुपविट्ठत्ता पिट्ठिवट्टका नामा ति अधिप्पायो।

सतीति सन्तसद्दतो स्मिं विभत्तिं कत्वा न्तसद्दस्स न्तुमिव कत्वा **तोतिता सस्मिनासु ति** (क० २.२.८) सुत्तेन न्तुसद्देन[4] सह स्मिं विभत्तिया ति आदेसं कत्वा सतीति रूपसिद्धि वेदितब्बा। सयं वा सतीति अत्तना अविज्जमाना। सन्तसद्दतो ई पच्चयं कत्वा **न्तुस्स तमीकारे ति** (क० २.४.३१) **सुत्तेन** न्तुस्स तो। सन्तो कायो सक्कायो। सक्काये दिट्ठि सक्कायदिट्ठि। सती वा विज्जमाना काये दिट्ठि। गहितसमादानं ति गहितस्स (२२३–सी०) सीलब्बतस्स गहणं। सीलञ्च वतञ्च सीलब्बतानि। सीलब्बतानं परतो आमसनं गहणं सीलब्बतपरामासो।

देसस्स अपदिसनं देसापदेसो। यायं[5] निपातो कत्थचि पयोगे[6]। स्वायं कत्थचि[6] सासनं

---

१. उपादानक्खन्धा पच्चया–सी०। २. द्वति०–सी०। ३. वट्टन्तीति–सी०। ४. न्तसद्देन–सी०। ५. य्वायं–सी०। ६-६. नत्थि–सी०।

सासनं। यथाह—"इधेव भिक्खवे, समणो इध दुतियो समणो" [म० १.९०, अं० २.२५३] ति। कत्थचि ओकासं। यथाह—

इधेव तिट्ठमानस्स देवभूतस्स मे सतो।
पुनरायु च मे लद्धो एवं जानाहि मारिसा [दी० २.२१४] ति॥

कत्थचि पदपूरणमत्तमेव। यथाह—"इधाहं भिक्खवे, भुत्तावी अस्सं पवारितो" [म० १.१८] ति। इध पन लोकं उपादायं वुत्तो ति वेदितब्बो।

अस्सुतवा पुथुज्जनो ति एत्थ पन
'आगमाधिगमाभावा ञेय्यो अस्सुतवा इति'।

यस्स हि खन्ध-धातु-आयतन-पच्चयाकार-सतिपट्ठानादीसु उग्गह-परिपुच्छा विनिच्छय-रहितत्ता दिट्ठिपटिसेधको नेव 'आगमो', पटिपत्तिया अधिगन्तब्बस्स अनधिगतत्ता नेव 'अधिगमो' अत्थि, सो
'आगमाधिगमाभावा ञेय्यो अस्सुतवा इति।

उपादाय वुच्चतीति सम्बन्धो।

इधेव इन्दसाल-[१९०—म०] गुहायं तिट्ठमानस्स देवभूतस्स मे सतो विज्जमानस्स पुन मे[1] मया लद्धो मारिस, त्वं एवं जानाहि। मारिसा ति सक्को भगवन्तं आलपति। आयुसद्दो पुल्लिङ्गनपुंसकलिङ्गवसेन द्विधा ठितो। इध गाथायं पुन[2] लद्धो[2] ति पदस्स दस्सनतो आयुसद्दो पुल्लिङ्गो ति वेदितब्बो। सायं[3] कत्थचि पदपूरणमत्तमेव उपादाय वुच्चति पण्डितेन। इध पन ठाने लोकं उपादाय भगवता वुत्तो। इति इधा ति निपातो वेदितब्बो पण्डितेन।

अस्सुतवा पुथुज्जनो ति एत्थ पन विनिच्छयो वेदितब्बो। पुग्गलो आगमाभावा[4] अस्सुतवा ति[5] यो[5] वेदितब्बो पण्डितेन। आगच्छन्ति अत्तत्थादयो एतेना ति आगमो। अधिगमियती ति अधिगमो। आगमो च अधिगमो च आगमाधिगमा। आगमाधिगमानं अभावो आगमा····प०····भावो। यस्स हीति आदि वित्थारो। हि सच्चं, यस्स पुग्गलस्स, नेव अत्थीति पदे सम्पदानं। उग्गहो च परिपुच्छा च विनिच्छयो च उग्गह····प···विनिच्छयो। तेहि[6] रहितो, तस्स भावो उग्गह····प०···रहितत्तं[6]। दिट्ठिपटिसेधको आगमो नेव अत्थि। दिट्ठि मिच्छादिट्ठि पटिसेधेतीति दिट्ठिपटिसेधको। पटिपत्तिया ति पदं अधिगन्तब्बस्सा ति पद[7] अनधिगतत्ता इति[7] पदे कम्मं। स्वायं पुग्गलो पुथुज्जनो इति विञ्ञेय्यो ति सम्बन्धो।

---

१. आयु मे–सी०। २-२. पनसद्दो–सी०। ३. स्वायं–सी०। ४. आगमा····प०····भावा–सी०। ५-५. अस्सुतवा इति ञेय्यो–सी०। ६-६. तेहि रहितो उग्गह····प०····रहितो। तस्स भावो उग्गह····प०····रहितत्तं–सी०। ७-७. ०पदे करणं। अधिगन्तब्बस्सा ति पदं अनधिगत इति–सी०।

पुथूनं जननादीहि कारणेहि पुथुज्जनो।
पुथुज्जनन्तोगधत्ता पुथुवायं जनो इति॥

सो हि पुथूनं नानप्पकारानं किलेसादीनं जननादीहि पि कारणेहि पुथुज्जनो। यथाह—"पुथु किलेसे जनेन्ती, ति पुथुज्जना। पुथु अविहतसक्कायदिट्ठिका ति पुथुज्जना। पुथु नाना सत्थारानं मुखुल्लोकिका ति पुथुज्जना। पुथु सब्बगतीहि अवुट्ठिता ति पुथुज्जना। पुथु नानाभिसंखारे अभिसंखरोन्ती ति पुथुज्जना। पुथु नानाओघेहि वुय्हन्ती ति पुथुज्जना। पुथु नानासन्तापेहि सन्तप्पन्ती ति पुथुज्जना। पुथु नानापरिळाहेहि परिडय्हन्ती ति पुथुज्जना। पुथु पञ्चसु कामगुणेसु रत्ता गिद्धा गथिता मुच्छिता अज्झोपन्ना लग्गा लगिता पलिबुद्धा ति पुथुज्जना। पुथु पञ्चहि नीवरणेहि आवुता निवुता ओवुता पिहिता पटिच्छन्ना पटिकुज्जिता ति पुथुज्जना" [नि० १४६, २६८]। पुथूनं वा गणनपथमतीतानं अरियधम्मपरम्मुखानं नीचधम्मसमाचारानं जनानं अन्तोगधत्ता ति पि पुथुज्जना। पुथु वा अयं—विसुं येव संखं गतो, विसंसट्ठो सीलसुतादिगुणयुत्तेहि अरियेहि—जनो ति पि पुथुज्जनो।

एवमेतेहि 'अस्सुतवा पुथुज्जनो' ति द्वीहि पदेहि ये ते

दुवे पुथुज्जना वुत्ता बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
अन्धो पुथुज्जनो एको कल्याणेको पुथुज्जनो ति॥

द्वे पुथुज्जना वुत्ता, तेसु अन्धपुथुज्जनो वुत्तो होती ति वेदितब्बो।

अरियानं अदस्सावी ति आदीसु अरिया ति आरकत्ता किलेसेहि, अनये न इरियनतो, अये इरियनतो, सदेवकेन लोकेन च अरणीयतो बुद्धा च पच्चेकबुद्धा च

सो हीति आदि वित्थारो। पुथूनं ति पदस्स अत्थं विवरन्तो आह—नानप्पकारानं ति। पुथू ति पदस्स अत्थं विवरन्तो आह—नाना किलेसे ति। उल्लोकनं पेक्खनं[1] उल्लोकं, उपुब्ब 'लोक'—दस्सने। मुखस्स उल्लोकं मुखुल्लोकं[2], तं[3] एतेसं ति मुखुल्लोकिका[4]। **दण्डादितो इक ई ति** (क० २.८. ३३) सुत्तेन इको। आवुता ति आदयो परियाया। अतीतानं ति अतिक्कन्तानं। अरियधम्मो परम्मुखो येसं ते अरियधम्मपरम्मुखा। नीचेन[5] लामको, नीचानं वा लामकजनानं धम्मो नीचधम्मो। नीचधम्मस्स समाचरणं येसं ते नीचधम्मसमाचारो। पुथू [२२४–सी०] ति पदस्स अत्थं विवरन्तो आह—अयं विसुं येवा ति आदि। अयं जनो ति सम्बन्धो। अरियेहीति पदं विसंसट्ठो ति[6] पदे सहयोगततिया। ये ते पुथुज्जना भगवता वुत्ता ति सम्बन्धो। कल्याणेको ति कल्याणो पुथुज्जनो एको। तेसू ति द्वीसु पुथुज्जनेसु।

अरियानं अदस्सावी ति आदीसु विनिच्छयो। अरिया इति पदं वुच्चन्तीति पदे आधारो। अनये ति अवुड्ढियं, अनुपाये वा। न इरियनतो ति लोकस्स अप्पवत्तापनतो।

---

१. पेक्खणं–सी०। २. मुखमुल्लोकं–सी०। ३. मुखमुल्लोकं–सी०।
४. मुखमुल्लोकिका–सी०। ५. नीचो–सी०। ६. विसंसट्ठे ति–सी०।

बुद्धसावका च वुच्चन्ति। बुद्धा एव वा इध अरिया। यथाह—"सदेवके भिक्खवे, लोके ....प०....तथागतो अरियो ति पवुच्चती" [ ] ति। **सप्पुरिसा** ति एत्थ पन पच्चेकबुद्धा तथागतसावका च सप्पुरिसा ति वेदितब्बा। ते हि लोकुत्तरगुणयोगेन सोभना पुरिसा ति सप्पुरिसा। सब्बे व वा एते द्वेधा पि वुत्ता। बुद्धा पि हि अरिया च सप्पुरिसा च पच्चेकबुद्धा बुद्धसावका पि। यथाह—

यो वे कतञ्ञू कतवेदि धीरो कल्याणमित्तो दळ्हभत्ति च होति।
दुक्खितस्स सक्कच्चं करोति किच्चं तथाविधं सप्पुरिसं वदन्ती ति॥

'कल्याणमित्तो दळ्हभत्ति च होती' ति एत्तावता हि बुद्धसावको वुत्तो। कतञ्ञुतादीहि पच्चेकबुद्धा-बुद्धा ति।

इदानि यो तेसं अरियानं अदस्सनसीलो, न च दस्सने साधुकारी, सो अरियानं अदस्सावी ति वेदितब्बो। सो च चक्खुना अदस्सावी ञाणेन अदस्सावी ति दुविधो। तेसु ञाणेन अदस्सावी इध अधिप्पेतो। मंसचक्खुना हि दिब्बचक्खुना वा अरिया दिट्ठा पि अदिट्ठा व होन्ति, तेसं चक्खूनं वण्णमत्तगहणतो, न भावगोचरतो। सोणसिगालादयो पि चक्खुना अरिये पस्सन्ति, न च ते अरियानं दस्साविनो।

अये ति वुड्ढियं[1], उपाये वा। अरणीयतो ति [१९१-म०] पयिरुपासितब्बतो। यदि पि अरियसद्दो विसुद्धासयपयोगेसु पुथुज्जनेसु पि[2] वत्तति[2]। इध पन अरियमग्गाधिगमेन[3] सब्बलोकुत्तमभावेनेव[3] अरियभावो अधिप्पेतो ति दस्सेन्तो आह—बुद्धा वा ति आदि। इधा ति अरियानं ति पदे। सप्पुरिसा ति एत्थ पन पदे, वेदितब्बो[4] ति पदे आधारो। कस्मा पन ते सप्पुरिसा ति आह—ते हीति आदि। ते ति पच्चेकबुद्धसावका। वा अपरो नयो—सब्बेव एते बुद्धादयो द्वेधा पि भगवता वुत्ता[5]। पच्चेकबुद्धसावका पि[5] अरिया च सप्पुरिसा चा ति सम्बन्धो।

यो धीरो वे एकन्तेन कतञ्ञु कतवेदी कल्याणमित्तो दळ्हभत्ति च होति दुक्खितस्स सहायस्स सक्कच्चं किच्चं[6] करोति, तथाविधं सप्पुरिसं वदन्ति पण्डिता।

कल्याणो मित्तो कल्याणमित्तो। भजनं सेवनं भत्ति। दळ्हं भत्ति अस्सा ति दळ्हभत्ति। हि सद्दो दळ्हीकरणं। पच्चेकबुद्ध-बुद्धा वुत्ता व[7] योजना।

इदानीति पदं वेदितब्बा ति पदे कालसत्तमी। यो पुग्गलो अदस्सनस्स सीलो[8] च न[8] साधुकारी, वेदितब्बो ति पदे कम्मं। सो पुग्गलो दुविधो। तेसू ति दुविधेसु पुग्गलेसु। कस्मा पन ञाणेन अदस्सावी अधिप्पेतो ति आह—मंसचक्खुना हीति आदि। पुग्गलेहि पुग्गला[9] दिट्ठा पि। तेसं चक्खूनं ति मंसचक्खु-दिब्बचक्खूनं। वण्ण... प०....तो ति पदं अदिट्ठा ति[10] पदे[10] हेतु। न अरि....प०....तो अदिट्ठा वा ति योजना। अरियभावो गोचरो येसं तानि

---

१. वड्ढियं-सी०। २-२. पवत्तति-सी०। ३-३. ०अरियमग्गाधिगतसब्बलोकुत्तरपभावेनेव-सी०। ४. वेदितब्बा-सी०। ५-५. ०बुद्धा पि पच्चेकबुद्धसावका पि-सी०। ६. नत्थि-सी०। ७. वुत्ता पि-सी०। ८-८. सीलेन च-सी०। ९. अरिया-सी०। १०-१०. अदिट्ठपदे-सी०।

तत्रिदं वत्थु—**चित्तलपब्बतवासिनो** किर खीणासवत्थेरस्स उपट्ठाको वुड्ढपब्बजितो एकदिवसं **थेरेन** सद्धिं पिण्डाय चरित्वा **थेरस्स** पत्तचीवरं गहेत्वा पिट्ठितो आगच्छन्तो **थेरं** पुच्छि—'अरिया नाम भन्ते कीदिसा ?'। **थेरो** आह—'इधेकच्चो महल्लको अरियानं पत्तचीवरं गहेत्वा वत्तपटिवत्तं कत्वा सहचरन्तो पि नेव अरिये जानाति, एवं दुज्जाना आवुसो, अरिया'ति। एवं वुत्ते पि सो नेव अञ्ञासि। तस्मा न चक्खुना दस्सनं 'दस्सनं', ञाणदस्सनमेव 'दस्सनं'। यथाह—"किं ते **वक्कलि**, इमिना पूतिकायेन दिट्ठेन ? यो खो **वक्कलि**, धम्मं पस्सति, सो मं पस्सती" [सं० ३. ३४१] ति तस्मा चक्खुना पस्सन्तो पि, ञाणेन अरियेहि दिट्ठं अनिच्चादिलक्खणं अपस्सन्तो, अरियाधिगतं च धम्मं अनधिगच्छन्तो, अरियकरधम्मानं अरियभावस्स च अदिट्ठत्ता 'अरियानं अदस्सावी' ति वेदितब्बो।

अरियधम्मस्स अकोविदो ति सतिपट्ठानादिभेदे अरियधम्मे अकुसलो। **अरियधम्मे अविनीतो** ति, एत्थ पन

> दुविधो विनयो नाम एकमेकत्थ पञ्चधा।
> अभावतो तस्स अयं अविनीतो ति वुच्चति॥

अयं हि संवरविनयो पहानविनयो ति दुविधो विनयो। एत्थ च दुविधे पि विनये एकमेको विनयो पञ्चधा भिज्जति। संवरविनयो पि हि सीलसंवरो सतिसंवरो ञाण-

---

अरियभावगोचरानि। तेसं चक्खुवण्णमत्तग्गहणतो पि अत्थि। तेसं पुथुज्जनानं। ते ति सोणसिङ्गालादयो।

तत्रा ति ञाणेन दस्सनभावे। वत्थू ति अधिप्पेतत्थञापकं कारणं। लङ्कादीपे रोहणजनपदे[1] विज्जमाने चित्तलपब्बते वसति सीलेना ति चित्तलपब्बतवासी। (२२५–सी०) एवं[2] वुत्ते पी ति एवं अञ्ञापदेसेन अत्तूपनायिकं कत्वा वुत्ते पि। सो ति महल्लको। चक्खुदस्सनं[3] न होति। वक्कलि, ते तव[4] दिट्ठेन इमिना पूतिकायेन किं पयोजनं। यो हि[5] धम्मं ति लोकुत्तरधम्मं, चतुसच्चधम्मं वा[6], यो पुग्गलो। ञाणेना ति पदं अपस्सन्तो ति पदे करणं[7]। अरियकरधम्मानञ्च[7] अरियभावस्स चा ति योजेतब्बो।

अविनीतो ति न विनीतो अधिसीलसिक्खादीनं वसेन न सिक्खितो। एत्था ति पदं विनयो ति पदे आधारो। येसं संवरविनयादीनं अविनीतो[8] ति वुच्चति। ते[9] भावे[9] दस्सेतुं दुविधो विनयो[10] नामा ति आदिमाह। एकमेकत्था ति[11] दुविधे विनये एकमेको विनयो

---

१. रोहन०–सी०। २. नत्थि–म०। ३. चक्खुना दस्सनं दस्सनं–सी०। ४. तया–सी०। ५. नत्थि–सी०। ६. नत्थि–सी०। ७–७. ०अरियेहीति पदं दिट्ठं ति पदे ततियाकत्ता। अरियाधिगतं ति अरियेहि अधिगतं। चसद्दो असस्सन्तो च अनधिगच्छन्तो चा ति योजेतब्बो। अनधिगच्छन्तो पुग्गलो, वेदितब्बो ति पदे कम्मं। चसद्दो अरियभावकरणधम्मानञ्च–सी०। ८. अभावेन अयं अविनीतो–सी०। ९–९. भावं–म०। १०. विनिच्छयो–सी०। ११. एकमेकेत्था ति एत्थ–सी०।

संवरो खन्तिसंवरो विरियसंवरो ति पञ्चविधो। पहानविनयो पि तदंगप्पहानं विक्खम्भनप्पहानं समुच्छेदप्पहानं निस्सरणप्पहानं ति पञ्चविधो।

तत्थ "इमिना पातिमोक्खसंवरेन उपेतो होति समुपेतो" [विभ० २९६] ति अयं सीलसंवरो। "रक्खति चक्खुन्द्रियं, चक्खुन्द्रिये संवरं आपज्जती" [दी० १.६२] ति अयं सतिसंवरो।

"यानि सोतानि लोकस्मिं [अजिता ति भगवा] सति तेसं निवारणं।
सोतानं संवरं ब्रूमि पञ्ञायेते पिथीयरे" [सु० ४२४] ति॥

अयं ञाणसंवरो। "खमो होति सीतस्स उण्हस्सा" [म० १.१५] ति अयं खन्तिसंवरो। "उप्पन्नं कामवितक्कं नाधिवासेती" [म० १.१६] ति अयं विरियसंवरो। सब्बो पि चायं संवरो यथासकं संवरितब्बानं विनेतब्बानं च कायदुच्चरितादीनं संवरणतो संवरो, विनयनतो विनयो ति वुच्चति। एवं ताव 'संवरविनयो' पञ्चधा भिज्जती ति वेदितब्बो।

तथा यं नामरूपपरिच्छेदादीसु विपस्सनाञाणेसु पटिपक्खभावतो, दीपालोकेनेव तमस्स, तेन तेन विपस्सनाञाणेन तस्स तस्स अंगस्स पहानं, सेय्यथीदं—नामरूप-

---

पञ्चधा भिज्जति। तस्स विनयस्स [१९२–म०] अभावतो अयं पुथुज्जनो अविनीतो ति वुच्चति पण्डितेन। अयं हीति आदिवित्थारो। एत्थ च विनये निद्धारणं। संवरो ति[1] आदि वित्थारो।

तत्था ति सीलसंवरादीसु। पातिमोक्खसंवरेना ति सीलपातिमोक्खसङ्खातेन संवरेन। अजित, यानि सोतानि लोकस्मिं अत्थि इति आह भगवा। तेसं सोतानं निवारणं सतिं[2] सोतानं संवरं पिदहनं सतिं ब्रूमि अहं, पञ्ञाय एते सोता पिधिय्यरे[3] पण्डितेन, अयं संवरो वुच्चतीति सम्बन्धो। यथासकं ति सीलसंवरादिकस्स अत्तनो अनुरूपं। संवरितब्बानं ति पिदहितब्बानं। विनेतब्बानं ति अपनेतब्बानं, संवरणतो पिदहनतो संवरो वुच्चति।

तथासद्दो उपसंहरणत्थो। यं ति[4] पहानं ति पदस्स विसेसनं। यं ति अनियमनं। पहानमेतं ति एतं ति नियमनं। नामरूप····प०····दीसू ति पदं विपस्सनाञाणेसू ति पदस्स विसेसनं। विपस्सनाञाणेसु सन्तेसु पहानं ति योजना। पटिपक्खभावतो ति विपस्सनाञाणस्स[5] पटिपक्खभावतो, पहानं ति पदे हेतु। दीपालोकेन तमस्स पहानं इव। अनत्थस्सा ति सक्काय-दिट्ठि-आदिकस्स अनत्थस्स। सेय्यथिदं ति केन विपस्सनाञाणेन कथमेकस्स अनत्थस्स पहानं ति अत्थो। नामरूपववत्थानेन [२२६–सी०] सक्कायदिट्ठिया पहानं। पच्चयपरिग्गहेन पच्चयानि[6] परिच्छिन्दित्वा जाननेन अहेतु····प०····दिट्ठिपहानं[7]। नत्थि हेतु एतस्स नामरूपस्सा ति

---

१. संवरो हीति–सी०। २. सति–सी० सब्बत्थ। ३. पिथिय्यरे–सी०।
४. ०पदं–सी०। ५. विपस्सनाञाणाय अनत्थस्स–सी०। ६. पच्चयानं–सी०। ७. दिट्ठीनं पहानं–सी०।

ववत्थानेन सक्कायदिट्ठिया, पच्चयपरिग्गहेन अहेतुविसमहेतुदिट्ठीनं, तस्सेव अपरभागेन कंखावितरणेन कथंकथिभावस्स, कलापसम्मसनेन 'अहं ममा'ति गाहस्स, मग्गामग्गववत्थानेन अमग्गे मग्गसञ्ञाय, उदयदस्सनेन उच्छेददिट्ठिया, वयदस्सनेन सस्सतदिट्ठिया, भयदस्सनेन सभये अभयसञ्ञाय, आदीनवदस्सनेन अस्सादसञ्ञाय, निब्बिदानुपस्सनाय अभिरतिसञ्ञाय, मुञ्चितुकम्यताञाणेन अमुञ्चितुकामताय, उपेक्खाञाणेन अनुपेक्खताय, अनुलोमेन धम्मट्ठितिया निब्बाने च पटिलोमगाहस्स, गोत्रभुना संखारनिमित्तगाहस्स पहानं, एतं 'तदंगप्पहानं नाम। यं पन उपचारप्पनाभेदेन समाधिना पवत्तिभावनिवारणतो, घटप्पहारेनेव उदकपिट्ठे सेवालस्स, तेसं तेसं नीवरणधम्मानं पहानं, एतं 'विक्खंभनप्पहानं' नाम। यं चतुन्नं अरियमग्गानं

अहेतु। विसमो हेतु एतस्सा ति विसमहेतु। अहेतु च विसमहेतु च अहेतुविसमहेतु, दस्सनं दिट्ठि। अहेतुविसमहेतु इति दिट्ठि अहेतु....प०....दिट्ठि। तस्सेव पच्चयपरिग्गहस्स। अपरभागेन[1] अपरभागे पवत्तेन कङ्खा....प०....भावस्स पहानं। कलाप....प०....गाहस्स पहानं। मग्गा....प०....मग्गस्सञ्ञाय पहानं। उदय....प०....दिट्ठिया पहानं। वय....प०....दिट्ठिया पहानं। ....प०[2]....सञ्ञाय पहानं[3]। निब्बिदा....प०....सञ्ञाय पहानं। मुच्चितु[4]....प०....मताय पहानं। उपेक्खा....प०....अनुपेक्खाय पहानं। अनुलोमेन....प०....भावस्स पहानं। कथं कथा अस्स पुग्गलस्स अत्थीति कथंकथी। दण्डादितो इक ई (क० २.८.३३) इति सुत्तेन ई। कथंकथिनो भावो[5] विचिकिच्छा[6]। मग्गो इति सञ्ञा मग्गसञ्ञा। उच्छेदो इति दिट्ठि उच्छेददिट्ठि। सस्सतो इति दिट्ठि सस्सतदिट्ठि। अभयं इति सञ्ञा अभयसञ्ञा। अस्सादो इति सञ्ञा अस्सादसञ्ञा। अभिरति इति सञ्ञा अभिरतिसञ्ञा। अमुच्चितुं[7] कामेतीति अमुच्चितुकामो। तस्स भावो अमुच्चितुकामता। न [१९३-म०] उपेक्खनं अनुपेक्खा, सालयता। तिट्ठति एताया ति ठिति, पच्चयधम्मो। पच्चयुप्पन्नसङ्खातस्स ठिति धम्मट्ठिति[8], धम्मो येव वा ठिति धम्मट्ठिति। पटिलोमेतीति पटिलोमो। पटिलोमस्स भावो पटिलोमभावो, पच्चयाकारस्स निब्बानस्स च पटिच्छादकमोहो। सङ्खारो एव निमित्तं सङ्खारनिमित्तं। गहणं गाहो। सङ्खारनिमित्तगाहो[9] किलेसो। तेन तेन विपस्सनाञाणसङ्खातेन अङ्गेन पहानं तदङ्गप्पहानं। यं पन पहानं ति सम्बन्धो। समाधिना ति पदं पहानं ति पदे करणं। पवत्तिभावनिवारणो ति नीवरणादिधम्मानं पवत्तिभावस्स निवारणतो, पहानं ति पदे ततियाविसेसनं। घटप्पहारेन उदकपिट्ठे सेवालस्स पहानं इव। विक्खम्भेन्तेन[10] पहानं[10], विक्खम्भनं एव वा पहानं विक्खम्भनप्पहानं। यं ति पदं पहानं ति पदस्स विसेसनं। मग्गानं[11] ति पदं भावितत्ता ति पदे सम्बन्धो। भवितत्ता ति पदं अप्पवत्तीति पदे हेतु।

---

१. अपरभागे–सी०। २. भय....प०–सी०। ३. ०आदीनव....प....सञ्ञाय पहानं –सी०। ४. मुञ्चितु–सी०। ५. ०कथंकथीभावो–सी०। ६. ०भावो–सी०। ७. अमुञ्चितुं –सी० सब्बत्थ। ८. नत्थि–सी०। ९. संखारनिमित्तस्स गाहो संखारनिमित्तगाहो–सी०। १०-१०. विक्खम्भणेन पहाणं विक्खम्भणपहाणं–सी०। ११. अरियमत्तानं–सी० इध 'मत्त' सब्बत्थ।

भावितत्ता तं-तं-मग्गतो अत्तनो सन्ताने दिट्ठिगतानं पहानाया" [ ] ति आदिना नयेन वुत्तस्स समुदयपक्खिकस्स किलेसगणस्स अच्चन्तं अप्पवत्तिभावेन पहानं, इदं समुच्छेदप्पहानं' नाम। यं पन फलक्खणे पटिप्पस्सद्धत्तं किलेसानं, एतं 'पटिप्पस्सद्धिप्पहानं' नाम। यं सब्बसंखतनिस्सटत्ता पहीनसब्बसंखतं निब्बानं, एतं 'निस्सरणप्पहानं' नाम।

सब्बं पि चेतं पहानं यस्मा चागट्ठेन पहानं विनयनट्ठेन विनयो, तस्मा 'पहानविनयो' ति वुच्चति। तं-तं-पहानवतो वा तस्स विनयस्स सम्भवतो पेतं पहानविनयो ति वुच्चति। एवं पहानविनयो पि पञ्चधा भिज्जती ति वेदितब्बो। एवमयं संखेपतो दुविधो, भेदतो च दसविधो विनयो, भिन्नसंवरत्ता, पहातब्बस्स च अप्पहीनत्ता, यस्मा एतस्स अस्सुतवतो पुथुज्जनस्स नत्थि, तस्मा अभावतो तस्स, अयं 'अविनीतो' ति वुच्चति।

एस नयो **सप्पुरिसानं अदस्सावी सप्पुरिसधम्मस्स अकोविदो सप्पुरिसधम्मे अविनीतो** [ध० २३२] ति एत्था पि। निन्नानाकरणं हेतं अत्थतो। यथाह—"ये व

तं-तं-मग्गवतो ति तं-तं-मग्गवन्तस्स पुग्गलस्स। अथवा तं-तं-मग्गवतो ति पदं अत्तनो ति पदस्स विसेसनं। सन्ताने ति पदं अप्पवत्तीति पदे आधारो, किलेसग्गहणस्सा ति पदं पहानं ति पदे कम्मं। अच्चन्तं[1] अप्पवत्ति अच्चन्त-अप्पवत्ति। भवनं भावो, क्रिया। अच्चन्त-अप्पवत्ति एव भावो अच्चन्त-अप्पवत्तिभावो, समुच्छेदप्पहानं। फलक्खणे किलेसानं पन पटिप्पस्सद्धत्तं एतं पटिप्पस्सद्धत्तं। पटिप्पस्सद्धानं किलेसानं भावो पटिप्पस्सद्धत्तं। पटिप्पस्सद्धिया पहानं पटिप्पस्सद्धिप्पहानं। सब्ब....प०....कत्ता ति सब्बसङ्खततो निस्सरणभावतो। पहीनं सब्बसङ्खतं येन तं पहीनसब्बसङ्खतं। निस्सरणेन पहानं निस्सरणप्पहानं।

चागट्ठेना ति अनत्थस्स जहनभावेन[2]। विनयट्ठेना ति कायवाचाचित्तानं विरूपपवत्तिया अयापनट्ठेन कायदुच्चरितादीनं विनासट्ठेन वा, तेसं[3] जिम्हप्पवत्तिं विच्छिन्दित्वा उजुकनयट्ठेन। पहीयते[4] पहानं। विनयनं विनयो। पहानञ्च तं विनयो चा ति पहानविनयो। वा अपरो नयो। तं-तं-पहानवतो तदङ्गप्पहानादि तं-तं-पहानवन्तस्स तस्स विनयस्स सम्भवतो पि[5] एतं पहानं पहानविनयो इति पण्डितेन वुच्चतीति योजना। पहानानि[6] अस्स अत्थीति पहानो। पहानो च सो विनयो चा ति पहानविनयो। पहीयतीति पहानं। तस्स विनयो अयं विनयो यस्मा न होतीति सम्बन्धो। भिन्नो नट्ठो संवरो एतस्स पुथुज्जनस्सा ति भिन्नसंवरो। भिन्नसंवरस्स भावो भिन्नसंवरत्तं। [१९४–म०] चसद्दो भिन्नसंवरत्ता च अप्पहीनत्ता चा ति योजेतब्बो। अप्पहीनस्स भावो अप्पहीनत्तं। तस्सा ति विनयस्स, अभावतो ति पदे सम्बन्धो।

निन्नानाकरणं हेतं ति हि सच्चं, एतं सप्पुरिसानं ति आदिवचनं अत्थतो निन्नानाकरणं। ये व ते ति ये व एते पुग्गला अरिया ते एव पुग्गला सप्पुरिसा। एसे ति एसो। से ति सो।

---

१. अच्चन्तेन–सी०। २. चजनसभावेन–सी०। ३. तेसं वा–सी०। ४. ०ति–सी०। ५. अतिभावतो पि–सी०। ६. पहानादीनि–सी०।

ते अरिया ते व ते सप्पुरिसा, ये व ते सप्पुरिसा ते व ते अरिया। यो एव सो अरियानं धम्मो सो एव सो सप्पुरिसानं धम्मो, यो एव सो सप्पुरिसानं धम्मो सो एव सो अरियानं धम्मो। ये व ते अरियविनया ते व ते सप्पुरिसविनया, ये व ते सप्पुरिसविनया ते व ते अरियविनया। अरिये ति वा सप्पुरिसे ति वा, अरियधम्मे ति वा सप्पुरिसधम्मे ति वा, अरियविनये ति वा सप्पुरिसविनये ति वा, एसे से एके एकट्ठे समे समभागे तज्जाते तं येवा [ ] ति।

रूपं अत्ततो समनुपस्सती [ध० २३२] ति इधेकच्चो रूपं अत्ततो समनुपस्सति— 'यं रूपं सो अहं, यो अहं तं रूपं' ति रूपं च अत्तानं च अद्वयं समनुपस्सति। "सेय्यथा पि नाम तेलप्पदीपस्स झायतो या अच्चि सो वण्णो, यो वण्णो सा अच्ची ति अच्चिं च वण्णं च अद्वयं समनुपस्सति," [पटि० १५९], एवमेव इधेकच्चो रूपं अत्ततो....प०....समनुपस्सती ति एवं रूपं अत्ता ति दिट्ठिपस्सनाय पस्सति। **रूपवन्तं वा अत्तानं** ति 'अरूपं अत्ता' ति गहेत्वा, छायावन्तं रुक्खं विय, तं रूपवन्तं समनुपस्सती ति। **अत्तनि वा रूपं** ति 'अरूपमेव अत्ता' ति गहेत्वा, पुप्फस्मिं गन्धं विय अत्तनि रूपं समनुपस्सति। **रूपस्मिं वा अत्तानं** ति 'अरूपमेव अत्ता' ति गहेत्वा, करण्डके मणिं विय, अत्तानं रूपस्मिं समनुपस्सति। वेदनादीसु पि एसेव नयो।

तत्थ 'रूपं अत्ततो समनुपस्सती' ति सुद्धरूपमेव अत्ता ति कथितं। 'रूपवन्तं वा अत्तानं, अत्तनि वा रूपं, रूपस्मिं वा अत्तानं; वेदनं अत्ततो....प०....सञ्ञं, संखारे, विञ्ञाणं अत्ततो समनुपस्सती'ति इमेसु सत्तसु ठानेसु 'अरूपं अत्ता' ति कथितं। वेदनावन्तं वा अत्तानं, अत्तनि वा वेदनं, वेदनाय वा अत्तानं ति एवं चतूसु खन्धेसु तिण्णं तिण्णं वसेन द्वादससु ठानेसु 'रूपारूपमिस्सको अत्ता' कथितो। तत्थ 'रूपं अत्ततो समनुपस्सती ति वेदनं....प०....सञ्ञं, संखारे, विञ्ञाणं अत्ततो समनुपस्सती'- ति पञ्चसु ठानेसु उच्छेददिट्ठि कथिता। अवसेसेसु सस्सतदिट्ठि। एवमेत्थ पण्णरस भवदिट्ठियो पञ्च विभवदिट्ठियो होन्ति। ता सब्बा पि मग्गावरणा, न सग्गावरणा, पठममग्गवज्झा ति वेदितब्बा।

[२२८–सी०] एके ति एको। एकट्ठे ति[1] एकसभावो। समे ति समो। सभागे ति समानभावो। तज्जाते ति तस्स भावो। तञ्ञेव[2] सो एव।

इधा ति लोके। रूपं अत्ततो ति आदिकस्स अधिप्पायं दस्सेन्तो आह—यं रूपं ति आदि। द्वयभावतो रहितं अद्वयं। अद्वयभावं उपमाय साधेन्तो आह—सेय्यथा पि नामा ति आदि। दिट्ठिपस्सनाया ति दिट्ठिया पस्सनाय। तं ति अत्तानं।

तत्था ति रूपं अत्ततो ति आदिपदेसु। रूपं....प०....पस्सती ति पदेन सुद्धरूपमेव अत्ता ति कथितं भगवता। खन्धेसू ति पदं तिण्णं[3] तिण्णं ति पदे आधारो, तिण्णं तिण्णं गाहानं। तत्था ति रूपं अत्ततो ति आदि ठानेसु, निद्धारणं। अवसेसेसु ठानेसु सस्सतदिट्ठि कथिता भगवता। एत्था ति रूपं अत्ततो ति आदिवचने। ता दिट्ठियो मग्गावरणविपरीत-

---

१. एकत्थे ति–सी०। २. तञ्ञेवा ति–सी०। ३. नत्थि–सी०।

सत्थरि कंखती [ध० २३२] ति सत्थु सरीरे वा गुणे वा उभयत्थ वा कंखति। सरीरे कंखमानो 'द्वत्तिसवरलक्खणपटिमण्डितं नाम सरीरं अत्थि नु खो नत्थी' ति कंखति। गुणे कंखमानो 'अतीतानागतपच्चुप्पन्नजाननसमत्थं सब्बञ्ञुतञाणं अत्थि नु खो नत्थी' ति कंखति। उभयत्थ कंखमानो 'असीति-अनुब्यञ्जन-ब्याम-पभानुरञ्जिताय सरीरनिप्फत्तिया समन्नागतो सब्बञेय्यजाननसमत्थं सब्बञ्ञुतञाणं पटिविज्झित्वा ठितो लोकतारको बुद्धो नाम अत्थि नु खो नत्थी' ति कंखति। अयं हि'स्स अत्तभावे गुणे वा कंखन्तो उभयत्थ कंखति नाम।

दस्सनभावतो। न सग्गावरणा अकम्मपथप्पत्तत्ता। अक्रियाहेतुकनत्थिकदिट्ठियो व[1] हि कम्मपथप्पत्तदिट्ठियो।

द्वत्तिसवरलक्खणपटिमण्डितं ति एत्थ सुप्पतिट्ठितपादो, हेट्ठा पादतलेसु चक्कानि जातानि सहस्सारानि[2] सनाभिकानि[3] सब्बाकारपरिपूरानि, आयतपण्ही, दीघङ्गुली, मुदुतलुनहत्थपादो[4], जालहत्थपादो उस्सङ्खपादो, एणीजङ्घो[5], ठितको अनोनमन्तो उभोहि पाणितलेहि जण्णुका[6] परिमस्सति[7] परिमज्जति, कोसोहितवत्थगुय्हो, सुवण्णवण्णो कञ्चनसन्निभत्तचो, सुखुमच्छवी सुखुमत्ता छविया रजोजल्लं काये न उपलिम्पति[8], एकेकलोमो एकेकानि लोमानि लोमकूपेसु[9] जातानि, उद्धग्गलोमो उद्धग्गानि लोमानि जातानि, नीलानि अञ्जनवण्णानि, कुण्डलवट्टानि[10] पदक्खिणावट्टजातानि, ब्रह्मुजुगत्तो[11], सत्तुस्सदो, सीहपुब्बद्धकायो, चितन्तरंसो, निग्रोधपरिमण्डलो यावतक्वस्स कायो तावतक्वस्स ब्यामो, यावतक्वस्स ब्यामो तावतक्वस्स कायो, समवट्टक्खन्धो, रसग्गसग्गी[12] सीहहनु, चत्तालीसदन्तो[13] समदन्तो, अविरलदन्तो, सुसुक्कदाठो, पहूतजिव्हो[14], ब्रह्मस्सरो करवीकभाणी, अभिनीलनेत्तो, [१९५–म०] गोपखुमो, उण्णा भमुकन्तरे जाता, ओदातमुदुतलसन्निभा[15], उण्हीससीसो इति द्वत्तिसलक्खणानि वेदितब्बानि।

ब्यञ्जयति लक्खियति सरीरं[16] एतेहीति ब्यञ्जनानि। (२२९–सी०) खुद्दकानि ब्यञ्जनानि अनुब्यञ्जनानि। असीति च तानि अनुब्यञ्जनानि चेति असीति अनुब्यञ्जनानि। ब्यामा च सा पभा चा ति ब्यामप्पभा। असीति अनुब्यञ्जनानि च ब्यामप्पभा च असीति...प...प्पभा। असीति...प...प्पभाहि अनुरञ्जिता अलङ्कता असीति...प...प्पभानुरञ्जिता।

असीति अनुब्यञ्जनानि नाम चित्तङ्गुलिता, अनुपुब्बङ्गुलिता, वट्टङ्गुलिता, तम्बनखता, तुङ्गनखता सुनिद्धनखता,[17] निग्गुळगोप्फकता, समपादता, गजसमानक्कमता, सीहसमानक्कमता, हंससमानक्कमता, उसभसमानक्कमता, दक्खिणावट्टगतिता, समन्ततो चारुजाणुमण्डलता[18], परिपुण्णपुरिसब्यञ्जनता, अच्छिद्दनाभिता, गम्भीरनाभिता, दक्खिणावट्टनाभिता, द्विरदकर-

---

१. अकिरियाहेतुका नत्थिका दिट्ठियो एव–सी०। २. सहस्सरानि–सी०। ३. सनेमिकानि सनाभिकानि–सी०। ४. मुदुतत्थणहत्थ०–सी०। ५. एनिजंघो–सी०। ६. जण्णुकानि–सी०। ७. परामस्सति–सी०। ८. उपलिप्पति–सी०। ९. एकेकलोमकूपेसु–सी०। १०. ०वत्तानि–सी० सब्बत्थ। ११. ब्रह्मज्जुगत्तो–सी०। १२. रसग्गसग्गी–सी०। १३. चत्तालीस०–सी०। १४. पहूत०–सी०। १५. ओदाता०–सी०। १६. भगवतो सरीरं–सी०। १७. सिनिद्ध०–सी०। १८. चारुजण्णु०–सी०।

विचिकिच्छती ति आरम्मणं निच्छेतुं 'असक्कोन्तो किच्छति किलमति। **नाधिमुच्चती** ति तत्थेव अधिमोक्खं न लभति। **न सम्पसीदती** ति चित्तं अनाविलं कत्वा पसीदितुं न सक्कोति, गुणेसु न पसीदति। **धम्मे कंखती** ति आदीसु पन 'किलेसप्पजहना चत्तारो अरियमग्गा, पटिप्पस्सद्धकिलेसानि चत्तारि सामञ्ञफलानि मग्गफलानं आरम्मणपच्चयभूतं अमतमहानिब्बानं नाम अत्थि नु खो नत्थी' ति कंखन्तो पि 'अयं धम्मो निय्यानिको नु खो अनिय्यानिको' ति कंखन्तो पि धम्मे कंखति नाम। 'चत्तारो मग्गट्ठका चत्तारो फलट्ठका ति इदं संघरतनं अत्थि नु खो नत्थी' ति कंखन्तो पि, 'अयं संघो सुपटिपन्नो नु खो दुप्पटिपन्नो' ति कंखन्तो पि, 'एतस्मिं संघरतने दिन्नस्स विपाकफलं अत्थि नु खो नत्थी' ति कंखन्तो पि **संघे कंखति** नाम। 'तिस्सो पन सिक्खा अत्थि नु खो नत्थी 'ति कंखमानो पि, 'तिस्सो सिक्खा सिक्खित-पच्चयेन आनिसंसो अत्थि नु खो नत्थी' ति कंखतो पि **सिक्खाय कंखति** नाम।

सदिस-ऊरुभुजता[1], सुविभत्तगत्तता, अनुपुब्बगत्तता, मट्ठगत्तता, अनूनानूनगत्तता[2], अलीन-गत्तता, तिलकादिरहितगत्तता, अनुपुब्बरुचिरगत्तता। विसुद्धगत्तता, कोटिसहस्सहत्थि-बलधारणता, तुङ्गनासता, रत्तदिजमंसता[3], सुद्धदन्तता, सिनिद्धदन्तता, विसुद्धिन्द्रियता, वट्टदाठता, रत्तोट्ठता, आयतवदनता, गम्भीरपाणिलेखता, आयतलेखता, उजुकलेखता, सुरुचिरसण्ठानलेखता, परिमण्डलकायप्पभावन्तता, परिपुण्णकपोलता, आयतविसालनेत्तता, पञ्चपसादवन्तनेत्तता, कुञ्चितग्गपखुमता[4], मुदुकरत्तजिव्हता, तनुकरत्तजिव्हता,[5] आयतरुचिर-कण्णता, निग्गन्धिसिरता, निग्गुळसिरता, छत्तनिभचारुसिरता, आयतपुथुलनळाटसोभता[6], सुसण्ठानभमुकता, सण्हभमुकता, अनुलोमभमुकता[7], आयतभमुकता, सुखुमालगत्तता, अतिविय सोम्मगत्तता, अतिविय उज्जलितगत्तता, विमलगत्तता, कोमळगत्तता, सिनिद्धगत्तता, सुगन्धतनुता, समलोमता, कोमललोमता, दक्खिणावट्टलोमता। भिन्नञ्जनवण्णसदिसनीललोमता, सिनिद्ध-लोमता, अतिसुखुम-अस्सासपस्सासधारणता, सुगन्धमुखता, सुगन्धमुद्धता[8], सुनीलकेसता, दक्खिणावट्टकेसता, सुसण्ठानकेसता, सिनिद्धकेसता, सण्हकेसता, अलुळितकेसता,[9] समकेसता, कोमलकेसता, केतुमालारतनचित्तता ति असीति अनुब्यञ्जनानि नाम।

सरीरस्स निब्बत्ति[10] सरीरनिब्बत्ति, सरीरपरिपूरीति अत्थो। लोकं तारेतीति [१९६–म०] लोकतारको[11]। अयं हिस्सा ति हि सच्चं, [२३०–सी०] अयं पुग्गलो अस्स भगवतो। धम्मे कङ्खतीति आदीसु पन विनिच्छयो वेदितब्बो।

पटिप्पस्सद्धा किलेसा येहि फलेहि तानि पटिप्पस्सद्धकिलेसानि। पटिप्पस्सद्धवसेन किलेसे समेतीति समणो, अरियपुग्गलो। समणस्स भावो सामञ्ञं, फलं। सामञ्ञञ्च तानि फलानि चा ति सामञ्ञफलानि। कङ्खन्तो पि पुग्गलो। विपाकफलं ति विपाकमेव फलं।

---

१. एरावण्णकरसदिस०–सी०। २. अनुसन्नानुस्सन्नसब्बगत्तता–सी०। ३. सुरत्त०–सी०। ४. आकुञ्चित०–सी०। ५. नत्थि–सी०। ६. ०सोभनता–सी०। ७. महन्त-भमुकता–सी०। ८. ०मुद्धनता–सी०। ९. अकुलित०–सी०। १०. निप्फत्ति–सी० सब्बत्थ। ११. लोकतारणो–सी०।

पुब्बन्तो वुच्चति अतीतानि खन्ध-धातायतनानि। **अपरन्तो** अनागतानि। तत्थ अतीतेसु खन्धादीसु 'अतीतानि नु खो, न नु खो' ति कंखन्तो पुब्बन्ते कंखति नाम। अनागतेसु 'अनागतानि नु खो, न नु खो' ति कंखन्तो अपरन्ते कंखति नाम। उभयत्थ कंखन्तो **पुब्बन्तापरन्ते** कंखति नाम। 'द्वादसपदिकं पच्चयवट्टं अत्थि नु खो नत्थी' ति कंखन्तो **इदप्पच्चयतापटिच्चसमुप्पन्नेसु धम्मेसु** कंखति नाम। तत्रायं वचनत्थो—इमेसं जरामरणादीनं पच्चया 'इदप्पच्चया'। इदप्पच्चयानं भावो 'इदप्पच्चयता'। इदप्पच्चया एव वा 'इदप्पच्चयता' जाति-आदीनं एतं अधिवचनं। जाति-आदीसु तं तं पटिच्च आगम्म समुप्पन्ना ति 'पटिच्चसमुप्पन्ना'। इदं वुत्तं होति—इदप्पच्चयताय च पटिच्चसमुप्पन्नेसु च धम्मेसु कंखती ति।

सीलेना [ध० २३३] ति गोसीलादिना। **वतेना** ति गोवतादिना। **सीलब्बतेना** ति तदुभयेन। **सुद्धी** ति किलेससुद्धि; परमत्थसुद्धिभूतं वा निब्बानमेव। **तदेकट्ठा** [ध० २३३] ति इध पहानेकट्ठं धुरं। इमिस्सा च पालिया [ध० २३२] दिट्ठिसंकिलेसो विचिकिच्छाकिलेसो ति द्वे येव आगता। लोभो दोसो मोहो मानो थीनं उद्धच्चं अहिरिकं अनोत्तप्पं ति इमे अट्ठ अनागता। आहरित्वा दीपेतब्बा। एत्थ हि दिट्ठि-विचिकिच्छासु पहीयमानासु अपायगमनीयो लोभो दोसो मोहो मानो थीनं उद्धच्चं अहिरिकं अनोत्तप्पं ति सब्बे पि' मे पहानेकट्ठा हुत्वा पहीयन्ति। सहजेकट्ठं पन आहरित्वा दीपेतब्बं। सोतापत्तिमग्गेन हि चत्तारि दिट्ठिसहगतानि विचिकिच्छासहगतं चा ति पञ्च चित्तानि पहीयन्ति। तत्थ द्वीसु असंखारिकदिट्ठिचित्तेसु पहीयन्तेसु च तेहि सहजाता लोभो मोहो उद्धच्चं अहिरिकं अनोत्तप्पं ति इमे किलेसा सहजेकट्ठवसेन पहीयन्ति। सेसदिट्ठिकिलेसो च विचिकिच्छाकिलेसो च पहानेकट्ठवसेन पहीयन्ति। दिट्ठिसम्पयुत्तससंखारिकचित्तेसु पि पहीयन्तेसु तेहि सहजाता लोभो मोहो थीनं उद्धच्चं अहिरिकं अनोत्तप्पं ति इमे किलेसा सहजेकट्ठवसेन पहीयन्ति। सेसदिट्ठिकिलेसो च विचिकिच्छाकिलेसो च पहानेकट्ठवसेन पहीयन्ति एवं पहानेकट्ठस्मिं येव सहजेकट्ठं लब्भती ति इदं सहजेकट्ठं आहरित्वा दीपयिंसु।

सिक्खितपच्चयेना ति सिक्खनकारणेन[१]।

तत्था ति पुब्बन्तापरन्तेसु,[२] निद्धारणं। खन्धादीसु कङ्खन्तो पि पुग्गलो। पच्चयो एव वट्टं पच्चयवट्टं तत्था ति[३] इदंपच्चयता ति[४] आदिवचने। जाति-आदीसू ति[५] निद्धारणे भुम्मं। तं ति[६] जाति-आदिकं।

परमत्थो एव सुद्धि परमत्थसुद्धि। परमत्थसुद्धि हुत्वा भवतीति परत्थसुद्धिभूतं, परमत्थसुद्धिवसेन भवतीति वा परमत्थसुद्धिभूतं। इधा ति तदेकट्ठा ति पदे। एत्थ हीति आदि-वित्थारो, हि सच्चं, एत्थ दिट्ठि-आदीसु, निद्धारणं। सब्बं पि मे किलेसा पुग्गलेन पहीयन्ति।

१. सिक्खित०–सी०। २. पुब्बापरन्तेसु–सी०। ३. तत्रा ति–सी०। ४. इदप्पच्चयता –सी०। ५. ति नत्थि–सी०। ६. तं तं ति–सी०।

तं-सम्पयुत्तो [ध० २३३] ति तेहि तदेकट्ठेहि अट्ठहि किलेसेहि सम्पयुत्तो। विनिब्भोगं वा कत्वा तेन लोभेन तेन दोसेना ति एवं एकेकेन सम्पयुत्तता दीपेतब्बा। तत्थ लोभे गहिते, मोहो मानो थीनं उद्धच्चं अहिरिकं अनोत्तप्पं ति अयं संखारक्खन्धे किलेसगणो लोभसम्पयुत्तो नाम होति। दोसे गहिते, मोहो थीनं उद्धच्चं अहिरिकं अनोत्तप्पं ति अयं किलेसगणो दोससम्पयुत्तो नाम। मोहे गहिते, लोभो दोसो मानो थीनं उद्धच्चं अहिरिकं अनोत्तप्पं ति अयं किलेसगणो मोहसम्पयुत्तो नाम। माने गहिते, तेन सहुप्पन्नो लोभो मोहो थीनं उद्धच्चं अहिरिकं अनोत्तप्पं ति अयं किलेसगणो मानसम्पयुत्तो नाम। इमिना उपायेन तेन थीनेन तेन उद्धच्चेन तेन अहिरिकेन तेन अनोत्तप्पेन सम्पयुत्तो तं-सम्पयुत्तो ति योजना कातब्बा।

तं-समुट्ठानं ति तेन लोभेन....प०....तेन अनोत्तप्पेन समुट्ठितं ति अत्थो। **इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बा** ति [ध० २३३] एत्थ दस्सनं नाम सोतापत्तिमग्गो; तेन पहातब्बा ति अत्थो। '**कस्मा** पन सोतापत्तिमग्गो दस्सनं नाम जातो' ति? 'पठमं निब्बानदस्सनतो'। 'ननु गोत्रभू पठमतरं पस्सती' ति? 'नो न पस्सति; दिस्वा कत्तब्बकिच्चं पन न करोति, संयोजनानं अप्पहानतो। तस्मा पस्सती ति न वत्तब्बो। यत्थकत्थ चि राजानं दिस्वा पि पण्णाकारं दत्वा किच्चनिप्फत्तिया अदिट्ठत्ता 'अज्जा पि राजानं न पस्सामी' ति वदन्तो चेत्थ जनपदपुरिसो निदस्सनं'।

अवसेसो लोभो [ध० २३३] ति दस्सनेन पहीनावसेसो। **दोसमोहेसु** पि एसेव नयो। दस्सनेन हि अपायगमनीया व पहीना। तेहि पन अञ्ञे दस्सेतुं इदं वुत्तं। '**तदेकट्ठा**' ति तेहि पालियं [ध० २३३] आगतेहि तीहि किलेसेहि सम्पयोगतो पि पहानतो पि एकट्ठा पञ्च किलेसा।

आहरित्वा दीपयिंसु आचरिया।

विनिब्भोगं वा ति वा अपरो नयो विनिब्भोगं कत्वा दीपेतब्बा पण्डितेन। तत्था ति आदिवित्थारो। तत्था ति लोभादीसु, निद्धारणं। सङ्खारक्खन्धे ति पदं किलेसगणो ति पदे आधारो। तेना ति मानेन तेन थिनेन सम्पयुत्तो किलेसगणो तं-सम्पयुत्तो।

कस्मा....प०....**जातो ति** पुच्छा। पठमं निब्बानदस्सनतो सोतापत्तिमग्गो दस्सनं नाम जातो। ननु....प०....पस्सतीति पुच्छा। न[1] पस्सतीति गोत्रभु, यत्थ कत्थचि ठाने। दिस्वा पी ति पदं वदन्तो ति पदे पुब्बकालक्रिया। अपिसद्दो सम्भावनत्थो। दत्वा ति पदं निप्फत्तिया[2] ति पदे विसेसनं। किच्चनिप्फत्तिया ति पदं अदिट्ठत्ता ति पदे कम्मं। चेत्था ति चसद्दो वाक्यारम्भे। एत्थ गोत्रभुस्स निब्बानदस्सने।

तेहीति अपायगमनीयेहेव किलेसेहि। तदेकट्ठा ति इति[3]-वचनं भगवता वुत्तं।

---

१. नो न-सी०। २. किच्चनिप्फत्तिया ति-सी०। ३. इदं-सी०।

नेव दस्सनेन न भावनाया [ध० २३३] ति इदं संयोजनादीनं विय तेहि मग्गेहि अप्पहातब्बतं सन्धाय वुत्तं। यं पन "सोतापत्तिमग्गञाणेन अभिसंखार-विञ्ञाणस्स निरोधेन सत्त भवे ठपेत्वा अनमतग्गे संसारवट्टे ये उप्पज्जेय्युं, नामं च रूपं च एत्थेते निरुज्झन्ती" ति आदिना नयेन कुसलादीनं पि पहानं अनुञ्ञातं, तं तेसं मग्गानं अभावितत्ता ये उप्पजेय्युं, ते उपनिस्सयपच्चयानं किलेसानं पहीनत्ता पहीना ति इमं परियायं सन्धाय वुत्तं ति वेदितब्बं।

दस्सनेन पहातब्बहेतुत्तिके [ध० २३३] इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्ब-हेतुका ति निट्ठपेत्वा, पुन 'तीणि संयोजनानी' ति आदि पहातब्बे दस्सेत्वा, तदेकट्ठ-भावेन हेतू चेव सहेतुके च दस्सेतुं वुत्तं। तत्थ किञ्चा पि दस्सनेन पहातब्बेसु हेतूसु लोभसहगतो मोहो लोभेन सहेतुको होति, दोससहगतो मोहो दोसेन, लोभदोसा च मोहेना ति पहातब्बहेतुकपदे ते सङ्गहं गच्छन्ति, विचिकिच्छासहगतो पन मोहो अञ्ञस्स सम्पयुत्तहेतुनो अभावेन हेतु येव, न सहेतुको ति तस्स पहानं दस्सेतुं **इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बहेतू** [ध० २३४] ति वुत्तं। दुतियपदे उद्धच्चसहगतस्स मोहस्स पहानं दस्सेतुं **इमे धम्मा भावनाय पहातब्बहेतू** [ध० २३४] ति वुत्तं। सो हि अत्तना सम्पयुत्तधम्मे सहेतुके कत्वा पिट्ठिवट्टको जातो, विचिकिच्छासहगतो विय अञ्ञस्स सम्पयुत्तहेतुनो अभावा पहातब्बहेतुकपदं न भजति। ततियपदे **अवसेसा कुसलाकुसला** [ध० २३४] ति पुन अकुसलगहणं विचिकिच्छा-उद्धच्चसहगतानं मोहानं सङ्गहत्थं कतं। ते हि सम्पयुत्तहेतुनो अभावा पहातब्बहेतुका नाम न होन्ति।

परित्तारम्मणत्तिके [ध० २३५] **आरब्भा** ति आरम्मणं कत्वा। सयं हि परित्ता वा होन्तु महग्गता वा, परित्ते धम्मे आरम्मणं कत्वा उप्पन्ना **परित्तारम्मणा**, महग्गते आरम्मणं कत्वा उप्पन्ना **महग्गतारम्मणा**, अप्पमाणे आरम्मणं कत्वा उप्पन्ना **अप्पमाणारम्मणा**। ते पन परित्ता पि होन्ति महग्गता पि अप्पमाणा पि।

यं पन पहानं अनुञ्ञातं ति सम्बन्धो। तं ति पहानं सन्धाय वुत्तं ति सम्बन्धो।

पुन तीणि [२३१-सी०] संयोजनानीति आदिवचनं वुत्तं ति पदे कम्मं। तत्था ति हेतु-सहेतुकेसु, निद्धारणं। किञ्चा पि एते लोभसहगता[1] मोहादयो[1] सङ्गहं गच्छन्तीति सम्बन्धो। हेतूसू ति निद्धारणे भुम्मं। इति तस्मा। पुन[2] इति तस्मा[2]। तस्सा ति विचि-किच्छासहगतस्स मोहस्स। सो हीति आदि दळ्हीकरणं। हि सच्चं, सो उद्धच्चसहगतमोहो। ते हीति हि सच्चं, ते विचिकिच्छा-सहगतमोहा[3]।

परित्तारम्मणत्तिके [१९७-म०] विनिच्छयो। सयं हीति हि सच्चं, सयं अत्तना आरम्मणिकभूता धम्मा परित्ता वा होन्ति महग्गता वा। तेन पना ति आरम्मण-धम्मा।

१-१. लोभसहगतमोहादयो-सी०। २-२. नत्थि-सी०। ३. विचिकिच्छा-उद्धच्च-सहगतमोहा-सी०।

मिच्छत्तत्तिके [ध० २३६] **आनन्तरिकानी** ति अनन्तरायेन फलदायकानि; मातुघातकम्मादीनं एतं अधिवचनं। एतेसु हि एकस्मिं पि कम्मे कते तं पटिबाहित्वा अञ्ञं कम्मं अत्तनो विपाकस्स ओकासं कातुं न सक्कोति। सिनेरुप्पमाणे पि हि सुवण्णथूपे कत्वा चक्कवाळमत्तं वा रतनमय-पाकारं विहारं कत्वा तं पूरेत्वा निसिन्नस्स बुद्धपमुखस्स भिक्खुसंघस्स यावजीवं चत्तारो पच्चये ददतो पि कम्मं एतेसं कम्मानं विपाकं पटिबाहितुं न सक्कोति एव। **या च मिच्छादिट्ठि नियता** [ध० २३६] ति अहेतुकवाद-अकिरियवाद-नत्थिकवादेसु अञ्ञतरा। तं हि गहेत्वा ठितं पुग्गलं बुद्धसतं पि बुद्धसहस्सं पि बोधेतुं न सक्कोति।

मग्गारम्मणत्तिके [ध० २३६-२३७] **अरियमग्गं आरब्भा** ति लोकुत्तरमग्गं आरम्मणं कत्वा। ते पन परित्ता पि होन्ति महग्गता पि। मग्गहेतुकनिद्देसे [ध०२३६] पठमनयेन पच्चयट्ठेन हेतुना मग्गसम्पयुत्तानं खन्धानं सहेतुकभावो दस्सितो। दुतियनयेन मग्गभूतेन सम्मादिट्ठिसंखातेन हेतुना सेसमग्गङ्गानं सहेतुकभावो दस्सितो। ततियनयेन मग्गे उप्पन्नहेतूहि सम्मादिट्ठिया सहेतुकभावो दस्सितो ति वेदितब्बो।

अधिपतिं करित्वा ति आरम्मणाधिपतिं कत्वा। ते च खो परित्तधम्मा व होन्ति। अरियसावकानं हि अत्तनो मग्गं गरुं कत्वा पच्चवेक्खणकाले आरम्मणाधिपति लब्भति। चेतोपरियञाणेन पन अरियसावको परस्स मग्गं पच्चवेक्खमानो गरुं करोन्तो पि अत्तना पटिविद्धमग्गं विय गरुं न करोति। 'यमकपाटिहारियं करोन्तं तथागतं दिस्वा तस्स मग्गं गरुं करोति न करोती' ति? करोति, न पन अत्तनो मग्गं विय। अरहा न किंचि कत्वा धम्मं गरुं करोति ठपेत्वा मग्गं फलं निब्बानं ति। एत्था पि अयमेवत्थो। **वीमंसाधिपतेय्यं** ति इदं सहजाताधिपतिं दस्सेतुं वुत्तं। छन्दं हि जेट्ठकं कत्वा मग्गं भावेन्तस्स छन्दो अधिपति नाम होति, न मग्गो। सेस-

---

तेसु हीति दळ्हीकरणं[1]। हि सच्चं, तेसु मातुघातकम्मादीसु। तं ति तं कम्मं। सिनेरुप्पमाणे पि हीति आदि दळ्हीकरणं। तं ति विहारं। नत्थि एतस्स सत्तस्स हेतु सत्तानं संकिलेसाया ति अहेतुको। वदनं वादो। अहेतुको इति वादो अहेतुकवादो। नत्थि क्रियं पापकरणं एतस्सा ति अक्रियो। अक्रियो ति वादो अक्रियवादो। नत्थि दिन्नं एतस्सा ति नत्थिदिन्नं। दिन्नं ति दिन्नफलं ति अत्थो। नत्थिको इति वादो नत्थिकवादो।

ते पना ति आरम्मणिकधम्मा। पठमनयेना ति पदं दस्सितो ति पदे करणं। पच्चयट्ठेना ति पदं हेतुना ति पदे ततियाविसेसनं। हेतुना ति पदं सहेतुका इति पदे ततियाविसेसनं।

ते च खो ति आरम्मणिकधम्मा चेतोपरियञाणेन जानित्वा पच्चवेक्खमानो ति सम्बन्धो। यमक····प०···· न करोतीति पुच्छा। तस्सा ति तथागतस्स। करोति अरियसावको अत्तनो मग्गं विय गरुं न पन करोतीति योजना। अरहा····प०····निब्बानं इति एत्था पि

---

१. आदि दळ्ही०–सी०।

धम्मा पि छन्दाधिपतिनो नाम होन्ति, न मग्गाधिपतिनो। चित्ते पि एसेव नयो। वीमंसं पन जेट्ठकं कत्वा मग्गं भावेन्तस्स वीमंसाधिपति चेव होति मग्गो चा ति। सेसधम्मा मग्गाधिपतिनो नाम होन्ति। विरिये पि एसेव नयो।

उप्पन्नत्तिकनिद्देसे [ध० २३७] **जाता** ति निब्बत्ता, पटिलद्धत्तभावा। **भूता** ति आदीनि तेसं येव वेवचनानि। जाता एव हि भावप्पत्तिया भूता। पच्चयसंयोगे जातत्ता **सञ्जाता**। निब्बत्तिलक्खणं पत्तत्ता **निब्बत्ता**। उपसग्गेन पन पदं वड्ढेत्वा **अभिनिब्बत्ता** ति वुत्ता। पाकटभूता ति **पातुभूता**। पुब्बन्ततो उद्धं पन्ना ति **उप्पन्ना**। उपसग्गेन पदं वड्ढेत्वा **समुप्पन्ना** ति वुत्ता। निब्बत्तट्ठेनेव उद्धं ठिता ति **उट्ठिता**। पच्चयसंयोगेन उट्ठिता ति **समुट्ठिता**। पुन **उप्पन्ना** ति वचने कारणं हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। **उप्पन्नंसेन संगहिता** ति उप्पन्नकोट्ठासेन गणनं गता। **रूपा वेदना सञ्ञा संखारा विञ्ञाणं** ति इदं नेसं सभावदस्सनं। दुतियपदनिद्देसो [ध० २३७] वुत्तपटिसेधनयेन वेदितब्बो। ततियपदनिद्देसो [ध० २३७] उत्तानत्थो व।

अयं पन तिको द्विन्नं अद्धानं वसेन पूरेत्वा दस्सितो। लद्धोकासस्स हि कम्मस्स विपाको दुविधो—खणप्पत्तो, अप्पत्तो च। तत्थ 'खणप्पत्तो' उप्पन्नो नाम। 'अप्पत्तो' चित्तान्तरे वा उप्पज्जतु, कप्पसतसहस्सातिक्कमे वा। धुवपच्चयट्ठेन नत्थि नाम न होति, उप्पादिनो धम्मा नाम जाता। यथा'ह—"तिट्ठते वायं पोट्ठपाद, अरूपी अत्ता सञ्ञामयो। अथ इमस्स पुरिसस्स अञ्ञा व सञ्ञा उप्पजन्ति अञ्ञा व

एतस्मिं[1] अट्ठकथायं[2] वचने। एत्थ वा ठाने[3] अयमेवत्थो। अत्तनो मग्गफलस्स थपनसङ्खातो[4] अत्थो वेदितब्बो ति सम्बन्धो। पट्ठाने ति मग्गादीनि थपेत्वा अञ्ञेसं अधिपतिपच्चयस्स वचने नेव पाळियं ति अधिप्पायो। छन्दो अधिपति येसं ते छन्दाधिपतिनो। इति तस्मा।

अत्तनो भावो[5] अत्तभावो। पटिलद्धो अत्तभावो येहि ते पटिलद्धत्तभावा। तेसं येवा ति निब्बत्तधम्मानं। जाता एव हीति आदि दळ्हीकरणं। भावुप्पत्तिया ति पदं भूतो ति पदे ततियाविसेसनं। भावस्स अत्तनो सभावस्स उप्पत्तिया ति अत्थो। संयोगेन जाता सञ्जाता। (२३२–सी०) नेसं ति जातादीनं।

द्विन्नं अद्धानं[6] वसेन[6] इमस्स तिकस्स वचने हेतुं ञापेन्तो आह—लद्धो ति आदि। लद्धो ओकासो येन तं लद्धोकासं। तत्था ति तस्मिं दुविधे विपाके, निद्धारणं। कप्पसतसहस्सातिक्कमे वा उप्पज्जतु। धुवपच्चयट्ठेना ति धुवपच्चयभावेन धुवपच्चयसङ्खातकारणेन, न होतीति पदे ततियाविसेसनं। उप्पादिनो धम्मा नाम विपाका ति योजना। वुत्तमत्थं पाकटं करोन्तो आह—यथा हीति आदि। हि सच्चं, पोट्ठपाद, अयं अरूपी अत्ता

---

१. एतस्मिं पि–सी०। २. अट्ठकथाय–सी०। ३. पट्ठाने–सी०। ४. ठपन०–सी० सब्बत्थ। ५. सभावो–सी०। ६-६. अद्धानवसेन–सी०।

सञ्ञा निरुज्झन्ती" [दी० १.१५६] ति। एत्थ आरुप्पे कामावचरसञ्ञापवत्तिकाले किञ्चा पि भूलभवङ्गसञ्ञा पि निरुद्धा कामावचरसञ्ञाय पन निरुद्धकाले अवस्सं सा उपज्जिस्सती ति अरूपसंखातो अत्ता नत्थी ति संखं अगन्त्वा 'तिट्ठतेव' नामा ति जातो। एवमेव लद्धोकासस्स कम्मस्स विपाको दुविधो····प०····धुवपच्चयट्ठेन नत्थि नाम न होति, उप्पादिनो धम्मा नाम जाता।

यदि पन आयूहितं कुसलाकुसलकम्मं सब्बं विपाकं ददेय्य, अञ्ञस्स ओकासो व न भवेय्य। तं पन दुविधं होति—धुवविपाकं, अद्धुवविपाकं च। तत्थ पञ्च आनन्तरियकम्मानि, अट्ठ समापत्तियो, चत्तारो अरियमग्गा ति एतं 'धुवविपाकं' नाम। तं पन खणप्पत्तं पि अत्थि, अप्पत्तं पि। तत्थ 'खणप्पत्तं' उप्पन्नं नाम। 'अप्पत्तं' अनुप्पन्नं नाम। तस्स विपाको चित्तान्तरे वा उप्पज्जतु कप्पसतसहस्सातिक्कमे वा। धुवपच्चयट्ठेन अनुप्पन्नं नाम न होति, उप्पादिनो धम्मा नाम जाता। मेत्तेय्य-बोधिसत्तस्स मग्गो अनुप्पन्नो नाम, फलं उप्पादिनो धम्मा येव नाम जातं।

अतीतत्तिकनिद्देसे [ध० २३७-२३८] **अतीता** ति खणत्तयं अतिक्कन्ता। **निरुद्धा** ति निरोधप्पत्ता। **विगता** ति विभवं गता, विगच्छिता वा। **विपरिणता** ति पकतिविजहनेन विपरिणामं गता। निरोधसंखातं अत्थं गता ति **अत्थंगता। अब्भत्थंगता** ति उपसग्गेन पदं वड्ढितं। **उप्पज्जित्वा विगता** ति निब्बत्तित्वा विगच्छिता। पुन **अतीतवचने** कारणं हेट्ठा वुत्तमेव। परतो **अनागतादीसु** [ध० २३७] पि एसेव नयो। **अतीतंसेन संगहिता** ति अतीतकोट्ठासेन गणनं गता। कतमे ते ति? **रूपा वेदना सञ्ञा संखारा विञ्ञाणं।** पुरतो अनागतादीसु [ध० २३७] पि एसेव नयो। अतीतारम्मणत्तिकनिद्देसे [ध० २३८] **अतीते धम्मे आरब्भा** ति आदीसु परित्त-महग्गता व धम्मा वेदितब्बा। ते हि अतीतादीनि आरब्भ उप्पजन्ति।

अज्झत्तत्तिकनिद्देसे [ध० २३८] **तेसं तेसं** ति पदद्वयेन सब्बसत्ते परिया-

---

सञ्ञामयो सञ्ञानिप्फन्नो तिट्ठतेव। यथाहा ति पि अत्थि, तं न युत्तं। अथा ति तदा। एत्था ति वचने, [१९८–म०] जातो ति पदे आधारो। कामा····प०····काले ति कामावचरसञ्ञापवत्तिकाले[1] निरुद्धा ति पदे कालसत्तमी। मूलभवङ्गेन सम्पयुत्ता सञ्ञा मूलभवङ्गसञ्ञा। सा ति मूलभवङ्गसञ्ञा। इतीति तस्मा। अत्ता ति पदं जातो ति पदे कत्ता ति[2]।

तं पना ति आयूहितं कम्मं। तत्था ति तस्मिं दुविधे कम्मे। इति एवं कम्मं। तं पना ति धुवविपाककम्मं। तत्था ति खणप्पत्ता, पत्ते कम्मे, निद्धारणं। तस्सा ति धुवविपाककम्मस्स।

विभवं गता ति विनासं गता। कतमे धम्मा इति पुच्छा। रूप····प०····विञ्ञाणं इति ते धम्मा।

परियादियतीति गण्हाति भगवा। नियकज्झत्ताधिवचनं ति नियकभूतस्स[3] अज्झत्तस्स

---

१. ०सञ्ञाय पवत्तिकाले–सी०। २. नत्थि–सी०। ३. नियकानुगतस्स–सी०।

दियति। **अज्झत्तं पच्चत्तं** उभयं नियकज्झत्ताधिवचनं। **नियका** ति अत्तनि जाता। **पाटिपुग्गलिका** ति पाटियेकस्स पुग्गलस्स सन्तका। **उपादिन्ना** ति सरीरट्ठका। ते हि कम्मनिब्बत्ता वा होन्तु मा वा, आदिन्नगहितपरामट्ठवसेन पन इध उपादिन्ना ति वुत्ता। **परसत्तानं** [ध० २३८] ति अत्तानं ठपेत्वा अवसेससत्तानं। **परपुग्गलानं** ति तस्सेव वेवचनं। सेसं हेट्ठा वुत्तसदिसमेव। **तदुभयं** [ध० २३८] ति तं उभयं। अज्झत्तारम्मणत्तिकस्स पठमपदे [ध० २३८] परित्तमहग्गता धम्मा वेदितब्बा। दुतिये अप्पमाणा पि। ततिये परित्तमहग्गता व। अप्पमाणा पन कालेन बहिद्धा कालेन अज्झत्तं आरम्मणं न करोन्ति। सनिदस्सनत्तिक-निद्देसो [ध० २३६-२३९] उत्तानो येव।

[२ दुकवण्णना]

[अभिधम्मदुकं]

दुकेसु अदोसनिद्देसे [ध० २३९] मेत्तायनवसेन **मेत्ति**। मेत्ताकारो **मेत्तायना**। मेत्ताय अयितस्स मेत्तासमंगिनो चित्तस्स भावो **मेत्तायितत्तं**। अनुदयती ति **अनुद्दा**, रक्खती ति अत्थो। अनुद्दाकारो **अनुद्दायना**। अनुद्दायितस्स भावो **अनुद्दायितत्तं**। हितस्स एसनवसेन **हितेसिता**। अनुकम्पनवसेन **अनुकम्पा**। सब्बेहि पि इमेहि पदेहि उपचारप्पनप्पत्ता मेत्ता व वुत्ता। सेसपदेहि लोकियलोकुत्तरो अदोसो कथितो।

अमोहनिद्देसे [ध० २३९] **दुक्खे ञाणं** ति दुक्खसच्चे पञ्ञा। **दुक्खसमुदये** ति आदीसु पि एसेव नयो। एत्थ च दुक्खे ञाणं सवनसम्मसनपटिवेधपच्चवेक्खणासु वत्तति। तथा दुक्खसमुदये। **निरोधे** पन सवनपटिवेधपच्चवेक्खणासु एव। तथा **पटिपदाय**। **पुब्बन्ते** ति अतीतकोट्ठासे। **अपरन्ते** ति अनागतकोट्ठासे। **पुब्बन्तापरन्ते** ति तदुभये। **इदप्पच्चयता-पटिच्चसमुप्पन्नेसु धम्मेसु** ञाणं ति अयं पच्चयो, इदं पच्चयुप्पन्नं, इदं पटिच्च इदं निब्बत्तं ति, एवं पच्चयेसु च पच्चयुप्पन्नधम्मेसु च ञाणं।

नामं। पटि विसुं पुग्गलो पटिपुग्गलो। पटिपुग्गलस्स सन्तका पाटिपुग्गलिका। सरीरे तिट्ठन्तीति सरीरट्ठका। ते हीति हि सच्चं, ते धम्मा। इधा ति अज्झत्तिकनिद्देसे। उपादिन्ना इति[1] भगवता वुत्ता। दुतिये अप्पमाणा पी ति अपिसद्देन परित्तमहग्गते समुच्चेति।

दुकवण्णना

एत्थ चा ति दुक्खे ञाणादीसु निद्धारणं। निरोधे पन ञाणं पवत्तं....प०....एत्थ वट्टति। तथा पटिपदाय ञाणं। इमं पच्चयं पटिच्च इदं फलं निब्बत्तं।

---

१. इति ते धम्मा–सी०।

लोभनिद्देसे पि [ध० २४०] हेट्ठा अनागतानं पदानं अयमत्थो—रञ्जनवसेन **रागो**। बलवरञ्जनट्ठेन **सारागो**। विसयेसु सत्तानं अनुनयनतो **अनुनयो**। अनुरुज्झती ति **अनुरोधो**, कामेती ति अत्थो। यत्थ कत्थचि भवे सत्ता एताय नन्दन्ति, सयं वा नन्दन्ती ति **नन्दी**। नन्दी च सा रञ्जनट्ठेन रागो चा ति **नन्दीरागो**। तत्थ एकस्मिं आरम्मणे सकिं उप्पन्ना तण्हा 'नन्दी'। पुनप्पुनं उप्पज्जमाना 'नन्दीरागो' ति वुच्चति। **चित्तस्स सारागो** ति यो हेट्ठा बलवरञ्जनट्ठेन सारागो ति वुत्तो, सो न सत्तस्स, चितस्सेव सारागो ति अत्थो। इच्छन्ति एताय आरम्मणानी ति **इच्छा**। बहलकिलेसभावेन मुच्छन्ति एताय पाणिनो ति **मुच्छा**। गिलित्वा परिनिट्ठपेत्वा गहणवसेन **अज्झोसानं**। इमिना सत्ता गिज्झन्ति, गेधं आपज्जन्ती ति **गेधो**; बहलट्ठेन वा गेधो। "गेधं वा पन वनसण्डं" [अं० १ : १४१] ति हि बहलट्ठेनेव वुत्तं। अनन्तरपदं उपसग्गवसेन वड्ढितं। सब्बतोभागेन वा गेधो ति **पलिगेधो**। सज्जन्ति एतेना ति **सङ्गो**; लग्गनट्ठेन वा सङ्गो। ओसीदनट्ठेन **पङ्को**। आकड्ढनवसेन **एजा**। "एजा इमं पुरिसं परिकड्ढति तस्स तस्सेव भवस्स अभिनिब्बत्तिया" [दी० २.२१२] ति हि वुत्तं। वञ्चनट्ठेन **माया**।

वट्टस्मिं सत्तानं जननट्ठेन **जनिका**।

"तण्हा जनेति पुरिसं चित्तमस्स विधावती" [सं० १.३५] ति

हि वुत्तं। वट्टस्मिं सत्ते दुक्खेन संयोजयमाना जनेती ति **सञ्जननी**। घट्टनट्ठेन सिब्बती ति **सिब्बनी**। अयं हि वट्टस्मिं सत्ते चुतिपटिसन्धिवसेन सिब्बति घट्टेति, तुन्नकारो विय पिलोतिकाय पिलोतिकं; तस्मा घट्टनट्ठेन सिब्बनी ति वुत्ता। अनेकप्पकारं विसमजालं तण्हाविप्फन्दितनिवेससंखातं वा जालमस्स अत्थी ति **जालिनी**। आकड्ढनट्ठेन सीघसोता सरिता विया ति **सरिता**। अल्लट्ठेन वा सरिता। वुत्तं हेतं–

विसयेसू ति आरम्मणेसु। सत्तानं ति पदं अनुनयनतो ति पदे कम्मं। अनुनयनतो ति पुनप्पुनं नयनतो। अनुपुब्ब 'नी'-नये। एताया ति तण्हाय। तत्था ति नन्दीरागेसु। यो ति यो रागो इमिना विरागेन। गेधं वा बहलं पवनसण्डं महावनसण्डं इतिवचनं हि सच्चं, बहलट्ठेन[1] बहलभावेनेव भगवता वुत्तं[2]। एतेना ति रागेन। अभिनिब्बत्तिया ति (२३३–सी०) पदं कड्ढतीति[3] पदे सम्पदानं, अभिनिब्बत्तनं अभिनिब्बत्ति।

अस्सा ति पुरिसस्स। अयं हीति हि सच्चं, अयं तण्हा। तुन्नकारो विय पिलोतिकाय सद्धिं पिलोतिकं कड्ढति घट्टेति। तुदनं[4] तुन्नं। तुन्नं करोतीति तुन्नकारो। विसयजालं ति विसयसङ्खातजालं[5]। विप्फन्दनं विप्फन्दितं। तण्हाय विप्फन्दितं तण्हाविप्फन्दितं। निविसनं निवेसो। तण्हाविप्फन्दितं एव निवेसो तण्हाविप्फन्दितनिवेसो। तण्हाविप्फन्दितनिवेसो

---

१. बहलत्थेनेव–सी०। २. वुत्ता–सी०। ३. परिकड्ढतीति–सी०। ४. तुननं–सी०। ५. विसयसंखातं जालं–सी०।

"सरितानि सिनेहितानि च सोमनस्सानि भवन्ति जन्तुनो" [खु० १ : ४९धम्म०] ति। अल्लानि चेव सिनिद्धानि चा ति अयं हेत्थ अत्थो। विसता ति **विसत्तिका**। विसवा ति विसत्तिका। विसाला ति विसत्तिका। विसक्कती ति विसत्तिका। विसंवादिका ति विसत्तिका। विसं हरती ति विसत्तिका। विसमूला ति विसत्तिका। विसफला ति विसत्तिका। विसपरिभोगा ति विसत्तिका। विसप्पतीति विसत्तिका। विसता वा पन सा तण्हा रूपे सद्दे गन्धे रसे फोट्ठब्बे धम्मे कुले गणे विसता वित्थता ति विसत्तिका। अनयब्यसनपापनट्ठेन कुम्मानुबन्धनं सुत्तकं विया ति **सुत्तं**। वुत्तं हेतं–"सुत्तकं ति खो भिक्खवे, नन्दिरागस्सेतं अधिवचनं" [सं० २.१९०] ति। रूपादीसु पि वित्थतट्ठेन **विसटा**।

तस्स तस्स पटिलाभत्थाय सत्ते आयूहापेती ति **आयूहनी**। उक्कण्ठितुं अप्पदानतो सहायट्ठेन **दुतिया**। अयं हि सत्तानं वट्टस्मिं उक्कण्ठितुं न देति, गतगतट्ठाने पियसहायो विय अभिरमापेति। तेनेव वुत्तं—

"तण्हादुतियो पुरिसो दीघमद्धान संसरं।
इत्थभावञ्ञथाभावं संसारं नातिवत्तती [खु० १ : ३८३ सु० नि०] ति॥

पणिधानकवसेन **पणिधि**। **भवनेत्ती** ति भवरज्जु। एताय हि सत्ता, रज्जुया गीवायं बद्धा गोणा विय, इच्छितिच्छितट्ठानं नीयन्ति। तं तं आरम्मणं वनति भजति अल्लीयती ति **वनं**। याचती ति वा वानं। **वनथो** ति ब्यञ्जनेन पदं वड्ढितं। अनत्थ-

---

इति सङ्खातं तण्हा....प०....नि[1]। अस्सा ति तण्हाय। वुत्तं हेतं ति हि सच्चं, सरि....प०.... जन्तुनो ति एतं वचनं धम्मपदे भगवता वुत्तं। सरितानि रागवसेन। अल्लानि सिनेहितानि[2] च तं-सम्पयुत्तपीतिवसेन सिनिद्धानि सोमनस्सानि जन्तुनो भवन्ति। हेत्था ति हि सच्चं, एत्थ सरितानीति आदिवचने। विसता वा पना ति वा अपरो नयो। विसता पन सा तण्हा वित्थता ति सम्बन्धो। पनसद्दो विससत्थो। अनय....प....०नट्ठेना ति अवड्ढिसङ्खातस्स[3] ब्यसनस्स [१९९–म०] आपादनभावेन।

तस्स तस्स वत्थुस्स। अयं हीति हि सच्चं[4]। तेनेवा ति तेनेव कारणेन, तण्हा वट्टतीति वचनं अङ्गुत्तरनिकाये चतुक्कनिपाते वुत्तं। तण्हादुतियो दीघमद्धानं चिरकालं संसरं संसरन्तो पुरिसो सत्तो इत्थभावञ्ञथाभावं मनुस्सभावं[5] देवादिभावभूतं[5] संसारं[6] खन्ध-धातु-आयतन-पटिपाटिं[6] नातिक्कमति। तण्हा दुतिया अस्सा ति तण्हादुतियो। अयं भावो इत्थभावो, मनुस्सभावो। अञ्ञो भावो अञ्ञथाभावो, देवादिभावो। इत्थभावो च अञ्ञथाभावो च इत्थभावञ्ञथाभावं। एताय हीति हि सच्चं, एताय तण्हाय, नीयन्तीति पदे कत्ता। अनत्तञ्च

---

१. निवेसो–सी०। २. सिप्पे हितानि–म०। ३. अवुड्ढिसंखातं–सी०।
४. ०अयं तण्हा–सी०। ५-५. मनुस्सभावदेवादिभावभूतं–सी०। ६-६. संखारक्खन्ध-धातु०–सी०।

रुक्खानं वा समुट्ठापनट्ठेन गहनट्ठेन च वनं विया ति 'वनं'; बलवतण्हायेतं नामं। गहनतरट्ठेन पन ततो बलवतरो 'वनथो' नाम। तेन वुत्तं—

"वनं छिन्दथ मा रुक्खं वनतो जायते भयं।
छेत्वा वनं च वनथं च निब्बना होथ भिक्खवो" [खु० १ : ४३ धम्म०] ति॥

सन्थवनवसेन **संथवो**; संसग्गो ति अत्थो। सो दुविधो—तण्हासंथवो च मित्तसंथवो च। तेसु इध तण्हासंथवो अधिप्पेतो। सिनेहनवसेन **सिनेहो**। आलयकरणवसेन अपेक्खती ति **अपेक्खा**। वुत्तं पि चेतं—"इमानि ते देव, चतुरासीति नगरसहस्सानि कुसावतीराजधानीपमुखानि। एत्थ देव, छन्दं जनेहि, जीविते अपेक्खं करोही" [दी० २.१४५] ति। आलयं करोही ति अयं हेत्थ अत्थो। पाटियेक्के पाटियेक्के आरम्मणे बन्धती ति **पटिबन्धु**। ञातकट्ठेन वा पाटियेक्को बन्धू ति पि पटिबन्धु। निच्चसन्निस्सितट्ठेन सत्तानं तण्हासमो बन्धु नाम नत्थि।

आरम्मणानं आसनतो **आसा**। अज्झोत्थरणतो चेव तित्तिं अनुपगन्त्वा व परिभुञ्जनतो चा ति अत्थो। आसिंसनवसेन **आसिंसना**। आसिंसितभावो **आसिंसितत्तं**। इदानी तस्सा पवत्तिट्ठानं दस्सेतुं **रूपासा** ति आदि वुत्तं। तत्थ आसिंसनवसेन आसा ति आसाय अत्थं गहेत्वा रूपे आसा रूपासा ति एवं नव पि पदानि वेदितब्बानि। एत्थ च पुरिमानि पञ्च पञ्चकामगुणवसेन वुत्तानि। परिक्खारलोभवसेन छट्ठं। तं विसेसतो पब्बजितानं। ततो परानि तीणि पदानि अतित्तिय-

---

दुक्खञ्च अनत्तदुक्खानि। अनत्तदुक्खानं ति पि। गहणतरट्ठेना ति गहणतरसभावेन। ततो ततो तण्हातो। तेन वुत्तं ति तेन कारणेन धम्मपदे भगवता वुत्तं।

भिक्खवे, तुम्हे रागादिकिलेससङ्खातं वनं छिन्दथ, रुक्खं मा छिन्दथ। भयं जातिआदिकं भयं। वनथो[1] किलेसवनथो जायते, तुम्हे वनं पुब्बुप्पत्तिता किलेसवनं। वनथञ्च अपरापरुप्पत्तिता किलेसवनथञ्च। निब्बाना निक्किलेसा होथ। नत्थि वानं येसं ते निब्बाना[2]।

(२३४–सी०) सो ति सन्थवो। तण्हावसेन सन्थवो संसग्गो तण्हासन्थवो। मित्तभावेन सन्थवो मित्तसन्थवो। तेसू ति द्वीसु सन्थवेसु। इधा ति सन्थवो ति पदे। वुत्तम्पि चेतं ति एतं वचनं महासुदस्सनसुत्ते भगवता वुत्तम्पि। ते ति तव। देवा ति महासुदस्सनराजानं आलपति। कुसावती एव राजधानी कुसावतीराजधानी, कुसावतीराजधानी पमुखा पधानं येसं तानि कुसावतीराजधानीपमुखानि। एत्था ति चतुरासीतिनगरसहस्सेसु। एत्था ति अपेक्खं ति पदे आधारो[3]। निच्चसन्निस्सितट्ठेना ति निच्चसन्निस्सितभावेन। तण्हासमो ति तण्हाय समो।

तस्सा ति तण्हाय। तत्था ति रूपासा ति आदिवचने, वेदितब्बानीति पदे आधारो। एत्था ति[4] नव[5] पदेसु[5]। परिक्खारलोभवसेना ति परिक्खारे पवत्तलोभपटिबद्धेन। तं ति

---

१. वनतो–सी० सब्बत्थ। २ निब्बिना ति पि अत्थि–सी०। ३. नत्थि–सी०। ४. एत्थ चा ति–सी०। ५-५. वनपदेसु–सी०।

वत्थुवसेन गहट्ठानं। न हि तेसं धन-पुत्त-जीवितेहि पियतरं अत्थि। 'इदं मय्हं एतं मय्हं' ति वा 'असुकेन मे इदं दिन्नं इदं दिन्नं' ति वा एवं सत्तो जप्पापेती ति **जप्पा**। परतो द्वे पदानि उपसग्गेन वड्ढितानि। ततो परं अञ्ञेनाकारेन विभजितुं आरद्धत्ता पुन **जप्पा** ति वुत्ता। जप्पनाकारो **जप्पना**। जप्पितस्स भावो **जप्पितत्तं**। पुनप्पुनं विसये लुप्पति आकड्ढती ति लोलुपो। लोलुपस्स भावो **लोलुप्पं**। लोलुप्पाकारो **लोलुप्पायना**। लोलुप्पसमंगिनो भावो **लोलुप्पायितत्तं**।

पुच्छञ्जिकता ति याय तण्हाय लाभट्ठानेसु, पुच्छं चालयमाना सुनखा विय, कम्पमाना विचरन्ति, तस्सा कम्पनतण्हाय नामं। साधु मनापमनापे विसये कामेती ति साधुकामो। तस्स भावो **साधुकम्यता**। माता-मातुच्छा ति आदिके अयुत्तट्ठाने रागो ति **अधम्मरागो**। युत्तट्ठाने पि बलवा हुत्वा उप्पन्नलोभो **विसमलोभो**। "रागो विसमं" [विभ० ४४०] ति आदिवचनतो वा युत्तट्ठाने वा अयुत्तट्ठाने वा उप्पन्नो छन्दरागो अधम्मट्ठेन 'अधम्मरागो', विसमट्ठेन 'विसमलोभो ति वेदितब्बो। आरम्मणानं निकामनवसेन निकन्ति। निकामनाकारो **निकामना**। पत्थनवसेन **पत्थना**। पिहायनवसेन **पिहना**। सुट्ठु पत्थना सम्पत्थना। पञ्चसु कामगुणेसु तण्हा **कामतण्हा**। रूपारूपभवे तण्हा **भवतण्हा**। उच्छेदसंखाते विभवे तण्हा **विभवतण्हा**। सुद्धे रूपभवस्मि येव तण्हा **रूपतण्हा**। अरूपभवे तण्हा **अरूपतण्हा**। उच्छेददिट्ठिसहगतो रागो **दिट्ठिरागो**। निरोधे तण्हा **निरोधतण्हा**। रूपे तण्हा **रूपतण्हा**। सद्दे तण्हा **सद्दतण्हा**। **गन्धतण्हा**दीसु पि एसेव नयो। **ओघा**दयो वुत्तत्था व।

कुसलधम्मे आवरती ति **आवरणं**। छादनवसेन **छादनं**। सत्ते वट्टस्मि बन्धती ति **बन्धनं**। चित्तं उपगन्त्वा किलिस्सति किलिट्ठं करोती ति **उपक्किलेसो**। थामगतट्ठेन अनुसेती ति **अनुसयो**। उप्पज्जमाना चित्तं परियुट्ठाती ति **परियुट्ठानं**; उप्पज्जितुं अप्पदानेन कुसलवारं गण्हाती ति अत्थो। "चोरा मग्गे परियुट्ठिंसु धुत्ता मग्गे परियुट्ठिंसू [ ] ति आदीसु हि मग्गं गण्हिंसू ति अत्थो। एवमिधा पि गहणट्ठेन परियुट्ठानं वेदितब्बं। पलिवेठनट्ठेन लता विया ति **लता**। "लता उब्भिज्ज तिट्ठती" [खु० १ : ४९ धम्म०] ति आगतट्ठाने पि अयं तण्हा लता ति वुत्ता। विविधानि

तं सब्बं[1] पदं[1] विसेसतो पब्बजितानं परिक्खारलोभवसेन वुत्तं ति योजना। ततो ति छट्ठतो। अतित्तियवत्थुवसेना ति गहट्ठानं अतित्तियवत्थुवसेन वुत्तानि। तेसं ति गहट्ठानं पियतरं वत्थु। ततो ति उपसग्गवसेन वड्ढितपदतो।

पुच्छं ति अङ्गुट्ठं[2]। कम्पेन्ति सत्ता एताया ति कम्पना। कम्पना च सा तण्हा चा ति कम्पनतण्हा। निकामवसेना ति [२००–म०] इच्छनवसेन। उच्छे····प०····दिट्ठि····प०···· दिट्ठिरागो ति निरोधे तण्हा ति पदस्स सरूपं।

थामगतट्ठेना ति थामभावगतभावेन। अनुसेति वत्तति[3]। कुसलचारं[4] ति कुसलस्स

१-१. छट्ठपदं–सी०। २, नङ्गुट्ठं–सी०। ३, पवत्तति–सी०। ४. कुसलचारं–सी०।

वत्थूनि इच्छती ति **वेविच्छं**। वट्टदुक्खस्स मूलं ति **दुक्खमूलं**। तस्सेव दुक्खस्स निदानं ति **दुक्खनिदानं**। तं दुक्खं इतो पभवती ति **दुक्खप्पभवो**। बन्धनट्ठेन पासो विया ति पासो। **मारस्स** पासो **मारपासो**। दुग्गिलनट्ठेन बलिसं विया ति बलिसं। **मारस्स** बलिसं **मारबलिसं**। तण्हाभिभूता **मारस्स** विसयं नातिक्कमन्ति, तेसं उपरि **मारो** वसं वत्तेती ति इमिना परियायेन **मारस्स** विसयो ति **मारविसयो**। सन्दनट्ठेन तण्हा व नदी **तण्हानदी**। अज्झोत्थरणट्ठेन तण्हा व जालं **तण्हाजालं**। यथा सुनखा गद्दुलबद्धा यदिच्छकं नीयन्ति, एवं तण्हाबद्धा सत्ता ति दळ्हबन्धनट्ठेन गद्दुलं विया ति गद्दुलं। तण्हा व गद्दुलं **तण्हागद्दुलं**। दुप्पूरणट्ठेन तण्हा व समुद्दो ति **तण्हासमुद्दो**।

दोसनिद्देसे [ध० २४१] **अनत्थं मे अचरी** ति अवुड्ढि मे अकासि। इमिना उपायेन सब्बपदेसु अत्थो वेदितब्बो। **अट्ठाने वा पन आघातो** ति अकारणे कोपो—एकच्चो हि 'देवो अतिवस्सती'ति कुप्पति, 'न वस्सती'ति कुप्पति, 'सुरियो तप्पती'ति कुप्पति, 'न तप्पती'ति कुप्पति, वाते वायन्ते पि कुप्पति, अवायन्ते पि कुप्पति, सम्मज्जितुं असक्कोन्तो बोधिपण्णानं कुप्पति, चीवरं पारुपितुं असक्कोन्तो वातस्स कुप्पति, उपक्खलित्वा खाणुकस्स कुप्पती ति इदं सन्धाय वुत्तं—**अट्ठाने वा पन आघातो जायती** ति। तत्थ हेट्ठा नवसु ठानेसु सत्ते आरब्भ उप्पन्नत्ता कम्मपथभेदो होति। अट्ठानाघातो पन संखारे उप्पन्नो कम्मपथभेदं न करोति। चित्तं अघातेन्तो उप्पन्नो ति **चित्तस्स आघातो**। ततो बलवतरो **पटिघातो**। पटिहञ्ञनवसेन **पटिघं**। पटिविरुज्झती ति **पटिविरोधो**।

कुप्पनवसेन **कोपो**। **पकोपो सम्पकोपो** ति उपसग्गवसेन पदं वड्ढितं। दुस्सनवसेन **दोसो**। **पदोसो सम्पदोसो** ति उपसग्गवसेन पदं वड्ढितं। **चित्तस्स ब्यापत्ती** ति चित्तस्स विपन्नता, विपरिवत्तनाकारो। मनं पदूसयमानो उप्पज्जती ति **मनोपदोसो**। कुज्झनवसेन **कोधो**। कुज्झनाकारो **कुज्झना**। कुज्झितस्स भावो **कुज्झितत्तं**। इदानि

पवत्तनं। इधा पि ति परियुट्ठानं ति पदे। उब्भिज्ज तिट्ठतीति छहि द्वारेहि उप्पज्जित्वा रूपादीसु आरम्मणेसु तिट्ठति। इतो ति तण्हातो। दुरुग्गिलनट्ठेना ति दुट्ठु उग्गिलनसभावेन। तण्हाभिभूता ति तण्हाय अभिभूता सत्ता। तेसं ति तण्हाभिभूतानं सत्तानं। गद्दुलबद्धा ति गद्दुलेन सुनखा[1] बद्धा[1], यदिच्छकं जनेहि नीयन्ति।

एकच्चो हीति हि सच्चं, एकच्चो पुग्गलो। देवो[2] अतिवस्सतीति[2] कारणेन[3] कुप्पति। इदं ति इदं सन्धाय अट्ठाने....प०....जायतीति वचनं भगवता वुत्तं। तत्था ति दससु ठानेसु। अट्ठानाघातो ति[4] अकारणे आघातो। चित्तस्सा ति कम्मत्थे छट्ठी, अलुत्तसमासो। ततो ति चित्तस्स आघाततो[5]।

१-१. सुनखबन्धनेन सुनखा बद्धा—सी०। २-२. देवाट्ठ वस्सती ति—म०। ३. अकारणे—सी०। ४. अट्ठानाघाटो ति—सी०। ५. आघाटको—सी०।

अकुसलनिद्देसे वुत्तनयं दस्सेतुं **दोसो दुस्सना** ति आदि वुत्तं। तस्मा "यो एवरूपो चित्तस्स आघातो····प०····कुज्झितत्तं" [ध० २४१] ति च इध वुत्तो, "दोसो दुस्सना" ति आदिना नयेन हेट्ठा वुत्तो, अयं वुच्चति दोसो ति। एवमेत्थ योजना कातब्बा। एवं हि सति पुनरुत्तिदोसो पटिसेधितो होति।

मोहनिद्देसो [ध० २४१] अमोहनिद्देसे वुत्तपटिपक्खनयेन वेदितब्बो। सब्बाकारेन पनेस **विभङ्गट्ठकथाय** आविभविस्सति।

तेहि धम्मेहि ये धम्मा सहेतुका [ध० २४३] ति तेहि हेतुधम्मेहि ये अञ्ञे हेतुधम्मा वा न हेतुधम्मा वा सहेतुका। अहेतुकपदे [ध० २४३] पि एसेव नयो। एत्थ च हेतु हेतु येव च होति, तिण्णं वा द्विन्नं वा एकतो उप्पत्तियं सहेतुको च। विचिकिच्छुद्धच्चसहगतो पन मोहो हेतु अहेतुको। हेतुसम्पयुत्तदुकनिद्देसे [ध० २४३] पि एसेव नयो। संखतदुकनिद्देसे [ध० २४४] पुरिमदुके वुत्तं असंखतधातुं सन्धाय **यो एव सो धम्मो** [ध० २४४] ति एकवचननिद्देसो कतो। पुरिमदुके पन बहुवचनवसेन पुच्छाय उद्धटत्ता **इमे धम्मा अप्पच्चया** [ध० २४४] ति पुच्छानुसन्धिनयेन बहुवचनं कतं। **इमे धम्मा सनिदस्सना** [ध० २४४] ति आदीसु पि एसेव नयो।

केनचि विञ्ञेय्यदुकनिद्देसे [ध० २४५] **चक्खुविञ्ञेय्या** ति चक्खुविञ्ञाणेन विजानितब्बा। सेसपदेसु पि एसेव नयो। एत्थ च **केनचि विञ्ञेय्या** ति चक्खुविञ्ञाणादीसु केनचि एकेन चक्खुविञ्ञाणेन वा सोतविञ्ञाणेन वा विजानितब्बा। **केनचि न विञ्ञेय्या** ति तेनेव चक्खुविञ्ञाणेन वा सोतविञ्ञाणेन वा न विजानितब्बा। 'एवं सन्ते द्विन्नं पि पदानं अत्थनानत्ततो दुको होती' ति हेट्ठा वुत्तत्ता 'ये ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या न ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या' [ध० २४५] ति अयं दुको न होति। रूपं पन चक्खुविञ्ञेय्यं सद्दो न चक्खुविञ्ञेय्यो ति इममत्थं गहेत्वा 'ये ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या न ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या, ये वा पन ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या, न ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या' ति अयमेको दुको ति वेदितब्बो। एवं एकेक-इन्द्रियमूलके चत्तारो चत्तारो कत्वा वीसति दुका विभत्ता ति वेदितब्बा।

तस्मा ति वुत्तं ति नयं दस्सेतुं वुत्तत्ता, कातब्बा ति पदे हेतु। (२३५–सी०) एवरूपो यो दोसो चित्तस्स····प०···· वत्तन्ति इध दोसनिद्देसे भगवता वुत्तो। एवरूपो यो दोसो हेट्ठा अकुसलनिद्देसे वुत्तो। एत्था ति यो एवरूपो ति आदिवचने। एवं हीति हि सच्चं, एवं योजने सति पुनरुत्तिदोसो पुनवुत्तिदोसो[1] पण्डितेन पटिसेधितो होति।

एसो ति[2] मोहनिद्देसो।

एत्थ चा ति हेतुधम्म-न-हेतुधम्मेसु निद्धारणं। एकवचननिद्देसो ति एकवचनवसेन निद्देसो।

एत्थ चा ति केनचि विञ्ञेय्यदुकनिद्देसे, न होतीति पदे आधारो। वुत्तत्ता ति पदं न होतीति पदे हेतु। गहेत्वा ति पदं वेदितब्बो ति पदे पुब्बकालक्रिया। एकेक-इन्द्रियमूलके ति एकेकचक्खादि-इन्द्रियमूलके चत्तारो चत्तारो दुके।

---

१. वुत्तदोसो-सी०। २. एसा ति-सी०।

किं पन 'मनोविञ्ञाणेन केनचि विञ्ञेय्या केनचि न विञ्ञेय्या' ति नत्थि ? तेनेत्थ दुका न वुत्ता ति ? न नत्थि, ववत्थानाभावतो पन न वुत्ता। न हि, यथा चक्खुविञ्ञाणेन अविञ्ञेय्या एवा ति ववत्थानं अत्थि, एवं मनोविञ्ञाणेना पी ति ववत्थानाभावतो एत्थ दुका न वुत्ता। मनोविञ्ञाणेन पन केनचि विञ्ञेय्या चेव अविञ्ञेय्या चा ति अयमत्थो अत्थि। तस्मा सो अवुत्तो पि यथालाभवसेन वेदितब्बो। मनोविञ्ञाणं ति हि संखं गतेहि कामावचरधम्मेहि कामावचरा धम्मा एव ताव केहिचि विञ्ञेय्या केहिचि अविञ्ञेय्या। तेहि येव रूपावचरादिधम्मा पि केहिचि विञ्ञेय्या केहिचि अविञ्ञेय्या। रूपावचरेहि पि कामावचरा केहिचि विञ्ञेय्या केहिचि अविञ्ञेय्या। तेहि येव रूपावचरादयो पि केहिचि विञ्ञेय्या केहिचि अविञ्ञेय्या। अरूपावचरेहि पन कामावचरा रूपावचरा अपरियापन्ना च नेव विञ्ञेय्या। अरूपावचरा पन केहिचि विञ्ञेय्या केहिचि अविञ्ञेय्या। ते पि च केचिदेव विञ्ञेय्या केचि अविञ्ञेय्या। अपरियापन्नेहि कामावचरादयो नेव विञ्ञेय्या। अपरियापन्ना पन निब्बानेन अविञ्ञेय्यत्ता केहिचि विञ्ञेय्या केहिचि अविञ्ञेय्या। ते पि च मग्गफलानं अविञ्ञेय्यता केचिदेव विञ्ञेय्या केचिदेव अविञ्ञेय्या ति।

आसवनिद्देसे [ध० २४७-२४९] पञ्चकामगुणिको रागो **कामासवो** नाम। रूपारूपभवेसु छन्दरागो झाननिकन्ति-सस्सतदिट्ठिसहजातो रागो भववसेन पत्थना

मनो····प०····न विञ्ञेय्या ति अत्थो नत्थि, तेन तस्मा अभावतो एत्थ मनोविञ्ञाणे दुका भगवता किं पन वुत्ता इति पुच्छा ति योजना। मनो····प०····विञ्ञेय्या ति अत्थो, नत्थि ववत्था····प०····दुका भगवता न वुत्ता। वुत्तमत्थं साधेन्तो न हीति आदिमाह। हि सच्चं, यथा····प०···· ववत्थानं अत्थि। एवं मनो····प०····ना पि अविञ्ञेय्या एवा ति ववत्थानं अत्थि, इति तस्मा····प०····न वुत्ता। सो ति सो अत्थो। यथालाभं ञापेन्तो[1] मनो ति आदिमाह। केहिचीति पदं कामावचरधम्मेहीति पदस्स विसेसनं। तेहि येवा ति कामावचरधम्मेहि। तेहेवा ति रूपावचरधम्मेहि। अरूपावचरा पन केहिचि अरूपावचरेहि[2] अविञ्ञेय्या ति योजना[2]। (२०१—म०) आकासानञ्चायतन-आकिञ्चञ्ञायतन-सङ्खाता अरूपावचरा विञ्ञाणञ्चायतन-नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसङ्खातेहि केहिचि[3] विञ्ञेय्यदुतियतुत्थारुप्प-पठमततियारुप्पसङ्खातेहि[3] केहिचि अविञ्ञेय्या ति अधिप्पेता[4]। ते पि च अरूपावचरा केचिदेव विञ्ञेय्या अरूपावचरेहि केहिचि अविञ्ञेय्या अरूपावचरेहीति योजना। निब्बानेना ति पदं विञ्ञेय्या ति पदे ततियाकत्ता। ते पि च अपरियापन्ना केचिदेव विञ्ञेय्या अपरियापन्नेहि, केचिदेव अविञ्ञेय्या अपरियापन्नेहीति योजना।

रूपारूपभवेसु छन्दरागो भवासवो नाम। झाननिकन्ति भवासवो नाम। झाने पवत्ता

---

१. सञ्ञापेन्तो-सी०। २-२. ०विञ्ञेय्या। केहि चि अरूपावचरेहि विञ्ञेय्या ति य जना—सी०। ३-३. ०विञ्ञेय्या, दुतियचतुत्थारूपा पठमततियारूपसंखातेहि—सी०। ४. अधिप्पायो—सी०।

भवासवो नाम। द्वासट्ठि दिट्ठियो **दिट्ठासवो** नाम। अट्ठसु ठानेसु अञ्ञाणं **अविज्जासवो** नाम। तत्थ तत्थ आगतेसु पन आसवेसु असम्मोहत्थं एकविधादिभेदो वेदितब्बो। अत्थतो हेते चिरपरिवासियट्ठेन आसवा ति एवं एकविधा व होन्ति। **विनये** पन "दिट्ठधम्मिकानं आसवानं संवराय सम्परायिकानं आसवानं पटिघाताया" [विन० ३.२६; ५ : २५५, ३९१] ति दुविधेन आगता। सुत्तन्ते **सळायतने** ताव 'तयो' मे आवुसो आसवा—कामासवो भवासवो अविज्जासवो ति तिविधेन आगता। **निब्बेधिकपरियाये** "अत्थि भिक्खवे, आसवा निरयगमनीया, अत्थि आसवा तिरच्छानयोनिगमनीया, अत्थि आसवा पेत्तिविसयगमनीया, अत्थि आसवा मनुस्सलोकगमनीया, अत्थि आसवा देवलोकगमनीया" [अं० ३.११९] ति पञ्चविधेन आगता। **छक्कनिपाते आहुनेय्यसुत्ते**–"अत्थि आसवा संवरा पहातब्बा, अत्थि आसवा पटिसेवना पहातब्बा, अत्थि आसवा अधिवासना पहातब्बा, अत्थि आसवा परिवज्जना पहातब्बा, अत्थि आसवा विनोदना पहातब्बा, अत्थि आसवा भावना पहातब्बा" [तु०, अं० ३.९७] ति छब्बिधेन आगता। **सब्बासवपरियाये** 'दस्सना-पहातब्बेहि' सद्धिं सत्तविधेन आगता। इध पनेते कामासवादिभेदतो चतुब्बिधेन आगता।

तत्रायं वचनत्थो—पञ्चकामगुणसंखाते कामे आसवो 'कामासवो'। रूपारूपसंखाते कम्मतो च उपपत्तितो च दुविधे पि भवे आसवो 'भवासवो'। दिट्ठि एव आसवो 'दिट्ठासवो'। अविज्जा व आसवो '**अविज्जासवो**'। **कामेसू** [ध० २४७] ति पञ्चसु कामगुणेसु। **कामच्छन्दो** ति कामसंखातो छन्दो, न कत्तुकम्यता छन्दो, न धम्मच्छन्दो। कामनवसेन रज्जनवसेन च कामो येव रागो **कामरागो**। कामनवसेन नन्दनवसेन

निकन्ति झाननिकन्ति। भववसेना ति पदं (२३६–सी०) पत्थना ति पदे ततियाविसेसनं। भवपटिबद्धेन पवत्तपत्थनासङ्खातो भवासवो नामा ति अत्थो। अट्ठसु ठानेसू ति चतूसु सच्चेसु पुब्बन्ते अपरन्ते[१] उभयत्थ च[२]। पच्चयट्ठितियं[३] चा ति[३] अट्ठट्ठानानि। तत्थ[४] तत्थ पाळियं। अत्थतो ति आदिवित्थारो। हि सच्चं, अत्थतो ते आसवा एकविधा व होन्तीति सम्बन्धो। दिट्ठधम्मे इमस्मिं अत्तभावे पवत्ता दिट्ठधम्मिका। संवराया ति पिदहनत्थाय। सम्पराये पवत्ता सम्परायिका। पटिघाताया ति पटिहननत्थं। निब्बेधिकपरियाये ति निब्बेधिकसुत्ते आसवा आगता। निरयं गच्छन्ति सत्ता एतेहीति निरयगामिनीया। छक्कनिपाते ति अङ्गुत्तरनिकाये छक्कनिपाते। संवरा ति संवरेन। संवरहेतू ति अत्थो। सब्बासवपरियाये ति मूलपण्णासे सब्बासवसुत्ते। इध पना ति अभिधम्मे। एते आसवा।

तत्रा ति कामासवादीसु। कामियतीति कामो। कामे आसवो[५] कामासवो। भवति फलं एतस्मा ति भवो, कम्मं। भवतीति भवो। उपपत्तिभवे आसवो भवासवो। उपपन्ना

---

१. अपरन्तो–म०। २. अविज्जा नाम अञ्ञाणं–सी पोत्थके अधिको पाठो।
३-३. ०ठितियम्पि चा ति–सी०। ४. तत्था ति–सी०। ५. आसवो ति–सी०।

च कामो व नन्दी ति **कामनन्दी।** एवं सब्बत्थ कामत्थं विदित्वा तण्हायनट्ठेन **कामतण्हा**, सिनेहनट्ठेन **कामसिनेहो**, परिदाहनट्ठेन **कामपरिळाहो**, मुच्छनट्ठेन **काम-मुच्छा**, गिलित्वा परिनिट्ठापनट्ठेन **कामज्झोसानं** वेदितब्बं। **अयं वुच्चती** ति अट्ठहि पदेहि विभत्तो कामासवो नाम वुच्चति।

भवेसु भवच्छन्दो [ध० २४७] ति रूपारूपभवेसु भवपत्थनावसेनेव पवत्तो छन्दो 'भवच्छन्दो'। सेसपदानि पि इमिना व नयेनेव वेदितब्बानि। सस्सतो लोको [ध० २४७] ति वा आदीहि दसहाकारेहि दिट्ठिप्पभेदो व वुत्तो। तत्थ **सस्सतो लोको** ति खन्धपञ्चकं लोको ति गहेत्वा 'अयं लोको निच्चो धुवो सब्बकालिको' ति गण्हन्तस्स 'सस्सतं' ति गहणाकारप्पवत्ता दिट्ठि। **असस्सतो** ति तमेव लोकं 'उच्छिज्जति विनस्सती' ति गण्हन्तस्स उच्छेदगहणाकारप्पवत्ता दिट्ठि। **अन्तवा** ति परित्त-कसिणलाभिनो 'सुप्पमत्ते वा सरावमत्ते वा' कसिणे समापन्नस्स अन्तोसमापत्तियं पवत्तितरूपारूपधम्मे लोको ति च कसिण-परिच्छेदन्तेन च 'अन्तवा' ति गण्हन्तस्स 'अन्तवा लोको' ति गहणाकारप्पवत्ता दिट्ठि। सा सस्सतदिट्ठि पि होति उच्छेददिट्ठि पि। विपुलकसिणलाभिनो पन कसिणे समापन्नस्स अन्तोसमापत्तियं पवत्तितरूपारूप-धम्मे लोको ति च कसिणपरिच्छेदन्तेन च 'अनन्तो' ति गण्हन्तस्स 'अनन्तवा लोको' ति च गहणाकारप्पवत्ता दिट्ठि। सा सस्सतदिट्ठि पि होति, उच्छेददिट्ठि पि।

तं जीवं तं सरीरं ति भेदनधम्मस्स सरीरस्सेव 'जीवं' ति गहितत्ता सरीरे उच्छिज्जमाने 'जीवं पि उच्छिज्जती' ति उच्छेदगहणारप्पवत्ता दिट्ठि। दुतियपदे सरीरतो अञ्ञस्स जीवस्स गहितत्ता सरीरे उच्छिज्जमाने पि 'जीवं न उच्छिज्जती' ति सस्सतगहणाकारप्पवत्ता दिट्ठि। **होति तथागतो परं मरणा** ति आदीसु सत्तो तथागतो नाम। सो परं मरणा होती ति गण्हतो पठमा सस्सतदिट्ठि। **न होती** ति

ति[1] उपपत्ति,[2] विपाककम्मजरूपं। सब्बत्था ति सब्बेसु पदेसु। कामत्थं कामसद्दस्स अत्थं विदित्वा वेदितब्बं पण्डितेना ति सम्बन्धो। तण्हायनट्ठेना ति पि पाससभावेन।

रूपारूपभवेसू ति पदं पवत्तो इति पदे आधारो। तत्था ति सस्सतो ति आदिपदेसु। सस्सतो लोको ति एत्थ पदे अधिप्पायो वेदितब्बो। गहणाकारप्पवत्ता ति गहणाकारेन पवत्ता। परित्तकसिणलाभिनो समापन्नस्स ति पदद्वयं गण्हन्तस्स पुग्गलस्सा ति पदे सम्ब-न्धितब्बं। कसिणे ति पदं समापन्नस्सा ति पदे आधारो। पवत्तितरूपारूपधम्मे ति पदं गण्हन्तस्सा ति पदे कम्मं। (२०२–म०) कसिणपरिच्छेदन्तेना ति कसिणपरिच्छेदस्स अन्तेन। कसिणपरिच्छेदन्तेन चा ति चसद्दो लोको ति च अन्ते ति चा ति योजेतब्बो।

होति तथागतो परम्मरणा ति आदीसु विनिच्छयो।

---

१. उप्पज्जतीति–सी०। २. ०भवे आसवो सवासवो–सी०।

गण्हतो दुतिया उच्छेददिट्ठि। **होति च न च होती** ति गण्हतो ततिया एकच्चसस्सत-दिट्ठि। **नेव होति न न होती** ति गण्हतो चतुत्था अमराविक्खेपदिट्ठि। **इमे धम्मा आसवा** ति इमे कामासवा च भवासवा च रागवसेन एकतो कत्वा, संखेपतो तयो, वित्थारतो चत्तारो धम्मा आसवा नाम।

यो पन ब्रह्मानं विमान-कप्परुक्खाभरणेसु छन्दरागो उप्पज्जति, सो कामासवो होति न होती ति? न होति। कस्मा? पञ्चकामगुणिकस्स रागस्स इधेव पहीनत्ता। हेतुगोच्छकं पन पत्वा लोभो हेतु नाम होति। गन्थगोच्छकं पत्वा अभिज्झा कायगन्धो नाम। किलेसगोच्छकं पत्वा लोभो किलेसो नाम होति। दिट्ठिसहजातो पन रागो कामासवो होति न होती ति? न होति; दिट्ठिरागो नाम होति। वुत्तं हेतं "दिट्ठिरागरत्ते पुरिसपुग्गले दिन्नदानं नाम न महप्फलं होति न महानिसंसं" [पटि० १५८] ति। इमे पन आसवे किलेसपटिपाटिया पि आहरितुं वट्टति, मग्गपटिपाटिया पि। किलेसपटिपाटिया कामासवो अनागामिमग्गेन पहीयति, भवासवो अरहत्तमग्गेन, दिट्ठासवो सोतापत्तिमग्गेन, अविज्जासवो अरहत्तमग्गेन। मग्गपटिपाटिया सोतापत्तिमग्गेन दिट्ठासवो पहीयति, अनागामिमग्गेन कामासवो, अरहत्तमग्गेन भवासवो अविज्जासवो चा ति।

संयोजनेसु माननिद्देसे [ध० २५०] **सेय्योहमस्मी ति मानो** ति उत्तमट्ठेन 'अहं सेय्यो' ति एवं उप्पन्नमानो। **सदिसोहमस्मी ति मानो** ति समसमट्ठेन 'अहं सदिसो' ति एवं उप्पन्नमानो। **हीनोहमस्मी ति मानो** ति लामकट्ठेन 'अहं हीनो' ति एवं उप्पन्नमानो। एवं सेय्यमानो सदिसमानो हीनमानो ति इमे तयो माना तिण्णं जनानं उप्पज्जन्ति। सेय्यस्सा पि, हि 'अहं सेय्यो सदिसो हीनो'ति तयो माना उप्पज्जन्ति। सदिसस्सा पि, हीनस्सा पि। तत्थ सेय्यस्स सेय्यमानो व याथावमानो, इतरे द्वे अ-याथावमाना। सदिसस्स सदिसमानो व ....प०.... हीनस्स हीनमानो व याथावमानो, इतरे द्वे अ-याथावमाना। इमिना किं कथितं? एकस्स तयो माना उप्पज्जन्ती ति कथितं। खुद्दकवत्थुके [विभ० ४२०-४२४] पन पठमकमानभाजनिये एको मानो तिण्णं जनानं उप्पज्जती ति कथितो।

यो पन....प०....न हो तीति[1] पुच्छा। सो छन्दरागो कामासवो न होति[2]। कामलोके येव दिट्ठिया सहगतो रागो दिट्ठिरागो। दिट्ठिरागरत्ते ति दिट्ठिसहगते रागेन रत्ते।

संयोजनेसू ति पदं माननिद्देसे ति पदे आधारो। (२३७-सी०) माननिद्देसे विनिच्छयो। सेय्यस्सा पि हीति आदि दळ्हीकरणं। सदिसस्स पि हीनस्स पि तयो माना उप्पज्जन्ति। तत्था ति मानेसु। याथावमानो ति अविपरीतमानो। इतरे द्वे माना। इमिना वुत्तवचनेन किं वचनं भगवता कथितं। एकस्स....प०....इदं वचनं भगवता कथितं। खुद्दकवत्थुके ति विभङ्गे खुद्दकवत्थुके।

---

१. न होन्ती ति–म०। २. होतीति–सी०।

मानकरणवसेन **मानो**। **मञ्ञना मञ्ञितत्तं** ति आकारभाव-निद्देसो। उस्सितट्ठेन **उण्णति**। यस्सुप्पज्जति तं पुग्गलं उण्णामेति, उक्खिपित्वा ठपेती ति **उण्णमो**। समुस्सितट्ठेन **धजो**। उक्खिपनट्ठेन चित्तं सम्पग्गण्हाती ति **सम्पग्गाहो**। **केतु** वुच्चति बहूसु धजेसु अच्चुग्गतधजो। मानो पि पुनप्पुनं उप्पज्जमानो अपरापरे उपादाय अच्चुग्गतट्ठेन केतु विया ति 'केतु'। केतुं इच्छती ति केतुकम्यं, तस्स भावो **केतुकम्यता**। सा पन **चित्तस्स**, न अत्तनो। तेन वुत्तं—'केतुम्यता चित्तस्सा' [ध० २७२] ति। मानसम्पयुत्तं हि चित्तं केतुं इच्छति। तस्स च भावो केतुकम्यता; केतुसंखातो मानो ति।

इस्सा-निद्देसे [ध०२५१] **या पर-लाभ-सक्कार-गरुभाव-मानन-वन्दन-पूजनासु इस्सा** ति या एतेसु परेसं लाभादीसु 'किं इमिना इमेसं' ति परसम्पत्तिखीयनलक्खणा इस्सा। तत्थ **लाभो** ति चीवरादीनं चतुन्नं पच्चयानं पटिलाभो। इस्सुकी हि पुग्गलो परस्स तं लाभं खीयति, 'किं इमस्स इमिना' ति न इच्छति। **सक्कारो** ति तेसं येव पच्चयानं सुकतानं सुन्दरानं पटिलाभो। **गरुकारो** गरुकिरिया, भारियकरणं। **माननं** ति मनेन पियकरणं। **वन्दनं** ति पञ्चपतिट्ठितेन वन्दनं। **पूजना** ति गन्धमालादीहि पूजना। इस्सायनवसेन **इस्सा**। इस्साकारो **इस्सायना**। इस्सायितभावो **इस्सायितत्तं**। **उसूया**-दीनि इस्सादि-वेवचनानि। इमिस्सा पन इस्साय खीयनलक्खणं आगारिकेन पि अनागारिकेन पि वेदितब्बं।

आगारियो हि एकच्चो कसिवाणिज्जादीसु अञ्ञतरेन आजीवेन अत्तनो पुरिसकारं निस्साय भद्दकं यानं वा वाहनं वा लभति। अपरो तस्स अलाभत्थिको तेन लाभेन न तुस्सति। 'कदा नु खो एस इमिस्सा सम्पत्तिया परिहायित्वा कपणो हुत्वा चरिस्सती' ति चिन्तेत्वा एकेन कारणेन तस्मिं ताव सम्पत्तिया परिहीने अत्तमनो होति। अनागारियो पि एको इस्सायनको अञ्ञं अत्तनो सुतपरियत्ति-आदीनि निस्साय उप्पन्नलाभादिसम्पत्तिं दिस्वा 'कदा नु खो एस इमेहि लाभादीहि परिहायिस्सती' ति चिन्तेत्वा, यदा तं एकेन कारणेन परिहीनं पस्सति, तदा अत्तमनो होति। एवं परसम्पत्तिखीयनलक्खणा 'इस्सा' ति वेदितब्बा।

अपरापरे माने उपादाय पटिच्च। उपादाया ति पदं अच्चुग्गत इति पदे विसेसनं।

किं इमिना ति किं पयोजनं इमिना पुग्गलेन इमेसं लाभादीनं। तत्था ति लाभादीसु। इस्सा अस्स अत्थी ति इस्सुकी। **दिस्सन्तञ्ञे पि पच्चया ति** (मो० ४ : १२०) **मोग्गल्लानसुत्तेन** उकि। किं पयोजनं इमस्स पुग्गलस्स इमिना लाभेन इति न इच्छति।

आजीवति एतेना ति आजीवो। पुरिसकारं ति पुरिसेन कत्तब्बकम्मं तस्स पुरिसस्स। तस्मिं ति पुरिसे। सवनं सुतं[1]। परियापुणनं परियत्ति, सुतञ्च परियत्ति च सुतपरियत्ति। सुतपरियत्ति आदि येसं ते सुतपरियत्ति-आदयो। उप्पन्न-लाभादिसम्पत्तिं अञ्ञं

---

१. सुत्तं—सी० सब्बत्थ।

मच्छरियनिद्देसे [ध० २५१] वत्थुतो मच्छरियदस्सनत्थं 'पञ्च मच्छरियानि–आवासमच्छरियं' ति आदि वुत्तं। तत्थ आवासे मच्छरियं **आवासमच्छरियं**। सेसपदेसु पि एसेव नयो। आवासो नाम सकलारामो पि परिवेणं पि एकोवरको पि रत्तिट्ठानादीनि पि। तेसु वसन्ता सुखं वसन्ति पच्चये लभन्ति। एको भिक्खु वत्तसम्पन्नस्सेव पेसलस्स भिक्खुनो तत्थ आगमनं न इच्छति। आगतो पि 'खिप्पं गच्छतू' ति इच्छति। इदं 'आवासमच्छरियं' नाम। भण्डनकारकादीनं पन तत्थ वासं अनिच्छतो आवासमच्छरियं नाम न होति।

कुलं ति उपट्ठाककुलं पि जातिकुलं पि। तत्थ अञ्ञस्स उपसंकमनं अनिच्छतो कुलमच्छरियं होति। पापपुग्गलस्स पन उपसंकमनं अनिच्छतो पि मच्छरियं नाम न होति। सो हि तेसं पसादभेदाय पटिपज्जति। पसादनं रक्खितुं समत्थस्सेव पन भिक्खुनो तत्थ उपसंकमनं अनिच्छन्तो मच्छरी नाम होति। **लाभो** ति चतुपच्चय-लाभो व। तं अञ्ञस्मिं सीलवन्ते लभन्ते येव 'मा लभतू'ति चिन्तेन्तस्स लाभ-मच्छरियं होति। यो पन सद्धादेय्यं विनिपातेति, अपरिभोगदुप्परिभोगादिवसेन विनासेति, पूतिभावं गच्छन्तं पि अञ्ञस्स न देति, तं दिस्वा 'सचे इमं एस न लभेय्य, अञ्ञो सीलवा लभेय्य, परिभोगं गच्छेय्या' ति चिन्तेन्तस्स मच्छरियं नाम नत्थि। **वण्णो** नाम सरीरवण्णो पि गुणवण्णो पि। तत्थ सरीरवण्ण-मच्छरिपुग्गलो 'परो पासादिको रूपवा'ति वुत्ते तं न कथेतुकामो होति। गुणवण्ण-मच्छरी सीलेन धुतङ्गेन पटिपदाय आचारेन वण्णं न कथेतुकामो होति।

धम्मो ति परियत्तिधम्मो च पटिवेधधम्मो च। तत्थ अरियसावका पटिवेध-धम्मं न मच्छरायन्ति, अत्तना पटिविद्धधम्मे सदेवकस्स लोकस्स पटिवेधं इच्छन्ति। तं पन पटिवेधं 'परे जानन्तू'ति इच्छन्ति। तन्तिधम्मे येव पन धम्ममच्छरियं नाम होति। तेन समन्नागतो पुग्गलो यं गूळ्हं गन्थं वा कथामग्गं वा जानाति तं अञ्ञं न जानापेतुकामो होति। यो पन पुग्गलं उपपरिक्खित्वा धम्मानुग्गहेन, धम्मं वा

अनगारिकं[1] दिस्वा, निस्साया ति पदं उप्पन्नं इति पदे विसेसनं। तं ति पब्बजितं।

वत्थुतो ति पदं •दस्सनत्थं ति पदे ततियाविसेसनं। तत्था ति आवासमच्छरियं ति आदिवचने विनिच्छयो। तेसू ति आरामादीसु। तत्था ति आवासे। तत्था ति कुले।

सो ही ति आदि दळ्हीकरणं। हि सच्चं, सो पापपुग्गलो, तेसं कुसलानं[2] करोति। तत्था ति कुले। तं ति लाभं। लभन्ते येवा ति पदं चिन्तेन्तस्सा ति पदे लक्खणक्रिया। यो पन भिक्खु। तं भिक्खुं। इमं लाभं। एसो भिक्खु। तत्था ति सरीरवण्ण-गुणवण्णेसु, मच्छरिय-पुग्गलो ति[3] पदे कत्ता। तं ति सरीरवण्णं। गुणवण्णमच्छरी होतीति सम्बन्धो।

तत्था ति परियत्तिपटिवेधधम्मेसु। अत्तना ति आदिना मच्छरायन्तीति पदस्स

---

१. अनागारिकं–सी०। २. कुलानं–सी०। ३. ०पदं होतीति–सी०।

उपपरिक्खित्वा पुग्गलानुग्गहेन न देति, अयं धम्ममच्छरी नाम न होति। तत्थ एकच्चो पुग्गलो लोलो होति, कालेन समणो होति, कालेन ब्राह्मणो, कालेन निगण्ठो। यो हि भिक्खु 'अयं पुग्गलो पवेणि-आगतं तन्तिं सण्हं सुखुमं धम्मुत्तरं भिन्दित्वा आलुळिस्सती' ति न देति, अयं पुग्गलं उपपरिक्खित्वा धम्मानुग्गहेन न देति नाम। यो पन 'अयं धम्मो सण्हो सुखुमो, सचायं पुग्गलो गण्हिस्सति अञ्ञं ब्याकरित्वा अत्तानं आविकत्वा नस्सिस्सती' ति न देति, अयं धम्मं उपपरिक्खित्वा पुग्गलानुग्गहेन न देति नाम। यो पन 'सचायं इमं धम्मं गण्हिस्सति, अम्हाकं समयं भिन्दितुं समत्थो भविस्सती' ति न देति, अयं धम्ममच्छरी नाम होति।

इमेसु पञ्चसु मच्छरियेसु आवासमच्छरियेन ताव यक्खो वा पेतो वा हुत्वा तस्सेव आवासस्स संकारं सीसेन उक्खिपित्वा विचरति। कुलमच्छरियेन तस्मिं कुले अञ्ञेसं दानमाननादीनि करोन्ते दिस्वा 'भिन्नं वतिदं कुलं ममा' ति चिन्तयतो लोहितं मुखतो उग्गच्छति, कुच्छिविरेचनं पि होति, अन्तानी पि खण्डखण्डानि हुत्वा निक्खमन्ति। लाभमच्छरियेन संघस्स वा गणस्स वा सन्तके लाभे मच्छरायित्वा पुग्गलिकपरिभोगं विय परिभुञ्जित्वा यक्खो वा पेतो वा महा-अजगरो वा हुत्वा निब्बत्तति। सरीरवण्ण-गुणवण्णमच्छरेन पन परियत्तिधम्ममच्छरियेन च अत्तनो वण्णं वण्णेति, परेसं वण्णे 'किं-वण्णो एसो' ति दोसं वदन्तो परियत्तिं च कस्सचि किञ्चि अदेन्तो दुब्बण्णो चेव एळमूगो च होति।

अपि च आवासमच्छरियेन लोहगेहे पच्चति। कुलमच्छरियेन अप्पलाभो होति। लाभमच्छरियेन गूथनिरये निब्बत्तति। वण्णमच्छरियेन भवे भवे निब्बत्तस्स वण्णो नाम न होति। धम्ममच्छरियेन कुक्कुलनिरये निब्बत्तति।

मच्छरायनवसेन **मच्छेरं**। मच्छरायनाकारो **मच्छरायना**। मच्छरेन आयितस्स मच्छेरसमङ्गिनो भावो **मच्छरायितत्तं**। 'मय्हेव होन्तु मा अञ्ञस्सा' ति सब्बा पि

अधिप्पायो। तेना ति धम्ममच्छरियेन समन्नागतो। तं ति गुळगन्थादिकं। यो पन पुग्गलो पुग्गलं उपपरिक्खित्वा धम्मानुग्गहेन धम्मस्स अनुग्गहेन (म०-२०३) उपत्थम्भनेन न देति। तत्था ति द्वीसु पुग्गलेसु। यो हीति हिसद्दो विसेसत्थो। इति चिन्तेत्वा न देति। अञ्ञं ति[1] अरहत्तफलं।

भिन्नं वतिदं ति भिन्नं वत इदं कुलं। वण्णेति (२३८-सी०) पदं दोसं ति पदे आधारो। एसो जनो किंवण्णो ति वत्वा[2] तं तं दोसं वदन्तो जनो। को वण्णो अस्सा ति किंवण्णो।

मय्हेव होन्तु सम्पत्तियो अञ्ञस्स मा होन्तु। तेन हीति हि सच्चं, तेन थद्धमच्छरियेन।

---

१. अञ्ञा ति-म०। २. कत्वा-सी०। ३. अरियेन कुच्छितब्बो ति-सी०।

अत्तनो सम्पत्तियो ब्यापेतुं न इच्छती ति विविच्छो। विविच्छस्स भावो **वेविच्छं**, मुदुमच्छरियस्सेतं नामं। कदरियो वुच्चति अनादरो। तस्स भावो **कदरियं**। थद्ध-मच्छरियस्सेतं नामं। तेन हि समन्नागतो पुग्गलो परं पि परेसं ददमानं निवारेति। वुत्तं पि चेतं—

कदरियो पापसंकप्पो मिच्छादिट्ठि अनादरो।
ददमानं निवारेति याचमानान भोजनं [सं० १.९५] ति।

याचके दिस्वा कटुकभावेन चित्तं अञ्चति संकोचेती ति कटुकञ्चुको। तस्स भावो **कटुकञ्चुकता**। अपरो नयो—**कटुकञ्चुकता** वुच्चति कटच्छुगाहो। समतित्तिकपुण्णाय हि उक्खलिया भत्तं गण्हन्तो सब्बतो-भागेन संकुटितेन अग्गकटच्छुना गण्हाति, पूरेत्वा गहेतुं न सक्कोति; एवं मच्छरिपुग्गलस्स चित्तं संकुचति। तस्मि संकुचिते कायो पि तथेव संकुचति, पटिकुटति, पटिनिवत्तति, न सम्पसारियती ति मच्छेरं 'कटुकञ्चुकता' ति वुत्तं।

अग्गहितत्तं चित्तस्सा ति परेसं उपकारकरणे दानादिनाकारेन यथा न सम्पसारियति, एवं आवरित्वा गहितभावो चित्तस्स। यस्मा पन मच्छरी पुग्गलो अत्तनो सन्तकं परेसं अदातुकामो होति परसन्तकं गण्हितुकामो, तस्मा 'इदं अच्छरियं मय्हमेव होतु, मा अञ्ञसा'ति पवत्तिवसेन'स्स अत्तसम्पत्तिनिगूहनलक्खणता परसम्पत्तिगहणलक्खणता वा वेदितब्बा। सेसं इमस्मिं गोच्छके उत्तानत्थमेव।

इमानि पन संयोजनानि किलेसपटिपाटिया पि आहरितुं वट्टति मग्गपटिपाटिया पि। किलेसपटिपाटिया कामरागपटिघसंयोजनानि अनागामिमग्गेन पहीयन्ति, मानसंयोजनं अरहत्तमग्गेन, दिट्ठिविचिकिच्छासीलब्बतपरामासा सोतापत्तिमग्गेन, भवरागसंयोजनं अरहत्तमग्गेन, इस्सामच्छरियानि सोतापत्तिमग्गेन, अविज्जा अरहत्तमग्गेन। मग्गपटिपाटिया दिट्ठिविचिकिच्छासीलब्बतपरामासा इस्सामच्छरियानि सोतापत्तिमग्गेन पहीयन्ति, कामरागपटिघा अनागामिमग्गेन, मानभवराग-अविज्जा अरहत्तमग्गेना ति।

कुच्छितब्बो ति[3] कदरियो। पापो लामको सङ्कप्पो अस्सा ति पापसङ्कप्पो। मिच्छा पस्सतीति मिच्छादिट्ठि। आदरतो रहितो अनादरो। याचमानानं जनानं भोजनं ददमानं निवारेति। भोजनं ति पदं ददमानं ति पदे कम्मं। याचमानानं ति वत्तब्बे निग्गहितलोपं कत्वा याचमानान-भोजनं ति वुत्तं।

समतित्थिकाय[1] पुण्णो[2] समतित्थिकपुण्णो[3]। उपकरणे[4] ति पदं न सम्पसारियतीति पदे आधारो। इदं मच्छरियं ति मच्छरायितब्बं आवासादि।

पवत्तिवसेनस्सा ति पवत्तिवसेन अस्स मच्छरियस्स।

किलेस....प०.... याति पहीयन्ती ति पदे ततियाविसेसनं। मानभव[5]....प०.... मग्गेन पहीयन्ति। इतीति समापनं।

---

१. समतित्तिकाय–सी०। २. पुण्णा–सी०। ३. ०पुण्णा–सी०। ४. उपकारकरणे ति–सी०। ५. मानसं–सी०।

गन्थगोच्छके [ध० २५४-२५७] नामकायं गन्थेति, चुतिपटिसन्धिवसेन वट्टस्मिं घट्टेती ति **कायगन्थो**। सब्बञ्ञुभासितं पटिक्खिपित्वा **सस्सतो लोको इदमेव सच्चं मोघमञ्ञं** ति इमिना आकारेन अभिनिविसती ति **इदं-सच्चाभिनिवेसो**। यस्मा पन अभिज्झा-कामरागानं विसेसो अत्थि, तस्मा अभिज्झाकायगन्थस्स पदभाजने "यो कामेसु कामच्छन्दो कामरागो" [ध० २६७] ति अवत्वा **यो रागो सारागो** [ध० २५४] ति आदि वुत्तं। इमिना यं हेट्ठा वुत्तं 'ब्रह्मानं विमानादीसु छन्दरागो कामासवो नाम न होति, गन्थगोच्छकं पत्वा अभिज्झा कायगन्थो होती' ति तं सु-वुत्तं ति वेदितब्बं। परतो किलेसगोच्छके [ध० २७०-२७६] पि एसेव नयो। **ठपेत्वा सीलब्बतपरामासं** [ध० २५६] ति इदं यस्मा सीलब्बतपरामासो 'इदमेव सच्चं' ति आदिना आकारेन नाभिनिविसति, 'सीलेन सुद्धी' ति आदिना एव पन अभिनिविसति, तस्मा मिच्छादिट्ठिभूतं पि तं पटिक्खिपन्तो 'ठपेत्वा' ति आह।

नीवरणगोच्छकस्स थीनमिद्धनिद्देसे [ध० २५९] **चित्तस्स अकल्यता** [ध० २५९] ति चित्तस्स गिलानभावो। गिलानो हि अकल्यको ति वुच्चति। **विनये** पि वुत्तं—"नाहं भन्ते अकल्यको" ति [विन० ३ : ७७]। **अकम्मञ्ञता** ति चित्तगेलञ्ञ-संखातो व अकम्मञ्ञताकारो। **ओलीयना** ति ओलीयनाकारो। इरियापथिकचित्तं हि इरियापथं सन्धारेतुं असक्कोन्तं, रुक्खे वग्गुली विय, खीले लग्गितफाणितवारको विय च, ओलीयति। तस्स तं आकारं सन्धाय ओलीयना ति वुत्तं। दुतियपदं उप-सग्गवसेन वड्ढितं। **लीनं** ति अविप्फारिकताय पटिकुटितं। इतरे द्वे आकारभाव-निद्देसा। **थीनं** ति सप्पिपिण्डो विय अविप्फारिकताय घनभावेन ठितं। **थीयना** ति आकारनिद्देसो। थीयितभावो थीयितत्तं, अविप्फारवसेनेव थद्धता ति अत्थो।

गन्थगोच्छके विनिच्छयो वेदितब्बो। नामकायं ति खन्धत्तयनामकायं[1]। घट्टेति[2] पदं गन्थेन्तीति पदस्स अत्थविवरणं। सब्बञ्ञु-भासितम्पि ति अपिसद्दो सम्भावनत्थो। तस्मा ति पदं अवत्वा ति पदे हेतु। ब्रह्मानं···प०····होतीति यं वचनं हेट्ठा मया वुत्तं, तं वचनं इमिना यो रागो ति आदिना वचनेन सुवुत्तं। इति सन्निट्ठानं वेदितब्बं पण्डितेना ति योजना। थपेत्वा····प०····इदं वचनं आहा ति पदे कम्मं। सीलब्बतपरामासो ति पदं नाभिनिविसति अभिनिविसतीति पदद्वये कत्ता। नाभि····प०····सतीति दळ्हं न गण्हाति। तं ति सीलब्ब-तपरामासं थपेत्वा आकारो[3]।

इरियपथं[4] जनेतीति इरियापथिकं। इरियापथिकञ्च तं चित्तञ्चा ति इरियापथिक-चित्तं। ओलीयतीति पदे कत्ता। चसद्दो रुक्खे वग्गुलिविय च खिले····प०····वारको विय चा ति योजेतब्बो। तस्सा ति चित्तस्स।

---

१. खन्धसंखातं नामकायं–सी०। २. घट्टेतीति–सी०। ३. नत्थि–सी०।
४. इरियापथं–सी०।

कायस्सा [ध० २५९] ति खन्धत्तयसंखातस्स नामकायस्स । **अकल्यता अकम्मञ्ञता** ति हेट्ठा वुत्तनयेनेव । मेघो विय आकासं कायं ओनय्हती ति **ओनाहो ।** सब्बतो-भागेन ओनाहो **परियोनाहो ।** अब्भन्तरे समोरुन्धती ति **अन्तोसमोरोधो ।** यथा हि नगरे रुन्धित्वा गहिते मनुस्सा बहि निक्खमितुं न लभन्ति, एवं मिद्धेन समोरुद्धा धम्मा विप्फारवसेन निक्खमितुं न लभन्ति । तस्मा अन्तोसमोरोधो ति वुत्तं । मेधती ति **मिद्धं**; अकम्मञ्ञभावेन विहिंसती ति अत्थो । सुपन्ति तेना ति **सोप्पं ।** अक्खिदलादीनं पचलभावं करोती ति **पचलायिका ।** सुपना सुपितत्तं ति आकारभावनिद्देसा । यं पन तेसं पुरतो 'सोप्प'-पदं तस्स पुनवचने कारणं वुत्तमेव ।

इदं वुच्चति थीनमिद्धनीवरणं ति इदं थीनं च मिद्धं च एकतो कत्वा आवरणट्ठेन थीनमिद्धनीवरणं ति वुच्चति । यं येभुय्येन सेक्खपुथुज्जनानं निद्दाय पुब्बभाग-अपरभागेसु उप्पज्जति तं अरहत्तमग्गेन समुच्छिज्जति । खीणासवानं पन करजकायस्स दुब्बलभावेन भवङ्गोतरणं होति, तस्मिं असम्मिस्से वत्तमाने ते सुपन्ति, सा नेसं निद्दा नाम होति । तेनाह भगवा—"अभिजानामि खो अहं अग्गिवेस्सन, गिम्हानं पच्छिमे मासे चतुग्गुणं संघाटिं पञ्ञापेत्वा दक्खिणेन पस्सेन सम्पजानो निद्दं ओक्कमिता" [म० १.३०७] ति । एवरूपो पनायं करजकायस्स दुब्बलभावो न मग्गवज्झो, उपादिन्नके पि अनुपादिन्नके पि लब्भति । उपादिन्नके लब्भमानो यदा खीणासवो दीघमग्गं गतो होति, अञ्ञतरं वा पन कम्मं कत्वा किलन्तो, एवरूपे काले लब्भति । अनुपादिन्नके लब्भमानो पण्णपुप्फेसु लब्भति । एकच्चानं हि रुक्खानं पण्णानि सुरियातपेन पसारियन्ति रत्तिं पटिकुटन्ति, पदुमपुप्फादीनि सुरियातपेन पुप्फन्ति, रत्तिं पुन पटिकुटन्ति । इदं पन मिद्धं अकुसलत्ता खीणासवानं न होती ति ।

तत्थ सिया—'न मिद्धं अकुसलं । कस्मा ? रूपत्ता । रूपं हि अब्याकतं । इदं

अब्भन्तरे चित्ते समोरुन्धति सं ओरुन्धति निवारेति[1] । वुत्तमत्थं उपमाय साधेन्तो आह—यथा हीति आदि । सुपन्ति[2] तेन धम्मजातेन इति तस्मा तं धम्मजातं सोप्पं । तेसं आकारभावनिद्देसपदानं[3] पुरतो । यं पन सोप्पपदं तस्स पदस्स कत्वा वुच्चतीति सम्बन्धो ।

यं थिनमिद्धं उप्पज्जति । (२३९-सी०) अरहत्तमग्गेन समुच्छिज्जति इदं थिनञ्च ····प०····वुच्चतीति सम्बन्धो । यं ति अनियमनं । इदं ति नियमनं, तं ति (म०–२०४) पि अत्थि, तं न युत्तं । करियति गब्भासये पक्खिपियतीति करो, सम्भवो । करतो जातो ति करजो । तस्मिं ति भवङ्गे । ते ति खीणासवा । सा नेसं खीणासवानं निद्दा नाम होति । अयं दुब्बलभावो, लब्भतीति पदे कम्मं । करजकायस्सा ति चतुसन्ततिरूपस्स । उपादिन्नके लब्भमानो दुब्बलभावो लब्भतीति सम्बन्धो । किलन्तो होति ।

तत्थ मिद्धाधिकारे, मिद्धं अकुसलं, तस्मा[4], रूपत्ता, रूपभावतो । हि सच्चं, रूपं

---

१. निवारेतं–म० । २. सत्ता सुप्पन्ति–सी० । ३. ०निद्देसे पदानं–सी० ।
४. कस्मा–सी० ।

च रूपं। तेनेवेत्थ 'कायस्स अकल्यता अकम्मञ्ञता'ति कायग्गहणं कतं ति।

'यदि कायस्सा'ति वुत्तमत्तेनेनेतं रूपं, कायपस्सद्धादयो पि धम्मा रूपमेव भवेय्युं। 'सुखं च कायेन पटिसंवेदेति' 'कायेन च परमत्थसच्चं सच्छिकरोती'ति रूपपटिसंवेदन-परमत्थसच्चसच्छिकरणानि पि रूपकायेनेव सियुं। तस्मा न वत्तब्बं एतं 'रूपं मिद्धं' ति। नामकायो हि एत्थ कायो नाम'।

'यदि नामकायो, अथ कस्मा 'सोप्पं पचलायिका' [ध० २५९] ति वुत्तं? न हि नामकायो सुपति, न पचलायती'ति।

'लिंगादीनि विय इन्द्रियस्स, तस्स फलत्ता। यथा हि 'इत्थिलिंगं इत्थिनिमित्तं इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पो'ति इमानि लिंगादीनि इत्थिन्द्रियस्स फलत्ता वुत्तानि, एवं इमस्सा पि नामकायगेलञ्ञसंखातस्स मिद्धस्स फलत्ता सोप्पादीनि वुत्तानि। मिद्धे हि सति तानि होन्ती ति। फलूपचारेन, मिद्धं अरूपं पि समानं 'सोप्पं पचलायिका सुपना सुपितत्तं' [ध० २५९] ति वुत्तं। 'अक्खिदलादीनं पचलभावं करोती ति पचलायिका' [अट्ठ० ५०७] ति वचनत्थेना पि चायं अत्थो साधितो येवा ति न रूपं मिद्धं। ओनाहादीहि पि च'स्स अरूपभावो दीपितो येव। न हि रूपं नामकायस्स 'ओनाहो परियोनाहो अन्तोसमोरोधो' होती'ति।

अब्याकतं इदञ्च मिद्धं रूपं, तेनेव कारणेन एत्थ थिनमिद्धनिद्देसे कायस्स····प०····इति एवं कायग्गहणं भगवता कतं इति चोदना सिया ति सम्बन्धो।

कायस्सा ति वुत्तमत्तेन[1] एतं मिद्धं यदि रूपं। काय····प०····भवेय्य[2]। सुखञ्च ····प०····सच्छिकरोति इति एवं सुखं····प०····सियुं। तस्मा कायस्सा ति वचनस्स रूपता असाधकत्ता एवं मिद्धं रूपं इति वचनं तया न वत्तब्बं। हि सच्चं, एत्थ कायस्सा ति वचने नामकायो कायो नाम।

नामकायो यदि कायो, अथ एवं सति सोप्पं····प०····इति वचनं भगवता कस्मा वुत्तं। हि सच्चं, नामकायो न सुपति[3]····प०····इति चोदना।

इन्द्रियस्स[4] इत्थिन्द्रियस्स[5] फलभूतानि[5] लिङ्गादीनि विय तस्स मिद्धस्स सोप्पादीनं फलत्ता सोप्पं पचलायिका ति वचनं भगवता वुत्तं ति सम्बन्धो। यथा हीति आदि वित्थारो। तानी ति सोप्पादीनि। इतीति तस्मा। फलूपचारेना ति पदे ततियाविसेसनं। मिद्धं ति पदं वुत्तं ति पदे कम्मं। वचनत्थेना पि चा ति अपिसद्दो फलूचारेना ति वचनं अपेक्खति। चसद्दो वाक्यारम्भो। अयमत्थो ति मिद्धस्स अरूपभावसङ्खातो अत्थो। ओनाहादि[6] च अत्थो[6] अस्स मिद्धस्स अरूपभावो भगवता दीपितो येव। न हीति आदि दळहीकरणं। नामकायस्सा ति पदं ओनाहो ति आदि पदे कम्मं।

---

१. वुत्तमग्गेन–सी०। २. भवेय्युं–सी०। ३. सुप्पति–सी०। ४. इत्थिन्द्रियस्स–सी०। ५-५. इत्थिन्द्रियफलभूतानि–सी०। ६-६. ओनाहादीहि च अत्थेहि–सी०।

'ननु च इमिना व कारणेनेतं रूपं ? न हि अरूपं कस्सचि ओनाहो, न परियोनाहो, न अन्तो-समोरोधो होती'ति।

'यदि एवं, आवरणं पि न भवेय्या। तस्मा न होति। यथा कामच्छन्दादयो अरूपधम्मा आवरणट्ठेन नीवरणा, एवं इमस्सा पि ओनाहादि-अत्थेन ओनाहादिता वेदितब्बा। अपि च "पञ्च नीवरणे पहाय चेतसो उपक्किलेसे पञ्ञाय दुब्बलीकरणे" [विभ० २९५, ३०८, सं० ५.१३७] ति वचनतो पेतं अरूपं। न हि रूपं चित्तुपक्किलेसो, न पञ्ञाय दुब्बलीकरणं होती'ति।

'कस्मा न होति ? ननु वुत्तं—"सन्ति भिक्खवे, एके समणब्राह्मणा सुरं पिवन्ति मेरयं, सुरामेरयपाना अप्पटिविरता, अयं भिक्खवे, पठमो समणब्राह्मणानं उपक्किलेसो" [अं० २.५६] ति ? अपरं पि वुत्तं "छ खो'मे गहपतिपुत्त, आदीनवा सुरामेरयमज्जपमादट्ठानानुयोगे—सन्दिट्ठिका धनजानि, कलहप्पवड्ढनी, रोगानं आयतनं, अकित्तिसञ्जननी, हिरिकोपीननिदंसनी, पञ्ञाय दुब्बलीकरणी त्वेव छट्ठं पदं भवती" [दी० ३.१४१] ति। पच्चक्खतो पि चेतं सिद्धमेव। यस्मा मज्जे उदरगते, चित्तं संकिलिस्सति, पञ्ञा दुब्बला होति, तस्मा मज्जं विय मिद्धं पि चित्तसंकिलेसो चेव पञ्ञाय दुब्बलीकरणं च सिया'ति।

इमिना च कारणेन ओनाहनादिना इमिना व[1] कारणेन एतं मिद्धं[2] ननु च रूपं। हि सच्चं, अरूपं कस्सचि धम्मस्स न ओनाहो, न छादनं, न अवत्थरणं वा....प०इति चोदना सिया।

यदि एवं ति रूपस्स[3] ओनाहनादिता[4] यदि सिद्धा, अरूपं यदि न सिया, आवरणम्पि अरूपस्स न भवेय्य[5]। पिसद्दो ओनाहनादिं (२४०—सी०) अपेक्खति। तस्मा ति पदं वेदितब्बो ति पदे हेतु। इमस्सा पि मिद्धस्स इति वचनतो पि एतं मिद्धं अरूपं। न हीति आदि दळहीकरणं। तस्मा होति....प०....सिया ति चोदना। रूपं चित्तुपक्किलेसो। पञ्ञादुब्बलकरञ्च[6]।

कस्मा न होति ? सन्ति भिक्खवे,....प०....उपक्किलेसो ति वचनं भगवता ननु वुत्तं। छ खो....प०....भवति इति अपरम्पि वचनं (म०—२०५) भगवता वुत्तं[7]। पच्चक्खतो पि च एतं[8] सिद्धमेव[9]। यथा किं मज्जे उदरगते....प०....दुब्बला होति, तस्मा मज्जं विय ....प०.... सिया ति चोदना सिया[10]। अपिसद्दो न केवलं भगवतो वचनेन एतं सिद्धं ति ञापेति। सुरामेरय....प०....योगे ति पदं आदीनवा ति पदे आधारो। धनजानीति[11] धनस्स हानि। आयतनं ति कारणं। अकित्तिसञ्जननीति अयसजननी। निदंसनीति पकासनी। पञ्ञाय दुब्बलीकरणी। इति एवं छट्ठं पदं कोट्ठासं भवति।

---

१. इमिना एव—सी०। २. ०नं०—सी०। ३. एवं रूपस्स—सी०। ४. ओनाहनादिना—सी०। ५. भवेय्य—म०। ६. दुब्बलकरणं च—सी०। ७. ननु वुत्तं—सी०। ८. एतं वचनं—सी०। ९. मिद्धमेव—सी०। १०. नत्थि—सी०। ११. धनञ्जानीति—सी०।

'न, पच्चयनिद्देसतो । यदि हि मज्जं संकिलेसो भवेय्य, सो "इमे पञ्च नीवरणे पहाय चेतसो उपक्किलेसे" ति वा, "एवमेव खो भिक्खवे, पञ्चिमे चित्तस्स उपक्किलेसा, येहि उपक्किलेसेहि उपक्किलिट्ठं चित्तं न चेव मुदु होति, न च कम्मनियं, न च पभस्सरं, न च पभंगु, न च सम्मा समाधियति आसवानं खयाय । कतमे पञ्च ? कामच्छन्दो भिक्खवे, चित्तस्स उपक्किलेसो" [सं० ५.८५, अं० २.२८६] ति वा, "कतमो च भिक्खवे, चित्तस्स उपक्किलेसो ? अभिज्झाविसमलोभो चित्तस्स उपक्किलेसो [तु० अं० २.७१]" ति वा—एवमादीसु उपक्किलेसनिद्देसेसु निद्देसं आगच्छेय्य । यस्मा पन तस्मिं पि ते किलेसा उप्पज्जन्ति ये चित्तसंकिलेसा चेव पञ्ञाय च दुब्बलीकरणा होन्ति, तस्मा तं तेसं पच्चयत्ता पच्चयनिद्देसतो एवं वुत्तं । मिद्धं पन सयमेव चित्तसंकिलेसो चेव पञ्ञाय दुब्बलीकरणं चा ति अरूपमेव मिद्धं । किं च भिय्यो ? सम्पयोगवचनतो । "थीनमिद्धनीवरणं अविज्जानीवरणेन नीवरणं चेव नीवरणसम्पयुत्तं चा [ध० २६१]" ति हि वुत्तं । तस्मा सम्पयोगवचनतो नयिदं रूपं । न हि रूपं 'सम्पयुत्त'-संखं लभती' ति ।

अथा पि सिया—'यथालाभवसेनेतं वुत्तं । यथा हि "सिप्पिकसम्बुकं पि सक्खरकठलं पि मच्छगुम्बं पि चरन्तं पि तिट्ठन्तं पी" [म० १.३४२] ति एवं एकतो कत्वा यथालाभवसेन वुत्तं । सक्खरकठलं हि तिट्ठति येव न चरति, इतरद्वयं तिट्ठति

न पच्चयनिद्देसतो ति उपक्किलेसपञ्ञा-दुब्बलीकरणानं पच्चयभावनिद्देसतो मज्जं संकिलेसो न होति । यदि हीति आदि दळ्हीकरणं । सो[1] मज्जसङ्खातो, संकिलेसो, आगच्छेय्या ति पदे कत्ता । इति वा ति पदं आदीसू ति पदस्स सरूपनिदस्सनं । पभं गच्छतीति पभङ्गु[2] । उपक्किलेसनिद्देसेसू ति उपक्किलेसानं निद्देसेसु । मज्जस्स उपक्किलेसो ति वचने हेतुं ञापेन्तो यस्मा ति आदिमाह । तस्मिं मज्जे जनेन पीते ये चित्तुपक्किलेसा[3] चेव पञ्ञाय च[4] ये[4] दुब्बलीकरणा होन्ति, उपक्किलेसा यस्मा पन उप्पज्जन्ति, तस्मा तेसं उपक्किलेसानं पच्चयत्ता पच्चयभावतो । पच्चयनिद्देसतो उपक्किलेसो ति एतं मज्जं भगवता वुत्तं ति सम्बन्धो । पच्चयतो[5] हि[5] पदं निद्देसतो ति पदे हेतु । मिद्धं पन किंभूतं ति आह—मिद्धं पना ति आदि । किञ्चि वचनं हेट्ठा वुत्तवचनतो भिय्यो वत्तब्बं अत्थि । सम्पयोगवचनतो सम्पयोगस्स वचनतो मिद्धं न रूपं ति सम्बन्धो । थिनमिद्धं[6] ति आदि वित्थारो । तस्मा ति पदं सम्पयोगवचनतो ति पदे तुल्याधिकरणं । नयिदं ति इदं मिद्धं न रूपं । न हीति आदि दळ्हीकरणं । हि सच्चं, रूपं[7] सम्पयुत्तगणनं[7] न लभति । इतिसद्दो परिसमापनत्थो ।

यथा....प०....रूपमेव मिद्धं ति चोदना । अथा पि यदि पि[8] सिया ति योजना । यथालाभवसेन एतं (२४१–सी०) थिनमिद्धनीवरणं ति आदिवचनं भगवता वुत्तं । यथालाभवसेन

---

१. सो ति–सी० । २. पभङ्गं–म० । ३. चित्तसंकिलेसा–सी० । ४-४. नत्थि –सी० । ५-५. पच्चयत्ता ति–सी० । ६. थिनमिद्धा–सी० । ७-७. रूपसम्पयुत्तसंख्यं सम्पयुत्तगणनं–सी० । ८. च–सी० ।

पि चरति पि। एवं इधा पि मिद्धं नीवरणमेव, न सम्पयुत्तं, थीनं नीवरणं पि सम्पयुत्तं पी ति सब्बं एकतो कत्वा यथालाभवसेन "नीवरणं चेव नीवरणसम्पयुत्तं चा" [§११७०] ति वुत्तं। मिद्धं पन यथा सक्खरकठलं तिट्ठतेव न चरति, एवं नीवरणमेव, न सम्पयुत्तं। तस्मा रूपमेव मिद्धं' ति।

'न, रूपभावासिद्धितो। सक्खरकठलं हि न चरती ति विना पि सुत्तेन सिद्धं। तस्मा तत्थ यथालाभवसेन'त्थो होतु। मिद्धं पन रूपं ति असिद्धमेतं। न सक्का तस्स इमिना सुत्तेन रूपभावो साधेतुं ति मिद्धस्स रूपभावासिद्धितो न इदं यथालाभवसेन वुत्तं ति अरूपमेव मिद्धं। किं च भिय्यो ? 'चत्तत्ता'ति आदिवचनतो। विभंगस्मि हि "विगतथीनमिद्धो ति तस्स थीनमिद्धस्स चत्तत्ता वन्तत्ता मुत्तत्ता पहीनत्ता पटिनिस्सट्ठत्ता, तेन वुच्चति विगतथीनमिद्धो" [विभ० ३०५] ति च, "इदं चित्तं इमम्हा थीनमिद्धा सीधेति विसोधेति परिसोधेति मोचेति विमोचेति परिमोचेति, तेन वुच्चति थीनमिद्धा चित्तं परिसोधेति" [विभ० ३०६] चा ति—एवं 'चत्तत्ता' ति आदि वुत्तं। न च 'रूपं' एवं वुच्चति, तस्मा पि अरूपमेव मिद्धं' ति।

'न, चित्तजस्सासम्भववचनतो। तिविधं हि मिद्धं—चित्तजं उतुजं आहारजं

वुत्तं वचनं उपमाय साधेन्तो आह-यथा हीति आदि। सप्पति गच्छतीति सिप्पिका जलजन्तुविसेसो। 'सप्प'-गमने। किङ्कणिकादयो (मो०२२ण्वु०) ति सुत्तेन णिको। अस्स इत्तं। सम्बति उदकं मण्डेतीति सम्बुको। 'सम्ब'-मण्डले। ऊकादयो (मो० १५ण्वु०) ति सुत्तेन को। अस्स उत्तं। सिप्पिका च सम्बुको चा ति सिप्पिकम्बुकं। तिट्ठन्तम्पि इति वचनं पण्डितेन वुत्तं। इधा पी ति थिनमिद्धनीवरणं ति आदिवचने। इति तस्मा सब्बं थिनमिद्धं एकतो कत्वा वुत्तं। मिद्धं पन नीवरणमेंव न सम्पयुत्तं-ति सम्बन्धो।

न रूपभावासिद्धितो ति (म०–२०६) नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्चा ति वचनं यथालाभवसेन भगवता न वुत्तं। मिद्धस्स रूपभावेन असिद्धितो रूपभावेन असिद्धभावं ञापेन्तो आह—सक्खरा ति आदि। हि सच्चं, सक्खरकथलं न चरति। इति वचनं सुत्तेन विनापि सिद्धं, तस्मा तत्थ सक्खरकथलम्पीति आदिवचने यथा····प०····अत्थो होतु मिद्धं पन रूपं इति एतं वचनं असिद्धं इति पि अत्थि इति तस्मा तञ्चा पि मिद्धस्स रूपभावासिद्धितो ति पदं वुत्तं ति पदे हेतु। इदं ति नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्चा ति इति वचनं यथा ····प०····न वुत्तं इति तस्मा मिद्धं अरूपमेवा ति सम्बन्धो। विना पी ति अपिसद्दो सहा पी ति अत्थं अपेक्खति। चत्तत्ता ति[1] आदिवचनतो मिद्धं अरूपमेवा ति सम्बन्धो। विभङ्गस्मि हीति आदिवित्थारो। विभङ्गस्मि ति पदं वुत्तं ति पदे आधारो। रूपं एवं चत्तत्ता ति[2] आदिना भगवता न च वुच्चति, तस्मा मिद्धं अरूपमेंव। तस्मा पी ति अपिसद्दो रूपभावासिद्धितो ति वुत्तं हेतुं अपेक्खति।

न चित्त····प०····रूपमेंव सिद्धं[3] इति चोदना। चित्तस्स[4] असम्भववचनतो[4] चत्तत्ता

---

१. वुत्तत्ता ति–सी०। २. वुत्तत्ता ति–सी०। ३. पदं–सी०। ४-४ चित्तजस्सासम्भव०–सी०।

च। तस्मा यं तत्थ चित्तजं तस्स विभंगे झानचित्तेहि असम्भवो वुत्तो, न अरूपभावो साधितो ति रूपमेव मिद्धं ति।

'न, रूपभावासिद्धितो व। मिद्धस्स हि रूपभावे सिद्धे सक्का एतं लद्धुं। तत्थ चित्तजस्स असम्भवो वुत्तो। सो एव च न सिज्झती ति अरूपमेव मिद्धं। किं च भिय्यो? 'पहान'-वचनतो। भगवता हि "छ भिक्खवे, धम्मे पहाय भब्बो पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरितुं; कतमे छ? कामच्छन्दं, ब्यापादं, थीनमिद्धं, उद्धच्चं, कुक्कुच्चं, विचिकिच्छं; कामेसु खो पन'स्स आदीनवो सम्मप्पञ्ञाय सुदिट्ठो होती" [अं० ३.१३०] ति च, "इमे पञ्च नीवरणे पहाय बलवतिया पञ्ञाय अत्तत्थं वा परत्थं वा ञस्सती" [अं० २ : ३२८] ति आदीसु च मिद्धस्सा पि पहानं वुत्तं। न च रूपं पहातब्बं। यथाह—"रूपखन्धो अभिञ्ञेय्यो, परिञ्ञेय्यो, न पहातब्बो, न भावेतब्बो" [तु० सं० २-३ : २६२] ति इमस्सा पि 'पहान'-वचनतो अरूपमेव मिद्धं'।

'न, रूपस्सा पि पहानवचनतो। "रूपं भिक्खवे, न तुम्हाकं, तं पजहथा" [सं० २-३ : २६७] ति। एत्थ हि रूपस्सा पि पहानं वुत्तमेव। तस्मा अकारणमेतं'ति।

ति[1] आदिवचनस्स झानक्खणे चित्तजस्स थिनमिद्धस्स असम्भववचनतो चत्तत्ता ति[2] आदिवचनेन वा असम्भवनस्स वचनतो पकासनतो न[3] अरूपं मिद्धं ति सम्बन्धो। यं तत्था ति तस्मि तिविधे मिद्धे चित्तजं यं मिद्धं तस्स मिद्धस्स न रूपा ति आदिपरिहारो।

रूपभावेन असिद्धितो व मिद्धं रूपं न[4]....प०[4]....एवं। मिद्धस्स हीति आदि दळ्हीकरणं। एतं ति तत्थ[5] चित्तजमिद्धस्स असम्भवो वुत्तो ति वचनं लद्धुं सक्का। तत्थ विभङ्गे चित्तजस्स रूपस्स असम्भवो भगवता वुत्तो। सो (२४२—सी०) एव च मिद्धस्स रूपभावो न सिज्झति। इति तस्मा मिद्धं अरूपमेवा ति सम्बन्धो। एवञ्चा ति चसद्दो वाक्यारम्भे[6]। पहानवचनतो[7] मिद्धं अरूपमेव। भगवता हीति आदि दळ्हीकरणं। भगवता ति पदं वुत्तं ति पदे कत्ता। अस्सा ति अनेन पुग्गलेन। दिट्ठो ति पदे कत्ता। अत्तत्थं वा अत्तनो अत्थं ञायति[8] जानियति[9]। आदीसु चा ति चसद्दो ञायति चा ति योजेतब्बो। मिद्धस्सा पी ति अपिसद्दो कामच्छन्दादयो अपेक्खति। रूपस्स पहातब्बभावं पाळिया साधेन्तो आह—तथाहा ति आदि। इमस्सा मिद्धस्स। अपिसद्दो कामच्छन्दादयो अपेक्खति[10]।

इति एत्थ वचने। हिसद्दो दळ्हीयकरणं[11]। एतं मिद्धं अरूपं ति वचनं अकारणं अयुत्तं।

---

१. चित्तत्ता—सी०। २. वुत्तत्ता ति—सी०। ३. नत्थि—सी०। ४-४ नत्थि—सी०। ५. कत्थ—म०। ६. ०रम्भो—सी०। ७. ....प०....हानो वचनतो—म०। ८. ञस्सति —सी०। ९. जानिस्सति—सी०। १०. ०पहानवचनतो पीति अपिसद्दो सम्पयोगादिवचनतो ति आदिवुत्तहेतुं अपेक्खति। न रूपस्सा पि....प....एतं ति चोदना। रूपस्सा पि....प....न तो मिद्धं अरूपं, न अपिसद्दो अरूपं अपेक्खति। —इच्चेसो सी० पोत्थके अधिको पाठो। ११. दळ्हीकरणं—सी०।

'न, अञ्ञथा वुत्तत्ता। तस्मिं हि सुत्ते "यो भिक्खवे, रूपे छन्दरागविनयो तं तत्थ पहानं" [तु० सं० ३ : २६३] ति एवं छन्दरागप्पहानवसेन रूपस्स पहानं वुत्तं, न यथा "छ धम्मे अप्पहाय पञ्च नीवरणे पहाया" [तु० अं० २ : ३२८] ति एवं पहातब्बमेव वुत्तं ति, अञ्ञथा वुत्तत्ता, न रूपं मिद्धं। तस्मा यानेतानि "सो इमे पञ्च नीवरणे पहाय चेतसो उपक्किलेसे" [विभ० २९५, ३०८] ति आदीनि सुत्तानि वुत्तानि, एतेहि चेव अञ्ञेहि च सुत्तेहि अरूपमेव मिद्धं ति वेदितब्बं। तथा हि—"पञ्चिमे भिक्खवे, आवरणा नीवरणा चेतसो अज्झारूळ्हा पञ्ञाय दुब्बलीकरणा। कतमे पञ्च? कामच्छन्दो भिक्खवे,.....प०.....थीनमिद्धं भिक्खवे, आवरणं नीवरणं चेतसो अज्झारूळ्हं पञ्ञाय दुब्बलीकरणं" [अं० २:३२८, सं० ४ : ८८] ति च, "थीनमिद्धं नीवरणं भिक्खवे, अन्धकरणं अचक्खुकरणं अञ्ञाणकरणं पञ्ञानिरोधिकं विघातपक्खिकं अनिब्बानसंवत्तनिकं" [तु०-म० १ : १५३] ति च, "एवमेव खो ब्राह्मण, यस्मिं समये थीनमिद्धपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति थीनमिद्धपरेतेना" [अं० २ : ४७४] ति च, अयोनिसो भिक्खवे, मनसिकरोतो अनुप्पन्नो चेव कामच्छन्दो उप्पज्जति.....प०.....अनुप्पन्नं चेव थीनमिद्धं उप्पज्जती" [सं० ४:६८] ति च, "केवलो हायं भिक्खवे, अकुसलरासि यदिदं पञ्च नीवरणानी" [तु०अं० २ : ३२९] ति च—एवमादीनि च अनेकानि एतस्स अरूपभावजोतनकानेव सुत्तानि वुत्तानि। यस्मा चेतं अरूपं तस्मा आरुप्पे पि उप्पज्जति। वुत्तं हेतं महापकरणपट्ठाने—"नीवरणं धम्मं पटिच्च नीवरणो धम्मो उप्पज्जति, न पुरेजातपच्चया" [पट्ठाने ३ : ३०२] ति एतस्स विभंगे "आरुप्पे कामच्छन्दनीवरणं

न अञ्ञथा ति आदि परिहारो। अञ्ञथा छन्दरागप्पहानसङ्खातेन पहानेन[1] रूपप्पहानस्स वुत्तत्ता न मिद्धं रूपं। तस्मिं हीति आदि दळ्हीकरणं। तस्मिं सुत्ते ति पदं (म०–२०७) वुत्तं ति पदे आधारो। यो छन्दरागविनयो छन्दरागस्स विनयो। तत्थ रूपे। तं पहानं। तं विनयं। तत्थ रूपे। तं पहानं। न यथा ति यथा छ धम्मे.....प०..... पहाय[2] इति एवं छ धम्मा पञ्च नीवरणानि च पहातब्बानेव होन्तानि[3] पहातब्बानीति वुत्तानि, एवरूपं पहातब्बमेव होतु पहातब्बं ति न वुत्तं। इति तस्मा अञ्ञथा वुत्तत्ता न मिद्धं रूपं ति सम्बन्धो। अथवा—यथा छ धम्मा पहाया ति पहातब्बधम्मा वुत्ता, एवं पहातब्बमेव रूपं न वुत्तं रूपं[4] भगवता इति तस्मा अञ्ञथा वुत्तत्ता न मिद्धं रूपं ति सम्बन्धो। तस्मा ति[5] पदं वेदितब्बं ति पदे हेतु। यानेतानि[6] सुत्तानि चेतसो[7] अज्झारोहो[8] ति[9] चित्तं अभिभवन्ता हुत्वा आरोहन्ता[10]। पञ्ञानिरोधिकं ति पञ्ञाय निरोधकरणं। विघातपक्खिकं[11] विघातस्स संसारदुक्खस्स जनकपक्खे भवं। थिनमिद्धपरेतेना ति थिनमिद्धपरिवारितेन। केवलो हायं ति केवलो हि अयं अकुसलरासि। यदिदं ति ये इमे पञ्च नीवरणा। एतस्स ति मिद्धस्स, एतं ति मिद्धं। आरुप्पे पि मिद्धं उप्पज्जति।। (२४३-सी०) हि सच्चं, एतं नीवरण.....प०.....या ति

---

१. अञ्ञेन पकारेन –सी०। २. पहायं–म०। ३. होन्ति तानि–सी०। ४. नत्थि –सी०। ५. कस्मा–म०। ६. ०यानि एतानि–सी०। ७. चेततो–म०। ८. अज्झाचारो –सी०। ९. होति–सी०। १०. आरोहन्ता–सी०। ११. विघाट०–सी०।

पटिच्च थीनमिद्धं·····उद्धच्चं अविज्जानीवरणं" [पट्ठाने ३ : ३०२] ति सब्बं वित्थारेतब्बं। तस्मा सन्निट्ठानमेत्थ गन्तब्बं अरूपमेव मिद्धं'ति ।

कुक्कुच्चनिद्देसे [ध० २५९] **अकप्पिये कप्पियसञ्ञिता** ति आदीनि मूलतो कुक्कुच्चदस्सनत्थं वुत्तानि। एवं-सञ्ञिताय हि कते वीतिक्कमे, निट्ठिते वत्थु'ज्झाचारे, पुन सञ्जातसतिनो 'दुट्ठं मया कतं' ति एवं अनुतप्पमानस्स पच्छानुतापवसेनेतं उप्पज्जति। तेन तं मूलतो दस्सेतुं 'अकप्पिये कप्पियसञ्ञिता' ति आदि वुत्तं। तत्थ अकप्पियभोजनं कप्पियसञ्ञी हुत्वा परिभुञ्जति, अकप्पियमंसं कप्पियमंससञ्ञी हुत्वा, अच्छमंसं 'सूकरमंसं' ति, दीपिमंसं वा 'मिगमंसं' ति खादति; काले वीतिवत्ते कालसञ्ञाय, पवारेत्वा अप्पवारितसञ्ञाय, पत्तस्मिं रजे पतिते पटिग्गहितसञ्ञाय भुञ्जति— एवं 'अकप्पिये कप्पियसञ्ञिताय' वीतिक्कमं करोति नाम। सूकरमंसं च अच्छमंससञ्ञाय खादमानो, काले च विकालसञ्ञाय भुञ्जमानो 'कप्पिये अकप्पियसञ्ञिताय' वीतिक्कमं करोति नाम। अनवज्जं पन किञ्चिदेव वज्जसञ्ञिताय, वज्जं च अनवज्जसञ्ञिताय करोन्तो 'अनवज्जे वज्जसञ्ञिताय वज्जे अनवज्जसञ्ञिताय' वीतिक्कमं करोति नाम। यस्मा पनेतं "अकतं वत मे कल्याणं, अकतं कुसलं, अकतं भीरुत्ताणं, कतं पापं, कतं लुद्धं, कतं किब्बिसं" [अं० २ : १८५] ति एवं अनवज्जे वज्जसञ्ञिताय पि कते वीतिक्कमे उपज्जति, तस्मा'स्स अञ्ञं पि वत्थुं अनुजानन्तो **यं एवरूपं** [ध० २५९] ति आदिमाह।

तत्थ कुक्कुच्चपदं वुत्तत्थमेव। कुक्कुच्चायनाकारो **कुक्कुच्चायना**। कुक्कुच्चेन

वचनं[1]। महा·····प०·····ने[2] भगवता वुत्तं। एतस्स[3] वचनस्स विभङ्गे सब्बं वचनं पण्डितेन वित्थारेतब्बं, तस्मा एत्थ मिद्धनिद्देसे अरूपमेव मिद्धं ति सन्निट्ठानं पण्डितेन गन्तब्बं।

एवं सञ्ञिताय हीति आदि पाकटकरणं। निट्ठिते ति[4] उप्पज्जतीति पदे भावलक्खणं। वत्थुज्झाचारे ति वत्थुं अभिभवित्वा[5] आचारे, उप्पज्जतीति पदे आधारो। एतं ति कुक्कुच्चं। तेन तस्मा। नं कुक्कुच्चं। तत्था ति अकप्पिये कप्पियतादीसु[6], निद्धारणं। अकप्पियभोजनं परिभुञ्जति। अकप्पियमंसं ति अच्छमंसं[7] ति पदस्स विसेसनं[7]। सूकरमंसं ति सञ्ञाय अच्छमंसं खादति। काले वीतिवत्ते कालसञ्ञाय[8] भुञ्जति[9]। एतं ति कुक्कुच्चं, उप्पज्जतीति पदे कत्ता, भीरूनं पुग्गलानं ताणं[10] भिरुत्ताणं। एवं ति[11] उप्पज्जती ति पदे आधारो। अनवज्जसञ्ञिताय पी ति अपिसद्दो अकप्पियसञ्ञितादिं अपेक्खति। वीतिक्कमे ति आधारो। अस्सा ति[12] कुक्कुच्चस्स।

तत्था ति कुक्कुच्चं ति आदिपदेसु। कताकतस्सा ति पदं अभिमुख इति पदे कम्मं।

---

१. वचनतो–सी०। २. येन–सी०। ३. एतस्स–सी०। ४. ०पदं–सी०। ५. अधिभवित्वा–म०। ६. कप्पियसञ्ञितादोसु–सी०। ७-७. मच्छमंसं ति सञ्ञाय अकप्पियमंसं खादति–सी०। ८. कायसञ्ञाय–म०। ९. ०पवारेत्वा अपवारितसञ्ञाय भुञ्जति–सी०। १०. तानं–सी० सब्बत्थ। ११. ०पदं–सी०। १२. अस्सा ति–सी०।

अयितस्स भावो **कुक्कुच्चायितत्तं**। **चेतसो विप्पटिसारो** ति एत्थ कताकतस्स सावज्जानवज्जस्स वा अभिमुखगमनं 'विप्पटिसारो' नाम। यस्मा पन सो कतं वा पापं अकतं न करोति, अकतं वा कल्याणं कतं न करोति, तस्मा विरूपो कुच्छितो वा पटिसारो ति 'विप्पटिसारो'। सो पन चेतसो; न सत्तस्सा ति ञापनत्थं 'चेतसो' विप्पटिसारो ति वुत्तं। अयमस्स सभावनिद्देसो। उप्पज्जमानं पन कुक्कुच्चं आरग्गमिव कंसपत्तं मनं विलिखमानमेव उप्पज्जति, तस्मा **मनोविलेखो** ति वुत्तं। अयमस्स किच्चनिद्देसो। यं पन **विनये** "अथ खो आयस्मा सारिपुत्तो भगवता पटिक्खित्तं अनुवसित्वा आवसथपिण्डं परिभुञ्जितुं" [विन० ४ : १०२] ति कुक्कुच्चायन्तो न पटिग्गहेसी ति कुक्कुच्चं आगतं, न तं नीवरणं। न हि अरहतो 'दुट्ठु मया इदं कतं' ति एवं अनुतापो अत्थि। नीवरणपटिरूपकं पनेतं 'कप्पति न कप्पती' ति वीमंसनसंखातं **विनयकुक्कुच्चं** नाम।

"कतमे धम्मा नीवरणा चेव नीवरणसम्पयुत्ता चा,' [ध० २६१] ति पदस्स निद्देसे यस्मा थीनमिद्धं अञ्ञमञ्ञं न विजहति, तस्मा थीनमिद्धनीवरणं अविज्जानीवरणेन नीवरणं चेव नीवरणसम्पयुत्तं चा ति अभिन्दित्वा वुत्तं। यस्मा पन उद्धच्चे

कस्मा[1] पटिसारो विप्पटिसारो नामा ति आह—यस्मा ति[2] आदि। सो ति विप्पटिसारो, कतं[3] ति पदं पापं ति पदस्स विसेसनं। पापं ति पदं न करोतीति पदे पकतिकम्मं। अकतं ति पदं न करोतीति पदे विकतिकम्मं। अकतञ्चा ति पदं कल्याणं ति पदस्स विसेसनं। कल्याणं ति पदं न करोतीति पदे पकतिकम्मं। कतं ति पदं (२०८–म०) पन[4] करोतीति पदे विकतिकम्मं। सुवण्णं वा कटकं करोतीति यथाकतं पापं अकतं न करोतीति कतं एवं करोतीत्यधिप्पायो। अकतं वा कल्याणं। कतं न करोतीति अकतं एवं करोतीत्यधिप्पायो। पटि अभिमुखं सरणं गमनं पटिसारो। विरूपो कुच्छितो वा पटिसारो विप्पटिसारो। अस्सा ति कुक्कुच्चस्स। कंसपत्तं कंसभाजनं विलिखमानं आरग्गं इव मनं विलिखतीति मनोविलेखो। एवरूपं पन कुक्कुच्चं न नीवरणं ति ञापेन्तो यं पना ति आदिमाह। अथ खो....प०....अनुवसित्वा, भुञ्जितुं भुञ्जनं भगवता पटिक्खित्तं इति कुक्कु....प०....इति यं पन कुक्कुच्चं विनये आगतं, तं कुक्कुच्चं न नीवरणं। आगन्त्वा वसन्ति एत्था ति (२४४–सी०) आवसथो। आपुब्ब 'वस'-निवासे। **समादीहिसमा** ति (क० ४.६.५) सुत्तेन थो। आवसथे दिन्नो पिण्डो आवसथपिण्डो। कस्मा ति आह—न हीति आदि। किं पन तं ति[5] आह—नीवरणा ति आदि। नीवरणपतिरूपकं नीवरणसदिसं एतं कुक्कुच्चं। विनये उप्पन्नं कुक्कुच्चं विनयकुक्कुच्चं।

थिनमिद्धस्स अभिन्दित्वा वचने कारणं ञापेन्तो आह—कतमे हीति आदि। निद्देसे ति पदं वुत्तं ति पदे आधारो। इतीति[6] अभिन्दित्वा ति पदे आधारो। थिनमिद्धं वुत्तं।

---

१. कस्मा पन–सी०। २. यत्वा।ति–म०। ३. कथं–म०। ४. न–सी०। ५. तसं ति–म०। ६. ०पदं–सी०।

सति पि कुक्कुच्चस्साभावा कुक्कुच्चेन विना पि उद्धच्चं उप्पज्जति, तस्मा तं भिन्दित्वा वुत्तं। यं च येन सम्पयोगं न गच्छति, तं न योजितं ति वेदितब्बं। इमे पन नीवरणे किलेसपटिपाटिया पि आहरितुं वट्टति मग्गपटिपाटिया पि। किलेसपटिपाटिया कामच्छन्दब्यापादा अनागामिमग्गेन पहीयन्ति, थीनमिद्धुद्धच्चानि अरहत्तमग्गेन, कुक्कुच्चविचिकिच्छा सोतापत्तिमग्गेन, अविज्जा अरहत्तमग्गेन। मग्गपटिपाटिया सोतापत्तिमग्गेन कुक्कुच्चविचिकिच्छा पहीयन्ति, अनागामिमग्गेन कामच्छन्दब्यापादा अरहत्तमग्गेन थीनमिद्धुद्धच्चाविज्जा ति।

परामासगोच्छके [ध० २६२-२६४] **ते धम्मे ठपेत्वा** [ध० २६३] ति पुच्छा-सभागेन बहुवचनं कतं।

उपादाननिद्देसे [ध० २६७-२७०] वत्थुसंखातं कामं उपादियती ति **कामुपा-दानं**। [ध० २६७] कामो च सो उपादानं चा ति पि कामुपादानं। **उपादानं** ति दळ्ह-गहणं। दळ्हत्थो हि एत्थ 'उप'-सद्दो 'उपायास-उपकट्ठा'दीसु विय। तथा दिट्ठि च सा उपादानं चा ति **दिट्ठुपादानं**। दिट्ठिं उपादियती ति दिट्ठुपादानं। 'सस्सतो अत्ता च लोको चा' ति आदीसु हि पुरिमदिट्ठिं उत्तरदिट्ठि उपादियती ति। तथा सीलब्बतं उपा-दियती ति **सीलब्बतुपादानं**। सीलब्बतं च तं उपादानं चा ति पि सीलब्बतुपादानं।

उद्धच्चकुक्कुच्चस्स भिन्दित्वा वचने कारणं ञापेन्तो यस्मा पना ति आदि। सति पी ति पदं अभावा ति पदे लक्खणक्रिया। पी ति अपिसद्दो सहा पी ति ञापेति। तं उद्धच्चकुक्कुच्चं उद्धच्चनीवरणं। अविज्जा नीवरणेना ति आदिना भिन्दित्वा विसुं कत्वा भगवता वुत्तं। यं पन येन न[1] सम्पयुत्तं, तं तेन सद्धि न योजितं ति ञापेन्तो आह—यञ्चा ति आदि। यञ्च धम्मजातं येन धम्मजातेन। अविज्जा अरहत्तमग्गेन पहीयतीति सम्बन्धो।

पुच्छासभागेना ति कतमे धम्मा नो परामासा ति पुच्छा सदिसेन।

उपादियतीति दळ्हं गण्हाति। कामियतीति कामो। कामं उपादियती ति कामु-पादानं। वत्थुं कामेती ति वत्थुकामो। एत्था ति उपादानं ति पदे। का पन दिट्ठि कतरं दिट्ठिं गण्हातीति आह—सस्सतो ति आदि। पुरिमदिट्ठिं ति पदं उपादियतीति पदे कम्मं। कस्मा पन सीलब्बतं उपादानं नामा ति आह—गोसीला ति आदि[2]। एवं सीलब्बतेन सद्धि इति अभि-निवेसतो दळ्हग्गाहणतो[3] ति अत्थो। तथासद्दो उपसंहरणत्थो। अत्ता वदन्ति एतेन धम्मेन इति सो धम्मो वादो। सत्ता उपादियन्ति एतेन धम्मजातेन इति[4] धम्मजातं उपादानं। किं ति पदं कम्मं। अत्तानं ति पदं कम्मं। अत्तनो ति पदं वादुपादानं ति पदे कम्मं। वा (म०–२०९) अपरो नयो सत्ता अत्तवादमत्तमेव अत्तना इति एतेन धम्मजातेन उपादियन्ति दळ्हं गण्हन्ति इति तस्मा तं धम्मजातं अत्त....प०....वचनं वादो। अत्ता इति वादो एव मत्तं

---

१. नत्थि–सी०। २. आह–सी०। ३. दळहं गहणतो–सी०। ४. ०तं–सी०।

गोसील-गोवतादीनि हि 'एवं सुद्धी' ति अभिनिवेसतो सयमेव उपादानानि। तथा, वदन्ति एतेना ति 'वादो'; उपादियती ति 'उपादानं। किं वदन्ति, उपादियन्ति वा ? अत्तानं। अत्तनो वादुपादानं **अत्तवादुपादानं;** 'अत्तवादमत्तमेव वा अत्ता' ति उपादियन्ति एतेना ति अत्तवादुपादानं। **यो कामेसु कामच्छन्दो** [ध० २६७] ति एत्थापि वत्थुकामा व अनवसेसतो कामा ति अधिप्पेता। तस्मा वत्थुकामेसु कामच्छन्दो इध कामुपादानं ति अनागामिनो पि तं सिद्धं होति। पञ्चकामगुणवत्थुको पन' स्स कामरागो व नत्थी ति।

दिट्ठुपादाननिद्देसे [ध० २६७] **नत्थि दिन्नं** ति। **दिन्नं** नाम अत्थि, सक्का कस्सचि किञ्चि दातुं ति जानाति; दिन्नस्स पन फलविपाको नत्थी ति गण्हाति। **नत्थि यिट्ठं** ति। **यिट्ठं** वुच्चति महायागो। तं यजितुं सक्का ति जानाति; यिट्ठस्स पन फलविपाको नत्थी ति गण्हाति। **हुतं** ति आहुनपाहुनमंगलकिरिया। तं कातुं सक्का ति जानाति; तस्स फलविपाको नत्थी ति गण्हाति। **सुकटदुक्कटानं** ति एत्थ दस कुसलकम्मपथा सुकटकम्मानि नाम। दस अकुसल-कम्मपथा दुक्कटकम्मानि नाम। तेसं अत्थिभावं जानाति फलविपाकं पन नत्थी ति गण्हाति। **नत्थि अयं लोको** ति परलोके ठितो इमं लोकं नत्थी ति गण्हाति। **नत्थि परलोको** ति इध लोके ठितो परलोकं नत्थी ति गण्हाति। **नत्थि माता नत्थि पिता** ति मातापितूनं अत्थिभावं जानाति, तेसु कतपच्चयेन कोचि फलविपाको नत्थी ति गण्हाति। **नत्थि सत्ता ओपपातिका** ति चवनक-उप्पज्जनकसत्ता नत्थी ति गण्हाति। **सम्मग्गता सम्मापटिपन्ना**

अत्तवादमत्तं। अत्ता ति वचनमत्तं ति अत्थो। अथवा वादस्स वत्थुवादो। वादो एव मत्तं वादमत्तं। अत्ता च सो वादमत्तञ्चा ति अत्तवादमत्तं, वादस्स करणभूतं (२४५–सी०) मत्तं अत्तं ति अत्थो। एत्था पी ति अपिसद्दो कामुपादानं ति वचनं अपेक्खति। तस्मा ति पदं कामुपादानं ति पदे हेतु। वत्थुकामेसु पवत्तो कामच्छन्दो इध[1] कामुपादाननिद्देसे कामुपादानं नाम। इति तस्मा अनागामिनो तं कामुपादानं सिद्धं होति। अनागामिनो पी ति अपिसद्दो पुथुज्जनादयो अपेक्खति। तं सिद्धं ति अनागामिपुग्गलस्स कामुपादानं अत्थीति अधिप्पायो। अनागामिनो पन पञ्चकामगुणिको न कामरागो नत्थीति आपेन्तो आह—पञ्चा ति आदि। पञ्च कामगुणा[२] वत्थु[२] यस्स सो पञ्चकामगुणवत्थुको। अस्सा ति अनागामिनो।

दिट्ठुपादाननिद्देसे विनिच्छयो। नत्थि दिन्नं ति पदस्स अत्थो। सक्का कस्स चि जनस्स किञ्चि वत्थुं दातुं इति जानाति पुग्गलो। नत्थि यिट्ठं ति पदे महायागो यिट्ठं वुच्चति, यजितब्बं ति यिट्ठं इति वुच्चति। यजितब्बो ति यागो। 'यज'-दाने। महन्तो यागो महायागो। तं ति यिट्ठं। हवनं हुतं। आमन्तेत्वा हवनं आहुनं। आपुब्ब'हु'दाने। भावे यु। पठमं आहुयन्ति पूजियन्तीति पाहुना। पाहुनक्रिया[3] पाहुनं। मङ्गन्ति सत्ता एतेन वुड्ढि गच्छन्तीति

---

१. ०पन–सी०। २-२. कामगुणवत्थु–सी०। ३. पाहुनानं किरिया–सी०।

ति अनुलोमपटिपदं पटिपन्ना धम्मिक-**समणब्राह्मणा** लोकस्मिं नत्थी ति गण्हाति। **ये इमं च लोकं**....प०....**पवेदेन्ती** ति इमं च लोकं परं च लोकं अत्तना व अभिविसिट्ठेन ञाणेन ञत्वा पवेदनसमत्थो सब्बञ्ञू बुद्धो नाम नत्थी ति गण्हाति। इमानि पन उपादानानि किलेसपटिपाटिया पि आहरितुं वट्टति मग्गपटिपाटिया पि। किलेसपटिपाटिया कामुपादानं चतूहि मग्गेहि पहीयति, सेसानि तीणि सोतापत्तिमग्गेन। मग्गपटिपाटिया सोतापत्तिमग्गेन दिट्ठुपादानादीनि पहीयन्ति, चतूहि मग्गेहि कामुपादानं ति।

किलेसगोच्छके [ध० २७०-२७६] किलेसा एव **किलेसवत्थूनि।** वसन्ति वा एत्थ अखीणासवा सत्ता लोभादीसु पतिट्ठितत्ता ति 'वत्थूनि'। किलेसा चेव तप्पतिट्ठानं सत्तानं वत्थूनि चा ति 'किलेसवत्थूनि'। यस्मा चेत्थ अनन्तरपच्चयादिभावेन उप्पज्जमाना किलेसा पि वसन्ति पि एव नाम, तस्मा किलेसानं वत्थूनी ति पि 'किलेसवत्थूनि'।

तत्थ कतमो लोभो? यो रागो सारागो [ध० २७०] ति अयं पन लोभो हेतुगोच्छके गन्थगोच्छके इमस्मिं किलेसगोच्छके ति तीसु ठानेसु अतिरेकपदसतेन निद्दिट्ठो। आसव-संयोजन-ओघ-योग-नीवरण-उपादानगोच्छकेसु अट्ठहि अट्ठहि पदेहि निद्दिट्ठो। स्वायं अतिरेकपदसतेन निद्दिट्ठट्ठाने पि अट्ठहि अट्ठहि पदेहि निद्दिट्ठट्ठाने पि निप्पदेसतो व गहितो ति वेदितब्बो। तेसु हेतु-गन्थ-नीवरण-उपादान-किलेसगोच्छकेसु चतुमग्गवज्झा तण्हा एकेनेव कोट्ठासेन ठिता। आसव-संयोजन-ओघ-योगेसु चतुमग्ग-

---

मङ्गलं। 'मङ्ग'-गमने[१]। **मङ्गकमादि०**[२] (१८२ ण्वु०) **मोग्गल्लानसुत्तेन** अलो। करणं क्रिया। मङ्गलत्थं क्रिया मङ्गलक्रिया। आहुनञ्च पाहुनञ्च मङ्गलक्रिया च आहुन....प०....क्रिया। तं ति हुतं। तस्स हुतस्स। एत्था ति पदं नामा ति पदे आधारो। तेसं सुकतदुक्कटानं। परलोके ठितो ति[३] पुग्गलो नत्थी ति इमं लोकं चित्तेन गण्हाति। तेसू ति मातापितूसु। कत[४] इति पदे आधारो। पटिपज्जति निट्ठानं[५] अविच्छेदति[६] एतेना ति पटिपदं। पटिपज्जितब्बं ति पटिपदं। अनुलोमं अनुकूलञ्च तं पटिपदञ्चा ति अनुलोमपटिपदं।

एत्था ति किलेसेसु। पतिट्ठितत्ता ति पदं वसन्तीति पदे हेतु। तप्पतिट्ठानं ति तेसु किलेसेसु पतिट्ठानं। अपरं नयं दस्सेन्तो यस्मा चेत्था ति आदिमाह। एत्था ति पच्चयभूतकिलेसेसु वसन्तीति पदे आधारो। अनन्तरपच्चयादिभावेना ति पदं उप्पज्जमाना ति पदे करणं, हेतु वा। किलेसा पि पच्चयुप्पन्नभूता (म०-२१०) किलेसा। अपिसद्देन न केवलं सत्ता येव एत्थ वसन्तीति ञापेति। किलेसानं ति पच्चयुप्पन्नानं (२४६-सी०) किलेसानं।

तत्थ....प०....सारागो ति[७] वुत्तो। अयं पन लोभो भगवता निद्दिट्ठो ति सम्बन्धो। स्वायं ति[८] लोभो भगवता गहितो इति वेदितब्बो पण्डितेन। तेसू ति हेतुगोच्छकादीसु,

---

१. मङ्ग—मङ्गले-सी०। २. मङ्गलामादि-सी०। ३. ठितो-सी०। ४. कतं-सी०। ५. निब्बानं-सी०। ६. अधिगच्छति-सी०। ७. सारो ति-म०। ८. सो अयं-सी०।

वज्झा पि द्वे कोट्ठासा हुत्वा ठिता। कथं? आसवेसु कामासवो भवासवो ति, संयोजनेसु कामरागसंयोजनं भवरागसंयोजनं ति, ओघेसु कामोघो भवोघो ति, योगेसु कामयोगो भवयोगो ति।

इमानि पन किलेसवत्थूनि किलेसपटिपाटिया पि आहरितुं वट्टति मग्गपटिपाटिया पि। किलेसपटिपाटिया लोभो चतूहि मग्गेहि पहीयति, दोसो अनागामिमग्गेन मोह-माना अरहत्तमग्गेन, दिट्ठिविचिकिच्छा सोतापत्तिमग्गेन, थीनादीनि अरहत्तमग्गेन। मग्गपटिपाटिया सोतापत्तिमग्गेन दिट्ठिविचिकिच्छा पहीयन्ति, अनागामिमग्गेन दोसो, अरहत्तमग्गेन सेसा सत्ता ति।

कामावचरनिद्देसे [ध० २८१] **हेट्ठतो** ति हेट्ठाभागेन। **अवीचिनिरयं** ति वा अग्गिजालानं वा सत्तानं वा दुक्खवेदनाय वीचि, अन्तरं, छिद्दं एत्थ नत्थी ति अ-वीचि। सुखसंखातो अयो एत्थ नत्थी ति **निरयो**। निरति-अट्ठेन पि निरस्सादट्ठेन पि निरयो। **परियन्तं करित्वा** ति तं अवीचिसंखातं निरयं अन्तं कत्वा। **उपरितो** ति उपरिभागेन। **परनिम्मितवसवत्तिदेवे** ति परनिम्मितेसु कामेसु वसं वत्तनतो एवं-लद्ध-वोहारे देवे। **अन्तो करित्वा** ति अन्तो पक्खिपित्वा। **यं एतस्मिं अन्तरे** ति ये एतस्मिं ओकासे। **एत्थावचरा** ति इमिना यस्मा एतस्मिं अन्तरे अञ्ञे पि चरन्ति कदाचि कत्थचि सम्भवतो, तस्मा तेसं असंगण्हनत्थं 'अवचरा' ति वुत्तं। तेन ये एतस्मिं अन्तरे ओगाळ्हा हुत्वा चरन्ति सब्बत्थ सदा च सम्भवतो, अधोभागे च चरन्ति अवीचिनिरयस्स हेट्ठाभूतुपादाय पवत्तिभावेन, तेसं संगहो कतो होति। ते हि अवगाळ्हा व चरन्ति, अधोभागे च चरन्ती ति **अवचरा**। **एत्थ-परियापन्ना** ति इमिना पन यस्मा एते एत्थावचरा

निद्धारणं। चतुमग्गवज्झा पि तण्हा द्वे····प०····ठिता। आसवेसु कामासवो भवासवो ति द्वे कोट्ठासा हुत्वा ठिता तण्हा ति सम्बन्धो। संयोजनेसू ति आदीसु पि एसेव नयो।

सत्ता ति लोभमोहादयो सत्त किलेसा पहीयन्ति।

एत्था ति निरये। अयति पवत्ततीति अयो, सुखं। 'इ'-गतियं। एत्था ति ओकासे। रतिया विरहो निरति। निरति एव अत्थो निरति-अत्थो, रतिविरहभावेना[1] ति अत्थो। परनिम्मितेसु परेहि निम्मितेसु कामेसु। अत्तनो वसं वत्तनतो एव····प०····हारे परनिम्मितवसवत्तीति लद्धनामे देवे। इमिना ति पदं असङ्गण्हनत्थं ति पदे करणं। अञ्ञे पि धम्मा चरन्ति कदाचि काले, कत्थचि ओकासे। तेसं ति अञ्ञेसं धम्मानं। अवचरा ति वचनेन अवसद्दस्स द्वे[2] अत्थवसेन एवरूपानं धम्मानं गहणं ति आपेन्तो तेना ति आदिमाह। तेना ति अवचरा ति वचनेन, ततो ति पदे करणं। ये धम्मा। सब्बत्थ ओकासे। सम्भवतो ति पदं ओगाळ्हा हुत्वा चरन्तीति[3] एत्थ[4] चरन्तीति[4] ततियाविसेसनं। भूत····प०····भावेना ति भूतरूपं उपादायरूपानं पवत्तिभावेन[5]। अधोभागे चरन्तीति एत्थ चरन्तीति पदे ततिया-

---

१. ०विरहसभावेना ति–सी०। २. नत्थि–सी०। ३. ०पदे–सी०। ४-४. नत्थि–सी०। ५. पवत्तिकोट्ठासेन–सी०।

अञ्ञत्था पि अवचरन्ति, न पन तत्थ परियापन्ना होन्ति, तस्मा तेसं अञ्ञत्था पि अवचरन्तानं परिग्गहो कतो होति। इदानि ते एत्थ-परियापन्नधम्मे रासि-सुञ्ञत-पच्चयभावतो चेव सभावतो च दस्सेन्तो **खन्धा** ति आदिमाह।

रूपावचरनिद्देसे [ध० २८१] **ब्रह्मलोकं** ति पठमज्झानभूमिसंखातं ब्रह्मट्ठानं। सेसमेत्थ कामावचरनिद्देसे [ध० २८१] वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। **समापन्नस्स** चा ति आदीसु पठमपदेन कुसलज्झानं वुत्तं, दुतियेन विपाकज्झानं, ततियेन किरियज्झानं वुत्तं ति वेदितब्बं। अरूपावचरनिद्देसे [ध० २८१] **आकासानञ्चायतनूपगे** ति आकासानञ्चायतनसंखातं भवं उपगते। दुतियपदे पि एसेव नयो। सेसं हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

सरणदुकनिद्देसे [ध० २८३] य्वायं तीसु अकुसलमूलेसु मोहो, सो लोभसम्पयुत्तो च लोभेन स-रणो, दोससम्पयुत्तो च दोसेन स-रणो। विचिकिच्छा-उद्धच्चसम्पयुत्तो पन मोहो दिट्ठिसम्पयुत्तेन चेव रूपराग-अरूपरागसंखातेन च रागरणेन पहानेकट्ठभावतो स-रणो स-रजो ति वेदितब्बो।

[(ii) सुत्तन्त-दुकं]

सुत्तन्तिकदुक-मातिकाकथाय [ध० २८३] अत्थतो च विवेचितत्ता यानि च

विसेसनं। तेसं धम्मानं सङ्गहो भगवता कतो होति। ते हीति आदि दळ्हीकरणं। हि सच्चं, ते धम्मा। अवगाळ्हा[1] एव चरन्ति पवत्तन्ति अधोभागे येव चरन्ति इति तस्मा ते धम्मा अवचरा। एत्थ परियापन्ना ति पदस्स वचने फलं ञापेन्तो आह—एत्था ति आदि। इमिना[2] पदे करणं[2]। एते धम्मा एत्थ ओकासे अवचरा। अवचरा ति पदं एते ति पदस्स विसेसनं। अञ्ञत्था ति ओकासे। तत्था ति ओकासे। एतेसं धम्मानं। एत्थ ओकासे। ते परियापन्न-धम्मे। दस्सेन्तो ति पदे कम्मं। रासि....प०....सभावतो चा ति पदद्वयं दस्सेन्तो ति पदे ततियाविसेसनं। रासिभावतो खन्धा। सुञ्ञतभावतो धातु। पच्चयभावतो आयतनं[3]। सभावतो[3] रूपवेदनादयो।

सेसमेत्था ति एत्थ रूपावचरनिद्देसे (२४७–सी०) सेसं वचनं। समापन्नस्स चा ति आदीसु[4] पदेसु[4], निद्धारणं।

सरणदुकनिद्देसे ति पदं (म०–२११) वेदितब्बो ति पदो आधारो। य्वायं मोहो लोभ-सम्पयुत्तो लोभेन सरणो। अकुसलेसू[5] ति निद्धारणे भुम्मं। विचि....प०....युत्तो पन य्वायं मोहो। दिट्ठि....प०....वेदितब्बो। पहानेकट्ठभावतो ति पदं सरणो ति पदे हेतु।

सुत्त....प०....मातिकाकथायं ति पविवेचित इति पदे आधारो। सुत्तन्तिकदुकानं

---

१. ०च अवगाळ्हा–सी०। २-२. इमिना ति पदं ततो ति पदे करणं–सी०। ३-३. आयतनसभावतो एव–सी०। ४-४. ०आदीसू ति पदे–सी०। ५. अकुसलमूलेसू ति–सी०।

नेसं निद्देसपदानि तेसं पि हेट्ठावुत्तनयेनेव सुविञ्ञेय्यत्ता येभुय्येन उत्तानत्थानि येव। इदं पनेत्थ विसेसमत्तं—विज्जूपमदुके [ध० २८३] ताव चक्खुमा किर पुरिसो मेघन्धकारे मग्गं पटिपज्जि। तस्स अन्धकारताय मग्गो न पञ्ञायि। विज्जु निच्छरित्वा अन्धकारं विद्धंसेसि। अथ'स्स अन्धकारविगमा मग्गो पाकटो अहोसि। सो दुतियं पि गमनं अभिनीहरि। दुतियं पि अन्धकारो ओत्थरि। मग्गो न पञ्ञायि। विज्जु निच्छरित्वा तं विद्धंसेसि। विगते अन्धकारे मग्गो पाकटो अहोसि। ततियं पि गमनं अभिनीहरि। अन्धकारो ओत्थरि। मग्गो न पञ्ञायि। विज्जु निच्छरित्वा अन्धकारं विद्धंसेसि।

तत्थ चक्खुमतो पुरिसस्स अन्धकारे मग्गपटिपज्जनं विय अरियसावकस्स सोतापत्तिमग्गत्थाय विपस्सनारम्भो। अन्धकारे मग्गस्स अपञ्ञायनकालो विय सच्चच्छादकतमं। विज्जुया निच्छरित्वा अन्धकारस्स विद्धंसितकालो विय सोतापत्तिमग्गोभासेन उप्पज्जित्वा सच्चच्छादकतमस्स विनोदितकालो। विगते अन्धकारे मग्गस्स पाकटकालो विय सोतापत्तिमग्गस्स चतुन्नं सच्चानं पाकटकालो। मग्गस्स पाकटं पन मग्गसमंगिपुग्गलस्स पाकटमेव। दुतियगमनाभिनीहारो विय सकदागामिमग्गत्थाय विपस्सनारम्भो। अन्धकारे मग्गस्स अपञ्ञायनकालो विय सच्चच्छादकतमं। दुतियं विज्जुया निच्छरित्वा अन्धकारस्स विद्धंसितकालो विय सकदागामिमग्गोभासेन उप्पज्जित्वा सच्चच्छादकतमस्स विनोदितकालो। विगते अन्धकारे मग्गस्स पाकटकालो विय सकदागामिमग्गस्स चतुन्नं सच्चानं पाकटकालो। मग्गस्स पाकटं पन मग्गसमंगिपुग्गलस्स पाकटमेव। ततियगमनाभिनीहारो विय अनागामिमग्गत्थाय विपस्सनारम्भो। अन्धकारे मग्गस्स अपञ्ञायनकालो विय सच्चच्छादकतमं। ततियं विज्जुया निच्छरित्वा विद्धंसितकालो विय अनागामिमग्गोभासेन उप्पज्जित्वा सच्चच्छादकतमस्स विनोदितकालो। विगते अन्धकारे मग्गस्स पाकटकालो विय अनागामिमग्गस्स चतुन्नं सच्चानं पाकटकालो। मग्गस्स पाकटं पन मग्गसमंगिपुग्गलस्स पाकटमेव।

विवेचितत्ता। यानि चा ति चसद्दो विवेचितत्ता च सुविञ्ञेय्यत्ता चा ति योजेतब्बो। नेसं ति सुत्तन्तिकपदानं[1]। तेसम्पि निद्देसपदानं। अपिसद्दो उद्देसपदानि अपेक्खति। निद्देसपदानि उत्तानत्थानेव। एत्था ति सुत्तन्तिकदुकनिद्देसे। विज्जूपमदुके ताव विनिच्छयो। मेघन्धकारे ति मेघेन अन्धकारे। तस्स पुरिसस्स। अथस्सा ति तदा अस्स पुरिसस्स। अन्धकारविगमा ति अन्धकारस्स विगमेन। सो पुरिसो अभिनीहरति पवत्तेसि। तं ति अन्धकारं।

तत्था ति पुरिसस्स। अन्धकारे मग्गपज्जनादीसु[2]। किं पन चतुसच्चं पुग्गलस्स पाकटं उदाहु न पाकटं ति मनसिकत्वा आह—मग्गस्सा ति आदि। मग्गस्स पाकटं चतुसच्चं।

---

१. सुत्तन्तिकदुकानं पदानं–सी०। २. मग्गपटिपज्जनादीसु–सी०।

वजिरस्स [ध० २८३] पन पासाणो वा मणि वा अभेज्जो नाम नत्थि । यत्थ पतति तं विनिविद्धमेव होति । वजिरं खेपेन्तं असेसेत्वा खेपेति । वजिरेन गतमग्गो नाम पुन पाकतिको न होति । एवमेव अरहत्तमग्गस्स अवज्झकिलेसो नाम नत्थि । सब्बकिलेसे विनिविज्झति वजिरं विय । अरहत्तमग्गो पि किलेसे खेपेन्तो असेसेत्वा खेपेति । वजिरेन गतमग्गस्स पुन पाकतिकत्ताभावो विय अरहत्तमग्गेन पहीनकिलेसानं पुन पच्चुदावत्तनं नाम नत्थी ति ।

बालदुकनिद्देसे [ध० २८३] बालेसु **अहिरिकानोत्तप्पानि** पाकटानि, मूलानि च सेसानं बालधम्मानं । अहिरिको हि अनोत्तप्पी च न किञ्चि अकुसलं न करोति नामा ति । एतानि द्वे पठमं येव विसुं वुत्तानि । सुक्कपक्खे [ध० २८४] पि अयमेव नयो । तथा कण्हदुके [ध० २८३-२८४] ।

तपनीयदुकनिद्देसे [ध० २८४] कतत्ता च अकतत्ता च तपनं वेदितब्बं । **कायदुच्चरितादीनि** [ध० २८४] हि कतत्ता तपन्ति, **कायसुचरितादीनि** [ध० २८४] अकतत्ता । तथा हि पुग्गलो 'कतं मे कायदुच्चरितं' ति तप्पति, 'अकतं मे कायसुचरितं' ति तप्पति । 'कतं मे वचीदुच्चरितं' ति तप्पति,....प०....'अकतं मे मनोसुचरितं' ति तप्पति । **अतपनीये** [ध० २८४] पि एसेव नयो । कल्याणकारी हि पुग्गलो 'कतं मे कायसुचरितं' ति न तप्पति, 'अकतं मे कायदुच्चरितं' ति न तप्पति । 'कतं मे वचीसुचरितं' ति न तप्पति....प०....'अकतं मे मनोदुच्चरितं' ति न तप्पति ।

अधिवचनदुकनिद्देसे [ध० २८४] **या तेसं धम्मानं** ति सब्बधम्मगहणं । संखायती ति **संखा**, संकथीयती ति अत्थो । किं ति संकथीयति ? अहं ति ममं ति

वजिरस्सा ति पदं नत्थीति पदे सम्पदानं । यत्था ति यस्मिं ठाने । वजिरपतितं[1] ठानं[1] विनिविद्धमेव होति । पच्चुदावत्तनं ति पटिनिवत्तनं ।

बालदुकनिद्देसे ति पदं वुत्तानीति पदे आधारो । अहिरीकानोत्तप्पानं विसुं वचने कारणं ञापेन्तो आह—अहिरीका ति आदि । बालेसू ति बालजनेसु, पाकटानीति पदे आधारो । चसद्दो पाकटानि च सेसानं बालधम्मानञ्चा ति[2] योजेतब्बो । हिसद्दो दळ्हीकरणं । अहिरीको पुग्गलो । इति[3] तस्मा । एतानि अहिरीकानोत्तप्पानि ।

कतत्ता ति पदं कम्मं[4] ति पदे हेतु । काया ति आदि दळहीकरणं । अकतत्ता तपन्ति । तथा हीति आदि दळहीकरणं । कल्याणकारी हीति आदि वित्थारो ।

अधिवचनदुकनिद्देसे विनिच्छयो वेदितब्बो । या....प०....धम्मानं ति पदे सब्बधम्मग्गहणं यो अत्थो पण्डितेन सङ्खायति इति तस्मा सो अत्थो सङ्खा । संपुब्ब'खा'-

---

१-१. वजिरं पत्ति तं ठानं–सी० । २. बालधम्मानं मूलानि चा ति–सी० । ३. इतोति –सी० । ४. तपनं–सी० ।

परो ति परस्सा ति सत्तो ति भावो ति पोसो ति पुग्गलो ति नरो ति माणवो ति **तिस्सो** ति **दत्तो** ति, 'मञ्चो पीठं भिसि बिम्बोहनं'ति, 'विहारो परिवेणं द्वारं वातपानं'ति एवं अनेकेहि आकारेहि संकथीयती ति 'संखा'। सम्मा ञायती ति **समञ्ञा।** किं ति समञ्ञायति ? 'अहं ति ममं ति····प०····द्वारं वातपानं' ति सम्मा ञायती ति 'समञ्ञा'। पञ्ञापियती ति **पञ्ञत्ति।** वोहरीयती ति **वोहारो।** किं ति वोहरीयति ? 'अहं ति ममं ति····प०····द्वारं वातपानं' ति वोहरीयति। **नामं** ति चतुब्बिधं नामं—सामञ्ञनामं गुणनामं कित्तिमनामं ओपपातिकनामं ति।

तत्थ पठमकप्पिकेसु महाजनेन सम्मन्नित्वा ठपितत्ता **म**हासम्मतो ति रञ्ञो नामं 'सामञ्ञनामं' नाम। यं सन्धाय वुत्तं—'महाजनसम्मतो ति खो **वा**सेट्ठ, महाजनसम्मतो त्वेव पठमं अक्खरं उपनिब्बत्तं [दी० ३.७३]'' ति। धम्मकथिको पंसुकूलिको विनयधरो तेपिटको सद्धो पसन्नो ति एवरूपं गुणतो आगतनामं 'गुणनामं' नाम। **भ**गवा अरहं सम्मासंबुद्धो ति आदीनि पि **त**थागतस्स अनेकानि नामसतानि गुणनामानेव। तेन वुत्तं—

"असंखेय्यानि नामानि सगुणेन **म**हेसिनो।
गुणेन नाम उद्धेय्यं अपि नामसहस्सतो" [ ] ति॥

यं पन जातस्स कुमारकस्स नामगहणदिवसे दक्खिणेय्यानं सक्कारं कत्वा समीपे ठिता ञातका कप्पेत्वा पकप्पेत्वा 'अयं असुको नामा' ति नामं करोन्ति, इदं 'कित्तिमं नामं'

कथने[1]। किं ति पदं संकथियतीति पदे आकारो[2]। अत्थो संकथियति इति पुच्छा, अहं ति संकथियतीति सम्बन्धो। ममं ति आदीसु पि एसेव (२४८-सी०) नयो। या धम्मजाति पण्डितेन पञ्ञापियति इति सा धम्मजाति पञ्ञत्ति। पपुब्ब'ञ'-थपने[3]। कम्मे ति। यो सभावो पण्डितेन वोहरयति[4] वुच्चति इति सो सभावो वोहारो। वि ओ पुब्ब'हर'-कथने।

तत्थ चतुब्बिधे नामे, निद्धारणं। सम्मन्नित्वा थपितं नामं सामञ्ञनामं। कत्थ पन इदं (२१२-म०) सामञ्ञनामं भगवता वुत्तं ति आह—यं ति आदि। अथवा पन सामञ्ञनामं महाजनसम्मतो ति आदि पालियं भगवता वुत्तं। इध मया वुत्तसामञ्ञनामं तमेव नामं न अञ्ञं[5] ति दस्सेन्तो आह—यं ति आदि। यं नामं सन्धाय महा····प०····निब्बत्तं ति वचनं भगवता वुत्तं। रञ्ञो नामं सामञ्ञनामं नामा ति सम्बन्धो। भो वासेट्ठ, राजा महासम्मतो ति[6] खो तस्मा महा····प०···· इति एवं[7] नामं[7] पठमं अक्खरं उपादाय निब्बत्तं जातं। गुणेन आगतं नामं गुणनामं, गुणवसेन पवत्तनामं ति अत्थो। महेसिनो सगुणेन अत्तनो गुणेन पवत्तानि नामानि। असङ्ख्येय्यानि सङ्खातुं असक्कुणेय्यानि। अपि नाम सहस्सतो अनेकेहि नामसहस्सेहि गुणेन गुणवसेन नामं उद्धरितब्बं पण्डितेन। यं पन नामं करोन्तीति सम्बन्धो। कित्तनं वा

---

१. ०का-कथने-सी०। २. आधारो-सी०। ३. ०ञ-ञापने-सी०। ४. वोहारीयति -सी०। ५. अञ्ञस्मिं ति-सी०। ६. महाजनसम्मतो ति-सी०। ७-७. एवरूपं नामं-सी०।

नाम । या पन पुरिमपञ्ञत्ति अपरपञ्ञत्तियं पतति, पुरिमवोहारो पच्छिमवोहारे पतति, सेय्यथीदं—पुरिमकप्पे पि चन्दो चन्दो येव नाम, एतरहि चन्दो येव । अतीते सुरियो....समुद्दो....पठवी....पब्बतो पब्बतो येव, एतरहि पब्बतो येवा ति इदं ओपपातिकनामं' । इदं चतुब्बिधं पि नामं एत्थ नाममेव होति ।

नामकम्मं ति नामकरणं । **नामधेय्यं** ति नामठपनं । **निरुत्ती** ति नामनिरुत्ति । **ब्यञ्जनं** ति नामब्यञ्जनं । यस्मा पनेतं अत्थं ब्यञ्जयति तस्मा एवं वुत्तं । **अभिलापो** ति नामाभिलापो व । **सब्बे व धम्मा अधिवचनपथा** ति अधिवचनस्स नो-पथ-धम्मा नाम नत्थि । एकधम्मो सब्बधम्मेसु निपतति, सब्बधम्मा एकधम्मस्मिं निपतन्ति । कथं ? अयं हि नामपञ्ञत्ति एकधम्मो, सो सब्बेसु चतुभूमिकधम्मेसु निपतति । सत्तो पि संखारो पि नामतो मुत्तको नाम नत्थि । अटवीपब्बतादीसु रुक्खो पि जानपदानं भारो । ते हि 'अयं रुक्खो किं नामा' ति पुट्ठा 'खदिरो' 'पलासो' ति अत्तना जान-

---

कप्पनं कित्ति । 'कित' कथने । भावे ति । कित्तिया निब्बत्तं कित्तिमं । कित्तिमं एव नामं कित्तिमनामं । पुरिमवोहारो ति आदिमपुरिमपञ्ञति आदिवचनस्स परियायो । पुरिमवोहारो ··· प०·····पततीति एत्थ पच्छिमनामेन सदिसं पुरिमनामं इध पतनं नामा ति अधिप्पायो । सयमेव उपपतनसीलं ओपपातिकं । अथवा उपपतनं उपपातो । सयमेव उपपातेन पवत्तननासं ओपपातिकं ।

करियति[1] उच्चारियती ति करणं । कम्मे यु । नामं एव करणं नामकरणं । ठियति[2] थपियतीति[3] थेय्यं[4], 'ठा'थपने[5] । नामं एव थेय्यं नामथेय्यं । थपियतीति थपनं । कम्मे यु । नामं एव थपनं नामथपनं । अथवा करियति एतेन नामेन अत्थो एवंनामो ति ञापियतीति करणं । थपियति एतेन नामेन अत्थो एवंनामो ति ञापियतीति थपनं । करणे यु । अत्थं[6] निवदतीति निरुत्ति, सद्दसङ्खातं नामं । निपुब्ब 'उ'वदने । कत्तरि ति । (२४९–सी०) नामं एव निरुत्ति नामनिरुत्ति । अत्थं ब्यञ्जयतीति ब्यञ्जनं । विपुब्ब'अञ्ज'-पकासने । कत्तरि यु । नामं एव ब्यञ्जनं नामब्यञ्जनं । कस्मा पन नामं ब्यञ्जनं ति सद्दसङ्खातं नामं वुत्तं ति आह—यस्मा ति आदि । एतं ति सद्दसङ्खातं नामं । ब्यञ्जयतीति पकासेति । एवं ति ब्यञ्जनं ति एवं[7] । अत्थं अभिलपती ति अभिलापो । अभिपुब्ब'लप'-कथने । नामं एव अभिलापो नामाभिलापो । एकधम्मो ति आदिवचनं नो[8] पथधम्मा ति[8] आदिवचनस्स अधिप्पायविञ्ञापनं । सब्बनामपञ्ञत्तिसङ्खातो एकधम्मो चातुभूमकधम्मसङ्खातेसु सब्बधम्मेसु वाचकभावेन निपतति । सब्बधम्मा नामपञ्ञत्तिसङ्खाते एकधम्मस्मि वाचकभावेन निपतन्ति । अयं हीति आदिवित्थारो । अत्थं पकारेन ञापेती ति पञ्ञत्ति[9], (म०-२१३) नामपञ्ञत्ति । सो ति एकधम्मो । नामतो ति सङ्खातनामतो[10] । अटवीपब्बतादीसु विज्जमाना रुक्खा पि·····प०·····अपिसद्दो[11] सकुणादयो समुच्चेति ।

---

१. करीयति–सी० । २. थियति–सी० । ३. ठपियतीति–सी० । ४. थेय्यं–सी० सब्बत्थ । ५. धा-ठपने–सी० । ६. ०निवति–सी० । ७. ०अत्थं–सी० । ८-८. नेव धम्मो ति–सी० । ९. ०नामं एव पञ्ञत्ति–सी० । १०. सद्दसङ्खात–सी० । ११. भावो अपि०–सी० ।

नकनामं कथेन्ति । यस्स नामं न जानन्ति तं पि 'अनामको' नामा ति वदन्ति । तं पि तस्स नामधेय्यमेव हुत्वा तिट्ठति । समुद्दे मच्छकच्छपादीसु पि एसेव नयो । इतरे द्वे [ध० २८४] दुका इमिना समानत्था एव ।

नामरूपदुके [ध० २८४–८५] नामकरणट्ठेन च नमनट्ठेन च नामनट्ठेन च **नामं** । तत्थ चत्तारो ताव खन्धा नामकरणट्ठेन 'नामं' । यथा हि महाजनसम्मतत्ता **म**हासम्मतस्स **म**हासम्मतो ति नामं अहोसि, यथा वा मातापितरो 'अयं **ति**स्सो नाम होतु, **पु**स्सो नाम होतू' ति एवं पुत्तस्स कित्तिमनामं करोन्ति, यथा वा 'धम्मकथिको' 'विनयधरो' ति गुणतो नामं आगच्छति, न एवं वेदनादीनं । वेदनादयो हि महापठवी-आदयो विय अत्तनो नामं करोन्ता व उप्पज्जन्ति । तेसु उप्पन्नेसु तेसं नामं उप्पन्नमेव होति । न हि वेदनं उप्पन्नं 'त्वं वेदना नाम होही' ति कोचि भणति । न च तस्सा नामगहणकिच्चं अत्थि । यथा पठविया उप्पन्नाय 'त्वं पठवी नाम होही' ति नामगहणकिच्चं नत्थि, चक्कवाळे सिनेरुम्हि चन्दिमसुरियनक्खत्तेसु उप्पन्नेसु 'त्वं चक्कवाळं नाम....त्वं नक्खत्तं नाम होही' ति नामगहणकिच्चं नत्थि, नामं उप्पन्नमेव होति, 'ओपपातिकपञ्ञत्तियं' निपतति, एवं वेदनाय उप्पन्नाय 'त्वं वेदना नाम होही' ति नामगहणकिच्चं नत्थि । ताय उप्पन्नाय वेदना ति नामं उप्पन्नमेव होति । सञ्ञादीसु एसेव नयो । अतीते पि हि वेदना वेदना येव,

---

जनपदे वसन्ता जानपदा । ते हीति आदिदळ्हीकरणं । हि सच्चं, ते जानपदा जनेन पुट्ठा कथेन्ति । जानपदा यस्स रुक्खस्स नामं न जानन्ति, तम्पि रुक्खं अयं रुक्खो अनामको नामा ति वदन्ति । तम्पि वचनं तस्स रुक्खस्स नामधेय्यमेव नाममेव हुत्वा तिट्ठति । इमिना ति अधिवचनदुकेन ।

नामस्स करणं नामकरणं । नामकरणं एव अत्थो सभावो[1] । नामं[2] सामञ्ञनामादीनि विय न होतीति ञापेन्तो आह—यथा हीति आदि । न एवं वेदनादीनं नामं ति सब्बस्स अनवज्जधम्मस्स अत्तनि नामस्स अभावेन[2] । तत्था ति तस्मिं नामे, निद्धारणं । वेदनादीनं नामं सामञ्ञनामादीनि विय न होतीति ञापेन्तो आह—यथा हीति आदि । न एवं वेदनादीनं[3] नामं ति सब्बस्स अनवज्जधम्मस्स च अत्तनि[3] । कीदिसं पन वेदनादीनं नामं ति आह—वेदनादयो हीति आदि । तेसू ति वेदनादीसु । तेसं ति वेदनादीनं । न हीति आदि दळ्हीकरणं । हि सच्चं····प०····इति कोचि पुग्गलो । उप्पन्नानं वेदनानं भणति[4] । यदि पि भणन्ते असति नामग्गहणकिच्चं भवेय्या ति मनसिकत्वा आह न चा ति आदि । तस्सा वेदनाय । नाम····प०····किच्चं नामग्गहणेन किच्चं न च अत्थि । वुत्तमत्थं उपमाय साधेन्तो आह—यथा ही ति

---

१. ०नामकरणत्थो । नमनत्थेना ति आरम्मणस्स नमनसभावेन । नामनत्थेना ति आरम्मणस्स अनवज्जधम्मस्स च अत्तनि नामनसभावेन । –सी० पोत्थके अधिको पाठो । २-२. नत्थि–सी० । ३-३. न एवं वेदनादीनं नामं ति सम्बन्धो–सी० । ४. न भणति–सी० ।

सञ्ञा....संखारा....विञ्ञाणं विञ्ञाणमेव। अनागते पि, पच्चुप्पन्ने पि। निब्बानं पन सदा पि निब्बानमेव। इति 'नामकरणट्ठेन' नामं। 'नमनट्ठेना' पि चेत्थ चत्तारो खन्धा नामं। ते हि आरम्मणाभिमुखा नमन्ति। 'नामनट्ठेन' सब्बं पि नामं। चत्तारो हि खन्धा आरम्मणे अञ्ञमञ्ञं नामेन्ति। निब्बाणं आरम्मणाधिपतिपच्चयताय अत्तनि अनवज्जधम्मे नामेति।

अविज्जा-भवतण्हा [ध० २८५] वट्टमूलसमुदाचारदस्सनत्थं गहिता। **भविस्सति अत्ता च लोको चा** [ध० २८५] ति खन्धपञ्चकं अत्ता च लोको चा ति गहेत्वा 'तं भविस्सती' ति गहणाकारेन निविट्ठा **सस्सतदिट्ठि** [ध० २८५]। दुतिया 'न भविस्सती' ति आकारेन निविट्ठा **उच्छेददिट्ठि** [ध० २८५] **पुब्बन्तं आरब्भा** [ध० २८६] ति अतीतकोट्ठासं आरम्मणं करित्वा। इमिना ब्रह्मजाले आगता अट्ठारस पुब्बन्तानुदिट्ठियो गहिता। **अपरन्तं आरब्भा** [ध० २८६] ति अनागतकोट्ठासं आरम्मणं करित्वा। इमिना तत्थेव आगता चतुचत्ताळीस अपरन्तानुदिट्ठियो गहिता।

दोवचस्सतानिद्देसे [ध० २८६] **सहधम्मिके वुच्चमाने** ति सहधम्मिकं नाम यं भगवता पञ्ञत्तं सिक्खापदं, तस्मिं वत्थुं दस्सेत्वा आपत्तिं आरोपेत्वा 'इदं नाम त्वं आपन्नो, इंघ देसेहि वुट्ठाहि पटिकरोही'ति वुच्चमाने। **दोवचस्सायं** ति आदीसु एवं

आदि। (२५०–सी०) चक्कं''''प०''''नक्खत्तेसू ति पदं उप्पन्नेसू ति पदे लक्खणक्रिया। आपेपातिका ति आदि नामं उप्पन्नमेवा ति पदस्स अधिप्पायो। ताय वेदनाय। उप्पन्नाया ति पदं होतिति पदे लक्खणक्रिया। अतीते पि हीति आदि एसेव नयो ति पदस्स अधिप्पायो। सदा पी ति अपिसद्दो अवयवकालं समुच्चेति। एत्था ति नामे। ते हीति हि सच्चं, ते धम्मा[1] आरम्मणाभिमुखा आरम्मणस्स अभिमुखा। सब्बम्पि नामं नाम। हिसद्दो दळ्हीकरणं। आरम्मणा''''प०''''ताया ति पदं नामेतीति पदे ततियाविसेसनं।

वत्तति एत्थ कम्मं तब्बिपाको चा ति वट्टं। मूलति पतिट्ठाति एतेना ति मूलं। वट्टस्स मूलं वट्टमूलं। समुदाचारं चरति पवत्ततीति समुदाचारो। वट्टमूलं एव समुदाचारो वट्टमूलसमुदाचारो। समुदाचरणं[2] भावे यु। वट्टमूलानं समुदाचारो वट्टमूलसमुदाचारो। वट्टमूलसमुदाचारस्स दस्सनं वट्ट''''प०''''दस्सनं। तं ति पदं निविट्ठा ति पदे कम्मं। निविट्ठा ति परामसन्ती गण्हन्ती सस्सतदिट्ठीति पदस्स निवेसनं। इमिना ति पुब्बन्तं आरब्भा ति (म०–२१४) वचनेन। इमिना ति अपरन्तं आरब्भा ति वचनेन। तत्थेवा ति ब्रह्मजाले।

भगवता पञ्ञत्तसिक्खापदं[3] सहधम्मिकं नामा ति सम्बन्धो। सहधम्मे भवं सहधम्मिकं। तस्मिं ति सिक्खापदे। इमं नामा ति इमं नाम आपत्तिं। दोवचस्सायं ति आदीसु विनिच्छयो। एवं ति इमं नाम त्वं आपन्नो ति वचनेन[4] चोदियमानस्स दुब्बचपुग्गलस्स। पटिचोदनाया ति

---

१. खन्धा–सी०। २. ०समुदाचारो–सी०। ३. ०तं–सी०। ४. आदिना वचनेन –सी०।

चोदियमानस्स पटिचोदनाय वा अप्पदक्खिणगाहिताय वा दुब्बचस्स कम्मं दोवचस्सायं। तदेव दोवचस्सं ति वुच्चति। तस्स भावो **दोवचस्सियं**। इतरं तस्सेव वेवचनं। **विप्पटिकूलगाहिता** ति विलोमगाहिता। विलोमगहणसंखातेन विपच्चनीकेन सातं अस्सा ति विपच्चनीकसातो। पटाणिकगहणं गहेत्वा एकपदेनेव तं निस्सद्दमकासिं' ति सुखं पटिलभन्तस्सेतं अधिवचनं। तस्स भावो **विपच्चनीकसातता**। ओवादं अनादियनवसेन अनादरस्स भावो **अनादरियं**। इतरं तस्सेव वेवचनं। अनादियनाकारो वा अनादरता। गरुवासं अवसनवसेन उप्पन्नो अगारवभावो **अगारवता**। स-जेट्ठकवासं अवसनवसेन उप्पन्नो अप्पटिस्सवभावो **अप्पटिस्सवता**। **अयं वुच्चती** ति अयं एवरूपा **दोवचस्सता** नाम वुच्चति। अत्थतो पनेसा तेनाकारेन पवत्ता चत्तारो खन्धा, संखारक्खन्धो येव वा।

पापमित्ततादीसु [ध० २८६] पि एसेव नयो। दोवचस्सता पापमित्ततादयो हि विसुं चेतसिकधम्मा नाम नत्थि। नत्थि एतेसं सद्धा ति **असद्धा**; बुद्धादीनि वत्थूनि न सद्दहन्ती ति अत्थो। **दुस्सीला** ति सीलस्स दुट्ठु नाम नत्थि, निस्सीला ति अत्थो। **अप्पस्सुता** ति सुतविरहिता। पञ्च मच्छरियानि एतेसं अत्थी ति **मच्छरिनो**। **दुप्पञ्ञा** ति निप्पञ्ञा। सेवनकवसेन **सेवना**। बलवसेवना **निसेवना**। सब्बतो-भागेन

चोदकस्स पुन चोदनाय। पदक्खिणेन गण्हति सीलेना ति पदक्खिणग्गाही। न पदक्खिणग्गाही अपदक्खिणग्गाही। अपदक्खिणग्गाहिनो भावो अप....प०....ता। पटि चोदनाय वा गाहिताय चा ति पदद्वयं दुब्बच इति पदे ततियाविसेसनं। दुक्खं वचितब्बो ति दुब्बचो। दुब्बचस्स कम्मं दोवचस्सं। दोवचस्सं एव दोवचस्सायं[1]। तदेव कम्मं दोवचस्सं ति पि वुच्चति पण्डितेन। दोवचस्सियं ति भावे इयो। इतरं दोवचस्सता ति पदं। तस्सेव दोवचस्सियं ति पदस्स। विलोमगाहिताया ति विलोमेन गाहिताय। विपच्चनीकेना ति पदं सातं ति पदे ततियाविसेसनं। सादनं सातं। भावे तो। अस्सा ति पुग्गलस्स। पटि आणिकं (२५१-सी०) विरुद्धं पटाणिकं। दुब्बचेन गहियते ति गहणं, वचनं। पटाणिकञ्च तं गहणञ्चा ति पटाणिकगहणं सुन्दरवचनस्स[2] पटि विरुद्धं वचनं ति अत्थो। गहेत्वा ति पदं पटिलभन्तस्सा ति पदे पुब्बकालक्रिया। एकपदेनेव एकवचनेनेव तं पुग्गलं निस्सद्दं[3] सद्दरहितं[3] अहं। इतरं ति अनादरता ति पदं। तस्सेवा ति अनादरियं ति पदस्स। वसनं वासो। गरूसु गारवेन वासो गरुवासो। नत्थि पटिस्सवो अस्सा ति अगरु[4]। अगरुनो भावो अगारवं। अगारवं एव अगारवता। सह जेट्ठकेहि वट्टतीति सजेट्ठको। सजेट्ठको वासो सजेट्ठकवासो। पटिस्सुणितब्बो ति पटिस्सवो। सु—सवने। नत्थि पटिस्सवो अप्पटिस्सवो। तस्स भावो अप्पटिस्सवता। एसा ति दोवचस्सता।

एतेसं ति पुग्गलानं। तीहि पी ति सेवनादीहि[5]। तेसु सम्पवङ्कतीति तं-सम्पवङ्को।

---

१. दोवचस्सियं–सी०। २. सुरनवचनस्स–म०। ३–३. निसद्धं सद्धारहितं–सी०। ४. नत्थि–म०। ५. ०पदेहि–सी०।

सेवना **संसेवना** । उपसग्गवसेन वा पदं वड्ढितं । तीहि पि सेवना व कथिता । **भजना** ति उपसंकमना । **संभजना** ति सब्बतो-भागेन भजना । उपसग्गवसेन वा पदं वड्ढितं । **भत्ती** ति दळहभत्ति । **संभत्ती** ति सब्बतो-भागेन भत्ति । उपसग्गवसेन वा पदं वड्ढितं । द्वीहि पि दळहभत्ति एव कथिता । **तं-संपवंकता** ति तेसु पुग्गलेसु कायेन चेव चित्तेन च संपवंकभावो; तन्निन्नता तप्पोणता तप्पब्भारता ति अत्थो । सोवचस्सतादुकनिद्देसो [ध० २८७] पि वुत्तपटिपक्खनयेन वेदितब्बो ।

पञ्च पि आपत्तिक्खन्धा [ध० २८७] ति **मा**तिकानिद्देसेन 'पाराजिकं संघादिसेसं पाचित्तियं पाटिदेसनीयं दुक्कटं' ति इमा पञ्च आपत्तियो । **सत्त पि आपत्तिक्खन्धा** ति विनयनिद्देसेन 'पाराजिकं संघादिसेसं थुल्लच्चयं पाचित्तियं पाटिदेसनीयं दुक्कटं दुब्भासितं' ति इमा सत्त आपत्तियो । तत्थ सह वत्थुना तासं आपत्तीनं परिच्छेदजाननकपञ्ञा **आपत्तिकुसलता** नाम । सह कम्मवाचाय आपत्तिवुट्ठानपरिच्छेदजाननकपञ्ञा पन **आपत्तिवुट्ठानकुसलता** [ध० २८७] नाम । समापज्जितब्बतो **समापत्ति** [ध० २८७] । सह परिकम्मेन अप्पनापरिच्छेदजाननकपञ्ञा पन **समापत्तिकुसलता** नाम । 'चन्दे वा सुरिये वा नक्खत्ते वा एत्तकं ठानं गते वुट्ठहिस्सामी' ति अविरज्झित्वा तस्मिं येव समये वुट्ठानकपञ्ञाय अत्थिताय **समापत्तिवुट्ठानकुसलता** नाम । अट्ठारसन्नं धातूनं उग्गह-मनसिकार-सवण-धारण-परिच्छेदजाननकपञ्ञा **धातुकुसलता** [ध० २८७] नाम । तासं येव उग्गह-मनसिकारजाननकपञ्ञा **मनसिकारकुसलता** [ध० २८८] नाम । द्वादसन्नं आयतनानं उग्गह-मनसिकार-सवण-धारण-परिच्छेदजाननकपञ्ञा **आयतनकुसलता** [ध० २८८] नाम । तीसु पि वा एतासु कुसलतासु उग्गहो मनसिकारो सवणं संमसनं पटिवेधो पच्चवेक्खणा ति सब्बं वट्टति ।

संपुब्बो 'वङ्क-कोटिल्ये, अपच्चयो । तं-सम्पवङ्कस्स भावो तं-सम्पवङ्कता । तेसु निन्नो तन्निन्नो । तस्स भावो तन्निन्नता । तेसु पोणो तप्पोणो । तेसु पब्भारो तप्पब्भारो[1] ।

· मातिकानिद्देसेना ति पातिमोक्खसङ्खातमातिकाय निद्देसेन, पञ्चा ति पदे ततियाविसेसनं । विनयनिद्देसेना ति विभङ्गसङ्खातविनयनिद्देसेन । तत्था ति आपत्तिकुसलतादीसु, निद्धारणं । सहा ति पदं जानन[2] इति पदे क्रियाविसेसनं । समापज्जियती ति (२१५–म०) समापत्ति । सं-आपुब्ब 'पद' गतिम्हि । कम्मे ति । वुट्ठहियते वुट्ठानकं । वि-पुब्ब 'ट्ठा' गतिनिवत्तिम्हि । उपुब्ब 'ट्ठा' धातु वा । वकारागमो । वुट्ठानकस्स[3] कारणभूता पञ्ञा वुट्ठानकपञ्ञा । उग्गहियते उग्गहो । मनसिकरणं मनसिकारो । सुय्यते सवनं । धारयते धारणं । परिच्छिन्दनं परिच्छेदो । परिच्छेदस्स जाननं परिच्छेदजाननं[4] । उग्गहो च मनसिकारो च सवनञ्च धारणञ्च परिच्छेदजाननञ्च उग्गह....प०....जाननं । उग्गहमनसिका....प०....जाननं एव पञ्ञा उग्गह....प०....पञ्ञा । तासं येवा ति धातूनं । उग्गहे पवत्तो मनसिकारो उग्गहमनसिकारो ।

---

१. नत्थि–म० । २. जाननं–सी० । ३. वुट्ठानस्स–सी० । ४. नत्थि–म० ।

तत्थ सवण-उग्गह-पच्चवेक्खणा लोकिया, पटिवेधो लोकुत्तरो। सम्मसन-मनसिकारा लोकियलोकुत्तरमिस्सका। 'अविज्जापच्चया संखारा' ति आदीनि **पटिच्चसमुप्पाद-विभंगे** आविभविस्सन्ति। 'इमिना पच्चयेन इदं होती' ति जाननकपञ्ञा **पटिच्च-समुप्पादकुसलता** [ध० २८८] नाम।

ठानाठानकुसलतादुकनिद्देसे [ध ०२८८] **हेतू पच्चया** ति उभयं पेतं अञ्ञमञ्ञवेवचनं। चक्खुप्पसादो हि रूपं आरम्मणं कत्वा उप्पज्जनकस्स चक्खु-विञ्ञाणस्स हेतु चेव पच्चयो च। तथा च सोतप्पसादादयो सोतविञ्ञाणादीनं, अम्बबीजादीनि अम्बफलादीनं। दुतियनये [ध० २८८] **ये धम्मा** ति विसभागपच्चय-धम्मानं निदस्सनं। **येसं येसं** ति विसभागपच्चयसमुप्पन्नधम्मनिदस्सनं। **न-हेतू-न-पच्चया** ति चक्खुप्पसादो सद्दं आरम्मणं कत्वा उप्पज्जनकस्स सोतविञ्ञाणस्स न-हेतु न-पच्चयो। तथा सोतप्पसादादयो अवसेसविञ्ञाणानं। अम्बादयो च ताला-दीनं उप्पत्तिया ति एवमत्थो वेदितब्बो।

अज्जवमद्दवनिद्देसे [ध० २८९] **नीचचित्तता** ति पदमत्तमेव विसेसो। तस्स' त्थो—मानाभावेन नीचं चित्तं अस्सा ति नीचचित्तो। नीचचित्तस्स भावो नीचचित्तता। सेसं चित्तुजुकता-चित्तमुदुतानं [१७४, १८८] पदभाजनीये आगतमेव। खन्तिनिद्देसे [ध० २८९] खमनकवसेन **खन्ति**। खमनाकारो **खमनता**। अधिवासेन्ति एताय, अत्तनो उपरि आरोपेत्वा वासेन्ति, न पटिबाहन्ति, न पच्चनीकताय तिट्ठन्ती ति **अधिवासनता**। अचण्डभावो **अचण्डिक्कं। अनसुरोपो** ति अ-सुरोपो वुच्चति न

अथवा उग्गहो च मनसिकारो च उग्गहमनसिकारो। उग्गहमनसिकारो इति जाननं उग्गह-मनसिकारजाननं। उग्गह (२५२-सी०)....प०....जाननं एव पञ्ञा उग्गह....प०....पञ्ञा। तीसू ति धातुकुसलतादीसु। इति एवं सब्बं ञाणं वट्टतीति सम्बन्धो। कुसलतादीसु ति पदं वट्टतीति पदे आधारो। तत्था ति उग्गहादीसु। इदं ति इदं[1] फलं।

हेतूपच्चया ति उभयम्पि एतं[2] वचनं। चक्खुप्पसादो हीति आदि दळ्हीकरणं। तथा ति हेतु चेव पच्चयो च, अम्बबीजादीनि इव अम्बफलादीनं हेतु चेव पच्चयो च। न-हेतु न-पच्चया इति पदस्स अत्थो वेदितब्बो पण्डितेना ति सम्बन्धो। तालादीनं उप्पत्तिया न-हेतु न-पच्चयो।

तस्सा ति नीचचित्ततादिपदस्सा। एताया ति धम्मजातिया। अधीतिपदस्स अत्थं ञापेन्तो अत्तनो उपरि आरोपेत्वा ति आह। वासेन्तीति पदस्स अत्थं ञापेन्तो न पटि....प....० तिट्ठन्तीति आह। अधिवासेन्ति एताया ति अधिवासना, पुग्गला। अधिवासनानं भावो अधिवासनता। न सम्मा रोपितत्ता ति पदं वुच्चतीति पदे हेतु। दुरुत्तवचनं ति पदं वुच्चतीति पदे कम्मं। तप्पटिपक्खतो ति पदस्स दुरुत्तवचनस्स पटिपक्खतो। सुट्ठु उत्ता सुरुत्ता।

---

१. इवं-सी०। २. एवं तं-सी०।

सम्मारोपितत्ता दुरुत्तवचनं। तप्पटिपक्खतो अनसुरोपो सुरुत्तवाचा ति अत्थो। एवमेत्थ फलूपचारेन कारणं निद्दिट्ठं। **अत्तमनता चित्तस्सा** ति सोमनस्सवसेन चित्तस्स सक-मनता, अत्तनो चित्तस्स भावो येव, न ब्यापन्नचित्तता ति अत्थो।

सोरच्चनिद्देसे [ध० २८९] **कायिको अवीतिक्कमो** ति तिविधं काय-सुचरितं। **वाचसिको अवीतिक्कमो** ति चतुब्बिधं वचीसुचरितं। **कायिकवाचसिको** ति इमिना कायवचीद्वारसमुट्ठितं आजीवट्ठमकं सीलं परियादियति। **इदं वुच्चति सोरच्चं** ति इदं पापतो सुट्ठु ओरतत्ता सोरच्चं नाम वुच्चति। **सब्बो पि सीलसंवरो** ति इदं यस्मा न केवलं कायवाचाहेव अनाचारं आचरति मनसा पि आचरति एव, तस्मा मानसिक-सीलं परियादाय दस्सेतुं वुत्तं।

साखल्यनिद्देसे [ध० २८९] **अण्डका** ति यथा सदोसे रुक्खे अण्डकानि उट्ठ-हन्ति, एवं सदोसताय खुंसनवंभनादिवचनेहि अण्डका जाता। **कक्कसा** ति पूति-कक्कसा। यथा नाम पूतिरुक्खो कक्कसो होति पग्घरितचुण्णो एवं कक्कसा होति। सोतं घंसमाना विय पविसति। तेन वुत्तं 'कक्कसा' ति। **परकटुका** ति परेसं कटुका अमनापा दोसजननी। **पराभिसज्जनी** ति कुटिलकण्टकसाखा विय चम्मेसु विज्झित्वा परेसं अभिसज्जनी, गन्तुकामानं पि गन्तुं अदत्वा लग्गनकारी। **कोधसामन्ता** ति कोधस्स आसन्ना। **असमाधिसंवत्तनिका** ति अप्पनासमाधिस्स वा उपचारसमाधिस्स वा असंवत्तनिका। इति सब्बानेवेतानि सदोसवाचाय वेवचनानि। **तथारूपिं वाचं पहाया** ति इदं फरुसवाचं अप्पजहित्वा ठितस्स अन्तरन्तरे पवत्ता पि सण्हवाचा असण्हवाचा एव नामा ति दीपनत्थं वुत्तं।

नेळा ति एळा वुच्चति दोसो। नास्सा एळा ति नेळा; निद्दोसा ति अत्थो।

सुरुत्ता च सा वाचा चा ति सुरुत्तवाचा। एत्थ अनसुरोपो ति पदे वाचासङ्खातफलस्स उप-चारेन खन्तिसङ्खातं कारणं भगवता निद्दिट्ठं। उपचरति पवत्तति एत्था ति उपचारो, अन-सुरोपो ति सद्दो। फलस्स उपचारो फलूपचारो। फलवाचकसद्दो ति अत्थो। ब्यापन्नचित्तता ति विरूपं आपन्नचित्तता।

आजीवो अट्ठमो यस्स तं आजीवट्ठमकं। परियादियती ति भगवा गण्हाति। ओरतत्ता ति विरतत्ता। सुट्ठु ओरमतीति सोरतो। सोरतस्स भावो सोरच्चं। सब्बो पि····प०····इदं ति पदं वुत्तं ति पदे कम्मं। परियादाया ति गहेत्वा।

सह दोसेन पवत्ति सदोसो। सदोसे ति पि अत्थि। सदोसताया ति पदं जाता ति पदे हेतु। (म०–२१६) वचनेही ति पदं जाता ति पदे ततियाविसेसनं। कक्कसा ति पूतिवाचा, होतीति पदे कत्ता। सब्बेसु विज्झित्वा अभिसज्जनी कुटिलसाखा विय। इदं पदं वुत्तं ति पदे कम्मं।

अस्सा ति अस्सा वाचाय। नेलो निद्दोसो अग्गो अस्सा ति नेलग्गो। पकारेन छादेति

"नेळंगो सेतपच्छादो" [खु० नि० १ : १५७ (उदानं)] ति एत्थ वुत्तसीलं विय। **कण्णसुखा** ति ब्यञ्जनमधुरताय कण्णानं सुखा, सूचिविज्झनं विय कण्णसूलं न जनेति। अत्थमधुरताय सरीरे कोपं अजनेत्वा पेमं जनेती ति **पेमनिया**। हृदयं गच्छति, अप्पटिहञ्ञमाना सुखेन चित्तं पविसती ति **हदयंगमा**। गुणपरिपुण्णताय पुरे भवा ति **पोरी**। पुरे संवड्ढनारी विय सुकुमारा ति पि पोरी। पुरस्स एसा ति पि पोरी; नगरवासीनं कथा ति अत्थो। नगरवासिनो हि युत्तकथा होन्ति। पितुमत्तं पिता ति भातुमत्तं भाता ति वदन्ति। एवरूपी कथा बहुनो जनस्स कन्ता होती ति **बहुजनकन्ता**। कन्तभावेनेव बहुनो जनस्स मनापा चित्तवुड्ढिकरा ति **बहुजनमनापा**। **या तत्था** ति या तस्मिं पुग्गले। **सण्हवाचता** ति मट्ठवाचता। **सखिलवाचता** ति मुदुवाचता। **अफरुसवाचता** ति अकक्खळवाचता।

पटिसन्थारनिद्देसे [ध० २८९] **आमिसपटिसन्थारो** ति आमिस-अलाभेन अत्तना सह परेसं छिद्दं यथा पिहितं होति पटिच्छन्नं एवं आमिसेन पटिसन्थरणं। **धम्मपटिसन्थारो** ति धम्मस्स अप्पटिलाभेन अत्तना सह परेसं छिद्दं यथा पिहितं होति पटिच्छन्नं, एवं धम्मेन पटिसन्थरणं। **पटिसन्थारको होती** ति द्वे येव हि लोकसंनिनिवासस्स छिद्दानि, तेसं पटिसन्थारको होति। **आमिसपटिसन्थारेन वा धम्मपटिसन्थारेन वा** ति इमिना दुविधेन पटिसन्थारेन पटिसन्थारको होति, पटिसन्थरति, निरन्तरं करोति।

तत्रायं आदितो पट्ठाय कथा—पटिसन्थारकेन हि भिक्खुना आगन्तुकं आगच्छन्तं दिस्वा व पच्चुग्गन्त्वा पत्तचीवरं गहेतब्बं, आसनं दातब्बं, तालवण्टेन वीजितब्बं, पादा धोवित्वा तेलेन मक्खेतब्बा, सप्पिफाणिते सति भेसज्जं दातब्बं, पानीयेन पुच्छितब्बो, आवासो पटिजग्गितब्बो। एवं एकदेसेन आमिसपटिसन्थारो कतो नाम होति। सायं पन नवकतरे पि अत्तनो उपट्ठानं अनागते येव, तस्स सन्तिकं गन्त्वा निसीदित्वा अविसये अपुच्छित्वा तस्स विसये पञ्हो पुच्छितब्बो। 'तुम्हे

एतेना ति पच्छादो। अलङ्कारो। सेतो पच्छादो (२५३–सी०) सेतपच्छादो। सुकुमारा ति अतिमुदुका। हिसद्दो दळ्हीकरणं। युत्ता अनुच्छविका कथा एतेसं ति युत्तकथा।

आमिसालाभेना[1] ति पदं सिद्धं ति पदे ततियाविसेसनं। आमिसस्स अलाभो आमिसालाभो। पटिसन्धरणं[2] ति निरन्तरकरणं। हीति हि सच्चं। लोकसन्निवेसस्सा ति[3] लोकसमूहस्स। तेसं ति छिद्दानं। पटिसन्धरणो निरन्तरकारको। इमिना ति पदं पटिसन्धारेना ति पदस्स विसेसनं।

तत्रा ति पटिसन्धारनिद्देसे। हिसद्दो वित्थारजोतको। एकदेसेना ति पदं कतो ति पदे ततियाविसेसनं। तस्स नवकतरस्स। अविसये गन्धे[4]। इच्चेतं ति इति एतं कथेतुं

---

१. आमिसलाभेना ति–सी०। २. पटिसन्थरणं ति–सी० सब्बत्थ। ३. लोकसन्निवासस्सा ति–सी०। ४. पञ्हे–सी०।

कतरभाणका' ति अपुच्छित्वा 'आचरियुपज्झाया कतरं गन्थं वलञ्जेन्ती' ति पुच्छित्वा पहोनकट्ठाने पञ्हो पुच्छितब्बो। सचे कथेतुं सक्कोति इच्चेतं कुसलं। नो चे सक्कोति सयं कथेत्वा दातब्बं। एवं एकदेसेन धम्मपटिसन्थारो कतो नाम होति। सचे अत्तनो सन्तिके वसति तं आदाय निबद्धं पिण्डाय चरितब्बं। सचे गन्तुकामो होति पुनदिवसे गमनसभागेन तं आदाय एकस्मिं गामे पिण्डाय चरित्वा उय्योजेतब्बो। सचे अञ्ञस्मिं दिसाभागे भिक्खू निमन्तिता होन्ति तं भिक्खुं इच्छमानं आदाय गन्तब्बं। 'न मय्हं एसा दिसा सभागा' ति गन्तुं अनिच्छन्ते सेसभिक्खू पेसेत्वा तं आदाय पिण्डाय चरितब्बं। अत्तना लद्धामिसं तस्स दातब्बं। एवं 'आमिसपटिसन्थारो कतो नाम होति।

आमिसपटिसन्थारकेन पन अत्तना लद्धं कस्स दातब्बं ति? आगन्तुकस्स ताव दातब्बं। सचे गिलानो वा अ-वस्सिको वा अत्थि, तेसं पि दातब्बं। आचरियुपज्झायानं दातब्बं। भण्डगाहकस्स दातब्बं। साराणीयधम्मपूरकेन पन सतवारं पि सहस्सवारं पि आगतागतानं थेरासनतो पट्ठाय दातब्बं। पटिसन्थारकेन पन येन येन न लद्धं, तस्स तस्स दातब्बं। बहिगामं निक्खमित्वा जिण्णकं वा अनाथं वा भिक्खुं वा भिक्खुनिं वा दिस्वा तेसं पि दातब्बं।

तत्रिदं वत्थु—चोरेहि किर गुत्तसालगामे पहटे तं-खणं येव एका निरोधतो वुट्ठिता खीणासवत्थेरी दहरभिक्खुनिया भण्डकं गाहापेत्वा महाजनेन सद्धिं मग्गं

सक्कुणनं[1]। कुसलं सुन्दरं। तं ति नवकतरं। गमनसभागेना ति पदं चरित्वा[2] उय्योजेतब्बो ति पदद्वये ततियाविसेसनं। वासद्दो न केवलं अत्तनो पकतिया[3] गमनगामे तं[3] आदाय पिण्डाय चरितब्बमेवा ति ञापेति। तं ति नवकतरं। अनिच्छन्ते नवकतरे ति योजना।

पटिसन्धारकेन....प०....तब्बं ति पुच्छा। पटिसन्धारकेना ति पदं दातब्बं ति पदे कत्ता। अत्तना ति पदं लद्धं ति पदे ततियाकत्ता। लद्धं आमिसं। नत्थि वस्सो अस्सा ति अवस्सिको। तेसम्पीति गिलान-अवस्सिकानं। भण्डं चीवरादिकं गण्हतीति भण्डगाहको। सार....प०....पूरणेना ति पदं भिक्खुना ति पदस्स विसेसनं। आगतागतेन भिक्खुना दातब्बं ति पदे कत्ता। पटिसन्धारकेना ति पदं दातब्बं ति पदे कत्ता। येन येन भिक्खुना न लद्धं आमिसं दातब्बं ति पदे कम्मं। बहिगामं ति गामस्स बहि। जिण्णकं अनाथं। भिक्खुनिं वा ति एत्थ वासद्दो जिण्णकं वा अनाथं वा भिक्खुनिं वा ति योजेतब्बो। तेसम्पीति जिण्ण-अनाथभिक्खुनीनं। जिण्णं वा भिक्खुनिं वा ति पि अत्थि, तेसम्पीति जिण्णकादीनं।

तत्रा ति खिक्खुनियं आमिसदाने। चोरेहीति पदं पहटे[4] ति पदे कत्ता। गुत्तसालगामे

---

१. सक्कुणानं–सी०। २. आदाय–सी०। ३-३. पकतिया गमनं। गामे तं–सी०।
४. पहते–सी० सब्बत्थ।

पटिपज्जित्वा ठितमज्झन्तिके **न**कुलनगरगामद्वारे पत्वा रुक्खमूले निसीदि। तस्मिं समये **काळवल्लिमण्डपवासी म**हानागत्थेरो **न**कुलनगरगामे पिण्डाय चरित्वा निक्खमन्तो थेरिं दिस्वा भत्तेन आपुच्छि। सा 'पत्तो मे नत्थी' ति आह। थेरो 'इमिना व भुञ्जथा' ति सह पत्तेन अदासि। थेरी भत्तकिच्चं कत्वा पत्तं धोवित्वा थेरस्स दत्वा आह—'अज्ज ताव भिक्खाचारेन किलमिस्सथ, इतो पट्ठाय पन वो भिक्खाचारपरित्तासो नाम न भविस्सति ताता' ति। ततो पट्ठाय थेरस्स ऊनकहापणग्घनको पिण्डपातो नाम न उप्पन्नपुब्बो। अयं 'आमिसपटिसन्थारो' नाम।

इमं पटिसन्थारं कत्वा भिक्खुना संगहपक्खे ठत्वा तस्स भिक्खुनो कम्मट्ठानं कथेतब्बं, धम्मो वाचेतब्बो, कुक्कुच्चं विनोदेतब्बं, उप्पन्नकिच्चं करणीयं कातब्बं, अब्भान-वुट्ठान-मानत्त-परिवासा दातब्बा। पब्बज्जारहो पब्बाजेतब्बो उपसम्पदारहो उपसम्पादेतब्बो। भिक्खुनिया पि अत्तनो सन्तिके उपसम्पदं आकंखमानाय कम्मवाचं कातुं वट्टति। अयं 'धम्मपटिसन्थारो' नाम।

इमेहि द्वीहि पटिसन्थारेहि पटिसन्थारको भिक्खु अनुप्पन्नं लाभं उप्पादेति, उप्पन्नं थावरं करोति, समयट्ठाने अत्तनो जीवितं रक्खति **चो**रनागरञ्ञो पत्तगहणहत्थेनेव अग्गं गहेत्वा पत्तेनेव भत्तं आकिरन्तो थेरो विय। अलद्धलाभुप्पादने पन इतो पलायित्वा परतीरं गतेन **म**हानागरञ्ञा एकस्स थेरस्स सन्तिके संगहं लभित्वा पुन आगन्त्वा रज्जे पतिट्ठितेन **से**तम्बङ्गणे यावजीवं पवत्तितं महाभेसज्जदानवत्थु कथेतब्बं। उप्पन्नलाभथावरकरणे **दी**घभाणक-**अ**भयत्थेरस्स हत्थतो पटिसन्थारं लभित्वा **चे**तियपब्बते चोरेहि भण्डकस्स अविलुत्तभावे वत्थु कथेतब्बं।

ति लङ्कादीपे गुत्तसालनामगामे। पहटे ति विलुत्ते। दहरभिक्खुनिया ति पदं गाहापेत्वा ति पदे कम्मं। पटिपज्जित्वा ति पदं पत्वा ति पदे पुब्बकालक्रिया। नकुल....प०....द्वारं ति रोहनजनपदे नकुल (म०–२१७)–नगरद्वारगामस्स (२५४–सी०) द्वारं। दहरभिक्खुनिया ति पदं गाहापेत्वा ति पदे कम्मं। इमिना पवत्तेन। इतो ति दिवसतो। भिक्खाचारपरित्तासो ति भिक्खाचारेन किलमथो। परितसनं परित्तासो, किलमथो ति अत्थो। परितासो ति वत्तब्बे तकारस्स द्विभावं कत्वा परित्तासो ति वुत्तं। अथवा परित्तो आसो ति परित्तासो, अप्पकपत्थना ति अत्थो। भिक्खाचारेन परित्तासो भिक्खाचारपरित्तासो। ऊन[1]....प०....नको ति कहापणतो अनग्घनको।

चोरनागरञ्ञो ति पदं आकिरन्तो ति पदे सम्पदानं। अग्गं ति अग्गपिण्डं। तेन वुत्तं ततियपाराजिकवण्णनायं **सारत्थदीपनियं** चोरनागवत्थुस्मिं ति एत्थ चोरनागस्स किर आमट्ठं देन्तो कुज्झिस्सति अनामट्ठं न वट्टतीति चोरो[2] पत्तगहणत्थेनेव अग्गं गहेत्वा पत्ते भत्तं सब्बमदासि। सो तेन तुस्सतीति। अलद्धलाभुप्पादने ति लभितब्बलाभस्स अनुप्पादने, अल-

---

१. ऊनं–सी०। २. थेरो–सी०।

द्धलाभस्स वा उप्पादने उप्पादापने कथेतब्बं पदे आधारो। इतो ति ओरिमतीरतो। महानागरञ्ञो ति पदं पवत्तितं ति पदे कत्ता। पतिट्ठितेना ति पदं महानागरञ्ञो ति पदस्स विसेसनं। सेतम्बङ्गणे[1] ति लङ्कादीपे सेतम्बङ्गणे, पवत्तितं ति पदे आधारो। उप्पन्नलाभथावरकरणे ति पदं कथेतब्बं ति पदे आधारो। चेतियपब्बते ति पदं अविलुत्त इति पदे आधारो। चोरेहीति पदं अविलुत्त इति पदे कत्ता। वत्थु कथेतब्बं ति समन्तपासादिकायं ततियपाराजिकवण्णनायं वुत्तनयेन वत्थु पण्डितेन कथेतब्बं ति। वुत्तं हि तत्थ सीहळदीपे किर अभयो नाम चोरो पञ्चसतपरिवारो एकस्मिं ठाने खन्धवारं बन्धित्वा समन्ता तियोजनं उब्बासेत्वा वसति। अनुराधपुरवासिनो कुम्भनदिं न उत्तरन्ति। चेतियगिरिमग्गे जनसञ्चारो पच्छिन्नो। अथेकदिवसं चोरो चेतियगिरिं विलुम्पिस्सामीति अगमासि। आरामिका दिस्वा दीघभाणकअभयत्थेरस्स आरोचेसुं। थेरो सप्पिफाणितादि अत्थीति पुच्छि। अत्थि भन्ते। तण्डुलादि[2] अत्थीति। आम[3] भन्ते, संघत्थाय[4] आहटा तण्डुला च पक्कसाकञ्च गोरसो चा ति। भत्तं सम्पादेत्वा चोरानं देथा ति। आरामिका तथा करिंसु। चोरा भत्तं भुञ्जित्वा केनायं पटिसन्धारो[5] कतो ति पुच्छिंसु। (२५५–सी०) अम्हाकं अय्येन अभयत्थेरेना ति। चोरा थेरस्सन्तिकं गन्त्वा वन्दित्वा आहंसु, मयं संघस्स च चेतियस्स च सन्तकं अच्छिन्दित्वा (म०–२१८) गहेस्सामा ति आगता, तुम्हाकं पनिमिना पटिसन्धारेनम्ह[6] पसन्ना, अज्ज[7] पट्ठाय विहारे धम्मिकारक्खा अम्हाकं आयत्ता होतु, नागरा आगन्त्वा दानं देन्तु चेतियं वन्दन्तू ति। ततो पट्ठाय च नागरे दातुं आगच्छन्ते नदीतीरे येव पच्चुग्गन्त्वा रक्खन्ता विहरन्ति[8]। विहारे पि दानं देन्तानं रक्खं कत्वा तिट्ठन्ति। ते पि भिक्खूनं भुत्तावसेसं चोरानं देन्ति, आगमनकाले[9] पि ते चोरा नदी तीरं पापेत्वा निवत्तन्ति। अथेकदिवसं भिक्खुसंघे खीयनकथा[10] उप्पन्ना, थेरो इस्सरवताय संघस्स सन्तकं चोरानं अदासीति। थेरो सन्निपातं कारापेत्वा आह—चोरा संघस्स पकतिवत्तञ्च चेतियसन्तकञ्च अच्छिन्दित्वा गण्हिस्सामा ति आगमिंसु। अथ नेसं मया एवं न हरिस्सन्तीति एत्तको नाम पटिसन्धारो कतो। तं सब्बम्पि एकतो पिण्डेत्वा अग्घापेथ, तेन कारणेन अविलुत्तभण्डं एकतो पिण्डेत्वा अग्घापेथा ति। ततो सब्बम्पि थेरेन दिन्नकं चेतियधरे एकं वरपोत्थकचित्तत्थरणं नाग्घति[11]। ततो आहंसु, थेरेन कतपटिसन्धारो सुकतो, चोदेतुं वा सारेतुं वा न लब्भा, गीवा वा अवहारो वा नत्थीति एवं महानिसंसो पटिसन्धारो ति सल्लक्खेत्वा कत्तब्बो पण्डितेना ति। तत्थ उब्बासेत्वा ति समन्ता तियोजनं विलुम्पत्ते मनुस्से पलापेत्वा अञ्ञेसं आवासं कत्वा। **विनयसङ्गहे** पन एसा कुम्भनदीति[12] वुत्ता, **महावंसे** पन कदम्बनदी ति वुत्ता। संघस्सत्थाय आहटा ति पाकवत्ततो दिवसत्थाय आहटा। वरपोत्थकचित्तत्थरणं ति अनेकपप्कारस्स[13] उत्तमरूपचित्तं[13] अत्थकरणं

---

१. पेतम्बङ्गने–सी०। २. तण्डुला–सी०। ३. अत्थि–सी०। ४. संघस्सत्थाय–सी०। ५. पटिसन्थारो–सी० सब्बत्थ। ६. ०रेनम्हा–सी०। ७. अज्जतो–सी०। ८. विहारं नेन्ति–सी०। ९. गमनकाले–सी०। १०. विनिच्छयकथा–सी०। ११. नग्घि–सी०। १२. कुम्भनदी कलम्बनदी ति–सी०। १३-१३. अनेकप्पकार-उत्तमरूपचित्तं–सी०।

इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारता-निद्देसे [ध० २८९-२९०] **चक्खुना रूपं दिस्वा** ति कारणवसेन चक्खू ति लद्धवोहारेन रूपदस्सनसमत्थेन चक्खुविञ्ञाणेन रूपं दिस्वा। **पोराणा** पनाहु—"चक्खु रूपं न पस्सति, अचित्तकत्ता; चित्तं न पस्सति, अचक्खुकत्ता; द्वारारम्मणसंघट्टनेन पन पसादवत्थुकेन चित्तेन पस्सति। ईदिसी पनेसा 'धनुना विज्झती' ति आदीसु विय ससम्भारकथा नाम होति। तस्मा चक्खुविञ्ञाणेन रूपं दिस्वा" ति अयमेवेत्थ अत्थो। **निमित्तग्गाही** ति इत्थिपुरिसनिमित्तं वा सुभनिमित्तादिकं वा किलेसवत्थुभूतं निमित्तं छन्दरागवसेन गण्हाति, दिट्ठमत्ते येव न सण्ठाति। **अनुब्यञ्जनग्गाही** ति किलेसानं अनुब्यञ्जनतो पाकटभावकरणतो अनुब्यञ्जनं ति लद्धवोहारं हत्थपाद-सित-हसित-कथित-आलोकित-विलोकितादिभेदं आकारं गण्हाति। **यत्वाधिकरणमेनं** ति आदिम्हि यं-कारणा यस्स चक्खुन्द्रियं असंवरस्स हेतू, एतं पुग्गलं सतिकवाटेन **चक्खुन्द्रियं असंवुतं** अपिहितचक्खुद्वारं हुत्वा **विहरन्तं** एते **अभिज्झादयो धम्मा अन्वास्सवेय्युं** अनुप्पबन्धेय्युं अज्झोत्थरेय्युं। **तस्स संवराय न पटिपज्जती** ति तस्स चक्खुन्द्रियस्स सतिकवाटेन पिदहनत्थाय न पटिपज्जति। एवं-भूतो एव च **न रक्खति चक्खुन्द्रियं चक्खुन्द्रिये न संवरं आपज्जती** ति वुच्चति।

तत्थ किञ्चा पि चक्खुन्द्रिये संवरो वा असंवरो वा नत्थि, न हि चक्खुप्पसादं निस्साय सति वा मुट्ठसच्चं वा उप्पज्जति। अपि च यदा रूपारम्मणं चक्खुस्स आपाथं आगच्छति तदा भवंगे द्विक्खत्तुं उप्पजित्वा निरुद्धे किरियामनोधातु आवज्जनकिच्चं साधयमाना उप्पज्जित्वा निरुज्झति। ततो चक्खुविञ्ञाणं दस्सनकिच्चं, ततो विपाकमनोधातु सम्पटिच्छनकिच्चं, ततो विपाकाहेतुकमनोविञ्ञाणधातु

न अग्घति[1]।

कारणवसेना ति चक्खुपसादसङ्खातकारणपटिबद्धेन। लद्धं वोहारं येन तं लद्धवोहारं। आचरिया पन एवं वदन्तीति दस्सेन्तो आह—पोराणा ति आदि। नत्थि चित्तं अस्स चक्खुस्सा ति अचित्तकं। तस्स भावो अचित्तकत्तं। नत्थि चक्खु अस्सा ति अचक्खुकं। द्वारारम्मणानं सङ्घट्टनं द्वारा....प०....सङ्ट्टनं। पसादो[2] (२५६–सी०) वत्थुकं[2]। एसा ति कथा, होतीति पदे पकतिकत्ता। सम्भारेन दस्सनकारणेन सहिता ससम्भारा। ससम्भारा एव कथा ससम्भारकथा; ससम्भारस्स वा दस्सनकथा ससम्भारकथा। एत्था पि चक्खुना ति वचने। इतिसद्दो आहूति पदस्स आकारो। किलेसवत्थुभूतं ति किलेसानं कारणभूतं। पाकटीभावकरणतो ति पदं लद्ध इति पदे (म०–११९.) ततियाविसेसनं। यत्वा""प०""आदिम्हि वचने विनिच्छयो। एवं भूतो येव च पुग्गलो नाम""प०""इति वुच्चति भगवता। चसद्दो वाक्यारम्भो।

चक्खुन्द्रिये वा भवङ्गादीसु वा संवरो वा असंवरो वा नत्थि। जवने येव पन अत्थि। कस्मा सो चक्खुन्द्रिये असंवरो ति वुच्चतीति चोदनं सन्धायाह—तत्था ति आदि। तत्था

---

१. अग्घि–सी०। २-२. पसादो वत्थु अस्सा ति पसादवत्थुकं–सी०।

सन्तीरणकिच्चं, ततो किरियाहेतुकमनोविञ्ञाणधातु वोट्ठपनकिच्चं साधयमाना उप्पज्जित्वा निरुज्झति। तदनन्तरं जवनं जवति। तत्रा पि नेव भवंगसमये न आवज्जनादीनं अञ्ञतरसमये संवरो वा असंवरो वा अत्थि। जवनक्खणे पन दुस्सील्यं वा मुट्ठसच्चं वा अञ्ञाणं वा अक्खन्ति वा कोसज्जं वा उप्पज्जति, असंवरो होति। एवं होन्तो पन सो 'चक्खुन्द्रिये असंवरो' ति वुच्चति।

कस्मा ? यस्मा तस्मिं सतिद्वारं पि अगुत्तमेव होति, भवंगं पि; आवज्जनादीनि वीथिचित्तानि पि। यथा किं ? यथा नगरे चतूसु द्वारेसु असंवुतेसु किञ्चा पि अन्तो घरद्वार-कोट्ठक-गब्भादयो सुसंवुता, तथा पि अन्तो नगरे सब्बं भण्डं अरक्खितं अगोपितमेव होति। नगरद्वारेन हि पविसित्वा चोरा यदिच्छन्ति तं करेय्युं। एवमेव जवने दुस्सील्यादीसु उप्पन्नेसु तस्मिं असंवरे सति द्वारं पि अगुत्तं होति, भवंगं पि, आवज्जनादीनि पि वीथिचित्तानी ति। **सोतेन सद्दं सुत्वा ति** आदीसु पि एसेव नयो। **या इमेसं** ति एतं सवरं अनापज्जन्तस्स इमेसं **छन्नं इन्द्रियानं** या **अगुत्ति** या **अगोपना** यो **अनारक्खो** यो **असंवरो**, अ-थकनं, अ-पिदहनं ति अत्थो।

भोजने अमत्तञ्ञुतानिद्देसे [ध० २९०] **इधेकच्चो** ति इमस्मिं सत्तलोके एकच्चो। **अप्पटिसंखा** ति पटिसंखानपञ्ञाय अजानित्वा अनुपधारेत्वा। **अयोनिसो** ति अनुपायेन। **आहारं** ति असित-पीतादि-अज्झोहरणीयं। **आहारेती** ति परिभुञ्जति अज्झोहरति। **दवाया** ति आदि अनुपायदस्सनत्थं वुत्तं। अनुपायेन हि आहारेन्तो दवत्थाय मदत्थाय मण्डनत्थाय विभूसनत्थाय च आहारेति, नो इदमत्थितं पटिच्च। या तत्थ **असन्तुट्ठिता** ति या तस्मिं अयोनिसो आहारपरिभोगे असन्तुस्सना असन्तुट्ठिभावो। **अमत्तञ्ञुता** ति अमत्तञ्ञुभावो, पमाणसंखाताय मत्ताय अजाननं। **अयं वुच्चती** ति अयं अपच्चवेक्खितपरिभोगबसेन पवत्ता भोजने अमत्तञ्ञुता नाम वुच्चति।

ति न चक्खुन्द्रिये संवरं आपज्जतीति वचने। तत्था ति पदं एवं होन्तो....प०....वुच्चति एत्थ वुच्चतीति पदे आधारो। न हीति आदि दळ्हीकरणं। अपि चा ति अपरो नयो। ततो तदनन्तरं। तत्रा पी ति भवङ्गादीसु, निद्धारणं। दुतियनये वा, नेव नत्थीति पदे आधारो। अपिसद्दो न केवलं चक्खुन्द्रिये संवरादयो नत्थीति ञापेति। तस्मिं खणे दुस्सीलादयो अत्थीति आह—जवनक्खणे ति आदि। सो असंवरो।

तस्मिं ति असंवरे वीथिचित्तानि अगुत्तानि होन्तीति सम्बन्धो। यथा किं ति किमिवा ति अत्थो। नगरद्वारेन हीति आदि दळ्हीकरणं।

पटिसङ्खानं एव पञ्ञा पटिसङ्खानपञ्ञा। अनुपधारेत्वा ति अविचारेत्वा। अनुपायेन हीति दळ्हीकरणं[1]। इदमत्थितं पटिच्च आहारेती ति सम्बन्धो। अत्थो पयोजनं अस्स भिक्खुस्सा ति अत्थि। अत्थिनो भावो अत्थिता। इमिना आहारेन नित्थरणट्ठेन अत्थिता इदमत्थिता।

---

१. आदिदळ्ही०—सी०।

इन्द्रियेसु गुत्तद्वारता-निद्देसे [ध० २९०] **चक्खुना** ति आदि वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। **न निमित्तग्गाही होती** ति छन्दरागवसेन वुत्तप्पकारं निमित्तं न गण्हाति। एवं सेसपदानि पि वुत्तपटिपक्खनयेन वेदितब्बानि। यथा च हेट्ठा 'जवने दुस्सील्यादीसु उप्पन्नेसु तस्मिं असंवरे सति, द्वारं पि अगुत्तं होति, भवङ्गं पि, आवज्जनादीनि पि वीथिचित्तानी' ति वुत्तं, एवमिध तस्मिं सीलादीसु उप्पन्नेसु द्वारं पि गुत्तं होति, भवंगं पि, आवज्जनादीनि पि वीथिचित्तानि। यथा किं ? यथा नगरद्वारेसु संवुतेसु, किञ्चा पि अन्तो घरादयो असंवुता होन्ति, तथा पि अन्तो नगरे सब्बं भण्डं सुरक्खितं सुगोपितमेव होति—नगरद्वारेसु हि पिहितेसु चोरानं पवेसो नत्थि—एवमेव जवने सीलादीसु उप्पन्नेसु द्वारं पि गुत्तं होति, भवंगं पि, आवज्जनादीनि पि वीथिचित्तानि। तस्मा जवनक्खणे उप्पज्जमानो पि, 'चक्खुन्द्रिये संवरो' ति वुत्तो। **सोतेन सद्दं सुत्वा** ति आदीसु पि एसेव नयो।

भोजने मत्तञ्ञुतानिद्देसे [ध० २९०-२९१] **पटिसंखा योनिसो आहारं आहारेती** ति पटिसंखानपञ्ञाय जानित्वा उपायेन आहारं परिभुञ्जति। इदानि उपायं दस्सेतुं **नेव दवाया** ति आदि वुत्तं। तत्थ 'नेव दवाया' ति दवत्थाय न आहारेति। तत्थ नट-लंघकादयो दवत्थाय आहारेन्ति नाम। यं हि भोजनं भुत्तस्स नच्चगीतकब्बसिलोकसंखातो दवो अतिरेकतरेन पटिभाति, तं भोजनं अधम्मेन विसमेन परियेसित्वा ते आहारेन्ति। अयं पन भिक्खु न एवं आहारेति। **न मदाया** ति मानमदपुरिसमदानं वड्ढनत्थाय न आहारेति। तत्थ राज-राजमहामत्ता मदत्थाय आहारेन्ति नाम। तेहि अत्तनो मानमदपुरिसमदानं वड्ढनत्थाय पिण्डरसभोजनादीनि पणीत-

---

अपच्चवेक्खित''''प०''''वसेना ति अपच्चवेक्खितस्स आहारस्स परिभोगपटिबद्धेन।

हेट्ठा ति पदं वुत्तं ति पदे आधारो। इधा ति इन्द्रियेसु गुत्तद्वारतानिद्देसे, वुत्तो ति पदे आधारो। तस्मिं ति जवने। उप्पज्जमानो पि संवरो। अपिसद्दो चोदकस्स अरुचिसूचनत्थो।

तत्था ति नेव दवाया ति आदिपदेसु। तत्था ति पुग्गलेसु, निद्धारणं। नटो च लङ्घको च नटलङ्घका। नटलङ्घका आदयो येसं ते नटलङ्घकादयो। यं हीति आदि दळ्हीकरणं। हि सच्चं, भोजनं[1] भुत्तस्स जनस्स पटिभाति, कविनो इदं कब्यं। सिलोकनं (२५७—सी०) पसंसनं सिलोको। सिलोकति पसंसति एतेना ति वा सिलोको। 'सिलोक'-पसंसने। नच्चगीतञ्च[2] कब्यञ्च सिलोको च नच्चगी''''प०''''सिलोका। नच्च''''प०''''सिलोका इति सङ्खातो कथितो नच्च''''प०''''सङ्खातो। मदन्ति सत्ता एतेना ति मदो। मानो एव मदो मानमदो। पुरिसो इति पवत्तो मदो पुरिसमदो। मानमदो च पुरिसमदो च मानमदपुरिसमदा। तत्था ति पुग्गलेसु। तेहीति हि सच्चं, ते राजादयो। रसो तस्स अत्थीति रसं। भुञ्जितब्बं

---

१. यं भोजनं—सी०। २. नच्चं च गीतं च—सी०।

भोजनानि भुञ्जन्ति। अयं पन भिक्खु न एवं आहारेति। **न मण्डनाया** ति सरीरमण्डनत्थाय न आहारेति। तत्थ रूपूपजीविनियो मातुगामा अन्तेपुरिकादयो च सप्पिफाणितं नाम पिवन्ति, सिनिद्धं मुदुमन्दभोजनं आहारेन्ति 'एवं नो अंगुलट्ठि सुसण्ठिता भविस्सति, सरीरे छविवण्णो पसन्नो भविस्सती' ति। अयं पन भिक्खु एवं न आहारेति। **न विभूसनाया** ति मंसविभूसनत्थाय न आहारेति। तत्थ निब्बुद्धमल्ल-मुट्ठिकमल्ल-चेटकादयो सुसिनिद्धेहि मच्छमंसादीहि सरीरं पीणेन्ति 'एवं नो मंसं उस्सदं भविस्सति पहारसहनत्थाया' ति। अयं पन भिक्खु एवं सरीरे मंसविभूसनत्थाय न आहारेति।

यावदेवा ति आहाराहरणे पयोजनस्स परिच्छेदनियमदस्सनं। **इमस्स कायस्स ठितिया** ति इमस्स चतुमहाभूतिककरजकायस्स ठपनत्थाय आहारेति। इदमस्स आहाराहरणे पयोजनं ति अत्थो। **यापनाया** ति जीवितिन्द्रिययापनत्थाय आहारेति। **विहिंसूपरतिया** ति विहिंसा नाम अभुत्तपच्चया उप्पज्जनकखुदा। तस्सा उपरतिया वूपसमत्थाय आहारेति। **ब्रह्मचरियानुग्गहाया** ति ब्रह्मचरियं नाम तिस्सो सिक्खा, सकलं सासनं, तस्स अनुगण्हनत्थाय आहारेति। **इती** ति उपायनिदस्सनं; इमिना उपायेना ति अत्थो। **पुराणं च वेदनं पटिहंखामी** ति पुराणवेदना नाम अभुत्तपच्चया उप्पज्जनकवेदना। तं पटिहनिस्सामी ति आहारेति। **नवं च वेदनं न उप्पादेस्सामी** ति नववेदना नाम अतिभुत्तपच्चयेन उप्पज्जनकवेदना। तं न उप्पादेस्सामी ति

ति भोजनं। रसञ्च तं भोजनञ्चा ति रसभोजनं। पिण्डेत्वा सक्कार (म०–२२०)-सङ्खारादीनि[१] योजेत्वा[२] सक्काररसभोजनं[२] पिण्डरसभोजनं। पिण्डपलपक्कं वा रसभोजनं पिण्डरसभोजनं। रूपं उपनिस्साय जीवन्तीति रूपूपजीविनियो। अन्तेपुरे रञ्ञो अन्तोगेहे वसन्तीति अन्तेपुरिका। एवं नो ति एवम्पि[3] नोदहरणेन[३] नो अम्हाकं अङ्ग[४] अट्ठि[४] अङ्गानं सन्धि[५] हत्थपुटेसु[५]। निब्बुद्धञ्च[६] मल्लो च[६] मल्लचेटको च निब्बुद्ध....प०....चेटका[७]। पहारसहनत्थाया-ति पदं भविस्सतीति पदे सम्पदानं। इति एवं मनसिकारेन, पिण्डेहीति[८] पदे ततिया-विसेसनं।

परिच्छेदनियमदस्सनं ति परिच्छेदवसेन नियमदस्सनं। इदमस्सा ति पदं[९] पयोजनं अस्स भिक्खुनो। जीवितिन्द्रिययापनत्थाया ति जीवितिन्द्रियस्स पवत्ताय[१०]। विहिंसनं विहिंसा। उपरमनं उपरति। विहिंसाय उपरति विहिंसूपरति। चरितब्बं ति चरियं। ब्रह्मं सेट्ठं चरियं ब्रह्मचरियं। अनुग्गहणं अनुग्गहो। ब्रह्मचरियस्स अनुग्गहो ब्रह्मचरियानुग्गहो। तिस्सो

---

१. सक्कर०–सी०। २-२. ०पक्कं रसभोजनं। पिण्डं एव रसभोजनं–सी०। ३-३. एवम्पि वमानाहरणेन–सी०। ४-४. अङ्गुलट्ठि–सी०। ५-५. सन्धि तत्थ पुग्गलेसु–सी०। ६-६. निब्बुद्धमल्लो च मुट्ठिकलल्लो च–सी०। ७. ०चेतका–सी०। ८. पिण्डेतीति–सी०। ९. इदं–सी०। १०. पवत्तनत्थाय–सी०।

आहारेति। अथवा, 'नववेदना' नाम भुत्तपच्चयेन उप्पज्जनकवेदना। तस्सा अनुप्पन्नाय अनुप्पज्जनत्थमेव आहारेति। **यात्रा च मे भविस्सती** ति यापना च मे भविस्सति। **अनवज्जता चा** ति एत्थ अत्थि सावज्जं अत्थि अनवज्जं।

तत्थ अधम्मिकपरियेसना अधम्मिकपटिग्गहणं अधम्मेन परिभोगो ति इदं 'सावज्जं' नाम। धम्मेन परियेसित्वा धम्मेन पटिग्गहेत्वा पच्चवेक्खित्वा परिभुञ्जनं 'अनवज्जं' नाम। एकच्चो अनवज्जे एव सावज्जं करोति, 'लद्धं मे' ति कत्वा पमाणातिक्कन्तं भुञ्जति। तं पि जिरापेतुं असक्कोन्तो उद्धंविरेचन-अधोविरेचनादीहि किलमति। सकलविहारे भिक्खू तस्स सरीरपटिजग्गन-भेसज्जपरियेसनादीसु उस्सुकं आपज्जन्ति। 'किं इदं' ति वुत्ते 'असुकस्स नाम उदरं उद्धुमातं' ति आदीनि वदन्ति। 'एस निच्चकालं पि एवं-पकतिको येव, अत्तनो कुच्छिप्पमाणं नाम न जानाति' ति निन्दन्ति गरहन्ति। अयं अनवज्जे येव सावज्जं करोति नाम। एवं अकत्वा 'अनवज्जता च भविस्सती' ति आहारेति।

फासुविहारो चा ति एत्था पि अत्थि फासुविहारो अत्थि अफासुविहारो। तत्थ 'आहर-हत्थको अलं-साटको तत्थ-वट्टको काकमासको भुत्तवमितको ति इमेसं पञ्चन्नं ब्राह्मणानं भोजनं न फासुविहारो नाम। एतेसु हि 'आहरहत्थको' नाम बहुं भुञ्जित्वा अत्तनो धम्मताय उट्ठातुं असक्कोन्तो 'आहर हत्थं' ति वदति। 'अलं-

---

सिक्खा ब्रह्मचरियं नाम, सकलं[1] सासनं[1] ब्रह्मचरियं नाम। तस्स ब्रह्मचरियस्स अनुग्गहणत्थाय पुनप्पुनं निप्फादनत्थाय। तस्सा ति वेदनाय। यपनं पवत्तनं[2] यात्रा, चतुन्नं इरियापथानं अविच्छेदो[3], तस्स भावो अनवज्जता।

तत्था ति सावज्जानवज्जेसु। अधम्मेन पवत्ता अधम्मिका। अधम्मिका एव परियेसना अधम्मिकपरियेसना। अधम्मेन पवत्तनं अधम्मिकं। अधम्मिकं एव पटिग्गहणं (२५८–सी०) अधम्मिकपटिग्गहणं। इदं ति परियेसनादिकं। एकच्चो भिक्खु अनवज्जं येव अनिन्दितब्बं पच्चयं सावज्जं सनिन्दं परिभोगेन अत्तानं करोति। टीकायं पन[4] अनवज्जीति[5] पाठो दिस्सति। तं ति आहारं। तस्सा ति भिक्खुस्स। एसो भिक्खु एवंविधा पकति अस्सा ति एवंपकतिको।

विहरणं इरियापथानं पवत्तनं विहारो। फासुविहारो[6]। तत्था ति तेसु फासुविहारेसु। आहर हत्थं इति वदतीति आहारहत्थको। अलं अयुत्तसाटकं[7] निवासेतुं[8] अस्सा ति अलंसाटको। तस्मिं ठाने वट्टेतीति तत्थ-वट्टको। काकेहि मासितुं[9] सक्कुणेय्यं काकमासं, काकमासस्स भत्तस्स याव मुखद्वारा भुञ्जनं अस्सा ति काकमासको। भुत्तं वमेतीति भुत्त-

---

१-१. सकलसासनं–सी०। २. वत्तनं–सी०। ३. ०वज्जो गरहितब्बो ति वज्जो, न वज्जो अनवज्जो–सी०। ४. नत्थि–सी०। ५. अनवज्जेति–सी०। ६. सुखो विहारो फासुविहारो –सी०। ७. अयुत्तं साटकं–सी०। ८. निवारेतुं–सी०। ९. आमसितुं गण्हितुं–सी०।

साटको' नाम अच्चुद्धुमातकुच्छिताय उट्ठितो पि साटकं निवासेतुं न सक्कोति। 'तत्थ-वट्टको' नाम उट्ठातुं असक्कोन्तो तत्थेव परिवट्टति। 'काकमासको' नाम यथा काकेहि आमसितुं सक्का होति, एवं याव मुखद्वारा आहारेति। 'भुत्तवमितको' नाम मुखेन सन्धारेतुं असक्कोन्तो तत्थेव वमति। एवं अकत्वा 'फासुविहारो च मे भविस्सती' ति आहारेति। फासुविहारो नाम चतूहि पञ्चहि आलोपेहि ऊनूदरता। एत्तकं हि भुञ्जित्वा पानीयं पिवतो चत्तारो इरियापथा सुखेन पवत्तन्ति। तस्मा **धम्मसेनापति** एवमाह—

चत्तारो पञ्च आलोपे अभुत्वा उदकं पिवे।
अलं फासुविहाराय पहितत्तस्स भिक्खुनो [खु०नि० २ : ३६६ थेर०] ति॥

इमस्मिं पन ठाने अंगानि समोधानेतब्बानि। 'नेव दवाया' ति एकं अंगं, 'न मदाया' ति एकं, 'न मण्डनाया' ति एकं, 'न विभूसनाया' ति एकं, 'यावदेव इमस्स कायस्स ठितिया यापनाया' ति एकं, 'विहिंसूपरतिया ब्रह्मचरियानुग्गहाया' ति एकं, 'इति पुराणं च वेदनं पटिहंखामि नवं च वेदनं न उप्पादेस्सामी' ति एकं, 'यात्रा च मे भविस्सती' ति एकं। अनवज्जता च फासुविहारो चा ति अयमेत्थ भोजनानिसंसो। **महासीवत्थेरो** पनाह—हेट्ठा चत्तारि अंगानि पटिपक्खो नाम। उपरि पन अट्ठ अंगानि समोधानेतब्बानि—तत्थ 'यावदेव इमस्स कायस्स ठितिया' ति एकं अंगं, 'यापनाया' ति एकं, 'विहिंसूपरतिया ति' एकं, 'ब्रह्मचरियानुग्गहाया' ति एकं, 'इति

वमितको। एतेसु हीति आदिवित्थारो, हि सच्चं, एतेसु ब्राह्मणेसु। धम्मताया ति पकतिया। तत्थेवा ति भुञ्जनट्ठाने। आलोपेहीति पदं ऊन इति पदे ततियाविसेसनं। ऊनं उदरं यस्स सो ऊनुदरो, ऊनुदरस्स भावो ऊनुदरता। एत्तकं भुञ्जित्वा चतुपञ्चालोपानं अभुञ्जनं किं फलं ति आह—(म०—२२१) एत्तकं हीति आदि। हि सच्चं, एत्तकं आहारं भुञ्जित्वा[1] पानीयं पिवतो पिवन्तस्स भिक्खुनो।

भिक्खु चत्तारो पञ्च आलोपे अभुत्वा उदकं पिवे पिवेय्य। तं चतुपञ्चालोपे अभुत्वा उदकस्स पिवनं पहितत्तस्स कम्मट्ठाने पवत्तितचित्तस्स भिक्खुनो फासुविहाराय सुखविहाराय अलं युत्तं।

अभुत्वा ति एत्थ अकारो पटिसेधत्थवाचको, तस्मा अभुञ्जित्वा ति अत्थो, तेनेव **संयुत्तट्ठकथायं** वुत्तं चतुन्नं पञ्चन्नं आलोपानं ओकासे सति उदकं पिवित्वा यापनसीलताय भोजने मत्तञ्ञुनो पि, तेन वुत्तं चत्तारो पञ्च आलोपे....प०....पहितत्तस्स भिक्खुनो ति। **टीकायं** पन भुत्वाना ति पन पाठो ति वुत्तं। **थेरगाथायम्पि**[2] अभुत्वा इति अत्थो ति **धम्मपालाचरियेन** वुत्तं, अकारो तब्भावे वत्तति।

अङ्गानीति भोजनस्स कारणानि। एत्था ति आहाराहरणे। भोजनस्स आनिसंसो

---

१. अभुञ्जित्वा—सी०। २. थेरकथायं पि—सी०।

पुराणं च वेदनं पटिहंखामी' ति एकं, 'नवं च वेदनं न उप्पादेस्सामी' ति एकं, 'यात्रा च मे भविस्सती' ति एकं, 'अनवज्जता' चा ति एकं। फासुविहारो पन भोजनानिसंसो ति। एवं अट्ठंगसमन्नागतं आहारं आहारेन्तो भोजने मत्तञ्ञू नाम होति। **अयं वुच्चती** ति अयं परियेसन-पटिग्गहण-परिभोगेसु युत्तप्पमाणजाननवसेन पवत्तो पच्चवेक्खितपरिभोगो भोजने मत्तञ्ञुता नाम।

मुट्ठसच्चनिद्देसे [ध० २९१] **असती** ति सतिविरहिता चत्तारो खन्धा। **अननुस्सति अप्पटिस्सती** ति उपसग्गवसेन पदं वड्ढितं। **असरणता** ति असरणाकारो। **अधारणता** ति धारेतुं असमत्थता। ताय हि समन्नागतो पुग्गलो अधारणप्पत्तो निधानक्खमो न होति। उदके अलाबुकटाहं विय आरम्मणे पिलवती ति **पिलापनता। सम्मुस्सनता** ति नट्ठमुट्ठस्सतिता। ताय हि समन्नागतो पुग्गलो निक्खित्तमत्तो विय काको, निक्खित्तमंसो विय च सिगालो होति। भावनाबलनिद्देसे [ध० २९१] **कुसलानं धम्मानं** ति बोधिपक्खियधम्मानं। **आसेवना** ति आदिसेवना। भावना ति वड्ढना। बहुलीकम्मं ति पुनप्पुनं करणं।

सीलविपत्तिनिद्देसो [ध०२९२] सीलसम्पदा-निद्देस-[ध० २९२] पटिपक्खतो वेदितब्बो। दिट्ठिविपत्तिनिद्देसो [ध० २९२] च दिट्ठिसम्पदापटिपक्खतो [ध० २९२–२९३]। दिट्ठिसम्पदानिद्देसो दिट्ठुपादाननिद्देस-[ध० २६७]-पटिपक्खतो। सीलविसुद्धि निद्देसो [ध० २९३] किञ्चा पि सीलसम्पदानिद्देसेन [ध० २९२] समानो, तत्थ पन विसुद्धिसम्पापकं पातिमोक्खसंवरसीलं कथितं, इध विसुद्धिप्पत्तं सीलं। सति च सम्पजञ्ञं च, पटिसंखानबलं च भावनाबलं च, समथो च विपस्सना च, समथनिमित्तं च पग्गाहनिमित्तं च, पग्गाहो च अविक्खेपो च, सीलसम्पदा च दिट्ठिसम्पदा चा ति इमेहि पन छहि दुकेहि चतुभूमिका पि लोकियलोकुत्तरधम्मा व कथिता।

फलं भोजनानिसंसो। तत्था ति अट्ठसु अङ्गेसु।

ताय हीति आदि दळ्हीकरणं। हि सच्चं, ताय अधारणताय। निधाने खमो निधानक्खमो[1]। मुसियति पटिपक्खेहि अभिभवियतीति **मुट्ठा**। मुस-हिंसायं। नट्ठा च सा मुट्ठा चा ति नट्ठमुट्ठा। नट्ठमुट्ठा सति[2] नट्ठमुट्ठस्सति। नट्ठमुट्ठस्सतिया[3] भावो नट्ठमुट्ठस्सतिता। ताय हीति हि सच्चं। ताय नट्ठमुट्ठस्सतिताय निक्खित्तं भत्तं येन सो निक्खित्तभत्तो।

दिट्ठु[4]....प०....पटिपक्खतो ति वेदितब्बो ति सम्बन्धो। तत्था ति सीलसम्पदानिद्देसे। विसुद्धि सम्पापेतीति विसुद्धिसम्पापकं। पातिमोक्खसंवरो एव सीलं पाति····प०···· सीलं। विसुद्धिसम्पापकञ्च तं पातिमोक्खसंवरसीलञ्चा ति विसुद्धि....प०....सीलं। इधा ति सीलविसुद्धिनिद्देसे। विसुद्धिभावं पत्तं विसुद्धिपत्तं।

---

१. ०नस्सतीति (२५९–सी०) नट्ठा–सी०। २. ०यस्स सो–सी०। ३. नट्ठमुट्ठसतिस्स–सी०। ४. दिट्ठि–सी०।

दिट्ठिविसुद्धिनिद्देसे [ध० २९३] **कम्मस्सकतं ञाणं** ति 'इदं कम्मं सकं, इदं नो सकं' ति जाननपञ्ञा। तत्थ अत्तना वा कतं होतु परेन वा सब्बं पि अकुसलकम्मं नो सकं। कस्मा ? अत्थभञ्जनतो अनत्थजननतो च। कुसलकम्मं पन अनत्थभञ्जनतो अत्थजननतो च 'सकं' नाम। तत्थ यथा नाम सधनो सभोगो पुरिसो अद्धानमग्गं पटिपज्जित्वा अन्तरामग्गे गामनिगमादीसु नक्खत्ते संघुट्ठे 'अहं आगन्तुको, किं नु खो निस्साय नक्खत्तं कीळेय्यं' ति अचिन्तेत्वा यथा यथा इच्छति तेन तेन नीहारेन नक्खत्तं कीळन्तो सुखेन कन्तारं अतिक्कमति, एवमेव इमस्मिं कम्मस्सकतञाणे ठत्वा इमे सत्ता वहुं। वट्टगामिकम्मं आयूहित्वा सुखेन सुखं अनुभवन्ता अरहत्तं पत्ता गणनपथं वीतिवत्ता। **सच्चानुलोमिकञाणं** [ध० २९३] ति चतुन्नं सच्चानं अनुलोमं विपस्सनाञाणं। **मग्गसमङ्गिस्स ञाणं फलसमङ्गिस्स ञाणं** ति मग्गञाण-फलञाणानि येव।

'दिट्ठिविसुद्धि खो पना' ति पदस्स निद्देसे **या पञ्ञा पजानना** ति आदीहि पदेहि हेट्ठा वुत्तानि कमस्सकतञाणादीनेव चत्तारि ञाणानि विभत्तानि। 'यथादिट्ठिस्स च पधानं' [ध० २९३] ति पदस्स निद्देसे **यो चेतसिको विरियारम्भो** ति आदीहि पदेहि निद्दिट्ठं विरियं पञ्ञागतिकमेव; पञ्ञाय लोकियट्ठाने लोकियं लोकुत्तरट्ठाने लोकुत्तरं ति वेदितब्बं।

संवेगदुकनिद्देसे [ध० २९३] **जातिभयं** ति जातिं भयतो दिस्वा ठितञाणं। **जराभयादीसु** पि एसेव नयो। **अनुप्पन्नानं पापकानं** ति आदीहि जाति-आदीनि भयतो दिस्वा जातिजराब्याधिमरणेहि मुच्चितुकामस्स उपायपधानं कथितं। पदभाजनियस्स पन अत्थो **विभंगट्ठकथायं** आविभविस्सति।

'असन्तुट्ठिता च कुसलेसु धम्मेसू' [ध० २९३] ति पदनिद्देसे **भिय्योकम्यता** विसेसकामता। इधेकच्चो आदितो व पक्खियभत्तं वा सलाकभत्तं वा उपोसथिकं वा पाटिपदिकं वा देति, सो तेन असन्तुट्ठो हुत्वा पुन धुरभत्तं संघभत्तं वस्सावासिकं देति, आवासं कारेति, चत्तारो पि पच्चये देति। तत्रा पि असन्तुट्ठो हुत्वा सरणानि

तत्था ति कम्मद्वये, निद्धारणं। परेन वा कतं होतु। तत्था ति कम्मद्वये[1]। इमस्मिं कम्मस्सकतञाणे ति पदं निद्धारणीयं। भुञ्जितब्बा ति भोगा। सह भोगेहि वत्ततीति सभोगो। गामनिगमादीसू ति पदं संघुट्ठे ति[2] पदे आधारो[3]। नक्खत्तकीळनत्थं[3] घोसकरणो[4]।

पञ्ञागतिकमेव ति पञ्ञासदिसमेव। वीरियस्स पञ्ञासदिसभावं ञापेन्तो आह—पञ्ञा ति आदि। पञ्ञालोकियट्ठाने[5] वीरियं लोकियं।

आदीहि वचनेहीति पदं कथितं ति पदे करणं। उपायपधानं[6] ति कारणभूतं वीरियं[6]।

विसेसकामतं ञापेन्तो इधेकच्चो ति आदिमाह। इध लोके, एकच्चो पुग्गलो आदितो

---

१. ०निद्धारणं–सी०। २. घुट्ठेति–सी०। ३-३. नक्खत्तं घुट्ठेति नक्खत्तकीलनत्थं–सी०। ४. घोसकरणे–सी०। ५. पञ्ञाय लोकियट्ठाने–सी०। ६-६. भूतवीरियं–म०।

गण्हाति, पञ्च सीलानि **समादियति**। तत्रा पि असन्तुट्ठो हुत्वा पब्बजति। पब्बजित्वा एकं निकायं द्वे निकाये ति तेपिटकं बुद्धवचनं गण्हाति, अट्ठ समापत्तियो भावेति, विपस्सनं वड्ढेत्वा अरहत्तं गण्हाति। अरहत्तप्पत्तितो पट्ठाय महासन्तुट्ठो नाम होति। एवं याव अरहत्ता **विसेसकामता** 'भिय्योकम्यता' नाम।

'अप्पटिवानिता च पधानस्मिं' [ध० २९४] ति पदनिद्देसे यस्मा पन्तसेनासनेसु अधिकुसलानं धम्मानं भावनाय उक्कण्ठमानो पधानं पटिवापेति नाम, अनुक्कण्ठमानो पटिवापेति नाम, तस्मा तं नयं दस्सेतुं **या कुसलानं धम्मानं** ति आदि वुत्तं। तत्थ **सक्कच्चकिरियता** ति कुसलानं करणे सक्कच्चकारिता। **सातच्चकिरियता** ति सततमेव करणं। **अट्ठितकिरियता** ति खण्डं अकत्वा अट्ठपेत्वा करणं। **अनोलीनवुत्तिता** ति अलीनजीविता, अलीनप्पवत्तिता वा। **अनिक्खित्तच्छन्दता** ति कुसलच्छन्दस्स अनिक्खिपनं। **अनिक्खित्तधुरता** ति कुसलकरणे विरियधुरस्स अनिक्खिपनं।

'पुब्बेनिवासानुस्सति-ञाणं विज्जा' [ध० २९४] ति एत्थ पुब्बे-निवासो ति पुब्बेनिवुत्थक्खन्धा च खन्धपटिबद्धं च। पुब्बेनिवासस्स अनुस्सति पुब्बेनिवासानुस्सति। ताय सम्पयुत्तं ञाणं **पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणं**। तयिदं पुब्बे-निवुत्थक्खन्धपटिच्छादकं तमं विज्झती ति **विज्जा**। तं तमं विज्झित्वा ते खन्धे विदिते पाकटे करोती ति विदितकरणट्ठेन पि विज्जा। **चुतूपपाते ञाणं** ति चुतियं च उपपाते च ञाणं। इदं पि सत्तानं चुतिपटिसन्धिच्छादकं तमं विज्झती ति पि विज्जा। तं तमं विज्झित्वा सत्तानं चुतिपटिसन्धियो विदिता पाकटा करोती ति विदितकरणट्ठेन पि विज्जा। **आसवानं खये ञाणं** ति सब्बकिलेसानं खयवये ञाणं। तयिदं चतुसच्चच्छादकं तमं विज्झती ति पि विज्जा। तं तमं विज्झित्वा चत्तारि सच्चानि विदितानि पाकटानि करोती ति विदितकरणट्ठेन पि विज्जा।

'चित्तस्स च अधिमुत्ति, निब्बानं चा' [ध० २९४] ति एत्थ आरम्मणे

वा ति आदिम्हि एव। सो ति पुग्गलो। तेन पक्खिकभत्तादिदानेन मम घरं धुरं पट्ठानं कत्वा (म०-२२२) भिक्खुं पविसथा ति दियमानं भत्तं धुरभत्तं। अथवा सयं धुरं हुत्वा दिन्नभत्तं धुरभत्तं। तत्रा पी ति धुरभत्तादीसु। तत्रा पी ति सरणादीसु।

पन्तसेनासनेसू ति परियन्तसेनासनेसु। अधिकुसलानं ति अधिककुसलानं उत्तमकुसलानं। भावनाय वड्ढनाय। उक्कण्ठमानो अतुट्ठमानो। पधानं ति वीरियं। तत्था ति सक्कच्चक्रियता ति आदिपदेसु। अलीनपवत्तिता ति इदं निलीनजीविता ति पदस्स विवरणं।

विज्जा ति एत्थ वचने। पुब्बे निवासो ति पुब्बेनिवासो नाम। इतिसद्दो नामवाचको। तयिदं ति तं इदं पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणं। इदम्पीति ञाणं।

एत्थ[1] चा ति[1] वचने, अधिमुत्तिनामा ति पदे आधारो। अधिकं मुच्चनं पक्खन्दनं

१-१. एत्था ति–सी०।

अधिमुच्चनट्ठेन, पच्चनीकधम्मेहि च सुट्ठु-मुत्तट्ठेन अट्ठ समापत्तियो **चित्तस्स अधिमुत्ति** नाम। इतरं पन 'नत्थि एत्थ तण्हासंखातं वानं,' 'निग्गतं वा तस्मा वाना' ति निब्बानं। तत्थ अट्ठ समापत्तियो सयं विक्खम्भितकिलेसेहि विमुत्तत्ता विमुत्ती ति वुत्ता, निब्बानं पन सब्बकिलेसेहि अच्चन्तविमुत्तत्ता विमुत्ती ति।

मग्गसमङ्गिस्स ञाणं ति [ध० २९४] चत्तारि मग्गञाणानि। **फलसमङ्गिस्स ञाणं** [ध० २९४] ति चत्तारि फलञाणानि। तत्थ पठममग्गञाणं पञ्च किलेसे खेपेन्तं निरोधेन्तं वूपसमेन्तं पटिप्पस्सम्भेन्तं उप्पज्जती ति **खये ञाणं** नाम जातं। दुतियमग्गञाणं चत्तारो किलेसे। तथा ततियमग्गञाणं। चतुत्थमग्गञाणं पन अट्ठ किलेसे खेपेन्तं निरोधेन्तं वूपसमेन्तं पटिप्पस्सम्भेन्तं उप्पज्जती ति 'खये ञाणं' नाम जातं। तं तं मग्गफलञाणं पन तेसं तेसं किलेसानं खीणन्ते निरुद्धन्ते वूपसमन्ते पटिपस्सम्भन्ते अनुप्पादन्ते अप्पवत्तन्ते उप्पन्नं ति **अनुप्पादे ञाणं** [ध० २९४] नाम जातं ति।

अट्ठसालिनिया धम्मसंगहट्ठकथाय

निक्खेपकण्डवण्णना निट्ठिता।

अधिमुच्चनं, यथासुखं पवत्तनं ति अधिप्पायो। अधिमुच्चनं एव अत्थो (२६०–सी०) अधिमुच्चनट्ठो। चसद्दो अधिमुच्चनट्ठेन च सुट्ठु मुत्तट्ठेन चा ति योजेतब्बो। एत्थ[1] निब्बाने तण्हासङ्खातं वानं नत्थि। वा अपरो नयो—निब्बानं तस्मा वाना निग्गतं इति तस्मा इतरं पन निब्बानं नामा ति सम्बन्धो। तत्था ति[2] अट्ठसमापत्तिनिब्बानेसु।

तत्था ति मग्गञाणफलञाणेसु। तं तं मग्गफलञाणं ति तेसं तेसं मग्गानं फलभूतं ञाणं। खीणानं किलेसानं अन्तो अवसानं खीणन्ते[3]। खीणन्ते सति उप्पन्नं ति सम्बन्धो। अप्पवत्ते ति पदं अनुप्पादे ति पदस्स अत्थविवरणं।

निक्खेपकण्डं निट्ठितं।

---

१. एत्था ति–सी०। २. एत्था ति–सी०। ३. खीणन्तो–सी०।

६

अट्ठकथाकण्डवण्णना

इदानि **निक्खेपकण्डा**नन्तरं ठपितस्स **अट्ठकथाकण्डस्स वण्णनाक्कमो** अनुप्पत्तो। कस्मा पनेतं **अट्ठकथाकण्डं** नाम जातं ति? **तेपिटकस्स** बुद्धवचनस्स अत्थं उद्धरित्वा ठपितत्ता। तीसु पि हि **पिटकेसु** धम्मन्तरं आगतं **अट्ठकथाकण्डेनेव** परिच्छिन्दित्वा विनिच्छितं सुविनिच्छितं नाम होति। सकले **अभिधम्मपिटके** नयमग्गं **महापकरणे** पञ्हुद्धारं गणनवारं असंल्लक्खेन्तेना पि **अट्ठकथाकण्डतो** येव समानेतुं वट्टति। कुतोपभवं पनेतं? **सारिपुत्तत्थेरप्पभवं**। **सारिपुत्तत्थेरो** हि एकस्स **अत्तनो** सद्धिविहारिकस्स **निक्खेपकण्डे** अत्थुद्धारं सल्लक्खेतुं असक्कोन्तस्स **अट्ठकथाकण्डं** कथेत्वा अदासि।

इदं पन **महा**-अट्ठकथाय पटिक्खिपित्वा इदं वुत्तं—**अभिधम्मो नाम** न सावकविसयो, न सावकगोचरो; बुद्धविसयो एस, बुद्धगोचरो। **धम्मसेनापति** पन सद्धि-

---

६–अट्ठकथाकण्डवण्णना

कस्मा पन एतं कण्डं····प०····जातं ति पुच्छा। तेपिटकस्स····प०····थपितत्ता एतं कण्डं अट्ठकथाकण्डं नाम जातं ति सम्बन्धो। बुद्धवचनस्स अत्थं उद्धरित्वा थपितभावं पाकटं करोन्तो तीसू ति आह[1]। हि सच्चं, तीसु पिटकेसु सरूपवसेन अनागतं धम्मन्तरं सुविनिच्छितं नाम होतीति सम्बन्धो। अभिधम्मपिटके ति पदं नयमग्गं ति पदे अधारो। नयमग्गं ति पदं असल्लक्खेन्तेना ति पदे कम्मं। महापकरणे ति पदं पञ्हुद्धारं गणनचारं ति पदद्वये आधारो। पञ्हुद्धारं गणनचारं ति पदद्वयं असल्लक्खेन्तेना ति[2] पदे कम्मं। उद्धरणं उद्धारो। पञ्हेसु लब्भमानस्स उद्धारो पञ्हुद्धारो। चरणं पवत्तनं चारो। गणनस्स चारो गणनचारो। अपिसद्देन न केवलं सल्लक्खेन्तेन[3] समानेतुं वट्टतीति आपेति। अट्ठकथाकण्डतो (म०–२२३) येवा ति पदं समानेतुं ति पदे अपादानं। समानेतुं ति समानं कातुं। कुतो····प०···· एतं अट्ठकथाकण्डं ति पुच्छा। कुतो पभवतीति कुतोपभवं, अलुत्तसमासो। सारिपुत्त····प०····भवं। अट्ठकथाकण्डं। अट्ठकथाकण्डस्स थेरप्पभवभावं ञापेन्तो सारिपुत्तो ति आदिमाह। सद्धिविहारिकस्सा ति पदं कथेत्वा अदासीति पदे सम्पदानं। निक्खेपकण्डे ति पदं उद्धारं ति पदे आधारो। उद्धरणं उद्धारो। इमे नाम चित्तुप्पादादयो अत्था कुसलादिका ति उद्धारो[4]।

इदं पन हेट्ठा (२६१–सी०) वुत्तवचनं····प०····अभिधम्मो नामा ति आदिकं वुच्चमान-

---

१. आदिमाह–सी०। २. सल्लेक्खेन्तेना ति–सी०। ३. सल्लक्खेन्तो न–म०। ४. ०अत्थुद्धारो–सी०।

विहारिकेन पुच्छितो तं आदाय **सत्थु** सन्तिकं गन्त्वा **सम्मासम्बुद्धस्स** कथेसि। **सम्मासम्बुद्धो** तस्स भिक्खुनो **अट्ठकथाकण्डं** कथेत्वा अदासि। कथं? **भगवा** हि 'कतमे धम्मा कुसला' [ध० २९५] ति पुच्छि। 'कुसला धम्मा नाम कतमे' ति सल्लक्खेसी ति अत्थो। अथ'स्स तुण्हीभूतस्स 'ननु यं मया कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होती [ध० १८] ति आदिना नयेन-भूमिभेदतो कुसलं दस्सितं, सब्बं पि तं **चतूसु भूमीसु कुसलं, इमे धम्मा कुसला'** [ध० २९५] ति इमिना नयेन कण्णिकं कण्णिकं घटं घटं गोच्छकं गोच्छकं कत्वा अत्थु-द्धारवसेन कुसलादिधम्मे दस्सेन्तो कथेत्वा अदासि। तत्थ **चतूसू** ति कामावचर-रूपावचर-अरूपावचर-अपरियान्नेसु। **कुसलं** ति फस्सादिभेदं कुसलं। **इमे धम्मा कुसला** ति सब्बे पि तासु भूमीसु वुत्ता फस्सादयो धम्मा कुसला नाम।

अकुसलानं पन भूमिवसेन भेदाभावतो **द्वादस अकुसलचित्तुप्पादा** [ध० २९५] ति आह। तत्थ उप्पज्जती ति उप्पादो। चित्तमेव उप्पादो चित्तुप्पादो। देसनासीस-मेव चेतं। यथा पन 'राजा आगतो' ति वुत्ते अमच्चादीनं पि आगमनं वुत्तमेव होति, एवं 'चित्तुप्पादा' ति हि वुत्ते तेहि सम्पयुत्तधम्मा पि वुत्ता व होन्ती ति। सब्बत्थ चित्तुप्पादग्गहणेन स-सम्पयुत्तधम्मं चित्तं गहितं ति वेदितब्बं। इतो-परं **चतूसु भूमीसु विपाको** [ध० २९५] ति आदीनं सब्बेसं पि तिकदुकभाजनीयपदानं अत्थो, वेदनातिकादीसु च सुखादीनं न-वत्तब्बता हेट्ठा वुत्तनयेनेव पालियत्थं वीमंसित्वा वेदितब्बा। विसेसमत्तमेव पन वक्खाम।

वचनं आचरियेहि वुत्तं। एसा ति अभिधम्मो। तं सद्धिविहारिकं[1] कुसला····प०····इति त्वं सल्लक्खेसी ति अत्थो अधिप्पायो। अथस्सा ति तदा तुण्हीभूतस्स अस्स भिक्खुनो। अस्सा ति पदं कथेत्वा अदासीति पदे सम्पदानं। यं कुसलं मया ननु दस्सितं ति सम्बन्धो। नयेना ति पदं दस्सितं ति पदे करणं। भूमिभेदतो ति पदं दस्सितं ति पदे ततियाविसेसनं। तं ति कुसलं, कत्वा ति पदे पकतिकम्मं। कण्णिकं ति समूहं, कत्वा ति पदे पकतिकम्मं। घटं ति समूहं। गोच्छकं ति समूहं। अत्थुद्धारवसेना ति पदं दस्सेन्तो ति पदे ततियाविसेसनं। तत्था ति चतूसु आदिपदेसु, निद्धारणं।

तत्था ति अकुसलचित्तुप्पादा ति वचने विनिच्छयो वेदितब्बो। ननु ससम्पयुत्तचित्तं[2] उप्पज्जति, कस्मा पन चित्तमेव चित्तुप्पादो ति वुत्तं ति? आह—देसनासीसमेव चेतं ति। देसनाय पट्ठानमेव[3] च एतं चित्तं ति अत्थो। चित्तस्स देसना पट्ठानभावं साधेन्तो यथात्यादि-माह। इतोति तस्मा, गहितं ति पदे हेतु। सब्बत्था ति सब्बेसु ठानेसु, गहितं ति पदे आधारो। इतो ति अकुसलचित्तुप्पादा ति पदतो। वेदनातिकादीसू ति पदं सुखादीनं ति पदे आधारो। चसद्दो अत्थो च न-वत्तब्बता ति[4] योजेतब्बो।

---

१. सद्धि विहारिकं—सी०। २. सम्पयुत्तं चित्तं—सी०। ३. पधानमेव—सी० सब्बत्थ। ४. वत्तब्बथा ति—सी०।

तत्थ परित्तारम्मणत्तिके [ध० ३००] ताव **सब्बो कामावचरस्स विपाको** ति एत्थ द्वे पञ्च-विञ्ञाणानि चक्खुप्पसादादयो निस्साय नियमेनेव इट्ठानिट्ठादिभेदे रूपसद्दगन्धरसफोट्ठब्बधम्मे आरब्भ पवत्तन्ती ति परित्तारम्मणानि। कुसलाकुसलविपाका पन द्वे मनोधातुयो हृदयवत्थुं निस्साय चक्खुविञ्ञाणादीनं अनन्तरा नियमतो रूपादीनेव आरब्भ पवत्तन्ती ति परित्तारम्मणा। कुसलविपाकाहेतुकमनोविञ्ञाणधातु सोमनस्ससहगता पञ्चद्वारे सन्तीरणवसेन छसु द्वारेसु तदारम्मणवसेना ति निमयतो रूपादीनि छ परित्तारम्मणानेव आरब्भ पवत्तती ति परित्तारम्मणा। उपेक्खासहगत-कुसलाकुसलविपाकाहेतुकमनोविञ्ञाणधातुद्वयं पञ्चद्वारे सन्तीरणवसेन छसु द्वारेसु तदारम्मणवसेन नियमतो रूपादीनि छ परित्तारम्मणानेव आरब्भ पवत्तति। पटिसन्धिवसेन पवत्तमानं पि परित्तं कम्मं कम्मनिमित्तं गतिनिमित्तं वा आरम्मणं करोति, पवत्तियं भवङ्गवसेन, परियोसाने चुतिवसेन पवत्तमानं पि तदेव आरम्मणं करोती ति परित्तारम्मणं। अट्ठ पन सहेतुकविपाकचित्तुप्पादा एत्थ वुत्तनयेनेव तदारम्मणवसेन पटिसन्धि-भवंग-चुतिवसेन च परित्तधम्मे येव आरब्भ पवत्तन्ति। **किरिया मनोधातु** [ध० ३००] पञ्चद्वारे रूपादीनि आरब्भ पवत्तति। **सोमनस्ससहगता अहेतुक-किरिया-मनोविञ्ञाणधातु** छसु द्वारेसु पच्चुप्पन्ने मनोद्वारे अतीतानागते पि परित्ते रूपादिधम्मे येव आरब्भ खीणासवानं पहट्ठाकारं कुरुमाना पवत्तती ति परित्तारम्मणा। एवमिमे पञ्चवीसति चित्तुप्पादा एकन्तेनेव परित्तारम्मणा ति वेदितब्बा।

विञ्ञाणञ्चायतन-नेवसञ्ञानासञ्ञायतन-धम्मा अत्तनो अत्तनो हेट्ठिमसमापत्तिं आरब्भ पवत्तनतो **महग्गतारम्मणा** [ध० ३००]। **मग्ग-फल**-धम्मा निब्बानारम्मणत्ता **अप्पमाणारम्मणा** [ध०३००]। कुसलतो चत्तारो किरियतो चत्तारो ति अट्ठ **ञाणविप्पयुत्तचित्तुप्पादा** सेक्ख-पुथुज्जन-खीणासवानं असक्कच्चदान-पच्चवेक्खण-धम्मस्सवनादीसु कामावचरधम्मे आरब्भ पवत्तनकाले परित्तारमणा। अतिपगुणानं पठमज्झानादीनं पच्चवेक्खणकाले महग्गतारम्मणा। कसिणनिमित्तादिपण्णत्तिपच्च-

---

तत्था ति तिकेसु, निद्धारणं। परित्तारम्मणत्तिके ताव विनिच्छयो वेदितब्बो। कामा····प०····विपाको ति एत्थ वचने वुत्तानि द्वे पञ्चविञ्ञाणानि। सन्तीरणवसेन पवत्तति। छसु····प०····वसेन पवत्तति। इतीति एवं, पवत्ततीति पदे आकारो[1]। सन्तीरणकिच्चेन[2]। तदेवा ति परित्तारम्मणादि। एत्था ति उपेक्खासहगतसन्तीरणद्वये, वुत्तं इति पदे आधारो। वुत्तनयेनेवा ति पदं पवत्तन्तीति पदे ततियाविसेसनं।

असक्कच्च····प०····दीसू ति असक्कच्चदान-असक्कच्चपच्चवेक्खण-असक्कच्चधम्मसवनादीसु। (म०–२२४) पवत्ततीति पदे आधारो। परामसनस्सादनाभिनन्दनाकाले ति[3]

---

१. आधारो–सी०। २. सन्तीरणवसेना ति सन्तीरणकिच्चेन–सी०। ३. परामसनअस्सादनाभिनन्दनकाले ति–सी०।

वेक्खणकाले न-वत्तब्बारम्मणा। अकुसलतो चत्तारो दिट्ठिगतसम्पयुत्तचित्तुप्पादा पञ्चपण्णासाय कामावचरधम्मानं 'सत्तो सत्तो' ति परामसन-अस्सादनाभिनन्दनकाले परित्तारम्मणा। तेनेव आकारेन सत्तवीसत्ति महग्गते धम्मे आरब्भ पवत्तिकाले महग्गतारम्मणा। पण्णत्तिधम्मे आरब्भ पवत्तनकाले सिया न-वत्तब्बारम्मणा। दिट्ठिविप्पयुत्तानं ते येव धम्मे आरब्भ केवलं अस्सादनाभिनन्दनवसेन, पवत्तियं पटिघ-सम्पयुत्तानं दोमनस्सवसेन, विचिकिच्छाय सम्पयुत्तचित्तुप्पादस्स अ-निट्ठं-गतवसेन, उद्धच्चसहगतस्स विक्खेपवसेन अवूपसमवसेन च पवत्तियं परित्त-महग्गत-न-वत्तब्बा-रम्मणता वेदितब्बा। एतेसु पन एकधम्मो पि अप्पमाणे आरब्भ पवत्तितुं न सक्कोति, तस्मा न अप्पमाणारम्मणा।

कुसलतो चत्तारो किरियतो चत्तारो ति अट्ठ **ञाणसम्पयुत्तचित्तुप्पादा** [ध० ३००] सेक्खपुथुज्जनखीणासवानं सक्कच्चदान-पच्चवेक्खण-धम्मस्सवनादीसु यथावुत्तप्पकारे धम्मे आरब्भ पवत्तिकाले परित्त-महग्गत-न-वत्तब्बारम्मणा होन्ति। गोत्रभूकाले पन लोकुत्तरधम्मं पच्चवेक्खणकाले च नेसं अप्पमाणारम्मणता वेदितब्बा। यं पनेतं **रूपावचरचतुत्थज्झानं** [ध० ३००] तं सब्बत्थ-पादक-चतुत्थं आकास-कसिणचतुत्थं आलोककसिणचतुत्थं ब्रह्मविहारचतुत्थं आनापानचतुत्थं इद्धिविधचतुत्थं दिब्बसोतचतुत्थं चेतोपरियञाणचतुत्थं यथाकम्मूपगञाणचतुत्थं दिब्बचक्खुञाणचतुत्थं पुब्बेनिवासञाणचतुत्थं अनागतंसञाणचतुत्थं ति कुसलतो पि किरियतो पि द्वादस-विधं होति।

तत्थ 'सब्बत्थ-पादकचतुत्थं' नाम अट्ठसु कसिणेसु चतुत्थज्झानं। तं हि विपस्सनाय पि पादकं होति, अभिञ्ञानं पि, निरोधस्सा पि, वट्टस्सा पि पादकं होति येवा ति सब्बत्थ-पादकं ति वुत्तं। 'आकासकसिण-आलोककसिणचतुत्थानि' पन विपस्सनाय पि अभिञ्ञानं पि वट्टस्सा पि पादकानि होन्ति, निरोधपादकानेव न

एत्थ परामसनं ति दिट्ठिया किच्चं। अस्सादनं ति सोमनस्सरागस्स किच्चं। अभिनन्दनं ति सप्पीतिकतण्हाय किच्चं। तेनेवाकारेना ति परामसन-अस्सादनाभिनन्दनाकारेन। दिट्ठिविप्प-युत्तानं[1] (२६२-सी०)....प०....पवत्तियं परित्तमहग्गतनवत्तब्बारम्मणता वेदितब्बा ति सम्बन्धो। चसद्दो सोमनस्सवसेना ति[2] आदीसु योजेतब्बो। एतेसू ति अट्ठसु[3] ञाणविप्पयुत्तचित्तुप्पादादीसु[3]।

नेसं ति अट्ठञाणसम्पयुत्तचित्तुप्पादानं। तं ति रूपावचरचतुत्थज्झानं, होतीति पदे कत्ता। आकासकसिणे पवत्तं चतुत्थं आकासकसिणचतुत्थं। इद्धिविधचतुत्थं[4]।

तत्था ति तस्मिं द्वादसविधे चतुत्थञाणे, निद्धारणं। कस्मा पन तं सब्बत्थ पादकं नामा ति आह—तं हीति आदि। हि सच्चं, तं चतुत्थज्झानं सब्बेसं विपस्सनादीनं पादकं कारणं सब्बत्थपादकं। सब्बेसु विपस्सनादीसु पादकं सब्बत्थपादकं। तत्था ति चतुत्थज्झाने। दसविधं

---

१. दिट्ठिसम्पयुत्तानं—म०। २. दोमनस्सवसेना ति—सी०। ३-३. अट्ठञाण०—सी०। ४. इद्धिविधाचतुत्थं—म०।

होन्ति। 'ब्रह्मविहार-आनापानचतुत्थानि' विपस्सनाय चेव वट्टस्स च पादकानि होन्ति, अभिञ्ञानं पन निरोधस्स च पादकानि न होन्ति। तत्थ दसविधं पि कसिणज्झानं कसिणपण्णत्ति आरब्भ पवत्तत्ता, ब्रह्मविहारचतुत्थं 'सत्त'-पण्णत्ति आरब्भ पवत्तत्ता, आनापानचतुत्थं निमित्तं आरब्भ पवत्तत्ता परित्तादिवसेन न-वत्तब्बारम्मणतो न-वत्तब्बारम्मणं नाम होति। 'इद्धिविधचतुत्थं' परित्त-महग्गतारम्मणं होति। कथं? तं हि यदा कायं चित्तसन्निस्सितं कत्वा अदिस्समानेन कायेन गन्तुकामो चित्तवसेन कायं परिणामेति; महग्गतचित्ते समोदहति; समारोपेति, तदा उपयोगलद्धारम्मणं होती ति कत्वा रूपकायारम्मणतो परित्तारम्मणं होति। यदा चित्तं कायसन्निस्सितं कत्वा दिस्समानेन कायेन गन्तुकामो कायवसेन चित्तं परिणामेति, पादकज्झानचित्तं रूपकाये समोदहति, समारोपेति, तदा उपयोगलद्धारम्मणं होती ति कत्वा महग्गतचित्तारम्मणतो महग्गतारम्मणं होति।

'दिब्बसोतचतुत्थं' सद्दं आरब्भ पवत्तत्ता एकन्तपरित्तारम्मणमेव। 'चेतोपरियञाणचतुत्थं' परित्त-महग्गत-अप्पमाणारम्मणं होति। कथं? तं हि परेसं कामावचरचित्तजाननकाले परित्तारम्मणं होति, रूपावचरारूपावचरचित्तजाननकाले महग्गतारम्मणं, मग्गफलजाननकाले अप्पमाणारम्मणं होति। **एत्थ च पुथुज्जनो**

ति सब्बत्थपादक-आकासकसिण-आलोककसिण-चतुत्थज्झानवसेन दसविधं। कसिणज्झानं ति पदं होतीति पदे पकतिकत्ता। पवत्तनत्ता ति[1] पदं न वत्तब्बा इति पदे हेतु। तं हीति हि सच्चं, तं इद्धिविधं, होतीति पदे कत्ता। चित्तवसेना ति महग्गतचित्तबद्धेन। महग्गतचित्तेना ति आदि पि चित्तवसेन कायं परिणामेतीति पदस्स विवरणं। समोदहतीति चित्तानुगतिकं चित्तं विय सीघं गमनं करोती ति अत्थो। समारोचेती ति पादकज्झानं समापज्जित्वा वुट्ठाय अयं कायो इदं चित्तं विय अदिस्समानो च[2] होतू ति परिकम्मं करोति। परिकम्मं पन कत्वा पुन समापज्जित्वा वुट्ठाय तथेव परिकम्मं करोन्तो कायं गहेत्वा महग्गते पादकज्झानचित्ते समारोपेति। चित्तगतिकं[3] करोति विय अदिस्समानं सीघगमनञ्च करोतीति अत्थो। उपयुञ्जनं उपयोगो। उपपुब्ब 'युज'-योगे। उपयोगवसेन लद्धं उपयोगलद्धं। चित्तवसेन रूपकायस्स पादकज्झानचित्तेन आसेवनवसेन लद्धं ति अत्थो। रूपकायारम्मणतो ति रूपकायसङ्खातकायारम्मणतो[4]। कायसन्निस्सितं कत्वा ति कायं विय कत्वा। चित्तं कायसन्निस्सितं कत्वा ति एत्थ न चित्तं कायं विय दन्तं[5] दिस्समानं करोति, किन्तु दन्तं दिस्समानं (२६३–सी०) अतिकरणमत्तमेवा ति[6] दट्ठब्बं।

तं हीति आदि वित्थारो। तं चेतोपरियञाणं। एत्था ति पुथुज्जनादीसु। सोतापन्नस्स चित्तं ति सोतापन्नस्स (म०–२२५) पाटिपुग्गलिकं मग्गफलसङ्खातं लोकुत्तरचित्तं न जानाति अनधिगतत्ता ति अत्थो। सकदागामिस्स चित्तं ति आदीसु पि एसेव नयो। **लोकियचित्तं**

---

१. पवत्तत्ता–सी०। २. सीघगमनो च–सी०। ३. तं चित्तगतिकं–सी०। ४. रूपकायसंखातारम्मणतो–सी०। ५. दन्दं–सी० सब्बत्थ। ६. अतिरेककरण०–सी०।

सोतापन्नस्स चित्तं न जानाति, सोतापन्नो वा सकदागामिस्सा ति एवं याव **अरहत्ता** नेतब्बं। **अरहा पन सब्बेसं चित्तं जानाति**। अञ्ञो पि च उपरिमो हेट्ठिमस्सा ति अयं विसेसो वेदितब्बो। 'यथाकम्मूपगञाणचतुत्थं' कामावचरकम्मजाननकाले परित्तारम्मणं होति, रूपावचरारूपावचरजाननकाले महग्गतारम्मण। 'दिब्बचक्खुञाणचतुत्थं' रूपारम्मणत्ता एकन्तपरित्तारम्मणमेव।

पुब्बेनिवासञाणचतुत्थं' परित्त-महग्गत-अप्पमाण-न-वत्तब्बारम्मणं होति। **कथं**? तं हि कामावचरक्खन्धानुस्सरणकाले परित्तारम्मणं होति। रूपावचरारूपावचरक्खन्धानुस्सरणकाले महग्गतारम्मणं। अतीते अत्तना वा परेहि वा भावितमग्गं सच्छिकतफलं च अनुस्सरणकाले अप्पमाणारम्मणं। अतीते **बुद्धा** मग्गं भावयिसुं, फलं सच्छाकंसु, निब्बानधातुया परिनिब्बायिसू ति छिन्नवटुमकानुस्सरणवसेन मग्गफलनिब्बानपच्चवेक्खणतो पि अप्पमाणारम्मणं। अतीते '**विपस्सी** नाम **भगवा** अहोसि। तस्स **बन्धुमती** नाम नगरं अहोसि, **बन्धुमा** नाम राजा पिता, **बन्धुमती** नाम माता' ति आदिना नयेन नामगोत्तपठवीनिमित्तादि-अनुस्सरणकाले न-वत्तब्बारम्मणं होति। 'अनागतंसञाणचतुत्थे' पि एसेव नयो। तं पि हि 'अयं हि अनागते कामावचरे निब्बत्तिस्सती' ति जाननकाले परित्तारम्मणं होति। 'रूपावचरे वा अरूपावचरे वा निब्बत्तिस्सती' ति जाननकाले महग्गतारम्मणं होति। 'मग्गं भावेस्सति फलं सच्छिकरिस्सती' ति 'निब्बानधातुया परिनिब्बायिस्सती' ति जाननकाले अप्पमाणारम्मणं। अनागते '**मेत्तेय्यो** नाम **भगवा** उप्पज्जिस्सति, **सुब्रह्मा** नाम'स्स

पन अरहन्तस्स विजानाति। तत्था ति वुत्तं अथ खो मारो पापिमा भगवतो चेतसा चेतोपरिवितक्कमञ्ञाया ति[1] एवं याव अरहतो चित्ता पण्डितेन नेतब्बं। अपि च अपरो नयो उपरिमो पुग्गलो हेट्ठिमस्स पुग्गलस्स चित्तं जानाति इति अयं विसेसो पण्डितेन वेदितब्बो। रूपं आरम्मणं अस्सा ति रूपारम्मणं। तस्स भावो रूपारम्मणत्तं।

पुब्बे निवसिसुं एत्था ति पुब्बेनिवासो। पुब्बेनिवासेसु पवत्तं ञाणं पुब्बेनिवासञाणं। तं होति तं पुब्बेनिवासञाणं। वजन्ति[2] एत्था ति वटुमो, संसारो। 'वज'-गतियं[3]। **वटुमादयो** ति (१३१ ण्वु०) मोग्गल्लानसुत्तेन तुमो[4]। तस्स टो[5]। छिन्नो वटुमो येसं ते छिन्नवटुमका छिन्नसंसारा ति अत्थो। छिन्नवटुमकानं अनुस्सरणं छिन्न····प०····रणं। छिन्नवटुमकानुस्सरणेन वसो पटिबद्धो छिन्न····प०····वसो। छिन्न····प०····सेना ति पदं पच्चवेक्खणतो पी ति पदे ततियाविसेसनं। पच्चवेक्खणतो ति पदं अप्पमाणारम्मणं ति पदे ततियाविसेसनं। अपिसद्दो अनुस्सरणकाले ति वुत्तवचनं अपेक्खति। तम्पीति आदि वित्थारो, तं अनागतंसञाणं।

---

१. ०सोता····प०····मिस्स चित्तं न जानाति इति एसेव नयो। लोकियचित्तं पि अरहन्तस्सा पि जानाति। तथा हि वुत्तं अथ खो मारो पापिमा भगवतो एवं–सी०। २. वटन्ति–सी०। ३. वट–गतियं–सी०। ४. टुमो–सी०। ५. नत्थि–सी०।

ब्राह्मणो पिता भविस्सति, ब्रह्मवती नाम ब्राह्मणी माता ति आदिना नयेन नामगोत्त-जाननकाले न-वत्तब्बारम्मणं होति।

अरूपावचरचतुत्थं पन आसवानं खयचतुत्थं च पालिया आगतट्ठाने येव कथीयति। किरियाहेतुकमनोविञ्ञाणधातु उपेक्खासहगता सब्बेसं पि एतेसं कुसला-कुसल-किरियचित्तानं पुरेचारिका। तस्सा तेसु वुत्तनयेनेव आरम्मणभेदो वेदितब्बो। पञ्चद्वारे पन वोट्ठपनवसेन पवत्तियं एकन्तपरित्तारम्मणा व होति। रूपावचरतिक-चतुक्कज्झानादीनि परित्तादिभावेन न-वत्तब्बं धम्मं आरब्भ पवत्तितो न-वत्तब्बा-रम्मणानि। एत्थ हि रूपावचरानि पठवीकसिणादीसु पवत्तन्ति, आकासानञ्चायतनं उग्घाटिमाकासे, आकिञ्चञ्ञायतनं विञ्ञाणापगमे ति।

मग्गारम्मणत्तिके [ध० ३०१] आदिम्हि वुत्ता अट्ठ **ञाणसम्पयुत्त-चित्तुप्पादा** सेक्खासेक्खानं अत्तना पटिविद्धमग्गं पच्चवेक्खणकाले मग्गारम्मणा, मग्गेन पन असहजातत्ता न मग्गहेतुका, अत्तना पटिविद्धमग्गं गरुं कत्वा पच्चवेक्खण-काले आरम्मणाधिपतिवसेन मग्गाधिपतिनो, अञ्ञधम्मारम्मणकरणकाले न वत्तब्बा मग्गारम्मणा ति पि मग्गाधिपतिनो ति पि। चत्तारो अरियमग्गा मग्गसंखातस्स मग्गसम्पयुत्तस्स वा हेतुनो अत्थिताय एकन्ततो मग्गहेतुका। विरियं पन वीमंसं वा जेट्ठकं कत्वा मग्गभावनाकाले सहजाताधिपतिना सिया मग्गाधिपतिनो, छन्दचित्तानं अञ्ञतरजेट्ठककाले सिया न वत्तब्बा मग्गाधिपतिनो ति। द्वादसविधे रूपावचर-चतुत्थज्झाने सब्बत्थ-पादकचतुत्थादीनि नवज्झानानि नेव मग्गारम्मणानि न मग्गहेतु-कानि न मग्गाधिपतीनि।

चेतोपरियञाण-पुब्बेनिवासञाण-अनागतंसञाणचतुत्थानि पन अरियानं

पिसद्दो पुब्बेनिवासञाणं अपेक्खति। अयं पुग्गलो कामावचरो ति कामावचरभूमियं। सुब्रह्म नामस्सा ति सुब्रह्मा नाम अस्स मेत्तेय्यस्स भगवतो।

तस्सा ति उपेक्खासहगताय क्रियाहेतुकमनोविञ्ञाणस्स धातुया। तेसू ति कुसला-कुसलक्रियचित्तेसु। तस्सा ति पदं एकन्तपरित्तारम्मणत्ता व होतीति सम्बन्धो। एत्थ हीति आदि वित्थारो। हि सच्चं, एत्थ रूपावचरतिकचतुक्कज्झानादीसु। विञ्ञाणापगमे ति पठमा-रुप्पविञ्ञाणस्स अपगमे पवत्तति। इतिसद्दो परिसमापनत्थो।

(२६४–सी०) मग्गारम्मणत्तिके विनिच्छयो। आदिम्हीति पदं वुत्ता ति पदे आधारो। पटिविद्धमग्गानं ति पदं पच्चवेक्खण इतिपदे कम्मं। अञ्ञं धम्मारम्मणं[1] करणकाले[1] मग्गतो अञ्ञधम्मारम्मणकाले। मग्गा''''प०''''ति पि न वत्तब्बा। मग्गाधिपतिनो ति इतिसद्द परिसमापनत्थो। रूपा''''प०''''झाने ति निद्धारणे भुम्मं।

कस्मा पन एतानि चेतोपरियञाण-पुब्बेनिवास-अनागतंसञाणानि''' प०''''करोन्तीति।

---

१. १-१. ०धम्मारम्मणकरणकाले–सी०।

मग्गचित्तजाननकाले मग्गारम्मणानि होन्ति, मग्गेन पन असहजातत्ता न मग्गहेतुकानि मग्गं गरुं कत्वा अप्पवत्तितो न मग्गाधिपतीनि। कस्मा पनेतानि न मग्गं गरुं करोन्ती ति? अत्तनो महग्गताय। यथा हि राजानं सब्बो लोको गरुं करोति, मातापितरो पन न करोन्ति। न हि ते राजानं दिस्वा आसना वुट्ठहन्ति, न अञ्जलिकम्मादीनि करोन्ति, दहरकाले वोहरितनयेनेव वोहरन्ति। एवं एतानि पि अत्तनो महग्गतताय न मग्गं गरुं करोन्ति। किरियाहेतुकमनोविञ्ञाणधातु पि अरियानं मग्गपच्चवेक्खणकाले पच्चवेक्खणपुरेचारिकत्ता मग्गारम्मणा होति, मग्गेन असहजातत्ता पन न मग्गहेतुका, तं गरुं कत्वा अप्पवत्तितो न मग्गाधिपति। कस्मा न गरुं करोती ति? अत्तनो अहेतुकाय हीनताय जळताय। यथा हि राजानं सब्बो लोको गरुं करोति, अन्तोपरिजना पन खुज्जवामनकचेटकादयो अत्तनो अञ्ञाणताय पण्डितमनुस्सा विय नातिगरुं करोन्ति, एवमेव इदं पि चित्तं अत्तनो अहेतुकताय हीनताय जळताय मग्गं गरुं न करोति। ञाणविप्पयुत्त-कुसलादीनि ञाणाभावेन चेव लोकियधम्मारम्मणताय च मग्गारम्मणादिभावं न लभन्ति, न-वत्तब्बारम्मणानेव होन्ती ति वेदितब्बानी ति।

अतीतारम्मणत्तिके विञ्ञाणञ्चायतन-नेव-सञ्ञानासञ्ञायतनधम्मा हेट्ठा अतीतसमापत्तिं आरब्भ पवत्तितो एकन्तेन **अतीतारम्मणा व। नियोगा अनागतारम्मणा नत्थी** ति नियमेन पाटियेक्कं चित्तं अनागतारम्मणं नाम नत्थि। ननु च अनागतंसञाणं एकन्तेन अनागतारम्मणं, चेतोपरियञाणं पि अनागतं आरब्भ पवत्तती ति? नो नप्पवत्तति। पाटियेक्कं पन एतं एकं चित्तं नाम नत्थि। रूपावचरचतुत्थज्झानेन संगहितत्ता अञ्ञेहि महग्गतचित्तेहि मिस्सकं होति। तेन वुत्तं 'नियोगा अनागतारम्मणा नत्थी' [ध० ३०२] ति। **द्वे पञ्चविञ्ञाणानि, तिस्सो च मनोधातुयो** पच्चुप्पन्नेसु रूपादीसु पवत्तितो **पच्चुप्पन्नारम्मणा** नाम।

दस चित्तुप्पादा ति एत्थ अट्ठ ताव सहेतुका देवमनुस्सानं पटिसन्धिगहणकाले कम्मं वा कम्मनिमित्तं वा आरब्भ पवत्तियं अतीतारम्मणा। भवंग-चुतिकालेसु पि

पुच्छा। महग्गतत्थाया ति महन्तभावं गतत्थाय। महग्गताया पी[1] ति वुत्तमत्थं उपमाय साधेन्तो यथा हित्यादिमाह। न हीति आदि दळ्हीकरणं। ते माता-(म०–२२६) पितरो। एतानि पि चेतोपरियञाणादीनि। अपिसद्दो मातापितरो अपेक्खति। तं ति मग्गं। कस्मा गरुं न करोतीति पुच्छा। अहेतुकताया ति आदीनि तीणि[2] न करोतीति पदे नानाहेतु। हीनताया ति पदं अत्तनो पकतिया हीनभावं ञापेति। जळताया ति पदं ञाणाभावेन जळभावं ञापेति। यथा हीति आदि दळ्हीकरणं।

ननु च····प०····पवत्तती ति पुच्छा। एतं ति अनागतंस-चेतोपरियञाणं। सङ्गहितत्ता ति पदं नत्थीति पदे हेतु, मिस्सकं ति पदे हेतु वा।

दस चित्तुप्पादा ति एत्थ वचने विनिच्छयो वेदितब्बो। आरब्भा ति पदं गहण इति

---

१. पीति–सी०। २. तीणि पदानि–सी०।

एसेव नयो। गतिनिमित्तं पन आरब्भ पटिसन्धिगहणकाले ततोपरं भवंगकाले च पच्चुप्पन्नारम्मणा। तथा पञ्चद्वारे तदारम्मणवसेन पवत्तियं। मनोद्वारे पन अतीतानागतपच्चुप्पन्नारम्मणानं जवनानं आरम्मणं गहेत्वा पवत्तितो अतीतानागतपच्चुप्पन्नारम्मणा। 'कुसलविपाकाहेतुक-उपेक्खासहगत-मनोविञ्ञाणधातुयं' पि एसेव नयो। केवलं हि सा मनुस्सेसु जच्चन्धादीनं पटिसन्धि होति। पञ्चद्वारे पि सन्तीरणवसेना पि पच्चुप्पन्नारम्मणा होती ति अयमेत्थ विसेसो। 'सोमनस्ससहगता' पन पञ्चद्वारे सन्तीरणवसेन तदारम्मणवसेन च पच्चुप्पन्नारम्मणा होति। मनोद्वारे तदारम्मणवसेन सहेतुकविपाका विय अतीतानागतपच्चुप्पन्नारम्मणा ति वेदितब्बा।

'अकुसलविपाकाहेतुकमनोविञ्ञाणधातु' पन कुसलविपाकाय उपेक्खासहगताहेतुकाय समानगतिका एव। केवलं हि सा आपायिकानं पटिसन्धि-भवंग-चुतिवसेन पवत्तती ति अयमेत्थ विसेसो। 'किरियाहेतुकमनोविञ्ञाणधातु' सोमनस्ससहगता खीणासवानं पञ्चद्वारे पहट्ठाकारं कुरुमाना पच्चुप्पन्नारम्मणा होति। मनोद्वारे अतीतादिभेदे धम्मे आरब्भ हसितुप्पादवसेन पवत्तियं अतीतानागतपच्चुप्पन्नारम्मणा होति। **कामावचरकुसलं** [ध० ३०३] ति आदीसु कुसलतो ताव चत्तारो ञाणसम्पयुत्तचित्तुप्पादा। सेक्खपुथुज्जनानं अतीतादिभेदानि खन्ध-धातु-आयतनानि सम्मसन्तानं पच्चवेक्खन्तानं अतीतानागतपच्चुप्पन्नारम्मणा होन्ति। पण्णत्तिनिब्बानपच्चवेक्खणे न-वत्तब्बारम्मणा। ञाणविप्पयुत्तेसु पि एसेव नयो। केवलं हि तेहि मग्ग-फल-निब्बानपच्चवेक्खणा नत्थि। अयमेवेत्थ विसेसो।

अकुसलतो चत्तारो दिट्ठिगतसम्पयुत्त-चित्तुप्पादा अतीतादिभेदानं खन्ध-धातु-आयतनानं अस्सादनाभिनन्दन परामासकाले अतीतादि-आरम्मणा होन्ति। पण्णत्ति

पदे समानकालकिरिया। ततो ति पटिसन्धिगहणतो। तथा पच्चुप्पन्नारम्मणा पञ्चद्वारे....प०.... पवत्तियं विसेसं ञापेन्तो केवलं होति आदिमाह। हि सच्चं, केवलं विसेसो च[1] कुसलविपाकाहेतुक-उपेक्खासहगतमनोविञ्ञाणधातु। चसद्दो अट्ठसहेतुके अपेक्खति। सन्तीरणवसेना पी ति सन्तीरणप्पवत्तियं[2] ति सम्बन्धो। होती ति वा ततियाविसेसनं। अपिसद्दो न केवलं पटिसन्धिवसेन न[3] होतीति ञापेति।

एत्था ति कुसलविपाकाहेतुक-उपेक्खासहगतमनोविञ्ञाणधातुय। गमनं पवत्तनं गति। समाना गति एतस्सा ति समानगतिका। एत्था ति अकुसलविपाकाहेतुकमनोविञ्ञाणधातुयं। हसितुप्पादनवसेना ति हसितस्स उप्पादनकिच्चेन। कामा....प०....आदिवचनेसु[4] विनिच्छयो। तेसं ति ञाणविप्पयुत्तानं[5]।

परामासगहणं ति परतो आमसनेन[6] गहणं, दिट्ठिकिच्चवसेन (२६५–सी०) गहणं ति

---

१. ०सा च–सी०। २. सन्तोरणकिच्चेन पवत्तियं–सी०। ३. नत्थि–सी०। ४. आदीसु वचनेसु–सी०। ५. ०तेसं ति दिट्ठिविप्पयुत्तानं–सी०। ६. आमासेन–म०।

आरब्भ अस्सादेन्तस्स अभिनन्दन्तस्स 'सत्तो सत्तो' ति परामसित्वा गण्हन्तस्स न-वत्तब्बारम्मणा होन्ति। दिट्ठिविप्पयुत्तेसु पि एसेव नयो। केवलं हि तेहि परामासगहणं नत्थि। द्वे पटिघसम्पयुत्तचित्तुप्पादा अतीतादिभेदे धम्मे आरब्भ दोमनस्सितानं अतीतादि-आरम्मणा, पण्णत्ति आरब्भ दोमनस्सितानं न-वत्तब्बारम्मणा। विचिकिच्छा-उद्धच्चसम्पयुत्ता तेसु येव धम्मेसु अ-निट्ठं-गतभावेन चेव उद्धतभावेन च पवत्तियं अतीतानागत-पच्चुप्पन्न-न-वत्तब्बारम्मणा।

किरियतो अट्ठ सहेतुकचित्तुप्पादा कुसलचित्तुप्पाद-गतिका एव। किरियाहेतुकमनोविञ्ञाणधातु उपेक्खासहगता पञ्चद्वारे वोट्ठपनवसेन पवत्तियं पच्चुप्पन्नारम्मणा व। मनोद्वारे अतीतानागतपच्चुप्पन्नारम्मणानं चेव पण्णत्ति-आरम्मणानं च जवनानं पुरेचारिककाले अतीतानागतपच्चुप्पन्न-न-वत्तब्बारम्मणा। यथावुत्तप्पभेदे रूपावचरज्झाने सब्बत्थपादकचतुत्थं आकासकसिणचतुत्थं आलोककसिणचतुत्थं ब्रह्मविहारचतुत्थं आनापानचतुत्थं ति इमानि पञ्च न-वत्तब्बारम्मणानेव। 'इद्धिविधचतुत्थं' कायवसेन चित्तं परिणामेन्तस्स अतीतं पादकज्झानचित्तं आरब्भ पवत्तनतो अतीतारम्मणं। महाधातुनिधाने महाकस्सपत्थेरादीनं विय अनागतं अधिट्ठहन्तानं अनागतारम्मणं होति।

महाकस्सपत्थेरो किर महाधातुनिधानं करोन्तो अनागते अट्ठारसवस्साधिकानि द्वेवस्ससतानि इमे गन्धा मा सुस्सिंसु, पुप्फानि मा मिलायिंसु, दीपा मा निब्बायिंसू ति अधिट्ठहि। सब्बं तथेव अहोसि। अस्सगुत्तत्थेरो वत्तनियसेनासने भिक्खुसंघं सुक्खभत्तं भुञ्जमानं दिस्वा 'उदकसोण्डि दिवसे पुरेभत्तं दधिरसं होतू' ति अधिट्ठहि। पुरेभत्तं गहितं दधिरसं होति पच्छाभत्ते पाकतिकमेव। कायं पन चित्तसन्निस्सितं कत्वा अदिस्समानेन कायेन गमनकाले, अञ्ञस्स वा पाटिहारियस्स करणकाले, कायं

अत्थो। दोमनस्सितानं ति दोमनस्सेन इतानं पुग्गलानं[1]। तेसु एव धम्मेसू ति अतीतादिभेदेसु धम्मेसु। अनिट्ठानगतभावेना ति अनिच्छयगमनभावेन[2]।

पण्णत्ति आरम्मणं येसं तानि पण्णत्ति-आरम्मणानि। रूपावचरज्झाने ति निद्धारणे भुम्मं। कायवसेना ति कायपटिबद्धेन। परिणामेन्तस्सा ति पदं पवत्तनतो ति पदे सम्पदानं। महाधातुनिधाने अधिट्ठहन्तानं महा···प०···दीनं इद्धिविधं अनागतं वत्थुं अधिट्ठहन्तानं पुग्गलानं इद्धिविधं अनागतारम्मणं होतीति सम्बन्धो।

महाकस्सपत्थेरो ति आदि उपमाय वित्थारो। महाधातुनिधानं ति महाधातुठपनं[3] करोन्तो राजगहे ति सम्बन्धो। तेन वुत्तं थूपवंसे धातुयो सेसेहि सत्तहि नगरेहि आहरित्वा राजगहस्स पाचीनदक्खिणदिसाभागे थपेत्वा ति सब्बं वत्थु तथेव अधिट्ठानाकारेन (म०–२२७)

---

१. युत्तानं पुग्गलानं–सी०। २. अनिच्छयं गमनभावेन–सी०। ३. महाधातुट्ठापनं–सी०।

आरब्भ पवत्तत्ता पच्चुप्पन्नारम्मणं होति। दिब्बसोतचतुत्थं विज्जमानसद्दमेव आरब्भ पवत्तितो पच्चुप्पन्नारम्मणं होति। चेतोपरियञाणचतुत्थं अतीते सत्तदिवसब्भन्तरे अनागते सत्तदिवसब्भन्तरे परेसं चित्तं जानन्तस्स अतीतारम्मणं अनागतारम्मणं च होति। सत्तदिवसातिक्कमे पन तं जानितुं न सक्कोति। अतीतानागतंसञाणानं हि एस विसयो। एतस्स पच्चुप्पन्नजाननकाले पन पच्चुप्पन्नारम्मणं होति।

पच्चुप्पन्नं च नामेतं तिविधं—खणपच्चुप्पन्नं सन्ततिपच्चुप्पन्नं अद्धापच्चुप्पन्नं च। तत्थ उप्पादट्ठितिभंगप्पत्तं 'खणपच्चुप्पन्नं'। एक-द्वि-सन्ततिवारपरियापन्नं सन्ततिपच्चुप्पन्नं'। तत्थ अन्धकारे निसीदित्वा आलोकट्ठानगतस्स न ताव आरम्मणं पाकटं होति; याव पन तं पाकटं होति, एत्थन्तरे एक-द्वि-सन्ततिवारा वेदितब्बा। आलोकट्ठाने चरित्वा ओवरकं पविट्ठस्सा पि न ताव सहसा रूपं पाकटं होति; याव तं पाकटं होति, एत्थन्तरे एक-द्वि-सन्ततिवारा वेदितब्बा। दूरे ठत्वा पन रजकानं हत्थविकारं गण्डि-भेरि-आदि-आकोटनविकारं च दिस्वा पि न ताव सद्दं सुणाति; याव पन तं सुणाति, एतस्मिं पि अन्तरे एक-द्वि-सन्ततिवारा वेदितब्बा। एवं ताव **मज्झिमभाणका**।

अहोसि। वत्तनियसेनासने ति विज्झाटवियं वट्टनियसेनासने[1]। तेन वुत्तं **महावंसे** उत्तरत्थेरो[2] पभिन्नपटिसम्भिदो सट्ठिभिक्खुसहस्सानि विज्झाटवियमादिय सेनासनम्हा सहसा तत्थमोतरति[2]।

सुक्खभत्तं ति मिस्सितदधि-अभावेन[3] सुक्खभत्तं[4], जानन्तस्स पुग्गलस्स चेतोपरियञाण-चतुत्थं ति सम्बन्धो। तं परेसं चित्तं। कस्मा ति आह—अतीता ति आदि। तस्सा ति[5] चेतो-परियञाणस्स।

पच्चुप्पन्नभेदं दस्सेन्तो पच्चुप्पन्नं ति आदिमाह। चसद्दो वाक्यारम्भो। सरूपं दस्सेन्तो तत्था ति आदिमाह। तत्था ति खणपच्चुप्पन्नादीसु। उप्पाद....प०....भङ्गप्पत्तं धम्मजातं एक....प०....पन्नं धम्मजातं। एकद्वेसन्ततिवारेन रूपेन दस्सेन्तो तत्था ति आदिमाह। गतस्स जनस्स ताव पठमं आरम्मणं पाकटं न होति। एत्थन्तरे ति अपाकटकाल-पाकटकालानं एतस्मिं अन्तरे। तं ति आरम्मणं। एथन्तरे पवत्ता रूपसन्तति अरूपसन्तति वा एकद्वेसन्ततिवारा नाम, इति पण्डितेन वेदितब्बो[6]। पविट्ठस्सा पी ति अपिसद्दो न केवलं तस्सेव[7] आरम्मणं पाकटं न होती ति ञापेति। तं ति सद्दं। मज्झिमभाणका वदन्तीति योजना।

---

१. वत्तनिय०—सी०।

२-२. अस्सगुत्तमहाथेरो पभिन्नपटिसम्भिदो।
सट्ठिभिक्खुसहस्सानि विज्झाटवियमादिय।
वत्तनियसेनासना नभसा तत्थमोतरीति ॥—सी० पोत्थके अत्थ गाथापाठो।

३. मिस्सकदधि०—सी०। ४. सुक्कभत्तं—सी०। ५. एतस्सा ति—सी०।

६. वेदितब्बा—सी०। ७. गतस्सेव—सी०।

संयुत्तभाणका पन 'रूपसन्तति अरूपसन्तती' ति द्वे सन्ततियो वत्वा, 'उदकं अतिक्कमित्वा गतस्स याव तीरे अक्कन्त-उदकलेखा न विप्पसीदति, अद्धानतो आगतस्स याव काये उसुमभावो न वूपसम्मति, आतपा आगन्त्वा गब्भं पविट्ठस्स याव अन्धकारभावो न विगच्छति, अन्तो गब्भे कम्मट्ठानं मनसि करित्वा दिवा वातपानं विवरित्वा ओलोकेन्तस्स याव अक्खीनं फन्दनभावो न वूपसम्मति, अयं रूपसन्तति नाम; द्वे तयो जवनवारा अरूपसन्तति नामा ति वत्वा 'तदुभयं पि सन्ततिपच्चुप्पन्नं नामा' ति वदन्ति।

एकभवपरिच्छिन्नं पन अद्धापच्चुप्पन्नं नाम। यं सन्धाय भद्देकरत्तसुत्ते "यो चावुसो, मनो ये च धम्मा सम्पयुत्ता, उभयमेतं पच्चुप्पन्नं। तस्मिं पच्चुप्पन्ने छन्दरागपटिबद्धं होति विञ्ञाणं, छन्दरागपटिबद्धत्ता विञ्ञाणस्स तदभिनन्दति, तदभिनन्दन्तो पच्चुप्पन्नेसु धम्मेसु संहीरती" [म० ३ : २७३] ति वुत्तं। सन्ततिपच्चुप्पन्नं चेत्थ **अट्ठकथासु** आगतं। अद्धापच्चुप्पन्नं सुत्ते।

तत्थ केचि 'खणपच्चुप्पन्नं चित्तं चेतोपरियञाणस्स आरम्मणं होती' ति वदन्ति। किं-कारणा ? यस्मा इद्धिमस्स च परस्स च एकक्खणे चित्तं उप्पज्जती ति। इदं च नेसं ओपम्मं—यथा आकासे खित्ते पुप्फमुट्ठिम्हि अवस्सं एकं पुप्फं एकस्स वण्टेन वण्टं पटिविज्झति, एवं परस्स चित्तं जानिस्सामी ति रासिवसेन महाजनस्स चित्ते आवज्जिते अवस्सं एकस्स चित्तं एकेन चित्तेन उप्पादक्खणे वा ठितिक्खणे वा भंगक्खणे वा पटिविज्झती ति। तं पन वस्ससतं पि वस्ससहस्सं पि आवज्जेन्तो येन चित्तेन आवज्जेति, येन च जानाति तेसं द्विन्नं सहट्ठानाभावतो आवज्जनजवनानं च अनिट्ठे ठाने नानारम्मणभावप्पत्तिदोसतो अयुत्तं ति अट्ठकथासु पटिक्खित्तं। सन्तति-

---

संयुत्तभाणका ति पदं वदन्तीति पदे कत्ता। वत्वा (२६६–सी०) ति पदं वदन्तीति पदे पुब्बकालक्रिया। गतस्स जनस्स। तीरे ति पदं अक्कन्त इति पदे आधारो। अद्धानतो ति दीघमग्गतो, तदुभयम्पि सन्ततिं वदन्तीति योजना[1]। संयुत्तभाणकपदे कम्मं[1]।

यं अद्धानं पच्चुप्पन्नं सन्धाय भद्देकरत्तसुत्ते भगवता वुत्तं ति सम्बन्धो। उभयमेतं ति पच्चुप्पन्नं अद्धापच्चुप्पन्नं होन्तं[2] एतं पन सम्पयुत्तं धम्मसङ्खातं उभयं होति। पच्चुप्पन्ने ति पदं छन्दराग इति पदे आधारो। पुग्गलो[3] तं पच्चुप्पन्नं अभिनन्दति[4]। संहीरतीति[5] पुग्गलो[5] तण्हादिट्ठाभिनन्दनाहि आकड्ढियति। एत्था ति सन्तति-अद्धानपच्चुप्पन्नेसु[6]। सुत्ते आगतं ति योजना।

तत्था ति खणपच्चुप्पन्नादीसु, निद्धारणं। इति तस्मा। इदं वचनं। नेसं ति केसञ्चि आचरियानं। एकस्स पुग्गलस्स। पटिविज्झति इति[1] सद्दो इदं ति पदस्स सरूपं। तेसं ति केसं चि आचरियानं पटिक्खित्तं ति पदे कम्मं। चसद्दो ठानाभावतो नाना....प०....दोसतो चा ति

१-१. पदे कम्मं–सी०। २. नत्थि–सी०। ३. नत्थि–सी०। ४. अभिनन्दतीति पुग्गलो–सी०। ५-५. नत्थि–सी०। ६. अद्धापच्चुप्पन्नादीसु–सी०।

पच्चुप्पन्नं पन अद्धापच्चुप्पन्नं च आरम्मणं होती ति वेदितब्बं। तत्थ यं वत्तमान-जवनवीथितो अतीतानागतवसेन द्वि-ति-जवनवीथिपरिमाणकाले परस्स चित्तं, तं सब्बं पि सन्ततिपच्चुप्पन्नं नाम। अद्धापच्चुप्पन्नं पन जवनवारेन दीपेतब्बं ति यं अट्ठकथाय वुत्तं तं सुट्ठु वुत्तं।

तत्रायं दीपना—इद्धिमा परस्स चित्तं जानितुकामो आवज्जति। आवज्जनं खणपच्चुप्पन्नं आरम्मणं कत्वा तेनेव सह निरुज्झति। ततो चत्तारि पञ्च जवनानि येसं पच्छिमं इद्धिचित्तं, सेसानि कामावचरानि। तेसं सब्बेसं पि तदेव निरुद्धं चित्तं आरम्मणं होति। न च तानि नानारम्मणानि होन्ति। अद्धापच्चुप्पन्नवसेन पच्चुप्पन्नारम्मणत्ता एकारम्मणानि। एकारम्मणत्ते पि च इद्धिचित्तमेव परस्स चित्तं जानाति, न इतरानि; यथा चक्खुद्वारे चक्खुविञ्ञाणमेव रूपं पस्सति, न इतरानी ति। इति इदं सन्ततिपच्चुप्पन्नस्स चेव अद्धापच्चुप्पन्नस्स च वसेन पच्चुप्पन्नारम्मणं होति। यस्मा वा सन्ततिपच्चुप्पन्नं पि अद्धापच्चुप्पन्ने येव पतति, तस्मा अद्धापच्चुप्पन्नवसेनेतं पच्चुप्पन्नारम्मणं ति वेदितब्बं।

पुब्बेनिवासञाणचतुत्थं नामगोत्तानुस्सरणे निब्बाननिमित्तपच्चवेक्खणे च न वत्तब्बारम्मणं, सेसकाले अतीतारम्मणमेव। यथाकम्मूपगञाणचतुत्थं पि अतीतारम्मणमेव। तत्थ किञ्चा पि पुब्बेनिवासचेतोपरियञाणानि पि अतीतारम्मणानि

योजेतब्बो, अयुत्तं ति पदे हेतु। तत्था ति सन्तति-अद्धापच्चुप्पन्नेसु यं चित्तं ति सम्बन्धो। वत्तमानजवनवीथितो ति पदं द्वत्तीति पदे अपादानं। अतीता····प०····वसेना ति पदं द्वत्तीति पदे ततियाविसेसनं। तं ति चित्तं। अद्धा प०····इति[1] यं वचनं। तत्था ति[2] अद्धापच्चुप्पन्ने।

आवज्जनं ति पदं निरुज्झती ति पदे कत्ता। खणपच्चुप्पन्नचित्तं। तेनेवा ति खण-पच्चुप्पन्नचित्तेन। ततो ति आवज्जनतो। चत्तारि····प०····आवज्जनानि होन्ति। येसं ति जवनानं, निद्धारणे छट्ठी। पच्छिजवनानं[3]। सेसानि जवनानि। तेसं जवनानं। तदेव चित्तं, तानि जवनानि। अद्धानवसेना ति पदं पच्चुप्पन्ना इति पदे ततियाविसेसनं। पच्चु····प०···· णत्ता ति पदं न होन्ती ति पदे हेतु। (म०–२२८) सब्बजवनानि पन एकारम्मणत्ता परस्स चित्तं जानेय्युं ति चोदनं सन्धायाह—एका ति आदि। न इतरानीति इतरानि कामावचरानि न जानन्ति। यथा ति[4] किं ति अत्थो। इतरानि[5] आवज्जनानि[6] पस्सन्ति। इतिसद्दो परि-समापने[7]। इति इदं ति एवं इदं चेतोपरियञाणं होति। पततीति[8] पविसति। एतं ति चेतोपरियञाणं।

निमित्तं ति कसिणादिनिमित्तं, तत्था ति पुब्बेनिवासञाणादीसु, निद्धारणं। तेसं ति (२६७–सी०) पुब्बेनिवासचेतोपरियञाणानं निद्धारणे छट्ठी। तं हीति आदि दळ्हीकरणं।

१-१. नत्थि–म०। २. तत्रा ति–सी०। ३. पच्छिमं जवनं–सी०। ४. यथा–सी०। ५. न इतरानि–सी०। ६. आवज्जनादीनि–सी०। ७. परिसमापनं–सी०। ८. पवत्ततीति –सी०।

होन्ति, अथ खो तेसं पुब्बेनिवासञाणस्स अतीतक्खन्धा खन्धपटिबद्धं च किञ्चि अनारम्मणं नाम नत्थि। तं हि अतीतक्खन्ध-खन्धुपनिबद्धेसु धम्मेसु सब्बञ्ञुतञाणसमगतिकं होति। चेतोपरियञाणस्स च सत्तदिवसब्भन्तरातीतं चित्तमेव आरम्मणं। तं हि अञ्ञं खन्धं वा खन्धपटिबद्धं वा न जानाति, मग्गसम्पयुत्तचित्तारम्मणत्ता पन परियायतो मग्गारम्मणं ति वुत्तं। यथाकम्मूपगञाणस्स अतीतचेतनामत्तमेव आरम्मणं ति। अयं विसेसो वेदितब्बो। अयमेत्थ **अट्ठकथानयो**।

यस्मा पन "कुसला खन्धा इद्धिविधञाणस्स चेतोपरियञाणस्स पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणस्स यथाकम्मूपगञाणस्स अनागतंसञाणस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति **पट्ठाने** [पट्ठाने १ : १२४] वुत्तं, तस्मा चत्तारो पि खन्धा चेतोपरियञाण-यथाकम्मूपगञाणानं आरम्मणं होन्ति। तत्रापि यथाकम्मूपगञाणस्स कुसलाकुसला एवा ति। दिब्बचक्खुञाणचतुत्थं विज्जमानवण्णारम्मणत्ता पच्चुप्पन्नारम्मणमेव। अनागतंसञाणचतुत्थं अनागतारम्मणमेव। तं हि अनागतक्खन्ध-खन्धुपनिबद्धेसु धम्मेसु पुब्बेनिवासञाणं विय सब्बञ्ञुतञाणसमङ्गिकं होति। तत्थ किञ्चा पि चेतोपरियञाणं पि अनागतारम्मणं होति, तं पन सत्तदिवसब्भन्तरे उप्पज्जनकचित्तमेव आरम्मणं करोति। इदं पन अनागते कप्पसतसहस्से उप्पज्जनकचित्तं पि खन्धे पि खन्धपटिबद्धं पि। रूपावचरतिकचतुक्कज्झानादीनि अतीतानागतपच्चुप्पन्नेसु एकधम्मं पि आरब्भ अप्पवत्तितो एकन्त-न-वत्तब्बारम्मणानेवा ति वेदितब्बानि।

अज्झत्तत्तिके [ध० ३०३] **अनिन्द्रियबद्धरूपं च निब्बानं च बहिद्धा** ति इदं यथा इन्द्रियबद्धं परपुग्गलसन्ताने बहिद्धा ति वुच्चमानं पि तस्स अत्तनो सन्तानपरियापन्नत्ता नियकज्झत्तं पि होति, एवं न येन केनचि परियायेन अज्झत्तं होती ति नियकज्झत्तपरियायस्स अभावेन बहिद्धा ति वुत्तं, न नियकज्झत्तमत्तस्स असम्भवतो। नियकज्झत्तमत्तस्स

हि सच्चं, तं पुब्बेनिवासञाण। तं होति हि सच्चं, तं चेतोपरियञाणं। मग्गारम्मणं ति वुत्तं[1] चेतोपरियञाणं[1] ति सम्बन्धो। एत्था ति एतस्मिं ठाने। अट्ठकथायं वुत्तो[2] अट्ठकथाय वा आगतो नयो अट्ठकथानयो।

पट्ठाने वुत्तनयेन चेतोपरियञाणादीनं आरम्मणं ञापेन्तो यस्मा त्याहिमाह। यस्मा पन वुत्तं तस्मा होन्ति। तत्रा पी ति चेतोपरियञाणयथाकम्मूपगञाणेसु, निद्धारणं। यथा....प०....कुसला एव खन्धा आरम्मणा होन्ति। तं ति अनागतंसञाणं। चेतोपरिय-अनागतंसञाणविसेसं[3] दस्सेन्तो तत्था ति आदिमाह। तत्था ति चेतोपरियञाण-अनागतंसञाणेसु। तं ति चेतोपरियञाणं। इदं ति अनागतंसञाणं। खन्धपटिबद्धम्पि आरम्मणं करोतीति सम्बन्धो।

अज्झत्तत्तिके ति पदं वुत्तं ति पदे आधारो। अनि... प०....बहिद्धा ति वुत्तं इदं धम्मजातं न होतीति पदे कत्वा, वुत्तं ति पदे कम्मं। इन्द्रियबद्धं धम्मजातं होतीति पदे कत्ता। तस्सा ति

१-१. वुत्तचेतो०–सी०। २. आगतो–सी०। ३. ०ञाणानं विसेसं–सी०।

पन असम्भवमत्तं सन्धाय अज्झत्तारम्मणत्तिके बहिद्धारम्मणता वुत्ता। अज्झत्तधम्मापगममत्ततो व आकिञ्चञ्ञायतनारम्मणस्स अज्झत्तभावं बहिद्धाभावं पि अज्झत्तबहिद्धाभावं पि अननुजानित्वा **आकिञ्चञ्ञायतनं न वत्तब्बं अज्झत्तारम्मणं ति पी** [ध० ३०४] ति आदि वुत्तं। तत्थ न केवलं तदेव न-वत्तब्बारम्मणं, तस्स पन आवज्जनं पि, उपचारचित्तानि पि, तस्सारम्मणस्स पच्चवेक्खणचित्तानि पि, तस्सेव अस्सादनादिवसेन पवत्तानि अकुसलचित्तानि पि न-वत्तब्बारम्मणानेव। तानि पन तस्मि वुत्ते वुत्तानेव होन्ती ति विसुं न वुत्तानि।

कथं वुत्तानेव होन्ती ति? एतं हि आकिञ्चञ्ञायतनं, यं च तस्स पुरेचारिकं आवज्जन-उपचारादिवसेन पवत्तं, तेन सह एकारम्मणं भवेय्य। तं सब्बं अतीतारम्मणत्तिके 'कामावचरकुसलं, अकुसलं, किरियतो नव चित्तुप्पादा, रूपावचरचतुत्थज्झानं' [ध० ३०३] ति एवं वुत्तानं एतेसं चित्तुप्पादानं 'सिया न वत्तब्बा अतीतारम्मणा ति पी' [ध० ३०३] ति आदिना नयेन न-वत्तब्बारम्मणभावस्स अनुञ्ञातत्ता, आकिञ्चञ्ञायतनस्स च 'आकिञ्चञ्ञायतनं, चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, इमे धम्मा न वत्तब्बा अतीतारम्मणा ति पी' [ध० ३०३] ति एवं एकन्तेन न-वत्तब्बारम्मणत्तवचनतो न-वत्तब्बारम्मणं ति वुत्तं। इदानि तं अज्झत्तारम्मणत्तिके [ध०३०३] एकं पि वुच्चमानं यस्मा हेट्ठा तेन सह एकारम्मणभावं पि सन्धाय कामावचरकुसलादीनं न-वत्तब्बारम्मणता वुत्ता, तस्मा

इन्द्रियबद्धस्स। न निय····प०····असम्भवतो बहिद्धा ति वुत्तं ति योजना। अज्झत्तधम्मापगममत्ततो ति अज्झत्तधम्मस्स अपगमक्रियामत्ततो, अननुजानित्वा ति पदे हेतु। आकिञ्चञ्ञायतनस्स आरम्मणं आकिञ्चञ्ञायतनारम्मणं। तत्था ति आकिञ्चञ्ञायतनादीसु, निद्धारणं। तदेव आकिञ्चञ्ञायतनं। तस्सा ति आकिञ्चञ्ञायतनस्स। आरम्मणत्ता ति पदं पच्चवेक्खण इति पदे कम्मं। तस्सेवा ति आरम्मणस्स अस्सादन इति पदे कम्मं। अस्सा····प०····वसेना ति अस्सादन-अभिनन्दादि-किच्चेन। इतिसद्दो परिसमापनं, यदि पन आवज्जनादीनि आकिञ्चञ्ञायतनस्स आरम्मणं करोन्ति, कस्मा न वुत्तानीति आह—तानीति आदि। तानि आवज्जनादीनि। तस्मि ति आकिञ्चञ्ञायतने।

कथं आवज्जनादीनं वुत्तानेव होन्तीति पुच्छा। एतं हीति परिहारो। यं ति यं चित्तं। चसद्दो आकिञ्चञ्ञातनञ्च यञ्चा ति (म०–२२९) योजेतब्बो। इदं पदद्वयं भवेय्या ति पदे कत्ता। तस्सा ति आकिञ्चञ्ञायतनस्स। आ····प०····वसेना ति आवज्ज····प०···· दिकिच्चेन। पवत्तं ति पदं यं ति पदस्स विसेसनं। तेना ति (२६८–सी०) आकिञ्चञ्ञायतनेन, सब्बं[1] ति[2] आकिञ्चञ्ञायतनादि। तं ति पदं वुत्तं ति पदे कम्मं। अतीतारम्मणत्तिके ति पदं वुत्तं[3] ति पदे आधारो। चित्तुप्पादानं ति पदं भावस्सा ति पदे सम्बन्धो। नयेना ति पदं अनुञ्ञात इति पदे ततियाविसेसनं। अनुञ्ञातत्ता ति पदं वुत्तं ति पदे हेतु। आकिञ्च····प०····तनस्सा ति पदं न वत्तब्बारम्मणत्त इति पदे सम्बन्धो।

---

१. ०तं–सी०। २. नत्थि 'ति'–सी०। ३. वुत्तानं–सी०।

इधा पि तेसं न-वत्तब्बारम्मणभावं दीपेति । को हि तेन सह एकारम्मणानं न-वत्तब्बारम्मणभावे अन्तरायो ति ? एवं तस्मि वुत्ते 'वुत्तानेव होन्ती' ति वेदितब्बानि । सेसमेत्थ अज्झत्तारम्मणत्तिके पालितो उत्तानमेव ।

आरम्मणविभागेन **विञ्ञाणञ्चायतनं नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं** [ध० ३०३] ति इमेसं ताव कुसल-विपाक-किरियावसेन छन्नं चित्तुप्पादानं अत्तनो सन्तानसम्बद्धं हेट्ठिमसमापत्तिं आरब्भ पवत्तितो अज्झत्तारम्मणता वेदितब्बा । एत्थ च किरियआकासानञ्चायतनं किरियविञ्ञाणञ्चायतनस्सेव आरम्मणं होति, न इतरस्स । कस्मा ? आकासानञ्चायतनकिरियसमङ्गिनो कुसलस्स वा विपाकस्स वा विञ्ञाणञ्चायतनस्स अभावतो । कुसलं पन कुसल-विपाक-किरियानं तिण्णं पि आरम्मणं होति । कस्मा ? आकासानञ्चायतनकुसलं निब्बत्तेत्वा ठितस्स ततो-उद्धं तिविधस्सा पि विञ्ञाणञ्चायतनस्स उप्पत्तिसम्भवतो । विपाकं पन न कस्सचि आरम्मणं होति । कस्मा ? विपाकतो उट्ठहित्वा चित्तस्स अभिनीहारासम्भवतो । नेवसञ्ञानासञ्ञायतनस्स आरम्मणकरणे पि एसेव नयो । **रूपावचरतिकचतुक्कज्झानादीनं** [ध० ३०३] सब्बेसं पि नियकज्झत्ततो बहिद्धाभावेन बहिद्धाभूतानि पठवीकसिणादीनि आरब्भ पवत्तितो बहिद्धारम्मणता वेदितब्बा ।

चसद्दो अनुञ्ञातत्ता च न-वत्तब्बारम्मणत्तवचनतो[१] चा ति योजेतब्बो । न वत्तब्बा....प०.... वचनतो ति न-वत्तब्बारम्मणत्तस्स वचनतो । इदानीति पदं वुच्चमानानं ति पदे कालसत्तमी । तं ति आकिञ्चञ्ञायतनं, दीपेतीति ति पदे कत्ता । अज्झ....प०....णत्तिके ति पदं वुच्चमानं ति पदे आधारो । एकम्पि वुच्चमानं ति पदद्वयं तं ति पदस्स विसेसनं । अपिसद्दो सम्भावनत्थो । हेट्ठा ति अतीतारम्मणत्तिके । तेन आकिञ्चञ्ञायतनेन । अपिसद्दो नानारम्मणभावं अपेक्खति । इधा पि अज्झत्तारम्मणत्तिके । तेसं कामावचरकुसलादीनं नव....प०....दीपेति[२] ञापेति । को हीति दळ्हीकरणं[३] । तेन आकिञ्चञ्ञायतनेन सह एकारम्मणानं कामावचरकुसलादीनं । इतीति[४] तस्मा । तस्मि ति आकिञ्चञ्ञायतने वुत्ते आवज्जनादीनि वुत्तानेव होन्ति इति पण्डितेन वेदितब्बानि ।

आरम्मणविभागे ति[५] आरम्मणवसेन विभागे, वेदितब्बा ति पदे आधारो, विनिच्छयो वा । कुसलवसेना ति[६] पदं छन्नं ति पदे ततियाविसेसनं । एत्थ चा ति छसु चित्तुप्पादेसु, निद्धारणं । न इतरस्स कुसलविञ्ञाणञ्चायतनस्स[७] आरम्मणं होति, कुसलं पन आकासानञ्चायतनं ठितस्स पुग्गलस्स । ततो ति निब्बत्तट्ठानतो[८] । विपाकतो वुट्ठहित्वा ति विपाकं आरम्मणं कत्वा ति अधिप्पायो । चित्तस्स अभिनीहारासम्भवतो ति समापत्तिचित्तस्स अभिनीहारस्स[९] अभावतो । चित्तस्सा ति पदं अभिनीहार इति पदे कम्मं । नियकज्झत्ततो ति पदं बहिद्धा ति पदे अपादानं । बहिद्धाभावेना ति पदं भूतानीति पदे ततियाविसेसनं ।

---

१. ०वचना–सी० । २. दीपेतीति–सी० । ३. आदिदळ्ही०–सी० । ४. इति–सी० । ५. ०विभागे पना ति–सी० । ६. कुसल...प०...वसेना ति–सी० । ७. कुसलविपाकविञ्ञाण०–सी० । ८. निब्बत्तनतो–सी० । ९. अभिनीहारस्स पवत्तनस्स–सी० ।

सब्बे व कामावचरा कुसलाकुसलाब्याकता धम्मा, रूपावचरचतुत्थज्झानं [ध० ३०३] ति एत्थ कुसलतो ताव चत्तारो ञाणसम्पयुत्तचित्तुप्पादा अत्तनो खन्धादीनि पच्चवेक्खन्तस्स अज्झत्तारम्मणा। परेसं खन्धादिपच्चवेक्खणे पन पण्णत्ति-निब्बानं पच्चवेक्खणे च बहिद्धारम्मणा। तदुभयवसेन अज्झत्तबहिद्धारम्मणा। ञाणविप्पयुत्तेसु पि एसेव नयो। केवलं हि तेसं निब्बानपच्चवेक्खणं नत्थि।

अकुसलतो चत्तारो दिट्ठिसम्पयुत्तचित्तुप्पादा अत्तनो खन्धादीनं अस्सादना-भिनन्दन-परामासग्गहणकाले अज्झत्तारम्मणा, परस्स खन्धादीसु चेव अनिन्द्रियबद्ध-रूप-कसिणादीसु च तथेव पवत्तिकाले बहिद्धारम्मणा, तदुभयवसेन अज्झत्तबहिद्धा-रम्मणा। दिट्ठिविप्पयुत्तेसु पि एसेव नयो। केवलं हि तेसं परामासगहणं नत्थि। द्वे पटिघसम्पयुत्ता अत्तनो खन्धादीसु दोमनस्सितस्स अज्झत्तारम्मणा, परस्स खन्धादीसु चेव अनिन्द्रियबद्धरूप-पण्णत्तीसु च बहिद्धारम्मणा, उभयवसेन अज्झत्त-बहिद्धारम्मणा। विचिकिच्छुद्धच्चसम्पयुत्तानं पि वुत्तप्पकारेसु धम्मेसु विचिकिच्छन-फन्दनभाववसेन पवत्तियं अज्झत्तादि-आरम्मणता वेदितब्बा।

द्वे पञ्च-विञ्ञाणानि, तिस्सो च मनोधातुयो ति, इमे तेरस चित्तुप्पादा अत्तनो रूपादीनि आरब्भ पवत्तियं अज्झत्तारम्मणा, परस्स रूपादीसु पवत्ता बहिद्धा-रम्मणा, तदुभयवसेन अज्झत्त-बहिद्धारम्मणा। सोमनस्ससहगताहेतुकविपाकमनो-विञ्ञाणधातु पञ्चद्वारे सन्तीरणतदारम्मणवसेन अत्तनो पञ्च रूपादिधम्मे, मनोद्वारे तदारम्मणवसेनेव अञ्ञे पि अज्झत्तिके कामावचरधम्मे आरब्भ पवत्तियं अज्झत्ता-रम्मणा, परेसं धम्मेसु पवत्तमाना बहिद्धारम्मणा, उभयवसेन अज्झत्तबहिद्धारम्मणा। उपेक्खासहगतविपाकाहेतुकमनोविञ्ञाणधातुद्वये पि एसेव नयो। केवलं पनेता सुगतियं दुग्गतियं च पटिसन्धि-भवंग-चुतिवसेना पि अज्झत्तादिभेदेसु कम्मादीसु पवत्तन्ति। अट्ठ महाविपाकचित्तानि पि एतासं येव द्विन्नं समानगतिकानि। केवलं पनेतानि सन्तीरण-वसेन नप्पवत्तन्ति। पटिसन्धि-भवंग-चुतिवसेनेव एतानि सुगतियं येव पवत्तन्ति।

सोमनस्ससहगताहेतुककिरिया पञ्चद्वारे अत्तनो रूपादीनि आरब्भ पहट्ठाकारकरण-

---

सब्बे व ....प०.....एत्थ वचने विनिच्छयो। तदुभयवसेना ति अज्झत्तबहिद्धावसेन। तेसं ति ञाणविप्पयुत्तानं।

विचि....प०.....वसेना ति (२६९–सी०) विचिकिच्छाभावफन्दभाववसेन[1]।

सन्तीरणतदारम्मणवसेना ति पदं पवत्तियं ति पदे ततियाविसेसनं। एता उपेक्खासहगत (म०–२३०)–विपाकाहेतुकमनोविञ्ञाणधातुयो। अपिसद्दो न केवलं सन्तीरण-तदारम्मण-वसेन पवत्तीति ञापेति। एतासं ये वा ति उपेक्खासहगतविपाकाहेतुकमनोविञ्ञाणधातूनं। एतानि महाविपाकचित्तानि। पटिसन्धि....प०.....वसेनेव पवत्तन्ति। तेसं ति महाविपाकचित्तानं।

केवलं हि ता ति हि सच्चं, विसेसो, ता महाक्रिया। कुसला....प०.....नानं उप्पज्जन्ति।

---

१. ०भाववन्तभाववसेन–सी०।

वसेन पवत्तियं अज्झत्तारम्मणा, परस्स रूपादीसु पवत्ता बहिद्धारम्मणा। मनोद्वारे तथागतस्स जोतिपालमाणव-मखादेवराज-कण्हतापसादिकालेसु अत्तना कतकिरियं पच्चवेक्खन्तस्स हसितुप्पादवसेन पवत्ता अज्झत्तारम्मणा। मल्लिकाय देविया सन्तति-महामत्तस्स सुमनमालाकारस्सा ति एवमादीनं किरियाकरणं आरब्भ पवत्तिकाले बहिद्धारम्मणा। उभयवसेन अज्झत्तबहिद्धारम्मणा। उपेक्खासहगतकिरियाहेतुकमनो-विञ्ञाणधातु पञ्चद्वारे वोट्ठपनवसेन मनोद्वारे च आवज्जनवसेन पवत्तियं अज्झत्तादि-आरम्मणा। अट्ठ महाकिरिया कुसलचित्तगतिका एव। केवलं हि ता खीणासवानं उप्पज्जन्ति, कुसलानि सेक्खपुथुज्जनानं ति एत्तकमेवेत्थ नानाकरणं।

वुत्तप्पकारे रूपावचरचतुत्थज्झाने सब्बत्थ-पादकचतुत्थादीनि पञ्चज्झानानि इमस्मिं तिके ओकासं लभन्ति। एतानि हि कसिणपण्णत्तिनिमित्त-आरम्मणत्ता बहिद्धा-रम्मणानि। 'इद्धिविधचतुत्थं' कायवसेन चित्तं; चित्तवसेन वा कायं परिणामनकाले अत्तनो कुमारकवण्णादि-निम्मानकाले च सककायचित्तानं आरम्मणकरणतो अज्झत्ता-रम्मणं, बहिद्धा हत्थि-अस्सादिदस्सनकाले बहिद्धारम्मणं, कालेन अज्झत्तं कालेन बहिद्धा, पवत्तियं अज्झत्तबहिद्धारम्मणं। 'दिब्बसोतचतुत्थं' अत्तनो कुच्छिसद्दसवनकाले अज्झत्ता-रम्मणं, परेसं सद्दसवनकाले बहिद्धारम्मणं, उभयवसेन अज्झत्तबहिद्धारम्मणं। 'चेतो परियञाणचतुत्थं' परेसं चित्तारम्मणतो बहिद्धारम्मणमेव। अत्तनो चित्तजानने पन तेन पयोजनं नत्थि। 'पुब्बेनिवासचतुत्थं' अत्तनो खन्धानुस्सरणकाले अज्झत्तारम्मणं, परस्स खन्धे, अनिन्द्रियबद्धरूपं, तिस्सो च पण्णत्तियो अनुस्सरणतो बहिद्धारम्मणं, उभयवसेन अज्झत्तबहिद्धारम्मणं। 'दिब्बचक्खुचतुत्थं' अत्तनो कुच्छिगतादिरूपदस्सन-काले अज्झत्तारम्मणं, अवसेसरूपदस्सनकाले बहिद्धारम्मणं, उभयवसेन अज्झत्त-बहिद्धारम्मणं। 'अनागतंसञाणचतुत्थं' अत्तनो अनागतक्खन्धानुस्सरणकाले अज्झत्ता-रम्मणं, परस्स अनागतक्खन्धानं वा अनिन्द्रियबद्धस्स वा रूपस्स अनुस्सरणकाले बहिद्धारम्मणं, उभयवसेन अज्झत्तबहिद्धारम्मणं। आकिञ्चञ्ञायतनस्स न-वत्तब्बा-रम्मणताय कारणं हेट्ठा वुत्तमेव।

हेतुगोच्छकनिद्देसे [ध० ३०४] **तयो कुसलहेतू** ति आदिना नयेन हेतू

एत्था ति महाक्रियकुसलचित्तेसु।

रूपा····प०····झाने ति निद्धारणे भुम्मं। एतानि पञ्च झानानि। वासद्दो कायवसेन वा चित्तवसेन वा ति योजेतब्बो। चसद्दो परिकम्मकाले[1] च निम्मानकाले चा ति योजेतब्बो। दस्सनकाले ति पकासनकाले। अज्झत्तबहिद्धा ति पदद्वयं पवत्तियं ति पदे आधारो। तेना ति चेतोपरियञाणेन। कुच्छि···प०····काले ति कुच्छियं पवत्तादिरूपस्स दस्सनकाले।

ते येवा ति हेतू। एत्थ वचने। तिविधेना ति पदं वेदितब्बो ति[2] पदे विसेसनं[3]। एकतो

१. परिनामनकाले–सी०। २. वेदितब्बा ति–सी०। ३. ततियाविसेसनं–सी०।

दस्सेत्वा ते एव उप्पत्तिट्ठानतो दस्सेतुं **चतूसु भूमीसु कुसलेसु** उप्पज्जन्ती ति आदि वुत्तं। इमिना उपायेन सेसगोच्छकेसु पि देसनानयो वेदितब्बो। **यत्थ द्वे तयो आसवा एकतो उप्पज्जन्ती** [ध० ३१०] ति तिविधेन आसवानं एकतो उप्पत्ति वेदितब्बा। तत्थ चतूसु दिट्ठिविप्पयुत्तेसु अविज्जासवेन, दिट्ठिसम्पयुत्तेसु दिट्ठासवाविज्जासवेहि सद्धिं ति कामासवो दुविधेन एकतो उप्पज्जति। भवासवो चतूसु दिट्ठिविप्पयुत्तेसु अविज्जासवेन सद्धिं ति एकधा व एकतो उप्पज्जति।

यथा चेत्थ एवं **यत्थ द्वे तीणि संयोजनानि एकतो उप्पज्जन्ती** [ध० ३१२] ति एत्था पि।

संयोजनानं उप्पत्ति एकतो दसधा भवे।

तत्थ कामरागो चतुधा एकतो उप्पज्जति, पटिघो तिधा, मानो एकधा। तथा विचिकिच्छा चेव भवरागो च। कथं कामरागो ताव मानसंयोजन-अविज्जासंयोजनेहि चेव, दिट्ठिसंयोजनाविज्जासंयोजनेहि च, सीलब्बतपरामास-अविज्जासंयोजनेहि च, अविज्जासंयोजनमत्तेनेव च सद्धिं ति एवं चतुधा एकतो उप्पज्जति। पटिघो पन इस्सासंयोजन-अविज्जासंयोजनेहि चेव, मच्छरियसंयोजन-अविज्जासंयोजनेहि च, अविज्जासंयोजनमत्तेनेव सद्धिं ति एवं तिधा एकतो उप्पज्जति। मानो भवरागाविज्जासंयोजनेहि सद्धिं एकधा व एकतो उप्पज्जति। तथा विचिकिच्छा। सा हि अविज्जासंयोजनेन सद्धिं एकधा उप्पज्जति। भवरागे पि एसेव नयो। एवमेत्थ **द्वे तीणि संयोजनानि एकतो उप्पज्जन्ति** [ध० ३१२]।

यमेतं नीवरणगोच्छके **यत्थ द्वे तीणि नीवरणानि एकतो उप्पज्जन्ती** [ध० ३१६] ति वुत्तं, तत्था पि अट्ठधा नीवरणानं एकतो उप्पत्ति वेदितब्बा। एतेसु हि कामच्छन्दो दुविधा एकतो उप्पज्जति, ब्यापादो चतुधा, उद्धच्चं एकधा। तथा विचिकिच्छा। कथं कामच्छन्दो ताव असंखारिकचित्तेसु उद्धच्चनीवरण-अविज्जानीवरणेहि, ससंखारिकेसु थीनमिद्ध-उद्धच्च-अविज्जानीवरणेहि सद्धिं दुविधा एकतो उप्पज्जति। यं पनेतं **द्वे तीणी** [ध०३१६] ति वुत्तं, तं हेट्ठिमपरिच्छेदवसेन वुत्तं। तस्मा चतुन्नं पि एकतो उप्पज्जती ति वचनं युज्जति एव। ब्यापादो पन असंखारिकचित्ते उद्धच्चनीवरण-

---

ति एकस्मिं ठाने। तत्था ति आसवेसु, निद्धारणे[1] भुम्मं[1]। यथा च तत्थ द्वे तयो आसवा एकतो उप्पज्जन्ती ति वचने आसवानं एकतो उप्पत्ति वेदितब्बा[2] ति सम्बन्धो। एकतो ति पदं उप्पत्तीति[3] पदे आधारो। तत्था ति संयोजनेसु, सा हीति हि सच्चं, सा विचिकिच्छा। एत्था ति उप्पत्तिट्ठाने।

यत्थ....प०....उप्पज्जन्तीति तं पनेतं भगवता वुत्तं। तत्था ति[4] वचने। एतेसु हीति

१-१. निद्धारणं–सी०। २. वेदितब्बो–म०। ३. उप्पज्जन्तीति–सी०।
४. तत्था पि–सी०।

अविज्जानीवरणेहि, ससंखारिके थीनमिद्ध-उद्धच्च-अविज्जानीवरणेहि, असंखारिके येव उद्धच्च-कुक्कुच्च-अविज्जानीवरणेहि, ससंखारिके एव च थीनमिद्ध-उद्धच्च-कुक्कुच्च-अविज्जानीवरणेहि सद्धिं ति चतुधा एकतो उप्पज्जति। उद्धच्चं पन अविज्जानीवरणमत्तेन सद्धिं एकधा व एकतो उप्पज्जति। विचिकिच्छा उद्धच्च-अविज्जानीवरणेहि सद्धिं एकधा व एकतो उप्पज्जति।

यं पि'दं किलेसगोच्छके **यत्थ द्वे तयो किलेसा एकतो उप्पज्जन्ती** [ध० ३२६] ति वुत्तं, तत्थ' यत्थ द्वे किलेसा अञ्ञेहि, तयो वा किलेसा अञ्ञेहि किलेसेहि सद्धिं उप्पज्जन्ती' ति एवमत्थो वेदितब्बो। कस्मा ? द्विन्नं तिण्णं येव वा एकतो उप्पत्तिया असम्भवतो। तत्थ दसधा किलेसानं एकतो उप्पत्ति होति। एत्थ हि लोभो छधा एकतो उप्पज्जति। पटिघो द्विधा। तथा मोहो ति वेदितब्बो। कथं ? लोभो ताव असंखारिके दिट्ठिविप्पयुत्ते मोह-उद्धच्च-अहिरिक-अनोत्तप्पेहि, ससंखारिके मोह-थीन-उद्धच्च-अहिरिक-अनोत्तप्पेहि, असंखारिके येव मोह-मान-उद्धच्च-अहिरिक-अनोत्तप्पेहि, ससंखारिके येव मोह-मान-थीन-उद्धच्च-अहिरिक-अनोत्तप्पेहि, दिट्ठिसम्पयुत्ते पन असंखारिके मोह-उद्धच्च-दिट्ठि-अहिरिक-अनोत्तप्पेहि, ससंखारिके मोह-दिट्ठि-थीन-उद्धच्च-अहिरिक-अनोत्तप्पेहि सद्धिं ति छधा एकतो उप्पज्जति। पटिघो पन असंखारिके मोह-उद्धच्च-अहिरिक-अनोत्तप्पेहि, ससंखारिके मोह-थीन-उद्धच्च-अहिरिक-अनोत्तप्पेहि सद्धिं ति एवं द्विधा एकतो उप्पज्जति। मोहो पन विचिकिच्छासम्पयुत्ते विचिकिच्छा-उद्धच्च-अहिरिक-अनोत्तप्पेहि, उद्धच्चसम्पयुत्ते उद्धच्च-अहिरिक-अनोत्तप्पेहि सद्धिं ति एवं द्विधा एकतो उप्पज्जति। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

अट्ठसालिनया धम्मसंगहट्ठकथाय

अट्ठकथाकण्डवण्णना निट्ठिता

आदि वित्थारो। एतेसु नीवरणेसु। तं ति वचनं। चतुन्नम्पि नीवरणानं।

यत्थ····प०····उप्पज्जन्तीति यं इदं वचनं भगवता वुत्तं। तत्था ति वचने, वेदितब्बा ति पदे आधारो। द्वे यत्थ ठाने किलेसा अञ्ञेहि किलेसेहि सद्धिं उप्पज्जन्ति, तत्थ ठाने किलेसा अञ्ञेहि····प०···· एवं अत्थो पण्डितेन वेदितब्बो। तत्था ति[1] द्वे तयो ति आदिवचने, होतीति पदे आधारो। एत्थ हीति आदि वित्थारो। एत्थ किलेसेसु।

अट्ठकथाकण्डं निट्ठितं

---

१. तत्था ति यत्थ–सी०।

निगमनं

(१) एत्तावता च

चित्तं रूपं च निक्खेपं अत्थुद्धारं मनोरमं।
यं लोकनाथो भाजेन्तो देसेसि धम्मसंगणिं॥
अभिधम्मस्स संगय्ह धम्मे अनवसेसतो।
ठिताय तस्सा आरद्धा या मया अत्थवण्णना॥
अनाकुलानमत्थानं सम्भवा अट्ठसालिनी।
इति नामेन सा एसा सन्निट्ठानमुपागता॥
एकूनचत्तालीसाय पालिया भाणवारतो।
चिरट्ठितत्थं धम्मस्स निट्ठापेन्तेन तं मया॥
यं पत्तं कुसलं तस्स आनुभावेन पाणिनो।
सब्बे पि धम्मराजस्स ञत्वा धम्मं सुखावहं॥
पापुणन्तु विसुद्धाय सुखाय पटिपत्तिया।
असोकं अनुपायासं निब्बानसुखमुत्तमं॥

निगमत्थयोजना[1]

(२७०–सी०) एत्तावता वचनेन। आरद्धा ति पदे ततियाविसेसनं। इदानि निगमनं करोन्तो चित्तन्त्यादिमाह।

मनोरमं चित्तरूपञ्च निक्खेपं अत्थुद्धारं। भाजेन्तो लोकनाथो यं धम्मसङ्गणिं देसेसि।

(म०–२३१) अभिधम्मस्स अभिधम्मपिटकस्स, धम्मे कुसलादिधम्मे, अनवसेसतो अनवसेसेन सङ्गय्ह सङ्गहेत्वा, ठिताय तस्सा धम्मसङ्गणिया, या अत्थवण्णना एत्तावता च मया आरद्धा। कुसलादयो धम्मा[2] सङ्गय्हन्ति एत्था ति धम्मसङ्गणी।

अनाकुलानं आकुलविरहितानं अत्थानं सम्भवा सम्भवतो नामेन अत्तनो नामेन अट्ठसालिनी[3] इति अट्ठसालिनी नाम। सा एसा अत्थवण्णना सन्निट्ठानं उपागता। सम्भवा ति पदं अट्ठसालिनीति पदे हेतु। इतिसद्दो नामवाचको। नामेना ति पदं इतिपदे[4] ततिया-विसेसनं।

अत्तना लद्धपुञ्ञेन पत्थनं करोन्तो एकूनात्यादिमाह[5]। एकूनचत्तालीसाय पाळिया सद्दतन्तिया[6] भाणवारतो। धम्मस्स पाळिधम्मस्स। चिरट्ठितत्थं चिरकालट्ठितत्थं। तं अत्थ-वण्णनं निट्ठापेन्तेन मया यं कुसलं पत्तं लद्धं तस्स कुसलस्स आनुभावेन सब्बे पाणिनो सद्धम्म-राजस्स भगवतो सुखावहं धम्मं ञत्वा विसुद्धाय सुखाय अकिच्छाय पटिपत्तिया असोकं अनुपायासं उत्तमं निब्बानं[7] सुखं[7] पापुणन्तु।

---

१. नत्थि–सी०। २. धम्मे–सी०। ३. अट्ठसाळिनी–सी० सब्बत्थ। ४. इतीति–सी०। ५. एकूनत्यादिमाह–सी०। ६. सद्धि तन्तिया–सी०। ७-७. निब्बाणसुखं–सी०।

चिरं तिट्ठतु सद्धम्मो धम्मे होन्तु सगारवा ।
सब्बे पि सत्ता कालेन सम्मा देवो पवस्सतु ॥
यथा रक्खिसु पोराणा सु-राजानो तथेविमं ।
राजा रक्खतु धम्मेन अत्तनो व पजं पजं ति ॥

परमविसुद्धसद्धाबुद्धिविरियपटिमण्डितेन सीलाचारज्जवमद्दवादिगुणसमुदयसमुदितेन सकसमयसमयन्तरगहनज्झोगाहनसमत्थेन पञ्ञा-वेय्यत्ति-समन्नागतेन तिपिटकपरियत्तिप्पभेदे साट्ठकथे सत्थुसासने अप्पटिहतञाणप्पभावेन महावेय्याकरणेन करणसम्पत्तिजनित-सुखविनिग्गत-मधुरोदारवचनलावण्णयुत्तेन युत्तमुत्तवादिना वादिवरेन महाकविना पभिन्नपटिसम्भिदापरिवार-छळभिञ्ञादिप्पभेदगुणपटिमण्डिते उत्तरिमनुस्सधम्मे सुप्पतिट्ठितबुद्धीनं थेरवंसप्पदीपानं थेरानं महाविहारवासीनं वंसालङ्कारभूतेन विपुलविसुद्धबुद्धिना बुद्धघोसो ति गरूहि गहितनामधेय्येन थेरेन कता अयं अट्ठसालिनी नाम धम्मसंगहट्ठकथा ।

सद्धम्मो चिरं चिरकालं तिट्ठतु । सत्ता[1] धम्मे सगारवा होन्तु । कालेन युत्तकाले[2] सम्मा देवो पवस्सतु । यथा पोराणा पुरेभवा सुराजानो सुन्दरराजानो धम्मेन पजं रक्खिसु, तथेव राजा अत्तनो पजं व पुत्तं इव इमं पजं सत्तं धम्मेन रक्खतु ।

पाळिया ति पदं भाणवारतो ति पदे सामि । भाणवारतो ति पदं निट्ठापेन्तेना ति पदे ततियाविसेसनं । आनुभावेना ति पदं पापुणन्तू ति पदे करणं, हेतु वा । सद्धम्मेन राजा सद्धम्मराजा । सुखं आवहति जनेतीति सुखावहो । पटिपज्जनं पटिपत्ति, पटिपत्तिया ति पदं पापुणन्तू ति पदेकरणं । नत्थि सोको यस्मिं तं असोकं । नत्थि उपायासो अस्सा ति अनुपायासं । निब्बानं एव सुखं निब्बानसुखं । सह गारवेन वत्तन्तीति सगारवा । पुरे भवा पोराणा । सुन्दरा राजानो सुराजानो । (२७१–सी०) अत्तनो ति[3] अत्तनो इति[4] छेदो । इवसद्दो पजं इवा ति योजेतब्बो ।

अयं अट्ठकथाचरियो अत्तनो गुणं नामञ्च दस्सेन्तो परमविसुद्धा ति आदिमाह । सद्धा च बुद्धि च वीरियञ्च सद्धाबुद्धिवीरियं । विसुद्धञ्च तं सद्धाबुद्धिवीरियञ्चा ति विसुद्धसद्धाबुद्धिवीरियं । परमं एव विसुद्धबुद्धिवीरियं परमविसुद्धसद्धाबुद्धिवीरियं, परमविसुद्धसद्धाबुद्धिवीरियेन पटिमण्डितो परमविसुद्ध....प०....पटिमण्डितो । उजुनो भावो अज्जवं । मुदुनो भावो मद्दवं । सीलञ्च (म०२३२) आचारो च अज्जवञ्च मद्दवञ्च सीलाचारज्जवमद्दवं । सीलाचारज्जवमद्दवं आदि येसं ते सीलाचारज्जवमद्दवादयो । सीलाचारज्जवमद्दवादयो च ते गुणा चा ति सीलाचारज्जवमद्दवादिगुणा । सीलाचारज्जवमद्दवादिगुणानं समुदयो समूहो सीलाचारज्जवमद्दवादिगुणसमुदयो ।समुदितो[5] । सस्स एसो सको । सको च सो समयो चा ति सकसमयो । समयो च सो

---

१. सब्बे पि सत्ता–सी० । २. युत्तकालेन–सी० । ३. अत्तनो वा ति–सी० । ४. अत्तनो इवा ति–सी० । ५. सीलाचारज्जवमद्दवादिगुणसमुदयो समुदितो सीलाचारज्जवमद्दवादिगुणसमुदितो–सी० ।

अन्तरो चा ति समयन्तरो । सकसमयो च समयन्तरो च सकसमयसमयन्तरा । सकसमयसमयन्तरानं गहनं सकसमयसमयन्तरगहनं । सकसमयसमयन्तरगहने अज्झोगाहणं सकसमय····प०····गाहणं । सकसमयसमयन्तरगहनज्झोगाहणे समत्थो सकसमय····प०···· गाहणसमत्थो । वियत्तस्स पुग्गलस्स भावो वेय्यत्तियं । पञ्ञा एव वेय्यत्तियं पञ्ञावेय्यत्तियं । पञ्ञावेय्यत्तियेन समन्नागतो पञ्चावेय्यत्तियसमन्नागतो । पिटियति भगवत सद्दियति कथियतीति पिटकं । 'पिट'-धातु[1]-सद्दे । तीणि पिटकानि तिपिटकं । पणियापुणितब्बा ति परियत्ति । तिपिटकं एव परियत्ति तिपिटकपरियत्ति । परियत्तिप्पभेदं[2] । सह अट्ठकथाय वत्ततीति साट्ठकथं । सासति सत्ते अनेना त सासनं । सत्थुनो सासनं सत्थुसासनं । न पटिहतं अप्पटिहतं । अप्पटिहतं च तं ञाणञ्चा ति अप्पटिहतञाणं । अप्पटिहतञाणस्स पभावो यस्मि सो अप्पटिहतञाणप्पभावो । अथवा अप्पटिहतञाणस्स पभावो (२७२–सी०) अप्पटिहतञाणप्पभावो । अप्पटिहतञाणप्भावो अस्स अत्थीति अप्पटिहताञणप्पभावो । ब्याकरणं जानातीति वेय्याकरणो, सद्दसत्थजानको ति अत्थो । महन्तो च सो वेय्याकरणो चा ति महावेय्याकरणो । अथवा महन्त ब्याकरणं महाब्याकरणं । महाब्याकरणं जानातीति महाब्याकरणो । करियन्ति अक्खरा उच्चारियन्ति एतेना ति करणं, कण्ठादिट्ठानं । सम्पज्जनं परिपूरणं सम्पत्ति । करणस्स सम्पत्ति करणसम्पत्ति । जनियतीति जनितं । करणसम्पत्तिया जनितं करणसम्पत्तिजनितं । सुखेन अकिच्छेन विनिग्गतं सुखविनिग्गतं । वचनञ्च तं लावण्णञ्चा ति वचनलावण्णं, सोभणवचनं ति अत्थो । उळारञ्च तं वचनलावण्णञ्चा ति उळारवचनलावण्णं, उत्तमसोभणवचनं[3] ति अत्थो । मधुरञ्च तं उळारवचनलावण्णञ्चा ति मधुरोळारवचनलावण्णं, सुखविनिग्गतञ्च तं (म०–२३३) मधुरोळारवचनलावण्णञ्चा ति सुखविनिग्गतमधुरोळारवचनलावण्णं, करणसम्पत्तिजनितञ्च तं सुखविनिग्गतमधुरोळारवचनलावण्णञ्चा ति करण····प०····लावण्णं । करणसम्पत्ति····प०···· लावण्णेन युत्तो करणसम्पत्ति····प०····युत्तो । युत्ते काले मुत्तं मुञ्चितब्बं[4] वदितब्बं वचनं वदति सीलेना ति युत्तमुत्तवादी । वदन्ति सीलेना ति वादिनो । वादीसु, वादीनं वा वरो वादीवरो । अथवा वदति सीलेना ति वादी । वादी च सो वरो चा ति वादोवरो । कवति कथेतीति कवि । 'कु' सद्दे । इपच्चयो । महन्तो च सो कवि चा ति महाकवि । अत्थादीसु पभिज्जति पभेदं गच्छतीति पभिन्नं[5] । पटि विसुं सम्मा भिज्जति जानातीति पटिसम्भिदा । पभिन्ना च सा पटिसम्भिदा चा ति पभिन्नपटिसम्भिदा । पभिन्नपटिसम्भिदा परिवारो यस्स सो पभिन्नपटिसम्भिदापरिवारो । छ च ता अभिञ्ञायो चा ति छळभिञ्ञा । छळभिञ्ञा च पटिसम्भिदा च छळभिञ्ञापटिसम्भिदा । छळभिञ्ञापटिसम्भिदा आदयो येसं ते छळभिञ्ञापटिसम्भिदादयो । छळभिञ्ञा····प०····दयो च ते पभेदो चा ति छळभिञ्ञापटिसम्भिदादिप्पभेदा । छळभिञ्ञा····प०···· दिप्पभेदा च ते गुणा चा ति छळभिञ्ञा····प०····गुणा । छळभिञ्ञा····प०····गुणेहि पटिमण्डितो (२७३–सी०) छळभिञ्ञा ····प०····पटिमण्डितो । उत्तरि च ते

१. पिटक-धातु–सी० । २. तिपिटकपरियत्तिया पभेदं तिपिटकपरियत्तिप्पभेदं अथवा पभिज्जनं पभेदो । तिपिटकपरियत्तिया पभेदो यस्मि तं तिपिटकपरियत्तिप्पभेदं–सी० । ३. उत्तमसोभनवचनं–सी० । ४. मुञ्चितब्बं–सी० । ५. पभिन्ना–सी० ।

ताव तिट्ठतु लोकस्मिं लोकनित्थरणेसिनं।
दस्सेन्ती कुलपुत्तानं नयं पञ्ञा-विसुद्धिया ॥
याव 'बुद्धो' ति नामं पि सुद्धचित्तस्स तादिनो।
लोकम्हि लोकजेट्ठस्स पवत्तति महेसिनो ॥

मनुस्सा चा ति उत्तरिमनुस्सा। उत्तरिमनुस्सानं धम्मो उत्तरिमनुस्सधम्मो। अथवा मनुस्सानं धम्मो मनुस्सधम्मो। उत्तरि[1] मनुस्सधम्मो उत्तरिमनुस्सधम्मो[1]। सुट्ठु पतिट्ठिता सुप्पतिट्ठिता। बुज्झति एताया ति बुद्धि, बुज्झनं वा बुद्धि। सुप्पतिट्ठिता बुद्धि येसं ते सुप्पतिट्ठितबुद्धिनो। सीलादीहि गुणेहि थिरन्तीति थेरा, महाकस्सपादयो। थेरानं वंसो थेरवंसो। थेरवंसं पदीपन्ति जोतन्तीति थेरवंसप्पदीपा। विहरन्ति एत्था ति विहारो। महन्तो च सो विहारो चा ति महाविहारो। महाविहारे वसन्ति सीलेना ति महाविहारवासिनो। वंसं अलङ्करोतीति वंसालङ्कारो। वंसालङ्कारो हुत्वा भवतीति वंसालङ्कारभूतो। सुन्दरा, पसट्ठा वा विपुला सुविपुला। विसुद्धा एव बुद्धि विसुद्धबुद्धि। सुविपुला विसुद्धबुद्धि यस्स सो सुविपुलविसुद्धबुद्धि। बुद्धस्स घोसो विय घोसो यस्स सो बुद्धघोसो। विनयविनिच्छयटीकायं बुद्धस्स विय गम्भीरघोसत्ता तंविय[2] बुद्धघोसो ति। यो[3] हि बुद्धो विय महीतले ति हि वुत्तं। गरन्ति उत्तमभावं गच्छन्तीति गरुनो[4]। 'गर'-धातु उत्तमे। गहितं नामधेय्यं येन सो गहितनामधेय्यो। (म०–२३४) करियित्था ति कता। अत्थो सारो एतिस्सं गन्थजातियं ति अट्ठसालिनी[5]। त्थकारस्स ट्ठकारं रकारस्स लकारञ्च[6] कत्वा अट्ठसालिनी ति वुत्तं। कुसलादयो धम्मा सङ्गय्हन्ति एत्था ति धम्मसङ्गहो। अत्थो कथियति एताया ति अट्ठकथा। धम्मसङ्गहस्स अट्ठकथा धम्मसङ्गहट्ठकथा।

तिपिटकपरियत्तिप्पभेदे साट्ठकथे ति पदद्वयं सत्थुसासने ति पदस्स विसेसनं। सत्थुसासने ति पदं अप्पटिहत इति पदे आधारो। पभिन्न····प०····परिवारे छळभिञ्ञा····प०···· मण्डिते ति पदद्वयं उत्तरिमनुस्सधम्मे ति पदस्स विसेसनं। उत्तरि····प०····धम्मे ति पदं सुप्पतिट्ठित इति पदे आधारो। सुप्पतिट्ठितबुद्धीनं थेर····प०····दीपानं महाविहारवासीनं ति पदत्तयं[7] थेरानं ति पदं वंस इतिपदे सम्बन्धो। परमविसुद्ध····प०····मण्डितेन सीला····प०···· समुदितेन सक····प०····समत्थेन पञ्ञा····प०····गतेन (२७४–सी०) अप्पटिहतप्पभावेन महा····प०····महाकविना वंसालङ्कारभूतेन वि०····प०····बुद्धिना गहितनामधेय्येना ति तेरसपदं थेरेना ति पदस्स विसेसनं। बुद्धघोसो ति पदं लिङ्गत्थो। इतीति पदं गहित पदे आकारो। गरूहीति पदं गहित इति पदे अपादानं। थेरेना ति पदं कता ति पदे कत्ता। अयं अट्ठसालिनी नामा ति पदद्वयं धम्मसङ्गहट्ठकथा ति पदस्स विसेसनं। धम्म····प०····कथा ति पदं कता ति पदे कम्मं। कथा ति[8] पदं कम्मवाचककितपदं[9] ति[9]।

१-१. उत्तरि च ते मनुस्सधम्मा चा ति उत्तरिमनुस्सधम्मा–सी०। २. तंवियाकरं –सी०। ३. ०घोसो–सी०। ४. गरुणो–सी०। ५. अट्ठसाळिनी–सी०। ६. ळकारं–सी०। ७. ०थेरानं ति पदस्स विसेसनं–सी०। ८. कता ति–सी०। ९-९. कम्म-वाचकं–सी०।

निगमनं

यं परमपुरुत्तमं[1], अभिनवपुरव्हयं ।
यो तस्स पच्छिमुत्तर-दिसाभागे पतिट्ठितो ॥
पनसारामनामेन आरामो इति विस्सुतो ।
नानारुक्खेहि सञ्छन्नो नानाजनमनोहरो ॥
यो सीलसूरो अतिदुप्पसय्हो ।
उळारपञ्ञो चतुसेतिभिन्नो ।
सुसञ्ञतानं चतुपच्चयानं दाता पसन्नो रतनत्तयम्हि ।
कारापितो तत्थ महायसेन लङ्काभिधानेन[2] सुवंसजेन[2] ॥
राजाधिराजेन महादयेन यो[3] तेन राजेन गहो सुरम्मो ।
वसन्तेनेत्थ धीरेन थेरेन **ञाणकित्तिना** ।
(म०–२३५) अट्ठसालिनिया **अत्थयोजना** साधु सङ्खता ॥
मागसिरमुपादाय याव सावणमासतो ।
नवमासेहि निट्ठानं सम्पत्ता अत्थयोजना ॥
यथा वीतमलो सूरो दिवं[4] जोतेति रंसिना ।
तथेविमं अट्ठकथं चिरं जोतेतु सा अयं ॥
एसा सुरतिता सारो खेरविन्दुन्नतो[5] कथा[5] ।
जोतेतु अत्थकामानं[6] चिरं सुगतसासने ॥
मया इदं करोन्तेन पुञ्ञं यं पचितं बहुं ।
तेन पुञ्ञेन सब्बे पि सुखमेधेन्तु पाणिनो ॥
(२७५–सी०) अहं तु उत्तमं[7] बोधिं[7] पापुणेय्यमनागते ।
तं पत्वाखिले[8] सत्ते मोचेय्युं भवबन्धना ति ॥

इति नवपुरव्हयनगरस्स[9] पच्छिमुत्तरदिसाभागे पतिट्ठिते पनसारामो ति विस्सुते आरामे वसन्तेन सकलब्याकरणासङ्गञाणचारिना साट्ठकथतिपिटकधरेन[10] ञाणकित्तिनामधेय्येन थेरेन कता अयं अट्ठसालिनिया अत्थयोजना समत्ता ति[11] ।

अट्ठसालिनीयोजना समत्ता

---

१. परमं पुरुत्तमं–सी० । २-२ लङ्काभिधानेसु च वंसजेन–म० । ३. ये–म० । ४. दीपं–सी० । ५-५ खेरविन्दु च पाकटा–सी० ६. सोतुकामानं–सी० । ७-७ उत्तमबोधि –सी० । ८. तम्पत्वा अखिले–सी० । ९. अभिनव०–सी० । १०. साट्ठकथा०–सी० । ११. समत्ता–सी० ।

किं मे एकेन तिण्णेन पुरिसेन थामदस्सिना ।
सब्बञ्ञुतं पापुणित्वा सन्तारेस्सं सदेवके ॥

× × ×

संसारसोतं छिन्दित्वा विद्धंसित्वा तयो भवे ।
धम्मनावं समारुय्ह सन्तारेस्सं सदेवके'ति ॥
(जातकनिदानट्ठकथा)

गन्थागतसद्दानं अकारादिक्कमेन

अनुक्कमणी

[अ]

[ए]

[ओ]

[द]

[ध]

[भ]

[म]

सुद्धिपण्णं

असुद्धं	पंत्ति	पिट्ठं	सुद्धं
गणनाचरो	२६	२१	गणनाचारो
आणावा ल्लतो	१	४२	आणाबाहुल्लतो
सिक्खासाजीव मापन्नो	१३	५४	सिक्खासाजीवमापन्तो
भगवा मुमेधो	२२	१०३	भगवा सुमेधो
गोतुभू	१५	१३४	गोत्रभू
मुखववट्टि	२४	२१२	मुखवट्टि
वुत्ते न	९	२६७	वुत्तेन
आ ळ्हो	२५	३२६	आरूळ्हो
अञ्ञ	१३	४०३	अञ्ञो
पथुज्जना	१२	४०८	पुथुज्जना
बलं ना अत्थतो मवायोधातुया	१३	४६४	बलं नाम अत्थतो वायोधातुया